

स्व० प० भव नाथ मिश्र

''मिथिला शब्द प्रकाश''कार परिचय

स्व० प० भव नाथ मिश्र, शुक्ल यजुर्वेदक बाजस्नेय शाखाध्यायी, और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य, आप्लवान एहि पञ्च प्रवर सँ युक्त वत्स गोत्रिय हरिअम्मे बलिराजपुर मूलक मैथिल श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह । हिनक जन्म १८७६ ई० मे ग्राम - जमुथरि, पो० हटाढ़ - रूपौली, झंझारपुर, जिला - मधुबनी में भेल छल। ई अपन मामा महामहोपाध्याय कृष्ण सिंह ठाकुरक शिष्यत्त्व मे व्याकरण साहित्यक गम्भीर अध्ययन कय धर्मशास्त्र तथा कर्मकाण्ड मे सेहो निष्णात भेलाह । हिनक पिताक नाम प० दामोदर मिश्र तथा माताक नाम यमुना देवी छलन्हि । हिनका धर्मपत्नी आद्या देवी सँ स्व० प० तेज नाथ मिश्र, व्याकरणाचार्य, वर्तमान प० श्री मति नाथ मिश्र, साहित्याचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त), प० श्री यन्त्र नाथ मिश्र, व्याकरण साहित्याचार्य तथा प० श्री पुण्य नाथ मिश्र आयुर्वेदाचार्य –चारि पुत्र भेलथिन । रचित ग्रन्थ मे सात खण्डक '*'मिथिला शब्द प्रकाश*''नामक महाकोश अछि जे अपन प्रथम खण्डक प्रकाशन (ई० १६१४ / बनारस / मूल्य ६: आना) उपरान्त विश्व निष्णात विद्वान् लोकनि यथा जार्ज ग्रियर्सन, बार्नेट, सुनीति कुमार चटर्जी, सर गंगानाथ झा, कुमार गंगानन्द सिंह मध्य प्रशंसित ओ चर्चित रहल छल । अन्य रचना मे विविध विषयक संकलन ''विषयावली'' छल जे अनुपलब्ध अछि। फुटकर श्लोक भेटैत अछि । मिथिलाक्षर मे स्वहस्तलिखित सम्पूर्ण हरिवंश पुराण, दुर्गा सप्तशती तथा अनेक ग्रन्थक विशद हस्तलेख दर्शनीय अछि। १६३३ ई० क अग्रहण शुक्ल चतुर्थी तिथि कें हिनक स्वर्गवास भय गेल ।



प० मति नाथ मिश्र 'मतंग'

''मैथिली शब्द कल्पद्रुम''कार परिचय

प्रस्तुत ''*मैथिली शब्द कल्पद्रुम*''कोशक रचयिता संस्कृत तथा मैथिलीक महाकवि प० श्री मति नाथ मिश्र 'मतंग' वाजस्नेय शाखाध्यायी वत्स गोत्रिय हरिअम्मे बलिराजपुर मूलक मैथिल श्रोत्रिय ब्राह्मण प० भव नाथ मिश्रक कुलोन्नायक द्वितीय पुत्र थिकाह। हिनक माताक नाम आद्या देवी छलन्हि । हिनक जन्म भारतीय शासन क्षेत्रक मिथिलाक मधुबनी जिलान्तर्गत झंझारपुर प्रखण्ड के ग्राम – जमुथरि, पो० हटाढ़ – रूपौली मे १५-७-१६२४ ई० कें भेल छल । भागलपुर के सुलतानगञ्जस्थ विक्रमशिला संस्कृत महाविद्यालय मे पढ़ि साहित्याचार्य परीक्षा मे बिहार मे प्रथम होयवाक कारणे स्वर्णपदक प्राप्त कयल । हिनक स्वरचित प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थ सभ मे – ''भार्गव विक्रमम्'', पद्य महाकाव्य, ''महर्षि विश्वामित्रम्'', गद्य महाकाव्य, '' राष्ट्रबन्धु''नाटक तथा पद्य खण्ड काव्य'' ऋतु विभ्रमम्''एवम्''संस्कृत व्याकरणानुवाद चन्द्रोदय'' अछि । असंख्य अप्रकाशित पद्य अछि । मैथिली मे ''ठहक्का'' पद्य, ''जय राजा सलहेस'', पद्य महाकाव्य, संस्कृत समछन्द मे ''मेघदूत''क मैथिली अनुवाद तथा बहुत रासे अप्रकाशित मैथिली कविता अछि । प्रस्तुत पुस्तक समक्षे अछि । केओ आइ तक पूर्ण नहिं भऽ सकल अछि ई बूझि एकर त्रुटि पर ध्यान नहि दैत मैथिल समाज एकर पूरक दोसर तकर पूरक तेसरो कोशक निर्माण कय मैथिलीक भण्डार के भरैत रहथि से लेखकक कामना छनि । तेहत्तरि वयः क्रम के पार कइयो के हिनक लेखिनी लगातार चलितहिं रहैत छन्हि ।

मैथिली–मैथिली शब्दकोश

मैथिली शब्द कल्पद्रुम

प० मति नाथ मिश्र 'मतंग'



मिश्र बन्धु प्रकाशन :—०५

प्रकाशक :
मिश्र बन्धु प्रकाशन
जमुथरि, हटाढ़-रूपौली
झंझारपुर, मधुबनी-८४७ ४०४

प्रथम संस्करण—१९९८
प्रति —२२००

संशोधित मूल्य 300/- टाका
मिश्र बन्धु प्रकाशन, मधुबनी

मुद्रक एवं विक्रय प्रबन्धन :
सर्वश्री सुनील आनन्द प्रिन्टर्स
गौशाला रोड, पी० ओ०-रमना
मुजफ्फरपुर-८४२ ००२
दूरभाष-२४७२३३

सम्पादकीय

कोनो अर्थाभिव्यञ्जक शब्द समूह के भाषाक रूप में प्रतिष्ठित होयवा मे साहित्य, लिपि, व्याकरण आ कोश ई चारु टा मुख्य स्तम्भ होईत छैक। एहि सब से उपर ओहि भाषाक भौगोलिकता, ऐतिहासिकता तथा राजनैतिकता सेहो कोनो भाषा कें स्थापित करवा मे साहित (मदति) करैत रहलैक अछि।

निस्तुकी छैक जे एहि सभ दृष्टि सँ मैथिली, समस्त भारतीय स्थापित भाषाक सँग अग्रिम पाँती मे अपन स्थान बनौने अछि। पहिने कोनो भाषाक क्षेत्रीय नाम नहिं होइत छल। जखन वैदिक वा संस्कृत उत्तर भारतक विभिन्न क्षेत्रक माटि, पानि, वसात, आकाश तथा उष्माक प्रभाव से स्वर, अभिव्यक्ति, उच्चारण प्रणाली, ओतुक्का लोक द्वारा अपनाओल गेल मुखसुख हेतु विशिष्ट शैली मे बाजल जाय लागल तखन मागधी, अर्द्धमागधी सौरसेनी आदि नाम से भाषाक नाम पड़ए लागल। जे अपभ्रंस कहवै छल।

अर्द्धमागधी अपभ्रंस सँ मिथिला मे मैथिली, मगध मे मगही; बंगाल मे बंगला, असाम मे असमियाँ उत्कल मे उड़िया सन पूर्वीय भाषा विकसित होमए लागल आओर सौरसेनी से ब्रजभाषा, भोजपुरी, अवधी, वैसवाड़ी, गढ़वाली आदि।

जैं हेतु उपस्थित "मैथिली शब्द कल्पद्रुम" नामक शब्द कोश मैथिली भाषाक थीक तैं एहि भाषाक उपर्युक्त उपादान पर किछु संदर्भ प्रस्तुत करब आवश्यक बुझैत छी जाहि सँ मैथिलीक विषय मे किछु भ्रमक सेहो निवारण भए सकें।

सर्वप्रथम डा० हर प्रसाद शास्त्री कें शोधक क्रम मे नेपालक पुस्तकालय मे मैथिली साहित्य पुस्तकक लाट मे चर्याचर्य विनिश्चय वा चर्यापदक "दोहा कोष" तथा डाकार्णव, के रूप मे बौद्ध सिद्धक अनेकानेक पद्यगीत भेटलन्हि जे सातमी शताब्दी से पहिलुका आ पछातिक थीक जाहि मे लूहिपा, विरूपा आदि सिद्ध प्रमुख छथि। निश्चित रूप से ई गीत सभ प्राचीन मैथिलीक थीक।

ध्यान देवाक वात अछि जे ओहि अमल (जमाना) मे राजाश्रय पावि के जहिना संस्कृत पूर्ण विकसित भऽ चुकल छल तहिना भिक्षुक होएवाक कारणे लोकाश्रय पावि के लोकभाषा मैथिली तथा मगही के साहित्यिक रूप मे सिद्ध लोकनि विकसित कए रहल छलाह होएत।

सिद्ध साहित्यक परिशीलन करैत महापण्डित राहुल सांकृत्यायन "गंगा के प्रवाह–३, तरंग–१" मे १९३३ ई० क अंक मे स्पष्ट लिखने छथि जे सिद्ध साहित्य मैथिली तथा मगहीक सबसे लगीच अछि। विरूपाक एक पद्य बानगी अछि—राग गवड़ा मे—एक से सुण्डिनि दुइ धरे सान्ध अ, चीयण वाकलअ वारुणी बान्धअ। ध्रु० चउसठि घड़िये देह पसारा, पइठल गराहक नहिं निसारा। ध्रु० विस्तार के डर से अधिक उदाहरण नहिं दए रहल छी। मैथिलीक रचनाकार होएवाक कारणे ज्योतिरीश्वर ठाकुर "वर्ण रत्नाकार" मे चौरासी सिद्धक उल्लेख करैत सत्तावनटा सिद्धक नामोल्लेखो कएलन्हि अछि।

लोक भाषाक लोकप्रियता देखैत अनेक संस्कृत ग्रन्थक प्रणेता विद्यापतियोके घोषणा करए पड़लन्हि जे—"देसिल वयना सवजन मिठ्ठा" आ ओ देसिल वयना मैथिली मे तेहन सार्वभौम, सार्वजनीन आ सार्वकालिक रचना कएलन्हि जे विश्वविख्यात भए गेल। हुनके एहि देसिल वयनाक मन्त्र सँ प्रेरित भ के समस्त उत्तर भारतीय भाषाक लोक भाषा सभ मे रचना होमए लागल, सूर, तुलसी, कवीर, मीरा, खुसरो, जायसी, रहीम, रसखान आदि जकर प्रतिफल भेलाह।

बंगला में कृत्तिवास, चण्डीदास सँ लए कें रवीन्द्रनाथ तथा तकर पछातियो बंगलाक रचनाकार सभ विद्यापति से प्रेरित होइत रहलाह। असामक अँकियानाट, कीर्त्तनियाँ, आ उड़ियाक साहित्य सेहो प्रेरित भेल। अही क्षेत्रीय भाषा कें विद्यापति देसिल वयना कहैत छलाह जे मैथिली वा तिरहुतिया थीक।

जाहि भाषाक साहित्य कें ज्योतिरीश्वर, विद्यापति लोचन, अमियकर, उमापति, लाल दास, मनबोध, गोविन्द दास, चन्दा झा आदि महाकवि सजोलन्हि, वदरीनाथ, सीताराम झा, सुमन, रामलोचन, मधुप, मणिपद्म, किरण, अमर, राघव आदि रससिद्ध रचनाकार आगाँ बढ़ौलन्हि आ एखन अनेक उदीयमान कवि रचनाकार भरि रहल छथि एकर साहित्यिक रत्न भण्डार कें अपन कालजयी साहित्यक निर्माण सँ। जाहि भाषा मे—चन्दा झा रामायण, रामलोचन शरणक मैथिली रामचरित मानस, विषपायीक राम सुयश सागर, तथा श्रीकृष्ण नन्दन सिंहक "सीतारामायण" सन चारि चारि टा रामायण अछि। पाँचम कवि भोलालाल दासक मैथिली रामायण सवसे शीर्ष पर चमकि रहल अछि।

जकर लोक साहित्य असँख्य लोक कण्ठ से सोहर, मूड़न, उपनयन, विवाह, कुमार, कोवर, वटगवनी, उचिती, योग, डहकन, समदाउनि, बधैया, झूमरि, कजरी, लगनी, गोदना, विषहरागीत, शीतलागीत, देवीगीत, सामागीत, साँझ, पराती, विरहा, जटा जटिन, डोमकच, दाहागीत, दीनांभद्रीक गीत के उपरो राजासलहेस, दिवरादयाल, लोरिकानि, वृजभान, गोड़ैया, सीतवसन्त, रानीसारंगा, राजा भरथरी, गोपीचन, जालिम सिंह, आदि लोकगाथा विविध विधा तथा विविध रूप मे अनादिकाल से गुञ्जित भ रहल अछि।

ततवँक नहि नेपालक मल्ल राज्यकाल तँ मैथिलीक स्वर्णयुग छले जे लगातार आइतक नेपालक मैथिली भक्त मैथिलीक लेल संवर्ष करैत एकर द्रुत गति सँ विकासक लेल प्रयासरत छथि। ओहूठाम मैथिली सेवी लोकनि मैथिली मे कालजयी साहित्यक निर्माण क रहल छथि। अनेक मैथिली पत्र पत्रिका बहार क रहल छथि।

कोनो मे साहित्यक रचना ओहिभाषाक शक्ति पर पहिने निर्भर करैत छैक जे शिक्षित अशिक्षित सभ के रचनाक हेतु विवश कए दैत छैक दोसर स्थान मे कविक शक्ति आ तखन कविताक शक्ति। शक्तिहीनताक दोष झट द दृष्टिगोचर भ जाइत छैक। मैथिली मे कोनो भाषा से अधिक शक्ति विद्यमान छैक। एहि भाषा मे हजारो अपूर्व कहवी आ अगणित उपलक्षण (मुहावरा) अछि। एकर पाचन शक्ति एतेक प्रखर अछि जे अनेक विदेशियो शब्द के तेना पचा लैत अछि जै सें ओकर मूल रूपक पता नहि चलैत छैक। विदेशियो भाषा से अनेक मुहावरा बना लैत अछि जेना "दफाननाई" "हुसेल-हुसेल केनाई" "फतिया पढ़नाई" "गुरमिन्टी केनाई" "सीट लगोनाई" आदि अनेक मुहावरा अछि। १९४७ ई. सँ पूर्वहुँ मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा छल। एहिभाषा मे पत्रकारितोक अभाव नहि रहल अछि।

१९०५ ई० मे सर्वप्रथम "मैथिल हित साधन", १९०६ मे "मिथिला मोद", १९०८ मे "मिथिला मिहिर", "मैथिली प्रभाकर", "जीवन प्रभा", "श्री मैथिली", "मिथिला", "मिथिला मित्र", "मैथिल-बन्धु", "मैथिल युवक", "वैदेही", "मिथिला दर्शन", "मिथिला सेवक", "वटुक", "चौपाड़ि", पहिलुका पत्र पत्रिकाक अतिरिक्त सम्प्रति त नेपाल सँ "वाणी" "पल्लव" आदि तथा पटना सँ "भाषा" "सन्धान", कलकत्ता सँ "मैथिली संवाद", "कर्णामृत", सहरसा सँ "कोशी कुसुम", "भारती मण्डन", एक प्रौढ़ पत्रिका अछि जहिना मिथिला मिहिर। दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, कानपुर, मेरठ, प्रयाग आदि स्थान से त सहजहिं जे अमेरिका पर्यन्त से मैथिली पत्रिका निकलैत रहल अछि। मैथिली साहित्यक गुणवत्ता सँ आकर्षित भए सबसे पहिने कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली के १९१९ ई० मे पाठ्यक्रम मे आनल गेल तदुत्तर इलाहाबाद तथा बनारस विश्वविद्यालय तकरा अनन्तर बिहारोक विभिन्न विश्व-विद्यालय अपन पाठ्यक्रम मे रखलक। १९७४ ई० मे एकरा बिहार लोक सेवा आयोग मे सेहो स्थान भेटल मुदा एहि भाषाक प्रति द्वेष से १९९४ ई० मे लोक सेवा आयोग सँ हटा देल गेल। सम्प्रति इण्टरक पाठ्यक्रम से सेहो हटा देल गेल अछि। वास्तविक मैथिली त तथाकथित पिछड़ी एवं दलितँक भाषा थीक तखन की कारण जे दलित एवं पछिड़ल लोकक उत्थान लेल प्रतिबद्ध शासन मे मैथिलीक सँग एहि तरहक उपेक्षाक व्यवहार कएल जा रहल अछि? वस्तुतः एकर उत्तर मिथिला समाज वर्त्तमान दायित्व सँ किएक नहिं पूछैत अछि। दिल्लीक साहित्य अकादमी सँ मैथिलीक अनेक ग्रन्थ पुरस्कृत भेल अछि तथा बिहार मे १९७२ ई० मे मैथिली अकादमीक स्थापना भेलाक उत्तर अनेक मैथिलीक ग्रन्थ एकरा द्वारा मुद्रित प्रकाशित आ पुरस्कृत होइत रहल अछि जाहि मे प्रस्तुत कोशक रचयिता महाकवि पं० श्री मतिनाथ मिश्रजीक "जय राजा सलहेस" महाकाव्य सेहो अछि।

स्व० इन्दिरा गाँधी मैथिली भाषाक माधुर्य सँ अति प्रभावित छलीह। हुनक प्रधानमन्त्रित्वकाल मे दिल्ली पुस्तक मेला मे देखैत देखैत ओ जखन मैथिली कार्नर पर अएलीह आ मैथिली गीतक टेप सुनाओल गेलन्हि त प्रसन्न भए कहैत रहलीह—स्वीट लैंग्वेज-स्वीट लैंग्वेज। एहन चिर प्राचीन चिर-नवीन प्रगतिशील मैथिली आ एकर साहित्य कें केओ अपना के विद्वन्मन्य साहित्यकार आ इतिहासकार एकरा हिन्दीक उपभाषा वा बोली बुझैत छथि त से हुनक निजाग्रह, पूर्वाग्रह, पराग्रह वा दुराग्रह बुझबाक चाही। कि ओ नेपाल से नियमित रूप मे मैथिली मे समाचार, पटना, दरभंगा, भागलपुर, राँची आकाशवाणी से प्रसारित होइवाला मैथिली कार्यक्रम धोखो से नहिं सुनने होयताह।

कि? ओ उत्तर द सकैत छथि जे विद्यापति—गोविन्द दासक समय मे हिन्दी नामक कोनो सार्थक शब्द छलैक जकरा देसिल वयना कहल गेलैक? अथवा मैथिलीक ओज दए के हिन्दी कें नवीन साज सज्जा मे उपस्थित केनिहार हिन्दी मैथिली दुनू मे रचना केनिहार "जनार्दन झा जनसीदन", "सुधांशु शेखर चौधरी", "आरसी प्रसाद सिंह", "राजकमल", "बाबा नागार्जुन", "जीवकान्त", "आद्यानाथ झा निरंकुश", "फणीश्वर नाथ रेणु" आदि रचनाकारक रचनाक दुनू भाषा मे कोनो अन्तर नहिं बूझ-वाक बुद्धि छन्हि। तखन ई पाखण्ड किएक? डंकाक चोट पर हम कहब जे मैथिली भाषा तथा एकर साहित्य बहुत समृद्ध, सशक्त तथा स्वतन्त्र अछि। एहि बातक विरोध केनिहार के हम वदान (चुनौती) दैत छियन्हि।

यदि मैथिली मे विपन्नता छैक त राजनैतिक जकरा कारणे चार कोटि मैथिली भाषी के भारत सरकार से अपन भाषा मे बजबाक संवैधानिक अधिकार नहिं भेटलैक अछि ततवैक नहिं एकरा पर वरावरि विखण्डनकारी राजनीतिक आक्रमण होईत रहलैक अछि।

सबसे पहिने सुगौली सन्धि के अनुसार मैथिली भाषी क्षेत्र के भारत नेपाल दू भाग मे बाँटि देल गेल। पुन; बंगाल से बिहार के फराक करवाक समय एहि नवकल्पित बिहारक वास्तविक भाषा

"मैथिली", "मगही", आ भोजपुरी नहि भए के एकरा पर हिन्दी नामक भाषा थोपि देल गेलै। जाहि भाषा से ओहि समय केओ परिचित नहि छल। तेसर वेर १९५४ ई० मे भाषाधार प्रान्त निर्माणक सिद्धान्त पर जखन कल्याणी मे काँग्रेस महाधिवेशन होमए जाईत रहैक त मिथिला आ मैथिलीक माङलए के आन्दोलन करवाक हेतु मिथिला केशरी जानकीनन्दन सिंहक नेतृत्व मे अधिवेशन मे जाइत एक हजार कांग्रेस सदस्य कें आसनसोल जंक्शन पर बन्दी बनाय अधिवेशन मे उपस्थित होयवा से वञ्चित कए देल गेल। ई छल जनतान्त्रिक अधिकारक आदर्श।

अधिवेशनक उपरान्त तात्कालिक बिहारक मुख्यमंत्री द्वारा मिथिला मैथिलीक विखण्डन हेतु मैथिली भाषी क्षेत्र कें नवकल्पित अंगिका एवं वज्जिका भाषी क्षेत्र मे परिगणित कए मैथिली भाषी क्षेत्र मे फूट कराके बिखण्डित आ दुर्बल बनाओल गेल। नहि त १९५४ ई० से पहिने कोनो इतिहास, पुराण, साहित्य, राजकीय अभिलेख मे अंगिका, वज्जिका नामक भाषाक चर्चा नहि आयल अछि प्रत्युत १९०२ ई० सँ १९११ ई० तक जे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भारतीय भाषाक सर्वेक्षण कएने छलाह ताहि गजट में उत्तर बिहारक अतिरिक्त भागलपुर सन्थाल प्रगन्नाक देवघर, मधुपुर, साहेबगञ्ज तकक क्षेत्र कें मैथिली भाषी क्षेत्र के रूप मे रेखांकित कएने छथि। जकर रेखाचित्र गत्ता पर देल गेल अछि। मजहव वा धर्मक कोनो भाषा नहि होईत छैक। मजहब के यदि कोनो भाषा होइतैक त सम्पूर्ण इस्लामी विश्व अरविए बजिते। त ने सभ हिन्दू संस्कृत भाषा बजैत अछि ने वैदिक, ने सभ बौद्ध पाली भापा बजैत अछि ने सभ इसाई-जहूदी हिब्रू आकि सभ मुसलमान अरवी। सत्य त ई छैक जे जाहि क्षेत्रक वासी कोनो धर्मावलम्बी अछि से ओहि क्षेत्रक भाषा बजैत अछि। तखन ई आत्मवंचन। कियैक? शरीर जेकाँ भाषा सेहो ओहि क्षेत्रक माँटि पानि वसात आकाश आ उष्माक उपजा थिकैक।

बिहारँक एकटा मुख्य मन्त्री मैथिली कें अगड़ी जातिक भाषा होएबाक लोक में भ्रम उत्पन्न क के पिछड़ी जाति कें मैथिली से फूट करबाक असफल प्रयास कएलन्हि। कारण मिथिलाक पिछड़ी जाति आव ओतेक मूर्ख नहि रहि गेल अछि जे ओकरा अपन परिचय से दूर राखल जायत। से यदि रहितैक त विहारक जन नायक मुख्य मन्त्री कर्पूरी ठाकुर पिछड़ी जाति में सँ रहितहु मैथिली कें अष्टम अनुसूची मे सम्बद्ध कए संवैधानिक अधिकार देएवाक हेतु केन्द्र सरकार कें प्रस्ताव नहि पठवितथिन। वास्तविकता त ई छैक जे ओही तथा कथित पिछड़ी आ दलित जातिक घर आङ्गन मे मैथिली अपन शुद्ध रूप मे सुरक्षित छथि। कोनो भाषा देशक उर्जा थिकैक। भारतीय संस्कृति कें रवीन्द्र नाथ ठाकुर कमल फूल से तुलना कएने छथि जकर एकोटा पंखुरी टूटि गेला से ओकर शोभा नष्ट भ जाइत छैक ओहने पंखुरी मे एकटा मैथिली संस्कृति अछि। संस्कृति माने भाषा, साहित्य लिपि, कला दर्शन आचार विचारक परम्परा सँ अवैत संस्कार होइत छैक। स्वतन्त्रताक एकमात्र लक्ष्य अपन संस्कृतिक रक्षा आ परतन्त्रता से अपन संस्कृतिक नाश होइत छैक। निश्चित रूप से विदेशी शब्द देशी शब्द सभके विस्थापित कए रहल अछि। वहिष्कृत कए रहल अछि। तथापि हिन्दी साहित्यकारक मैथिलीक प्रति ओहने प्रवृत्ति देखल जाइत अछि जेहन साँप से धएल बेङ, लगमे आयल कीड़ा मकोड़ा के गीड़ए चाहैत अछि।

एहि प्रकारें भारतक जनतान्त्रिक शासन सँ मैथिली पर कतवो प्रहार होअ मुदा एकरा अन्तर्राष्ट्रीय होयवाक कारणे नेपाल मे ओतयक उत्साही मैथिली भाषी द्वारा एकर निरन्तर विकास भ रहल अछि आ होइत रहत। अहू ठाम जखन जन साधारण अपन मुँहक एहि रत्न के चिन्हत तऽ एकर महत्व बुझए लागत। अस्तु आब मिथिलाक्षर वा तिरहुतालिपिक विषय पर आवी एखन तक जे शिलालेख, तड़िपत्र, वा कागज परक अभिलेख भेटल अछि ताहि में तेसर ई० शताब्दीक भार शिव वा काटक राजा द्वारा शिव मन्दिर स्थित कचनाक अभिलेख में शिला पर जे लिखित अछि से मिथिलाक्षर थीक। बेगूसरा-

बक मंगलागढ़ स्थित देवी मन्दिरक शिला लेख सेहो मिथिलाक्षरे अछि जे तेसर से छठम शताब्दी तकक थीक। वैद्यनाथ धाम से सात किलो मीटर दक्षिण साथर गांव में प्राचीनतम सूर्य मन्दिर में शिला पर उत्कीर्ण मिथिलाक्षरक आदि रूप देखल जा सकैत अछि। अन्हरा ठाढी मधुवनीक प्राचीन शिला लेख सेहो मिथिलाक्षरक विषय में उल्लेखनीय अछि। सबसे अर्वाचीन एहि कोश कारक ग्राम-जमुथरि स्थित गौरी-शंकर स्थानक गौरीक मुख प्रतिमा से युक्त शिव लिंगक मिथिलाक्षर में शिला लेख अछि।

जकरा शिला लेखक इतिहास में प्रथम आश्चर्य कहल जाय त अत्युक्ति नहि होयत। कारण एहि शिव लिंगक वृत्ताकार आधार जकरा जल धरी कहल जाइत अछि तँ मेभूपुर यन्त्र बनाओल अछि जकर भीतर से बीस तथा बाहर से सोलह कोण बनैत अछि। ताहि बीच अनेक तान्त्रिक मन्त्र अछि तकरो मध्य अत्यन्त कलात्मक अष्टदल कमल अछि जकर प्रत्येक दल में अँ आँ आ कँ खँ गँ घँ ङँ एहि क्रम से स्वर वीज तथा व्यन्जन बीज आठो दल मे स्पष्ट लिखल अछि। अष्ट दलक कर्णिका पर शिव लिंग स्थित अछि। लिंगक हृदयस्थल सँ अत्यन्त सुन्दर गौरीक मुख मात्रक प्रतिमा लिंग से संलग्न आ लिंग से बाहर भेल अछि। जकरा कान मे कर्ण फूल गरा में हँसुली तथा सौंसे माथक केश समेटि के बीच माथ पर खोपा बनल अछि। आइयो कालि्ह विवाहक समय कन्याक खोपा बीचे माथ पर बनाओल जाइत रहल अछि। ताहि से ऊपर लिंगक भाल प्रदेश में अर्द्ध चन्द्र पर विन्दु बनल अछि ताहू से ऊपर लिंगक उन्नतोदर शीर्ष अछि। लिंगक वाम पार्श्व मे नीचाँ सँ ऊपरदीस राम गायत्री तथा राम मन्त्र अछि तथा दहिन भाग मे ऊपर से नीचा दीस के शिव गायत्री तथा अघोर मन्त्र लिखल अछि। ई लिंग बँटकर सँ सावा हाथ ठाढ़ अछि तथा अपना आधार पर एकरा सभ दिशा घुमाओल जा सकैत अछि। अहि लिंगक लग में जे भैरव लिंगक जलधरी अछि तकर धरि पर लिखल अछि अक मे एग्यारह सय एका-बन शाके तदुन्तर भग्न तखन फेर माघ। ताहि से सिद्ध होइत अछि जे ई लिंग बारहवीं शताब्दी ईस्वीक थीक। सवसे अधिक ध्यान देवाक योग्य एहिमहँक आश्चर्य जनक लिपिक कला कारिता अछि। एक एकटा यन्त्रक रेखा एक एकटा अक्षर एकर कसौटी पाथर पर तरासि तरासि के उगाओल गेल अछि जे बहुत स्पष्ट तथा एतेक दिनक उपरान्तो अद्यतन बूझि परैत छैक। रह रहाँ शिला लेख खोधल पाओल जाइत अछि एतेक मन्त्र अक्षर के एतेक परिच्छिन्न रूप से उमार नाई लोकातीत कला कारिता देखन्त में अबैत अछि। अहि से अतिरिक्त हैहट देवीक शिला लेख १३२२ ई० क दड़िभंगाक जर हटिया पोखरिक जाठि में लिखल शिला लेखक उपरो अठारहवीं इस्वी तक मिथिलाक्षर मे लिखल शिला लेख अछि। १०९७ ई०क नान्य देवक मन्त्री श्रीधर दासक शिला लेखक प्रतिलिपियेटा सुरक्षित अछि। ओ इनवार वंशक नरेश नरसिंह देवक कन्दहा शिला लेखक प्रतिलिपि सेहो प्रमाणित करैत अछि जे मिथलाक्षर कतेक प्राचीन काल सँ प्रचलित छल।

जहिया से मिथिला गुप्त साम्राज्य मे मिला लेल गेल तहिया से एकर नाम तीर मुक्ति पड़िगेल कारण साम्राज्यक अंगराज्य कें मुक्ति कहल जाइत छलैक आ एहि अंग के नदी मात्रिक होयवाक कारणे तीर मुक्ति होएव स्वाभाविक छल। ओना विद्वान लोकनि जेना प्राचीन विषयक संग अनेक बात जुटैत चल जाइत छैक तहिना अनेक ऐतिहासिक कथाक आधार पर तीरहुत तिरहुत त्रिमुक्त आदि कहैत छथि तैं तिरहुते होएबाक कारणें अक्षर तिरहुता गीत तिरहुत, निबासी तिरहुतिया, कहावए लागल। तैं मिथिलाक्षर तिरहुता नाम से प्रसिद्ध अछि। बंगला आ असमिया लिपि एकरे दु चारि अक्षर हेर-फेर कके बनल अछि तैं हेवनी तक ओतए लोक अपन लिपि के तिहुता वा तिउता कहैत रहल अछि।

मिथिलाक्षर मे हस्त लिखित सभसे प्राचीन ग्रन्थ नेपाल दर्वार पुस्तकालय मे "कुरा कुल साधन" नामक अछि। संगहि समस्त बौद्ध तन्त्र तथा वौद्ध गान-दोहा कोष, "डाकार्णव" मिथिलाक्षरे मे लिखित

भेटल अछि। ततबैक नहि महा पण्डित राहुल साँकृत्यायन तिब्वतक बौद्ध मठ सँ जे हजारक संख्या मे दुर्लभ ग्रन्थ अपन राष्ट्रक सेवाक लेल अनलन्हि जाहि मे बहुतो पोथी पटना संग्रहालय मे सुरक्षित अछि से तिरहुते मे लिखल अछि। बौद्ध ग्रन्थ "ललित विस्तर मे एहि लिपि के वैदेही" लिपि सेहो कहल गेल अछि।

उन्नेसम शताब्दी ने जखन विदेशी तथा स्वदेशी विद्वान लोकनि अनुसन्धान करए लगलाह आ विद्यापति कें मैथिल के रूप मे स्थापित कएलन्हि त १४३५ चौदह सय पैंतीस इस्वीक हिनक लिखल "श्री मद्भागवतक,, मिथिलाक्षर मे हस्तलेखो प्राप्त करवाक सौभाग्य भेलैक जे राज दरभंगाक पुस्तकालय मे सुरक्षित होएवाक चाही। एहिसे अतिरिक्तो अट्ठारह सय कोन जे १९५० ई० उन्नैस सय पचास इस्वी तक हजारो नहि लाखौक संख्या मे मिथिलाक्षर मे लिखल रामायण, भागवत, पुराण समूह, शास्त्र समूह,, न्याय पत्र, वैद्यक, बन्ध पत्र, जय पत्र, काव्य, संगीतक ग्रन्थ एखनहुँ मिथिला मे तथा मिथिला से बाहर आरक्षित दशा मे छिड़ियायल वितियायल पड़ल अछि। विलायत, अमेरिका, फ्राँस, जर्मनी, रूस आदि देशक पुम्तकालय सभ मे हजारो हजार के संख्या मे मिथिलाक्षर मे लिखल पाण्डु लिपि दिनक फेरी देखि के दुःख से बौक बनल एही आशा बाटी मे पड़ल अछि जे हमरा देशक मिथिलाक केओ एहन सपूत कहियो आओत आ पढ़ि के एहि मे जे रहस्य छै तकरा जानत त अतुल रत्नक ओकरा भण्डार भेटतै हमर सन्तान सुखी होएत त हमरो आत्माके शान्ति भेटत प्रेतत्त्व से मुक्ति भेटत। मुदा थिकैक ई श्रद्धाक विषय यदि हम अर्थक हेतु एतेक शिक्षा, श्रम, समय दए सकैत छियैक त एतेक उदार विशाल उपयोगी मिथिलाक्षर सिखैक हेतु वा सिखेबाक हेतु ओहि साधनक सहस्त्रांश व्यय नहि क सकैत छी ? जाहि से हमर भावी पीढ़ीक सांस्कृतिक उन्नति आ पूर्वजक तर्पण भए सकैत अछि। अनका से पुछवाक हमरा कोनो अधिकार नहि अछि तैं अपनहि सँ पुछैछी कि हम मनुष्य भऽ के एहि धरती पर अहीलक्ष्य लेल आयल छी जे भरि जीवन केवल अपन भोग्य सामग्री जुटवैत जुटबैत एक दिन पशु जेकाँ ई शरीरो विवशता पूर्वक छोड़ए पड़ए आ राष्ट्र समाज आ संस्कृतिक हेतु किछु नहि करी !

स्वतन्त्रताक पछाति सभ क्षेत्र मे उत्तरोत्तर जहिना अपन संस्कार आ संस्कृतिक ह्रास भ रहल अछि तहिना मिथिलाक्षरक व्यवहारो अपवाद स्वरुपे रहि गेल अछि। पचास वर्ष पहिने सभ शुभ काज नोत पिहान पाता, व्यवस्था आदि तिरहुता मे लिखल जाइत छल। हम अपन परम्पराक एहि धरोहर कें विसरि कत्तेक दिन अस्तित्व राखि सकैत छी। लिपियैक दुर्ग मे भाषा सुरक्षित रहि सकैत अछि। बंगला भाषा लिपियैक कारण विश्व मे अपन विशेष स्थान बनौने अछि। ई सभ बात सिवित मिथिला वासी मिथिला भाषी भाइ बहिन कें बुझवाक आ बुझेबाक टा विलम्ब अछि नहि त पूर्ववत् पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त कए सकैत छी।

आब भाषाक तेसर खाम्ह व्याकरण दिस अवैछी। मैथिली भाषा पर व्याकरण लिखैबाला सर्व प्रथम सात समुद्र पारक मनीषी विद्वान डा० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह। ई अट्ठारह सय पचहत्तरि ई०क लगभग तात्कालिक मधुबनी अनुमण्डलक ब्रिटिस भारतीय प्रशासक छलाह। एतहि ओ मैथिली भाषाक शक्ति से आकर्षित भए एतयक कतिपय विद्वान सँ सहायता लय एकर अध्ययन कयलन्हि आ तखन मैथिली व्याकरण लिखलन्हि। मैथिली क्रिष्टो मेथी के अतिरिक्त मैथिली भाषा, विद्यापतिक साहित्त्य पर अनेक शोध ग्रन्थ लिखलन्हि। विद्यापतिक बंशाबली उपर कए ओकर आधार पर सिद्ध कए देलथिन जे विद्यापति मैथिल छलाह। पछाति १९०२—११ ई० जखन लिंग्विष्टिक सर्वे आफ इण्डियाक अध्यक्ष बनलाह त एहि ग्रन्थक गत्तापर देल नकसाक अनुसार मंथिली भाषी क्षेत्रक सीमा निर्धारण कएलन्हि। दोसर "मिथिला भाषा विद्योतन,,, नामक मैथिली व्याकरण संस्कृत व्याकरणक सूत्र शैली पर महा वैयाकरण प० दीनबन्धु

झा द्वारा लिखल गेल । तेसर बेर श्री बाल गोविन्द झा व्यथित द्वारा प्रचलित अंगरेजी-हिंदीक ढर्रा पर मैथिली भाषाक व्याकरण लिखल गेल । चारिम व्याकरण पं० श्री गोविन्द झा द्वारा "उच्चतर मैथिली व्याकरण" लिखल गेल मुदा सभ मे एक देशीयता तथा अपन मान्यताक आधारे पर सिद्धान्तक स्थापना व्यवहार्यता से हटल हटल सन लक्षण लक्षित होइत रहल अछि । नीक तँ होइत जे मिथिलाञ्चलक विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण अध्ययन तथा ओहि ठामक विद्वान लोकनि सँ विचार विमर्श कए लोक सबसे सम्पर्क कए एक ठोस प्रौढ़ व्याकरण बनाओल जाइत । तैयो जतवा दूर तक व्याकरणक यात्रा पहुँचल अछि तकरा कम उपलब्धि नाहि मानल जएबाक चाही । ओ सभ मैथिली व्याकरणक वैयाकरण स्तुत्य आ धन्यवाद के पात्र थिकाह ।

भाषाक चारिम प्रमुख खाम्ह थीक कोश । कोनो भाषा के कोशक ओतबेक खगता छैक जतवा कोनो शासन के । दुनूक सञ्चित अर्थ कोशे मे रहैत छैक जे व्यवहारक बेर मे काज दैत छैक । भाषाक विषय मे कहल गेल छैक जे—"शक्ति ग्रहं व्याकरणोपमान कोशाप्त वाक्याद् व्यवहारतश्च" अर्थात् कोनो शब्द के कोनो वस्तु मे जे संकेत भेटैत छैक से ताहि मे व्याकरण उपमान, कोश, तथा अपना से श्रेष्ठक वाक्य से होइत छैक । शब्द-अर्थक सम्बन्ध बुझेवा मे आन सभ कारण रहितहुँ कोश सबसे आवश्यक छैक । एहि मे शब्दक अर्थो सुरक्षित रहैत छैक जे देखियो के लोक तत्त्त अर्थ मे शब्दक प्रयोग कए सकैत अछि । कोश नहि रहतैक त शब्दक उपयुक्त प्रयोग मे लोक के चुप्पे रहए पड़तैक । तैं संस्कृत मे छैक जे—

"अवैयाकरण स्त्वन्धः मूकः कोश विवर्जितः ।
साहित्य रहितः पंगुः बधिरस्तर्क विवर्जितः ।

अर्थात्—व्याकरण ज्ञान के बिना आन्हर, शब्द कोश के बिना बौक, साहित्य के बिना अपङ्ग, तथा तर्क के बिना कोनो लोक बहीर होइत अछि । एहन महत्त्व छै भाषा मे कोशक । एखुनका अपसंस्कृतिक प्रसार युग मे कोशक आओर आवश्यकता बढ़ि गेलैक अछि । कारण हजार वर्ष से एतए विदेशी संस्कृतिक आक्र-मण चलि रहल अछि जाहि से रक्षाक हेतु सेहो कोश आवश्यक छैक । धड़ाधड़ स्वदेशी शब्द के धकेल-धकेल के विदेशी शब्द स्थान छीनि रहल अछि । पनपियाई वा जलपान के नास्ता, विवाहैक योग्य पुत्र-पुत्री के वर कन्या नहि कहि लड़का लड़की कहल जाइत अछि । तहिना नव विवाहिता पति पत्नी के वर वधू नहि कहि लड़का लड़की सैंह कहल जाइत अछि । जमाय के दमाद कि मेहमान । भात के चावल आ तरकारी के सब्जी । तहिना स्वरक उच्चारण मे विकृति आवि रहल अछि । भैरवि के भैं मे पूरा ऐकारक उच्चारण नहि कयल जाइत अछि भौजी के भाॅजी तहिना मैथिली मे ऐकार के अंगरेजीक मैन जेकाँ उच्चारण कयल जाइत अछि । गनि के देवाक स्थान मे गिन के दिअ, बहिना के स्थान मे बहना कत्तेक कहू सिनेमा रेडियो विडियो दूरदर्शनक सभ व्यवहार के लोक अपन व्यवहार मानए लागल अछि । एहना परिस्थिति मे पुस्तकाकार कोशे एकटा भाषा रक्षाक उपाय भऽ सकैत अछि । नहि त अत्यन्त संवेदक अभिव्यञ्जक रहितहुँ देशी शब्द सभ विस्मृतिक गर्भ मे विलीन भ जायत । तैं हेतु महाकवि पं० मतिनाथ मिश्र "मतंग" जीक एतेक पैघ मैथिली कोश निर्माणक भगीरथ प्रयासक जत्तेक प्रशंसा कयल जाय से थोड़ थिक ।

एहि सँ पूर्व अनेक मैथिली भाषाक कोशक रचना भऽचुकल अछि । मुदा केओ साधिकार ई नहि कहि सकैत छथि जे हम मैथिली मे कोशक काज सम्पूर्ण कऽलेलहुँ । मुदा कोश निर्माणक आदि प्रयास केनिहार अवश्य स्तुत्य थिकाह कारण ओ एक पथ निर्देशक कार्य करैत छथि ।

ओना मैंथिली भाषाक आदि कोश कारक रूप मे पं० दीनबन्धु झा नाम उपस्थित कयल जाइत अछि। हुनके विद्वान पुत्र प० श्री गोविन्द झा "भारती मण्डन" पत्रिकाक तेसर अंक मे लिखने छथि जे हमर पिता एहि मैंथिली शब्द कोशक रचना १९१४ ई० मे प्रारम्भ कएलन्हि। जखन कि पं० भवनाथ मिश्र द्वारा रचित **"मिथिला शब्द प्रकाश"** नामक सात खण्डक विशाल मैंथिली शब्द कोशक प्रथम खण्ड १९१४ ई० मे वाराणसी से छपि के प्रकाशित भए चुकल छल। जकर प्रति उपलब्ध अछि। एहि कोशक विषय मे ब्रिटिश म्युजियमक कीपर एल० डी० बार्नेट, "जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, कुमार गंगानन्द सिंह तथा डा० सर गंगा नाथ झाक संग जे पत्राचार भेल छन्हि जकर विवरण आगाँ देव जे एहि कोशक महत्त्व के स्पष्ट करैत अछि। सिद्ध करैत अछि एकर कालके। ई संयोगैंक बात कहबाक चाही जे एकदिस जखन जार्ज ए० ग्रियर्सन सर्वप्रथम मैंथिली व्याकरण लिखैं मे प्रयास रत छलाह तखनहिं आजुक मधुबनी जिलाक जमुथरि (जमथर) ग्राम निवासी पं० दामोदर मिश्रक द्वितीय पुत्र, तथा महामहोपाध्याय श्री कृष्ण सिंह ठाकुरक अनन्य शिष्य पं० भवनाथ मिश्रक इ एक वर्षक भगीरथ प्रयत्न सँ १९१२ ई० मे विशाल विशाल सात खण्डक **"मिथिला शब्द प्रकाश"** नामक मैंथिली शब्द कोश बना लेने छलाह। जकर प्रथम खण्ड १९१४ ई० मे वाराणसी सँ छपि के सर्वप्रथम प्रकाशित भेल। जकर एक प्रति डा० एल० डी० बार्नेट, कीपर डिपार्टमेन्ट आफ ओरियन्टल पी० बी० एण्ड एम०एस०एस० लन्दन के प्राप्त भेलन्हि। एहि कोशक शब्द संग्रह वर्णमालाक क्रम सँ अछि। पहिने मैंथिली शब्द तकर हिन्दी तथा हिन्दीयौक संस्कृत स्तम्भानुसार देल गेल अछि। संस्कृत शब्दक कोन कोश, शास्त्र वा पुराण कि ग्रन्थ मे चर्चा वा प्रयोग भेल अछि तकर बिवरण एवम् लिंगक निर्णय देल गेल अछि। प्रथमे खण्ड मे अनठानवे टा दुर्लभ ग्रन्थक उल्लेख अछि ताही से अँटकर लगैंक अछि जे ई कोश कत्तेक उपादेय छल तैं उक्त वार्नेट साहेव कोशकार पं० मिश्र कें लिखलखिन्ह जे कोशक शेष छह खण्ड कतए भेटत ? हमरा अपन संग्रहालयक हेतु लेवाक अछि। जे अँगरेजी मे अछि। एहि प्रकारक समपत्रक प्रतिलिपि हम अन्त मे राखब। प्रथम ई पत्र २८/५/१९२५ ई० क छल। जकर उत्तर मे कृतज्ञता ज्ञापन करैत पण्डित जी बार्नेट साहेब कें सातो खण्डक एहि कोशक विवरण तथा परिचय दैत ई हो लिखलथिन जे अर्थाभावक कारणे १५५–रुपया ऋण लऽके प्रथम खण्डक केवल एक हजार प्रति छपा सकलहुँ। जकर दाम ओहि समय एक प्रति के छओ आना छल। ई पत्र २४/४/१९२५ क दोसर छल। एकरे संदर्भ मे—१४/७/१९२५ कें बार्नेट साहेव लिखैंत छथिन जे **"मिथिला शब्द प्रकाश"** सन उपयोगी पुस्तकक जे प्रकाशन नहिं भऽ रहल अछि तकर हमरा खेद अछि तैं सर जार्ज ग्रियर्सन कें एकर प्रकाशन मे सहयोग देवाक हेतु लिखि रहल छियन्हि। जाहि पत्रक उल्लेख करैत सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, रथफारन्हम, चेम्बरली, सूरी बिलायत सँ २५/७/१९२५ ई० कें पं० भवनाथ मिश्र कें लिखने रहथिन अंगरेजी मे। ई पत्र तेसर छल।

पुनः चारिम पत्र अछि जाहि मे वार्नेट साहेव मिश्रजीक २/३/१९२६ क पत्रक उत्तर मे लिखैंत छथिन जे कोशक शेष खण्डक सरकारी मशीनरी द्वारा प्रकाशन करेवाक मादे ग्रियर्सन साहेब के लिखने छलखिन मुदा हुनक अस्वस्थताक कारणे ई कार्य सम्भव नहिं भ सकल।

फेर ४/३/१९२६ ई०क पत्रक सन्दर्भ कें आगा बढ़बैत ११/३/१९२६ ई० कें पत्र द्वारा बार्नेट साहेब पं० मिश्र कें लिखैंत छथिन जे उक्त कोशक प्रकाशनार्थ डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के सेहो लिखलियन्हि अछि। ई पाँचम पत्र थिक। इंगलिश में।

पुनः छठम पत्र जे अछि से रथ फारन्हम, चेम्बरली, सूरी, इंगलैण्ड सँ पं० मिश्र कें सम्बोधित कए डा० ग्रियर्सन साहेब लिखैंत छथिन जे ५/५/१९२६ क पत्र पाओल आशा अछिं जे एहि कोशक शेष

खण्ड प्रकाशित भऽ सकत ई पत्र २५-५-१९२६ क थीक। ज्ञातव्य अछि जे डा० ग्रियर्सन साहेब १८७५ ई० उपरान्त मधुबनी अनुमण्डलक ब्रिटिश भारतीय प्रशासक छलाह ओ प्रथम मैथिली व्याकरण विद्यापति तथा मैथिली भाषा पर प्रामाणिक शोध ग्रन्थ लिखलन्हि। मधुबनीक गिलेसन (ग्रियर्सन) मार्केट वैह बनाके गेलाह। १९०२ सँ १९११ ई० तकक अन्तराल मे लिंग्विष्टिक सर्बे ऑफ इण्डियाक सदस्य तथा अध्यक्षो बनलाह पछाति सेवा निवृत्त भए अपन देश इंगलैण्ड चल गेलाह तथापि मिथिलाक लोक से प्रेम व्यवहार पत्राचार करितहिं रहलाह। एल० डी० बार्नेट साहेबक तथा डा० ग्रियर्सन साहेबक तथा आनो विद्वानक प० मिश्रक संग भेल पत्राचार यथावत् सुरक्षित अछि। जकरा अन्त मे उपस्थित कयल जायत। एहि दुनू विदेशी विद्वानक अतिरिक्त २६-६-१९२५ कें डा० सर गंगानाथ झा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक सिनेट हाल सँ प० मिश्रक कोश पर अमूल्य सम्मति देने छथि। ई सातम पत्र थीक। अही भाँति दिनांक १९-६-१९२७ ई० कें तिनमुकिया रोड कलकत्ता से डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या प० मिश्र कें लिखलथिन जे उपर्युक्त तिथि से पूर्वे तथोक्त कोशक छपल पहिल खण्ड हस्तगत भ चुकल छल। बार्नेट साहेबक कोशक शेष खण्डक छपेवा मे सहयोगक हेतु अनुरोध पत्र दूटा आयल छल जे "कलकत्ता युनिवर्सिटी एकरा छपेवाक प्रबन्ध करे", तँ ओ अपन सुझाव देलथिन जे मैथिलीक परम भक्ति रखनिहार तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाईक लेल अथक प्रयत्न केनिहार कुमार गंगानन्द सिंह सँ सम्पर्क कयल जाय। ई आठम पत्र अछि। अही भाँति पत्राचारक शृंखला मे कुमार गंगानन्द सिंह मेम्बर लेजिस्लेटिव एसेम्बली दिल्ली सँ प० मिश्र कें २-८-१९२७ ई० के पत्र लिखि पुछैत छथिन जे छपल पहिल खण्ड प्राप्त भेल, सम्पूर्ण पुस्ततक प्रकाशन मे कत्तेक द्रव्यक आवश्यकता छंक से सूचित करी। ई नवम पत्र अछि।

एहि प्रकारक कत्तेक पत्र आओरो अछि संगहि मिथिला मिहिर पत्रिकाक वसन्त पञ्चमी १९३६ ई० क मिथिलांक मे अठारहम पृष्ठ पर प्राचार्य रमेश्वर लता सं० महाविद्यालय दरिभगाक प० त्रिलोक नाथ मिश्र लिखित "मिथिलाक विद्वान" शीर्षक लेख मे प० भवनाथ मिश्र रचित "**मिथिला शब्द प्रकाश**", नामक ग्रन्थक उल्लेख भेल अछि। जाहि सँ सिद्ध अछि जे मैथिलीक सबसे पहिल कोशकार प० भवनाथ मिश्रे छलाह।

तखन प्रश्न उठैत अछि जे एहि अमूल्य महाग्रन्थक छः खण्ड भेल कि? उपर्युक्त ग्रन्थकार ग्रन्थक सम्पूर्ण छपेवाक सपना लेनहि १९३३ ई० क अगहन शुक्ल चौठ के चौवन्नम वर्षक अवस्था मे स्वर्गवासी भय गेलाह।

जखन कि हुनका चारि पुत्र मे सँ सभसे जेठ पुत्र प० तेजनाथ मिश्र सिर्वित नौ वर्षक छलथिन तथा छोट पुत्र प० श्री पुण्य नाथ मिश्र डेढ़ वर्षक। १९४२-४३ ई० मे पिताक लिखल ई पुस्तक कोनहुना झट दऽ छपि जाय एकर अगुताई मे प० तेज नाथ मिश्र, रमेश्वर यन्त्रालय दरिभंगाक मालिक कन्हैया लाल कृष्ण दास अग्रवाल के दए देलथिन। नेनमतिक कारणे जकर कोनो प्रमाण पत्रो लेव आवश्यक नहिं बूझि पड़लन्हि। ओ छपवाक सूर सार करितहिं छलाह कि अपनहिं स्वर्गवासी भए गेलाह। तत्पश्चात हुनक पुत्र मधुसूदन दास कें हमहूँ छपैक लेल आग्रह करैत रहलियन्हि ओहो सभ बेर तुरंत छपवाक आश्वासन दैत स्वर्गवासी भऽ गेलाह। बन्धु विद्रोह से मकान, प्रेस, व्यवसाय सभ नष्ट भए गेलन्हि। कृष्ण दास क पौत्र ज्योतिः प्रसाद अग्रवाल सम्प्रति एकमात्र छोट छीन पोथीक पसार (दोकान) लगाके वैसल रहैत छथि। कइएक बेर जाके कहलियँन्ह "जे रुपैया लेवाक हो से लिय मुदा ओहि कोशक पाण्डु लिपि ढूँढ़ि के दिय नहि त गोदाम मे हमरा ताकए दिय मुदा प्रत्येक बेर खोजि रहल छी सैह कहैत छथि। ओ नष्ट भऽ गेल कि कत्तहुं राखल अछि तकर पता नहिं।

अहि क्रम मे मिथिला शब्द प्रकाशकार प० भवनाथ मिश्रक द्वितीय पुत्र महाकवि प० श्री मतिनाथ मिश्र "मतंग" अपन पूज्य पिताक मैथिली सेवाक पुण्य कार्य कें आगाँ बढ़बैक इच्छा से **"मैथिली शब्द कल्पद्रुम"** नामक महाकोशक रचना आइ से आठ नौ वर्ष पूर्व प्रारम्भ कयल आ सम्पूर्ण कए पाठकक आगाँ उपस्थित छथि ।

एहि महाकविक संस्कृत मे रचित **"भार्गव विक्रमम्"** पद्य महाकाव्य **"महर्षि विश्वामित्रम्"** नामक गद्य महाकाव्य **"ऋतु विभ्रमम्"** नामक खण्ड काव्य प्रकाशित छन्हि आ **"नर्झरिणी"** एकटा पद्य संग्रह सेहो प्रकाशित होमए जा रहल छन्हि ।

संगहि **"जय राजा सलहेस"** नामक मैथिली पद्य महाकाव्य मैथिली अकादमी बिहार द्वारा प्रकाशित छन्हि जाहि पर नेपालक सिरहा मे १४ अप्रैल १९९७ ई० कें सम्मानित कयल गेलन्हि महाकवि कें। अहू से उपरी मेघदूतक समच्छन्द मे मैथिली अनुवाद आ **"ठहाका"** आदि छोट छीन मैथिली खण्ड काव्य प्रकाशित भए चकल छन्हि । हजारोक संख्या मे मैथिलीक पद्य जे अप्रकाशित छन्हि । जनिक मैथिली कोश ग्रन्थ, **"मैथिली शब्द कल्पद्रुम"** छपल मैथिली भाषी मिथिलावासीक सेवा लेल समर्पित भ रहल अछि । एकर केहन उपादेयता छैक से त मैथिली भाषीक ग्राहकता पर निर्भर करैत अछि समय आ समाज पर निर्भर करैत अछि । ग्रन्थकार अपन कर्त्तव्य टा कयलन्हि अछि ।

अहि से पूर्वो प० भवनाथ मिश्रक **"मिथिला शब्द प्रकाश"** से अतिरिक्त महावैयाकरण प० दीनबन्धु झा द्वारा **"मैथिली शब्द कोश"** डा० श्री जयकान्त मिश्र द्वारा अपूर्ण **"बृहत् मैथिली शब्द कोश"** तथा प० श्री गोबिन्द झा द्वारा **"मैथिली अंगरेजी शब्द कोश"** रचित भेल अछि जे प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली के कोश बलो कम नहि अछि । तैयो पतञ्जलिक शब्द मे कहत्र जे "महान् शब्दस्य प्रयोग विषयः" एहि पर एखन बहुत कार्य कर्त्तव्य बाकी छैक । एहि सब कोश से मैथिलीक कोश पूर्ण नहि भेल अछि पूरक अवश्य बनल अछि कोशक । एहिना यदि पहिलुका कोशक त्रुटि के देखि के एक पर से दोसर पोथी बनैत रहत त एक दिन पूर्ण भके रहत ।

प्रस्तुत **"मैथिली शब्द कल्पद्रुम"** गामक परिवेश से चिर परिचित प० मतिनाथ मिश्र द्वारा गामैक परिवेश मे लिखल गेल अछि तैं आन कोश सँ एहि मे ठेंठ मैथिली कि हेरायल नुकायल मैथिली शब्द अधिक संगृहीत भेल अछि । संगहि क्रियापद संज्ञा विशेषण संस्कृत उर्दू आ अन्य शब्दक परिचय, कतिपय शब्दक प्रयोग द्वारा ओकर अर्थक स्पष्टीकरण आदि अधिक उपयोगी बना देलक अछि एकरा । हँ एकटा बात ई थोड़ेक अधिक बूझि पड़ैत अछि जे सामान्य मे विशेष वा अपवादक उल्लेख आवश्यके छैक मुदा मैथिली शब्द कोश मे प्रत्येक शब्दक आगाँ मै० परिचय आवश्यक नहि बूझि पड़ैत अछि । दोसर मैथिली उपलक्षण (मुहावरा) के शब्दक रूप मे राखब सेहो किछु अखरैत छैक । एकरा यदि एक अलग से मुहावराक सूची राखल जाइत त नीक छलैक । ई सब त बहुत छोट बात अछि मुदा सभ मिला के मैथिली शब्द कोशक एकटा शून्य स्थान के भरि सकल अछि ताहि मे कोनो दोष (संशय) नहि । कारण पूर्वाव लोकन कएला से स्पष्ट होइत अछि जे पहिने राजा महाराजाक समय मे संस्कृतक प्रताप से शाही सुलतानीक अमलमे अरबी फारसीक मारिसे आ एखन हिन्दी अंगरेजीक दानवी प्रहार से डरा के कत्तेक मैथिलीक मौलिक शब्द हिमालय गंगाक बीच, कागी कोशी तथा गण्डकीक मध्य क्षेत्र मे सुदूर मुंगेर, भागलपुर, देवघर आदि ग्रियर्सन द्वारा सीमांकित मैथिली भाषी क्षेत्रक गावँ घर बोन झाँखुर मे हेरायल भोतियायल नुकायल अछि तकर ठेकान नहि । तैं हमर मनतव अछि जे उपर्युक्त क्षेत्रक गावँ गावँ जाके यावत् जन सम्पर्क नहि कयल जायत ताहि ताहि ठाम से शब्दक संग्रह नहि कयल जायत

तावत् केओ मैथिली शब्द कोश के पूरा करवाक दावी नहिं कए सकैत छथि। ई हमर मानता अछि। वास्तविक आवश्यकता एहि वातक छैक जे संस्कृत अंगरेजी जेकाँ मैथिलीयो शब्दकोश वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बनाओल जाय। ओकर मिथक के बूझल जाय।

अँगरेजी वा विश्वक अन्य भाषा मे निहित विचार कें अपन परिप्रेक्ष्य मे उपस्थित केनाई कोनो अधलाह नहिं थिकैक मुदा अंगरेजीक वा आन भाषाक अनुवादित नाँ भेल किछु समालोचना पढ़िके तकर अनुकरण कके मैथिलीयो मे अपना के ओकर सम्राट बूझिलेव बहुत भयावह प्रवृत्ति थिकैक कारण देखल गेल अछि जे अनावश्यक, अनभिलषित, अनन्वित रूप से मौलिक मैथिली शब्द के छोड़ि विदेशी शब्दक व्यवहार करव एकटा साज (फैसन) चलि पड़ल अछि। अन्धाधुन्ध विदेशी शब्दक प्रयोग के प्रगतिशीलता बूझल जाय लागल अछि। मुदा हमरा ई कहै मे कनेको रोच (हिचकिचाहटि-भय-आपत्ति) नहि भए रहल अछि जे एहि प्रकारक प्रगति शीलताक झाँप (पर्दा) हुनक मैथिलीक अनभिज्ञताक आकार के नुका नहिं सकैत छन्हि प्रत्युत उपहासास्पद रूपसे उघाड़ि दैत छन्हि। आदरणीय कोश कार एहि वातक पूरा ध्यान रखलन्हि अछि जे मैथिलीक अपन मौलिक शब्द खुरखुन (रत्तीरत्ती) क के ढूँढ़वाक चाही से यदि नहिं भेटए त हमरा लग संसारक सव से पैघ शब्दक रत्नाकर संस्कृत अछि जाहि से बढ़िके अभिव्यञ्जकता भरिसके आन कोनो भाषा मे पाओल जाइछ। नहिंत विदेशी अनिवार्य शब्दोके फजीहत के फज्झति स्टेशन के टीसन टाइम के टेम वेनियन के बनियानि लैनटर्न के लालटेम कहितहिं छियैक मैथिलीकरण कएकऽ मैथिली के अन्य भाषाके पचाके स्वसात् करणक अद्भुत सामर्थ छैक मुदा तकरा अप्राकृतिक रूप से व्यवहार कऽके प्रगतिशील कहेवाक प्रयास छुच्छे हास्यास्पद होइत अछि। कोनो भाषा जत्तेक अपना रूप मे रहैत अछि तत्तेक सुन्दर लगैत अछि। मुदा संस्कृत त समस्त उत्तर भारतीय भाषाक उपजीव्य थीक तैं ओकरा से शब्द ग्रहण करवा मे एकोरत्ती अस्वाभाविकता नहि बूझि पड़ैत छैक। हम त कहव शब्द यदि नहिंयो लेल जाय तैयो संस्कृतक/ भाव, संस्कार मे दूध पानि जेका एकाकार भए गेल छैक जे ओकरा अलग नहिं कयल जा सकैत छैक।

एहि महाकोशक पाण्डुलिपि जखन एकटा साहित्य अकादमीक निर्णायक मण्डलक एक व्यक्ति के देखा के एकरा छपेवाक हेतु प्रयास कए देवाक हेतु कहने रहथिन त ओ कहने रहथिन जे एहि कोश मे साहित्यिक शब्द नहिं अछि। शब्दक विषय मे हुनक ओछ धारणा पर हमरा हँसी अबैत अछि जे साहित्यिक शब्द कहल जाइत छैक ककरा। शब्द से साहित्य बनैत छैक? कि साहित्य से शब्द? वा कोन शब्द एहन छैक जाहि से साहित्य नहिं बनाओल जा सकैत छैक? यदि हुनक तात्पर्य एखन तक बनल विख्यात साहित्यक शब्दे टा से छन्हि त एहि प्रकारे संसारक सभ भाषा के दू चारि टा भाषा गीरिलेत वाकी क अस्तित्त्व समाप्त भ जायत। तैं कोनो भाषाक कोनो शब्द असाहित्यिक होइतहिं नहिं छैक जैं कि संसारक भिन्न भिन्न देश क्षेत्र में भिन्न भिन्न भाषा बाजल जाइत अछि आ ओहि भाषा मे लोक साहित्य उत्पन्न होइत अछि। ई प्रकृतिक देन थिकैक एकरा बुझिये के प० श्री मतिनाथ मिश्र एहन कोश बनौलन्हि अछि। हिनको भाषा के उच्च अगड़ी पिछड़ी दलित आदि के रूप मे विभाजित करवाक इच्छा नहिं छलन्हि।

एक वात आओर कहव जे मैथिली साहित्य तथा भाषा तकर शैली के व्यक्तिगत रूप मे स्थापित कय अपन नामक झण्डा गाड़वाक लेल गुटबाजी कएके एक दोसरा गुट पर आक्षेप प्रत्याक्षेपक करवाक प्रवृत्ति मैथिली के नीक जेकाँ पाछा धकेलवाक प्रयास मैथिली भाषी मे देखल जाइत अछि। एतेक विशाल क्षेत्र मे चारि कोटि से ऊपर लोक द्वारा बाजल जाइ वाली एहि भाषा मे थोड़ेक थोड़ेक अन्तर

अएवे करतैक किएक त भाषाक वानी अर्थात् बजवाक शैली—"चारि कोश पर वदले वानी" कहल गेल अछि तखन "अछि" ,'अहि" "ए' "दए देलथिन" "दय देलथीन" "दए देलखीन" "दय देलखीन" "दऽ देलथिन" "दऽ देलखीन" "भए गेलै" भय गेलै भऽ गेलै" "कहूलन्हि कहलनि कहूला" "आऊ आबू" "ओ वह" "से सह" "थिकाह थिकीह छिकाह छिकीह थिका थिकी छिका छिकी" "हम हमे मे" "हमर मोर" "पहिले पहिने" कहने रहथि कहले रहथि" "देलियै रहे, देने रहियै, दएने रहियै" "हे औ ! हे यौ ! हे हो !" "जाइत छथि, जाइ छथि" "मनमोन वनवोन" उच्चारणक बहुत विविधता छैक मुदा उच्चारण जेना होए लिखै मे गाय माय भाय सैह लिखल जयवाक चाही। एहि उपर्युक्त उदाहरण के रहितहुँ एक एहन मर्यादा सूत्र छैक जे सभटा के मैथिली मे बन्हने छैक ओ मर्यादा छैक जे उपर्युक्त प्रयोग मैथिली भाषी क्षेत्र मे कयल जाइत अछि। दोसर एहि क्षेत्र से बाहर ऐ से भिन्न प्रयोग होइत अछि। भोजपुरी त भिन्न अछिए जे मगही जे अधिक तर ठाम छकार हकारक उच्चारण टा से भिन्न देखल जाइत अछि ओतहुँ वा परोसी भाषा बंगला असमिया मे ऐ प्रकारक प्रयोग नहिं देखल जाइत अछि तैं मैथिली भाषी क्षेत्र मे मैथिली भाषी द्वारा बाजल गेल एकर सभ वानी मैथिली थीक।

संस्कृत व्याकरणक जनिका थोड़बो गम (ज्ञान अनुभव) होयतन्हि जे पाणिनि सन वैयाकरण एक एक शब्दक सय सय वैकल्पिक रूप साधनिका से सिद्ध कएके देखा देने छथि। पतञ्जलियो कहने छथि —"एकस्यापि शब्दस्यबहवोऽपभ्रंसा भवन्ति" तैं हम कहव जे पूज्य प० मतिनाथ मिश्र द्वारा लिखित ई कोश मैथिलीक बहुत पैघ खगता के पूरा कए रहल अछि। एहि वैकल्पिक रूप के देखाके।

भाषा पर भौगोलिक प्रभाव कत्तेक छैक से पशु पक्षी तक मे देखल जा सकैत अछि हाथी धत्त कहला से वैसि जाइत अछि पीछू कहला से पाछा आ अगत कहला से आगाँ दिश बढ़े त अछि। वरद अ कहला स चलैत अछि हुऽ कहला से ठाढ़ भऽ जाइत अछि। साँढ़ भैंसा वतू आदि अपन हाक के सूनि के दौड़ल अवैत अछि। अर्रऽ कहला से वकरी लग अवैत अछि लिहु कहला से भागि जाइत अछि। एहिना सूगर भेंड़ी अपना हेतुक शब्दक प्रयोग बुझैत छैक। ओहि शब्द से यदि अन्य भाषा भाषी क्षेत्र मे कहल जाइक त नहिं बुझैत छैक ओतए ओकरा हेतु दोसरे शब्द होइत छैक। भाषाक विशेषता भूगोल पर निर्भर करैत अछि तैं संसार मे अनेक भिन्न भिन्न भाषा होइत अछि। तहिना मिथिलाक एकटा भूगोल छैक जकर सीमांकन शतपथ ब्राह्मण मे आरण्यकमे थोड़ बहुत भेल अछि मुदा वृहद्विष्णु पुराण मे स्पष्ट अछि—"कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकी मंधिगम्य वै, योजनानिचतुर्विशत् व्यायामः परि कीर्त्तितः। गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्चदशान्तरे, विस्तारषोड्शः प्रोक्तो मिथिला देशस्यवै"। अर्थात् कोशी सँ गण्डकी तक पूवे पच्छिमे चौवीस योजनक क्षेत्र जाहि मे पन्द्रह टा नदी वहैत अछि तथा गंगा आ हिमालयक उत्तरे दक्षिणे विचलका क्षेत्र मिथिला देश थीक। एहिठाम कोशी से मार्कण्डेय पुराणोक्त "कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषुगीयते" क अनुसार काली कोशी बुझवाक चाही जे महानन्दा सँ पूव वहैत छथि। एहि क्षेत्रक प्रकृति मे कूट कूट कएके मिठाँस भरल अछि। एहि ठामक भाषा पशु पक्षीक बोली, आम, जामु, केरा, कटहर, लताम, इलची आदि फल तथा अन्न पानि मे जे मिठाँस अछि से विश्वमे तकने नहिं भेटैत छैक। एहन छैक एहि भूगोलक प्रभाव। जाति धर्म निर्विशेष ऐ ठामक निवासी मैथिल छी। अत्याचारी होएवाक कारणे राज्यासन से उतारल जए वाक चर्चा जैं हेतु चाणक्य अर्थशास्त्र मे कएने छथि कराल जनक के रूप मे एकमात्र ऐतिहासिक राजा क उल्लेख भेटैत अछि जे अनुमानतः तेसर वा चारिम ईस्वी शताब्दीक पूर्व छल होयताह। ओना उपनिषद रामायण महाभारत पुराण

सभ ठाम मिथिला राज्यक शासक के रूप मे जनक वा विदेह वंशक राजाक उल्लेख अछि। ततः पर मिथिलाक इतिहास, अन्धकार युग मे प्रवेश करैत अछि। श्रीमद् भागवत पुराण मे पाँचटा श्लोक मिथिलाक बलि राजाक सम्बन्धसे आयल अछि आ इहो श्लोक अछि—

अंग बंग कलिंगाद्याः स्त्रुघ्न पुड्रान्ध्र संज्ञकाः
जज्ञिरे दीघ तमसो बलेः क्षत्रे महीक्षितः

अर्थात् मिथिलाक बलि राजाकें दीर्घ तमस नामक ऋषि से अंग बंग कलिंग स्त्रुघ्न पुण्ड्र तथा अन्ध्र नामक छः टा क्षेत्रज पुत्र उत्पन्न लेलकन्हि जे सभ अपना नामक अंग बंग कलिंग स्त्रुघ्न पौण्ड्र आ आन्ध्र राज्य कायम कएलन्हि। जाहि मे वंग एतेक प्रतापी भेलाह जे सुदूर हिन्दचीन देश तक अपन साम्राज्य स्थापित कएलन्हि। बंगालक शासक होएबाक कारणे बंगाली शासक कें ओतए बौङ लौग कहल जाय लगलैक। चीनी यात्री हेन सांगक यात्रा वृत्तान्त मे राजा बलिक नाग पूजक रूपमे तथा राजधानीक कमला बलानक तट पर होयबाक उल्लेख अछि। एहने महत्त्व पूर्ण बलिगढ़क खोदाई सरकार द्वारा लम्बित अछि। ६४७–४८ मे हर्षवर्द्धनक मृत्यूपरान्त हुनक तिरहुतिया मंत्री जखन राज्य पर अधिकार कए लेलक जकर नाम अरुणाश्व छलैक प्रायः ओकरे वंशजक जखन मिथिलाक राजधानी मुंगेरक अधिक लगीच बेगूसराय मे छल बोधगया मे बहुमूल्य चढौआ चढेबाक लेल एक बौद्ध मण्डली जा रहल छल हुनक सेनापति किरातार्जुन द्वारा लूटि लेल गेल। जाहि से कुपित भएके चीनी भूटान तथा नेपालक सहयोग से मिथिला पर आक्रमण कए एकरा अपन अधीन बनाय लेलक। लगभग एक डेढ़ सय वर्ष तक चीनक अधीन रहलाक बाद एतए चीनक लूट खसोट तस्करी से अकच्छ भएके मिथिलाक कोन कोन क लोक के जगाय छोट छोट राजा सभके संगठित कए अलौकिक वीरता से राजा सलहेस चीनी भूटानी शासन कें मिथिला से उखाड़ि फेंकलन्हि आ मिथिला के अराजकता से बचा लेलन्हि तैं हुनक मिथिलाक गाम गाम मे आइ तक पूजा भए रहल अछि। ओम्हर कराल जनक क उपरान्त मिथिला अठ्ठकुल वैशालीक अधीन भए गेल। फेर वैशाली जखन गुप्त साम्राज्य के अधीन भए गेल त मिथिला गुप्त साम्राज्य मे मिला लेल गेल जखन मिथिला तीरमुक्ति वा तिरहुत से प्रसिद्ध भेल। मध्य काल मे मिथिला बंगाल के पाल वंशीय शासक सम्भवतः सातमी आठमीक ईस्वी के शासन मे रहल पुनः ओतुक्के सेन वंश क शासन मे आयल। मिथिला के अराजकता से दूर कए गहड़वाल राज्यक सेनापति कर्नाट वंशीय नान्य देव कें एतयक लोक अपन मिथिलाक राजा बनौलक जकर अन्त अपने कुल पुरोहित कामेश्वर ठाकुर द्वारा विद्रोह कएला से कर्नाट वंशीय अन्तिम राजा हरिसिंह देवक समय मे भेल। ई अछि मिथिलाक अति संक्षिप्त इतिहास आ राजनीति। तखन होइत अछि बंगालक सूबेदार तोधनक आक्रमण आ गयासुद्दीन तुगलक द्वारा मिथिला के अपना अधिकार मे लए ओइनवार ब्राह्मण कामेश्वर ठाकुर के राज्य देनाई। ओइनवार वंशक राजा कीर्त्ति सिंह आ शिव सिंह पुनः एकरा स्वतन्त्र बनेबाक प्रयत्न कएलन्हि किछु दिन बनेबो कएलन्हि मुदा सुलतानक बल के आगाँ टिक नहि सकलाह। तहिया से मिथिला करद राज्य बनि गेल। मुदा एकर संस्कृति पर एतेक प्रहार कहियो नहि भेल जत्तेक आइ गम्भीर रूप से भए रहल अछि। तकरे रक्षा हेतु पूज्य प० श्री मतिनाथ मिश्र एहि प्रकारक मैथिली शब्द कोश बनेवाक भगीरथ प्रयत्न कएलन्हि आ हुनक योग्य चारू सुपुत्र अपन पिताक सुकीर्त्ति तथा मैथिली भाषाक प्रति अपन मातृ ऋण चुकेवाक लेल पूर्ण उत्साह देखौलन्हि। ओहू चारू पुत्र श्री रमानाथ मिश्र श्री सतीनाथ मिश्र श्री डा० मोहनाथ मिश्र तथा श्री सोमनाथ मिश्र मे डा० श्री मोहनाथ मिश्रक परिवारक श्रम समय तथा अर्थक जे एतन्निमित्तक त्याग भेलन्हि अछि से अतुलनीय अछि।

आजुक नगरीय जीवन पानि बसात प्रकाश सभ प्राकृतिक वस्तुक कारन पराधीन भए गेल अछि एकर लाख वैकल्पिक व्यवस्था कएल जाय मुदा तैयो नियमित होएबाक भरोसे नहिं तेहना परिस्थिति मे एतेक टा ग्रन्थक प्रूफ संशोधन तथा निर्देशन सुकमालकी नहिं छैक। जखन कि घरक काज आफिसक काज बच्चा सभके पढ़ौनाइ लिखोनाइ सामाजिक सम्पर्क सभ टा अनिवार्य छैक। श्री सोमनाथ मिश्र त किछु आर्थिको साहित कएलथिन अछि। जेना तेना एहि कोशक छपाई एक अश्वमेध के बरोबरि थीक। एकर प्रकाशन मिश्र बन्धु प्रकाशन, जमुथरि, पो०—हटाढ़-रुपौली भाया-झंझारपुर जिला-मधुबनी-847404 के द्वारा कयल गेल अछि। एहि प्रकाशनक ई पाँचम पुस्तक थीक। **"मैथिली शब्द कल्पद्रुम"**। सव-से पहिने प० यन्त्रनाथ मिश्रक **"उल्का भ्रमण"** नामक मैथिली कथा संग्रह श्रावणी पूर्णिमा १९९६ वे कें प्रकाशित भेल तखन संस्कृत मे छोट छोट दू टा स्तोत्र तखन कोश कारक मेघदूतक समच्छन्द मे मैथिली अनुवाद तत पर ई प्रस्तुत अछि। पहिल पोथी आयुष्मान् डा० श्री मोहनाथ मिश्रक सफल सम्पादन मे प्रकाशित भेल छल। हम चाहैत छलहुँ जे इहो हिनके सम्पादकत्त्व मे छपे मुदा आग्रह भेलन्हि जे एकर सम्पादक अहीं बनी तैं हमरा अपन नाम देमए पड़ल नहिं त सभ काजक सम्पादन मोहनाथ मिश्रे कएलन्हि अछि। सभ टा प्रूफ इएह देखलन्हि। हम निमित्त मात्र छी तथापि अपन भातिजक भाषा संस्कारक जागृति देखि के हम गौरवान्वित भए रहल छी कारण वेद मे एकटा मन्त्र अएलैक अछि जे

उतत्त्व श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम्, उतत्त्वः पश्यन्न ददर्श वाचम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायवे पत्त्य उसती सुवासाः।

अर्थात् वाणी के मुनियों के बहुत नहिं सुनै छै अर्थात् बूझि नहिं पबैत छैक देखियो के कतेक देखि नहिं सकैत छैक अर्थात् ओकर रहस्य नहिं देखि सकैत छैक आओर ओहीठाम ओ वाणी जकरा पर प्रसन्न होइत छथि तकरा आगू मे पति लग पत्नी जेकाँ सभ रहस्य कें उघाड़ि दैत अछि। एहि प्रकारक भाषाक जागरण दैवी सम्पत्ति मानल भेलैक अछि। से देखैं मे हमरा आयल अछि। लेखक आ सम्पादक कहाँ तक अपन प्रयास मे सफल भेलाह अछि तकर प्रमाण त एकर ग्राहके दए सकैत छथि मुदा हम कहब जे मिथिलाक निवासी रहथु कि प्रवासी जनिका अपन मातृभाषा पर स्वाभिमान होएतन्हि आ रहबाक चाही ओ संसारक कोनो क्षेत्रक कोनो समुदाय के अपन भाषाक परिचय नहिं छोड़ैत देखिके मैथिली सन मधुर पुरान नवीन अपन भाषाक प्रति अवश्य स्वाभिमान जगौताह। बुझा पड़तन्हि जे भाषा प्रकृतिक देन थिकैक कोनो बनौत्री (कृत्रिम) वस्तु नहिं थिकैक। भाषा लोकक अपन परिचय थिकैक। तखन एहि परिचय के स्पष्ट केनिहार लेखक कलाकार शिल्पी आदि के यदि हम अपनहिं प्रोत्साहित नहिं करबैक त अनका कोन खगता छैक। आब मिथिला वासियो विपन्न नहिं जानि पड़ैत छथि तखन निर्वाह सामग्री से उपरी विलास सामग्री मे सँ थोड़ेक थोड़ेक बचा क बंगाली, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू आदि भाषा भाषी जेकाँ हम जँ मैथिली पुस्तक कीनिके मैथिली के उसास करी त त निश्चित रूप से हम अपने जड़ि कें बलगर बनायब।

विज्ञ मैथिली भाषी लोकनि सँ एहि से अधिक प्रार्थना करबाक त हमरा क्षमता नहिं अछि मुदा इहो हमरे सभ के सोचय पड़त जे जँ केओ लेखक कलाकार एतेक समय दए कें श्रम दए के संग संग हजारो लाखो रुपैया बुकनी कऽके पोथी छपा सकैत छथि त कि हमरा सभ के ई मिथिलाक धरती एतबो पूँजी नहिं देने छथि जे दश बीस वा सय टका दएके एकटा मैथिली पोथी कीनि सकीह ?। थोड़ेक कालक लेल यदि हमरा मन मे इएह छुद्र भावना आबे जे सभ अपन लाभ लेल लिखैत त अछि एक दिन एकटा जन राखि कें हमरा देखबाक चाही जें ओ कएक पन्ना लिखैत अछि आ ओकर कत्तेक बोनि

होइत छैक आ तकरा छपा के सेहो देखि लेवाक चाही जे कत्तेक लागत लगैत छैक। एकर सोच मैथिली भाषीक बुद्धि मे आवि जायत तहिया बंगला, तमिल, तेलगू आदि भाषा जेकाँ मैथिलीयो भाषा विश्व मे अपन स्थान अवश्य बना लेत। अन्त मे हम ओहि सभ व्यक्तित्वक चिर आभारी रहब जे भिन्न रूप मे सहानुभूति पूर्वक एहि कार्य मे सहयोग प्रदान कयलन्हि अछि। एहि प्रकरण मे दू तीन उल्लेख आवश्यक। प्रथम विद्वान प्राध्यापक, धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय, आयुष्मान् डा० सती रमण झा जे अपन क्षमता भरि एहि कार्य मे रचनात्मक सहयोग कयलनि। आ अन्त मे मुद्रक बन्धु श्री सुनील आ श्री आनन्द जी। हिनका लोकनिक कार्य प्रतिबद्धता आ शब्द कोश प्रकाशन प्रति हार्दिक आकर्षणक फल थिक जे ई अतेक कम समय मे अपनेक हाथ मे उपलब्ध अछि।

! जय मैथिली !

चन्द्र नाथ मिश्र
०२/०८/१९९७ ई०

लिखनिहारक कहब छनि

अखनुक समय मे ठाम ठाम पर सदिखन मैथिली भाषाक जागरण आ विकासक लेल रंग रंगक वैसार होइत रहै अछि। एहि मे हमरो बहुतो ठाम जाइक जोग लागल। परन्तु ऐ वैसार सभक की लच्छ से प्रायः अपन अज्ञानता सँ नहि जानि सकलौं। हास विनोद आ चाह पान सँ भिन्न कोनो किछु करैक बिचार नहि बूझि पड़ल।

मिथिला दिगारक वासी आ मैथिली भाषी सब वर्गक आ मुसलमानो लोकके कत्तौ नै देखल। तथाकथित उच्च वर्गक लोकैटा कें मैथिली भाषा मातृभाषाक अधिकार तँ नै छनि। जँ उच्च वर्ग सँ अलग वर्गोक मातृभाषा थीक तँ दुखक वात जे आन वर्ग कें ने मैथिल होइक ने मैथिली भाषीक स्वाभिमान छै ने ज्ञान छै। वड़ पुछला पर केवल कहि देत 'तिरहुतिया बोली" तैं एकरा सवकें एहन वैसार सब मे संग करब तकर खगता छै। एकर सम्पूर्ण अभाव रहै अछि। मैथिलीक उत्थानक अभियान मे ई बुझू तँ रीढ़ थीक।

दोसर देखल जे विद्वानो लोकनि अर्थात् विशेषज्ञो सव अपन कविता, लेख आ भाषण मे संस्कृत उर्दू आ अंगरेजी भाषाक शब्द प्रायः चालीस प्रतिशत मिला लैत छथि। की ओहि सव शब्दक मैथिली शब्द नै छै? जेना 'हस्ताक्षर' अथवा 'दस्तखत' एकर मैथिली शब्द "अखरताली" थिक मुदा तकर प्रयोग नै करै छथि।

एहि सव लोकक कहब छनि जे आन आन भाषा के शब्द आवि गेने मैथिली भाषाके भण्डार भरैत अछि मुदा हमर मैथिलीक शब्द सँ आन भाषा कहाँ अपन भण्डार भरैत अछि तखन की मैथिली मात्र खेहस्टल अछि। जे आनक गहना पहिरि धनिकानि वनत। ई सव वात अपन अज्ञान कें झँपैक लाथे टा थिकैक। "निगरानी" "सेवा" "गलती" "याद राखव" 'अगर' 'मगर' आदि शब्द सव बजता मुदा ओकर स्थान मे "ओगरवाहि" "निकमानि" "घट्टी" "मोन राखव" ई सव शब्द एवम् "जँ" "मुदा" नै बजता, ई नै वर्जक दुइटा अर्थ भऽ सकै अछि—की ऐ शब्द सभक ज्ञाने नै रहै छनि आकि मैथिलीक साहित्यकारे ओकरा हीन बूझि उपेक्षा करै छथि। बहुत एहन शब्द अछि जकर ज्ञान मैथिली विशेषज्ञों कें नै रहै छनि ने ओकरा तर्कक चेष्टा रहै छनि।

एहि सव कारणें पड़ाइत की विलाइत मैथिली शब्द कें जोगा क रखैक हेतु हम आतुर रहऽ लगलौं। हमरा आन कोनो भाषाक प्रति घृणा वा उपेक्षा नहि अछि मुदा जखन मनक भाव बुझवै ले अपन मैथिली शब्दे बलगर अछि तखन आन शब्द किये लेव।

मैथिली मे संस्कृत अथवा तकर तद्भव क प्रयोग पूर्वाषरै सँ होइत आयल अछि तकर कारण जे प्राचीन काल मे मिथिला मे जखन साधारण लोकक भाषा अभद्र "टुट्टै" "फुट्टै" "जागै" एहि प्रकारक छल तखन सभ्य सुशिक्षित वर्गक वीच संस्कृतैक टा शिक्षा होइत छलैक। नान्य वंशीय मिथिलाक राजाक समय मे संस्कृतक किछु शब्द के तद्भव एवम् तत्सम लऽ कऽ ओ अभट्टो शब्द कें परिष्कृत कऽ कऽ सुन्दर कोमल मैथिली भाषा जनप्रिय भऽ गेल। विद्यापति गोसाइनियौ क गीत मे (तुअ) 'पाँड़रि' आदि अभट्टो शब्दक प्रयोग कयने छथि। वैह परिष्कृत भाषा मैथिली सर्वमान्य भऽ गेल तैं संस्कृत शब्द ओकर जननी कहल जाइत अछि।

मुदा आपर पर अर्थात् नान्यवंशीय राज्यक अन्तिम काल मे राज्य हस्तान्तरित भऽ गेल तखन देश पर तुर्क सभक आधिपत्य भऽ गेने मिथिलो वंचित नै रहल। यत्र तत्र एतहु मुसलमानक प्राबल्य

होमऽ लागल जतय दीन हीन जन वोनिहार सव काज करैत रहै छल ओकरं द्वारा अधिकतर निम्न वर्ग मे उर्दूक प्रचार आ प्रसार होइत गेल जाहि सँ मैथिली मे घोंसियाइत गेल। तैं 'जनक' संग स्थान मे 'मजदूर' आ 'बोनि' कें बना देलक 'मजदूरी' परिश्रम भऽ गेल 'मेहनति' (मिहनत)।

उर्दू मैथिली कें तीन रूपें दवौलक। १–मैथिली शब्द कें सोझे उड़ा कऽ, जेना–'खर्च'। एकर मैथिली शब्द "उठानि" थीक। उदाहरण–'हमरा ओतय 'शक्कर' क वड़ उठानि अछि। परन्तु क्यो आव उठानि नहिं बजैत अछि आ खर्च कहवे मैथिली बूझि पड़ैत अछि। एहिना अनेक शब्द अछि मुदा विस्तारक डरें नहिं उल्लेख कऽ सकै छी।

२–मैथिलीक संग सौतिन जकाँ लागल उर्दू शब्द–माउगि मेहरि सिरहर सलामी आदि आदि रहै अछि। सिरहर थिकै मंगलघट सलामी भेल देवताक प्रणामक द्रव्य। परन्तु 'सिरहर गोड़लगाइ' नै कहल जाइछ एहिना 'माउगि' तँ जातिक रूप मे स्त्री थीक किन्तु 'मेहरि' शब्द ओकरा विवाहित बुझवै अछि कारण जे मुसलमानक निकाह (विवाह) काल मे स्त्रीक मोल आँकल जा कऽ ओतवाक मुद्रा देलें पर विवाह होइत छैक। ओहि मोल कें मेहर कहल जाइत छैक ताहि सँ कीनल मेहरि होइत अछि। एकरा 'जनीजाति' नहि कहि माउगि मेहरि कहल जाइत अछि।

एहन एहन कैकटा शब्द अछि जेकर सभ्य सुशिक्षित उच्च कोटिक व्यक्तियौक घर मे प्रचुर व्यवहार होइत अछि। तकरो संभवतः मुगल सम्राट अकबरक कृपा सँ आयल खण्डवला कुल मे मिथिला राज्यक प्रभाव थीक।

३–उर्दू शब्द कें तोड़ि मरोड़ि के मैथिलीक उच्चारण योग्य बनाओल मैथिली शब्द मेहनति। मिहनत सँ बनिगेल, मुहल्लत् सँ मोहलति, मुजावरा सँ मोजवरा आदि आदि।

ऐ प्रकारें मैथिली शब्द कें पड़ाइत, बिगड़ैत आ विलाइत रहैत सोचि कें हम कोना बूझव जे हमर मैथिलीक भंडार भरि रहल अछि। एहि रूपें बुझनिहार व्यक्ति कें मैथिलीक शब्दक ज्ञाने नै छनि आ कि मातृभाषा मैथिलीक उपर निष्ठे नै छनि ई दुइएटा कहि सकै छी। मैथिलीक नाम पर मनोरंजन आ फूसि साहित्यकार बनने किछु नै फल।

हिन्दी आ अंगरेजी एहि देशक बड़ नव भाषा अछि तथापि जें एक राष्ट्रभाषा आ दोसर विश्व भाषा रहने परमादरणीय अछि। मुदा कहाँ हमर शब्द लऽ कऽ अपना मे पचा सकैत अछि। तखन मैथिलीये कियैक दोसराक शब्द लेत जखन ई अपनें भरल पुरल अछि। सारांश ई जे मैथिली भाषाक दिश एहि लाथें उदासीनता आ आने भाषाक प्रति आकर्षण बढ़ल जाइत अछि। एहना स्थिति मे कोना कऽ मैथिली भाषा सुरक्षित रहि सकत। एकरा बिलाएव स्वयं सिद्ध अछि।

जा धरि मिथिला भाषी लोकनि के अपन भाषा मैथिलीक प्रति आग्रह आ आसक्ति (तन मन धन सँ लगाओ) नहि रहत ता धरि एही स्थिति मे होइत होइत दिनेक ई हमर मातृभाषा मैथिली अलोपित भऽ जाएत।

आग्रहक अभिप्राय ई अछि जे भाषा कें अपन रूप मे जीवित रखैक आ ओकर पोषण हेतु प्रत्येक व्यक्ति कें आतुरता सँ मनोयोग रहब। जखन असमी भाषाक आन्दोलन भेल तखन ओतय अनपढो गमार आबोनिहार सब अपन भाषाक पोथी आ पत्रिका सब ओकर समृद्धिक ध्येय सँ कीनैत छल। मुदा मैथिलीभाषी पढ़लो लिखलो लोक एहि चेष्टा मे रहै छथि जे मङनी मे पोथी की पत्र पत्रिका भेटि जाय। एकरे फल सँ एकोटा मैथिली पत्र पत्रिका चिरजीवी नहिं रहि सकैत अछि। तखन कोना बूझब जे मैथिली भाषी कें मैथिलीक प्रति आग्रह छनि।

आसक्तिक अर्थं थीक जे अपने भाषा मे लिखब, पढ़ब आ बाजैक नियम राखब, परन्तु से तँ देखैत छी जे कत्तेक लोक लोकवेद लऽ कऽ जँ कतौक यात्रा करता तऽ अपनौ मे हिन्दियै सँ गप करता। अपने भाषा मे बतकहीँ केने "देहाती" बुझतैन। एकबेर यात्रा क्रम मे गाड़ीक वाट तकैत किउल स्टेसन पर रही ओतै हमर एकटा पुरान संगी भेटि गेला। अचानक हुनका देखि हमर मुँह सँ बहरा गेल हुँसीक रूपें "आपनी कोत्तो जावेन" ओहो ओहिना उत्तर देलनि "आमि वैद्यनाथ धाम जावौ" ओतै एक बंगाली परिवार छल ओ हमरा लोकनि कें बंगाली जानि लगले पूछि देलक 'आपनार' वाड़ी कोथाय "दोरोभंगा" तखनै ओ बंगाली नहि बूझि चुप भऽ गेल। एकरा कहै छै आसक्ति तकरे हमरा सब मे त्रुटि अछि।

तखन कोना मैथिली भाषा कें बचाओल जाय एहि गुनि धुनि मे विकल छलौं। सोचल जे पिताक लिखल मिथिला शब्द प्रकाश कें कियैक नहिं प्रकाश मे आनल जाय। परन्तु ओकर व्यञ्जन वर्णवाला अंश यद्यपि हमर सभक अज्ञानता सँ नष्ट भऽ गेल अछि तथापि ओही समयक गणनाक अनुसार साढे तीन हजार मात्र शब्द छल। छपल स्वरवर्णवाला खण्ड मे केवल सात सै शब्द अछि। अर्थात् दूनू मिलाकय धतपत पैंतालीस सै शब्द अछि। हमरा मन मे तारतम्य उठल जे एतबैक शब्द सँ कोश कोना भऽ सकैत छैक। शब्द तँ अनन्त अछि। कोनो भाषाक कोश अपूर्ण रहै अछि। परन्तु ओही कोश कें अपन बुद्धि सँ शब्द संकलित कऽ विस्तार कयके हुनक नाम कें चिरस्थायी करैक चाही।

आइ सँ ८५–९० वर्ष पहिने हमर पितृचरण एहि **मिथिला शब्द प्रकाश** कें लिखने छला। ई हुनक एहि दिश प्रथम प्रयास रहैन। जकर प्रमाण एहि प्रसंग मे "सर ग्रियर्सन" आ "कुमार गंगानन्द सिंह" क पत्र (मूल सुरक्षित) अछि।

एकरे आधार कय हम लेखिनी उठाओल। परन्तु पहिनै बड़ पैघ समस्या ठाढ़ भऽ गेल। कियैक तँ ओहि समय मे स्तुत्य कार्य रहै मुदा आधुनिक परिवेश मे किछु नहि। कारण जे एहि मे अक्षरक कोनो क्रम नहि अछि। उदाहरणार्थ किछु आदिक अंश निम्नलिखित अछि।

मिथिला शब्द	हिन्दी	संस्कृत	लिंग	प्रमाण
अङ्ग	शरीर	अङ्गम्	नपुं०	अङ्गम् प्रतिकोऽवयवोऽपघन इत्यमरः।
अन्न	अनाज	अन्नम्	नपुं०	मिस्सा स्त्री भक्तमन्योऽन्न मित्यमः।
अण्डा	अण्डा	अण्डम्	नपुं०	पेशीकोशो द्विहीनेऽण्ड मित्यमरः।
अर्घ	अर्घ	अर्घः	पुंलिंग	पूजा विधावर्घः इत्यमरः।
अस्सी	अस्सी	अशीतिः	स्त्री०	अशीतिर्यस्य वर्षाणि।
अत्ता	अत्ता	आतृप्यम्	नपुं०	फल विशेष इत्यमरः।
अर्घी	अर्घी	अर्घी	स्त्री०	इति शब्दार्थ चिन्तामणिः।
अस्त	अस्त	अस्तम्	नपुं०	अस्तमदर्शन मित्यमरः।
अन्त	अन्त	अन्तः	नपुं०	अन्तः शेष इत्यमरः।
अरे	अरे	अरे	अव्यय	अरे नीच सम्बोधन मित्यमरः।

ओहि समय मे ई एकटा नव सृष्टि छल तँ क्यो एहि उत्पन्न होइवाला समस्या पर ध्यान नहि देलक। आजुक समय मे एकटा तँ ई ओझराओट जागल जे उपर्युक्त अंश मे सब सँ पहिल शब्द अछि "अङ्ग"। प्रश्न उठैं अछि जे एक तँ 'अ' अक्षर अपना रूप मे स्वत: शब्द थीक कियैक तँ स्वर वर्णक प्रथम वर्ण थीक। पहिने सैह अबैक उचित रहैक। आनो कते 'अ' टा सँ शब्द बनैत अछि।

दोसर जे 'अ' क संग जँ दोसर वर्ण आवय तँ पहिने 'क' "अकरवज" शब्द अथवा "अकततीत" तथा क के संगे विभिन्न मात्रा के शब्द रहैक चाही से नहि भऽ कऽ सोझे 'अ' पर सँ 'ङ' आएल अछि। फेर उनट पुनट अछि 'अ' पर सँ जँ तवर्ग आवय तँ 'अन्न' सँ पहिने "अन्त" शब्द अबैक छलै। अक्षरक अनुक्रम नहि रहने पोथीक प्रत्येक पत्ता उनटा कय कोनो शब्द ताकि सकैत छी। अर्थात् शब्दानुक्रम नहि अछि।

दोसर समस्या अछि, मैथिली पर सँ हिन्दी ताहि पर सँ संस्कृत शब्द तकर परिचय (लिंग मात्र) आ ओहि शब्दक विभिन्न कोशक प्रमाण देल अछि। आव सोचैक विषय ई उठल जे करै छी '**मिथिला शब्दक प्रकाशक** आ संस्कृत शब्दैक प्रमाण सँ प्रकाश भ' जाइत अछि। एहि क्रम मे मैथिली शब्द तऽर पड़ि गेने अप्रधान आ संस्कृते प्रधान भऽ जाइत अछि। ओ तऽ अपनै अगाध अछि।

एहि कारणें मूल **मिथिला शब्द प्रकाशक** ढंगे के फेरि कय अपना ढंगें लिखैक विचार कयल। मुदा अनेक व्यक्ति एहि मे अरुचि देखौलनि, मुदा हमरा तँ विलाइत मैथिली शब्द कें प्रकाश मे अनेक अदम्य जुआरि उठल छल। एही गुनि धुनि मे हमर तात पादक प्रेरणा अन्तरात्मा मे भेल जे ई काज बड़नीक हैत एहि द्वारेँ ई सम्पूर्ण कृति हम हुनके बूझि हुनकें समर्पित करैत छी।

एहि **मिथिला शब्द प्रकाश** कें देखला उत्तर साहित्य अकादमीक किछु विद्वान् लोकनिक कहब (लिखित पत्रक अनुसार) छनि, जे साहित्यिक कोश होइक आवश्यकता छैक। हमर छोट बुद्धि मे एकर अर्थ नहि लगै अछि कारण जे शब्दे सँ तँ साहित्यिक सृजन होइत अछि। ओहि हेतु कोनो विशेष शब्द तँ नहि होइत अछि तथापि जँ होइतौं अछि तँ हमरा पुछवाक अछि जे ठेंठ मैथिली शब्द की मिथिला भाषा नहि थीक। जँ नै थीक तँ ग्राम्य (ठेंठ) मैथिली शब्द कें कोन भाषा कहब। जँ ओहो मैथिली शब्द थीक तँ ओहू शब्द सभक साहित्य मे प्रयोग कयले जाइत अछि। दोसर बात जे मिथिला भाषीक विभिन्न पसारी (व्यावसायी वर्ग कें) कें अपन अपन व्यवसाय मे काज अबैवाला अस्त्र वा वस्तुक नाम मैथिली भाषा नहि थिकैक। मिथिला भाषाक प्रति उपर्युक्त कथन सँ अभेला मात्र झलकैत अछि। तँ सम्पूर्ण रूपें आत्म निर्भर भऽ कऽ एहि कार्य ले लेखनी उठाओल।

वैह उर्दू शब्द देल गेल अछि जे मैथिली मे दरि कऽ प्रचुर व्यवहार मे अबैत अछि। जेना 'खर्च' 'हाल' (निकट भूतकाल) आदि आदि, मुदा ओकर मूल रूपक परिचय दऽ देल गेल अछि। एहिना संस्कृत आ आनो भाषाक क्रम अछि।

मैथिली भाषा तीन रूप मे देखल जाइत अछि। १—शिक्षित सुसंस्कृत सभ्य परिवारक संस्कृत निष्ठ जेना "ओ विषय हमरा लोकनि कें ज्ञात नहि अछि जे हुनक संग ई घटना घटल छन्हि।"

२—एकरे बिच बिचौआ लोकक मध्य जेना—"ओ बात हमरा सबकें बूझल नै अछि जे हुनका संगें ई बात भऽ गेल छनि।"

३—एकरै अनपढ ग्राम्य लोकक बीच एहन प्रयोग होइत अछि। "ओ गप हमरा आरु के नै जान्तव जे हुनका जरें भऽ गेल छैन।"

एहि तीनू प्रकारक मैथिली शब्दक संग्रह एहि मे यथासाध्य अछि। शब्द अनन्त होइत अछि ताहू पर क्षेत्रीय भाषा तऽ दुइए तीन कोश पर स्वर मे आ उच्चारण मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि जेना कतौ 'हऽम' कतौ 'हम' आ कतौ 'हमे' भऽ जाइत अछि। एहिना कतौ 'तोर' कतौ 'तोहर' आ कतौ 'तोहरा' कहल जाइछ। तैं सबटा शब्द दऽ देब कठिन छै जे क्यो दाबी (दर्प) कऽ सकैत अछि। एहि सँ हमहूँ छूटल नहि छी। मुदा लोक प्राय: 'वह्लोल' 'बहतर' शब्द कें छोड़िये देलक अछि। ओकर ओजी मे 'अवारा' एही शब्दक प्रयोग कय लैत अछि। यैह होइछ मैथिली भाषाक शब्दक विलाऐब। तकरे रक्षाक ई प्रयास थीक।

आदरणीय पिताक **मिथिला शब्द प्रकाशक** ई विस्तृत रूप दय हुनके कृतिक हम व्याख्या कय **मैथिली शब्द कल्पद्रुम** कयल अछि। तँ ई हुनके कृति थीक। हम केवल एकरा पुष्ट कयल अछि। एहि मे हम कोनो श्रेय नहि मानैत छी। जैं हुनक प्रेरणा भेल तँहि ई विस्तृत भेल।

अजगुतक विषय तँ ई जे ई पुस्तक तीन खाढ़ी कें लपेटने प्रकाश मे आयल अछि। हमर पूज्य पिता जतवाक लिखलनि ताहि मे हुनक पुण्य प्रताप सँ हमरा मे प्रेरणा जागल जाहि सँ एकर रूप बढ़लैक तकरा प्रकाश मे अनैक श्रेय हमर तेसर आयुष्मान् सुपुत्र डा० श्री मोहनाथ मिश्र लेलनि।

एहि ग्रन्थक सम्पादन कार्य प्रकाशनस्थल सँ दूर रहितौ एहि वृद्धावस्था मे अस्वस्थता सँ घेरैल रहितो जाहि तरहे हमर अनुज विद्वान पण्डित श्री यन्त्रनाथ मिश्र सम्पन्न कएल ताहि हेतु हुनका आशीष सिक्त साधुवाद। अद्यावधि ओ मिथिला शब्द प्रकाशक शेष अंशक गवेषणा मे जाहि तरहे प्रतिवद्ध छथि ताहि सँ विश्वास अछि जे भगवती हुनका मैथिलीक प्रतिष्ठामूलक प्रथम कोशक गवेषक रूपे प्रतिष्ठित होयबाक अवसर देथीन।

हम तँ मिथिलावासी सँ एतबैक निवेदन करैत छी जे अपन भाषा आ तकरा आधार कय अपन संस्कृतिक हमर एहि योगदान कें प्रोत्साहित कय विद्यापतिक एहि सूक्त कें चरितार्थ करथि—"देशिल वयना सवजन मिट्ठा"।

ललितनाथ मिश्र



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

To

28 May, 1925.

Pandit BHAVANATH
MISRA.

Sir,

I shall be greatly obliged if you will be so good as to inform me whether parts 2 and later parts of your work Mithilā-śabda-prakāśa have been published, and, if so, where I can purchase copies of them for this Department. We have received part 1, printed at Benares in 1914, and desire to make our copy complete, if possible.

Believe me to be

Your obedient servant,

L. D. Barnett.

Keeper, Department of
Oriental P.B. & MSS.

Halarh Rupauly
23. 6. 25

Sir, your kind-note of the 28th May reached me on the 15th instant. I am very glad to know that my little production Mithila bhasha took such a wide circulation with appreciation. This work is devided into seven parts.

It will not be out of point to put before you the history of its production in relation to my circumstances. The work is the result of my incessant labour of 7 years. After 7 years in 1912, I approached some local gentlemens for subscription for the publication of it but they did not pay heed to my request. Afterwards I borrowed Rs 155 which cost the paper and printing charge of a thousand copy of the first part. I incurred this debt with the hope that I shall be able to pay it up with the price of the 1st part and with the surplus to get the remaining parts printed. But my hopes are now frustrated and am still involved in debt because there is no demand for a single copy. Owing to the above reason the remaining six parts is yet unprinted.

I, therefore, now request the favour of your kindly sending out some means to relieve me – from debt & to get the remaining parts printed, which are written in Deva Nagari



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

14.vii.25.

Sir,

I beg to acknowledge the receipt of your letter of the 24th ult.,for which I am greatly obliged to you. It is a matter of great regret to me that circumstances have prevented the publication of your useful Mithila-sabda-prakasa,and I have sent a copy of your letter to Sir George Grierson asking him to do whatever he can to assist you.

Believe me to remain

Yours very faithfully,

Pt.Bhava Nath Mishra. L.D. Barnett.

TELEPHONE,
43, CAMBERLEY.

RATHFARNHAM,
CAMBERLEY,
SURREY.

July 25, 1925.

Copy.

Dear Sir,

Dr. L. Barnett, of the British Museum, has told me of your book named "Mithilā Śabda-Prakāśa" (मिथिला शब्द प्रकाश). I shall be obliged if you will send me a copy of the first part. Dr. Barnett tells me that the price is six annas, so I enclose a postal order for one shilling and six pence, which is worth much more than six annas, and which you can change at any Indian post office. The balance over the six annas is for packing and postage.

I do not know if you have heard my name, but I know Jhanjharpur well, as about fifty years ago I was subdivisional Officer of Madhubani, and built a bazaar there, which is, I believe, still called "Grierson Ganj".

Yours faithfully,

sd. George A. Grierson.

Pandit Bhava Nātha Miśra,
Hatarhrupauli,
Jhanjharpur,
Darbhanga.



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

11.iii.26.

Sir,

In continuation of my letter of the 4th inst., I beg to inform you that I have received from Sir G. Grierson the enclosed copy of a letter which he wrote to you some time ago, and which apparently was lost in the post.

By this mail I am also writing to Professor Suniti Kumar, of the University of Calcutta, asking him to support your work. I would advise you to write to him also, as he is keenly interested in Maithili, and I hope he will move the University of Calcutta to interest itself in your case.

I remain

Yours very faithfully,

L. D. Barnett

Pandit Bhavanath Misra.



BRITISH MUSEUM,
LONDON: W.C.1.

4.iii.26.

Sir,

I beg to acknowledge the reeeipt of your letter of the 3rd February. The letter which you mention, dated 20 August 1925, was duly received here, and I communicated with Sir George Grierson on the matter, as I wrote to you. Unfortunately Sir George has been dangerously ill this winter, and is only now beginning to recover ; he has been compelled to take a complete rest from all work, and has therefore been unable to put forward a plea on your behalf to Government or other powers. However, I hope he will soon be well enough to take some step forward, and I am writing to him this to that effect.

Believe me

Yours faithfully,

L. D. Barnett

Pandit Bhavanath Misra.

SUNITI KUMAR CHATTERJI
M.A. (CALCUTTA), D. LIT (LONDON)
KHAIRA PROFESSOR OF INDIAN LIGUISTICS & PHONETICS
AND LECTURER IN ENGLISH AND COMPARATIVE PHILOLOGY.
CALCUTTA UNIVERSITY



CALCUTTA
3, SUKIAS ROW

19 June 1927.

श्रीयुक्त पंडित भवनाथ शर्म्मा श्रद्धास्पदेषु —

मान्यवर पंडितजी, आपका पत्र (३ जून तारिख का) मुझे मिला है। आपके "मिथिलाशब्दप्रकाश" का पहिला खंड कई मास हुए मुझे मिला था, पर कार्यवशात: इसके प्राप्तिस्वीकार करनेमें त्रुटी हो गई है, आप कृपाकर इस अपराध को क्षमा कीजियेगा। डक्टर बारनेट साहबने मुझे दो वार लिखा था कि आपकी पुस्तक छपवाने का प्रबंध यदि सम्भव हो तो युनिवर-सिटीसे किया जाय। पर मैं देखता हूँ कि बिना किसी मैथिल श्रीमंत की सहायतासे अर्थाभाववशात: कलकत्ता युनिवरसिटीसे इसे छपवाना मुशकिल है। मैथिल भाषा की चर्चा और मैथिल साहित्य के मुद्रण विषयमें कलकत्ता युनिवरसिटीमें जो प्रयत्न किया गया वह केवल श्रीनगर बनैली (पुरनिया) के भूम्यधिकारियोंके साहाय्यसे। श्रीमान् कुमार गंगानन्द सिंह, एम्-ए, बी-एल, एम्-एल-ए (मेंबर लेजिस्लेटिव एसेम्ब्ली — देहली की मुख्य मंत्रणा परिषत् का सदस्य), श्रीनगर बनैली, पुरनिया — मैथिल भाषा का एकनिष्ठ अनुरागी हैं, मैथिल साहित्य की उन्नति के लिये इन्होनें बड़ी ही चेष्टा की है। मेरा परामर्श यह है कि आप उनसे पत्रव्यवहार कीजिये, प्रथम खंड की एक प्रति भेज दीजिये। यदि कुमार साहब राज़ी होवें, आपकी किताब का मुद्रापन उनही के प्रबंधसे हो जायगा। आशा है कि कुमारसाहब ऐसे मैथिल प्रेमी की दृष्टि आकृष्ट होनेसे आप सफलकाम हो जायँगे। इति नमस्कार॥ भवदीयवशंवद श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या॥

RATHFARNHAM,
CAMBERLEY,
SURREY.

TELEPHONE,
43, CAMBERLEY.

May 25th., 1926.

Dear Sir,

I am obliged to you for your letter of May 5th., 1926 and for the copy of the first part of your "Mithilā Śabda Prakāś". I have read through the latter and see that it is very interesting, and hope that you will find means for continuing the publication. I am afraid that I cannot do much to help you, as in this country there are very few people who know Maithilī. However, if I get an opportunity I shall do so.

As you did not get my former letter enclosing a postal order for one shilling and sixpence, I enclose another herewith, and shall be glad to learn that you have received it safely. You can cash it for Indian money at any Indian post office.

Yours faithfully,

George A. Grierson

Pandit Bhava Nath Mishra.



SENATE HOUSE

ALLAHABAD 26th June, 1925.

I have looked over the Mithila-shabda-prakash by Pandit Bhavanath Mishra of Jamthari, Darbhanga. The author has made an honest effort to trace the Maithili word to its Sanskrit original and thereby determine its gender. The venture deserves to be encouraged.

Ganganatha Jha

कुमार गंगानन्द सिंह

श्रीनगर

पूर्णियां

अगस्त २ । १९२७

पंडितप्रवरश्रीयुक्त भवनाथशर्म्ममहाशयेषु निवेदनमिदम् ।

मिथिलाशब्दप्रकाश प्राप्त भेल । अपनेक सराहनीय उद्योग देखि हृष्ट भेलहुं । एकरा सम्पूर्ण मुद्रित करयबा मे कतेक द्रव्यक आवश्यकता छैक ? जं तकर अन्दाज कयने होइ तँ सूचित करब । हमरा विचारें इहि ग्रन्थरत्न क प्रथम खंडक जाहि रूपैं सम्पादन भेल अछि ताहि सँ नीक जेकाँ हयब उचित । जं भेट हयबाक कोनो अवसर प्राप्त हो तँ अपन विचार कही । पत्र मे कहाँ धरि लिखू । द्रव्यक अन्दाज बूझि छपयबाक विषय मे लिखब।

हम १५।८।२७ क शिमला जयबाक विचार कयने छी । सितम्बर क अन्त धरि घुरब । इतिशुभम् ।

भवदीय

श्रीगङ्गानन्दसिंह

पं० श्री भवनाथ मिसर
मी० जमधर
पो० झंझारपुर
दरभंगा

स्व०
और्व
युक्त
ब्राह्म
पो०
ई अ
व्याव
मे से
तथा
देवी
प०
प०
नाथ
खण्
प्रथम
उपर
सुनी
प्रशं
संक
भेटै
दुर्गा
१९३
भय गेल ।

मिथिला शब्द प्रकाश

–स्व० प० भव नाथ मिश्र

॥ श्री दुर्गा० ॥

श्रीकालिकायैनमः ॥

श्रीनन्दनन्दनम्बन्दे बृन्दाबन विहारिणम् । गोपीवृन्दसमाकीर्णं नृत्यन्तं मुरलीधरम् ॥१॥

कालींसम्मुक्तकेशीं रुधिरचयलसन्मुण्डमालां दधानाम् ।
दिग्वस्त्रांकृष्णवर्णां दनुजकरलसत्सप्तकोशोभिमध्याम् ॥

भालेन्दुद्योतिताङ्गीमभयवरयुतां खङ्ग मुण्ड प्रसन्नाम् ।
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं दुरितसमुदयध्वंसकर्त्रीं भजामः ॥२॥

पीनंसौम्यतरं किरीटलसितं वालेन्दु संशोभितम् ।
बालार्कद्युतिम प्रमेय बदनं नागाननं सुन्दरम् ॥
दन्तैकेनविराजितं त्रिनयनं रक्ताम्बरै भूंषितम् ।
भक्तत्राणकरं महेश्वरसुतं श्रीविघ्नराजम्भजे ॥३॥

मैथिलानां मातृभाषाः संस्कृता वाप्यसंस्कृताः ।
तासां सुसंग्रहः सम्यक् भवनाथेन सूरिणा ॥४॥

क्रियतेमिथिला शब्द प्रकाशाख्योमनोहरः ।
उपकारकरः कोषो नाना ग्रन्थावलोकनात् ॥५॥

अभ्यर्थनाभुधाज्ञेया सर्वथादुर्जनस्यच । अमृताद्रींकृतः सर्पो विषं नैवविमुञ्चति ॥६॥

प्रार्थये प्राञ्जलिर्भूत्वा सज्जनानमलाशयान् । श्रीमद्भिः करुणानेत्रैर्दृश्यतां शब्दसंग्रह ॥७॥



मिथिला शब्द प्रकाशः

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अङ्ग	सरीर	अङ्गम्	न.	अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोथ कलेवरः । इत्यमरः ।
अन्न	अनाज्	अन्नम्	न.	भिस्सास्त्रीभक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्रीस-दीदिविः । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अण्डा	अण्डा	अण्डम्	न.	पेशीकोशोद्विहीनेण्डम् । इत्यमरः ।
अर्घ	अर्घ	अर्घः	पु.	पूजाविधावर्घः । इत्यमरः ।
अस्सी	अस्सी (८०)	अशीतिः	स्त्री.	संख्याविशेषः । अशीतिर्य्यस्यवर्षाणिवा-लोकाप्यूनषोडशः । इतिप्रायश्चित्ततत्वम्
अत्ता	अत्ता	आतृप्यम्	न.	फलविशेषः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अस्त	अस्त	अस्तम्	न.	अस्तंअदर्शनमित्यमरः ।
अर्घी	अर्घी	अर्घी	स्त्री.	इति शब्दार्थचिन्तामणिः ।
अन्त	अन्त	अन्तम्	न. पु.	अन्तः शेषः इतिमेदिनी ।
अरे	अरे	अरे	[व्य.]	अरेनीचसम्बोधनम् । इतिहेमचन्द्रः ।
अर्थ	अर्थ	अर्थः	पु.	अर्थःविषयायाञ्चाधनंकारणवस्तु शब्द-प्रतिपाद्य । इतिमेदिनी ।
अस्त्र	हथियार [हरवा]	अस्त्रम्	न.	आयुधंप्रहरणंअस्त्रम् इत्यमरः ।
अस्थि	हड्डी	अस्थि	न.	मेदोजंकीकसंकुल्यंअस्थिचेत्यभिधीयते इत्यमरः ।
अहा	अहा	अहह	[व्य.]	अद्भुतंखेदः । इत्यमरटीकायां रायमुकु-टादयः ।
अओरा	अँवरा	अकरा	स्त्री.	अकरातिष्य फलावृष्या । इतिशब्द चन्द्रिका ।
अङोरा	अंगारा	अङ्गारः	पु.	अङ्गरोऽलातमुल्मुके । इत्यमरः ।
अङेँठी	अङेठी	अङ्गारधानिका	स्त्री.	अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपिहसन्त्य-पीत्यमरः ।
अपेक्षा	अपेक्षा	अपेक्षा	स्त्री.	कार्य्यनिमित्तयोरन्योन्याभिसम्बन्धः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अरुचि	अरुचि	अरुचिः	पु.	अरोचकः अश्रद्धाअनभिलाषः । इति-राजनिर्घन्टः ।
अक्षर	अक्षर	अक्षरम्	न.	अक्षरंस्यादपवर्गेपरब्रह्मवर्णयोरितिहैमः ।
अत्तर	अतर	गन्धतैलम्	न.	यन्त्रपाकेनजनितंतैले । इतिशब्दस्तोम-महानिधिः ।
अशोक	अशोक	अशोकः	पु.	अशोकः पिण्डपुष्पस्तु-इतित्रिकाण्डशेषः ।
अधङा	अधांगा	असितच्छदः	पु.	चित्रग्रीवोमयूरश्चजालपादोऽसितच्छदः । इति पलपीयूषलता ।
असह्य	असह्य	असह्यम्	त्रि.	वरंरामशराः शह्यानचवैभीषणंवचः । असह्यंज्ञातिदुर्वाक्यंमेघान्तरितरौद्रवत् इतिमहानाटकम् ।
असिद्ध	असिद्ध	असिद्धम्	त्रि.	असिद्धम्अपक्वम्अश्विन्नम् इतिरत्न-माला ।
असुस्त	दुःखित	असुस्थः	त्रि.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अक्षत	अक्षत	अक्षतः	पु.	आतपतण्डुलः। इतिशब्दकल्पद्रुमः।
अतीस	अतीस	अतिविषा	स्त्री.	विश्वाविषाप्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा। इत्यमरः।
अशुद्ध	अशुद्ध	अशुद्धम्	त्रि.	अशुद्धादैवपैत्रयोरितिशुद्धितत्वम्।
अशुभ	अशुभ	अशुभम्	न.	पापमशुभम्। इतिहेमचन्द्र।
अकुसी	अँखुवा	आकर्षणी	स्त्री.	फलपुष्पाद्याकर्षकयष्टिकाविशेषः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
अढैआ	अढैया	आढकम्	न. पु.	द्रोणचतुर्थभागोआढकः। इतिलीलावती।
अशौच	अशौच	अशौचम्	न.	वैदिककर्म्माऽनर्हत्वाप्रयोजकसंस्काररूपमशौचम्। इतिरघुनंदनः।
अमड़ा	अमड़ा	आम्रातकः	पु.	आम्रातककपीतनौ। इत्यमरः।
अम्मट	अमावट	आम्रावर्तः	पु.	पक्वस्यसहकारस्यकटेविस्तारितोरसः। धर्म्मशुष्कोमुहुर्दत्त आम्रातक इतिस्मृतः इतिराजनिर्घंन्टः।
अरुबी	अरुई	आलूकी	स्त्री.	आलूकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी भावप्रकाशः।
अबीर	अबीर	आवीरः	पु.	आबीरचूर्णं रुचिरंगृह्यतांपरमेश्वर। इतिकृष्णजन्मखण्डे ८ अध्यायः।
अडरी	रेडी	एरण्डः	पु.	एरण्डऊरुबूकश्च इत्यमरः।
अणाची	इलायची	एला	स्त्री.	पृथ्वीकाचन्द्रवालैला। इत्यमरः।
अष्टमी	अष्टमी	अष्टमी	स्त्री.	तिथिविशेषःसाचन्द्रस्याष्टमकलाक्रियारूपा। शब्दकल्पद्रुमः।
अन्हार	अन्धेरा	अन्धकारः	पु.	अन्धकारोऽस्त्रियांध्वान्ततमिश्रं तिमिरं तमः। अमरः।
अकाल	अकाल	आकालः	पु.	असमयःअप्रशस्तकालःयथऽयोग्यकालातिरिक्तसमयः। शब्दकल्पद्रुमः।
अर्हणा	दहेज	अर्हणः	पु.	पूजोपकरणेपूजादौउपचयनेच। इतिशब्द स्तोममहनिधिः।
अन्दर	भीतर	अन्तर्गृहम्	न.	गृहमध्यं इतिनानार्थकोष्ठशब्दार्थेअमरः।
अङ्गना	अंगना	अङ्गणम्	न.	अङ्गणंचत्वराजिरे इत्यमरः।
अगरु	अगरे कास्ट	अगरू	न. पु.	अगरु अगुरुरितिहेमचन्द्रः।
अदृष्ट	अदेख	अदृष्टम्	न.	अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोतिसुप्तिर्जनदर्शनातिथिः इति श्रीहर्षः।
अतरी	आंत	अन्त्रम्	न.	अन्त्रंपुरीतदित्यमरः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अल्हुआ	शकरकन्द	रक्तालुकम्	न.	पिण्डालुकमध्वालुकरक्तालुकानिव्यक्ता-निमूलविशेषः (इतिभावप्रकाशः ।)
अतिथि	अतीथ	अतिथिः	पु.	प्रघूर्णोअतिथिश्चसः । इतिहेमचन्द्रः ।
असामी	प्रजा	प्रजा	स्त्री	प्रजानांनपा लनंदानंद्वेऽपिराज्ञांशुभावहे-द्वाभ्यांयेवर्जिताभूपास्तेवि ज्ञेयानृपाधमाः इतिपाद्मे ।
अयना	दरपन	आदंशः	पु.	आदर्शोदर्प्पणः प्रोक्तः इत्यमरमाला ।
अधिक	बहुत	अधिकः	पु.	अधिकः अतिरिक्तः अनेकः इतिहेमचन्द्रः।
अधीन	बस में	अधीनम्	त्रि.	अधीनोनिघ्नआयत्तोऽस्वछन्दोगृह्यकाप्य-सौ । इत्यमरः ।
अनादि	अनादि	अनादि	त्रि.	अनादिरादिगोविन्दः सर्वकारणकारणः । इतिब्रह्मसंहिता ।
अनोन	अलोना	अलवणम्	न.	इतिवह्वः ।
अगस्ति	अगस्त का फूल	अगस्त्यः	पुः	मुनिद्रुमोशीघ्रपुष्पोऽगस्त्योलम्बफलो-मुनिः । इतिपञ्चतत्व प्र०
अर्जुन	अर्जुन वृक्ष	अर्जुनः	पु.	कुरुवीरोनदीसर्जः ककुभोर्जुनवृक्षकः । पञ्चतत्व प्रकाशः ।
अम्मत	खट्टा	अम्ल	पु.	षड्रसमध्येरसविशेषः इतिराजनिर्घंन्टः ।
अपथ्य	कुपथ्य	अपथ्यम्	न.	यत्पथ्यंयदपथ्यंचवक्ष्यतेरक्तपित्तिनाम् । इतिवैद्यके
अपूर्व	अनोखा	अपूर्बम्	त्रि	अपूर्वेयहरेम्मयित्रिगुणारज्जुरुपिणी । इतिपुराणम् ।
अस्तूरा	छुरा	छुरः	पु.	छुरोवपनशस्त्रम् । छुरःस्याच्छेदनद्रव्ये । इतिमेदिनी ।
अशुचि	अपवित्र	अशुचिः	पु.	इत्यश्वलायनः ।
अढिआ	अढिआ	पादप्रक्षालनपात्रं	न.	इतिवृद्धाः
अनर्थ	अनर्थ	अनर्थकम् ।	न.	अवद्धञ्चअनर्थकम् इत्यमरः ।
अजीर्ण	अजीर्ण	अजीर्णम्	न.	अजीर्णेभेषजंवारिजीर्णेवारिवलप्रदम् । इतिवैद्यके ।
अलक्ष	असुभ	अशुभम्	न.	सर्वाशुभानांपरिमोक्षकारिसम्पूजनंदेव-बरस्यविष्णोः । इतिज्योतिस्तत्वम् ।
अपक्व	कच्चा	अपक्वम्	त्रि.	अपक्वमसृतंआमंअसिद्धमिति रत्नमाला ।
अकीर्ति	अकीर्ति	अकीर्ति	स्त्री.	सम्मावितस्यचाकीर्तिर्म्मरणादतिरि-च्यते । भगवद्गीता ।
अकर्म्म	अकर्म्म	अकर्म्म	न. पु.	अकरणीयकार्य्यम् । शब्दकल्पद्रुमः ।
अन्याय	बेइनसाफ	अन्यायः	त्रि.	अन्यायेनापियद्भुक्तंपित्रापूर्वंशतैरपि । नतच्छक्यमपाकर्तुं क्रमात्रिपुरुषागतम् । इतिव्यवहारतत्वेनारदः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अकार्य्य	अकाम	अकार्य्यम्	न.	किमकार्य्यं कदर्य्याणांदुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् । भागवतम् ।
अखाद्य	अभक्ष्य	अखाद्यम्	न.	खाद्यानर्हंअभक्ष्य । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अगण्य	अगण्य	अगण्यम्	त्रि.	अगणनीयअगणितव्यम् इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अंकुश	आंकुश	अंकुशः	पु. न.	शृणिरङ्कुशः । इत्यमरः ।
अकुरा	अखुआ	अंकुरः	पु.	अंकुरोऽभिनवोद्भिदि । इतिहेमचन्द्रः ।
अचेत	बेचेत	अचेतनः	पु.	चेतनारहितःचैतन्यशून्यः अज्ञानः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अज्ञान	बेवकूफ	अज्ञान	न.	चेतनारहितः चैतन्यशून्यः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अत्याज्य	रख देनेलायक	अत्याज्यम्	त्रि.	त्यागानर्हंअत्यक्तव्यंअत्यजनीय । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अदृश्य	अदेख	अदृश्यम्	त्रि.	अदर्शनीय अद्रष्टव्यम्कन्याद्रेरतिकोमलात्रिभुवनव्याप्ताप्यदृश्या जनैः इत्युद्भटः ।
अधम	चांडाल	अधमः	त्रि.	निकृष्टोनिन्दितोऽधमः । इत्यमरः ।
अधर्म्म	बेधर्म्म	अधर्म्मः	पु.	श्रुतिस्मृतिविरुद्धाचारः । अधर्म्मेणैधतेराजन्ततोभ द्राणिपश्यति इतिमहाभरते ।
अधर्म्मी	बेधर्म्मी	अधर्म्मी	न. पु.	अधर्म्मात्मा । अधर्म्मशब्दादस्त्यर्थेइन । शब्दकल्पद्रुमः ।
अधैर्य्य	अधीर	अधैर्य्य	त्रि.	धैर्य्याधैर्य्यपरिग्रहग्रहिलयोरेणीदृशोप्रीतये । इतिभानुमिश्रः ।
अनित्य	अनित्य	अनित्यम्	त्रि.	धर्मोनित्यःसुखदुःखे त्वनित्ये इतिमहाभारतेभारतसावित्री ।
अनीति	बे इनसाफ	अनीति	स्त्री.	दुर्नीतिः अन्यायः अत्याचारः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनेक	अनेक	अनेकम्	त्रि.	अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम् । इतिभारविः ।
अपात्र	नालायक	अपात्रम्	न.	अपात्रंपातयेद्दत्तंसुवर्णं नरकार्णवे इतिमलमासतत्त्वे० ।
अप्रिय	नापसंद	अप्रियम्	त्रि	नब्रूयात्सत्यमप्रियम् । इतिमनुः ।
अबोध	अज्ञान	अबोधः	पु.	अज्ञानम् निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः इतिभारविः ।
अबल	कमजोर	अबलम्	त्रि.	बलरहितम् दुर्बलम् । अबलमुकुलासिनोऋसान् । इतिश्रीहर्षः ।
अबला	स्त्री	अबला	स्त्री	स्त्रीयोषिदबलायोषा । इत्यमरः ।
अभक्ष्य	खाने लायक नहीं	अभक्ष्य	त्रि.	अभक्ष्यञ्चैवमेमांसं त्वादृशैर्ब्रह्मचारिभिः । इतिरामायणम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अभीष्ट	माफिक	अभीष्टम्	न.	अभीष्टं वांछितं प्रियम् ।इत्यमरः ।
अभुक्त	भूखा	अभुक्तम्	न.	अभुक्तस्य दिवानिद्रापाषाणमपिपाचयेत् । इतिवैद्यके० ।
अभ्यास	महावरा	अभ्यासः	पु.	अभ्यासे न तु कौन्तेयवैराग्येण च गृह्यते । इतिभगवद्गीता ।
अमृत	अमृत	अमृतम्	न.	पीयूषममृतंसुधा० । इत्यमरः ।
अरिष्ट	अरिष्ट	अरिष्टम्	न.	अरिष्टमशुभंतक्रंशुभंमरणचिन्हकम्० । इतिमेदिनी० ।
अवधि	अवधि (समय)	अवधिः	पु.	अवधानमवधिः सीमा० । इति विश्व-मेदिन्यौ ।
असार	असार	असारम्	न.	असारं फल्गुशून्यन्तु० । इत्यमरः ।
अवस्था	अवस्था	अवस्था	स्त्री.	कौमारंपञ्चमाब्दान्तं पौगण्डंदशमावधि कैशोरमापञ्चदशात् । (यौवनन्तुततः परम् इतिस्मृतिः) ।
अवाच्य	असभ्य शब्द	अवाच्यम्	न.	अनक्षरमवाच्यंस्यादित्यमरः ।
अविज्ञ	अनजान	अविज्ञः	त्रि.	अविज्ञः अनिपुणः । इति शब्दकल्प-द्रुमः ।
अर्जन	कमाना	अर्जनम्	न.	अर्जनं स्वत्वहेतुभूतोव्यापारः अर्जनं-स्वत्व नापादयतीति विप्रतिषिद्धम् । इतिदायभागः ।
अव्यक्त	अप्रकास	अव्यक्तः	पु.	आत्मन्यपिस्यादव्यक्तमस्फुटेत्वभिधेय-वत्० । इतिविश्वः ।
अशक्य	अशमर्थ	अशक्यः	त्रि.	असाध्यंअशक्येअध्यवसायः समर्थना । इति मुग्धवोधव्याकरणम् ।
अश्रद्धा	अश्रद्धा	अश्रद्धा	स्त्री	विधिहीनंभावदुष्टंकृतमश्रद्धयाचयत् । इतिश्राद्धतत्वम्० ।
आसध्य	असाध्य	असाध्यम्	त्रि.	नासाध्यं विद्यते तस्य त्रिषुलोकेषु-पार्वति । इति शब्दकलपद्रुमः ।
असुर	असुर	असुरः	स्त्री. पु.	असुरादैत्यदंतेयादनुजेन्द्रादिदानवाः । इत्यमरः ।
अहित	हित नहीं	अहितः	त्रि.	अपथ्यमहितः । इतिशब्दचन्द्रिका० ।
अघट	अघट	अघट्टः	पु.	नद्यादौस्नानाद्यर्थं अप्रवेशस्थानम् । इतिशिष्टाः ।
अङैठी	जम्भाई	जृम्भणम्	त्रि.	जृम्भिकाजृम्भणंजृम्भा० । इति शब्द-रत्नावली ।
अषाढ	अषाढ	अषाढः	पु.	भवेदषाढअषाढो । इतिद्विरूपकोशः ।
अविधि	अविधि	अविधिः	पु.	अविधानम् । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अन्यथा	वृथा	अन्यथा	स्त्री.	अन्यथाचिन्तितंकार्य्यं विधिनाकृतमन्यथा। इत्युद्भटः।
अन्हड	अन्धड	महावातः	पु.	प्रकम्पनोमहावातः। इत्यमरः।
अनेर	अनेरा	स्वच्छन्दः	पु.	स्वच्छन्दोनिरवग्रहः इत्यमरः।
अन्यत्र	दूसरी जगह	अन्यत्र	व्य.	अन्यत्रमरणात्पत्युः पत्नीकेशान्नवापयेदितिप्राचीनाः।
अन्हेर	अन्धेर	अन्यायः	पु	अन्यायोपार्जितंद्रव्यंदशवर्षाणितिष्ठति। इतिप्राचीनाः।
अकुरी	अंकुरी	अंकुरी	पु.	अङ्कुरशब्दादस्त्यर्थेइन्। इतिव्याकरणम्०।
अपने	अपना	स्वयम्	व्य.	स्वयंपच्चाननः पुत्रौगजाननषडाननौ। कथंनिर्वाहमेतेषामन्नपूर्णानचेद्गृहे॥ इत्युद्भटः।
अथाह	अगाध	अगाधः	पु.	अगाधजलसञ्चारीनगर्वंजातिरोहितः। इतिचाणक्यम्।
अमिर्ती	हंसपदी (लताबि)	हंसपदी	स्त्री.	हंसस्येवपादाः मूलान्यस्याः पदभावेस्त्रियांङिपिपदभावः गोधातकीलतायां। इतिशब्दस्तोममहानिधिः।
अचार	अचार	सन्धानिका	स्त्री.	खाद्यद्रव्यविशेषः तत्करणप्रकारेकं यथा अपक्वाम्रफलानि विंशति राजिकाशरावषोडशैकभारमितामरिचं तोलकद्वयं लवणं षटतोलकं मेथिकाद्वितोलकं जीरकं तोलकद्वयं हरिद्रातोलकं नागरमेकतोलकं कृष्णजीरकंतोलकैकंगृहीत्वाआम्रभिन्नं सकलद्रव्यंचूर्णयित्वाएकत्रीकुर्य्यात्० आम्रन्तुदीर्घं द्विखण्डचतुःखण्डंवाकृत्वाअष्टींदूरीकृत्यतेदभ्यन्तरे पूर्वोक्तचूर्णंपूरयित्वाशलाकयावद्धाखण्डाम्रकुर्य्यात् ततस्तैलेनिमज्जयेत्०। इति पाकराजेश्वरः।
अकटा	अँकटा	अणुका	स्त्री.	अणुकावीजसंपन्नाक्षुद्रामोहविवर्द्धिनी। इतिशब्दवर्णमाला।
अद्भुत	अद्भुत	अद्भुतम्	त्रि.	विस्मयोद्भुतमाश्चर्य्यम्। इत्यमरः।
अम्वात	आमवात	आमवातः	पु.	वर्जयेदामवातार्तोगुणमांसमनूपजम्। इतिभावप्रकाशः।
अन्नर	अन्दर	अन्तर्गृहम्	न.	अन्तर्गृहेकृतं पापं वज्रलेपोभविष्यतीतिस्कान्दे।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अङरखा	अँगरखा	अङ्गा	स्त्री.	अङ्गास्यादङ्गरक्षिणी । इतिहेमचन्द्रः ।
अचैतन्य	बेहोस	अचैतन्यम्	न.	चेतनाभावअज्ञान । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अजेगर	अजगर	अजगरः	पु.	अजगरेशयुर्वाहिसइत्युभौः । इत्यमरः ।
अण्डकोश	अण्डकोश	अण्डकोषः	पु.	मुष्कोण्डकोषः । इत्यमरः ।
अनादर	अनादर	अनादरः	पु.	अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया । इत्यमरः ।
अरिआत	अगवानी	अनुव्रजनम्	न.	आयान्तमग्रतोगच्छेद्गच्छन्तं त मनुव्रजेत् । इतिनिगम कल्पद्रुमः ।
अन्हैसाप	सर्प विशेष	अन्धाहिः	पु.स्त्री.	अन्धाहिः कूचिकाद्वयोः । इतित्रिकाण्डशेषः ।
अवराध	कसूर	अपराधः	पु.	आगोपराधोमन्तुश्च । इत्यमरः ।
अभिलाष	अभिलाषा	अभिलाषः	पु.	कामोभिलाषस्तर्षश्च । इत्यमरः ।
अबरख	अबरख	अभ्रकम्	न.	अभ्रकंगिरिजामलम् । इत्यमरः ।
अमरोड़ा	चौपतिया	अम्ललोणिका	स्त्री.	चाङ्गेरीचुक्रिकादन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका । इत्यमरः ।
अवक्तव्य	बोलने लायक नहीं	अकथ्यः	त्रि.	अकथनीयः अवक्तव्यः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
असगन्ध	असगंध	अश्वगन्धा	स्त्री.	अश्वगन्धावाजिगन्धाहयगन्धाचपुष्टिदा । इतिरत्नमाला ।
अठारह	अठारह (१८)	अष्टादशः	त्रि.	अष्टादशसंख्या नित्यवहुवचनान्तशब्दोऽयम् । इतिशब्द कल्पद्रुमः ।
असंगत	बेमेल	असंगतम्	त्रि.	असमञ्जसमसङ्गतंदुर्जातंदुः समञ्जसम् । इतित्रिकाण्डशेषः ।
असन्तुष्ट	असन्तुष्ट	असन्तुष्टम्	त्रि.	असन्तुष्टाद्विजानष्टा । इतिचाणक्यम् ।
अहंकार	अहंकार	अहङ्कारः	पु.	गर्वोभिमानोऽहङ्कारः । इत्यमरः ।
अखरोट	अखरोट	आखोटः	पु.	आखोटः फलस्नेहः गुडाशयः कीरेष्टः । इतिराजनिर्घन्टः ।
अखडहा	अखाढा	अच्छवाटः	पु.	अच्छवाटोमल्लभूमिः । इतिहेमचन्द्रः ।
अधपक्कू	अधपक्का	आपक्कम्	न.	आपक्वं पौलिरभ्युषो । इत्यमरः ।
अङ्रेज	अङ्रेज	इङरेजः	पु.	इङ्रेजानवषट्पञ्चलड्रजाश्चापि भाविनः । इतिमेरुतन्त्रे ५ प्रकाशः ।
अगहन	अगहन	आग्रहायणिकः	पु.	मार्गशीर्षसहामार्गआग्रहायणिकश्चसः । इत्यमरः ।
अमावस्या	अमावस	अमावाश्या	स्त्री.	अमावश्या अमावाशीदर्शः सूर्य्येन्दुसङ्गम । इत्यमरशब्दरत्नावल्यौ ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अरिपन	ऐपन	आलिम्पनम्	न.	आलिम्पनातर्पणादीपनं मण्डोदकं च तत् । इतित्रिकाण्डशेषः ।
अनरसा	अनरसा	इन्दुरसा	स्त्री.	भक्ष्यद्रव्यविशेषः इन्दुरसावल्या । इति-चर्य्याचन्द्रोदयः ।
अतीचार	विवाहादि जिसमें न हो	अतिचारः	पु.	कुजादिपञ्चग्रहाणां राशिभोगकाला-समाप्तौराश्यन्तरगम् ने तत्रपूर्वराशि-गमनेवक्रातिचार, परराशिगमनेअति-चार, । इतिस्मृतिज्योतिषे ।
असवार	सवार	अश्वारोहः	पु.	अश्वारोहस्तुशादिनः । इत्यमरः ।
अभ्यागत	अतीथी	अभ्यागतः	पु.	प्राघूर्णिकोऽभ्यागतश्च । इतिहेमचन्द्रः ।
अधिकारी	अधिकारी	अध्यक्षः	त्रिः	अध्यक्षाधिकृतौसमौ इत्यमरः ।
अनायास	अनायास	अनायासः	पु.	अनायासेन मरणं विनादैन्येन जीवनं । अनाराधितगोविन्दचरणस्यकथं भवेत् । इतिप्रामाणिकाः ।
अनवस्था	अचानक	अनवस्था	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनाचार	अनाचार	अनाचारः	पु.	सर्वदेशेष्वनाचारः पथितामूलचर्वणम् । इतिस्मृतिः ।
अनुग्रह	अनुग्रह	अनुग्रहः	पु.	अभ्युपपत्तिरनुग्रहः । इत्यमरः ।
अलगल	उपलाता हुआ	असंलग्नम्	न.	असंलग्नं कुवार्तं च दूरतः परिवर्जयेत् । इतिप्रामाणिकाः ।
अधलाह	खराब	अनिष्टम्	त्रि.	इष्टनासादनिष्टाप्तेः करुणाख्योरसो-भवेत् । इतिसाहित्यदर्पणम् ।
अनुरोध	अनुरोध	अनुरोधः	पु.	अनुरोधोऽनुवर्तनम् । इत्यमरः ।
अनुमान	अनुमान	अनुमानम्	न.	अनुमानंअनुमितिः अनुमामितित्रिकाण्ड-शेषः ।
अनुराग	प्रेम	अनुरागः	पु.	अनुरागोरतिप्रीतिः । इतिहेमचन्द्रः ।
अनुचित	अनुचित	अनुचितः	पु.	अन्यायः अनुचितः इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनुभव	अनुभव	अनुभवः	पु.	स्मृतिभिन्नज्ञानम् । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनुराधा	नक्षत्र	अनुराधा	स्त्री.	सप्तविंशतिनक्षत्रान्तर्गतनक्षत्रविशेषः । इतिज्योतिषे ।
अनुष्ठान	अनुष्ठान	अनुष्ठानम्	न.	कर्म्मारम्भविशेषः कृताश्रीभवदवेनक-र्म्मानुष्ठानपद्धती । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अकनाइ	अंकन	अंकनम्	न.	अङ्कनंत्रिशूलादिचिन्हकरणम् इतिप्राय-श्चित्ततत्त्वम् ।
अगडाही	वन की आग	दावाग्निः	पु.	वनोद्भवाग्निर्दावाग्निर्दवाग्निश्चेति रत्नावली ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अपकार	अपकार	अपकारः	पु.	द्रोहः अनुपकारः मन्दकरणम् । इति-हलायुधः ।
अप्रसिद्ध	अप्रसिद्ध	अप्रसिद्धम्	त्रि.	लिङ्गंसामर्थ्यं रूढिगतं प्रसिद्धं न त्वप्रसिद्धिम् । इति तिथ्यादि तत्वम् ।
अप्रधान	नामी नहीं	अप्रधानम्	न.	प्राधान्यरहितं अप्राग्रयं उपसर्जन अप्र-धानम् । इत्यमरः ।
अप्रशस्त	खुलासा नहीं	अप्रशस्तम्	त्रि.	अप्रशस्तं निशिस्नानं राहोरन्यत्रदर्श-नात् । इतितिथ्यादि तत्वे ।
अप्रसन्न	अप्रसन्न	अप्रसन्नम्	त्रि.	आविलं । अनच्छम् । इतिशब्दरत्ना-वली । त्वयिप्रसन्ने परशर्म्मभिः किम् । त्वय्यप्रसन्ने परशर्म्मभिः किम् इति प्राचीनाः ।
अतीसार	अतीसार रोग	अतिसारः	पु.	अतिसारोअन्नगन्धिः । इति त्रिकाण्ड-शेषः ।
अपरस	अपरस	विसर्पः	पु.	विसर्परोगभेदे । इतिशब्दस्तोममहा-निधिः ।
अवग्रह	प्रतिवन्धक	अवग्रहः	पु.	अवग्रहः प्रतिवन्धकः ज्ञानविशेषः इति-मेदिनी ।
अपकर्म्म	खड़ाब काम	अपकर्म्मम्	न.	दुःक्रियामन्दकर्म्मं । इति शब्दकल्प-द्रुमः ।
अकर्तव्य	नालायक	अकर्तव्यम्	त्रि.	अकर्तव्योविरोधश्चदारुणैः क्षत्रियैस्सह । इतिगणपतिखण्डे ।
अकस्मात्	अकस्मात्	अकस्मात्	[व्य.]	अकस्मात् सहसासद्यः सपदिस्तत्क्षणे-ऽत्यपि । इतिहेमचन्द्रः ।
अकारण	अकारण	अकारणम्	न.	कारणशून्यं निर्हेतुः अनिमित्तम् । इति-शब्दकल्पद्रुमः ।
अकृत्तिम	असली	अकृत्रिमः	पु.	चतुर्थेचतथाभागे स्नानार्थंमृदमाहरेत् । तिलपुष्पकुशादीनिस्नानञ्चकृत्रिमेजले । इत्याह्निकाचारतत्वम् ।
अनाध्याय	अनाध्याय	अनाध्यायः	पु.	स्मृतियुक्ताननाध्यायनसप्तमीञ्चत्रयोद-शीम् पक्षयोर्म्माघमासस्यद्वितीयां परिव-र्जयेत् । इतिबृद्धगर्गः ।
अकर्म्मण्य	नाकाम	अकर्म्मण्यम्	न.	षष्टिदणात्मिकायाञ्चतिथेर्न्निष्क्रमणे-परे । अकर्म्मण्यंतिथिमलं विद्यादेकाद-शींविना । इतितिथ्यादि तत्वम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अनभिज्ञ	अनजान	अनभिज्ञः	त्रि.	प्रज्ञारहितः धिक्त्वांचूततरोः परापरपरिज्ञानानभिज्ञोभवान्। इति प्राचीनाः।
अनर्गल	अनर्गल	अनर्गलम्	त्रि.	अवाधमच्छं खलमनर्गलम् हेमचन्द्रः।
अनियम	अनियम	अनियमः	पु.	अनियमः अनिश्चयः। गुरुषष्ठश्च पादानां शेषेष्वनियमोमतः इति छन्दोमञ्जरी।
अनुकल्प	वैसाही	अनुकल्पः	पु.	मुख्यस्थानापन्नप्रतिनिधिः। इत्यमरभरतौ।
अनुरक्त	आसिक	अनुरक्तः	त्रि.	आसक्तः। अनुरक्तोगुणान् ब्रूतेविरक्तोदूषणानिच० इत्युद्भटः।
अन्वेषण	खोजना	अन्वेषणम्	न.	सुग्रीवोराममित्रं क्वजनकतनयान्वेषणेप्रेषितोऽहम्। नाटकम्।
अपमान	तिरस्कार	अपमानम्	न.	अपमानंपरिभवस्तिरस्कारस्तिरस्क्रिया। इति शब्दरत्नावली।
अपमृत्यु	असमय का मरना	अपमृत्युः	पु.	विनारोगेणमरणम् अपमृत्युभयं नास्तिमृतोमोक्षमवाप्नुयात्। देवीकीलकं।
अपवाद	कलंक	अपवादः	पु.	परीवादापवादवत्। इत्यमरः।
अभिप्राय	मतलब	अभिप्रायः	पु.	इच्छाविशेषः अभिप्रायश्छन्दः आशयः। इत्यमरः।
अभिमान	घमंड	अभिमानः	पु.	गर्वोभिमानोऽहंकारः। इत्यमरः:
अभिमानी	घमंड रखनेवाला	अभिमानी	त्रि.	अभिमानयुक्तः कर्ताद्यूतच्छलानांजतुमयशरणोद्दीपितः सोऽभिमानी। इति वेणीसंहार।
अभ्युदय	उन्नति	अभ्युदय	पु	प्राप्तश्चाभ्युदयोमम। रामायणम्।
अमंगल	अशुभ	अमंगलम्	न.	मङ्गलशून्यः। अमङ्गलं रूपमिदम्। इति विद्वन्मोदतरङ्गिणी।
अलौकिक	अद्भुत	अलौकिकः	त्रि.	अलौकिकत्वादमरः स्वकोषेन वानिनामानिसमुल्लिलेख०। इति त्रिकाण्डशेषः।
अवदात	साफ	अवदातः	त्रि.	मनोज्ञं निर्मलन्। इत्यमरभरतौ।
अवकाश	समय	अवकाशः	पु.	अवकाशोद्विविधः कालिकः दैशिकश्च। इति शब्दस्तोम महानिधिः।
अवधूत	सन्यासी के भेद	अवधूतः	पु	सन्न्यासाश्रमी तद्विधानं सन्न्यासिशब्देद्रष्टव्यः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
अवरोध	रोकना	अवरोधकः	पु.	अवरोधकारकः अवपूर्वकरुधधातोः णक्प्रत्ययेननिष्पनः। इति व्याकरणम्।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अवलम्ब	सहारा	अवलम्बनम्	न.	आश्रयः । अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न-पतिष्यतः सहस्रमपि इति माघे ९ सर्गः ।
अवशिष्ट	बाकी	अवशिष्टः	त्रि.	शेषः । उद्वर्तः । शौचावशिष्टांगेहाच्च-नादद्याल्लेपसम्भवाम् । इत्यान्हिका-चारतत्वम् ।
अवसन्न	मरने के समीप	अवसन्नः	त्रि.	आचारेणावसन्नोऽपिपुनः प्रार्थयते यदि । इति व्यवहारतत्वम् ।
अवसर	अवसर	अवसरः	पु.	प्रस्तारोऽवसरोमन्त्रविशेषोवर्षणमिति मेदिनी ।
अविवेक	अविचार	अविवेकः	पु.	सदसद्विवेचना राहित्यम् । इति शब्द-कल्पद्रुमः ।
अहंकारी	अभिमानी	अहंकारी	त्रि.	अहङ्कारोविद्यतेऽस्येति अस्त्यर्थे णिन्-प्रत्ययेन पिष्पन्नः । इति व्याकरणम् ।
अधिकार	अधिकार	अधिकारः	पु.	सर्वैस्युरधिकारिणः । इति स्मृतिः ।
अकवाल	प्रताप	प्रतापः	पु.	सप्रतापः प्रभावश्च । इत्यमरः ।
अधजरु	अधजरा	दरदग्धः	पु.	इति शब्दार्थ चिन्तामणिः ।
अपोआङ	तृण वि०	उखर्वलः	पु.	तृत्तोत्तमोभूरिपत्रो सुतृणश्च उखर्वलः । इति राजनिर्घन्टः ।
अहलाद	अह्लाद (प्रसन्न)	ह्लादः	पु.	ह्लादः प्रमोदः प्रमदोमुत्प्रीत्यामोद-सम्पदाः । इति हेमचन्द्रः ।
अन्तर्यामी	भीतर जानने वा.	अन्तर्यामी	त्रि.	आत्माजीवः पुरुषः मुद्गलः । त्रिका-ण्डशेषः ।
अङ्पोछा	अङोछा	अङ्गप्रच्छालिका	स्त्री.	अङ्गप्रच्छालि कागात्रमार्जनी मलहा-रिणी । इति शब्दरत्नाकरः ।
अष्टगन्ध	अष्टगन्धा	अष्टगन्धः	पु.	कर्पूरं चन्दनं मुस्ता कुंकुमं देवदारु च । रोचनाकेसरोशीरं गन्धाष्टकमुदाहृतम् । निघन्टुभूषणे ।
अविचार	अन्याय	अविचार	पु.	अविचारेण सर्वाभिरनुष्ठेयन्तुयत्पुनः । इति मात्स्ये ।
अनकर	दूसरों का	अन्यदीयः	पु.	हृदयस्यान्यदीयस्यभेदनेकाकुपातयोरि-त्युद्धटः ।
अर्द्धोदय	पर्व विशेष	अर्द्धोदयः	पु.	योगविशेषः । अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता-चेन्माद्यपौषयोः । अर्द्धोदयः सविज्ञेयः कोटिसूर्य्यग्रहैः समः । अर्द्धोदयेतु संप्राप्ते सर्वं गङ्गासमंजलम् । शुद्धात्मानो द्विजः

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
				सर्वेंभवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः इति तिथ्यादितत्वम् ।
अपराजित	अपराजित	अपराजिता	स्त्री.	विष्णुक्रान्तापराजिता । इत्यमरः ।
अमलवेत	अमलबेंत	अम्लवेतसः	पु.	सहस्रवेधीचुक्रोम्लवेतसः शतवेध्यपि । इत्यमरः ।
असमंजस	मेल नहीं	असमंजसम्	त्रि.	असमञ्जसमिति त्रिकाण्डशेषः ।
अधपहरा	वारवेला	अर्द्ध प्रहरा	स्त्री.	वर्ज्यार्द्धं प्रहरावुधैरिति ज्यौतिषम् ।
अन्नप्राशन	अन्नप्राशन	अन्नप्राशनम्	न.	अन्नस्य प्राशनं कार्य्यं मासिषष्ठेऽष्टमेचुधैरिति कृत्यचिन्तामणौ ।
अच्छिन्नजल	पवित्रजल	अच्छिन्नजलम्	न.	यौगिकशब्दोयम् । इति वृद्धाः ।
अन्नकढेरी	अन्न का ढेर	उत्करः	पु.	उत्करस्तूपधान्यादिराशिः । इत्यमरः ।
अमलतास	अमलतास	आरग्वधः	पु.	आरग्वधोराजवृक्षः सम्पाकश्चतुरङ्गुलः । इत्यमरः ।
अनबधान	असावधान	अनवधानता	स्त्री.	प्रमादोऽनवधानता । इत्यमरः ।
अगरमस्त	सुदर्शना जड़ीवि.	सुदर्शना	स्त्री.	सुदर्शनाकरेवध्वात्रैलोक्यवशमानयेदिति इन्द्रजालकम् ।
अमरलत्ती	आकाशबेल	आकाशवल्ली	स्त्री.	आकाशवल्लीदुःस्पर्शाखवल्लीव्योमवल्लिका । इतिराजनिर्घन्टः ।
अनवसर	अवसर नहीं	अनवसरः	त्रि.	अनवसरेभजमानो गुणवानपिगञ्जनंलभते । इत्युद्भटः ।
अडरनेवा	पपीता	कटभी	स्त्री.	कटर्य्यः श्यामलाशोभीपाटलीकटभीत्यपि । इतिराजनिर्घन्टः ।
अमलपित्त	अमलपित रोग	अम्लपित्तम्	न.	अम्लपित्तम् । इति वैद्यकम् ।
अनभुआर	अनजान	अनभिज्ञम्	त्रि.	प्राज्ञारहितः बुद्धिहीनः अपटुः । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
अनवरत	बराबर	अनवरतम्	न.	नित्यानवरताजस्रमित्यमरः ।
अन्तःकरण	अन्तःकरण	अन्तःकरणम्	न.	मनोऽन्तः करणं निगुः । इत्यमरः ।
अलङ्करण	भूषण (गहना)	अलंकरणम्	न.	अलङ्करणं भूषणम् । इति शब्दरत्नावली ।
अवधारण	निश्चय करना	अवधारणम्	न.	निश्चयः इति शब्दकल्पद्रुमः ।
अव्यवस्थित	काम का ठीक न हो	अव्यवस्थितम्	त्रि.	अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोहि भयङ्करः। इति हितोपदेशः ।
अव्यवहित	अव्यवहित	अव्यवहितम्	त्रि.	संसक्तेत्वव्यवहितमपदांतरमित्यपीत्यमरः ।
असाधारण	असाधारण	असाधारणम्	त्रि.	इति शब्दस्तोममहानिधिः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
असपताल	असपताल	आरोग्यशाला	स्त्री.	आरोग्यशालां कुर्वीतमहौषधपरिच्छदाम् । विदग्धवैद्यसंयुक्तां वह्वन्नरससंयुताम् । इति वैद्यकम् ।
अकादारुण	भयानक	दारुण:	पु.	दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् । इत्यमर: ।
अधबोलिआ	बालकों की भाषा	गद्‌गद्‌वाणी	स्त्री.	इति श्रीमद्भागवतम् ।
अमचुकारी	अमचुकार	अम्लोत्केद:	पु.	इति राजनिर्घन्ट: ।
अकरकडहा	अकरकरा दवा	मरुन्माला	स्त्री.	मरुन्मालातुपिशुनास्पृक्कादेवीलतालघु । इत्यमर: ।
अड़िआबड़द	बैल	अनडवान	पु.	उच्छागौर्वृषभोन्‌डवान् । इति शारदीनाम माला ।
अकचकायल	चौंकना	चकितम्	न.	प्रियाग्रे चकितं भीतेरस्थानेऽपिभयं महत् । इत्युज्वलनीलमणि:
अरवा चाउर	अरवा चावल	आतपतण्डुल:	पु.	इति शब्दकल्पद्रुमे अक्षतशब्देद्रष्टव्य: ।
आगि	आग	अग्नि:	पु.	अग्निर्वैश्वानरोवह्नि: । इत्यमर: ।
आवा	आपाक	आपाक:	पु.	कुम्भकारमृत्पात्रदहनस्थानम् । इति जटाधर: ।
आलू	आलू	आलु:	पु.	आलुर्गलन्ति कायास्यात्कन्दभेदे च भेलके । इतिविश्व: ।
आगाँ	आगे	अग्रम्	न	अग्रं पुरस्तादुपरिपरिमाणेपलस्य च । इत्यमर: ।
आङ	अंग	अङ्गम्	न.	अंगं प्रतीकोऽवयबोऽपद्यने । इत्यमर: ।
आङी	अङिया	अङ्गका	स्त्री.	चोल: कञ्चुलिका कूर्पासकाङि्गका चऽकञ्चुके । इति हेमचन्द्र: ।
आन	दूसरा	अन्यम्	त्रि.	भिन्नार्थकाअन्यतर । इत्यमर: ।
आँखि	आँख	अक्षि	न.	लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी । इत्यमर: ।
आँशु	असुआ	आशु:	पु. न.	आशुर्व्रीहि: पाटलस्यादित्यमर: ।
आधा	आधा	अर्द्धं	न.	समानांश:समभाग: । इत्यमर: ।
आठ	आठ (८)	अष्ट	त्रि.	संख्याविशेष: नित्यवहुवचनान्त शब्दोऽयम् । व्याकरणम् ।
आशा	आशा	आशा	स्त्री.	आशातृष्णापिचायता । इत्यमर: ।
आम	आम	आम्र:	पु.	आम्रश्चूतोरसालोसौसहकारोऽतिसौरभ: । । इत्यमर: ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आक	मदार	अर्कः	पु.	अर्कपर्णो ऽथमन्दारः प्रतापः क्षीर-काण्डकः । इति राजनिर्घन्टः ।
आद	अदरख	आर्द्रकम्	न.	शृंगवेरञ्चमाद्रर्कम् । इति राजनि-र्घन्टः ।
आरु	अरुआ	आरुः	पु.	वीरारुकं वीरसेनं आरुकं वीरमित्यपि । इति राजनिर्घन्टः ।
आँटी	आँठी	अष्टिः	पु.	अष्टिर्वीजम् इत्युणादिकोशः ।
आँटी	आँटीआ	अष्टिका	स्त्री.	इति शब्दार्थचिन्तामणिः ।
आइ	आज	अद्य	[व्य.]	वर्तमान दिनमित्यमरः अह्यश्वोवापर-श्वोवा । रामाबणे ।
आज्ञा	हूकुम	आज्ञा	स्त्री.	शिष्टिश्चाज्ञा च संस्थातु । इत्यमरः ।
आरा	आरा	ऋकचः	पु.	काष्ठविदारणास्त्रविशेषः । इत्यमरः ।
आरि	डांड	आलिः	पु.	पर्य्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौस्त्रियां पुमान् । इत्यमरः ।
आर्त	दुःखी	आर्तः	त्रि.	पीडितः यथा । आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानिये द्विजाः जानन्तो न प्रयच्छन्तिते ऽपितद्दोषभागिनः । इति प्रायश्चित्ततत्वम् ।
आख्या	नाम का संज्ञा	आख्या	स्त्री.	नामसंज्ञा । इत्यमरः ।
आढ्य	धनवान्	आढ्यः	त्रि.	धनवान् । इत्यमरः ।
आत्मा	आत्मा	आत्माः	पु.	आत्मालयः धृतिः बुद्धिः स्वभावः ब्रह्म-देहः । इत्यमरः ।
आदि	आदि	आदिः	पु.	पूर्वः प्रथमः । इत्यमरः ।
आधि	आधि	आधि	पु.	आधिः मनः पीडा । इति मेदिनी ।
आप्त	विश्वास करने वाला	आप्तः	पु.	प्रत्ययितः विश्वस्तः । इत्यमरः ।
आयु	आयु (उमर)	आयुः	पु. न.	जीवितव्याप्यकालः । इति जटाधरः ।
आर्द्रा	आर्द्रा (नक्षत्र)	आर्द्रा	स्त्री.	अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गत-षष्ठनक्षत्रम् । इति ज्यौतिषे ।
आस्था	हैसियत	आस्था	स्त्री.	आलम्बने आस्थानं अपेक्षा । इति मेदिनीकरौ ।
आँजी	आंकुश	अंकुशः	पु.	शृणिरङ्कुशः । इत्यमरः ।
आकाश	आकाश	आकाशः	पु. न.	वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहा-यसी० । इत्यमरः ।
आकुल	व्याकुल	आकुलम्	न.	आकुलं व्याकुलं व्यस्तम् । इत्यमरः ।
आग्रह	आग्रह (हठ)	आग्रहः	पु.	आग्रहोऽनुग्रहाशक्तिराक्रमः । इतिमेदनी।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आनन्द	आनन्द	आनन्दः	त्रि.	स्यादानन्दथुरानन्दः । इत्यमरः ।
आमील	खट्टा	आम्रपेषी	स्त्री.	शुष्काम्र खण्डम् । अस्यागुणाः राज-वल्लभेद्रष्टव्यः ।
आरम्भ	आरम्भ (शुरू)	आरम्भः	पु.	प्रक्रमोपक्रमारम्भः इत्यमरः ।
आकार	आकार	आकारः	पु.	अभिप्रायानुरुपचेष्टाविष्करणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आकांक्षा	आकांक्षा	आकांक्षा	स्त्री.	इच्छाकाक्षांस्पृहेहा । इत्यमरः ।
आकृति	आकार	आकृतिः	स्त्री.	रूपमाकृतिजातिश्च । इति मेदिनी ।
आक्रन्द	रोना	आक्रान्दः	पु.	आक्रन्दरोदनमाह्वानम् । इति मेदिनी ।
आचार	तरीका	आचारः	पु.	आचारचरितं शीलं वृत्तं चरणमित्यपि । इति हेमचन्द्रः ।
आँकुर	अंकुर	अंकुरः	पु.	अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि इत्यमरः ।
आँकुश	अंकुश	अङ्कुशः	न. पु.	अङ्कुशोऽस्त्रीसृणिः स्त्रियामित्यमरः ।
आङन	अङना	अङ्गनम्	न.	अङ्गनं प्राङ्गणेयाने । इति विश्वः ।
आङुर	अंगुली	अङ्गुलिः	स्त्री.	अङ्गुल्यः करशाखास्युः । इत्यमरः ।
आङुठ	उङ्गुली	अङ्गुष्ठः	पु.	पुंस्यङ्गुष्ठप्रदेशिनी । इत्यमरः ।
आंचर	अञ्चल	अञ्चलः	पु.	वस्त्रस्यान्तोमतोञ्चलः इति हलायुधः ।
आँजन	अंजन	अञ्जनम्	न.	कज्जलमञ्जनमहितम् । इति हलायुधः ।
आँजुर	अञुरी	अञ्जलिः	पु.	अञ्जलिजलमिवसुन्दरि यौवनमेतद्विजानीहि । वृतमपि निपतति नित्यं दत्तमिदं कार्य्यतामेति । इत्युद्भटः ।
आश्चर्य्य	आश्चर्य्य	आश्चर्यम्	न. पु.	विस्मयोद्भुतमाश्चर्य्यम् । इत्यमरः ।
आश्रम	आश्रम	आश्रमः	पु.	शास्त्रोक्त धर्म्मविशेषः ब्रह्मचर्य्यं, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास । इति स्मृतिः।
आहार	आहार	आहारः	पु.	जेमनं लेहआहारो । इत्यमरः ।
आलस्य	आलस्य	आलस्यः	पु.	आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः । इत्यमरः ।
आश्विन	आश्विन (महीना)	आश्विनः	त्रि.	आश्विनेत्वाश्वयुजेषा । इति हेमचन्द्रः ।
आसक्त	आशिक	आसक्तः	स्त्री.	आशक्तिविशिष्टः प्रसितस्तत्परासक्तः । इत्यमरः ।
आषाढ	आसाढ	आषाढः	त्रि.	आषाढशशुचिस्यादिति । हेमचन्द्र ।
आपत्ति	आपत्ति	आपत्तिः	पु.	आपतिर्दोषः । इति हेमचन्द्रः ।
आएल	आगत	आगतम्	न.	आयातमागतं उपस्थितमिति । शब्दकल्पद्रुमः ।
आन्हर	अन्धा	अन्धः	त्रि.	किलासीसिध्मलोऽन्धोदृक् । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आचार्य्य	आचार्य्य	आचार्य्यः	पु.	मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य्यः। इत्यमरः।
आच्छन्न	घेरा हुआ	आच्छन्नम्	न.	आच्छादितमावृतम्। इत्यमरः।
आड़ती	आरती	आरात्रिकम्	त्रि.	आरात्रिक शुभेपात्रे विषमानेक वार्तिकम्। इति हरिभक्ति विलासे।
आतिथ्य	आतिथ्य	आतिथ्यम्	न.	अतिथ्यर्थं वस्तु अतिथिभक्षणादिद्रव्यम्। इत्यमरः।
आतुर	आतुर	आतुरः	पु.	आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः। इत्यमरः।
आयास	मेहनत	आयासः	पु.	श्रमः प्रयासो आयासः। इतिः हेमचन्द्रः।
आरोग्य	आरोग्य	आरोग्यम्	न.	आरोग्यञ्चअनामयम्। इति राजनिर्घन्टः।
आलाप	बोलना	आलापः	पु.	स्यादभाषणमालापः। इत्यमरः।
आवल्य	कमजोर	आवल्पम्	न.	अवलस्यभावः दौर्वल्यम्। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आशय	अभिप्राय	आशयः	पु.	अभिप्रायः आशयः। इति विश्वमेदिन्यौ।
आसन	आसन	आसनम्	न.	पीठमासनम्। इत्यमरः।
आसन	आसन (काष्ठ)	आसनः	पु.	सर्जकासनवन्धुकपुष्पप्रियकजीवकाः। इत्यमरः।
आदमी	आदमी	मनुष्यः	पु.	मनुष्यामानुषामर्त्या। इत्यमरः।
आशीष	आशीर्वाद	आशीः	स्त्री.	आशीर्वचन मङ्गलप्रार्थना। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आश्रमी	आश्रमी	आश्रमिकः	पु.	आश्रमयुक्तश्चाश्रमिकः। इति शब्दरत्नावली।
आश्रय	ठेकाना	आश्रयः	पु.	उच्छिद्यमानोवलिनाआश्रयेद्वलवत्तरम्। इति युक्तिकल्पतरौ। १ अध्यायः।
आदङ्क	डर	आतङ्कः	पु.	आतङ्कोरोगभेदे च शङ्कासन्तापकोपि च। इति मेदिनी।
आँकड़	आँकड़	कर्करम्	न.	चूर्णजनकक्षुद्रपाषाणखण्डम्—चूर्णखण्डम्। इतिहारावली।
आस्तिक	आस्तिक (ऋषी)	आस्तिकः	पु.	मुनि विशेषः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आस्तिक	आस्तिक	आस्तिकः	त्रि.	नास्तिकभिन्नः। ईश्वरोऽस्तीतिवादी। हेमचन्द्रः।
आचारी	आचारी	आचारी	पु.	आचारविशिष्टेत्री। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आटोप	घमंड करते हैं	आटोपः	पु.	आटोपोदर्पः। इति हेमचन्द्रः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आदर	सम्मान्	आदरः	पु.	आदरः समादरः सम्मानः। इति शब्द-कल्पद्रुमः।
आधार	अवलम्ब	आधारः	पु.	आधारोधिकरणम्। इति व्याकरणम्।
आपत्	बिपत्	आपत	स्त्री.	आपत्सुमूढोद्युतिमान् यः सम्यक् प्रति-पाद्यते। शब्दकल्पद्रुमः।
आमोद	आमोद	आमोदः	पु.	अतिदूरगामिगन्धः। इत्यमरः।
आलय	शिवालादि	आलयः	पु.	इति शब्दकल्पद्रुमः।
आचमन	आचमन	आचमनम्	न.	कृत्वाथशौचं प्रक्षाल्यपादौहस्तौ च मृज्जलैः। निवद्धशिखआशीनोद्विजमा-चमनं चरेत्। इति पाराशरः।
आराधना	आराधना	आराधना	स्त्री.	आराधना साधना च सेवाभक्तिः प्रसा-दना इति हेमचन्द्रः।
आचरण	आचार	आचरणम्	न.	आचारः व्यवहारः आचरणम्। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आशीर्वाद	आशीर्वाद	आशीर्वादः	पु.	आशीर्वचनं मङ्गलप्रार्थना। इति शब्द-कल्पद्रुमः।
आसकति	आसकती	आलश्यम्	न.	इति शब्दकल्पद्रुमः।
आनठाम	दूसरा जगह	अन्यत्र	[व्य.]	अन्यत्र निधनात्पत्युः पत्नीकेशान्नवाप-येदिति स्मृतिः।
आबनूस	आबनूस	स्फुर्जकः	पु.	तिन्दुकः स्फुर्जकः कालस्कन्धम्। इत्य-मरः।
आमदनी	आमदनी	आयः	पु.	आयोधनागमः प्राप्तिर्लाभश्चेति। हला-युधः।
आडम्बर	आडम्बर	आडम्बरः	पु.	आडम्बररः समारम्भः गजगर्जिततूर्य्ययो-रितिकोशान्तरम्।
आतातयी	आतताई	आततायी	त्रि.	आततयि बधोद्यते। इत्यमरः।
आदरस	नमूना	आदर्शः	पु.	आदर्शः प्रतिपुस्तकम्। इति मेदिनी।
आनुपूर्वी	जँसा को तँसा	आनुपूर्वी	स्त्री.न.	आनुपूर्वीअनुक्रमः इत्यमरः।
आभ्युदय	अभ्युदय सम्बन्धी	आभ्युदयिकम्	न.	आभ्युदयो विवाहादिस्तदर्थं श्राद्ध आभ्युदयिकम्। इति श्राद्धतत्वम्।
आयुरदा	उम्र	आयुः	पु.	जीवितं नित्यगोऽह्यायुः। इति शब्द-कल्पद्रुमः।
आवरण	परदा	आवरणम्	न.	आच्छादनमावरणम्। इति हेमचन्द्रः।
आवश्यक	आवश्यक	आवश्यकम्	न.	आवश्यक पर्वादि क्रियमाणस्य नित्य-नैमित्तिकत्वम्।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आसासोटा	आसासोटा	परिघः	पु.	परिघः परिघातनः। इति हेमचन्द्रः।
आधसेर	आधासेर	शरावर्द्धम्	न.	इति शब्दार्थ चिन्तामणिः।
आम्रेडन	आम्रेडन	आम्रेडिनम्	न.	आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तम्। पञ्चतत्व-प्रकाशः।
आइधरि	आज तक	अद्यावधिम्	न.	अद्यारभ्य वर्तमानदिनपर्य्यन्तम्। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आज्ञाकारी	आज्ञाकारी	आज्ञाकारी	त्रि.	इति शब्दकल्पद्रुमः।
आकाशदीप	आकाशदीया	आकाशदीपः	पु.	आकाशदीपं योदद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। इति निर्णयसिन्धौ।
आकाशवाणी	आकाशवाणी	आकाशवाणी	स्त्री.	अशरीरिणावाक् दैववाणी। इति पुराणम्।
आतशबाजी	आतशबाजी	अग्निलेखा	स्त्री.	अग्निक्रीडाअग्निलेखाखधूपः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आरतकपात	आरत का पत्ता	आलक्तकम्	न.	जतुच्छतघ्नाक्रमिजामवालक्तौतुतसद्रसः इति हेमचन्द्रः।
आँखिगुड़रनाइ	आँख टेढा करना	अदृष्टिका	स्त्री.	सरोषवक्रदृष्टिरदृष्टिका। इति शब्द-रत्नावली।
आङभुटकनाइ	रोमांच	रोमाञ्चः	पु.	रोमाञ्चोरोम हर्षणम्। इत्यमरः।
इः	इ	इः	पु.	इः सन्तापोदुःखभावनाकोपश्च। शब्द-रत्नावली।
इन्द्र	इन्द्र	इन्द्रः	पु.	देवराजः। शब्दकल्पद्रुमः।
इन्द्री	इन्द्रिय	इन्द्रिम्	त्रि.	गोचरा इन्द्रियार्थाश्च। इत्यमरः।
इच्छा	कामना	इच्छा	त्रि.	इच्छाकांक्षास्पृहेहा। इत्ययरः।
इष्ट	इष्ट (मित्र)	इष्टम्	[व्य.]	इष्टमासंसितं प्रियम्। मेदिनी।
इति	इति	इति	[व्य.]	इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु। इत्यमरः।
इज्जड	इज्जल (वृक्ष)	इञ्जलः	पु.	निचुलेइज्जलहिज्जला। इति रभसः।
इजोत	उजियारा	उद्योतः	पु.	आलोकोद्योतज्योतिः। इति हलायुधः।
इनार	कूआ	कूपः	पु.	पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूपः। इत्यमरः।
इचना	इच्चा (माछ)	इञ्चाकः	पु.	मत्स्यविशेषः। इति वैद्यकम्।
इच्छुक	चाहनेवाला	इच्छुः	त्रि.	इच्छतीतिइच्छुः इति व्याकरणम्।
इतर	नीच	इतरः	त्रि.	छुल्लकश्चेतरश्चसः। इत्यमरः।
इनाम	इनाम	पारितोषिकम्	न.	परितोषजनकद्रव्यं यथाममापि चन्द्र-शेखर शरासना रापण प्रथमवादिनः पारितोषिकं धारयसीतिमुरारिः।
इरॉक	इराक (देश)	ऐराकः	पु.	तन्मध्येचोत्तरेदेविऐरॉकः परिकीर्तिः। इतितन्त्रम्।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
इंगुदी	इंगुदी (फल)	इंगुदी	स्त्री.	इंगुदीफलपिण्याकम् । इतिवाल्मीकिये।
इन्द्रज	इन्द्रजव	इन्द्रयवः	पु.	कलिङ्गेन्द्रयवः पुमान् । इत्यमरमाला।
इज्जति	इज्जत	प्रतिष्ठा	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
इन्द्रलुप्त	खालित्य	इन्द्रलुप्तम्	न.	केशघ्नोइंद्रलुप्तकः इतिराजनिर्घंटः ।
इजोड़िआ	चाननी	चन्द्रिका	स्त्री.	चन्द्रिकाकौमुदी ज्योत्स्ना । इत्यमरः।
इसगंद	इसगंद (मूल)	पुलिकमूलम्	न.	वद्धपुलिकमूलस्येत्यादिवर्षकृत्यम् ।
इतस्ततः	यहां वहां	इतस्ततः	[व्य.]	इतस्तोधावमानः सुरथोरथिनांवरः। इति महाभारते ।
इतिहास	इतिहास	इतिहासः	पु.	इतिहासः पुरावृत्तः । इत्यमरः
इन्द्रदारु	इन्द्रदारू	इन्द्रदारुः	पु.	इन्द्रदारुर्देववृक्षः । इतिभावप्रकाशः ।
इसपात	इसपात (लोहा)	काललौहः	पु.	शालिग्रामौषध शब्दसागरः ।
इन्द्रजाल	इन्द्रजाल	इन्द्रजालम्	न.	इतिशब्द कल्पद्रुमेद्रष्टव्यः ।
इन्द्रकमल	इन्द्रकमल (फूल)	इन्द्रकमलम्	न.	पुष्पविशेषः । इतिवृद्धाः ।
इसफगोल	इसवगोल	ईषद्गोलम्	न.	इषद्गोलं स्निग्धबीजं श्लक्षणजीरश्च-कीर्तितः इषद्गोलंपरंवृष्यं मधुरंग्राहि-शीतलम् इतिशालिग्रामनिर्घन्टः ।
इशारा	इशारा	चेष्टा	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
ई	ई	एतद्	त्रि.	पुरोवर्तिवाचकनामसर्वशब्दः । इति-व्याकरणम् ।
ईर्ष्या	ईर्षा	ईर्ष्या	स्त्री.	अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूयातु । इत्यमरः ।
ईट	ईंटा	ईष्टका	स्त्री.	नेष्टकारचितेपितॄन् सन्तर्पयेदितिश्राद्ध-तत्वम् ।
उक्ति	कथन	उक्तिः	स्त्री.	व्याहारउक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः । इत्यमरः ।
उष्ण	गरम	उष्णः	पु.	उष्णः आतपः । इति हेमचन्द्र ।
उग्र	कड़ा	उग्रः	त्रि.	उग्रम् उत्कटम् राद्रेम् । इत्यमरोमेदि-नीच ।
उचक्का	उचकना	चिल्लाभः	पु.	प्रसह्यचौरः चिल्लाभः । इतित्रिकाणु-शेयः ।
उच्छेद	उच्छेद	उच्छेदः	पु.	उच्छेदंजन्मनः कर्तुमेधिशान्तस्तपोधन। इतिभारविः ११ सर्गः ।
उत्ताप	उत्ताप	उत्तापः	पु.	तेजः उष्मा सन्तापः । इति शब्दकल्प-द्रुमः ।
उद्दण्ड	निडर	उद्दण्डः	पु.	उद्दण्डचण्डकिरणं ननुवारयामि । इति महानाटम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उद्गम	निकाश	उद्गमः	पु.	यौवनोद्गमनितान्त शङ्किता। इति प्राचीनाः।
उद्गार	हर्ष	आनन्दः	पु.	इति वृद्धाः।
उलूक	उलूक (पक्षी)	उलूकः	पु.	नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवासूर्य्यस्य किं दूषणम्। इति चाणक्यम्।
उड़नाइ	उड़ना	उड्डीनम्	न.	प्रडीनोड्डीनसण्डीनान्येताः खगगति क्रियाः। इत्यमरः।
उल्लास	आनन्द	उल्लासः	पु.	आह्लादः प्रकाशः उल्लासश्च। शब्द-कल्पद्रुमः।
उत्तम	अच्छा	उत्तमः	पु.	प्रवेकानुत्तमोत्तमाः। इत्यमरः।
उत्तर	जवाब	उत्तरम्	न.	प्रतिवाक्योत्तरेसमे। इत्यमरः।
उत्तर	उत्तर (दिशा)	उत्तरः	त्रि.	दिशाविशेषः। उर्द्धः। उदीची उत्तरः। इति मेदिनी।
उत्तान	उतान	उत्तानम्	न.	उत्तानमूर्द्धमुखशयितम्। इति मेदिनी।
उत्पति	उद्भव	उत्पत्तिः	स्त्री.	जनिरुत्पत्तिरुद्भवः। इत्यमरः।
उत्सव	उछाह	उत्सवः	पु.	महउत्सवउद्धव। इत्यमरः।
उदय	उदय	उदयः	पु.	उदयः पूर्वपर्वतः। इत्यमरः।
उदार	दाता	उदारः	पु.	दक्षिणेसरलोदारौ। इत्यमरः।
उखरि	ऊखल	उदूखलम्	न.	उदूखलमुलूखलम्। इत्यमरः।
उद्वेग	उद्वेग	उद्वेगः	पु.	मदउद्वेगउद्भ्रमे। इत्यमरः।
उद्योग	उद्योग	उद्योगः	पु.	उद्योगोत्साह केपिच। इति जटाधरः।
उपाय	यत्न	उपायः	पु.	उपायश्चोपगतिः। मेदिनी।
उत्सर्ग	उत्सर्ग	उत्सर्गः	पु.	त्यागोविहापितं दानमुत्सर्जन विसर्जने। इत्यमरः।
उरीद	उरद	माषः	पु.	कुरुविन्दः धान्यवीरः वृषाकरः पित्र्य। पितृभोजनः मांसलः वलाढयः। इति राजनिर्घन्टः।
उज्जर	सफेद	उज्वलम्	न	उज्वलं विशदं दीप्तम्। इति मेदिनी।
उड़ीस	षटमल	मत्कुणः	पु.	मत्कुणः रक्तपायी रक्ताङ्गः मञ्चका-श्रयः। इति राजनिर्घन्टः।
उच्छ्राष	उन्नति	उच्छ्रायः	पु.	उच्छ्रायः उच्चता उच्छ्रयः। इत्यमरः।
उपाति	रसद	भोजन संपादनम्	न	भोजनसंपादनंददौ। इति पुराणम्।
उनतीस	उनतीस (२९)	ऊनत्रिंशः	पु.	संख्याविशेषः। ज्यौतिषम्।
उठल	उठा हुआ	उत्थितः	पु. न.	उच्छ्रिताउत्थितास्त्वमी। इत्यमरः।
उझट	उझट	उद्भटः	त्रि.	प्राचीननिर्म्मितपद्यविशेषः। इति वृद्धाः।
उन्नैस	उन्नैस (१९)	ऊनविंशतिः	स्त्री.	ऊनविंशतिदास्यमानपिण्डस्थानानि। इति तिथ्यादि तत्वम्।
उदास	उदासीन	उदासीनः	पु.	विजगीषोः शत्रुमित्रभूमितोव्यवहितः व्यवहितत्वादेवनोपकारी नाप्यपकारी केवलमूर्द्धमासीनइव। इति भरतः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उसर	उसर	उषरः	पु.	ऊषवानूषरौद्वावप्यन्यलिङ्गौस्थलंस्थली। इत्यमरः।
उनाह	भाफ देना	उनाहः	पु.	इति वैद्यकपरिभाषा।
उलोँच	चाननी	उल्लोचः	पु.	चन्द्रोदयवितानं स्यादुल्लोचः षजकस्तथा। इति हलायुधः।
उनटा	उल्टा	विपरीतः	त्रि.	तत्पर्य्यायः। प्रतिसव्यः अपसव्यः विलोमकः। इति जटाधरः।
उसिना	उसना चावल	द्विः स्विन्नान्नम्	न.	द्विः स्विन्नमन्नं पृथुकं शुद्धं देशविशेषके। नात्यन्तशस्तं विप्राणां भक्षणे च निवेदने। इति ब्रह्मवैवर्ते ब्रह्मखण्डम्।
उकासी	खासी	काशः	पु.	काशिकाछवथुः काशः। इति शब्दरत्नावली।
उतरी	उत्तरीय	उत्तरीयम्	न.	सम्व्यानमुत्तरीयञ्च। इत्यमरः।
उबेर	प्रकाश	प्रकाशः	पु.	प्रकाशोद्योतआतपः। इत्यमरः।
उचित	उचित	उचितम्	त्रि.	विदितम् न्यस्तम् परिमितम् युक्तम्। इति हेमचन्द्रः।
उच्छन्न	किसी के वश में न हो	उच्छन्नम्	त्रि.	उच्छनम् नष्टम्। इति भगवद्गीता।
उत्कट	कडा	उत्कटम्	त्रि.	तीव्रम् मतम् उत्कटम्। इति मेदिनी।
उत्कण्ठा	इच्छा	उत्कण्ठा	स्त्री.	इष्टलाभे कालक्षे पासहिष्णुता इत्यमरः।
उत्तीर्ण	पास	उत्तीर्णम्	त्रि.	मुक्तम् पारगतम् इति शब्दकलपद्रुमः।
उत्पन्न	पैदाइस	उत्पन्नम्	त्रि.	वृद्धिमत्प्राद्यतोत्पन्ना। इत्यमरः।
उत्पात	अरिष्ट लक्षण	उत्पातः	त्रि.	अजन्यं क्लीवमुत्पातउपसर्गः समंत्रयम्। इत्यमरः।
उत्साह	उत्साह	उत्साहः	पु.	उत्साहोध्यवसायश्च। इत्यमरः।
उत्सुक	अभिलाषा	उत्सुकः	पु.	वाञ्छितकर्म्मोद्यतः इष्टार्थोद्युक्तः उत्सुकः। इत्यमरः।
उगल	उदय का समय	उद्गतः	त्रि.	उदितः। उद्गतः प्राप्तोदयः। इति मेदिनी।
उद्धत	उद्दण्ड	उद्धतम्	त्रि.	अविनीतमुद्धतम्। इति हेमचन्द्रः।
उद्यम	परिश्रम	उद्यमः	पु.	गुरणमुद्यमे। इत्यमरः।
उद्योगी	उद्योगी (उपाय)	उद्योगी	त्रि.	उद्यागविशिष्टः उद्यमी। उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मी। इति हितोपदेशः।
उद्विग्न	चञ्चल	उद्विग्नः	पु.	निमग्नोद्विग्नसंह्लीणैः। इति भट्टिः।
उधार	उधार	उद्धारः	पु.	उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु। इत्यमरः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उन्मत	पागल	उन्मत्तः	पु.	उन्मत्तउन्मादवान् । इत्यमरः ।
उन्माद	उन्माद	उन्मादः	पु.	उन्मादश्चित्त विभ्रमः । इत्यमरः ।
उपमा	सदृश्य	उपमा	स्त्री.	उपमानम् सादृश्यम् । इत्यमरः ।
उपाधि	सम्मान	उपाधिः	पु.	छलम् विशेषणम् उपाधिः । इति मेदिनी ।
उपेछा	त्याग	उपेछा	स्त्री.	उपेछा अस्वीकारः त्यागः । इति हेमचन्द्रः ।
उच्चारण	उच्चारण	उच्चारणम्	न.	उच्चारणम् कथनम् वाङ्निष्पत्तिकरणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उपद्रव	उपद्रव	उपद्रवः	पु.	उपद्रवोत्पातः । इति हलायुधः ।
उकटन	अवटन	उद्वर्तनम्	न.	उद्वर्तनोत्सादनेद्वे । इत्यमरः ।
उघाड़ल	उघारना	उद्घाटितः	पु.	कृतोद्घाटनम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उगरल	उबरा	उद्वर्तः	पु.	उद्वर्तोहिग्रन्थः । समधिकफलमाचष्टे । इति व्याकरण टीका ।
उपवास	लंघन	उपवासः	पु.	औपवस्तंतूपवासोविवेकः पृथगात्मता । इत्यमरः ।
उपहत	अपवित्र	उपहतः	पु.	अशुद्धद्रव्यं । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उपहास	निन्दा	उपहासः	पु.	उपहासाय किं नस्यात् असत्सङ्गो मनीषिणाम् । इति मलमास तत्वम् ।
उपार्जन	पैदा करना	उपार्जनम्	पु.	अर्जनम् धनाद्याहरणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उल्कापात	उल्कापात	उल्कापातः	पु.	उल्कापातोदिशांदाहः परिवेषस्तथैव च । इति अद्भुत प्रकरणम् ।
उपचार	उपचार	उपचारः	पु.	रोगप्रतीकारः उपचारश्चोपचर्य्या चिकित्सारुक्प्रतिक्रिया । इति राजनिर्घन्टः ।
उपहार	बकशीश	उपहारः	पु.	उपहारश्चोपग्राह्यः उपानयनप्रदेशनम् । इत्यमरः ।
उनी वस्त्र	पशमीना	राङ्कवम्	न.	राङ्कवं मृगरोमजम् । इत्यमरः ।
उचरीङ्	झींगुर	भृङ्गारी	स्त्री.	भृङ्गारीझीरुकाचीरी । इत्यमरः ।
उन्चालीस	उन्चालीस (३९)	ऊनचत्वारिंशत्	स्त्री.	संख्याविशेषः । इति ज्यौतिम् ।
उषाकाल	भोर का समय	उषः	पु.	उषाप्रभातं गोसर्गः । इति त्रिकाण्ड शेषः ।
उकाउकी	उल्का भ्रमण	उल्काभ्रमणम्	न.	यद्येवं पूर्वदिन एवं प्रदोषव्यापिन्यमावास्या तदा पूर्वदिन एवं श्राद्धमकृत्वापि उल्कादानं कर्त्तव्यम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उझिलल	उझिलना	उज्झितम्	त्रि.	उत्सृष्टमुज्झितं त्यक्तं वर्जितं चेति-कीर्तितम् । इति हलायुधः ।
उठओनाइ	उठाना	उन्नयनम्	न.	ऊर्द्ध्वप्रापणउन्नयनं वितर्कः । इति हेम-चन्द्रः ।
उपगत	उपलाता	उपगतः	त्रि.	समाहितोपश्रुतोपगतम् । इत्यमरः ।
उपस्थित	उपस्थित	उपस्थितः	त्रि.	उपस्थितिश्चोपनतः उपसन्नः । इति हेमचन्द्रः ।
उपराग	उपराग	उपरागः	पु.	उपरागोउपलम्भः । कोशान्तरम् ।
उत्कण्ठित	उत्कण्ठा	उत्कण्ठितम्	त्रि.	उत्कण्ठायुक्तम् । उत्कम् उत्सुकम् उन्मनः । हेमचन्द्रः
उपरोँझ	उपराचढी	अहमहमिका	स्त्री.	अहमहमिकातुसास्यात्परस्परं योभव-त्यहङ्कारः । इत्यमरः ।
उलहन	उलहना	उपालम्भः	त्रि.	यः सनिन्द उपालम्भः । इत्यमरः ।
उपार्जन	पैदा करना	अर्य्यकः	पु.	अतएव वशिष्ठेनज्येष्ठस्यां शद्वयमभि-धायार्य्यकस्यां शद्वयमभि हितम् । इति दायभागः ।
उच्चाटन	जी न लगना	उच्चाटनम्	न.	षट्कर्म्मान्तर्गताभिचारकर्म्मविशेषः । उच्चाटनं स्वदेशादेभ्रं शनम्यरिकीर्ति-तम् । इति शारदा तन्त्रम् ।
उद्यापन	उद्यापन	उद्यापनम्	न.	उद्यापनं दीपदानं व्रतान्येतानिकार्तिके । इति शब्दकल्द्रुमः ।
उच्चैःश्रवा	इन्द्र का घोड़ा	उच्चैः श्रवा	न.	इन्द्रघोटकः । इत्यमरः ।
उगहनि	उबहन	उद्वाहिनी	पु.	उद्वाहिनीरज्जुः । इति मेदिनी ।
उनचास	उनचास (४९)	एकोनपञ्चाशत्	त्रि.	इति ज्यौतिषे ।
उनसट्ठि	उनसठ (५९)	ऊनषष्ठिः	स्त्री.	इति ज्यौतिषे ।
उनासी	उनासी (७९)	एकोनाशीतिः	स्त्री.	इति ज्यौतिषे ।
उतरनाइ	उतरना	उत्तरणम्	न.	नद्यादिपारगमनम् । शब्दकल्पद्रुमः ।
उपाड़नाइ	उपारना	उत्पाटितम्	न.	उत्पाटितम् उन्मूलितम् उत्खातम् । जटाधरः ।
उपनयन	यज्ञोपवीत संस्कार	उपनयनम्	न.	उपनायः उपनयः आनयः उपनयनम् । इति हेमचन्द्रः ।
उदाहरण	उदाहरण	उदाहरणम्	न.	उदाहरणम् उपोद्घातः उदाहारः । इति शब्दरत्नावली ।
उडरामाछ	मछली	उद्वृत्ताक्षी	स्त्री.	उद्वृत्ताक्षीवृहत्कुक्षीकूर्म्मरूपास्वयं स्मृता । इति पलपीयूषलता ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उगिलनाइ	उगलना	उद्गतम्	त्रि.	उद्वान्तम् छर्दितवस्तु । इत्यमरः ।
उगहनाइ	उगहना	उद्ग्रहणम्	त्रि.	उद्ग्रहणम् । इति कोशान्तरम् ।
उत्तराखाढ	उत्तराखाढ	उत्तराखाढा	स्त्री.	अश्विन्यादिशप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतैकविंशति नक्षत्रम् । इति ज्यौतिषे ।
उजराकमल	सफेद कमल	पुण्डरीकम्	न.	पुण्डरीकं शिताम्भोज । इत्यमरः ।
उलवाचाउर	चावल भुजिया	भृष्टतण्डुलः	पु.	सुस्निग्धः कफहारक्षः पित्तलोभृष्टतण्डुलः । इति राजवल्लभः ।
उत्तरफल्गुनी	उत्तरफल्गुनी	उत्तरफल्गुनी	स्त्री.	अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतद्वादशनक्षत्रम् । इति ज्यौतिषे ।
उत्तरभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	उत्तरभाद्रपदा	स्त्री.	अश्विन्यादिसप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतषड्विंशनक्षत्रम् । इति ज्यौतिषे ।
ऊक	उल्का	उल्का	स्त्री.	तेजः पुञ्जः उल्काज्वालास्यनिर्गता । इति हलायुधः ।
ऊद	ऊदबिलाव	ऊद्रः	पु.	उद्रस्तुजलमार्जारः पानीयनकुलोवसी । इति हेमचन्द्रः ।
ऊँन	ऊन	ऊर्णा	स्त्री.	ऊर्णमिषादिलोम्निस्यादित्यमरः ।
ऊस	सज्जी मिट्टी	ऊषः	पु.	स्यादूषः क्षारमृत्तिका । इत्यमरः ।
ऊँट	ऊँट	ऊष्ट्रः	पु.	उष्ट्रे कमेलकमयमहाङ्गाः । इत्यमरः ।
ऊँच	ऊँचा	उच्चः	त्रि.	उच्चप्राशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे । इत्यमरः ।
ऊपर	ऊपर	उर्द्धम्	न.	उपरिष्टादयवूर्द्धम् । इति हलायुधः ।
ऋतु	छ ऋतु	ऋतुः	त्रि.	षडमीऋतवः पुंसि । इत्यमरः ।
ऋण	कर्ज	ऋणम्	न.	स्यादृणं पर्य्युदञ्चनम् ।
ऋषि	मुनी	ऋषिः	पु.	ऋषिः सत्यवचाः शापास्त्रः । इति त्रिकाण्डशेषः ।
ऋग्वेद	ऋग्वेद	ऋक्	स्त्री.	वेदविशेषः ऋग्वेद इत्यमरः ।
ॠ	ॠ	ॠ	न.	रक्षा । इति मेदिनी ।
ऌ	ऌ	ऌ	[व्य.]	एकाक्षर कोशः ।
ॡ	ॡ	ॡ	स्त्री.	एकाक्षर कोशः ।
एक	एक (१)	एकः	त्रि.	आदि संख्या इति मेदिनी ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
एड़ी	एड़ी	पार्ष्णि:	पु. स्त्री.	पार्ष्णिस्तुघुटयोरधः । इति हेमचन्द्रः ।
एत्ता	सीमा	इयत्ता	स्त्री.	इयतोभावः । सीमा परिमाणम् संख्या । इति शब्दकल्पद्रुम: ।
एते	इतना	एतावत्	त्रि.	एतत्परिमाणम् । इति व्याकरणम् ।
एकान्ती	एकान्त	मन्त्र:	पु.	गुप्तवादेरहसि कर्त्तव्यावधारणे मन्त्रः । वेदांशे गुप्तवादे च । इति हैमः ।
एकाङ्गी	एकाङ्गीदवा	मुरा	स्त्री.	दैत्यागन्धकुटी मुरा । इत्यमरः ।
एकट्ठा	एकत्र	एकत्र	(व्य.)	एकस्मिन् शयने सरोरुहमुखी । इति अमरुशतकम् ।
एकाग्र	एकाग्रचित	एकाग्र:	त्रि.	एकतानोऽन्यवृत्तिरेकाग्र्यैकायनावपीत्यमरः ।
एम्हर	इधर	इत:	(व्य.)	ताडितास्तेन वीरेण फणीन्द्रास्त्रासमगता: । इतस्ततस्तेतन्मुक्तागताः पातालमुज्जवा: । इति पाद्मे ।
एषन	अभी	एतत्क्षणम्	न.	एतत्क्षणे महावाहोरावणं तंजहिष्यसि । इति वाल्मीकये ।
एकसर	एकाकी	एकक:	त्रि.	साधारणन्तुसामान्यमेकाकीत्वेकएककः । इत्यमरः ।
एकादशी	एकादशी	एकादशी	स्त्री.	उपोष्यैकादशीराजन् यावदायुः प्रवृत्तिभिः । इत्येकादंशी तत्वम् ।
एकमोन	एक मन	खारी	स्त्री.	खारीद्रोणचतुष्टयम् । इति स्मृतिः ।
एकोद्दिष्ट	एकोद्दिष्टश्राद्ध	एकोद्दिष्टम्	न.	पूर्वाह्णेमातृकं श्राद्धमपराह्णेतुपैतृकम् । एकोद्दिष्टन्तुमध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम् । इति ब्रह्मपुराणम् ।
एकभुक्त	एक समय का भोजन	एकभुक्तम्	न.	दिनार्द्धसमयेऽतीते भुज्यते नियमेनयत् । एकभुक्तमितिप्रोक्तं रात्रौतन्नकदाचनः । इति स्कान्दे ।
एकवयस	समान उम्र	वयस्यः	पु.	वयस्यः स्निग्धः सवयाः । इत्यमरः ।
एककनिचा	१६ मासा	कर्षः	पु. न.	षोडशमाषपरिमाणम् कर्षोऽक्षः इत्यमरः ।
एकादशाह	एकादशाह	एकादशाहः	पु.	एकादशदिनेशय्याकाञ्चनपुरुषद्विजदम्पती-

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
				पूजनकपिलादान बृषोत्सर्गान् कृत्वा एकादशाहश्राद्धं कुर्य्यात् । इति श्राद्ध-विवेकः ।
एम्हर ओम्हर	इधर उधर	इतस्ततः	(व्य.)	द्वे सहस्त्रे रथानांसगजानामयुतं रणे । इतस्ततोधावमानः सुरथो रथिनम्वरः । इ. ज. भा. आ. प. २ अध्यायः ।
एगारह	एगारह ११	एकादश	त्रि.	संख्या त्रिशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकैस	इक्कीस २१	एकविंशति	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्योतिषम् ।
एकतीस	इकत्तीस ३१	एकत्रिंशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्योतिषम् ।
एकतालीस	एकतालीस	एकचत्वारिंशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्योतिषम् ।
एकावन	एक्यावन ५१	एकपंचाशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्योतिषम् ।
एकसठि	एकसठ ६१	एकषष्ठिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्योतिषम् ।
एकहत्तरि	एकहत्तर ७१	एकसप्ततिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकाशी	एक्यासी ८१	एकाशीतिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकानबे	एकान्नबे ९१	एकनवतिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
ऐठ	जूठा	उच्छिष्टम्	न.	जुष्ठमुच्छिष्टमिति मेदिनी ।
ऐठा	बन्धना	पट्टडोरम्	न.	पट्टडोरं द्वितीयायांकेशसं यमहेतवे । इति दुर्गा पूजा विधिः ।
ऐला	इल्ला	चर्म्मकीलम्	न	चर्म्मकीलं जतुमणिं मशकान्तिलकाल-कान् । उत्कृत्यशस्त्रेण
			स्त्री.	दहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः । इतिभाव-प्रकाशः ।
ऐहव	सधवा	सधवा		नस्पृशेत्तिलदर्भांश्चसधवातुकथञ्चन । इतिस्मृतिः ।
ऐश्वर्य्य	धन	ऐश्वर्य्यम्	न.	विभूतिर्भूतिरैश्वर्य्यम् । इत्यमरः ।
ऐचातान	ऐचाताना	केकरः	पु.	बलिरः केकर । इत्यमरः ।
ऐभकफड	खाद्य पदार्थ (स्योड़ा)	स्वस्तिकः	पु.	स्वस्तिकोमङ्गलद्रव्ये चतुषकगृहभेदयोः । पिष्ठकस्य विकारेच इतिविश्वः । तण्डु-लचूर्णनिर्म्मितपक्वान्नविशेषः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
ओड़हुल	ओड़हुल	ओड्रपुष्पम्	न.	ओड्रपुष्पंजवापुष्पंवज्रपुष्पंतिलस्ययत् । इत्यमरः ।
ओछाओन	बिछौना	आच्छादितम्	त्रि.	कृताच्छादनमावृतम् । इतिकोशान्तरम् ।
ओसारा	दालान	ओकःसारा	त्रि.	ओकः सारा । इतिप्राचीनाः ।
ओलती	ओरी	ओकतटः	पु.	स्यादोकतटस्मृतः । इतिशब्दमाला ।
ओइरी	तिन्नी	नीवारः	पु.	तृणधान्यानिनीवाराः । इत्यमरः ।
ओढ़ना	ओढ़ना	आच्छादनम्	न.	वस्त्रम् संपिधानम् आछादनम् इत्यम-मदिन्यौ ।
ओहाड़	ओहार	अंशुकयवनिका	स्त्री.	अंशुकयवनिकापरिगतपर्य्यन्तयेत्यादि-कादम्वरी ।
ओरहा	होरहा	होलका	स्त्री.	अर्द्धपक्वेशमीधान्यै स्तृणभृष्टश्च होलका इति शद्दस्तोम् महानिधिः ।
ओड़िका	करछुल	दुग्धविलोडनी	स्त्री.	दुग्धविलोडिनी । इति प्रामाणिकाः ।
ओस	ओस	खबाष्यम्	न.	दिव्योदकंखवाष्पं चरजनीजलमित्यपि । इति मेदिनी ।
ओटी	पेड़ू	वस्तिः	पु.	नाभेरधोमत्रुपंटबस्तिर्मूत्राशयोऽपिच । इतिहेमचन्द्रः ।
ओठ	ओठ	ओष्ठः	पु.	ओष्ठाधरौतुरदनच्छदौदशनवाससी । इत्यमरः ।
ओल	सूरन	ओल्लः	पु.	आद्रशूरणयोरोल्लः । इतित्रिकाण्डशेषः ।
ओंङ्ड़ायल	गिर गया हुआ	लुठितः	पु.	त्रिष्पावृत्तलुठितौ । इत्यमरः ।
औन्ही	आभूषण विशेष	पाषकः	पु.	रत्नपाषकषट्कैश्च विराजित पदाङ्-गुलैरितिब्रह्मवैवर्तें कृष्ण खण्डे ४ अध्यायः ।
ओङ्ही	ऊँघना	अबपातः	पु.	अधःपतनेनिपातेच । इतिशब्दस्तोमम-हानिधिः ।
औठी	अंगुठी	अङ्गुलीयकः	पु.	अङ्गुलीयकभूर्म्मिका । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
औषध	दवा	औषधम्	न.	भेषजौषधभैषेज्यान्यऽगदोजायुरित्यपि । इत्यमरः ।
औटनाइ	आवर्तन	आवर्तनम्	न.	दुग्धादेरालोडनम् । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
ओङ्हायल	ऊँघाया हुआ	परासुता	स्त्री.	निद्रापरवशतापरासुता । इतिपुराणम् ।
औठिआकेश	घुंघराला बाल	अलकः	न. पु.	अलकाश्चूर्णकुन्तलाः । इत्यमरः ।
अंश	हिस्सा	अंशः	पु.	अंशभागौतुवन्टके । इत्यमरः ।
अंक	अंक	चिन्हम्	न.	चिन्हं लक्ष्मचलक्षणम् इत्यमरः ।
अः	अः	अः	पु.	अः । निषेधः । इति मेदिनि ।



मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
कणा	रेणु	कणिका	स्त्री.	अत्यन्तसूक्ष्मवस्तु कणा । इति श. क. द्रुमः ।
कथा	कथा	कथा	स्त्री.	प्रवन्धेन कल्पना अथवा प्रवन्धस्य अभिधेयस्य कल्पना स्वयं रचना । इति सारसुन्दरी ।
कच्छा	फेंटा बँधा हुआ	कक्षा	स्त्री.	परिधानवस्त्रस्य पृष्ठतो निहिताञ्चलम् । इ. हे. च.
कन्था	कन्था	कन्था	स्त्री.	स्यूतकर्पटः । इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहे अमरः ।
कली	मुँह बँधा फूल	कलिका	स्त्री.	कलिका कोरकः पुमानित्यमरः ।
कत्ता	खड्ग	कर्तृका	स्त्री.	हास्ययुक्तां त्रिनेत्राञ्च कपाल कर्तृका युताम् । इति तन्त्रसारे ।
कबै (माछ)	मत्स्य विशेष	कवयी	स्त्री.	कवयी काकचपृष्ठी कङ्कत्रोटी जलव्यधः । इति त्रिकाण्डशेषः ।



मैथिली शब्द कल्पद्रुम

—मति नाथ मिश्र 'मतंग'

अ-सं., स्वर वर्णक आदि अक्षर । अकार । मै.
अः-अ., निषेधक शब्द । मै.
अइ-अ., सम्मान सूचक सम्बोधन । मै.
अए-अ., पुरुषक हेतु सम्मानसूचक सम्बोधन । मै.
अएँ-अ., हर्ष, विस्मय आ भय मे स्वतः बहराएल शब्द । प्रयोग-अएँ ! एहन बात ? मै.
अओ-अ., पुरुषक हेतु शिष्ट सम्बोधन । मै.
अओ-अ., हर जोतैक काल बड़दक प्रेरक शब्द । मै.
अओरा-सं., धात्री फल । मै.
अक्का चक्का लागब-क्रि., आश्चर्य मे पड़ब । मै.
अक्खज-विशे., हट्ठें नै मरैवाला । मै.
अक्खड़-विशे., अपन बलवन्तीक दाबी सँ अत्यन्त ढीठ, अड़ि रहैक स्वभाववाला । मै.
अक्खा-सं., अन्न आदि रखैक बड़का बोरा आ बाँसक बीनल गोल नाम वासन । मै.
अक्खै अम्मर-विशे., देवता सन अविनाशशील । 'अक्षय अमर' । तद्भव
अक्री-विशे., सब रुपें कोनो काज मे असमर्थ । अक्रिय । सं. तद्भव
अक्षत-सं., पूजा आदि उपयोगक हेतु अरबा चाउर। सं. तत्सम
अक्षय-विशे., अविनाशी, क्षय रहित । सं. तत्सम
अक्षर-सं., वर्णात्मक शब्द बनबैक हेतु स्वर आ व्यञ्जन वर्ण । सं. तत्सम
अकच्छ-विशे., कोनो काज मे एकाकरन लगने हतोत्साह, व्याकुलता सँ विरक्त । मै.
अकचक लागब-क्रि., आश्चर्य सँ विश्वास नहि जमब । चकित भय दहोदिश ताकब । मै.
अकचकाएब-क्रि., विस्मय सँ विश्वास नहि होएब । एम्हर ओम्हर निहारब । मै.
अकचकाह-विशे., साधारणो बात मे चौंकनिहार ।मै.
अकछाएब-क्रि., निरन्तर काज मे निमग्न रहने मनक व्याकुल भय विरक्त होएब । दोसरा के मन उचटाएब । मै.
अकट्ठी-विशे., परिहास मे अनेक चेष्टा, गप गढ़ैवाला । प्रयोग-"भुटकुन बड़ अकट्ठी छथि ।" मै.
अकरकाँट-विशे., काँट कुशक गदौस सँ भरल । गुरुपाकी भोजन । मै.
अकर मकर-विशे., विलम्ब सँ पचैवाला भोजन । प्रयोग-"अकरमकर खाकय पेट नहि बिगाड़ू ।" मै.
अकटा-सं., मसुरीक रूपक अनहित अन्न । मै.
अकठ-सं., उपयोगी काठ सँ भिन्न काठ । मै.
अकठ काठ-विशे., १. अनपच भोजन । २. अनचिन्हार काठ । मै.
अकड़ब-क्रि., १. दम्भ सँ भरल रहब । २. रक्त संचारक अभाव सँ अंग मे संचार नै होएब । मै.
अकड़ा लागब-क्रि., शिरा सभक शून्यता आ असमर्थता सँ संचार मे कष्ट होएब । मै.
अँकड़ा-विशे., बिन कूटल धान मिलल चाउर । मै.
अँकड़ाह-विशे., आँकड़ भरल चाउर । मै.
अकत-विशे., तीत रस मे अधिकता बुझबैवाला । प्रयोग-"परोड़क पात अकत तीत होइ छै ।" मै.
अकथ-विशे., नहि कहैक योग्य बात, अकथ्य । सं. तद्भव
अकन्छा-सं., अप्रकट इच्छा । सं. तद्भव
अकनमी-विशे., सुनैक शक्ति रहितौं नहि सुनैवाली स्त्री । मै.
अकनाएब-क्रि., समस्त चेतना कें समेटि सुनैले कान लगाएब । मै.
अकवकनै फुरब-क्रि., बुद्धिक कुण्ठित होएब । भय आदि सँ ज्ञान लुप्त होएब । मै.
अकबकाएब-क्रि., भय, विस्मय, घृणा आ अधिक पीड़ा सँ ज्ञान शून्य होएब । प्रयोग-"रामक हाथें धनुष टूटि गेला पर सब अकबकाएले रहि गेला" । मै.
अँकबारब-क्रि., सुरक्षा ले पाँज मे धय लेब । मै.
अकर्म-सं., जाहि समाजक वा व्यक्तिक जे काज नहि रहय । सं. तत्सम
अकर्मक-विशे., कोनो काज मे अलूरि । मै.
अकर्मण्य-विशे., कोनो काज मे उत्साहहीन । वयसक प्रभावें असमर्थ । सं. तत्सम
अकर्मी-विशे., जाहि व्यक्ति कें जे नहि करैक सैह कर्म कयनिहार । सं. तद्भव
अकरकचाह-विशे., जंगलझाड़ सँ भरल खेत । गदौस सँ असर्ध स्थान । मै.
अकर कड़हा-सं., विशेष जड़ी बूटी सँ बनल कड़हा । मै.
अकरकन-सं., अधलाह वस्तुक छोट-छोट कण सभक समूह । मै.
अकरकनाह-विशे., अकरकन सँ भरल । मै.
अकरतब-सं., अनैतिक काज, अशिष्ठ व्यवहार । सं. तद्भव

अकर धकर-विशे., गुरुपाकी वस्तुक वे हिसाबक भोजन। आतुरता सँ पेट मे धकेलल अन्न। मै.

अकर मकर-सं., लगले लागल खाएल अनेक प्रकारक भोजन। मै.

अकरमाढ़-विशे., उगल खढ़पात सँ भरल खेत। बुझौला पर नहि बूझनिहार लोक। मै.

अकरर-सं., प्रसंगहीन आ अर्थहीन बातक उत्थान। मै.

अकरहर-सं., अविश्वसनीय, असम्भव विस्मयक बात कहि लोक कें आकर्षित करैक प्रयास। मै.

अकराएब-क्रि., घिनाएब। अपन रुप आ आचरण सँ समाज मे घृणाक पात्र बनब। मै.

अकराओन-विशे., घृणास्पद, घिनाओन, समाज मे अश्रद्धेय। मै.

अक्रूर-विशे., १. कठोर, निर्दय। (सं., २. कृष्णक परिकर यदुवंशी।) मै.

अकरौना-विशे., समाज मे घिनौनिहार आ समाज कें घिनवैवाला। मै.

अकलवेरा-सं., विषयक अनुपयुक्त समय। अकाल-बेर। विकट समय। मै.

अकवार-सं., समाचार पत्र। उ. तद्भव

अकस्मात्-अव्यय, हठात्, अचानक, अप्रत्याशित। सं. तद्भव

अकसक-विशे., अत्यन्त भरल रहैक द्वारें विवश। अशक्त। मै.

अकसकाएब- क्रि., अधिक भरल रहैक द्वारें कोनो क्रिया मे शिथिल होएब। मै.

अकसकी-सं., अधिक भोजन कयला सँ कोनो काज मे स्नायविक शिथिलता, असमर्थता। मै.

अकहुत्थ-विशे., (निन्दा मे) नमहर शरीर वाला। बुद्धिक छोट शरीरें नाम। मै.

अकाज-विशे., प्रयोजन वा लक्ष्यहीन काज। अकार्य। सं. तद्भव

अकाट्य-विशे., नहि कटैक योग्य विषय वा वस्तु। मै.

अकाठ-विशे., अप्रयोजनक काठ। मै.

अकादारुण-विशे., आकार प्रकार सँ अत्यन्त भयावह। विरुपताक द्वारें निन्दित। मै.

अकान-विशे., अपने धुनि मे रहने सुनैक शक्ति रहितौं नहि सुननिहार। मै.

अकानब-क्रि., गुप्तो बात कें सुनैक हेतु साकांक्ष रहब। आनक बात सुनै लेल कान लगा कय रहब। मै.

अकानसुन्न-विशे., सुनैक शक्ति रहलो पर बेरि-बेरि टोकला पर बुद्धि सँ ध्यान देनिहार। कहलो पर नहि सुननिहार। मै.

अकाबरी-विशे., अत्यन्त उत्कृष्ट रुपें उपजल सारि। सुन्दर कृषि। मै.

अकाबोन-विशे., अत्यन्त सघन बोन आ बोन झाड़। मै.

अकार-स., आकृति, रुप, आकार। सं. तद्भव

अंकार-सं., छवि, छटा। मै.

अकारथ-विशे., निष्फल, अपेक्षाहीन, व्यर्थ। मै.

अकाल-सं., असमय, दुर्भिक्षक समय। मै.

अकालभूत-विशे., १. असमय मे उपस्थित भेनिहार। २. अपन रुप गुण सँ निन्दास्पद। मै.

अकास-सं., शून्यगोलक। आकाश। सं. तद्भव

अकाशकांकोड़-विशे., (लाक्षणिक) अपन अज्ञता आ कि मूर्खता छिपयवाले कोनो प्रश्नक उत्तर देवा मे आकाश दिश तकनिहार। निन्दाक पात्र। मै.

अकासगंगा-सं., अर्धगोलक आकाश मे घनीभूत तारा सभक इजोतक पंक्ति। देव डगहर। सं. एवं मै.

अकाशगामी-विशे., आकाश मे विचरण करैवाला। आकाश मार्ग चलैवाला। सं. तत्सम

अकासचारी-विशे., आकाशै मे रहैवाला। सं. तद्भव

अकासदीप-सं. बहुत उपर आकाश दिश दीप नेसैक कार्तिक व्रत। प्रयोग-वैह बेटी प्रशंसनीय जे आकास दीप नेसय। सं. तद्भव

अकासवासी-विशे., आकाशै मे रह निहार। मै.

अकासीदेव-क्रि., मूर्ख आ घमण्डीक प्रतीक बनल सदिखन अनेर आकास दिश तकैत रहब। मै.

अकासीवृत्ति-सं., अकस्मात् अनिश्चित अर्थक आगमनक भरोसें निर्वाह। सं. तद्भव

अकिञ्चन-विशे.,निर्धन, दरिद्र। सं. तत्सम

अकुत-विशे., निश्चित मान (संख्या, नाप आ तौल) क अनुमान सँ बाहर। असीम। मै.

अँकुरब-क्रि., अँकुरा फेंकब। बीज सँ अंकुरक बहराएब। मै.

अँकुरा-सं., बीज सँ वा भूमि सँ बहराएल गाछक प्रथम रुप । मै.

अँकुराएब-क्रि., बीज वा भूमि सँ अँकुराक निकलब । मै.

अँकुरी-सं., अंकुर फेंकैक अवस्था वाला भिजाओल दलिहन जे देवता पितरक काज मे तथा विशेष शुभ अवसर पर काज अवैछ । मै.

अकुलाएब-क्रि., आकुल होएब । भय आ पीड़ा सँ जीक घबरा उठब । मै.

अकुलीन-विशे., हीन कुलवाला, नीच वंशक लोक । प्रयोग- ओछाहक रीन नै खाइ अकुलीनक धी नहि वियाही । लोकोक्ति । मै.

अंकुश-सं., बझाकय खींचैवाला अस्त्र विशेष । सं. तत्सम

अँकुसी-सं., लग्गी मे बनाओल वा बान्हल कोनो वस्तु कें पकड़ि कय खीचैवाला अंकुश सन नोक । मै.

अकूबा-सं., दुष्टता सँ कयल निर्मूल फूसि अपवादक प्रचार । मै.

अकोल-सं., संकुचित, उपेक्षित आ जन शून्य स्थान । मै.

अख्यास-सं., मोन पाड़ैक चेष्टा । स्मरण । मै.

अखज-विशे., अक्षय्य । क्षय नहि होइक जोग । सं. तद्भव

अखड़ब-क्रि., कटु अनुभव होएब । मन मे चूभि जाएब । मै.

अखड़हा-सं., १. कोड़ल आ कोमल माटि वाला कोष्टमय पहलवानी सीखैक स्थान २. साधु संन्यासी सभक अड्डा । मै.

अखड़ा-विशे., १. खड़खड़ लगैवाला मृदुताहीन रुक्ष । २. कठोर कण मे परिणत । प्रयोग–अखड़ा पटिया, अखड़ा चिकस । मै.

अखड़िया-विशे., मल्ल कला प्रदर्शन करैक हेतु अखड़हा पर उतरैक आवेश वाला । मै.

अखढ़-सं., मालजाल कें अपकार करैवाला खढ़ । उपयोगक अयोग्य खढ़ । मै.

अखढ़ियल-विशे., कोनो विषय पर अड़ल रहैक प्रवृत्तिवाला । मै.

अखत-सं., अक्षत गुप्त पत्र । आनक दृष्टि सँ बाँचल रखैवाला पत्र । सं. तद्भव

अखरलेख्य-सं., गुप्त रुपें लिखिकय सुरक्षित उत्तराधिकार पत्र । सं. तद्भव

अखन्नर-विशे., नहि मरैवाला, अपूर्ण रहैवाला । मै.

अखरकट्टू- विशे., आधे स्थिति मे छोड़ल काज । मै.

अखरताली-सं., हस्ताक्षर । (उ. दस्तखत) मै.

अखरोट-सं., सुखाएल फल विशेष । मै.

अखलबाहि-सं., लड़ैले तनतनी, मल्ल युद्धक हेतु हाथ पैरक, जोश, उत्साह । मै.

अखलास-सं., बनौटी प्रसन्नता वा कृत्रिम आवेश सँ अगराएल बात । मै.

अखाउजि-सं., भीतरैं भीतर जोगाओल भयंकर शत्रुता । मै.

अखाड़ा-सं., १. साधु सन्तक सम्मिलित साधनाक स्थान तथा सम्मेलनक स्थल । २. मल्ल क्रीड़ाक स्थान । हि. तत्सम

अखाद-विशे., नहि खाइक योग्य वस्तु । अखाद्य । सं. तद्भव

अखार पखार-सं., धोऐक-माँजैक प्रक्रिया । मै.

अखारब-क्रि., धोअब, माँजब आ स्वच्छ करब । मै.

आँखिउठ्ठी-सं., आँखिक रोग । आँखि उठैक क्रम । दुखाएब, लाल होएब आ सट्टब ई सब रोगक लक्षण । मै.

अँखिगर-विशे., (लाक्षणिक) विषय कें तुरन्त पकड़निहार । दूरदर्शी आ ऊहि कयनिहार । मै.

अँखिमुन्नी-सं., आँखि मूनिकय धीया-पूताक खेलाइक प्रकार । मै.

अँखिफोड़ा-सं., अनधुन उड़िकय आँखि पर चोट करैवाला फतिङ्गा । (लाक्षणिक) चुपचाप रहस्यक बात कहनिहार । प्रयोग –दुष्ट अंगरेजक आँखि फोड़ल रहैक जे मुसलमान वाला क्षेत्रक अपन भिन्ने राष्ट्र हो । मै.

अँखियाएब-क्रि., तृष्णा, ईर्ष्या अथवा अमंगल भावना सँ दृष्टि गड़ाएब वा बाजब । मै.

अँखुआ-सं., पोरें पोरें गीरह सब पर अंकुर बहराइक रुप, प्रारूप तथा सुइआ जकाँ बीज सँ बहराएल अंकुर । मै.

अखो अखोकय-अव्यय, अतिशय भय के । (केवल भोजन मे प्रयोग) । मै.

अखोड़ा-सं., बाँसक कामि सँ बीनल चौरस पेनी वाला फैलगर मुहवाला वासन । मै.

अखोर-विशे., समाज मे नीचतापूर्ण काज करैत रहला सँ अधम चरित्र मे प्रसिद्ध । मै.

अखोह-सं., खोह जकाँ अन्धकार भरल संकीर्ण स्थान । मै.

अग्ग-विशे., किछु नहि जानि बूझि सकैवाला मूर्ख । अज्ञ । सं. तद्भव

अग्गर-सं. धूपवाला विशेष पदार्थ । सं. तद्भव

अग्गहविग्गह-विशे., दूर धरि विस्तृत । मै.

अग्रगण्य-विशे., आगुए आगू गनल जाइक योग्य नामवाला । सं. तत्सम

अग्रेसर-विशे., कोनो काज मे आगू रहनिहार लोक । सं. तत्सम

अगाओं-सं.,खरिहानै मे निहुछल दान करैक अन्न । मै.

अगङ्ग-विशे., कहियो गंगा नहि नहाएल लोक । मै.

अगड़ाही-सं., खेतक बीच गदौस मे लगाओल तथा बोन झाड़ मे लगाओल आगि । मै.

अगड़ाहीक धनछूहा-सं, उपर्युक्त अगड़ाही सँ लोल मे लुत्तीलय के आनोआन मे आगि लगौनिहार छोट पक्षी विशेष । (लाक्षणिक) चुगिलखोर । मै.

अगण्य-विशे., नीक लोकक गिनती मे नहि अवैक योग्य । सं. तत्सम

अगत्त-अव्यय, हाथी कें चलैलेल आदेशक शब्द । अग्रतः । सं. तद्भव

अगत्ती-विशे., सदिखन उत्पात करैवाला । अपन दुष्ट बुद्धिक द्वारें अपनो संकट नहि सोचैवाला । मै.

अगत्या-अव्यय, उपायक अभावें विवशता सँ, अनिच्छौ सँ करैक प्रयास । सं. तत्सम

अगता-विशे., अग्रतः । १. आगुए आगू भेनिहार उपजा । २. बधिया कयल घोड़ा । ३. प्रसवक उपरान्त बिना ऋतु धर्म भेनहि रहल गर्भ । मै.

अगदिगनैरहब-क्रि., विस्मय सँ ज्ञान कुण्ठित भऽजाएब, दिशा नै बूझव । मै.

अगधाएब-क्रि., अति तृप्त रहैक आचरण कय मिथ्या गौरव सँ कोनो विषय वा वस्तु मे अनिच्छा प्रकट करब । मै.

अगन-विशे., १. अति तृप्तता भरल लोक । २. तृप्ति सँ चरल रहैवाला पशु । मै.

अगब-विशे; एक मात्र वस्तु । एकनिष्ठ अन्नक सन्दर्भ । मै.

अगबास-सं., आलयक आगू विस्तृत अवकाश (लाक्षणिक) स्त्रीगणक अढ़घातक क्रिया क हेतु पर्दा वाला स्थान । मै.

अगबीत-सं., निज अधिकारक वस्तु आ स्वत्व । अपन अधिकृत धन । सं. तद्भव

अगबै-विशे., बिना दोसर वस्तु फेंटल । बिना आन वस्तु मिलाओल भोज्य पदार्थ । मै.

अगम-विशे., १. अथाह जलक द्वारें नदी नहि पार करैक योग्य, सघन आ हिंसक पशु भरल रहैक कारणें वन नहि चलैक योग्य आ बाट मे अत्यन्त ऊँच रहैक द्वारें पहाड़ नहि टपैक योग्य । २. यौन सम्पर्कक अयोग्य व्यक्ति अगम्य । स्त्री० अगम्या । सं. तद्भव

अगरजित-विशे., अपने मन कें सब सँ उपर मानि, ककरो बात नहि माननिहार बिन नीक अधलाह सोचनै किछु कय लेनिहार । मै.

अगरजानी जानब-क्रि., अन्तर्यामी जकाँ अपनै जानि जाएब । मै.

अगरधत्त-विशे., शरीरें आ बुद्धिएँ विशालताक दुआरें समाज कें विशेषता सँ प्रभावित कयनिहार । उत्कृष्ट लोक । मै.

अगरमस्त-सं., जड़ी विशेष । मै.

अगराएब-क्रि., रुप यौवन आ धनक गर्व सँ वा आनन्द सँ अनुचित चेष्टा करब । मै.

अगरेस-विशे., बिना परिणाम सोचनै बिना कहनै सब काज मे आगू रहनिहार । मै.

अगरैल-विशे., विशेष आकार प्रकार वाला काँस (फूल) क थारी । मै.

अगलटेंट-विशे. बिन बुझनै बिन पुछनै आगँ आगाँ टेंटें कय के बाजि उठनिहार । मै.

अगस्त-सं., अंगरेजी वर्षक आठम मास । अं. तत्सम

अगस्ति-सं., १. पौराणिक ऋषि विशेष । २. एहिनामक फूलवाला वृक्ष । मै.

अगसर-विशे., देखू-अग्रसर । सं. तत्सम

अगहँड़ी-विशे., केराक अभग्न पात । मै.

अगहन-सं., १. धान उपजै वाला मास विशेष । २. मिथिला देशीय पाँचम मास । मै.

अगहनी-विशे., अगहन मे भेनिहार उपजा धान । मै.

अगहनुआ-विशे., अगहन मास मे प्रस्तुत कयल । मै.

अगाउ-विशे., काज करै सँ पहिनै देल पारिश्रमिक तथा वस्तुक मूल्य । मै.

अगाड़-सं. कोनो वस्तुक अगिला भाग । मै.

अगाड़ी-सं., बाँसक कर्ची समेत उपरका अंश । मै.

अगाध-विशेषण, अथाह (जलाशयक हेतु) । (लाक्षणिक) गम्भीर ज्ञान आ कूटनीतिवाला । मै.

अगिआ-सं., अधिक आगि तपला सँ उत्पन्न चमड़ा पर कारी-कारी चिह्न । मै.

अगिझम्प-सं., १. तपस्वीक पञ्चाग्नि साधना । चारू कोन पर धधकैत आगि उपर जेठक अटट्ट रौद । २. अचानक चोट लगने आँखिक आगाँ लुत्ती जकाँ देखा पड़ैक लक्षण। मै.

अगिनवान-सं., गर्मी अथवा चर्म विकारक द्वारें देहक चमड़ा पर उठल फोका । मै.

अगिमुत्तू-विशे., (लाक्षणिक) दुर्वृत्ती, अन्यायी आ समाज मे सतत उत्पात मचवैवाला । मै.

अगियावेताल-विशे., उद्दण्डता सँ अप्रत्याशित उत्पात कय लोकक अनिष्ट कयनिहार । मै.

अगियास-सं., आगिक पजार। घूरक व्यवस्था । मै.

अगियासी-सं., आगि प्रज्वलित करैक उपक्रम । मै.

अगियाह-विशे., गर्मी क विशेषता वाला । अधिक काम क्रोधवाला । प्रखर वासना वाला । मै.

अगिलकण्ठ-विशे., टन द'ऽ आगैं आगाँ बाजि उठनिहार । मै.

अगिलग्गी-सं., अग्नि प्रकोपक शृंखला क्रम । मै.

अगिलग्गू-विशे., (लाक्षणिक) मर्मक बात क प्रचार कय समाज मे हलचल मचा देनिहार । मै.

अगिलह-विशे., काज वा वस्तु मे विषमता उत्पन्न कयनिहार, अपन दुष्ट बुद्धिक द्वारा लोक बीच कलह करौनिहार । स्त्री० अगिलही । मै.

अगिला-विशे., आगूक वस्तु, आगू मे रहनिहार वा आगू मे होनिहार । स्त्री० अगिली । मै.

अगुआ-विशे., सब सँ आगू रहनिहार । नेता । मै.

अगुआ-सं., १. स्त्रीक हाथक गहना विशेष । २. बैलगाड़ीक आगू मे देल काठक पट्टी । मै.

अगुआएब-क्रि., संगी तुरिया सँ आगू बढ़ि जाएब । मै.

अगुआनी-सं., आगू जा कय कोनो विशिष्ट व्यक्ति कें अरियाति आनब । मै.

अगुआर-सं., वासक आगू आ देहक अगिला भाग । मै.

अगुऐत-सं., घर वा वासक आगू भागक खण्ड । मै.

अगुताइ-सं., तुरन्त करैक प्रवृत्ति । शीघ्रता । मै.

अगुताएब-क्रि., शीघ्रता करब, शीघ्रताक प्रेरणादेब । मै.

अगुताएल-विशे., अत्यन्त शीघ्रता मे रहैवाला । मै.

अगुताह--विशे., कखनो विलम्ब नहि सहन कयनिहार । हड़बड़ कय काज करैवाला । मै.

अगुद-सं., विस्मय सँ बुद्धिक निष्क्रियता । प्रयोग–कीकहू इन्दिरा गान्धीक अचानक मारल जाइक समाचार सँ अगुद मे हम पड़ि गेलौं । मै.

अगुलका-विशे., सब सँ आगू भेनिहार । मै.

अगूबार-विशे., काज सँ पहिनै देल वस्तु वा श्रमक मूल्य । मै.

अगेली-सं., हाथक आगू क गहना । मै.

अगोचर-विशे., १. माल जालक नै चरै योग्य भूमि । २. आँखि सँ नै देखि पड़ै वाला । सं. तत्सम

अगोछा-सं., देह पोछैक छोट वस्त्र, गमछा । मै.

अगोत-विशे., अकुलीन । जकरा गोत्रक ठेकान नै हो । मै.

अगोधीमारब-क्रि., अनठाकए अथवा अबूझबनिकए बातक भेदलेब । आन्तरिक भाव कें पकड़ब । मै.

अगोरब-क्रि.; रखवारि करब । सुरक्षाक हेतु तत्पर भय विद्यमान रहब । मै.

अगौं-सं., देखू-अगओं । मै.

अघट-सं., जलाशयक निर्धारित घाट सँ भिन्न स्थान । अशुद्धघाट । मै.

अघाएब-क्रि., अत्यन्त तृप्त होएब । मै.

अघान-सं. अत्यन्त तृप्ति । मै.

अघोर-विशे., अत्यन्त आकुल, विरक्त, वितृष्ण । प्रयोग-सबेरे सँ खटैत-खटैत मन अघोर भय गेल । मै.

अघोर-सं., वाम मार्गी तन्त्र साधक सम्प्रदाय । सं. तत्सम

अघोरी-विशे., घृणा आ खाद्य-अखाद्य पर विजय पओनिहार तन्त्र साधक । मै.

अङ्क-सं., १. कोरा । २. कलङ्क । ३. संख्य-चिह्न सं. तत्सम

अंकलगाएब-क्रि., देह सँ बच्चा कें सटाएब । मै.

अंकलागब-क्रि.. (लाक्षणिक) निश्चित रुपें ककरो आश्रित भय जाएब । मै.

अंकुर-सं., बीज सँ बहराएल गाछक प्रथम रूप। सं. तत्सम

अङ्ग-सं., शरीर। शरीरक कोनो अवयव। सं. तत्सम

अङ्गरेज-सं., ब्रिटिश जातिक यूरोपीय जाति। मै.

अङ्गा-सं., देहक अनुसार सीयल पहिरैक वस्त्र। मै.

अङ्गार-सं., १. जरैत जारनिक ठोस दहकैत बिन धधरा आ धूआँक आगि। २. मंगल ग्रह। सं. तत्सम

अङ्गित-विशे., सम्बन्धिक, निकटसम्पर्की, अपन-लोक। मै.

अङ्गी-सं., आत्मा अर्थात् शरीरक प्रधान तत्त्व। सं. तत्सम

अङ्गूठा-सं., हाथ पैरक छोट मोट पहिल आङ्गुर। बुढ़वा आङ्गुर, अङ्गुष्ठा। सं. तद्भव

अङ्गूर-सं., दाना आ गुच्छ रुपक लत्ती मे फड़ैवाला काश्मीरी मधुर फल। मै.

अङ्गोसमङ्गोस-सं., अलसाएल रहैक प्रवृत्ति, कोनो काज मे उत्साहहीनता। मै.

अङना-सं., चारू घरक बीच घैरल अवकाशवाला स्वच्छ अढ़वाला। स्त्रीगणक स्वतन्त्र स्थान। मै.

अङनावाली-विशे., अङना पर अधिकार रखैवाली स्त्री। पत्नी। मै.

अङनियाँ-विशे., अङना मे रहैवाला। काज अवैवाला। मै.

अङनै-सं., घर आदिक आगू छोटसन शून्य स्थान। मै.

अङनैत-विशे., अङनाक मुख्य। अङनाक लोक। मै.

अङपोछ-क्रि., अङपोछा सँ देह मात्र पोछैक क्रिया। मै.

अङवरिया-विशे., कोनो सवारी सँ यात्रा करैक काल संगक सहायक। अंगरक्षक। मै.

अङबाह-विशे., खेत जोतैक काल आरि धूर बनवैक खढ़-पात बीछैक हेतु सहायक। मै.

अङरखा-सं., देह मे सट्टल सीयल वस्त्र। मै.

अङलगाएब-क्रि., १. तन मन सँ कोनो काज करब। २. प्रिय व्यक्ति कें आवेशें देह सँ लगालेब। मै.

अङलागब-क्रि., मन दय कें शरीरक श्रम लगाकय बुद्धि सँ काज करब। मै.

अङाएब-क्रि., कोनो बात आ विषय कें अपन तन आ मन मे पचालेब। मै.

अङिया-सं., नारीक पहिरैक छोट आङी, चोली। प्रयोग-"आबि निवेदल चेरिया घघरा अङिया भेष" 'हमर जय राजा सलहेस'। मै.

अङुरकट्टा-सं., अपनै आप आङुरक पोरक कोमल भाग मे कटि जाइक रोग विशेष। मै.

अङुरी-सं., आङुर सब। छोट आङुर। मै.

अङुरी उठाएब-क्रि., (लाक्षणिक) उपहास वा निन्दाक ध्येय सँ आङुर सँ निर्देश करब। मै.

अङुरी देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) समाज मे अधम बनवैत देखार करब। मै.

अङेजब-क्रि., कोनो स्थिति कें आत्मसात् अर्थात् अपना मे सामंजस्य करब। मै.

अङेठी-सं., आगि रखैक पैंघ वासन, बौरस। मै.

अङैठीमोड़-सं., ज्वरक आगम, श्रमक अधिकता आ एकै गरें अधिक कालक स्थिति सँ देह कें हल्लुक बनवैले अङ्ग के तनैक आयाम। मै.

अङोछ-सं., अङ्गक छवि छटा। अङ्गच्छवि। सं. तद्भव

अङोछमङोछ-क्रि., मन असुस्त रहैक द्वारें गमछा भिजा कय थोड़ बहुत देह पोछैक मात्र क्रिया। मै.

अङोरा-सं., आगिक दहकैत ढेपा। देखू- "अङ्गार"। मै.

अङोठ-सं., अंगक समानता। अङ्गौष्ठ। सं. तद्भव

अच्छत-सं., देखू - "अक्षत"। सं. तद्भव

अच्छप-विशे., ककरौ मे नहि छपै (मिलै) वाला। मै.

अच्छर-सं., देखू-"अक्षर"। सं. तद्भव

अच्छा-अव्यय, वेश। स्वीकारात्मक। नीक। ठीक। हि. तत्सम

अचक्क-सं., अचानक, असावधानी। मै.

अचक्की-विशे., अचानक उनट फेर कय दैवाला। नेन्ना। मै.

अँचब-क्रि., अधिक आँच देब। मै.

अचम्भा-अव्यय, १. आश्चर्य। २. माटिक वासन (बेचैक) रखैले कुम्हारक वासन। मै.

अचर-विशे., नहि विचरण करैवाला। नहि चरैक योग्य। सं. तत्सम

अँचरक्खू-विशे., एक रूपें आँच नहि लगला सँ विकृत पाक। मै.

अचरज-अव्यय, आश्चर्य। उ. तत्सम

अँचरा-सं., छोट कन्याक पर्दा मात्रक हेतु पहिरैवाला वस्त्र खण्ड। भगवा। मै.

अँचरी-सं., घरक निचला ओलतीवाला कोर। मै.

अँचरौंत-विशे., आँचरक एक अंश मात्र रंगल नब नूआ बिन रंगल पहिरैवाला वस्त्रक शुभ सूचक। मै.

अचल-विशे., नै चलै हिलैवाला गाछ पहाड़ आदि। स्थावर। सं. तत्सम

अचल भारती-विशे., (निन्दा मे लाक्षणिक) अहृदयता वा स्थूलताक कारणें वा शारीरिक असमर्थता द्वारें देहक सञ्चार नहि कय सकैवाला। मै.

अँचाएब-क्रि., हाथ मुह धोएब, धोआएब। मै.

अँचाओन-सं., आचमन, मुह हाथ शुद्ध करबैक विधि। मै.

अचानक-अव्यय, दैवात्, हठात्, अप्रत्याशित। मै.

अचानचक-अव्यय, अकस्मात्, एकाएक। मै.

अँचार-सं., लेह्य पदार्थ। अम्मत फल आदि मे विविध कटुक (मसाला) सँ बनाओल चहटगर चोष्य भोज्य पदार्थ। मै.

अचिर-अव्यय, लगले। सं. तत्सम

अचूक-विशे., नै चूकैवाला, अमोघ, अव्यर्थ। मै.

अचेत-सं. एवं विशे., मूर्छा-मूर्छित, बुद्धि आ संचारक हीनता एवं संज्ञाशून्य। मै.

अचेतन-विशेषण, स्पन्दनहीन, चेतना रहित। (लाक्षणिक) चेष्टा रहित, अबूझ। सं. तत्सम

अचैतन्य-विशे., आत्मा रहित, मृतक। सं. तत्सम.

अछतापछताकय-अव्यय, बहुत तारतम कयला उत्तर। मै.

अछार-सं., १. छोटसन वर्षा। २. थलाह खेत मे उपरैं उपर छीटल वीआ। मै.

अछारब-क्रि. गील खेत मे उपरैं उपर धानक वीआ पाड़ब। मै.

अछाह-सं., छाया, वस्तुक वर्गाकार छाँह। मै.

अछाहेंकुकुरभूकब-(लाक्षणिक) सन्देह मात्रैं सँ प्रतिक्रिया मे उद्यत होएब। मै.

अछि-क्रि. कोनो वस्तुक स्थितिक क्रिया शब्द होएब। अस्ति। सं. तद्भव

अछिनजल-विशे., व्यक्तिक पवित्रता सँ लाओल पवित्र जल। अच्छिन्नजल। सं. तद्भव

अछिनरें-अव्यय, यथेच्छ, अत्यधिक। मै.

अछिया-सं., चिता, चिताक चुल्हा आ काठक शय्या। मै.

अछूत-विशे., अस्पृश्य, घृणास्पद होइक कारणें नहि छूवा योग्य। बिन छूअल। मै.

अछेप-सं., आक्षेप, झटका क्रियाक थोड़ प्रभाव। सं. तद्भव

अछैत-विशे., रहैत (अव्यय) रहला पर अस्तित्व मे। मै.

अछोप-विशे., अस्पृश्य। मै.

अछौं-अव्यय, सन्तुष्टिपूर्वक, भरिमन। मै.

अज-विशे., जे नहि जनमय। मै.

अजग्ग-विशे., यज्ञ कर्मक अधिकार सँ बाहर भय गेल व्यक्ति। अयज्ञ। सं. तद्भव

अजगर-सं., चलै ससरै सँ असमर्थ विशाल काय स्थूल साँप, अजगर्द। सं. तद्भव

अजगुत-अव्यय, आश्चर्य, असम्बद्ध। मै.

अजगैबी-सं., अद्‌भुत, विस्मय। मै.

अँजब-क्रि., बारम्बार आँजन (काजर) करब। प्रयोग—"अँजितँ-अँजितँ धिया कनाहि।" मै.

अजब-अव्यय, अद्‌भुत, आश्चर्य। उ. तत्सम

अजबारब-क्रि., वासन केँ शून्य करब, तथा शून्य स्थान केँ भरब। बाधित करब। मै.

अजवारि-विशे., शून्यता वा रिक्तता भरल अथवा पदार्थ भरल वा बाधा भरल। मै.

अजमाएब-क्रि., जाँचब, अनुमान सँ स्थिर करब। मै.

अजय-विशे., नहि जीतैक योग्य। सं. तद्भव

अजरअमर-सं. देवता। विशे., सदा एकै रुपें रहि चिरजीवी। सं. तत्सम

अजराजोरी-अव्यय, बलपूर्वक। उ. तद्भव

अजरैला-विशे., अत्यन्त सक्कत। सारिल। कोनो स्थित मे नहि नष्ट होमऽवाला। मै.

अजस्त्र-विशे., सदिखन सबठाँ उपलभ्य। मै.

अजाइँजाएब-क्रि., व्यर्थ अनायास नष्ट होएब। मै.

अजाति-विशे., अपन जाति छोड़ि आन जाति केँ धरैवाला। मै.

अजान-सं., १. इसलाम धर्मक उच्च स्वरें ईश्वरक स्तुति। उ. तत्सम। अज्ञान, ज्ञान हीनता। सं. तद्भव

अजियासासु-विशे., सासुक सासु, आद्याश्वश्रू। सं. तद्भव

अजीर्ण-विशे., अनपच अधिक खाएल अन्न । सं. तत्सम

अजुका-विशे., आइ होमऽ वाला, वर्त्तमान मे रहैवाला भूत भविष्यक सम्पर्की । मै.

अजूरा-सं., बोनि, पारिश्रमिक, सामन्ती युगक कहार । उ. तत्सम

अजेगर-सं., देखू-अजगर । मै.

अजँब-विशे., आश्चर्यजनक । अजायब । उ. तद्भव

अजोध-विशे., अयोध्य, अतिक्रूर, भयंकर विशाल । सं. तद्भव

अजोह्-विशे., पूर्णतः युवावस्था मे नहि पहुँचल । मै.

अझक्क-अव्यय, एक झलक मात्र । मै.

अझट्ट-अव्यय, अचानक, अनठेकान । मै.

अञ्चल-सं., आँचर, प्रान्तक एक अंशक क्षेत्र । सं. तत्सम

अञ्चोक-अव्यय, अनवधान, अचानचक । मै.

अञ्जस-सं., पेटक अपच अन्नक विकारें उत्पन्न ज्वर आदिक पीड़ा । मै.

अञ्जीर-सं., दानावाला फल विशेष । मै.

अट्टहास-सं., ठहक्का, खूबजोर सँ शब्दक संग हँसी । सं. तत्सम

अट्टालिका-सं., ऊँच आ पैघ कोठा । सं. तत्सम

अट्टब-क्रि., अड़ारि ठानब । मै.

अट्ठाइस-संख्या, आठ एकाँइ दू दहाँइक अंक । मै.

अट्ठारह्-संख्या, आठ एकाँइ एक दहाँइक अंक । मै.

अँटकन मटकन-अव्यय, धीया पूताक खेलाइक प्रक्रिया । भूमि पर अनेक नेन्ना तरहत्थी रोपने रहै अछि । एक गोटए एक एक हाथ पर आङुर दैत पढै अछि । "अटकन मटकन दहिया चटकन" आदि । अन्तिम शब्द जकरा पर अबै छै तकरा पूछै अछि सिही लेब की मङ्गुरी । मै.

अँटकब-क्रि., गति रोकब, थम्हब, रुकब । मै.

अँटकर-सं., सन्तुलित मान अनुमानित विषय । प्रयोग–अँटकरैं सँ खाउ । अँटकरे गीता भगवान उवाचा कहबी । मै.

अटकर-सं., अनुमान, अप्रत्यक्ष कें विशेष कारण पकड़ि प्रत्यक्ष सिद्धि । मै.

अँटका-सं., जगन्नाथपुरीक प्रसाद । मै.

अँटकाओ-सं., लोक आ सवारीक ठहरैक स्थान । मै.

अँटकारब-क्रि., अनुमान सँ निश्चित करब । मै.

अटट्ट-विशे., प्रचण्ड, अत्यन्त तीक्ष्ण । रौदक विषय मे प्रयुक्त । मै.

अटपट-विशे., अनर्गल, अप्रासंगिक प्रलाप । मै.

अँटब-क्रि., समाएब, सन्हियाएब । मै.

अटरिया-सं., छोटसन कोठा । हि. तत्सम

अटल-विशे., कनेको नहि घसकैवाला । नहि टरैवाला । टस सँ मस नहि होमऽ वाला । मै.

अँटाएब-क्रि., कोनो वासन वा स्थान मे अधिक वस्तु कें समाविष्ट करब आ व्यवस्थित करैक चेष्टा करब । मै.

अटाएब-क्रि., अवकहरा चक्र सँ नामक अनुसार देवता एवं दीक्षा मन्त्रक निर्धारण करब। ग्रह नक्षत्रक विचार कय फलाफल बाहर करब । मै.

अटावेस-सं., यथा स्थान मे समावेश । थोड़ स्थानौ मे कोनहुना बहुत केर व्यवस्था । मै.

अटारी-सं., पैघ कोठाक उपरका भाग । मै.

अँटिया-सं., पातर आँटी । मै.

अँटियाएब-क्रि., आँटी बान्हब । छोट छोट खढ़ सन वस्तुक आँटी बनाएब । मै.

अटूट-विशे., कोनो स्थिति मे नहि टूटैवाला । मै.

अटेङल-विशे., अव्यवस्थित रुपें ऊँचकय के ढेरी कयल । मै.

अटैची-सं., हल्लुक हथलग्गू पेटी । अं. तत्सम

अटोर-सं., विचार, कल्पना । मै.

अटोह्-सं., गुप्तरुपें अन्वेषण, चरचीत । मै.

अठकपाड़ि-विशे., नीक अर्थात् शुभ काजक अवसर पर बाधा पड़ैक दुर्भाग्यवाला व्यक्ति । मै.

अठकोशल-सं., (लाक्षणिक) अनेक व्यक्तिक संग मिलि गुप्त मन्त्रणा । मै.

अठखेलि-सं., खेला खेला कय ठकैक बुद्धि । मै.

अठगोड़बा-सं., अठौरी, बड़का मकड़ा । मै.

अठतालीस-संख्या, आठ एकाँइ चारि दहाँइक अंक । मै.

अठतीस-संख्या, आठ एकाँइ तीन दहाँइक अंक । मै.

अठन्नी-सं.,आधा रुपैयाक मुद्रा । मै.

अठबभना-सं., उपनयन कर्मक उपरान्त आठ ब्राह्मण भोजनक विधि । मै.

अठबासल-विशे., कोनो काजक बेरै पर बाधक रुपें वृत्त भेल । मै.

अठमस्सू-विशे., गर्भक आठमे मास मे जनमल बच्चा । मै.

अठमीफेंटा-सं., उपनयनक सन्दर्भ मे वरुआक पहिरैक विशेष रुपक वस्त्र । मै.

अठबारय-अव्यय, आठ दिन पर कय । मै.

अठसठि-संख्या, आठ एकाँइ छ दहाँइक अंक । मै.

अठहत्तरि-संख्या, आठ एकाँइ सात दहाँइक अंक । मै.

अठाबन-संख्या, आठ एकाँइ पाँच दहाँइक अंक । मै.

अठासी-संख्या, आठ एकाँइ आठ दहाँइक अंक । मै.

अँठिअम्मत-विशे., आँठी लग अम्मत लगैवाला आम । मै.

अँठिगर-विशे., पँच पँच आ अधिक आँठीवाला । मै.

अँठिया-विशे., केवल आँठी भरल फल । मै.

अठुलाहि-विशे., गौरव सँ आ रुष्टता सँ सदिखन फूलल रहैवाली । मै.

अठेल-विशे., (विशेषतया भोजनक प्रसंग मे) ठूसि कय स्थानरहित भेल । मै.

अठोङर-सं., अष्टमंगल । विवाह मे आठ गोटए मिलिकय धान कूटैक विधि । मै.

अठौरी-सं., अठ गोड़ी, मालजालक देह मे लगैवाला छोट कीड़ा । मै.

अड्डा-सं., १. सीमा । २. सम्मेलन स्थान । ३. अवधि । मै.

अड्डुल-विशे., अपन शक्ति पर विश्वास कय अड़ल रहैवाला, अडिग । मै.

अडिग-विशे., अपन बात वा स्थान सँ नामौले नै चलैवाला । मै.

अड़कन-सं., कोनो वस्तुकें अड़वैक रोकैक साधन विशेष । मै.

अड़कब-क्रि., अड़ि जाएब । रुकिकय स्थिर भ' जाएब । अड़ि अड़िकय चलब । मै.

अंड़कोश-सं., अण्डकोश, पुरुषचिह्न । सं. तद्भव

अड़खीस-सं., बदला लैक पूर्वाग्रह । मै.

अड़ड़लागब-क्रि., बेशी एकट्ठा भय अधिक ऊँच धरि ढेरि भऽ जाएब । मै.

अड़ङ्‌ङा-सं., कोनो काजक सम्पादन मे विशेष बाधा । काजक प्रगति मे विकट अवरोध । मै.

अड़ङ्‌ङा लागब-क्रि., कोनो कारणें काजक प्रगति मे विघ्न पड़ब । मै.

अड़चन-सं., बाधा (आकस्मिक) रोक । मै.

अडण्ड-विशे., बिन दण्डीक दण्ड । बिन कारणें अर्थक व्यर्थ देय । मै.

अड़ना-विशे., १. चलैत-चलैत अड़ि जाइवाला घोड़ा आदि पशु । २. कोनो वस्तु कें अड़ा कय (रोकि कय) रखैवाला निर्जीव वस्तु । मै.

अड़ब-क्रि., कोनो बान्ह अर्थात् रोकाओट पड़ने रुकि जाएब । अपन क्रिया मर्य्यादा वा सिद्धांत पर डटल रहब । मै.

अड़रमेवा-सं., फल विशेष । (हि.)पपीता । मै.

अड़राएब-क्रि., गौरवक लेल एत्तकुत्र ऐंठीक बात बजैत निडर घूमैत रहब । मै.

अड़रालागब-क्रि., नदी नाली सब मे बहैत-बहैत कछेर मे कोनो वस्तुक फँसिकय रुकि जाएब । (लाक्षणिक) अदृश्य शक्तिक प्रभावें किछु कालक हेतु बचल रहब । मै.

अँड़री-सं., अण्डी, तेलहन विशेष । मै.

अड़सठि-संख्या, आठ एकाँइ छ दहाँइक अंक । मै.

अड़ाएब-क्रि., रोकि राखब । रोकने राखब । मै.

अड़ाक-विशे., चलितैं-चलितैं अधिक अड़ि रहैवाला । रुकि जाइवाला । मै.

अड़ाँच-सं., घरक दू चार कें मिलाकय माथी पर बन्हैक सक्कत आ मोट विशेष प्रकारक डोरी । मै.

अड़ानी-सं., कृत्रिम कय बनाओल अड़बैक स्थान । मै.

अड़ारा-सं., तटबन्ध, बहैत पानि कें छिड़िआइ सँ रोकैक लेल बनल आड़, बान्ह । मै.

अड़ारि-सं., मन मे गुम्हड़ैत झगड़ा, लड़ाइ, विरोध । मै.

अड़ियल-विशे., १. अपन सिद्धांत आ बात सँ कनेको नहि चलैवाला । २. रुकि-रुकि कय चलैवाला घोड़ा आदि । मै.

अड़ ्आर-सं., ऊध, थनक विस्तार । मै.

अढ़-सं., सामना सामनीक कोनो प्रकारक व्यवधान । पर्दा । मै.

अढ़घात-सं., परस्परक सम्मुखता (सामना-सामनी) क हेतु बनाओल व्यवधान । पर्दापोस । मै.

अढ़तिया-विशे., उत्पादक कें अगाउ राशि द' क' वस्तुकें छेंकि रखनिहार व्यापारी । मै.

अढ़नढ़न-विशे., अति सुलभ आ अधिक रहला सँ आदरहीन वस्तु । मै.

अढ़ाइ-संख्या, दू पूर्णाङ्क एक बटे दू । मै.

अढ़ाएब-क्रि., काज कऽ दैक भार देब । मै.

अढ़ाहिस्सी-सं., प्रत्येक काज आ प्रत्येक वस्तु मे हिस्सेदारी । वस्तु वा क्रिया मात्र मे समान बँट-वाराक दुष्ट भावना । मै.

अढ़िया-सं., चाकर पेनी वाला वृत्ताकार फैल गहींर धातुक वासन । कठौती । मै.

अढ़ुल-सं.,लाल आ पँच फूल विशेष । जवा पुष्प । मै.

अढ़ैपँजरा- सं., वाम वा दहिन भाग छाती मे दर्द करैक विशेष रोग । मै.

अढ़ैया-सं., अढ़ाइ सेरक बटिखारा । विशे., अढ़ाइ दिन पर होमऽवाला वा अढ़ाइ दिन धरि रहै वाला ज्वर । मै.

अढ़ौआ-विशे., अढ़ाओल जन । मै.

अढ़ौती-क्रि., १. कोनो काज मे नियुक्त करैक वा प्रेरित करैक क्रिया । सं., २. कोनो शुभ काजक अधिवास अर्थात् मानसिक संकल्पक चिह्न । ३. कोनो वस्तुक निर्माणक प्रारुप । मै.

अढ़ौनिहार-विशे.,अढ़बैवाला । नियुक्ति दैवाला ।मै.

अण्डकोश-सं.,देखू 'अँड़कोश' । सं. तत्सम

अण्डा-सं., पक्षी एवं सरीसृप जीवक गर्भ गोल । मै.

अण्डाएल-विशे., अण्डा भरल जीव । मै.

अण्डी-सं., १. देखू-'अँडरी' । २. भागलपुरी रेसम आ तूरमिलल सूतक बनल ओढ़ना (चादरि) । मै.

अणाएल-विशे., देखू-'अण्डाएल' । मै.

अणाची-सं., स्वाद आ सुगन्धि भरल मुख शुद्धिक मसाला । मै.

अणाचीदाना-सं., तीर्थ प्रसाद रूपक चीनीक बनल छोट मेहीं गोल दाना । मै.

अणिया-विशे., बिन बधिया कयल वरद, घोड़ा आदि । मै.

अणीवा-विशे., बढ़ल आ पँघ आँणवाला । मै.

अणु-सं., चरम कण । सूर्यक किरणक संग आएल गवाछ देने अत्यन्त सूक्ष्म भौतिक कण । मै.

अत्तर-सं., वनस्पति सँ बाहर कयल सुगन्धित द्रव । मै.

अँत्तरन-सं., कपड़ा बीनैक कल मे लागल नीचाँ मुहक पातर खुट्टीवाला नमहर पट्टीक सूत कें आपस मे फरिछऽवैत रहैवाला यन्त्र । मै.

अँत्ता-सं., फल विशेष । मै.

अत्यन्त-अव्यय, आवश्यकता सँ बहुत बेशी, अतिशय । सं. तत्सम

अत्याचार-सं.,अमानवीय दुष्ट व्यवहार । सं. तत्सम

अत्याहित-विशे., अत्यावश्यक, जकर बिना काज नहि चलैक ।अनिर्वाहुत । मै.

अतउतकरब-क्रि., मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

अतएव-अव्यय, एही द्वारें, एहिकारणें । सं. तत्सम

अतत्तह-अव्यय, अन्हेर, अन्यथा, अतिशय अनिष्टक बात । मै.

अतमा-सं., जीय । लोकोक्ति-लल अतमा रे विकल अतमा साँइ संङे खीर खयलौं भरि अतमा । मै.

अँतरबात-सं., फूसक घर छारैक क्रम मे चारक एक एक बाती छोड़ि छारैक विधि । मै.

अँतराएब-क्रि., अन्तर पड़ब, घनत्व मे कमी होएब। मै.

अँतराहित-अव्यय, अत्यावश्यक, (विशे.) आवश्यक विषयवाला । मै.

अँतरी-सं., पेटक शिरा समूह, भोंटी । सं. तद्भव

अतल-सं.,पातालक सात तह मे पहिल तहक नाम । अतल, वितल, सुतल, धरातल, रसातल, महातल आ पाताल एहि सब मे पहिल । मै.

अताइ-विशे., राक्षसक आचरण केनिहार, उद्दण्डता सँ लोकक अनिष्टे टा करैवाला । मै.

अतासवाजी-सं., उछाही मे फोड़ैवाला पटाखा, आकाश मे उड़ाकय प्रदर्शित करैक ज्योति । उ. तत्सम

अति-अव्यय, अधिक, बहुत (उपसर्ग) । सं. तत्सम

अतिकाल-अव्यय, विलम्ब, समयक अतिक्रमण । सं. तत्सम

अतिखाइन-विशे., कनेक तीत स्वाद भरल । मै.

अतिखांह-विशे., कनेक तीत स्वादवाला । मै.

अतिथि-विशे., अभ्यागत, पाहुन, आगन्तुक । सं. तत्सम

अतिशय-अतिसँ-विशे., आवश्यकता सँ अतिरिक्त । सं. तद्भव

अतीचार-सं., अशुद्ध समय। विवाह उपनयन आदि शुभ कार्य करैक हेतु गुरु शुद्धि बिना अयोग्य काल। मेष, सिंह आ धनु राशि मे तथा सूर्यक स्थिति वाला राशि मे एवम् विशेष ग्रहक नीच स्थान मे वृहस्तपतिक रहने मिथिला मे शुभ कार्यक लेल अशुद्ध काल मानल जाइत अछि। वर्ष सँ अधिक भेला पर महातीचार आ छ मासक भेला पर लघ्व-तीचार कहल जाइछ । सं. तत्सम

अतीत-विशे., बीतल काल । सं. तत्सम
अतीव-अव्यय, बहुत, अत्यन्त । सं. तत्सम
अतीस-सं., औषध, जड़ीबूटी । मै.
अतीसार-सं., रोग विशेष, वेदना भरल आँओं नेने मलक संग पेट भरब । सं. तत्सम
अतुल-विशे., तुलनाहीन । सं. तत्सम
अतोड़-विशे., अविराम स्पन्दनवाला । मै.
अतोह-अव्यय, अनन्त, निरवधि, अविराम । मै.
अथक-विशे., विश्रामहीन । मै.
अथबल-विशे., असमर्थता सँ नहि चलि फिरि सकनिहार । वृद्ध आ रोगग्रस्त । मै.
अथर्व-सं., चारू वेद मे अन्तिम वेद । सं. तत्सम
अथर्वा-विशे., अर्थव वेदक ज्ञाता । सं. तत्सम
अथरबोन-सं., सघन भाड़ भंखार वाला बोन । मै.
अथरा-सं., पैघ आ फैल मुहवाला गहींरगर माटिक बासन आ धातुक वर्त्तन । मै.
अथारि-सं., अथराक आकार मे आरि बान्हिकय पानि उपछि माछ मारैक स्थान । मै.
अथाह-विशे., अगाध, गहीर जलाशय, तरीघटी नहि पवैक योग्य । मै.
अथी-अव्यय, मनक बातक स्थान मे सुननिहार कें साकांक्ष करैक शब्द । मै.
अदगुद-अव्यय, मन मे आगाँ पाछाँ करब । विस्मय आ अनिश्चयक स्थिति । मै.
अदण्ड-विशे., देखू-'अडण्ड' । सं. तत्सम
अदत्त-विशे., कहियो ककरो किछु नै देनिहार । दान नहि कयनिहार । मै.
अदद्दी-विशे., अब्बल, तत्वहीन । मै.
अदन्त-विशे., बिना दूधा दाँत टूटलवाला माल मवेशी । कहबी-"अदन्त बाछी दुदन्त गाय ।" मै.
अदना-विशे., सम्पर्क एवं सम्बन्धहीन आनलोक । मै.
अदनार-विशे., काँचे, अजोह, परिपाकहीन । मै.
अदनीबात-सं., निरर्थक गप (विषय) बिनहेतु । मै.
अद्भुत--सं., साहित्यिक रस विशेष ।
अव्यय-आश्चर्य, अद्भुत । सं. तत्सम
अदरख-सं., आद (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.
अदरदियाह/अदद्दियाह-विशे., दृढ़ताहीन, निर्बल । मै.
अदलाबदला-सं., हेर फेर, विनिमय । मै.
अदहन-सं., दालि-भात रन्हैक खौलैवाला पानि । मै.

अदालति-सं., न्यायालय, कचहरी । उ. तद्भव
अदिष्ट-सं., भाग्य, प्रारब्ध । सं. तद्भव
अदूस-विशे., अधलाह कहैक योग्य, दूसैक योग्य । प्रयोग-वरक विदाइ आ कनियाँ सेहो एकोरत्ती अदूस नै छैक । मै.
अदृश्य-विशे., दृष्टि सँ बाहर रहैवाला । मै.
अदृष्ट-सं., अगोचर वस्तु, भाग्य, नियति । सं. तत्सम
अदृष्टघट्टू-विशे., अभागल, कर्महीन । मै.
अदेय-विशे., नहि देबाक योग्य । सं. तत्सम
अदौ-अव्यय, आदि सँ चल अबैत व्यवहार । परम्परा । मै.
अदौड़ी-सं., छोट-छोट घाठिक गुल्लीजकाँ बनाओल सुखाएल बड़ी । मै.
अध्यक्ष-विशे., कोनो संस्थाक प्रधान सत्ताधारी । सं. तत्सम
अध्ययन-सं., ज्ञान अर्जनक प्रक्रिया । सं. तत्सम
अध्यवसाय-सं., गम्भीरता सँ शास्त्रीय विवेचना । सं. तत्सम
अध्यात्म-सं., आत्माक अधीनक विचार दर्शन । सं. तत्सम
अध्यापक-विशे., शास्त्रीय विषयक निर्देश करैवाला । सं. तत्सम
अध्याय-सं., ग्रन्थक मध्य विषय खण्डक सीमा । सं. तत्सम
अधक्की-विशे., सतत अधिक वस्तु चाहैवाला । मै.
अधकच्चू-विशे., आधाकय छोड़ल काज । मै.
अधकट्टू-विशे., अपूर्ण काज एवं वस्तु । मै.
अधकट्टी-विशे., आधा काटल प्रमाणक पत्र । मै.
अधकपन-सं., प्रयोजनक अधिको लेवाक इच्छा । मै.
अधकपाड़ी-सं., कफ जमला सँ आधा कपाड़क पीड़ा । मै.
अधखँड़-विशे., आधा खण्ड वा टुकड़ा कयल । मै.
अधखल-विशे., आधे भरल बासन । मै.
अधखिज्जू-विशे., आधा पर छोड़ल काज । मै.
अधङ्डा-सं., छोट आकार क पक्षी । मै.
अधच्छ-अव्यय, अस्तित्व, सामने । मै.
अधजरू-विशे., आधाजरल पदार्थ । मै.
अधजनमू-विशे., आधा जमैक स्थिति मे दही । मै.
अधडँरेर-सं., आधा आधीक बीचक अंश । मै.

अधन्नी-सं., एक आनाक (चारि संख्याक) आधा। मै.

अधनेठ-विशे., अकृतज्ञ, अधम, नीच, कृतघ्न । मै.

अधपक्कू-विशे., आधा पाकल । मै.

अधपहरा-सं., आध पहरक मान । काल वेलाक त्याज्यमान । विशेष-विशेष दिनक बीच आध पहरक समय दूषित मानल गेल अछि । शुभ कार्यक हेतु ओ सब आध पहरक समय अयोग्य होइछ। यथा "रवौ वर्ज्यश्चतु:पञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठद्वयञ्चैव बुधे वाणास्तृतीयकम् । गुरौ सप्ताष्टकञ्चैव त्रिचत्वारि च भार्गवे । शनावाद्यन्तषष्ट्कञ्च दिनार्द्धप्रहरा मता ।" सं. तद्भव

अधपै-सं., किलोक आठम भाग । १२५ ग्राम । मै.

अधबहुँआँ-विशे., आधे बाँहिक अंगा । मै.

अधबाड़-सं., आधा सम्पन्न काज । मै.

अधबैसू-विशे., आधा बीतल वयसवाला । मै.

अधबोलिया-सं., शब्दक आधे अंशवाला वचन । मै.

अधमर-सं., ईंटा खपड़ाक आधा टुकड़ा । मै.

अधम-विशे., नीच, कुवृत्ती, कुकर्मी । मै.

अधमरू-विशे., आधा मुइल जकाँ भेल । मै.

अधमीरुत-विशे., आधा मुइल । मरणासन्न । मै.

अधमोनी-सं., आधा-मनक मानवाला वासन । मै.

अधर्म-सं., लोक वेदक कर्मक विपरीत आचरण । सं. तत्सम

अधर्मी-विशे., विरुद्ध धर्मवाला । नीच कर्म करैवाला । सं. तत्सम

अधर-सं., निचला ठोर । सं. तत्सम

अधर-विशे., आधारहीन स्थान, नीचा दिश लटकल । देशज

अधरतिया-विशे., आधा रातिक समय । मै.

अधरम-सं., (ग्राम्य उच्चारण) देखू-अधर्म । सं. तद्भव

अधलाह-विशे., नहि नीक । अनसोहाँत । मै.

अधलाहा-विशे., १. अनिष्ट भावी । २. मुहक रोग। मै.

अधशर-विशे., धामन गहुँमनक संयोग सँ आधा अंग धामन आधा गहुमन भय उत्पन्न साँप । मै.

अधसिज्झू-विशे., आधा सिद्ध भेल अन्न । मै.

अधहर-विशे., रेल आदि मे आधा भाड़ा लगैवाला । मै.

अधाठी-सं., आधा जरल वा जरैत उठवा योग्य चेरा वा फट्ठीवाला जारनि । मै.

अधार-सं., आधार वा आहार । सं. तद्भव

अधिक-विशे., वेशी । सं. तत्सम

अधिकरास-विशे., बहुतायति, बहुत वेशी । सं. तत्सम

अधिकार-सं., दाबी, दाहित्वक भाग वा प्रमाण, दखल । आधिपत्य । सत्ता । सं. तत्सम

अधिकार-सं., विवाह सम्बन्धक निर्णय । मिथिला मे विवाहक समय वर कन्याक किछु पीढ़ी धरि सम्बन्धहीनता देखल जाइत अछि । तदुपरान्त सम्बन्ध स्थापित करैक अधिकार बूझल जाइत अछि । एकर सामान्य नियम एहि प्रकारक अछि— "मातृत: पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृत: सप्तमीं भजेत् त्रिकादूर्ध्वं वराद् ज्ञेय:" इत्यादि पञ्जी प्रबन्धक अनुसार पञ्जीकारक' निर्णय अधिकार थीक ।सं. तत्सम

अधिकार-सं., मानव जीवन स्तरक सामाजिक विशेष अस्तित्व । लौकिक मान्यता । सं. तत्सम

अधिकारमाला-सं., वैवाहिक सम्बन्धक उपयुक्त घरक निर्धारित नामावली । सं. तत्सम

अधिकारी-विशे.,अधिकार रखैवाला । सत्ताधारी । सं. तत्सम

अधिकांश-विशे., अधिकतर, वेशी भाग । सं. तत्सम

अधिया-विशे., आधा होइक वस्तुवाला । यथा अधिया चाउर, बटाइ खेतक आधा उपजा । मै.

अध्रियाएब-क्रि., कोनो काजक आधा सम्पन्न होएब । आधा होएब । मै.

अधिरथी-विशे., रथक सेनाक सेनापति । सं. तत्सम

अधिवास-सं., देव पूजा सँ पूर्वदिन देव स्थल मे पूजा सामग्रीक संघटन । सं. तत्सम

अधीन-विशे., अधिकार, शासन आ आज्ञा मे रहैवाला । सं. तत्सम

अधीर-विशे., अगुताह, धैर्यहीन । सं. तत्सम

अधीश-विशे., शासक पर शासन करैवाला । सं. तत्सम

अधेड़-विशे., आयुक आधा पर रहैवाला । मै.

अधेला-सं., सब सँ छोट देवालक कोन बनबैवाला करनी । मै.

अधोखा-सं., लोकक सोभ अर्थात् दृष्टि सँ बचौले देल टाट वा ओहार पर्दा । मै.

अधोगति-सं., पतन, नरक होएब । अपन स्थिति सँ नीचाँ मुह जाएब । सं. तत्सम

अधोदशा नै रहब-क्रि., अत्यन्त क्षीण स्थिति होएब । मै.

अन्टबन्ट-सं., अनर्थक प्रलाप । मै.

अन्टसन्ट-सं., सम्बन्धहीन, अपमानजनक बात । मै.

अन्टा-सं., १. तागक बड़का लच्छा, डोरी भीरी । २. फलक गाछ मे डारि छीलिकय नव गाछ बनवैक हेतु माटि बन्हैक प्रक्रिया । कलम लगौनाइ । मै.

अन्टाह-विशे., सब खन तमतम कयनिहार । बात-बात मे रूसि बैसनिहार । मै.

अन्टी-सं., तागक गोल लच्छी । मै.

अन्टीटल-विशे., अप्रिय, मर्मभेदी असम्बद्ध बात । मै.

अन्टोटाह-विशे., सदिखन खिसियाएले बात बजनिहार । मै.

अन्ठाएब-क्रि., उपेक्षा करब । अनसुनी करब । ध्यान नै देब । अवहेलना करब । मै.

अन्ठानबे-संख्या, आठ एकाँइ नौ दहाँइक अंक । मै.

अन्ठामन्ठाकय-अव्यय, सब दिश सँ ध्यान समेटि-कय । मै.

अन्ठिया-विशे., अपरचित, अनचिन्हार । मै.

अन्ठेकामारब-क्रि.,माथ पर वस्तु राखि बिन पकड़-नै निधोख चलब । मै.

अन्त्याक्षरी-सं., अन्तिम अक्षर सँ पद्य आरम्भ कहब । सं. तत्सम

अन्त-सं., समाप्ति, मृत्यु, निश्शेष । सं. तत्सम

अन्तक-सं., यमराज, अन्त कयनिहार । सं. तत्सम

अन्तःकरण-सं., हृदयक सूक्ष्मतम प्रकृति । सतत आत्माक लागल सूक्ष्म शरीर । चेतना । सं. तत्सम

अन्तर्यामी-विशे., आन्तरिक विषय जानि लैवाला । सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक ज्ञान रखैवाला । सं. तत्सम

अन्तर-सं., विभेद होएब, (उ. फर्क) भिन्नता । सं. तत्सम

अन्तरा-सं., आरोह अवरोहक पद । संगीत मे स्थायी (ध्रुपद) क अतिरिक्त बीचक गवैक पदावली । सं. तत्सम

अन्तरीक्ष-सं., आकाश । सं. तत्सम

अन्तस्तल-सं., भीतरक निचला तह । सं. तत्सम

अन्तहिया-विशे., आन प्रदेशक लोक । आन ठाम रहनिहार । मै.

अन्ता-सं., बाँसक कामि सँ बनल माछ मारैक विशेष साधन । मै.

अन्तिम-विशे., अन्त मे भेनिहार । सं. तत्सम

अन्देशा-सं., अनिष्टक आशंका सँ मनक विकलता । मै.

अन्ध-विशे., आन्हर । नेत्रहीन । सं. तत्सम

अन्ध-सं., अन्हार । सं. तत्सम

अन्धाधुन्ध-सं., बिन जननै बुझनै कयल जाइक क्रिया । मै.

अन्धुन-सं., अनठेकान । मै.

अन्न-सं., खेतक उपजल धान गहूम आदि । मै.

अन्नप्राशन-सं., नवनेना कें पहिले-पहिल अन्न चटबैक विधि । पुरुष कें सभ मास मे, आठम मास सँ आ स्त्री कें सातम सँ विषम मास मे नियम । सं. तत्सम

अन्तर-सं., अन्तःपुर, भीतरी आङनक एकान्त स्थान । मै.

अन्यत्र-अव्यय, आनठाम, अनतय । सं. तत्सम

अन्यथा-अव्यय, दोसर रुपें, आन प्रकारें, नहि तँ । मै.

अन्याय-सं., औचित्य सँ भिन्न, लोकक अहित । सं. तत्सम

अन्यायी-विशे., समाजक प्रतिकूल करैवाला । सं. तत्सम

अन्वेषण-सं., खोज, पुछारी, ताकब । सं. तत्सम

अन्हड़-सं., धूराक संग सुखाएल विहारि । मै.

अन्हमुन्ह-विशे.,जर आदिक प्रकोप सँ मूर्छित जकाँ चेतना आ चेष्टारहित । मै.

अन्हरजाली-सं., (लाक्षणिक) मन बुद्धि कें फेरि-दैक प्रयास । यथार्थक ज्ञान करैक कुण्ठा । मै.

अन्हरा-विशे., (अनादर मे) सूझै मे असमर्थ । मै.

अन्हराएब-क्रि., घनीभूत होएब, अन्हार जकाँ लागब । धूआ आदि सँ नहि देखल जा सकब । मै.

अन्हरिया-विशे., अन्धकार भरल रातिवाला पक्ष । मै.

अन्हरोख-सं., अन्हारे रहैत प्रभातक समय, भोल अन्हारी । पौह फटै सँ पहिलुक काल । मै.

अन्हरौन-विशे., अधिक जंगल झारक द्वारे आ मेघ लागल रहैक द्वारें असमय मे अन्हार बनल। मै.
अन्हाक आहिस-सं., (लाक्षणिक) भविष्यै पर निर्भर भ' क आश धैने चलै मे ध' तानब। मै.
अन्हार-सं., अन्धकार। मै.
अन्हार घरजनु सारैं साँप -विशे., (लाक्षणिक) बिन बूझल गमल स्थान। अत्यन्त भयावह। मै.
अन्हारीदेब-क्रि., कुशियारक गाछ भेला पर ओकर जड़ि कें माटि सँ भरिदेब। मै.
अन्हरे-सं., अनर्थ, मनमानी, लोकक उत्पीड़न। मै.
अन्हैया-विशे., भरि दिना। मै.
अन्है साँप-सं., साँपक आकार-प्रकारवाला गाछ। मै.
अनकर-सर्व., आनक, दोसराक। मै.
अनकहर-विशे., अविश्वसनीय बात। मै.
अनका-सर्व., दोसरा कें। मै.
अनखद-विशे., केवल अन्नेटा खाइवाला। मै.
अनखालागब-क्रि., अप्रिय लगैक कारणें तामस जागब। मै.
अनखाह-विशे., सब बात कें अधलाहे मानि तमसय-निहार। स्त्री० अनखाहि। मै.
अनखुनाह-विशे., आनक नीक नहि सहन कय-निहार। स्त्री० अनखुनाहि। मै.
अनखौक-विशे., अन्न खाइवाला बच्चा। मै.
अनगनित-विशे., असंख्य, बहुत। मै.
अनगर-विशे., १. अन्नक सम्पर्कवाला। २. अन्न मे विशेषता वाला। अन्न भरल। मै.
अनगुति-सं., उदय सँ पूर्ववाला समय, भोर। मै.
अनगौआँ-विशे., अपन गाम सँ भिन्न गामक वासी। मै.
अनघोल-सं.,१. गुप्त बातक सगरे प्रकाश। २. बहुत लोकक एके संग ऊँचे बजैक विभिन्न शब्द। मै.
अनङ्ग-सं., कामदेव। सं. तत्सम
अनचट्टू-विशे., कनेक-कनेक सीझल अन्नक रस चटैवाला नेना। मै.
अनचिन्हार-विशे., अपरिचित। मै.
अनजनुआँ-विशे., अवैध पुरुष सँ उत्पन्न सन्तान। मै.
अनजर-सं., अधिक भोजनक कारणें भेल ज्वर। मै.
अनजान-विशे., ज्ञानहीन। अज्ञान। मै.
अनटवनट/अनटसनट-अव्यय, (विशे.,) अप्रयोजन, असंबद्ध। मै.
अनठेकान-सं., अनिश्चिय। मै.
अनठेकानी-विशे., बिन जानल बूझल। अनिश्चित। मै.
अनठेकामारब-क्रि., माथ पर घैल आदि भारी लय निधोख चलब। मै.
अनतय-अव्यय, अन्यत्र, आनठाँ। मै.
अनदिना-विशे., यात्रा वा शुभकर्म नहि करैवाला दिन। मै.
अनदेख-विशे., अदृश्य मे रहैवाला, अदृश्य। मै.
अनधना-सं., एक रुपक धान मे मिलल भिन्न धान। मै.
अनधैर्य-सं., धैर्यक अभाव, असन्तोष, अनाश्वासन। मै.
अनन्त-विशे., अन्तहीन, अतोह। सं. तत्सम
अनन्तमूल-सं., सारिवा, औषध विशेष। सं. तत्सम
अनपच-सं., नहिपचैक कारणें पेटक विकार। मै.
अनपचार-सं., अपवित्र चालि, अशुद्ध व्यवहार, घृणित कर्म। मै.
अनपट-विशे., यत्रकुत्र अनगनित रुपक। मै.
अनपेक्ष-विशे., लागि रखै सँ उदासीन, अपेक्षाहीन। सं. तत्सम
अनबल-सं., आन्तरिक विरोध। मै.
अनबूझ-विशे., अबोध। ज्ञानरहित। मै.
अनभरोस-सं., अधैर्य। मै.
अनभल-सं., अनहित, अमंगल। मै.
अनभुआर-विशे., अपरिचित। अनचिन्हार। मै.
अनमनस-विशे., दूर मे मन कें ओझराएल रखै-वाला। मै.
अनमना-सं., मनोरंजन, मनबहलैक साधन। मै.
अनमनाएब-क्रि., मनक विफल रहने मन्द रहब। मै.
अनमुनाह-विशे., आन्तरिक कष्ट सँ विकल। मै.
अनमुह-विशे., मनक बात प्रकट करै मे असमर्थ। मै.
अनमेल-विशे., परस्पर समानता नहि रखनिहार। मै.
अनमोल-विशे., अमूल्य। मै.

अनर्गल-विशे., अनुचित, असंगत। मै.

अनर्थ-सं., अन्याय, अनहित घटना। मै.

अनरस-सं., खाएल अन्नक पचैक अभाव मे उत्पन्न विकार। मै.

अनरसा-सं., पकवान विशेष। मै.

अनरीत-सं., परम्परा तथा नियमक प्रतिकूल व्यवहार। मै.

अनलेख-विशे., असंख्य, लेखा-जोखा सँ बाहर। मै.

अनवधान-अव्यय, अप्रत्याशित रुपें। सं. तत्सम

अनवरत-अव्यय, सदिखन। सं. तत्सम

अनवस्था-सं., अनियमितता, व्यवस्थाक उनटफेर। सं. तत्सम

अनवसर-सं., अनुपयुक्त समय। सं. तत्सम

अनशन-सं., भोजन नहि करैक नियम। सं. तत्सम

अनस्थरि-सं., अनुपयुक्त, अव्यवस्थित, अयोग्य स्थान। मै.

अनस्था-सं., उपेक्षा, अनास्था। सं. तद्भव

अनसाह-विशे., आनक नीक नहि सहन करैवाला। स्त्री० अनसाहि। मै.

अनसुन-विशे., सुनलौ पर अनठाओल। मै.

अनसुनी-सं., सुनलौ पर अनठा दैक चेष्टा। मै.

अनसैन-सं., घमासान रुपक अनहोनी घटनाक भययुक्त घबराहटि। मै.

अनसोहाँत-विशे., नहि नीक लगै योग्य। मै.

अनहद-विशे., सीमा सँ बाहर, सीमारहित। उ./मै.

अर्नाहस-सं., अनको बखरा हड़पैक विचार। मै.

अनहोनी-सं., असंभावित घटना। मै.

अनाइत-अव्यय, दैवयोगें। मै.

अनाएब-क्रि., मङाएब। मै.

अनाड़ी-विशे., अनजान, बेलूरि। मै.

अनाथ-विशे., असहाय, संरक्षणहीन। सं. तत्सम/मै.

अनाध्याय-सं., अध्ययनक हेतु दोषयुक्त दिन। सं. तत्सम

अनामिका-सं., हाथक चारिम आङुरक नाम। मै.

अनायास-अव्यय, बिना यत्नें, सरलता सँ। मै.

अनार्य-विशे., आर्य संस्कृति कें नहि माननिहार। सं. तत्सम

अनार-सं., दाड़िम। देशज मै.

अनासुनी-सं., विरोधी लोकक विषय मे किछु नहि सुनैक व्यवहार। मै.

अनासुरती-अव्यय, बिना बूझल-सूझल, बिना पूर्व सूचनाक। मै.

अनाह-विशे., अन्नक संयोगवाला वासन। मै.

अनिल-सं., बसात। सं. तत्सम

अनिश-अव्यय, सबखन। सं. तत्सम

अनुकरण-सं., देखा-देखी (उ.) नकल। सं. तत्सम

अनुकल्प-सं., कोनो विधि विधानक दोसर सरल रुप। सं. तत्सम

अनुकूल-विशे., विचारक अनुसार होमऽवाला। सं. तत्सम

अनुखन-अव्यय, सदति काल। अनुक्षण। सं. तद्भव

अनुग्रह-सं., कृपा। सं. तत्सम

अनुचर-विशे., सेवाक ध्येय सँ संग रहनिहार। सं. तत्सम

अनुचित-अव्यय, तथा विशे., अधलाह, प्रतिकूल। सं. तत्सम

अनुपम-विशे., अतिसुन्दर, उपमाहीन। सं. तत्सम

अनुपात-सं., समानता वा अपेक्षाक संगति। सं. तत्सम

अनुपान-सं., औषधक संग खाइवाला आवश्यक वस्तु। सं. तत्सम

अनुभव-सं., पहिने घटल घटनाक स्मृति। सं. तत्सम

अनुमति-सं., आज्ञा, विचारक पुष्टि, स्वीकृति। सं. तत्सम

अनुमान-सं., तर्क, लक्षण सँ लक्ष्यक निर्धारण, अन्दाज। सं. तत्सम

अनुरक्त-विशे., प्रेम, प्रणय, स्नेह मे डूबल फँसल आ पड़ल। सं. तत्सम

अनुराग-सं., १. प्रेम। २. कृत्रिम आत्मीयता। सं. तत्सम

अनुराधा-सं., नक्षत्र विशेष। मै.

अनुरुप-विशे., एके आकार प्रकारवाला। सं. तत्सम

अनुरोध-सं., उपदरयुक्त कर्त्तव्यक प्रति प्रेरणा। सं. तत्सम

अनुशंसा-सं., विचारक सम्पोषण। सं. तत्सम

अनुष्ठान-सं., कोनो नीक काज साधना। सं. तत्सम

अनुस्वार-सं., आनुनासिक मात्रा, अक्षर पर देल बिन्दु। सं. तत्सम

अनुसन्धान-सं., विषय वस्तुक मूल धरि अन्वेषण । सं. तत्सम

अनुसार-अव्यय, विषयक अनुकूल रुपेँ । सं. तत्सम

अनूकाल-अव्यय, सदिखन । "अनूकाल जनि बिसरह मोहि" विद्यापति । मै.

अनूप-विशे., अप्राप्य, अपूर्व । जलप्राय भूमि । मै./सं. तत्सम

अनेक-सर्व., बहुत, एक सँ अधिक । सं. तत्सम

अनेर-विशे., व्यर्थ, बिन कारण, अनियन्त्रित । प्रयोग-'अनेर बढेतऽ हरिन सूगर बढ़े' । मै.

अनैँ-सं., मौलिक-कौलिक सम्बन्ध । अन्वय । सं. तत्सम

अनैँत-विशे., निकट कौलिक सम्बन्धक लोक । मै.

अनोख-विशे., १. अपूर्व, आश्चर्यजनक घटना । २. असुन्दर । मै.

अनोन-विशे., १. नोन शून्य वा थोड़ नोनवाला । २. (लाक्षणिक) अप्रिय बात । मै.

अनोना-विशे., नोन नहि खाइवाला दिन । मै.

अनोर उठब-क्रि., अनघोल होएब । कोलाहल । मै.

अप्रचाल-विशे., चलै फिरै मे असक बूढ़ । मै.

अप्रतिम-विशे., अतुलनीय । सं. तत्सम

अप्री-विशे., अप्रिय । सं. तत्सम

अपक्व-विशे., बिन पाकल, बिन पचल । असिद्ध । सं. तत्सम

अपक-सं., भोजनक नहि पचला सँ उत्पन्न रोग । मै.

अपकर्म-सं., अनुचित कर्म । सं. तत्सम

अपकर्मी-विशे., अनुचित काज कयनिहार । सं. तद्भव

अपकार-सं., अनहित । सं. तत्सम

अपकीर्ति-सं., अवजस, दुर्नाम, अपयश । सं. तत्सम

अपखोरा-सं., जल रखैक पैँघ बासन । मै.

अपगरानि-सं., आत्महीनता सहित पश्चात्ताप । सं. तद्भव

अपङ्ग-विशे., कोनो अंगक हीन, लुल्ह नाङर आन्हर । मै.

अपच-सं., नहि पचला सँ उपजल पेटक विकार । मै.

अपचार-सं., अनुचित तथा घृणित व्यवहार । पाप । सं. तत्सम

अपचेष्ट-विशे., उचित चेष्टा नहि करैवाला । अपनो देहक परिष्कार नहि करैवाला । सं. तत्सम

अपटीखेत-सं., १. अपमृत्यु । २. श्मशान । ३. असुरक्षा सँ सत्यानाश । मै.

अपटु-विशे., अलूरि । उचित काजक ज्ञान नै रखैवाला । सं. तत्सम

अपढ़-विशे., नहि पढ़ैवाला, मूर्ख । मै.

अपथ-विशे, अपथ्य, स्वास्थ्यक प्रतिकूल । सं. तद्भव

अपथ-सं., कुमार्ग, अहित बाट । सं. तत्सम

अपन-सर्व., निज, निजी सम्बन्धी । मै.

अपन उल्लू सोझ करब-क्रि., (लाक्षणिक) अपने स्वार्थ साधब । मै.

अपनकज्जी-विशे., अपने काज टा सँ अपेक्षा रखैवाला । मै.

अपनत्व-सं., अपनापन, अपन बूझैक प्रवृत्ति । मै.

अपना-अपनी-अव्यय, व्यक्तिगत रुपेँ भिन्नता सँ । मै.

अपनाएब-क्रि., अपना मे मिलाएब । आत्मसात करब । मै.

अपनापन-सं., आत्मीयता, अपनत (त्व) । मै.

अपनाभरि-अव्यय, यथा शक्ति, अपन शक्तिक अनुसार । मै.

अपने-अव्यय, सम्माननीय सम्बोधन, स्वयम् । मै.

अपनैती-सं., आत्मीयता, अपनापनक प्रवृत्ति । मै.

अपमान-सं., तिरस्कार, अप्रतिष्ठा । सं.तत्सम

अपमृत्यु-सं., अकाल मृत्यु । सं. तत्सम

अपयश-सं., बदनामी, अवजस । सं. तद्भव

अपरपच्छ-सं., पितृपक्ष, आश्विनक अन्हरिया पक्ष । मै.

अपरपात-सं., जेठ श्रेष्ठक समक्ष छोट सम्बन्धीक मरण । सं. तत्सम

अपरस-सं., हाथक चर्म रोग विशेष । मै.

अपराजित-सं., लत्ती मे होमऽवाला फूल विशेष । मै.

अपराध-सं., दोष, घट्टी, अधलाह कर्म । सं. तद्भव

अपराहु-विशे., अपराध करैक प्रवृत्तिवाला । मै.

अपरिहार्य-विशे., नहि छोड़ैक योग्य । सं. तत्सम

अपरूप-विशे., अत्यन्त सुन्दर । मै.

अपरोजक-विशे., अवण्डु, कोनो काजक जोग नहि, बेलूरि । मै.

अपलाप-सं., कोनो बात केँ नुकबैक चेष्टा । सं. तत्सम

अपवाद-सं., अनुचित प्रचार, लाञ्छनक उद्घोष। सं. तत्सम

अपवृत्ति-सं., अधलाह आचरण। सं. तत्सम

अपशोच-सं., पश्चात्ताप पूर्वक गम्भीर दुख। मै.

अपस्मार-सं., मृगी रोगक विशेष रुप। सं. तत्सम

अपसराहि-विशे., शरीर सँ चरित्र धरि अपवित्रता भरलि स्त्री। मै.

अपसुइआ-विशे., अप्रसूतिका, बिन सन्तान भेल स्त्री। मै.

अपसेआँत-विशे., परिश्रान्त, अपश्रान्त, थाकल। मै.

अपहँत-विशे., शुद्ध-अशुद्ध आ पवित्र-अपवित्रक विचार शून्य। विचार आचार मे घिनौन। मै.

अपहरण-सं., चोरि, लूटि। बलात् लऽजाएब। सं. तत्सम

अपाटक-विशे., लूरि मुहक हीन। अपटु। मै.

अपात्र-विशे., अयोग्य, अक्षम। सं. तत्सम

अपान-सं., देहक पाँच वायु मे अधोवायु। सं. तत्सम

अपार-विशे., अन्त नहि पवैक योग्य। मै.

अपालन-सं., बिना देख-रेखक मुइल गाइक प्रायश्चित। सं. तत्सम

अपियारी-सं., माछ बझबैक हेतु तात्कालिक कृत्रिम खत्ता। मै.

अपूछ-सं., भरिमोन, अघान, अछौं। मै.

अपूर्व-विशे., विलक्षण, अतिसुन्दर। सं. तत्सम/मै.

अपेक्षा-सं., बिना सम्बन्धौं परस्पर सद्भाव। सं. तत्सम

अपैत-विशे., अशुद्ध, अपवित्र। मै.

अपोअाङ-सं., नमहर, हरियर आ कोमल घास। मै.

अफजल-विशे., भीतर बहार दूनू विधियें घिनौन। मै.

अफड़-विशे., नहि फड़ैवाला गाछ। मै.

अफनाएब-क्रि., १. तामस सँ तमतम करब। २. कौतूहल सँ छटपट करब। मै.

अफरब-क्रि., १. अत्यन्त भोजन सँ अकसक करब। २. अफरा रोग सँ माल जाल कें आक्रान्त होएब। मै.

अफरा-सं., माल जालक रोग विशेष। मै.

अफरात-विशे., अधिकतर, अधिकता सँ भेटैवाला। मै.

अफार-विशे., बिन जोतल खेत। मै.

अफुआएब-क्रि., तामस सँ मुह फुलौने रहब। मै.

अब्जूस-सं., फलक रस। मै.

अब्बल-विशे., हवान्स सुन्न, शक्तिहीन। मै.

अबंच-विशे., शेष, बाँकी, बाँचल नै रहल। मै.

अबढब-सं., छातीक धड़कनक प्रतीक शब्द। मै.

अबढंग-विशे., लूरिविहीन, सामान्यो कलारहित। मै.

अबढङाह-विशे., अबढंग जकाँ करैवाला। स्त्री० अबढङाहि। मै.

अबण्डु-विशे., अकर्मण्य, किछु करै मे अक्षम। ज्ञान आ क्रिया कलाहीन। मै.

अबतब-अव्यय, (लाक्षणिक) कोनो क्षण मे मृत्युक संभव। मै.

अबतीकाल-सं., अबैक बेर। मै.

अबरख-सं., खान सँ बहराएल विशेष द्रव्य। एकर भस्म सँ रासायनिक औषध। मै.

अबरजात-सं., अबै-जाइक व्यवहार। मै.

अबरा चढ़ब-क्रि., अतिरिक्त आमदनी सँ भरैत जाएब। मै.

अबलगर-विशे., शक्तिहीनता भरल। मै.

अबला-सं., स्त्री जाति। मै.

अबला निर्दिश-विशे., अनाथ स्त्री। मै.

अबलाहा-विशे., अब्बल रहैवाला। मै.

अबाइ-सं., अबैक सम्भावना, आगम। मै.

अबाक-विशे., विस्मय, भय आदि सँ किछु नै बजैवाला। चुप। मै.

अबाद-विशे., फसिल लागल खेत। मै.

अबाध-विशे., बिना बाधावाला। मै.

अबारचढ़ब-क्रि., माछक प्रवाहक विरुद्ध चलब। मै.

अबारा-विशे., उद्दण्ड, अनुशासनहीन, दुर्वृत्ती। स्वेच्छाचारी। मै.

अबाह-विशे., कष्टयुक्त अंग, विशेष विकृत आ कष्टवाला। अक्षम। मै.

अबीर-सं., अनेक रंगक रेणु, उत्सव त्योहारक मनोरञ्जक वस्तु। मै.

अबुखान-विशे., बातक अर्थ बुद्धि मे जकरा नहि जगैक, केवल मुह तकैवाला। मै.

अबूझ-विशे., बातक मर्म नहि जाननिहार आ बूझनिहार। मै.

अबूह-विशे., असम्भावित, सामर्थ्यक अनुकूल नहि रहनिहार । मै.
अबेर-सं., विलम्ब, अतिकाल । मै.
अबैत-अबैत-अव्यय, अबैक चेष्टा करितैं । मै.
अबैया-सं., अबैक निश्चय । अबैक सम्भव । मै.
अबोध-विशे., अज्ञान, किछु नै बूझैवाला । मै.
अभ्यन्तर-अव्यय, अन्तस्तल, भीतर । सं. तत्सम
अभ्यर्थना-सं., अनुनय विनय, दीनता सँ प्रार्थना । सं. तत्सम
अभ्यागत-विशे., अतिथि, पाहुन । सं. तत्सम
अभ्यास-सं., १. आदति, लतुक । २. बराबरि पढ़ैक चेष्टा । सं. तत्सम
अभ्युदय-सं., उन्नति, बढ़बाक प्रकृति । सं. तत्सम
अभच्छ-विशे., मनुष्यक अखाद्य । अभक्ष्य । सं. तद्भव
अभट्ट-विशे., अशिक्षित समाजवाला विषय । सं. तत्सम
अभड़ब-क्रि., अनदेख मे देह सँ भीड़ब । सम्पर्क होएब । मै.
अभनीगबनी-सं., बहुत दिन सँ संचित उलहन उपदर आ आक्रोश बात । मै.
अभय-विशे., डरहीन । सं. तत्सम
अभरन-सं., आभरण, गहना । सं. तद्भव
अभाग-सं., अभाग्य, अधलाह अदृष्ट । सं. तद्भव
अभागल-विशे., अदृष्टघट्टू । भाग्यहीन । मै.
अभार-सं., अप्रतिष्ठा, दोष भरल अपवाद । मै.
अभाव-सं., अस्तित्वक लोप । मै.
अभावृत-अव्यय, अप्रत्याशित, अकस्मात् । मै.
अभास-सं., आभास, झलक । सं. तत्सम
अभिजित-सं., उत्तम गुणवाला सूक्ष्म नक्षत्र । मै.
अभिझंक-सं., मन वा शरीर पर अचानक चोट सँ माथक शून्यता । मै.
अभिप्राय-सं., आशय, तात्पर्य । सं. तत्सम
अभिमत-विशे., आन्तरिक विचार सिद्ध । सं. तत्सम
अभिमान-सं., घमण्ड, मिथ्या अहंकार । सं. तत्सम
अभियान-सं., कोनो काजक बुद्धि विचार सँ पूर्ण सम्हरिक प्रवृत्ति । सं. तत्सम
अभिराम-विशे., सुन्दर । सं. तत्सम
अभिलाषा-सं., आन्तरिक इच्छा । सं. तद्भव
अभिष्ठान-सं., सम्मान दैत उठिकय ठाढ़ होएब । मै.
अभिषेक-सं., सिंचन, स्नान, सिक्त करब । सं. तत्सम
अभिसार-सं., चुपचाप प्रणयीक लग गमन । सं. तत्सम
अभिसारिका-विशे., लोकक आँखि बचा कय प्रणयी लग गेनिहारि । सं. तत्सम
अभीर-विशे., प्राचीन जाति विशेष । सं. तत्सम
अभीष्ट-विशे., इच्छा कयल, अभिलषित । सं. तत्सम
अभुक्त-विशे., बिन भोजन कयल, भूखल । सं. तत्सम
अभूख-सं., थोड़ खाइक इच्छा, पूर्ण भूखक अभाव । मै.
अभेला-सं., उपेक्षा, सेवा मे अनठाएब, उचित परिचर्याक अभाव । अवहेलना । मै.
अम्बर-सं., १. आकाश । २. कपड़ा । ३. चरखा विशेष । सं. तत्सम
अम्बा-सं., माता, देवी । सं. तत्सम
अम्बात-सं., आम बात । वायु विकारक रोग । मै.
अम्बार-सं., समूह, ढेरी, बहुतायत । उ. तत्सम
अम्मट-सं., पाकल आमक रस केँ सुखा कय बनाओल पदार्थ । मै.
अम्मत-सं., छ स्वादक रस मे रस विशेष । अम्ल । मै.
अम्मर पीयब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक दिन धरि जीयब । मै.
अम्मल-सं., कोनो वस्तुक व्यसन, निश्चित समयक अभ्यास । मै.
अम्मा-सं., माय, जननी । मै.
अमचुकारी-सं., अम्मत ढेकार । अपच रहैक ढेकार । मै.
अमचूर-सं., काँच आमक खण्ड केँ सुखाकय बनाओल चूर्ण । मै.
अमजिहुल-विशे., कनेक-कनेक अम्मत स्वादवाला । मै.
अमठा-विशे., आमक काठवाला वस्तु । मै.
अमड़ा-सं., आमसन अम्मत छोटफल । मै.
अमताइ-सं., खट्टापन । मै.
अमताइन-विशे., अम्मतसन स्वादवाला । मै.
अमताएब-क्रि., अम्मत स्वादवाला होएब । मै.
अमताह-विशे., अम्मतक स्वादयुक्त । मै.

अमती-सं., काँटवाला छोट वनष्पति विशेष । मै.

अमतौआ-विशे.,अम्मतवाला, अम्मत प्रभेदक पदार्थ । मै.

अमनियाँ-विशे., शुद्ध रूपक, पवित्र काजक हेतु पवित्र कयल । मै.

अमरकन-विशे., जीवनी शक्ति नष्ट नै होइक कन्द-वाला । मै.

अमरलत्ती-सं., बिन जड़िक लत्ती, उपरैं उपर गाछ पर पसरैवाली लत्ती । मै.

अमरस-सं., आमक रस खयला उत्तर वा आमक रसवाला समय मे उत्पन्न छोट बच्चाक रोग । मै.

अमरसा-सं., आमक समय मे वातावरण मे पसरल अम्लता । मै.

अमरुख-विशे., मूर्ख, कोनो ज्ञान नै रखैवाला । मै.

अमरै-सं., अमराई, दूरधरि आमक गाछी । मै.

अमरोड़ा-सं., अमताह स्वादिष्ट सुपाच्य साग । मै.

अमल-सं., १. सम्भावित समय । २. बीतल कालक व्यक्तिक समय स्थिति । ३. देखू-अम्मल । मै.

अमलतास-सं., औषधक वनष्पति विशेष । मै.

अमलपित्त-सं., अम्लपित्त रोग विशेष । सं. तद्भव

अमलवेंत-सं., पतरका वेंतक वन । मै.

अमशूल-सं., व्यथाक संग अमानशय । मै.

अमहाउर-सं., दही जनमऽबैक प्रक्रिया मे सुसुम छाउर छाँछ आदि वासन तरमे दैक विधि । मै.

अमा-सं., १. माय (सं. तद्भव) । २. अमावास्या । सं. तत्सम

अमाघौर-सं., मेंही धानक प्रभेद । मै.

अमात्य-विशे., विचार देनिहार । सं. तत्सम

अमात-सं., जाति विशेष । मै.

अमानसँ-सं., आँओं (लज्भा) नेने वेदनाक संग मल क उतरब । मै.

अमामाइक पहिलेयाम-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) पहिले काज मे गौरव करैक चेष्टा । अनुभवहीनो भ' क' दावी विशेष । मै.

अमार-सं., अम्वार । उ. तद्भव

अमारी -सं., सबठाँ आमक अधिकता । मै.

अमाल (एमाल)-सं., वर्षा भेला पर धनखेती मे जागल घास । मै.

अमावास्या-सं., कृष्ण पक्षक १५म तिथि । मै.

अमिअ-सं., अमृत । सं. तद्भव

अमिट-विशे., कहियो नहि भेटाइवाला । मै.

अमित-विशे., अनुमान सँ बाहर, मानरहित । सं. तत्सम

अमिरती-सं., जिलेबीक प्रक्रिया सँ बनाओल जाइ-वाला स्वादिष्ट मधुर । मै.

अमिलगर-विशे., विशेष आमिलक स्वादवाला । मै.

अमिलाएब-क्रि., तीमन मे आमिल (अम्मत) देव आमिल मिलाएब । मै.

अमिलाह-विशे., आमिलक सम्पर्की । आमिलवाला । मै.

अमिलौन-विशे., आमिलक अधिक स्वाद भरल । मै.

अमीन-विशे., खेत भूमि नपैक विशेषज्ञ । मै.

अमुक-सर्व., फलाँ, फलना । सं. तत्सम

अमृत-सं., जीवनी शक्ति । सं. तत्सम

अमेचब-क्रि., भटकाक संग कोनो वस्तुकें कनेक घुमाएब । मै.

अमेट-विशे., नहि भेटवैक जोग । मै.

अमेठब-क्रि., घुमा-घुमा कय गुन देब । मै.

अमेढ़ब-क्रि., घुमाकय भोंक सँ ऐंठब । मै.

अमेढ़ी-सं., अमेढ़बाक प्रक्रिया । मै.

अमैया-विशे., आमवाला (काल) । मै.

अमोल-विशे., अमूल्य, दाम नहि लगाओल जा सकै-वाला । मै.

अयना-सं., १. अपन प्रतिबिम्ब देखैक सीसा । २. पौराणिक राधाक माइक नाम । मै.

अयना-अव्यय, बीतल वा भविष्यत काल मे अवैक मान । मै.

अय !/अयि !/अये ! -अव्यय, शिष्ट सम्बोधन । मै.

अर्क-सं., १. कोनो जड़ीक यन्त्र द्वारा चुबाओल रस । औषध । २. सूर्य । मै.

अर्घ-सं., ककरो उद्देश्य क'क' भक्ति सँ अर्घा द्वारा अथवा अन्जलि सँ देल जल । सं. तद्भव/मै.

अर्घा-सं., जल सर्मपित करैक द्रव्यक पात्र । मै.

अर्घासन-सं., श्राद्ध धरि मृत व्यक्तिक उद्देश्य सँ देल अर्घक संग भोज्य पदार्थ । सं. तत्सम

अर्घी-सं., छोट अर्घा । मै.

अर्घौंती-सं., सूर्य कें अर्घक संग दैक छोट-छोट वस्तुक सामग्री । मै.

अर्चना-सं., पूजा । सं. तत्सम

अर्जन-सं., कमाइ, श्रम सँ उत्पादन । सं. तत्सम

अर्जा-सं., १. लेखा करैक विधि । २. उपार्जन । मै.

अर्जुन-सं., १. वृक्ष विशेष । २. मध्यम पाण्डव । मै.

अर्तल-विशे., सद्यः आवश्यक, उपस्थित आवश्यक । मै.

अर्थ-सं., १. धन । २. शब्दक संकेतित विषय । ३. प्रयोजन । सं. तत्सम

अर्थाएब-क्रि., बुझलो बात कें दोसराक मुह सँ बारम्बार कहाएब । मै.

अर्थात्-अव्यय, स्पष्टीकरणक प्रकारान्तर । मै.

अर्थी-सं., शव यात्राक विमान, चचरी । देशज

अर्धङ्ग-सं.,लकवा, पक्षाघात रोग । मै.

अर्धङ्गी-विशे., आधा गौरी आ आधा अपन शरीरवाला महादेव । मै.

अर्धाङ्गिनी-सं., पत्नी, स्त्री । शरीर सँ सम्पत्ति धरिक अधिकार करैवाली । सं. तत्सम

अर्धोदक-सं., तीर्थस्थान मे मृत्युक समय मृतकक आधा शरीरक जलशयन । सं. तत्सम

अर्धोदय-सं., माघक अमावास्या दिन बहुत-बहुत दिन पर विशेष दिन नक्षत्र सभक योग सँ भेल महापुण्य पर्व । सं. तत्सम

अर्पण-सं., छोड़नाइ, त्यागब, दान । सं. तत्सम

अर्र-अव्यय, बकरी कें सोर करैक शब्द । मै.

अर्रदर्र-अव्यय, उपराग सँ भरल असम्बद्ध अनेक रुपक अनवसरक गप । मै.

अर्रबोंकरब-क्रि., महिसीक विकृत शब्द द्वारा अपन बारम्बार अभिप्राय जनाएब । भैंसिक बाजब । मै.

अर्रहिटि मारब-क्रि., पीड़ाक अधिकता सँ चिकरि-चिकरिकय कुहरैत छटपटाएब । मै.

अर्रोठल-विशे., बेलसि, अप्रिय आ कठोर वचन । मै.

अर्हणा-सं., सम्मान मे देल उपयोगी विशेष सामग्री । सं. तत्सम

अरकचवरकच-सं., अनुपयोगी, घिनाओन आ गदौस सभक समूह । मै.

अरकसिया-विशे., आरा चलाकय काठ चीरैक व्यवसाय करैवाला । मै.

अरगज-सं., अनेक जड़ीबूटीक संग पकाओल तेल । मै.

अरगटैं-अव्यय, विन बात जननैं बूझि जाइक दावी सँ । मै.

अरगनी-सं., नूआ वस्त्र कें रखैले बाँसक टोटा सँ तानल स्थान । मै.

अरघब-क्रि., कण्ठ सँ नीचाँ होएब । पेट मे अँटकब । मै.

अरजब-क्रि., कमाएब । उद्यम सँ उपार्जन करब । मै.

अरधना-सं., आराधना, विधि विधान सँ पूजापाठ । स. तद्भव

अरना-विशे., बनैया विशाल महिस । मै.

अरपटांग उठाएब-क्रि., बीचैं मे बखेड़ा ठाढ़ करब । मै.

अरबद्धल-विशे., अपने बातक जिद्द वा हठ सँ रगड़ केयनिहार । मै.

अरबद्धू-विशे., अपने बातक टेक रखैले अड़ल रहनिहार । मै.

अरबधिकय-अव्यय, विशेष कय, निश्चित बेर पर कृत्रिम कय । मै.

अरबा-विशे., बिन उसिनल वा उलाओल, अमनिया, अपन प्राकृतिक स्थिति मे वर्त्तमान । मै.

अरबैठ-विशे., अरबा जकाँ लगैवाला । मै.

अररापरब-क्रि., आकस्मिक अनहोनी शोकक घटना सँ सामूहिक लोकक हाहाकार करब, विलाप करब । मै.

अरसट्ठा-सं., कोनो विशेष बातक भरोसें काजक गतिक बाधा । मै.

अरसा-सं., कोनो ककरो प्रतीक्षा सँ बाधा । मै.

अरसाअरसी-अव्यय, ककरो भरोसें समयक क्षतिकय । मै.

अरहना-सं., देखू-अर्हणा । सं. तद्भव

अरारि-सं., पुरान वैर सधबैक निमित्त युद्धक आभास । मै.

अराह-सं., धनहर खेत के धान रोपैले माटि कें घुलबैले पनियाएल खेतक पहिलुक कादो करैक जोत । मै.

अरि-विशे., शत्रु, वैरी । सं. तत्सम

अरियाएब-क्रि., आनक खेत कें छाँटि कय अपन खेतक आरि कें घुसकाएब । मै.

अरिकञ्चन/अरिकोंच-सं., नमहर पातवाला कञ्चुक साग। मै.

अरिपन-सं., सिनूर पिठार सँ स्त्रीगण द्वारा विशेष शुभ अवसर एवं उत्सव मे भूमि पर विभिन्न यन्त्र-मय चित्रण। मै.

अरिया-विशे., अपन खेतक आरि लागल खेतवाला। मै.

अरिया पटिया-विशे., आरि लागल खेतवाला एवं अपन खेतक परोपट्टाक खेतवाला। मै.

अरियात-सं., अगुआनी, अनुगमन। किछु दूर धरि पाछू लागि संग चलैक व्यवहार। मै.

अरियातब-क्रि., किछु दूर सँ आ किछु दूर धरि संग लागि चलब। मै.

अरिया नधान-विशे., आरि कें नाघि (उपर देने) बहैत पानिवाला (वर्षा)। मै.

अरिष्ट-विशे., ग्रह आदिक अधलाह योग, अज्ञात कर्मक फल। सं. तत्सम

अरीखग्गी-सं., आकस्मिक आवश्यकता परक अभाव। मै.

अरुआ-सं., तरुआ तरकारीवाला विशेष कन्द। मै.

अरुआइन-सं., सिद्ध अन्न आदि वस्तुक वासि भेला पर विकृत स्वादक लक्षण। मै.

अरुआएब-क्रि., अधिक कालक रान्हल अन्न मे वसियाइन विकार होएब। मै.

अरुआठल-विशे., विचार आ व्यवहारक मूर्खता-पूर्ण अन्टोटले बातचीत कयनिहार। मै.

अरुचि-सं., कोनो वस्तुक प्रति वितृष्णा वा इच्छाक जागति नै होएब। सं. तत्सम

अरुझल-विशे., मौलाएल, झरैक स्थिति मे आएल, कान्तिहीन, उदास। मै.

अरुवी-सं., हरदिक कन्द सँ मोट तरकारीवाला कन्द। पेंची। कच्चू। मै.

अरू-विशे., मुख्य रुपें उत्तम, आवश्यक, सुन्दर। मै.

अरूप-विशे., जकरा रुपें नहि होइक, रुपहीन। सं. तत्सम

अरे ! -अव्यय, भय विस्मय सब मे स्वतः बहराएल शब्द। नीचक प्रति सम्बोधन। विरोधक लल-कारा। सं. तत्सम

अरेवा ! -अव्यय, कौतुक आश्चर्य आदि सँ स्वतः प्रकटित सम्बोधन। मै.

अरोस परोस-विशे., अपन स्थानक लग रहनिहार। परिसरक निकटवर्ती। मै.

अरोह-सं., चढ़ब, आरोह, (विशे.) जकर मन मे स्नेह सद्भावक रोच नै रहैक। सं. तत्सम/मै.

अरौतोरीके ! -अव्यय, आश्चर्य डर सँ बहराएल शब्द। मै.

अरौबा !-अव्यय, भय, आश्चर्य, विरोध आ व्यथाक शब्द। मै.

अरौ बाप/रौ बाप !-अव्यय, अन्तर्व्यथा सँ बहराएल शब्द। (अरौ बाप रौ बाप वर देखि लगैये सन्ताप—विद्यापति) मै.

अल्हड़-विशे., कोनो काजक ढंग नहि रखैवाला। मै.

अल्हुआ-सं., कोमल खाद्य कन्द, सकरकन्द। मै.

अलक-सं., माथक केशक लट, गुच्छ, झोंटकी। मै.

अऽलफल-अव्यय, शक्तिक अभाव सँ कोनहुना अपन स्थिति मे रहैत। बलहीन। मै.

अलख जगाएब-क्रि., लोकक मनोबल बढ़ाएब। वस्तु-स्थिति दिश साकांक्ष करब, प्रेरणा भरब। मै.

अलग्न-विशे., ध्यान आ धारणाशून्य। सं. तत्सम

अलग-विशे., फूट, पृथक, भिन्न। मै.

अलगटेंट-विशे., श्रेष्ठक बीच पहिनै बाजि उठ-निहार। मै.

अलगट्टे-अव्यय, बिना तर्क कयनैं बूझैक दाबी सँ बजैक क्रम। मै.

अलगनी-सं., देखू-'अरगनी'। मै.

अलग फुनगी-सं., अत्यन्त ऊँच, सब सँ उपरक स्थान। मै.

अलगबलग-अव्यय, अनायासँ, उपरैं उपर, अलक्षित रुपें झपट्टा मारि, अचानक। मै.

अलगल-विशे., सतह सँ उपरैं उठल। उपर आएल। जकर बुद्धि स्थिर नै हो (लाक्षणिक)। मै.

अलगलघप्पा-विशे., जकरा बूझौनो बात बुद्धि मे नहि आबय, जकर बुद्धि बातक गम्भीरता नहि पकड़ि सकय। मै.

अलगब-क्रि., धरातल सँ उपर आएब, पानिक सतह पर निराधार रहब। मै.

अलगा-विशे., चञ्चल, जकर बुद्धि कखनो धरातल पर नहि बैसैक। गम्भीरता सँ जे तर्क नहि कय सकय। स्त्री० अलगी। मै.

अलगाएब-क्रि., उपर उठादेव। प्रयोग-"कने बोझ अलगा दिअऽ"। मै.

अलगोजा-सं., बिना प्रयासें अधिक इच्छानुसार प्राप्ति करब, उठाएब, थानव, भोगब। मै.

अलङ्-विशे., सतत अपने धुनि मे रहने कोनो विषयक ध्यान नै रखनिहार। अलग्न। मै.

अलङ्-सं., आलयक, घरक खण्ड वा विभाग। प्रयोग-"हम अपन मकानक एक अलङ् भाड़ें पर लगौने छी"। मै.

अलङ्करण-सं., भूषण, गहना। सं. तत्सम

अलंकार-सं., गहना, काव्यक उपमा उत्प्रेक्षा आदि। सं. तत्सम

अलङ्घ-विशे., धरतीक समतल सँ अधिक ऊँच अथवा गहींर स्थान जे नँघैक योग्य नहि रहय, अलङ्घ्य। सं. तद्भव

अलच्छ-विशे., जकर शुभ काज मे अशुभ पड़ि जाय। जे अशुभ कामना राखय वा बाजय। (संज्ञा) अशुभ वा अशुभ कथा। मै.

अलछपन-सं., अशुभ उपस्थित करैक व्यवहार वा गुण। प्रयोग—"कोइलाक चीच पाड़ब अलछपन थिकैक"। मै.

अलट बिलट करब-क्रि., कोनो काजक वस्तु कोनो काज मे लगादेब। मै.

अलता-सं., नह रङ्गैक रंग, अलतकक। सं. तद्भव

अलदलवा-विशे., बिना दालि देल खिच्चरि। मै.

अलप-विशे., थोड़, कम, अल्प। सं. तद्भव

अलबजीवा-विशे., थोड़ शक्तिवाला, कनेके दम लगौला सँ टूटैवाला आ नष्ट होइवाला। मै.

अलबटाह-विशे., ओरिया कय अर्थात् उचित ढंगें काज करैक लूरि नै रखनिहार। स्त्री० अलबटाहि। मै.

अलबल-विशे., असम्बद्ध, अन्टसन्ट वचन। मै.

अलबादलबा उठब-क्रि., आशंका भरल अनेक लोकक एक संग मानसिक विह्वलता सँ शब्द होएब। मै.

अलबेला-विशे., स्वेच्छाचारी, विनोदी, दुख-सुख दुहू मे एके रंग रहनिहार। मै.

अलबौक-विशे., बजैक लूरि रहितौं किछु कहला पर बकर बकर मुह तकनिहार। मै.

अलसाएब-ना-क्रि., अनेरो आलस करब। आलस सँ भरल रहब। मै.

अलहकरन-सं., देखू-"अलंकरण"। सं. तद्भव

अलहलरैनी-विशे., असावधानी भरल, लापरवाही पूर्ण। तत्परतारहित। मै.

अलाइक धन बलाइ करब-क्रि., लापरवाही सँ काज करब, विमन सँ पतिकरनी काज करब। उपेक्षाक भाव राखब। मै.

अलहाइ मलहाइत-विशे., आसकतिक द्वारें काल कटैत। मै.

अलान-सं., लत्ती कें आश्रय देवाक साङह। पसरैक हेतु देल वस्तु। मै.

अलाप-सं., १. सद्भाव प्रदर्शनक अभिनय, फूसि आवेस। २. संगीत सँ पूर्व स्वर बान्हब। आलाप। सं. तद्भव

अलापब-क्रि., १. संगीतक आरम्भ मे स्वर बान्हब। अर्थात् स्थिर लय सातो स्वर कें ताल मात्रा दिश लय जायब। २. लोक देखाबक बढ़ि चढ़िकय आवेसक (स्नेहक) शब्द सुनायब। मै.

अलापी-विशे., फूसि अकारण ककरो पर स्नेहक बखान केनिहार। मै.

अलार-सं., अबोध बच्चाक मन कें स्नेह सँ अपना दिश आकर्षित करैक चेष्टा। मै.

अलि-सं., भँभरा। सं. तत्सम

अलिसाएब-क्रि., सुखायल जकाँ होएब। पनिमरु भऽ जाएब। मै.

अलीक-सं., मिथ्या, फूसि। सं. तत्सम

अलेमाली-सं., ठाढ़ चौकोर खटालवाला। सन्धूकचा सदृश वस्तुजात रखैक वस्तु। अं.-आलमिरा। हि.-आलमारी। मै.

अलेल-विशे., अधिक सुलभ। सबठाँ सरलता सँ अधिक मात्रा मे प्राप्य। मै.

अलैचढ़ब-क्रि., अत्यधिक उत्कण्ठा सँ उन्मन होएब। मै.

अलैचढ़ाएब-प्रे. क्रि., उताहुल बनाएब। उत्प्रेरित करब। उत्कण्ठा बढ़ाएब। मै.

अलैँ बलैँ-अव्यय, उपादेयतारहित वस्तु। अनेक अनुपयुक्त पदार्थ। मै.

अलोकी-विशे., लोक अब सँ सम्पर्क नै रखैवाला। सतत् लोक सँ अलगे रहैवाला। मै.

अलोपित-विशे., अदृश्य भेनिहार। विलीन (उर्दू) गायब। मै.

अलौकिक-विशे., सामाजिक व्यवहार मे अपटु। लोकचर्य्या ज्ञान शून्य। सं. तत्सम

अव्यक्त-विशे., अप्रकट, जे कोनो इन्द्रिय सँ प्रयत्क्ष नहि कयल जा सकय। ईश्वर, पुरुष (चैतन्य)आत्मा, सूक्ष्म शरीर (मन बुद्धि हृदय एवं अन्तःकरण) कारण शरीर (आत्मा) चेतना (प्रकृति)। अर्थात् स्थूल शरीरक भीतर इन्द्रिय कें अर्थ स्थूल पदार्थ सँ सम्पर्क कराकय चेतना धरि विविध प्रक्रिया द्वारा उपस्थित करैवाला समस्त तत्व। सं. तत्सम

अव्यय-विशे., १. नाशहीन, क्षयरहित, ईश्वर, पुरुष, ब्रह्म। २. विभक्ति नहि लगैवाला शब्द। सं. तत्सम

अव्यवस्था-सं., अनियम, नियमपूर्वक क्रियाक अभाव। सं. तत्सम

अवकहराचक्र-सं., जाहि चक्रक अक्षर क्रम सँ तान्त्रिक विधि कयल जाइत अछि। मै.

अवकाश-सं., अवसर, शून्य स्थान, बिना काजक समय। सं. तत्सम

अवकुल्ली-विशे., सतत कुदै फनै मे अत्यन्त चंचल आ कखनौ कोनो अंग शान्त नहि रखैवाला नेन्ना। मै.

अवग्रह-सं., संकट, प्राकृतिक दुखदायी स्थिति। विकट (अवार्य्य) आपत्ति। सं. तत्सम

अवगति-सं., बूझैक शक्ति, ज्ञान, बुद्धि। सं. तत्सम

अवगुण-सं., दोष। सं. तत्सम

अवजस-सं., अप्रतिष्ठा, दुर्नाम, अपयश। सं. तद्भव

अवतार-सं., विशिष्टना सँ भरल व्यक्तिक प्रादुर्भाव। (लाक्षणिक विशे.) (भिन्दा मे) लोक सँ भिन्न प्रकृति आ रुप रंगवाला, जकरा देखि कुल मे लोक बाजि उठैत अछि "अवतारे थिकथि की"। सं. तत्सम

अवदात-सं. एवं विशे., निर्मल, स्वच्छ कुल, पवित्र चरित्र। सं. तत्सम

अवध-सं., एहि नामक भूखण्ड (उत्तरप्रदेश)। सं.तत्सम
२. वध नहि करैक योग्य, अवध्य। सं. तद्भव

अवधारन-सं., कोनो विषय वस्तुक नीक जकाँ श्रवण कय विचारि कय बुद्धि मे जमालेब। सं. तद्भव

अवधारब-क्रि., नीक अधलाह कोनो बस्तुक भवितव्यक हेतु मन कें दृढ़ कय इष्टावत्ति करब। मै.

अवधि-सं., ठेका, सीमा, आरि। सं. तत्सम

अवधी-सं., अवधक भाषा। मै.

अवधूत-विशे., ओ सन्यासी जे अमृत विष दुहू कें समाने बूझैत अछि। नाम रुप सँ उपर उठल। सं. तत्सम

अवनति-सं., नीचाँ खसब, झुकब, अपन स्थिति सँ उतरि आएब। सं. तत्सम

अवरोध-सं., रोक, सभक आवाजाहीक निषेधवाला स्थान। घेराओ। मै.

अवरोह-सं., नीचाँ उतरब, कोनोलय पर संगीतक गति कें नीचाँ दिश आएब। सं. तत्सम

अवलम्ब-सं., आधार, आश्रय, शरण। (हिन्दी—सहारा)। सं. तत्सम

अवश्य-अव्यय, निश्चय। सं. तत्सम

अवशिष्ट-विशे., वाँचल, उगरल, शेष रहल। सं. तत्सम

अवशेष-सं., उगार, वाँचल रहैक भाव। सं. तत्सम

अवस्था-सं., स्थितिक विशेषता, दशा, (उ. तद्भव हालति)। सं. तत्सम

अवसन्न-विशे., नष्ट प्राय स्थिति मे गेल, समाप्त प्राय, मृत्युक निकटवर्ती। सं. तत्सम

अवसर-सं., समय, अनेक व्यग्रताक बीच फाँक काल। सं. तत्सम

अवसि-अव्यय, देखू-"अवश्य'। सं. तत्सम

अवाच-विशे., अवाच्य, नहि बजैक योग्य, अर्थहीन, गारि। सं. तद्भव

अविध-विशे., अविधि, नियम विरुद्ध, विधानक अनुसार नहि कयल गेल। सं. तद्भव

अश्रु-सं., नोर, आँखिक जल। सं. तत्सम

अश्विनी-सं., १. ऐ नामक नक्षत्र विशेष २. घोड़ी। सं. तत्सम

अश्विनी कुमार-सं., वैद्य शास्त्रक देवताक नाम। सं. तत्सम

अंश-सं., भाग, बखरा। हिस्सा। सं. तत्सम

अशक्य-विशे., नै सक होइक योग्य, शक्ति सँ बाहर, असाध्य। सं. तत्सम

अशंक-विशे., शंकारहित, निर्भय, निश्चित। सं. तत्सम

अशबी-विशे., जकर प्राण हड्डें नहि बहराइत होइक, घिघरी कटनिहार स्त्री, अशब सेहो प्रयोग। मै.

अशिनी-विशे., आसिन मासक फसिल । मै.
अशीस-सं., आशिष, आशीर्वाद । सं. तद्भव
अशुचि -विशे., अपवित्र, अशुद्ध अवस्थाक व्यक्ति, पुण्य कार्यक अयोग्य समय स्थान । सं. तत्सम
अशुद्ध-विशे., १. अपवित्र । २. विवाहादि काज मे बिना गुरु शुद्धिक समय । सं. तत्सम
अशुभ-सं., अमंगल । सं. तत्सम
अशेष-विशे., सम्पूर्ण, अन्तहीन । सं. तत्सम
अशोक-सं., १. शोकहीन (विशे.) । २. शोकक अभाव । ३. वृक्ष विशेष । ४. प्रसिद्ध ऐतिहासिक मौर्य्य सम्राट । सं. तत्सम
अशौच-सं., छुतका, अपवित्रता, कोनो शुभक बाधा जन्म-मरणजन्य । सं. तत्सम
अष्टगन्ध-सं., आठ सुगन्धित वस्तु मिलाकय बनल धूप अगरु, गुग्गुलु धूमन, श्रीखण्ड, सरर, मोथा, कन्द कचूर, लोध एहि आठ वस्तुक मिलान सँ बनल धूप । सं. तत्सम
अष्टद्रव्य-विशे., आठो भौतिक धातु सँ बनल वस्तु विशेष । सं. तत्सम
अष्टमी-पूरक संख्या विशेष, पक्षक आठम तिथि । आठ संख्यावाली स्त्री । सं. तत्सम
अष्टावक्र-सं., पौराणिक महाविद्वान् । (विशे. कुत्सा मे) जकर अनेक अंग टेढ हो । सं. तत्सम
अषाढ़-सं., मास विशेष । आषाढ़ । सं. तद्भव
अषाढ़ीलक-विशे., खेती प्रसंगक आषाढ़ेटा मे होमऽ वाला कार्य । मै.
अस्त्र-सं., घातक प्रक्षेप, मारैवाला हथियार । सं. तत्सम
अस्त-सं., विशे., अदृश्य होएब । तिरो भाव । प्रयोग-"अस्तक समय आएल । सूर्य अस्त भेला ।" सं. तत्सम
अस्तविस्त-विशे., अस्तव्यस्त, नैं सम्हरैक द्वारें अत्यन्त विकल । सं. तद्भव
अस्तूरा-सं., केश कटैक अस्त्र, खूर, क्षुरा (सं.) उ. तत्सम
अस्थि-सं., हड्डी, शरीरक सशक्त धातु । सं. तत्सम
अस्मानखोंचा-विशे., (आसमान कें खोचारैक लाक्षणिक) गप्पी, असाध्य काजक गप्प मारनिहार । मै.

अस्यास-सं., आयास सँ उत्पन्न व्याकुलता, दुर्बलताक कारणें अधिक श्रम सँ जागल विकलता । मै.
अस्सी-संख्या, शून्य एकाँइ आठ दहाँइक अंक । मै.
असक-विशे., दुखित, अशक्त । सं. तद्भव
असकताह-विशे., अशक्त जकाँ भेल, अस्वस्थ । मै.
असकताएब-क्रि., कोनो काज मे उत्साहहीन होएब । मै.
असकतियाह-विशे., आसकति कयनिहार । मै.
असकर-विशे., एक मात्र, एकाकी । मै.
असंख्य-विशे., अगणित, संख्या शून्य । सं. तत्सम
असगन्ध-सं., अश्वगन्धा, जड़ी विशेष । मै.
असगनी-सं., डोरी वा बाँस काठक तानिकय बनाओल कपड़ा रखैक स्थान । मै.
असगुन-सं., अमंगलक लच्छन, अशुभक संकेत । मै.
असङ्ग-विशे., अत्यधिक रोग वेगक द्वारें अथवा प्रबल मानसिक आघातक कारणें मनक टूटि गेला सँ बाहरक ज्ञान शून्य । एक प्रकारें मूर्छित । स. तत्सम
असञ्जाति-विशे., असंयत, उपद्रवी, असंयती, स्थिर नहि रहनिहार । प्रयोग-"बकरी जाति बड़ असञ्जाति ।" मै.
असनान-सं., स्नान, नहाएब । प्रयोग-"कामिनि कर असनाने"-विद्यापति । सं. तद्भव
असपताल-सं., दातव्य औषधालय । देशज
असबार-विशे., सवारी (वाहन) पर चढ़निहार वा चढ़ल । अश्ववार । सं. तद्भव
असबाब-सं., विभिन्न प्रकारक वस्तुक ढेरी । उ. तत्सम
असम्भव-सं., असम्भव । सं. तत्सम
असम्भँ-विशे., दुरूह, सोचै सँ बाहर, असम्भव । सं. तद्भव
असम्मति-सं., घृणा, विमुखता, विरक्ति । सं. तत्सम
असमञ्जस-सं., कोनो बात मे मनक आगाँ-पाछाँ करैक स्थिति, संकल्प विकल्प, विरोध । सं. तत्सम
असर्ध-विशे., घिनाओन, अश्रद्ध । सं. तद्भव
असरफी-सं., मुगलकालिक स्वर्ण मुद्रा । उ. तत्सम
असरा-सं., प्रतीक्षा, आस । मै.
असराएब-ना. क्रि., १. आश्रा मे राखब । २. प्रभावित रहब । ३. कोनो द्रव्य कें ठोकि-ठोकि कय पसारब । मै.

असरेस-सं., श्लेषा, एहि नामक नक्षत्र। सं. तद्भव

असल-विशे., यथार्थवस्तु, तात्त्विक। उ. तत्सम

असलक्खन-सं., उचित स्वभाव सँ भिन्न नै चलैवाला स्वभाव। अस्वलक्षण। सं. तद्भव

असलाखसला-सं., अस्तव्यस्त अनेक सामग्री। मै.

असलगित-विशे., मनलग्गू, जाहिपर आस लागल रहए। मै.

असंहे-स., शिथिलता, कोनो काजक प्रवृत्तिक तारतम्य। मै.

असाइ-सं., कोनो दुर्गन्ध वस्तु पर माछीक द्वारा कीटाणु (पीलु) क प्रजनन। मै.

असान-वि., १. सरल। २. मामान्य स्थिति। मै.

असामी-विशे., प्रजा, जनता, अधिकारक लोक। मै.

असार-सं., १. आसार, सम्भावना। (विशे.) २. तत्वरहित। मै.

असारपसार-सं., वस्तु सबक पसारल रहैक प्रक्रिया। मै.

असारी पसारी-विशे., गृहस्थाश्रमक सहयोगी वस्तुक आपूर्ति कयनिहार श्रमजीवी। यथा—कमार, नौआ, कुम्हार आदि। मै.

असावरी-विशे., छिड़िया कय पसारल वस्तु सभ। मै.

असावरी-सं., संगीत शास्त्रक विशेष रागिणी जे दिनक प्रथम पहर मे गाओल जाइत अछि। मै.

असिज्झ-विशे., असिद्ध। सं. तद्भव

असिनहरि-सं., आसिन मासक प्रकृतिक आभास। मै.

असीतर-विशे., धतपत अस्सी वर्षक लोक। मै.

असुआएब-क्रि., सुखाएल वस्तु मे भीतरें भीतर आर्द्रता अयने सक्कत बनि जाएब। मै.

असुआसपड़ब-क्रि., आश्वासन पड़ब। शान्तिक अनुभव सँ सुख होएब। मै.

असुर-सं., श्रमजीवी पौराणिक जाति। सद्विचा। मै.

असुस्त-विशे., रोग सँ आक्रान्त, अस्वस्थ। मै.

असेरा-सं., आध किलोक बाट। मै.

असोआसन-सं., आश्वासन। सं. तद्भव

असोख-विशे., विचारहीन, कर्त्तव्यक ज्ञान शून्य, दयारहित। मै.

असोथगित-विशे., स्थगित, थाकनि भरल, श्रम सँ शिथिल। मै.

असौकर्य्य-सं., कठिनता, अभावक कारण व्यतिक्रम। सं. तत्सम

असौजन-सं., असौजन्य, सद्भावक अभाव कौटुम्बिक व्यवहार भेद, परस्पर सहानुभूतिक ह्रास। सं. तत्सम

असौजनियाँ-विशे., कौटुम्बिक व्यवहार सँ भिन्न रहैवाला। सिद्धान्न भोजन सँ पृथक्। मै.

अहँ !-अव्यय, कोनो बातक निषेध मे वा विरोध मे उच्चरित। पद्य मे "अहाँ" क अर्थ मे प्रयोग। मै.

अहँक्-अव्यय, निषेध मे प्रयोगक शब्द। मै.

अहगर-विशे., पुष्ट रुपक, यथेष्ट, परिपूर्ण। मै.

अहङ्कार-सं., घमण्ड, अपने महत्त्व। सं. तत्सम

अहदपन/अहदीपन-सं., कोनो काज मे प्रवृत्तिक अभाव, काज से देह चोरवैक चेष्टा। मै.

अहदी-विशे., कामचोर, कोनो काज मे उत्साह नै रखैवाला आलसी अकर्मण्य। मै.

अहनटहन वाजब-क्रि., अनुरोध निन्दा आ विरोध भरल उलहन करब तथा दोष प्रकट कय नीच बनाएब। मै.

अहरपहर-अव्यय, बहुत कालक प्रतीक्षा, प्रतीक्षा मे समयक अनलेख परिमाण। मै.

अहरा-सं., भूईं चुलहा, भूमि खोधिकय बनाओल विशाल चुलहा जे भोजक भानस मे काज अवैछ। मै.

अहराबाँटब-क्रि., चिड़ै चुनमुनीक अपन बच्चा कें आहार (भोजन) बँटैक व्यापार। मै.

अहरी-सं., भूमि कें नाली (बाहा) जकाँ कोड़ल चुलहा जाहि पर एक संग अनेक वासन चढाकय भोजन बनै अछि। मै.

अहलदिली-सं., घबराहटि, भय, आशंका, उत्कट हर्षक द्वारें चञ्चलता सँ उठल धड़कन। मै.

अहलाद-सं., स्नेह सम्मान भरल आवेस, आह्लाद। सं. तद्भव

अहलादब-क्रि., स्नेह आ सम्मान सँ आवेस करब। मै.

अहह !-अव्यय, दुख, उत्कर्ष आ प्रशंसा सूचक। मै.

अहा !-अव्यय, आनन्द प्रशंसा सम्वेदाक ध्वनि। मै.

अहाँ-सर्व., सदृश, आदरणीय वा श्रेष्ठ लोकक प्रति सम्बोधन। मै.

अहाङ्-सं., अहङ्कार, गौरव । मै.
अहार-सं., आहार, भोजन, खाद्य सामग्री । सं. तद्भव
अहियाएब-क्रि., मनैमन विचारि अनुमान कय स्थिर करब । मै.
अहिवात-सं., सोहाग, अवैधव्य, पति सुख । मै.
अहिवातक पातिल-सं., विवाह आदि सब शुभ कार्य मे आगू मे सौभाग्यक (शुभक) दीप जराकय पाकल रंगल विशेष रुपक माटिक वासन दूइटा राखल जाइछ । मै.
अहिवाती-विशे., सधवा, सोहागिन । मै.
अहीर-सं., जाति विशेष । पशुधन पर निर्भर जाति । मै.
अहुँछिया काटब-क्रि., प्रतीकार मे असमर्थ रहने विषमताक द्वारें चिन्ता व्यग्रता आ दुख सँ अशान्त होइत रहब । मै.
अहुरियादेब-क्रि., अन्देसा सँ छटपट करब । विवशता आ विकलता सँ व्यग्र आ चञ्चल होएब । मै.
अहोभाग्य-अव्यय, आनन्द आह्लाद मे भाग्यक प्रशंसा । सं. तत्सम

आ

आ-सं., स्वर वर्णक दोसर दीर्घ अक्षर 'आ' कार । मै.
आ-अव्यय, समुच्चयबोधक-आओर, आर, और । मै.
आ-क्रि., अधम पुरुषक लेल ललकारा, अबैक आदेश । मै.
आ-सं., संगीतक आलापक प्रथम ध्वनि । देशज
आः-अव्यय, व्यथा तथा ललकार मे बहराएल शब्द । मै.
आइ-अव्यय, अद्य, वर्त्तमान दिन जे बीतैत हो । मै.
आइकाल्हि-अव्यय, निकटवर्ती भूत भविष्यक संग वर्त्तमान काल बोधक । मै.
आइकाल्हि करब-क्रि., समय खेपब, काल हारब । मै.
आइपाइ करब-क्रि., एम्हर सँ ओम्हर अनेक काज करब । मै.
आइमाइ-विशे., बुढ़ि, प्रतिष्ठित आ गुणी स्त्रीगण । मै.
आउर-अव्यय, सब, आदि आदि, लोकनि । प्रयोग—"हमरा आउर दिश तते बाढ़ि एलै जे सब धान दहा गेलै ।" मै.
आएब-क्रि., अबैक क्रिया, आगमन । मै.
आओँ-सं., विकृत पाचन शक्तिक द्वारें वेदना सहित आएल लेहू पोटा सँ भरल मल । आम मल । मै.
आओ-अव्यय, हर जोतैक काल बरद कें मोड़ लैक हेतु हरवाहक आदेश । मै.
आओंट-विशे., पीड़ित, व्याकुल, आर्त । मै.
आओन-सं., गाड़ीक पहियाक लोहाक सामी, हाल। मै.
आओर-अव्यय, समुच्चयबोधक, आर । मै.
आक्रन्द-सं., जोर जोर सँ कानब । सं. तत्सम
आक्षेप-सं., फूसि वा सत्य आरोप लगाएब । मै.
आक-सं., अर्क पुष्प तथा गाछ । मै.
आँक-सं., अंक, चिह्न, रेखा । मै.
आक्छ-विशे., विरक्त, विकल, विमुख । मै.
आँकड़-सं., पाथर वा भिटकाक सूक्ष्म कुन्नी, दानाक बीच कठोर छोट कण । मै.
आकण्ठ-अव्यय, भरि कण्ठ, भरि गरसों । सं. तत्सम
आँकब-क्रि., अनुमान सँ अङ्कित करब तथा निश्चित करब । मै.
आकर-सं., कोष, भण्डार, उत्पत्ति स्थान । सं. तत्सम
आकरि-विशे., युवावस्था प्राप्त बाछी वा पाड़ी । मै.
आकस्मिक-विशे., अचानक होइवाला । सं. तत्सम
आकांक्षा-सं., इच्छा, अभिलाषा । सं. तत्सम
आकार-सं., १. मुहक ढब, वर्ग, आकृति । २. 'आ' अक्षर । सं. तत्सम
आकाश-सं., आकाश । सं. तत्सम
आकाशवाणी-सं., अनेक मुह सँ उड़ैत अबैवाला गप । सं. तत्सम
आंकी पड़ब-क्रि., छापी पड़ब, अधिकारक चिह्न होएब । मै.
आँकुर-सं., देखू-'अङ्कुर' । मै.
आकुल-विशे., अत्यन्त विकल, घबरायल, आंरत । सं. तत्सम
आँकुस-सं., अँकुसी, नोकवाला अस्त्र, प्राणी कें चेता कय उचित मार्ग पर चलैक निर्देशक । सं. तद्भव
आकृति-सं., वर्ग, ढब, चेहरा (हि.) सं. तत्सम
आखर-सं., अक्षर । सं. तद्भव
आखरि-सं., धीयापूताक अक्षर अभ्यासक पाटी, स्लेट । मै.

आखहि उकटब-क्रि., सिह सँ माटि ढाहब। मै.
आँखि-सं., अक्षि, दर्शनेन्द्रिय, नयन। मै.
आँखि गुड़रब-क्रि., क्रोध, भय एवं निषेधक भाव व्यक्त करैक हेतु विकृत रुपें आँखि पसारब। मै.
आँखि देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) भयभीत करब। अपन महत्त्व जनबैत अभिभूत करब। मै.
आँखिदेब-क्रि., अभिलाषा पूर्वक दृष्टि गड़ाएब। मै.
आँखि पाँखि होएब-क्रि., (लाक्षणिक) शरीर एवं बुद्धिक विकास सँ चालू होएब। मै.
आँखि मिलाएब-क्रि., समान पुरुषार्थीक गुण प्रकाश करब, निर्भीक होएब। मै.
आँखि मे पानि होएब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रतिष्ठा, सम्मान देब। मै.
आँखि मे राखब-क्रि., (लाक्षणिक) मन सँ प्रिय होइक कारणें सतत ध्यान मे राखब। मै.
आँखि लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मोजरदेब, महत्व देब। मै.
आँखि लागब-क्रि., निन्न पड़ब, (लाक्षणिक) अनिष्टक भावना सँ पसिन्न नै करब। मै.
आग्रह-सं., हठ, जिद्द, कोनो बात पर अधिक जोर। सं. तत्सम
आग्रही-विशे., जिद्दी, हठी, एकै बात कें पकड़ने रहैवाला। सं. तत्सम
आगत स्वागत-सं., अतिथि सत्कार। सं. तत्सम
आगन्तुक-विशे., अबैवाला, अबैक सम्भावनावाला, अतिथि। सं. तत्सम
आगम-सं., १. भविष्यक लक्षण, अनुमान द्वारा संभावना, आभास। २. मूलशास्त्र। मै.
आगमदिगम-सं., लक्षण देखि आ सोचि भविष्यक पूर्वाभास करब। मै.
आगर-सं., रौद बसातक सम्मुख, रौद बसातक बाधारहित स्थान। मै.
आगरकय-अव्यय, उचित सँ अधिक परिणाम। मै.
आगरि-विशे., परिपूर्ण, भरलि पूरलि। पु०-आगर। प्रयोग-"जगत विदित वैद्यनाथ सकल गुन आगर हे" नचारी। मै.
आगाँ-अव्यय, सम्मुख, आगू। मै.
आगामी-विशे., भविष्य मे अबैवाला होइवाला। सं. तत्सम
आगार-सं., घर, अक्षय स्थान। सं. तत्सम
आगि-सं., अग्नि। सं. तत्सम
आगि उठाएब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि निर्मूल अपवाद लगाएब। मै.
आगिछय-युग्म सं., आगिक गुणक संग दोषो लागल रहै छै अर्थात् जँ आगि जीवनो दै अछि तँ विनाशो केनिहार थीक। मै.
आगु/आगू-अव्यय, देखू-'आगाँ'। मै.
आगू जनमल गोड़ लगाबय-लोकोक्ति, पाछू भेनिहार वस्तुक आगू भऽ गेने एकर प्रयोग होइछ, वयसें छोट रहनौं सम्बन्धे जेठ भेने गोड़ लगै पड़ै छै। मै.
आगे माइ-अव्यय, आश्चर्य भय आ आनन्दक वेग मे स्त्रीगणक मुह सँ स्वतः बहरायल काकु स्वर। मै.
आगें आगाँ-अव्यय, आगुए आगू क्रियाक प्रवृत्ति। मै.
आघात-सं., चोट, प्रहार, ढेहा। सं. तत्सम
आङ-सं., अङ्ग, शरीर। सं. तद्भव
आङन-सं., अङना, चारु दिश सँ घेरल ओ स्थान जतय स्त्रीगण स्वेच्छा सँ विचरय। मै.
आङनवाली-विशे., आङनक अधिकारिणी, पत्नी। मै.
आङरहब-क्रि., (लाक्षणिक) स्त्रीक गर्भ जमब। मै.
आङलगाएब-क्रि., अंग सँ छुआएब। मै.
आङलागब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन आप्तक आश्रित रहब। मै.
आङसोआङ-सं., दुख वेकल शरीरिक स्वास्थ्यक स्वास्थ्य। मै.
आङी-सं., अङ्गक अनुसार सीयल देहक आवरण। मै.
आङुर-सं., हाथक प्रशाखा अंग अंगुलि। मै.
आच्छन्न-विशे., व्याप्त कयल, छाएल। सं. तत्सम
आँच-सं., पाकक क्रिया मे ज्वालाक तेजी। मै.
आँचब-ना. धा. क्रि., अधिक प्रज्वलित करब। मै.
आचमन-सं., मुह हाथ कें जल सँ शुद्ध करब। सं. तत्सम
आचमनी-सं., आचमन करैक वा करबैक लघुतम भाजन। मै.
आँचर-सं., अञ्चल, अखण्ड वस्त्रक कातक अंश। मै.
आचरण-सं., व्यवहार, चर्या, चालि। सं. तत्सम
आंचलागब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु चिन्ता आ व्यग्रताक तेजी (लाक्षणिक)। मै.

आचार्य-विशे., जकर आचरण (सदाचार आस-ज्ज्ञान) क अनुकरण कयल जाय, जाहि व्यक्ति सँ सर्वाङ्गीण शिक्षा प्राप्त हो, गुरु। सं. तत्सम

आचार-सं., सामाजिक चलनि, व्यवहार। सं. तत्सम

आछन होएब-क्रि., आच्छन्न। १. (लाक्षणिक) प्रलय होएब। २. पसरले रहब। ३. मन घबराएब। मै.

आज्ञा-सं., आदेश, कोनो कर्त्तव्य मे अकाट्य प्रेरणा। सं. तत्सम

आज्ञा लेब-क्रि., आज्ञा प्राप्त करब। विशेष अव-सरक। प्रयोग—विवाहक समय विवाहक प्रक्रिया आरम्भ करैक वर सँ स्वस्ति माङब वा आदेश आनब। मै.

आज-अव्यय, आइ, वर्त्तमान दिन। मै.

आजन्म-अव्यय, जीवन भरि। सं. तत्सम

आँजन-सं., अञ्जन, काजर। स. तद्भव

आँजब-क्रि., आँखि कें आँजन सँ भरब। मै.

आँजब माँजब-संयुक्त क्रि., शरीरक स्वच्छता सौन्दर्यक हेतु विशेष प्रसाधन करब। मै.

आँजी-सं., अंकुश मुद्रा। बालक कें अक्षरारम्भक समय पहिने एही मुद्रा सँ लेखन आरम्भ कयल जाइत अछि। एकर अर्थ थीक जे शिष्य सर्व-प्रथम अपन मन पर अंकुश राखथि अर्थात् शिष्यक मूल वस्तु ध्यान आ धारणा राखि सतत ओ सर्तक रहथि। एही तात्पर्यें शुभकार्यक पत्रक पहिनें ई शुभ सूचक मुद्रा देल जाइत अछि। ई मिथिलाक व्यवहार थीक। मै.

आजु-अव्यय, आइ "हम नहि आजु रहब एहि आङन"। नचारी—विद्यापति। मै.

आजुक-विशे., अजुका, केवल आइक विषय। मै.

आँजुर-सं., दूनु हाथ कें मिलाकय बनाओल पात्र (वासन)। मै.

आञ् !-अव्यय, आश्चर्य, भय विस्मय आ अत्यन्त हर्षें अकस्मात् उच्चरित शब्द। मै.

आँट-सं., अँटैक योग्य स्थान, बीचक अवकाश। मै.

आँट-विशे., आकुल, विकल, विरक्त। मै.

आँट-अव्यय, अवधि, अड्डा, सीमा। मै.

आँटकुआँट-अव्यय, कठिन अवसर अयला पर। सम्भावित आपत्ति काल मे। मै.

आँटा-सं., चिक्कस, गहूम आदि खाद्य पदार्थक पिसान। मै.

आँटी-सं., खढ़ वा अन्न आदिक नाल सहित छोट बोझ। मै.

आटोप-सं., आडम्बर, भड़कताली। सं. तत्सम

आठ-सं., एक अंकक आठम संख्या। मै.

आठम-संख्यापूर्वक सर्वनाम, आठ संख्या मे रहै-वाला। मै.

आँठी-सं., फलक बीच बीज रुप मे रहैवाला कठोर पदार्थ। बीज। मै.

आड्वाल-सं., छोटो काज मे कयल गेल विस्तार। मै.

आड़-सं., १ अड़बैक वस्तु। २. रोकैक लेल सक्कत सामग्री। ३. पर्दा करैक अर्थात् सोझ बारै हेतु देल गेल वस्तु। मै.

आडम्बर-सं., भड़कताली, देखाउटी। आड्वाल लोक देखाओ। मै.

आड़ा-सं., अपन अधिकारक भूमि (खेत मे चारु दिश देल ऊँच आरि)। मै.

आँड़ा-सं., अण्डज जीवक अण्डा, गर्भ। मै.

आड़ी-सं., आड़ीवक पक्षी, कारी रंगक पैघ गर्दनि-वाला वक जकाँ पानिक पक्षी। मै.

आढ्य-विशे., धानेक। सं. तत्सम

आढ्यता-सं., धनिकपनक प्रदर्शन, धनिकपन। सं. तत्सम

आढ़ति-सं., वनीजक वस्तु कें उत्पादक सँ कोनो रुपें छेकि रखैक अर्थात् नोति रखैक प्रक्रिया। मै.

आँण-सं., पुरुष चिह्न, अण्डकोष। मै.

आणी बढ़ब-क्रि., दू अण्डकोष मे एकक पैघ होएब। मै.

आत्मा-सं., चैतन्य, जीव। सं. तत्सम

आत्मीय-विशे., अप्पन लोक, अपनापन वाला। सं. तत्सम

आत्मीयता-सं., अपनापन। सं. तत्सम

आँत-सं., अँतरी, पेटक शिरा समूह। मै.

आँत उतरब-क्रि., (हार्निया) अण्डकोषक रोग। मै.

आततायी-विशे., अन्यायी, असामाजिक काज कय-निहार। मै.

आँतममोरब-क्रि., १. पेटक व्यथा होएब। २. (लाक्षणिक) विवशता सँ प्रतीकार मे असमर्थ रहला सँ अत्यन्त दुःख करब। मै.

आँतर-सं., आन्तर्य्य हरजोतै मे सिराउर सँ बना-ओल एक-एक खण्ड दूरी। सं. तद्भव

आतिख-विशे., कषायरस कनेक तीतक स्वादवाला वस्तु। मै.

आतिथ-सं., आतिथ्य, अतिथिक सत्कार। सं. तद्भव

आँती-सं., अण्डकोष मे अँतरीक उतरैक रोग। मै.

आँती उठब-क्रि., आँती उतरला सँ व्यथाक द्वारें छरपटाइक सन छटपटाएब। (लाक्षणिक)। मै.

आतुर-विशे., कोनो कार्यक व्यग्रता सँ आकुल। सं. तत्सम

आतू-अव्यय, कुकूर कें सोर करैक सम्बोधन। मै.

आद्योपान्त-अव्यय, आदि सँ अन्त धरि। सं. तत्सम

आद-सं., हरदिक कन्द सन कन्दवाला स्वादिष्ट आ औषधीय कन्द। मै.

आदगुड़-मिश्रित सं., गुड़ मे आद मिलाकय परसौ-तीक खाइक औषध। मै.

आदङ्क-सं., आतङ्क। डर सँ अकस्मात् छाती धक-धक करब। देह थरथराएब। सं. तद्भव

आदमी-सं., लोक। दम्पत्ती मे क्यो एक। उ. तत्सम

आदर्श-सं., अयना, अनुकरणीयताक प्रतीक। नमूना। सं. तत्सम

आदर-सं., सत्कार, सम्मान, आवेश पूर्वक प्रतिष्ठा। सं. तत्सम

आदि-अव्यय, विशे., पहिलुक, आरम्भक, प्रथमवाचक। सं. तत्सम

आदी-सं., [स्थान भेदे शब्द भेद] आद। मै.

आदेश-सं., आज्ञा। सं. तत्सम

आध्मान-सं., जोर सँ शब्द, जोर सँ ढेकार, वायु वृद्धि सँ भीतरेंभीतर फूलब। सं. तत्सम

आध-अव्यय, कोनो वस्तुक दू भागक एक भाग अर्ध। सं. तद्भव

आधा-अव्यय, कोनो एक वस्तुक समान रुपक दू अंशक एक अंश। मै.

आधा आधी-अव्यय, कोनो वस्तुक समान रुपें दू भागक विभाजन। मै.

आधार-सं., १. भोजन, कोनो वस्तुक आश्रय अर्थात् अधिकरण। सं. तत्सम

आधि-सं., मनक अकथनीय पीड़ा, नैं मेटैवाला दुख। सं. तत्सम

आधिक-सं., अधिकता, आधिक्य। सं. तद्भव

आधी-सं., शतरञ्ज खेलक आधा जीतैक प्रक्रिया। मै.

आधी-विशे., कोनो वस्तु मे आधाक भागी। मै.

आधीन-विशे., अधीन, वश मे रहनिहार। मै.

आधेय-विशे., कोनो ठाम आश्रित रहैवाला। सं. तत्सम

आन्दोलन-सं., क्रान्ति, हल्ला मचाएब, व्यापक रुपें उथल-पुथल कराएब। सं. तत्सम

आन्हर-विशे., आँखि रहितौं देखैक शक्ति सँ हीन। दर्शनेन्द्रिय शून्य। मै.

आन्ही-सं., बिहारि, सुखायल महावायु, आन्धी। हि. तद्भव

आन-सर्व., दोसर, अन्य, भिन्न व्यक्ति। सं. तद्भव

आनन्द-सं., प्रसन्नता सुखद आन्तरिक सम्बेदन। (विशे.) प्रसन्न, हर्षित। प्रयोग—"लोकवेद आनन्द अछि किने।" सं. तत्सम

आनन-सं., मुह। सं. तत्सम

आनब-क्रि., लाएब, ल' आएब। मै.

आना-सं., भारत मे पहिने एक रुपैया मे १६ आना आ एक आना मे चारि पाइ होइत छल। मै.

आनाकानी-सं., अस्वीकारक भावनाक अभिव्यक्ति करैक चेष्टा। अरुचिक द्वारें कोनो विशेष विषय सँ लागि नै रखैक मुद्रा। मै.

आनि-सं., आत्म गौरव, स्वाभिमानक प्रकृति। मै.

आनि अपगरानि-सं., युग्म शब्द, आत्म गौरव एवं आत्महीनताक भय। नीचताक बोध। मै.

आनी मानी-अव्यय, बात कें अर्थाएब। बात कें चेथारब। मै.

आनुपूर्वी-विशे., प्रतिरुपी, प्रतिमूर्ति, रुप मे कनेको भेद नहि करैवाला। सं. तत्सम

आप्त-विशे., अपनलोक, अङ्गित, अति निकटक सम्बन्धी। सं. तत्सम

आपकय-अव्यय, स्वतः स्वाभाविक रुपें। प्रयोग—"हमर मित्र दुर्बल आपकय आ बुढ़ आपकय तैं कोनहुना काल काटि रहल छथि।" मै.

आपकता-सं., अपनैती, परस्पर हितक चिन्तन। मै.

आपट उठाएब-क्रि., कोनो काजक अवसर पर गम्भीर समस्या ठाढ़ करब। मै.

आपत्ति-सं., दोष उठाएब संकट जगाएब। सं. तत्सम

आपद-सं., विपत्ति, कष्ट, दुःख। सं. तत्सम

आप मौजी-सं., स्वच्छन्दता, इच्छानुसार चलैक प्रवृत्ति। मै.

आपर पर-अव्यय, आधुनिक युग मे, अर्वाचीन समय पर, निकट भूतकाल मे। मै.

आपरस-सं., रोग विशेष, देखू-'अपरस'। मै.

आपरुपी-विशे., स्वयम्भू, अपनै भेनिहार। मै.

आपस्वार्थी-विशे., अपनेटा प्रयोजन सिद्ध केनिहार। मै.

आपस-सं., घुरवैक भाव, घुमिकय चल अवैक भाव, वापस। उ. तद्भव

आपस मे-अव्यय, परस्पर, एक दोसरक प्रति। मै.

आपसी-सं., घुरती, घुरौती, पारस्परिक। मै.

आपाधापी-सं., दौड़बरहा, दौड़धूप। हि. तत्सम

आफद-सं., संकट, उपद्रव, विघटन, विपत्ति। उ. तत्सम

आफदी-विशे., संकट अननिहार, झमेल बेसाह-निहार। मै.

आफन तोड़ब-क्रि., बन्धन तोड़िकय बहराइक प्रयास करब। मै.

आब-अव्यय, एखन, वर्त्तमान आ भविष्यत मे। मै.

आबनूस-सं., फल विशेष। अं. तत्सम

आबरजात-सं., आएब, जाएब। मै.

आबल-सं., आबल्य, निर्बलता। सं. तद्भव

आबह-क्रि., १. नीचता सँ विरोधीक ललकार। २. अपना सँ छोटक प्रति अवैक आदेश। मै.

आबा-सं., कुम्हारक माटिक वस्तु पकवैक गोल भट्ठा। आपाक। सं. तद्भव

आबाजाही-सं., अनिवार्य रुपें अवै जाइक व्यवहार। मै.

आबाद-विशे., कृषि भरल खेत, उपयोगी। मै.

आबालवृद्ध-अव्यय, बच्चा सँ बुढ़ि धरि सब लोक। सं. तत्सम

आभ्युदयिक-विशे., कर्म विशेष, कोनो शुभ कार्य करै सँ पहिने प्रातः काल बिना पिण्डदानक पितरक कर्म। सं. तत्सम

आभड़खुभड़-विशे., ऊँच-नीच, कत्तौ गहींर आ कत्तौ उपर उठल ढेप चेपवाला भूमि। मै.

आभा-सं., छवि, कान्ति, लावण्य। सं. तत्सम

आभास-सं., झलकी, अंश मात्र, लक्षण सँ लक्षित होएब। सं. तत्सम

आभूषण-सं., गहना, सौन्दर्यबर्द्धक। सं. तत्सम

आम्रेड़न-सं., एकै बात कें बारम्बार घोषैत रहब। सं. तत्सम

आम-सं., भारतक राष्ट्रिय फल, आम। मै.

आमद-सं. अर्थक आगम, आय। उ. तत्सम

आमदनी-सं., निश्चित आर्थिक आयक स्रोत। उ. तत्सम

आमय-सं., रोग, व्याधि, अधिकता। प्रयोग—"बरिसाति मे चारु दिश जलामय रहैत छैक।" सं. तत्सम

आमला-सं., धात्री फल, आमलक। सं. तद्भव

आमवात-सं., शरीरक जोड़ सँ शाखा धरि पीड़ा देवाला घात रोग। सं. तत्सम

आमा-सं., अम्मा, माता, अम्बर। सं. तद्भव

आमाशय-सं., पेट मे गेल अन्नक कोष्ठ, पित्तक परिधि। सं. तत्सम

आमिल-सं., स्वादक हेतु तीमन मे देवाक अम्मत वस्तु, अजोह आमक सुखायल खण्ड। मै.

आमिष-सं., माछ मास सँ सम्बन्ध रखैवाला भोज्य पदार्थ। सं. तत्सम

आमूल-अव्यय, जड़ि सँ उपर धरि। सं. तत्सम

आमेख-सं., ईर्ष्या सँ भरल भितराएल क्रोध, अमर्ष। सं. तद्भव

आमोद करब-क्रि., अत्यन्त सुगन्धि सँ चारुभर सुवासित करब। मै.

आमोद प्रमोद-सं., खेल धूप, मनोरञ्जनक आनन्द। सं.तत्सम

आय-सं., आमदनी, धनागमक स्रोत। सं. तत्सम

आयत-विशे., नमहर कम चाकर वेशी अथवा नाम पैघ चाकर थोड़ रेखा। सं. तत्सम

आयत-क्रि., अन्य पुरुषक लेल भविष्यत्‌कालक हेतु अवैक क्रिया। आएत। मै.

आयत-सं., घर, स्थान, गोष्ठी अर्थात् अधिक लोकक एकट्ठा होइक स्थान। सं. तत्सम

आयतन-सं., देवता अथवा पवित्र कर्मक घर मन्दिर। सं. तत्सम

आयाम-सं., प्रसार, विस्तार, फैलाओ। सं. तत्सम

आयास-सं., अभ्यास, यत्न, उपाय, जोर लगाएब। सं. तत्सम

आयु-सं., उमेर, और्दा, वयस। सं. तद्भव
आयुर्दा-सं., जीवन, वयसक गति। मै.
आयुर्वेद-सं., वैद्यक शास्त्र, औषध विज्ञान। सं. तत्सम
आयुष्मान्-विशे., दीर्घजीवी। सं. तत्सम
आर्त-विशे., विकल, अधलाह मनोदशा भरल। सं. तत्सम
आर्तचार्त-सं., स्थिति सँ वेशी खर्च, व्यवहारक आडम्बर मे उचित सँ वेशी अपव्यय। मै
आर्तव-सं., स्त्रीक मासिक धर्म, रजःस्राव। सं. तत्सम
आर्ति-सं., व्याकुलता, पीड़ा, कोनो वस्तुक लेल मनक चरम आग्रह। सं. तत्सम
आर्द्र-विशे., सरस, सिमसिम, भीजल, गील। सं. तत्सम
आर्द्रा-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम
आर्द्रा करब-क्रि., आर्द्रा नक्षत्रक विशेष कर्म करब। मै.
आर-अव्यय, समुच्चयबोधक। आओर (हि.) और। मै.
आर-सं., चक्रक धार, घातक कोर। मै.
आरक्त-विशे., सम्पूर्ण लाल। आल रंग आलता। सं. तत्सम
आरत-विशे., देखू-'आर्त'। सं. तद्भव
आरत-सं., गोसाउनि (गृह देवता) क सीरा दैक हेतु तूरक बनाओल लाल रंगक गोल पत्र। मै.
आरतकपात-सं., विशेष पर्व मे सूर्य आदि देवता वा गृह देवताक पूजा मे उपयोगी पैंघ आ छोट व्यासक तूरक बनाओल गोल पत्र। मै.
आरति-सं., चिन्ता भरल व्यग्रता, आर्ति। सं. तद्भव
आरती-सं., देवता आगू दीपक परिक्रमा करब, विधि—तीन बेर पैर पर आ एक बेर सम्पूर्ण मूर्ति कें गोल परिधि मे अनंत दीप घुमाएब। आरातिक। मै.
आरपार होएब-क्रि., ऐ पार सँ ओहि पार धरि चल जाएब। मै.
आरब-विशे., आम अर्थात् अग्नि सँ अछूत अन्न। बिनु उसिनल। मै.

आरबल-सं., भाग्यक जोर, नीक भावीक परिणाम। मै.
आरम्भ-सं., कोनो काजक प्रति सक्रियता, कोनो क्रियाक प्रवृत्ति। सं. तत्सम
आरसि-सं., काँच माटिक बनाओल आगि रखैक चाकर पात्र। बोरैस जकाँ। मै.
आरसी-सं., कोनो कारणें कार्यक गति मे शिथिलता। आलस। मै.
आरा-सं., काठ चीरैक काँट सन धारवाला अस्त्र। मै.
आराध्य-विशे., आराधनाक इष्ट देवता वा व्यक्ति। सं. तत्सम
आराधब-क्रि., कोनो क्रियाक आरम्भ करब। ठानब। मै.
आराम-सं., अंग आ मनक विश्राम। रोगक वेग मे शिथिलता। मै.
आरि-सं., ढाठ, बान्ह, सीमा, विभाजन चिह्न। मै.
आरी-सं., काठ चीरैक काँटसन धारवाला छोट अस्त्र। मै.
आरु-सं., फर, पसरैवाली लत्ती विशेषक मोट लम्बाकार कन्द जकर तरकारी होइत अछि। खम्भारु। मै.
आरू-अव्यय, समस्तता बोधक, आदि आदि, लोकनि सब। प्रयोग-ऐ बेरी हमरा आरू के खूब धान उपजलैहे। मै.
आरोग्य-सं., रोग मुक्ति, शारीरिक व्याधिक दूर होयब। सं. तत्सम
आरोप-सं., ककरो दोषक विश्वास, लाञ्छन। सं. तत्सम
आरौतोरी भला के-अव्यय, भय, विस्मय आ आनन्द सँ स्वतः बहराएल शब्द। मै.
आल-सं., लाल रंग। मै.
आलन-सं., गृह आदि निर्माण मे लागि वा लासि धरवैवाला साधन, जेना टाट बन्हैं मे खढ़ माटि लेवै मे भूसा। मै.
आलमारी-सं., अनेक उपर नीचाँ खटालवाला पट्टाबन्न करैवाला वस्तु रखैक ठाढ़ सन्दुकचा। अं. तद्भव
आलय-सं., घरक परिवेश। घरक परिसरक भूमि। सं. तत्सम

आलस्य/आलस-सं., मनक शिथिलता, उत्साह-हीनता। सं. तत्सम/सं. तद्भव

आला-सं., शरीरक भीतरक शब्दक परीक्षा हेतु डाक्टरी यन्त्र। देशज

आलाप-सं., १. शास्त्रीय संगीत मे स्वर के सम पर अनै सँ पहिने स्वरक स्थिर प्रस्तार। २. परस्पर गप्प। सं. तत्सम

आलाप विलाप सं., ककरो प्रति आवेश आ सहानुभूतिक देखाउटिक गप। मै.

आलि-सं., समूह, पंक्ति। सं. तत्सम

आली-विशे., सखी, बहिनपा। सं. तत्सम

आलू-सं., प्रसिद्ध कन्दवाला व्यन्जन। मै.

आलेख-सं., कोनो विषयक संक्षिप्त विवेचना। सं. तत्सम

आलेप-सं., कोनो वस्तु कें सम्पूर्ण रुपें लेपैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

आलेरंग-सं., देखू-"आल"। मै.

आलैं-सं., १. आगि जरैत रहैवाला स्थान। धुनी (हि.) अलाव। उ. तद्भव

आलैं-सं., देखू-"आलय"। सं. तद्भव

आलोक-सं., प्रकाश, इजोत। सं. तत्सम

आलोड़न-सं., जल आदि कें घोंकब। बातक विषय मे अर्थाएब। अन्य वस्तु हेतु व्यतिक्रम। सं. तत्सम

आवन्टन-सं., लोक सब मे बाँटब। सं. तत्सम

आवरण-सं., झाँपनि, छाजनि, ओढ़ना। सं. तत्सम

आवश्यक-अव्यय, जरुरी, अनिवार्यता। सं. तत्सम

आवास-सं., कोनो अवधि धरि रहैक स्थान। सं.तत्सम

आवासीय-विशे., कोनो विशेष क्रियाक आवधि पर्यन्त रहनिहार। सं. तत्सम

आवाहन-सं., शब्द वा मन्त्र सँ ककरो अवैक आग्रहक प्रक्रिया। सं. तत्सम

आवृत्ति-सं., एके बात कें बारम्बार दोहराएब। स्वाध्याय। सं. तत्सम

आवेश-सं., मन मे हठात् भावनाक तरंग। सं. तत्सम

आवेस-सं., हृदह सँ बहराएल विशुद्ध स्नेह व्यवहार। मै.

आश्चर्य-अव्यय, छगुन्ता, एक प्रकारक चित्तक विस्तार जे अलौकिक अप्रत्याशित दर्शन सँ जगैत अछि।(विशे.) अद्भुत वा अजगुत। (सं.) विस्मय। देशज

आश्रम-सं., जाति। (मै.) रहैक स्थान (सं. तत्सम) भारतीय जीवन पद्धतिक अनुसार मानवक अवस्था, कर्म एवम् विचारक गुणें चारिआश्रम होइत अछि। ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वाणप्रस्थ आ सन्यास। कुमारावस्था मे शिक्षालैक अवस्था ब्रह्मचर्य, युवावस्था मे लोकवेदक उपयोगी कर्म संग्रहक प्रवृत्ति गृहस्थाश्रम, अगिला पीढ़ी कें अर्धवृद्धावस्था भेला पर गृहस्थीक भार दयके संसार सँ लागि हटवैक अभ्यास वाणप्रस्थ आर पूर्ण वृद्धावस्था मे वासना सँ मुक्त भय सम्पूर्ण रुपें अपना कें ईश्वर मे लय करैक रीति सन्यास आश्रम थीक। सं. तत्सम

आश्रय-सं., जतय निर्भर रहल जा सकैत हो। सं. तत्सम

आश्वासन-सं., बोल भरोस, मनक विकलता मे धैर्य धरवैक वाचनिक चेष्टा। सं. तत्सम

आश्विन-सं., मास विशेष। सं. तत्सम

आशय-सं., आन्तरिक भावना। सं. तत्सम

आशा-सं., भविष्यक हेतु नीक सम्भावना। सं. तत्सम

आशालुब्धी-सं., भविष्यक हेतु सिद्धिक लोभें व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा। मै.

आशिन-सं., आश्विन मास। सं. तत्सम

आशीर्वाद/आशीष-सं., शुभकामना, नीकक इच्छा प्रकट करब। सं. तत्सम

आषाढ़-सं., मास विशेष। सं. तत्सम

आस्तिक-विशे., अव्यवक्त ईश्वर पर विश्वास कयनिहार। सं. तत्सम

आस्तीक-सं., नाग वंशीय पौराणिक ऋषि। सं. तत्सम

आस्ते-अव्यय, नहूँ नहूँ, धीरें-धीरें। मै.

आस्था-सं., १. विश्वास पूर्वक श्रद्धा। २. सेवा परिचर्या मे आदर बुद्धि। ३. सम्पत्ति। सं. तत्सम

आस्थापात-विशे., आस्थाक पात्र अर्थात् सम्पत्तिवाला। मै.

आस-सं., आशा। सं. तद्भव

आस-सं., झुलबैंक हेतु साहब, संचाल करब। गति। मचकीक दुहुदिश सँ धक्का देब। आस कहबै अछि। मै.

आसक्त-विशे., कोनो विषय मे निमग्न रहनिहार। सं. तत्सम

आसक्ति-सं., सांसारिक विषय वासना मे निमग्न रहैक क्रिया। सं. तत्सम

आसकति-सं., कोनो काज मे आलसक द्वारें शिथिलता। मै.

आसकती-विशे., कोनो काज मे उत्साहक आभावें हटल रहैक भावना रखनिहार। मै.

आसकूर-अव्यय, दूर, कनेक हटिकय, फुटापन। मै.

आसङ्ग-सं., कथू मे तृष्णाक संग तल्लीनता। सं. तत्सम

आसन/आसनी-सं., वैसैक आधार। सं. तत्सम

आसपास-सं., नेन्ना भुटकाक खेल विशेष। (विशे.) लगीच, लगक स्थान। मै.

आसमर्द-सं., अनघोल। अनेक बाजन आ बहुत लोकक उच्च स्वरें ध्वनि। मै.

आसरा-सं., आसावाटी, प्रतीक्षा, भरोस। मै.

आसर्व-सं., सिद्ध कयल पेय औषध, मद्य। सं. तत्सम

आसावाटी-सं., उत्कण्ठा आ आतुरता सँ प्रतीक्षा। मै.

आसासोंटा-सं., बन्धित श्रमिकक द्वारा सामन्तक आडम्बर हेतु उगहल जाइत विभिन्न सुसज्जित दण्ड छत्र। मै.

आसीन-विशे., बैसल, आरूढ़। सं. तत्सम

आह !-अव्यय, १. वीरक ललकारा। २ व्यथाक शब्द। ३. शोक भय हर्षक स्वतः उच्चरित शब्द। मै.

आह-सं., रौदक कनेको अंशक ताप। प्रयोग-"मरुआ एकँ आह मे सुखा जाइत छँ"। मै.

आहटि-सं., १. सूक्ष्म आ बड़ कम ध्वनि। २. वातावरणक द्वारा ज्ञान। मै.

आहत-विशे., घालि, चोट खायल। सं. तत्सम

आहर-सं., जल संचयक स्थान, जलाशय। मै.

आहल-सं., काटल धान आदिक सस्यक चारि मुट्ठीक समूह जे एक हाथें सम्हारल जाइत अछि। वस्तुतः काटल सस्यक चारि मुट्ठी एक आहल होइछ, चारि आहल एक पाँज आ चारि पाँजक एक बोझ होइछ। मै.

आहा !-अव्यय, पीड़ा, कृपा, प्रसन्नता आ प्रशंसा-सूचक। मै.

आहार-सं., भोजन। भूखक संग खाएब। सं. तत्सम

आहि-अव्यय, व्यथा, आ पीड़ाक असहता सँ कुहरब। मै.

आहि-सं., लोकक उत्पीड़न सँ उत्पन्न पाप। मै.

आहि आएब-क्रि., पश्चात्ताप सँ दुःख होएब। ग्लानि भरल दुष्कर्मक पश्चात्ताप। मै.

आहिगम्भिकय-क्रि., आश्रय, आगू पाछू सोचि, नीक अधलाह विचारि। मै.

आहिरे-अव्यय, निषेधात्मक बुझबैक साकांक्षताक शब्द। मै.

आहि रे वा-अव्यय, निषेधक सम्बोधन। मै.

आही-सं., कम तापवाला रौद। मै.

आहुर काटब -क्रि., विवशता, कोनो क्रिया कें करैक असमर्थताक द्वारें भीतरैं भीतर उद्विग्न होएब। मै.

आहे माहे-अव्यय, निष्प्रयोजनक गप, उलहन उपदरयुक्त नवपुरान बात। मै.

इ

इ-सं., ह्रस्व इकारक स्वर वर्ण। मै.

इः-अव्यय, निषेधक काकु स्वर। मै.

इआर-विशे., १. एक पुरुषिक घास। २. एक संख्या मे भेनिहारि। ३. एकेटा सन्तानवाली स्त्री। मै.

इङ्गित-सं., इसारा, अंगक विभिन्न चेष्टा सँ विशेष प्रकारक अर्थक प्रकाशन। मै.

इच्छा-सं., मनोनुकूल वस्तुक चाह, अभिलाष। सं. तत्सम

इच्छुक-विशे., इच्छा रखनिहार। सं. तत्सम

इचना-सं., माछ विशेष। मै.

इछाइन-सं., माछक दुर्गन्ध। मै.

इछँनीवच-सं., औषध विशेष। मै.

इज्जड़-सं., वनस्पति विशेष। मै.

इजमलिया-सं., केवाड़क लोहाक छड़। मै.

इजोत-सं., ज्योति, प्रकाश। मै.

इजोर-सं., आलोक, प्रकाश। प्रयोग-"एकहि पक्ष इजोर"–विद्यापति। मै.

इजोरिया-विशे., चन्द्रमाक प्रकाशवाली राति। मै.

इठलाएब-क्रि., गौंरवें ऐंठैत रहब। घमण्ड सँ उन्मत्त जकाँ आचरण करब। मै.

इड़हर-सं., अन्न सँ बनल व्यञ्जनक नाम। प्रकार-उड़ीदक दोखड़ा बेसन कें कठगर कऽ कऽ सानि कें नाम नाम मुठरा बनाओल जाइत अछि तकरा उसिनिकय ठंढा भेला पर पातर चक्का काटि तेल मे तरल जाइछ। पेआउजि छोड़ि मांसक सब कटुक एवं प्रक्रिया सँ रान्हल गेला पर उत्तम व्यञ्जन होइत अछि। मै.

इड़ा-सं., योग क्रियाक प्रथम नाड़ी। सं. तत्सम

इत्तर -विशे., जकरा कोनो कर्म करैक धरानि नै रहैक एहन नीच लोक। मै.

इतराएब-नाम धातु क्रि., अपन सुख समृद्धिक भदे उच्छृंखल जकाँ करब। नीचताक पराकाष्ठा देखाएब। मै.

इतस्तत करब-क्रि.,१. एम्हर ओम्हर घूमल करब। २. कोनो बात मे आगाँ पाछाँ करैत रहब अर्थात् हँ नै मे निश्चिय नै करब। मै.

इति-अव्यय, १. ई (प्रत्यक्ष निर्देश)। २. कथुक समाप्तिक संकेत। स. तत्सम

इतिहास-सं., देश विदेशक विशेष व्यक्तिक क्रमबद्ध काल एवं स्थितिक यथार्थ वर्णन। सं. तत्सम

इन्द्र-सं., १. देवताक राजा। २. स्वामी। सं. तत्सम

इन्द्रकमल-सं., वनस्पतिक फूल विशेष। मै.

इन्द्रजाल-सं., लोक कें अन्हर जाली दऽ कऽ भ्रम उत्पादन करब अर्थात् जादू टोनाक प्रदर्शन। सं. तत्सम

इन्द्रजीत-सं., मेघनाद। इन्द्रो कें जीतैवाला। सं. तत्सम

इन्द्रदारु-सं., वनस्पति विशेष। मै.

इन्द्रधनुष-सं., मेघ मे धनुषाकार उगल भिन्न-भिन्न रंगक वृत्त रेखा। सं. तत्सम

इन्द्रनील-सं., मणि विशेष। सं. तत्सम

इन्द्रिय-सं., शरीरक ओ सब अंग जकरा सँ लोक भौतिक ज्ञान आ क्रिया करैत अछि। विशेष-इन्द्रिय दशटा होइत अछि ज्ञानेन्द्रिय ५ एवं कर्मेन्द्रिय ५। आँखि, कान, नाम, जिह्वा एवं त्वचा एहि पाँचो सँ लोक दर्शन, श्रवण, घ्राण (सुंघब) स्वाद लेब आ स्पर्श करब ज्ञानेन्द्रियक काज थीक। ए सब इन्द्रिय द्वारा बुद्धि मन कें बाहरी ज्ञान दै अछि। मन ओकर मनन कय हृदय कें दै अछि। हृदय संवेदन कय अन्तःकरण कें दऽदै अछि। ई सब प्रक्रिया ततेक सूक्ष्म समय मे होइत छैक जे लक्षित नै भऽ सकैत छैक। पाँच ज्ञानेन्द्रियक अतिरिक्त ५ टा कर्मेन्द्रिय होइत अछि—हाथ, पैर, मुह, मल मार्ग आ मूत्र मार्ग। ई पाँचो इन्द्रिय मनक आज्ञा तथा बुद्धिक प्रेरणा सँ सक्रिय होइत अछि। ई दशोटा इन्द्रिय मानव मात्रै कें सजग रहैत अछि। स. तत्सम

इन्द्री-सं., पुरुष चिह्न वा। स्त्री चिह्न मात्र। मै.

इनरजौ-सं., जौक आकारक विशेष अन्न। मै.

इनहोर-विशे., तप्पत कयल जल। मै.

इनाम-सं., पुरस्कार। उ. तत्सम

इनार-सं., कूप, कुइआँ, छोट पेय जलाशय। मै.

इयै !-अव्यय, आदरक सम्बोधन। मै.

इर्याविर्ता-सं., अपने सन व्यर्थ वा सार्थक काज करैक प्रक्रिया। मै.

इरदप-सं., फूसि प्रभावक दाबीक रोआव। मै.

इराक-सं., देश विशेष। देशज

इरोत-सं., १. बाहर सँ आएल प्रकाश। २. अढ़ ३. सोझ बारैक हेतु बीचक व्यवधान। मै.

इलची-सं., चीनक राष्ट्रिय फल (लीची)। मै.

इलमलिया-विशे., काज कें शीघ्र समाप्त करैले छटपट केनिहार। केवाड़क लोहक छड़। मै.

इशारा-सं., अंगक चेष्टा आ बातक ध्वनि सँ विशेष ज्ञान देब। उ. तत्सम

इष्ट-विशे., आप्त, अभिलषित। सं. तत्सम

इष्टदेवता-सं., जाहि मन्त्रक दीक्षा होएए तकर मुख्य देवता अर्थात् व्यक्तिगत आराध्य शक्ति। सं. तत्सम

इष्टापत्ति-सं., नीक अधलाह सभक सम्भावनीक अवधारण। संकट कें उठाइयै कें प्रवृत्ति। सं. तत्सम

इस्स-अव्यय, पीड़ा, विरोध, आश्चर्य आ आनन्दक ध्वनि। मै.

इसखी-विशे., वेश परिवेश मे विलास विनोदक अतिप्रिय। उ. तद्भव

इसपात-सं., शुद्ध एवं ठोस लोह। देशज

इसफगोल-सं., औषध रुपक पदार्थ जे पुरान आओंक रोग मे प्रयोग होइछ। मै.

इसरगद-सं., सर्पगन्धा जड़ी। जकर प्रयोग सँ साँपक विष मरैछ। मै.

इसलाम-सं., मुसलमानक व्यापक धर्म। उ. तद्भव

ई

ई-सं., इकारक दीर्घ स्वर, ईकार। मै.
(तालु स्थानीय आभ्यन्तर प्रयत्न) मै.

ई-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक अर्थात् वक्ताक अत्यन्त लगक वस्तुक प्रति निश्चय वाचक। मै.

ई:-अव्यय, तर्जन रुपें क्रोध, विरोध आ निषेध सूचक शब्द। मै.

ईंटा-सं., इष्टका, पजेबा। कोठा बनबैक उपादान। मै.

ईर्ष्या-सं., डाह, ककरो नीक नै सहन करैक भाव। सं. तत्सम

ईरान-सं., अरब उपमहाद्वीपक एक मुसलीम देश। देशज

ईश्वर-सं., सर्वशक्तिमान्। (विशे.) समर्थ। स्त्री० ईश्वरी। सं. तत्सम

ईशानकोन-सं., पूब आ उत्तर दिशाक बीचवाला कोन। सं. तद्भव

ईशाई-सं., पाश्चात्य देशक विशेष धर्म। (विशे.) एहि धर्म कें मानैवाला। देशज

ईल्-अव्यय, पीड़ा एवं आनन्दानुभूतिक ध्वनि। मै.

ईह-अव्यय, तर्जनात्मक ध्वनि। मै.

उ

उ-सं., ओठक स्थानवाला बाह्य प्रयत्नक ह्रस्व स्वर वर्ण उकार। मै.

उँ!-अव्यय, टोकला पर अपन अस्तिक आ साकांक्षताक परिचायक। मै.

उँ:!-अव्यय, निषेध आ विरोधक स्वर। मै.

उइतउइत करब-क्रि., बयो मानय वा नै मानय अनेर अपनें कोनो बात आ काज मे अपनत्व आ हुलासक द्वारें घरती पर पैर नहि रोपब। मै.

उक्का उक्की-विशे., उल्का भ्रमण। दीपावलीक राति। जकरा ऊक फेरै सँ सम्बन्ध छैक। मै.

उक्खरि-सं., कूटैक हेतु बनाओल मोट काठक एक कोर मे गहींर पात्र आ लोहाक यन्त्र। मै.

उक्ति-सं., कथन, वचन, विचार कहब। सं. तत्सम

उकछाओन-विशे., मन उचटऽवैवाला काज। मै.

उकटन-सं., देहक मैल भारैले त्वचा कोमल बनवैले प्रयोग-अनेक पदार्थक बुकनी मिलाओल तेल। मै.

उकटब-क्रि., जमल वस्तु कें फोड़िकय ढील करब। मै

उकटाएब-प्रे. क्रि., जमल वस्तु कें कोड़वाकय उपर नीचाँ करब। मै.

उकटापैंची-सं., दबल, बिसरल, छिपल भीतरक आक्रोश एक दोसरा पर भारब। मै.

उकटाफेरी-सं., उपटि आ उजरिकय अव्यवस्थित रहैक स्थिति। मै.

उकटावास-सं., उखड़ि-उखड़ि बसैक क्रम। अव्यवस्थित रुपें जमब। मै.

उकटार-सं., सामूहिक रुपक उकटैक क्रम, कोड़िकय अव्यवस्थित करब। मै.

उकठ-सं., दोसरा कें तामस जगवैक उपद्रव। अरुचिकर क्रिया। मै.

उकठकाट-सं., आपत्तिजनक काज जाहि मे कनेके चूक भेला सँ संकटक सम्भावना रहए। मै.

उकठाह-विशे., आपत्तिदायक, उपद्रावक, कठिनगर। मै.

उकठीभंगठी-सं., मुख्य काज सम्पन्न करै सँ पहिने ओकर संबन्धक अनेक छोट-छोट सम्हारब। जेना-"घर छारै सँ पहिने टूटल कोड़ोबाती आ बन्हन कें ठीक करब।" मै.

उठाठी-विशे., उकठ करैवाला। मै.

उकड़ू-सं., आपत्तिजनक ढङ्ग, कठिन स्थिति। मै.

उकलन-सं., जड़ि सँ समाप्त होइक रुप। मै.

उकनब-क्रि., जड़ि मूल सँ समाप्त होएब। मै.

उकसपाकस-सं., अङ्गक व्यर्थ चालन सँ अस्थिरताक प्रकाश। मै.

उकसाएब-क्रि., उत्प्रेरित करब, उत्तेजना भरब। मै.

उकसुक करब-क्रि., क्रियाक (चेष्टाक) हेतु उत्कंठित होएब। उत्प्रेरित रहब। मै.

उकहब-क्रि., १. फूसि बातक आरोप करब। २. काठक शक्तिहीन होएब। ३. ऊक देखाकय हिंसक पशु कें खेहारब। मै.

उकाठी-विशे., १. उकठ (उपद्रव) कयनिहार। २. मृतकक मुह मे आगि देलापर फेंकल ऊक। मै.

उकापतङ्ग-सं., १. आकाश मे उत्कापात। २. (लाक्षणिक विशेषण) एकै क्षन मे सगरे अनुचित घटना एवं अप्रत्याशित प्रचार कय देनिहार। मै.

उकारी-सं., पेंच बाँस मे बान्हल ऊक। मै.

उकसी-सं., कफ रोग सँ उत्पन्न खोंखी, कास। मै.

उकित-सं., उक्ति (लाक्षणिक) बुद्धि। प्रयोग-"इ: ई हमरा उकित बुझवै छथि।" मै.

उकूबा-सं., अनेर दोषारोपण कय लोक मे प्रचार द्वारा दुर्नामी बनबैक चेष्टा। मै.

उकौर-सं., देखू-"उकारी"। मै.

उखड़ब-क्रि., १. भाव मे विचलित होएब, गरिमा सँ खसि पड़ब। २. धरती सँ सम्बन्ध छूटब। मै.

उखड़ा लागब-क्रि.,धान आदि सस्य मे लागल रोग विशेष। जकरा लगला सँ अधिक गाछ सुखा जाइछ। मै.

उखड़ाह-विशे., १. कोनो बात पर लगले उत्तेजित भेनिहार। २. धरती सँ अलग होइ मे अत्यन्त सरल। मै.

उखड़ौड़-सं., उक्खरि सँ छिलकल चूरा। मै.

उखराहा-सं., दुपहरियाक पहिने आ पाछू दिनक विभाग। प्रयोग-"बाबू हम एके उखराहा जन रहब।" मै.

उखरि मुसरा-सं., विशेष प्रकारक साग, शिवलिङ्गी जड़ी। मै.

उखाड़ पुखार-सं., अनेक वस्तु कें उखाड़िकय व्यवस्थित करैक क्रम। मै.

उखाड़ब-क्रि., खुट्टा एवं गाछ वृक्ष कें धरती सँ सम्बन्ध तोड़ब। मै.

उखिआर-सं., मधुर रसवाला सस्य, कुशियार, इक्षुदण्ड। मै.

उखिनब-क्रि., बैसल माटि कें यत्न तत्न व्यर्थ कोड़ब। मै.

उखिनाखूहनि-सं., सर्वत्न व्यर्थ कोड़ैक क्रिया। मै.

उखीबिखीलागब-क्रि., कोनो विषयक निष्पादन हेतु मन सँ देह धरि अस्थिर होयब। मै.

उखेलब-क्रि., बहुत गहींर धरि कोड़ि कय माटि कें ढील करब। मै.

उग्र-विशे., अधिक तेज, स्वाभाविक स्थिति सँ विकट। सं. तत्सम

उग्रास-सं., कन्ठ सँ बाहर होएब, मोक्ष, । प्रयोग-ग्रहणक विषय मे। सं. तद्भव

उगब-क्रि., प्रकट होएब, उदित होएब। मै.

उगरन-सं., खर्च कयला पर बाँचल वस्तु। मै.

उगरब-क्रि., खरच कय कें बाँचल रहब। मै.

उगरा पुगरा-विशे., खर्च कयला पर थोड़ बहुत बाँचल। मै.

उगारब-प्रे. क्रि., खर्च सँ बुद्धि पूर्वक बचा राखब। मै.

उगलाहा-विशे., उगल सूर्य। मै.

उगिलन-सं., मुह सँ वा कण्ठ सँ बाहर कयल वस्तु। मै.

उगिलब-क्रि., मुह मे देल भोज्य वस्तु बाहर करब। मै.

उगिला-विशे., उगिलि उगिलि कय बाहर कयल। मै.

उगहनि-सं., इनार सँ जल भरैक हेतु डोलक डोरी। मै.

उगहब-क्रि., एकठाँ सँ दोसर ठाँ वस्तु लय जायब। मै.

उघरन-सं., परस्पर वस्तुक लपेटक छूट। मै.

उघरब-क्रि.,वस्तु मे परस्पर लपेट वा लागि छूटब। मै.

उघरा-सं., आपस मे वस्तुक सम्बन्ध वा लपेटक छूटि। मै.

उघराभाँड़-सं., (लाक्षणिक) व्यवस्थित वस्तु कें चलाकय अव्यवस्थितता। मै.

उघराह-विशे., परस्पर लागि छूटैक सम्भावनावाला। दू वस्तु आपस मे विश्लिष्ट भेनिहार। मै.

उघाउघी-सं., वस्तु उठा उठाकय एम्हर सँ ओम्हर लय जाइक क्रम। मै.

उघार-विशे., प्रकट, झापनिहीन, देखार। मै.

उघारब-क्रि., देखार करब। आवरणहीन बनाएब। मै.

उघारि-सं., गुप्त कें प्रकाश मे आनब। कोनो वस्तु कें सभक समक्ष खोलब। मै.

उङारब-क्रि., उकटन आ तेल सँ मर्दनकय देह कें चिक्कन करब। अंग कें माजब। मै.

उच्च-अव्यय, उपर। मै.

उच्चाटन-सं., उपटि जाइक मनोभाव, वास (स्थिति) अन्यत्न लय जाइक उद्वेग। सं. तत्सम

उच्चारण-सं., शब्दक वर्णात्मक स्पष्ट ध्वनि। सं. तत्सम

उच्चावच-सं., कोनो प्रकारक आहटि। सं. तत्सम

उच्चैःश्रवा-सं., इन्द्रक घोड़ा। चौदह रत्न मे एक रत्न। मै.

उच्छिन्न-विशे., जड़ि सँ कटल। सं. तत्सम

उचक्का-विशे., देखितैं-देखितैं लऽ उड़ैवाला चोर, अनेर चञ्चलता सँ एम्हर ओम्हर कयनिहार। मै.

उचकब-क्रि., शरीर कें उछला कय कोनो चेष्टा करब। मै.

उँचगर-विशे., बेशी ऊँचक स्थान। मै.

उचङब-क्रि., अप्रत्याशित रुपें आविलऽ पड़ाएब। शीघ्रता सँ उपरें उपर लोकि लेब। मै.

उचङ्ङा-विशे., सदिखन उछलै कूदैवाला नेन्ना, अपन चञ्चल चेष्टा सँ संकट अनैवाला। हाथ सँ छीनि लैवाला चोर। मै.

उचटब-सं., परिवेश आ परोसी सँ मनक लागि टूटब। मै.

उचटन लागब-क्रि., अपन स्थान कें छोड़ि दैक प्रबल आवेग होएब। मै.

उचिती/उचती-सं., कहनिहारक नम्रता भरल सुननिहारक महत्ववार्ता। विनती। विनय प्रदर्शन। मै. विशेष-विवाहक उपरान्त वरबधू दूनू पक्षक मुख्य व्यक्ति अपन-अपन परस्पर नम्रता देखवैत छथि। कन्या पक्षक स्त्रीगण नम्रताक गीत गवैत छथि। मै.

उचरब-क्रि., लेखा-जोखा एवं विधि विचार सँ स्पष्ट होएब। मै.

उचरीङ-सं., फतिङ्ङा विशेष। मै.

उँचाइ-सं., ऊँच होइक मान। मै.

उचाट-सं., विरक्ति, उपटि जाइक प्रबल परम्पराक स्थान सँ वितृष्णा। मै.

उचाटन-सं., देखू-"उच्चाटन।" सं. तत्सम

उचाँढ-सं., १. कोनो क्रियाक हेतु बिन सोचनै आवेग। २. घरक चार कें मुह मे मुह मिलै मे बाधावाला कोड़ो। मै.

उचारन-सं., देखू-'उच्चारण'। मै.

उचारब-क्रि., मुह सँ अथवा वाद्य सँ स्पष्ट शब्द बाहर करब। मै.

उचावच-सं., देखू-"उच्चावच"। सं. तद्भव

उचाँस-विशे., उन्नत स्थान। मै.

उचित-विशे., अनुकूल, ठीक। सं. तत्सम

उचित कल्यान-स., श्राद्ध, विवाह आदि अशुभ आ शुभ कर्त्तव्य। मै.

उचितवक्ता-विशे., बिन पुछनै। बुधियारी देखवैत उचित बजनिहार। मै.

उचिला-सं., नव बीनल वस्त्र मे अकस्मात् पड़ल फाँक। मै.

उचिलाचाल-विशे., विभिन्न उद्वेग जगला सँ अस्थिर। मै.

उछटब-क्रि., निशान चुकला सँ अस्त्रक अनिश्चित दिशा मे बजरब। मै.

उछती-सं., देखू-'उचिती'। मै.

उछन्न-विशे., आसक्तिहीन, हटल रहैक इच्छावाला। मै.

उछन्नर-सं., स्थित कें समूल उखाड़ैक दुष्टता सँ उकठ। मै.

उछरिआँछरि-विशे., यावत् धीयापूता नहि भेल रहैक तावत कालक नारी अर्थात् बिना बच्चा वाली। मै.

उछर-सं., उच्छ्राय, उन्नति, उर्ध्वमुख वृद्धि। सं. तद्भव

उछलकूद-सं., हर्ष आ क्रोध मे हाथ आ पैरक अस्थिरता पूर्वक संचालन। मै.

उछलब-क्रि., कोनो कारणें हठात् सम्पूर्ण शरीर कें धरती सँ बेलागि कयलेब। मै.

उछला-सं., कपड़ा बीनैक काल यन्त्रक द्वारें सूत उछलि गेला सँ विकृत बिनौट। मै.

उछांट-सं., आकस्मिक भौतिक प्रभाव, अकस्मात् भूत प्रेतक सन्दिग्ध दोष। मै.

उछाल-सं., सीमा सँ उपर देने पानिक छिड़ियाएल प्रवाह। मै.

उछाँसलेब-क्रि., (लाक्षणिक) विश्रामक अवसर पाएब। मै.

उछाह-सं., शुभक आनन्दें उत्पन्न उत्साह। सं. तत्सम

उछाही-विशे., १. उत्साह बढ़वैक हेतु देय वस्तु (इनाम)। २. उछाह मे करैक योग्य विशेष क्रिया। मै.

उछेहब-क्रि., १. घरक पुरान खढ़ हटाएब। २. देहक वस्त्र हटाकय अंग प्रकट करब। अर्थात् आवरण कें समेटिकय हटाएब। मै.

उछौंत-विशे., प्रसन्न, उत्साहयुक्त। मै.

उज्जर-सं., श्वेतवर्ण, निर्मल। (विशे.) उज्जर रंग-वाला। मै.

उज्झट-विशे., असभ्य, अपशब्द। मै.

उजगी-सं., रातुक जागरणा, अपूर्ण निद्रा। मै.

उजड्ड-विशे., महामूर्ख, पशुक समकक्ष बुद्धिवाला। मै.

उजरब-क्रि., छिन्न-भिन्न होयब, विनष्ट होएब, स्थिति मे अस्तव्यस्त बनब। मै.

उजरा-विशे., उज्जर रंगक। मै.

उजरी-विशे., (लाक्षणिक) उज्जर रंगक समता सँ लक्षित पदार्थ अर्थात् 'दही'। मै.

उजबिजाएब-क्रि., अनेक वस्तुक उपस्थिति सँ कोनो वस्तुक ग्रहण करै मे मनक अस्थिरता सँ उथल पुथल मचब, उद्विग्न होएब। मै.

उजहब-क्रि., प्रथम वर्षा सँ भत्त भऽ कऽ पानिक वेगक विपरीत माछक चलब। मै.

उजहिया-सं., उन्मत्त माछक प्रथम वर्षाक हर्षे यत्र-तत्र बाहर होएबाक क्रिया। मै.

उजागर-विशे., प्रकाशित, बहुत मे पहिल लक्षित होमऽवाला। मै.

उजाड़ि-सं., सामूहिक रूपें ध्वंस। मै.

उजियार-विशे., चमत्कृत, प्रकाशवान्। मै.

उझक-सं., हल्लुक धक्का, अनवधानक वेग। मै.

उझकब-क्रि., अकस्मात् टगि जाएब, कनेको आस लगने टगि जाएब। मै.

उझकाएब-प्रे. क्रि., टेढ़ करब, जानिकय झुकाएब। मै.

उझकुन-सं., उपर उठाकय अड़वैक वस्तु, चुलहाक उपर बर्तन टेकैक हेतु देल ऊँच शृंगा। मै.

उझट-सं., अनदेखक झटका। मै.

उझाँट-सं., अदृश्य वस्तुक अधलाह प्रभाव। मै.

उझिलन-सं., एक वासन सँ दोसर वासन मे वस्तु कें करैक प्रक्रिया। मै.

उझिलब-क्रि., कोनो वासन सँ अन्य वासन वा स्थान पर कोनो पदार्थ कें धरब। मै.

उझिला-सं., एकठाँ सँ दोसर ठाँ वस्तुक परिवर्तन। मै.

उझिलापुझिला-सं., लगातार वस्तु कें एतय सँ ओतय करैक क्रम। मै.

उझुक्का-सं., आकस्मिक वेग, कार्य सम्पादनक चेष्टा। मै.

उझुक-अव्यय, झोंक, मनक सक्रियताक वेग। मै.

उट्ठाकाज-विशे., नियम सँ व्यवस्थापूर्वक सीमित काज। मै.

उट्ठापटक-सं., बात सँ क्रिया सँ निरन्तर एक दोसरा कें हरवैक चेष्टा। मै.

उटकरी-अव्यय, अनुमानै सँ बिन बुझलो बात मे गप्पक दखल। मै.

उटङ्ग-विशे., उत्तुङ्ग, अत्यन्त ऊँच। स. तद्भव

उटपटाङ़-विशे., विरुद्ध, जटिल, ओझराह। मै.

उटेङल-विशे., उच्च स्थान मे धयल। मै.

उठकी बैसकी -सं., विवशता सँ अधिक उठै बैसैक मुद्रा। मै.

उठँघन-सं., भोरुका पहर उठङिकय खाइक विधान। जितियाव्रत सँ पूर्व राति मे ई प्रचलित अछि। मै.

उठङब-क्रि., कोनो वस्तु पर देह कें निर्भर करब (लाक्षणिक) अपन कर्त्तव्य छोड़ि आनक भरोस करब। मै.

उठङाएब-प्रे. क्रि., कोनो पदार्थक भार कत्तौ स्थापित करब। मै.

उठन्ती-सं., उत्थान, उन्नति (विशे.) अभ्युदयक अभिमुख भेल। मै.

उठनगर-विशे., उपर मुह होइवाला, उन्नतिशील। मै.

उठब-क्रि., उन्नति करब, सूतल सँ जागब, ठाढ़ होयब। अपन स्थिति सँ उपर उठब। मै.

उठल्लू-विशे., समाज मे महत्वहीन। मूर्ख बनल, लोकक दृष्टि मे हल्लुक भेल। मै.

उठाइनि-सं., खर्च (खपत (उर्दू) क शब्द) प्रयोग- "अखन घर-घर मे चाहक उठाइनि छैक।" मै.

उठाएब-क्रि., जगाएब, स्वीकारब, नीचाँ सँ उपर करब, लोप कय देब। प्रयोग-१. "बौआ सुतले छथि उगा दियौन। २. आब नीको लोक अधलाह काज उठा लेलक। ३. कनेक जन कें बोझ उठा दियौक। ४. आइ कालिह मे लोक कें समाज आ धर्मक भय उठि गेलै।" मै.

उठाओ-सं., कोनो क्रिया आ व्यवहारक लोप । मै.

उठाओन-सं., प्रकाश मे अनैक, उठबैक, जगबैक आ लोप करैक भाव । मै.

उठानहारब-क्रि., उठैवसँ मे असमर्थ होएब । क्षीण होएब । (लाक्षणिक) बल घटब । धनहीन होयब । मै.

उठाबैसी-सं., लगले लागल उठि बैसिकय करैक काज । मै.

उठौना-सं., नित्य नियम सँ नियत काज । मै.

उड़कन-सं., कोनो वस्तु कें अड़ा रखैवाला वस्तु । मै.

उड़कब-क्रि., १. कथू मे टिकल रहब । पंजा भरें उछलैत सन चलब । मै.

उड़काएब-प्रे. क्रि., कोनो वस्तुकें कथू सँ लागि धराकय अस्थायी रुपें हिलै डोलै सँ रोकब । प्रयोग-"बड़ें बसात मे केवाड़ फटफट करैत अछि कथू सँ उड़का दियौक ।" मै.

उड़कुस्सी-सं., विषाक्त रोइआँवाली लत्ती जकरा छूला सँ पीड़ा आ नोचनी उठैत अछि । मै.

उडण्ड-विशे., उद्दण्ड, नियन्त्रणहीन, अविवेकी । सं. तद्भव

उड़ता-विशे., उड़ैक स्थितिवाला, अचानक अनठेकान उपस्थित होमऽवाला, उपरें उपर पहुँचैवाला । स्त्री० उड़ती । मै.

उड़न्तीगप-विशे.,किम्बदन्ती, जाहि बातक आधारक ठेकान नै रहैक । मूलहीन बात । आकाशवाणी । उड़ि पसरैवाला गप । मै.

उड़नखटोला-सं., अस्थायी रुपें आकाश मे उड़ैवाला भौतिक यन्त्र । (लाक्षणिक) अस्थिर भेल अनेर एम्हर ओम्हर घूमनिहार । मै.

उड़नपुरन जाएब-क्रि., लेखाहीन होयब । जाहि वस्तुक कोनो गिनती नहि होअए । मै.

उड़नबाज-विशे., जकर गति लक्षित नहि रहए । छनहि मे कत्तौ सँ कत्तौ चल जाइवाला । मै.

उड़ब-क्रि., शून्य मे विचरण करब । (लाक्षणिक) एकै छन मे कत्तौ सँ कत्तौ भागिकय अदृश्य होएब । मै.

उड़रपड़ब-क्रि., व्यग्रता भरल लोकक मेला लागब । जनसमूहक एकै लक्ष्य पर एकट्ठा होएब । मै.

उड़रा-सं., माछ विशेष । मै.

उड़ाएब-क्रि., बसातक गर पर छोड़ब । शून्य दिश फेंकब, (लाक्षणिक) अनावश्यक व्यय करब । मै.

उड़ाओन-सं., उड़वैक काज, बसातक गर मे अन्नक दानाक परिष्कार । पतंग कें आकाश दिश छोड़ैक खेल । मै.

उड़ाक-विशे., उड़ै मे निपुण, उड़ैक अभ्यासवाला । मै.

उड़ाँत-विशे., उड़ैक योग्य, उड़िकय जाइक क्षमतावाला । मै.

उड़ान-सं., उड़ैक क्रियाक दक्षता, उड़ैक प्रवृत्ति । मै.

उड़ान भरब-क्रि., उड़ैक क्रम आरम्भ करब । वायुयान उड़ाकय विदा होएब । मै.

उड़ाहब-क्रि., वस्तुक पहिले-पहिल व्यवहार करब । व्यवहार मे लायब । पोखरि, इनारक पुनरुद्धार करब । मै.

उड़िया-विशे., उड़ीसा राज्य मे होमऽवाला । प्रयोग-"बाबा हौ विराजै उड़िया देश मे" । मै.

उड़िसाइन-विशे., उड़ीसक गन्धवाला । (लाक्षणिक) अरुचिकर, घृणास्पद । मै.

उड़ीत उड़ीत-अव्यय, बकरीक संग प्रसंगक हेतु बत्तू कें बजबैक शब्द । मै.

उड़ीस-सं., शोणित चूसैवाला बिछाओन ओछाओन मे स्वेदज कीट । मै.

उड़र-सं., हरजोतैक समय हरक नास लागि एकट्ठा खढ़पात आ माटि । मै.

उड़ेहब-क्रि., पुरुखा-पुरुखाकें अपमानजनक बात सँ जोड़ब । कुलक अधलाहे टा निखारब । मै.

उड़ौनी-सं., बसातक गर मे भूसा उड़ाकय अन्नक परिष्कारक क्रम । मै.

उढ़कन-सं., कोनो वस्तु कें गड़कें सँ रोकैले देल ठोस वस्तु । मै.

उढ़काएब-क्रि., केवाड़ कें अस्थायी रुपें सटाएब । वस्तुकें कत्तौ अवलम्बित करब । मै.

उढ़रब-क्रि., यौन सम्पर्कक द्वारें आन-आन पुरुष स्त्री कें चोराकय भागि जायब । मै.

उढ़रा-विशे., स्त्री० उढ़री, वासना संबन्धें पुरुष वा स्त्रीक संग भागि गेनिहार । मै.

उत्कट-विशे., उचित सँ अधिक स्थिति । सं. तत्सम

उत्कण्ठा-सं., ककरो प्रति मानसिक आतुरता। सं. तत्सम

उत्कल्ली-विशे., चञ्चलतापूर्ण उपद्रवी। मै.

उत्तप्त-विशे., अव्यक्त वेदना आ विषमता सँ व्याकुल। सं. तत्सम

उत्तम-विशे., सब सँ बढ़िकय नीक। अति सुन्दर। सं. तत्सम

उत्तर-सं., १. पूव दिश मुह कयला सँ बाम हाथक दिशा। २. पत्र वा प्रश्नक समाधान। जवाब (उ.) सं. तत्सम

उत्तर फल्गुनी-सं., नक्षत्र विशेष, सूर्य्यक गति सँ भादव मे ई नक्षत्र होइछ जकरा लोक "कनहा" कहैछ। सं. तत्सम

उत्तर भाद्र-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

उत्तराषाढ़-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

उत्तरीय-विशे., देह परक बिना सीयल दोसर वस्त्र।

उत्ताप-सं., शोक, चिन्ता, आदंक आवेग उठला सँ व्याकुलता। सं. तत्सम

उत्तार-विशे., बहुत ऊँच उठल। सं. तत्सम

उत्ताल-विशे., उच्छृंखल रूपक। सं. तत्सम

उत्तीर्ण-विशे., पार उतरल, पार टपल। सं. तत्सम

उत्तोलन-सं., उठाएब, उड़ाएब, फहराएब। सं. तत्सम

उत्थर-विशे., समतल जकाँ बनल गहींर, बिना गहिराइवाला वस्तु। मै.

उत्थान-सं., उठब, उन्नति, अभ्युदय। सं. तत्सम

उत्पत्ति-सं., जन्म, आविर्भाव। सं. तत्सम

उत्पन्न-विशे., प्रादुर्भूत, जनमल। सं. तत्सम

उत्पात-सं., उपद्रव, अनहोनी घटना। सं. तत्सम

उत्पाती-विशे., अनहोनी घटना कयनिहार। सं. तत्सम

उत्पादन-सं., उत्पन्न करब, उपैद बढ़ाएब। सं. तत्सम

उत्फाल होयब-क्रि., उद्धत बनब, सीमा सँ बहार होएब। मै.

उत्सर्ग-सं., त्याग, दान। सं. तत्सम

उत्सव-सं., शुभ काजक निमित्त विशेष आमोदक समारोह। प्रसन्नतासूचक आयोजन। सं. तत्सम

उत्साह-सं., कोनो विषय मे आ काज मे आस्थाक संग मनक विस्तार। वीर रसक स्थायी भाव। स. तत्सम

उत्साही-विशे., कोनो सन्दर्भ मे आस्थासहित विस्तृत भावना भरल। सं. तत्सम

उत्सुक-विशे., ककरो प्रति विशेष उद्वेग रखनिहार। सं. तत्सम

उतकिरणा-सं., लोक मे देखार आ चिन्हार बनैक क्रिया। समाज मे महत्वक इच्छा सँ कयल चेष्टा। मै.

उतनुआँ-विशे., उताने रहैक वयस धरिक नेन्ना। मै.

उतपथ-सं., अनुचित बाट, कुमार्ग। सं. तद्भव

उतपैन-सं., जनम, प्रादुर्भाव। मै.

उतरंग-विशे., उत्तर दिशाक बसात। मै.

उतरब-क्रि., उपर सँ नीचाँ आएब, अपन पद आ वैचारिक दृष्टि सँ नीच खसब। मै.

उतरबारि-विशे., उत्तर दिशावाला। मै.

उतरबरिया-विशे., उत्तर दिशा मे भेनिहार। मै.

उतरा-सं., उत्तर फल्गुनी नक्षत्र। मै.

उतरा-सं., नाओक खेवा अर्थात् पार उतरैक भाड़ा। मै.

उतराइ-सं., नदी पार करैक नाओक भाड़ा। मै.

उतराचढ़ी-सं., एकबाही उतरै चढ़ैक क्रम। मै.

उतराचौरी-सं., कटुतापूर्वक उत्तर प्रत्युत्तर, कथोपकथन। मै.

उतराढार-विशे., उत्तर दिश ढलानवाला। मै.

उतराहा-विशे., उत्तर दिशा मे भेनिहार पशु वा मनुष्य। मै.

उतराहुत-विशे., कनेक उत्तर दिश दबल। मै.

उतरि जाएब-क्रि., १. नीचाँ आएब। २. फलक कुस्वाद होएब। मै.

उतरी-सं., उत्तरीय, मृतक कें मुखाग्नि देवा सँ पूर्व चारि आङुर चाकर नव वस्त्रक बीच फाड़ि माला वा जनौ जकाँ धारण कयल वस्त्र। मै.

उताओ-सं., छनै मे उत्पन्न आवेग। मै.

उतान-विशे., उत्तान, उपर मुह पड़ल। मै.

उतार-विशे., १. प्रतिरूप, एके रंगक दोसर प्रति। २. क्रमिक एक दिश पातर। मै.

उतारब-क्रि. उपर सँ नीचाँ आनब, नदी आदि पार कऽ देव। मै.

उतारा-सं., उत्तर, पत्र वा मौखिक वार्ताक जबाब। मै.

उताहुल-विशे,, उत्कण्ठा भरल, उद्वेगयुक्त। मै.

उतेढ़-सं., पञ्जी प्रबन्धक कुल पुरुषक नामावली जे वैवाहिक सिद्धान्त मे पढ़ल जाइत अछि। मै.

उथर-विशे., उचित सँ थोड़ गहींर। मै.

उथलपाथल करब/उथलपुथल मचाएब-क्रि., कोनो विषय ल'क' हर्ष अथवा भय, विस्मय आदि भाव सँ चंचलतापूर्वक अव्यवस्था मे रहब। मै.

उद्गम-सं., प्रकटता, आविर्भाव, निष्क्रमण। सं. तत्सम

उद्द-सं., उदविलाड़ जे जलाशय मे रहि छोट-छोट जल जीव खाइत अछि। मै.

उद्दचढ़ब-क्रि., अत्यन्त उद्वेग होएब। अनिवार्य उत्कण्ठा सँ गतिशील रहब। मै.

उद्दण्ड-विशे., उच्छृंखल, अनुशासनहीन। मै.

उद्दाम-विशे., उन्मुक्त, अवार्य, नुकवैक वा झँपैक अशक्य। सं. तत्सम

उद्दिष्ट-विशे., उद्देश्य सँ कयल कार्य। सं. तत्सम

उद्देश्य-सं., ठेकाना, लक्ष्य, कर्त्तव्यक मुख्य केन्द्र। सं. तत्सम

उद्धत-विशे., अनुशासनहीन, अविवेकी। सं. तत्सम

उद्धवधाव-सं., बाजन, नाच गान सँ भरल वातावरणवाला समारोह। सं. तद्भव

उद्धार-सं., संकट सँ बचा कय नीक स्थिति मे कय देब। स. तत्सम

उद्यम-सं., श्रम, जीवन निर्वाहक उपाय करैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

उद्यत-विशे., तैयार, प्रस्तुत। सं. तत्सम

उद्यान-सं., उपवन, फुलवाड़ी। सं. तत्सम

उद्यापन-सं., दीर्घ व्रतक समापन कृत्य, आयोजन पूर्वक उठाओ। सं. तत्सम

उद्योग-सं., श्रम, प्रबन्ध, कोनो बातक व्योंत। सं. तत्सम

उद्योगी-विशे., उद्योग कयनिहार। सं. तत्सम

उद्विग्न-विशे., कोनो विषयक हेतु चञ्चलतापूर्वक व्यग्र रहनिहार। सं. तत्सम

उद्वृत्त-स., उपद्रव भरल व्यवहार। सं. तत्सम

उद्वृत्ती-विशे., उपद्रव करैवाला, उनटफेर कय दूरि करैवाला, नटखट। सं. तत्सम

उद्वेग-सं., ककरो प्रति उत्कण्ठा भरल मनक खिंचाओ सँ आतुरता। सं. तत्सम

उदकब-क्रि., स्वाभाविक रूपें उपर नीचाँ होएब। मै.

उदङ्गर-सं., उजारि सँ अव्यवस्थित रूप, विनाशक लीला। मै.

उदविलाड़-सं., देखू—"उद्द"। मै.

उदमाउर चढ़ब-क्रि., अतयधिक उत्कण्ठा बढ़ब। अनिवार्य्य आवेग बढ़ब। मै.

उदमाहल-विशे., प्रस्तुत, उद्यत, वृत्त। मै.

उदय-सं., उगब, उपर मुहें गति, आविर्भाव। सं. तत्सम

उदवित्त-सं., देखू—"उद्वृत्त"। मै.

उदान-सं., प्राणीक कण्ठ देश मे रहनिहार वायु। सं. तत्सम

उदाम-विशे., हानिकारक, उन्मुक्त। मै.

उदार-विशे., मन वचन कर्मक व्यापकता आ उच्चता रखनिहार। सं. तत्सम

उदास-विशे., श्रीहीन, प्रसन्नताक अभावें कान्तिहीनता भरल। सं. तत्सम

उदासी-सं., १. मुखाकृतिक क्षीण एवं अशोभनीय स्थिति। २. वैराग्य गीत विशेष। सं. तत्सम

उदाहरण-सं., दृष्टान्त, प्रयोग। सं. तत्सम

उदीष्ट-विशे., देखू—"उद्दिष्ट"। सं. तद्भव

उदीष्ट-पूजा-सं., बिना मूर्तिक बिना चिन्हक कोनो देवता कें भावना सँ आवाहन कय कयल पूजा। सं. तद्भव

उदेवण्डा-विशे., सब दिश सँ खूजल, आवरण (अढ़) शून्य, बेढ़ खोढ़रहित। मै.

उदेस-सं., सन्धान, प्रयोग-"सपनहु नहि पायब सखि हे हमर उदेस"—विद्यापति। उद्देश्य। सं. तद्भव

उदैं-सं., देखू—"उदय"। सं. तद्भव

उदोग-सं., देखू—"उद्योग"। सं. तद्भव

उधकन-सं., स्वतः उपर नीचाँ होइक गति। मै.

उधकब-क्रि., मनुष्य शक्ति सँ भिन्न शक्तिक द्वारा निरन्तर उठैक खसैक गति होएब। मै.

उधार-विशे., सावधिक बिना सूदिक लेल द्रव्य। मै.

उधारनि-विशे., उद्धार कयनिहारि स्त्री (गंगा मे प्रयोग)। मै.

उधारब-क्रि., १. उद्धार करब। २. (लाक्षणिक) कलंकित करब। मै.

उधारी-विशे., सावधिक समय मे शोध करेक बिना सूदिक लेल द्रव्य । मै.

उधियाएब-क्रि., १. आँच लगला पर फेनिल पदार्थक वर्तन सँ उपर आएब । २. आनन्द आ उल्लासक द्वारें मनक चञ्चलता सँ अस्थिर होएब । ३. बसातक द्वारें घासपात आ वस्त्रक शून्य मे उड़ैत रहब । मै.

उधियान-सं., मुख्यतः दूधक विषय मे फेन बनिकय उपर उठैक नाम । मै.

उधुक्का-सं., उपरें उपर जोर सँ धक्का । मै.

उधेड़ब-क्रि., रत्ती-रत्ती खोलि वस्त्रक वस्तु कें छिन्न भिन्न करब । शरीरक शल्य क्रियो मे प्रयोग । मै.

उधेड़बुन-सं., मन मे भावनाक आलोड़न, मनकथा । मै.

उधेलब-क्रि., तितिर-वितिर करब, अव्यवस्थित करब । एक प्रकारें उजाड़ब । मै.

उधोरनि-विशे., उद्धार करैवाली "अधम उधोरनि गंगे ।" मै.

उन्नति-सं., उपर उठब, नीक स्थिति मे गमन । सं. तत्सम

उन्मत्त-विशे., बताह, अपने भावना मे बहनिहार । सं. तत्सम

उन्मन-विशे., गम्भीर परिस्थितिक द्वारें मन के परोक्ष वस्तु मे निमग्न रखनिहार । सं. तत्सम

उन्मुक्त-विशे., बन्धनमुक्त, उबेर चरैवाला । सं. तत्सम

उन्माद-सं., बतहपना, भावनाक अनियन्त्रित गति । सं. तत्सम

उनकूर-सं., कलहक स्रोत, झगड़ाक लाथ । मै.

उनचालीस-संख्या, नौ एकाइ तीन दहाइक अंक । मै.

उनचास-संख्या, नौ एकाइ चारि दहाइक अंक । मै.

उनटन-सं., उनटि जाइक रूप । मै.

उनटफेर-सं., स्थितिक व्यक्तिक्रम, विपरीत । मै.

उनटब-क्रि., सामान्य स्थिति सँ विपरीत भय जाएब । चित सँ पट, पट सँ चित होएब । मै.

उनटा-विशे., विपरीत मुहक अपस्थित । मै.

उनटाएब-क्रि., विपरीत मुहें वा प्रतिकूल रूपें करब । मै.

उनटा बसात-विशे., (लाक्षणिक) लोकक चलनिक विरुद्ध काज । मै.

उनतीस-संख्या, नौ एकाइ दू दहाइक अंक । मै.

उनमुनाएब-क्रि., उत्सुकता भरल चेष्टा सँ प्रवृत्ति जगाएब । उन्मुख होएब । मै.

उनरब-क्रि., खूजब, बाम दहिन फैल होएब, विस्तृत मुह होएब । मै.

उनसठि-संख्या, नौ एकाइ पाँच दहाइक अंक । मै.

उनहत्तरि-संख्या, नौ एकाइ छः दहाइक अंक । मै.

उनारब-क्रि., धातु सँ बनल वस्तुक मुह कें बल सँ पसारब । मै.

उनासी-संख्या, नौ एकाइ सात दहाइक अंक । मै.

उनाह-सं., गरम पानि सँ गुर (घाओ) वाला, वात रोगवाला आ चोटवाला स्थान मे सेदक, भाफ लेब । सेकक प्रक्रिया । मै.

उनाहब-क्रि., सरस खेत मे उपरें छींटल बीआ कें दू एक दिनुक उपरान्त जोति कय माटिक तर करब । मै.

उनैस-संख्या, नौ एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

उपकरिकय-अव्यय, बिन कहनौं हितक भावना सँ कयल । मै.

उपकार-सं., हितक चेष्टा, बिना कोनो स्वार्थक कल्याण कामना । सं. तत्सम

उपकारी-विशे., उपकार कयनिहार । सं. तत्सम

उपकुलपति-विशे., शिक्षा संस्थानक उच्चतर अधिकारी । सं. तत्सम

उपकृत-विशे., उपकार सँ अभिभूत, जकर उपकार भेल हो । सं. तत्सम

उपगत-विशे., लग पहुँचल, प्राप्त । सं. तत्सम

उपचार-सं., कोनो वस्तुक बहारक प्रक्रिया, अतिरिक्त बाह्य उपाय, प्राथमिक क्रिया । सं. तत्सम

उपछन-विशे., उपछि देवाक योग्य द्रव पदार्थ । मै.

उपछब-क्रि., द्रव वस्तु कें एकठाँ सँ दोसरठाँ उठा-उठा फेंकब, दोसर बासन मे उठा कय राखब । मै.

उपछा-सं., एकठाँ सँ दोसरठाँ पानि उठा कय फेंकैक चेष्टा । मै.

उपज-सं., खेती सँ उत्पादित अन्न । मै.

उपजब-क्रि., खेती सँ अन्नक उत्पादन होएब । मै.

उपजा-सं., फसिल, सस्य, खेतीक उत्पादन । मै.

उपजाएब-क्रि., भूमि जोति कय अन्नक उत्पादन करब । मै.

उपजाबाड़ी-सं., खेती सँ उपलब्ध लब्ध । पूर्णरूपक फसिलक उत्पादन । मै.

उपटब-क्रि., एक स्थान सँ दोसर स्थान में वास करब । मै.

उपटाएब-क्रि., १. ककरो एकठाँ सँ दोसरठाँ कयदेब। २. वनस्पति तथा झार पात कें निमूंल करब। मै.

उपटाटार-सं., अनेर सदिखन व्यवस्थित वस्तुकें एतय सँ ओतय लय जाकय अव्यवस्थित करैक क्रम। मै.

उपटार-सं., सामूहिक लोकक उपटब, विनाश। मै.

उपड़ब-क्रि., जड़ि सँ अलग भऽ जाएब। मै.

उपतनि-सं., उद्‌गम, जन्म, उद्भव। मै.

उपद्रावक-विशे., उपद्रव कयनिहार। उत्पाती। सं. तत्सम

उपद्रो (द्रव)-सं., विध्वंसक चेष्टा, उजाड़ि, संहार। सं. तद्भव

उपदर-सं., दोषरागक कथन, उपराग, उपालम्भ। मै.

उपदेश-सं., बुद्धि विकासक विषयक निर्देश। सं. तत्सम

उपनयन-सं., संस्कार विशेष। द्विजक यज्ञोपवीत संस्कार। स. तत्सम

उपनीत-विशे., समीप आनल, उपनयन संस्कार सँ दीक्षित किशोर जकरा जनौक चिह्न रहैत छलै। बहुत प्राचीन काल मे मनुष्यक विषय प्रवृत्ति सँ चारि जाति बनाओल गेल। ताहि मे गिरिचर वनचर मनुष्य कें अन्त्यज कहि सेवा वृत्ति अर्थात् श्रमिक कहि शिक्षाक अधिकार सँ बञ्चित कय आर्य लोकनि जे तीन जाति रखलैन ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य ताहि जाति सभक किशोर सब कें शिक्षा दीक्षा मे प्रवेशक हेतु विशिष्ट प्रकारक विधान बनौलनि जे उपनयन संस्कार कहौलक। ओही संकार सँ दीक्षित अध्ययनक अधिकारी उपनीत कहवैत अछि। सं. तत्सम

उपनैनियाँ-विशे., १. उपनयन सम्बन्धी काज वा वस्तु। २. उपनयनक हेतु निहुछल बरुआ। मै.

उपपत्ति-सं., हेतु अर्थात् कारण समेत कार्यक सम्भावनाक उक्ति। सं. तत्सम

उपपादन-सं., फरिछाकय विषयक स्पष्टीकरण। सं. तत्सम

उपमा-सं., उपमान सँ उपमेय मे समानधर्मिताक द्वारें तुलना। मै.

उपर-अव्यय, ऊर्ध्वदेश, उपरि। सं. तद्भव

उपरका-विशे., उपर मे स्थित। मै.

उपर चटकी-विशे., अनजान मे अलगैं बलग बिना परिश्रमैं उपस्थित। मै.

उपर झटकीभारब-क्रि., उपरैं उपर अँटकरैं गप हाँकब। बिन बुझनौ बात बनाएब। मै.

उपर चापर-अव्यय, उद्‌गार एवं उल्लासें अनिवार्य चञ्चलतापूर्ण। प्रयोग - 'नङटा तन पर पड़ल कापड़ तन करे उपर चापर।" लोकोक्ति। मै.

उपरपट्टी-सं., ऐ जीवन सँ बहार, मृत्युक उपरान्तक लोक वा परलोक। मै.

उपर फाँटो-अव्यय, उपरैं उपर अर्थात् अनायासैं आकस्मिक रुपें प्राप्त। मै.

उपर बदरा-विशे., पैघ वर्षाक बाद खेतक हाल कें सुरक्षित रखैवाला जखन तखन छोट छीन अछार। मै.

उपर सहकिया उपर सहैक-विशे., कोनो कार्यकर्त्ताक बहारक सहायक। मै.

उपरा-विशे., वस्तुक अतिरिक्त उपर सँ अधिक देय। मै.

उपराँ उपरी-विशे., क्रमबद्ध मे एक दोसराक प्रतियोगी। कालक अन्तर भेलौ पर स्थिति मे नाम मात्रक भिन्न। मै.

उपराग-सं., दोषीक आप्तक सम्मुख दोषक प्रकाशन। मै.

उपरारि-विशे., उँचगर खेत। मै.

उपरिष्टात्-अव्यय, उपर उपर सँ। सं. तत्सम

उपरी-विशे., नियत लेखा सँ अतिरिक्त बाहर (अलग) सँ प्राप्य। मै.

उपरी झापड़ी-विशे., जाहि मे कोनो वास्तविकता नहि हो। मै.

उपरैं उपर-अव्यय, बिना धरातल छुनहि। (लाक्षणिक) बिना समुचित जानकारी कें। मै.

उपरैं घाड़ें रहब-क्रि., (लाक्षणिक) भरोसें रहला पर अनजानै मे अवसर चुकि जायब। मै.

उपरोटा-विशे., वस्त्रक उपर अथवा उपरक अंग मे पहिरैवाला वस्त्र। मै.

उपरौंझ-सं., प्रतियोगिता, अपना अपनी वर्चस्व जमवैक भावना। मै.

उपलच्छन-सं., बातक पुष्टि करैवाला दृष्टान्त। सं. तद्भव

उपलाएब-क्रि., अधिकताक द्वारें आधार सँ बहिर्भूत होएब। प्रयोग-"क्षुद्र नदी थोड़बहि उपलाप।" मै.

उपवास-सं., भोजनक त्याग, निराहार रहि मन सँ देवताक समीप रहब। सं. तत्सम

उपस्कर-विशे., अनाहूत, अर्थात् बिना बजाओल। मै.

उपस्थित-विशे., पहुँचल, वृत्त, प्रस्तुत। मै.

उपसंहार-सं., परिणामस्वरुप सारभाग। सं. तत्सम

उपहँत-विशे., अशुद्ध, दूषित, सँखरी। मै.

उपहार-सं., सोगाइत, स्नेह सूचक भेंट, बैन। सं. तत्सम

उपहास-सं., निन्दायुक्त हँसी, हँसी उड़ाकय लोकक बीच निन्दित करब। सं. तत्सम

उपाड़-सं., आधार सँ जड़िक खिचाओ। मै.

उपाड़ब-क्रि., धरती सँ कथुक जड़ि अलग करब। मै.

उपाति-सं., शिष्ट व्यक्तिक शिष्टाचारक क्रम मे असिद्ध भोजन सामग्री। सिदहा। मै.

उपाध्याय-विशे., एक प्रकारक उपनाम, शिक्षक। सं. तत्सम

उपाधि-स., १. पदवी, उपनाम। २. मनक गम्भीर व्यथा। ३. कोनो रोगक अवधि मे विशेष उत्पातक प्रादुर्भाव। सं. तत्सम

उपाम-विशे., उत्कृष्ट, अनुपम, दिव्य। मै.

उपाय-सं., साधन, प्रतीकार, उद्योग। सं. तत्सम

उपार्जन-सं., कमाएब, जीविका, जीवन निर्वाह। सं. तत्सम

उपास-सं., उपवास, निराहार स्थिति। मै.

उपासब-क्रि., उपास करब। आराधना करब। मै.

उपांशुक-विशे., अप्रत्याशित अभ्यागत। मै.

उपेक्षा/उपेच्छा-सं., अन्नासक्ति, अवहेलना। सं. तत्सम

उपेखब-क्रि., तिरस्कार करब, अनठाएब। ध्यान नै देब। मै.

उपैं-सं., देखू-"उपाय"। सं. तद्भव

उपैत-सं., उत्पादन, उत्पत्ति। मै.

उफाँट-सं., निर्जनताक भय सँ भौतिक ऊपद्रवक आशंका। मै.

उफाँटि-विशे., पचीसीक अरक्षित स्थान मे बैसल गोटी। मै.

उब्भी-सं., बहार आएल गड़ैवाला नोक। मै.

उबकी-सं., जीओकाइक लक्षण। बमनक वेग। मै.

उबटन-सं., देखू-"उकटन" (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.

उबडुब-विशे., पानि मे डूबैक स्थिति मे छने मे उगब आ छनै मे डूबैवाला। मै.

उबब-क्रि., वितृष्णा होयब, अरुचि करब, विरक्त होएब। मै.

उबरब-क्रि., संकट सँ बहार होएब। उद्धार पाएब। मै.

उबलब-क्रि., १. हठात् मन वचन कर्म सँ उद्धत भऽ जाएब। २. खौलैत पानि मे पदार्थक सिद्ध होएब। मै.

उबहब-क्रि., उद्वहन करब। देखू-"उगहब"। मै.

उबानि-विशे., बेउरेब बन्धन, क्रमहीन बीनन। मै.

उबार-सं., उद्धार, उर्वार। सं. तद्भव

उबारब-क्रि., उद्धार करब, संकट सँ बचाएब। कष्ट सँ बहार करब। मै.

उबेर-सं., बदरीक समाप्ति, मेघ सँ आकाशक मुक्ति। उन्मुक्ति। मै.

उबेर चरब-क्रि., बिना खेतीक समय मे मालजालक उन्मुक्त चरब। (लाक्षणिक) छूटि कय विचरण करब। मै.

उभड़ खाभड़-विशे., निम्नोन्नत भूमि, असैयत स्थान उँच नीच आ ढेला कंकड़वाला वाट। मै.

उभाड़ब-क्रि., रहस्यक बात कहि उत्तेजित करब। मै.

उभैं-सर्व., उभय, दूनू। सं. तद्भव

उमकब-क्रि., छूटिकय खेलाएब। मै.

उमकी-सं., कोनो वस्तुक उन्मादक क्रीड़ा। मै.

उमगब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब, उत्तेजना जागब। मै.

उमङ्ग-सं., उल्लास एवं आनन्दविभोर मनोवृत्ति। मै.

उमजब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब। मालजाल आ कृषिक पुष्ट होयब। मै.

उमटाम-विशे., वासन सँ उपदय खसैक स्थिति मे भरल। मै.

उमठब-क्रि., विरक्त होएब, बिरसता जागब। अति तृप्ति सँ अनिच्छा बढ़ब। मै.

उमड़ब-क्रि., एक संग धन भय उठब। वेगशील होएब। मै.

उमड़ाएब-क्रि., उचित सँ अधिक भरि देब। खसैक वा भरैक स्थिति मे कय देब। मै.

उमतब-न० क्रि., उन्मत्तक आचरण करब। मै.

उमताह-विशे., सुधि-बुधिरहित किछु के किछु कय देनिहार, बताह। मै.

उमसाम-विशे., सीमा सँ बहार होइक स्थिति मे भरल। मै.

उमसुम-विशे., देखू—"उमसाम"। मै.

उमा-सं., शिव पत्नी, गौरी, पार्वती। मै.

उमेद-सं., (उ.) उम्मीद, संभावना, आशा। उ. तद्भव

उमेर-सं., आयु, बहिक्रम, वयस, उमर। उ. तद्भव

उर्दम खुर्दम-सं., मुख्य काज कें साधैले, क्षुद्र काजक पहिने कर्त्तव्य। मै.

उर-सं., छाती, हृदय। सं. तद्भव

उरकुस्सी-सं., विषाक्त पदार्थ। जकर स्पर्शोमात्र भेला सँ पीड़ाक संग नोचनी उठैत छैक जे क्रमशः पसरितों छैक, एहन रोममय पातवाला कवाउछ नामक लत्तीक डाँट आ पात कें सुखा कय गर्दी बना कय बदलालैक तथा धूर्ता करैक ध्येय सँ दुष्ट लोक ककरो पर प्रयोग करैत अछि। मै.

उरड़पड़ब-क्रि., एक संग असंख्य लोकक असंयत रूपें रहब एवं शब्द करब। मै.

उरम्हध्ब-क्रि., बेर-बेर रोग आ पीड़ाक जागि उठब। मै.

उंरीन-विशे., रीनमुक्त। मै.

उरेब-विशे., संतुलित कृत्यक द्वारें देखैमे उचित। मै.

उरोज-सं., मनुष्य जातिक स्तन। सं. तत्सम

उल्का-सं., १. ऊक। २. आकाशक गतिशील रेखाकार तेज प्रवाह। सं. तत्सम

उल्कापात-सं., आकाश सँ तेज प्रवाह वा ज्योति पिण्डक पतन। सं. तत्सम

उल्कामुख-विशे., जाहि गीदड़ कें मूहबओला सँ मुहक वाष्पें तेज बहराइत अछि। सं. तत्सम

उल्लड़-विशे., लोकक दृष्टि सँ पछुआएल। समाज मे निन्दित बनल। अव्यवस्थित हल्लुक। मै.

उल्लास-सं., विशेष नीक परिस्थितिक कारणें आनन्दक विकास। सं. तत्सम

उल्लू-सं., रात्रिचर पक्षी विशेष। लक्ष्मीवाहन। मै.

उल्लेख-सं., विशेष रुपक चरचा, प्रतिवादन। सं. तत्सम

उलझन -सं., जटिल समस्या, ओझर। हि. तद्भव

उलड़ होएब-क्रि., सामाजिक दृष्टि मे खसब, हल्लुक होएब। मै.

उलफुलौआ-विशे., ओहेन लाभ जकर गणना नहि कयल जाय। मै.

उलबा-विशे., आधा भूजल अर्थात् सुखायल वस्तु कें खापड़ि मे दय आगिक रसौं सँ आर शुष्क बनाओल। मै.

उलबुलाएब-क्रि., कोनो प्रसंग मे भावना घुमाकय परतारैक चेष्टा करब। मै.

उलहन-सं., दोषीक निकट तथा ओकर श्रेष्ठजन लग अभियोग तथा दोषक प्रकाशन। मै.

उलाएब-क्रि., तप्पत मात्र करैक हेतु अन्न कें खापड़ि मे दय कें भूजब। मै.

उलापब-क्रि., बड़प्पन पर जोर दैत वार्तालाप करब। मै.

उलार-विशे., पाछू दिश बेशी भार पड़ला सँ आगू दिश हल्लुक भ' क' उपर उठल। मै.

उलोंच-सं., बिछाओनक आवरण वस्त्र। चद्दरि, उल्लोच। सं. तद्भव

उवकन-सं., १. उद्वेगयुक्त उत्कण्ठा। २. जी फँड़ियाइक वेग। मै.

उवियाएब-क्रि., उद्वेग भरल उत्कण्ठा होएब। मै.

उष्ण-विशे., तप्पत, गरम। सं.तत्सम

उषा-सं., सूर्योदय सँ पहिलुक बेला। सं. तत्सम

उस्सर-विशे., ऊस सँ भरल स्थान, ऊस सँ भरल भूमि। मै.

उस्सम-सं., ऊष्मा, गरमी, ताप। सं. तद्भव

उसकब-क्रि., चलनशील होएब। स्पन्दन करब। देह चलाएब। मै.

उसकाएब-प्रे. क्रि., १. चलाएब, प्रेरित करब। २. ढेकी चलैक काल छिड़ियाएल अन्न कें उक्खड़ि दिश समेटब। मै.

उसझब-क्रि., उन्नति करब, गाछ पातक उपर मुहें घन भ' क' बढ़ब। मै.

उसट्ठ-विशे., १. रसहीन, सुखाएल, (लाक्षणिक) मृदुताक अभावें हृदयहीन, निरपेक्ष। मै.

उसरग-सं., उत्सर्ग, त्याग, दान। सं. तद्भव

उसरगा-विशे., उत्सर्ग कयल वस्तु । मै.
उसरन-सं., समूल नाश, सर्वथा लोप । मै.
उसरब-क्रि., कोनो काज करै मे शीघ्रता होयब । मै.
उसराड़-विशे., उसमिझहर माटिवाला खेत । मै.
उसराह-विशे., क्षार प्रधान खेत । मै.
उसराहु-विशे., शीघ्र सम्पादन करैक योग्य काज । मै.
उसाओस-सं., सहयोग, सहायता, संवर्धन । मै.
उसार-सं., उठाओ, एकत्रीकरण । मै.
उसारब-क्रि., समेटब, संकुचित करब । अन्तर्हित करब । प्रयोग-"मौना पसारल सामा उसारल" अर्थात् मौना पंचमी सँ पावनिक क्रम आरम्भ भय, सामा अर्थात् कातिक पूर्णिमा धरि चलैत अछि । मै.
उसाँस-सं., उच्छ्वास, दमलेब (लाक्षणिक) विश्राम प्रयोग-"काजक द्वारें कखनो उसाँस नैं अछि ।" मै.
उसासदेव-क्रि., सहायता करब, संगदेब । मै.
उसाहब-क्रि., चोट करैले अस्त्र उठाएब । घात करैले निशान साधब । मै.
उसाहब-क्रि., विना श्रमहि, चोरानुकाकय चुपचाप अधिक मात्रा मे धन उठालैक चेष्टा राखब । मै.
उसाहि टारिकय-अव्यय, परतारि वा ठकि फुसिया क' हटा कय । मै.
उसिनब-क्रि., कोनो पदार्थ कें पानि मे दय आगिक ताप सँ सिद्ध करब । मै.
उसिनहरि-सं., धान आदि उसिनैक निरन्तर प्रक्रिया । मै.
उसिना-विशे., उसिनल वस्तु । प्रयोग-"उसिना चाउर ।" मै.
उसिनियाँ-सं., उसिनैक कार्यक्रम, लगातार उसिनब । मै.
उसिनिहार-विशे., उसिनैक हेतु नियत व्यक्ति । स्त्री० उसिनिहारि । मै.
उसौस-सं., विश्रामक अवसर । मै.
उहे !-अव्यय, कुकूर आदि जीव कें हुलकयवाक तथा भगयवाक शब्द । मै.

ऊ

ऊ-सं., ओष्ठ स्थानक दीर्घ ऊकार । मै.
ऊ !-अव्यय, १ कष्टक ध्वनि, प्रत्यक्ष निर्देशक हेतु स्थान भेदें निश्चयवाचक सर्वनाम । मै.
ऊंक-सं., १. दीपावली दिन आगि लगाकय फेरैवाला नमहर खढ़क मुट्ठा । २. मृतकक मुह मे जाहि द्वारा आगि देल जाइत अछि ।
दूनू ऊंक मे अन्तर ई होइत अछि दिवालीक ऊकक आगू दिश खढ़ैक बीड़ी खोंसि कय स्वस्तिक क चिह्न बनाओल रहैत अछि । मै.
ऊख-सं., कुशियार, उखियार । हि. तत्सम
ऊगब-क्रि., उदय पायब । मै.
ऊघब-क्रि., वस्तु कें एतय सँ ओतय लय जायब । एकरै डगहब सेहो प्रयोग होइछ । मै.
ऊँच-अव्यय, उपर । मै.
ऊँट-सं., सवारी करैक योग्य सब सँ नमहर मरुभूमिक विशेष जीव । मै.
ऊठब-क्रि., १. उपर दिश अंगक भार करब । उपर मुहें स्पन्दन करब । २. सूतल सँ जागब । ३. उन्नति करब । मै.
ऊठि बैसब-क्रि., अत्यन्त लाभ सँ सुखी होएब । मै.
ऊद्-सं., जलाशय मे डुबकी गारिकय माछ खयनिहार विलाड़क आकारक जीव । उद् । मै.
ऊधर-विशे., सरसता अर्थात् हालरहित खेत । मै.
ऊन-सं., जन्तुक कोमल रोम सँ बनल सूत । मै.
ऊन सँ दून-विशे., कनेकै सँ बहुत बेशी । मै.
ऊनी-विशे., ऊन सँ बनल वस्तु । मै.
ऊपर-अव्यय, उर्ध्व देश, ऊच्च स्थान, शिरक माग (वैकल्पिक) उपर उपर । मै.
ऊरीबीरी लागब-क्रि., उच्चाटन लागब । परम्परागत स्थान वा व्यवस्था सँ अनिष्ठा जागब । मनक असन्तुलन होयब । पलायनक प्रबल इच्छा जागब । मै.
ऊषम-सं., ताप, वातावरणक उष्णता । मै.
ऊस-सं., नोनगर माटि, क्षार माटि, कपड़ा धोइक लेल धोबी जकर उपयोग करैछ । मै.
ऊँह-अव्यय, विरोधात्मक स्वर । मै.
ऊहापोह-सं., नीक अधलाहक विवेचना । दूरगामी विचार । सं. तत्सम
ऊहि-सं., भावी विषयक बुद्धि लगाकय स्वयं तथ्यक दर्शन करब । सं. तत्सम
ऊहिगर-विशे., यथार्थ कें शीघ्र पकड़ैवाला । मै.

ऊहुँक्-अव्यय, निषेधात्मक स्वर। मै.

ऋ-सं., मूर्द्ध स्थनीय ऋकार मात्राक स्वर वर्ण। मै.

ऋग्वेद-सं., चारू वेदक प्रथम वेद, आदिवेद। सं. तत्सम

ऋचा-सं., वेदक श्लोक अथवा वेदमन्त्र। सं. तत्सम

ऋण-सं., कोनो नियम सँ आबद्ध लेल गेल द्रव्य राशि। मै.

ऋतु-सं., वायुमण्डलक परिवर्तनक अनुसार बारहो मासक छः विभाग। आश्विन कार्तिक शरद् होइछ। एही क्रमें क्रमशः हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म आ वर्षा ऋतु होइछ। मै.

ऋतु-सं., स्त्री जातिक मासिक रजःस्राव। सं. तत्सम

ऋषि-विशे., तपस्वी, जे सत्यक दर्शन कय सिद्धान्त करथि। सं. तत्सम

ए

ए-सं., कण्ठतालु स्थानीय 'ए' मात्राक स्वर। मै.

एँ-अव्यय, १. बहुत छोट नेन्नाक कनैक स्वर। २. सरस्वतीक बीज मन्त्र। मै.

एँः-अव्यय, विशेषतासूचक वयस्कक ध्वनि। प्रयोग—"एँः एतवे मे अहाँ कें आश्चर्य भेल।" मै

ए-अव्यय, संस्कृतक 'एव' शब्दार्थक द्योतक, निश्चय सूचक। प्रयोग—"बाबूए गाम जाथु"। एतय बाबू मे 'ए' जोड़ला सँ निश्चयक ज्ञान करबै अछि। मै.

एः-अव्यय, निषेधात्मक ध्वनि। प्रयोग—"एः एना जुनि कहू।" मै.

एक्का-सं., १. एक चिह्नवाला तासक पत्ती। २. सब सँ छोट पुरान समयक घोड़ा गाड़ी। मै.

एकघरिया-विशे., अपन समाजक एकमात्र व्यक्ति। मै.

एकङ्ग-विशे., एकैटा पर निर्भर, एकदिश झुकल। मै.

एकचारी-विशे., १. एक घरक चार मे पृथक् सँ जोड़ल चार। २. एके चारक घर। मै.

एकचोपा-विशे., लिंग बढ़ल बच्छा, जकरा प्रधान रूपें बैह अंगटा देखार रहै। मै.

एकछाहा-विशे., जाहि वस्तु मे दोसर जातिक वस्तु नहि मिझहर रहैक। एके रंगक पदार्थ। मै.

एकजनिआँ-विशे., एके व्यक्तिक उपभोग योग्य। मै.

एकजूती-विशे., जाहि घर मे एके व्यक्तिक जूति अर्थात् शासन चलैक। मै.

एकटठा-अव्यय, एकत्र, एकठाँ कयल। (विशे.) एकैठाँ गोठियाएल। मै.

एकटक/एकटक्की-अव्यय, सं., अचल पलकवाला दर्शन, एकाग्र भ' क' दृष्टिक जमब। मै.

एकटक्की लागब-क्रि., एकै दिश तकितैं रहब। मै.

एकटङ्गा-सं., एकै टाङ्ग पर ठाढ़ रहैक अभ्यास। मै.

एकटङ्गादेब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो लग स्वार्थ सिद्धिक हेतु निरन्तर दयनीयता सँ प्रार्थना करब। मै.

एकटप/एकटप्पी-सं., शीघ्रता सँ एक बेरक गमन। मै.

एकटार-विशे., नीक अधलाह सब एकैठाँ मिझहर। अशुद्ध सँ शुद्धो मिलि गेल। मै.

एकठहुरी-विशे., सामूहिक वस्तु कें एकत्र कय एकता मे आनल। समष्टि। मै.

एकठाँ/एकठाम-अव्यय, एक स्थान मे। मै.

एकड़-सं., भूमिक मान विशेष। मै.

एकराड़-सं., प्रतिज्ञा, अप्पन वचनक निर्वाहक नियम। मै.

एकराड़नामा-सं., प्रतिज्ञा पत्र। उ तद्भव

एकड़बा-विशे., सदा एकाकी रहनिहार, जेरफुट्टू। मै.

एकत्र-अव्यय, एकठाम बहुतक स्थिति, एकठाँ। सं. तत्सम

एकत-सं., एकता, एकमत रहब। सहवृत्ति। -अव्यय, एकत्र, एकठाँ वा एक एकठाँ कयल। सं. तद्भव

एकतरफा-विशे., परस्पर मे एके दिशक व्यक्तिक कर्त्तव्य। मै.

एकता-सं., वैचारिक भेदक अभाव। सामूहिक अनुकूलता। सं. तत्सम

एकतारा-सं., ओड़नी, एके तारक सारंगी जकाँ वाद्य। मै.

एकतारा उठब-क्रि., एकाएक कोनो बातक अनिवार्य्य आवेग होएब। मै.

एकतालीस-संख्या, एक एकाइ चारि दहाइक अंक। मै.

एकतीस-संख्या, एक इकाइ तीन दहाइक अंक। मै.

एकदम-अव्यय, अत्यन्त, एकै रुपें। मै.

एकदिना-विशे., १. एकै दिनक अवधि मे सम्पन्न होमऽवाला। २. एकैदिन मे अनेक ठाम एके काज होइवाला। ३. एकैदिन मे अनेक प्रकारक विषय होमऽवाला। मै.

एकदिशाह-विशे., अपेक्षा मे एके पक्ष सँ उचित वा अनुचित कर्त्तव्य। मै.

एकन्नी-सं., प्राचीन मुद्रा (रुपैया) क सोलहम अंश। मै.

एकपट्टा-सं., एके पाटक बनल ओढ़ना। मै.

एक पतंग-विशे., (लाक्षणिक) सम्पूर्ण कुल वा घर मे एक मात्र रहनिहार। मै.

एकपरलर-अव्यय, कोनो एक समयक्रमक। मै.

एकपिठिया-सं., एकक उपरान्त पाछू लागल दोसरक जन्म। तेँ उत्तरोत्तर जेठाई छोटाई भेला सँ सबठाँ प्रतियोगिताक प्रवृत्ति। मै.

एकपिढ़िया-विशे., फुल मे एक मात्र पुरुष भेनिहार परम्परावाला वंश। मै.

एकपुरुषिया-विशे., एके पुरुषक भरोसें चलैवाला वंश। मै.

एकपेरिया-विशे., एक संग एके व्यक्तिक चलै जोग वाट। मै.

एकपोरा-विशे., बहुत दूर दूर पर गीरहवाला बाँस। मै.

एकफसिला-विशे., वर्ष मे एक फसिल मात्र दैवाला खेत। मै.

एकबट्टी-विशे., एक व्यक्तिक चलैक योग्य बाटक ठाओं। मै.

एकबतरिया-विशे., एके रंग वयसवाला। मै.

एकबरखा-विशे., एक वर्षक वयसवाला। मै.

एकबार-सं., समाचार पत्र, अखबार। उ. तद्भव

एकबाहि-सं., एक दिश अधिक भार। मै.

एकबाही-अव्यय, निरन्तर, लगातार। मै.

एकबोलिया-विशे., अपन एके बात पर अचल रहनिहार। जे बाजब से करब। मै.

एकभग्गू/एकभगाह-विशे., एकदिश झुकल। मै.

एकभुक्त-विशे., आहोरात्र मे एकाहार। सं. तत्सम

एकम्मा-विशे., एक मात्र देखि पड़ैवाला फल आम। मै.

एकमस्सू-विशे., एक मास मात्र पूर्व जनमल बच्चा। मै.

एकमहला-विशे., एकेटा छतवाला कोठा। मै.

एकमुड़िया-विशे., सभक मूड़ी एकेदिश कयल। मै.

एकमुहरी-विशे., एके दिशक मुहवाला समूह। मै.

एकर-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक 'ई' शब्दक सम्बन्धक शब्द। मै.

एकरगड़ी-विशे., एके बात पर सदति अड़ल रहैवाला। मै.

एकरंगा-विशे., एके रंगें रंगल नूआ। मै.

एकरा-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक 'ई' शब्दक कर्म। मै.

एकलक्खत-अव्यय, बराबरि, लगातार। मै.

एकलगना-विशे., एके समय सबठाँ होइवाला आवश्यक काज। मै.

एकलेव-विशे., माँटि सँ चिकनाओल एके बेरक भीत वा टाट। मै.

एकलैं-सं., एकारक मात्रा। मै.

एकसठि-संख्या, एक एकाइ छ दहाइक अंक। मै.

एकसम्हर-सं., सबटाक एकठाँ मिलान। सब कें सब सँ जोड़ल सम्पर्क। मै.

एकसर-विशे., एक मात्र व्यक्ति, एकाकी। अकेला। मै.

एकसरुआ-विशे., एकसेर रहि काज कयनिहार। मै.

एकसौं-विशे., सगरो एक रंगक समथरि भय एदिश झुकल फसिल। मै.

एकहड्डा-विशे., पातर शरीर प्रकृतिवाला माल। मै.

एकहत्तरि-संख्या, एक एकाइ सात दहाइक अंक। मै.

एकहत्थू-विशे., एके लोकक हाथ पर लगैवाला माल। मै.

एकहरी-विशे., एके तह बीनल डाली, पाती पथिआ आ आन कोनो बाँसक वासन। मै.

एकहारा-विशे., १. एके चक्रक पत्तीवाला फूल। २. स्थूलताहीन देहवाला। मै.

एकहेड़िया-विशे., एके दलक लोक। मै.

एकाँएक-संख्या, एकाइ पढ़ैक प्रथम पाठ। मै.

एकाएक-अव्यय, अकस्मात्, अचानक। मै.

एकाँएकी-अव्यय, बेराबेरी, उत्तरोत्तर। मै.

एकाकरन-अव्यय, लगातार, निरन्तर। मै.

एकाकार-विशे., दू मिलि एके बनल। सं. तत्सम

एकाग्र-विशे., एकैंटा पर ध्यान रखैवाला। सं. तत्सम

एकाङ्की-विशे., एके अंकक नाटक। सं. तत्सम

एकाङ्गी-विशे., एके पक्ष पर अवलम्बित। सं. तत्सम

एकाटार-विशे., नीक अधलाह सब एकै संग मिलल। मै.

एकाढ़-विशे., जेर फुट्टू, एकशरे रहब कें पसिन्न केनिहार। मै.

एकादशाह-विशे., मृत्युक एगारहम दिन, पहिल श्राद्धक दिन। सं. तत्सम

एकादशी-सं., प्रत्येक पक्षक एगारहम तिथि। सं. तत्सम

एकान्त-विशे., जनशून्य स्थान। सं. तत्सम

एकानबे-संख्या, एक एकाइ नौ दहाइक अंक। मै.

एकाबन-संख्या, एक एकाइ पाँच दहाइक अंक। मै.

एकामय-विशे., मिलिजुलिकय एक बनिगेल सब किछु। मै.

एकार्णवा-सं., (लाक्षणिक) एकत्र भऽकऽ भेदक अभाव। सं. तत्सम

एकारमारब-क्रि., नीच सम्बोधन करब। प्रयोग-"लेब देब मे एकार जोड़ब—यथा-लेबें देबें।" मै.

एकारि-विशे., आस परोसक खेत मे फसिल कटि गेला सँ बीच मे बाँचल फसिल लागल खेत। मै.

एकासी-संख्या, एक एकाई आठ दहाइक अंक। मै.

एकिक नियम-सं., एकक लेखा सँ बहुतक अनुपात बहार करैक प्रक्रिया। मै.

एकैस-संख्या, एक एकाइ दू दहाइक अंक। मै.

एकोद्दिष्ट-सं., वार्षिक श्राद्ध। मृत्यु तिथिक कर्म। सं. तत्सम

एकोर-सं., लागि रहित कुडोरि स्थान। मै

एकौर-विशे., १. एक दिशक कम भारवाला। २. एके साँझ कय लगैवाली (दूध दैवाली) गै महिस। मै.

एकौंस-विशे., एक दिश लवल (नत) मै.

एकौंसियाह-विशे., एक भाग मे भुकल जकाँ बनल। मै

एखन-अव्यय, ऐ छन मे। अखन, अखैन सेहो प्रयोग कयल जाइत अछि। मै.

एखनुका-विशे., एहि समय मे भेल अथवा होमऽ वाला। 'एखुनका' सेहो प्रयोग होइत अछि। मै.

एगरबेगर-विशे., क्रमहीन, विघटित, अस्तव्यस्त। असंयत। मै.

एगारह-संख्या, एक एकाइ एक दहाइ। मै.

एगो-अव्यय, एकटा, एक मात्र। मै.

एगोड़-अव्यय, एक संख्याक मात्र। एक। मै.

एँड़-सं., पैरक पाछू दिशक ठोस अंग। मै.

एँड़ा-सं., भीत आदि ऊँच वस्तुक जड़ि बलगर रखैक हेतु बान्हल अंश। मै.

एँड़ाठब-न०-क्रि., एँड़ सँ मारि मारिकय धाङब। एँड़ी सँ चोट देब। मै.

एड़ियाएब-क्रि., एँड़ी सँ ककरो पीटब। मै.

एँड़ी-सं., पैरक पाछू भाग, पैर आ टाङक जोड़ लग बढ़ल अंशवाला अंग। मै.

एँड़ीदौड़ी-सं., अनिच्छा सँ आवश्यकता आ क्षमता सँ अधिक जाइ अवैक क्रम। मै.

एड़ीदोरी-सं., गुल्ली डंटाक खेल मे घुच्चा आ गुल्लीक बीच नपैक गजाना। मै.

एत्ता-अव्यय, अवधि, सीमा इयत्ता। मै.

एतनी-अव्यय, थोड़क संकेत, एतबैक परिमाणक। मै.

एतने-अव्यय, देखू-"एतनी"। मै.

एतबा-अव्यय, परिमाण बोधक संकेत। मै.

एतबाक/एतबी/एतबैक-अव्यय, देखू-"एतबा"। मै.

एतय-अव्यय, एहि ठाम, अहि ठाम। मै.

एतीकाल-अव्यय, एतेक समय धरि। मै.

एतेक/एते-अव्यय, एहि परिमाणक। मै.

एनय-अव्यय, एम्हर। मै.

एना-अव्यय, एहि रुपें। मै.

एनाएनी-अव्यय, चेष्टा द्वारा कयल दिग्दर्शन। मै.

एनी-अव्यय, एम्हर, ऐदिश। मै.

एम्हर-अव्यय, ऐ दिश। एम्हर। मै.

एमाल-सं., नव नव धनखेतीक खढ़। मै.

एसकर/एसकरुआ-विशे., एके समाङ, संग देनिहार-हीन। मै.

एह !-अव्यय, क्रोध विवशता प्रकाशक सम्बोधन। मै.

एहन-विशे., उपमान सँ उपमेय कें मिलबैक संकेत। एहि प्रकारक। मै.

एहि-अव्यय, प्रस्तुत वस्तुक निर्देश। मै.

एहिना-अव्यय, एही प्रकारें। मै.

ऐ

ऐ-सं., कण्ठतालु स्थानीय वर्ण, ऐकार स्वर। मै.

ऐँ-सं., (अव्यय) सरस्वतीक बीज मन्त्र। जन्मक उपरान्त शिशु कें एहि प्रकारक ध्वनि सँ प्रथम प्रथम वाक्‌शक्ति प्रवाहित होइत छैक। मै.

ऐ-अव्यय, एहि। प्रयोग—"ऐ (एहि) बातक अर्थ की ?" मै.

ऐ-सर्व., अति समीपक प्रत्यक्ष निर्देशक। संस्कृत "एतत्" शब्दक अर्थ। मै.

ऐआम-विशे., उपयुक्त आ अनुकूल समय। मै.

ऐक्य-सं., एकता, मेल। मै.

ऐँचब-क्रि., झोंक मारि टेढ़ करब। झटका सँ घूमब। मै,

ऐचाताना-विशे., दून् दू दिशा मे स्थित आँखिवाला। प्रयोग—ऐँचाताना कहय पुकारि हम मानी कुइरा सँ हारि। मै.

ऐजन-अव्यय, पुनः पूर्वोक्ते विषय। मै.

ऐजन-सं., ग्राम्य उच्चारणक इञ्जिन। मै.

ऐंठ-विशे., दोसराक मुहक सम्पर्कवाला पदार्थ। मै.

ऐंठकचार-विशे., ऐंठ अन्न आ पानि सँ व्याप्त वा दूषित। मै.

ऐंठ काँठ-सं., ऐंठ एवं अन्य घृणास्पद वस्तुक समूह। मै.

ऐंठकूठ-सं., अनुपयोगी सब ऐंठाओल पदार्थ। मै.

ऐंठब-क्रि., १. घुमाएब। २. अत्यन्त गौरवें इतराएब। मै.

ऐंठलाह-विशे., गौरवक द्वारें ऐंठि ऐंठिकय बात कयनिहार। मै.

ऐंठा-सं., स्त्रीक केश सज्जाक फुदनावाला विशेष डोरी। मै.

ऐंठाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें मुह सँ लगाकय आनक हेतु दूषित कयदेब। मै.

ऐंठार-सं., ऐठ हाथ धोइक, ऐंठ वस्तु फेंकैक निश्चित स्थान। मै.

ऐंठी-सं., १. घुमा घुमाक देल पाक। अत्यन्त गौरव सँ टेढ़ गप आ क्रिया। मै.

ऐंढ़न-सं., कोनो ढील वस्तु कें घुमाकय पाक देवाक देवाक प्रक्रिया। मै.

ऐंढब-क्रि., कोनो वस्तु कें पाक दैक क्रम मे घुमाएब। मै.

ऐंढ़ी-सं., १. अधिक गुन (पाक) (लाक्षणिक) उचित सँ वेशी टेढ़ी। मै.

ऐंत-विशे., सुन्दर, सुदर्शन, कटगर। मै.

एतगर-विशे., सुन्दरता सँ भरल। मै.

एतिस-सं., स्वाभिमानक आडम्बर। मै.

ऐतिह्य-सं., सिद्धान्तक गप, आदेशक निर्द्धारण। सं. तत्सम

ऐतिहासिक-विशे., इतिहास सम्बन्धी वस्तु। सं. तत्सम

ऐनक ऐन-विशे., वास्तविक, यथार्थ रुपक, औचित्य सँ भरल न्यायपूर्वक। मै.

ऐँनमैँन-विशे., अनुरुप, एकरंग, एकेरुप। प्रतिमा। मै.

ऐँब-सं. दोष, अवगुण। उ. तत्सम

ऐला-सं., देहक रोग विशेष। जे रोग छोट छोट बढल मांसक कणक रुप मे होइत अछि। मै.

ऐश्वर्य-सं., सम्पत्ति। कोनो रुपक विशेष शक्ति। स. तत्सम

ऐँसतैँस-सं., क्रोधक आवेग मे अनेक हावभावक प्रदर्शन। मै.

ऐहब-विशे., सधवा, अहिंवाती, एकपतिका सोहागिन स्त्री। मै.

ऐहबकफड़-सं., नववधूक शुभागमनक अबसरक विशेष पकवान। द्विरागमन दिन गोल आ नाम नाम पकवान पकाकय वासन मे द' क' ढँकना सँ बन्न कय देल जाइछ। आएल नवकनियाँ ओकरा खोलैत अछि तखन लोक कें बाँटल जाइत अछि। ई मिथिलाक व्यवहार थीक। मै.

ओ

ओ-सं., कण्ठतालु स्थानक स्वरवर्ण। ओकार। मै.

ओ-सर्व., दूरवर्ती वस्तु कें निर्देश करैवाला संस्कृत क 'तत्' शब्द क मैथिली शब्द। मै.

ओऽऽ-अव्यय, स्वरण, आश्चर्य आ कौतूहल द्योतक। मै.

ओः-अव्यय, निषेध, विरोध आ पश्चात्ताप व्यञ्जक। मै.

ओ-अव्यय, संस्कृत क 'अपि' शब्दक अर्थ द्योतक। प्रयोग-"ऐ गाम मे साधुओ आ चोरो बसैत अछि। मै.

ओइरी-सं., धानक एक प्रभेद। सं० नीवार। मै.

ओइलन-सं., कोनो वस्तु कें ओलला सँ बहरायल निकृष्ट पदार्थ। मै.

ओकर-सर्व., परोक्ष निर्दिष्ट वस्तुक सम्बन्ध कारकक रुप। मै.

ओकरा-सर्व., परोक्ष निर्दिष्ट वस्तुक कर्मकारकक रुप। मै.

ओंकरा-सं., पासी सभक डाँर मे खोंसल लोहक अंकुसी जाहि मे ताड़ी ढारिकय रखैलेल लवनी लटकल रहैछ। मै.

ओंका-सं., बाँसक काइम सँ बनल गोल आ नाम ढाढ़ जकाँ वासन जाहि मे मखानक गूड़ी पानि सँ छानि राखल जाइछ। मै.

ओकाइत-सं., क्षमता, वैभव। ओकात। उ. तद्भव

ओकाएब-क्रि., बमनक वेग होयब। मै.

ओकार-सं., ओएँ ओऐँ कयला पर बहराएल पदार्थ। मै.

ओंकियाएब-क्रि., शिराह वरदक गाइक प्रति ओं ओं शब्दक संग छुच्छ वासना व्यापार होएब करब। मै.

ओकील-विशे., अधिवक्ता, दण्ड नीतिक जानकार। वकील। उ. तद्भव

ओगरब-क्रि., संरक्षण करब। निरन्तर लग मे रहि ककरो रक्षा करब। मै.

ओगरबाह-विशे., नियत संरक्षक। मै.

ओगरबाहि-सं., सदिखन रक्षाक तत्परता। मै.

ओगरिया-सं., नियमित रुपक ओगरैक काज। मै.

ओगारब-क्रि., आवश्यकता सँ अधिक भोजन पदार्थ भोजनकर्त्ताक आगू धरब। मै.

ओंघराएब-क्रि., भूमि पर पड़िकय सम्पूर्ण शरीर कें उनटा पुनटाकय चलाएब। मै.

ओंघराओब-प्रे. क्रि., कोनो वस्तु कें लोटाकय चलाएब। मै.

ओंघरिया मारब-क्रि., शोक वा पीड़ा सँ भूमि पर लोटाएब। मै.

ओंघाएब-क्रि., तन्द्रा मे रहब, निद्राक पूर्वाभास मे होएब। मै.

ओंघी-सं., निद्राक प्रबल इच्छा, आँखि आ मनक शिथिलतापूर्वक लटपटाएब। मै.

ओङ्कार-सं., ओइम् शब्द, प्रणव। सं. तत्सम

ओङठन-सं., जितिया व्रत सँ पूर्व रातिक शेष मे स्त्रीगणक भोजन करैक विधि। मै.

ओङठनी-सं., ओङठैक वस्तु जाहि पर पीठक भरें टिकि सकी। मै.

ओङठब-क्रि., देखू- "उठंघब"। कोनो वस्तु मे पीठ टिकाकय बैसब। एकरा 'ओठंघब शब्दें सेहो प्रयोग होइछ। मै.

ओङार पोङार-सं., बिना स्नानें तेल उबटन सँ जनमौटी नेन्नाक देहक परिस्कार। मै.

ओङारब-क्रि., तेल आ उकटन सँ देहक परिस्कार करब। मै.

ओछ-विशे., १. अनुपात मे छोट। २. कोनो वस्तुक माप मे नहि पुरनिहार। अधम। मै.

ओछगर-विशे., नाम चाकर मे घटब। नीचता सँ भरल। मै.

ओछाएब-क्रि., विस्तृत करब, विथारब। मै.

ओछाओन -सं., सूतैक हेतु विछबैक वस्तु। मै.

ओछाह-विशे., नीचता, क्षुद्रता सँ भरल, लघुतायुक्त स्वभाववाला। मै.

ओज-सं., शरीरक तेज, प्रभावशालिता। सं. तद्भव

ओज-सं., अनुदारता, कृपणता, कञ्जूसी। प्रयोग-"भोज मे ओज कयने नै बनै छै। मै.

ओजन-सं., तौल, गुरुता, भारीपन। वजन। उ. तद्भव

ओजस्वी-विशे.. प्रभावी, जोश भरल, तेजस्वी। सं. तत्सम

ओजी-अव्यय, बदला मे, स्थान पर। मै.

ओझर-विशे., १. ओझल, दृष्टि बिन्दु सँ बहार। २. झंझट, समस्या। मै.

ओझराएब-क्रि., आपस मे गुत्थी लागि जाएब। मै.

ओझराह-विशे., आपस मे घुरची लगैवाला। मै.

ओझा-विशे., १. झा उपाधिवाला क सम्मानक सम्बोधन। २. भौतिक उपद्रव मे झार फूँक टोना आदि करैवाला गुनी आ धागि। मै.

ओझा-सं., डोरी सँ खाट बीनैक काज मे डोरी कें अड़ाकय बझबैक हेतु गीरह देल छोट डोरी। मै.

ओझागिरी-सं., तन्त्र मन्त्र आ झार फूँक करैवाला गुण। मै.

ओझा विवाहल गाम सुखले-लोकोक्ति- (लाक्षणिक) अमरुखक धन बुधियारक भोग। मै.

ओट-सं., आँखिक परोक्ष, आढ़। मै.

ओंटी-सं., पेटक नीचाँक वस्ति प्रदेश, मूत्राशय लगक अंग। मै.

ओठ-सं., १. उपरक ठोर। २. गाड़ी कें गड़कै सँ बचै लेल देल अड़ना। मै.

ओठँघन-सं., देखू—"ओङठन"। स्थान, व्यक्ति आ व्यवहार भेदें शब्द भेद। मै.

ओठँघब-क्रि., देखू—"ओङठल" प्रयोग भेद। मै.

ओठर-सं., १. कर्त्तव्यताक अत्यन्त समीप काल। २. कङनी। ३. अन्तिम समय। मै.

ओठ लगाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें बिना खयने केवल ठोर सँ भिड़ाएब। मै.

ओठ लागब-क्रि., कोनो कठिन वस्तुक द्वारे गाड़ीक चक्काक अड़ि जाएब आ फँसि जाएब। मै.

ओड़नी-सं., एके तारवाला सारङ्गीसन साधुक बाजा। मै.

ओड़ब-क्रि., आवश्यक रुपें कर्त्तव्य होयब। मै.

ओड़ल-विशे., अवश्य कर्त्तव्य रुपें उदमाहल। मै.

ओड़हा-सं., आगि मे झरकाओल गाछ समेत काँचे खाद्यान्न। मै.

ओड़हाडाढ़ी-विशे., आकुलतापूर्ण, व्यग्र। मै.

ओड़ाहब-क्रि., काँच बदामक गाछ समेत वा एहन आनो गाछ समेत अन्न कें खाइक हेतु झरकाएब। मै.

ओड़िका-सं., दूध चलबैक हेतु नारिकेरक खोइया मे पातर नमहर डन्टी लागल करौछ जकाँ बनल पात्र। मै.

ओढ़न पहिरन-विशे., ओढै पहिरैक वस्त्र। मै.

ओढ़ना-सं., पैघ मोट सामान्य ओढैक वस्त्र। मै.

ओढ़नी-सं., छोट आकारक सामान्य स्त्रीक ओढ़ैक वस्त्र। मै.

ओढ़ब-क्रि., विशेष रुपें विशेष वस्त्रें उपरक देह कें झाँपब। मै.

ओढ़ुल-सं., लाल रंगक फूल विशेष। जया पुष्प। मै.

ओतऽ/ओतय-अव्यय, परोक्ष निर्दिष्ट स्थान, ओहि ठाम। मै.

ओतनी/ओतने-अव्यय, दूर निर्दिष्ट परिमाण। मै.

ओत प्रोत-विशे., विलीन, अवलिप्त, व्यापित। मै.

ओतवस्थित-विशे., दृष्टपूर्व अवस्था मे स्थित। मै.

ओतबा/ओतबैक-अव्यय, दूरवर्ती परोक्ष निर्दिष्ट परिमाण। मै.

ओतीकाल/ओतीखन-अव्यय, भावनास्थित समयक परिमाण। मै.

ओतुका-विशे., अनको सम्भावित स्थान सम्बन्धी। मै.

ओतेक-अव्यय, ओहि परिमाणक। मै.

ओदरब-क्रि., प्राकृतिक लागि छूटब, विच्छिन्न होयब। मै.

ओदराह-विशे., स्वतः विलग होइवाला। मै.

ओदाउजि-सं., समानान्तर मे रहैक भाव, प्रतिद्वन्द्विता। मै.

ओदार-सं., स्वतः विभक्त भऽ जाइवाला जोड़। मै.

ओदावर्त-सं., बदरी आ उबेरक अनुकूल क्रम। मै.

ओदासूखा-सं., पानि पड़ैक आ सुखाइक अनुकूलता। मै.

ओदि-सं., गर्भिणीक स्वाभाविक अभिलाषा। दोहद। मै.

ओधबाध-विशे., जीवन मरणक संशय दशामे आनल। मै.

ओधि-सं., काटल गाछ आ बाँसक पुरान जड़ि। मै.

ओनऽ-अव्यय, ओहि दिश। मै.

ओना-अव्यय, १. अन्यथा। २. ओहि प्रकारें। मै.

ओनाओनी-अव्यय, हाथ सँ दिशा निर्देशक क्रम सँ। मै.

ओनाही-अव्यय, (ग्राम्य शब्द) ओहि रुपें। मै.

ओनी-अव्यय, देखू—"ओनऽ"। मै.

ओफ-अव्यय, श्रमसूचक शब्द।
सं., सूर्यक मधुर ताप। मै.

ओबा-सं., मरकी, हैजा, महामारी। मै.

ओम्हर-अव्यय, देखू—"ओनऽ"। मै.

ओर-सं., अन्त, अवसान। प्रयोग-"सखि हे हमर दुखक नहि ओर।" विद्यापति। मै.

ओरब-क्रि., रोकब, अवरुद्ध करब। मै.

ओरल-विशे., उपस्थित, बाधक रुपें सम्मुख मे वृत्त। मै.

ओर लागब-क्रि., कोनो काज समाप्त प्राय होयब। मै.

ओराएब-क्रि., अन्त ठेकब, समाप्तिक लग पहुँचब। मै.

ओरानी-सं., घर मे लगाओल मुख्य चार सँ अलग अस्थायी चार। मै.

ओरि-सं., भार (बहँगी)क पहिल भागक भारीपनक समान भार करैक हेतु दोसर भाग मे देल जाइ-वाला वस्तु। मै.

ओरि फूलब-क्रि., गर्भक परिपक्व होइक स्थिति मे गर्भिणीक देह फूलब। मै.

ओरियाएब-क्रि. १. नीक जकाँ अर्थात् यत्न सँ राखब २. उचित रुपें काज कयल होयब। मै.

ओरियाओन-सं., प्रबन्ध, व्यवस्था, सामग्रीक जुटान। मै.

ओरियाकए-अव्यय, सावधानीपूर्वक। मै.

ओरियानी-विशे., तिलें तिलें वस्तु जुटौनिहार। मै.

ओल-सं., व्यञ्जनक हेतु स्थूलकन्द विशेष। मै.

ओलती-सं., चारक निचला भाग, जेम्हर देने पानि नीचाँ खसैत अछि। मै.

ओलन-सं., खेतक खढ़पात वीछि कय तथा अन्नक जमा कयल निरसल पदार्थ। मै.

ओलब-क्रि., कोनो वस्तु कें चलाकय सार भाग लय निरसल वस्तु कें अलग करब। मै.

ओलरब-क्रि., कर्त्ता अपन शरीरक भार छोड़ि देब। निर्भर होयब। आत्मसमर्पण करब। मै.

ओला-सं., मेघ सँ बरिसल पाथर कण सन वर्फ। हि. तत्सम

ओलाओचोलाओ करब-क्रि., अनुचित हँसी ठट्ठा कय अकच्छ करब। मै.

ओलाबिलम-सं., आश्वासन, सान्त्वना, धैर्य धरा-एब। मै.

ओलार-विशे., आगू (मुहरा) दिश हल्लुक। मै.

ओलि-सं., प्रतिशोध, बदला, विरोधक प्रतिक्रिया। मै.

ओलिपालि-सं., कोनो वस्तु कें व्यर्थ अव्यवस्थित करैक चेष्टा। उपर नीचाँ करैक मुद्रा। छिड़ियऽबैक क्रिया। मै.

ओस-सं., शीतक बिन्दु, पाला। मै.

ओसबेराएब-क्रि., घासपात परक ओस विलाएब। मै.

ओसर-सं., जाड़क भोरुका समय। मै.

ओसाएब-क्रि., बरसातक गर पर भूसी उड़ाकय अन्न (गहूम आदि) क परिष्कार करब। मै.

ओसाओन-सं., गहूम आदि अन्नक परिष्कारक क्रम। मै.

ओसारा-सं., घर मे लागल खुलता भाग। मै.

ओसारी-सं., कूटैक पीसैक समय अन्नक लगाओल क्रमक अनुसार भाग। मै.

ओसौनी-सं., देखू-"ओसाओन"। मै.

ओह !-अव्यय, व्यथा, खेद, निषेध, ग्लानि आ आनन्द व्यञ्जक शब्द। मै.

ओहदा-सं., प्रतिष्ठा, पदवी, सत्ता। उ. तद्भव

ओहन-अव्यय, ओहि प्रकारक, परोक्षवर्ती वस्तु जकाँ। ओहेन सेहो प्रयोग होइछ। मै.

ओह्सब-क्रि., क्षीण होएब, गलब। मै.

ओहाएब-क्रि., पशुक मैथुन करब। मै.

ओहाओब-प्रे. क्रि., स्त्री पशु कें पुरुष संगम करा-एब। मै.

ओहान-सं., पशु मैथुन क इच्छाक क्रम। मै.

ओहार-सं., आवरण, अढ़ करैक हेतु कपड़ाक वस्तु। मै.

ओहास-विशे., पानिक संग बहल घासपात। मै.

ओहासी-सं., नीचाँ दिश बहैत पानिक वेग। मै.

ओहिठाम-अव्यय, बुद्धिवर्ती स्थान पर। मै.

ओहिना-अव्यय, बिन कारणें वा गुप्त कारणें। मै.

ओहो !-अव्यय, अपशोच, कष्ट मे उच्चरित शब्द। सर्व.,-ओ वस्तु, ओ। मै.

औ

औ-सं., कण्ठ तालु स्थानक स्वरवर्ण औकार। मै.

औ !-अव्यय, सभ्यलोकक सम्बोधन। मै.

औअलि-विशे., उत्तम। अव्वल। उ. तद्भव

औआएब-क्रि., व्यग्रताक कारणें बुद्धि कुण्ठित भय गेला सँ समक्षीक वस्तुक ध्यान नै रहने व्याकुल होएब। मै.

औक-सं., बोकरैक वेग, वमन, उनटी। मै.

औकब-क्रि, बमन करब, वोकरब। मै.

औकी-सं., बमन करैक शंका। मै.

औंट-सं., आँच सँ फेनाएल दूध आदि मे ओड़िका सँ चलाएब। मै.

औंटन-सं., औंटैक क्रम। मै.

औंटब-क्रि., दूध आदि द्रव वस्तु कें उधियाकय चलायब। मै.

औंठ-सं., कपड़ाक किनार। कातक अंश। मै.

औंठा-सं., हाथ पैरक बुढ़वा (मोट मुह) आङुर। मै.

औंठा निशान-विशे., वाम हाथक औंठाक छाप। मै.

औंठिया केश-विशे., घुरुमि कय औंठी जकां गुथल केश। अलक। मै.

औंठी-सं., आङुरक गहना, मुद्रिका। मै.

औंड़ मारब-क्रि., १. शब्द करैक संग मालजालक छटपटाएब। २. पेट मे व्यथाक संग वायुक चलव। मै.

औॅन्ह-विशे., अन्धकार सँ भरल। मै.

औन्हब-क्रि., कोनो वस्तुक मुहक गरनीचाँ दिश करब। मै.

औन्हा-विशे., औन्हल मुहवाला। मै.

औन्हागूर-विशे., भीतर दिश मुहवाला गूर। मै.

औन्हापथारी-सं., अन्देशा भरल चिन्ता सँ भरल चञ्चलता। मै.

औन्ही-सं., ऐ नामक पैरक आङुरक गहना। मै.

औनाएब-क्रि., विकलता सँ इतस्ततः अन्वेषण मे व्यग्र होएब। मै.

और-अव्यय, समुच्चयबोधक शब्द। मै.

औरस-विशे., अर्धाङ्गिनी सँ अपन उत्पन्न कयल सन्तान। सं. तत्सम

औरब-क्रि., पेट मे शब्दक संग वायुक संचार सँ वेदना होएब। मै.

औरमारब-क्रि., बान्हल मालक चञ्चलता आतुरता सँ घूमब। मै.

औॅल-सं., ताप, गर्मी, उष्णता। मै.

औॅलबौॅल-विशे., वायुमंडलक विषमताक द्वारें व्याकुल। मै.

औलिया-विशे., १. उचित सँ वेशी उदार। २. सिद्ध साधु। मै.

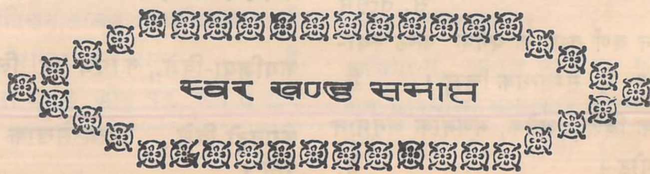
औषध-सं., औषद, दवाई। सं. तत्सम

औषधार्थ-विशे., औषधक रुपें प्रयोगक योग्य। सं. तत्सम

औषधी-सं., औषध करैक व्यवसाय। मै.

औसब-क्रि., लेपब, पोछब, गलब। मै.

औहरि मारब-क्रि., दौड़ैक रुपें अन्वेषण करैक ध्येय सँ इतस्ततः ताकब। मै.



क

क्यारी-सं., पानि बसबैक हेतु आरि बान्हल छोट छोट खेत । छनका । मै.

क्यास-सं., स्मरण कय बातक निष्कर्ष बहार करैक चेष्टा । उ. तद्भव

क्यो-अनिश्चयवाचक सर्व., अनिश्चित लोक । मै.

क्योला-सं., केतक फूल (केवड़ा) । मै.

क्रम-सं., ढररा, शिलशिला, शृंखला । सं. तत्सम

क्रमशः-अव्यय, एक एक क्रमें । सं. तत्सम

क्रय-सं., कीनब, मूल्यक स्थान मे वस्तु लेब । सं. तत्सम

क्रिया-सं., १. व्यवहार । २. श्राद्ध आदि कर्म वाक्यक पूर्तिक हेतु धातु सँ बनल तिङन्त शब्द । सं. तत्सम

क्रीस्तान-विशे., इसाई धर्मावलम्बी पाश्चात्य जाति । मै.

क्रूर-विशे., कठोर, निर्दयी । सं. तत्सम

क्रोटि-संख्या, कोटि, करोड़ । सं. तद्भव

क्रोध-सं., प्रतिहिंसात्मक उग्रभाव । तामस । सं. तत्सम

क्वाक-सं., जलाशयक लग रहनिहार पक्षी चक्रवाक । मै.

क्षण-सं., समयक सूक्ष्मतम मान । सं. तत्सम

क्षत विक्षत-विशे., काटल खोंटल । खण्डित । सं. तत्सम

क्षति-सं., हानि, नाश । सं. तत्सम

क्षीण-विशे., दुब्बर पातर, अब्बल, घटल । सं. तत्सम

क्षुब्ध-विशे., दुःख आ विवशता आदि भाव सँ प्रभावित । सं. तत्सम

क्षोभ-सं., पीड़ा विवशता आदि हीन भावें भरल मनक कुण्ठा । सं. तत्सम

क-सं., १. व्यञ्जन वर्ण तथा क वर्गक कण्ठ स्थानीय स्पर्श वर्ण । २ मै. सम्बन्धक चिह्न । मै.

कइएक-सार्वनामिक विशे., अनेक, गणनाक अनुमान सँ बहार । बहुत गोट । मै.

कएनिहार-विशे., करैवाला । मै.

कएम-प्रश्नवाचक सार्वनामिक पूरणार्थक विशे., कोन संख्यावाला । मै.

कक्षा-सं., खण्ड, वर्ग, श्रेणी । सं. तत्सम

कंकड़-सं., १. पाथर आ झुटकाक छोट छोट कठोर कण । २. अनेक सुगन्धित पदार्थ मिलाओल धूम्रपानक द्रव्य । मै.

कँकड़ी-सं., लत्ती मे फड़ैवाला सुस्वादु फल विशेष । फूटि । बतिया । मै.

ककरोहटि-सं., धनखेतीक आरि कें छेदिकय काँकोड़ द्वारा बनाओल काँच माटिक ढूह । मै.

ककवा-सं., केश थकरैक साधन । मै.

ककवा कोइल-विशे., (लाक्षणिक) जेना कोआ कोइलीक झगड़ा मे अनेक कोइली नोचैक आ बजैक चेष्टा सँ कौआ कें आकुलकऽ दैत अछि तहिना एकेबेर अनेक लोकक टोकला सँ आकुल । मै.

ककर-प्र. वा. सर्व., सम्बन्ध कारकक रुप । मै.

ककरा-प्र. वा. सर्व , के शब्द कर्मक रुप । मै.

ककरासिंगी-सं., एक बूटी । मै.

ककरेजा-सं., औषध विशेष । मै.

ककरैल-सं., जड़ीक रूप मे विशेष औषध । मै.

ककरो-अनि. वा. सर्व., सम्बन्धक रुप । मै.

ककरौ-अनि. वा. सर्व., कर्मक रुप । मै.

ककहरा-सं., क, ख, आदि अक्षर सीखैक क्रम । मै.

ककहा-सं., ककवा, (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

ककार-सं., 'क' अक्षरक निर्देश । मै.

कखन-प्र. वा. अव्यय, कोन वेर मे, कोन समय मे । मै.

कखनो-अ. वा. सर्व. अव्यय, कोनो अनिश्चित क्षण मे । मै.

कखनुक/कखनुका-विशे., कोन समयक सम्बन्धी । मै.

कँखियाएब-क्रि., १. छोट छोट गाछ मे गीरह पर मूड़ी उगब । २. काँख तर दवाएब । मै.

कँखौर-सं., काँख मे होमऽवाला गूर (घाओ) । मै.

कगजंघ-विशे., कौआ जकाँ छोट पैघ जांघवाला । मै.

कगजिया-विशे., कागज पर लिखैवाला पेन्सिल । मै.

कगतही-विशे., नित्य लेखाक कागज रखैवाला पेटी । मै.

कँगनी-सं., ऊँच स्थानक अन्तिम कोर । मै.

कँगहिया-सं., छोट ककबा वा कँगही । मै.

कंक-विशे., अत्यन्त खिन्न, मांसहीन देह । गुप्तवास मे युधिष्ठिरक नाम । मै.

कङ्गना-सं., गट्टा परक प्रसिद्ध गहना। एकरा कँगना आ कङना सेहो प्रयोग होइछ। प्रयोग—"जे मोरा कहत उगना उदेश तकरा देव हम कङना सनेस। मै.

कङ्गारु-सं., आस्ट्रेलियाक प्रसिद्ध वन्य जीव। मै.

कङ्गाल-विशे., जकरा धन नामक वस्तु रहबे नै करैक। अत्यन्त भिखहारि। मै.

कच्चक-सं., छोटका रुखान जाहि सँ काठ मे पातर खत गढ़ल जा सकैछ। कमारक अस्त्र। मै.

कच्चा-विशे., अजोह, अनधिकृत, काज मे अलूरि। हि. तत्सम

कच्ची-विशे., अनधिकृत लेख, ठोस नहि रहनिहार। मै.

कच्छ-सं., १. अलङ वा खण्ड। प्रयोग—अध्ययन कच्छ। २. भारतक एक प्राचीन प्रदेश। मै.

कच्छप-सं., जलजन्तु काछु। सं. तत्सम

कच्छा-सं., १. देखू—"कक्षा"। २. कुस्ती लड़ैक बेर पहलवानक पहिरैक नाममात्र वस्त्र। स. तद्भव

कच्छाछोप-विशे., पहिरल कच्छा अर्थात् जाँघक राग धरि पहुँचैवाला पानि। मै.

कच्छी-सं., गुप्ताङ्गक आवरण मात्रक वस्त्र। नङोटा। मै.

कऽच-सं., बेसन मे मसाला दय बड़ जकाँ पेंघ तरल भोज्य पदार्थ। मै.

कचकच-विशे., दाँत तर कच द' उठिकय देह सिहरऽवैवाला पदार्थ, बालु। मै.

कचकचाएब-क्रि., कोनो बात मे तमसाएब तथा क्रोधक प्रवृत्ति राखब। विशेष बात सँ ककरो खिसिअ'वैक चेष्टा करब। मै.

कचकचाह-विशे., सदिखन तामसक प्रवृत्तिवाला। मै.

कचकड़ा-सं., काच मिश्रित मृदु धातु। मै.

कचकब-क्रि., कोनो अंगक जोड़ पर अंग संचार भेला पर अचानक दुखा उठब। मै.

कचकूह-विशे., नीक जकाँ नहि पाकल माटिक वासन। कनेको टोना लगने फूटैवाला वस्तु। मै.

कचठ-विशे., किछु अंशें काँचे पदार्थ। पूर्णतया नहि पाकल। मै.

कचड़ा-सं., घर द्वारक परिष्कार सँ जमा घृणित वस्तुक समूह। मै.

कच द' उठब-क्रि., दाँत तर बालु आ पाथर आदि कठोर कण दबला सँ देह सिहरब। दाबल गेला सँ मृदु वस्तुक छहोछित्त टूटब। मै.

कचनार-सं., बासन्ती फूल विशेष। मै.

कचब-क्रि., अन्धाधुन्ध काटब। मै.

कचवच करब-क्रि., अनेक लोकक एकैबेर असंबद्ध कर्णकटु बाजब। मै.

कचबचिया-सं., बहुत अप्रिय शब्द केनिहार पक्षी। मै.

कचरबचर-विशे., आक्रोश आ उलहनपूर्वक निन्दा घृणा आ दोष रागक वचन। मै.

कचरब-क्रि., इच्छानुसार खाएब। सुखद दुखद विनु सोचनँ खाएब। मै.

कचरम कूट-विशे., १. अनधुन आघात। २. भिन्न भिन्न प्रकारक खाद्य। मै.

कचरा-सं., केहुनी पर काचक मोटगर चूड़ी जकाँ पहिरैवाला गहना। मै.

कचरी-सं., कचल प्याउजक संग बेरुनक बनल चापट बड़ जकाँ बनल भोज्य पदार्थ। मै.

कचरीबचरी-सं., दोषराग, निन्दा घृणा आ उलहन-उपदर सँ भरल गप। मै.

कचलोहिया-विशे., अब्बल, प्रकृतिक प्रभाव कें सहन करैमे असमर्थ। मै.

कचहरी-सं., न्यायिक एवं प्रशासनिक निर्णय स्थल। उ. तत्सम

कचार-सं., घरक ऐंठ काँठ आ वाढन सोढन आदि दूषित आ घृणित वस्तुक समूह। मै.

कचारब-क्रि., कचार सँ सगरे घृणित राखब। मै.

कचाल-सं., पानिक संग असर्ध वस्तु सभक मिलने बनल घृणित थाल। मै.

कचिया-सं., फसिल आ घास कटवाक मेहीं काँटसन धारवाला चन्द्राकार लोहक पत्तीक अस्त्र। मै.

कँचिय़एब-क्रि., काँची (नेत्र मल) सँ आँखि भरि जाएब। मै.

कचिदेब-क्रि., अस्त्र सँ अनठेकान घातकय क्षत विक्षत करब। मै.

कचुरी-सं., कबै माछक बच्चा। मै.

कचूर-सं., कचूर। हरदिक आकार प्रकारक मोट कन्दवाला सुगन्धित द्रव्य। जकर प्रयोग-"प्राचीन काल मे शृंगारक ध्येय सँ मुह मे लगवैक हेतु सुगन्धि चूर्ण (पाउडर) बनवै मे होइत छल।" सं. तद्भव

कचैठ-विशे., आँशिक रुपें काँच। काँचे सन अनुभव दैवाला पाकल फल आदि। मै.

कचौआबध-सं., मारि मे अनधुन अस्त्र चलाकय असंख्य लोकक हत्या। मै.

कचोट-सं., ममता भरल पश्चात्ताप अर्थात् पछतावक। मै.

कचौड़ी-सं., पूरी जकाँ फूलल फूलल अनेक स्वादिष्ट मसाला सँ युक्त तेल वा घी मे छानल मैदाक भोज्य पदार्थ। मै. ऐ प्रसंग मे क्यो कवि प्रशस्ति गौने छथि-माणोदरी सुभग हिंगु सुवास युक्ता शुण्ठयादि जीर भरि चादिगिरर्चिण च। हे हे कचौड़ि घृत चौरि नमो नमस्ते। मै.

कछटा-सं., गुप्ताङ्ग मात्र झँपैक जोग उपनयनक बरूआक पहिरैक नव वस्त्रक खण्ड। मै.

कछनीकाछब-क्रि., गमछा अथवा कोनो नूआक टुकड़ा सँ लज्जा निवारण करब। मै.

कछब-क्रि., माटि पर हेराएल तेल वा घी सन द्रव पदार्थ कें हाथ आ आङ्ुर सँ पोछिकय उठाएब। मै.

कछमछ करब-क्रि., आन्तरिक आकुलता अथवा अस्थिरता आ चञ्चलता सँ अनेर अंग चालन करब। मै.

कछमछी-सं., रोग आ आन्तरिक पीड़ाक द्वारें अशान्त मनें देहचालन एवं अस्थिरता। मै.

कछमछाएब-क्रि., कछमछी सँ मन सँ शरीर धरि अस्थिर रहब। मै.

कछबी-सं., यकृत वृद्धि, पेटक रोग विशेष, एकरा कछुवी सेहो प्रयोग होइछ। मै.

कछार-सं., १. भोंकैवाला लोहाक सुलफावाला अस्त्र। २. जलाशय कातक भूमि। मै.

कछिआ पछार-विशे., प्रतिदिन बढ़ैत नवयुवतीक यौवनक द्वारें पहिरल सिकस्त आङी जे केहनो आत्म संयमीक मनके पछारि दै अछि। मै.

कछुआ-सं., काछु, दीर्घजीवी जलजन्तु। मै.

कछुआडावर-विशे., जाहि जलाशय मे पानिक कमीक द्वारें काछुए टा रहैत हो। मै.

कछुआपीठ-विशे., कछुआक पीठसन बीच मे ऊँच चारू दिश ढालू भूमि। मै.

कछेर-सं., गहीर स्थानक कातक कङनी ठाढ़ ऊँच स्थान। मै.

कछौर-सं., जलाशयक सटल भीजल स्थान। मै.

कज्जल-सं., स्निग्ध वस्तुक द्वारा उत्पादित कारी द्रव, आँखिक अलंकार। काजर। सं. तत्सम

कज्जी-विशे., कोनो अंगक विकलता सँ अक्षम। मै.

कजरंक-विशे., गाढ़ कारी रंगक देहवाला। मै.

कजरकाठी-सं., काजर करैक शलाका, काठी। मै.

कजरगोर-विशे., कारी रहनौ शरीरक कान्ति सँ सुन्दर। मै.

कजरब-क्रि., काजर करब। प्रयोग-"कजरल नयनक कोरजनु हिय मे दैछ नछोरा।" जयराजा सलहेस मैथिली महाकाव्य। मै.

कजरा-सं., १. बाँहि परक गहना विशेष। २. धुआँ धुकुर सँ जमल कारिख। मै.

कजराह-विशे., काजर सन रंगवाला, काजर भरल। मै.

कजराएब-क्रि., काजर क' देब। काजर भरब। मै.

कजरी-सं., १. तीतल भूमिक जमल प्रदूषण। २. विशेष लयवाला गीत। मै.

कजरौट-सं., गराँ मे पहिरैवाला स्त्रीगणक गहना। जे मास स्नान (मसनही अर्थात् दहनही) क समयक भार मे नव विवाहित कनियाँक सासुर सँ उपहार मे अवैक परम्परा अछि। मै.

कजरौटी-सं., लोहक कैंचवाला चापट काजर पाड़ैक वासन। मै.

कजली-सं., खापड़िक पेन आ डिबियाक रासि सँ देबाल मे जमल कारिख। मै.

कञ्च-विशे., अपन रंग मे निर्मल। प्रयोग-गंगा जल हरियर कञ्च होइत छैक। मै.

कञ्चन-सं., सोन, सुवर्ण धातु। सं. तद्भव

कञ्चु-सं., नाम चाकर पनमा आकारक साग। मै.

कञ्छब-क्रि., पेट मे निरन्तर नाम मात्रक वेदना होएब। मै.

कञ्ज-विशे., सुशोभित, सुन्दर। मै.

कट्टर-विशे., नियम सँ चल विचल नहि भेनिहार। कठोरता सँ बातक पालन केनिहार। मै.

कट्टा-विशे., सदिखन कटैक व्यवसाय करैवाला। मै.

कट्टिस-सं., मिलानक विच्छेद। लिखै पढ़ै मे कोनो अंश कें काटब। मै.

कट्ठम -विशे., काठ जकाँ कठोर। पाक रहित। गुल गुल नहि। (फल)। मै.

कट्ठर-विशे., १. (लाक्षणिक) कठोर हृदयवाला। २. अपक्व फल। मै.

कट्ठा-सं., खेतक परिमाण विशेष। मै.

कट-सं., १. अवधि, समयक सीमा (उर्दू-करार)। २. निश्चयात्मक वचन (प्रतिज्ञा)। ३. छवि छटा आ आकार प्रकार। प्रयोग-"एहि नेन्नाक कटगर मुह छै। कट सेहो सुन्नर छै।" मै.

कटकट-अव्यय, कठोर वस्तु कें चिबवै मे दाँतक तर मे उठल अव्यक्त ध्वनि। प्रयोग-"कटकट विकट ओठफुट पाँडरि"—विद्यापति। मै.

कटकटाएब-क्रि., कड़ा वस्तु कें दाँत सँ शब्द समेत चिबाएब। मै.

कटकी-सं., कण्ठक गहना विशेष। मै.

कटकुट-सं., १. ठाम ठाम अक्षर कटैक चिह्न। २. आंशिक रुपें छाँटब। मै.

कटकेना-विशे., १. सावधिक ऋण। २. निश्चित समयक बात। मै.

कटगर-विशे., छवि छटाक सन्तुलन सँ अत्यन्त ऐंत। मै.

कटगैनी-सं., १. जड़ीबूटी विशेष। २. साग। मै.

कट द' उठब-क्रि., हड्डी पर हड्डी बैसला सँ तथा कठोर वस्तु कें चिबौला सँ अव्यक्त शब्द होएब। मै.

कटधारा-सं., समान भारक नाप जोख। मै.

कटनियाँ-विशे., १. धान आदि फसिल कटैवाला जनक समूह। २. गाछ वृक्ष काटि काठक व्यापारी। मै.

कटनियाँ-सं , वेगक वा तरङ्गक चोट सँ नदी कछेरक भूमिक कटब। मै.

कटनिहार-विशे., कटैवाला, स्त्री० कटनिहारि। मै.

कटनी-सं., फसिल कटैक क्रम आ चलती। मै.

कटनौती-विशे., कातिकय रान्हल जाइवाला तीमन। मै.

कटब-क्रि., १. अपनै सँ कटि जाएब। २. ककरो सँ सम्पर्क छोड़ा लेब। मै.

कटबन्धक-सं., सावधिक कोनो द्रव्य पर रुपैयाक ऋण। मै.

कटबी-विशे., सावधिक ऋण जे थोड़बो दिन मे सम्पूर्ण सूदिक योग्य होइछ। जेना कातिक मे लेल धान ऋणक अगहनै मे डेढबर भय जाइत अछि। मै.

कटमटी-सं., अभावक द्वारें अन्न वस्त्रक क्लेश। मै.

कटर्नी-सं., चमड़ा सीवैक अस्त्र जकरा भोंकि दोसर दिश सँ ताग आनि आनि चमार चमड़ा सीवै अछि। मै.

कटरा-सं., माटि कटला सँ बनल खद्धा जे मटिकट्टा सब बनवै अछि। मै.

कटसरि-विशे., १. कटैक अवस्था मे आएल फसिल। २. कण्ठक गहना विशेष। मै.

कटहर-सं., उपर खोंइछा पर काँट जकाँ रुपवाला पैघ घरेल फल। सं. पनस फल। मै.

कटहरी चम्पा-सं., चम्पा फूलक आकारक विशेष फूल जकर सुगन्धि पाकल कटहर सन होइछ। मै.

कँटहा-विशे., काँट सँ भरल। काँटवाला। मै.

कटाइ-सं., कटैक कार्यक्रम। काटनि। मै.

कटाउजि-सं., कोनो वस्तुक हेतु आपस मे झगड़ा। मै.

कटाएब-क्रि., कटैक हेतु अनका प्रेरणा करब। अपन समक्ष मे फसिल कटैक व्यवस्था राखब। मै.

कटाओ-सं., पानि बाढ़िक वेग सँ तटक कटैक क्रम। मै.

कटाक्ष-सं., १. आँखिक कोरक दृष्टिपात। २. व्यङ्गवाण। मै.

कटाकटि-अव्यय, कटकट शब्द करैत चिबाएब। मै.

कटाकटी-सं., सम्पर्क तोड़ब। एक दोसरक गर्दनि कटैक सतत प्रयास। मै.

कटाकटौअलि-सं., अपन स्वार्थ सँ वैर क'क' एक दोसराक मूड़ी कटैक प्रयास। मै.

कटाक द' उठब-क्रि., कड़ा वस्तुक दाँततर दबने अचानक कटाक शब्द होएब। मै.

कटार-सं., सोझ तरुआरिक आकारक काटल भोंकल जाइवाला छोट अस्त्र। मै.

कटारि-सं., पानि बहैक हेतु बान्ह वा आरि मे काटल स्थान। मै.

कटारी-सं., अत्यन्त छोट आकारक टेढ़ तरुआरि (चन्द्रहास)सन तीक्ष्ण अस्त्र जे वीराङ्गना सब खोपा मे खोंसैं अछि। मै.

कँटाह-विशे., काँटक अधिकतावाला। मै.

कटाह-विशे., दाँत सँ कटैवाला जीव। मै.

कटिया-सं., दूध दुहैक माटिक वासन। डावा। कहबी-बारह बरस गोआरि कटिया सोन्हावय। मै.

कँटीला-विशे., काँट उगाओल लोहक वस्तु। मै.

कटुक-सं., भोज्य वा पेय पदार्थ मे देम' योग्य मसाला। सं. तत्सम

कटुता-सं., आपस मे मनैमन विरोधक द्वारें सद्भावक अभाव। मै.

कटुबी-सं., बाँहि परक गहना विशेष। कुशियारक गेंड़ी। मै.

कटैल करब-क्रि., सामान्यो स्थिति मे परिस्थितिक अनुसारें कम करब। मै.

कटैया-सं.,१. एकदिश सँ काटि क' खसबैक काज। २. धारक कातक भूमिक कटि कटि क' धँसना खसैक स्थिति। ३. काँटवाला झाड़। मै.

कटैल-सं., चूड़ी लहठीवाला लाह। मै.

कटोरा-सं., फैलगर पेंघ वाटी। छोट कटोरी। छोटकी वाटी। मै.

कटौंझ-सं., देखू-"कटाउज"। मै.

कटौटी-सं., व्यर्थक वाद विवाद आ असंगत तर्क वितर्क सँ परस्पर पछारैक प्रयास। मै.

कटौती-सं., अनावश्यक बूझि उचित मान सँ घटयबाक प्रक्रिया। मै.

कठकी-सं., पातर छोट काठी। मै.

कठकीड़ी-सं., चुप्पैचाप काठ मे छेद करैवाला छोट कीड़ा। मै.

कठकेरा-विशे., पकलो पर बिन घूलल केरा। मै.

कठकोंकाँषि-विशे., अत्यन्त कृपण, धन कें दाँत सँ धयनिहार। मै.

कठखोधी-सं., लोल सँ काठ छेदैवाला पक्षी। मै.

कठगर-विशे., सक्कत, कड़ा। मै.

कठघरा-विशे., काठक छोट छीन दोकानक घर। मै.

कठजीब-विशे., हट्ठें नहि मरैवाला, कोनो उपाय कयलो पर नहि मरैवाला। मै.

कठताल-सं., काठक छोट चापट पट्टी जाहि सँ गीन मे ताल देल जाइत अछि। मै.

कठपुतरी-सं., व्यवसायीक द्वारा नचाओल जाइत काठक छोट छोट मूर्ति। मै.

कठबाद-सं., बिना प्रयोजनक वितण्डा, निरर्थक अनर्गल तर्क वितर्क दय फूसि विवाद। मै.

कठबाप-सं., मायक पुनर्विवाहक स्वामी। मै.

कठबेङ-विशे., काठक छेद मे रहैवाला बेङ। मै.

कठबेटा-सं., पुनर्विवाह कय आनल पत्नीक संग आएल पूर्व पतिक पुत्र। स्त्री० कठबेटी। मै.

कठबेली-सं., वनबेली फूल। मै.

कठमन-विशे., १ कट्ठा खेत मे उपजल १ मन अन्न। मै.

कठमस्त-विशे., सक्कत, पुष्ट आ सबल देहवाला। मै.

कठमाम-विशे., सतमेक भाय। नामक मामा। मै.

कठरा-सं., न्यायालय मे वादी प्रतिबादी कें ठाढ़ करैक हेतु बनल घेरा। मै.

कठरियाएब-क्रि., भीजल माटिक कठोर ढेला बनल। मै.

कठलाज-सं., अनेर लाज अथवा लाजक नाटक। मै.

कठलेध-विशे., १. थलाह खेतक धानक बीआ (अंकुर) उखाड़ला सँ जड़ि लागल माटि नेनहि अवै अछि तथा ओहेन खेत जोतने हर नहि ससरि सकै अछि आ थाल सटि जाइत अछि। मै.

कठहँसी-सं., बल सँ हास, हँसै मे अनका संग देब। खुशामदी हँसी। मै.

कठाइन-विशे., अनसोहाँत, असंगत, अप्रिय। मै.

कठार-सं., ऐंठ फेंकैक धोऐक स्थान। ऐंठार। मै.

कठाल-सं., गाछ काटि काठ चीरल फाड़ल जाइवाला स्थान। मै.

कठिन-विशे., कठोर, जटिल, कष्ट साध्य। सं. तत्सम

कठिनता-सं., ओझरौट, कठोरता, विषमता। सं. तत्सम

कठिनाइ-सं., कष्टक स्थिति, आपत्ति, संकट। मै.

कठिनाहा-विशे., दुःसाध्य, अधिक विषम वा जटिल। मै.

कठुआएब-क्रि., काठ जकाँ कठोर बनि जाएब । मै.

कठुऐनी-सं., कड़ा बनि जाइक स्वभाव । मै.

कठुला-विशे., माटिक बनाओल छोट सन हल्लुक कोठी । गोल नाम मुहवाला छोट कोठी । मै.

कठुली-विशे., माटिक बनल अत्यन्त छोट कोठी । मै.

कठोर-विशे., सक्कत, कड़ा, निर्दय । सं. तत्सम

कठोहि-विशे., जीवित गाछक धोधरि मे रहैवाला साँप । मै.

कठौत-सं., अढ़िया जकाँ पसरल मुहवाला काठक बनल वासन । मै.

कड़कड़-विशे., अत्यन्त सुखाएल होइक कारणें कड़-कड़ शब्द कय कड़ा बनल । मै.

कड़कड़ाएब-क्रि., कड़कड़ शब्दपूर्वक दाँत तर कड़ा वस्तु कें दबाएब । (लाक्षणिक) सक्कत करब तथा बल सँ दमन करब । मै.

कड़कड़ा क'-अव्यय, १. सक्कत । २. कड़कड़ शब्द करैत । मै.

कड़कड़ाहटि-सं., जोर सँ कड़कड़ ध्वनि । मै.

कड़कब-क्रि., १. एक लक्खत विजलोताक छिट-कब । २. विजलोता छिटकैत मात्र मेघक शब्द करब । ३. कोनो बातक हेतु आवेग होएब । ४. वस्तुक दाम चढब । प्रयोग– "हमर मन कड़कैत अछि जे एहि चोर कें चारि लाठी मारी । आइ कालिह सोन कड़कि गेल छै ।" मै.

कड़कड़ौआ-विशे., पराकाष्ठा पर पहुँचल । कड़-कड़ौआ जाड़ मे कत्तौ यात्रा करैक नहि थिकैक । मै.

कड़किकय-अव्यय, क्रोध भरल रोबदार निर्भीक शब्दें । मै.

कड़गर-विशे., सक्कत, बलगर । मै.

कड़ड़ब-क्रि., अनिष्टक भावना सँ अशुभ बातक अधिक चरचा करब । मै.

कड़ड़ पड़ब-क्रि., मलक सूखिक' अत्यन्त कड़ा बनब । मै.

कड़रा-सं., हंस जातिक पक्षी । कारण्डव । मै.

कड़रा छाउर-विशे., सुखाएल गोबरक छाउर । मै.

कड़रा पड़ब-क्रि., अनहोनी शोकक आवेग मे जोर सँ हाहाकार मचब । मै

कड़रि-सं., केराक गाछ । मै.

कड़लत-सं., सक्कत मोटगर बनैया लत्ती । मै.

कड़सरि-सं., एक हार मे अनेक छड़ । मै.

कड़हा-सं., अनेक औषध मिलाकय औटल पानि । क्वाथ । मै.

कड़हिया-सं., १. पैघ लोहिया (पकवान तथा मधुर छानै वाला) २. दिवाल जोड़ैक काल मसाला उठ-बैक वासन । मै.

कड़ही-सं., बेसन सँ बनाओल मसाला देल भोर (सूप) । मै.

कड़ा-विशे., अपन रूप मे अत्यन्त सक्कत । मै.

कड़ाई-सं., कठोरता सँ नियमक पालन । कड़ापन । मै.

कड़ाक द'-अव्यय, कोनो वस्तुक अकस्मात् टुटला सँ फटला सँ कड़ द' ध्वनि । मै.

कड़ाङ्कूल-सं., बड़का टांगवाला मछखौक बड़का पक्षी । मै.

कड़ाम-सं., दाओन करै मे एकै डोरी मे अनेक बड़द कें बन्हैक डोरी । मै.

कड़ारी-विशे., १. कड़ा माटिक भूमि । २. निश्चित समयक देल वचन । मै.

कड़ाह-सं., लोहियाक आकारक पैघ उत्थर लोहक वर्त्तन । मै.

कड़ाही-सं., घपोल मुह आ चाकर पेनवाला माटिक वासन । मै.

कड़ियल-विशे., कड़ा स्वभाववाला । मै.

कँड़ियाएब-क्रि., छल्ली लगबैक रूपें समेटि कय राखब । मै.

कड़ियौत-सं., जड़ी विशेष । मै.

कड़ी-सं., शृंखला, एक सँ दोसर फँसाक' जोड़ल पातर गोल धातुक खण्ड सँ बनल वस्तु । मै.

कड़ुआएब-क्रि., कड़ू जकाँ लागब, कड़ू बनाएब । मै.

कड़ुआह-विशे., कड़ूक अनुभव देमऽवाला । मै.

कड़ुऐ-सं., कड़ूक स्वाद । मै.

कड़ू-सं., रस विशेष । कटु । सं. तद्भव
विशे., कड़ू स्वादवाला । सं. तद्भव

कड़ूतेल-सं., गोट तोड़ी आ रैंची सँ बहार कयल तेल । मै.

कड़ेकमान-विशे., कोनो काज मे सावधानी सँ चौंकस । मै.

कड़ोरि-संख्या, सै लाखक एकमान । संज्ञा, एक चलता फिरता (उर्दूक खानाबदोस) जाति । मै.

कड़ौत-सं., मेह मे देल रस्सी जाहि मे दाओनिक काल कड़ाम जोड़ल जाइत अछि । मै.

कड़ौरिया-सं., एकठाँ निश्चित निवास नै रखैवाला जाति । मै.

कढ़ब-क्रि., कोनो वस्तु पर हस्तकला सँ चित्र निखारब । मै.

कढाइ-सं., हस्तकला सँ चित्र निखारैक कर्म । मै.

कढी-सं., अन्नक दाना रहित झोर । मै.

कढ़ैया-सं., अढ़ियाक आकारक माटिक वासन । मै.

कण्टक-सं., काँट, पीड़ादायक । सं. तत्सम

कण्टाहा-विशे., पितृ कर्मक पुरोहित महापात्र । मै.

कणियाएब-क्रि., एकठाँ छल्ली लगाकय जमा करब । मै.

कण्टिरवा-विशे., छोट नेन्ना । बेटा । मै.

कण्ठ-सं., गर्दनिक आगू सँसरीवाला भाग । सं. तत्सम

कण्ठगत-विशे., १. कण्ठधरि पहुँचल । २. कण्ठै मे रहैवाला । सं. तत्सम

कण्ठडाह देब-सं., भोजनक पाकक अभाव मे कण्ठक वेदना । मै.

कण्ठमलिया-विशे., झोरी मे भगवान (शालिग्राम) राखि सदिखन कण्ठ मे लटका कय भक्तक दाबी कयनिहार । मै.

कण्ठ लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त आवेश करब अर्थात् स्नेहक लेल सतत कण्ठ लगौने रहब । मै.

कण्ठा-सं., कण्ठक गहना विशेष, यन्त्र । मै.

कण्ठिया-विशे., कण्ठीधारी । मै.

कण्ठी-सं., तुलसी डाँटक दाना बनाकय बनल कंठक माला वैष्णवक चिह्न । मै.

कण्डली-सं., वनस्पति विशेष । कन्दली । सं. तद्भव

कण्डा-सं., शरपतक मोटका डाँट । मै.

कण-सं., सूक्ष्म सँ सूक्ष्म खण्ड, दाना, कंकर । सं. तत्सम

कणा-सं., कोनो वस्तुक सूक्ष्म रूप । सं. तद्भव

कत्त'-अव्यय, कोन ठाम । मै.

कत्ता-सं., बैसकीवाला तरकारी कटैक हाँसू । मै.

कत्तिन-विशे., चरखा कटैवाली स्त्री । मै.

कत्ते-अव्यय, कतेक परिमाण मे । मै.

कत्थ-सं., बेलक आकारक अम्मत फल । मै.

कत्थक-सं., शास्त्रीय नृत्य विशेष । मै.

कत्था-सं., पान मे दैक मुख्य मशाला । हि. तत्सम

कत'-अव्यय, कोनठाम । मै.

कत-परि. वा. सर्व., कतेक परिमाण (प्रश्न) । प्रयोग—"कत सुखसार पाओल तुअ तीरे"—विद्यापति । मै.

कतका-विशे., कात मे रहैवाला वा कात मे होम' वाला । मै.

कतनी/कतवे-अव्यय, कतेक थोड़ परिमाणक । मै.

कतब-क्रि., सूत कटैक क्रिया । केवल सूत मात्र कटैक क्रिया । मै.

कतय-अव्यय, कोनठाम । मै.

कतरन-सं., कागज वा कपड़ा कतरला सँ अनुपयोगी टुकरीक समूह । मै.

कतरनी-सं., कतरैक अस्त्र, कैंची आदि । मै.

कतरनी धान-सं., भागलपुरक प्रसिद्ध मेहीं आ सुगन्धित धान । मै.

कतरब-क्रि., बिना चोटक कैंची आदि अस्त्र सँ कागज आदिक खण्ड करब । मै.

कतरा-सं., कोनो वस्तुक कतरल छोट अंश । मै.

कतराएब-क्रि., लोकक दृष्टि सँ बँचैक हेतु कातैं-कात होएब । हँटैत रहब । मै.

कतराझाड़-सं., कातर नामक खढ़क सघन जड़ि । मै.

कतहु-अव्यय, कोनो ठाम, अनिश्चित स्थान मे । मै.

कतार-सं., पाँती, धारी । उ. तत्सम

कतिकहर-सं., कातिक मासक लक्षण, प्रकृति आ वातावरण । मै.

कतिका-विशे., कातिक मास मे भेनिहार । कातिकक रंग सँ भरल । मै.

कतिकाक्तर-विशे., कातिक मास मे करैक खेती । मै.

कतिकी-विशे., कातिक मास मे होमऽवाला । मै.

कतिया-सं., नाम चाकर आ पातर धारवाला अस्त्र । मै.

कतीकाल-अव्यय, समय मे परिमाणसूचक प्रश्न । मै.

कतीखन-अव्यय, बीतल समयक परिमाण सूचक । मै.

कते/कतेक/कतोक-अव्यय, अधिक परिमाणक प्रश्न-वाचक। मै.

कथ-विशे., कहबाक, कहैक विषय, कथ्य। सं. तद्भव

कथक्कर-विशे., कथा कहैवाला। मै.

कथन-सं., कहैक भाव। सं. तत्सम

कथनी-सं., कहैक तात्पर्य्य। मै.

कथा-सं., १. ककरो कोनो चरित्रक विस्तापूर्वक वर्णन। २. वैवाहिक विषयक तथा गम्भीर बातक वार्ता। ३. गारि। सं. तत्सम

कथाकथान्तर-सं., कलहक क्रमें गारि पर गारि। मै.

कथाकार-विशे., कथा साहित्यक रचाना करैवाला। सं. तत्सम

कथानक-सं., ककरो चरित्रक अन्तःसुखदायी विस्तृत आ रोचक आख्यान। मै.

कथावस्तु-सं., कथाक मूलभूत संक्षिप्त विषय तथा निचोड़। सं. तत्सम

कथासार-सं., कथाक निचोड़। सं. तद्भव

कथी-अव्यय, कोनो विषय कें बुझैले फेर कहैक हेतु प्रेरक प्रश्न। मै.

कथू-अनि. सार्व./विशे., कोनो वस्तु। मै.

कथोपकथन-सं., परस्पर बातचीत, उत्तर प्रत्युत्तर। सं. तत्सम

कद्दू-सं., सजमनि, लत्तीक फल विशेष। मै.

कद्दूकस-सं., चदराक बनल काछुक आकारवाला मेहीं-मेहीं छेद मे धारवाला चारि पायाक कुम्हड़ आदि गुद्दावाला फल कें खड़रि (घसि) मेहीं बनबै-वाला यन्त्र। मै.

कदन्न-विशे., सुपाच्य अन्न सँ भिन्न अनुपयोगी अन्न। मै.

कदबा-सं., रोपनीक हेतु खेतक कादो। मै.

कदबापखार-सं., रोपनीक हेतु कादो करैक प्रक्रियाक समाप्ति। मै.

कदम्ब/कदम-सं., एहि नामक विशाल गाछ एवं केसरवाला ओकर गोल फूल। सं. तद्भव

कदम्मीडोरि-सं., फुदनावाला खोपा बन्हैक डोरी। मै.

कदमचालि-सं., घोड़ाक चालि विशेष, खुर कें मोड़ल सन कय उपर उठा कय ठुमुक-ठुमुक चलैक क्रम। मै.

कदमताल-सं., सैनिक प्रशिक्षणक व्यायाम विशेष। एकै ताले समूहक डेग (पैर) उठैक आ खसैक अभ्यास। मै.

कदर्य्य-विशे., कृपण, धन रहनौ दीनहीन बनल। सं. तत्सम

कदराएब-क्रि., कोनो क्रिया मे उत्साहित नहि होएब। मै.

कदरियाएब-क्रि., अपन असमर्थता आ अहदपना सँ कोनो चेष्टा मे उत्साहहीन होएब तथा दीनता प्रकट करब। मै.

कदरियाह-विशे., कदराइत रहनिहार। मै.

कदरी-सं., १. लोटा आदि वासन मे जमल मैल। २. पोखरि आदि जलाशयक पानिक दूषित रंग। मै.

कदा च-अव्यय, अनिश्चितकाल। कहुखन। सं. तत्सम

कदाचित्-अव्यय, कखनो। सं. तत्सम

कदापि-अव्यय, कौखन, कखनो। सं. तत्सम

कदीमा-सं., लत्ती मे फलैवाला व्यञ्जन पदार्थवाला पैघ फल। मै.

कदै-सं., बाढि पानिक संग भसाठ मे आएल माटि जे पातर परत जकाँ घास पात पर जमि जाइत अछि। मै.

कदोआ-सं., रोपैक हेतु पनियाएल खेत कें जोति कय बनाओल थाल। मै.

कदोई-सं., नहाइक काल पैरक धपाड़ सँ उखरल पोखरिक थाल। मै.

कन्छी-सं., कोनो बातक डरें दूरें सँ अपना कें नुक-बैत मुख बाट काटि कय गुप्त मार्गें पलायन। मै.

कन्छी काटब-क्रि., आँखि बचा कय भागल फिरब। मै.

कन्टह-विशे., (लाक्षणिक) दुखदायी। कन्टक। सं. तद्भव

कन्टहा-विशे., पितरक कर्म करवैवाला पुरोहित। (अनादर मे)। मै.

कन्टाह-विशे., देखू—"कन्टहा"। मै.

कन्त-विशे., प्रणयी, प्रियतम, पति। प्रयोग-"भय गेल शरदौक अन्त। लिखल पतियोने कन्त।" मै.

कन्ताकनैल-सं., फुल विशेष। मै.

कन्तोड़-सं., गहना गुड़िया रखैक हथलग्गू छोट-पेटी । मै.

कन्तोड़ी-सं., प्रसाधन सामग्री रखैक अत्यन्त छोट हथलग्गू पेटी । मै.

कन्तोप-सं., शीत सँ बचबैवाला कान मे सट्टल टोपी । मै.

कन्था-सं., आवश्यक सामग्रीक पोटरी । सं. तत्सम

कन्न-सं., फिटका आ पाथर सभक मेहीका खण्ड जे अन्नक संग मिलल होअए । मै.

कन्नकन्न-सं., क्रोध आ आक्रोशक द्वारें चढ़ल आँखि सँ दर्शन । प्रयोग—"अन्यायी लोक पर कें नहि कन्नकन्न कर' लगैत अछि ।" मै.

कन्ना-सं., १. साग विशेष । २. तामस दबौने पछारैक अवसरक ताक । मै.

कन्नारोहट-सं., शोकक स्थिति मे सामूहिक नोर सँ कनैक वातावरण । मै.

कन्नी-सं., धानक दानाक जड़ि मे रहनिहार अखाद्य ठोस कण जे चाउरक संग रहै अछि । मै.

कन्नी-अव्यय, कनेक परिमाण । मै.

कन्नीकाटब-क्रि., कोनो काजक डरें लोकक आँखि बचाकय कातैं कात पड़ायल नुकायल फिरब । मै.

कन्या-सं., राशि विशेष । मै.

कन्या-सं., पुत्री बेटी । सं. तत्सम

कन्यागत-विशे., विवाहक प्रसंगे कन्या पक्षक लोक । मै.

कन्यादान-सं., पुत्री कें वरक हाथ मे पत्नीक रुपें समर्पण । स. तत्सम

कन्यादानी-विशे., पुत्रीक दान कयलो उत्तर संपत्ति दय अपनै ओतय अर्थात् नैहरे मे बसाओल कन्या । मै.

कन्याराशी-विशे., अधिक संख्याक बेटीवाला । मै.

कन्हगर-विशे., उँचगर कान्हवाला बड़द । मै.

कन्हा-सं., बाँहिक जड़िक उपरवाला अंग । मै

कन्हुआएब-क्रि., प्रतिहिंसा भरल दृष्टि सँ ताकब । मै.

कन्हेठब-क्रि., कन्हा पर उठा लेब । मै.

कन्हौर-सं., सांढ़क पीठ पर उपर उठल अंग । मै.

कन-सं., अन्नक संग अनेक सूक्ष्म आ कड़ा आँकड़ । मै.

कनउलास-सं., अन्न कें फटकि अनुपयोगी पदार्थवाला कण कें आगू निछोरैक क्रिया । मै.

कनकजीर-सं., मेंही धानक प्रभेद । मै.

कनकन-सं., हाथ पैर मे जड़ता शून्यता उत्पन्न करैवाला जाड़क प्रकोप । मै.

कनकट्टा-विशे., १. उत्कर्ष पबैवाला । २. कान काटल रहैवाला । मै.

कनकन करब-क्रि., शीतक द्वारें विकलताक बोध होएब । २. क्रोध भारैक अवसर देखब । मै.

कनकनाएब-क्रि., छेदैक जकाँ अन्तर्मुख वेदना होएब । मै.

कनकनी-सं., अंग कें छेदैक सन जाड़ । मै.

कनकुत-सं., अनुमान सँ उपजाक निर्द्धारण । मै.

कनखरब-क्रि., बदला लैक विचार सँ क्रोधित रहब । मै.

कनखा-सं., फुटल सीसा, माटिक बासन आ द्रव्यक बर्तनक उगल पैंघ टुकड़ा । भाँड़क मुह दिशुक भाग । मै.

कनखी-सं., १. कथुक अंकुरक प्रारूप । २. आँखिक कोर सँ तकैक मुद्रा । कटाक्ष । मै.

कनखुर-सं., १. माछक कनपट्टीक अंग । २. भग्न खपटा । मै.

कनखुराह-विशे., कनखुर आ खपटा सँ भरल । मै.

कनगव्वर-विशे., शब्द सुनलो पर प्रतिक्रियाहीन भय अनठा दैवाला । मै.

कनगुज्जी-सं., कानक मैल । मै.

कनगुरिया-सं., सब सँ पातर आ छोटका आङ्गुर । मै.

कनगोज-सं., कानक जड़ि । मै.

कनगोजर-सं., सूत सन पातर नाम कीड़ा जे कान मे पैसैत अछि । मै.

कनचटक-सं., १. कानक उपरक अंगक रोग विशेष । २. कानैक आकार मे आमक गाछक डारि मे होईवाला ओहि रोगक अचूक औषध । मै.

कनछल बहब-क्रि., अतृप्त रहब (भोजन मे) । मै.

कनछेदी-सं., कान छेदैक विधि । कर्णवेध कर्म । मै.

कनझक्का-विशे., माण पसौला उत्तर तुरन्त तप्पत दूध मे द' क' झाँपल भात । मै.

कनझप्पा-विशे., कान झँपैक वस्त्र । मै.

कनटनकी-सं., कानक दर्दक रोग । मै.

कनटर-सं., नाम चौखुट टीनक बासन । मै.

कनडेरि-विशे., आँखिकोर सँ दृष्टिपात। कटाक्ष। मै.

कननमुह-विशे., कनै-कनैसन मुहवाला। मै.

कनना-विशे., बात बात मे कानि उठैवाला नेन्ना। स्त्री० कननी। मै.

कनपट्टी-सं., कान आ आँखिक बीचक अंग। मै.

कनपासा-सं., कानक गहना विशेष। मै.

कनफट्टा-विशे., फाटल कानवाला। मै.

कनफुसकी-सं., कान मे मुह लगाकय फुसुर-फुसुर गप करैक ढंग। मै.

कनबह-सं., पानि बहैक छोट सन बाहा। मै.

कनबधा-सं., एकठाँ सँ दोसरठाँ पानि बहा कय लय जाइक उत्थर बाट। मै.

कनबहीर-विशे., सुनैक सामर्थ्य रहितौ कोनो कारणें अनसुन कयनिहार। मै.

कनभर-सं., अन्न मे छोट-छोट दूषित कण समूह। मै.

कनमटक-विशे., सुनियौकय बहीर बनल। मै.

कनमन-सं., भीतरक रुष्ठता, आन्तरिक क्रोध। मै.

कनमन करब-क्रि., भितराएल कानि सधैक अवसर देखब। मै.

कनमनाएब-क्रि., भितराएल कानि सधवैक तरंग होएब। मै.

कनमा-सं., प्राचीन तौलवाला सेरक सोलहम भाग। मै.

कनमाही-सं., एक कनमाक बाट। मै.

कनमुन्ना-विशे., कान कें मूनि लेनिहार। नै सुननिहार। मै.

कनरी-सं., जीवित छोट गाछ उखाड़ैक हेतु जड़ि लागल सीरवाला माटि। मै.

कनसाग-विशे., खुद्दी आ साग सन तुच्छ भोजन। मै.

कनसार-सं., भजाभूजीक व्यावसायिक स्थान। मै.

कनसुन्न-विशे., कानक सुन्न। ऊँचें सुनैवाला। मै.

कनसुपती-सं.,बाँसक कोपड़क गीरह परक पात। मै.

कनसोह-सं., नुका कय सावधानी सँ आनक बात सुनैक चेष्टा। मै.

कनहा-विशे., जकर एक आँखि काजक नहि रहैक। (अनादर मे) स्त्री० कनही। मै.

कनात-सं., चारू दिश अढ़ करैक कपड़ाक बनाओल घेरन। उ. तत्सम मै.

कनाती-सं., पर्दा करैक टाट। मै.

कनारि-सं., १. नाँकक बलें ऊँच स्वरें उठल मुहक अव्यक्त शब्द। २. आन्तरिक झगड़ा। मै.

कनारो उठब-क्रि., एक संगें बहुत लोकक शोक सँ आकुल कनैक शब्द होएब। मै.

कनाह-विशे., १. एक आँखिक अबाह। २. छिद्रवाला दूषित फल। ३. कन सँ भरल अन्न। मै.

कनाह कोतर-विशे., अंगभंग, मुख्य अंगें असमर्थ। मै.

कनियाँ-विशे., विवाहक हेतु प्रस्तुत कन्या तथा सासुर वसनिहारि नववधू। मै.

कनियाँ पुतरा-सं., छोट-छोट बालिकाक मनोरंजन हेतु नूआ सँ हस्तकला द्वारा स्त्री आ पुरुषक पुत्तलिका बनाकय विवाह रचैक खेल। मै.

कनियें-अव्यय, अल्प मात्राक परिमाण। मै.

कनिक-प्रश्नवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारक, ककर। मै.

कनिक/कनिकबे-अव्यय, थोड़बैक। मै.

कनीटा-अव्यय, थोड़ परिमाणक। मै.

कनेठब-क्रि., कान धऽ कऽ ऐंठब। मै.

कनैठीदेब-क्रि., कान पकड़िकय ऐंठब। (लाक्षणिक) कोनो विषय सँ विमुख रहैक प्रतिज्ञा करब। मै.

कनैल -सं., फूल विशेष। मै.

कनैल-सं., हरक पालोक दुहू कातक छेद मे बड़दक कान्ह कें अड़बैले देल कील। मै.

कनैली-सं., कानक उपरी भाग मे कनौसी सन पहिरैवाला सोनक गहना। मै.

कनोजरि-सं., अंकुर। बीज तथा गाछक डंटी पर सँ फुटल अंकुर। मै.

कनोत-सं., खुट्टा, खाम्ही आ चार सँ सम्बन्ध जोड़ैक (लागि जोड़ले) बन्धन। मै.

कनोतब-क्रि., घरक पाढ़ि लगा खुट्टा क कसिकय बान्हब। मै.

कनौजिया-विशे., कन्नौजक भेनिहार आ रहनिहार। मै.

कनौसी-सं., सोनाक तारक बनल छोट गोल व्यासक कानक नीचाक गहना। कर्णबेध मे प्रयोग। मै.

कप्पा-सं., कपड़ाक छोट टुकड़ा। मै.

कप-सं., चाह पीबैक वासन। अं. तत्सम

कपचब-क्रि., १. उचितो मान मे कम करब। २. कोड़ोबाती आ लाठी आदि बाँसक वस्तु क छिलि चिक्कन करब। मै.

कपट-सं., छल, फूसि आचरण सँ धोखा दैक चेष्टा। सं. तत्सम

कपटी-विशे., कपट व्यवहार करैवाला। सं. तत्सम

कपड़बीनी-सं., सूत तनैवाली काठक खोली जाहि मे सूतक पोला रहै अछि आ वाम दहिन होइत तानी पर भरनी सूत पसारि कपड़ा बीनल जाइछ। मै.

कपड़ा-सं., कर्पट, नूआ वस्त्र। सं. तद्भव

कपड़िया-विशे., कपड़ाक बनोज कयनिहार। मै.

कँपनी-सं., स्वाभाविक रुपें अंगक थरथराएब। जकरा रोकब अपन वश नहि रहए। मै.

कँपब-क्रि., स्वतः अंग अंग दलकब। थरथराएब। मै.

कपहा-विशे., चमड़ा चीरैक अस्त्र। मै.

कपाड़-सं., भौंह सँ उपर माथक केशक नीचाँक अंग। मै.

कपाह-विशे., अकस्मात् अंग कें क्षत करैवाला धारवाला खढ़, पात आ अन्य कोनो वस्तु। मै.

कपियाएब-क्रि., वाती कर्चीक क्षत करैवाला काप कें चिक्कन करब। मै.

कपिलवन्ड-विशे., व्यर्थ तर्क दय बतकुटौबलि कयनिहार छोट खाटक लोक। मै.

कपिलवस्तु-सं., प्राचीन ऐतिहासिक स्थान। मै.

कपिलीगाय-विशे., सरगोख उज्जर गाय। मै.

कपीस-सं., (रंग) उज्जर मे पीयर आभा। मै.

कपूत-विशे., दुर्जन आ दुर्बुद्धिक पुत्र। मै.

कफ-सं., शरीर धारक जलीय तत्व। मात्रा सँ अधिक भेने दोष (रोग) पोटा। मै.

कफजरा-विशे., बढ़ल कफक द्वारें उपजल ज्वर। जाड़। मै.

कफाह-विशे., कफ बढ़वैवाला आ कफ सँ भरल। मै.

कफी-विशे., सतत् कफ भरल। मै.

कब्बू-सं., अधिकार, सामर्थ्य, अधीन। मै.

कब-अव्यय, (निम्न कोटि मे) कखन। हि. तत्सम

कबकब-विशे., जकरा खयला सँ मुह मे छेदै सन पीड़ाक अनुभव हो। मै.

कबकबाएब-क्रि., (लाक्षणिक) कटु सत्य पर खिसियाएब। मै.

कबकबी-सं., कबकब स्वाद। मै.

कबज-विशे., कोठी (पेटक) बान्हैक वस्तु। मै.

कबजा-सं., लुल्हुआ सँ उपरक अंग। गट्टा बाँहि आ हाथक जोड़। उ. तद्भव

कबजंघ-विशे., कौआ जकाँ डेढ़ बाढ़ जाँघवाला। मै.

कबड्डी/कबड्डोल-सं., खेल विशेष, आ कबड्डी खेलाइक शब्द। मै.

कबरा-विशे., चित्तिर वित्तिर रंगवाला। स्त्री० कबरी। मै.

कबाएब-क्रि., उचित सँ वेशी सुखाएब। पाक लेब। मै.

कबाछु-सं., विषाक्त पातर लत्ती जकर सब अंग मे मेहीं काँट जकाँ रोइआँ होइत अछि जकर स्पर्श मात्र सँ अनायास खुजलाहटि आ पीड़ा पसरल जाइत अछि। मै.

कबारब-क्रि., बाछि बाछिकय धान सभक बीआ उखारब। मै.

कबाहटि-सं., सदिखन कोनो वस्तुक तगेदा। मै.

कबिलकाठी-विशे., अयोग्य उपदेशक, केवल बात बनवैवाला व्यक्ति। मै.

कबीर-सं., एक सम्प्रदायक प्रवर्त्तक महात्मा। मै.

कबीरपन्थी-विशे., कबीरक सम्प्रदायक कें मानैवाला। मै.

कबीरा-सं., १. गारिक संग संगीत जे होरी मे गाओल जाइत अछि। २. कबीर दासक गेय रचना। मै.

कबीला-सं., बस्ती, टोल। उ. तत्सम

कबुलचोर-विशे., अपन कयल कबुला कें छिपवैवाला। मै.

कबुलापाती-सं., कोनो लक्ष्य पूर्तिक हेतु देवताक आगू विशेष उपासनाक प्रतिज्ञा। मनौती। मै.

कबूची-सं. छोट छोट उपद्रावक नेन्नाक समूह। मै.

कबै-सं., मभोला माछ विशेष। मै.

कबैयाड्योढ़-विशे., कबै माछ जकाँ एक बाद एक आधा आगू आधा पाछू भ' क' पाछू धयनिहार। मै.

कम्प-सं., अस्थिरता सँ अंगक स्वतः स्पन्दन। सं. तत्सम

कम्पास-सं., गणितक चित्र एवं रेखा आदि रचैक यन्त्र। अं. तत्सम

कम्पन-सं., भीतर सँ उद्भूत विवश स्पन्दन। मै.

कमबल/कम्मल-सं., रोइयाँ "ऊन" सँ बनल ओढ़ना आ आसन। सं. तत्सम एवं तद्भव

कम्म-विशे., थोड़, अल्पमात्रा। कम सेहो प्रयोग होइछ। मै.

कम्मी-सं., त्रुटि, अल्पता, घट्टी। मै.

कम्मे-अव्यय, थोड़बैक। मै.

कमचा-सं., बाँसक पातर चाकर चीरा रूप। मै.

कमचालि-विशे., कम चलैवाला। मन्दगति। मै.

कमची-सं., बाँसक बहुत पातर कम चाकर काइम। मै.

कमठाओन/कमठान-सं., फसिल लागल खेत सँ खढ़ पात उखाड़ि कय कोड़ैक प्रक्रिया। मै.

कमण्डल-सं., टोटी सँ धारावाला पवित्र जलपात्र। साधु आ पूजाक उपयोगी जलपात्र। सं. तद्भव

कमतिया-विशे., खेती बाड़ीक काज मे नियुक्त। मै.

कमती-सं., एवं विशे., १. निम्न श्रेणीक प्रतिष्ठित व्यक्तिक सम्बोधन। २. वस्तुक अल्पता, कमी। मै.

कमब-क्रि., थोड़ होएब, घटब। मै.

कमबाएब-क्रि., १. कमकराएब। २. काजक श्रम कराएब। मै.

कमयनिहार-विशे., १. उपार्जन कयनिहार। २. खेत के अनुपयुक्त खढ़ पात सँ स्वच्छ कयनिहार। ३. निर्द्धारित व्यय मे आ काज मे कम कयनिहार। मै.

कमरकस-सं., देखू-"डँरकस"। मै

कमरसारि-सं., कमारक काज करैक नियत स्थान। मै.

कमरख-सं., ऐ नामक जड़ी। मै.

कमरथुआ-विशे., गंगा जल लय बैद्यनाथक पैदल यात्री जे कामौर मे जल लय जाइछ। मै.

कमरसाढ़ू-विशे., एक संग एक स्त्रीक दोसर पति। मै.

कमरा-सं.,१. कमारक तिरस्कारक शब्द। २. घरक कोठली। हि. तत्सम

कमरिया-विशे., कामर लय कें बैद्यनाथक पदयात्री। मै.

कमरी-सं., कटहर फलक भीतर अनुपयोगी अंश। मै.

कमल-सं., भारतक प्रसिद्ध राष्ट्रीय फूल। सरोज, पद्म। मै.

कमलगट्टा-सं., कमलक फूल सँ उत्पन्न बीज। मै.

कमलपत्ती-सं., लाल कमलक रंग सन रंग विशेष। मै.

कमला-सं., १. मूत्र, आँखि, जीह कें पीयर करैवाला रोग विशेष। २. मिथिला क्षेत्रक प्रसिद्ध नदी। ३. विष्णुक पत्नी लक्ष्मी। सं. तत्सम

कमलाक्ष-सं., कमल फूलक कठोर बीजक दाना। सं. तत्सम

कमसरही-विशे., थोड़ लगान (कर) वाला खेत। मै.

कमस्सल-विशे., थोड़ महत्त्वक वस्तु। मै.

कमहिया-विशे., बोनि करै मे बाधित, बिना मजदूरी कयनहि। मै.

कमाइ-सं., उपार्जन, श्रमक मूल्यक उत्पत्ति। मै.

कमाइन-सं., उद्यमक जोगाड़, अर्जनक स्रोत। मै.

कमाइल-सं., नौआ कमारक वार्षिक पारिश्रमिक। मै.

कमाउ-विशे., कमाइक जोग, उपार्जन करैक क्षमतावाला। मै.

कमाएब-क्रि., १. थोड़ करब, छोट बनाएब। २. उद्योग धन्धा करब। ३. खेत कें स्वच्छ करब। मै.

कमानी-सं., लोहाक पातर कड़ा सवकत छड़। मै.

कमाप्त-विशे., त्रुटिपूर्ण, थोड़। मै.

कमार-सं., बरही, काठ कें गढ़ि कय व्यवसाय करैवाला जाति। मै.

कमासुत-विशे., अधिक कमाइवाला उपार्जन करैवाला। कमाइक लूरि रखैवाला। मै.

कमी-सं., त्रुटि, घट्टी, भूस। मै.

कमैन-सं., कमारक स्त्री जाति। मै.

कमोठ-सं., सन्डासवाला शुचिशालाक कचकढ़ाक बनल बैसकी। अं. तद्भव

कमौआ-विशे., जीविका चलबैवाला। अर्जन करै-वाला। मै.

कमौनी-सं., खेतक फसिल कें स्वच्छ रखैक हेतु खढ़ पात कें उखाड़ि बहार करब। मै.

कयनिहार-विशे., करैवाला। मै.

कर्क-सं., १. राशि विशेष। २ काँकोड़। सं. तत्सम

कर्कश-विशे., कठोर, कड़ा, निर्दय। सं. तत्सम

कर्कशाह-विशे., कठोरता सँ भरल। निर्दय, कड़ा। मै.

कर्णफूल-सं., फूल सन कानक गहना। सं. तद्भव

कर्णवेध-सं., कान छेदैक संस्कार। सं. तत्सम

कर्णमूल-सं., कानक जड़ि तथा कानक जड़ि मे फूलैवाला रोग। सं. तत्सम

कर्ता-विशे., १. करैवाला। २. पितरक क्रिया कर्मक अधिकारी। ३. ईश्वर। सं. तत्सम

कर्तृति-सं., कृति, कयल कर्म। मै.

कर्तौत-सं., श्राद्धक अधिकार सँ प्राप्त दाय भाग। पिण्डं दत्वा धनं हरेत्। एहि नियमक अनुसार पिण्डदेवाक द्वारें प्राप्त विशेष सम्पत्ति। कर्तृत्व। मै.

कर्तौता-सं., मरणासन्न व्यक्तिक द्वारा अपन क्रिया कर्मक अधिकारीक व्यवस्था। मै.

कर्पूर-सं., सुगन्धित उज्जर रासायनिक पदार्थ। सं. तत्सम

कर्म-सं., कयल गेल क्रिया, कर्मक तीनटा भेद होइत अछि। क्रियमाण, संचित आ प्रारब्ध। वर्तमान अर्थात् प्रत्यक्ष मे जे क्रिया कयल जाइछ से क्रियमाण कर्म थीक। वैह जखन अन्तःकरण मे जमल रहै अछि तँ संचित कहवै अछि। कालक्रमें वैह संस्कार अदृश्य शक्तिक द्वारा फलक रुपें प्रकट होइछ तँ प्रारब्ध, भावी, अदृष्ट आ भाग्य कहवै अछि। सारांश ई जे क्रियमाण प्रत्यक्ष संचित आ प्रारब्ध अप्रत्यक्ष कर्म थीक। एही तात्पर्य्ये लोक कहै अछि। "सत्कर्म करू"। एहि सँ प्रत्यक्ष कर्मक निर्देश आ कर्मघट्टू एवं कर्म साँढ़ सँ अप्रत्यक्ष कर्मक संकेत होइत अछि। ई सबटा कर्म माता पिताक संस्कारो सँ सन्तति मे संक्रमित होइत छै। सं. तत्सम

कर्मकाण्डी-विशे., लोक वेदक कर्मक निर्देश आ व्यवहार (प्रक्रिया) मे निपुण। सं. तत्सम

कर्मकीट-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त कृपण। मै.

कर्माधर्मा-विशे., भादवक इजोरियाक एकादशी। भगवानक करौट फेरैक तिथि। सं. तत्सम

कर्रकर्र-अव्यय, १. कौआक कटु शब्द। २. कर्ण कटु अव्यक्त शब्द। मै.

कर्रा-सं., पक्षी विशेष। मै.

कर्राछाउर-विशे., कठोर बिन पाथल गोबरक गोइ-ठाक छाउर। मै.

करोंआ-सं., केराक गाछ मे लगैवाला रोग। मै.

कर-सं., लगान। सं. तत्सम

कऽऽर-सं., भोजनक ग्रास। डिब्बा मुनैक खप्पा। मै.

कऽऽऽर-सं., भाग, वस्तुक व्यवस्थित गर। प्रयोग—"एक कऽऽऽर सुतने देह दुखायब उचिते थीक।" मै.

करकच-सं., बहारला सँ जमा कयल दूषित पदार्थ। मै.

कऽर करब-क्रि., दाँत सँ हबक मारब। मै.

करकरोजा-सं., रंग विशेष। लेहूक समान रंग। मै.

करकुटुम्ब-विशे., अत्यन्त निकटक सम्बन्धी वर्ग। मै.

कऽऽरगर-विशे., अधिक खयनिहार। मै.

करघा-सं., कपड़ा बीनैक कऽल। यन्त्र। मै.

करङ्क-विशे., घोर कारी रंगवाला। मै.

करची-सं., गीरह गीरह पर सँ बहराएल बाँसक पातर कनोजरि। मै.

करछब-क्रि., एक दिश करब। करौटिप हैब। मै.

करछु-सं., नाम डंटीवाला कटोरी सन वर्तन। भात दालि चलबैक साधन। एक प्रयोग 'करौछ' सेहो होइत छैक। मै.

करछुल्ली-सं., छोट आकारक करछु। मै.

करजनी-सं., वनैया लत्तीक गोल आ लाल छोट छोट दानावाला विषाक्त फड़। मै.

करजा-सं., रीन। उ. तद्भव

करजान-सं., केराक बाड़ी। केराक वन। मै.

करतेवता-सं., उपनयन विवाह आदि शुभाशुभ काज। कर्त्तव्यता। सं. तद्भव

करनाल-सं., नाओ घुमबैक काठक पट्टीवाला कील। मै.

करनी-सं., १. पजेबा जोड़ै मे काज अबैवाला शिल्पीक अस्त्र। २. विधि करैक पद्धतिक निर्देश। मै.

करनी-विशे., नीक वा अधलाह कर्त्तव्य। प्रयोग—"अपने करनी पार उतरनी।" करणीय। सं. तद्भव

करब-क्रि., करैक प्रवृत्ति। मै.

करबीर-सं., फूल विशेष। मै.

करमघट्टू-विशे., अभागल। अधलाह प्रारब्ध-वाला। मै.

करमसह-अव्यय, धीरें धीरें क्रमशः। सं. तद्भव

करमसाँढ़-विशे., भाग्यशाली, उज्ज्वल प्रारब्ध-वाला। मै.

करमान-सं., समूह, मेला। प्रयोग—"दुर्घटनास्थल पर करमान लागल लोक रहैक।" मै.

करमा लागब-क्रि., घन भ' क' लोकक एकट्ठा होएब। मै.

करमी-सं., जलाशयक लत्ती विशेष जकर सागो खाएल जाइत अछि। मै.

करर-विशे., सुखाकय कठोर बनल मल। मै.

करराह-सं., निन्न मे अथवा जागल मे दाँतक शब्द करैवाला। मै

करसी-सं., अपनै रुप मे सुखाएल गोबर। मै.

करहा लागब-क्रि., भूखक द्वारें पेटक पीठ मे सटब। मै.

करही-सं., पीसल दालिक भोर। मै.

कराङ्कुल-सं., पातर टाङ आ गर्दनि वाला नमहर पक्षी। (लाक्षणिक) एक समान शरीरवाला मनुष्य। (अनादर मे) मै.

कराल-विशे., भयावह। सं. तत्सम

कराहब-क्रि., रोग शोकक पीड़ा सँ रहि रहि व्यथित शब्दक उच्चारण करब। मै.

करिअम्मा-सं., कारी रंगक आमक नाम। मै.

करिआ-विशे., कारी रंगक व्यक्ति। मै.

करिआइन-विशे., कारी रंग बानिगेल वा भरल। मै.

करिआझुम्मरि-सं., स्त्रीगणक खेल विशेष। दू माउगि परस्पर कसिकय हाथ पकड़ि एकठाँ पैर कें सटाकय एक दोसरक भरें तेजी सँ नचैत अछि। प्रयोग—"करिया झुम्मरि खेलै छी बगरा बच्चा मारै छी।" मै.

करिऔती-सं., रब्बी कटला पर खेतीक क्रम। मै.

करिक्का-विशे., कारी रंगवाला। मै.

करिछाँह-विशे., कारी सन आभा भरल। मै.

करिछौन-विशे., कालिमा सँ प्रभावित। मै.

करिन्ना/करिन्दा-विशे., कार्य कुशल, कारीगर, स्थापत्य कला मर्मज्ञ। मै.

करिनबह-विशे., करीनक पानि बहैक बाहा। मै.

करिनाह-विशे., करीन चलाकय पानि उपछैवाला। मै.

करिनवाहि-सं., करीन चलबैक काज। मै.

करिनार-सं., करीन डुबबै योग्य बनाओल खत्ता। मै.

करिहारी-सं., रब्बी फसिल सम्बन्धी अनेक कार्य। कृषि कार्य। मै.

करीन-सं., नीचाँ सँ उपर पानि उपछि खेत पटबैक काठक बनल बाहा जकाँ एक दिश विशेष चाकर नम्मा खेतीक विशेष साधन। मै.

करुआरि-सं., नाओ चलबैक हेतु पानि कें ठेलेल दाबि जकाँ नमहर डंटा मे एक छोर पर काठक पट्टी ठोकल वस्तु। प्रयोग—"भैरव धरु करुआरि औ भोला नाथ।" विद्यापति। मै.

करुण-सं., रस विशेष। सं. तत्सम

करुणा-सं., दयालुता। सं. तत्सम

करुना करब-क्रि., अत्यन्त शोकें कानब, दयनीय रुपें कानब। मै.

करूर-विशे., निर्दय, दयाक लसियो नै रखनिहार। क्रूर। मै

करेज-सं., हृदय पिण्ड। भीतरी अंग। मै

करेजी-सं., हृदय पिण्डक मांस। मै.

करेड़-विशे., दाँत कड़कड़ा कय अनिष्टक इच्छा प्रकट कयनिहार। मै

करेत-सं., परम विषाह साँप विशेष। मै.

करैला-सं., लत्ती मे फड़ैवाला तीत स्वादवाला रुचिगर व्यञ्जन। मै.

करोट-सं., बाम दहि भाग देहक फेर। मै.

करौना-सं., काँटवाला गाछ मे फड़ैवाला नमोन गोल छोट दानाक अम्मत फड़। मै.

करौछ-सं., देखू—"करछु"। मै.

कल्लर-विशे., माङ्‌ चाङ्‌क आ ऐंठो कूठ खाइक विचार नैं राखि खाइक हेतु आतुर भिखारी। मै.

कल्ला-सं., मुहक नीचाँ उपरक जोड़, जबड़ा। (हि.) मै.

कल्ला तोड़ब-क्रि., उपर नीचाँ दाँतक पाँती कें जोड़क मूल स्थान कें अलग करब। मै.

कल्ला पहाड़-विशे., (लाक्षणिक) पहाड़ सन सक्कत कल्लावाला, अत्यन्त बलगर। मै.

कल्पवृक्ष-सं., (लाक्षणिक) दान करैले उद्यत। सं. तत्सम

कल्हुका-विशे., आइ सँ पहिने वा पाछूक। मै.

कऽल-सं., शान्ति, चैन, असुआस। मै.

कल-सं., यन्त्र। मै.

कल-सं., दूनू हाथ पसारिकय जोड़ैक मुद्रा। अञ्जलि। मै.

कलकल-विशे., मधुर ध्वनि। मै.

कलकल करब-क्रि., १. सतत कोनो वस्तु खाइक हेतु लालायित हैब। भूखक द्वारें खाइक हेतु आतुर रहब। २. अनेक धीयापूताक हल्ला गुल्ला करब। मै.

कलकलाएब-क्रि., खयबाक हेतु व्यग्र होएब। मै.

कलकलि-सं., हौहटि (चर्मरोग) कें कुड़िऔला सँ उत्पन्न सगरे घाओ। मै.

कलकली-सं., भूखक द्वारें भोजनक आतुरता। मै.

कऽलकुशल-अव्यय, स्थिरता आ शान्तिपूर्वक। मै.

कलँगी-सं., मुकुटक उपर देल पंख। मै.

कलगैंआ-विशे., भिन्न आकार प्रकारक पितरिया लोटा विशेष। मै.

कलचब-क्रि., भारी वस्तु कें गऽर घुमबैक लेल चालित करब। मै.

कलछप्पन-सं., अपलाप अर्थात् बहाना बनाकय वास्तविकता कें झाँपब। मै.

कलछब-क्रि., भारी वस्तुक अनुचित ढंगें अपनैं घुमि जाएब। मै.

कल जोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) दूनू हाथ जोड़ि कय प्रार्थना करब। मै.

कलजोड़ी-सं., प्रार्थनाक क्रम मे बान्हल अञ्जलि। मै.

कलटब-क्रि., १. भारी वस्तुक एकदिश उनटि जाएब। २. कोनो वस्तु कें एक बासन सँ दोसर वासन मे करब। मै.

कलटाएब-क्रि., १. एक वासन सँ दोसर वासन मे उझिलब। २. भारी वस्तु कें गर धरबैले उनटाएब। मै.

कलनाद-सं., संगीत एवं वाद्यक प्रिय शब्द। सं. तत्सम

कलपन-सं., पीड़ा देनिहार प्रति आह। मानसिक व्यथाक प्रभाव। सं. तद्भव

कलपनाथ-सं., जड़ीबूटी विशेष। मै.

कलपब-क्रि., दुखी होएब। दुखदायी पर आक्रोश करब। मै.

कऽलबल-अव्यय, शान्तिपूर्वक, चुपचाप। मै.

कलबार-सं., वैश्य जाति विशेष। मै.

कलम-सं., लेखनी, लिखैक नोकवाला साधन। मै.

कलम-विशे., बीज सँ उत्पन्न गाछ कें विशेष गाछक डारि मे जोड़िकय बनाओल विशेष गाछ। मै.

कलम काठी-सं., १. कलम बनबैक योग्य डाँट। २. धानक प्रभेद। मै.

कलमदान-सं., कलम रखैक वासन। मै.

कलमबाग-सं., जोड़लवाला आमक गाछी। मै.

कलमी-विशे., जोड़ डारिवाला गाछक फल। मै.

कलमुहाँ-विशे., कालसन मुहवाला। दुष्ट। स्त्री० कलमुही। मै.

कलयफिरब-क्रि., अनुकूल परिस्थिति आएब। मै.

कलरब-सं., पक्षी सभक मधुर बोली। नेन्नाक बाजब। मै.

कलर साहों-सं., महगीक द्वारें कोनो वस्तुक हेतु सब लोक कें किनबो मे कल्लर जकाँ बनैक स्थिति आ आतुरता। मै.

कलराह-विशे., कल्लर जकाँ करैवाला। स्त्री० कलराहि। मै.

कलश स्थापन-सं., कोनो शुभ काजक अवसर पर कलसा बैसाएब। मै.

कलस-सं., आम आदि गाछक अगिला मूड़ी। मै.

कलसगर-विशे., उपर उठल नमहर छाती गर्दनिवाला हृष्टपुष्ट लोक। मै.

कलसा-सं., घैल, तथा घैलक आकार प्रकारवाला द्रव्यक जलपात्र । मै.

कलसी-सं., वसनी, छोट घैल वसनीक आकारक धातुक जलपात्र । मै.

कलह-सं., झगड़ा, विरोध । मै.

कलहन्त-विशे., हृदय सँ व्यथित, ग्लानि आ दुख सँ भरल । मै

कलहाल-सं., हाहाकार, कोलाहल, महगी । मै.

कलही-विशे., झगड़ाहु, झगड़ाक प्रवृत्तिवाला । सं तत्सम

कला-सं., लूरि, गुण । मै.

कलावत्तू-सं., दाँत पर जमाओल सोनक पत्र । मै.

कलामी-विशे., नामवर, प्रभावशाली । मै.

कलाल-विशे., मद्यक व्यवसायी । मै.

कलाली-सं., दारूक दोकान, मद्यशाला । मै.

कलि-सं., चारि युगक अन्तिम युग । मै.

कलिकाल-विशे., पापमय समय । मै.

कलिङ्ग-सं., देशक एक राज्य । मै.

कलियुग-सं., वर्तमान युग । मै.

कलियुगाहि-विशे., लाजधाखहीन, उद्दण्ड स्त्री । मै.

कली-सं., अविकसित फूल । कोंढी । मै.

कलेंकलें-अव्यय, धीरें धीरें । क्रमहिं । मै.

कलेजगर-विशे., सबल छातीवाला । हृदयक मजबूत । मै.

कलेजा-सं., छातीक भीतरक छत्तासन कोमल अंग । फेंफड़ा । मै.

कलेश-सं., कष्ट, वेदना । क्लेश । सं. तद्भव

कलै-सं., धातुक द्रवक लेप, पोत । मै.

कलोल-सं., बहुत लोकक एक संग अव्यक्त ध्वनि । मै.

कलौ-सं., मध्याह्नक भोजन । मै.

कलौआ-सं., दुपहरिया दिनक भोजन व्यापार । मै.

कवच-सं., १. अस्त्रक चोट सँ बचबैक हेतु देहक धातुक बनल अंगा टोपी । २. भौतिक (भूत प्रेत आदि अदृश्य) विषय सँ बचबैक हेतु मन्त्र तन्त्रात्मक विधि । सं. तत्सम

कवि-विशे., काव्य कला मे निपुण । सं. तत्सम

कवित्त-सं., कवित्व, कविक पद्यमय कल्पना । छन्द विशेष ।

कविता-सं., कविक पद्यमय कृति । सं. तत्सम

कवितास-विशे., कवितामय गप । मै.

कविराहा-विशे., कबीर सम्प्रदाय कें मानैवाला । मै.

कष्ट-सं., दुख, रहै सहैक अव्यवस्था सँ उत्पन्न क्लेश । सं. तत्सम

कषाय-सं., छौ रस मे एक रस विशेष । सं. तत्सम

कस्तन-सं., अंकुश, कार्य करं प्रति जोर दैक चेष्टा । मै.

कस्तर-सं., घिनाओन वस्तुक ढेरी । कूड़ा करकट । मै.

कस्तरा-सं., दही पौरैक बासन । मै.

कऽस-सं., प्रसवक उपरान्त परसौतीक गर्भाशय मे रुकल रक्तविकार (अपरा) । मै.

कसक-सं., हृदय कोन मे दबल व्यथा, पश्चात्ताप । हि. तत्सम

कसकल-विशे., कसिकय बैसल । कानोकान कसल । मै.

कसकस करब-क्रि., देह मे उत्तेजना भरल रहब । देह तन तन करब । मै.

कसकसाएब-क्रि., १. सक्कत कय बैसाएब । २. उत्तेजना सँ देहक ऐंठी बढ़ब । मै.

कँसकूट-सं., काँस पित्तरि मिलल धातुक बर्त्तन । मै.

कसना-सं., कसैक साधन । सक्कत करैवाला वस्तु । मै.

कसब-क्रि., सक्कत करब । मै.

कसबाहि-सं., स्त्रीक अधिक रक्तस्राव । मै.

कसमकस-विशे., अधिक भरल । आँट सँ वेशी कसल । मै.

कसमस करब-क्रि., अधिक भोजन तथा असुविधा सँ विकलताक संग अस्थिरता । मै.

कसमसाएब-क्रि., मानसिक उत्तेजना सँ शरीर चञ्चल होएब । मै.

कसरति-सं., शरीरक गठन बढ़बैले व्यायाम, अंग चालन । मै.

कसरात-सं., कनेक अवशेषक स्थिति । मै.

कसरि-सं., अवशिष्ट स्थिति, बाँकी, शेष । मै.

कसरियाह-विशे., रोगक शेषवाला । मै.

कसरेस-विशे., १. शेष रहैक सम्भावनावाला। २. कठिनता सँ खर्च करैवाला। मै.

कँसहँडी-सं., काँसक हण्डी। काँसक बट्टुक। मै.

कसाइ-विशे., निर्दयता सँ जीव कें कटैवाला। वधिक। मै.

कसाइन-विशे., विकृत स्वादवाला, तिताइन। मै.

कसामसी-अव्यय, लगभग, धतपत, कसमस करैक प्रकृति। मै.

कसार-सं., गुड़क संग अनेक मसाला दय चाउरक चिकसक मुठरा (लड्डू) जकाँ बनाकय एक प्रकारक मधुर जकाँ पदार्थ जे छठिक डाली मे पड़ै अछि। भुसवा सेहो कहल जाइछ। मै.

कसाल-सं., बड़का मोटका राड़ी खढ जकरा काश सेहो कहल जाइछ तकर वन। मै.

कसीदा-सं., कपड़ा पर सूइ ताग सँ चित्र काढैक विशेष कला। उ. तत्सम

कसीस-सं., औषध, जड़ी विशेष। मै.

कसुआ-विशे., अनेक मसाला मिलाकय कसल मेरिचाइक अँचार। मै.

कँसेरा-विशे., काँसक तथा आनो धातुक वर्तन गढ़निहार आ काँसक बनीज कयनिहार। मै.

कसैं-सं., देह मे लगवैवाला प्राचीन कालक सुगन्धित चूर्ण जे कचूर, लोध आदि सुगन्धित द्रव्य मिलाकय बनै अछि। मै.

कसैया-सं., किशोरक दाँत मे लगैवाला रोग। मै.

कसौटी-सं., सोन जँचैवाला पाथर। मै.

कहकह-अव्यय, दीप्तिमान्, प्रज्वलित (आगि)। मै.

कहकहा लगाएब-क्रि., खूब जोर सँ हँसब। मै.

कहगील-सं., पलस्तर कें समतल करैवाला चौकोर नाम राजमिस्त्रीक काठक डंटा सन वस्तु। मै.

कहतरा-सं., सोझ उतार कान्हवाला गहींर पैंघ छाँछ। दही पौरैक वासन। मै.

कहनसुनन-विशे., गप सपक प्रसंग मे कहल आ सुनल गेल नीक अधलाह। मै.

कहब-क्रि., दोसरा कें सुनैक योग्य बाजब। मै.

कहबी-सं., लोकोक्ति, फकड़ा। मै.

कहबैका-विशे., नामी, प्रसिद्ध, उचितवक्ता। मै.

कहर-सं., अनर्थ, अप्रत्याशित घटना। उ. तत्सम

कहरब-क्रि., आँहि आँहि कय रोग आ शोक मे व्यथा प्रकट करब। मै.

कहरिया-विशे., डोली उठबैवाला श्रमिक। मै.

कहाँ-अव्यय, १. कतय (प्रश्नवाचक)। २. अस्वीकारक शब्द। प्रयोग—"हौ तों भोरे कहाँ गेल छलह? वौआ कें नै देखलहुन। हम कहाँ देखलियैन।" मै.

कहाउति-सं., द्विरागमनक निश्चय विधिवत् कहा पठवैक विधि। मै.

कहाकही-सं., १. निश्चयात्मक बातचीत। २. झगड़ाक क्रम मे कथोप कथन। मै.

कहात-सं., दुर्भिक्ष, अभाव, अकाल। मै.

कहाली-सं., अकालक द्वारें उपस्थित संकट। मै.

कहाँदनि-अव्यय, वाक्य पूरक परोक्षवर्ती अनिश्चय द्योतक। प्रयोग—"कहाँदनि ओ सब आएल छला। कहाँदनि मारि मे बहुत लोक मुइलै।" मै.

कहाँधरि-अव्यय, कत्तऽ पर्यन्त, कत्ते दूर। मै.

कहा पठाएब-क्रि., सम्वाद पठाएब। मै.

कहावदी-सं., निश्चयात्मक बातक व्यवस्था, प्रतिक्षा, शर्त। मै.

कहार-विशे., देखू—"कहरिया"। मै.

कहारी-सं., डोली उठाकय लय जाइक जीविका। मै.

कहाली-विशे., रोगी, दुखिताह। मै.

कहासुनी-सं., झगड़ाक रुपें उलहन उपदरक संग परस्परक बाताबाती। मै.

कहि-अव्यय, कहैक क्षमता। प्रयोग—"नै कहि ओ कतय गेला।" मै.

कहिया-अव्यय, समयक प्रश्न, कोन दिन। मै.

कहुखन-अव्यय, कोनो अनिश्चित समय मे। मै.

कहुला-सं., छोट कोहा। मै.

कहौआ-विशे., कहैवाला, सामाजिक रुपें कहैक योग्य। मै.

कहौतिया-विशे., कहाउत लय जाइवाला। मै.

कहौती-सं., कहैक तात्पर्य्य, कहैक बात। मै.

का

काइ-सं., १. जमल मैली। २. शरीरक नाश करैवाला रोग। मै.

काइँ-विशे., कृपणता भरल दुष्ट। मै.

काइँकाइँ-अव्यय, १. कौआक कटु शब्द। २. कौआक सन अप्रिय शब्द। ३. आतुरता सँ उपेक्षणीय प्रार्थना शब्द। मै.

काइट-सं., तेलक नीचाँ जमल दूषित मैली। मै.

काँइत-सं., १. जूआक खेल मे देल गेल बाजीक वस्तु। २. शरीरक आभा, छवि। मै.

काइन-सं., पहिने सँ संचित विरोधक प्रतिशोध भावना। मै.

काइम-सं., १. बाँस कें चीरि चीरि अत्यन्त पातर नम्मा छड़। २. बातक स्थिरता। कायम।
उ. तद्भव/मै.

काइल-विशे., देखार, प्रमाणित, कायल। उ. तद्भव

काइ लागब-क्रि., १. अवनतिक क्रम धरब। २. मैल जमब। मै.

काँउकाँउ-अव्यय, १. नेन्नाक अदृश्य वस्तुक विभीषिका। प्रयोग—"बौआ हौ! चुप रह नै तँ काँउ-काँउ धऽलेतौ।" २. अनेक लोकक असम्बद्ध शब्द। मै.

काउच-सं., मुहक ठोर सभक व्यास अर्थात् मुहक चीरा, फाड़ि। मै.

काउनि-सं., मेहीं दानावाला भदबरिया पवित्र अन्न। मै.

काक-सं., कौआ। सं. तत्सम

काँकड़-सं., पैर मे गड़ैवाला कड़ा फुटका पाथरक पैघ कण। मै.

काँकड़ि-सं., लत्ती मे फड़ैवाला पैघ स्वादिष्ट फल विशेष। खरबूज। मै.

काँकमाली-सं., औषधि (जड़ी) विशेष। मै.

काकरमुड़िया-सं., औषध विशेष। मै.

काका-विशे., पित्ती, पिताक भाइ। स्त्री० काकी। मै.

काकु-सं., कण्ठ ध्वनिक विविध भिन्नता। मै.

काँकोड़-सं., धनखेती मे होइवाला भदबोरिक पैघ कीट विशेष। मै.

काँख-सं., बाँहिक जड़िक निचला भाग। बाँहि आ पाँजरक जोड़वाला भीतरक भाग। मै.

काँखी-सं., पोर आ गीरह सँ उगल अंकुर। मै.

काँखी लागब-क्रि., जांघक दोगवाला स्थान मे कुड़ियैनी सँ छनछनाएब। मै.

काग-सं., १. कौआ। २. सीसी बोतलक कोंढ़िलाक ठेपी। मै.

कागज-सं., स्पष्ट। लिखैक आधार पत्र। मै.

कागजीकाज-सं., लिखापढ़ी कय रखैवाला काज। मै.

कागदोस-सं., बैसारी खेल। कोनो वस्तु लोकि लोकि कय खेल। मै.

कागा-सं., कौआ। मै.

काङ्क्षा-सं., इच्छा। सं. तत्सम

काच-सं., सीसा। मै.

काँच-विशे., अजोह, अपक्व। मै.

काँचनोन-विशे., पतनोना, बिन रान्हल नोन। मै.

काचर कुचर-अव्यय, मेघक सञ्चार, मेघ लगैक क्रम। मै.

काँची-सं., आँखिक विकार, उज्जर मल। मै.

काछ-सं., दूनू जांघक जोड़वाला अंग। इन्द्रिय आ जांघक दोग। राग। मै.

काछब-क्रि., द्रवणशील वस्तु कें पोछि उठाएब। मै.

काछ लागब-क्रि., जांघक दोग मे छीला पड़ब। मै.

काछु-सं., दीर्घजीवी जल जन्तु विशेष। मै.

काज-सं., कार्य, कर्त्तव्य। मै.

काजक-विशे., काज मे अबै योग्य। मै.

काजर-सं., स्निग्ध द्रवक अंजन; आँखिक सिङार। मै.

काजुल-विशे., काज करै मे दक्ष। मै.

काञ्चन-सं., सोन, सुवर्ण। सं. तत्सम

काँट-सं., १. कन्टक, वनस्पतिक नोकवाला रोम। २. काँटक आकारक दानावाला गहना विशेष। मै.

काट-सं., १. विरोध। २. छवि, रचना शैली। मै.

काट करब-क्रि., भितरैं भीतर विरोध करब। मै.

काट काटब-क्रि., हरदम विरुधले व्यवहार राखब। मै.

काटखोंट-सं., कनेक कनेक काटिकय मनोनुकूल बनाएब। योजना मे थोड़ेक छाँटब। मै.

काटछाँट-सं., कोनो वस्तु कें काटि आ छाँटि थोड़ करब। मै.

काटब-क्रि., खण्डित करब, टुकड़ी करब। मै.

काँटा-सं., १. पैघ नोकवाला ठोकैक लोहक कील। २. स्वेटर आदि बीनैक नोकबाला वस्तु। मै.

काटि-सं, देखू—"काइट"। मै.

काँटी-सं., गोल नाम लोहाक पातर ठोकैक वस्तु। मै.

काँटू-सं., दाना फाड़ल मरूआक सीस। मै.

काठ-सं., काष्ठ, लकड़ी। सं. तद्भव

काठिन-सं., कठिनता। काठिन्य। सं. तद्भव

काठी-सं., अत्यन्त पातर सक्कत डाँट। मै.

काँडरि-सं., सरिसो आदि फसिलक भोगार पात। मै.

काड़ा-सं., कड़ी जकाँ मोड़ल पैरक गहना। मै.

काँड़ि-सं., माल जालक मुह मे ढारैक लेल बनाओल बाँसक धारदार चोंगा। मै.

काढनि-सं., खाइक हेतु वासन सँ भोजन बहार करैक प्रक्रिया। मै.

काढ़ब-क्रि., एक वासन सँ आन वासन सब मे भोजन परसब। मै.

काढ़ा-सं., औषध हेतु जड़ी बूटीक संग औंटल पानि। मै.

काँण-सं., गेंटि गेंटि कय राखल वस्तुक ढेरी। मै.

काँणी-सं., मालजालक कण्ठक भीतरक धाओ। मै.

कात-सं., हटिकय अलग होइक संकेत शब्द। दूर, किनार ओर। मै.

कात करब-क्रि., हटाएब, अलग करब, किनार होएब। मै.

कातर-सं., १. बाधबोन मे आरिधूर पर चतरल वीटवाला विशेष प्रकारक खढ़। २. दीन दुर्खा। सं. तत्सम

काता-सं., खाँड। प्रयोग—"हनहन कर तुअ काता।" —विद्यापति। मै.

काँति-सं., १. शोभा, लावण्य, कान्ति (सं. तद्भव) २. जूआ खेलक बाजी राखब। मै.

कातिक-सं., मास विशेष, कार्तिक। सं. तद्भव

काती-सं., घासक कुट्टी कटैक अस्त्र। मै.

कादो-सं., पानि सँ घूलल माटि, थाल। मै.

कान्त-विशे., प्रियतम, प्रणयी। सं. तत्सम

कान्तीलोहिया-विशे., काँच एवं मटियाइन लोहक ढरूआ लोहिया। मै.

कान्ह-सं., खुट्टाक आगू भाग मे अड़बैक लेल दू कुव्वी जकाँ कान। बाहु मूल सँ उपर। मै.

कान्ह लगाएब-क्रि., अपन कन्हा पर उठाएब। (लाक्षणिक) कोनो प्रकारक भार उठबै मे जोर लगाएब। सहायता करब। मै.

कान्ह लागब-क्रि., बहुत दिन पर अथवा अधिक जूआ आ हरक पालो उठबैक कारणें बड़दक कान्ह फटब। मै.

कान्ही लागब-क्रि., अनिच्छाक कारणें अरुचि प्रकट करैक हेतु कनन मुह होएब। मै.

कान-सं., श्रवणेन्द्रिय, कर्ण। सं. तद्भव

कानन-सं., कनैक चेष्टा आ प्रसंग। जंगल। सं. तद्भव

कान पाथब-क्रि., आनक बात सुनैले पूर्ण साकांक्ष बनब। मै.

कानब-क्रि., नोरक संग व्यथित शब्द करैत दुःख प्रकट करब। मै.

काना-सं., खेतक कोनवाला स्थान तथा सिरौड़क मोड़। प्रयोग—"अनन्य एकचास काना पर कैक चाम।" मै.

कानाकानी-सं., १. अनेक कान सँ सूनि आएल शब्द। २. भीतरी झगड़ा। मै.

कानाफूसी-सं., फुसर फुसर गुप्त वार्ता। मै.

कानि-सं., मन मे सञ्चित पहिलुक विरोध। मै.

कानी-सं., १. माथक केश कें कपाड़ दिश काटिकय बनाओल कोन। प्रयोग—"शंकरवा कानी तानी छटाकय विवाह करय चलल अछि।" २. कोनो वस्तुक बढ़ल आवश्यक अंग। प्रयोग—"ऐ खुट्टाक कानी (बढ़ल अंग) मारला सँ दऽरी नीक नहाँइत बैसत।" ३. घरक दावा (चारू दिशक उँचगर किनार) सीढ़ी आ देवालक कोन। प्रयोग—"गोबर माटि अथवा सुर्खी सीमेन्ट सँ कानी भरि दियौ।" ४. कोनो ऊँच स्थानक कड़नी। प्रयोग—"कानी पर नै बैसू खसि पड़ब।" मै.

कानुनि-विशे., हलुआइ जातिक स्त्री। मै.

कानू-सं., हलुआइ। मै.

कानून-सं., नियम सँ विधान। उ. तत्सम

काप-सं., बाँसक कमची, खढ़पात आदि केर तेज धारवाला कोर जाहि सँ अनायास देह कटि जाइत छैक। मै.

कापी-सं., लिखैक बही। मै.

काफर-सं., जन्मौटि नेन्ना कें सोन्हाओन दैक सुथनी सन काष्ठौषधि। मै.

काम-सं., १. काज। २. मैथुनक इच्छा। ३. इच्छा। उ./सं. तत्सम

कामचोर-विशे., काज करै सँ देह बचबैवाला। मै.

कामत-सं., खेती बाड़ीक क्षेत्र (विस्तृत)। उ. तत्सम

कामति-विशे., १. कामत परक निर्देशक। २. प्रतिष्ठित उपनाम। मै.

कामदेव-सं.; स्त्री पुरुषक वासनाक देवता। सं. तत्सम

कामना-सं., अभिलाषा। सं. तत्सम

कामरि-सं., कटहरक कोआ सँ अतिरिक्त सौँन सन झाबावाला पदार्थ। प्रयोग–"को खँब की कामरि खँब।" मै.

कामहि-विशे., उद्योग धन्धाहीन, श्रम मे बाधित। मै.

कामोद-सं., मेहीं सुगन्धित धानक प्रभेद। मै.

कामौर-सं., उत्तर वाहिनी (सुलतानगंजक) गंगाक पवित्र जल जाहि वासन मे अर्थात् बाँसक पेटरा मे सुरक्षित कय यात्री पैदल जाकय वैद्यनाथ कें चढ़बै अछि तकर भार। मै.

कायर-विशे., पुरुषार्थहीन लोक। डेरबुक, कामचोर। मै.

कायस्थ-सं., बुद्धिजीवी जाति विशेष। मै.

काया-सं., शरीर, देह। सं. तद्भव

कार्य-सं., काज। सं. तत्सम

कार-सं., १. क्रिया, कर्त्तव्य। २. छोट मोटरगाड़ी। अं. तत्सम/मै.

कारक-विशे., १. क्रियाक उत्पत्ति मे सहायक। २. काज कयनिहार। सं. तत्सम

कारण/कारन-सं., हेतु। सं. तत्सम/तद्भव

कारनी-विशे., रोगी, व्याधित। भूत-प्रेत पीड़ित। मै.

कारबार-सं., काजक समूह, अनेक व्यवसाय। मै.

कारा-सं., जहल जेल। बन्दी गृह। सं. तत्सम

कारिख/कालिख-सं., कारी रंगक दाग। मै.

कारी-सं., अन्धकारवाला रंग। खापड़िक पेनक रंग। मै.

कारीगर-विशे., कला मर्मज्ञ, सूतिहार। हि. तत्सम

काल्हि-अव्यय, बीतल निकटतम दिन, अबैवाला निकटतम दिन। मै.

काल्हुक-विशे., १. (लाक्षणिक) अत्यन्त कम समयक। २. काल्हि भेनिहार। मै.

काल-सं., समय। मै.

कालकन्टक-विशे., (लाक्षणिक) दुखदायी। पीड़ाक मुख्य कारण। मै.

कालकाटब-क्रि., कोनो प्रकारें समय खेपब। कष्ट सँ जीवन बिताएब। मै.

कालटारब-क्रि., कोनो नियत समय पार कयला सँ आगूक हेतु समय बढ़ाएब। मै.

काली-सं., आदिशक्ति, देवी, शासन शक्ति। मै.

काँवकाँव-अव्यय, कौआक बाजब। मै.

काश-सं., कोशी कातक मोट नाम राड़ी खढ़। मै.

काशी-सं., ज्योतिर्लिंग विश्वनाथ स्थान। विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। सं. तत्सम

काशीवाल-विशे., १. काशी मे भेनिहार। २. देव-स्थल काशीक पण्डा। मै.

काष्ट-सं., काठ, हि० लकड़ी। सं. तत्सम

काँस-सं., चानीक भिन्न पाण्डुर रंगक धातु, कांस्य। सं. तत्सम

कास-सं., खोंखी रोग विशेष। कफ रोग। सं. तत्सम

कासश्वास-सं., साांसी रोग, कफक प्रकोप सँ उत्पन्न दम फूलैवाला रोग। सं. तत्सम

कासर-सं., बनैया भैंसा (नेपाली मैथिली)। सं. तत्सम

काह-सं., धोला उत्तर पानिक संग बहराएल मैली। मै.

काहकूह-सं., भीतरक मैलीक संग उपरक दुर्गन्ध आ घिनाओन द्रव। मै.

काहि काटब-क्रि., व्यथित होइत जीयब। मै.

काहिर-विशे., अहदी आलसी, उत्साहहीन। उ. तद्भव

काहेकुहे-अव्यय, हिन्दी बोली। मै.

कि

कि-सम्बन्धयोजक अव्यय, प्रयोग–"आहाँ रहब कि जाएब।" मै.

किकियाएब-क्रि., अव्यक्त आर्त शब्द करब तथा कराएब। प्रयोग–"एना कुकुर जकाँ अनेरे किकिआइ छी। व्यर्थ नेन्ना कें किकियबै छह।" मै.

किच्चड़-विशे., पानि हेरयला सँ चूलल माटिवाला स्थान। मै.

किच्चब-क्रि., उपर सँ जोर दय नीचा दाबब। प्रयोग–"ओ तँ क्रोधक लेल दाँते किच्चऽ लगला। मै.

किचकिच-अव्ययरुपक विशे., पानि, हेराएल माटि पर लात खूर्दनि सँ बनल असर्ध स्थान। मै.

किचकिचाएब-क्रि., कोनो विशेष अथवा खिसियाह व्यक्ति कें विशेष बात सँ बारम्बार बिगड़ाएब। मै.

किचकिचाह्-विशे., १. अनेरो कोनो बात सँ सतत बिगड़निहार। २. पानि माटि सँ बनल असर्ध। मै.

किचाड़-सं., माटि पानि सँ विकटता। मै.

किचाड़ब-क्रि., माटि पानि एक करब। मै.

किच्चिन-सं., स्त्री जातिक प्रेत विशेष। (यक्षिणी) मै.

किछु-अनिश्चयवाचक सार्वनामिक अव्यय, प्रयोग—"हमरा किछु कहैक अछि।" मै.

किट किटाएब-क्रि., दाँत बहार कय दाँतक शब्द करब। मै.

किड़री-विशे., भुजलो पर आ भिजौली पर पथरायले (कड़ा बनले) रहवाला दलिहन वा आन भोज्य पदार्थ। मै.

कित्ता-सं., नमती आ चकराँइ मे विस्तृत क्षेत्रक परिधि। मै.

किदनि-अनिश्चयवाचक सार्वनामिक अव्यय, कोनो (अविश्वित) विषय। मै.

किन्नरि-सं., सामान्य मानव सँ भिन्न सुन्दरता मे प्रसिद्ध देव योनिक आ गिरि जनक स्त्री जाति। पु० किन्नर। मै.

किन्नहु-अव्यय, कोनो प्रकारें, कथमपि। मै.

किनक/किनकर-प्रश्नवाचक सर्वनाम, सम्बन्ध कारकक रूप। मै.

किनका-प्रश्नवाचक सर्वनामक कर्मकारकक रुप। मै.

किनलहा-विशे., कीनिकय आनल वस्तु। मै.

किनहेर-सं., ऊँच स्थानक तट, कात। मै.

किनार-सं., कछेर, तट, कात। मै.

किनारि पाड़ब-क्रि., नाकक भरें अस्पष्ट शब्द करब। मै.

किनारी-सं., धोती आ शाड़ीक पाढ़िक रुपें देल जाइवाला सुन्दर चमकदार वस्तु। मै.

किनुआ-विशे., कीनल गेल वस्तु। मै.

किने-अव्यय, नाका पूरक काकु। प्रयोग—"बुझलौं किने? ओजे किने से एतवा कहि चोट्टहि घूमि गेला।" मै.

किम्मति सं., १. पराक्रम, पौरुष। २. मूल्य, दाम। उ. तद्भव

कियाल-विशे., जोख तौल करैवाला। मै.

कियै/कियैक-अव्यय, हेतुक प्रश्न, कोन कारणें। मै.

किरें-सं., कपड़ा बीनैक कल मे वैं (वय) कें सरियवैत रखनिहार सूतक बनल यन्त्र। मै.

किरकिराएब-क्रि., कटु शब्दें दाँत बजायब। प्रयोग-"अनेर नेन्ना नै सूतल मे दाँत किरकिरबै छै। मै.

किरण-सं., ज्योति, प्रकाश। सं. तत्सम

किरदानी-विशे., कयल काज, कृत्य। मै.

किराँत-सं., पर्वतक वनवासी, असभ्य मानव। सं. तद्भव

किराना-सं., मानव जीवन मे नित्य उपभोग योग्य सामान्य सामग्री। मै.

किरानी-विशे., कार्यालय मे लेखा जोखा मे नियुक्त लिपिक। उ. तत्सम

किरासन-सं., मटिया तेल। अं. तद्भव

किरिया-सं., १. शपथ। २. श्राद्धादि कर्म। मै.

किरीच-सं., काठक गोल नाम छड़ीक खोल मे राखल जाइवाला घातक अस्त्र, गुप्ती। मै.

किरीट-सं., मुकुट। सं. तत्सम

किल्ला-सं., १. माल जाल बन्हैक खुट्टा, कोनो वस्तु मे ठोकैक लेल सक्कत डंटा। केवाड़ बन्न करैक चलता कील। २. गढ़। मै.

किल्ली-सं., केवाड़क दूनू पट्टा कें भीतर सँ बन्न करैवाला। मै.

किलकारी-सं., छोट छोट नेन्नाक मधुर ध्वनि। मै.

किलह्वोरि करब-क्रि., व्यर्थ हल्ला मचाएब। मै.

किस्तकार-सं., खेती आ खेतीक समय। मै.

किसान-विशे., खेतिहर। खेती मात्र जीवनवाला। मै.

की

की-अव्यय, प्रश्नवाचक?। मै.

कीचनि-सं., माटि कें पानिक संग लात सँ मिलवैक क्रिया। मै.

कीचब-क्रि., १. खढ़ पातक संग माटि कें लात सँ दाबि दाबि पानि मे घुलाएब। २. दुख दैक ध्येय सँ ककरो लात मारि मारि दबाएब। मै.

कीट-सं., दृश्य आ स्पर्श योग्य सूक्ष्म जीव। मै.

कीड़ा-सं., छोट छोट उड़ैवाला ससरैवाला जन्तु अति सूक्ष्म कीड़ी। मै.

कीया-सं., छोट सँ छोट लकड़ीक बनाओल डिब्बा। मै.

कीर्ति-सं., सुकर्म सँ उत्पन्न प्रतिष्ठा, नाम, यश। सं. तत्सम

कील-सं., १. स्तोत्र विशेष। २. दू वस्तु कें जोड़ैवाला छड़। ३. जाँतक पाट अड़ैलेल बीचक खुट्टा। मै.

कु

कुइआँ-सं., सामान्य इनार। मै.

कुइर-विशे., कारी सँ भिन्न (भुल्ल) आँखिक पुतरी। मै.

कुइरा-विशे., कुइर आँखिवाला। मै.

कुकर्म-सं., शास्त्र लोक सँ भिन्न अधलाह कर्म। मै.

कुकर्मी-विशे., निन्दित कर्म करैवाला। मै.

कुकरालूझि-सं., कुकूर जकाँ एकै बेर, एकै वस्तु कें हथियबैक बहुत लोकक चेष्टा। मै.

कुकुरचालि-विशे., कुकुर जकाँ अनैष्ठिक प्रकृति-वाला। मै.

कुकुरमाछी-विशे., कुकुरक देह पर रहैवाला भिन्न जातिक विशेष माछी। मै.

कुकुरालूझि-सं., कुकुर जकाँ एक वस्तु पर अनेक लोकक झपटैक यत्न। मै.

कुकुहाएब-क्रि., कानक भीतर कुड़ियैनी, अंगुलि दय कानक भीतर कुड़ियाएब। मै.

कुकूर-सं., कुत्ता। स्त्री० कुत्ती। सं. तद्भव/मै.

कुगर-विशे., अनुचित ढंगे, हानिकारक रुपें बैसल। मै.

कुङ्कुम-सं., सिन्दूर सँ अतिरिक्त चानन रुपक लाल रंगक गर्दी। मै.

कुच्चर-विशे., फूसि बातक दोष थोपि अनका दोषी, निन्दित करैवाला। मै.

कुच्चा-विशे., आमक अजोह गुद्दा कें चूरिकय बनल अँचार विशेष। मै.

कुच्ची-सं., खढ़, पाट, सोन आ केश आदि मृदु वस्तु कें आवश्यकतानुसार मोट पातर डन्टाक आगू भाग मे बान्धि अगिला छोर काटि अगिमा मुहकें एक रंग चौरस बनाकय चित्र बनबै सँ ल' क' कुम्हारक वासन गढ़ब आ घढौल जाइवाला साधन। मै.

कुच-सं., स्तन, युवतीक स्तन। प्रयोग-"कुच युग चारु चकेवा"—विद्यापति। मै.

कुचकुच-विशे., जकर स्पर्श सँ देह मे कुड़ियैनी आ पीड़ा होअए तेहन खढ़ पात आ झोल आदि पदार्थ। मै.

कुचकुचाहन/कुचकुचाह-विशे., कुचकुच जकाँ विकृत स्वादवाला पदार्थ। मै.

कुचब-क्रि., जड़ि दिश पकड़िकय मूड़ी दिशक भाग कें भूमि पर चूरब। सस्यक दाना झारब। मै.

कुचरकाचर करब-क्रि., मेघक आविर्भाव होयब। मेघक अधिक संचार होएब। प्रयोग—"तिलासँक-रातिक बिचें मेघ कुचर काचर करितें छै।" मै.

कुचरब-क्रि., मधुर अव्यक्त शब्द करब। प्रयोग—"मिथिला मे दृढ़ विश्वास छै जे आङन मे जँ कौआ कुचरैछ तँ ओ शुभ सम्वादे कहैछ।" मै.

कुचराह-विशे., उपर सँ सिद्ध रहलो पर भीतर सँ असिद्ध अन्न। मै.

कुचाएब-क्रि., चुराएब, कुचि कुचिकय झरबाएब। मै.

कुचाठ-सं., अचानक कुचल जकाँ चोट लगला सँ उत्पन्न वेदनाक संग घाओ। मै.

कुचालि-सं., असामाजिक अधलाह चालि। मै.

कुचेष्टा-सं., आनक निन्दापूर्वक मुद्रा आ आचरणक उद्घोषण। मै.

कुचेष्टी-विशे., कुचेष्टा करैक प्रवृत्तिवाला। मै.

कुचैल-विशे., घिनाओन, असर्ध रहनिहार। मै.

कुचौठ-सं., दाँत तर जीह दबला सँ उत्पन्न क्लेश। मै.

कुछब-विशे., परस्पर बेमेल। मेल नहि खाइक योग्य। मै.

कुछवि-विशे., आकर्षणहीन देहक छविवाला। सं. तत्सम/मै.

कुज-सं., मंगल ग्रह। सं. तत्सम

कुजड़ा-विशे., तरकारीक वस्तुक व्यवसायी। मै.

कुजोखी-सं., असावधानी, प्रमाद, गलती। मै.

कुझुक-सं., असावधानीक क्रिया, गलती सँ भेल हानि। मै.

कुञ्ज-सं., सघन वन आदि सँ सुन्दर सुसज्जित स्थान। मै.

कुञ्जवन-सं., कृत्रिम वनवाला स्थान। मै.
कुञ्जी-सं., ताला खोलैक लगवैक यन्त्र। मै.
कुट्टा-विशे., जाँत सिलौट सब कें कूटनिहार। मै.
कुट्टी-सं., १. घास पात कें खण्ड खण्ड कय मालक ग्रास। २. कोनो नियम पर ककरो धान आ चूरा कटैक भार। मै.
कुटकुट करब-क्रि., दांत सँ कठोर वस्तु फोड़ैक शब्द करब। मै.
कुटकुट काटब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो वस्तुक दायित्व अकच्छ लागब। मै.
कुटकुटाकय लागब-क्रि., तीव्रता सँ वेदना उत्पन्न होएब। मै.
कुटकी-सं., १. कोनो वस्तुक छोट छोट खण्ड। (लाक्षणिक) कटु सत्य अप्रिय लागब। मै.
कुटनियाँ-सं., धान आदि कुटैक शिलशिला। मै.
कुटनिहारि-विशे., धान चूरा कूटैवाली। मै.
कुटनी-विशे., १. कृत्रिम आ स्वतः ठाम ठाम पर हाथ पैर मे बनि गेल खद्धा। २. कूटैक व्यवसाय वाली स्त्री। ३. कुट्टिनी, फुसलाकय स्त्री पुरुषक अनुचित सम्बन्ध आ विरोध करवैवाली स्त्री। मै.
कुटवी-सं., सरस तरकारीवाला पदार्थक छोट छोट खण्ड। मै.
कुटमारय-सं., कुटुम्ब अर्थात् माननीय सम्बन्धिकक ग्राम। मै.
कुटमैता/कुटमैती-सं., सम्बन्ध जोड़ैक योग्यता। सम्बन्ध जोड़ैक स्थान। मै.
कुटाइ-सं., कुटैक कार्यक क्रम, कुटैक पारिश्रमिक। मै.
कुटाएब-क्रि., कुटैक काज कराएब। मै.
कुटाओन-सं., कूटैक बोनि। मै.
कुटिया-सं., १. कूटैक लगातार काज। २. अत्यन्त छोट फूसक घर। मै.
कुटी-सं., पवित्र आलयवाला छोट सन घर। मै.
कुटुम-विशे., अपन समाजक लोक। सम्बन्धी। स्त्री० कुटुमिनी। कुटुम्ब, कुटुम्बिनी। सं. तत्सम
कुटुरकुटुर-अव्यय, कड़ा वस्तु चिवबैक शब्द। मै.
कुठट्ठ-विशे., कठिनता पूर्ण जटिल, काज। मै.
कुठाठ-सं., उग्र विरोधमय बाधा। मै.
कुठार-सं., परशुरामक प्रसिद्ध अस्त्र। कुड़हरि। सं. तत्सम
कुठाम-सं., १. अपरिचित, अनभुआर स्थान। २. गुप्ताङ्ग आ ओकर परिसरक कोमल अंग। ३. अयोग्य स्थान। मै.
कुड़कुड़एब-क्रि., भूजल आ तरल वस्तु जे थोड़बैक प्रयास सँ टूटैत हो तकरा दाँतें दबाकय कुड़कुड़ शब्द करब। मै.
कुड़नी-सं., घैलक छोट रूपक माटिक वासन। मै.
कुँड़ली-सं., कुण्डली बिम्व फल, व्यञ्जनक हेतु सुस्वादु पदार्थ। वरैक पानक बरेब मे अधिक उपजैवाला व्यञ्जन। सं. तद्भव
कुड़िया-सं., भिन्न भिन्न लोक ले अलग अलग लगाओल भाग (अंश)। मै.
कुड़ियाएब-क्रि., १. देहक चमड़ा मे नह सँ मर्दन करैक इच्छा जागब तथा मर्दन करब। २. छिरियाएल वस्तु कें समेटिकय एक ठाम एक कूड़ी (ढेरी) बनाएब। मै.
कुड़ियैनी-सं., चमड़ा पर मर्दन करैक आवेग। मै.
कुड़ूर-सं., मुह मे पानि लय धारा रुपें फेंकब। मै.
कुढ़ब-क्रि., कोनो बात सँ खिसिया उठब। मै.
कुढब-सं., अधलाह आकृति, कुत्सित चेहरा। मै.
कुढ़ाएब-सं., कोनो विशेष बातें ककरो बिगड़ा दैक चेष्टा करब। मै.
कुढ़िया-सं., चाकर कम अधिक ठाढ कानबाला कड़ाही। मै.
कुण्ठा-सं., उचित मनोगति तथा प्रतिभाक अवरोध। सं. तत्सम
कुण्डली-सं., १. जन्म कालक राशि एवं ग्रह गतिक चित्रणक संग विवरण। २. लतीक छोट फल विशेष, बिम्व फल। सं. तत्सम
कुण्ड-सं., प्राकृतिक स्रोतवाला पहाड़ी खत्ता। सं. तत्सम
कुण्डाबोर-विशे., अत्यन्त गाढ़ रंग सँ रंगल। मै.
कुण्डी-सं., १. पाथरक पैघ कटोरा जाहि मे पीसैवाला पदार्थ—भाङ, नोसि विशेष काठक सोंटा (डन्टा) क मूठ सँ घसिकय पीसल जाइछ। २. केवाड़क जिञ्जीर। मै.
कुत्ता-सं., कुकूर। मै.
कुत्थनि-सं., अनेर अथवा व्यथा सँ अथवा देहक दुर्बलता सँ अव्यक्त ध्वनिक संग जोर लगबैक स्वभाव। मै.

कुत्थब-क्रि., रोगक व्यथा, दुर्बलता आ अभ्यास वशें ध्वनिक संग जोर लगबैक यत्न करब। मै.

कुत्था-सं., शूलवाहि रोग, जाहि मे बिना कुथने कोनो उपाय नैं रहैछ। मै.

कुत-सं., कोनो वस्तुक अनुमान सँ परिमाणक निश्चय। मै.

कुतर्क-सं., अनुचित युक्ति। सं. तत्सम

कुतरब-क्रि., थोड़ थोड़ कय दाँत सँ काटब। मै.

कुतरुम सं., चटनीक हेतु फल विशेष। मै.

कुताक-विशे., उचित पाकहीन वस्तु। मै.

कुतिया-सं., कुत्ताक स्त्री जाति। मै.

कुतुरकुतुर-अव्यय, कुत्ताक बच्चा कें बजबैक शब्द। मै.

कुदकब-क्रि., कुदल जकाँ चलब, आने कारणें विवशता सँ कूदल जकाँ होएब। मै.

कुदकाएब-क्रि., कुदाकुदा कय चलाएब। छोट नेन्ना कें उपर उछलाएब। मै.

कुदान-सं., १. अनुचित रूपक दान। २. कुदैक निरन्तर क्रम। मै.

कुदिन-सं., अशुभकारी दिन। अधलाह दिन। मै.

कुदेश-सं., अपन समाज सँ भिन्न संस्कार वाला देश। मै.

कुन्द-सं., फूल विशेष। मै.

कुन्नह-सं., दाबल पहिलुक वैर। मै.

कुन्नी-सं., कठोर वस्तुक पैघ कणवाला गर्दी। मै.

कुनेट-सं., विधिहीन क्रिया सँ उत्पन्न दुष्परिणामक प्रभाव। मै.

कुप्पा-सं., नाम आ गोल आकारक धातुक पैघ वर्तन। (विशे.) अन्तः क्रोध आ बड़ाइ सँ गुम्म। मै.

कुप्पी-सं., कुप्पाक छोटका रुप। मै.

कुप्फ होएब-क्रि., भीतरैं भीतर कुपित रहब। मै.

कुफ्फड़-सं., शान्तियौक स्थिति मे बल सँ विरोधक उत्पत्ति। मै.

कुपच-विशे., बिन पचल (मल)। मै.

कुपथ-विशे., १. स्वाथ्य मे हित नहि करैवाला। कुपथ्य। २. अधलाह बाट (लाक्षणिक) दुराचारी। सं. तद्भव

कुपित-विशे., तमसाएल। सं. तत्सम

कुपीठ-विशे., अबैजाइ मे प्रतिकूल लगैवाला। मै.

कुफाड़ी-विशे., बिच्चैं मे झगड़ा उपस्थित कय अड़ङ्गा रोपैवाला। मै.

कुब्बड़-सं., पीठ पर जन्मजात उगल हड्डी आ मांस जाहि सँ शरीर झुकि जाइछ। मै.

कुबड़ा-विशे., कुब्बड़वाला। मै.

कुब्बी-सं., लाठी, ठेङा आ आङुरक आगू भागक ठोकर। मै.

कुब्भी-सं., बाँस काठ मे उगल अनावश्यक घातक अंश। मै.

कुबेर-सं., १. अनुचित वा अनुपयोगी समय। २. धनक देवता कुबेर। मै.

कुभाँज-विशे., बेउरेब बनल, कठिनता भरल कठिनाह। मै.

कुभेला-सं., उचित सेवाक अभाव, अनास्था, उपेक्षा। मै.

कुम्भ-सं., १. राशि विशेष। २. घैल। ३. चारि ठाम हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन आ नाशिक मे १२ वर्ष पर लगैवाला पुण्यक अवसर। सं. तत्सम

कुम्मठ-सं., इनार सँ पानि खींचैवाला चमड़ाक पैघ वासन। मै.

कुम्मर-विशे., कुमार, सुन्दर, कोमल, किशोर। मै.

कुम्हर-सं., लत्ती मे फड़ैवाला उज्जर पैघ फल। कूष्माण्ड। मै.

कुम्हरा-सं., १. बड़का बिरनीक माटिक बनाओल खोंता। २. माटिक वासन गढ़निहार। मै.

कुम्हरौट-सं., कुम्हारक उपयोगी माटि। मै.

कुम्हरौड़ी-सं., कुम्हर कें मेहीं भुजकी कें बेसन मे सानि बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी। मै.

कुम्हरार-सं., कुम्हारक वासनक व्यवसायक स्थान। मै.

कुम्हलाएब-क्रि., अधिक ताप सँ मौलाएब। मै.

कुम्हार-सं., माटिक वासन गढ़ि पकबैक व्यवसाय करैवाला जाति। मै.

कुम्ही-सं., पानि पर पसरैवाला जंगल। मै.

कुम्हैन-सं., कुम्हारक स्त्री जाति। मै.

कुमर्म-सं., जाहि ठामक चोट सँ प्राणक डर रहए एहन अत्यन्त कोमल अंग। मै.

कुमरठेला-विशे., अधिक बैस धरि बिन विवाहल रहनिहार। स्त्री० कुमरठेलि। मै.

कुमरम-सं., कुमार रमण। विवाह आ उपनयन सँ एक दिन पहिने कनिया बरुआक विधि। मै.

कुमराएब-क्रि., माल जालक निकट भविष्य मे प्रसवक लच्छन स्वरुप थन पुष्ट होएब। मै.

कुमार-विशे., असंस्कृत अर्थात् बिना उपनयन कयल बालक किशोर आ अविवाहित युवक। नेन्ना भुटका। स्त्री० कुमारि। मै.

कुमुद-सं., सरपोख लाल साँझ मे फुलाइवाला पोखरि मे होइवाला कमल सन फूल। मल कोका। सं. तत्सम

कुमुदनी-सं., १. पानि मे होइवाला राति मे फुलाइ वाला उज्जर फूल। भेंट। २. स्थलक छोट छोट गाछक उज्जर फूल। मै.

कुयोग-सं., अधलाह योग, साधन आ समय सन्तुलनक अभाव। सं. तत्सम

कुर्ता-सं., स्त्री पुरुषक देहक अङ्गा। उ. तत्सम

कुर्मी-सं., श्रमिक जाति विशेष। मै.

कुर्री-सं., कुरूर, मुह सँ धारा रुपें पानि फेंकैक क्रिया। मै.

कुर्थ-सं., चेचक जकाँ चकताक रुपें देह मे बहराएल रोग। मै.

कुर्थी-सं., दलिहन विशेष। पपरी रोगक औषध।

कुरकुट-सं., पुरान टुकड़ी टुकड़ी खढ़ पातक ढेर। मै.

कुरकुटाह-विशे., कुरकुट सँ भरल। मै.

कुरकुर-अव्यय, विशे., कड़ा रहितौं पापड़ जकाँ सरलता सँ चिबबैक काल ध्वनि युक्त भोज्य पदार्थ। मै.

कुरवार-सं., छठि वा अन्य शुभ अवसर पर पकाओल माटिक हाथी पर राखल चैल। कुरवार। मै.

कुरंग-विशे., १. अधलाह लच्छन। (मै.) २. हरिण (सं.)। मै.

कुरर-सं., देखू—"कुरूर"। मै.

कुरसा-सं., माछ विशेष। मै.

कुरसी-सं., काठक बनल बैसैक अधोपवेशनक आसन। मै.

कुरान-सं., इसलाम धर्मक मूल ग्रन्थ। उ. तत्सम

कुरुप-विशे., अधलाह रुपवाला। सं. तत्सम

कुल्लम-विशे., सबटाक जोर, समस्त, सम्पूर्ण टोटल। मै.

कुल-सं., वंश, गोत्र। सं. तत्सम

कुल कुलाएब-क्रि., भूखक द्वारें पेट मे शून्यताक अनुभव होएब। मै.

कुलच्छन-विशे., अधलाह लच्छन वाला। स्त्री० कुलच्छनि। सं., अधलाह लच्छन। मै.

कुलटा-विशे., दुश्चरित्र। मै.

कुल देवता-सं., परम्परा सँ कुल मे पूजनीय शक्ति। मै.

कुल पुरुष-विशे., विद्या आ वैभव सँ कुलक प्रधान व्यक्ति। मै.

कुल बुलाएब-सं., अधिक सञ्चार बढ़ब। मै.

कुलवृक्ष-सं., कुलक प्रत्येक खूटक नामावली। सं. तत्सम

कुली-विशे., अनिश्चित शारीरिक बोनि पर जीबैवाला। मै.

कुलीन-विशे., कुल मर्य्यादा रखैवाला। ऊँच कुलक लोक। सं. तत्सम

कुश-सं., देवता पितरक उपासनाक उपयोगी खढ़। सं. तत्सम

कुशल कलेप-सं., खढ़ो बराबरि अनिष्ट, रञ्चमात्रो कष्ट। मै.

कुशल-विशे., १. चतुर, प्रवीण। सं., २. कल्याण, नीक स्थिति। सं. तत्सम

कुशलछेम/कुशल मंगल-सं., सब दिना नीक स्थिति, सुख, कल्याण। सं. तद्भव

कुशियार-सं., मधुर रसक प्रधान फसिल। बड़का छड़क रुप मे मधुरक गाछ जकरा पेड़ि कय गुड़ आ चीनी बनैत अछि। मै.

कुशोथरि-सं., कोनो कामना सँ देवता लग धरना। मै.

कुष्ठ-सं., १. कूढ़, औषध विशेष। २. शून्यताक संग दीर्घ कालक देह गलबैवाला गम्भीर घाओ तथा अनेक प्रकारक चर्म रोग। सं. तत्सम

कुस्तम कुस्ता-सं., खेलैक रुपें वा झगड़ाक क्रमे परस्पर उठा पटक। मै.

कुस्ती-सं., प्रतियोगिता सँ अखाढ़ा पर दू मल्लक गुत्थम गुत्थी। उ. तत्सम

कुस्याख-सं., लोक कें दूरि करै लेल दोष गढनाइ। मै.

कुसधुनि-सं., नेन्नाभुटकाक अनेर परस्पर लटापटी करैक खेल। मै.

कुसमय-सं., अनुपयुक्त समय। सं. तत्सम

कुसंयम-सं., स्वास्थ्यक प्रतिकूल आहार विहार। सं. तत्सम

कुसंयोग-सं., अनिष्टकारी समयक संयोग। अघटित घटनाक संभवक भवितव्यता। सं. तत्सम

कुसुम-सं., १. सामान्य फूल। २. केसरवाला लाल फूल जकर खेतीकय रंगक साधन उपजाओल जाइत अछि। मै.

कुसुमी-सं., रंग विशेष। मै.

कुसौन्ह-विशे., दूध दुहलाउत्तर बिन तबाओल डाबा। मै.

कुसौन-विशे., चेचकक बिन टीका (पाच) पड़ल बच्चा। मै.

कुहकब-क्रि., कोइली आदि पक्षीक मधुर ध्वनि। मै.

कुहकामय-सं., घोर झगड़ाक बीच जोर जोर सँ परस्पर मारैक चेष्टा। मै.

कुहठ-सं., अनुचित जहनि (जिद्द)। सं. तत्सम

कुहरनि-सं., उत्कट व्यथाक शब्द। मै.

कुहरब-क्रि., रोग शोकक व्यथा एवं व्याकुलता सँ दयनीय अव्यक्त ध्वनि करब। मै.

कुहराएब-क्रि., पीड़ाक द्वारें अन्तर्ध्वनि सँ व्यथित कराएब। घोर कष्ट देब। मै.

कुहराम मचब-क्रि. सामूहिक रूपें अर्थात् सब कें एक संग कुहरैक स्थिति होएब। मै.

कुहाइ होएब-क्रि., गम्भीर पिटाइ होएब। मै.

कुहाक-विशे., कूहनिहार, कूहिकय मारनिहार। मै.

कुहाकूही-सं., एक दोसरा कें लात-मुक्का-थापड़ें मारिकय झगड़ा अथवा खेल। मै.

कुहामय-सं., परस्पर युद्ध स्तरक मारि। मै.

कुहुक-सं., पक्षीक कलरब। मै.

कुहुकब-क्रि., कोइली जकाँ पक्षीक मधुर बाजब। मै.

कुहेस-सं., धौन्ह, धुन्ध। मै.

कुहौवलि-सं., परस्पर कसि कसि कय मारिक प्रक्रिया। मै.

कू

कूऽऽऽऽ-अव्यय, कोइलीक अस्फुट शब्द। कूक। मै.

कूआँ-सं., बड़का इनार। हि. तत्सम

कूक-सं., कोइलीक मधुर शब्द। मै.

कूकब-क्रि., कोइलीक शब्द करब। मै.

कूच लागब-क्रि., चलैक काल घोड़ाक टांग मे टांग भीड़ब। मै.

कूड़-सं., अनुपयोगी गदौसक ढेरी कय खेत मे लगाओल आगि। मै.

कूड़ा-विशे., १. बहारि सोहारि जमा कयल गदौस। २. बखरा। ३. सोगाइत पठबैक रंगल ढौरल ठाढ़ कानवाला चैल। मै.

कूड़ि-सं., उपछि कय खेत पटबैक साधन। मै.

कूड़ी-सं., भाग, अंश, बखरा। मै.

कूढ़-सं., बूटी विशेष। मै.

कूदब-क्रि., देह कें उछलाकय टपब। तड़पब। मै.

कूप-सं., कुइआँ, छोटका इनार। मै.

कूहब-क्रि., अनधुन मारब। मै.

कूहनि-सं., कसि कय मारिक व्यथा। मै.

कूहू-अव्यय, कोइलीक अव्यक्त शब्द। मै.

कृ

कृत-विशे., कयल वस्तु। सं. तत्सम

कृति-सं., रचना। सं. तत्सम

कृत्तिका-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

कृत्रिम-विशे., बनौआ। स्वाभाविक नहि। सं. तत्सम

कृपण-विशे., उचितो खर्च करै मे कातर। दीन। सं. तत्सम

कृपा-सं., दया, ककरो पर मृदु भावना। सं. तत्सम

कृपाण-सं., तरुआरि। सं. तत्सम

कृमि-सं., उदर पोषित कीड़ा विशेष। मै.

कृषक-विशे., खेतिहर। स्त्री० कृषिका। सं. तत्सम

कृषि-सं., खेती। सं. तत्सम

के

के-प्रश्नवाचक सर्वनाम, (?) कर्त्ता कारकक प्रश्न। मै.

कें-अव्यय, कर्म कारकक चिन्ह। मै.

केउर-सं., बाँहि परक गहना विशेष। केयूर। सं. तद्भव

केंक लागब-क्रि., दीर्घ ज्वर आदि रोग सँ मुक्त भेला पर सतत् अधिक खाइक इच्छा होयब। अधिक खाएब। मै.

केंकियाएब-क्रि., 'कें-कें' जकाँ अव्यक्त शब्द करब। डर आ अप्रसन्नता सँ कनैक उच्च ध्वनि करब। मै.

केंकें करब-क्रि., नाकसँ मुहक संग विकट शब्द करब । मै.

केचुआ-सं., १. साँपक छोड़ल चाम । २. स्त्री देहक अलंकृत कञ्चुक (ब्लाउज) । मै.

केटी-विशे., प्राचीन राजा महाराजक अन्तःपुर मे उपभोग ले दक्षिता स्त्री । मै.

केंत-सं., ऊपरी मारि मारैक छौंकी । मै.

केतक-सं., क्योला फूल । सं. तत्सम

केतु-सं., १. नवम ग्रह । २. बहुत दिन पर उगैवाला लम्बाकार ज्योति । ३. ध्वजा । सं. तत्सम

केथड़ी-सं., गदेला । मै.

केदन-अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अनभुआर, अनिश्चित व्यक्ति । मै.

केन करब-क्रि., अन्नक बदला वस्तु कीनब । मै.

केनाकय-अव्यय, कोन रुपेँ । मै.

केबाड़-सं., द्वार, बहार सँ घर केँ सम्बन्ध रखैवाला काठक पट्टाक सुरक्षित साधन । मै.

केबाला-सं., भूमि बेचैक लिखित राजकीय निबन्धित प्रतिज्ञापत्र । उ. तद्भव

केवलौ माटि-विशे., स्निग्ध माटि, हट्टैं नै । मै.

केर-अव्यय, सम्बन्ध कारकक चिह्न । मै.

केरा-सं., प्रसिद्ध वैष्णव फल । मै.

केराओ-सं., गोल हरियर दानाक दलिहन । मै.

केलि-सं., वासनात्मक क्रीड़ा रमण । मै.

केवल-अव्यय, एकमात्र, सीमित (उ०) सिर्फ । मै.

केश-सं., माथक सघन रोम राशि । सं. तत्सम

केशिका-सं., केश सन पातर शरीरक शिरा जे बनैत टूटैत रहैत छैक । सं. तत्सम

केसर-सं., घोड़ा आ सिह आदि जीवक गर्दनि परक झबरल केश । स. तत्सम

केसरि-सं., काश्मीरक फूल विशेष । मै.

केसरिया-विशे., केसरिक रंगवाला । मै.

केसौर-सं., उत्कट मधुर छोट कन्द । मै.

केहन-अव्यय, ककरसन ? कोन प्रकारक ? मै.

केहनदन-विशे., अत्यन्त अधलाह । मै.

केहरि-सं., सिंह; केसरी । सं. तद्भव

केहुनी-सं., बाँहिक बिचला जोड़क पाछु । मै.

केहों केहों-अव्यय, जन्मौटी नेन्नाक कनैक ध्वनि । मै.

कै

कैँ-सं., बमन, औक । मै.

कै-प्रश्नवाचक सार्वनामिक अव्यय, कोन ? प्रयोग–"कैठाम छै ? कै मे तकियौ ?" मै.

कैक-विशे., अनेक, बहुत । प्रयोग–"ऐ दुर्घटना मे कैक सँ लोक समाप्त भ' गेल ।" मै.

कैकटा-अव्यय, अनेक, बहुत रास । मै.

कैंच-सं., कैंचीक आकार बनाओल वस्तु । गुणाक चिह्न स्वरुप बान्हल बाँस आदि नाम आ पातर वस्तु । मै.

कैंची-सं., स्वस्तिक आकारक धार बनल लोहाक कपड़ा, कागज कतरैक साधन । मै.

कैञ्चा-सं., प्रचलित विनिमय मुद्रा । सिक्का । मै.

कैञाँ-विशे., कृपण, गूढ हृदयक घातक लोक । मै.

कैंता-सं., पाथर तोड़ैक लोहक भारी कोदारिसन पाड़ैवाला अस्त्र । मै.

कैंथा-सं., गुदड़ी चेथरी समेत अनेक वस्तुक पोटरी । कन्था । मै.

कैंथी-सं., लिपि विशेष । मै.

कैथी रंग-विशे., लाल भटरंगक वस्तु । मै.

कैफा-सं., थोड़बेक ज्ञान सँ अपन बड़प्पनक दाबी, दूरे सँ देखाओल जाइत दर्प । मै.

कैँर-विशे., एक दिश अधिक झुकल । मै.

कैरव-सं., राति मे फुलाइवाला जलाशयक फूल विशेष । मै.

कैल-विशे., कपिल रंग, पीली रंग मिलल सरपोख उज्जर रंग । मै.

कैला-विशे., (अनादर मे) कैल रंगवाला । मै.

कैलास-सं., हिमालयक उच्चतर शिखर । महादेवक प्रसिद्ध धाम । मै.

को

को-सं., कटहरक बीजवाला गुद्दा । मै.

कोआ-सं., १. ताड़क फलक गुद्दा । २. मधु भरल मधुमाछीक छताक खण्ड । मै.

कोइ-अनिश्चयवाचक सर्वनाम, को । प्रयोग–"तकत रहू, एतय कोइ आबए ने ।" हि. तत्सम

कोइआ-सं., बाँसक छोट चोंगाक बनल तेलसन वस्तु नपैक नप्पा । मै.

कोइर-सं., खेतिहर जाति विशेष । मै.

कोइला-सं., मिझाएल अङोराक कारी रूपक खण्ड । पाथर आ काठक दग्ध रुप । खनिज विशेष । मै.

कोइली-सं., १. मधुर शब्दवाला पक्षी । २. आमक आँठीक भीतरक गुद्दा । मै.

कोकची लागब-क्रि., गुच्छा रुपें सघन फड़ल रहब। मै.

कोकटी रंग-विशे., केसरिया रंग, योगिया रंग। मै.

कोकनब-क्रि., माटि पानिक सम्पर्क सँ काठक सारहीन होएब। मै.

कोकनल-विशे., सारहीन, निर्बल। मै.

कोकनाह-विशे., सारहीन जकाँ बनल। अब्बल। मै.

कोकराहा-सं., बसातक जोर सँ उड़ल लुत्ती। मै.

कोकशास्त्र-सं., मैथुन प्रक्रियाक कामशास्त्र। मै.

कोंकाँ-अव्यय, बेङक ध्वनि। मै.

कोका-सं., सन्ध्या मे निकसैवाला जलाशयक सम्पूर्ण लाल फूल। मल कोका। मै.

कोकाण-विशे., वेशी बढ़ल अण्डकोश। मै.

कोंकियाएब-क्रि., कोनो जन्तुक कोंकों एहन शब्द करब। मै.

कोकिल -सं., कोइली पक्षी। सं. तत्सम

कोकीन-सं., राबावाला मादक द्रव। मै.

कोखि-सं., पेट, स्त्री वर्गक हेतु गर्भाशय। मै.

कोखिया गोहारि-सं., ओझागुनी आ साधु सन्तक आशीर्वाद सँ सन्तानक आश्वासन। मै.

कोच-सं., फैलगर सुखदायी पलङ्ग। मै.

कोंचब-क्रि., बिन स्थानौ (आँट नै रहनौं) ठूसैक चेष्टा करब। मै.

कोंचल-विशे., अवकाश सँ वेशी कसिकय भरल। मै.

कोंचा-सं., पहिरल शाड़ीक कोचियाएल बान्हल अंश। मै.

कोंचाकोंची-सं., अवकाश नै रहनो बल सँ कोंचैक प्रयास। मै.

कोंचाडेढी-सं., स्त्रीक शाड़ीक संग लहंगावाला कपड़ा। मै.

कोचियाएब-क्रि., पैघ वस्त्र कें आङुर द्वारा छोट छोट तह दय समेटब। मै.

कोचियाओल-विशे., आङुर सँ तह लगाकय राखल शाड़ी धोती। मै.

कोचिला-सं., विषवाला वनस्पतिक बीज विशेष। मै.

कोट-सं., १. पहिरैक मोटगर अंगा विशेष। २. न्यायालय। अं. तद्भव

कोटर-सं., खद्धा, गुफा, धोधरि। सं. तत्सम

कोटा-सं., राजकीय भण्डार सँ वितरण प्रणाली। मै.

कोटि-संख्या एवं सं., १. एक सँ लाखक मान। २. पक्ष। ३. स्तर। सं. तत्सम

कोठरी-सं., छोटसन बनाओल काँच माटिक बासन। मै.

कोठली-सं., घरक भीतर बनाओल स्वतन्त्र अस्तित्वक खण्ड। मै.

कोठा-सं., पक्का छतवाला पजेबाक घर। प्रासाद। मै.

कोठामय-विशे., कोठा भरल निवास। मै.

कोठासोफा-सं., कोठा भरल सुन्दर आलय। मै.

कोठि-सं., बिरनी पचहियाक माटिक पैघ खोंता। मै.

कोठी-सं., १. धनाढ्यक कोठामय आलय। २. हाथक बनल पैघ काँच माटिक अन्न रखैक बासन। मै.

कोठुला-सं., कोठीसन हल्लुक छोट कोठी। मै.

कोड़काड़-सं., यत्र तत्र कोड़ैक सन्दर्भ। मै.

कोड़नि-सं., कोड़ैक निरन्तरता। मै.

कोड़ब-क्रि., माटि खूनब। जमल माटि, ईंटा आ पाथर कें उखाड़ि कय ढील करब। मै.

कोड़बा-सं., माटि कोड़ैक स्थान। मै.

कोड़रा-सं., डोरी जकाँ कपड़ा आ चाम कें बाँटि कय मारैक हेतु बनल वस्तु। मै.

कोंड़ही-सं., गाछ मे मूड़ी चलैक आ फूल बहराइक सिरखार अर्थात् प्रारूप। मै.

कोड़ा-सं., चाबुक, घोड़ा आ बड़द कें मारैक लेल चामक छड़क डंटा मे बान्हल गुच्छा। मै.

कोड़ाइ-सं., लगातार कोड़ैक काज आ ओकर बोनि। मै.

कोड़ो-सं., फूसक घरक ठाठ (छप्परक ठट्ठर मे) देल बाँसक खण्डक समूह। मै.

कोंढ-सं., फेंफड़ा। मै.

कोंढ़ कतरब-क्रि., (लाक्षणिक) तत्वेवाला वस्तु लय लेब। मै.

कोंढ़गर-विशे., सबल हृदयवाला। मै.

कोढ़फट्टू-विशे., साधारणों बात मे कनेको मनक प्रतिकूल भेने अधैर्य्य सँ तुरन्त कनैक उपक्रम कयनिहार। मै.

कोंढ़ फाटब-क्रि., अधैर्य होएब। स्वतः लगले कनैक चेष्टा भ' जाएब। मै.

कोंढ़हा-सं., १. फेंफड़ा। २. मधु भरल मधुमाछीक छत्ता। ३. छाती। ४. गहना सबमे गंथैक हेतु डोरा सन्हियबैक छेदवाला कड़ी। मै.

कोढ़ा-सं., तपते भात मे धिपले दूध दय कें भोजन। मै.

कोंढ़ि-सं., १. कुष्ठ रोग पीड़ित। २. (लाक्षणिक) कोनो काज नै करैक बहाना करैवाला। अहदी। मै.

कोंढिया-विशे., १. कोंढ़ि रोगक द्वारें असमर्थ। २. (लाक्षणिक) काज श्रम सँ देह चोरबैवाला। मै.

कोंढ़ियाह-विशे., (लाक्षणिक) कोढि कुष्ठी जकाँ अहदीपन रखैवाला। मै.

कोंढिला-सं., पानि मे बढ़ैवाला छोट झाड़। मै.

कोंढ़ी-सं., फूलक कली। मै.

कोण-सं., विभिन्न दिशाक मिलानवाला चिह्न। समबाहु भुजाक संयोग स्थान। सं. तद्भव

कोणाटी-सं., काँट गड़ला सँ विकृत शक्तिहीन छोट मांस पिण्ड। मै.

कोतवाल-विशे., गाम घरक निर्द्धारित आरक्षी। मै.

कोतर-सं., भूस्वामीक पँच निर्दिष्ट भूखण्ड। मै.

कोतरा/कोतरी-सं., कबै माछक बच्चा। मै.

कोतहकण्ठ-विशे., छोट मोट कण्ठवाला, जकर कण्ठ धड़ सँ सट्टल रहै अछि। मै.

कोताही-सं., कृपणता, अभाव प्रदर्शन आ संकुचित व्यवहार मै.

कोथ-विशे., विष एवं अमताईक द्वारें सुन्न भेला सँ असमर्थ अंग। मै.

कोथी-सं., शर, सोहथ आ बर्छी आदि, अस्त्रक तेज नोक अथात् अगिला भाग। मै.

कोदवा-सं., कोद्रव शीतलाक सब सँ छोट भेद जाहि मे कफ तापक संग घम्हौरी जकाँ सघन फोंसरीक विस्फोट होइत अछि। मै.

कोदरबाह-विशे., कोदारि पाड़ैवाला। खेती मे हरक संग कोदारिक काज कयनिहार। मै.

कोदरबाहि-सं., कोदारि पाड़ैक काज। मै.

कोदरिकट्टा-विशे., कोदारि सँ काटल। कोदारि सँ काटल चेकी जकाँ बनल मेघ। मै.

कोदारि-सं., लोहक मोट चदराक बनल चाकर भूमि कोड़ैवाला अस्त्र। मै.

कोदो-सं., धानक संग उपजैवाला कठोर मेहीं अन्न। मै.

कोन-प्रश्नवाचक सर्वनाम, तथा सार्वनामिक विशे., के ? अनेक मे क्यो। मै.

कोनऽ-अव्यय, दिशाक प्रश्न "कोम्हर"। मै.

कोन-सं., समबाहु द्विभुजक बीचवाला बिन्दु। मै.

कोनमाङर-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अवसर ककरो काज कोनो। मै.

कोनछी-सं., एक खेतक दोसर खेत मे पैसल कोन। मै.

कोनचर-सं., चारू घरक परस्पर कोनक मिलान। मै.

कोनटवेध-सं., एक घरक कोन सँ आगू बढ़ल दोसर घरक कोन। मै.

कोनटा-सं., दू विभिन्न दिशाक घरक ओट मे शून्य स्थान। मै.

कोनटौ-विशे., कोनवाला स्थान। मै.

कोनदन-अव्यय, अनिश्चित वस्तुक निर्देश। मै.

कोनहट-सं., कोन दिश दबल स्थान। मै.

कोनही-सं., कोनक साँकर स्थान। मै.

कोना-अव्यय, कोन प्रकारें। मै.

कोनाकोनी-अव्यय, एक कोन सँ दोसर कोन धरि रेखा रुपें सीमाक अवस्थिति। मै.

कोनादन-विशे., भिन्न प्रकारक। मै.

कोनाश्र-विशे., कोणाश्रय, कोन दिश दबल। मै.

कोनासय-विशे., कोनक दिश दबल स्थान। मै.

कोनाह-विशे., एक कोन दिश बढ़ल। चारू कोनक मिलानरहित। मै.

कोनियाँ-सं., बाँसक बनल कोनवाला सूप। अन्नक परिष्कार करैक साधन। मै.

कोनिया-सं., १. चौचारा घरक दूनू भुजा दिशक छोट त्रिकोणाकार चार। २. कोन बनबैवाला तिकोनिया करनी। मै.

कोनी-सं., १. नह आदिक कोन मे बढ़ल नव अंश। २. कोनक सूक्ष्म बिन्दु सँ आगू बढ़ल भाग। मै.

कोनी-अव्यय, दिशाक प्रश्न, कोम्हर। मै.

कोनी वेनी-सं., बाँसक बनाओल छोट कोनियाँ लागल बीयनिक आकारक वस्तु। जाहि कोनियाँ मे भाइ बहिनिक विवाहक काल वेदी पर लावा भरै अछि आ बहिनि आगि मे आहुति करैछ। मै.

कोनेकानी-विशे., कोन आ किनारवाला स्थान। मै.

कोनेसानी-विशे., कोनक अन्हराएल दोगक स्थान समेत। मै.

कोनैल-विशे., कोन दिश दबल रहला सँ बिन देखार। मै.

कोनैला-विशे., कोन मे रहैवाला वा होइवाला। मै

कोनो-अव्यय, अनिश्चयात्मक। मै.

कोप-सं., क्रोध, तामस। सं. तत्सम

कोपड़-सं., नव अंकुर, घाओ परक नव चमड़ा, बाँसक नव आँकुर (गाछ), गाछक नव मूड़ी। मै.

कोपड़ा-सं., पित्तड़िक बनल गोलाकार पैघ मुह-वाला वर्तन। मै.

कोपड़ाएब-क्रि., नव कोपड़ छोड़ब। मै.

कोपीन-सं., केवल डाँरमे लपेटल बिन ढेकावाला कपड़ा। कौपीन। सं. तद्भव

कोबर-सं, वर बधूक मनोरञ्जक गीत। वर बधूक परस्पर आकर्षण बढ़बैक प्रक्रिया। कौतुक। मै.

कोबरा-सं., वर बधूक केलिगृह। मै.

कोबरि-विशे., कोबरा मे रहैवाली कनियाँ। मै.

कोविद-विशे., पूर्णज्ञानी। मै.

कोबी-सं., प्रसिद्ध व्यञ्जन। मै.

कोम्हर-अव्यय, कोन दिश। मै.

कोमल-विशे., लरगुज, मृदु, नरम। सं. तत्सम सं., गीतक स्वर विशेष जे अनुदात्त स्वरित भ' क' भैरवी, भैरव, आशावरी आदि रागिणी मे अधिक अबैछ। मै.

कोर-सं., कोनो वस्तुक अन्तक स्थान। प्रान्त भाग। मै.

कोरगर-विशे., १. मजबूत आँचर वा नीक किनार-वाला कपड़ा। २. भरि कोरा होइवाला बच्चा। मै.

कोर चिह्न-विशे., विशेष व्यक्तिक कोरा कें पसिन्न करैवाला आ कोरे मे रहैवाला बच्चा। मै.

कोरदार-विशे., पैघ आ सक्कत पाढ़िवाला वस्त्र। मै.

कोरपच्छू-विशे., सब सँ पाछू अर्थात् अन्तिम सन्तान। मै.

कोरबाह-विशे., सतत कोरा मे रखैले नियुक्त। मै.

कोरबाहि-सं., अधिक काल बच्चा कें कोरा मे रखैक काज। मै.

कोरसुहबा-विशे., कोरा मे रहब वेशी पसिन्न करै-वाला बच्चा। मै.

कोरा-सं., गोदी (उ०) अंक लगाकय रखैक मुद्रा। मै.

कोरा-विशे., १. बिना धोअल नव सूती कपड़ा। २. बिन रान्हल अथवा नियत कयल कोनो रूपक अन्न। मै.

कोरियानी-सं., कोरि जातिक बस्ती। मै.

कोरी-सं., बीस संख्याक एक मान। मै.

कोरैला-विशे., तत्काल कोरा मे रहैवाला नेन्ना। स्त्री० कोरैली। मै.

कोल्हु-सं., सरिसो आदि पेड़िकय तेल चुबबैक आ कुशियार पेड़िकय रस बहार करैक कल। मै.

कोल्हुआड़-सं., कुशियार पेड़ैक कल गाड़ल स्थान। मै.

कोल्हुआ पेड़ान-सं., सतरंजक एहन चालि जाहि सँ बादशाह मौत नहि भ' क' सह बचबैक लेल कोल्हुक बड़द जकाँ घूमैत रहैत अछि। मै.

कोल्हुआ बड़द-विशे., १. कोल्हु चलबैक हेतु निश्चित वृत्त पर भरि दिन चलैवाला जोतल बड़द। २. (लाक्षणिक) एके विषय कें वा काज कें घूरि फिरि कयनिहार। मै.

कोल-सं., संकीर्ण स्थान, प्राचीन आदिवासी जाति। मै.

कोलखी-सं., साँकर बाटवाला स्थान। मै.

कोला-सं., पैघ सीमावाला विस्तृत खेत। मै.

कोलिपद्दू-विशे., रोग विशेष सँ आक्रान्त अजोह आम। फाटि गेला सँ देखार कोइलीवाला आम। मै.

कोली-सं., छोट व्यासक खेत। मै.

कोश-सं., १. खजाना, भण्डार। २. बाटक दूरीक माप। ३. शरीर मे विभिन्न स्थान पर विभिन्न क्रियाक हेतु विभिन्न ग्रन्थि। प्रयोग-"अन्नमय कोश, प्राणमय कोश आ मनोमय कोश आदि।" सं. तत्सम

कोशा-सं., १. केराक घौरक अगिला भाग मे फूलक ग्रन्थि। २. आमक बीजक कठोर आवरण। मै.

कोशिका-सं., १. शरीरक स्थिति कें सन्तुलित रखै-वाला छोट छोट ग्रन्थि समूह। २ .कोशी नदी। सं. तत्सम

कोशी-सं., हिमालय सँ बहरायल उत्तर बिहारक प्रसिद्ध नदी। मै.

कोसब-क्रि., निन्दापूर्वक आक्रोश करब। मै.

कोसल-सं., १. गुप्त रुपें धन जमा करैक प्रवृत्ति। मै.

कोसलबासल-विशे., गुप्त रुपें जमा कयल धन। मै.

कोसलिया-विशे., परिवार सँ नुकाकय जमा कयल निजी अधिकारक धन। मै.

कोसा-सं., मण्डप बन्है मे चारू तरख पैसबैक लेल चारि छेदवाला काठ। मै.

कोसाइस-सं., अभावक द्वारें कम खर्च सँ निर्वाहक प्रवृत्ति। मै.

कोसिया-सं., आवाक पाकल विशेष रुपक ढकना जे शुभ काजक उपयोगी रहैछ। मै.

कोहबर-सं., वर कनियाँक प्रथम मिलनक एकान्त स्थान। मै.

कोहली-सं., बहुत छोट कोही। मै.

कोहा-सं., पैघ माटिक पाकवाला वासन। मै.

कोही-सं., पाकवाला छोट माटिक वासन। मै.

कौ

कौअरि-सं., अन्न मे मिलल अखाद्य दाना। मै.

कौआ-सं., पक्षी विशेष। मै.

कौआठाढ़ि-विशे., कोनो ठाढ़ि मात्र मे फड़ल। मै.

कौघड़ी-सं., कोनो क्षण। मै.

कौड़िया करब-क्रि., माल जालक बसात छोड़ब। मै.

कौड़ियाकातर-विशे., कष्ट सहि कय धन जमा कयनिहार कृपण। मै.

कौड़ी-सं., समुद्रक क्षुद्र जल जीवक कड़ा चमड़ा। मै.

कौड़ीटीप-सं., कौड़ी सँ गुच्चा पिलबैवाला खेल विशेष। मै.

कौर्ना-सं., फैल मुहवाला अथरा सन दही पौरैक माटिक गहींर वासन। मै.

कौंर-सं., खाइक हेतु हाथ सँ उठाओल ग्रास। मै.

कौलहा-सं., पैघ चुल्हा, चुल्हा। मै.

कौशल-सं., चतुराइ, कारीगरी, निपुणता, कला-कारी। मै.

कौहरिकिच्चा-सं., अनेक सम्बन्धक बहुत लोकक शब्द करैक संग उछल कूद आ जन संचारक स्थिति। मै.

ख

खकस्याह-विशे., अधिक जरल, जरिकय खाक सन कारी छाउर बनल। मै.

खखनहर-सं., बहुत पैघ तसला सन भात रन्है़वाला वर्तन, जाहि मे मोनो भरि चाउर रान्हल जा सकैछ अछि। मै.

खखरी-सं., गुद्दारहित अर्थात् अन्नक फोंक दाना। मै.

खखसब-क्रि., अकारण कण्ठ साफ करैसन अव्यक्त शब्द करब। मै.

खखाएब-क्रि., विपरीत वातावरणक द्वारें अन्न मे गुद्दा नै भरब। मै.

खखार-सं., गराँ फरिच्छ करैले शब्द। मै.

खखारब-क्रि. गराँ कें फरिच्छ करैले कण्ठ मे जोर दय शब्द करब। मै.

खखास-सं., जोर सँ कण्ठक अव्यक्त शब्द। मै.

खखासब-क्रि., लोक कें सचेत करैले जोर सँ कण्ठक अस्पष्ट ध्वनि करब। मै.

खखोड़-सं., दाँत, नह आ अस्त्र द्वारा उपरें उपरक छिल्ला। मै.

खखोड़नी-सं., खखोड़ैक अस्त्र। म.

खखोड़ब-क्रि., बिना भीतर धँसौनै दाँत, नह आ अस्त्र सँ उपरें उपर छीलब। मै.

खग्गी-सं., आवश्यकता, अभाव। मै.

खग-सं., पक्षी। प्रयोग—"खग जानय खगही केर भाषा।" सं. तत्सम

खगता-सं., अभाव, अभावक द्वारें क्षति। मै.

खगब-क्रि., अभाव होएब। मै.

खगरा-विशे., बिना फूल फड़ल ताड़क गाछ। मै.

खगाट-सं., आवश्यक रहलो पर अभावक द्वारें समय पर काजक क्षति। मै.

खँघारब-क्रि., जल सँ कोनो वस्तु के शुद्ध करब। मै.

खच्चर-सं., घोड़ा जातिक पशु विशेष। विशे., कामवासना वृत्तिवाला। मै.

खच्चा-विशे., थाल पानिवाला ले ऊँच, ऊभड़खाभड़ गाड़ीक बाट । मै.

खचखच-अव्यय, बिना परिश्रम आ कष्टक । मै.

खचखच उठब-क्रि., बिना श्रमक सरलता सँ कटैक शब्द होएब । मै.

खचखच काटब-क्रि., सरलता सँ काटब । मै.

खचखचाएब-क्रि., सरलता सँ अत्यन्त वेगें काटब । मै.

खचराहा-विशे., (गारि) अनुचित स्त्री प्रसंगक अभिलाषी, स्त्री० खचराही । मै.

खचाखच-सं., १. लगातार कटैक क्रम । २. (विशे.) ठूसि कय भरल । मै.

खजबा-विशे., १ खाजाक आकारक गान्धी टोपी । २. खाजा सन नाम कड़ा कोमल मधुर कटहर । मै.

खजबी-सं., खाजाक आकारक छोट मधुर । मै.

खँजुरी-सं., हाथ सँ बजबैवाला चाम छारल मौनी जकाँ बाजा । मै.

खजूर-सं., फल विशेष, खर्जूर । सं. तद्भव

खंझा-सं., गमछाक चारु खूट बान्हि बनल झोरा । मै.

खञ्ज-विशे., एक पैर सँ अबाह । मै.

खञ्जखूहर-विशे., असभ्य असंस्कृत अनपढ़ लोकक समूह । मै.

खञ्जन-सं., विदेशी पक्षी विशेष । सं. तत्सम

खञ्झा-सं., मालक नेङराइक रोग । मै.

खट्टा-सं., अम्मत रस विशेष । विशे., अम्ल रसवाला । मै.

खट्टी-विशे., गाछ लागल फलक व्यापारी । मै.

खटक-सं., 'खट्' एहि प्रकारक शब्द । मै.

खटकब-क्रि., अप्रियताक आभास एवं अरुचिक अनुभव होएब । मै.

खटकर्मी-विशे., शास्त्रीय नियमक व्यवहार मे कट्टर रहि आडम्बर प्रिय । सं. तद्भव

खटका-सं., सन्देह भरल आपत्तिक आभास । मै.

खटकार-सं., भिन्ने प्रकारक रुप आचर्य्याक धारण कय महत्त्वक प्रदर्शन । मै.

खटकाह-विशे., बिन कारणौं बात मे सन्देह कयनिहार । स्त्री० खटकाहि । मै.

खटखट-अव्यय, १. लगले लागल । २. एहि प्रकारक शब्द । मै.

खटखट करब-क्रि., अनेर एहि प्रकारक शब्द सँ अशान्त करब । मै.

खटखटाएब-क्रि., १. अपन उपस्थितिक सूचनाले अनदेखक लोक कें एहि शब्द सँ सजग करब । २. तमसाएल रूपें उत्तर देब वा तमसा उठब । मै.

खटखटाह-विशे., तामसें भरल प्रकृतिवाला । मै.

खट छप्पर-सं., खाटक उपर देल तानल वस्त्र । मै.

खट द'-अव्यय, तुरन्त, अविलम्ब । मै.

खटनाइ-सं., १. श्रम करैक क्रिया । २. दिनों दिन घटैक क्रम । मै.

खटनी-सं., परिश्रम, शारीरिक वा मानसिक शक्तिक व्यय । मै.

खटपट-सं., मनँमन विरोध, मतान्तर । मै.

खटपटाएब-क्रि., मनान्तर करब, मतभेद राखब । मै.

खटब-क्रि., १. परिश्रम करब । २. घटैत जाएब । मै.

खटबताह-विशे., सब बात मे खटखटा उठैक प्रकृतिवाला । मै.

खटबानर-विशे., १. दाँत कीचैत खटखटा कय दौड़ैवाला बानर । २. (लाक्षणिक) विक्षिप्त जकाँ खटखटा कय दौड़ैवाला मनुष्य । मै.

खटबारब-क्रि., उत्कट पीड़ा सँ खाट धय लेब । मै.

खटबास लेब-क्रि., शोक आ पीड़ा सँ झूर झमान होइत खाट पर पड़ल रहब । मै.

खटबैया-विशे., बोनि दय कम बौनिहार । मै.

खट मधुर-विशे., अम्मतक संग मधुर स्वादवाला । मै.

खटमल-सं., उड़ीस, खाटक स्वेदज दंशक जीव । हि. तत्सम

खटमिट्ठी-सं., खट्टा पदार्थ मे मधुर वस्तु दय बनाओल अँचार । मै.

खटर खटर-अव्यय, एक लय सँ एहि प्रकारक ध्वनि, कल चलैक शब्द । मै.

खटरस-सं., छवो रसक मिलान सँ बनल अँचार । मै.

खटरास-सं., अपन बड़प्पन देखबै लेल विभिन्न आचरण आ अत्युक्ति । मै.

खटरासी-विशे., आत्म प्रशंसी जे संसारै कें मूर्ख मानय । मै.

खटरी-विशे., एको पाइक खर्चक अवसर बढ़ने खट-खटा उठनिहार । क्रोधी कृपण । मै.

खट संवाद-सं., व्यर्थ विवाद सँ उपजल झगड़ा । मै.

खट संवादी-विशे., खट सम्वाद करैक प्रकृतिवाला । मै.

खँटहँट जुआन-विशे., सामान्य नाम आ चाकर वेश । मै.

खटहा-विशे., खट्टा स्वादक आम आदि फल । मै.

खटाइ-सं., आमिल । हि. तत्सम

खटाइन-विशे., खट्टासन स्वादवाला । मै.

खटाएब-क्रि., श्रमक मूल्य बोनि दय काज कराएब । मै.

खटाओन-सं., १. श्रमक दाम । २.खट्टाक स्वाद । मै.

खटाक खटाक-अव्यय, १. एहि प्रकारक शब्द । २. लगले लागल । मै.

खटाखटि-अव्यय, लगले लागल काजक गति । मै.

खटाल-सं., बीचक फाँक अर्थात् शून्य । घरक दू खम्भा वा दू पाया अथवा अलमारीक दू तख्तीक बीचक स्थान । मै.

खटाँस-सं., बिलाड़क आकार प्रकारक बनैया गछ-चढ़हा चतुर जीव । मै.

खटित होएब-क्रि., कम होइत जाएब । खर्च होएब । मै.

खटिया-सं., बाँसक जोड़ सँ बनल छोटका खाट । मै.

खटियाएब-क्रि., दिनोंदिन घटल जाएब । मै.

खटियातोड़-विशे., (लाक्षणिक) उदण्ड यौवन । मै.

खटुली-सं., बाँसक टोना पर रस्सी सँ खाटक चारू पौआ कें बान्हि लटकाओल खाटक तात्कालिक सवारी । मै.

खटोली-सं., छोट आकारक महफा सवारी । मै.

खँड़-सं., खण्ड । सं. तद्भव

खड्ग-सं., खाँड़, तरूआरि । सं. तत्सम

खड़कब-क्रि., चुपचाप हटि जाएब । मै.

खड़काएब-क्रि., चुपचाप हटा लेब । बेचि लेब । मै.

खड़खड़-अव्यय, १. सुखाएल वस्तु पर कोनो जीवक संचारक शब्द । कड़ा वस्तुक संयोग सँ कठोरता सँ कष्टक अनुभव । मै.

खड़खड़ाएब-क्रि., १. उचित स्थिति मे व्यतिक्रम होएब । २. सुखाएल वस्तु सँ व्यक्तिक द्वारा हाथ मे रगड़ि शब्द बहार करब । ३. सुखाएल खढ़ पात पर आ यन्त्र रथ आदिक संचारक शब्द होएब । मै.

खड़खड़ी-सं., सामान्य स्थिति मे विशेष संचार । मै.

खड़ग-सं., देखू—"खड्ग ।" सं. तद्भव

खड़गर-विशे., विशेष उपर उठल । नम्मा । मै.

खड़ड़ब-क्रि., जोर सँ बिगड़ि उठब । क्रोधित होएब । मै.

खड़ड़ाह-विशे., सत्य पर अटल रहैक कारणें अन्टोटल नहि सहनिहार । मै.

खड़छाह-विशे., कठोर रहैक कारणें खयबा मे स्वादहीन । मै.

खड़ड़न-सं., खड़ड़ि कय जमा कयल कड़ा । मै.

खड़ड़ना-सं., खड़ड़ैक साधन । वस्तु । मै.

खड़ड़ब-क्रि., खड़ड़ैक साधन सँ गदौस हटाएब । मै.

खड़ड़ा-सं., मोट सक्कत डाँटक बाढनि, जाहि सँ गदौस समेटल जाइछ । मै.

खड़ड़ौआ-विशे., १. खड़ड़ि कें जमा कयल गदौस । २. खड़ड़ैक साधन । ३. हाथक बाँटल पातर जौड़ । मै.

खड़बड़ाएब-सं., सामान्य स्थिति मे अस्वस्थताक अनुभव होएब । मै.

खँड़मण्डल-सं., प्रकृतिक असमान स्थिति । कतौ वर्षा आ कतौ रौदी सँ अकाल । मै.

खँड़हर-सं., भग्नावशेष, ढहल प्राचीन स्थान । मै.

खड़ा-विशे., उपर उठल, ठाढ़, सोझ, नम्मा । ऊँच । मै.

खड़ाइ-सं., विशेष नमती, उँचाइ । मै.

खड़ाड़-विशे., खड़ड़ि कय जमा कयल गदौस । मै.

खड़िका-सं., दाँतक गह शुद्ध करैवाला पातर काठी । मै.

खड़िया-सं., लिखैक कलम । खड़ी सँ बनाओल लिखैक साधन । मै.

खड़ी-सं., रंग मे उज्जर । लिखनाक उपयोगी ठोस वस्तु । मै.

खड़ी धरब-क्रि., (लाक्षणिक) शुभ अशुभक भावी उचारैक प्रक्रिया करब । मै.

खड़ी धराएब-क्रि., छोट नेन्ना कें अक्षर लिखैक आरम्भ कराएब। मै.
खड़ी चलाएब-क्रि., विशेष प्रक्रिया सँ शगुन बहार करब। मै.
खड़आर-सं., देखू—"खड़ाड़"। मै.
खड़-सं., तृण, छोट सँ पैघ फूस, घास राड़ी आ डाभी। मै.
खड़कट्टा-विशे., खढ़ कटैवाला जन वा चोर। मै.
खड़खौका-विशे., घास खाइवाला जीव, पशु। मै.
खढ़गर-विशे., अधिक घासवाला स्थान। मै.
खड़पोसा-विशे., खढ़ मात्रक वृद्धि करैवाला खेतीक अयोग्य वर्षा। मै.
खढ़ही-सं., नमहर छड़वाला मोट डाँटक विशेष प्रकारक सक्कत खढ़। मै.
खढ़होरि-सं., डाभी आ राड़ी खढ़ उपजैक लेल सुरक्षित खेत। मै.
खण्ड-सं., टुकड़ा। विभाग। अंश। सं. तत्सम
खण्डन-सं., तर्क सँ प्रतिवाद कय दोसराक बात कें कटैक व्यापार। मै.
खण्डा-सं., पक्ष, प्रकरण ज्योतिषक पारिभाषिक शब्द। सं तद्भव
खण्डित-विशे., क्षीण, टुकड़ी कयल, अशुद्ध, काटल। सं. तत्सम
खत्ता-सं., छोट व्यासक गहींर स्थान। मै.
खत्ता खाएब-क्रि., (लाक्षणिक) क्रिया आ मन मे ठोकरक अनुभव करब। मै.
खत्ती-सं., गहींरगर छोट खेत। मै.
खत्री-सं., लड़ाका जाति विशेष। क्षत्रिय। मै.
खत-सं., १. छेदैक वा कटैक प्रक्रिया सँ काठ आदि मे छेद वा विभिन्न चेन्ह। मै.
खत-विशे., आङी आदि सीबैक योग्य कपड़ा। मै.
खतकस-सं., काठ कें छेदैक प्रक्रिया सँ चेन्ह पाड़ैक अस्त्र विशेष। मै.
खतकी-सं., हर हरीस आ लागन मे लागि करबैले बनल छेद। मै.
खतगढ़ा-विशे., काठ एवं कोठा कें खति कय चित्र गढ़निहार कारीगर। मै.
खतना-सं., १. मुसलमान सभक लिंगच्छेदन। सुन्नत। २. खतैवाला अस्त्र। मै.
खतब-क्रि., छेद करब। चिह्न लगाएब। मै.
खतबे-सं., कहार, जाति विशेष। मै.
खतम-विशे., समाप्त। उ. तत्सम
खतियाएब-क्रि., वर्गीकरण करब, विभिन्न वस्तु सब मे एक एक रूपक वस्तु कें एकठाँ करब। मै.
खतियान-सं., खेत पथारक नियमित सरकारी प्रमाण पत्र। मै.
खतुआ-विशे., खतल (छीलल) खतल रुपवाला। मै.
खद्दर-विशे., हाथक काटल सूतवाला कपड़ा। मै.
खद्धर-विशे., अधिक खाइवाला लोक। मै.
खद्धा-सं., अत्यन्त छोट व्यासक गहींर स्थान। मै.
खद्धी-सं., भूमि पर वा शरीर मे भीतर धँसल छोट छोट स्थान। मै.
खदकन-सं., गाढ द्रव मे ताप लगला सँ भाफक विस्फोट। बुन बुना बनि भाप फूटब। मै.
खदकब-क्रि., गाढ़ द्रव मे ताप लगला सँ शब्दक संग बुनबुना मे भाफक उपर उठब। मै.
खदका-सं., अनेक औषध मिलाकय ताप लगा कय सिद्ध कयल औषध। मै.
खदकी-सं., कोनो एक वस्तु कें बिना वासन मे देनहि आगि पर ताप लगाओल। मै.
खदखद-विशे., गस्सल, घन भ' क'। मै.
खदखदाएब-क्रि., १. खदखद शब्द करब। २. सघन भ' क' भरल रहब। मै.
खदबद-सं., सघन वस्तुक एकै ठाँ सगबग होइक स्थिति। मै.
खदबदाएब-क्रि., १. सघन भ' क' अधिक जीवक एकत्र सगबगाएब। २. पाकक शब्द होएब। ३. उधियाएब। मै.
खदबर-विशे., सिबित खयनिहारक समूह। मै.
खदर खदर-अव्यय, अव्यवस्थित बहुसंख्यक लोक। मै.
खदर बदर-अव्यय, समूह मे स्थित असभ्य असंस्कृत नेन्नाक झुण्ड। मै.
खदुका-विशे., नियमित रीन, पैंच आ उधार लेनिहार। मै.
खधक्कर-विशे., अधिक खयनिहार। मै.
खधहा-विशे., माटि कोड़ि उठौला उत्तर बनल गहींर भूमि। मै.

खन्ता-सं., निश्चित नापक क्षेत्रक बनल खधहा । मै.

खन्धक-सं., विस्तृत क्षेत्रफलक स्वाभाविक गहींर खेत वा स्थान । पानि बसैवाला स्थान । मै.

खन-सं., क्षण, सूक्ष्मतम समय । मै.

खनक-सं., माटिक पाकल वासन, गहना आ चूड़ीक शब्द । मै.

खनकब-क्रि., वासन, चूड़ी आदिक शब्दसहित फूटब । मै.

खनकाह-विशे., फूटैवाला वासन आ चूड़ी । मै.

खनखन-अव्यय, फूटल रहैक स्थिति मे । मै.

खनखन करब-क्रि., १. मनोऽनुकूल वस्तुक हेतु नेन्नाक असन्तुष्ट रहब । २. व्यग्रता सँ सतत् आन्हर रहब । मै.

खनखनाएब-क्रि., सदिखन सुस्त रहब । मै.

खनखनाह-विशे., कोनो कोनो रोग सँ पीड़ित रहनिहार । स्त्री० खनखनाहि । मै.

खनगर-विशे., बेशी छुट्टा समयवाला । स्त्री० खनगरि । मै.

खनती-सं., पैघ डंटा मे लागल नीचाँ दिश चाकर तेज धारवाला माटि कोड़ैक लोहक अस्त्र । मै.

खनन-सं., माटि कटैक क्रिया । सं. तत्सम

खनब-क्रि., खूनब, कोड़ब, दरी काटब । मै.

खनरब-क्रि., पानिक वेग सँ ढहिकय माटिक नीचाँ दिश ससरब । मै.

खप्खप्-अव्यय, शीघ्रता सँ जड़ि कटैक शब्द । प्रयोग—"चूड़ी झनझन सारंगी सुर, खप्खप् हाँसु ताल दैत अछि । सुखक द्वारि पर नाचि नाचि मन किछु छन गुनगुन गाबि लैत अछि ।" मै.

खप्पड़-सं., नर मुण्डक उपरक अंश । मै.

खप्पा-सं., कोनो द्रववाला वासनक मुनना रुपक उपरक अंग । मै.

खपगर-विशे., मेल खाइक योग्य । मै.

खपटा-सं., फूटल माटिक वासनक पैघ टुकड़ा । मै.

खपटा फोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) श्राद्धक विधि मात्र निवाहब । मै.

खपटी-विशे., अधिक सुखाकय खपटासन पातर आ कड़ा बनल । मै.

खपड़सुक्खू-विशे., तऽब आ खापड़ि मे अधिक ताप सँ सुखायल खाइक अयोग्य वस्तु । मै.

खपड़ा-सं., साँच पर माटिक बनाओल खपटा जकाँ पातर आवाक पकाओल घर छारैं जोग वस्तु । मै.

खपड़ैल-विशे., खपड़ा सँ छारल घर । मै.

खपब-क्रि., १. स्वतः धीरें धीरें खपब । २. कोनो वस्तु मे परिछब । मै.

खपाएब-क्रि., १. अन्तर्भूत करब । २. थोड़ेक छीलि कय मिलाएब । ३. धीरें धीरें नष्ट करब । मै.

खपिअर-सं., नदीक तेज प्रवाह सँ बनल जलक भीतर गहींर खद्धा । मै.

खपिआ-सं., कलम गोसियानी आदिक छोटसन मुनना । मै.

खफ होएब-क्रि., गुम्मै गुम तामस करब । मै.

खबका-विशे., खाइ पर ध्यान रखैवाला । मै.

खबखब-अव्यय, तामस (भीतरक) । मै.

खबखब करब-क्रि., भीतरैं भीतर तामसें जरैत रहब । मै.

खबखबाएब-क्रि., भीतरैं भीतर प्रतिकारहीन तामस करब । मै.

खबखबा कय लागब-क्रि., किछु नै क' सकैक स्थिति मे भीतरैं भीतर सिबित तामस होएब । मै.

खबखबी-सं., गुप्त क्रोध, प्रच्छन्न तामस । मै.

खबास-विशे., भृत्य, सेवक । स्त्री० खबासिन । उ. तत्सम

खबैया-विशे., अधिक खाइवाला । मै.

खबोत्तर-सं., अधिक खाइक प्रतियोगिता मे प्राप्त पुरस्कार । मै.

खम्भा-सं., चारक (घरक) भार तनैवाला सारिल मोट काठक खुट्टा । मै.

खम्हारु-सं., अधिक तर धरि जमैवाला अधिक नाम तरुआ तरकारीक कन्द । मै.

खमहार-सं., दाओन करैक स्थान, खरिहान । मै.

खर-विशे., १. अधिक सुखाएल । अधिक ताप लागल नीरस । २. मुहैं पर ठाँहि पठाँहि सत्य कहैवाला । मै.

खरकट्टब-क्रि., कड़ा भ' क' सट्टब । पकड़ि लेब । मै.

खरकट्टल-विशे., अलग करै मे असमर्थ रुपें सट्टल । अत्यन्त लोभी दरिद्र । मै.

खरकौटी-सं., ताना मे सूत कें सोझ रखैवाला कपड़ा बीनैक यन्त्रक अंग। मै.

खरखर-सं., देहक चामक कठोरता। मै.

खरखराह-विशे., १. कड़ापन भरल। २. मल पातर करैवाला, रेचक। मै.

खरखरिया-सं., आठ कहार सँ उठबैक योग्य काठक नाम आ पैघ सन्दुकचा नहाँइत सवारी। मै.

खरखरौआ-विशे., समूहक मन मे उद्वेग आ चञ्चलता जगवैवाला समाचार। मै.

खरखाह-विशे., स्थानक प्रधान व्यक्तिक विशेष कृपा पात्र। उ. तद्भव

खरखाही-सं., प्रधान लग प्रमुखता। मै.

खरङ्-विशे., उचित सँ वेशी ऊँच। मै.

खरच-सं., एवं विशे., व्यय तथा ओकर द्रव्य। मै. उ. तद्भव

खरचण्डाली-सं., अभावक द्वारें खरच चलवैक विकट परिस्थिति। दिक्कत सँ निर्वाह। मै.

खरचुआ-विशे., खरच करैक लेल सुरक्षित वस्तु। मै.

खरचोटा-विशे., प्रतिदिनक खरच करैक वस्तु। मै.

खरंजा-सं., पजेवा मात्र बैसाओल बान्ह (सड़क)। मै.

खरतर-विशे., खढ़ पातक बनाओल देह मे गड़ैवाला टूटल फाटल पटिया आदि। मै.

खरतरही-विशे., भड़ल भूड़ल अखड़ा पटिया आदि। मै.

खरना-सं., दुर्गा उपास आ छठिक पहिल अर्घ सँ पहिलुक दिनक राति मे होम' वाला एकभुक्त। मै.

खरप्पा-सं., काठक पट्टी मे फीता लागल चट्टीवाला खराँओं। मै.

खरब-संख्या, सौ अरबक एक मानक संख्या। मै.

खरबर-सं., छोट नेन्ना, छोट जीव आ जल मे माछक सञ्चार। मै.

खरबराएब-क्रि., १. अंगक संचार करब। २. अस्वस्थताक अनुभव होएब। मै.

खरबराह-विशे., १. चंचल संचारशील। २. अस्वस्थता भरल। प्रयोग—"आइ हमर मन किछु खरबराह अछि।" मै.

खरभुजा-सं., लत्ती मे फड़ैवाला पैघ सुस्वादु फल। मै.

खरभुसिया-विशे., तत्वहीन, महत्त्वहीन। मै.

खरमास-विशे., सुखाएल वातावरणवाला समय फागुन, चैत आ वैशाख। मै.

खररब-क्रि., छीलब, घँसब। जेना कद्दूकस पर कुम्हड़ खररल जाइछ। मै.

खररा-सं., हाथ पैर मे होइवाला एक प्रकारक कुष्ठ वा चर्म रोग विशेष। मै.

खररौआ-विशे., १. खररि कय बनाओल वस्तु। २. हबर हबर कौआ टांग सन जेना तेना लिखल अक्षर। मै.

खरल-सं., औषध पीसैवाला नाओक आकारक पाथरक छोट वासन। मै.

खरसूप-विशे., अखड़ा सूप। प्रयोग—"खाइ पिबैले सुकराती डेङबैले खरसूप। मै.

खराइन-विशे, गोंत मूतक दूषित गन्ध। मै.

खराएब-क्रि., पूर्ण रुपें सुखाएब। मै.

खराओं/खराम-सं., काष्ठ पादुका। मै.

खराज-सं., यन्त्र द्वारा छीलि कय धातु, काठ आ पाथर कें मनोनुकूल चित्रित करैक प्रक्रिया। मै.

खराजब-क्रि., यन्त्र द्वारा छीलि कय कड़ा वस्तु कें मनोऽनुकूल चित्रित करब। मै.

खराँत-सं., असहाय वा संकट मे पड़ल लोक कें अन्न वस्त्र आ द्रव्यक मुक्त सहायता। खैरात। उ. तद्भव

खराँती-विशे., सहायता सँ भेटल निर्वाहक साधन। मै.

खराह-विशे., अनुचित नहि सहैवाला स्पष्टवादी। मै.

खऽरि-सं., तेलहन वस्तुक सिट्ठी। मै.

खरिहान-सं., सीस सँ अन्न झाड़ैक स्थान। दाओन करैक परिष्कृत स्थान। मै.

खरिहानी-सं., अनकर खरिहान मे अनका दाओन कयला पर भाड़ा रुपें देय अन्न। मै.

खरिहारि कय पूछब-क्रि., नीक जकाँ विषयक स्पष्ट उत्तर माङब। विषय कें सन्देहहीन करब। मै.

खरुआर-सं., खररि बनाकय तथा बहारि कय जमा कयल कूड़ा आ गदीस। मै.

खरुछब-सं., सक्कत जकाँ लागब। मै.

खरुछाह-विशे., खाइ मे स्वादहीन एवं कठोरता भरल। मै.

खरुहनि-सं., १. सुखाएल समयक अन्न। २. रोपल धान उखाड़ि कय रोपँक बीआ। मै.

खरुहान-सं., (तिरस्कार मे) नगण्य, बदमास आ अशिक्षित नेन्ना सभक जेर। मै.

खरेह-सं., एक दिश सँ नाश। नाम निशान मेटा कय संहार। मै.

खरोसा-सं., कुशल क्षेमक वार्ता, अन्वेषण। मै.

खल्ला-सं., मुइल मालक उतारल चमड़ा। मै.

खल्ली-सं., १. खैर, तेलहनक सिट्ठी। २. खड़ी। ३. चमड़ाक उपरी सतह। मै.

खल्लर-सं., भस्मक रोग। खाइत मात्र फेर भूखक वेग। मै.

खल्वाट-विशे., केश उड़ल चानिवाला, चनैल। सं. तत्सम

खल-विशे., दुष्ट। सं. तत्सम

खल-सं., भरिबीत खड़ाइवाला गोल गहींर औषध आदि कूटैवाला वासन। मै.

खल-सं., विभाग, मद, वर्ग। प्रयोग—"विकासक खलक राशि दैनिक खर्चक खल मे उठानि कयने विकास रुकि जाइ छै।" मै.

खलखल हँसब-क्रि., मुक्त आ निश्छल हास। मै.

खलखल बहब-क्रि., स्वच्छता भरल बेरोक टोक प्रवाह होएब। मै.

खलखलाएब-क्रि., १. आन्तरिक उद्गार सँ हँसब। २. भोथ अस्त्र सँ कोनो वस्तु कें अधिक कालें काटब। मै.

खलखलौआ-विशे., कठिनता सँ कटैवाला। मै.

खलना-सं., माल खलैक छूरी। मै.

खलपट-विशे., गुद्दाहीन, मांसरहित देह। भूख सँ सुन्न पेट। मै.

खलब-क्रि., मुइल मालक चमड़ा छोड़ाएब। मै.

खलबल-अव्यय, अधिक आँच सँ दूध आ पानिक उधियाइक क्रम मे उपर उठब। मै.

खलबली-सं., आपत्तिक चिन्ता सँ चञ्चलता। मै.

खलरी-सं., बिन सुखाएल चमड़ा। तुरन्त उतारल चाम। मै.

खस्सी-विशे., बधिया कयल छागर। मै.

खस-सं., कातरक (खढ़ विशेषक) भारक सुगन्धित सीर। मै.

खसकब-क्रि., चुपचाप नहूँ नहूँ हटि जाएब। मै.

खसखस-सं., खस सँ बनाओल सुगन्धि (इत्र)। मै.

खसखसाह-विशे., बिना श्रमें चिपबैक जोग। मै.

खँहनियाएब-क्रि., पानिक वेग सँ तथा घाओक विशेष वेग सँ माटि आ मांस गलि कय भरब। मै.

खँहरब-क्रि., स्वतः भरि भरि कय खद्धा बनब। मै.

खहरब-क्रि., ऊँच भूमिक अब्बल रहला सँ भार नहि सहैक द्वारें माटिक नीचाँ ससरब। हृदयक टूक टूक होएब। मै.

खंहस्टल-विशे., अभाव सँ लोभी हृदयवाला। धर्कटता सँ भरल दरिद्र। मै.

खंहारब-क्रि., माजल द्रव्य कें शुद्ध जल सँ नीक जकाँ पवित्र करब। मै.

खा

खाइ-सं., किला तथा घरक सुरक्षा ले बनल जलाशयक चारू दिश धार जकाँ गहींर जल भरल खद्धा। मै.

खाँइ खाँइ करब-क्रि., सदिखन स्वार्थक पाछू तथा खाइक पाछू व्यग्र रहब। मै.

खाउ-विशे., १. उचित सँ बेशी व्यवसायक लाभ लैक प्रवृत्तिवाला। २. सतत् खयबाक स्वभाववाला। मै.

खाएब-क्रि. भोजन करब। मै.

खाक-सं., भस्म, जरल वस्तुक अवशेष। मै.

खाका-सं., रेखाचित्र। हि. तत्सम

खाँखर-सं., बहि कय आएल। ढहि कय खसल पोखरिकें उत्थर करैवाला माटि। मै.

खाँखरि-विशे., जीर्णोद्धार बिना उत्थर बनल पोखरि। मै.

खाँखी-सं., रंग विशेष। मै.

खाँखी बसाती-सं., प्राप्तिक संगें बिलइनी। मै.

खाँच-सं., सुपुट बैसबैक छेद आ काटा। मै.

खाँच काटब-क्रि., नापक तथा वस्तुक गोलाइ आ नम्माइक अनुसार सुपुट बैसबैक हेतु छेद करब। मै.

खाँच खीच-सं., स्थान स्थान पर वाट मे थोड़ थोड़ थाल आ कत्तौ कत्तौ पानि। मै.

खांचा-सं., थालक द्वारें गाड़ीक लीख परक घँसान आ खद्धा । मै.

खाजा-सं., मैदाक बनल अनेक तहवाला नमहर आ मोट मिथिलाक प्रशस्त प्राचीन मधुर । मै.

खाँजभाँज-सं., वस्तुसब कें व्यवस्थित कय ब्योंत धरबैक व्यापार । एम्हर सँ ओम्हर कय ढंग धरबैक चेष्टा । मै.

खाँट-विशे., आकार प्रकारवाला । मै.

खाट-सं., व्यवस्थित ढंगक चारि पौआवाला सूतैक कोमल साधन । मै.

खाँटी-विशे., विशुद्ध, बिना मिझरौटवाला । मै.

खाँड़-सं., लोहक नाम चाकर भारी घातक अस्त्र । मै.

खाँड़ा-सं., आधा टुकड़ा । मै.

खाँड़ि-सं., अनेक मालक एक संग नार पोआर खाइक हेतु बनल बातीक बीनल नमहर नादि । मै.

खाड़ी-सं., तीन दिश भूमि एक दिश समुद्र सँ लागल समुद्रक विशाल अंश । मै.

खाढ़ी-सं., पीढ़ी, पुरूष, पुस्त (जेनरेशन) । प्रयोग— "भारतक अगिला खाढ़ीक लोक पछिला खाढ़ी सँ अधिक शिक्षित आ उद्यमी बनि रहल छै ।" मै.

खाणी-सं., घासपात कटैक हेतु चक्कावाला कल मे लागल चन्द्राकार तेज अस्त्र । मै.

खाँत खीचब-क्रि., १. दोनाइ सीखैक काल दहाँइ पर खाँत बन्न करैक हेतु डाँरि पाड़ब । २. खत्ता कटैक चेन्ह देब । मै.

खाँत-सं., एकाइ दोनाइ सीखैक दश दश अंकक दहाँइ धरिक अभ्यास । मै.

खाता-सं., १. भिन्न भिन्न खलक लेखा जोखाक बही । २. खेतक चकलाक सरकारी संख्या । मै.

खाता भोक्ता-विशे., खाऽऽ पीबि कय भोग कयनिहार । मै.

खाँति-सं., आकार प्रकार, श्रेणी, ढब । मै.

खाती-सं., खत्ता, खाधि । मै.

खाद्य-विशे., खाइक योग्य । अन्न । सं. तत्सम

खाद-सं., धरतीक उर्वराशक्ति केर बढ़बैवाला पदार्थ (प्राकृतिक वा कृत्रिम) । मै.

खादी-सं., देखू—"खद्दर" । हि. तत्सम

खाधि-सं., छोट परिधिक गहींर भूमि । मै.

खाधि खसब-क्रि., (लाक्षणिक) जानि बूझि कय व्यवहार आ विचार सँ नीचाँ उतरब । मै.

खाधूर-विशे., अधिक खाइवाला । मै.

खानखा-अव्यय, तत्परता सँ । खामोखाह । उ. तद्भव

खानगी-सं., एकान्ती । मै.

खाना-सं., १. भोजन, खैक । २. स्थान । प्रयोग— "डाकखाना, पासीखाना ।" हि. तत्सम

खानि-सं., कोनो वस्तुक भूमिगत प्राकृतिक भण्डार । मै.

खाम्ही-सं., १. अनेक पाया तथा खाम्हीक बीचक फाँक । २. केराक घौर । मै.

खाप-सं., किसानक नामें सरकारक देल भूमिक पूर्ण अधिकार । मै.

खापड़-सं., कोहाक बीचोबीच कयल फाँक जकर उपयोग पिण्डदान श्राद्ध मे होइत अछि । मै.

खापड़ि चटकब-क्रि., सदा अत्यन्त खगते रहब । मै.

खापड़ि-सं., कोहाक एक अंश फोड़ि कय मुह बना कय बनाओल भूजा भूजी करैक बासन । मै.

खापी-विशे., सरकार सँ मानल लगान तरें अधिकृत भूमि । मै.

खाम्ह-सं., मोट सक्कत आ नमहर बीच घरक खुट्टा जाहि पर सम्पूर्ण घरक भार रहैछ । मै.

खाम्ही-सं., चारक अँचरीक वा ओसाराक कातक सक्कत खुट्टा, जाहि पर चारक एके दिशक भार रहैत अछि । मै.

खाम-विशे., खाद (आन धातु) मिलाओल सोन, चानी । मै.

खामी-सं., अशुद्धता, कमी, त्रुटि । हि. तत्सम

खाय-अव्यय, खा कय । मै.

खार-विशे., नोनछराइन स्वादवाला, क्षार । सं. तद्भव

खार काटब-क्रि., घर आदि नीपैक क्रम मे सहरजमीन सँ उपरो टाट वा भीत कें निश्चित रेखा पर नीपब । मै.

खार खाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो पर भीतरें भीतर ईर्ष्या, क्रोध आ विरोध सँ जरैत रहब । मै.

खारी-सं., बाँसक कमचीक बीनल गोल नाम अस्थायी रुपें वस्तु रखैक बासन । मै.

खारु-सं., देखू—"खरुहन"। मै.

खाल-सं., पशुक अभग्न सुखाएल चाम। मै.

खाली-अव्यय, केवल, टा, सिबित। विशे.,-शून्य, रिक्त। उ. तत्सम

खास खास-अव्यय, मात्र दू गोटयक बीच गुप्त रुपें। उ. तत्सम

खांसरि-विशे., बिन बाहल बहुत दिन धरि लगैवाली महींस। मै.

खांसी-सं., कास रोग, दम्मा, खोंखी। मै.

खाहूर-विशे., (स्थान भेदें शब्द भेद) देखू—"खाधूर"। मै.

खि

खिआएब-क्रि., १. अधिक घर्षण सँ पातर होएब। चिह्न बनि जाएब। (ग्राम्य प्रयोग मे)—२. खोआएब। मै.

खिआन-सं., १. अधिक घर्षणक फलस्वरूप क्षीणता। २. खोअऽबैक क्रम। मै.

खिखिआएब-क्रि., खी खी कय के हसैत रहब। मै.

खिखीर-सं., छोट नाङरिक मोट बनैया जन्तु। मै.

खिच्चब-क्रि., १. माटि मे पानि आ कुरकुट दय लात सँ मिलाएब। २. मैल झारैक पदार्थ दय स्वच्छ करैक हेतु कपड़ा मे चोट देब। मै.

खिच्चरि-सं., दालि चाउर मिलाकय रान्हल भोजन। मै.

खिच्चा-विशे., नीक जकाँ नहि जोआएल, अजोह। मै.

खिचड़ी-सं., अनेक पदार्थक एकै मे मिलान। मै.

खिंचरब-क्रि., नीको वस्तु कें माटि पानि मे मिलाएब। मै.

खिंचराह-विशे., थाल पानिक सम्पर्क सँ मलिन। मै.

खिंचान-सं., आकर्षण। बल सँ अपना दिश अनैक क्रिया। मै.

खिचार-विशे., थाल पानि भरल अधलाह स्थान। मै.

खिचारब-क्रि., १. पानि हेरा कय स्थान कें दूषित करब। २. थाल पानि पर घिसियाएब। मै.

खिड़की-सं., इजोत आ बासत अबैक हेतु घर मे देल झिलमिली, छोट केवाड़, झरोखा। मै.

खिदखिद करब-क्रि., दुर्बलता सँ भरल रहब। मै.

खिदखिदाह-विशे., दुर्बलता सँ देहक प्रगतिहीनता। स्त्री० खिदखिदाहि। मै.

खिधान्स-स., निन्दा, वचन सँ आनक कुचेष्टा। मै.

खिन्न-विशे., तनक दुर्बल आ मनक दुखी। सं. तत्सम

खिन-विशे., घटल, क्षीण। सं. तद्भव

खिनखिनाएब-क्रि., खिन आ किछु दुख सँ दुखी रहब। मै.

खिनताह-विशे., क्षीणता सँ भरल। मै.

खिरहरि-विशे., चटाइ, खढ़, बाँस आ ताड़क पात सँ बनाओल बिछाओन। मै.

खिरकिट्टी-विशे., अत्यन्त दुब्बर। मै.

खिरना-विशे., सदिखन घूमैवाला। मै.

खिरब-क्रि., स्वेच्छा सँ घूमैत रहब। मै.

खिरसा-सं., छैना, फाटल दूधक कठुआएल अंश। मै.

खिराएब-क्रि., सब ठाम घुमाएब। मै.

खिरोधनी-सं., क्षीरोदनी। वट सावित्री पूजनक काल मे (बधू वरक) दूध मिलल पानि सँ पैर धोअऽबैक हेतु बनल माटिक बासन। मै.

खिललति-सं., पदवी, उपाधि। मै.

खिल्लनि-सं., १. गूड़ (घाओ) क बीच कठुआएल काँट जकाँ विकार। २. सद्यः बिआएल मालक थनक दूधक विकार। मै.

खिल्ली-सं., चून, खैर, सुपारी दय मोड़ल पान। मै.

खिल्ली उड़ाएब-सं., (लाक्षणिक) निन्दा सँ उपहासक प्रचार करब। मै.

खिलखिलाएब-क्रि., खुलि कय हँसब। मै.

खिलचब-क्रि., १. कोनो वस्तु कें झोंकदय घुमाएब। २. नीक स्थिति (आर्थिक) सँ अधलाह स्थिति होएब। मै.

खिलतोड़-विशे., १. परती कोड़ि कय कयल उपजाउ भूमि। २. पहिल दुद्धा दाँत टूटल माल जाल। मै.

खिलबट्टी-सं., पान सुपारी रखैक धातुक बासन। पनबट्टी। मै.

खिलान-सं., १. छेद मे पैसबैक हेतु दोसर लकड़ी मे बनाओल छेदक अनुसार गोल। २. सौन्दर्यक हेतु कोठाक मुड़ेरा मे कयल लिखनि आ स्थायी चित्रमूर्ति। मै.

खिस्सा-सं., लोक कथा, खेड़हा। मै.

खिसक्कड़-विशे., अधिक खिस्सा जननिहार, कहनिहार। मै.

खिसकब-क्रि., धीरें-धीरें ससरि (चलि) जाएब। मै.

खिसकाएब-क्रि., धीरें-धीरें हटा देब, ससराएब। मै.

खिसकाह-विशे., चुपचाप गुम भ' गेनिहार। मै.

खिसियाएब-क्रि., बिगड़ब, तमसाएब। मै.

खिसोटब-क्रि., प्रकट करब, बहार करब, विकसित करब। (विशेष रुपें दाँतक हेतुक प्रयोग)—"ईः दाँत खिसोटै छथि।" मै.

खी

खींचब-क्रि., बल सँ अपना दिश अनेक प्रयास करब। मै.

खींचाएब-क्रि., १. दोसराक द्वारा जोर सँ अपना दिश अनेक चेष्टा करब। २. स्वयं स्वतः खीँचल भ' जाएब। मै.

खींचातानी-सं., अपना अपना दिश खींचैक चेष्टा। मै.

खोजाएब-क्रि., दाना सँ भूसा, वस्त्र सँ मैल चोट द्वारा ढील करब। मै.

खीझ-सं., तामसक द्वारें ककरो पर अरुचि। मै.

खीझब-क्रि., तामसें अरुचि प्रकट करब। मै.

खीर-सं., दूध मे चाउर कें रान्हि बनल पदार्थ। मै.

खीरा-सं., सोहाँस, लत्तीक स्वादिष्ट फल। मै.

खीरी-सं., गाछ विशेष। लकड़ी। मै.

खील-सं., गहना आदि मे जोड़ पर देल कील। मै.

खीलनि-सं., वियलाक तुरन्त उपरान्त पहिने सँ स्तन मे जमा विकृत पदार्थ। मै.

खीलनि गारब-क्रि., स्तनक जमा विकार निचोड़ब। मै.

खीसा करब-क्रि., निन्दा करब, हँसी उड़ाएब। मै.

खु

खुक्ख-विशे., एकदम धनहीन। मै.

खुखरी-सं., नेपाली अस्त्र, भुजाली। मै.

खुघरी-सं., जारनिक सब सँ छोट टुकड़ी। मै.

खुचखुच-अव्यय, लगले लागल बारम्बार। मै.

खुचखुची-सं., बारम्बार लगले मलक वेग। मै.

खुचरी बिचरी-सं., छोट छोट अनेक राशि। मै.

खुचुरखुचुर-विशे., लगले लागल लागल होम'वाला छोट छोट काज। मै.

खुजखुजाह-विशे., खूजै खुजै पर होइवाला। मै.

खुजनाइ-क्रि., खुजैक क्रिया। मै.

खुजलाह-विशे., खूजल जकाँ लगैत। मै.

खुजली-सं., नोचनी रोग। मै.

खुट्टा-सं., टाट अड़बैक, माल बन्हैक हेतु गाड़ल सक्कत बाँस आ काठ। कहवी—खुट्टा बलें परड़ चुकरै छै। मै.

खुट्टी-सं., छोट सन गाड़ल सक्कत डंटा, काटल गाछ आ फसिलक सक्कत जड़ियाठ। मै.

खुटखुट करब-क्रि., अनिष्टक शंका सँ मन उद्विग्न होएब। मै.

खुटखुटी-सं., अशुभ सन्देहक भावना। मै.

खुटका-सं., मनक आशका, मरण।शौचक सभावना। मै.

खुटकाह-विशे., अधिक सन्देहवाला, अशौचियाह। मै.

खुटब-क्रि., रेखा वा डोरी सँ नापक चिह्न देब। चित्रक रेखा खींचब। मै.

खुटरी-सं., भीत मे जाम कयल छोट छोट खुट्टी। मै.

खुटिया मिर्जइ-सं., डाँरें धरि पुरुषक प्राचीन आङी। मै.

खुटियाएब-क्रि., नमहर वस्तु कें (घास पात कें) काटि खुट्टी जकाँ बनाएब वा काटल केशक खुट्टी जकाँ बढ़ब। मै.

खुटुर खुटुर करब-क्रि., किछु ठोकैक वा छीलैक निरन्तर काज करैत रहब। मै.

खुटेसब-क्रि., चरैवाला जीव कें चरैक हेतु कोनो खुट्टा लगा कय बान्हब। मै.

खुद्दी-सं., चाउरक छोट छोट टूटल खण्ड। मै.

खुदरा-सं., १. पैघ मुद्राक छोट अनेक मुद्रा। २. छोट छोट वस्तुक समूह। मै.

खुदरिया-विशे., रुपैया सँ छोट छोट विनिमय मुद्रा। मै.

खुदियाएब-क्रि., खुद्दी जकाँ दाँतक ऊगब, दूध फटैक प्रथम रुप। मै.

खुदियाह-विशे., १. खुद्दी सँ भरल चाउर। २. भीतर मे खुद्दी जकाँ असिद्ध भात। मै.

खुदुर बुदुर-अव्यय, असंख्य रुप मे। मै.

खुनकाह/खुनसाह-विशे., १. बातें बातें रुष्ट होइवाला। २. विशेष फुटैवाला वासन। मै.

खुनना-सं., खुनैक अस्त्र। (खुरपी, खनती, कोदारी)। मै.

खुनखुन कय ताकब-क्रि. कोनेसानी नीक जकाँ खोजब। मै.

खुनाओन-सं., १. खुनैक पारिश्रमिक। २. लगातार खुनबैक (कोड़बैक) काज। मै.

खुनियाँ-विशे., १. हत्या करैवाला। २. खूनैक काज करैवाला। मै.

खुनुस उठब-क्रि., हठात् उत्ताप आएब, जोहि उठब आ जोश होएब। मै.

खुफिया-विशे., लौकिया, जासूस, गुप्तचर। उ. तत्सम

खुफियागिरी-सं., जासूसी। उ. तत्सम

खुबुर खुबुर करब-क्रि., एकै स्थान मे रहैत अधिक संचार करब। उतनुआ नेन्नाक स्वतः हाथ पैर फेंकब। मै.

खुर-सं., १. माल जालक पैर। २. केश कटैक अस्तुरा। सं. तद्भव

खुरखुर करब-क्रि., १. अनदेख वस्तुक संचार करब। २. किछु किछु काज करैत रहब। मै.

खुरखुराएब-क्रि., खुरखुर शब्द होएब। मै.

खुरचन-सं., सितुआ नामक जल जीवक उपरका आवरणवाला (खोलवाला) हाड़ जाहि सँ देहात मे चम्मचक काज होइत अछि। मै.

खुरचब-क्रि., उपरैं उपर हल्लुक हाथें खखोरब। मै.

खुरछारी/खुरछाही काटब-क्रि., अत्यन्त व्यग्रता सँ अन्ध भय सोझाँ मे वस्तु रहनौं नै देखि ढूँढ़ै मे व्यस्त होएब। अनेर एम्हर ओम्हर हलचल रहब। मै.

खुरजौड़-सं., खुट्टा मे बन्हैले महींस आदि जीवक पैरक जौड़ (डोरी)। मै.

खुरदक-सं., ढोल पिपहीक एक संग बाजन। मै.

खुरदकिया-विशे., खुरदक बजबैवाला दल। मै.

खुरपी-सं., घास पात छीलैक कमाइक चाकर आ वेंटवाला गृहस्तीक अस्त्र। मै.

खुरलुच्ची-विशे., सतत् उपद्रव करैवाला। मै.

खुरसी-सं., १. कुलक मूल। २. देवालक पुष्ट जड़ि, तऽरी। मै.

खुरहा-सं., वंशक्रम, कुल विस्तार। मै.

खुराएब-क्रि., बड़दक खुर सँ धङाएब। मै.

खुराठ-सं., खुरक चोट। मै.

खुराड़-सं., खुरक चिह्न। पैघ खुर (पैर)। मै.

खुरापात-सं., उपद्रव, उत्पात। उ. तत्सम

खुरापाती-सं., खुरापात करैवाला। मै.

खुरिया-सं., खुरक घाओ। मै.

खुरियाह-विशे., कोनो खुर पैघ रहैवाला माल। (दोष) मै.

खुरी आगि उठब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात सँ पैर सँ शिखाक लहरि उठब। मै.

खुरीखुरी करब-क्रि., खुर सँ माटि उकटब। पैर सँ धाङब। मै.

खुरुरबट्टी-सं., जंगल झारक पातर पैरक बाट, माल जालक खुर सँ बनल बाट। मै.

खुरेठब-क्रि, खुर वा पैर सँ धाङब। मै.

खुल्लम खुल्ला-अव्यय, प्रकाश मे आनि कय, प्रकट रूप मे नीक जकाँ। मै.

खुल्ला-विशे., प्रकट कयल, प्रकाश मे आनल, खोलल। मै.

खुलता-विशे., भण्डार सँ खर्चैक हेतु आनल, खोलि कय राखल, जमा सँ बहार कयल। मै.

खुलब-क्रि., सुन्दर लागब, खूजब, प्रकट होएब। मै.

खुशी-सं., प्रसन्नता, आनन्द। उ. तत्सम

खुष्ठम ख्याल-अव्यय, जानि बूझि कय, जिद्द लगाकय। मै.

खुसखुस टूटब-क्रि., सुसकैं अर्थात् बिना जोर लगौनै टूटि जाएब। मै.

खुसुरफुसुर करब-क्रि., चुप्पैं चुप्पैं गप करब। रहस्यमय ढंगें बात करब। मै.

खुहखुह जाएब-क्रि., बिना आयासैं अर्थात् छूबैत माल छिन्न भिन्न भ' जाएब। मै.

खू

खूजब-क्रि., बन्धन छूटब, बन्धनमुक्त होएब। म.

खूजा-सं., धान रोपैक काल बीयाक आँटी खोलि रोपैक सुविधा लेल अपन पाछू छोटल बिचड़ाक मुट्ठी। मै.

खूट-सं., वंशक वैयक्तिक फाँणी (शाखा) अर्थात् दू खाढी सँ उपरक वंशक वंशज। मै.

खूँट-सं., कपड़ा वा अन्य पसरैवाला वस्तुक कोनवाला अंश (आँचर)। मै.

खूँटी-सं., कपड़ा लटकऽबैक काज मे अबैवाला देवाल मे लगाओल लोह वा काठक पातर छोट छड़। मै.

खूटे-अव्यय, अन्न कें वाँटि कय बदला मे वस्तु विक्रय। प्रयोग—"चाउरक चारि खूटे अखन छोटको माछ बिकाइत अछि।" मै.

खून-सं., १. हत्या। २. शोणित। उ. तत्सम

खून खुनामय-सं., १. अधिकता सँ भरल हत्या। २. सगरे शोणिते शोणित। मै.

खून चढ़ब-क्रि., हत्याक मद बढ़ब। मै.

खूनब-क्रि., कोड़ि कय भूमिक भीतर सँ कोनो वस्तु बहार करब। माटि कोड़ब। मै.

खूनी-विशे., खून करैवाला, खून सँ भरल। मै.

खूब-विशे., बढ़ियाँ, नीक, उत्तम, विशेष आ अधिक। मै.

खूबी-सं., विशेषता, सौन्दर्य। मै.

खूभी-सं., कोनो वस्तुक खोंच लगैवाला अंश। मै.

खूम-विशे., (स्वीकारात्मक) वेश, नीक, अधिक। मै.

खूर-सं., माल जाल आ मनुष्यक पैर। मै.

खूरी-सं., खूरवाला अंग। मै.

खूरी बहराएब-क्रि., मालक बियाइक काल योनि सँ पहिने बच्चाक खूरीक प्रकट होएब। मै.

खृ

खृष्टीय वर्ष-विशे., अंग्रेजी ईसवी सन्‌वाला वर्ष। सं. तत्सम

खे

खेआल-सं., (उ.) स्मरण। (मै.) नाटकीय अभिनय, बताओन। प्रयोग—"इः अहूँ बड़ खेआल करै छी।" मै.

खेआल करब-क्रि., १. मोन पाड़ब। २. विनोदक चेष्टा करब। मै.

खेआल पाड़ब-क्रि., स्मरण करब, मोन पाड़ब। प्रयोग—"हँ अहाँ जे कहलौं से खेआल पड़ल।" मै.

खेआली-विशे., विनोदक हेतु विचित्र अभिनय आ व्यवहार कयनिहार। मै.

खेंख-विशे., नाक आ मुह सँ अनेरो सतत् खें खें ऐसन शब्द करैत रहनिहार। मै.

खेंखनि-सं., कोनो विषय आ वस्तुक हेतु दीनता सँ प्रार्थना। (हि.) गिरगिराएब। मै.

खेखनियाँ-विशे., खेखनि कयनिहार। सं.,- नीचता सँ कोनो वस्तुक आग्रहपूर्वक प्रार्थना। मै.

खेंखा-विशे., बिन अर्थ बुझनौ सब बात पर खें खें हसैवाला। मै.

खेंखियाएब-क्रि., १. खें खें कय हँसैत रहब। २. कोनो वस्तु देखैत मात्र लल्ल भय प्राप्त करैक चेष्टा करब। मै.

खेंखें करब-क्रि., बिन कारणौं सब वस्तुक अभाव देखा दीनताक प्रदर्शन करब। धर्कटपनी राखब। मै.

खेटा-सं., होहकारा दय के शिकार उठाएब। मै.

खेड़हा-सं., आत्मीय लोकक वा आनौक आदि सँ दोष रागक विस्तृत कथा। मै.

खेड़ही-सं., १. साम जातिक भदइ अन्न विशेष। २. कोमल दलिहन विशेष। (मूङ) मै.

खेड़ा-विशे., खेलाइक प्रकृतिवाला। खेलायब अधिक पसिन्न कयनिहार। क्रीड़ा विशेषज्ञ। मै.

खेड़ि-सं., खेल, क्रीड़ा आ विनोद। मै.

खेड़िया-विशे., सदिखन खेल मे मगन रहनिहार। मै.

खेढ़ा-सं., विषयक वार्ता, रहस्यक बात। मै.

खेत-सं., उपजाउ भूमि। मै.

खेत उतार-सं., एक फसिलक अन्तिम कटनी। फसिल कटैक समापन। मै.

खेत कोना-सं., खेत मे फसिल लगबैक बांकी कोन। मै.

खेत पथार-सं., अचल सम्पत्ति, खेतक संग पसरल गाछ वृक्ष आदिक वेष। मै.

खेतबहि-सं., निरन्तर खेतक जोत कोड़क काज। मै.

खेतियाहा-विशे., खेतीक मर्म जनैवाला। मै.

खेतिहर-विशे., खेती मात्र जीविकावाला। कृषक। स्त्री० खेतिहारिन। मै.

खेतिहारी-सं., कृषि कार्यक लूरि, परिज्ञान । मै.
खेती-सं., खेत सँ उत्पादन प्रक्रिया, कृषि । मै.
खेद-सं., दुःख । सं. तत्सम
खेदा-सं., हाथीक शिकार । मै.
खेना-अव्यय, भूत वा भविष्य मे खाइक समय । खयना । प्रयोग—"बौआ कें औषध खेना कते काल भेल छनि ।" मै.
खेप-सं., समय आ काजक सीमित मान । प्रयोग—"एक खेप धानक बोझ खरिहान मे धय आबह तखन दोसर खेप लय जयबह ।" अर्थात् बेर । मै.
खेपनि-सं., समय कटैक क्रम । प्रयोग—"की कहू एहि महगी मे कोनो धरानी खेपनि करै छी ।" मै.
खेपब-क्रि., कोनो रूपें काल काटब । मै.
खेपी-स., वेर काजक अनुकूल समयक मान विशेष । एक खेप, दू खेप आदि । मै.
खेपाखेपी-सं., बेरा बेरी । एक बेर दू बेर कय । मै.
खेबट-सं., १. जमीन्दारी संख्या । २. नाओ खेबि पार उतारैक बोनि । मै.
खेबनि-सं., १. नाओ खेबैक कला । २. नाओ खेबैक बोनि । ३. नाओ खेबैक काज । मै.
खेबनिहार-विशे., नाओ चलौनिहार । मै.
खेबब-क्रि., नाओ हांकब, चलाएब । मै.
खेबा-सं., नाओ खेबैक, नाओ खेबि पार उतारैक पारिश्रमिक । मै.
खेबाइ-सं., देखू—"खेबा" । मै.
खेबिया-सं., खेबैक नियत काज । मै.
खेम-सं., कल्याण, क्षेम । सं. तद्भव
खेरब-क्रि., घुराएब । खिराएब । नोतब । मै.
खेरहा-सं., गरूहन मोट धान । प्रयोग—'खेरहा धान के चुरबे रे चुरबे भुली महींसके दूध ।" मै.
खेल-सं., क्रीड़ा, मनोरंजन । मै.
खेलधूप-सं., खेलाइक अनेक प्रक्रिया । मै.
खेलना-विशे., खेलाइक प्रवृत्तिवाला, खेलइक पदार्थ । मै.
खेलब-क्रि., स्वतः खेल मे निमग्न रहब । मै.
खेला-सं., प्रदर्शन भेद, प्रकार, रूप । मै.
खेलाएब-क्रि., संग मिलि क्रीड़ा करब । मै.
खेलाड़ी-विशे., अनेक खेल (प्रदर्शन) करैवाला, जनैवाला । मै.
खेलौड़-सं., खेलाइक विधि, केहनो बात मे खेलाइक बोध । मै.
खेलौड़िया-विशे., विनोदप्रिय, कठिनो काजमे खेलाइक रूप देनिहार । मै.
खेलौना-सं., खेलाइक साधन । मै.
खेसरा-सं., १. माछ विशेष । २. खेतक संख्या । मै.
खेसारी-सं., तीन कोनवाला दलिहन विशेष । मै.
खेह-सं., तागक बाँटनि (गुन) कें बैसबैक प्रयास । मै.
खेहब-विशे., क्रिया, बाँटल तागक गुनक पानिक संग सोंटि क' बैसाएब । मै.
खेहल-विशे., बारम्बार अनुभव कयल । प्रयोग—"ई बाट तँ हमरा खेहल (परिचित) अछि ।" मै.
खेहार-सं., पाछू सँ दौड़ि कय पकड़ैक चेष्टा । मै.
खेहार करब-क्रि., पाछू पाछू दौड़ैत पकड़ैक चेष्टा करब । मै.
खेहारब-क्रि., वेग सँ पाछू पाछू दौड़ब । मै.

खै

खै-विशे., गहींरगर खेत । मै.
खैंक-विशे., भोजन, खाइक लेल रान्हल वस्तु । मै.
खैंक-सं., मेहीं काठी जे कत्तौ अकस्मात् गड़ि जा सकए । मै.
खैंक पियक-सं., खयबाक पियबाक व्यवस्था । मै.
खैंका-विशे., (लाक्षणिक) दुर्बल शरीरवाला । मेहीं काठीसन बनल । मै.
खैंखैं करब-क्रि., अभाव सँ सतत् खगते रहब । अभावें व्यग्र होएब । मै.
खैंचन-सं., आकर्षण, अपना दिश अनैक प्रयास । मै.
खैंचब-क्रि., भीकब, आकृष्ट करब । मै.
खैंचातानी-सं., एके वस्तु कें अपना अपना दिश कें खैंचब । मै.
खैंछा-सं., डोलची, फैल मुहवाला बाँस वा बेंतक बनल वासन (यात्राक उपयोगी) । मै.
खैंझा-सं., बाँसक कामिक बीनल गोलायम आ नाम सन मलाहक माछ रखैक वासन । मै.
खैंठी-सं., घाओक उपर सुखाएल विकृत अंश । मै.

खँन-सं., खाइक रुपरेखा, खयबाक सन्दर्भ । मै.
खँन खसब-क्रि., कार्यालयक दाइत्व मे चोराओल धनक देन होएब । मै.
खँन खा पानि पीकय लागब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात पर एकाग्र भ' क' पड़ब । मै.
खँन पियन-सं., नव सौजनक विशेष भोजन क्रम । मै.
खँनी-सं., तमाकू । मै.
खँर-सं., पानक प्रधान मसाला । मै.
खँर-सं., तेलहन वस्तुक सिट्ठी । मै.
खँरी पड़ब-क्रि., प्राकृत प्रभाव सँ कोनो वस्तु पर मोट कारी दाग पड़ब । मै.
खँलहा-विशे., कोनो शर्त पर लय के खाएल वस्तु । मै.
खँहन-विशे., खाइक हेतु सुरक्षित अन्न । मै.

खो

खो-सं., एक खेप दाओन करैक हेतु मेंहक परिधि मे छींटल सीससहित अन्नक डाँट । मै.
खोआ-सं., अत्यन्त गाढ कयल दूध । मै.
खोआएब-क्रि., भोजन कराएब । मै.
खोइआ-सं., कोमल गुद्दाक कठोर आधार । कड़ा आवरण । एहि आकारक प्रकारक आनो वस्तु । प्रयोग—"नारिकेरक खोइआ, आमक कोइलीक खोइआ । एहि प्रकारक आनो वस्तु ।" मै.
खोइखोइकय छूटब-क्रि., हठात् अत्यन्त क्रोध सँ दूर करैक हेतु अपमानजनक बात करब । मै.
खोइचा-सं., फल आदि वस्तुक उपरका प्राकृतिक आवरण, कठोर चर्म । मै.
खोंइछ-सं., सधवा स्त्रीक शुभ सूचक विधि । आँचरक अंश मे चाउर वा धान दय आगू मे डाँर मे खोंसि लटक'बैक व्यवहार । मै.
खोंइछा-सं., कोनो वस्तुक रखैक हेतु स्त्रीक शाड़ीक छोरक आँचर केर झोरी जकाँ आगू दिश डाँर मे खोंसल जाइक बनाओल पात्र । मै.
खोंख-विशे., उकासीक बिना वेग भेनौं अनेर खों खों करैक अभ्यासवाला । मै.
खोखड़न-विशे., कोनो वासन मे लागल खुरचन वा कोनो कड़ा वस्तु सँ छोड़ाओल वस्तु । मै.
खोखड़ना-सं., खोखड़ैक साधन । खुरचन आदि । मै.
खोखड़नी-सं., खोखड़ैक लेल बनल साधन । गहूम आदि फसिलक जंगल खोखड़ैक अस्त्र । मै.
खोखड़ब-क्रि., कोनो सट्टल वस्तु कें कोनो धारदार कड़ा वस्तु सँ छोड़ाएब । मै.
खोखड़ाएब-क्रि., अनका द्वारा खोखड़ैक क्रिया कराएब । मै.
खोंखब-क्रि., उकासी करब । मै.
खोखला-विशे., भीतर सँ फोंक । हि. तत्सम
खोखस-सं., १. छातीक भीतर श्वासक धमन कयनिहार बटुआ जकाँ प्राकृतिक शरीर यन्त्र । २. कटला उत्तर अंग मे बहराएल रक्तहीन मांस । मै.
खोखसा-सं., वनस्पति विशेष । मै.
खोखसाह-विशे., भीतर सँ सुन्न दुर्बल आ उपर सँ देखै मे मोट डाँट । मै.
खोंखियाएब-क्रि., खों खों शब्द करब । बिगड़ि उठब । मै.
खोंखिला-विशे., तत्त्वहीन । भीतर सुन्न । मै.
खोंखी-सं., उकासीवाला रोग । मै.
खोङ-विशे., अवसर पर नहि बाजि सकैवाला केवल मुह तकैवाला । मै.
खोङा-सं., चाकर मे गोल खड़ाइ मे नाम बेंतक वा बाँसक बीनल वासन । मै.
खोड़ी-सं., मलाहक माछ रखैवाला कम खड़ाइवाला गोल चाकर बँसैला वासन । मै.
खोंच-सं., उपर बहराएल गड़िकय चमड़ा कें क्षत करैवाला अंश । मै.
खोंचब-क्रि., खोंच जकाँ आँगुर सँ मारि कय प्रेरित करब । मै.
खोंचरि-सं., कपड़ाक चारू खूँट बान्हि कय बनाओल वासन । मै.
खोंचा-सं., आगूक नोकवाला अंश । मै.
खोंचा मारब-क्रि., कोनो नोकवाला वस्तु सँ हल्लुकें सँ मारब । मै.
खोंचार-सं., खोंचवाला वस्तु सँ जोर सँ चोट । मै.
खोंचारब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रेरित वा सजग करैक हेतु बातें वा वस्तुएँ उकसाएब । मै.
खोंचाह-विशे., बढ़ल खोंचक अंशवाला । मै.

खोंचियाएब-क्रि., १. लपकि झपकि कय कोनो वस्तु हथियाएब। २. मैथुनक व्यर्थ चेष्टा देखाएब। मै.
खोंची-सं., लपकि झपकि कय लैक चेष्टा। तराजू मे हाथक सफाई। मै.
खोची मारब-क्रि., बनियाँ सभक तौलैक काल हाथक इशारा सँ घट्टी जोखब। टालि मारब। मै.
खोंछि-सं., देखू—"खोंइछ"। मै.
खोज-सं., अनुसन्धान, अन्वेषण। ताकब। प्रयोग-"कने हुनको खोज पुछारी रखबंन।" मै.
खोजब-क्रि., ताकब, ढूँढ़ब, अन्वेषण करब। मै.
खोजी-विशे., अन्वेषण मे तत्पर। खोजनिहार। मै.
खोंट-विशे., १. निम्न कोटिक वस्तु। २. नह आदि तेज वस्तुक द्वारा उखाड़ैक क्रिया। ३. भञ्जन। मै.
खोटका-सं., १. अनिष्टक भय। २. अशौच। मै.
खोंटब-क्रि., १. नह आदि सँ भगन करब। २. सम्पूर्ण वस्तु सँ कनेक कपचि लेब। मै.
खोंटा-विशे., १. तत्त्वहीन। २. छोट। ३. भगन कयल। मै.
खोंटाएब-क्रि.,१. अनवधान मे अपन तथा आनक नह आदि सँ भगन भ' जाएब। २. कटाएब। मै.
खोंटि खांटिकय-अव्यय, (लाक्षणिक) बचा खुचा कय अर्थात् बड़ संकुचित व्यय कय। मै.
खोंटियाएब-क्रि., हल्लुक हाथें अभ्यास (लुतुक) वशें खोंटैक चेष्टा करब। जेना बच्चा दूध पीबैक काल दोसर स्तन कें खोंटैक चेष्टा करैत रहै अछि। मै.
खोंठी-सं., घाओ छुटला पर उपरक सुखाएल चमड़ा। मै.
खोंठी पड़ब-क्रि., छुटैक क्रम मे घाओ सुखाएब। मै.
खोंड़-विशे., १. पूर्ण रूप मे एक अंशक कमी। २. अंगभंग, अर्थात् आँखि नाक, मुह मे हीनता सँ विकृत। मै.
खोड़ संग-विशे., उत्तरदायित्वक संग अनावश्यक संग लागल लोक। मै.
खोड़ा-सं., १. वाटक छोट छीन पानिवाला स्थान। २. निचरस खेत। मै.
खोड़ा-सं., १. देखू—"खांत"। २. सतरंज पचीसी आदि खेलक निखारल घर। मै.
खोढ़िया-सं., नेपाली अस्त्र खुखरी। मै.
खोण करब-क्रि., अंग भंग करब। छाँटब। मै.
खोंता-सं., चिरै चनमुनीक वास, घर (सं.) नीड़। मै.
खोद-सं., कोड़ब, जड़ि जगाएब। मै.
खोदब-क्रि., जड़ि जगा कय उखाड़ब। मै.
खोद वेध-सं., जड़ि जगा कय स्पष्ट करैक प्रयास। मै.
खोदाइ-सं., खोदैक काजक क्रम। मै.
खोध-सं., गहींर सँ कोड़ैक चेष्टा। मै.
खोधन-सं., गहींर कय कोड़ैक व्यापार। मै.
खोधब-क्रि., १. समथरि पर गहींर चेन्ह करब। मै.
खोधर-सं., गहींरसन छेद। मै.
खोधराह-विशे., यत्र तत्र गहींर छेदक चिह्नवाला। मै.
खोधल-विशे., भग्न कयल। मै.
खोधली-सं., छोट छीन वस्तु रखैक लेल देवालक भीतर गहींर सन चक्का। मै.
खोधहा/खोधा-सं., चमड़ा पर सूइक द्वारा रंग सन्हिया कय स्त्रीगणक अंग सब मे कयल विभिन्न चेन्ह। मै.
खोधाएब-क्रि., खोधा पड़ाएब। गम्भीर रूपें छेद कराएब। मै.
खोधाइ-सं., गहींर धरि माटि काटि कोड़ैक चेष्टा। मै.
खोधाड़/खोधाण-क्रि., गहींरधरिक छेद गहींर छेदक चिह्न। मै.
खोधान-सं., सतत खोधैक क्रम। मै.
खोधामा-सं., पाथर वा काठ कें खोधि खोधि इच्छानुसार बनाओल चित्रकारी। मै.
खोधियाएब-क्रि., १. कनेक खोधि कय किछु बहार क' लैक चेष्टा। २. चोरि करैक सन्दर्भ मे यत्र तत्र सिह्न कटैले कोड़ब। ३. जमा राशि सँ थोड़ थोड़ खर्च करब। मै.
खोधी-विशे., खोधैक बात कें जगबैक लुतुकवाला। मै.
खोधुआ-विशे., खोधि कय आनल, रचल वा खोधामा कयल। मै.
खोन-विशे., उपरका काटल ठोरवाला अथवा काटल नाकवाला। खोंड़, भग्न। मै.
खोनमा-सं., अनादर विशेषण खोन। मै.

खोनही-सं., (अ.) गैलरो, कोन दिशक संकीर्ण स्थान । मै.

खोना-अनादर विशे., ठोरकट्टा, नककट्टा । मै.

खोनाठ-सं., अधजरू जारनि आ चेरा । प्रयोग— "नहि कमाएब तँ खोनाठ खाएब ।" मै.

खोनाठी-सं., अधजरू चेराक मारि । मै.

खोनू-विशे., शिष्ट सम्बोधन "खोन" । मै.

खोप-सं., परबाक रहैक कृत्रिम स्थान । मै.

खोपड़ि-सं., अस्थायी उठबै बैसवैक योग्य टाटक बनल मोड़ल आ घरक आकारक छाही, सामान्य छोटका फूसक घर । मै.

खोपड़ी-सं., १. बाध बोनक खोह जकाँ भूमि सँ लागल अस्थायी घर । २. माथक उपरक भाग । मै.

खोपा-सं., समेटि कय कलात्मक रूपें एकठाँ बान्हल केश विन्यास । मै.

खोपिया-सं., कलमक मुहक मुनना । मै.

खोपी-सं., कोनो वस्तुक मुह मुनैक हेतु तदनुसार बनाओल मुनना । मै.

खोभ-सं., गलल वा दहाएल धानक गाछक स्थान पर पुनः रोप । मै.

खोभब-क्रि., नष्ट धानक गाछक स्थान मे पुनः रोपि स्थानक पूर्ति करब । मै.

खोभलहा-विशे., खोभल धानक गाछ आ खेत । मै.

खोभाटनि-सं., वस्तुक बारम्बार तगेदा । मै.

खोभाटब-क्रि., बारम्बार तगेदा करब । मै.

खोभाड़-सं., गमैया सूगरक कृत्रिम संकीर्ण घर । मै.

खोभाड़ी-विशे., खोभाड़ सन संकीर्ण । मै.

खोभिया/खोभी-सं., चर चाँचर मे स्वयं उपजैवाला सूक्ष्म दानाक कोमल खाद्य, फलाहारक उपयोगी । मै.

खोभुआ-विशे., गोभि कय रोपल भिन्न धान । मै.

खोम-सं., व्यवहार विशेष सँ अनिष्ट शंका । मै.

खोमचा-सं., चलि फिरि बेचैक लेल वस्तु रखैक फैल आ उत्थर काठक वासन । मै.

खोमटार-सं., बात बात मे अमंगल शंकाक प्रकृति । मै.

खोमारी-सं., परिश्रम आ निन्नक अभावें भकुआइक चेष्टा । मै.

खोमाह-विशे., अमंगलक विषय आ अमंगलक शंका रखनिहार । स्त्री० खोमाहि । मै.

खोर-विशे., विशेष लुतुकवाला । प्रयोग—"गँजखोर भतखोर, मदखोर आदि । मै.

खोरचाल-सं., विषयक उत्थान, बातक प्रकाशन । प्रयोग—"गप्पक प्रसंग मे कथा वार्ताक खोर चाल सेहो कय लेब । मै.

खोरना-सं., कोनो वस्तु कें चालैक आ उपर नीचाँ कोड़ि कोड़ि व्यवस्थित करैक साधन । मै.

खोरनाठी-सं., चिता मे शव के उनटा पुनटा कय जरबैक हेतु अर्थात् मुर्दा खोरै लेल बाँसक टोंटा । विजाधर । मै.

खोरनिहार-विशे., दबल वस्तु कें प्रकाशमे अनैवाला आ कोनो वस्तु कें नीचाँ उपर कयनिहार । मै.

खोरनी-विशे., १. बिसरल बात कें जगौनिहारि । २. विशेष लतिवाली स्त्री । मै.

खोरब-क्रि., १. ढील आ ठोस कें कोड़ब । २. उपेक्षित विषय के प्रत्यक्ष मे आनब । ३. बात कें बारम्बार उठाएब, जगाएब । मै.

खोरा-सं., गहींरगर जलपूर्ण स्थान । मै.

खोराक-सं., खयबाक निश्चित मात्रा । मै.

खोरि-सं., चारू दिश ऊँच रहैक कारणें पानि बसैवाला गैंसार खेत । मै.

खोलिहया/खोल्ही-सं., वस्तु रखैक हेतु भीत आ देवाल मे खोधि बनल स्थान । मै.

खोल-सं., कोनो वस्तु सुरक्षित रखैक आवरण । मै.

खोल करब-क्रि., किछु पैसबैक हेतु काठ आदि वस्तु मे छेद बनाएब । मै.

खोलना-सं., खोलैक साधन । मै.

खोलब-क्रि., १. मुक्त करब । २. बन्धन छोड़ाएब । ३. प्रकाश मे आनब । ४. अकुञ्चित करब । ५. अनावृत करब । मै.

खोल बनाएब-क्रि., खाँच काढ़ब । मै.

खोलबाएब-क्रि., आनक द्वारा खोलैक चेष्टा कराएब । मै.

खोलबैया-विशे., खोलैवाला । मै.

खोलसा-सं., मुखौटा, मुह बेदरंग करैक खोल । देह कें अनचिन्हार करैक विशेष आवरण । मै.

खोलाएब-क्रि., देखू—"खोलबाएब"। मै.

खोलाखोली-सं., बारम्बार खोलैक आ बन्हैक क्रम। मै.

खोली-सं., नापक अनुसार ठोस बनाओल आवरण। मै.

खोँसना-सं., खोँसैक वस्तु। भीतरधरि पैसा कए सुरक्षित करैक स्थान। मै.

खोंसब-क्रि., भीतर धरि पहुँचा कय अस्थायी सुरक्षित करब। मै.

खोंसर-विशे., अनका पर अवलम्बित रहनिहार। मन कें चंचल रखनिहार बूढ़। मै.

खोह-सं., गुफा, सोन्हि, सुरंग। मै.

खोहब-क्रि., कोड़ि कय भीतर शुद्ध करब आ पैसब। मै.

खोहर-सं., खोह जकाँ शून्य छेद। मै.

खोहि खोहि कय छूटब-क्रि., देखितैं बिगड़ि उठब। मै.

खौ

खौ-अव्यय, आश्चर्य व्यञ्जक स्वतः बहराएल शब्द (?)। मै.

खौआ-विशे., केवल खयबाक स्वार्थवाला। मै.

खौआबजौआ-विशे., खाइक अवधि धरि बड़ाई करैवाला। मै.

खौंक-विशे., अधिक सँ अधिक लाभ एवम् भोजन चाहैवाला। मै.

खौंका-विशे., विशेष खाइक प्रकृतिवाला। मै.

खौकार-विशे., भरि इच्छा सब किछु खाइवाला माल। मै.

खौंछी-सं., नूआक टुकड़ाक दू खूँट बान्हि क' बनाओल झोरी। मै.

खौंझनि-सं., मानसिक तनाओ। मै.

खौंझब-क्रि., मनै मन उत्तेजित होएब। मै.

खौंझाएब-क्रि., लोक पर मनक उत्तेजना झाड़ब। मै.

खौंझाह-विशे., खौंझाइक प्रकृतिवाला। मै.

खौंझी-सं., खौंझाइक प्रवृत्ति। मै.

खौंडकी-सं., बिना ढेकाक पुरुषक अधोवस्त्र। मै.

खौंत-सं., ज्वाला, ताप। मै.

खौबाढनि-विशे., खाइऐक पाछू सम्पत्ति समाप्त कय लेनिहार। मै.

खौर-सं., क्षौर, मरणाशौचक नह केश कटैक दिन। मै.

खौरछाह-विशे., खयवा मे कुस्वादु। मै.

खौल-सं., आँच सँ द्रवणशील वस्तुक उथल पुथल। मै.

खौलन-सं., द्रवणशील वस्तुक आँच सँ उधियाइक क्रम। मै.

खौलब-क्रि., १. (लाक्षणिक) क्रोधें उधियाएब। २. ताप सँ द्रव वस्तुक उथल पुथल करब। मै.

खौलाएब-क्रि., आँच पर द्रव वस्तु कें उधियाएब। मै.

खौहरि-सं., नगण्य उपद्रवी नेन्नाक समूह। मै.

ग

ग्रन्थ-सं., शास्त्रीय कल्पनामय लेखक पोथी। सं. तत्सम

ग्रह-सं., परोक्ष रुपें सब कें सब पकड़ि रखैवाला ज्योति। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि राहु (प्लूटो), केतु (नेपच्यून) एहि नवो ज्योतिक समूह। सं. तत्सम

ग्रहण-सं., पकड़, सूर्य पर चन्द्रक छाया तथा चन्द्र पर पृथ्वीक छाया पड़ैक प्रकृति। सं. तत्सम

ग्राम्य-सं., गाम मे भेनिहार। देहाती। सं. तत्सम

ग्राम-सं., १. बसती, विशेष नामक बसतीक परिधि। २. आधुनिक तौलक सूक्ष्मतर वाट। अं./सं. तत्सम

ग्रामीण-विशे., गामक लोक। सं. तत्सम

ग्रास-सं., १. ग्रहणक समय सूर्य वा चन्द्रमाक अन्धकार मे लय। (खपि जाएब) २. कऽऽर। ३. मालक चरी। सं. तत्सम

ग्राह-सं., जल जीवनकार, गोहि, मकर। सं. तत्सम

ग्राहक-विशे., १ लेनिहार। २. पेट मे मल के पकड़ि रखनिहार भोज्य पदार्थ। ३. कीननिहार। सं. तत्सम

ग-सं., क वर्गक तृतीय वर्ण, गकार। मै.

ग-सं., संगीतक सातो स्वर मे तेसर स्वर, गान्धार। मै.

गऽऽ-अव्यय, मुसहरनीक वाक्यालंकार। प्रयोग—"हम काहाँ गेलियै गऽऽ।" मै.

गए-अव्यय, अपना सँ छोट स्त्री वर्गक हेतु सम्बोधन। भय, विस्मय आ दुःखक बेरक स्त्री वर्गक उक्तिकसम्बोधन। प्रयोग—"गए दाइ? आ गए दाइ! गए माँ! गए माँ!!।" मै.

गओं-सं., व्यक्तिगत स्वार्थ आ तकर सिद्धिक यत्न। मै.

गओंगीर-विशे., अपना स्वार्थें टा साधैक लक्ष्यवाला। मै.

ग कहैत गराँ हाथ-लोकोक्ति, बिन बात बुझनें किछु कय बैसब तथा व्यक्ति कें दूर करै के अधीर रहब। मै.

गगन-सं., आकास। प्रयोग—"देल छापनील गगन, खेत सघन हरित वरन।" सं. तत्सम/मै.

गगरी-सं., धातु (द्रव्य) क बनल घैल सन छोट जल रखैक पात्र। छोटका माटिक घैल। मै.

गङ्गा-सं., देव नदी, पवित्र एवं प्रसिद्ध भारतीय नदी। मै.

गङ्गाजली-सं., गङ्गाजल रखैक विशिष्ट पात्र। मै.

गङ्गापुत्र-विशे., गङ्गा कातक पण्डा। मै.

गङपरिया-विशे., गङ्गाक कातें कातें बसनिहार। मै.

गङौट-सं., गङ्गाक माटि। मै.

गच्च होएब-क्रि., अत्यन्त तृप्त होएब। मै.

गच्चा खाएब-क्रि., अदूरदर्शिता सँ धोखा खाएब। असावधानी सँ लक्ष्य चूकब। मै.

गच्छ-सं., एकै वंश मे विभिन्न गोटयक अनेक कुल। मै.

गछगर-विशे., १. अंकुरक उपरान्त गाछक रूप मे आएल गाछ। नमहर अंकुर। २. गाछक घनत्व भरल खेत। मै.

गछ चढ़हा-विशे., गाछ चढ़ै मे निपुण। मै.

गछपक्कू-विशे., गाछक पाकल फल। मै.

गछब-क्रि., स्वीकार करब, मानब। मै.

गछाएब-क्रि., १. अंकुरक गाछ सन भऽ जाएब वा गाछ सन लागब। २. स्वीकार कराएब। मै.

गछार-सं., कसिकय बन्धन। मै.

गछारब-क्रि., १. (लाक्षणिक) कोनो विषय मे बाध्य (विवश) करब। २. कसि कय बन्धन देब। मै.

गछाह-विशे., १. गाछ सँ भरल स्थान। २. नमहर रूपक गाछ। मै.

गछिहन-विशे., अत्यधिक गाछें भरल प्रान्त। मै.

गछियौन्ह/गछौन्ही-विशे., गाछ गाछीक अधिकता सँ झाँपल आ अन्धकारमय प्रदेश। मै.

गज्झा-विशे., (गाछ वृक्षक हेतु प्रयोग) अत्यन्त कोमल आ अजोह। मै.

गज-सं., १. कपड़ा नपैक मानदण्ड वा फीता। हाथी। सं. तत्सम

गँजखोर-विशे., गाँजा पीबैक लुतुकवाला। मै.

गजगज करब-क्रि., घन भ' क' देखार वा प्रकाशमान रहब। मै.

गजगजाएब-क्रि., घन रूपें परिपूर्ण बनाएब आ शोभायुक्त राखब। मै.

गजगजाह-विशे., अत्यन्त घूलल रहैक कारणें हीन। मै.

गजगोहि-विशे., स्थूलताक कारणें गोहि जकाँ शिथिल आ पड़ल रहैवाला। मै.

गजड़ा-सं., धानक नार आ खढ़क गूहिकय बीनल पटिया जकाँ बिछाओन आ ओढ़ना। मै.

गजपट-विशे., अव्यवस्थित रूपें अवस्थित। मै.

गजपटाएब-क्रि., परस्पर ओझरा जाएब। मै.

गजपटाह-विशे., विभिन्न जातिक वस्तु परस्पर मिलल। मै

गज पीपरि-सं., बनैया औषध। मै.

गजब-क्रि., १. नम्मा काँट वा ओहेन वस्तु कें कोमल फल विशेष मे भोंकि भोंकि ढील बनाएब। २. मनै मन आनन्द आ गौरव सँ ऐंठब। मै. अव्यय—अनहोनी। उ. तत्सम

गजबज-विशे., अपच विकार सँ पेट मे शब्दक संग अधिक चलैत वायु। मै.

गँजबाह-विशे., गाँज सँ माछ मारै मे चतुर। मै.

गँजबाहि-सं., १. गाँज सँ माछ मारैक प्रक्रिया। २. गाँजा पीबैक लगातार क्रम। मै.

गजमुक्ता-सं., हाथीक मस्तकक मुक्तामणि। मै.

गजर गजर ताकब आ सुनब-क्रि., सूतल बुद्धि जकाँ बिना किछु बौद्धिक संवारक सिवित तकैत वा सुनैत रहब। मै.

गजर बजर-विशे., परस्पर मिलल विभिन्न वस्तु। मै.

गजरा-सं., फूल पत्ती सँ गूहि कय बनाओल माला। मै.

गजहा-विशे., गोभी (नव यौवन प्राप्त) होइक कारणें अत्यन्त अजोह गाछ। मै.

गजाह-सं., निरन्तर गजैक कार्यक्रम। मै.

गजाड़-सं., खढ़पातवाला खेत मे कदोआ करैक लेल खढ़ पात कें सड़वाले जोत पर सँ चौकी सँ पाटब। मै.

गजाड़ब-क्रि., पनियाएल खेत मे खेतक खढ़ पात कें जोति सड़ै लेल खेतै मे गाड़ब। मै.

गजाह-विशे., अत्यन्त अजोह आ कोमल होइक कारणें अनुपयोगी। मै.

गजिया-सं., कम चाकर नाम वेशी झोरी, छोटका बोरिया। मै.

गजुरा-सं., लम्बाकार अंकुरक प्रथम रुप। मै.

गँजेण-विशे., भारी भरकम होइक कारणें अचल। (लाक्षणिक) देह नै चलबैवाला आलसी। मै.

गँजेर-विशे., गाँजा पीबि कय भकुआएल रहैवाला। मै.

गजेरब-क्रि., अनेक भारी वस्तु कें एकै ठाम जमा करब। मै.

गजोहा-विशे., थोड़बै दिनक अजोह गाछ। मै.

गजौठ-विशे., आलसी एवं देहक भारी होइक कारणें अचल पड़ल रहैवाला। मै.

गञ्ज-विशे., असंख्यता सँ भरल विविध प्रकार। प्रयोग—"हाट पर आम रंजक गंज भेटै छै।" मै.

गञ्जन-सं., क्रोध भरल दुर्वाक्य। मै.

गञ्जी-सं., पहिरैक छोट अंगा। मै.

गट्ट द' गीरब-क्रि., १. बिना स्वाद नेनहि कण्ठ सँ नीचाँ उतारि लेब। २. (लाक्षणिक) मान अपमानक विचार नै करब। मै.

गट्टा-सं., हाथ सँ उपर पट्टीवाला अंग। मै.

गट्टी-सं., एक विचार आ व्यवहारक दल। मै.

गट्टर-सं., कसि कय बनाओल सक्कत पोटरी। मै.

गट्ठल-विशे., अत्यन्त कसल। मै.

गट्ठा-सं., पोथी पतरा सभक कसि कय बान्हल बोझ। मै.

गटगट गीड़ब-क्रि., धर्कट जकाँ खाएब, (लाक्षणिक) आनि ग्लानि आ मान अपमान छोड़ि स्वार्थ साधव। मै.

गटाक द'-अव्यय, अविलम्ब कण्ठक नीचाँ कय। मै.

गठनि-सं., देहक सक्कतपन। समितिक आयोजन। मै.

गठब-क्रि., सक्कत कय व्यवस्थित करब। व्यवस्थित रूप देब। मै.

गठरी-सं., छोट मोटरी। मै.

गड्डी-सं., कागजक बान्हल तह। मै.

गड़कब-क्रि., एक रेखा पर घुरमैत चक्र जकाँ चलब। मै.

गड़काएब-क्रि., एक रेखा पर घुरमैत जकाँ गतिशील करब। मै.

गड़काह-विशे., अविच्छिन्न गतिशील करैवाला स्थान। मै.

गड़खै-सं., गड़कि कय खसैवाला खाधि। मै.

गड़गड़-अव्यय, १. एक अव्यक्त शब्द। २. अविच्छिन्न धारा रूपक। मै.

गड़गड़ाएब-क्रि., अविच्छिन्न धारा सँ पतन होएब। मै.

गड़गड़ाहटि-सं., लगातार गड़गड़ ध्वनि। मै.

गड़ब-क्रि., शरीर मे भेंसाएब। भूमि मे अचल भय रहब। मै.

गड़बड़-विशे., बेढंग, अव्यवस्थित रूपें स्थित। मै.

गड़बड़ाएब-क्रि., अव्यवस्थित होएब। बेढंग होएब। अशुद्ध होएब। मै.

गड़बड़ाह-विशे., १. अस्वस्थ। २. अव्यवस्थित। ३. अशुद्ध। मै.

गड़बड़ी-सं., बाधा, अव्यवस्था, भाङठ, सन्देह। मै.

गड़र-सं., न्यों (नीव) जड़ि छानब, काजक प्रारूप करब। मै.

गड़रब-क्रि., गलि गलि खसब। ढील होएब। मै.

गड़ाक द'-अव्यय, लगले, सद्यः विलम्बरहित। मै.

गड़ार-सं., स्थूल शरीरक नामसन कीड़ा। मै.

गड़ाँस-सं., अर्ध चन्द्राकार धारवाला अस्त्र। मै.

गँड़ि खुल्ला-विशे., अर्धनग्न रहैवाला, निर्धन। मै.

गँड़ियोबही-विशे., १. धान आदि फसिलक खेत मे धानक अध डँरेर धरि उठल पानि। २. (लाक्षणिक) कोनो स्वार्थ सिद्धिक हेतु निचैन सँ पसरि कय बैसनिहार। मै.

गँड़ियाएब-क्रि., गड़ि कय बैसब। मै.

गँड़ियाह-विशे., अस्वीकारक हेतु गाँड़ि घुमाकय चलि देनिहार। स्त्री० गँड़ियाहि। मै.

गढ़-सं., किला, दुर्ग, सुरक्षाले उच्च स्थानक आलय। मै.

गढ़गर-विशे., मोट रस (द्रव) वाला। मै.

गढ़नि-सं., अंग रचनाक विन्यास। रचैक कलाकारी। मै.

गढ़निहार-विशे., गढ़ैवाला, रूप दैवाला। मै.

गढब-क्रि., रचब, स्थूल वस्तु कें काटि छाँटि आकार देब, रूप विन्यास करब। मै.

गढ़ा-सं., खाधि। (हि.) गड्ढा। मै.

गढ़ाइ-सं., गढ़ैक बोनि, गढ़ैक कला। मै.

गढ़ाएब-क्रि., १. निर्माण कराएब। २. रस (द्रव) मोट होएब। प्रयोग—"माछक झोर गढ़ाएल बड़ स्वादिष्ट होइ छै।" मै.

गढ़ी-सं., गढ़ जकाँ छोट छीन धनाढ्यक आयल। मै.

गढ़ुआ-विशे., गढ़िकय बनाओल। मै.

गढ़ुआर-विशे., गर्भवती। मै.

गढ़ौआ-विशे., गढ़ि गढ़िकय बनाओल। मै.

गण्डगोल करब-क्रि., सब किछु एकै ठाँ मिला कय राखब। मै.

गण्डयोग-सं., अश्विनी मघा आदि नक्षत्रक कोनो कोनो विशेष अंश मे बच्चाक जन्म गण्डयोग कहबैछ।

अश्वनी मघ मूलादौ त्रिवेद नव नाड़िकाः।
रेवती सार्प शक्रान्ते गण्डयोग इति स्मृतः॥

अर्थात् अश्विनी, मघा आ मूल नक्षत्रक आदि भागक तीन, चारि आ नौ दण्ड एवम् रेवती, आश्लेषा आ ज्येष्ठा नक्षत्रक नौ, चारि आ तीन दण्ड गण्डयोग कहल गेल अछि। एहि मे जन्म दोषावह थिकैक। सं. तत्सम

गण्डा-सं., चारि संख्याक एक मान। मै.

गण्डा-विशे., १. अधलाह, दूषित। प्रयोग—"(बच्चा कें गीत सुनबैक एक अंश) तोर अण्डा गण्डा भेलौ बौआ कें सुता।" २. अत्यन्त शस्त जकरा क्यो कीननिहार नहि। एहि बेर आम ततेक फड़लै जे हाट बाजार मे गण्डा भेल रहै छै। मै.

गण-सं., समूह, एक मतवाला दल। सं. तत्सम

गणक-विशे., १. ज्योतिष शास्त्र जननिहार। २. हिसाबी। सं. तत्सम

गणतन्त्र-सं., सार्वजनिक मतवाला संविधानक राष्ट्र। जनतन्त्र, लोकतन्त्र। सं. तत्सम

गणना-सं., गनती, मान्यता, आदर। सं. तत्सम

गणिका-विशे., नचै गबैवाली वेश्या। सं. तत्सम

गणि खच्चर-विशे., समलैङ्गिक मैथुनक इच्छुक पुरुष। मै.

गणित-सं., हिसाबक शास्त्र। सं. तत्सम

गणि मराओन-विशे., (गारि) पुरुषक संग मैथुन करैवाला पुरुष आ तकर लाभ। मै.

गणि मुड़ाह-विशे., (लाक्षणिक) एक दिश मोट आ एक दिश पातर बोझ। गाणि मूड़ी एकट्ठा कयल। मै.

गणेश-सं., पौराणिक देवता। मै.

गत्तर-सं., शरीर। प्रयोग—"गत्तर गत्तर तोड़ि देब।" मै.

गत्ता-सं., पोथीक रक्षा हेतु कठोर पट्टी। प्रयोग—"भुसकौल विद्यार्थीक गत्ता मोट।" मै.

गत्ती-सं., कठोर पदार्थक बान्हल भिन्डी। मै.

गत्र-सं., शरीर, गात्र। प्रयोग—"गत्र भाङि देब।" सं. तद्भव

गतगर-विशे., सक्कत, बलगर। मै.

गताखोर-सं., बेर पर धोखा। उपकारक विश्वास मे अपकार। मै.

गतात-सं., सहयोगक, सहायक, द्वारा, स्रोत। प्रयोग—"अनेक गतातें आइ काल्हि नौकरी संभव रहै छै।" मै.

गतान-सं., सक्कत करब। सोझकय तानब। मै.

गतानब-क्रि., कड़ा कय कें तानब। मै.

गतायात-सं., जाइ अबैक व्यवहार। मै.

गति-सं., चालि, गमन, पाप सँ उद्धार। मै.

गति गरास करब-क्रि., विविध चेष्टा कय समय खेपब। मै.

गतियाएब-क्रि., कसिकय बान्हब, गूहब। मै.

गँथाएब-क्रि., ककरी सँ माला आदि गुहाएब। मै.

गद्द-विशे., अघाएल। मै.

गद्दरि-सं., भदै धानक प्रभेद। मै.

गद्दा-सं., तूर भरल मोट बिछाओन। मै.

गद्दारासी-स., मुक्का मारि खेल करैक शब्दक एक अंश। प्रयोग—"गदा रे गुइँ गुइँ मार गदा पुइँ पुइँ गद्दारासी बनके बासी बोल गदा कै?" मै.

गद्दी-सं., १. तूर भरल छोट बिछाओन। २. राज सिंहासन। मै.

गद-विशे., मोट। प्रयोग—"मोटाकय गद भेल छथि।" मै.

गदकीचनि-विशे., अनेक वस्तुक संग पानि मिलने लोकक संचार सँ असर्ध बनल। थाल पानि सँ दूषित। मै.

गदगद-विशे., भीतरैं भीतर आनन्द सँ भरल। सं. तत्सम

गदगर-विशे., मोट कयल। मै.

गदगरल-विशे., अघाएल। मै.

गद पर गद-सं., नीक वस्तुक भोजनक निरन्तर क्रम। अघान पर अघान। मै.

गदमिसान-सं., भिन्न भिन्न अनेक प्रकार एक संग जोर सँ शब्दक गति। मै.

गँदलाह-विशे., गादि मिलल पानि आ तेल। मै

गदह पचीसी-सं., पचीस वर्षक उमेर धरि बिना सोचने विचारने करैक जुआनी। मै.

गदह पुरैन -सं., पुनर्नवा, पुनानय। (लाल रंगक) मै.

गदहा-सं., घोड़ा जातिक मन्द पशु विशेष। मै.

गदहिया-विशे., १. गदहा पर लादि कय वस्तुक फेरी कयनिहार। २. घुमक्कड़ अर्थात् घर आश्रम संग नेने घूमैत रहैवाला जनजाति। मै.

गदा-सं., गोल डन्टावाला भारी द्रव्यक प्राचीन अस्त्र विशेष। सं. तत्सम

गदा रे गुइँ गुइँ-अव्यय, खेल विशेष। देखू—"गद्दारासी" मै.

गदाल-विशे., अत्यन्त घनहन बस्ती। मै.

गदाल करब-क्रि., जोर सँ सोर करब। मै.

गदियाएब-क्रि., बाँसक बाती सँ असार गुद्दा बहार करब, छोड़ाएब। मै.

गदुल गाँणि-विशे., अधिक मोटाएल रहैक कारणें उठै बैसै मे असमर्थ। मै.

गदूल-विशे., अत्यन्त स्थूल शरीरवाला। मै.

गदेला-सं., पुरान कपड़ा तहें तहें बिछाकय घनगर सीयल बिछाओन। मै.

गदौस-सं., भारि बहारि कय जमा कयल कूड़ा करकच। मै.

गन्दगी-सं., करकच, असर्ध वस्तुक समूह। मै.

गन्दा-विशे., घिनाओन। मै.

गन्ध-सं., महक। सं. तत्सम

गन्धक-सं., विस्फोटक रसायन द्रव्य। सं. तत्सम

गन्ह-सं., दूषित गन्ध। मै.

गन्हकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

गन्हकाएब-क्रि., दुर्गन्ध पसारब। मै.

गन्हकी-सं., गन्ध भरल भारी विशेष। मै.

गन्हकौआ-विशे., दुर्गन्ध पसारैवाला। मै.

गन्हाएब-क्रि., १. दुर्गन्ध भरि जाएब। २. (लाक्षणिक) उपेक्षित रहब। मै.

गन-सं., (निन्दा मे) महादेवक जेर। मै.

गनगन-सं., अस्पष्ट सम्मिलित ध्वनि। मै.

गनगनाएब-क्रि., १. अस्पष्ट सम्मिलित ध्वनि होएब। २. तरैं तर बात पसरि जाएब। मै.

गनगनी-सं., मधुमाछी सभक ध्वनि। मै.

गनगोआरि-सं., असंख्य सूक्ष्मटांगवाला सरीसृप। इन्द्रगोप। मै.

गनती-सं., गनैक क्रम, गणना। मै.

गन पसारनि-सं., जड़ी विशेष। मै.

गनब-क्रि., क्रमिक संख्याक अवधारणा करब। मै.

गनाएब-क्रि., १. क्रमशः गनैक अभ्यास कराएब। २. कोनो विशेष कारणें निश्चित राशि लेब। मै.

गनिआरि-सं., बूटी विशेष। (औषध) मै.

गनौआ-विशे., १. गनवैवाला। २. गनि कय भेटल। मै.

गनौर-विशे., अभेला सँ घृणित आ असर्ध भेल वस्तु। मै.

गप्प-सं., परस्पर संभाषण, वार्तालाप। मै.

गप्पी-विशे., अधिक गप्प करैवाला, फूसियो बात गढ़ि गढ़ि कहैवाला। मै.

गप्फा-सं., दू आङुरक बीचवाला दोग। मै.

गप्फी-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी मोड़िकय बनाओल फाँकवाला शून्य मान। मै.

गपक्कड़-विशे., अधिक गप्प गढ़ैवाला। मै.

गपचब-क्रि., चुपचाप वस्तु नुका लेब। मै.

गपोड़ शंख-विशे., सम्बन्धहीन गप गढ़ि अपने बात पर अपनैं हसनिहार बूड़ि। देखू—"ठहक्का"। मै.

गफलती-सं., प्रमाद, असावधानी। मै.

गब्बर गब्बर-अव्यय, सुनलो बात पर बिना विलोड़नक बुद्धिवालाक केवल मुह तकैत रहैक भाव। मै.

गबभा-विशे., बीजक गर्भ सँ बहराएल मात्र अकुर। मै.
गब-सं., धानक खेत मे गाड़ल एक एक बीज। मै.
गबछब-क्रि., गर्भ राखब, गर्भ देखार होएब। मै.
गबदी मारब-क्रि., नै सुनैक ढंग कय सबटा सुनैत सूतल लोक जकां रहब। मै.
गब लेब-क्रि., प्रथम प्रथम धानक बीआ गाड़ब। मै.
गबहा-सं., धानक गाछ मे गर्भ जकां बहराएल सीसक सिरखार। मै.
गबाई-सं., गबैक क्रिया, गबैक उपक्रम। मै.
गबाछ-सं., दू वस्तुक पारदर्शी दरारि। गवाक्ष। सं. तद्भव
गबाह-विशे., प्रत्यक्षदर्शी, साक्षी, साक्ष्य। उ. तत्सम
गबाही-सं., प्रत्यक्ष घटनाक उद्घाटन, प्रकाशन। मै.
गबैया-विशे., संगीत कला विशेषज्ञ। मै.
गभ-सं., बच्चादानी, गर्भ। सं. तद्भव
गभा-विशे., बातक गर्भ मे स्थित कोनो फसिलक फूल वा सीस। मै.
गभा संक्रान्ति-सं., सूर्य्यक तूल राशि मे संक्रमण, जाहि दिन मिथिला मे धानक गभालय सीरा आगू राखि लक्ष्मीक आवाहन कयल जाइत अछि। मै.
गभिनाएब-क्रि., १. कोनो जीवक गर्भ धारण कयने रहब। २. (लाक्षणिक) कोनो बात कें स्पष्ट नै कय व्यर्थ भारी बनौने रहब। मै.
गभिनाह-विशे., अनेर बात कें स्पष्ट नै कय भारी बनौने रहनिहार। मै.
गम्भीर/गम्हीर-विशे., स्थिरता सँ विचारशील। धीर बुद्धि। सं. तत्सम
गम्हरा-सं., घोघ मे आएल धानक सीस। मै.
गम्हरी-स., गाछक घोघै मे पकैवाला भदैया धान। मै.
गम-सं., धारणा, बोध, ज्ञान। प्रयोग-"हिनका खेती करैक कोनो गम नै छनि।" मै.
गमइ-विशे., गाम घर मे होमवाला विषय, रूप वातावरण आ भावना। मै.
गमक-सं., सुखद गन्ध, सुगन्धि। मै
गमकब-क्रि., सुवास होएब, सुगन्धि छोड़ब। मै.
गमकाएब-क्रि., चारू दिश सुवासित करब। मै.
गम खाएब-क्रि., शान्त होएब। मन्द पड़ब। मै.
गमगम करब-क्रि., १. सगरे सौरभ भरब। २. ताप होएब। मै.
गमगमाएब-क्रि., १. सगरे सुगन्धि पसारब। २. देह सँ ज्वरक पूर्व रूप मे ताप फेंकब। मै.
गमगमी-सं., १. देहक ताप। २. सुगन्धि। मै.
गमछा-सं., देह पोछैक वस्त्र। मै.
गमन-सं., जाइक क्रिया, गतिक वेग। मै.
गमनिहार-विशे., परीक्षा केनिहार। जँचनिहार। मै.
गमब-क्रि., थाहब, परीक्षा करब, हल्लुक बूझब। मै.
गमरपन-सं., ग्राम्य स्वभाव। छक्का पंजा नै बूझब। मै.
गमला-सं., फूल पत्ती लगबैक माटिक विशेष वासन। मै.
गमाएब-क्रि., नष्ट करब, खरच करब, समाप्त करब। मै.
गमागम-सं., तीव्र सुगन्धि। मै.
गय !-अव्यय, अनादरक सम्बोधन। मै.
गया-सं., पितरक तीर्थ विशेष। मै.
गयारी-विशे., गया तीर्थ कयनिहारक सामाजिक प्रतिष्ठाले कर्त्तव्य। मै.
गर्ज-सं., १. स्वार्थ (उ.)। २. मेघक शब्द। सं. तत्सम
गर्जन-सं., विकट, अत्यन्त गम्भीर आ जोरदार शब्द। सं. तत्सम
गर्जब-क्रि., १. जोर सँ शब्द करब। २. सोर पाड़ब। मै.
गर्जागर्जी-सं., क्रोध सँ परस्पर उच्च स्वरें कथोपकथन। मै
गर्त-सं., अगम खाधि। मै.
गर्द-विशे., सभक जानकारी मे पहुँचल प्रवाद। मै.
गर्दमगोल-सं., चारू भर गर्दाक सघन भ' क' उड़ैक द्वारें दूषित वातावरण। मै.
गर्दा-सं., धूरा, धूलि। सं तत्सम/मै.
गर्भ-सं., बच्चादानी मे पालल जाइत बच्चा। मै.
गर्म-सं., एवं विशे., ताप आ ताप भरल। मै.
गर्रा देब-क्रि., (लाक्षणिक) स्वार्थसिद्धि पर्यन्त खुशामद करैत धरना देब। मै.

गर्व-सं., गौरव, अहंकार। सं. तत्सम

गऽर-सं., उचित ढंगक स्थिति। प्रयोग—"बौआ कें कत्तौ नीक नोकरीक गऽर धऽ लेनि।" मै.

गऽऽर-सं., खेतक सजीव घास। मै.

गर-सं., १. कण्ठ, श्वास नली आ स्वर नली। प्रयोग—"चिकरैत चिकरैत हमर गर बाझि गेल।" २. संज्ञा सँ विशेषण बनबैक लेल अधिकता बोधक मैथिली प्रत्यय। प्रयोग—"नोनगर, तेलगर, बोधगर, बलगर आदि। मै.

गरकूट कय मारब-क्रि., निर्दय भेल खूब मारब। मै.

गरगट-विशे., कठिन, बलाय। प्रयोग—"जँ क्यो टकटक तकैत रहय तँ खाएब गरगट बूझि पड़ै छै।" मै.

गरगोटिया-सं., कण्ठ पर हाथ ध' क' भगाएब। मै.

गरचुन्नी-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

गरज-सं., स्वार्थ। उ. तत्सम

गरजांतब-क्रि., स्वर कें दाबि कय बाजब। मै.

गरजू-विशे., स्वार्थी। मै.

गरजें बाबू जन लिअऽ-(लोकोक्ति) अपन स्वार्थ ले ककरो कोनो काज करैक प्रवृत्ति। मै.

गरड़-सं., पेनी छानब, कोनो निर्माणक प्रारूप। मै.

गरदनि-सं., कण्ठक पाछू दिशक भाग। मै.

गरदनियाँ देब-विशे., गर्दनि पर हाथ ध' क' बैला-एब। मै.

गरदामी-सं., श्रृङ्गार रूपें देल मालक गर्दनि मे डोरी। मै.

गरबन्हन-सं., सँपकट्टा कें मन्त्र सँ झारैक काल अभिमन्त्रित माटि सँ सुरक्षा हेतु चारू दिश घेरा बनाएब। मै.

गरभ आन्हर-विशे., १. गर्भें सँ आन्हर बच्चा। २. गर्भें सँ पितृहीन भेल बच्चा। मै.

गऽऽर मरब-क्रि., रौदक द्वारें घास सुखाएब अर्थात् जोतल खेतक हरिहर जंगलक मरब। मै.

गऽऽरमरू-विशे., सुखाएल घासवाला खेत। मै.

गरमाएब-क्रि., १. गरम करब। २. गरम होएब। ३. (लाक्षणिक) तमसाएब। मै.

गरमागरम-विशे., गरमाएल स्थितिवाला। मै.

गरमी-सं., ताप, औल, उसम। मै.

गरमौआ-विशे., गरम कयल। मै.

गरय-सं., घरक ऊँचाइ आ तकर उतार (ढार) क सन्तुलन। मै.

गरयगर-विशे., अधिक खड़ाइक घर। मै.

गरसामूर देब-क्रि., अपन स्वार्थ सिद्धि ले दृष्टि गड़ौने गर्दनि नमड़ौने धरना देब। मै.

गरसौं-सं., गर्दनि पर्य्यन्तक स्थिति। मै.

गरहत्था-सं., गर्दनि पर हाथ राखि हटबैक चेष्टा। मै.

गरहाज-विशे., ग्रहण करैक योग्य। ग्राह्य। सं. तद्भव

गराँ-सं., कण्ठक सँसरी। प्रयोग—"गराँ पड़ल ढोल बजबैक पड़य। मै.

गराएब-क्रि., चुबाएब, निचोड़ि कय जल आदि खसाएब। मै.

गराँ कुड़हरि बान्हब-क्रि., (लाक्षणिक) विवश भय अधीनता मानि दयनीय बनब। मै.

गरा गरोबलि-सं., परस्पर निषिद्ध गारि पर गारि देब। मै.

गराँघेघ बनब-क्रि., (लाक्षणिक) जे ने छोड़ैत बनय एहन जिम्मेदारी होएब। मै.

गराप द'-अव्यय, तुरन्त, फट्ट द', सद्यः। मै.

गरामित-विशे., एक गाम, जाति आ व्यवहारक लोक। मै.

गरारा-सं., कुमारि कन्याक पहिरना विशेष। मै.

गराँ लागब-क्रि., कण्ठ सँ अन्न पानि अड़ि अड़ि कय पेट मे जाएब। मै.

गरास-सं., १. ग्रास, कऽऽर (सं. तद्भव)। २. विचित्र प्रकारक चेष्टा। मै.

गरिमा-सं., महत्ता, प्रतिष्ठा, उच्चता। सं. तत्सम

गरियाएब-क्रि., अश्लील बातें सम्बोधित करब। मै.

गरिष्ठ-विशे., विलम्ब सँ पचैवाला अन्न। सं. तत्सम

गरी-सं., नारिकेरक सुखाएल गुद्दा। मै.

गरुहन-सं., पानियो मे नैं गलैवाला अन्न, गरिष्ठ। मै.

गरू-सं., संकट, आपत्ति। मै.

गरुड़-सं., विष्णुक वाहन, पैंघ पक्षी विशेष। मै.

गरेरि/गरोरिया-विशे., भेड़िहर, भेड़ा पोसि ऊनक व्यवसायी। मै

गरै-सं., माछ विशेष। मै.
गरौंसब-क्रि., गर्दनि सँ लगौने रहब। मै.
गल्प-सं., अपना सम्बन्धक छोट छोट कथाक कल्पना करब। सं. तत्सम
गल्ला-सं., १. बनियाक रुपैया रखैक वासन। २. कण्ठक स्वर यन्त्र। मै.
गल्ली-सं., टोल परोसक घरक संकीर्ण वाट। मै.
गलकट्टी-सं., यथार्थ दोष कें भँपैक हेतु तर्क दय दय बात कटैक चेष्टा। मै.
गलकट-विशे., दुष्ट बुद्धिक द्वारें हानि पहुँचौनिहार। गर्दनि कटनिहार। मै.
गलकट्टी-सं., युक्ति सँ बात कें कटैक प्रयास। मै.
गलगल-अव्यय, कण्ठक सरस रहला सँ विशेष अव्यक्त ध्वनि। नहूँ नहूँ बहुत लोकक अव्यक्त ध्वनि। मै.
गलगलाएब-क्रि., १. कण्ठ मे जल राखि ध्वनि करब। २. नेन्ना वा पक्षीक अव्यक्त ध्वनि करब। मै.
गलगरि-विशे., (लाक्षणिक) बातक बलें अपन दोष कें नें देखार होम' देनिहारि। मै.
गलगुल-सं., लोकक बर्जक ध्वनि। मै.
गलजौड़-विशे., माल जाल कें गराँ मे बन्हैवाला डोरी। मै.
गलञ्जर-सं., निर्मूल बातक प्रचार। बिना जड़िक प्रवाद। मै.
गलता-सं., काठ कें गोल करैवाला रन्ना। मै.
गलती-सं., अशुद्धि, दोष, घट्टी, अपराध। मै.
गलथलाएब-क्रि., पानि मे धानक केवल फुनगी उगल रहब। मै.
गलथोंथी-सं., (लाक्षणिक) विषयक कल्पना कय बात गढ़ब। अपन कल्पना सँ सिद्ध करब। मै.
गलनमा-विशे., शीघ्र गलैवाला पदार्थ। मै.
गलना-विशे., स्वतः गलि जाइवाला। मै.
गलफर-सं., गालक भीतरक अंग। मै.
गलफुल्ली-सं., गाल सँ कनपट्टी आ कण्ठधरि फूलि जाइवाला रोग। मै.
गलफुल्लू-विशे., (लाक्षणिक) आँच पर आधा सिद्ध चाउर। मै.
गलब-क्रि., १. क्रमिक बिलीन होएब। २. द्रवित होएब। तत्त्वहीन भ' क' झरब। क्षीण होएब। मै.
गलबाहि-सं., मालक पाउज। मै.
गलबांही-सं., परस्पर गर्दनि पर बाँहि रखैक मुद्रा। मै.
गलबैया-विशे., गलबैवाला। मै.
गलमोचनी-सं., पाँजर तरक छोटका गेरुआ। मै.
गलमोछ-सं., गाल धरि बढ़ाकय बनाओल मोछ। मै.
गलाएब-क्रि., ठोस वस्तु कें द्रव बनाएब, सड़ाएब। मै.
गलियाएब-क्रि., गाल तर ल' क' चिबाएब। मै.
गलियारी-सं., गली जकाँ बनल संकीर्ण वाट। मै.
गलीज-विशे., माटि पानि आ मल गदौस सँ बनल घिनाओन। मै.
गलैचा-सं., विशिष्ट रूपक कोमल बिछाओन। उ. तद्भव
गलोठब-क्रि., गाल तर भरि क' राखि खाएब। मै.
गलोठी-विशे., गाल तर राखि कय खाइक जोग। मै.
गलोधब-क्रि., गराँ सँ माथधरि कपड़ा लपेटब। मै.
गलोधी-सं., गराँ सँ माथधरि लपेटल कपड़ा। मै.
गलौआ/गलौना-विशे., कोनो वस्तु कें गलबैवाला। मै.
गवाइ-सं., गवैक व्यापार। मै.
गस्सब-क्रि., आपस मे सघन भ' क' कठोर बनब। मै.
गसल-विशे., परस्पर अत्यन्त सघन। मै.
गंह-सं., दोग, सूक्ष्मतम अवकाश। मै.
गहगट-अव्यय, सुन्दर वस्तुक अधिकता। परिपूर्ण। मै.
गहगर-विशे., अधिक गह सँ भरल। मै.
गहड़ि-सं., लूरि सीखैक उत्कण्ठा। मै.
गहदाएब-क्रि., गौरव सँ अनठाएब। अभेला सँ ध्यान नें देब। मै.
गहन-सं., १. ग्रहण अर्थात् सूर्य चन्द्रमा कें राहुक ग्रास करब। २. सगन घनघोर जंगल। सं. तद्भव
गहनतोड़-विशे., गहना तोड़िकय बनल गहना। मै.
गहनमरू-विशे., गहन लगला सँ दुष्प्रभाववाला। मै.
गहना-सं., देह सजबैक अलंकार, भूषण। मै.
गहना गुरिया-सं., अलंकार आदि देहक प्रसाधन। मै.

गहब-क्रि., १. भक्ति सँ सेवा करब। २. कसिकय भूर मुनब आ भरब। मै.

गहबर-सं., लोक देवताक सामान्य पवित्र स्थल। मै.

गहमागहमी-सं., व्यग्रता भरल कौतूहल आ उत्कण्ठा। मै.

गँहराएब-क्रि., क्रमशः गम्भीरता प्राप्त करैत जाएब। मै.

गहलहा-विशे., कसिकय पकड़लवाला आ मूनलवाला। मै.

गहाइ-सं., गहैक मूल्य। मै.

गहाएब-क्रि., कसिकय धराएब आ मुनाएब। मै.

गहिंकी-विशे., कीननिहार। ग्राहक। मै.

गहिरका-विशे., गहींरवाला। मै.

गहींर-विशे., गम्भीर, अथाह, अधिक नीचाँ। मै.

गहुआ-सं., दू आङुरक बीचक स्थान वा एहने कोनो पकड़ैक साधन। मै.

गहुमन-सं., काल सर्प, भयंकर साँप। मै.

गहुमा रंग-विशे., लाली मिलल गोराइ। मै.

गहुम-सं., चैती अन्न विशेष। मै.

गऽ है !-अव्यय, काकु ध्वनि सँ उपेक्षा उपहास आदि व्यञ्जक सम्बोधन। मै.

गा

गाँ-सं., गाम। प्रयोग-"ओ तँ गाँ गेला। मै.

गाँओ-सं., गाम। मै.

गाइ-सं., गाय, गोजाति। मै.

गाइनि-विशे., गबैवाली स्त्री। मै.

गाउज-सं., मुह सँ बेसम्हार फेन भरल बहराएल थूक। मै.

गाँउज-सं., पकैयौक समय मे बिना सीसक हरियर डाँटक फसिलक गाछ। मै.

गाउन-सं., वकील सब कें पहिरैक कारी भूल। अ. तत्सम

गाएब-क्रि., गान करब। गीतक ध्वनि देब। मै.

गागर-सं., १. घैल। २. द्रव्यक पैघ जलपात्र विशेष। ३. विशिष्ट माछ। मै.

गाछ-सं., वृक्ष। मै.

गाछी-सं., गाछक समूह। मै.

गाँज-सं., माछ मारैक साधन। बाँसक पातर कामिक टेढ़सन घपोली एक दिश कामि समेटि कय मुह बान्हल आ एक दिश छित नाल मुहवाला अस्त्र। मै.

गाँजब-क्रि. कँटाह वस्तु सँ कोनो फल आदि मे छेद कय कय कोमल (ढील) बनाएब। मै.

गाजर-सं., मूर जातिक कन्द विशेष। मै.

गाजर बीजर-विशे., परस्पर मिलल अनेक भिन्न प्रकारक वस्तु। मै.

गाँजा-सं., जट्टावाला भाङ जकर धूम्रपान कयल जाइत अछि। मै.

गाँजुर-सं., बीज सँ सूत जकाँ बहराएल अंकुर। मै.

गाँझी-सं., बनैया झारीवाला वनस्पति। मै.

गाटर-सं., लोहक बड़का बड़का धरनि। मै.

गाँठ-सं., कसिकय देल गेंठ (बन्हन)। मै.

गाड़-सं., गाड़ैक प्रमाण दरीक मान। मै.

गाँड़-सं., माटिक बनैवाला कोठी आ मोड़ा सर्वहिक बैसैबाक बनल पेनी। मै.

गाड़नि-सं., गाड़ैक क्रम एवं मान। मै.

गाड़ा-सं., ईंटा आदि जोड़ैक हेतु पानि मे घुलाओल माटि वा सुर्खी आदि। गिलेबा। मै.

गाड़ीवान-विशे., बैलगाड़ी हँकैवाला। मै.

गाढ़-विशे., १. भावनात्मक गम्भीर, कोनो विषय कें मन मे गुप्त रखैवाला। २. मोट कयल झोर। मै.

गाण-सं., १. कोठी आदि कें भूमि सँ ऊँच कय रखैक लेल देल पेनीक नापक अनुसार ऊँच कय बनाओल वस्तु। मै.

गाणि-सं., मलवाही स्रोत अर्थात् मल त्यागैक एक कर्मेन्द्रिय। मै.

गाणू-विशे., मलमार्ग मे मैथुन करबैवाला। मै.

गात्र-सं., शरीर। सं. तत्सम

गात-सं., देह। सं. तद्भव

गाँती-सं., माथ समेत शरीर कें झँपैक लेल जाड़ सँ बचयवाले गरदनि मे बान्हल वस्त्र। मै.

गाँथगूथ-सं., कोनो वस्तु गँथैक निरन्तर क्रम। मै.

गाँथनि-सं., गँथैक काज, गँथैक कला। मै.

गाँथब-क्रि., फूल वा दानाक बीचक छेद मे वा छेद कय ताग पैसा कय गूहब। मै.

गाथा-सं., कीर्तिमय सरस कथा। मै.

गाद-सं., जल आ आनो द्रव पदार्थ मे नीचाँ जमल मैल । पोखरि इनार दृष्टान्त । मै.

गादि-सं., १. द्रव पदार्थक नीचाँ जमल मैल । २. बाँसक भीतरक असार गुद्दा । मै.

गाध-सं., थाह, गम्भीरताक अवधि, तलक स्पर्श । सं. तत्सम

गान्धार-सं., संगीतक मूल सातो स्वर मे तेसर स्वर (ग) । सं. तत्सम

गान-सं., गीतक लय वद्ध स्वर । सं. तत्सम

गाना-सं., गीत । स्थायी अन्तरा आ सम एहि तीनूक मिश्रण । मध्यम स्वर पर चलैवाला स्थायी कहवैछ, आरोह अवरोहक क्रमें घूमैत स्थायी पर अवैवाला अन्तरा थीक आ नियत तालक शून्य मात्रा पर अन्तरा कें स्थायी सँ मिलवैवाला सम कहवैछ । एहि सभक क्रम स्वर प्रकाशन गाना थीक । हि. तत्सम

गाब-सं., बासि दूध वा मथल दूध सँ जमल नेनु अर्थात् माखन । मै.

गाबीस-सं., तेलियाह वा चिक्कन माटि । मै.

गाभ राखब-क्रि., गर्भ धारण करब । मै.

गाभिन-विशे., (माल जालक हेतु) गर्भवती । मै.

गाम-सं., निश्चित परिधिक बसती । सं. तद्भव

गाय-सं., गैँ जाति । मै.

गायक-विशे., गबैया । सं. तत्सम

गायत्री-सं., देवी, शक्ति, मन्त्र सँ जागलि ब्राह्मी शक्ति । सं. तत्सम

गायब-विशे., विलीन, अलोपित । उ. तत्सम

गार्त-विशे., अधोगत, दुखस्था मे पड़ल । मै.

गारत-सं., राजकीय प्रहरीक संरक्षण । 'गारद । उ. तद्भव

गारब-क्रि., निचोड़ब, जल चुबाएब । मै.

गारा-सं., आम आ बेल आदि फलक गुद्दा कें मथिकय बनल पातर रस । मै.

गारा गरौअलि-सं., एक दोसरा पर असभ्य अपमानजनक शब्दक प्रयोग । मै.

गारागारी-सं., परस्पर अश्लील बातें वाग्युद्ध । मै.

गारि-सं., अश्लील सम्बन्धक, अपमानजनक आ असभ्यतापूर्ण ग्राम्य शब्दक प्रयोग । मै.

गाल-सं., ओठक दूनू कातक पसरल कोमल अंग । कपोल । आवेश सँ चुम्बन स्थान । मै.

गाल करब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बात बनाकय मुख्य बात कें नहि पकड़' देब । मै.

गाल नै लागय देब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात कें कत्तौ फेंकि प्रधान बात कें प्रमाणित नै होम'देब । मै.

गाल फुलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) रुष्टता प्रकट करब । मै.

गाल बजाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बाजिकय अपन महत्त्व जनाएब आ अपन वैयक्तिक त्रुटि कें झाँपब । मै.

गाल लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपना सँ मुहाँमुही हँसी ठट्ठा आ कठवाद कय छोटो कें बढ़ाबादय धाख मेटाएब । मै.

गाँसी-सं., हर सँ उखड़ल फार कें नासक संग डोरी वा तारक गसल बन्हन । मै.

गाहकि-विशे., कीननिहार । मै.

गाहब-क्रि., गम्भीरता सँ विचारक थाह लेब । मै.

गाही-सं., पाँच संख्याक एक मान । मै.

गाहे बेगाहे-अव्यय, कदाचित्, कखनो आ समय कुसमय । मै.

गि

गिजगिज-विशे., अनेक असर्ध वस्तुक एकट्ठा सँ आर्दता भरल घिनाओन । मै.

गिजगिजाइन-विशे., अत्यन्त घिनाओन । मै.

गिजटाह-विशे., घिनाओन बनल । मै.

गिजबिज होएब-क्रि., अनेक वस्तुक एकठाँ मिलल रहला सँ फरिछऽबै मे कठिन होएब । मै.

गिट्टी-सं., ईंटा पाथरक छोट छोट टुकड़ी । मै.

गिट्टी फोड़ब-क्रि., १. पाथरक टुकड़ी करब । २. (लाक्षणिक) कठोर शरीर श्रम करब । मै.

गिठ्ठह-सं., छोट सक्कत गीरह । मै.

गिटपिट करब-क्रि., वासना मूलक चेष्टा करब । मै.

गिटार-सं., संगीतक बाजाक प्रभेद । सितार । मै.

गितगंजन-सं., (लाक्षणिक) प्रत्यक्षतः मधुर वचन आ सम्बेदन मे कटुता । कर्त्तव्यक बीच मे उपस्थित संघर्ष । मै.

गितगाइन-विशे., गीत गबै मे अगुआ महिला । मै.

गितहारि-विशे., अधिक गीत जनैवाली आ गबैवाली स्त्री । मै.

गिट्टी-विशे., अत्यन्त शस्त विक्रयक वस्तु। मै.
गिद्ध-सं., शवक मांस भक्षी बड़का पक्षी। मै.
गिद्धा गुड़कान-सं., सिद्ध चोरक केहनो भारी वस्तु चोराकय उठौने गिद्ध जकाँ गुड़कि पड़ाइक प्रक्रिया। मै.
गिदगिदाइन-विशे., आर्द्रताक द्वारेँ घृणास्पद। मै.
गिदरनोच-विशे., (लाक्षणिक) अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त यत्तऽ तत्तऽ क्षीण कयल। मै.
गिदरभौकी-सं., (लाक्षणिक) गीदड़ जकाँ बाम दहिन भौकी काटि धोखा दय पलायन। मै.
गिदरमारा-विशे., गीदड़ो मारिकय खाइवाला घुमक्कड़ जातिक लोक। मै.
गिदराह-सं., गीदड़ जकाँ देखँ मे कुरूप। मै.
गिरगिरी भरब-क्रि., गबैया सभक तानक अभ्यासक क्रम मे कण्ठक स्वर मे थरथरी आनब। मै.
गिरब-क्रि., खसब। हि. तत्सम
गिरमहार-सं., ग्रैवेयक, गराँक बहुमूल्य हार (अं.) नेकलेस। मै.
गिरमिट-सं., काठ आ लोह मे छेद करँ लेल पेंच-वाला अस्त्र। मै.
गिरहत-विशे., गृहस्थ, कृषिकर। सं. तद्भव
गिरि-सं., पहाड़। सं. तत्सम
गिरिजन-सं., पहाड़ी जाति, आदिवासी। सं. तत्सम
गिल्लट-सं., हल्लुक धातु विशेष। मै.
गिलगर-विशे., पानि मे अधिक घुलाओल। मै.
गिलटी-सं., शरीरक ग्रन्थि (कोशिका) क फूलब। मै.
गिलटौआ-विशे., गिलटक बनाओल वर्त्तन। मै.
गिलाओन-विशे., अधिक पातर घुलाओल सानल। मै.
गिलास-सं., ग्लास, नमगर फैल मुहवाला छोट जलपात्र। अं. तद्भव
गिलेबा-सं., देवाल जोड़ैक मसाला। मै.
गिलौंछ-विशे., गीलसन लगैवाला। मै.

गी

गींजब-क्रि., हाथ सँ अधिक व्यर्थ मथब। मै.
गींजागिजी-सं., अनेर अधिक ओलि पालि करब। व्यर्थ बारम्बार छूअब। मै.
गीत-सं., गान। सं. तत्सम
गीदड़-सं., शृगाल, बनैया जीव। मै.
गीध-सं., देखू—"गिद्ध"। मै.
गींरब-क्रि., कण्ठ सँ नीचाँ उतारब। मै.
गीरह-सं., १. आङुर आ बाँसक पोर। २. कपड़ा आ डोरी सभक ग्रन्थि। मै.
गील-विशे., ढील कय कँ पानि मे घोरल। मै.
गीलाखीसा-सं., निन्दापूर्वक ककरो कथा। मै.

गु

गुइँ गुइँ उठब-क्रि., मुक्का मारैक ध्वनि होएब। मै.
गुइँ गुइँ करब-क्रि., गुङआएब। बौकक अस्पष्ट ध्वनि। मै.
गुँकार-सं., "गुँ" एहन शब्द। मै.
गुग्गुल-सं., सुगन्धवाला धूपक पदार्थ। मै.
गुङआएब-क्रि., गूँ गूँ एहि प्रकारक ध्वनि करब। प्रयोग—"बाँस काटए ठाँइ ठाँइ नदी गुङआय। मै.
गुच्छा-सं., घन भ' क' लटकल आ फड़ सँ भरल नाल (डंटी)। मै.
गुज्जी-सं., कानक भितरका मैली। मै.
गुजगुज करब-क्रि., अत्यन्त नरम बुझा पड़ब। मै.
गुजगुजाह-विशे., नरमीक कारणेँ दबला पर दबि आ फेर फलकि जाइवाला। मै.
गुजर-सं., निर्वाह। गुजारा। उ. तद्भव/मै.
गुजरब-क्रि., १. निर्वाह करब। २. बाट धैने जाएब। ३. भ्रमण करब आ टहलब। ४. आम मे मोजरक सिरखार होएब। प्रयोग-"माघ गुजरे फागुन मोजरे।" मै.
गुञ्ज-सं., घन, पातर आ मधुर शब्द। मै.
गुञ्जा-सं., करजनी। बनैया लत्तीक लाल सूक्ष्म फड़। सं. तत्सम
गुञ्जार-सं., भ्रमर आ मधुमाछी आदिक शब्द। मै.
गुट-सं., दल। मै.
गुटका-सं., छोट आकार प्रकारक पोथी। सं. तत्सम
गुटबन्दी-सं., दलबन्ही, लोक कँ अपन दल मे अनैक चेष्टा। मै.
गुठरी-सं., १. सानल वस्तुक मुट्ठी सँ बनाओल ढेप जकाँ गुल्ला। २. फलक भीतरक सक्कत आँठी। मै.

गुड्डी-सं., पतंग, सूत लागल आकाश मे उड़ा उड़ा कय खेलैवाला बनाओल पत्र । मै.
गुड्डी उड़ब-क्रि., एकै छन मे बिका कय वस्तुक समाप्त भ' जाएब । (लाक्षणिक) उपरैं उपर उड़ि जाएब । मै.
गुड़-सं., कुशियारक बिना शोधल रस औंटि कय जमाओल ठोस लाल चेकी । मै.
गुड़कब-क्रि., गोलाकार वस्तुक गति जकाँ गतिशील होएब । मै.
गुड़काएब-क्रि., बल सँ गोल वस्तुक गति जकाँ गति मे वेग देब । मै.
गुड़कान भरब-क्रि., गुड़कैक वस्तु जकाँ बनि गति मे वेगशील होएब । मै.
गुड़की-सं., गुड़कल जकाँ चलैवाला चिड़ै । मै.
गुड़कुनियाँ काटब-क्रि., देखू—"गुड़कान भरब" । मै.
गुड़ खीर-सं., गुड़ द' क' रान्हल खीर । मै.
गुड़गुड़ा-सं., बड़का नलीवाला धूम्रपानक यन्त्र । मै.
गुड़गुड़ाएब-क्रि., गुड़ गुड़ शब्द करब । मै.
गुड़गुड़ी भरब-क्रि., नेन्नाक मुह सँ थूक समेत गुड़-गुड़ शब्द करब । मै.
गुड़चल्ला-सं., चालनि सँ वेशी छेदवाला सूप जकाँ गूँड़ा चालैक बाँसक वासन । मै.
गुड़रब-क्रि., क्रोध सँ जोर दय आँखि कें तेज करब। मै.
गुड़ारब-क्रि., क्रोध प्रकट करैक हेतु बल सँ आँखि कें विस्तार कय डिम्भा बहार करब । मै.
गुड़िया-सं., खेलाइक एवं गहना संग दैक वस्तु । मै.
गुड़ियाएब-क्रि., लपेटल जकाँ मोड़ब । तह बैसाएब । मै.
गुण्डा-विशे., दुष्ट आ दुष्ट बुद्धिवाला । मै.
गुण्डी-विशे., गर्दा जकाँ बनल । मै.
गुण्डी गुण्डी करब-क्रि., चूड़ि कय गर्दा जकाँ छोट सँ छोट टुकड़ी बनाएब । मै.
गुण्य-विशे., गुणा लगबै योग्य अंक । जाहि मे गुणा कयल जाय । सं. तत्सम
गुण-सं., विशेषता । सं. तत्सम
गुणक-विशे., १. गुणकारी, स्वास्थ्य आ सम्पत्तिक लाभदायक । २. गुणा करैवाला अंक । सं. तत्सम/मै.
गुणद-विशे., लाभदायक । सं. तत्सम
गुणनफल-सं., गुणा कयला उत्तर निष्कर्षक अंक । सं. तत्सम
गुणमन्त-विशे., गुणवाला । मै.
गुणा-सं., गणितक प्रक्रिया । सं. तद्भव
गुणी-विशे., विशेष गुणवाला, विद्वान् । सं. तत्सम
गुत्थम गुत्था-सं., झगड़ा विशेष । एक दोसरा कें कसिकय पकड़ि पछाड़ैक प्रयासवाला झगड़ा । मै.
गुत्थी-सं., ओझरौठ, परस्पर ओझराकय घन रहैक स्थिति । मै.
गुत्थी लागब-क्रि., आपस मे घन भय के ओझरा-एब । मै.
गुथनी लागब-क्रि., एकैठाँ घन भ' क' रहब । मै.
गुँथलाहा-विशे., एक सूत्र मे अनेक बान्हल वा कसल रहैवाला । मै.
गुथाएब-क्रि., एकै डोरी मे वा ताग मे बन्हाएब वा गसाएब । मै.
गुद्दा-सं., मांस, मोटका कोमल अंश । मै.
गुद्दी-सं., फल आदि छोट वस्तुक अन्तरक सरस कोमल पदार्थ । मै.
गुद्दी पाड़ब-क्रि., मांसल आ कोमल पीठ आदि पर हल्लुक सँ मुक्का मारि देहक जाँतब । मै.
गुद-सं., मल मार्ग । सं. तत्सम
गुदगर-विशे., १. गुद्दा सँ भरल । २. (लाक्षणिक) धनी, सुखी आ सम्पन्न एवं बलगर । मै.
गुदगुद करब-क्रि., नहूँ नहूँ बात करब । मै.
गुदगुदाएब-क्रि., कोनो विशेष अंग मे संचार दय पुलक (सिहरनि) जगाएब । मै.
गुदगुदी-सं., विशेष अंगक स्पर्श सँ रोमाञ्च । आनन्दक अनुभव सँ भुलकन । मै.
गुदड़ी-सं., अतिशय फाटल चीटल वस्त्र । मै.
गुदेला-सं., गुदड़ी तहिया कय सीबि कय बनाओल ओढ़ना । मै.
गुन-सं., १. नाओ खींचैक डोरी । २. भत्ता दैक क्रम मे ऐंढ़न । ३. उत्कर्ष, विशेषता । ४. उपकार । सं. तद्भव
गुनखराह-विशे., बिन बैसल भत्तावाला डोरी । मै.
गुनगर-विशे., उत्कृष्ट गुण सँ भरल । मै.
गुनगरि-विशे., १. शीलवती स्त्री । २. अधिक दूध दैवाली गै आ महिंस । मै.

गुन गाएब-क्रि., यश देब, कृतज्ञ होएब। उपकार मानब। मै.

गुनगुनाएब-क्रि., मन्द ध्वनि सँ गाएब। मै.

गुनझिक्कू-विशे., तान्त्रिक क्रिया मे पथ भ्रष्ट भेला सँ उत्पन्न बतहपन। मै.

गुनब-क्रि., विचारब, गणना द्वारा निष्कर्ष बहार करब। मै.

गुनबाह-विशे., नाओक डोरी खींचनिहार। मै.

गुन समील-सं., पहिलुका कयल उपकार आ नीकक मन मे जमल विचार। कृतज्ञता, उपकारक खेआल (स्मरण)। मै.

गुनियाँ-सं., मान बहार करैक हेतु रेखा गणितक पट्टी। मै.

गुनें-अव्यय, अंक अनुसार गुणा कयला पर। मै.

गुनौ-विशे., ऐंठि ऐंठि कय पाक लगाओल डोरी। मै.

गुनौआ-विशे., गुन द' क' बाँटल, ऐंठि ऐंठि कय पाक देल भत्तावाला डोरी। मै.

गुप्ती-सं., छड़ीक लम्बाइक अनुसार कयल छेद मे छिपा कय राखल अस्त्र। मै.

गुफ्फ-विशे., बसातक गतिहीन वातावरण। मै.

गुम्म-विशे., १. गम्भीरता, चुप्प। २. अलोपित। ३. बसातहीन वायुमंडल। मै.

गुम्मज-सं., शोभाक लेल देल गेल मन्दिर आ कोठाक उपर गोल अथवा लम्बाकार शीर्ष, गुम्मद। उ. तद्भव

गुम्मड़-सं., बसातहीन वातावरणक उपरान्त उठल धूरा उड़बैत बिहारि जकाँ बसातक वेग। मै.

गुमकी-सं., बसात रुकने उत्पन्न गर्मी। मै.

गुमगुम-सं., बसातक स्तब्धता सँ वातावरणक उष्णता। मै.

गुमगुमा-सं., गरमी, ताप। मै.

गुमगुमी-सं., बसातक स्तब्धता सँ जागल ताप। मै.

गुमड़ाहटि-सं., अधिक धूआँ उठला सँ अन्हार। मै.

गुमनाम-विशे., गुप्तनाम वाला पत्र। मै.

गुमरौट-विशे., अधिक धूआँक संग धधरा। मै.

गुमसुम-सं., चुप्पीक वातावरण। मै.

गुम्हड़ब-क्रि., आँखि मूहक भावें क्रोध प्रकट करब। मै.

गुम्मार-सं., गरमी, ताप। मै.

गुर-सं., रहस्य, भेद। मै.

गुरकिल्ली-सं., रहस्य रखैक विधि। मै.

गुरछा-सं., एक मे अनेक गुच्छा। मै.

गुरमुठि-विशे., एके दिश वस्तुक मुहकय बनाओल बोझ। मै.

गुरही-सं., रहस्यक विषय। मै.

गुरीच-सं., अमृता, लत्तीवाला वनौषधि। मै.

गुरु-विशे., उपदेशक, श्रेष्ठ शिक्षा दीक्षा देनिहार। सं. तत्सम

गुरुअइ-सं., गुरु होइक कार्य, गुरुक कार्य। मै.

गुरुता-सं., भारीपन, गौरव। स. तत्सम

गुल्लक-सं., बन्न मुहवाला रुपैया पाइ जमा करैक पकाओल माटिक छोटकी कोही। मै.

गुल्लरि-सं., औषधवाला वनस्पति विशेष। मै.

गुल्ला-सं., १. कोनो वस्तुक अत्यन्त छोट बनाओल गोल आकृति। २. मुह मे द' क' चिबबैक योग्य छीलल कुशियारक खण्ड। मै.

गुल्ली-सं., माटि आ पाथरक छोट सँ छोट बनाओल ठोस गोल वस्तु, गुलेती पर दय निशाना साधल जा सकैत अछि। मै.

गुल्ली डंटा-सं., एक प्रकारक खेल। गोल आ नाम पातर आ छोट काठ आ बाँसक गुल्ली कें डन्टा द्वारा एक गोटए उड़बैत छै, उपरैं दोसर डन्टा सँ मारि दूर फेंकैत अछि। मै.

गुल्ली मुल्ली-सं., सब दिश सँ मोड़िकय बोझ बन्हैक प्रक्रिया। मै.

गुल-सं., पथर कोयला आ काठक गुण्डी कें गोबर माटि मे कड़ा सानि इन्धनक हेतु बनाओल गोल गोल मुठरा। मै.

गुलगुल-विशे., भीतर घुलल वा ढील रहैक कारणें दबला सँ दबैवाला फल। मै.

गुलगुलाएब-क्रि., बल सँ गुलगुल (घुलल) बनाएब। मै.

गुलगुलाहटि-सं., दबल दबल चर्चा, (लाक्षणिक) भीतरैं भीतर गुप्त उल्लेख। मै.

गुलछर्रा उड़ाएब-क्रि., बिना मोह मात्सर्य्यक इच्छानुसार धन कें खर्च कय नाश करैक चेष्टा राखब। मै.

गुलजामुन-सं., १. गोल आ नाम सन छोट फल। २. एहि आकारक छैनाक मधुर विशेष। मै.

गुलजार-विशे., भरल पुरल रहैक कारणें आनन्दित वातावरण परिपूर्ण। चहल पहल। मै.

गुलदावरी-सं., गेना फूलक प्रभेद। उ. तत्सम

गुलफा-सं., सरस नारिकेरक भीतर अंकुरक बीज स्वरूप उत्पन्न कोमल आ गोल पदार्थ। मै.

गुलफी-सं., बरफक संग जमाओल खोआक गुल्ली। मै.

गुलमण्टा-सं., गोल मोल भाँटा। मै.

गुलाब-सं., फूल विशेष। मै.

गुलाब जल-सं., गुलाबक फूल सँ सुवासित जल। मै.

गुलाबी-सं., गुलाब सन लाल रंग। मै.

गुलमेख-सं., टोपीवाला लोहक काँटी। मै.

गुलाल-सं., लाल गर्दी, अबीरक प्रभेद। मै.

गुलेंच-सं., फूलक वनस्पति विशेष। मै.

गुलेती-सं., गुल्ली अथवा शर फेंकैवाला बाँसक फट्ठीक धनुष। मै.

गुलेबा उड़बा उड़ब-क्रि., निर्मूल विषयक प्रचार होएब। मै.

गुलेल-सं., दू अँखुआवाला डंटी मे बान्हल रबरक फीता पर गुल्ली राखि तानि कय फेंकैवाला साधन। मै.

गुलौड़ा-सं., गुल्ला जकाँ मुह मे गाल तर राखल वस्तु। मै.

गुवगुव खाएब-क्रि., चोराकय हबर हबर खाएब। मै.

गुँहगाड़नि-विशे., (लाक्षणिक) असधे रहनिहारि, घिनाओनो वस्तु कें दबाकय रखनिहारि स्त्री। मै.

गुहचोरा-विशे., (लाक्षणिक) क्षुद्र चोर। असिद्ध चोर। चुपचाप क्षुद्रो वस्तुक चोरि केनिहार। मै.

गुहटार-विशे., यत्र तत्र गुहें भरल। मै.

गुहा-सं., खोह। झाँपल तोपल गली। मै.

गुहांइन-विशे., मानव मलक गन्धसन गन्ध। मै.

गुहाएब-क्रि., गेंठ दय दय गसि कय कसाएब। मै.

गुहांगिजी-सं., (लाक्षणिक) परस्पर गारि मारिक संग विकट झगड़ा। मै.

गुहांमय-विशे., यत्र तत्र मानव मल सँ भरल। मै.

गुहेंगुहटार-सं., मानव मल सँ व्याप्त स्थान। प्रयोग–"(कहबी) कौआ देबानत गुहें गुहटार।" मै.

गुहौंरी-सं., भेरारी जकाँ सूक्ष्म माटिक कण तथा अन्य अखाद्य दाना। लत्तीवाला फड़। मै.

गू

गूआ-सं., सुपारी, गूवाक। सं. तद्भव

गूआजनौ-सं., विवाहक हेतु आएल वर कें पहुँचैत मात्र छुट्टा पान सौंस सुपारी आ नगद राशि पनबट्टी मे लय हुनक स्वागत। मै.

गूआमाला-सं., वैदिक युगक प्राकृतिक अलंकार। उपनयन आ विवाह मे बरुआ आ कनियाँ कें काँच माटिक बनल माला जकाँ गहना। मै.

गूँजब-क्रि., ध्वनित होएब। अनेकक एक संग ध्वनि होएब। मै.

गूजा-सं., १. आँखि कान मे मांस कणक प्रादुर्भाव वाला रोग। २. गहनाक जोड़ पर जोड़ैक लेल लागल छेदवाला कड़ी जाहि मे कील सन्हिया कय अड़ाओल जाइछ। मै.

गूँजि उठब-क्रि., उल्लासक ध्वनि होएब। मै.

गूड़-सं., दूर सँ पसरि उपर उठल घाओ। मै.

गूड़ब-क्रि., हाथ सँ तोड़ि तोड़ि सानब। मै.

गूँड़ा-सं., कूटल धानक मेंही गर्दासन भूसाक कण। माल जालक सानीक पदार्थ। मै.

गूड़ा खुद्दी-सं., चाउरक छूटल ममरी आ कण। मै.

गूड़ी-सं., १. लपेटि कय छोट आकार बनल वस्तु। २. चूरि कय गर्दी बनाओल पदार्थ। मै.

गूड़ी चूड़ी-सं., आधा गूड़ल आ आधा चूड़ल पदार्थ। मै.

गूढ-विशे., गुप्त, छिपल, नुकाएल। सं. तत्सम

गूँथब-क्रि., एक सूत्र मे सघन कय एक दोसरा सँ सटा कय सक्कत बनाएब। मै.

गून-सं., डोरी आ सूत मे पाक देबाक क्रम। मै.

गूना-सं., लोहक खोल मे लोह के पैसाकय सक्कत करै लेल चारू दिश अभग्न रेखा रूपक सूक्ष्म खाँच। पेंच। मै.

गूनब-क्रि., विचारब, सोचब, अनुमान करब। मै.

गूमब-क्रि., काटल अन्नक अपनै तापे डंटी सँ कोर छोड़ब। मै.

गूमल-विशे., डंटी सँ सिद्ध होइक कारणें जल्दी झरैवाला अन्नक दाना। मै.

गूरि-सं., पातवाला वस्तु कें एक मुहरी कय छल्ली लगाओल ढेरी। प्रयोग–"किसान सब तमाकूक गूरि खेतै मे बनबै अछि।" मै.

गूरी-सं., पानि सँ छानल मखानक दाना। मै.
गूँह-सं., मनुष्यक मैला (मल)। मै.
गूहब-क्रि., सूत मे एक पर एक गाँथि कसब। मै.

गृ

गृह-सं., घर। सं. तत्सम
गृहवासू-विशे., घर बना कय रहैवाला। मै.
गृहपति-विशे., घरक स्वामी। सं. तत्सम
गृहस्थ-विशे., कृषक, घरद्वार बसबैवाला। सं. तत्सम
गृहस्थी-सं., कृषि पशुपालन आदि सँ व्यवस्थित रखैक कर्म। मै.
गृहिणी-विशे., घर स्वामिनी, पत्नी। पु० 'गृही।" सं. तत्सम

गे

गे !-अव्यय, नीच सम्बोधन। मै.
गेआँति-सं., १. ज्ञाति, बोध, बूझैक शक्ति। पितामहक उपरैं सँ फूटल वंश। स. तद्भव
गेआन-सं., ज्ञान, बूझै सूझैक शक्ति। प्रयोग—"के तारा हरल गेआन" नयना योगिनि। सं. तद्भव
गेड़ जोतब-क्रि., (लाक्षणिक) एकै बात मे जिद्द रोपि कय रगड़ैत रहब। मै.
गेजर-सं., आँखिक डिम्भा पर गेंठ। मै.
गेंट-सं., कोनो वस्तु कें एक पर एक राखि बनाओल समूहक ढेरी। मै.
गेंटब-क्रि., एक पर एक तहिया कय राखब। मै.
गेटियाएब-क्रि., गेंट जकाँ बना बना कय राखब। मै.
गेंठ-सं., बन्हैक सक्कत गीरह। मै.
गेंठकट-विशे., १. चोरा कय कैञ्चाक गेंट कटैवाला, पाकिटमार। २. (लाक्षणिक) अनुचित लाभ लैवाला बनियाँ। मै.
गेंठ जोड़बा-सं., कोनो विशेष क्रिया मे वरक वस्त्र सँ बधूक वस्त्रक जोड़ल गेंठ। मै.
गेंठ बन्हन-सं., १. विवाहक विधि मे जन्म ग्रन्थिक बन्धन। २. विशेष रूपक व्यक्तिक संग साँठि गाँठि। मै.
गेंठ बान्हब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बातक वा विषयक अचल धारणा राखब। मै.
गेंठरी-सं., वस्त्रक खण्ड मे अनेक सामग्री राखि बान्हल छोट पोटरी। मै.
गेंठा-सं., गीरहौ पर गीरहक बान्ह। मै.
गेंठियाएब-क्रि., माला आ जनौ सब मे विशेष प्रकारक गेंठ देब। मै.
गेठिया वात-सं., गीरह गीरह पर पीड़ा दय असमर्थ कय दैं वाला वात रोग। मै.
गेंठी-सं., बनैंया लत्तीक कन्द विशेष। मै.
गेंठी मधु-सं., औषध विशेष। मै.
गेंड़-सं., कनेको नैं हिलैवाला भारी वस्तु। (लाक्षणिक) गेंड़ जकाँ मोट डाँट आ अचल। मै.
गेंडब-क्रि., एकठाँ लकड़ी आदि भारी वस्तु कें एक पर एक जमा करब। मै.
गेंडा-सं., कठोर चमड़ावाला तरुआरि सन तेज नाकवाला बनैंया जीव। मै.
गेंड़ी-सं., गीरहवाला काठक भारी टुकड़ी। मै.
गेड़ुली-सं., कपड़ाक बनाओल अत्यन्त छोट पहिया जकाँ खोपा बन्हैक साधन। मै.
गेन-सं., लात आ हाथ सँ खेलाइक गोल वस्तु। मै.
गेनहारी-विशे., जाइक लेल उदमाहल। प्रयोग—"गेनहारी कें के रोकनिहारी।" मै.
गेनहारी-सं., कोमल स्वादिष्ट साग। मै.
गेना-सं., फूल विशेष। मै.
गेनिहार-विशे., जाइवाला। मै.
गेम-सं., खेलक खेप एवं जीत। अं. तत्सम
गेरु-सं., रंगवाला लाल झरुआ पाथर। मै.
गेरुआ-सं., सिरहौना, तकिया। मै.
गेरुआ-विशे., गेरु रंग मे रंगल। मै.
गेल्ह-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा। प्रयोग—"कौआ सँ गेल्ह बुधियार।" मै.
गेल्हिया-सं., छोट बच्चा कें देम' वाला औषध विशेष। मै.
गेस-सं., तर्क, अनुमान द्वारा निर्द्धारण। अं. तत्सम
गेह-सं., घर। सं. तत्सम
गे है !-अव्यय, विरोध, क्रोध, भय, आश्चर्यक सम्बोधन। मै.

गै

गैं-सं., गो जाति, गाय। मै.
गै !-अव्यय, स्नेह अनादर मे स्त्रीक प्रति संबोधन। मै.

गँ गोँ करब-क्रि., स्पष्ट भऽ क' बात नहि खोलब। मै.

गँच-विशे., टेढ़ जकाँ लचैत। मै.

गँचब-क्रि., टेढ़ कय खींचैत मुह सँ मुह मिलाकय खाम्ह आदि कें सोझ करब। मै.

गँचाह-विशे., एकदिश बढ़ल आ एकदिश झुकल वा घटल रहैक कारणें टेढ़बराह बिना दूनू दिशक ठोकर मिलल। मै.

गँची-सं., माछ विशेष। मै.

गँता-सं., खनती जकाँ तेज धारवाला लोहाक भारी अस्त्र जकर बीचक छेद मे बेंट लागल रहैछ आ कोदारि जकाँ चला कय पाथर आ पथराएल माटि तोड़ल जाइत अछि। मै.

गँबार-विशे., गाइक चरवाह। स्त्री० गैवारनी। मै.

गँबारि-सं., गाइक चरबैक काज। मै.

गै! माँ!-अव्यय, आश्चर्य, विरोध, हर्ष, दुःख आ भय मे स्त्रीक मुह सँ स्वतः बहराइवाला सम्बोधन। मै.

गैया-अव्यय, गाइक प्रति स्नेह सम्बोधन। मै.

गैयाह-विशे., विषय जनितौं नहि खोलि सकनिहार, गाय जकाँ उद्वेग आ सम्बोधनहीन। स्त्री० गैयाहि। सज्जनताक प्रतीक। मै.

गँर-सं., एक दिशा मे भयंकर रूपें जमाओ। मै.

गँल-सं., जनसंचारहीन प्रच्छन्न स्थान। मै.

गैंसिही-सं., बटेरक शिकार ले शिकारीक माथक गँक सिह जकाँ बनल रूप। मै.

गो

गो-सं., खाद, भूमि कें उर्वर करैक देशी खाद, घरौआ खाद जे भदबारि मे खादि खूनि कय, गदौस गोबर जमा कय बनैत अछि। मै.

गोअर टोली-सं., पशुधनक जीवनी लोकक टोल।

गोआर-सं., पशुपालक जाति विशेष। मै.

गोइ-सं., सड़ैक हेतु जमा कयल गोबर। मै.

गोइठा-सं., गोबरक बनल नाम नाम पातर चेरा जकाँ इन्धन, जारनि। मै.

गोख-सं., उषाकाल, प्रभात। मै.

गोखुर/गोखुला बदामी-सं., औषध विशेष। अश्मरी (मूत्राशय मे भेल पथरी) रोगक महौषध। गोखुर कें बुकनी बनाकय बकरीक दूध आ मधुक संग सेवन कयने पथरी गलि खसि पड़ैत छै। मै.

गो गाँ करब-क्रि., १. गाय महिस दुहैक कालधारक ध्वनि होएब। २. मुह सँ स्पष्ट उत्तर दै मे तारतम करब। मै.

गोङ-विशे., स्पष्ट शब्दें बजै मे अक्षम। मै.

गोङियाएब-क्रि., १. नाकक भरें अस्पष्ट आ रुकि-कय बाजब। २. बजैले अर्थात् उत्तर दैले स्पष्ट शब्द आ वाक्य नहि बहार कय सकब। मै.

गोङियाह-विशे., स्पष्ट नहि कहनिहार। नहूँ नहूँ किछु बाजि दैवाला। मै.

गोचर-विशे., १. आँखिक समक्ष। २. माल जाल चरैवाला। मै.

गोंछब-क्रि., दू बोझ कें एक ठाम बान्हब। मै.

गोंछी-सं., दूइटा एकठाँ बान्हल बोझ। मै.

गोंजब-क्रि., कोमल स्थान मे बेर बेर कड़ा वस्तुक अगिला भाग सँ दबाएब। मै.

गोंजागोंजी-सं., निरन्तर कोनो वस्तुक भीतर सोझ वस्तुक अगिला भाग सन्हियबैक चेष्टा। मै.

गोजर-सं., सूत सन नाम आ पातर बीछ जातिक कीट विशेष। मै.

गोझनौट-सं., माउगिक पहिरल नूआक निचला पैर लगक आँचर, कोंचावाला भाग। मै.

गोट-सं., तेलहन विशेष। पीरा सरिसो। मै.

गोट-अव्यय, एकाइ बोधक। प्रयोग—"राजा दशरथ कें चारि गोट पुत्र छलथिन।" मै.

गोटगर-विशे., पैघ, देखार। प्रयोग—"वैशाख मे आम वेश गोटगर भय जाइत छैक। मै.

गोट गोट-अव्यय, एक एकटा कय। मै.

गोटना-सं., गाछक काटल पातर डारिक खण्ड, बाँसक छोट टुकड़ा। मै.

गोटपगरा-विशे., कत्तौ कत्तौ एक आधटा रहैवाला। मै.

गोटरस-सं., स्त्रीगणक खेल विशेष। मै.

गोटा-विशे., १. एक मात्र। प्रयोग—"हम मासें मासें गोटा एकसंझा करै छी।" २. बिना भंग कयल। प्रयोग—"पूजा ले गोटा सुपारी नेने आएब। अर्थात् सौंस।" ३. औंटतै औंटंत अत्यन्त गाढ़ दूध। ४. कपड़ाक कोर मे सुन्दरताक हेतु लगबैवाला चमक भरल फीता। मै.

गोटा किनारी-विशे., गोटा लागल कोरवाला नूआ। मै.

गोटा गोटी-अव्यय, एक एक टा कय । प्रयोग-"तेहन अधलाह नाच छलै जे गोटा गोटी लोक उठि कय चल गेलैक । मै.

गोटी-सं., १. औषधक बनल बड़िया । २. सतरंज आ पचीसी आदि खेलक विभिन्न रंगक पेनीवाला गोली । ३. शीतला प्रकोपक घाओवाला चेन्ह । मं.

गोटे/गोटए-अव्यय, संख्याक पूर्णता बोधक । प्रयोग-"आइ चारि गोटए हमरा ओतए कथा करैक लेल आएल छला । मै.

गोटेक-अव्यय, एक मात्र । मै.

गोटे गोटे-विशे., एक आध टा मात्र । मै.

गोठ-सं., एकैठाँ अधिक लोकक स्थिति । गोष्ठ । सं. तद्भव

गोठ-विशे., दूनू टाङ कें कैंच कय आराम सँ बैसैक मुद्रा । ई: गोठ लगा कय बैसल छथि । मै.

गोठ बान्हब-क्रि., गोल आ सक्कत भ' क' जागब (घाओ) । मै.

गोठल-विशे., एकठाँ घन क' क' राखल । एकैं ठाम घन भेल बैसल । मै.

गोठ लगाएब-क्रि., १. ठेहुन बान्हि कय बैसब । २. एकत्र भ' क' सब कें बैसल रहब । मं.

गोठाल-सं., बैसारक स्थान आ पंचायति घर । मै.

गोठियाएब-क्रि., एकैं ठाम सभक एकत्र होएब । मै.

गोठूला-सं., गोइठा रखैक सुरक्षित स्थान । मै.

गोड़-सं., पैर, चरण । मै.

गोड़-अव्यय, गोट (एकाइ बोधक) । मै.

गोड़कट-विशे., गोड़ पसारैमे ओछ भेनिहार ओछाओन आ खाट । मै.

गोड़थारी-सं., पैर दिशुक स्थान । मै.

गोड़न-सं., पकैक हेतु गरम मे दैक विधि । मै.

गोड़ पड़ब-क्रि., क्षमाक हेतु पैर पर खसब । मै.

गोड़पैंच-सं., आवाजाहीक बदला आवाजाहीक व्यवहार । प्रयोग-"गोड़ पैंच आङन भत पैंच भोज ।" लोकोक्ति । मै.

गोड़ब-क्रि., पकैक हेतु फल आदि कें गरमी देबाक प्रक्रिया करब । मै.

गोड़बाहि-सं., निरन्तर एम्हर ओम्हर जा आवि कय पैरक अधिक काज वा श्रम । मै.

गोड़रा-सं., छोट माछ विशेष । मै.

गोड़लग्गी-सं., समाद द्वारा प्रणाम । मै.

गोड़लगाइ-सं., प्रणाम कयला पर प्राप्त राशि । मै.

गोड़ लागब-क्रि., प्रणाम करब । मै.

गोड़हन-सं., सूतल व्यक्तिक पैर लगक स्थान । मै.

गोड़हनो-सं., गोबर सानि काठीक भरें चेरा जकाँ बनाओल जारनि । मै.

गोड़ा-सं., १. भारी वस्तु कें धरती सँ ऊँच कय रखैक हेतु नीचाँ मे देल ठोस वस्तु । २. लोटा वाटी आदि वर्तनक बाहर दिश पेन मे उगाओल गोल रेखाकार अंश । मै.

गोड़ांइ-सं., छोट नेन्ना कें भौतिक आपत्ति सँ रक्षा लेल देल गेल लोहक काड़ा । मै.

गोड़ाइत-विशे., सामन्ती युगक लगान देबाले रैयति कें पकड़ि लबैक हेतु नियुक्त लोक । बराहिल । मै.

गोड़ाठ-सं., गोड़क चोट । मै.

गोड़ार-सं., पैरक सम्पूर्ण चिह्न छाप । मै.

गोड़ारी-सं., प्रतिदिन माल जालक चलला सँ बनल खाधि । मै.

गोड़ियाएब-क्रि., ढेरीक भीतर मुहं सन्हिया कय माल जालक अन्न खाएब । खोक तर मुह पैसा कय दाना खाएब । मै.

गोड़ी-सं., १. कौनो वर्तनक पेन मे उगाओल कृत्रिम आधार । २. काटल जीवक गोड़ दिशुक मांस । मै.

गोड़ैती-सं., गोड़ाइतक काज । मै.

गोढ़हा-सं., नाम नाम मोट पाथल गोबरक जारनि । मै.

गोंढनी-विशे., गोंढि (मलाह) जातिक स्त्री । मै.

गोंढलत्ती-सं., गाँज ओंका आदि बनवैक हेतु डोरीक स्थान मे गोढ़िक काज मे अवैवाला सक्कत लत्ती । मै.

गोढारी-सं., गोबर मिलल थालवाला स्थान आ बाट । मै.

गोंढ़ि-सं., माछ आ जलक काजक व्यवसायवाला मछुआ जाति । मै.

गोंढ़ियारी-सं., गोंढिक टोल, बस्ती । मै.

गोत्र-सं., एक विशेष कुल समूह । सं. तत्सम

गोत-सं., देखू-"गोत" । प्रयोग-कोन गोत कोन माङर । सं. तद्भव

गोंत-सं., माल जालक मूत । मै.

गोतनी-विशे., भैंसुर देऔरक पत्नी । मै.

गोंतब-क्रि., १. माल जालक मूतब। २. गर्दनि पकड़ि नीचाँ दिश वा पानि मे दबाएब। मै.
गोताखोर-विशे., गोंता लगबै मे निपुण। मै.
गोंता-सं., पानि मे डूबि हेलैक कला। मै.
गोंताइन-विशे., गोतक रंग आ गन्धवाला। मै.
गोंता मारब/गोंता लगाएब-क्रि., पानि मे डूबि हेलैत कत्तौ सँ कत्तौ जाएब, तल स्पर्श करब। मै.
गोंताह-विशे., १. गोंत सँ भरल। २. गोंत सन रंगवाला। मै.
गोतिया-विशे., एक गोत्र मे भेनिहार। देयाद। मै.
गोंती गारब-क्रि., तुरन्त बियाएल मालक थन सँ जमल बिकार बहार करब। मै.
गोदना-सं., स्त्रीगणक देह कें खोधि कयल कृत्रिम चिह्न। खोधा। मै.
गोदब-सं., खोधा पाड़ब। मै.
गोदावरी-सं., भारतक प्रसिद्ध आ पवित्र नदी। मै.
गोधन-सं., १. पशुवृत्ति। २. अल्पकालिक उवेर। मै.
गोधियाँ-विशे., खेल धूपक कालक एक दलवाला। मै.
गोन-सं., शोधल लस्सा। गोन्द। हि. तद्भव
गोनरि-सं., पटिया जकाँ खढ़क बीनल ओढ़ना, बिछाओन। मै.
गोप-सं., गोआर, गोधनवाला जाति। सं. तत्सम
गोपलखत्ता-सं., (लाक्षणिक) सत्यानाशक खाधि। मै.
गोपलाएब-क्रि., छिपा कय दाबि राखब। सदाक हेतु अन्तर्भूत कऽ देब। मै.
गोफ-सं., बाँहि पर पहिरैक गहना विशेष। मै.
गोब्रह्मणी मचब-क्रि., आदङ्क एवं भय भरल कोलाहल। (लाक्षणिक) कलहक प्रचण्ड रूप होएब। मै.
गोब-सं., ठेंगा वा गोल नाम वस्तुक हुराठ (अग्रभाग) सँ कथु मे भीतर धँसबैक चेष्टा। मै.
गोबब-क्रि., नाम गोल वस्तु कें भीतर धँसाएब। मै.
गोबर्धन-सं., एहि नामक पौराणिक पहाड़। मै.
गोबर-सं., माल जालक मल। मै.
गोबर छत्ता-सं., (सं. शिलीन्ध्र) धरती फोड़ि छत्ता जकाँ उठल उज्जर अंकुरक सूक्ष्म गाछ। मै.
गोबराइन-विशे., गोबर लेपल आ लागल। मै.
गोबराएब-क्रि., कोनो जोकर नहि राखब। तथा होएब। मै.
गोबरार-विशे., गोबर भरल स्थान। मै.
गोबराह-विशे., १. गोबर छीटल। २. गोबर जकाँ लगैवाला। मै.
गोबरौड़-सं., नीपैक हेतु गोबर माटि रखैक वासन। मै.
गोभ-सं., १. सूक्ष्म अंकुर। २. गहना विशेष। मै.
गोभी-सं., स्पष्ट धरती सँ उपर उठल आँकुर। मै.
गोर-विशे., १. गौर वर्णक लोक। सं.- २. गोर देहक रंग। मै.
गोरका-विशे., गोर देहक रंगवाला। स्त्री० गोरकी। मै.
गोरब-क्रि., दाबि, झाँपि आ नुका कय राखब। मै.
गोर रतरत-विशे., अधिक अर्थात चमकैत गोर रंगवाला। मै.
गोरलाहा-विशे., दाबि झाँपि कय राखल वस्तु। मै.
गोरहो-विशे., बिना खादौं उर्वर खेत। अधिक उपजवाला खेत। मै.
गोरा-सं., गौरांग, अंगरेज, विदेशी जाति। मै.
गोराइ-सं., गोर रंगक भाव आ स्थिति। मै.
गोराएब-क्रि., १. अनका द्वारा नुकाएब। २. स्वतः क्रमहिं गोर होएब। मै.
गोरि-सं., विधर्मी लोकक शव गाड़ैक स्थान। मै.
गोरिल्ला-सं., लुकि छिपि कय आक्रमण करैक विधि। मै.
गोरुआ-विशे., नुका कय राखल। मै.
गोरू-विशे., बिन बाहल बियाएल तरुणी गाय। मै.
गोल-सं., १. गेन खेलाइक क्रम मे निश्चित सीमा देने गेनक निकास। २. एकमतवाला सभक दलबन्दी। मै.
गोल-विशे., सब दिश सँ एके रंग वृत्ताकार। यथा- ब्रह्माण्ड गोल, खगोल, भूगोल। मै.
गोल करब-क्रि., १. गोलाकार बनाएब। २. छिपाके पार करब। मै.
गोलका-विशे., गोल रूपवाला। मै.
गोलकी-विशे., १. गेनक खेल मे गोलक रक्षा कयनिहार खेलाड़ी। २. गोल आकारक स्त्री। मै.
गोलगर-विशे., १. गोल आकारवाला। २. गोला सँ भरल खेत। स्त्री० गोलरि। मै.

गोलगप्पा-सं., कोनो वस्तु छिपा रखैक चेष्टा। मै.
गोल गल्ला-विशे., गोलाएम गल्लावाला आङी। मै.
गोलट-सं., कन्यागत आ बराइत दुहु घरक कन्या वरक बदला बदली रूपें विवाह। मै.
गोलपेंच-सं., प्रपञ्चक जाल। घुरची पेनीक बात। मै.
गोलबाहि-सं., लगातार गोला फेंकैक क्रम। मै.
गोलम्मर-सं., कोठाक गोलाकार कोठली। मै.
गोल मटोल-विशे., गोलक संग मोट आकारवाला। मै.
गोलमाल-सं., उनटफेर, मिझरौट, छिपबैक व्यवसाय। मै.
गोलमोल-विशे., गोलाइक संग सुन्दरता भरल। मै.
गोलरी-सं., अन्नक दाना झाड़लौ उत्तर बिन दाना झड़ल अन्नक सींस। (गहूमक हेतु वेशी प्रयोग)। मै.
गोलहत्थी-सं., बिना दालि मिलाओल खिच्चड़ि। मै.
गोलही-सं., माछ विशेष। मै.
गोला-विशे., १. मटियाइन लाल रंगक पशु। २. अन्न आदि वस्तुक भण्डारवाला दोकान। मै.
गोला-सं., १. यान्त्रिक अस्त्र सँ छूटल मारक वस्तु। २. पैघ पैघ माटि आ पाथरक कड़ा टुकड़ा। मै.
गोलाइ-सं., सब दिश सँ वृत्ताकार रूप। मै.
गोलाएब-क्रि., गोलाकार बनब। मै.
गोलाकार-सं., गोल रूपक। मै.
गोला गोली-सं., विभिन्न मतानुयायीक दलबन्दीक चेष्टा। मै.
गोलाबादरि-सं., विरोधक बातचीत। झगड़ाक उपक्रमक वार्ता। मै.
गोलियाएब-क्रि., १. अभियोग सिद्ध कए दण्डभागी बनाएब। २. छीटल वस्तु कें एकठाँ जमा करब। ३. धान मे गम्हरा होइ सँ पहिने डाँटक गोल बनब। मै.
गोली-सं., १. औषधक बड़िया। २. गुलेल आ बन्दूक सँ बहराएल घातक वस्तु। ३. गोलकी। मै.
गोली ताग-सं., भिड़ियाओल तागक गोली। मै.
गोलेस-विशे., आधुनिक नेता, अपन महत्त्व जमा कय राजनीतिक आ सामाजिक दलबन्दी कयनिहार। मै.
गोलैसी-सं., दलबन्दी। दोसरा पर आक्षेपक संग अपन मतानुयायीक संग्रह। मै.
गोशाला-सं., गाय सभक रहैक स्थान। मै.
गोष्ठी-सं., कोनो विषयक प्रसंग शिष्ट लोकक बैसार। सं. तत्सम
गोसवारा-विशे., सम्मिलित, साझी। उ. तद्भव
गोसाइँ-विशे., गोस्वामी। जितेन्द्रिय। गृह देवता। मै.
गोसांइ सीर-सं., गृह देवताक आगाँ तथा स्थान। मै.
गोसाउनि-सं., देवी भगवती। मै.
गोहराएब-क्रि., प्रार्थना करब। मै.
गोहारि-सं., न्याय, हितकामना, लोकक कष्ट निवारण। मै.
गोहाल-सं., माल मवेसीक घर। मै.
गोहि-सं., हिंसक जल जीव। नकार। मै.

गौ

गौ-सं., (संस्कृत) गाय। सं. तत्सम
गौँ-सं., लक्ष्य, स्वार्थ। मै.
गौआँ-विशे., गामक लोक। मै.
गौआरय-सं., एक गामक बसैक व्यवहार। मै.
गौँगीर-विशे., बात बात मे अपने लक्ष्य रखनिहार। मै.
गौँछब-क्रि., कपड़ाक चारू खूँट बान्हि झोरी बनाएब। मै.
गौँजाएब-क्रि., घन भ' क' जागि बढ़ब। मै.
गौँजी-विशे., बिन पाकल डाँट सँ कम सींस। मै.
गौँठ-विशे., वासनक कण्ठ धरि भरल। मै.
गौड़-सं., ब्राह्मणक प्रभेद। मै.
गौर-सं., १. गौरीक प्रतीक। २. तरुणी गैँ। मै.
गौरनेजा-सं., गौरी पूजा सामग्री। मै.
गौरपूजब-क्रि., नववधूक गौरी पूजा करब। मै.
गौरब-सं., गरिमा, अहंकार, मद। सं. तत्सम
गौरबाह-विशे., घमण्डी, गौरव भरल। स्त्री० गौरबाहि। मै.
गौरिया मालभोग-विशे., उत्तम स्वादक केरा। मै.

गौरी-सं., आदि प्रकृति, शिव पत्नी। मै.
गौंसार-विशे., गोंत गोबर सँ उर्वर खेत। मै.
गौहा-सं., काँटी कें पकड़ि खींचैवाला चुट्टा। जुत्ता ठीक करैक बनबैक उपयोगी अस्त्र। मै.

घ

घ-सं., कण्ठ स्थानीय कवर्गक चारिम अक्षर। मै.
घओना-सं., रेघा रेघाकय कानब। मै.
घँकोरब-क्रि., माटि उकटि कय पानि कें दूषित करब। मै.
घग्घ-सं., धुन्ध, धौन्ह। सतत वर्षा आ मेघ लागल रहब। प्रयोग-"मग्घ लगाबय घग्घ।" मै.
घघरा-सं., स्त्रीक डाँर धरिक वस्त्र। डाँरक घेराक अनुसार सीयल कपड़ा। नर्तकीक वस्त्र। मै.
घघरी-सं., छोट कन्याक लेल घघरे सन घघरी। मै.
घघाएब-क्रि., विकट रूपें हुँसब। मै.
घघापाल-सं., अंगक विस्तृत आ फलकल आवरण। मै.
घच्चा खाएब-क्रि., अवसर पर हुसि जाएब। मै.
घचनेड़-विशे., अवसर पर अनेर बिलम्ब करैत घर मे लुकाएल रहनिहार। मै.
घचपचाएब-क्रि., काजक बेर मन मे आगाँ पाछाँ करब। मै.
घट्टा-सं., (हि.) घाटा, डाँड़ लागब। मूलो धनक नाश। मै.
घट्टी-सं., १. कमी, त्रुटि। २. अपराध, गलती। ३. आवरजातक आ बिलमैक विशेष विशेष स्थान। मै.
घट्टी मानब-क्रि., गलती वा अपराध सकारब। मै.
घट्टी लागब-क्रि., बेचै मे मूलो धन (लागत) नहि उपर होएब। मै.
घट्टा पिट्टा-विशे., मोट डाँट सक्कत देहवाला बलगर। मै.
घट्टापिट्टा पड़ब-क्रि., अभ्यास पड़ल रहब। नीक जकाँ सब दिनक अनुभव भेल रहब। मै.
घट-सं., १. घैल। २. (लाक्षणिक) शरीर। सं. तत्सम
घटक-विशे., बराइत कन्यागतक विचार सन्तुलित कय वैवाहिक कथा पटौनिहार। मै.
घटकैती-सं., घटकक काज, वर आ कन्या पक्ष कें आश्वस्त करैक प्रयास। मै.
घटघट-अव्यय, शब्दपूर्वक बिन स्वाद आ विचारने पीयब। मै.
घटनघर-विशे., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थे टा सँ प्रयोजन रखैवाला। मै.
घटना-सं., १. अनहोनी स्थिति। २. विक्षोभ। ३. योजना। सं. तत्सम
घटब-क्रि., १. कम भऽ जाएब। २. अनहोनी बात होएब। मै.
घटबार-विशे., घाटक अधिकारी। मै.
घटवारि-सं., घाटक शासन, करक आहरण। मै.
घटस्थापन-सं., कोनो शुभ अवसर पर मन्त्र विधि सँ घैल स्थापित करैक प्रक्रिया। सं. तत्सम
घटही-विशे., घाट धरि पहुँचऽबैवाला, घाट पार करैवाला, घाट सँ सम्बन्ध जोड़ैवाला, घाटै पर रहैवाला। मै.
घटा-सं., मेघक सघन रूप। सं. तत्सम
घटाओ-सं., अंक सँ अंक घटबैक गणितक प्रक्रिया। मै.
घटाटोप-सं., १. घन भ' क' बरखौआ मेघक पसार। २. आडम्बर। सं. तत्सम
घटिया-विशे., १. तौल आ नाप मे थोड़ आ कम। २. तुलनाक विचारें दब। मै.
घटियाएब-क्रि., कमें कमें स्वतः थोड़ बहुत होएब। मै.
घटुआटार-सं., विभिन्न प्रकारक वस्तुक एकैठाँ मिलान। मै.
घटोरि-सं., जलाशय मे बन्ती पथैक हेतु तथा अन्य काज लेल बनाओल कृत्रिम स्थान। मै.
घटोसब-क्रि., १. (लाक्षणिक) स्वार्थक प्रसंग मे निर्लज्जता सँ अनैतिको काज कय लेब। २. स्वादक बिन विचारैं गीरि लेब। मै.
घठिहन-सं., घाठि (बेसन) बनबैवाला अन्न। मै.
घड़कब-क्रि., भारी वस्तुक अपनै अव्यवस्थित रूपें घुरमैत चलब। मै.
घड़काएब-क्रि., ओंघरऽबैक जकाँ गति देब। मै.
घड़काह-विशे., १. स्वतः गतिशील होइवाला वस्तु। २. स्वतः घुरमिकय ससरैवाला ढालू स्थान। मै.
घड़मोमड़ा-सं., घाड़ टेढ़ कऽ दैवाला मालक रोग। मै.

घड़र पाड़ब-क्रि., सूतल मे मुह आ नाक सँ घड़घड़ शब्द करब । मै.

घड़रा-सं., बाँसक दू टोनाक बीच दूनू छोर पर घैल बान्हि कय नदी पार करैक कृत्रिम नाओ । मै.

घड़सूर-सं., गरदनिक जड़ि । मै.

घड़ियाल-सं., बड़का घण्टा । मै.

घड़ी-सं., १. समयक मान बुझवैवाला स्वचालित यन्त्र । २. पावनि विशेष । मै.

घड़ी पहर-अव्यय, (लाक्षणिक) अत्यन्त सूक्ष्म समयक अवधि । मै.

घड़ीसाज-विशे., घड़ीक भड्ठी कयनिहार । मै.

घण्टा-सं., १. शब्दक प्रसार करैवाला धातुक वाद्य । २. आधुनिक समयक मान ६० मिनट । सं. तत्सम

घण्टी-सं., १. पूजा काल बजबैक छोट वाद्य । २. पढ़वैक हेतु विद्यालयक समयक विभक्त मान । ३. माल जालक गराँ मे देल टुनटुनी । मै.

घताह-विशे., जानि बूझि कय बताह सन बनल । स्त्री० घताहि । मै.

घन्न घन्न/घन्नर घन्नर-अव्यय, पातर अनेक गम्भीर आ मेंही ध्वनि । मै.

घन-सं., १. मेघ । २. दूनू हाथें उठवैवाला बड़का लोहा पीटैवाला हथौड़ा । सं. तत्सम

घन-विशे., आपस मे एक जातिवाला गस्सल । मै.

घनगर-विशे., परस्पर अधिक गहल । मै.

घनगीरह-विशे., १. लग लग पोरवाला । २. (लाक्षणिक) बात बात मे शंका उत्पन्न करा कय स्थार्थ साधैवाला तथा रहस्यमय व्यक्ति । मै.

घन घन-अव्यय, शब्द विशेष । प्रयोग-"घनघन घनन घुघुरु कत बाजय ।" मै.

घनघनाएब-क्रि., मधुमाछी आदिक गम्भीर मेंहीं ध्वनि करब । मै.

घनघोर-विशे., अत्यन्त गम्भीर रूपें भयंकर । मै.

घनहन-विशे., सघन भेल । मै.

घपचब-क्रि., पाछू दिश खींचब । उचित मान मे अकस्मात् कटौती करब । मै.

घपचाएब-क्रि., सोझाँ मे स्थित वस्तु कें आँखि बचा-कय पाछू दिश खींचि लेब । मै.

घपोल-विशे., उपर मे साँकर मुहवाला । मै.

घपोली-विशे., साँकर घैरन आ मुहवाला वासन । मै.

घबघब-अव्यय, बिना परिश्रमैं दाँत तर छहोछित वस्तुक भोजन । मै.

घबराएब-क्रि., झुलहाल होएब । मानसिक रूपें आकुलता सँ बुद्धिक कुण्ठित होएब । मै.

घबहा-विशे., सदैव कोनो रूपक घाओ सँ भरल रहैवाला । स्त्री० घबही । मै.

घबाह-विशे., क्षतयुक्त, घाइल, घाओवाला । मै.

घबे घबे-अव्यय, मुट्ठीक मुट्ठी झट झट कर बान्हि कय । मै.

घम्हौरी-सं., १. घाम सँ उत्पन्न मेंहीं फोंसरी । २. बनैया लत्तीक फड़ विशेष । ३. मेंहीं दानावाला गहना विशेष । मै.

घमण्ड-सं., कोनो गौरव सँ अपन महत्त्वक प्रकाशन । मै.

घमब-क्रि., द्रवीभूत होएब । पघिलब । मै.

घमर्थनि-सं., अनेक मतवाला लोकक एकै बात पर बारम्बार तर्क वितर्क । मै.

घमलौर-सं., १. अनेक लोकक एकै विषय पर विभिन्न मतक उपस्थिति सँ उत्पन्न कोलाहल । २. बहुत लोकक एकठाँ बिना निष्कर्षक वाद विवाद । मै.

घमाइन-विशे., घाम जकाँ आ घाम सँ भरल । मै.

घमाएब-क्रि., १. घाम सँ भरि जाएब । २. द्रवित करब । मै.

घमाघट्ट-विशे., कोनो क्षण मे अपन भयंकरता सँ विस्फोट कय सकैक स्थिति मे स्तब्ध रहैवाला । मै.

घमासान-विशे., परस्पर गुत्थम गुत्था सँ अथवा तीव्र वेग सँ भयंकर रूप धारण कयल । मै.

घर्घर्-अव्यय, एहि रूपक यान्त्रिक ध्वनि । मै.

घर्षण-सं., घँसनाइ, कोनो वस्तु के कोनो वस्तुक रगड़ । मै.

घर-सं., आत्माक निवास, जीवात्माक मन्दिर । मै.

घरकौ-सं., घरौंदा (हि.) घर बनबैक धीया पूताक खेल विशेष । मै.

घर घर-अव्यय, १. ध्वनि विशेष । २. हरएक घर मे । मै.

घरघराएब-क्रि., घरघर शब्द करब । (कण्ठ वा यन्त्रक) मै.

घरघराहटि-सं., स्वचालित यन्त्रक ध्वनि आ कफ सँ अवरुद्ध कण्ठक ध्वनि । मै.

घरघरी-सं., प्राण वियोग (मरण) होएवा सँ पूर्व मरणासन्न अवस्थाक लोकक एक मात्र अस्फुट कण्ठ-ध्वनि। मै.

घरघुमना-विशे., कत्तौ लय जाइक काल फेर फेर अपने घर (बथान) दिश घुरि अवैवाला माल। मै.

घरघुसना-विशे., अनुचित ध्येय सँ वा संकोच सँ वा डर सँ घर मे घुसैवाला अथवा घर मे नुका रह-निहार। स्त्री० घरघुसनी। मै.

घरघोंस-विशे., काजक डरें सदिखन घरै मे नुकाएल रहनिहार। मै.

घरघोंसरा-विशे., अपन अहदीपन सँ काजक डरें घर मे नुकाकय सतत लोकक दृष्टि सँ बँचैक प्रयास रखनिहार। स्त्री० घरघोंसरि। मै.

घरछरा-विशे., घर छारै मे उपयोगी तथा घर छारै मे करिन्ना। मै.

घरछरी-सं., घर छारल जाइक क्रम। मै.

घरजना-विशे., प्रत्येक घरक एक एक। मै.

घरजमैया-विशे., ससुरैक घर मे रहनिहार जमाय। सासुरै मे बसनिहार। मै.

घरजरी-सं., घर जरैक द्वारें उत्पन्न स्थिति। घर जरला सँ प्राप्त सहायता। घर जरैक कारणें उठल समस्या। मै.

घरडाँड़-सं., मूलो धनक क्षति। अनेर कोनो कारणें लागल दण्ड। मै.

घरद्वार-सं., घर एवं घरक आलय। सं. तद्भव

घरदेखी-सं., विवाह सम्बन्धक हेतु कन्यागत आ वरागतक परस्पर घरक अवलोकन आ भोजन भात। मै.

घरन्दार-विशे., प्रतिष्ठित घरक लोक। उच्च कुलक व्यक्ति। मै.

घरनी-विशे., घरक अधिकारिणी अर्थात् पत्नी। मै.

घरपैसा-विशे., चोरा कय सोझे घरै मे पैसि गेनिहार चोर, व्यभिचारी आ कुत्ता। मै.

घरपैसी-सं., १. अनुचित ध्येय आ बल सँ घर मे पैसबाक क्रम। २. गृह प्रवेश। मै.

घरबान्ह-सं., डोरी सँ टाट आ घर आदि बन्हैक हेतु विशिष्ट प्रकारक बन्धन। मै.

घरबाड़ी-सं., घर आ घर सँ लागल बाड़ी झाड़ी। मै.

घरबारी-विशे., घरक स्वामी। मै.

घरबाला-विशे., पति, स्वामी। मै.

घरबै-विशे., घरक क्यो व्यक्ति। मै.

घरबैया-विशे., घरक क्यो समाङ तथा स्वामी। मै.

घरभरी-सं., विवाह करैक यात्राक समय आ कन्या लय अवैक समय मे मैँ आ सासुक खोंछि वरक द्वारा धान सँ भरैक विधि। मै.

घरभूजी भाङनै-लोकोक्ति (कहबी) धनक अभाव आ आड्वालक विशेषता। मै.

घरमुहाँ-विशे., घर माथें वाट धयनिहार। मै.

घरहट-सं., घर बन्हैक उद्योग। मै.

घरहटिया-विशे., घर बन्हैक काज मे निपुण। मै.

घरहन्ज-सं., घरक अधिकांश लोकक नाश। मै.

घरहर-विशे., घर मे पीबैक पानि रखैक काजक घैल। मै.

घरही-विशे., प्रत्येक घर सम्बन्धी। मै.

घराघरी-अव्यय, घरें घरें। मै.

घराड़ी-सं., बान्हल आ उपटल घर स्थान। बाँसक भूमि। मै.

घरामी-विशे., घर बन्हैक कला मे चतुर। मै.

घरि-सं., गाछ सँ बहराएल केराक सम्पूर्ण गुच्छ। मै.

घरियाएब-क्रि., रोगक द्वारें घर धय लेब। मै.

घरियार-सं., हिंसक विशाल जल जीव मकर, गोहि। मै.

घरुआ-विशे., घरक उत्पादित वस्तु। मै.

घरेर-सं., नित्तह घरे जकाँ कतौ रहैक नियम। मै.

घरैत-विशे., घरक प्रधान व्यक्ति। स्त्री० घरैतनी। मै.

घरैँन-विशे., परिवार, वंश आ खूटक लोक। मै.

घरैया-विशे., घर मे सम्पादित। अपन घरक बनल। मै.

घरौआ-विशे., घरैक उपयोगी, घरक लोक। मै.

घस्सर घस्सर-अव्यय, दाँत तर दैत मात्र छहोछित भ' जाइवाला खाद्य। मै.

घसकट्टा-विशे., घास कटैक वृत्तिवाला। (लाक्षणिक) मूर्ख, गमार। मै.

घसकटनी-विशे., घास कटैवाली। मै.

घसकट्टी-सं., १. घास कटैक क्रम । २. विवाहोपरांत चतुर्थी दिन वरक द्वारा घास कटैक विनोद विधि ॥ मै.

घसकब-क्रि., लोकक आँखि बचा कय चलि देब । मै.

घसगढ़नी-विशे., नीक नीक घासक विन्यास करै वाली । पु० घसगढ़ा ॥ मै.

घसपस करब-क्रि., कोनो काजक हेतु प्रस्तुतो भेला पर आगाँ पाछाँ करब ॥ मै.

घँसब-क्रि., कोमल वा कठोर वस्तु कें कठोर वस्तु पर द्रव वा मर्दीक हेतु रगड़ब ॥ मै.

घसबार-विशे., घास कटैवाला । स्त्री० घसबारिन ॥ मै.

घसबाह-विशे., घास कें एकट्ठा करैवाला । स्त्री० घसवाहिनी ॥ मै.

घसमोड़ब-क्रि., ठेंहुन सँ गरदनि सटाकय सूतब । मै.

घसाठ-सं., सतत घर्षण पड़ला सँ बनल चिह्न । मै.

घसेट-सं., कोनो कठोर आ सुखाएल वस्तुक रगड़ सँ अंग में बनल चिह्न वा घाओ ॥ मै.

घसेटब-क्रि., नीको वस्तु कपड़ा आदि कें माटि वा अधलाह स्थान मे रगड़ला सँ दूरि करब ॥ मै.

घहरब-क्रि., विपत्ति अबैक आभास होएब ॥ मै.

घहराएब-क्रि., संकट उपस्थित करब ॥ मै.

घा

घा-सं., घाओ, प्रवाहित घाओ ॥ मै.

घाँइ-विशे., बात सँ बात पकड़ै में चतुर ॥ मै.

घाइल-विशे., आहत, शस्त्र द्वारा वा चोट द्वारा क्षत ॥ मै.

घाओ-सं., सामान्य घाओ ॥ मै.

घाघ/घाघड़ा-विशे., कोनो रहस्य कें गुप्त रखै में निपुण ॥ मै.

घाघस-सं., मेघ आ धौन्ह सँ अवरुद्ध दिनक प्रकाश। मै.

घाट-सं., नदी आ पोखरि सब में नहाइक आ पानि लैक पवित्र स्थान ॥ मै.

घाँटब-क्रि., १. बाँटल सूत कें सक्कत सँ गून बैसबैक हेतु माँजब । पेय वस्तु मे कटुक सब द्रव कें एक वासन सँ दोसर वासन मे ढारि ढारि मिलाएब । ३. तीमन तरकारीक बारम्बार आलोड़न । मै.

घाटि-सं., घाटा, कमी, थोड़ होइक आपत्ति ॥ मै.

घाँटी-सं., पूजाक क्षुद्र वाद्य, माल जालक गरदनिक घण्टी । प्रयोग-"धन के बाजय घाँटी ।" मै.

घाँटो-सं., माटिक महादेव सन बनाकय सधवा स्त्री पुत्र सौभाग्यक कामना सँ भाङ धुतूर सँ मेष संक्रान्तिक अवसर पर पूजा करैछ से माटिक बनल मूर्ति ॥ मै.

घाठि-सं., दलिहन पदार्थक बेसन ॥ मै.

घाड़-सं., गरदनिक खड़ाइ ॥ मै.

घाड़ी लगाएब-क्रि., बात अकानै लेल गरदनि नमड़ा कय सावधान रहब ॥ मै.

घात-सं., १. चोट ॥ २. नुकाकय शत्रुता सँ प्रतीक्षा ॥ मै.

घात लगाएब-क्रि., नुकाकय दुष्टता सँ प्रतीक्षा करब ॥ मै.

घाती-विशे., मारैवाला, नाश करैवाला, हानि पहुँचवैवाला । मै.

घानि-सं., अधिकता, समूह, सघन रूपक स्थिति, ढेरी ॥ मै.

घानी-सं., एक बेर में कूटै, पीसै आ पेरै जोग द्रव्यक निश्चित मान ॥ मै.

घाम-सं., उषमक द्वारें रोम कूप सँ बहराएल देहक पानि ॥ मै.

घालब-क्रि., हानि पहुँचाएब, आहत करब आ नाश करब ॥ मै.

घालि-विशे., आहत, काटलगेल ॥ मै.

घास-सं., हरियर दूभि आदि मालक चारा । मै.

घाहि काटब-क्रि., दुर्दशा सँ जीवन बिताएब । मै.

घि

घिआरी-सं., बिरनी जातिक कीड़ा द्वारा बनाओल माटिक गोल अथवा नाम छोट खोंता । मै.

घिउ-सं., (स्थान भेदें शब्द भेद) दूधक तेलसना चिक्कन सार भाग ॥ मै.

घिउरा-सं., लत्ती मे फड़ैवाला गोल नमाओन व्यञ्जनक फड़ (सं.) कोशातकी ॥ मै.

घिकुमारि-सं., मोट गुद्दा भरल पातवाला औषध । मै.

घिंघिंयाएब-सं., कण्ठ सँ आर्त अस्पष्ट ध्वनि करब । मै.

घिचपिचाएब-क्रि., संकल्प विकल्प मे पड़ल रहब। मै.

घिचपिची-सं., कोनो विषय कें संकल्प विकल्प सँ अपना अपनी खींचैक चेष्टा। मै.

घिँचौअलि-सं., अपना अपना दिश खींचैक क्रम। मै.

घिन-सं., घृणा, दूषित वस्तुक द्वारें मनक संकुचित स्थिति। मै.

घिनघिन-विशे., घृणित, कुत्सित, असह्य। मै.

घिन लागब-क्रि., घृणा होएब। मै.

घिनही-सं., स्रवित कुष्ठ। मै.

घिनाएब-क्रि., घृणा सँ भरल रहब, घृणित बनाएब। घृणावाला काज करब। मै.

घिनाएल-विशे., घृणित अवस्था मे पड़ल। मै.

घिनाह-विशे., घृणाक योग्य, घृणास्पद। स्त्री० घिनाहि। मै.

घिनौआ-विशे., घृणा उपस्थित करैवाला। मै.

घिनौन-विशे., घृणाक वस्तु सब सँ भरल, घृणित। मै.

घिबहा-विशे., (लाक्षणिक) उत्तम तत्त्वक आ उच्च कोटिक व्यक्ति वा वस्तु। प्रयोग–घिबहा सजमनि। घिवहा जाति। घिबही पूड़ी। मै.

घिबही-विशे., घी मे बनल आ छनल भोज्य पदार्थ पकवान आदि। घी वाती (घीक दीप) घिबही सोहारी। घिबही पूड़ी आदि। मै.

घिबाइन-विशे., घी लागल। घीक स्वाद भरल। मै.

घिबाह-विशे., घी लागल वस्तु। मै.

घिर्ना-सं., घृणा। सं. तद्भव

घिरघिर करब-क्रि., बारम्बार दुखित पड़ब। मै.

घिरताघिन करब-क्रि., व्यवहार आ बात सँ वातावरण आ समाज कें अत्यन्त घृणित करब। मै.

घिरनी-सं., बराबरि नचैवाला। अपन रेखा पर वा शून्य मे एकै परिधि मे घुरमैत रहैवाला कल, चक्र आ पहिया आदि। मै.

घिरनी जकाँ नाचब-क्रि., (लाक्षणिक) एकै स्थान मे अनेक काजक सम्पादनक व्यग्रता सँ दौड़ैत रहब। मै.

घिरब-क्रि., व्याप्त भ' क' पसरब। प्रयोग–"मेघ फेर घिरि आएल छैक।" मै.

घिसाएब-क्रि., घर्षण सँ क्षीण होएब। मै.

घिसियाएब-क्रि., भारी वस्तु कें वा ककरौ भूमि पर अव्यवस्थित कयने खींचब। मै.

घिसियौढ़ काटब-क्रि., असमर्थता सँ दुर्दशा सँ जीवन बिताएब। मै.

घिसौठ-विशे., घिसियौला सँ धरती मे बनल चिह्न। मै.

घी

घी-सं., दूधक सार। घृत। मै.

घीँचब-क्रि., भारी वस्तु कें जोर सँ आकर्षित करब। मै.

घींकब-क्रि., आलोड़ित करब, मथब। मै.

घींकोरब-क्रि., जलाशयक जल कें अधिक आलोड़न सँ कादो जगा कय दूषित करब। मै.

घी वाती-सं., दीपक हेतु घी मे बोरल बत्ती। मै.

घीँसब-क्रि., कठोर वस्तु कें कड़ा वस्तु पर रगड़ब। मै.

घु

घुइआँ-विशे., बात कें दबने राखि अवसर पर प्रतिक्रिया करैवाला दुष्ट प्रकृति। मै.

घुग्घू-सं., बच्चाक मन बहटारैक लेल उतान पड़ि दूनू टाँग मोड़ि पैर पर पाड़ैक मुद्रा। मै.

घुघना-सं., रुष्ट बनल मुहक मुद्रा। गाल ठोर आ दाढ़ीक भारी आकृति। मै.

घुघना लटकब-क्रि., तामसक लेल मुह फुलल सन होएब। मै.

घुघनाह-विशे., सतत् मुह लटकौने रहनिहार। तमसाएल सन रहनिहार। मै.

घुघनी-सं., गोटा (सौंस) बदाम (चना) क रान्हल भोज्य पदार्थ। मै.

घुघुआघू-अव्यय, उतान भ' क' टाङ मोड़ि पैर पर बच्चा कें राखि बहटारैक प्रक्रिया। मै.

घुघुरू-सं., नूपुरक दाना जकाँ पैघ पैघ दानावाला मधुर ध्वनि कयनिहार डाँरक अलंकार हेतु। मै.

घुच्चा पिलाएब-क्रि., १. खाधि मे नियत स्थान सँ फेंकि गुल्ली पहुँचाएब। २. (लाक्षणिक) अपन लक्ष्य सिद्ध करब। मै.

घुच्ची खूनब-क्रि., घुच्चा पिलबैक खाधि बनाएब। मै.

घुच्छा-सं., एक डंटी मे फड़ल अनेक गुच्छ। मै.

घुचि रहब-क्रि., काजक अवसर पर अनेर छिपि जाएब। मै.

घुट्ठासोहार-सं., परस्पर अत्यन्त मिलान। मै.

घुट्ठी-सं., एड़ी आ फिल्ली सँ उपर टाङक पतरका अंग। मै.

घुटकब-क्रि., १. परबा (कपोत) क आवेश भय बाजब। २. रुकि रुकि कय मुह सँ अस्पष्ट जकाँ शब्द बहार करब। मै.

घुटकी-सं., १. परबाक जकाँ नेन्नाक मधुर शब्द। २. बल सँ नेन्ना कें औषध पिअउबैक चेष्टा। मै.

घुटघुट-अव्यय, शीध्रता सँ घोंट पर घोंट दय। मै.

घुटन-सं., श्वास अवरुद्ध होइक स्थिति। मै.

घुटब-क्रि., १. अकथनीय व्यथा सँ आकुल रहब। २. दम नै ल' सकब। मै.

घुटमुटार-विशे., गोलाइ भरल छोट आकार प्रकारक। मै.

घुटुकसन-अव्यय, नेन्ना कें अरुचिकर वस्तु पियउबैक हेतु परतारैक शब्द। मै.

घुठना-सं., घुट्ठी आ पैरक जोड़वाला अंग। मै.

घुड़कन-सं., एकाएक कृत्रिम क्रोध। मै.

घुड़कब-क्रि., एकाएक कृत्रिम क्रोध सँ बाजि उठब। मै.

घुड़की-सं., कृत्रिम क्रोधक दुर्वाक्य। मै.

घुड़जरना-सं., घूड़ मे जरबं लेल जारनि। मै.

घुड़पेन-सं., घूड़ खोरैक हेतु पातर डन्टा। मै.

घुड़मुड़िया देब-क्रि., घुट्ठी आ मूड़ी भरें गुड़कब। मै.

घुड़ाठ-सं., पैघ घूड़क योजना। मै.

घुड़ारी/घुड़ासी-सं., घूड़ करैक प्रबन्ध। मै.

घुनखौकू-विशे., घुन लगला सँ फोंकिला, निःसार। मै.

घुनघुनाएब-क्रि., नाकक भरें अस्पष्ट एवं मन्द स्वर सँ बाजब। मै.

घुनलग्गू-विशे., घुनक कीड़ा लागल बाँस काठ। मै.

घुनसार-विशे., सक्कत मुदा घूनक छेदवाला लकड़ी। मै.

घुनसी-सं., मेहीं बुन्नी, झीसी। मै.

घुना-सं., साधु भिखमङ्गा सभक स्वरचित सारंगी सन वाद्य यन्त्र। मै.

घुनाह-विशे., घून सँ भरल। घूनवाला। मै.

घुनुर घुनुर-अव्यय, मन्द स्वरें लगातार होइक मेंहीं अस्पष्ट ध्वनि। मै.

घुनेस-सं., विवाहक प्रकरण मे कलापूर्ण ढंगें गढ़ल सवत फुदना आ मोती सँ अलंकृत वरक पाग वा पगड़ी अथवा मौर। मै.

घुप्प अन्हार-विशे., दृष्टि शक्ति कें लुप्त करैवाला अन्हार। मै.

घुमक्कड़-विशे., १. अस्थायी निवास करैत घूमि घूमि कय जीवनयापन करैवाला जाति विशेष। २. सतत् घूमैत रहैक प्रकृतिवाला। मै.

घुमघुमौआ-विशे., १. निश्चित स्थान सँ निश्चित स्थान धरि घूमैत रहैवाला। २. घुमा घुमा कय बनैवाला मधुर विशेष, जिलेबी। मै.

घुमड़ब-क्रि., वायुमण्डलक स्तब्धताक संग मेघक रहि रहि शब्द करैत बढब। मै.

घुमता-विशे., लक्ष्य पर जाइक लेल घुमाओन वाट। मै.

घुमती-विशे., घुरि अवैक (लौटैक) समय। प्रयोग—"घुमती काल कनें हुनक कुशल बुझने आएब।" मै.

घुमन्त-विशे., घूमैत रहैक अभ्यासवाला लोक। मै.

घुमनपन-विशे., हरदम घुमि फिरि रहैक प्रकृति वाला। मै.

घुमनो-सं., १. ओंघी, निन्नक प्रबल आक्रमण। २. मन घूमैक वा माँथा घूमैक रोग। मै.

घुमाएब-क्रि., गोल व्यास वा परिधि पर चलाएब। मै.

घुमाओन-विशे., अधिक दूर सँ चलि कय पहुँचैक टेढ़ वाट। मै.

घुमाघुमी-सं., विदा भ' क' घुमि घुमि अवैक लति। मै.

घुमान-विशे., समीप मे लक्ष्य स्थानक रहनौं विशेष कारणें दूर देने घूमिकय जाइवाला वाट। मै.

घुमौआ-विशे., घूमिकय अवैवाला। घुमाकय लाओल। घुमा दैवाला। घूमैवाला आ घुमौ-निहार। मै.

घुरघुर-अव्यय, शरीर मे वायुविकार सँ चमड़ा मे अकृत्रिम संचारक अनुभव। मै.

घुरघुरा-सं., कीड़ा विशेष। मै.

घुरघुराएब-क्रि., अदृश्य रूपें देह मे स्वाभाविक संचार वा स्पन्दन होएब। मै.

घुरची-सं., डोरी वा सूत आदि मे गूनक अधिक पाक पड़ला सँ स्वतः ओझरौट अथवा गीरह पड़ब। मै.

घुरचीपैनी-सं., (लाक्षणिक) कोनो सुव्यवस्थितो स्थिति मे दुष्ट बुद्धि सँ रहस्यपूर्ण ढंगें समस्या जगा-कय ओझरौट उपस्थित करैक प्रवृत्ति। मै.

घुरछा-सं., देखू—"घुच्छा"। मै.

घुरछी लागब-क्रि., १. एक डंटी मे अनेक गुच्छा लटकि फड़ब। २. एकै काज मे अनेक रहस्यमय समस्या उपस्थित होएब। मै.

घुरता-सं., दाम सँ अधिक घुमवैक योग्य पाइ। मै.

घुरता भार-विशे., भार पठौनिहारक ओतय ओही भरिया द्वारा मिथिलाक व्यवहारक अनुसार आवेशक एक भार घुमाकय पठाओल भार। मै.

घुरती-सं., घूमिकय अबैक बेर। मै.

घुरना-विशे., घुरि घुरि अबैवाला। घुरैत फिरैत रहैवाला। मै.

घुरनी-विशे., एकै धुरी पर घुरैत रहैक प्रकृतिवाली। घिरनी। मै.

घुरमन चौरी-सं., चारू दिश दौड़ि दौड़ि घुरमैत रहैक प्रकृति वा विवशता। मै.

घुरमा-सं., माँथाक घूमैक सन अनुभवक रोग। मै.

घुरमाएब-क्रि., विलम्ब धरि एक धुरी पर घूमाएब। मै.

घुरमी-सं., एक कील पर धीया पूताक घूमैत रहैक खेल सँ माँथा घुमवाक अस्थायी अनुभव। प्रयोग—"एक मुट्ठी चाउर दे घुरमी लगा दे।" मै.

घुरिआएब-क्रि., अनेक झंझटक द्वारें निकटवर्ती आव-श्यक मे सतत् बाझल रहब। मै.

घुरिऔठ-सं., बारम्बार एकै ठामक काज मे बाझैक स्थिति। मै.

घुलाएब-क्रि., १. ठोस पदार्थ कें रासायनिक क्रिया सँ द्रव रूप मे परिणत करब। २. द्रव पदार्थ मे मिलाएब। ३. ताप वा आन क्रिया सँ फल कें गुल गुल बनाएब, कोमल करब, अन्तर्द्रवित बनाएब। मै.

घुसकब-क्रि., बिन उठनै अपन स्थान सँ कनेक देह के चलाएब। ससरब। हटि जाएब। मै.

घुसकीपट्टी-सं., अत्यन्त समीपक स्थान। (लाक्षणिक) थोड़े आयास सँ जा सकैक स्थान। मै.

घुसकुनियाँ काटब-क्रि., बैसले बैसल वा पड़ले पड़ल आगू ससरि कय चलब। मै.

घुसखोर-विशे., काज करै सँ पहिने अनुचित राशि लेनिहार। बिना द्रव्य लेने काज नहि कयनिहार। मै.

घुसघुस खाएब-क्रि., लोकक दृष्टि बचाकय बार-म्बार खाइत रहब। मै.

घुस द'-अव्यय, बिन पुछनै अछनै कयल क्रिया। मै.

घुसब-क्रि., चोरि सँ वा बल सँ भीतर प्रवेश करब। पैसब। मै.

घुसहा-विशे., घूस लै मे आगू। मै.

घुसाएब-क्रि., पैसाएब। प्रवेश कराएब। अँटाएब। मै.

घू

घूक-सं., उल्लू, मुह दुस्सी चिड़ै। मै.

घूठ-सं., घुट्ठीक उपर दिशुक भाग। मै.

घूड़-सं., आगि तपैक हेतु जरबैक वस्तु सब सँ बना-ओल गोल। मै.

घूड़ लागल रहब-क्रि., (लाक्षणिक) एकठाँ गोठिया कय बैसल रहब। मै.

घून-सं., काठ छेदैवाला कीड़ा, कीड़ाक द्वारें बनल काठक गर्दी। प्रयोग—"सातुक संग घूनो पीसल जाइछ।" मै.

घूमब-क्रि., घूरि कय पुनः आएब। टहलब। मै.

घूरब-क्रि., १. शरीर कें सम्मुख करब। २. व्यर्थ एम्हर ओम्हर चलैत रहब। मै.

घूरबहूर-सं., किछु दूर जा कय घुरिघुरि अबैक चेष्टा। मै.

घूराफिरी-सं., घुरा घुरा कय दय अबैक लय अबैक प्रकृति। मै.

घूराघूरी-सं., घुरि घुरि अबैक क्रम। मै.

घूरी-सं., लगातार घूरैत रहैक प्रवृत्ति। मै.

घूलब-क्रि., पाकक द्वारें फलक ढील आ कोमल होएब। अन्तर्द्रवित बनब। मै.

घूस-सं., उत्कोच। काज कय दै सँ पूर्व कर्मचारी वा अधिकारी द्वारा लयल गेल राशि। मै.

घूँसा-सं., बान्हल मुट्ठी सँ मर्मस्थान मे जोर सँ भोंकैकसन कठोर मारि। मै.

घृ

घृणा-सं., कुत्सित वस्तु सँ मनक संकोच। सं. तत्सम

घृणित-विशे., अत्यन्त दूषित। सं. तत्सम

घृत-सं., दूधक तत्त्व। घी। सं. तत्सम

घे

घेघ-सं., कण्ठ मे पँघ ढिमका बनि जाइवाला रोग विशेष। गरु। मै.

घेघहा-विशे., (अनादर मे) घेघवाला। मै.

घेघहू-विशे., (आदर मे) घेघवाला। मै.

घेघाह-विशे., (मनुष्य सँ बाहर मे) स्वभावतः बनल गोल चिह्न युक्त। ढिमका भरल। मै.

घेंच-सं., नमहर गरदनि। मै.

घेंचुल-विशे., (उपहास मे) नमहर गरदनिवाला। सं., पानि मे होम'वाला स्वादिष्ट कन्द। मै.

घेंट-सं., गरदनिक पछिला भाग, घाड़। मै.

घेंटकट-विशे., कण्ठ कटनिहार। (लाक्षणिक) अज्ञानी सँ मूल्य सँ वेशी दाम ल' लेनिहार। मै.

घेंट ममोड़ब-क्रि., गरदनि पकड़ि निर्दयता सँ मचोड़ि मारैक प्रक्रिया। मै.

घेथन-विशे., आकारक भुट्ट रहैत देहक सक्कत आ पुष्ट छोट गरदनिवाला। मै.

घेथार-सं., कैक ढंगें एके वस्तुक हेतु प्रेरणायुक्त प्रार्थना। मै.

घेथारब-क्रि., अनेक उपायें प्रार्थनापूर्वक प्रेरित करब। मै.

घेबर-सं., मधुर विशेष। मै.

घेर-सं., सुरक्षाक हेतु वा अधिकार रखैक हेतु चारू दिश सँ देवाल टाट आ तार सब सँ बन्न। मै.

घेरब-क्रि., स्थान कें चारू दिश सँ बन्न कय सुरक्षित करब। मै.

घेरा-सं., १. आलयक वा अधिकृत क्षेत्रक चारू भर बन्न करैक साधन। २. लत्ती मे फड़ैवाला गोल आ नाम व्यञ्जनवाला फल। मै.

घेराइ-सं., घेरैक कार्यक्रम। मै.

घेराओ-सं., मनुष्य वा स्थान कें बहुत लोक अर्थात् दलक द्वारा घेरैक उपक्रम। मै.

घेराठ-सं., चारू दिशक बन्दी। मै.

घेरान-सं., कड़ा कय घेरैक प्रक्रिया। मै.

घेरावा-सं., चारू दिश सँ बन्न करैक विशेष प्रकार। मै.

घेरि करब-क्रि., बल सँ घेरि घेरि कय अपन अधीन रखैक चेष्टा करब। मै.

घेरी-सं., स्थान कें घेरैक हेतु कोनो वस्तु सँ रेखा कय बनाओल चिह्न। मै.

घै

घैं काटब-क्रि., अत्यन्त कष्ट काटब। मै.

घैंचन-सं., जोर सँ अपना दिश खींचैक प्रयास। मै.

घैंचब-क्रि., जोर सँ अपना दिश खींचैक वेग करब। मै.

घैंचाड़-विशे., अपना दिश खींचैक योग्य नमहर आ पातर वस्तु। मै.

घैंचान-सं., कड़ा कय कें खींचैक उपाय। मै.

घैंचाघैंची-सं., दू दलक अपना अपना दिश खींचैक प्रयास। मै.

घैंर-सं., केराक गुच्छा (हत्था) लागल सम्पूर्ण (अभग्न) रूप। मै.

घैंरन-सं., वेढ़, माल जाल सँ बचबैक साधन। मै.

घैंरब-क्रि., १. निश्चित क्षेत्र कें चारू दिश सँ आवेष्टित करब। २. पड़ाइवाला कें आगू सँ बाट छेकि रोकब। ३. ककरौ निश्चित प्रयोजन ले रोकि राखब। मै.

घैल-सं., जल रखैले पकाओल माटिक पैघ वासन। मै.

घैलची-सं., घैल कें सुरक्षित रखैक कृत्रिम उच्च स्थान। मै.

घैलाढार करब-क्रि., (लाक्षणिक) स्त्रीक त्याग करब। मै.

घैहरि काटब-क्रि., शारीरिक दुर्दशा मे जीवित रहब। मै.

घैहोर मे रहब-क्रि., अधिक काल धरि मरणासन्न स्थिति मे रहनौ प्राण नहि छुटब। मै.

घो

घोंक-सं., आलोड़न। द्रव वस्तु कें नीचा उपर चलबैक प्रक्रिया। मै.

घोंकघोका-सं., पानि वा पानि सन वस्तु कें अधिक चलाकय दूषित करैक चेष्टा। मै.

घोंकचब-क्रि., वस्त्र आदि पसरैवाला वस्तुक कुंचित होएब। सिकुड़ब। मै.

घोंकचाह-विशे., शीघ्र सिकुड़ि कय मोड़ खाइवाला। मै.

घोँकची लागब-क्रि., स्थान स्थान पर कुञ्चित भ' गेला सँ ओझराएब। मै.

घोकड़ियाएब-क्रि., मुह आ ठेहुन मिलौने रहब। मै.

घोकड़िया मारब-क्रि., ठेहुन सँ मुह सटौने सिकुड़ि कय बैसब। मै.

घोकड़ी लगाएब-क्रि., मुह कें ठेहुन सँ सटा कय सूतब। मै.

घोँकन-सं., जल आ जलसन द्रवक नीचाँ सँ उपर धरि हिलोड़ैक रूप। मै.

घोँकब-क्रि., जल के निरन्तर हिलोड़ि कय दूषित एवं असंयत करब। मै.

घोँखब-क्रि., ऊँचें स्वरें एकै बात कें बारम्बार रटब। मै.

घोघ-सं., १. गालक भीतरी भाग एवं निचला भाग। २. बधूक मुहक आवरण। ३. फसिलक सींस कें पत्ताक घेरावा। मै.

घोघ काढ़ब-क्रि., माथ सँ आँचर ससारि कय मुह झाँपब। मै.

घोघ तानब-क्रि., संकोच सँ खींचि कय घोघ के नमहर कय लेब। मै.

घोघट-सं., विवाह वेदी पर वा विवाहक प्रकरण मे विशेष वस्त्र सँ बधूक मुह आ माथक आवरण करैक विधि। मै.

घोघटाक पटोर-सं., नववधू कें घोघट दैक हेतु कोमल रेशमी वस्त्र। मै.

घोघ फूलब-क्रि., १. गालक सीकें नीचाँक अंग फूलि जाएब (रोग विशेष)। २. (लाक्षणिक) रुष्टता सँ मुह लटकब। मै.

घोघ फुलाएब-क्रि., अप्रकट तामसें मुहक फुलल सन मुद्रा राखब। मै.

घोघर-सं., नेन्ना सभक अज्ञात विभीषिकाक वस्तु। प्रयोग—"कहल कन्हैया मैया एक बेरि घोघर आनि देखाउ।" मै.

घोघसब-क्रि., देहक वा अंगक फुलल सन लागब। मै.

घोघसाह-विशे., १. कनेक वातावरणक कुप्रभाव सँ लगले फुलल सन होम'वाला। २. फुल फुलाह अंग-वाला। मै.

घोँघाँ करब-क्रि., अनेक लोकक नकियाएल सन विभिन्न शब्द करब। मै.

घोँघा-सं., डोका सनक छोट जल जीव। मै.

घोँघाउजि-सं., एकहि बेर बहुत लोकक बिना निष्कर्षक विवाद करब। मै.

घोघा तन्तर-अव्यय, अकस्मात् हल्लुक चोट लगला पर मन बहटारैक फूसियाही मन्त्र खण्ड। प्रयोग—"अन्तर मन्तर घोघातन्तर।" मै.

घोँघारी-सं., घोँघा सन अत्यन्त छोट जल जीव। मै.

घोँघियाएब-क्रि., अचेतावस्था मे घोँ घोँ कय अस्पष्ट शब्द करब। मै.

घोघी-सं., पानि सँ अर्थात् भीजै सँ बचै लेल माथ सँ नीचाँ धरिक आवरण। मै.

घोँच-सं., ठेहुनक पाछू दिशक अंग। मै.

घोँचड़-विशे., समय पर घर मे घुसि रहैवाला। मै.

घोँचू-विशे., अनबूझ, बुड़िबक। मै.

घोँट-सं., एक बेर मे द्रवणशील पदार्थक कण्ठ सँ नीचाँ उतारैक प्रमाण। मै.

घोट-सं., एक बासन (लोटा आदि) सँ बेरि बेरि दोसर बासन मे कय कय द्रव पदार्थक विलोड़न। मै.

घोँटब-क्रि., १. पूर्वोक्त प्रकारें आलोड़न बिलोड़न करब। २. पान करैत जलक ग्रास लेब। मै.

घोटाइ-सं., १. सिलौट लोढ़ी सँ सरस वस्तुक (भाङ आदि) अत्यन्त पिसानक क्रम। २. लत मर्दनि सँ खूब पिटानक क्रम। मै.

घोंटान-सं., १. बारम्बार पीबैक चेष्टा। २. अधिक कालधरि पीसैक व्यापार। मै.

घोँटी देब-क्रि., नेन्ना सब कें बल सँ औषध पिया-एब। मै.

घोंटूमल-विशे., अधिक रगड़ कयला पर साध होइ-वाला मूर्ख। मै.

घोड़-विशे., निन्दनीय घोड़ा। मै.

घोड़ करैत-सं., घोड़ा जकाँ अधिक दौड़ैवाला भय-कर साँप विशेष। मै.

घोड़कलस-विशे., १. सलहेसक थान मे बैसाओल माटिक घोड़ा। २. घोड़ा जकाँ उठल गरदनिवाला। मै.

घोड़गदहा-सं., हरिण जातिक बनैया जीव। नील गाय। मै.

घोड़छान-सं., घोड़ा कें छनैक सन बन्धन । मै.

घोड़जुजिया-विशे., घोड़ाक लिंगसन लिंगवाला । मै.

घोड़दौड़-सं., १. घोड़ा दौड़बैक प्रतियोगिता । २. घोड़ा जकाँ दौड़ैक क्रम । मै.

घोड़न-सं., गाछ पर रहैवाला गौर वर्णक खिसियाह चुट्टी जाति । मै.

घोड़नि-सं., खाट आदि कें घोड़ैक विधि । मै.

घोड़निहार-विशे., खाट घोड़ैक काज कयनिहार । मै.

घोड़परास-सं., देखू—"घोड़ गदहा" । मै.

घोड़ब-क्रि., खाट आदि कें जौड़ वा अन्य वस्तु सँ बीनि बीचक शून्य भरब । मै.

घोड़मुहाँ-सं., १. (निन्दा मे) घोड़ा सन मुहवाला । स्त्री० घोड़मुही । किन्नर जाति । २. दिवाल सँ चार कें बन्है लेल बनाओल काठक खुट्टी विशेष । मै.

घोड़सवार-विशे., घोड़ा पर चढ़ैवाला । मै.

घोड़सवारी-सं., घोड़ा पर चढ़ैक अभ्यास । मै.

घोड़सार-सं., घोड़ाक रहैक घर । अस्तबल । मै.

घोड़हिया-विशे., घोड़ा पर लादि कय व्यापार करैवाला व्यापारी । मै.

घोड़ा-सं., सवारी करैवाला तेज पशु । सं.

घोड़ान-सं., खाट आदि घोड़ैक प्रकार, विधि । मै.

घोड़ुआ-विशे., घोड़ल जाइवाला खाट आदि । मै.

घोदामोदा-विशे., एकठाँ घनीभूत भेल । मै.

घोदी-सं., अनेक गुच्छक घुर्छा । झोंझि । मै.

घोर-सं., १. छैना आ दहीक पानि । २. (विशे.) माटि मिलल पानी । ३. व्याकुल । मै.

घोरजाउर-सं., दहीक संग रान्हल भात । मै.

घोरब-क्रि., पानि मे कोनो वस्तु कें मिलाएब । कोनो वस्तु कें (रस चीनी आदि) पानि मे घुलादेब । एकाकार करब । मै.

घोरमट्ठा-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त विकृत । मै.

घोरान-सं., कोनो वस्तु कें पानि मे घुलबैक क्रम । मै.

घोरि-सं., अम्मट आदि पानि मे घुलबैक नियत कयल वासन । मै.

घोरी-सं., छाल्ही मथि कय नेनु बहार कयला पर बाँचल पानि । मै.

घोरुआ-विशे., पानि वा दूध मे घोरल भाङ, सरबत आ प्रसाद आदि । मै.

घोल-सं., १. बहुत लोक सँ कयल एक संग हल्ला । २. पदार्थक द्रवीकरण । ३. प्रकट प्रवाद । मै.

घोल भचक्का-सं., एकठाँ अधिक लोकक उच्च स्वरें बाजब । मै.

घोष-सं., १. बंगालीक उपाधि विशेष । २. गम्भीर शब्द । सं. तत्सम

घोषन्त विद्या-विशे., रटला सँ प्राप्य होइत अछि विद्या । प्रयोग-"कहबी" घोषन्त विद्या लपटन्त जोर नहि किछु तँ थोड़बो थोड़ । मै.

घोषाएब-क्रि., अभ्यास कराएब । रटाएब । मै.

घोँसब-क्रि., बार बार एके बात दोहराएब । मै.

घोँसघोँसा-सं., सदिखन एके बातक चरचा । मै.

घोँसरब-क्रि., (उपहास मे) विसरब आ बिलाएब । मै.

घोँसला-सं., खोंता, पक्षीक डेरा । हि. तत्सम

घोँसारब-क्रि., (दर्पक उक्ति) बिसरादेब । बिला देब । मै.

घोसिन गोआर-सं., गोआरक प्रभेद । मै.

घोँसियाएब-क्रि., साँकरो स्थान मे कोनहुना पैसब आ पैसाएब एवम् प्रवेश करब । मै.

घौ

घौका-सं., कोमल साग विशेष । मै.

घौँचाल-सं., अनेक लोकक विभिन्न रूपक जोर सँ बातचीत करैक कारणें उठल शब्द । मै.

घौरकी-सं., विवाहक अवसर पर स्त्रीगणक द्वारा गीत गाबि गाबि सुपारी बराइत सँ मड़ैक प्रथा । मै.

घौदा-सं., अनेक गुच्छाक एक नाल मे स्थिति । मै.

घौर-सं., देखू—"घउरि" । मै.

घौले घौले बाजब-क्रि., अनेर एक दिशहे जोर सँ बज़ैत रहब । मै.



च वर्ग

च-सं., तालु स्थानीय च वर्गक प्रथम वर्ण। मै.

चक्कर-सं., एकै वृत्त पर सतत् परिक्रमण। मै.

चक्का-सं., १. घरक भीत वा दिवाल वा टाट मे आगू बढ़ाकय बनाओल वस्तु रखैक चक्राकार स्थान। २. वृत्त पर घूमैवाला पहिया वा आन वस्तु, घड़ीक सूइ यन्त्र आदि। मै.

चक्की-सं., १. पीसैक वृत्ताकार यन्त्र। २. लपेटल कोनो वस्तुक वृत्ताकार वा काटल फल आदिक गोल चापट रूप। मै.

चक्कू-सं., कटैक आ भेदैक छोट अस्त्र। मै.

चक्र-सं., १. धारवाला वृत्ताकार पातर चापट तेज अस्त्र। २. गाड़ी चलैक चक्का आदि। स. तत्सम

चक्रचालि-सं., गुप्त रूपें हानिकारक चेष्टा। षड्यन्त्र। मै.

चक्रव्यूह-सं., युद्ध स्थलक सेनासज्जा (मोर्चाबन्दी) क विशेष रूप। सं. तत्सम

चकइ-सं., रोटी बेलैक (पसारैक) काठक वृत्ताकार पट्टी। मै.

चकचक-विशे., दीप्यमान, चमकैत। मै.

चकचकाएब-क्रि., चमकाएब, स्वच्छ करब, दीप्तिमान बनाएब। मै.

चकचकी-सं., चमक, स्वच्छता, प्रतिभासित तेज। मै.

चकचों-अव्यय, निरन्तर होइत कर्णकटु अव्यक्त ध्वनि। मै.

चकचोन्ही-सं., बहारक तेजक प्रभावें दृष्टि शक्तिक ह्रास। मै.

चकता-सं., गोलाकार शरीर चमड़ा पर चाकर फूलल रूप। मै.

चकती-सं., १. देखू—"चकइ"। २. चापट गोल वस्तु। मै.

चकबा-सं., चक्रवाक पक्षी विशेष। स्त्री० चकबी। मै.

चकबारब-क्रि., कोनो वस्तु कें वृत्ताकार गोल रूपें जमाकय ढेरी करब। मै.

चकविदोर लागब-क्रि., विस्मय सँ ज्ञानशून्य भय के आँखिक अपलक होएब। मै.

चकभाउर-सं., वृत्ताकार रेखा पर बारम्बार घूमैत रहब। मै.

चकमक-विशे., प्रकाश सँ सब किछु विशेष प्रकाशित। मै.

चकमकी-सं., प्रकाश सँ उत्पन्न प्रकाश। मै.

चकमा देब-क्रि., भ्रम जगा कय ठकि लेब। मै.

चकरगर-विशे., विशेष चाकर (चौरा)। मै.

चकराई-सं., चाकर रहैक मान। मै.

चकराएब-क्रि., घूमैक जकाँ आभास होएब। चक्कर आएब। मै.

चकरा खुरपी-सं., खुरपी जकाँ चाकर जूता बनबैवालाक चाम छीलैक आ कटैक लोहक चाकर अस्त्र विशेष। मै.

चकराँ चकरी-अव्यय, दूहू भागक चकराईक अनुसार। मै.

चकरी-सं., १. चलबै उठवैवाला छोट जाँत। २. ठेंहुनक उपरक वृत्ताकार छिटकैवाला हड्डी। मै.

चकरीगुम होएब-क्रि., भय, विस्मय आ शोकक आकस्मिक अधिक प्रभाव सँ ज्ञान कुण्ठित होएब। मै.

चकला-सं., सोहारी बेलैक पट्टी। २. एकाधिकारक बड़का भूखण्ड। मै.

चकाचक-विशे., (लाक्षणिक) १. हिलसगर। २. प्रकाशमय। मै.

चकाचौन्ह-विशे., अत्यधिक तेज सँ दृष्टि नहि टिकबैक योग्य बनल। मै.

चकार-सं., 'च' अक्षर। मै.

चकित-विशे., विस्मय आ आनन्द सँ असंयत चेतनावाला व्यक्ति। मै.

चकियाएब-क्रि., वृत्ताकार बनाकय जमा करब, छल्ली लगा कय राखब। मै.

चकुआएब-क्रि., आश्चर्य आ डर सँ चौंकल जकाँ कय उठब। मै.

चकुठा-सं., बाँहि परक चौकोर गहना विशेष। मै.

चकुठी-सं., तासक पत्तीक चौकोर रंग विशेष। मै.

चकेठबा-विशे., (निन्दा आ अनादर मे) मोट डाँट आ चाकर चौरस। मोस्टन्डा। मै.

चकेबा-सं., १. देखू—"चकबा।" २. सामा मे बनाओल पक्षीक नाम। प्रयोग—"सामा चकेबा खेल करू हे।" मै.

चकै-सं., देखू—"चकइ"। मै.
चकोढ़-सं., विषाक्त छोट वनस्पति। झाड़। मै.
चकोना-विशे., शंका सँ चौंकैत चारू दिश देख-निहार। मै.
चकोर-सं., चन्द्रमाक प्रिय पक्षी विशेष। मै.
चखचुख-सं., परस्पर उत्तेजनापूर्ण बातचीत। मै.
चखना-सं., ताड़ी दारू पीबैक काल जीहक स्वाद बढ़बै लेल चहटगर भोज्य पदार्थ। मै.
चखब-क्रि., स्वाद लेब। मै.
चखाएब-क्रि., स्वाद लगाएब। मै.
चंग-विशे., एक काल मे अनेक बातक उपस्थिति सँ व्यग्र। प्रयोग—"सभक प्रश्नक उत्तर दै मे हम चंग भ' गेलौं।" मै.
चंगा-विशे., रोगमुक्त, स्वस्थ। मै.
चंगी-सं., अनेक वस्तुक आ बातक व्यग्रता। मै.
चङ-विशे., अनेक कारणें अस्थिर व्याकुल। मै.
चङला-विशे., सब काज मे दक्ष, कोनो काज कें शीघ्र करैक कलावाला। मै.
चङुरा-सं., पक्षीक पैरक पञ्जा। मै.
चङुराएब-क्रि., १. चाङुर सँ खोधब। डोरी मे गुन बैसाएब। २. भाँड़ बहराइत महिषिक योनि मे हाथ दय बैसाएब, रोकब। मै.
चङुला-सं., पक्षीक पैरक पाछू मुहक आङुर। मै.
चङेरा-सं., खूब फैल, कम उठल कानवाला वृत्ताकार बीनल बाँसक वासन। छोट रूपक-चङेरी। मै.
च! च!-अव्यय, स्नेह आ दया सँ जीहक द्वारा कयल ध्वनि विशेष। मै.
चचरी-सं., बाँसक दू बल्ला पर बान्हल फट्ठीवाला भारी वस्तु उठबैक विशेष साधन तथा मृतक लय जाइक विमान। मै.
चँछब-क्रि., (लाक्षणिक) दबलो बात वा विषय कें दुष्टता सँ प्रकाश मे आनब। मै.
चँछार-सं., कठोर वा तेज वस्तुक रगड़ सँ देह आ कोमल वस्तु मे छिलाइक चेन्ह। मै.
चँछोर-सं., तेज वस्तुक घर्षण सँ वा झटका सँ चमड़ा पर बनल घाओ। मै.
चञ्चल-विशे., अस्थिर देह आ बुद्धिवाला। सं. तत्सम
चञ्चु-सं., १. पक्षीक लोल। २. लेखिनीक नोक। सं. तत्सम
चट्ट ओदरब-क्रि., भीजल स्थान पर चलला सँ पैर लागल बेलागि माटिक पपड़ी उखड़ब। मै.
चट्ट द'-अव्यय, अतिशीघ्र, अलक्षित रूपें। मै.
चट्टान-सं., समथरि पाथर खण्ड, पथराही समतल भूमि। मै.
चट्टापट्टा-अव्यय, नेन्ना कें मन बहटारैक प्रक्रिया। बच्चाक हाथ पसारि ओहि पर चाट मारैत चेतन लोक बजैत अछि। "चट्टा पट्टा बाउ कें तीन बेटा" आ तीन आङुर परक ओकर प्रत्येकक कार्य कहैत अछि आ अन्त मे गुदगुदी लगबै अछि। मै.
चट्टा पड़ब-क्रि., इनार पोखरि सुखाएब। मै.
चट्टी-सं., १. एड़ी दिश खूजल रहैवाला पनही तथा फीता लागल काठक खरप्पा आ फीतावाला रबरक पादत्राण। २. बोराक बनल नमहर नाम चाकर बिछाओन। ३. बाट बटोहीक हेतु बनल विश्राम स्थल। मै.
चट-सं., १. सुखाएल भूमि पर पानि पड़ने उपर उठल पपड़ा। २. बाँस आदिक उपरक छाल। मै.
चटओदार-विशे., आबा मे पड़ल अधिक तापें कतहु पपड़ा जकाँ उड़लहा माटिक वासन। मै.
चटक्की-सं., अत्यन्त वेगक शीघ्रता। मै.
चटक-सं., पक्षीक विष्ठा। मै.
चटकन-सं., हाथक पंजाक चौरस रूपें मारि। मै.
चटकब-क्रि., कोनो वासन मे ताप लगला सँ सिहरि-कय फूटि जाएब। मै.
चट करब-क्रि., लगातार शीघ्रता सँ खा जाएब। मै.
चटकल-सं., छोट मोट मशीनी कारखाना। मै.
चटका-सं., थापड़। प्रयोग—"बहुत्रा जकाँ करब तँ देब हम एक चटका।" मै.
चटका पड़ब-क्रि., १. खेतक सरसता समाप्त होएब। २. बारम्बार स्वाद लगने लुतुक लागि जाएब। मै.
चटकार-सं., अत्यन्त चहटगर आ रुचिगर तथा नीक निकुत खाइक तृष्णा। मै.
चटकारब-क्रि., स्वादि स्वादि कय आनन्द लैत खाएब। मै.
चटकाह-विशे., कनेके ताप लगला सँ फूटि जाइ-वाला। मै.

चटकी-सं., आकस्मिक घटना। मै.

चटकुनी/चटगैनी-सं., अत्यन्त छोट छोट चटाइ। मै.

चटचट-अव्यय, १. लगले लागल। प्रयोग—"एतवा कहितहिं ओ चटचट गारि देमऽ लगलै। २. थापड़ मारैक ध्वनि। मै.

चटचटाएब-क्रि., १. चटचट शब्द उठैत मारब। २. इनार पोखरिक सुखाएल सन क्रम होएब। ३. बाँस काठक आ पलस्तरक जरला सँ गीरह आ पलस्तरक फटैक शब्द होएब। मै.

चट द'-अव्यय, तुरन्त। मै.

चटनियाँ-विशे., १. चाटि पोछि कय खाइवाला। २. धो पोछि कय लय जाइवाला बाढ़ि। मै.

चटनी-सं., १. विशेष चहटगर वस्तु अर्थात् तीख चोख आ कड़ू वस्तुक संग मिलाकय पीसल चटकार-वाला लेह्य पदार्थ। २. काठक बनल छोट डन्टी-वाला छमसिया नेन्नाक चटैक वस्तु। मै.

चटपट-अव्यय, तुरन्त, अलक्षित रूपें। मै.

चटपटाएब-क्रि., १. खेतक कदोआ मे पानिक अभाव होएब। २. आन्तरिक वेग सँ अगुताएब। ३. पिया-सक द्वारें मुह चलाएब। मै.

चटपटी-सं., भूजा मे अनेक नोनगर मसाला सँ बनल चटकारवाला भोज्य पदार्थ। मै.

चटबाह-विशे., साँपक विष झारैक काल चाटी चलबैवाला। मै.

चटर चटर-अव्यय, चट्टीवालाक पैरक शब्द। मै.

चटर पटर-अव्यय, खाइ पीबैक इच्छा प्रकट करैक मुहक चेष्टा। मै.

चटसार-सं., १. छोट छोट नेन्नाक पढ़ैक स्थान। २. सामूहिक लोकक एकट्ठा होइक स्थान। मै.

चटाइ-सं., ताड़क पत्ती, खजूरक पात आ बाँसक कमचीक बनल नाम चाकर बिछाओन। मै.

चटाएब-क्रि., गाढ़ गील वस्तु कें आङुर सँ जीह पर दय खोआएब। मै.

चटाकसन-अव्यय, वेग सँ तुरन्त। मै.

चटाचटि-अव्यय, लगातार, तेजी सँ। प्रयोग-"के कर फेरत शिर पर प्रेमक, चाट चटाचटि करक खाइ छी।" मै.

चटाचटि उठब-क्रि., चाट मारैक, बाँस फटैक, ताप सँ वासन फूटैक शब्द होएब। मै.

चटान-सं., चटबैक क्रिया। मै.

चटिया-विशे., छोटका वर्गक विद्यार्थी। मै.

चटुआ-सं., १. काठक चेरा सन पातर छोट छोट पीढ़ी। २. बैसैक छोट छोट चटाइ। मै.

चटौआ-विशे., नेन्ना कें चटा कय खोअ'बैक वस्तु। मै.

चठैल-सं., बनैया लत्ती मे फड़ैवाला व्यन्जनवाला छोट फल विशेष। मै.

चठोल-विशे., देखै मे एवं स्वादलै मे प्रिय लगैवाला, आकर्षक। मै.

चड़ियाएब-क्रि., बारम्बार प्रेरणा करब। मै.

चड़े/चिड़े-सं., पक्षी, चिड़िया। मै.

चढन्त-विशे., चढ़ैक, बढ़ैक, आक्रमणक निश्चित समयक्रम। मै.

चढ़नदार-विशे., बैलगाड़ीक सुरक्षाक हेतु पाछू दिश रहनिहार। मै.

चढ़ब-क्रि., कोनो आधार पर उपर दिशक गमन करब। आरोहण करब। मै.

चढ़ाइ-सं., १. ऊँच दिशक गति। २. आक्रमण। मै.

चढ़ाउतार-सं., १. आरोह अवरोह। २. ज्वर आदि रोगक लगले लागल वेगक वृद्धि एवम् घटब। मै.

चढ़ाएब-क्रि., ऊँच पर देब, उपर कें धरब। मै.

चढ़ी-सं., उपर मुहें गतिक्रम। मै.

चढ़ुआ-विशे., ऊँच चढ़ैक अभ्यासवाला। मै.

चढ़ौआ-विशे., देवता पर चढाओल वा चढ़वैक वस्तु। मै.

चण्ठ-विशे., कठोर हृदयवाला, क्रूर, निर्दय। मै.

चण्ड-विशे., क्रोधक वेग सँ निर्दयता भरल। सं. तत्सम

चण्डलबा-विशे., (तिरस्कार मे) असम्भव क्रूर काज करैवाला। समाजक हानिकारक। मै.

चण्डाल-विशे., बधिक जाति, डोम, अत्यन्त निर्दय स्वभाववाला। स्त्री० चण्डालिन। मै.

चण्डी-विशे., १. भगवती दुर्गा। २. मानिनी नायिका। ३. दुर्गा सप्तशती। सं. तत्सम

चण्डुल-विशे., खल्वाट, चानिक उड़ल केशवाला व्यक्ति। मै.

चण्डोल-सं., चारू दिश सँ अवकाश एवं प्रकाश भरल रमन आ बहुत लोकक आनन्ददायक स्थान। मै.

चतकार-सं., (स्त्री वर्गक प्रयोग मे) दर्प भरल आत्मप्रशंसावाला गप। मै.

चतकारी-विशे., घमण्ड सँ अपन बड़ाइ करँवाली माउगि। मै.

चतरब-क्रि., एक लागल अर्थात् मध्य विन्दु सँ सम्बन्ध रखैंत पसरब। मै.

चतराएब-क्रि., चारू दिश पसारब, फैलाएब। मै.

चतरी-विशे., चतरैक प्रकृतिवाला वनस्पति आ छोट गाछ एवं बूटी आदि। चतरी गेन्हारी आदि। मै.

चतुर्थी-सं., १. पक्षक चारिम तिथि। २. विवाहक चरिमा दिन कन्याक शुद्धीकरणक वैदिक कर्मक विशेष विधि। सं. तत्सम

चतुर्दशी-सं., १. पक्षक चौदहम तिथि। २. चौदह संख्यावाली स्त्री। सं. तत्सम

चतुर-विशे., कुशल बुद्धिवाला, चलाक, दक्ष। सं. तत्सम

चतुरइ/चतुरपन-सं., प्रवीणता, चतुरता चलाकी। मै.

चतुरा-विशे., विद्पनि स्त्री, चलाकि, दक्ष स्त्री। सं. तत्सम

चतुराइ-सं., देखू—"चतुरइ"। मै.

चतोचरन लागब-क्रि., कोनो काजक व्यग्रता सँ तत्परता होएब। मै.

चतोचरन करब-क्रि., कोनो काज मे अत्यन्त उत्कण्ठित रहब। मै.

चद्दरि-सं., ओढ़ैक आ ओछबैक वस्त्र विशेष। उ. तद्भव

चदरा-सं., लोहक कड़ा मोट पसरल पत्र। मै.

चन्दन-सं., १. देह मे लेपैक सुगन्धित काठ। श्री खण्ड चानन। २. देवता विशेषक सेवा चिह्न रूपें देह मे कपाड़ मे कयल द्रवक रेखा चिह्न। सं. तत्सम

चन्द्र-सं., चन्ना, चन्द्रमा। सं. तत्सम

चन्द्रकला-सं., १. उज्जर फूल विशेष। २. चन्द्रमाक ज्योति। मै.

चन्द्रबिन्दु-सं., अनुनासिक उच्चारण द्योतक वर्णक उपर चन्द्राकार पर देल बिन्दु। सं. तत्सम

चन्द्रमा-सं., चन्ना। सं. तत्सम

चन्द्रहार-सं., चन्द्रमाक आकारवाला हार (नेकलेस)। मै.

चन्दा-सं., चन्द्रमा। हि. तत्सम

चन्द्रिका-सं., १. इजोरिया, प्रकाश। २. कपाड़क गहना विशेष। सं. तत्सम

चन्ना-सं., चन्द्रमा। सं. तद्भव

चन्हरदेबा-विशे., दलाल। चन्हराकय ठकैवाला। मै.

चन्हराएब-क्रि., १. हठात् आँखि नै सूझब। २. (लाक्षणिक) बुद्धि कें आन्हर अर्थात् झाँपि देब। मै.

चन्हरा लागब-क्रि., आँखिक ज्योति क्षीण होएब। मै.

चनकब-क्रि., अधिक सुखयला सँ फड़क दानाक अपनै आप छिटकि कय उड़ब। मै.

चनकलोनी-सं., बदाम (चना) क गाछ सँ बहार कयल नोन। मै.

चनकाह-विशे., बसात रौद लगला सँ छिम्मरि सँ अपनै आप छिटकैवाला दाना तथा फाटि जाइवाला बाँस काठ आ कनेकें ताप लगने फूटैवाला सीसा आ माटिक बासन। मै.

चनकी-सं., पटुआक प्रभेद। चन्नी पाट। मै.

चनगब-क्रि., ताप, बसात आ धीपल पर पानि पड़ने छिन्न भिन्न होएब। मै.

चनचनाएब-क्रि., १. भूजा भूजैक काल खापड़ि मे देल अन्नक शब्द होएब। प्रयोग—"तीसी चनचन लाबा भड़ भड़।" २. मेहीं कण्ठध्वनि सँ कोलाहल करब। मै.

चनसूर-सं., माछक भेद। मै.

चनबा-सं., सूतैक बैसैक स्थानक उपर देल तानल वस्त्र। चन्दोवा। मै.

चनबार-सं., घरक दूनू दिशक चकराइँवाला बहारक भाग। मै.

चनवारी-सं., घरक चनवार दिशुक स्थान। मै.

चनरकूप-सं., वैद्यनाथधामक प्रसिद्ध इनार (लाक्षणिक) गहींर इनार। मै.

चनरोटा-सं., चानन घँसैक पाथरक पट्टी। मै.

चनहा लागब-क्रि., अधिक दुर्बलता सँ आँखि खोलै मे असमर्थ होएब। अर्ध मूर्छित रहब। मै.

चनाइक छाँछी-विशे., मधु श्रावणी आ चौठचन्द्र पावनि मे नाम ले दही पौरल नव नव छोट छाँछी। मै.

चनियाएब-क्रि., १. अत्यन्त सुखा जाइक कारणें झरिकय खसब। २. अत्यन्त तप्पत भ' जाएब। ३. माथक केश उड़ि जाएब। प्रयोग—"राखल खेसारीक डाँट सँ सब दाना चनिया गेल। तते भारी बोझ रहै जे माथ चनिया गेल। हमर केश पाकि कय झरला सँ माथ चनिया रहल अछि।" मै.

चनैल-विशे., उड़ल माथक केशवाला। मै.

चनोटा-सं., देखू—"चनरोटा"। मै.

चनोसल/चनरोसल-विशे., इजोरिया सँ प्रकाशित राति। मै.

चप्पल-सं., केवल तरवाक रक्षा हेतु उपर खुजल चाम आ रबरक पनही। अं. तत्सम

चप्पा-सं., भारी वस्तुक दाव, दबि जाइक क्रिया। मै.

चप्पा पड़ब-क्रि., भारी वस्तुक तर मे दबा जाएब। मै.

चप्पी-सं., थाल पानिक कादोक द्वारें पैरक चपैवाला स्थान। मै.

चप-सं., बैलगाड़ी आदि मे आगू दिशक वेशी भार। मै.

चॅप-विशे., आलू आदि सँ बनल विशेष भोज्य। मै.

चपकन-सं., देहक प्राचीन अंगा। मै.

चपचप-विशे., १. तेल वा पानि सँ सम्पूर्ण भरल। २. लोभ सँ भरल। मै.

चपचपाएब-क्रि., अत्यन्त लुब्ध होएब। मै.

चपटाहा-विशे., चापट (अत्यन्त पातर भ' क' पसरल) भेल। मै.

चपटी-विशे., पानसन पातर भेल पसरल आ सुखाएल। मै.

चपड़ा-सं., लाहट, सील करैक बनाओल लाहक छड़। देशज

चपरास-सं., कार्यालयक मुख्य अधिकारीक आदेश-पालक चिह्नवाला पट्टी। मै.

चपरासी-विशे., आदेशपाल अर्दली। मै.

चपल-विशे., चञ्चल। सं. तत्सम

चपाक द'-अव्यय, अनजानै गहींर मे तुरन्त खसिकय। मै.

चपाटनन्दन-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.

चपाती-सं., हाथक पाथल रोटी। मै.

चपेट-सं., १. डाइनिक भौतिक प्रयोग। २. थापड़। मै.

चपै-सं., दूध दुहैक बड़का डाबा। मै.

चपोचप-अव्यय, पदार्थ कें पानि वा आन द्रव मे पूरा पूरी डुबा कय। मै.

चबुतरा-सं., चौखुट बनाओल बैसैक ऊँच विशेष स्थान। मै.

चमर चमर-अव्यय, वेग सँ नेन्नाक दूध पीबैक आ आन जीवक द्रव पदार्थ खाइक कालक विशेष ध्वनि। मै.

चमार-सं., ध्वनिक संग द्रव पदार्थक भोजन। मै.

चम्पइ-सं., ललिछौन पीयर रंग। मै.

चम्पा-सं., उत्कट सौरभवाला फूल। मै.

चम्मच-सं., चाकर मुहवाला चनन काठी सन द्रव्यक पात्र। उ. तत्सम

चमन-सं., सजाओल फुलबाड़ी। उ. तद्भव

चमक-सं., १. ज्योति, प्रकाश। २. तेज, फुर्ती। मै.

चमकब-क्रि., तेज प्रकाश करब। मै.

चमकाएब-क्रि., १. फुर्तीक हेतु प्रेरणाक उपाय करब। तेजी बढ़ाएब। २. तीव्र ज्योति बढ़ाएब। मै.

चमगादर-सं., घरद्वार मे रहैवाला छोट बादुर। मै.

चमगुदरी-विशे., तेल आ मैल जमल रहला सँ चाम सन बनल पुरान वस्त्र। मै.

चमचम करब-क्रि., स्वच्छ आ परिच्छ रहैक कारणें अत्यन्त चमकैत रहब। प्रकाशित होएब। मै.

चमचमाइन-सं., स्वाद विशेष। खयला उत्तर वस्तु मे तीक्ष्णताक अनुभव। मै.

चमचमाएब-क्रि., सगरे स्वच्छ आ परिच्छ कयला सँ चमका देब आ स्थानक चमकब। मै.

चमचिकनी-विशे., गोरि नारि, देहक चमड़ा के उज्ज्वल कय सुन्दर रखैवाली। मै.

चमचोर-विशे., पर नारी संगम मे दुश्चतुर। मै.

चमड़गोड़ी-विशे., मालक चाम कें पानि मे गोड़ैक हेतु पोखरि। मै.

चमड़ा-सं., देहक छाल, त्वचा। एकरै चमड़ी सेहो कहल जाइछ। मै.

चमरख-सं., चरखाक टाकु कें सक्कत सँ बैसबैक लेल देल चाम। मै.

चमरखल्ला-विशे., चमार सँ खलै जोग। मृतुक माल। मै.
चमरखानी-सं., माल कें खलैक स्थान। मै.
चमर छोंच-सं., (लाक्षणिक) परस्परक प्रतीक्षा मे समयक नाश। मै.
चमरटोली-सं., चमारक बस्ती। मै.
चमरनक-विशे., अभ्यासवशें चामक दुर्गन्ध कें सहन करैवाला नाक। मै.
चमरवा/चमरा-विशे., (निरादर मे) चमारक सम्बोधन। मै.
चमरी-सं., १. देहक चमड़ाक उपरका तह। २. चमरी गै`। चामर नाङरिवाली। मै.
चमरौ-विशे., बिना शोधल चामक बनाओल जूता वा कोनो वस्तु। मै.
चमार-सं., हरिजन जाति विशेष। मै.
चमेली-सं., मालती फूल तथा ओकर तेल। मै.
चमैन-सं., चमार जातिक स्त्री। मै.
चमोकनि-सं., १. दंश करैवाला सूक्ष्म कीट। २. जड़ी। मै.
चमौटी-सं., १. चामक बनल बन्हैवाला पट्टी। २. अस्तूरा पिजबैक चामक टुकड़ा। ३. (लाक्षणिक) मैलक द्वारें चामसन बनल वस्त्र मै.
चर्खी-सं., चरखा चलबैवाला पहिया जकाँ चक्का। मै.
चर्खी औंटब-क्रि., (लाक्षणिक) चरखाक चलै काल उठल शब्द जकाँ बारम्बार एके शब्द जोर जोर सँ बाजब। मै.
चर्चरी-सं., अनेक प्रकारक मसाला मिलल अनेक भूजाक मिश्रणवाला खाद्य। मै.
चर्चा/चरचा-सं., ककरो विषय मे परोक्षक उल्लेख। मै.
चर्म रोग-सं., चमड़ा पर होम' वाला रोग। कुष्ठ। मै.
चर्या-सं., चालि चलन। मै.
चर्रचों-अव्यय, बैलगाड़ी चलै कालक शब्द। मै.
चर्र द'-अव्यय, आयासरहित फाटब। मै.
चर्र मर्र-अव्यय, पुरान वस्तु पर चढ़ला सँ भारक द्वारें उठल शब्द। मै.
चर-विशे., १. चोर कें लोकक घरक स्थिति आ वस्तुक ठेकान देखबैवाला। २. गुप्तचर। मै.
चऽर-सं., चमरी गाइक नाङरि सँ बनल हूँकैक वस्तु, चामर। मै.
चऽऽर-सं., गहींरगर धान उपजंवाला दूरधरि पसरल बड़का भूखण्ड। मै.
चरक-सं., १. माल जालक रंग विशेष। २. कुष्ठ रोगक विशेष भेद। ३. आयुर्वेद ग्रन्थकर्ता। सं. तत्सम
चरकट्टा-विशे., हाथीक चारा कटनिहार आ चारा कटैक अस्त्र। मै.
चरकब-क्रि., कनेक कनेक फाटब आरम्भ होएब। मै.
चरका लागब-क्रि., अधिक दूर धरि फाटैक लच्छन होएब। मै.
चरको परियानि-सं., अधिक दिनधरि वर्षा होइक द्वारें उबेर होइक टोना करैक रूप मे देवाल मे नीचाँ उपर मूड़ी दय गोबर सँ बनाओल स्त्री पुरुषक चित्र। मै.
चरख(ह) कट्टी-सं., उपनयनक विधि में आठ सधवा क एकठाँ चरखा कटैक विधि। मै.
चरखा-सं., सूत कटैक कल। मै.
चरखा काटब-क्रि., १. वस्त्रक हेतु गृह उद्योग। २. (लाक्षणिक) चरखा काटि जीवननिर्वाह करब। मै.
चरखाना-विशे., चौखुट रेखाचिह्नवाला कपड़ा। मै.
चरचराएब-क्रि., १. टूटैक क्रमक शब्द होएब। २. अधिक सुखयला सँ चमड़ाक फटैक क्रम होएब। ३. (कुत्ता मे) अनेरे अधिक काल बड़बड़ाइत क्रोध झारब। मै.
चर चाँचर-सं., बाध बोन। दूरधरि पसरल खेतवाला भूखण्ड। मै.
चरचीत लेब-क्रि., गुप्त रूपें रहस्यक बात बूझैक चेष्टा करब। मै.
चरन-सं., चरण, पैर। सं. तद्भव
चरनमा-विशे., अधिक चरैवाला पशु। मै.
चरनियाँ चढ़ब-क्रि., अनिष्ट भावी सँ मति फिरब। मै.
चरफर-विशे., झट द' सीटल काज करै मे दक्षता रखैवाला। मै.
चरफरी-सं., तेजी, कार्यदक्षता। मै.

चरब-क्रि., मुहक द्वारा नोचिकय मालक घास खाएब। मै.

चरबाह-विशे., मालजाल चरबैवाला। मै.

चरबाहि-सं., माल चरबैक काज। मै.

चरम-विशे., अन्तिम। सं. तत्सम

चरराएब-क्रि., फटैक रूप मे आएब। मै.

चरल-विशे., चरि कय आएल माल। आ चरल खेत। मै.

चरलहा-विशे., चरिगेलहा खेत। मै.

चरस-सं., धूम्रपानक निशा लगबैक पदार्थ। मै.

चरहन-सं., चऽऽर मे उपजैवाला धान। मै.

चरहा-सं., चऽऽर मे उपजैवला मोट धान। मै.

चरही-सं., मोटका जौड़। मै.

चराइ-सं., १. चरैक अपराधक आर्थिक दण्ड। २. चरैक उपद्रववाला स्थान। ३. चरबैक पारिश्रमिक। मै.

चराउ-विशे., चरबैक योग्य, चरबैक बोनि। मै.

चराउर-सं., चरैक क्रमक खोज। मै.

चराएब-क्रि., चरबैक काज करब। (लाक्षणिक) मालजाल आ नेन्नाक क्रियाकलाप पर दृष्टि राखब। मै.

चराओन-सं., चरबैक नियत दरमाहा। मै.

चराक द'-अव्यय, अकस्मात् अधिक दूरधरि फटैक शब्द। मै.

चराचर-सं., स्थावर जंगम संसार। सं. तत्सम

चराँटी-विशे., माल जाल सँ चरल वस्तु। मै.

चराठ-विशे., अनायास चरि जाइक योग्य खेत। मै.

चराँत-सं., चरैक हेतु निश्चित स्थान। पशुक चरैक भूमि। मै.

चरित्र-सं., भूत कालक आचरण। सं. तत्सम

चरित-सं., पछिला जीवनक चालिचलन। सं. तत्सम

चरी-सं., १. चरैक सामग्री। २. पेट मे भरल चरैक वस्तु। मै.

चरुआ-विशे., १. चरैवाला। २. चाउरवाला। मै.

चरुभर-विशे., सीस, गुद्दा भरल दानावाला। मै.

चरौंत-विशे., चरलाहा घास पात। मै.

चलला-सं., भिन्न भिन्न प्रकारक अन्न वा आनो वस्तु सब कें मिलल रहला पर अलग अलग कय फरिछऽबैक लेल बड़का चालनि। मै.

चल-विशे., चलै फिरैवाला। सं. तत्सम

चलचलाओ-विशे., तुरन्त चलैले प्रस्तुत। शीघ्र चलैक उपक्रम मे रहनिहार। मै.

चलता-विशे., १. सदिखन सबक काज अबैक वस्तु, प्रचलित। २. चलैत रहैत। मै.

चलता फिरता-विशे., सतत् चलैत फिरैत रहैवाला। मै.

चलती-सं., १. प्रभाव। २. प्रचार। ३. प्रस्थान करैक बेर। प्रयोग–"सबठाँ अखन किरानियैक चलती छैक। हरही सुरही सबक घर मे आइ कालिह चाह आ रेडियोक चलती छैक। चलती मे हम आब की कऽ सकै छी।" मै.

चलन सैर-विशे., समाज मे प्रचलित होइक योग्य। अपेक्षणीय, उपयोगी। मै.

चलन्ती-सं., १. चल जाइक अवसर। लुप्त भ' जाइक समय। प्रयोग–"जखन लोक कें संसार सँ चलन्ती आबि जाइ छै तखन मोह बढ़ि जाइ छै।" २. लोकक बीच मुख्यता। मै.

चलना-सं., कोनो वस्तु चालैक वासन। मै.

चलनि-सं., समाजक बीच प्रचलित व्यवहार। मै.

चलनी-सं., चिकस आदि कें खढ़ काठी सँ परिच्छ करैक लेल मेंही छेद भरल पेनवाला छोट वासन। चालनि। मै.

चलनौट-सं., पीसल सुखाएल वस्तु कें चालला उत्तर चालनि मे छनि कय जमा विकृत पदार्थ। अन्नक मोट अंश। मै.

चलप्रचल-विशे., जाइक हेतु अगुताएल। विशेष रूपें हलचल। चञ्चल। मै.

चलब-क्रि., गमन करब। डेग उठाएब। जाएब। मै.

चलाउ-विशे., चलबैक योग्य। (लाक्षणिक) निमहता करै जोकर। मै.

चलाएब-क्रि., गतिशील करब। क्रिया मे प्रेरित करब। मै.

चलाक-विशे., चतुर। उहिगर। बुद्धिमान्। मै.

चलाचलती-सं., विशिष्टता। मुख्यता। प्रधानता। मै.

चलाचली-सं., बेराबेरी अनेक लोकक चलैक क्रम। मै.

चलाठ-सं., अधिक लोकक चलैक द्वारें बनल चिह्न । मै.

चलान-विशे., १. चलायमान, गतिशील । २. प्रामाणिक पत्र । ३. पठाओल । मै.

चलानी-विशे., आन ठाम सँ चलैत चलैत आएल विशेष वस्तु । मै.

चलियाएब-क्रि., १. पेट में चाली (कृमि) सँ भरि जाएब । २. चल्ला चलाएब । ३. जोतल वा तामल खेतक दबल खढ़ पात कें कोड़ि कोड़ि बहार करब । मै.

चलिसमा-सं., मुसमानक मोहर्रम पर्वक चालिसम दिन पर होम'वाला पर्व । चेहल्लुम । मै.

चसक-सं., व्यसन, अधलाह चालिक अभ्यास । लोभ । मै.

चसकब-क्रि., अधलाह दिश आकर्षित होएब । दुर्बुद्धि बढ़ब । व्यसनक लोभ करब । मै.

चसकाएब-क्रि., अधलाह बात दिश प्रेरित करब । अनिष्ट विषय दिश हिसख लगाएब । मै.

चसका पड़ब-क्रि., अधलाह बातक तृष्णा बढ़ब । दुर्वृत्तिक व्यसन होएब । मै.

चसकी चढ़ाएब-क्रि., अनिष्ट करैक शिक्षा देब । अनुचित बात सिखाएब । मै.

चँसब-क्रि., (लाक्षणिक) दुःख, विरोधक दबल बात कें बारम्बार खोधि खोधि कय जगबैक दुष्टता करब । मै.

चस्मा-सं., अधिक सूक्ष्मक लेल सीसा लागल कृत्रिम आँखि । उ. तत्सम

चसम-सं., आँखि, दृष्टि । पा. तत्सम

चह-सं., सक्कत उपयोगी काठवाला वनस्पति विशेष । मै.

चहक-सं., १. पशु पक्षीक आनन्दोलासक शब्द । भ्रमण । २. काठक नम्मा नामी फटैक चिह्न । मै.

चहकब-क्रि., १. काठक बीच नम्मा नम्मी फाटब । भीतक सिहरब । २. पक्षीक आनन्द सँ विचरण आ कलरव करब । मै.

चहकि-सं., व्यसन, लुतुक, अमल । जाहि वस्तुक बिना मन चैन नहि रहैक ताहि वस्तुक तृष्णा । भाङ गाँजा, हफीम आ ताड़ी आदिक चहकि । मै.

चहचहाएब-क्रि., पक्षीक आनन्दें शब्द करब । मै.

चहचही-सं., लावण्य, कान्ति, देह मुहक आकर्षक छटा । आभा । मै.

चहटगर-विशे., रुचि बढ़बैवाला । मै.

चहटब-क्रि., चुम्बन आदि क्रिया सँ दुलार आ स्नेह व्यक्त करब । मै.

चहटि-सं., निश्चित समयक विशेष वस्तुक तृष्णाक अभ्यास । लति । मै.

चहरा-सं., पोसा पशु पक्षीक आहार । मै.

चहरि-सं., कुड़हरिक चीरल चेरा । मै.

चहा-सं., खेतक सीस खाइवाला पक्षी । मै.

चहार-विशे., सिद्ध चोर । मै.

चहुँदिश-सं., चारू दिश । मै.

चहैत चहैत-अव्यय, महींस कें सोर करैक शब्द । मै.

चा

चाइँ-विशे., अचक्कें कोनो अनहोनी घटना कय देनिहार बच्चा । मै.

चाइँक-सं., चेतावक, पूर्वानुभव सँ सतर्कता । चेतल रहैवाला गुण । मै.

चाउर-सं., धानक दानाक भीतरक गुद्दा । अन्न । मै.

चाउँस-सं., उड़ीदक बेसन । मै.

चाओ-सं., लालसा, ललक, लोलुपता । मै.

चाक-सं., १. कुम्हारक वर्तन गढ़ैक चक्र । २. तक्खा । मै.

चाकब-क्रि., चक्र जकाँ बना कय कोनो वस्तु जमा करब । मै.

चाकर-विशे., १. (हिन्दी) चौरा कयल । पसरल । २. नौकर । मै.

चाँकि-सं., सावधानता, चेतल रहैक गुण । मै.

चाकरी-सं., नौकरी । आनक सेवा कार्य । मै.

चाकू-सं., छोट घातक अस्त्र । मै.

चाखब-क्रि., स्वाद जँचैक हेतु कनेक खाएब । मै.

चाङला-विशे., चतुर कार्यकुशल । मै.

चाङुर-सं., पक्षीक पैर । क्रियाशील आङुरक समूह । मै.

चाँच-सं., १. पानि बहैक पातर बाहा (नाली) देने माछ कें चलाकय आगू मे लागल सरैला मे फँसबैक प्रयास । २. कोनो भारी वस्तु कें दू गोटए सँ उठा कय लय जाइक चचरी । मै.

चाँचर-सं., अत्यन्त विस्तृत उजाड़ उपजाउ भूखण्ड । बाध। मै.

चाँचरि-सं., पशुपालक आ पशु वृत्तिवालाक ग्राम्य गीत । मै.

चाँछ-सं., कठोर आ तेज वस्तु सँ अकस्मात् रगड़ पड़ला सँ सद्यः बनल घाओ । मै.

चाँछनि-सं., (लाक्षणिक) झापल दुखदायी वा गुप्त बात कें जानि जानि कय जगबैक चेष्टा । मै.

चाँछब-क्रि., १. छीलब । २. (लाक्षणिक) बिसरल विषय कें जगाकय जानिकय नव बनाएब । मै.

चाट-सं., १. पंजा पसारि हाथक मारि, थापड़ । २. कोनो वस्तुक दुर्व्यसन, लुतुक । ३. नोन तेल मसाला मिलाओल भूजा । मै.

चाटनि-सं., चटैक चेष्टा । मै.

चाटब-क्रि., कोनो वस्तु जीह सँ पोछि पोछि खाएब आ स्वाद लेब । मै.

चाट बैसब-क्रि., १. अनिवार्य रूपें तृष्णा जमब । २. चाटी चलबैक शिक्षा मे सफल होएब । ३. थापड़क सम्पूर्ण चिह्न पड़ि जाएब । मै.

चाँटा-सं., थापड़क मारि । हि. तत्सम

चाटी-सं., १. स्नेह सँ जीह द्वारा विशेष अङ्गक स्पर्श । प्रयोग—"चुम्मा चाटी ।" २. साँप काटल अंग पर बराबरि चाट मारि कय विष झारैक प्रक्रिया । मै.

चाटी उठब-क्रि., १. ककरो थापड़ मारै लेल हाथ उठब । २. धरती पर पंजा रोपिकय मन्त्र बलें साँपक विष धरि स्वतः पंजा ससरब । मै.

चाटी चलब-क्रि., साँपक विष पर चटवाहक लगातार चाट चलब । मै.

चाड़नि-सं., चैतन, व्यग्रता । तत्परता । मै.

चाड़ि-सं., काज साधैक सतर्कता । एकाग्रता । मै.

चाढ़-विशे., कुशल चोर । भयंकर चोर । मै.

चाण्डाल-सं., बधिक जाति । क्रूर जाति । मै.

चाण्डित्य-सं., बुद्धिक दाबी सँ अयोग्यतो पर अन्ट-सन्ट विश्लेषण करैक चेष्टा । मै.

चातरि-सं., चतरैक, चारू दिश पसरैक प्रकृति । मै.

चाथ-सं., साधारणो विषयक व्यर्थ महत्त्व । मै.

चाथब-क्रि., सामान्यो वस्तु कें महत्त्व दय ऊँच करब । मै.

चान्हर-विशे., पानि बहैक द्वारें उपटल जजातिवाला खेत । मै.

चान-सं., चन्द्रमा । सं. तद्भव

चानक-सं., पूर्वानुभवक स्मरण कय सतर्कता । मै.

चानडाला-सं., बिवाहक अवसर पर बर कें देखवै लेल चन्द्रमा सन उज्जर डाला । मै.

चानन-सं., चन्दन । सं. तद्भव

चानमारी-सं., दूर मे बनाओल चन्द्रमा सन गोल पट्टी पर प्रक्षेपास्त्रक निशाना मारैक अभ्यास । मै.

चाना-सं., मसाला मिलल स्वादिष्ट भूजा । मै.

चानि-सं., माथक समथरि उपरक अंग । मै.

चानी-सं., रजत । मृदु उज्जर पवित्र मूल्यवान् धातु विशेष । चान्दी । मै.

चाप-सं., १. धनुष (सं.) । २. गणितक धनुषाकार रेखा । ३. पैरक चिह्न । ४. पाँक सँ धँसैवाला स्थान । मै.

चाँप-सं., कोनो वस्तु कें दाबि दैक हेतु उपर सँ राखल भारी वस्तु । मै.

चापकली-सं., गहना विशेष । मै.

चापट/चापड़-विशे., मोटाइ सँ हीन अर्थात् पातर नाम चाकर वस्तु । मै.

चाँपनि-सं., दाबि दैक प्रक्रिया । मै.

चाँपब-क्रि., कोनो वस्तु कें भारी वस्तु सँ दाबि देब । मै.

चापाकल-सं., डन्टा दाबि धरती सँ जल बहार करैक यन्त्र विशेष । मै.

चापा पड़ब-क्रि., चलती गाड़ीक नीचाँ दबि कय आहत (घाइल) होएब । मै.

चापी-विशे., अधिक दिन धरि पानि बसैवाला गहींर-गर पैघ भूखण्ड । मै.

चाब-सं., उत्कट लोलुपता । तृष्णा । मै.

चाबस-अव्यय, सम्बर्धना, प्रोत्साहनक शब्द । मै.

चाबसी-सं., प्रोत्साहन, उत्साह सम्बर्धना । मै.

चाबुक-सं., घोड़ा तथा बड़द आदि हुँकैले डन्टा मे लागल नमहर सक्कत चामक झालरि । कशा । मै.

चाभ-सं., १. बाँसक प्रभेद । बाती बनबै मे बेशी उपयोगी बाँस । २. चभर चभर कय खाइ पीबैक शब्द एवं दबबैक चेष्टा । मै.

चाभब-क्रि., हठात् आक्रमण कय दबैत हत्या करैक प्रयास करब आ हत्या करब । मै.

चाभी-सं., तालाक कुञ्जी । हि. तत्सम

चाम-सं., छीलल मूइल पशुक चमड़ा आ सुखाएल चमड़ा। मै.

चामर-सं., देवताक आराधना मे काज अबैवाला चमरी गाइक नाङरि। चामौर। मै.

चाय-सं., गरम पानि मे सिद्ध कय पेय पदार्थ बनबैक पत्ती। हि. तत्सम

चार्त-सं., उचित आर्थिक स्थिति सँ वेशी आडम्बर आ भड़कताली। मै.

चार-सं., फूसक घरक छप्पर। मै.

चारज-सं., १. (अं०) चार्ज। २. अभ्यास लागल व्यसनक निश्चित समय पर तृष्णाक उत्पत्ति। मै.

चारा-सं., १. उपाय, प्रतीकार। उ. तत्सम। २. हाथी एवं पशु सभक भोजन सामग्री। आहार। मै.

चारि-संख्या, एक अंकक चारिम संख्या। मै.

चारि चारि-सं., चारि मात्र कौड़ी सँ खेलल जाइवाला मौगियाही खेल। मै.

चारिम-पूरक सर्वनाम। चारि संख्यावाला व्यक्ति। मै.

चारी-विशे., एम्हर ओम्हर झगड़ा लगबै मे प्रवीण। मै.

चारु-विशे., १. सुन्दर। सं. तत्सम प्रयोग—"कुच युग चारु चकेवा (विद्यापति)।" २. मुख्य खाद्य। देखू—"चाउर"। मै.

चारू-अव्यय/संज्ञा, चारि गोटएक निश्चय रूपक निर्देश। मै.

चाल्हम-सं., छिपाएल बातक उत्थान करैक प्रवृत्ति। मै.

चाल्हमी-विशे., छिपाओल बातक व्यर्थ उत्थान करैवाला। मै.

चाल-सं., १. देव मूर्तिक पाछू देल अर्ध गोलाकार पैघ काठक पाटी। २. पानिक उपरका सतह पर छोटका माछक सञ्चार सँ बनल गोल व्यास। ३. सोर करैक चेष्टा। मै.

चालक-विशे., १. चलबैवाला। २. पेटक कठोर मल कें ढील करैवाला भोज्य। सं. तत्सम

चालता-सं., फल विशेष। मै.

चाल देब-क्रि., पानिक उपरी सतह पर माछक छरपब। मै.

चालन-सं., १. गति बढबैक क्रम। २. प्रेरित करैक चेष्टा। मै.

चालनि-सं., देखू—"चलनी"। मै.

चाल पाड़ब-क्रि., १. जोर सँ सोर करब। २. पानि मे बनल गोल व्यास। ३. खेलाइक क्रम मे धूरा पर पैर सँ गोल चाकक चिह्न बनाएब। मै.

चालब-क्रि., १. कनेक भारी वस्तु कें टसकाएब। २. (लाक्षणिक) उकसाएब। ३. धरती (खेत) कोड़ि कय माटि हल्लुक करब। मै.

चाला-सं., रब्बीक भुस्सा कसै लेल बोरा चट्टीक बनल बड़का बोरा। मै.

चालि-सं., व्यवहार, चर्य्या, प्रकृति, गति। मै.

चालि चलब-सं., व्यवहार करब। मै.

चालिढालि-सं., आचार विचार आ छविछटा। मै.

चाली-सं., १. साँपक आकारक भदबारि मासक सरीसृप (नाम कीट)। २. पेटक लम्बाकार कीट (जोंकी)। मै.

चालीस-संख्या, सुन्न एकाँइ चारि दहाँइक अंक। मै.

चालू-विशे., १. सामान्य लोकक व्यवहारक वस्तु। २. प्रचलित, दक्ष। मै.

चास-सं., १. खेतीवाला खेत। २. पहिल नामानामी जोत। ३. (लाक्षणिक) मिझाएल बात कें फेर जियाएब। मै.

चासनि-सं., १. नामा नामी पहिल जोतक क्रम। ३. दुष्टता सँ शान्त बात कें जगाकय अशान्त करैक चेष्टा। मै.

चासनी-सं., १. अँचारक हेतु बनल मसाला। ३. चीनीक बनाओल सिरका। मै.

चाँसब-क्रि., दबाओल अनुचित बात कें फेर फेर उखाड़ब। मै.

चाह-सं., १. इच्छा। २. देखू—"चाय"। मै.

चाह करब-क्रि., प्रमाणक हेतु भरना रीन सभक पूर्ति भेला पर बनाओल चीठीक फाड़ब। मै.

चाहब-क्रि., इच्छा करब, अभिलाष करब। मै.

चाहा-सं., लागल फसिलक दाना खाइवाला पक्षी। मै.

चाहे-अव्यय, अथवा, वा, आकि। प्रयोग—"ओ जाथु चाहे रहथु।" मै.

चि

चिउरा-सं., (स्थान भेदें शब्द भेद) चूरा। धानक दाना कें चापट कयल भोज्य पदार्थ। मै.

चिक्कट-विशे., तेलक द्वारें अधिक मैल भरल। मै.

चिक्कन-विशे., स्वच्छ, सुघटित, मृदुल आ सुन्नर। मै.

चिक्कन चुनमुन-विशे., स्वच्छता आ सुन्दरताक द्वारें सुदर्शनीय। मै.

चिकनि माटि-सं., कोमल गोर माटि। मै.

चिकनइ-सं., (लाक्षणिक) तेल। मै.

चिकनकर-विशे., नीक निकुत खाइक इच्छा रखैवाला। मै.

चिकनका-विशे., अधिक कोमल स्वच्छ सुन्दर। मै.

चिकना-सं., १. भदइ अन्न विशेष। २. चाउर के स्वच्छ करैवाला। कोठी भँड़ली मे राखल चाउरक उपरी सतह चाटि चिक्कन बनबैवाला मेहीं कीड़ी विशेष। मै.

चिकनाएब-क्रि., १. मृदु आ स्वच्छ बनाएब। कोमलता आ स्वच्छता बढाएब। २. अंगक फूल सन होएब। मै.

चिकनाहा-विशे., चिक्कन बनाओलवाला। मै.

चिकनाहटि-सं., १. चिक्कन रहैक विशेषता। २. अंग फूलैक क्रम। मै.

चिकनै-सं., तेल (लाक्षणिक)। मै.

चिकरब-क्रि., अत्यन्त जोर सँ शब्द करब। मै.

चिकरा-विशे., चिकरैक अभ्यासवाला। मै.

चिकराहा-विशे., चिकरि चिकरि कय बजैवाला। मै.

चिकस-सं., आटा, गहूम आदि अन्नक पीसल रूप। मै.

चिकसाइन-विशे., आटा लागल, चिक सँ विकृत। मै.

चिकसालड्डू-विशे., चिकसक बनाओल लड्डू, चुर्मा, छठिक भुसबा आदि। मै.

चिकारी-सं., १. सांकेतिक बोली। प्रयोग—"अहाँ सँ प्रेम करै छी।" एहि वाक्यक चिकारी एहि रूपक होइछ जे आन नहि बूझि सकै अछि—चिअ चिहाँ चिसँ चि प्रे चिम चिक चिरै चिछी।" २. (लाक्षणिक) गुप्त रूपें बाजि वा इसारा सँ बात करब। मै.

चिखब-क्रि., देखू—"चाखब"। मै.

चिचाँरि पाड़ब-क्रि., जोर जोर सँ कर्णकटु शब्द करब। मै.

चिचाँड़ि देब (पाड़ब)-क्रि., निरर्थक भूमि पर वा कागज आदि पर अनसोहाँत रेखा खींचब। मै.

चिचियाएब-क्रि., जोर जोर सँ शब्द करब। मै.

चिचिहारि काटब-क्रि., आर्त भ' क' सोर करब। मै.

चिचिहारि पाड़ब-क्रि., आर्त भ' क' जोर सँ कानब। मै.

चिचोढ़-सं., चौर आ बाधक धन खेतीक विशेष घास। मै.

चिचोढ़ब-सं., १. खेत कें उपरैं उपर हर फिरा कय चीरब। २. कोनो वस्तुक उपरका अंश कें चीरि फाड़ि देब। मै.

चिट्ठा-सं., निर्देश, प्रमाण आ विश्वासक पत्र। मै.

चिट्ठी-सं., सन्देश पत्र, पतिया। मै.

चिट-सं., चोरि कय लिखैक प्रश्नोत्तर पत्र। अं. तत्सम

चिटिंगबाजी-सं., चोरि सँ कयल जाइवाला काज। अं. तद्भव

चिड़िया/चिड़ै-सं., पक्षी, चड़ै। मै.

चिड़ैमारा-विशे., चिड़ै मारि खाइवाला व्याधा। मै.

चिड़ौरी-सं., कोनो विषय मे व्यर्थ कुतर्कक विवाद। मै.

चिढ़-सं., मनक क्रोधित भाव। मै.

चिढ़ब-क्रि., मनक तनाओ बढ़ाएब। मै.

चिढाएब-क्रि., आनक मन मे खौंझी जगाएब। मै.

चित्त-सं., १. मन। सं. तद्भव। विशे. उतान। स. तत्सम

चित्तीकौड़ी-सं., टोना करै मे काज अबैवाला भँजाला उत्तर सतत् चित्ते रहैवाला कौड़ी। मै.

चित्ती लागब-क्रि., द्रव्य (धातु) सँ बनल वस्तुक उपर देल पोत (पॉलिस) झरब। मै.

चित्र-सं., छापी, (फोटो) रूपक छाया। सं. तत्सम

चित्रनष्टा-सं., तारतम्य, संकल्प विकल्प, मनक आगु पाछु करब। सं. तत्सम

चित्रविचित्र-विशे., विविध रंग सँ भरल, अद्भुत। सं. तत्सम

चित्रा-सं., नक्षत्र विशेष, चितरा। सं. तत्सम
चित-विशे., उतान भेल। मै.
चितकबरा/चितकाबर-विशे.; अनेक रंग सँ रंगल, रंग बिरङ्गँ भरल। मै.
चितकोहरा-सं., (स्थान भेदक शब्द) लत्तीक फल विशेष। कुम्हर। मै.
चितङ-विशे., उपर मुहें उतान पड़ल। मै.
चितचोर-विशे., प्रेमक द्वारें मनक हरण करैवाला, मन खींचैवाला। मै.
चिता-सं., मृतकक दाहक वा गाड़ैक स्थान। मै.
चितिर बितिर-विशे., देखू—"चित्र विचित्र"। सं. तद्भव
चितौरि-सं., औषधक बूटी। मै.
चिथड़ा-विशे., टुकड़ा टुकड़ा भेल वस्त्र। मै.
चिन्तन-सं., गम्भीरता सँ विषय कें गूनब। मै.
चिन्तब-क्रि., सोचब विचारब। मै.
चिन्ता-सं., कोनो प्रतिकूल स्थिति मे पीड़ासहित सोच। सं. तत्सम
चिन्नी चिन्नी उड़ब-क्रि., रत्ती रत्ती विलग होएब। मै.
चिन्ह-सं., कोनो पदार्थक परिचायक रूप वा अङ्क। सं. तद्भव
चिन्हब-क्रि., परिचयक स्मृति होएब। मै.
चिन्हमानि-सं., चिन्है बूझैक शक्ति। प्रयोग-"मरणासन्न कें चिन्हमनि नै रहै छै।" मै.
चिन्हार-विशे., परिचित। मै.
चिन्हारय-सं., परिचय। मै.
चिनकब-क्रि., रौद वसातक द्वारें फलक स्वतः फुटि फुटि उड़ब। मै.
चिनगारी-सं., उड़ै योग्य छोट छोट आगिक कण। मै.
चिनगी-सं., आगिक कण। मै.
चिनबार-सं., गृह देवताक आगू ऊँच कयल पवित्र सुरक्षित पींडी। मै.
चिपकब-क्रि., अभेद्य रूपें सट्टल रहब। मै.
चिपकाएब-क्रि., साटब। अभेद्य रूपें लगाएब। मै.
चिबाएब-क्रि., चर्वणा, दाँतक तर मे दबा दबा कय पीसब। मै.
चिम्मर-विशे., मसुआएल (सरस) रहैक कारणें चिबबै मे सक्कत। मै.
चिमाइट-विशे., अत्यन्त सक्कत अन्न आदि। मै.
चिर-अव्यय, देरी, अधिक काल। प्रयोग—"ई परम्परा चिरकाल सँ अबैत छै।" सं. तत्सम
चिरक-सं., कोनो वस्तुक फटैक रूप विदरण। मै.
चिरक्का-सं., दूर धरि फटैक चिह्न। मै.
चिरकब-क्रि., बहुत दूर धरि फटैक क्रम होएब। मै.
चिरकाह-विशे., स्वतः फटैवाला। मै.
चिरकी-सं., रौदक थोड़बोक अंश। प्रयोग—"मरुआ एको चिरकी लगने सुखा जाइत छै।" मै.
चिरचिराह-विशे., बात बात पर खौंझाइत रहैवाला। स्त्री० चिरचिराहि। मै.
चिरजीवी-विशे., बहुत दिन धरि जीवैवाला। मै.
चिरलहा-विशे., चीरल रहैवाला। मै.
चिरराइन-विशे., केश आ मांस जरैक दुर्गन्ध। मै.
चिराइ-सं., १. काठ आदि चीरैक क्रम। २. चीरैक बोनि। (विशे.) मै.
चिराइत काल-अव्यय, अधिक कालधरि। मै.
चिराएब-क्रि., फाँक कराएब। छेद कराएब। मै.
चिराक-सं., दीप। उ. तद्भव
चिरागदानी-सं., दीप रखैक आधार। उ. तद्भव
चिरागबाती-सं., दीप नेसैक प्रक्रिया। मै.
चिरियाइन-विशे., रबड़ आ मांस जरला सँ विशेष दुर्गन्ध। मै.
चिरियारिक चाउर-सं., मनोवैज्ञानिक प्रभाव देबाक टोना करैक टोना। कोनो वस्तुक चोरि भेला पर सन्दिग्ध लोक सब कें एकठाँ जमा कय चानीक रुपैया कें अभिमन्त्रित कय ओकर बराबरि अरवा चाउर सब कें फँकाओल जाइछ तदुपरान्त जे चोरि कयने रहै अछि तकर मुह मे चाउर लठियाएल भऽ जाइत छैक। एहि रूपक प्रचलनक प्रक्रिया। मै.
चिरुआ-विशे., चीरि कय वा चीरैक आकारक बनल। चीरल चिन्हवाला। चीरल जाइक क्रम मे रहैवाला। मै.
चिरैत-सं., तींत औषध विशेष। मै.
चिरौंजी-सं., मटर एतेक टा दानावाला फल विशेष। मै.
चिरौड़ी-सं., अनर्गल व्यर्थ विवाद। मै.
चिल्लड़-सं., बहुत दिन धरि बिना खींचल एके वस्त्र पहिरल रहला सँ उत्पन्न स्वेदज कीटाणु विशेष। यूका। मै.

चिल्ह-सं., झपट्टा मारैवाला बाज आ चिल्होरि आदि पक्षी । मै.
चिलका-विशे., दुधपीबा बच्चा । मै.
चिलकाउ-विशे., दुधपीबा बच्चावाली माता । मै.
चिलचिलाइत-विशे., धधकैत वा धधकैत सन । मै.
चिलम-सं., धूम्रपानक यन्त्रक उपर रहैवाला आगिक वासन । मै.
चिलमची-सं., ऐंठ हाथ मुह धोइक हेतु धातुक बनल सामन्ती आडम्बरक मुसलमानी पात्र । उ. तत्सम
चिलहोरि-सं., मांसभक्षी पक्षी विशेष । मै.
चिलियाएब-क्रि., आकाश मे मेघक संचारक संग क्रमशः विस्तार होएब । मै.
चिहुँकब-क्रि., कलरव करब । मधुर ध्वनिक संग नेन्नाक चौँकि उठब । मै.
चिहुँकि उठब-क्रि., डर सँ वा रोग विशेष सँ अस्फुट शब्दें नेन्नाक चौंकि उठब । मै.
चिहुट-सं., बाँसक ओदार । मै.
चिहुटब-क्रि., शिशुक द्वारा माताक अंग (स्तन समेत) कसिकय धरब । मै.
चिहुटि कय धरब-क्रि., १. नेन्नाक स्तन पानक हेतु कसि आ सटि कय पकड़ब । २. हठात् नहि छूटैक रूप मे घात करैक हेतु (ठेङी आ जोंक आदि जीवक) सट्टल जकाँ पकड़ब । मै.

ची

चीक-सं., बाँसक कामि सँ बीनल दोहारि आदि मे देवाक पर्दा । मै.
चीखब-क्रि., १. देखू—"चाखब" । २. जोर सँ आक्रन्द वा सोर करब । चिचियाएब । मै.
चींच पाड़ब-क्रि., व्यर्थ असम्बद्ध रेखा खींचब । मै.
चीं चीं करब-क्रि., पक्षीक बच्चाक मेहीं ध्वनि करब । मै.
चीट-सं., गुप्त रूपक पुर्जा । मै.
चीठा-सं., प्रामाणिक लेख । मै.
चीठी-सं., सन्देश (वार्ता) क पत्र । मै.
चीड़-सं., पहाड़ी काठक (सररक गाछ) । मै.
चीढ़-सं., भितराएल तामस । मै.
चीत्कार-सं., जोर सँ विह्वलताक ध्वनि । मै.
चीत-सं., १. मन । (सं. तद्भव) विशे., असमर्थताक चिह्न रूपें उतान । मै.
चीतमीत मारब-क्रि., धैर्य, स्थिरता आ अनुद्वेग राखब । मै.
चीतल-सं., घातक पशु विशेष । चितक । मै.
चीता-विशे., चित्तिर वित्तिर रंगक छोटका बाघ । मै.
चीन-सं., १. मेंही अन्न विशेष । २. एशिया महादेशक सब सँ पैघ जनसंख्यावाला देश । मै.
चीना-सं., अन्न विशेष । मै.
चीना माटि-सं., विभिन्न प्रकारक वर्तन गढ़ै योग्य सक्कत आ चिक्कन माटि (खनिज) । मै.
चीनी-सं., सिता, मधुर रसक स्वच्छ आ परिष्कृत रवाकृत कण । मै.
चीपब-क्रि., तर मे द' क' भारी वस्तु सँ दाबब । मै.
चीर-सं., स्त्री वस्त्र । सं. तत्सम
चीर फाड़-सं., फाँक कय कय फाड़ैक क्रम । मै.
चीरा-सं., १. फाँक । २. पचीसी खेलक गोटी नहि काटल जाइवाला घर । खोढा । मै.
चीरीचोंत-विशे., रत्ती रत्ती फाटल । मै.
चीरीवाती करब-क्रि., तार तार कय नोचि नोचि कय फाड़ब । मै.

चु

चुआएब-क्रि., कोनो वस्तुक रस टपकाएब, बहार करब । मै.
चुआठ-सं., १. घरक छप्पर मे बनल चूबैक स्थान । २. चूबि कय खसल पानि सँ बनल चेन्ह । मै.
चुइल-विशे., चूबि कय खसल । मै.
चुईं शब्द-सं., नाम मात्रौक ध्वनि । मै.
चुक्क-सं., अमतौआ फलक रस सँ बनल अम्ल क्षार द्रव । (औषध) चुक्र । मै.
चुक्की-सं., छोट साँकर मुहवाला वासन । (माटिक) मै.
चुक्को माली-विशे., बैसैक विशेष प्रक्रिया । टाङ मोड़ि दूनू पैरक भरें बैसैक प्रकार । मै.
चुकचुक-विशे., अत्यन्त अम्मत । मै.
चुकड़ब-क्रि., बन्धन सँ छूटैक हेतु कछमछाइत महिषिक परड़ूक बारम्बार बाजब । मै.
चुकड़ा-सं., फैल मुहक माटिक छोट वासन । मै.
चुकड़ी-सं., साँकर मुहवाला माटिक अत्यन्त छोट वासन । मै.

चुकड़ू-विशे., १. बान्हल वानर। २. पवन्नी लागल पचीसीक गोटी। मै.

चुकता-सं., सम्पूर्ण देय वस्तुक आपस अर्थात् देबाक प्रक्रिया। शोध। मै.

चुकती-सं., १. सम्पूर्ण रूपक देय वस्तुक समर्पण। २. दोष, प्रमाद, असावधानी, गलती। प्रयोग–"हमरा सँ चुकती भय गेल जे समय पर हम नहि आबि सकलौं।" ३. अस्त्रक निशान नहि बैसब। एकाग्रताक अभाव। मै.

चुकब-क्रि., परिस्थिति आ समयक उपयोग नहि कय सकब। मै.

चुकहा-विशे., अत्यन्त अम्मतवाला। मै.

चुकाएब-क्रि., १. प्रतिशोध लेब। २. देय वस्तु के आपस करब। रीन पैंच उधार सधाएब। ३. निष्फल कय देब। मै.

चुकारी-सं., अन्नक अपच रहला सँ मुह मे आएल पेटक अम्मत रस। मै.

चुकिया-सं., १. माटिक अत्यन्त छोट भिन्न प्रकारक वासन। २. देवाल आ भीत मे खोधि बनाओल वस्तु रखैक छोट स्थान। मै.

चुगब-क्रि., पक्षीक दाना बीछि खाएब। मै.

चुगली लाड़ब-क्रि., एम्हर सँ ओम्हर दोष कहब। मै.

चुगाएब-क्रि., पक्षी कें दाना खोआएब। मै.

चुगिलखोर-विशे., चुपचाप दोषराग कहि विरोध जगौनिहार। मै.

चुगिलपन-सं., चुपचाप एम्हरुका दोष ओम्हर कहैक लुतुक। मै.

चुगिला-विशे., चुपचाप एक दोसरा कें दोष सुनबैवाला। मै.

चुगिलावृन्दावन-सं., सामा पर्व खेलाइक प्रकरण मे स्त्रीगण सभक द्वारा आगि लगाकय जरबैवाल चुगिला आ वृन्दावनक माटिक मूर्ति। मै.

चुगिलाह-विशे., चुगिली लाड़ैक स्वभाववाला। मै.

चुगिली-सं., एम्हर सँ ओम्हर दोषराग कें चुपचाप कहैक प्रकृति। मै.

चुंगी-सं., देशान्तर वा राज्यान्तर टपबैक हेतु विशेष प्रकारक कर (बट्टी)। मै.

चुच्ची-सं., स्तन, थन, ऊध। मै.

चुचकसना-सं.,स्तनक आवरण-बन्धन। मै.

चुचकारब-क्रि., स्नेह प्रदर्शन ध्वनि सँ वश मे करब। मै.

चुचमलकी-विशे., उठल स्तन कें तानि कय उन्मत्त जकाँ रहनिहारि। मै.

चुः चुः-अव्यय, स्नेहक अव्यक्त ध्वनि। मै.

चुट्ट-विशे., क्षुद्रो धन कें चुट्टा जकाँ दाँत सँ पकड़ि रखनिहार कृपण। मै.

चुट्टा-सं., १. बड़का चुट्टी जे मुह सँ आघात करैछ। २. दू फालवाला कोनो वस्तु कें पकड़ैक लोहक अस्त्र। मै.

चुट्टी-सं., सूक्ष्म आ पैंघ डंक मारैवाला कीट। मै.

चुट-सं., चुट द' कटैवाला अत्यन्त मेंहीं दंशक जीव। मै.

चुटका-सं., १. गुण, विशेष प्रकारक औषध। प्रयोग–"औ! वैद्यजी अहाँ कोनो चुटका चलाउ जे झट द' हम निकैं भ' जाइ।" २. तान्त्रिक मान्त्रिकक विशेष रूपक प्रयोग। मै.

चुटकी-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी मध्यमा आङुरक मिलान कय बनाओल दरारिक मध्यक मान। प्रयोग–"समय पर गरीब कें एक चुटकी नोनो दुलर्भ रहै छै।" मै.

चुटकीमोर करब-क्रि., (लाक्षणिक) विवाह करब। चुटकी सँ सिन्दूर दान कयला सँ पुरुषक चुटकी लाल होएब। मै.

चुटकी चलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) तान्त्रिक मन्त्र मुद्रा द्वारा चुटकी बजा बजा कय रोग वा उफाँटि (भूत-प्रेत) छोड़बैक विधि करब। मै.

चुटकी मारब-क्रि., चुपचाप एकै छन मे लुप्त कए देब। जादू जकाँ एकै छन मे अलोपित करब। मै.

चुटकुला-सं., छोट छोट विनोदमय गप वा कथाक कल्पना। मै.

चुटचुट करब-क्रि., लगले लागल एम्हर सँ ओम्हर गतिशील रहब। मै.

चुटचुट काटब-क्रि., दंश करैवाला मेहीं जीवाणुक लगातार दंश करब, काटब। मै.

चुट द'-अव्यय, अलक्षित रूपें दंश करैक रूप। मै.

चुटपुटाएब-क्रि., बिना तेल घीक कोनो वासन मे पकाएब, भूजब, सिद्ध करब। मै.

चुटिया-सं., परसल आ नमहर टीक, शिखा। मै.
चुटुक्का-सं., पैघ परिमाणक चुटकी। मै.
चुड़लड़ू-सं., भूजल चुरा कें गुड़ मे सानिकय बनाओल लड्डू। मै.
चुड़िला-सं., केहुनी सँ उपर बाँहि सँ उपर पहिरैवाला काचक मोट चूड़ी। मै.
चुड़िहर-विशे., चूड़ी बेचैवाला व्यवसायी। मै.
चुड़िन-सं., स्त्री जातिक भूत। मै.
चुन्नी-सं., दलिहनक मेंही कणवाला दालिक भूसा समेत पशुक चारा। मै.
चुन्नूमुन्नू-विशे., धीयापूता। मै.
चुनगर-विशे., (लाक्षणिक) चून सँ पोतल घर आङनवाला धनिक। मै.
चुनचुनाएब-क्रि., एक संग अनेक ठाम देह कें कुड़िअब्वैक इच्छा होएब। मै.
चुनलाहा-विशे., नीक बीछिकय राखलवाला। मै.
चुनमुन-विशे., १. दुलारक योग्य । २. फरिच्छ। प्रयोग—"चिक्कन चुनमुन।" मै.
चुनरी-सं., रङि कय बनाओल पाढ़िवाला शाड़ी। मै.
चुनाएब-क्रि., बहुत मे बीछल जाएब। निर्वाचित होएब। मै.
चुनाओ-सं., निर्वाचन आ निर्वाचनक विधि। मै.
चुनियाएब-क्रि., १. पुरान वस्त्र वा कागज मे यत्र तत्र अपनै सूत उड़ने छेद जकाँ फटैक क्रम होएब। २. मेंही कुर्ता धोतीक विशेष स्थल मे मेंही घोंकचन देब। मै.
चुनेटब-क्रि., चून सँ रंगब पोतब। मै.
चुनेठल-विशे., चून सँ रङि कय चमकाओल। मै.
चुनौटी-सं., छोट सँ छोट चून रखैक वासन। मै.
चुप्पा-विशे., सदा चुप्पे रहनिहार। मै.
चुप्पी-सं., चुप रहैक वातावरण, मौनता। मै.
चुप-विशे., मौन। नहि बाजैक विषय। मै.
चुपका-विशे., चुपैचाप पहुँचाओल आ पहुँचल। मै.
चुपकी लाधब-क्रि., जटिल वा कोनो बात पर मौनता धारण कय लेब। मै.
चुपचुपौआ-विशे., लोकक आँखि वा ज्ञान सँ बचा कय गुप्त रूपें कयल क्रिया। मै.
चुपैचाप-अव्यय, चोरा नुका कय, गुप्त रूपें। मै.
चुबाएब-क्रि., कोनो वस्तुक रस कें गाड़ि कय वा यान्त्रिक प्रक्रिया सँ बहार करब। मै.
चुबाठ-सं., १. चुबैवाला निश्चित स्थान। २. चूला सँ बनल चिह्न। मै.
चुभब-क्रि., बिना घाइल कयने वा भेंसने गड़ब। (लाक्षणिक) मर्म कें छूअब। मै.
चुभकब-क्रि., अत्यधिक जलक्रीड़ा करब। पानि मे खेलाएब। मै.
चुम्बक/चुम्मक-सं., धातु कें खींचैवाला, अपना मे सटबैवाला लोह। सं. तद्भव/तत्सम
चुम्मन-सं., चुम्बन, स्नेह सँ मुह सँ मुहक सम्पर्क। सं. तद्भव
चुम्मा-सं., स्नेहक वा दुलारक कारणें मुह सँ मुहक सम्पर्क। मै.
चुम्माचाटी-सं., स्नेह सँ जीहक सम्पर्क करैत चुम्बन। मै.
चुम्मा चुम्मी-सं., परस्परक चुम्बन। मै.
चुम्मा लेब-क्रि., चुम्बन करब। मै.
चुमाएब-क्रि., विधि आ आवेश पूर्वक स्नेह प्रदर्शन एवं विशिष्टता सँ कल्याण कामना करब। मै.
चुमाओन-क्रि., विधि आ स्नेह भरल कल्याण-कामना। मै.
चुरकब-क्रि., रोकलौ पर अपनै कोनो स्रोत सँ शरीरक द्रव बहार होएब। मै.
चुरकाएब-क्रि., अनठेकान थोड़ेक थोड़ेक देहक द्रव बहार क' देब। मै.
चुरकी राखब-क्रि., माथक बीच पैघ केश राखब। मै.
चुरमुरा-सं., टटका अनेक प्रकारक भूजाक सम्मिश्रण। मै.
चुराइ-सं., १. चूर्ण बनवैक प्रक्रिया। २. (लाक्षणिक) कसि कय पीटैक चेष्टा। मै.
चुराठ-सं., चूरैक चिह्नवाला स्थान। मै.
चुरिया-सं., चूरा कूटैक लगबाही। मै.
चुरुक छानब-क्रि., बिना वासने जल पीबैक हेतु मुहलग हाथ कें कटोरी जकाँ बना कय ढारल जाइत जल कें घेरि कय पीयब। मै.
चुरुट-सं., धूम्रपानक मादक पदार्थ। मै.

चुरुक-सं., हाथक तरहत्थी आ आङुर मोड़ि बनाओल द्रव पदार्थ (जल आदि) धरैक आधार। मै.

चुरेठब-क्रि., १. लगातार चूराक भोजन कराएब। २. लातें मुक्कें चूरिकय मारब। मै.

चुरंया-सं., पिटान पड़ैक क्रम। मै.

चुल्हा/चुलहा-सं., पाक (भानस) क हेतु आँच लगबैक बनाओल घेरावाला साधन। मै.

चुल्हिचन-विशे., बूड़ि विशेष। एकर लक्षण हमर "ठहक्का" व्यंग्यकाव्य मे देखू।

चुल्हा पाछू बैसल बहु सँ
भानस खन जे गप्प करै छथि।
सदिखन मौगी जनिक खेलौना
जग मे चुल्हिचन से कहबै छथि॥

चुलचुलाएब-क्रि., चमड़ाक उपरी सतह पर पसरल रूपें रहि रहि कुड़ियबैक इच्छा होएब। मै.

चुलबुलाह-विशे., प्रियलगैवाला चञ्चलता सँ भरल। मै.

चुलबुलिया-विशे., चञ्चलता सँ काज कयनिहार। मै.

चुसकी लेब-क्रि., पेय वस्तु कें चाय जकाँ स्वादि स्वादि कय कनेक कनेक पीयब। मै.

चुसना-सं., दुधपीबा बच्चा कें स्तनपानक भ्रम देब। स्तनक भेंटकी जकाँ बनाओल रबरक वस्तु। मै.

चुहचुह करब-क्रि., स्वच्छ, फरिच्छ आ सुन्दरता सँ भरल होएब। मै.

चुहचुहिया-सं., रातुक अन्त मे सब सँ पहिनै बजैवाला पक्षी। मै.

चुहटब-क्रि., मुह सँ कसि क' रस खींचब। मै.

चुहार-विशे., देखितैं देखितैं अलोपित क' दैवाला चोर। मै.

चुहारि-सं., बियाएल महींस कें ओकरे दूध मे मिला कय पियबैक औषध। मै.

चुहेटब-क्रि., तितली आदि उड़ैवाला कीड़ा द्वारा सूँघ सँ फलक रस चूसब। मै.

चू

चू-सं., विशेष स्थान मे कटबैक हेतु नेन्नाक माथ मे छोड़ल जन्मक केश। मै.

चूअब-क्रि., बुन्नें बुन्ने कोनो रसक ससरि खसब। निःसरण होएब। मै.

चू उतरब-क्रि., छोड़ल नेन्नाक जन्मक केश काटब। मै.

चूक-सं., १. अम्मत सिद्ध रस। २. प्रमाद, गलती। मै.

चूकब-क्रि., निशान नहि बैसब, अवसर छूसल आ निष्फल होएब। मै.

चूच-सं., १. पैघ स्तन। २. बच्चाक मुह मे जाइवाला स्तनक भेटकी। मै.

चूटा-सं., बाबाजी सभक हाथ मे रहैवाला दू फालवाला लोहाक पत्रक अस्त्र। मै.

चूतिया-विशे., अविवेकी, अव्यवस्थित स्वभाववाला। मै.

चूड़ा-सं., माथक अलंकारक। सं. तत्सम

चूड़ामणि-सं., माथक अलंकारक रत्न। सं. तत्सम

चूड़ी-सं., काच वा लाह वा धातुक बनल बीच मे शून्यवाला स्त्री हाथक सौभाग्य सूचक गहना। मै.

चून-सं., लोका, सितुआक हड्डीक आ पाथरक क्षारीय श्वेत भस्म। मै.

चूनन-सं., अंगाक बहुँआक आगू भाग मेंही सिकुड़ा कय बनाओल शोभा। मै.

चूप करब-क्रि., कनैक बजैक वा दुःख मे सान्त्वना दय शान्त करब। मै.

चूमब-क्रि., १. हाथ सँ दूरक वस्तु पाएब। २. स्नेह सँ मुह मे मुह भिराएब। मै.

चूर्ण-सं., कोनो वस्तुक मेहीं गर्दी। मै.

चूर-विशे., १. बिना गर्दी कयल थकुचल मात्र। २. कोनो वस्तु मे मन सँ डूबल। प्रयोग—"जगदीश नव नव नौकरी पवितैं गौरवें चूर रहै छथि।" मै.

चूरन-सं., देखू—"चूर्ण"। सं. तद्भव

चूरब-क्रि., बिना मेंहीं कयनै थकुचब। मै.

चूरा-सं., विशेष विधि सँ धान कें चूरिकय बनाओल कोमल खाद्यान्न। मै.

चूरि-सं., देखू—"चूड़ी"। मै.

चूल्हि-सं., देखू—"चुल्हा"। मै.

चूसब-क्रि., रस खींचब। मै.

चूहा-सं., १. रतिचर पक्षी, मूस आ चिलहोरि। मै.

चे

चें-सं., शाररिक विकलता आ भय सँ उत्पन्न शिशुक शब्द। मै.

चेक-सं., १. वैभवक धनादेश। २. निरोध। अं. तत्सम ३. काटल माटिक पैघ खण्ड। मै.

चें करब-क्रि., दुर्बल जीवक व्याकुलताक ध्वनि होएब। मै.

चेकला-सं., १. चकला, दूर धरिक भूखण्ड। २. काटल माटिक स्थूल खण्ड। मै.

चेका-सं., काटल माटिक भारी अंश। मै.

चेकी-सं., १. कोदारिक परिमाणक काटल माटि। २. एक सै संख्याक शिवलिंगक एक समूह। मै.

चेकी चढ़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ईर्ष्या जगाएब, एक पक्ष कें उकसाएब। विरोध जगैक प्रेरणा करब। मै.

चेखा कय-अव्यय, मर्म भेदी बात कहि कय। मै.

चेखान-सं., पैघ आ भारी लागि छूटल भूखण्ड। मै.

चेखारब-क्रि., बात खोधि खोधिकय विवरण देब। मै.

चेघार-सं., फटै जोग वस्तु फाटक विस्तार। मै.

चेङना-विशे., छोट छोट बच्चा। प्रयोग-"कार्तिक गणपति दुइ चेङना।" मै.

चेङरा-सं., अत्यन्त छोट माछक समूह। मै.

चेङा-सं., अखाद्य माछ विशेष। मै.

चेचरा-सं., छोट माछ विशेष। मै.

चं चं करब-क्रि., १. चिकरब जकाँ अनेक लोकक बाजब। २. पक्षीक छोट बच्चाक ध्वनि करब। मै.

चेटी-विशे., सखी, नाटकीय सहायक पात्र विशेष। सं. तत्सम

चेंड़-सं., आरा सँ फाँक कयल काठ। मै.

चेत-विशे., सावधान, साकांक्ष। मै.

चेत करब-क्रि., चौंकस भेल सावधान होएब। प्रयोग-"चेत करू बाबा बिलाइ मारय मटकी।" मै.

चेतन-विशे., ज्ञान बुद्धिवाला लोक। मै.

चेतना-सं., आत्माक अभिन्न शक्ति। देहक संचार बुद्धिक स्फुरण। सं. तत्सम

चेतब-क्रि., पहिलुक अनुभव सँ आगू सतर्क रहब। मै.

चेताएब-क्रि., सावधान करब। सतर्क बनाएब। चुनौती देब। मै.

चेतान-सं., चेतवैक क्रम। मै.

चेथड़ा-सं., कपड़ा फाड़ल टुकड़ा। मै.

चेथड़ी-विशे., अनेक ठाम फाटल नूआ। मै.

चेथाड़-सं., कोनो वस्तु कें अव्यवस्थित रूपें छिन्न भिन्न करैक क्रम। मै.

चेथाड़ब-क्रि., बात कें तोड़ि तोड़ि स्पष्ट करब। मै.

चेन्ह-सं., परिचयक मूल, कोनो प्रकारक निशान आ अंक। सं. तद्भव

चेन्हा-सं., कोनो वस्तु पर देल विशेष अंक। मै.

चेन-सं., सोन चानीक झिन्झीरवाला गहना। अं. तत्सम

चेप-सं., कोदारिक छओ बराबरि माटिक खण्ड। मै.

चेपा-सं., हाथ सँ फेकै जोग पैघ गोला। मै.

चेफड़ी-सं., फाटल नूआ मे आन कपड़ा जोड़ल टुकड़ा। मै.

चेभाड़-सं., भोजनक द्रव पदार्थ सँ उचित सँ वेशी मुह हाथ मे लेप। मै.

चेभाड़ब-क्रि., अबोध नेन्नाक अज्ञान वश गुँह मूत कें सगरे लेपब। मै.

चें भों करब-क्रि., अनेक नेन्नाक कानब बाजब सँ कोलाहल करब। मै.

चेरा-सं., कुड़हरि सँ फाड़ल जारनि। मै.

चेरि/चेरी-विशे., टहलनी। सं., काठक छोट चेरा (जारनि) टहलनी। मै.

चेरु-सं., मुइल पशुक जाँघक जोड़वाला अंग। मै.

चेल्हबा-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

चेला-विशे., शिष्य। स्त्री० चेली। मै.

चेष्टगर-विशे., मन सँ शरीर धरि काजक योग्य। मै.

चेष्टा-सं., बुद्धि सँ शरीर धरि गतिशीलता चेतना। सं. तत्सम

चेहरा मोहरा-सं., आकार प्रकार। रूप रंग। हि. तद्भव

चेहरि-सं., कुड़हरिक चीरल नाम चाकर पैघ चेरा। मै.

चेहाएब-क्रि., सूतल अर्थात् निन्न सँ एकाएक चौंकि कय जागब। मै.

चेहैत चेहैत-अव्यय, महिसिक मैथुनक हेतु भैंसा कें बजबैक सोर करैक शब्द। मै.

चै

चैत-सं., चैत्र, चान्द्र मास विशेष। सं. तद्भव

चैतन-सं., चैतन्य। सुधिबुधि। सं. तद्भव

चैतावर-सं., चैत मासक निकटक वातावरण। मै.

चैतावरी-सं., चैत मे गबैक गीतक भास। मै.

चैतार-सं., चैत मासक प्रभाव। मै.

चैती-विशे., चैत मे होइवाला। मै.

चो

चोआ-सं., धूमन सँ चुवाओल द्रव (रस)। मै.

चोकटब-क्रि., सुखाकय सिकुड़ि जाएब। मै.

चोकटलहा-विशे., अत्यन्त चोकटल रूपवाला। मै.

चोकटाह-विशे., सुखयला पर सिकुड़ि जाइवाला। मै.

चोकटी-विशे., सुखाक' खपटी आ सिकुड़ल। मै.

चोकड़-सं., चालनि सँ चालला पर चिकसक छानल भूसा। मै.

चोकड़ि-विशे., असमय मे सुखा कय सिकुड़ल गुलगुल आम। मै.

चोख-विशे., १. तेज अस्त्र। २. अमतइ स्वादवाला खाद्य पदार्थ। मै.

चोखगर-विशे., १. रुचिगर, स्वादिष्ट खाद्य। २. तेजगर अस्त्र। मै.

चोखा-सं., अनेक रस आ मसाला मिलाकय बनाओल साना आ चटनी। मै.

चोखाएब-क्रि., शान चढ़ाएब, तेज बनाएब। मै.

चोङरा-सं., १. खण्ड कें जोड़िकय बनाओल खुट्टा। २. लहल चार कें तानैक हेतु नीचाँ देल टोंटा। मै.

चोङा-सं., १. बाँसक फाँकवाला पोर। २. बाबा जी सभक पहिरैक वस्त्र। मै.

चोङाबदल-सं., वेशभूषा आ विचारक हेरफेर। मै.

चोङी-सं., पातर बाँस, पाकल माटि आ द्रव्य बनाओल फाँकवाला छोट चोङा। मै.

चोंच-सं., पक्षीक लोल, लोल जकाँ बनल वस्तु। मै.

चोंचा-सं., गाछ मे लटका कय घर जकाँ खोंता बनबैवाला पक्षी। बया। मै.

चोट-सं., १. प्रहार। २. उचित वेर। ३. रुचि। प्रयोग—"असावधान मे शत्रु पर चोट करैक चाही। अहाँ वेरा चोट पर पहुँचलौं। आहू बड़ चोटगर भोजन भेटल। मै.

चोट खाएल-विशे., (लाक्षणिक) पूर्वक कटु अनुभव कयल। मै.

चोटगर-विशे., रुचिगर। मै.

चोट भुसुक-विशे., मारिक प्रहार सहन करै मे निपुण तथा अभ्यासवाला। मै.

चोटाएब-क्रि., चोट लगा कय जीवैत छोड़ब। मै.

चोटाएल-विशे., चोट मात्र दय कें छोड़ल। मै.

चोटाह-विशे., चोट लागल वस्तु। मै.

चोटियाएब-क्रि., निरन्तर आघात करब तथा थापड़ें थापड़ पीटब। मै.

चोटी-सं., १. पहाड़क उपरवाला शिखर। २. स्त्रीक केशक गूहल जुट्टी। ३. जुट्टीक बनल खोपा। मै.

चोत-सं., एकैठाँ कयल स्थूल मल। मै.

चोथब-क्रि., बात कें विस्तार करब आ विषय कें मथब। मै.

चोथू-विशे., बात कें तीरैत व्यर्थ बकैवाला। मै.

चोथौअलि-सं., बात कें व्यर्थ विस्तार करैत विवाद। मै.

चोदब-क्रि., पुरुषक मैथुन क्रिया करब। मै.

चोन्हरा लागब-क्रि., दुर्बलताक द्वारें आँखि नै सूझब। मै.

चोन्हा-विशे., आँखि जँतैत बारम्बार पल खसा कय देखैवाला। मै.

चोप-सं., १. ताड़ आ फुलबाँसक पातक डंटी कें थकुचि बहार कयल सोनक लच्छा। २. अनेर बारम्बार बहराइत बच्छाक लिङ्ग। मै.

चोपदार-विशे., हाथ मे कोररा राखि मेलाक लोक कें व्यवस्थित करैवाला। मै.

चोभब-क्रि., घूलल आमक रस कें कत्तौ छेद कय मुह सँ खींचब तथा एहन क्रिया कत्तौ होएब। मै.

चोभा मारब-क्रि., मुह लगाकय रस खींचैक आनन्द लेब। मै.

चोर-विशे., लोकक आँखि बचाकय चुपचाप कोनो क्रिया कयनिहार। मै.

चोर काँटी-सं., फर कपड़ा मे लागि जाइवाला घास। मै.

चोर कोड़बा-सं., घरक चार मे अलग सँ नीचाँ देल चार तनैवाला कोड़ो। मै.

चोरघट्टी-सं., सरलता सँ चोर सभक अबैक आ नुकाइक स्थान। मै.

चोरचहार-विशे., चोर आ चोरि करैक प्रवृत्तिवाला। मै.

चोरछप खेलाएब-क्रि., चोरि सँ टाइप सँ छापि छापि माछ मारब। मै.

चोरनी-विशे., चोरि करैवाली। मै.

चोरनुक्का-विशे., चोरानुका कय आन आ पठाओल वस्तु। मै.

चोरपनियाँ-विशे., विवाहक हेतु गेल वरक सासुर मे चतुर्थी धरि बराइतक ओतय सँ नाना प्रकारक पकवानक संग गौरी पूजाक सामग्री तथा चुपचाप वरक खाइक विशेष पदार्थ। ई प्रचलन मैथिल श्रोत्रिय समाज मे अछि। मै.

चोरपोटरी-विशे., वर अथवा कनियाँ के प्रथम यात्रा मे पैतृक सँ गेल नुकाकय खाइक सामग्री विशेष। मै.

चोरबत्ती-सं., टार्च लाइट। मै.

चोरबा-विशे., क्षुद्र चोरि करैक लतिवाला। मै.

चोरहो-सं., चोरि होइक अधिक प्रचलनक समय। मै.

चोरा-विशे., १. चोरि करै मे निपुण, चोरि करैक व्यवसायवाला। २. बिन कारण डाँर घाड़क पीड़ा। मै.

चोराएब-क्रि., लोकक आँखि बचा कय धन ल' भागब। मै.

चोरानुक्की-सं., धीयापूताक खेल विशेष। मै.

चोरि-सं., चोरबैक चेष्टा। मै.

चोरौआ-विशे., चोरि सँ अर्जित। मै.

चोला-सं., वेश भूषा, रूप रंग, शरीर। मै.

चोलाओ-सं., चूराक बनाओल पोलाओ। मै.

चोलाफेर-सं., रूप रंगक आ देहक परिवर्तन। मै.

चोली-सं., (संस्कृत) चूली। स्त्री देहक सट्टल आंगी। सं. तद्भव

चौ

चौ (दाँत)-सं., चिबबैवाला दाँतक समूह। मै.

चौअन्नी-सं., मुद्राक चारिम भागक सिक्का। मै.

चौआ-सं., चौ दाँत। मै.

चौआलीस-संख्या, चारि एकाँइ चारि दहाँइक अंक। मै.

चौए-सं., चौबे, चतुर्वेदी। उपाधि विशेष। मै.

चौक-सं., १. चारू दिशक वाटवाला स्थान। २. शुभ अशुभ कर्म कर्ता कें देबाक द्रव्य। ३. शुभ कर्मक स्थान पर लिखल अरिपन। मै.

चौकठा-सं., बाँहि पर उपर दिश पहिरैवाला चौखुट गहना। मै.

चौकठि-सं., केवाड़क लागि रखैवाला सक्कत मोट चारू कात साजल काठ। मै.

चौकठी-सं., चारू खूँट एकरंग चिह्नवाला लाल तासक रंग। मै.

चौकड़ी भरब-क्रि., कूदि कूदि टेढ़ गतियें भागब। मै.

चौकड़ी-सं., अनेक लोकक अनेक वार्ता करैक नियमित सम्मेलनक स्थान। मै.

चौकन्ना-विशे., चारू दिश सतर्क होइवाला। मै.

चौकन्हा-विशे., चारि कान्ह पर उठाओल वा तानल रहैवाला, सवारी। वेदी आदि। मै.

चौंकन-सं., चौंकि उठैक स्वभाव। मै.

चौकना-विशे., चौकोनी कोठी जकाँ मोट डाँट। मै.

चौकनो-(कोठी)-विशे., चारि कोनवाली बनाओल कोठी। मै.

चौक पूरब-क्रि., १. कर्ता आदिक हाथ मे द्रव्य देब। २. अरिपन लिखब। मै.

चौंकब-क्रि., अचानक देह सँ मन धरिक स्पन्दन होएब। मै.

चौंकस-विशे., सतर्क, जागरूक, तेज, सावधान। मै.

चौका-सं., पवित्र कयल भानस आ भोजनक स्थान। मै.

चौका-विशे., तासक पत्ती चारि अंक। अपन अंकवाला। मै.

चौंकाएब-क्रि., स्पन्दन जगाएब। चौंकैक अभ्यास लगाएब। मै.

चौंकान-सं., अधिक चौंकैक प्रकृति। मै.

चौकावर्तन-सं., भानसक स्थान आ वासन पवित्र करैक काज। मै.

चौकिया-सं., चौकीक आकारक स्थान। छोटकी चौकी। मै.

चौकियाएब-क्रि., जोतल खेत कें नाम, मोट, भारी आ कम चापट काठक पट्टी सँ सैर (समर्थार) करब। मै.

चौकी-सं., १. काठक पातर पट्टी (तख्ता) सँ बनल नाम चाकर ऊँच सूतैक साधन। २. खेत चौरस करैक पाटी। मै.

चौके-अव्यय, चारि गुने । प्रयोग–"दू चौके आठ ।" चौबर । मै.

चौकोन-विशे., एक रंग चारू कोनवाला । मै.

चौकोर-विशे., एके रंगक चारू कोरवाला । मै.

चौखड़ी-सं., नित्य युवक समाजक स्वच्छन्द सम्मेलन स्थान । चौपाड़ि । मै.

चौखण्डी-सं., चारू भाग ओसारावाला घर तथा चारि चारवाला घर एवम् चारू दिश एक रंग घर-वाला आङन आ आलय । मै.

चौखम्भा-विशे., चारि खम्भा पर टिकल घर, मण्डप । मै.

चौखुट-विशे., एके रंग चारू खूँट (कोन) वाला । मै.

चौगिर्द-सं., चारू कात (दिश) क समाजक स्थान । मै.

चौगामा-विशे., चारि गामक अवधिवाला । मै.

चौगेन-विशे., चारू दिशक अवकाशवाला स्थान । मै.

चौगोला-विशे., अनेक दलवाला समाज । मै.

चौघट्टी-विशे., चारू दिश सँ लोकक आवाजाहीवाला स्थान । मै.

चौघड़ी-अव्यय, सदिखन, चारू पहर । मै.

चौघरा-विशे., १. चारिये परिवारक समाजवाला । २. चारू घर सँ घेरल आलय, आङन । मै.

चौचारा-विशे., चारि चारवाला घर । मै.

चौचक-विशे., चारू दिश चौकन्ना होइत रहैवाला । चारूभर साकांक्ष रहनिहार । मै.

चौचङ्ग-विशे., सब प्रकारक काज सम्हारै मे व्यग्र । मै.

चौठ-सं., पक्षक चारिम तिथि । मै.

चौठचन्ना-सं., चतुर्थी चन्द्र पूजा (मिथिला पर्व) । मै.

चौठाइ-सं., चारिम भाग । मै.

चौठीचान-सं., भादव शुक्लक चतुर्थी चन्द्र । मै.

चौतहा-विशे., चतुर नारी । मै.

चौतार-विशे., पाछू लागल चारू दिश सँ ककरो खेहार । मै.

चौतारब/चौतार करब-क्रि., चारूभर सँ पाछू लागल खेहारब । मै.

चौंतीस-संख्या, चारि एकाँइ तीन दहाँइक अंक । मै.

चौथ-सं., उत्पादकक राजकीय चारिम भागवाला देय कर । मै.

चौदह-संख्या, चारि एकाँइ एक दहाँइक अंक । मै.

चौदिश-सं., चारू भरक समूह । मै.

चौधरी-विशे., १. दल वा समाजक प्रमुख । २. सामन्तीक उपाधि । मै.

चौपट-विशे., समाप्त, सत्यानाश, निस्तत्त्व । मै.

चौपड़ि-सं., जूआ खेलक प्रभेद । मै.

चौपत्ती-विशे., चारि पत्ता भेल आँकुर । मै.

चौपहल-विशे., चारू दिश अनेक चौरस धारीवाला गढ़ल । चारू कात चिक्कन कयल । मै.

चौपहला-विशे., चारूभर अनेक समधरि धारी रूपें गढ़लवाला तथा चारूकात चिक्कन चौरसवाला । मै

चौपाइ-विशे., चारू चरण (पाद) क मिलानवाला छन्द । मै.

चौपाड़ि-सं., १. छोट नेन्ना सभक पढ़ैक नियत स्थान । २. सत्संगक विशेष स्थान । मै.

चौपाला-सं., चौकोन काठक बत्ती सँ बनल सवारी कनियाक विदागरीक शीविका (डोला) । मै.

चौपेतब-क्रि., कपड़ा आदि कें तहें-तहें चौखुट रूपें मोड़ब । मै.

चौपेती-सं., चौपेंत कें छिटकै सँ बँचबैले बान्हि रखै-वाला डोरी । मै.

चौपेंट-सं., करघा मे बीनल कपड़ा चौपेतैवाला यन्त्र । मै.

चौफेंड़ा-विशे., चारि फेड़वाला (डारिवाला) । चारि मोट शाखा भरल । मै.

चौफेर-सं., व्यर्थ चारू दिश घूमैक प्रक्रिया । मै.

चौबट्टी-सं., चारू दिशक बाटक समूह । मै.

चौबटिया-विशे., चारू दिशक बाटवाला स्थान । मै.

चौबन्हा-सं., चारू दिश सँ बान्हल जाइवाला बन्धन (चारक माथीक कोड़ो मे देल जाइछ) । मै.

चौबन-संख्या, चारि एकाँइ पाँच दहाँइक अंक । मै.

चौबारि-विशे., चारू दिश बिना अढ़ कयल । सुरक्षा-हीन । चारू दिश सँ उपद्रव प्रभावित । मै.

चौबीस-संख्या, चारि एकाँइ दू दहाँइवाला अंक । मै.

चौमथ-सं., चारू दिश माथ वुरा कय देखैक योग्य स्थान। मै.

चौमास-विशे., चारि मास धरि बिना फसिलक जोतल राखल खेत। मै.

चौमासल-विशे., बरिसात जोति कोड़ि तैयार खेत। मै.

चौमासा-सं., १. गीतक प्रभेद। २. बरिसातवाला चारू साओन सँ कातिक धरिक मासक समूह। मै.

चौमुख-विशे., चारु भरक मुहवाला दीप आदि। मै.

चौमुहा-विशे., चारू दिशक द्वारवाला घर। मै.

चौमुहानी-सं., चारू दिशक मुह (वाट) वाला स्थान। मै.

चौमुही-विशे., चारू दिश मुहवाला वासन। मै.

चौँर-सं., १. दूर विस्तृत धन खेतीक भूमि। २. चामर। मै.

चौरचन-सं., मिथिलाक पर्व विशेष। चौठचन्द्र। मै.

चौरठ-सं., १. चाउरक पिसान। २. असिद्ध भात। मै.

चौरबी-सं., चाउरक चिकसवाला लड्डू। मै.

चौरभर-विशे., सीसक दाना मे भरल गुद्दा। मै.

चौरा-सं., १. छोटका बाध। २. छोट तुलसीक चबूतरा। मै.

चौराएब-क्रि., फसिलक दाना मे गुद्दा भरब। मै.

चौरानबे-संख्या, चारि एकाँइ नौउ (९) दहाँइक अंक। मै.

चौरासि-संख्या, चारि एकाँइ आठ दहाँइक अंक। मै.

चौरी-सं., विस्तृत धन खेतीवाला भूखण्ड। मै.

चौल-सं., धूर्तता, धूर्ता, हँसी ठट्ठा। मै.

चौसज्झा-विशे., चारि वा अधिक लोकक साझी। मै.

चौँसठि-संख्या, चारि एकाँइ छओ दहाँइक अंक। मै.

चौँसरि-सं., चारि लोकक मिलि क' क्रीड़ा। मै.

चौँसार-सं., अधिक लोकक खेलाइक स्थान। मै.

चौहत्तरि-संख्या, चारि एकाँइ सात दहाँइक अंक। मै.

चौहद्दी-सं., चारू कातक सीमा। उ. तत्सम

छ

छ-सं., तालु स्थानीय चवर्गक दोसर अक्षर। मै.

छऽ-संख्या, एक अंकक छठम अंक। मै.

छः-अव्यय, महींस परड़ू कें रोमैक आ हँकैक शब्द। मै.

छ अंगुरा-विशे., छ आङुरवाला। मै.

छइ-क्रि., छैक (स्थान व्यक्ति भेदें शब्द भेद)। मै.

छओ-सं., आघात। काटैवाला अस्त्रक प्रहार, चोट। प्रयोग—"एके छओ मे छागरक बलि पड़ैत छै।" मै.

छओ पाँच बूझब-क्रि., छल प्रपञ्च आ रहस्यक गूढ़ बात जानब। मै.

छक्का-विशे., छ अंकक चिह्नवाला तासक पत्ती। मै.

छक्का छोड़ाएब-क्रि., बारम्बारक उत्प्रेरणा सँ विकल बनाएब। मै.

छक्का पंजा-सं., गूढ़ बातक भेद। मै.

छक्काबीता-सं., मौगियाही खेल विशेष। मै.

छक्के-अव्यय, कोनो अंकक छ गुनें। मै.

छक-सं., द्रव वस्तुक पेय। मै.

छऽक-सं., नाकक बुट्टा, छोट नाकक गहना। मै.

छकछक-विशे., गरमाएल, तापयुक्त। मै.

छकछकी-सं., कनेक कनेक देहक ताप। मै.

छकट-सं., गाछक डारि पात कटैक क्रम। मै.

छकटब-क्रि., बढ़ल डारि पात कें एक रंगें काटब। मै.

छकड़ब-क्रि., काटल डारि पात कें छोट छोट कय टुकड़ा करब। मै.

छकड़ी-विशे., १. छकनिहार जन। २. छकबैक कलावाला लोक। ३ ६ दाँतवाला माल। मै.

छक द' लागब-क्रि., हृदय मे तथा जीह मे तीव्रताक अनुभव होएब। मै.

छकना-विशे., छाक पुरैक अनुसार पीबैवाला। मै.

छकनी-सं., पकवान छनैक पात्र। झाँझ। चाह आ दूध छनैक मेही भूरवाला कटोरी सन चालनि। मै.

छँकब-क्रि., इच्छानुसार पीयब। मै.

छकब-क्रि., बातै बात मे आ व्यवहार मे ककरो सँ पराजित होएब। मै.

छकरबाजी-सं., ग्राम्य नृत्य (नाच)। मै.

छकरन-सं., काटल डारि पातक ढेर। मै.

छकरा-विशे., हर लग्गू बच्छा। मै.

छक सन लागब-क्रि., जीह पर रस केर तेज प्रभाव पड़ब। मन मे बातक तीव्र अनुभव होएब। मै.

छक सँ भक होएब-क्रि., नीक करैत करैत अधलाह भऽ जाएब। मैं.

छकाएब-क्रि., धूर्ता मे परास्त करब। बुद्धिक विशेषता मे पछाड़ब। मैं.

छकाड़-सं., गाछक छकटल डारि पातक समूह। मैं.

छकान छकब-क्रि., बुद्धि आ धूर्तता मे अकाट्य रूपें हारि जाएब। मैं.

छकौआ-विशे., छकबैक कला मे कुशल। मैं.

छकौड़ी-विशे., १. (लाक्षणिक) छऽ कौड़ी मे कीनल जाइवाला। (टोना) २. छकबैक बुद्धि रखैवाला। मैं.

छग्यान-सं., अचानक चोट आ असम्भव शोक सँ मस्तिष्कक शून्यता आ बुद्धिक मूढ़ता। मैं.

छगरा गोत्र-सं., (लाक्षणिक) छागर पाटी जकाँ अपन पराक भेद नै रखैक बुद्धि। मैं.

छछकार करब/छछकारब-क्रि., अनेर समरे पानि हेरा कय पिच्छर बनाएब। मैं.

छछड़बाएब-क्रि., चिक्कनि माटि घोरि कय घरक माटिवाला अंग कें पोतबाएब, धोआएब। मैं.

छछनाएब-क्रि., १. अतृप्त होएब। २. अनावश्यक थोड़ काज ले अधिक पानि खर्च करब। मैं.

छछनाल-विशे., अनेर अधिक पानि हेरयला सँ गील बनला सँ स्थान गील। मैं.

छछलब-क्रि., बिना अपन अन्तरक प्रयासैं ससरब। मैं.

छछलाह-विशे., वेग सँ स्वतः ससरि जाइवाला तथा बिना प्रयासैं नीचाँ दिश अपनै अपनै ससरि जाइ योग्य। मैं.

छछार-सं., माटि घोरल पानि सँ घरक पोत। मैं.

छछारब-क्रि., माटि घोरल पानि सँ घर कें पोतब। मैं.

छछारी काटब-क्रि., १. भूइँ पर बैसले बैसल पोन घुसक'बैत चलब। २. (लाक्षणिक) बिना पानियैं पोन भूमि पर रगड़ि कय मल पोछि क' शौच करब। मैं.

छज्जा-सं., १. ताड़ आ खज्जूरक नाम नाम पात। २. कोठा मे झटकक पानि रोकैक हेतु देल पातर छप्पर। मैं.

छज्जी-सं., अस्थायी रुपक छाया करैले देल ताड़ खजूर वातक छाजन। मैं.

छजनी-सं., गाछ आ पहाड़क सब सँ उपरका भाग चोटी। मैं.

छजब-क्रि., मेल खाएब, कर्त्तव्यक औचित्य होएब। अनुकूल बनब। मैं.

छँट्टा-विशे., १. छाँटल। फरिच्छ बनाओल। २. समाज मे अधलाह दृष्टि सँ बीछल। मैं.

छटुम-विशे., छऽ संख्यावाला। मैं.

छटू-विशे., गुप्त ज्ञान भरल। कोनहुना फाँस मे नै पड़ैवाला। मैं.

छटकबाज-विशे., कोनो प्राकरैं पकड़ैं मे नै अबैवाला। बारम्बार हाथ सँ बहार भऽ जाइवाला। मैं.

छटगर-विशे., देखार होइ जोग, तरुणताक आभासवाला। मैं.

छट छट करब-क्रि., कड़ा रहैक कारणे हाथ सँ नहि पिचयवा जोग। असिद्ध बनल अन्न। २. तेजीक द्वारें अधिक गतिशील रहब। मैं.

छट द' उठब-क्रि., किड़ा होइक द्वारें हाथ सँ नहि पिचा क' छिटकि जाइवाला। मैं.

छँटनी-सं., बीछि कय बहुत में हटाएब। मैं.

छटपट करब-क्रि., शीघ्रताक हेतु व्यग्र रहब। मैं.

छटपटाएब-क्रि., व्यग्रता सँ चञ्चल होएब। मैं.

छटपटाह/छटपटिया-विशे., कोनो काज कें सम्पन्न करैले अधैर्य सँ चञ्चल रहनिहार। मैं.

छटपटी-सं., काज पुरबैक शीघ्रता भरल चञ्चलता। मैं.

छटा-सं., आकृतिक सौन्दर्य, छवि, आभा। सं. तत्सम

छँटाई-सं., १. नीक अधला बीछि कय अलग करैक क्रम। २. अस्त्र सँ कटै छँटैक क्रम। मैं.

छँटाओन-सं., १. अन्न स्वच्छ करैक प्रक्रिया। २. छँटबैक क्रम। ३. कार्यकर्ताक बहिष्कार। मैं.

छँटाक-सं., प्राचीन तौलक निम्नतम सोलहम भाग। मैं.

छटाकसन-अव्यय, अलक्षित रुपें। मैं.

छटाछटि-सं., १. (लाक्षणिक) अत्यन्त चञ्चलता। २. कठोर ग्रन्थिक चलन। मैं.

छटान-सं., बहुसंख्यक सँ किछु कें हटबैक क्रम। मैं.

छटाबक-विशे., अपन छविछटा सँ विलक्षणता भरल । मै.

छँटुआ-विशे., नीक छाँटि लेला पर बाँचल अधलाह वस्तु । मै.

छँटैया-सं., देखू—"छँटनी" । मै.

छट्ठी-सं., जनम सँ छठमा दिन पर बच्चाक होम' वाला विधि । छठियार । मै.

छट्ठीक दूध मन पाड़ब-सं., (लाक्षणिक) हीन हालति मे पहुँचा देब । प्रयोग–"वेशी फन फन करबह तँ छट्ठीक दूध मोन पाड़ि देबह । मै.

छठम-विशे., देखू—"छट्ठम" । मै.

छठमी-विशे., छऽ संख्या मे रहैवाली स्त्री । मै.

छठि-सं., १. कार्तिक शुक्ल षष्ठी तिथि मे सूर्यक विशेष उपासना पर्व । २. मैथिल विवाह पञ्जी प्रबन्ध सँ विचारल विवाहक प्रकरण मे कन्या वरक बीच छठम खाढ़ीक सम्बन्ध । मै.

छठियार-सं., देखू—"छट्ठी" । मै.

छठियारी-विशे., छठियारक उपयोगी, देय । मै.

छड़-सं., गोल पातर आ नाम काठ वा लोहक नमहर डंटा । मै.

छड़क्का-सं., छड़क आकार प्रकारक नमहर जीवित गाछ वृक्षक रूप । मै.

छड़गर-विशे., वेशी नाम आ पातर । मै.

छड़हा-विशे., छड़ जकाँ नाम गाछ । कुशियार । मै.

छड़ी ममरखा-सं., बाल रोगक जड़ी विशेष । मै.

छत्तर-सं., तात्कालिक कृत्रिम छाया । मै.

छत्ता-सं., रौद पानि सँ बचबैवाला गोलाकार हथ-लगू छत्र । मै.

छत्ती-सं., स्त्री जातिक उपयोगी छत्ता । मै.

छत्तीस-संख्या, छऽ एकाँइ तीन दहाँइक अंक । मै.

छत्र-सं., रौद वर्षा सँ बचै लेल तानल विशेष साधन । राजचिह्न । छत्ता । सं. तत्सम

छतनार-विशे., छत्ता जकाँ तानि पसरल डारि पात वाला गाछ । मै.

छतरी-सं., रौद पानि सँ बचैक लेल उपरक कृत्रिम अस्थायी आवरण । मै.

छति-सं., क्षति । हानि । सं. तद्भव

छतिया-सं., अधम प्रयोगक छाती । मै.

छतियाएब-क्रि., छाती सँ लगाएब आ सटाएब । मै.

छतिवन-सं., वनस्पति विशेष । मै.

छतीस-सं., जड़ी विशेष । मै.

छद्म-सं., छल । कपट । मै.

छदाम-सं., पुरनका मुद्राक लघुतम रूप । मै.

छन्द-सं., १. वेद । २. मात्राक नियम सँ बैसाओल स्वर । ३. विचार, ध्येय । सं. तत्सम

छन्न द' उठब-क्रि., धीपल वासन मे पानि पड़ने ध्वनि विशेष होएब । शुष्क होएब । मै.

छन्ना-सं., छितनाल छाँछ सँ छोट वासन । मै.

छन्नी-सं., १. बीच मे गहींर जकाँ छोट पसरल वासन । २. बहैत पानि मे माछ बझबैले लगाओल विशेष बीनल साधन । मै.

छन-सं., १. क्षण । २. स्त्रीगणक गहना विशेष । मै.

छनकट-विशे., विश्वास करैक अयोग्य । विश्वास-घाती । स्त्री० छनकटाहि । मै.

छनकब-क्रि., हाथक विशेष सइ सँ सूप द्वारा मिलल जुलल अन्न कें पृथक करब । मै.

छनका-सं., १. अनेक औषध मिलाओल गर्म पेय । २. खेत कें पटबै मे पानिक गति कें चढ़बैक अस्थायी क्यारी । मै.

छनगर-विशे., समय रखैवाला । ढेरी व्यर्थ समय बितबैवाला । मै.

छनगल-विशे., १. अतृप्त, भूखल । २. पूर्वानुभव सँ आतङ्कित । मै.

छनगा-सं., १. जड़ी बूटीक गरम कड़हा । औषध । २. अतृप्त रहैक अभ्यासवाला । मै.

छनछन बीतब-क्रि., अन्देशा भरल प्रतीक्षा मे एक एक क्षणक विशालताक अनुभव होएब । मै.

छनछनाएब-क्रि., १. लगातार पकवान आ तरकारी तरैक छन छन शब्द करब । २. कटल वा छीलल अंग मे उपरैं उपर तीव्र वेदना होएब । मै.

छनछनी-सं., १. कोनो वस्तु तेल मे तरैक शब्द । २. कमसम छीलल आ कटल पर स्वतः वा कोनो प्रकारें उपरक तीव्र वेदना । मै.

छनठा-विशे., छानि कऽ चरैले छोड़ल पशु । मै.

छनन मनन-सं., तेल मे विशेष रूपें तरकारी तरैक विन्यास । मै.

छनना-सं., द्रव पदार्थ सँ दूषित वस्तु वा पकवान आदि छनैक साधन (पात्र) । मै.

छननी-सं., छनैवाला छोट वस्तु। मै.

छन मे छनाक-अव्यय, एकै छन मे स्थितिक अधलाह रूपक परिवर्तन। फेरा। मै.

छन होएब-क्रि., चेतना शून्य होएब, पीड़ा सँ व्यामोह होएब। मै.

छनाइ-सं., १. छनैक प्रक्रिया। २. द्रव पदार्थ सँ स्थूल वस्तु बहार करैक क्रम। मै.

छनाक द' उठब-क्रि., धीपल तेल वा घी मे सरस वस्तुक पड़ला सँ शब्द होएब। मै.

छनि-क्रि., परोक्ष वस्तुक परोक्ष व्यक्ति वा समक्षक लोक लग होइक वर्तमान क्रिया। मै.

छनुआँ-विशे., तेल वा घी मे तरल छानल खाद्य। मै.

छनेक-अव्यय, एके छन मे भेल। तुरन्त। मै.

छनोटा-विशे., १. छानि क' चरैक अभ्यासवाला माल। २. पकवान आ तरकारी छनलाक उपरान्त बँचल घी वा तेल। मै.

छनौआ-विशे., तेल घी मे छनै योग्य खाद्य। मै.

छप्पन-संख्या, छ एकाँइ पाँच दहाँइक अंक। मै.

छप्पय-सं., भाषा काव्यक प्राचीन छन्द। मै.

छप्पर-सं., रौद पानि सँ बँचैले खढ़ पातक छायावाला घर। मै.

छप्पर छप्पर-अव्यय, पानि मे चलला सँ पैरक धपाड़क शब्द। मै.

छप्पा देब-क्रि., १. अपन घर द्वार मे शुभ सूचक सधवा द्वारा हाथक चिह्न देब। २. शाड़ी आदि वस्त्र पर विशेष चिह्न करब। मै.

छपकब-क्रि., अपना कें नुकबैक चेष्टा करब। मै.

छपकाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें नुकबैक चेष्टा करब।

छपकाह-विशे., बड़ नीचाँ अर्थात् निहुरि कय जाइ अबैवाला घर। मै.

छपकी-विशे., नुकाइक जोकर स्थान। मै.

छपकुनियाँ काटब-क्रि., नुकाइक क्रम मे अत्यन्त छोट बनि कय चलब। मै.

छपकू-विशे., हरदम निपत्ता रहैवाला नुकाएल रहैवाला। मै.

छपकौआ-विशे., नुका क' अबै जोग। मै.

छपछप-अव्यय, १. पानि पर हाथ पैर मारला सँ उठल पानिक ध्वनि। २. जाँघ धरि कपड़ा छूबैवाला पानि। ३. कैंची आदि अस्त्र सब सँ शीघ्र कट'वाला। मै.

छपटब-क्रि., वृक्षक अनावश्यक पसरल डारि पात काटि झारब। मै.

छपड़ब-क्रि., थोड़ पानि सगरे पसरब। मै.

छप द' डूबब-क्रि., अलक्षित रूपें पानि मे लीन भ' जाएब। मै.

छपन-सं., बात कें नुकबैक यत्न। मै.

छपना-सं., चित्र छापैक साँच। मै.

छपब-क्रि., १. तुलनाक क्रम मे मेल खाएब। २. एकक दोसरा मे लीन भ' जाएब। ३. यन्त्र द्वारा पुस्तकक अक्षर निखारल जाएब। ४. व्याप्त होएब। मै.

छपाइ-सं., पुस्तक छपैक क्रम तथा पारिश्रमिक। मै.

छपाएब-क्रि., मुद्रित करबैक क्रिया करब। मै.

छपाओन-सं., १. छपैक कार्यक्रम। २. छपैक बोनि। मै.

छपाक सन-अव्यय, देखू—"छपाक द'"। मै.

छपाट-सं., छपटि क' राखल। मै.

छपाटब-क्रि., साधारण रूपें गाछ कें डारि पात झारब। मै.

छपाठी-विशे., झारि काटि क' जमा कयल डारि पात। मै.

छपित-विशे., नुकाएल, प्रकाशित, मेल खाएल। मै.

छपुआ-विशे., चित्र छापि कय रंगल वस्त्र। मै.

छपोछप-अव्यय, वासनक आँटक अनुसार कानोकान। मै.

छपौनी-सं., छपबैक क्रम। छपैक कार्य। मै.

छबर छबर-अव्यय, नेन्ना भुटकाक चञ्चलता सँ सतत् अंगक चालन। मै.

छबरा-सं., माछक छोट बच्चाक समूह। मै.

छबाएब-क्रि., घर कें खढ़ सँ छराएब। (स्थान भेदें शब्द भेद।) मै.

छबाछटि-सं., कोनो वस्तुक आग्रह सँ लैक प्रवृत्ति। मै.

छबि-सं., अंग विन्यास, आकृति, आभा आ लावण्य। सं. तत्सम

छबीस-संख्या, छ एकाँइ दू दहाँइक अंक। मै.

छबेना-सं., ताड़ी चुबैक स्थान कें छीलैवाला अस्त्र। मै.

छमक-सं., चञ्चलता सँ कलापूर्ण चलन। मै.

छमकब-क्रि., अनका प्रिय लगैक द्वारें चञ्चलता सँ अंग चालन करब। मै.

छमका-विशे., (नेन्नाक हेतु) चञ्चलता प्रकृति द्वारें अधिक अंग चलबैवाला। स्त्री० छमकी। मै.

छमकाह-विशे., बीच बीच मे अनेर छमकि उठैवाला। स्त्री० छमकाही। मै.

छमकाएब-क्रि., बल सँ चञ्चल बनाएब। नीक वेश भूषा बना कें घुमाएब। लोकक बीच प्रदर्शन कराएब। मै.

छमकी-सं., अनका प्रदर्शन करबै ले अपन सजाओट। मै.

छमछम करब-क्रि., नीक वस्त्र आ गहना सँ अपना कें सजा कय लोक कें देखबै ले चञ्चलता सँ घूमब। मै.

छमसिया-विशे., छ' मासक बच्चा। मै.

छमाही-सं., छ' मासक मान। विशे., छमास पर होम' वाला। मै.

छय-सं., क्षय, विनाश। सं. तद्भव

छर्र द'-अव्यय, अत्यन्त वेग सँ बहार होइत। मै.

छर-सं., सोन आ चानीक सिकरी मे गूहल तारक तानी। मै.

छरका-विशे., अत्यन्त पातर अधिक नाम उपर उठल। मै.

छरकी-विशे., नीचाँ खसल अधिक नाम कम चाकर। मै.

छरछर बहब-क्रि., नहि रोकै जोग वेग सँ बहब। मै.

छरनि-सं., घरक मुख्य छार कें उपर अड़बैक हेतु सक्कत आ मोट खढ़क बिछाओन। मै.

छरनौती-विशे., घर छारैवाला विशेष बाती, खड़ आ जौड़। मै.

छरपटि छूठब-क्रि., अन्देशा भरल तीव्र व्यग्रता सँ व्याकुल होएब। मै.

छरपब-क्रि., कूदि कूदि भूमि नांघब। मै.

छरपा-विशे., छरपैक अभ्यासवाला। मै.

छरपा छरपी-सं., परस्पर छरपैक प्रतियोगिताक खेल। मै.

छरपान-सं., छरपैक विशेष प्रक्रिया। मै.

छररा-सं., गम्भीर चोट नहि करैवाला बन्दूकक गोलीक समूह। मै.

छररा छोरब-क्रि., तत्त्वहीन आ मिथ्या गप हाँकब। म.

छरहर-विशे., अपन रूप रंग आ देह दशाक द्वारें स्वतः सुन्दर तथा नवयुवक, ने मोट आ ने पातर। मै.

छरहा-विशे., एक मूड़ीवाला नमहर पातर। मै.

छराइ-सं., १. कोनो वस्तु कें छारैक (आवरण दैक) निरन्तर कार्य। २. छारैक पारिश्रमिक। मै.

छराएब-क्रि., देखू—"छबाएब"। मै.

छराओन-सं., घर छरबैक बोनि वा क्रम। मै.

छरान-सं., घर छारैक रूप। मै.

छरुआ-विशे., दोहरी आवरण पड़ल। मै.

छरेछाँट-विशे., अपना संग अनकौ सम्हारैवाला। मै.

छल्ला पड़ब-क्रि., अंगक उपरी चमड़ा उखड़ि जाएब। मै.

छल्ली लगाएब-क्रि., एक पर एक गेंटि क' राखब। मै.

छल्हिगर-विशे., छाल्ही सँ भरल। मै.

छल-सं., करैक किछु कहैक किछु बात। क्रि., रहए (भूतकाल)। मै.

छलओदार-सं., दूर धरि देहक चमड़ा बेलागि होएब। मै.

छलकल-विशे., उपर सँ छाटल छाल्ही कटल। मै.

छलकब-क्रि., भरल वासन सँ कनेको कम्पन भेला पर बहार भ' जायब। मै.

छलका-विशे., (लाक्षणिक) कोनो प्रसन्नता पर आवश्यकता सँ अधिक चञ्चल होम'वाला। मै.

छलछल-विशे., स्वतः नोर उमड़ि पड़ल। मै.

छलछलाएब-क्रि., चुपचाप आँखि मे नोरक प्रकट होएब। मै.

छल द'-अव्यय, अनायास छछलल जकाँ। मै.

छलना-सं., छल, कपट। मै.

छलनी-सं., अनलेख छेद आ घाओ। मै.

छलब-क्रि., कपट करब। लोक कें ठकब। मै.

छलमल करब-क्रि., हर्षक द्वारें अधिक चञ्चल बनब। मै.

छलरी-सं., मृत जीवक छोड़ाओल सरस चमड़ा। मै.

छलाएब-क्रि., ठकाएब, ठकल जाएब। मै.

छलाक-विशे., १. छल करै मे कुशल। २. बेलागि भ' क' उछलैवाला। मै.

छलाङ मारब-क्रि., ऊँच स्थान कें (सँ) कूदि जाएब। उँचें कूदि क' भागब। दूर सँ कूदब। मै.

छलिया-विशे., कपट व्यवहार मे चतुर। मै.

छलियाएब-क्रि., ढंग सँ वा छल्ली लगाकय राखब। मै.

छली-विशे., छल करैक बुद्धिवाला। मै.

छह-सं., पेट मे तीन रेखाक स्थूल मोड़। मै.

छहछह-अव्यय, पानि पर छहलैत जकाँ छोट जीवक ससरब। मै.

छहर-सं., बाढ़ि पानि कें रोकैवाला बान्ह। मै.

छहरदिवाली-सं., आलयक अन्तर कोनो जीव कें अबैक अवरोधक भीत। मै.

छहर महर-सं., अभावौ मे उत्साह आ उद्गार एवं उदारता सँ खर्च। मै.

छहराएब-क्रि., छाहरि मे बैसि विश्राम करब। मै.

छहलब-क्रि., अनायास स्नेह द्रवक सहायता सँ वेगें छछलि जाएब। मै.

छहलाह-विशे., चिक्कन, स्निग्ध आ ढलान रहैक द्वारें अनायास वेग सँ छछलि जाइवाला स्थान। मै.

छही-सं., छोट माछ विशेष। मै.

छहोछित्त-विशे., अनेक टुकड़ी टुकड़ी भ' क' छिड़ियाएल। मै.

छहोरा-सं., स्थूल खर्जूर पिण्ड। सुखाएल फल। मै.

छा

छाइ-सं., पथरकोइलाक छाउर। मै.

छाँइत-विशे., (केवल आगिक हेतु) शान्त, मिझाएल। मै.

छाउर-सं., राख, भस्म, जरल वस्तुक रूपान्तर। मै.

छाएब-क्रि., पसरब, पसारब, व्यापब, व्याप्त होएब। मै.

छाँक-सं., किछु पीबैक तृप्ति। मै.

छाँकनि-सं., बारम्बार पीबैक वस्तुक सेवन। मै.

छाँकब-क्रि., पीबैक वस्तुक तृप्ति सँ पीयब तथा पेय वस्तुक प्रस्तुतीकरण करब। मै.

छाकी-सं., तृप्ति होएब धरि निरन्तर पीयब आ पियाएब। मै.

छागर-सं., बकरीक पुरुष बच्चा। मै.

छाँछ-सं., उत्थर, पसरल पैघ दही पौरैक वासन। एकर छोट रूप छाँछी कहबैछ। मै.

छाजन-सं., १. पहिरै ओढैक तथा देह झँपैक वस्त्र। २. घरक छार। मै.

छाँट-सं., बमन, बोकार। मै.

छाट-सं., १. धान सँ चाउर कें फरिच्छ करैक प्रक्रिया। २. बहुत सँ अधलाह वस्तुक निकास। मै.

छाँटनि-सं., चाउर कें अधिक फरिच्छ बनबैक हेतु विशेष कूटैक प्रयास। मै.

छाँटब-क्रि., १. बहुत सँ अधलाह कें बीछिक' अलग करब। २. अन्न कें चिक्कन करैले अधिक कूटब। मै.

छाँटि-विशे., अलग कयल निसरल वस्तु विकरी सँ बाँचल वस्तु। मै.

छाड़ब-क्रि., त्यागब, एक कें छोड़ि दोसर धारण करब। मै.

छाड़ीबारी-विशे., निरसि क' त्यागल नूआ आदि। मै.

छात्र-सं., शिष्य। स्त्री० छात्री। सं. तत्सम

छात-सं., कोठाक उपरका भाग। मै.

छाता-सं., रौद पानि सँ बँचबैक साधन। मै.

छाती-सं., वक्षःस्थल, हृदय। (लाक्षणिक) स्तन। सं. तत्सम

छादन-सं., आवरण। सं. तत्सम

छान्ही-सं., घरक उपरका भाग। मै.

छान-सं., पशुक दुहू पैरक बन्धन। मै.

छान तोड़ब-क्रि, १. (लाक्षणिक) उत्कट इच्छाक द्वारें नियम भङ्ग करै पर लागब। २. बन्धन तोड़ि क' पड़ाइ पर रहब। मै.

छानब-क्रि., दू पैर कें बान्हि पशु कें गति रुद्ध बनाएब। मै.

छानि मारब-क्रि., यत्र तत्र ताकि हारब। मै.

छानी-सं., उपरक भाग, शिखर। मै.

छाप-सं., चिह्न, अनुकृति, एकरुपता। मै.

छापब-क्रि., १. मुद्रित करब। २. घेरिकय अधिकार राखब। ३. चित्रित करब। ४. चिह्न देब। छाया निखारब। मै.

छापर छूपर-विशे., अनेक ठाँ थोड़ थोड़ पानि। प्रयोग—"चमराक डाबर डूबर छापर छूपर पनियाँ" —जटा जटिन। मै.

छापा-विशे., यन्त्र आ काँटा सँ निखारल पुस्तक आदिक अक्षर आदि। मै.

छापा करब-क्रि., कोनो वस्तुक साँच द्वारा अंकित करब। मै.

छापाखाना-सं., छापा करैक यन्त्रशाला। मै.
छापी-सं., चित्र, फोटो, तसवीर। मै.
छाबा-सं., ठेङ्हुन सँ नीचाँ घुट्ठी सँ उपर पाछू दिशक गुदगर अंग। मै.
छाया-सं., कोनो वस्तुक छाँह। प्रकाश शून्य सम्पूर्ण रूपक चिह्न। मै.
छार-सं., १. क्षार। २. घर पर छारैक हेतु खढ़क पसार। मै.
छारतक-विशे., घोड़ाक चालि (दौड़) क प्रभेद। मै.
छारन-सं., नदीक बीच दीयर भेला सँ एक दिश प्रवाहहीन धार। मै.
छारब-क्रि., खढ़ आदि सँ घरक छादन करब। मै.
छारा-सं., चूड़ जकाँ पातर पातर अनेक टाक संग एक काड़ा जकाँ गहना। मै.
छारी-सं., १. सतत् छारैक क्रम। २. (विशे.) छारल पुरान कपड़ा। मै.
छारीबारी-विशे., त्यागल पुरान वस्तु कें अनका देबा योग्य बना निहुछल। मै.
छाल्ही-सं., औंटल दूधक उपर जमल तत्त्ववाला परत। मलाइ। मक्खन। मै.
छाल-सं., जीवक चमड़ाक उपरी भाग। मै.
छाँह-सं., १. छाया। २. रूप आ प्रकृतिक अनुकरण। ३. प्रकाशरोधक वस्तु। मै.
छाहब-क्रि., १. मिलल अनेक वस्तु कें अलग करब। २. चिह्न लगाएब। मै.
छाहरि-सं., गाछ घर सभक सघन छाया। मै.
छाँहिबाँहि-अव्यय, यत्र कुत्र, अनठेकान। मै.
छाही-सं., छाया बनबैक उपाय, वस्तु। मै.

छि

छिः-अव्यय, जुगुप्सा आ निन्दाक ध्वनि। मै.
छिक्का-सं., मुह आ नाक देने एक संग शब्द सहित वेग सँ वाष्पक निकास। मै.
छिकान-सं., अधिक आ उच्च स्वरे छीकैक शब्द। मै.
छिकार-विशे., उपयोग सँ बचलहा। मै.
छिकान छीकब-क्रि., कोनो आरम्भ मे छीकिक अशुभ करब। मै.
छिकाँस लागब-क्रि., छिक्काक वेग होएब। मै.
छिगरीतान-विशे., अनेक बात आ काजक सम्पादनक व्यग्रता सँ आकुल। मै.
छिच्चा-सं., आधा सिञ्चन प्रक्रिया। मै.
छिचब-क्रि., सिचन करब। मै.
छिछराह-विशे., बातक अव्यवस्थावाला। मै.
छिछरी पटिया उठब-क्रि., कोनो वस्तुक आवश्यकता द्वारें व्याकुलता होएब। मै.
छिछियाएब-क्रि., व्यग्रता सँ सब तरि बौआएब। मै.
छिछोर-विशे., खेलक्कर, बाल बुद्धिवाला। मै.
छिट्टा-सं., १. छितनाल आ गहींर बाँसक बीनल पैघ वासन। २. विशे.-कत्तौ कत्तौ, पातर छीटल बीआ। मै.
छिटक-विशे., एवं क्रि., आँखि बचा क' ल' जाइवाला। प्रयोग—"आँखिक मटक लय छिटक।" मै.
छिटकनी-सं., केवाड़ कें भीतर सँ बन्न करैक लोहक पेंच। मै.
छिटकब-क्रि., १. चोरा क' भागब। २. अप्रत्याशित भ' क' उछलि जाएब। मै.
छिटका-सं., उड़ि उड़ि क' पड़ैवाला बिन्दु। मै.
छिटकाएब-क्रि., उड़ाएब, भगाएब, चलाएब, खोलब। मै.
छिटकाह-विशे., अनायास गतिवाला। चारू दिश अनेर उड़ैवाला, वेर पर नुका रहैवाला। मै.
छिटकिल्ली-सं., छिटकौला सँ खूजैवाला किल्ली। मै.
छिटकी-सं., १. केवाड़ खिड़की बन्न करैक हेतु काठक घुमबैवाला कील। २. पैर मे पैरक वेग द' क' खसाएब। मै.
छिड़का-सं., पातर बुन्नक सिञ्चन। मै.
छिड़काएब-क्रि., पानि आदि छींटब। मै.
छिड़काह-विशे., स्वयं छिड़िया जाइवाला। मै.
छिड़की-सं., छीटैक प्रक्रम। मै.
छिड़ब-क्रि., बझब, पसरब। (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.
छितनार/छितनाल-विशे., मुह पसरल पेन साँकरवाला वासन। मै.
छितनाह-विशे., उपर मुहक वेशी फैलगर। मै.
छितनी-सं., उपर फैलगर नीचाँ साँकर छोट वासन। मै.
छितरब-क्रि., छिटकल जकाँ पसरब। मै.
छितरल-विशे., मुह दिश वेशी फैलल। मै.

छितराएब-क्रि., चारू दिश छीटल होएब। मै.

छितराह-विशे., चारू दिश पसरल होइवाला। मै.

छित्तिर बित्तिर/छिती बित्ती-विशे., छिटल एवं छिरियाएल। मै.

छित्ते छै-क्रि., छैके, अछिये। (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.

छिद्र-सं., भूर, छेद। सं. तत्सम

छिदकी-सं., बिना आर पारक छेद। मै.

छिदराह-विशे., छेद जकाँ बनल खोधर। मै.

छिन-सं., छन, क्षण। मै.

छिनगब-क्रि., अकस्मात् क्रोध भ' उठब। मै.

छिनता-सं., क्षीणता, रोग विशेष। मै.

छिनता ताकब-क्रि., छिद्रान्वेषण करब। दुर्बलताक जड़ि ताकब। मै.

छिनभिन करब-क्रि., टुकड़ी टुकड़ी कय दूरि करब। मै.

छिनरपन-सं., काम वासनावाला चालि। मै.

छिनरा-विशे., वासना वृत्ति सँ अधम। मै.

छिनाएब-क्रि., छीनल भ' जाएब। मै.

छिनार-विशे., अधिक मैथुन प्रवृत्तिवाला। स्त्री० छिनारि। मै.

छिनाह-विशे., चारि कोन मे एक कोन बढ़ल। चारुकोन नहि मिलल। मै.

छिनुआ-विशे., छीनि क' आनल। मै.

छिप्पी-सं., सब सँ आगू उपरका भाग। मै.

छिपकब-क्रि., नुकाएब। मै.

छिपकान-सं., गुप्त भ' क' रहैक चेष्टा। मै.

छिपकाह-विशे., १. नुका रहैवाला। २. चोरवैवाला। मै.

छिपगर-विशे., अधिक नमहर उपरका भागवाला। मै.

छिपब-क्रि., १. अपना दिश खींचब। २. लोकक आँखि बचा क' चोराएब। ३. नुकाइक चेष्टा करब। मै.

छिपली-सं., छोट थारी। मै.

छिपाएब-क्रि., नुकाएब। मै.

छिपाठ-विशे., छिप्पी दिशक बाँस वा लकड़ी। मै.

छिपाठी-विशे., आगू भागक लकड़ी वा बाँसक वस्तु। मै.

छिपान-सं., गुप्त रहैक विधि। मै.

छिपार-विशे., चुप्पैचाप पार क' लैवाला। प्रयोग—"चोरक धन छिपार खाय।" मै.

छिम्मड़ि-सं., अन्नक दानाक कोश। केराक एक प्रति। मै.

छिम्मी-सं., केराक एक एक रूप। मै.

छिमड़ा-सं., काँच छिम्मड़ि। मै.

छिमरी-सं., अजोह केराक छिम्मड़ि। मै.

छिया-सं., घृणा व्यञ्जक शब्द। मै.

छिरक-सं., देखू—"छिच्चा"। मै.

छिरकन-सं., सिञ्चन। मै.

छिरहरा खेलाएब-क्रि., उपेक्षा रखैक प्रवृत्ति राखब, जिम्मेदारी लैयो के ध्यान नै देब। मै.

छिरियाएब-क्रि., १. चारू दिश छिटब। (हि.) बिखेरब। प्रयोग—"दाई लाबा छिरियाउ, बाबू बीछि बीछि खाउ। विवाह लोक गीत।" २. अनुरोध पूर्वक विरोध करब। उपरैं उपर विरोध करब। मै.

छिरियाह-विशे., १. स्वतः सबठाँ छीटल होइवाला। २. बात बात मे रूसैक रूपें विरोध करैवाला बच्चा। मै.

छिरियैनी-सं., छिरियाइक स्वभाव। मै.

छिलला-विशे., कोनो वस्तुक छिलला सँ एकठाँ कयल घास। मै.

छिलक-सं., कानोकान वासन भरल रहैक कारणें उपर सँ उछलि खसैक रूप। मै.

छिलकन-सं., वासनक उपर सँ उछलि खसब। मै.

छिलकब-क्रि., वासनक उपर सँ द्रवणशील वस्तुक उछलब। मै.

छिलका-सं., कोनो वस्तुक उपरक छाल। मै.

छिलकोइआ-क्रि., गुद्दा बहार कयला पर बिन टूटल खोंइचा। मै.

छिलना-सं., छीलैक साधन। मै.

छिलमिली छूटब-क्रि., कोनो वस्तुक व्यग्रता सँ अकस्मात् अशान्त होएब। मै.

छिलाइ-सं., छीलैक क्रम, छीलैक बोनि। मै.

छिलाएब-क्रि., छीलैक काज कराएब। मै.

छिलान-सं., छीलैक प्रक्रिया। मै.

छिलुआ-विशे., छीलि कय आनल। छीलि कय चिक्कन कयल। मै.

छी

छी-क्रि., (रहब) अपना हेतु त अत्यादर मे अर्थात् प्रथम एवं उत्तम पुरुषक वर्तमान क्रिया। मै.

छीआ-अव्यय, देखू—"छिया"। मै.

छींक-सं., नाक मुह मिलल द्वारा हठात् वाष्प निकासक ध्वनि। मै.

छींकब-क्रि., नाक मुह वाटें अचानक वेग सँ वाष्प निकास होएब। मै.

छींचा-सं., देखू—"छिच्चा"। मै.

छीछा लेदर करब-क्रि., अनुचित आलोचना करब। खाली दोषे टा उघारब। मै.

छीज-सं., नीचाँ खसला पर विनाश। मै.

छीजब-क्रि. अपन स्थान सँ नीचाँ आबि प्रभावहीन भ' जाएब। मै.

छींट-विशे., रंग बिरंग छापीवाला वस्त्र। मै.

छीट-विशे., तौल आ नाप सँ थोड़ बचल। मै.

छीटन-सं., छीटैक क्रिया सँ विकिरण। मै.

छीटब-क्रि., चारू दिश पदार्थ कें छोड़ब, बिखेरब। मै.

छीटा कसब-क्रि., (लाक्षणिक) बातचीत मे कोनो विषय मे ककरौ पर दोषारोषण करब। मै.

छीन-विशे., १. फेरा, एक मात्र रहैवाला भत्ता। प्रयोग—"स्त्रीगण कें एक छीन कपड़ा नहि पहिरैक चाही।" २. क्षीण। मै./सं. तद्भव

छीनब-क्रि., विरोधो कयला पर बलपूर्वक ल' लेब। मै.

छीनाओछरी-सं., एक दोसरा मे परस्पर बल सँ ल' लैक प्रयास एवं चेष्टा। मै.

छीना काटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बहाना कय बचैक प्रयास करब। २. कातें कात पड़ाइक प्रयास करब। मै.

छीप-सं., माछ मारैक हेतु सक्कत बन्सीक लग्गी (डन्टा) करीन बन्हैक बाँस। सब सँ उपरक भाग। मै.

छीपब-क्रि., १. अपना दिश खींचब। २. लोकक आँखि सँ अपना कें बचाएब। मै.

छीपा-सं., पैध थारी। मै.

छीर-सं., क्षीर, दूध वा पानी। मै.

छीलब-क्रि., कोनो वस्तु कें मूलक उपर सँ बेलागि करब। मै.

छीह काटब-क्रि., नुका कय भागल फिरब। मै.

छुआएब-क्रि., १. कोनो वस्तु कें कोनो वस्तु सें भिराएब। २. अशुद्ध होएब। मै.

छुइमुई-सं., लजविजी खढ़। लाजें सुकुचल। मै.

छुकछुक-अव्यय, रेल इञ्जिनक शब्दक अनुकरण। मै.

छुच्छ-विशे., सुन्न, वस्तुहीन, बिना कथूक मिलल। मै.

छुच्छी-विशे., दुषित विचारवाली स्त्री। अनादरक प्रयोग। मै.

छुच्छुन्नर-सं., मूसक आकारक दुर्गन्ध करैवाला जीव (लाक्षणिक) चरित्र आ विचारक अधम स्त्री० छुच्छुन्नरि। मै.

छुच्छुन-विशे., उचित रुपरेखा मे नै परिछै (मिलै) वाला। ओछ। मै.

छुछका-विशे., खलियाहा वासन। बिना कथुक मिललवाला। मै.

छुछरी/छुछरू-सं., पुरुष नेन्नाक मूत्र मार्ग। मै.

छुछुआएब-क्रि., निरर्थक मृग तृष्णा आ दृष्टि वासना सँ बौआएल फिरब। मै.

छुछुआएल फिरब-क्रि., कुदृष्टि सुखलेल यत्र तत्र धूमैत रहब। मै.

छुछून-विशे., देहक अनुसार छोट। मै.

छुट्टा-विशे., १. अलग कयल। २. डंटी लागल पान। ३. बिन शासनक लोक। मै.

छुट्टी-सं., काजक भार सँ मुक्ति। मै.

छुटकारा-सं., कोनो वस्तु सँ सब दिन ले मुक्ति। मै.

छुटछुट-विशे, खुजैक स्थिति मे रहैवाला। मै.

छुटछुटाह-विशे., ढील रहैवाला, खूजल। मै.

छुटता-विशे., छुटल रहैवाला। मै.

छुटता-विशे., शीघ्र छोड़ाओल जाइवाला। मै.

छुटता-विशे., छुटै छुटै पर रहैवाला। छुटि क' चलि दैवाला। मै.

छुटाहुल-विशे., मुक्त, स्वतन्त्र, सब काज सँ निश्चिन्त। मै.

छुत्ती-सं., खेलाइत नेन्ना सभक थोड़ समय ले खेल सँ बहार होइक शब्द। मै.

छुतक-सं., अशौच। अशुद्धि। मै.

छुतका-सं., मरणाशौच। कोनो अशुद्धि। मै.

छुतब-क्रि., १. सम्पर्क सँ अशुद्ध होएब। २. (लाक्षणिक) रजस्वला होएब। मै.

छुताएब-क्रि., दूषित कय कें छोड़ब। अपवित्र करब। शारीरिक सम्पर्क सँ अशुद्ध बनाएब। मै.

छुद्र-विशे., क्षुद्र। ओछ बुद्धिवाला। सं. तद्भव

छुदरपन-सं., छोट छोट वस्तुक हेतु लोभ, अधलाह भावना। मै.

छुदराह-विशे., छोट विचार एवं स्वभाववाला। मै.

छुदराहा-विशे., समाज मे नामी क्षुद्र स्वभावक लोक। मै.

छुधा-सं., क्षुधा, भूख। सं. तद्भव

छुधाएब-क्रि., भूख सँ व्याकुल होएब। मै.

छुधी-सं., आधुनिक मुद्राक सब सँ छोट एकाँइ। मै.

छुबब-क्रि., स्पर्श करब। चमड़ा सँ संयोग करब। मै.

छुबाएब-क्रि., अन्न कें खापड़ि मे द' क' कनेक गरम करब। मै.

छुमछुम-अव्यय, ताल लय पर पैर आ पैजनीक ध्वनि। मै.

छुरछुरिया/छुरछुरी-सं., रासायनिक पदार्थ सँ बनाओल विस्फोटक खेलौना। मै.

छुरछुराएब-क्रि., धारा रूप मे मल मूत्र बहराएब। मै.

छुरिया-विशे., छूरीक आकारवाला। मै.

छुरुक्का-सं., लम्बाकार भ' क' द्रव पदार्थक वेगें निकास। (मल, मूत्र आ शोणितक)। मै.

छुरुक्का-विशे., एके मूड़ी सँ वेगें उपर दिश बढ़ैवाला। मै.

छुलछुल करब-क्रि., नामेक डर सँ मूतैक स्थिति भ' जाएब। मै.

छुलछुल मूतब-क्रि., वेर वेर मूतैक वेग होएब। मै.

छुल द'-अव्यय, अचानक वेग सँ मूतीक निकास। मै.

छुलहा/छुलाह-विशे., (अनादर मे) क्षुद्र क्षुद्र वस्तु कें देखितें अभिलाष करैवाला। मै.

छुह छुह करब-क्रि., चञ्चलता सँ लुब्ध दृष्टियें परिवेश मे एम्हर ओम्हर करैत रहब। मै.

छुहिया-विशे., कदोआ करैक उपयोगी वेशी नाम थोड़ चाकरक हर। मै.

छू

छू:-अव्यय, महींस आदि माल भगबैक शब्द। मै.

छूआछूति-सं., १. अस्पृश्यक स्पर्श सँ अशुद्धता। २. संक्रामक रोग। मै.

छूछ-विशे., १. एकांग। २. निःसार। प्रयोग—"छुच्छे रोटी। छुच्छे लोटा।" मै.

छू छू करब-क्रि., छुछुन्नरि जकाँ अनेर सगेर घूमैत रहब। मै.

छू छू गाड़ी-सं., रेलगाड़ी। मै.

छूटब-क्रि., आवेग होएब। मुक्त होएब। गतिशील (चलि पड़ब) होएब। मै.

छूटि-सं., मुक्ति, अधिकता। मै.

छूटि छूटब-क्रि., १. व्यग्रताक आवेग होएब। २. लक्ष्य दिश एक पर एक तेजी सँ दौड़ब। मै.

छूटि छोड़ाएब-क्रि., पतिकरनी क्रिया सँ अनिच्छापूर्वक कोनो वस्तुक उत्तरदायित्व निभाहब। मै.

छूत-विशे., अस्पृश्य, अशुद्ध। मै.

छूति-सं., अस्पृश्यक स्पर्श सँ भेल दोष। मै.

छून-विशे., तुलना मे छोट भेनिहार, ओछ। मै.

छूब-क्रि., स्पर्श करब। मै.

छूबब-क्रि., देखू—"छूअब"। मै.

छूरा-सं., एक बीतक घातक अस्त्र। मै.

छूरी-सं., बहुत छोट करची कटैवाला अस्त्र। मै.

छूह उड़ियाएब-क्रि., एकै छन मे हाथैं हाथ बिकाएब। मै.

छूही-विशे., आगू दिश क्रमशः पातर होम'वाला नाम वस्तु। मै.

छे

छेआनबे-संख्या, छ एकाँइ नौ दहाँइक अंक। मै.

छेआलीस-संख्या, छ एकाँइ चारि दहाइँक अंक। मै.

छेआसठि-संख्या, छ एकाँइ छ दहाँइक अंक। मै.

छेआसी-संख्या, छ एकाँइ आठ दहाँइक अंक। मै.

छेक/छेकन-सं., कोनो वस्तु कें अस्थायी रूपें रोकि रखैक साधन। मै.

छेकनिहार-विशे., छेकि रखैवाला। मै.

छेकब-क्रि., कथुक वेग वा गति कें रोकैक प्रयास करब। मै.

छेका-सं., कोनो विशेष कार्य ले कोनो वस्तु कें रोकि रखैक विधि। मै.

छेकाइ-सं., देखू—"छेका"। मै.

छेगाएल-विशे., विकट अनुभव कयल। मै.

छेटगर-विशे., यौवन मे आएल। नमहर सन भेल। मै.

छेंट ताकब-क्रि., छिद्रान्वेषण करब। बहाना खोजब। मै.

छेंड़ि फूटब-क्रि., १. छागर कें लिंग प्रकट होएब। २. (लाक्षणिक) काज पर काज अप्रत्याशित रूपें जागब। मै.

छेड़ी-सं., बकरी जाति। मै.

छेद-सं., भूर, बिल। सं. तत्सम

छेदगर-विशे., अधिक छेदवाला। मै.

छेदन-सं., काटब, छेद करैक क्रिया। सं. तत्सम

छेदना-विशे., छेद करैक अस्त्र। मै.

छेदब-क्रि., काटब, भूर करब। मै.

छेदाइ-सं., छेद करैक क्रम एवं बोनि। मै.

छेदान-सं., पैघ भूर, भूर करैक विशेष प्रक्रिया। मै.

छेदाभेदा-सं., अनगनित छागरक बलि। मै.

छेदाह-विशे., छेद सँ भरब। मै.

छेदुआ-विशे., छेद कयलवाला। मै.

छेप/छेपन-सं., अपना सँ लागि रखैत फेंकैक वस्तु। सं. तद्भव

छेब/छेबन-सं., मूल काठक उपरक असार कें झाड़ि-कय कात करैक, अभिलषित वस्तु बनबैक हेतु छीलैक प्रक्रिया। मै.

छेबनिहार-विशे., छेबैक काज करैवाला। मै.

छेबब-क्रि., काठ कें मूल विशेष वस्तु गढ़ैले विभिन्न रूपें काटब। मै.

छेबा-सं., काटैवाला प्रकार, छँटैक क्रम। मै.

छेबाइ-सं., छेबैक बोनि। मै.

छेम-सं., क्षेम, कुशल। सं. तद्भव

छेमब-क्रि., क्षमा करब। प्रयोग—"एक अपराध छेमब मोर जानि।"—विद्यापति मै.

छेमा-सं., क्षमा। सं. तद्भव

छेर-सं., पातर मल (दस्त)। मै.

छेरकट-विशे., पातरसन मल। मै.

छेरगर-विशे., अधिक काजक, तरुण, अलग कयल। मै.

छेर छेर भरब-क्रि., सगरे पातर मल सँ घिना देब। मै.

छेरना-विशे., अधिक काल पातरे दस्त करैवाला। मै.

छेरनाति-विशे., नाति (पौत्र) क नाति। स्त्री० छेर-नातिन। मै.

छेरब-क्रि., विशेष पातर मल छोड़ब। मै.

छेरापूतब छेरा-विशे., (लोकोक्ति) (लाक्षणिक) बच्चा छेरैवाला यौवन मे अवश्य सक्कत होएए। मै.

छेला-सं., सोनारक गहना गढ़ैक अस्त्र। मै.

छेह-सं., क्रम, योजना मे बान्हल। मै.

छेहत्तरि-संख्या, छ एकाँइ सात दहाँइक अंक। मै.

छेहन-सं., एक रूपें (क्रमें) रखैक विधि। मै.

छेहब-क्रि., मिलल जुलल वस्तु कें अलग अलग कय परिष्कृत करब। मै.

छेहर-विशे. फुटा फुटा कय रोपल, बनाओल। घन नहि कयल। मै.

छेहा-विशे., एकेटाक विशेषता भरल। मै.

छै

छै-क्रि., परोक्षवर्ती वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया। मै.

छैक-क्रि., परोक्षवर्ती वस्तुक रहैक परिष्कृत वर्त-मान कालक क्रिया। मै.

छैठ-सं., देखू—"छठि"। मै.

छैन (न्ह)-क्रि., मान्य व्यक्ति लग परोवृत्ती वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया। मै.

छैना-सं., दूध फटला सँ वा फाड़ला सँ पानि चुबा कय छानल सत्त्वमय पदार्थ। मै.

छैनी-सं., लोह कटैक लोहक अस्त्र। मै.

छैनीकाट-विशे., थारीक आकार विशेष। मै.

छैब-सं., देखू—"छवि"। सं. तद्भव

छैला-विशे., सुन्दर नवयुवक, सुदर्शन तरुण। लोक के प्रिय लगैवाला युवा। मै.

छो

छोआ-सं., कुशियारक रसक मैली। मै.

छोकरी-सं., अनादर मे छोट छौंरीक प्रति सम्बो-धन। मै.

छोंच-सं., मलत्यागक उपरान्त अंगक शुद्धीकरण। मै.

छोंचब-क्रि., मलत्यागक उपरान्त अंगक शुद्धी-करण करब। मै.

छोट-विशे., नाप, तौल आ वयसें कम, लघु । मै.
छोटका-विशे., छोट वर्गवाला । स्त्री० छोटकी । मै.
छोटपन-सं., नीक आचार विचारहीनता । क्षुद्रता । मै.
छोट मोट-विशे., भरल पुरल छोट देहवाला । मै.
छोटहा-विशे., मान प्रतिष्ठा आ नीक व्यवहारक-हीन । मै.
छोटाइ-सं., छोट होइक माप । मै.
छोटीमाइ-सं., जड़ी, औषध विशेष । मै.
छोड़-सं., त्याग । मै.
छोड़ब-क्रि., त्यागब । मै.
छोड़बाढ़-सं., घटैक बढ़ैक क्रम । मै.
छोड़ाएब-क्रि., मुक्त कराएब, अलग करब । त्यागब । मै.
छोप-सं., १. अस्थायी छायाक उपाय । उपर सँ काटि छोट करैक क्रम । मै.
छोपनि-सं., कोनो वस्तुक अगिला (उपरका) भाग काटि लैक विधि । मै.
छोपब-क्रि., अगिला सार वस्तुवाला भाग मात्र काटब । मै.
छोपा-सं., छोपैक सिलसिला । विशे., छोपैक योग फसिल । मै.
छोपाइ-सं., निरन्तर छोपैवाला काज । मै.
छोपी-सं., छाही, बैलगाड़ी आदि पर देल कृत्रिम छाही । मै.
छोपुआ-विशे., छोपल जाइवाला धान वा गहूम । मै.
छोभ-सं., क्षोभ । सं. तद्भव
छोर-सं., १. धारी (पंक्ति) क लम्बाइ । २. माल जालक पैंघ डोरी । ३. कोनो वस्तुक दूर विस्तार । मै.
छोरब-क्रि., खढ़ आदि वस्तु कें जड़ि सँ काटि क' खसाएब । मै.
छोरबा-विशे., किशोर बालक । मै.
छोरहर-विशे., युवावस्थाक आरम्भ मे पहुँचल । मै.
छोलगढिया-विशे., माटिक मूर्ति गढ़ैवाला । भित्ति चित्र बनबैवाला । कुम्हार आ चित्रकार । मै.
छोलदारी-सं., वस्त्रक कृत्रिम घर । (राउटी) मै.
छोलन-सं., कोनो वस्तु कें उपर सँ खँखोरि कय छिलला पर बहराएल पदार्थ । मै.
छोलना-सं., उपरक खोइछा छोड़बैक साधन । मै.
छोलनी-सं., तरकारी रन्हैक काल वर्तन मे व्यञ्जन चलबैक चापट मुहवाला साधन । मै.
छोलब-क्रि., अस्त्र द्वारा उपरें उपर खखोरि क' चिक्कन करब । मै.
छोलुआ-विशे., छोलि कय प्रयोग मे अबैवाला । मै.
छोह-सं., ध्यान द्वारा ककरो स्मरण । मै.
छोहक्का उड़ब-क्रि., वस्तु देखैत मात्र हाथैं हाथ बिका जाएब । मै.
छोहकारब-क्रि., महिंसक हाँकब वा बैलाएब । मै.
छोहनि-सं., आवृत्ति, बेर, खेप । प्रयोग–"एक बेर' ऐ शब्दक स्थान मे–एक छोहनि अहाँ पटना सँ भ आउ ने" । मै.
छोहब-क्रि., खेत मे जनमल बीआ कें आन खढ़ पात सँ साफ करब । मै.
छोहरि-सं., महिंसिक नाथ मे लागल मोट रस्सी । मै.
छोह लागब-क्रि., काजक पूर्ति आ अन्त होएब । मै.
छोहा करब-क्रि., पथिया मे घास कें सीटि कय अधिक अँटा कय राखब । मै.
छोहारा-सं., देखू—"छहोरा" । मै.

छौ

छौ-क्रि., अत्यन्त अनादर मे मध्यम पुरुषक वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया । मै.
छौक-क्रि., (अनादर मे) देखू—"छौ" । मै.
छौंकन-सं., १. तीमन मे उपर सँ देल फोरन । २. (लाक्षणिक) राग कुस्याखक बात कें आर उत्तेजित करब । मै.
छौंकब-क्रि., तेल फोरन सँ सिद्ध तीमन कें स्वादिष्ट करब । मै.
छौंक मारब-क्रि., (लाक्षणिक) उद्वेग बढ़ब । मै.
छौंकियाएब-क्रि., छौंकी सँ मारब । मै.
छौंकी-सं., अत्यन्त पातर छड़ी (डंटा) । मै.
छौनी-सं., भीत कें पानि सँ बँचबै ले उपर सँ देल छादन । मै.
छौर-सं., क्षौर, अशौचक केश कटैक कर्म । सं. तद्भव
छौंरा-विशे., किशोर बालक । स्त्री० छौंरी । मै.
छौंरिया-विशे., किशोरी बालिका । मै.
छौराएब-क्रि., बीआ आ खाद कें छाउर मे मिलाएब । मै.

ज

ज्यामिति-सं., रेखा गणितक पारिभाषिक शब्द । सं. तत्सम

ज्योति-सं., प्रकाश, इजोत । सं. तत्सम

ज्वर-सं., रोग विशेष, देहक ताप । सं. तत्सम

ज्वाला-सं., धाह, ताप । सं. तत्सम

ज-सं., चवर्गक तृतीय अक्षर जकार । मै.

जँ/जऽ-अव्यय, यदि । (अगर) मै.

जइ-सं., जौंक आकारक मालक दाना । मै.

जइओ-अव्यय, यद्यपि । मै.

जइती-विशे., जाइक क्रिया करैक समयवाला । मै.

जक -सं., १. मोटर (कार) कें धरती सँ अलगऽवै-वाला यन्त्र विशेष । २. ढेर । मै.

जकड़न-सं., बात रोग सँ आकि एकै गरें रहनें अंगक जड़ अर्थात् स्पन्दन होएब । मै.

जकड़ब-क्रि., अंग चलबै मे अशक होएब । मै.

जकथक-अव्यय, जहिनाक तहिना पड़ल रहैक स्थिति । मै.

जकथकाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपें एकैठाँ ढेर लगैत जाएब । मै.

जकर-सम्बन्धवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारकक रूप । मै.

जकर लाठी तकर भैंस-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) जोर-गरैक अधिकार सबठाँ । मै.

जकरा-सम्बन्धवाचक सर्वनामक कर्मकारकक रूप । मै.

जक लागब/जक होएब-क्रि., बिना खर्च भेने वस्तुक आमद सँ ढेर लागब । सामानक बेढंगे जमा होएब । मै.

जकाँ-अव्यय, सदृश, समान । मै.

जकाएब-क्रि., व्यवस्थित रूपें जमा होइ जाएब । मै.

जकार-सं., ज अक्षर । सं. तत्सम

जकियाएब-क्रि., व्यवस्थित, गोलाइ मे वस्तु कें जमा कय राखब । मै.

जकीरा लागब-क्रि., छोट अंकुर कें एकठाँ अस्थायी रूपें घन कय रोपब । मै.

जखन-अव्यय, जाहि, जै समय मे । मै.

जखनुक/जखनुका-विशे., जाहि समय मे भेल वा होम'वाला । मै.

जग-सं., १. पानिक आधुनिक वासन । २. संसार । मै.

जगजग-विशे., प्रकाशमान, चमकैत । मै.

जगजगाओ-सं., अनवरत प्रकाशित होइक स्थिति । मै.

जगजगार-विशे., अपन विशेषता सँ स्पष्ट निखरल । मै.

जगजियार-विशे., बढ़ि बढ़ि क' निखार मे आएल । मै.

जगण-सं., छन्दक विशेष परिभाषा । मै.

जगत-सं., संसार । सं. तत्सम

जगताजोर-विशे., अदृश्यशक्ति सँ भरल । मै.

जगतारनि-सं.,/विशे., देवी, संसार कें कष्ट सँ बचबैवाली । सं. तत्सम

जगति-सं., इनारक चारूकात चाकजकाँ गोल ऊँच कय बान्हल पुश्ता । मै.

जगती-सं., पृथ्वी । सं. तत्सम

जगदम्बा-सं., दुर्गा । सं. तत्सम

जगन्नाथ-सं., कलियुगी महातीर्थ । स. तत्सम

जगना-विशे., अधिक जगैवाला । मै.

जंगम-विशे., चलै फिरैवाला जीव । मै.

जगमग-विशे., प्रकाशमान । मै.

जगमगाएब-क्रि., १. प्रकाशमान बनाएब, स्वतः ज्योति सँ निखरैत रहब । मै.

जगमोहन-सं., कोठा आ मन्दिरक आगू मे बनाओल अर्धगोलाकार पुश्ता । मै.

जगरजाठि-विशे., अधिक वयसवाला, उचित काजक वयस सँ वेशी वयसक । मै.

जगरनथिया-विशे., जगन्नाथक पैदल यात्री । मै.

जगरना-सं., जागरणा, रातुक जागब । सं. तद्भव

जगरा-सं., लगातार जगैत रहैक स्थिति । मै.

जंगल-सं., वन, बोनझार । मै.

जंगला-सं., वातायन, घर मे कृत्रिम बनाओल रौद बसात अबैक बाट । मै.

जंगलाह-विशे., बोन झार सब सँ भरल । मै.

जंगली-विशे., बोन मे भेनिहार तथा रहनिहार । मै.

जगवार-विशे., सतर्क रहनिहार, सजग, अधिक जगैक अभ्यासवाला । मै.

जगशाला-सं., यज्ञशाला । सं. तद्भव

जगाएब-क्रि., निन्द सँ ककरौ उठाएब, लोकक उत्साह बढ़ाएब, मानसिक रूपें सजग करब । मै.

जगाओन-सं., ककरो द्वारा कोनो व्यक्ति कें जगबैक प्रयास । मै.

जगौनी-विशे., जगबैंवाली घड़ी । मै.

जंघगर-विशे., १.अपन जांघक भरें चलैवाला नेना । २. (लाक्षणिक)नमहर जांघक द्वारें झटझट चलैवाला । मै.

जंघा-सं., डाँर सँ नीचाँ ठेहुन सँ उपरक अंग । मै.

जंघिया-विशे., जांघ मात्र धरिक कसल सीयल वस्त्र । मै.

जंघियासब-क्रि., (लाक्षणिक) आबा जाही सँ चलि रेहल खेहल । मै.

जङ्गी-विशे., युद्ध सैनिक । दाहा नामक मुसलमानी पर्वक अवसर पर रहैवाला । उ. तत्सम

जँचना-सं., १. माङब । २. साधना मे दृढ़ताक ईश्वरीय परीक्षा । मै.

जँचनिहार-विशे., परीक्षा कयनिहार । मै.

जँचब-क्रि., पसिन्न पड़ब । जाँच मे पड़ि जाएब । मै.

जँचाएब-क्रि., सन्देह हँटबैक हेतु अनका द्वारा परीक्षा कराएब । मन स्थिर कराएब । मै.

जज-विशे., न्याय करैक अधिकारी । मै.

जंजल-विशे., जत्तऽ तत्तऽ असंख्य काटल आ फाटल । मै.

जंजाल-विशे., कर्त्तव्यमोह । संसारक फाँस । मै.

जजी-सं., उच्चन्यायालय । मै.

जट्ट-सं., पैघ तथा घन जठा । मै.

जटनी-सं., जटा जटिन खेलक मुख्य स्त्री पात्र । "झुमका जब हम अनलौं गे जटनी"–जटा जटिन । मै.

जटबा-सं., जटा जटिन खेलक मुख्य पुरुष पात्र । "काड़ा जब हम मङलौं रे जटबा"–जटा जटिन । मै.

जटा-सं., १. देखू—"जटबा" । मै. २. परस्पर ओझराएल सट्टल केशक लट । सं. तत्सम

जटाइ-सं., रामायणक प्रसिद्ध गीध । पैघ जटावाला । मै.

जटाजटिन-सं., कथोप कथन युक्त गीत प्रधान मिथिलाक महिला सभक प्रसिद्ध लोक नृत्य गीत । मै.

जटाधारी-सं., फूल विशेष । विशे., जटाधारण करैवाला । मै.

जटामसी-सं., जटा मांसी, औषध विशेष । सं. तद्भव

जटित-विशे., जड़ाओल । कोनो वस्तु पर सक्कत सँ जमाओल । सं. तद्भव

जटिन-सं., देखू—"जटनी" । मै.

जटिल-विशे., समस्यापूर्ण, ओझरौटवाला । गहन । मै.

जट्ठर-विशे., अत्यन्त ठन्ढा । मै.

जठर-सं., पेट । सं. तत्सम

जड़-विशे., मूर्ख, ज्ञान शक्तिहीन । सं. तत्सम

जड़काला-सं., जाड़क समय । मै.

जड़की-विशे., जाड़ भ' क' होइवाला ज्वर । मै.

जड़ब-क्रि., कोनो वस्तु पर विशेष वस्तु कें जमाएब । मै.

जड़ाउ-विशे., हीरा मोती जमाओल गहना । मै.

जड़ाउर-विशे., जाड़क समय मे देबाक योग वस्त्र आदि । मै.

जड़ाएब-क्रि., जमाएब । मै.

जड़ाओन-सं., थोड़ थोड़ जाड़क अनुभव । मै.

जड़ाह-विशे., जाड़ सँ भरल । मै.

जड़ि-सं., मूल, विकास ह्रासक केन्द्र, बीज । मै.

जड़ि कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त मरहन्ना (क्षीण) होइक द्वारें फसिल मे उपजा नहि होएब । मै.

जड़ि छोड़ुआ-विशे., बिन छोपल अर्थात् जड़िवाला धानक गाछक बोझ । मै.

जड़ियाएब-क्रि., बहुत दिन सँ जमल होएब । मै.

जड़ियाठ-विशे., जड़ि दिशुक नमहर अंश । मै.

जड़ियाठी-सं., बाँस काठक जड़िवाला सक्कत अंश । मै.

जड़ी-सं., औषध । परोक्ष प्रभाववाला वनस्पतिक मूल । मै.

जड़ीदार-विशे., धातुक पत्ती आ तार सँ चमत्कृत । मै.

जड़ीब-सं., भूमि नपैक हेतु आठ इंचक एक सौ कड़ीवाला मानक । मै.

जड़ैया-विशे., पहिने जाड़ भ' क' होइवाला ज्वर । मै.

जऽढ़-विशे., बुझौलौ उत्तर विषय बात नहि पकड़निहार । मै.

जत्तऽ-अव्यय, जाहिठाम । मै.

जत्था-सं., एकत्रित वस्तुक ढेरी । मै.

जत/जतए-अव्यय, जाहि ठाम । मै.

जंतकुट्टा-विशे., जाँत के तेज बनबैक हेतु खोधैक रूपें खोधर कय कूटैवाला । मै.
जंतगर-विशे., उचित सँ वेशी दाबि कय भरल । मै.
जतन-सं., यत्न । सं. तद्भव
जंतनिहार-विशे., देह दबा क' सेवा करैवाला । मै.
जतनी/जतने/जतबा/जतबाक/जतबी/जतबै/जतबैक -अव्यय, जतेक मानक । जाही प्रमाणक । मै.
जतबो-अव्यय, जाही प्रमाणक । मै.
जतय-अव्यय, जाहिठाम । मै.
जतरा-सं., यात्रा । प्रयोग—"अतरा पतरा सोम दिन जतरा ।" मै.
जंतलाहा-विशे., दाबि कय राखलवाला । मै.
जतहि-अव्यय, जाही ठाम । मै.
जताएब-क्रि., जानकारी देब, ज्ञान मे द' देब । मै.
जताठ-विशे., संकुचित स्थान । जाँतल जकाँ लगैवाला स्थान । मै.
जतिगर-विशे., ऊँच जातिक लोक । मै.
जतिमन्त-विशे., ऊँच जातियौ मे श्रेष्ठता रखनिहार । मै.
जतिया-विशे., एक विचार आ व्यवहार संस्कारवाला समाजक लोक । मै.
जतियारय-सं., जातिक पक्षपात । मै.
जतीकाल/जतीखन-अव्यय, जतेक समयक अवधि । मै.
जतुपुतोहु-विशे., देयादनीक पुत्रवधू । मै.
जते/जतेक-अव्यय, जाहि मानक । मै.
जतौ-अव्यय, जाहु ठाम । मै.
जंतौठ-विशे., देखू—"जँताठ" । मै.
जथगर-विशे., पुष्टतायुक्त । पुष्ट रूपें । मै.
जथा-सं., सम्पत्ति, धन । मै.
जथाजाल-सं., सम्पत्तिक प्रसार । मै.
जथी-अव्यय, मन मे स्थित अनिश्चित वस्तु दिश साकांक्षताक निर्देश । मै.
जन्त्री-सं., लेखा करै मे अनुपात बहार करैक पोती । मै.
जन्तर-सं., यन्त्र । सं. तद्भव ।
जन्ता-सं., बनैया वनस्पति विशेष । मै.
जन्तु-सं., जीव मात्र । जंगम प्राणी । मै.
जन-सं., लोक । विशे., श्रमिक । सं. तत्सम

जनक-सं., पौराणिक विदेह राजा । विशे., जन्मराजा । सं. तत्सम
जनखँ लागब-क्रि., कोनो विशेष काज मे अधिक जन लगबैक काज पड़ब । मै.
जनगर-विशे., १. लोकगर । २. जन मजदूरक सुखी । मै.
जनगी-अव्यय, एक एक व्यक्तिक लेखा कय । मै.
जनता-सं., लोकक समुदाय । समूह । सं. तत्सम
जननी-विशे., जन्म देम'वाली । सं. तत्सम
जनपद-सं., क्षेत्र, प्रान्त । सं. तत्सम
जनवासा-सं., पाहुन परक रहैक विशिष्ट स्थान । मै.
जनबाहि-सं., जन खटबैक सिलसिला । मै.
जनम-सं., जन्म । सं. तद्भव
जनमत-सं., समुदायक विचार । सं. तत्सम
जनमब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब । जनम लेब । मै.
जनमाएब-क्रि., उत्पन्न करब । जमाएब । मै.
जनमारा-विशे., प्राणक घातक हानिकारक । मै.
जनमौटी-विशे., सद्यः जनमल बच्चा । निकट मे जनमल । मै.
जनार-सं., साधु भोजन । केवल दूध वा खीर खोआ क' वैष्णव कें सन्तुष्ट करब । मै.
जनारो-सं., जानवर । घातक पशु । मै.
जानि-अव्यय, नहि, निषेधक शब्द । प्रयोग—"एकहि नगर वसु माधव हे जनि करु बटमारी ।" —विद्यापति । मै.
जनी-सं., श्रमिक स्त्री, स्त्री जाति । मै.
जनीजाति-सं., स्त्रीगण । मै.
जनु-अव्यय, न, निषेध, उत्प्रेक्षा, प्रायः । मै.
जनू-अव्यय, सम्भावना द्योतक शब्द, प्रायः । मै.
जनेर-सं., अन्न विशेष । मै.
जनैत-अव्यय, जानकारी रूपें । मै.
जनौ-सं., यज्ञोपवीत, उपनयन संस्कारक सूत्र । मै.
जनौरी-विशे., जन खटै पर देल अग्रिम रुपैया । मै.
जप-सं., मनैमन मन्त्रक आवृत्ति कय देवताक ध्यान राखैक प्रक्रिया । सं. तत्सम
जपतप-सं., जप करैक साधना । सं. तद्भव
जपन-सं., जप । स. तत्सम
जपनी-सं., १. माला । २. (लाक्षणिक) बारम्बार व्यवहार मे एके बातक रट । मै.

जपब-क्रि., जप करब । मै.

जपाइ-सं., जपक अनुष्ठानक दक्षिणा । मै.

जपाएब-क्रि., जप कराएब । मै.

जपाल-विशे., उत्तरदायित्वक कारणें चिन्ताक विषय बनल । मै.

जपी-विशे., नियमित जप कयनिहार । मै.

जपुआ-विशे., जपैक काज कयनिहार । जपक व्यवसाय मे लागल । मै.

जब-अव्यय, जखन । हि. तत्सम

जबकब-क्रि., पानि जमैक द्वारें सर्दी बढ़ब । मै.

जबका-सं., आर्द्रता सर्दी । मै.

जबका मारब-क्रि., सर्दीक दारें वृद्धि आ स्वास्थ्य घटब । मै.

जबकाह्-विशे., अधिक सर्दियाएल । मै.

जबड़ा-सं., कल्ला । हि. तत्सम

जब तब-अव्यय, जखन तखन । हि. तत्सम

जब्बर-विशे., शक्तिशाली, भारी । मै.

जबरदस्ती-अव्यय, बल सँ, बलात्कारें । उ. तत्सम

जबा-सं., आङुर मे जौक चिह्न (सुलक्षण) । मै.

जबाकुसुम-सं., ओढ़ूल फूल । मै.

जबाखार-सं., औषध विशेष । मै.

जबियाएब-क्रि., बड़द आदि कें जजातक उपद्रव सँ बचबैले मुह मे जाबी बान्हब । मै.

जम्बीरी-सं., सुगन्धिहीन रसदार नेबो । मै.

जमकब-क्रि., बहुत लोकक एकठाँ जमा होएब । मै.

जमघट-सं., अधिक लोकक एकठाँ जमब । सम्मेलन होएब । मै.

जमड़ी-सं., तहें तहें बहुत दिनक जमल मैल । मै.

जमतिगर-विशे., अधिक संख्या मे एकमतवाला समाज । मै.

जमब-क्रि., १. दिनानुदिन वा एकाँएकी एकट्ठा होएब । २. नाच गानक खूब आकर्षक होएब । ३. स्थिर भय कें अचल वा स्थूल बनब । मै.

जमल-विशे., १. गुण विशेषक द्वारें प्रभावशाली बनल । मै.

जमा-सं., १. एकत्रित वस्तु । २. एक खतियानक खेसरा संख्या । मै.

जमाइ-विशे., १. कन्याक पति । २. जमबैक प्रक्रिया । मै.

जमाइत-सं., दल, जेर, झुण्ड । मै.

जमाउ-विशे., जमैक योग्य । मै.

जमाएब-क्रि., अपन बड़ाइ कय प्रभावित करब । मै.

जमाओ-सं., स्थिरीकरण । मै.

जमा करब-क्रि., एकट्ठा करब । मै.

जमाठ-सं., जमबैक उपाय । मै.

जमाय-विशे., बेटीक स्वामी । मै.

जमालगोटा-सं., रेचक (दस्तकारक) औषध । मै.

जमुअठि-सं., जामुक काठक बनल इनारक लहराक काठ । मै.

जमुआ-सं., जामुक काठ । मै.

जमुआ रंग-विशे., जामुक रंगसनवाला । मै.

जमुना-सं., यमुना नदी विशेष । सं. तद्भव

जमुनिया रंग-विशे., जमुना जल सन रंगवाला । मै.

जमौट-सं., जमबैक अर्थात् प्रभावित करैक चेष्टा । मै.

जमौआ-विशे. प्रभावित करैक चेष्टावाला । मै.

जय-सं., ककरो उत्कर्ष मनबैक शब्द । मै.

जयकार-सं., अनेक कण्ठ सँ जय शब्दक ध्वनि । मै.

जयजयकार-सं., बारम्बार जय ध्वनि । मै.

जयन्ती-सं., व्यक्ति विशेषक जन्म आ मरणक उत्कृष्टता सूचक तिथि । सं. तत्सम

जयवार-विशे., मैथिल ब्राह्मणक वंशानुक्रमक भेद विशेष ।

श्रोत्रिय, योग्य (जोग), भलमानुष, आ जयवार एहि चारि मे आचार व्यवहार आ शिक्षाक भेद आ क्रमक अनुसार चारिम वर्ग । मै.

जया-सं., पार्वतीक प्रसिद्ध शक्ति आ सखी । मै.

जयी-विशे., जय कयनिहार । सं. तत्सम

जर-सं., ज्वर । सं. तद्भव

जऽर-विशे., एकत्रित । मै.

जऽऽर-सं., जरायु, बच्चा जन्मक उपरान्त गर्भ सँ बहार होइवाला माल जालक जरायु आ मनुष्यक नार पुरैन । मै.

जरखोरा-सं., माल जालक ज्वर । मै.

जरजर-विशे., जर्जर, अत्यन्त पुरान । सं. तद्भव

जरती-सं., १. अधिक तापक द्वारें तौल मे कमी । २. रौदीक कारणें खेतीक दाह । मै.

जरती जाएब-क्रि., तापक द्वारें तौल मे कमी होएब । मै.

जरदा-सं., पानक मसाला रूपें तमाकूक शोधल गूड़ी। मै.

जरदालू-सं., आम विशेष। मै.

जरनघरा-सं., बरिसात मे जारनि कें सुरक्षित रखैक घर। मै.

जरनबाहि-सं., निरन्तर जारनि चिरैक आ चिरबैक काज। मै.

जरनि-सं., ईर्ष्या, भीतरैं भीतर आनक नीक नै सोहायब। मै.

जरनीपन-सं., आनक डाह करैक स्वभाव। मै.

जरपाद-सं., ज्वर भेला पर मुह मे फोंसरीक प्रादुर्भाव। मै.

जरब-क्रि., १. डाह करब। २. डहब, दग्ध होएब। मै.

जरब-सं., घातक प्रभाव, आपत्ति। मै.

जरलग्गू-विशे., ज्वर लगैक गुणवाला पदार्थ। मै.

जरा-सं., वृद्धावस्था। मै.

जराइन-विशे., १. ज्वरक गन्ध। २. वस्तुक जरैक गन्ध। मै.

जराउ-विशे., १. ज्वरक अनुकूल। २. जरैक योग्य। मै.

जराएब-क्रि., ज्वर सँ भरब। मै.

जराओन-सं., ज्वरक आभास। मै.

जराठी-विशे., आधा जरल जारनि। मै.

जरावस्था-सं., बुढ़ारी। मै.

जराह-विशे., ज्वरक अंशवाला। ज्वर लगबैवाला। मै.

जरुआ-विशे., जराओल। जरबैक योग्य। मै.

जरैया-विशे., ज्वरक उपक्रम अनैवाला। मै.

जरोह-विशे., सन्तान, शाखा। सखापात। मै.

जरौआ-विशे., ज्वरक वातावरण भरल। जरलवाला। जरला विकृत बनल। मै.

जल्दी-अव्यय, शीघ्र, झट द' उ. तद्भव

जल्ला-सं., १. मकरा द्वारा बनाओल जाल। २. छोट छोट कीड़ा द्वारा अन्न मे गढ़ल सक्कत आ छोट कपड़ा जकाँ पदार्थ। ३. झोल। ४. डोरीक जाल जकाँ बीनल भूसा कसैवाला बड़का जाबी। मै.

जल्लीभदै-सं., भादव मे भेनिहार धान। मै.

जल-सं., पानि। मै.

जलकर-सं., जल सम्बन्धी राजस्व। मै.

जलखरी-सं., छोट जाबी जाहि मे थोड़ फल आदि राखल वा लाओल जाइछ। लोलची। मै.

जलखै-सं., अल्पाहार, किछु खाकए पानी पीबैक प्रक्रिया। मै.

जलगर-विशे., विशेष जलवाला। मै.

जलजलाओ-विशे., उर्ध्वमुख, सब प्रकारें उन्नति मे अग्रसर, गतिशील। मै.

जलजन्तु-सं., जल मे उत्पन्न वा रहैवाला जीव। मै.

जलझुलनी-विशे., बीच बरिसातक (भादवक शुक्ल पक्ष) मे विष्णु भगवानक जलशयन नामें प्रसिद्ध एकादशी तिथि। मै.

जलधर-सं., मेघ। सं. तत्सम

जलन-सं., ज्वलन, दाह, ईर्ष्या। सं. तद्भव

जलनि-सं., बीज, जड़ि, बीआ, वृक्ष आ झाड़ खढ़क धरती दिशक शाखा प्रशाखा। मै.

जलपा-सं., ज्वालामुखी देवी। सं. तत्सम

जलपान-सं., जलखै, अल्पाहार। मै.

जलपै-सं., भदैया फल विशेष। मै.

जलफाँफों-विशे., फुटाओल सूतवाला वस्त्र, वस्तु। मै.

जलबाह-विशे., जाल फेंकैवाला मल्लाह। मै.

जलबाहि-सं., जाल फेंकैक व्यवसाय। मै.

जलभरिया-विशे., बैद्यनाथ कें ढारैले गंगाजल भरैवाला। मै.

जलमरै-सं., आम आ धानक प्रभेद। मै.

जलामय-सं., सर्वत्र जलक अपार पसार। मै.

जलाशय-सं., जलक आधार। पोखरि, नदी। मै.

जलिया-विशे., जाल फरेब करैवाला। मै.

जलोदर-सं., पेट मे पानि भेला सँ उत्पन्न रोग। मै.

जलोदीप-सं., जल सँ डूबल प्रान्त। जलद्वीप। सं. तद्भव

जस-सं., यश, कीर्ति। सं. तद्भव

जसन-सं., बाँहि परक गहना। मै.

जसबा-सं., धानक विशेष प्रभेद। मै.

जसी-विशे., यशस्वी, जल भरल। मै.

जसोन्ह-सं., गहना विशेष। मै.

जहजह करब-क्रि., सर्वत्र देखार भ' क' प्रकाशित होएब। मै.

जहन-अव्यय, देखू—"जखन"। मै.

जहनि-सं., १. जिद्द, हठ। २. भीतर दिशक बिना छतक पुश्ता (उ. जेहन) जगमोहन। मै.

जहनि लागब -क्रि., जिद्द लागब, आग्रह होएब। मै.

जहपटार-अव्यय, यत्र तत्र सबठाँ। मै.

जहर-सं., विष, जहर। उ. तत्सम

जहर कनैल-सं., कनैल फूलक फड़, विष। मै.

जहरबात-सं., विषवाला बात रोग। मै.

जहरमोहरा-सं., साँपक विष मारैवाला जड़ी। मै.

जहाँ-अव्यय, जतय, जखनै, जहिया, जाहिठाँ। मै.

जहाज-सं., जलयान। यान्त्रिक पोत। मै.

जहाजी-विशे., १. जहाज द्वारा आएल वस्तु। २. जहाजक संचालक। मै.

जहाँदय-अव्यय, जाहिठाम देने। मै.

जहाँधरि-अव्यय, जाहिठाम पर्यन्त। जतेक धरि। मै.

जहि-अव्यय, जहिना, जखनै। मै.

जहिखन-अव्यय, जाही छन। मै.

जहिना-अव्यय, जाही रूपें, जहिखन। मै.

जहूद भारी-विशे., अत्यधिक भारवाला। प्रयोग—"ई कोठी तऽ जहूद भारी छै।" मै.

जहूरी-विशे., जौहरी, रत्न आदि चिन्हैवाला। उ. तद्भव

जा

जा-अव्यय, यावत्। मै.

जाऽऽ !-अव्यय, आश्चर्य, दुःख आ प्रमाद बुझबैक शब्द। प्रयोग—"जा...... ! ओ चल गेला।" मै.

जाउत-विशे., (स्त्रीक हेतु) देवर आ भैंसुरक पुत्र। मै.

जाएब-क्रि., गमन करब। जाइक क्रिया। मै.

जाक-सं., एक पर एक सैंत क' स्थूल वा छोटो वस्तुक विन्यास। मै.

जाकब-क्रि., एक पर एक सैंत क' वेशी वस्तुक एकठाँ जमा करब। मै.

जाकर-विशे., बहुत दिन सँ एकै रूपें राखल पुरान। शक्तिहीन। मै.

जाग-सं., १. सभक जागरण, निद्राभंग। २. याग, यज्ञ। सं. तद्भव/मै.

जागनि-सं., जगरना। मै.

जागब-क्रि., निन्न तोड़ब। मै.

जागरणा-सं., जागल रहैक स्थिति। सं. तत्सम

जाँघ-सं., ठेंहुन सँ उपरक अंग। मै.

जाच-सं., माङब। मै.

जाँच-सं., परीक्षा। मै.

जाचक-विशे., माङैवाला। सं. तद्भव

जाँचनि-सं., परीक्षाक क्रम। मै.

जाचब-क्रि., माङब। मै.

जाँचब-क्रि., परीक्षा करब। मै.

जाजूगी-सं., सनातन, सनातनी, पारम्परिक। मै.

जाट-सं., १. झँपनीवाला सीसाक बड़का वासन। २. लड़ाकू जाति विशेष। मै.

जाठि-सं., यष्टि, यज्ञ कयल पोखरिक बीच गाड़ल बड़का स्तम्भ। सं. तद्भव

जाड़-सं. शीत, ठंढाक सामयिक प्रभाव। ठंढाक समय। मै.

जाड़ा-सं., जाड़ होइक स्थिति। ठंढाक प्रभाव। मै.

जाँत-सं. चापट गोलाकार उपर नीचाँ दू पाटवाला पीसैक साघन। मै.

जातक-विशे., सद्यः जन्म लेमऽवाला। बौद्धकथा। सं. तत्सम

जाँतठि-विशे., वस्तु कें भार सँ दबैक वस्तु। मै.

जाँतनि-सं., विशेष भारवाला वस्तु सँ दबैक विधि। मै.

जाँतब-क्रि., १. भारी वस्तु सँ कोनो वस्तु कें दबाएब। २. ककरो देह दाबि क' सेवा करब। मै.

जाँता-सं., जाँतक भिन्न भिन्न पाट। मै.

जाति-सं., जन (सं.) धातु सँ जाति शब्दक निर्माण होइत अछि एहि कारणें अर्थ होइछ 'परम्परागत वंशक परिचायक नाम अर्थात् वर्ण। एहि वर्णक चारि वर्ग मे विभाजन भेल अछि। ओहि चारू वर्ग चारू वेद आ चारू पुरुषार्थ सँ सम्बन्ध राखि प्रवृत्त होइछ। ताहू चारू पुरुषार्थ मे सर्वप्रथम थीक धर्म। ई ततेक विशाल अछि जकर विस्तार सँ विवेचना अखन असंभव छैक। तथापि संक्षिप्त अर्थ येह होइछ-मानवताक शिक्षा वा निर्माण। एहि वस्तुक निर्देश कयनिहार ज्ञानी पुरुष ब्राह्मण होइछ। जीवनक सुरक्षाक दू आवश्यक वस्तु होइछ बल आ धन, ऐ

दूनू वस्तुक साधक अर्थ होइछ तकर साधना मे लीन व्यक्ति क्षत्रिय आ वैश्य कहबैछ। आ कोनो कामनाक सिद्धि ककरो सेवा अर्थात् भक्ति कयने भेटैत छैक। से भक्ति करैवाला अर्थात् जकर सेवा (भक्ति) कयल जाइत अछि ताहि सँ अपना कें नत (निम्न) रखनिहार शूद्र वर्ग मे राखल गेल अछि। मुदा सभक लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति थिकैक। मोक्ष कोनो वर्ग विशेषैक नहि भ' सकैत छैक। तेँ ओहि वर्गक वीर्य सँ उत्पन्न पितृ संस्कार रखनिहार व्यक्तिक जाति पितृ संस्कारें होइछ। एहि रूपें संस्कारक प्रभाव युक्त वंशानुगत जाति भ' सकैत अछि।

मुदा जकरा पूर्वोक्त प्रकारक जन्म जात संस्कार नहि भ' क' भिन्न वर्गक गुण आ कर्म साधना मे प्रवीणता होइक तकरा हेतु जातिक अर्थ वर्गे टा भ' सकैत अछि। एहन स्थिति मे ज्ञा (सं.) धातु सँ जाति शब्द बनि वर्गक अर्थ होइत अछि। जेना संसार मे बहुत वस्तुक लेल जे मनुष्य सँ भिन्न रहैछ—प्रयोग होइत अछि ई एहि वर्गक थीक आ ओ ओहि वर्गक।

सारांश ई जे पैतृक (वीर्यगत) संस्कार आ वर्ण अर्थात् गुण कर्म क्रमवाला वर्ग जाति कहाओल जाइत अछि।

जँ पैतृक (वीर्यगत) संस्कार नहि राखि भिन्न वर्णक संस्कार (गुण कर्मक वर्गवाला) रखैत हो तँ ओ ओही गुण कर्मक जाति थीक। फलतः सत् पथ पर रहैवाला संस्कार अथवा गुण कर्मक भेदें दूनू प्रकारक जाति भ' सकैत अछि। असत् पथक संस्कारवाला व्यक्ति राक्षसे कहबै अछि जाहि मे वर्ण वा जातिक कोनो अस्तित्व नहि होइत छैक। सं. तत्सम

जादू-सं., अलक्षित भौतिक प्रक्रिया। मै.

जादूगर-विशे., अलक्षित भौतिक प्रक्रियाक विशेषज्ञ। मै.

जाधरि-अव्यय, यावत् काल पर्यन्त। मै.

जान्तब-सं., ज्ञान, बोध, बूझल। मै.

जान्तबे-अव्यय, ज्ञानक अनुसार, बुद्धिक अनुकूल। मै.

जानब-क्रि., ज्ञान करैक प्रयास करब। भाव बूझब। मै.

जानबर-सं., पशु। हि. तत्सम

जानि-अव्यय, जनैक भाव, बोध। मै.

जानि ने जानी-अव्यय, ज्ञानक बहारक स्थिति। मै.

जाप-सं., जप, जप करब। मै.

जापक-विशे., जप करैवाला। मै.

जापत्री-सं., गरम मसालाक एक वस्तु। जाती पत्र। मै.

जाफर-सं., जाती फल। औषध विशेष। मै.

जाफरी-सं., बाँसक बाती सँ सघन बीनल असंख्य छेदवाला विशेष टाट। स्त्रीगणक अढ़क साघ। मै.

जाबत-अव्यय, यावत्। स. तद्भव

जाबब-क्रि., जाल जकाँ बीनल पदार्थ सँ बड़द आदि मालक मुह बन्द करब। मै.

जाबा-सं., १. देश विशेष। २. लोहक वा कोनो धातुक तार सँ बनाओल पैघ छेदक जाल। मै.

जाबी-सं., पातर डोरी सँ जाल जकाँ बनाओल झोरा सन फल रखैक वासन। मै.

जाबे-अव्यय, यावत् काल। मै.

जाभड़-सं., बहुत दिनक बैसल मैल। मै.

जामिन-विशे., अपराधीक जिम्मेवारी रखैवाला। मै.

जामु/जामुन-सं., फल विशेष। मै.

जाया-सं., स्त्री, पत्नी। सं. तत्सम

जार-विशे., स्त्रीक अवैध प्रणयी। सं. तत्सम

जारनि-सं., जरबैवाला लकड़ी। मै.

जारब-क्रि., जराएब। मै.

जारी-सं., आरम्भ, क्रिया सँ चेतनाक सम्बन्धक। मै.

जाल-सं., १. सूत वा पातर तारक बीनल छेदवाला वस्तु। २. (लाक्षणिक) प्रपञ्च। मै.

जालबन्दी-सं., १. लहठीक भेद। २. जालक घेरन। मै.

जालसाजी-सं., फूसि षड्यन्त्र। मै.

जाल रचब-क्रि., १. (लाक्षणिक) ककरो फँसबैले फूसि बात गढ़ब। २. सूत सँ जाल बनाएब। मै.

जालखिराएब-क्रि., पानि मे जाल घुमाकय फेंकब। मै.

जाला-सं., भूसा आ भूसा सन वस्तु कसैलेल डोरी सँ जाल जकाँ बीनल वासन। मै.

जाली-सं., जाल जकाँ तारक बनाओल वस्तु। मै.

जासूस-विशे., लौकिया, गुप्तचर । उ. तत्सम
जाह-क्रि., १. मध्यम पुरुष कें जाइक आदेश । २. अव्यय, आश्चर्य खेद आदिक शब्द । प्रयोग—"जाह हम आइ जाएब बिसरि गेलौं ।" मै.
जाहि-सम्बन्धवाचक सर्वनाम, प्रयोग—"जाहि ठाँ जाहि विषय मे मन लागए सहै पढ़ू ।" मै.

जि

जिआ-सं., मन, अन्तःकरण । मै.
जिआन-विशे., नष्ट, क्षति । मै.
जिगा-सं., गहना विशेष । मै.
जिच्च-सं., शतरंजक चालि मे बादशाह कें घेरि क' विवश करब । मै.
जिज्ञासा-सं., खोज पुछारी । सं. तत्सम
जिञ्जीर-सं., लोहाक कड़ी सँ बनल साँकल । मै.
जिट-सं., विशेष प्रकारक अंग सज्जा । अं. तत्सम
जित्त-विशे., जीवित, जीवनवाला । मै.
जित्ते-विशे., जीवितावस्थावाला । मै.
जितलहा-विशे., जीतल वस्तु । मै.
जिताजितौअलि-सं., परस्पर जितैक प्रतियोगिता । मै.
जितिया-सं., स्त्रीगणक जीमूतवाहन व्रत । मै.
जिद्द-सं., हठ, आग्रह, जहनि । उ. तत्सम
जिद्दी-विशे., जिद्द धेने रहनिहार । मै.
जिदियाह-विशे., जिद्द धरैवाला । स्त्री० जिदियाहि । मै.
जिन-विशे., १. जैन धर्मक प्रवर्तक । २. मुसलमानक प्रेत । सं. तत्सम/उ.
जिभिया-सं., जीह शुद्ध करैक वस्तु चीरा । मै.
जिम्मड़-सं., वनस्पति विशेष । मै.
जियाएब-क्रि., जीवित करब । जीवित राखब । मै.
जिरतिया-विशे., खेतीक उत्तरदायी । मै.
जिराएब-क्रि., विश्राम करब । मै.
जिरात-सं., निजी खेती । मै.
जिरान-सं., विश्राम, आराम । मै.
जिराफ-सं., नम्मा गर्दनिवाला अमेरिकी पशु । मै.
जिरिया-सं., जीर बराबरि कीड़ी विशेष । मै.
जिल्द-सं., पोथीक पत्रक बन्धन । उ. तत्सम
जिला-सं., प्रशासनिक क्षेत्रक भूमण्डल । मै.
जिलेबी-सं., १. कुण्डली बान्हल मधुर विशेष । २. एहि नामक वनस्पति । मै.
जिस्ता-सं., कागजक मान । मै.
जिसता-सं., तूर धूनैक काल धुनकी पीटैवाला मुङरी । मै.
जिहिया-सं., देखू—"जिभिया" । मै.
जिहुलाह-विशे., नीक निकुत खाइक सतत् इच्छावाला । नीक पदार्थ खाइले जीह मे पानि भरैवाला । चहटगर खाइले व्यग्र रहैवाला । मै.

जी

जी-सं., अन्तरात्मा, मन । प्रयोग—"कथी ले जी डाहै छी ।" मै.
जी !-अव्यय, टोकला पर सम्मानसूचक उत्तर । मै.
जीअत-विशे., १. जीवित । २. विशेष भारवाला । मै.
जीअन-सं., जीवन । सं. तद्भव
जीआ-सं., देखू—"जी" । मै.
जीत-सं., जय । मै.
जीतब-क्रि., विजय करब । मै.
जीन-सं., घोड़ाक पीठ पर सवारक बैसैक आसन । मै.
जीप-सं., विशेष प्रकारक हवागाड़ी । अं. तत्सम
जीव-सं., जीवात्मा, जन्तु । सं. तत्सम
जीबट-सं., दुःसाहस सँ शक्ति प्रयोगक उत्साह । मै.
जीबटगर-विशे., सतत् उत्साह आ साहस रखैवाला । मै.
जीयतगर-विशे., १. भारी । २. धनिक । ३. प्रभावी । मै.
जीवन-सं., जीवित रहैक क्रम । सं. तत्सम
जीभ-सं., स्वाद लैक अंग (इन्द्रिय) जिह्वा । मै.
जीर-सं., कटुक विशेष (मसाला) । मै.
जीरह-सं., बात कें खोधि खोधि बहार करब । वादी प्रतिवादीक अभियोग प्रमाणित करैले मोकदमा मे विभिन्न रूपें बात पूछैक क्रम । मै.
जीह-सं., देखू—"जीभ" । मै.
जीह नमड़ब-क्रि., कोनो वस्तु देखैत मात्र मन लोभाएब । मै.
जीह पनिछाएब-क्रि., खाइक नीक वस्तु देखितैं जीह पर पानि बहार होएब । मै.

जीह फँरियाएब-क्रि., वमन वेग होएब। मै.

जु

जुआ-सं., १. खींचै लेल बैलगाड़ीक आगू मे लागल बड़दक कान्ह पर रहैवाला काठक नामानामी पट्टी। २. दाओ (काँति) रखैवाला खेल। मै.
जुआनी-सं., यौवन, जवानी। उ. तद्भव
जुआरी-विशे., जुआ खेलाइ मे निपुण। मै.
जुइज-सं., पुरुष लिंग। पुरुषक गुप्तांग। मै.
जुग्गी-सं., दू दू टाक जोड़ सँ बनल एक मान। मै.
जुग्गू लागब-क्रि., पचीसीक खेल मे दूनू गोधियाँक एकै कोष्ठ मे बैसल बिना पौ सँ नै छूटैवाला गोटीक होएब। मै.
जुग-सं., १. चूड़ीक संग जोड़ल चूड़ी। २. युग। सं. तद्भव
जुगनू-सं., भगजोगनी। खद्योत। हि. तत्सम
जुग पाकड़ि-विशे., (लाक्षणिक) बहुत पुरान लोक। मै.
जुगाइत-सं., अधिक कालक अवधि। मै.
जुगिलतगर-विशे., काज आ व्यवहार मे अबैक योग्य। मै.
जुगुति-सं., युक्ति, उपाय। सं. तद्भव
जुगूत-विशे., युक्ति, उचित प्रतिकार। मै.
जुज्जी-सं., छोट बच्चाक गुप्तांग। मै.
जुझब-क्रि., युद्ध मे मग्न भ' क' लड़ब। हि. तत्सम
जुट्टी-सं., धानक सींस वा आन कोनो लच्छावाला वस्तुक गुहि क' बनल वस्तु। मै.
जुट-विशे., समान मतक दल। मै.
जुटब-क्रि., सम्मिलित होएब। जोड़ाएब। मै.
जुटाएब-क्रि., प्रबन्ध कय एकत्र करब। मै.
जुटान-सं., १. एकत्र करैक प्रयास। २. सम्मेलन। मै.
जुठल-विशे., सक्कत। मै.
जुड़ब-क्रि., १. हृदय सँ ठण्ढा होएब अर्थात् तृप्तिक आनन्द होएब। २. अभिलषित वस्तुक प्राप्ति होएब। ३. उपभोगक अनुकूल आपूर्ति होइत रहब। मै.
जुड़बन्हन-सं., स्त्री (बधू) पुरुष (वर) क आत्माक एकाकार भ' क' बन्धन। मै.
जुड़ाएब-क्रि., १. मन सँ तृप्त बनाएब। २. शरीरे शीतल होएब। मै.
जुत्ता-सं., पनही। मै.
जुत्थ-सं., यूथ। समूह। मै.
जुति-सं., हर जोतैक काल बड़दक कान्हक मिलान। मै.
जुतिगर-विशे., अपन जोड़क संग कान्ह उठबैवाला बड़द। मै.
जुतियाएब-क्रि., जुत्ता सँ पीटब। मै.
जुध-सं., युद्ध। सं. तद्भव
जुन्ना-सं., नमहर खढ़ कें ऐंठि क' बना नमहर एक भत्तावाला रस्सी। मै.
जुनेठ-सं., जुन्नाक हेतु बिन छोपल धानक डाँट सँ झारल धान। मै.
जुनेठब-क्रि., जुन्ना सँ कसि क' बान्हब। मै.
जुम-सं., चुनाओल तमाकूक मुह मे दैक मात्रा। मै.
जुमब-क्रि., वस्तुक पूर्ति होएब। मै.
जुमाउ-विशे., पुरैवाला आ पुरबैवाला। मै.
जुमाएब-क्रि., पुराएब, खर्चक अनुसार पूर्ति करब। मै.
जुमुसु बान्हब-क्रि., बहुत लोकक समूह बना क' चढि आएब। मै.
जुमौआ-विशे., जुमौनिहार, जूमैवाला। मै.
जुरबन्द-सं., खोपा बन्हैक वस्तु। मै.

जू

जू-सं., १. भगक आगू तथा ढोँढ़ी आ काँख मे रहनिहार सूक्ष्म कीट। २. अजायब घर। हि. तत्सम
जूआ-सं., बैलगाड़ीक आगू बड़दक कान्ह पर रहैवाला गोल आयताकार लकड़ी। मै.
जूआसारि-सं., जूआ खेलाइक अड्डा। मै.
जूट-सं., सन, पटुआक सूत। मै.
जूटब-क्रि., संयुक्त होएब। मै.
जूटिका बन्धन-सं., उपनयन सँ पछिला राति बरुआक टीक कें शाहीक काँट सँ तीन भाग कय प्रत्येक भाग मे मोड़ल आमक पल्लव बन्हैक प्रक्रिया। सं. तत्सम
जूटी-सं., स्त्रीगण सभक केशक तीन लट बनाकय गूहल केश विन्यास। मै.
जूठनि-विशे., ऐंठाओल पदार्थ। मै.
जूड़-सं., ठंढा। मै.

जूड़ शीतल-सं., पानि कादोक खेल, मेष संक्रान्तिक दोसर दिन। मै.
जूड़ा-सं., स्त्रीगणक केश विन्यास। खोपा। मै.
जूता जुतौअलि-सं., जूता सँ परस्परक मारि। मै.
जूति-सं., परिवारक प्रधानता, जकर विचारें घरक काज चलैत होइक। मै.
जूमब-क्रि., पहुँचब, आबि जाएब। मै.
जूस-सं., फलक सिद्ध रस। मै.
जूही-सं., फूल विशेष। मै.

जे

जे-सम्बन्धवाचक सर्वनाम–कर्ता कारक। प्रयोग–"जे कहलौं से बुझलौं कि ने।" मै.
जेकती-अव्यय, समान, जेना, जकाँ। मै.
जेट-सं., विशेष हवाइ जहाज। मै.
जेठ-सं., १. जेठ मास। प्रयोग–"जेठ हे सखि हेठ वर्षा।" २. वयसें पैघ। मै.
जेठका-विशे., अनेक मे वयसें सब सँ पैघ। स्त्री० जेठकी। मै.
जेठजनी-विशे., (आदर मे) देयादनी वा बहिन सब मे जेठ। मै.
जेठजर-सं., (लाक्षणिक) जेठक प्रति ईर्ष्या आ आक्रोश। मै.
जेठरैअति-विशे., प्रभावशाली, प्राचीन जमीन्दारक लगानक संग्रह करैक प्रमुख। मै.
जेठसासु-विशे., पत्नीक जेठ बहिन। सासुक सम्मान योग्य। मै.
जेठाइ-सं., वयसें पैघ होइक अन्तर। मै.
जेठान-सं., देव उठान। (स्थान भेदें शब्द भेद)। मै.
जेठशि-सं., क्रिया कर्मक अधिकारी रहैक द्वारें जेठ कें देय। मै.
जेठीमधु-सं., कन्द विशेष। मै.
जेठुआ-विशे., जेठ मास मे होम'वाला। मै.
जेनऽ-अव्यय, जेम्हर, जाहि दिश। मै.
जेना-अव्यय, जाहि रूपें, यथा। मै.
जेबकतरा-विशे., आधुनिक पाकिटमार। मै.
जेब खाएब-क्रि., आनक संग मिलान होइक योग्य होएब। सुपुट बैसब। मै.
जेबर-सं., गहना। उ. तद्भव
जेबी-सं., अंगा मे बनाओल धोकरी। उ. तत्सम
जेम्हर/जेमहर-अव्यय, जाहि दिश। मै.
जेर-सं., समूह, झुन्ड, बहुतक एक समष्टि। मै.
जेरगर-विशे., अधिक लोक सँ भरल व्यक्ति। मै.
जेली-सं., फलक गुद्दा कें औंटकय जमाकय बनल भोज्य वस्तु। मै.
जेहन-अव्यय, १. जाहि प्रकारक। मै. सं., २. आगूक कृत्रिम अङनै आ हृदय। उ. तद्भव
जेहनसन-विशे., सन्दिग्ध अवस्थाक शब्द। मै.
जेहरि-सं., पैरक गहना विशेष। मै.

जै

जै-सं., जय। अव्यय, जाहि। सं., जौक आकारक अन्न। मै.
जैओ-अव्यय, यद्यपि। मै.
जैखन-अव्यय, जाहीक्षण। मै.
जै जनमल-विशे., सन्तान। मै.
जैयथा-सं., सब प्रकारक सम्पत्ति। मै.
जैंत-सं., वनस्पति विशेष। मै.
जैतीकाल-अव्यय, जाइक समय मे। मै.
जैतुक-सं., जमाय कें देबाक वस्तु। मै.
जैधी-विशे., देयादनीक बेटी। मै.
जैन-सं., भारतीय धर्म सम्प्रदाय विशेष। मै.
जैपन्थी-सं., सत्यनाशक बाट। मै.

जो

जो-क्रि., अत्यन्त निरादर मे, जाइक आज्ञा। मै.
जोआएब-क्रि., यौवन प्राप्त करब। मै.
जोआरि-सं., समुद्रक लहरि (लाक्षणिक) कोनो बातक तरङ्ग उठब। मै.
जोँक-सं., पानि मे रहैवाला शोणित चूसैवाला छोट जीव। मै.
जोँकटी-सं., पेट मे उत्पन्न कीड़ा। चाली। मै.
जोकर-विशे., १. योग्य। २. हँसबैक चेष्टावाला। मै.
जोकरक-विशे., योग्यतावाला। मै.
जोंकी-सं., १. पेटक सूक्ष्म कीड़ावाला रोग। २. सोहिजनक बहराएल मात्र फड़। ३. ठेङी। मै.
जोख-सं., तौल (अन्न आदि वस्तुक)। मै.
जोखतौल-सं., तौलैक निरन्तर क्रम। मै.
जोखब-क्रि., तराजू सँ तौलब। मै.

जोखा-सं., जोड़ करब, हिसाब करब। मै.
जोखिम-सं., संकट, खतरा, आपत्ति। उ. तद्भव
जोग-सं., १. योगसाधना । २. जमायक भोजन कालक स्त्रीगण द्वारा गाओल गीत। ३. योग्य (विशे.)। सं. तद्भव
जोगटोन-सं., तान्त्रिक प्रयोग। मै.
जोगब-क्रि., तत्परता सँ रक्षा करब। ओगरब। मै.
जोगबार-विशे., सुरक्षा मे तत्पर लोक। मै.
जोगाइत-विशे., योग्यतावाला। सं., प्रबन्ध, प्रतीकार। मै.
जोगाएब-क्रि., बचा कय गुप्त राखब। रक्षा करब। मै.
जोगान/जोगार-सं., आवश्यक एवं उपयुक्त वस्तुक जुटान तथा व्यवस्था। मै.
जोगिन-विशे., जोगटोन आ तन्त्र मन्त्र करैवाली स्त्री। मै.
जोगिया-विशे., १. घरद्वार छोड़ि सन्यासी बनैवाला। २. योगी सन्यासीक गुण आ वाना धरैवाला। मै.
जोगियावाना-सं., साधु सन्यासीक वेशभूषा। मै.
जोगीरा-सं., होरीक गीतक बीचक फकरा। मै.
जोङीहरीर-सं., छोटकी हरीर। मै.
जोट्टा लागब-क्रि., गोधियाँक गोटीक घर मे पचीसी खेलक गोटीक फँसि जाएब। मै.
जोटल-विशे., सक्कत सँ दू वस्तु जोड़ल। मै.
जोटलाहा-विशे., दू वस्तु सक्कत सँ जोड़लवाला। मै.
जोटुआ-विशे., दू वस्तु एकठाँ सक्कत सँ साटलवाला। मै.
जोड़-सं., दू अंगक सक्कत सँ मिलान। मै.
जोड़न-सं., दूध सँ दही जनव'बैक दही। मै.
जोड़ब-क्रि., दू अंश कें एकठाँ सक्कत सँ साटब। मै.
जोड़ मिलब-क्रि., एकक अनुकूल दोसरक होएब। मै.
जोड़ लागब-क्रि., मनुष्य सँ अतिरिक्त जीवक मैथुन करब। मै.
जोड़ा-विशे., दू संख्याक एक मान। मै.
जोड़ी-सं., १. दू घोड़ावाला घोड़ागाड़ी। २. स्त्री पुरुषक संग। मै.
जोड़ीदार-विशे., सब काज मे संग रहनिहार। मै.
जोड़ी पढ़ब-क्रि., एक स्वरें दू व्यक्ति मिलि मन्त्र पढ़ैत साँपक विष झारब। मै.
जोड़ुआ-विशे., दू खण्ड जोड़ि क' बनाओल वस्तु। मै.
जोड़ैया-सं., ईंटा सँ देवाल ठाढ़ करैक क्रम। मै.
जोड़ौआ-विशे., दोसर खण्ड जोड़ि बनलाहा। मै.
जोत-सं., हर सँ खेतक कोड़नि। मै.
जोतब-क्रि., १. हर सँ खेत कोड़ब। २. गाड़ी हर मे बड़द कें लगाएब। मै.
जोतलाहा-विशे., हर सँ कोड़लाहा खेत। मै.
जोतषी-विशे., जोतिषशास्त्र जननिहार। मै.
जोतसीम-विशे., जोतैक योग्य खेत वा जोतल जाइवाला खेत। मै.
जोता-विशे., निजी खेतवाला कृषक। मै.
जोताइ-सं., जोतैक तथा कार्य्य मे लगबैक प्रवृत्ति। मै.
जोताउ-विशे., जोतैक योग्य बनल खेत। मै.
जोताएब-क्रि., हरवाहक द्वारा खेत कोड़ाएब। मै.
जोताठ-विशे. जोतला सँ उकटल ढेपवाला। मै.
जोतान-सं., नीक जकाँ जोतैक आ निरन्तर जोतैक क्रम। मै.
जोतास-विशे., जोतै ले उपयुक्त खेत। मै.
जोतासी-सं., जोतै योग्य खेती। मै.
जोति-सं., प्रकाश, इजोत, ज्योति। सं. तद्भव
जोतिष-सं., ग्रह नक्षत्रक शास्त्र। ज्योतिष। सं. तद्भव
जोतिषियारय-सं., ज्योतिष शास्त्रक ज्ञान सँ जीविका। मै.
जोती-सं., पालो सँ (हर मे) बड़द कें बन्हैवाला डोरी। मै.
जोतुआ-विशे., जोतल जाइवाला। मै.
जोर्री-विशे., तत्काल जोड़ि क' काज चलबैवाला बाँस, काठ आ डोरी। मै.
जोर-सं., बल, मेल, सामर्थ्य आ आग्रह। मै.
जोरगर-विशे., शक्तिशाली, अधिक तेज, बलगर। मै.
जोरब-क्रि., मिलाएब, उद्योग करब, ओजस्वी बनाएब। गणना करब। मै.
जोराएब-क्रि., गणना कराएब। सक्कत सँ मिलाएब। मै.

जोरू-विशे.; पत्नी । मै.

जोलहा-विशे., कपड़ा बीनैक व्यवसायवाला जाति । मै.

जोलही-विशे., जोलहाक बीनल कपड़ा । मै.

जोस-सं., उत्साहक आवेग । उ. तत्सम

जोह-सं., एक पर एक लोकक उमड़ल जकाँ गति । मै.

जोहब-क्रि., ताकब, अन्वेषण करब । छल्ली लगाएब । मै.

जोहा करब-क्रि., घासक मुट्ठी कें तहिया क' पथिया मे कसब । मै.

जोहि उठब-क्रि., एके क्रिया मे सामूहिक भावनाक वेग होएब । मै.

जौ

जौं-सं., चैंती अन्न विशेष । मै.

जौँआ-विशे., एक संग एकै गर्भ सँ दू बच्चा जन्म लेनिहार । मै.

जौड़-सं., दूनू हाथ सँ रगड़ि क' बाँटल डोरी । मै.

जौड़ी-सं., विभिन्न मालक विभिन्न डोरी । मै.

झ

झ-सं., १. चवर्गक चारिम वर्ण । २. चोआ वा सुगन्धि मिलाओल नोसि (सुंघनी) । मै.

झक्कड़-सं., बुन्नीक संग तेज बसात । मै.

झक्का-सं., अम्मत फल कें मेहीं काटि नोन तेल मिलओल चहटगर पदार्थ । मै.

झक्को-विशे., छनै मे भावनाक उग्रतावाला । मै.

झक्ख मारब-क्रि., निष्क्रिय भेल एकाकीपन मे समय बिताएब । मै.

झक-सं., कनेक कालक निद्रा, ओंघाइत ओंवाइत निन्न । मै.

झकझक-विशे., प्रकाशक द्वारें दूरै सँ देखार । मै.

झकझकाएब-क्रि., अलगै सँ प्रकाशित होएब । मै.

झकझोरब-क्रि., सक्कत सँ पकड़ि दुहू दिश तेजी सँ हिलाएब । मै.

झँकना-विशे., सिद्ध वस्तु कें एक सँ दोसर वर्तन मे करैक वासन (साधन) । मै.

झँकब-क्रि., पैघ वर्तन सँ अन्न छानि छानि क' बहार करब । मै.

झक लागब-क्रि., आलस अयला सँ किछु क्षण ले निन्न आएब । मै.

झकसी-सं., फूही पड़ैत छारल मेघ । मै.

झँकाएब-क्रि., सिद्ध वस्तु कें एक सँ दोसर वर्तन मे कराएब । मै.

झकाएब-क्रि., १. कनेक काल ले व्यस्ततौ मे निन्न पड़ब । २. गाछक फल झारै ले डारि हिलाएब । मै.

झकाझक-विशे., चारू दिश फरिच्छ रहला सँ चमकदार । मै.

झकार-सं., वासनक भिजलाह वस्तु कें उपर नीचाँ वासनै मे उछालि क' उपर नीचाँ करैक चेष्टा । मै.

झंकार-सं., गहना आ भ्रमर आदिक मधुर शब्द । सं. तत्सम

झकारब-क्रि., वासनक वस्तु कें उछालि क' उपर नीचाँ करब । मै.

झकास-सं., १. बसात परक मेघक थोड़ वर्षा । २. गाछ वृक्षक सघनता सँ अन्हराओन । मै.

झकोर-सं., सहसा वेग सँ कम्पन । मै.

झँकोरब-क्रि., हटात् वेग सँ कँपाएब । मै.

झख-सं., विषाद भरल चिन्ता । मै.

झखनी लागब-क्रि., दीनता सँ गम्भीर चिन्ता । मै.

झखब-क्रि., दीनता भरल गम्भीर चिन्ता मे पड़ल रहब । मै.

झखरन-विशे., असमय मे झरि क' खसल । मै.

झखरब-क्रि., समय पर गाछ सँ फलक पूर्णतः झरि जाएब । मै.

झखरी-विशे., असमय मे झरल पदार्थ । मै.

झखरौआ-विशे., झड़ि कय खसलवाला । मै.

झखरलहा-विशे., झखरल फलवाला गाछ । मै.

झखाएब-क्रि., १. गाछ डोला कय पाकल फल झाड़ब । २. दुखदायी बात कहि गम्भीर चिन्ता मे द' देब । मै.

झंखार-सं., १. पैघ आ विस्तृत गाछक समूह । २. अधिक वृद्धता वश पुरान । (विशे.) मै.

झँखुरी-सं., छोट गाछक झुण्ड । गाछक छोट छोट डारि । मै.

झगर-सं., इनार सँ डोल बहार करैक लेल लोहक अनेक अंकुशक झाबा । मै.

झंगर-सं., परस्पर ओझराएल अनेक काज आ वस्तुक समूह। मै.

झगझग-विशे., विशेष प्रकारें प्रकाशमान। मै.

झगड़ब-क्रि., परस्पर कलह करब। मै.

झगड़ा-सं., विरोध। मै.

झगड़ाझांटी-सं., विरोधक क्रम। मै.

झगड़ादन-सं., आपस मे स्थायी विरोधक क्रम। मै.

झगड़ाहु-विशे., अनेरो झगड़ा करैले उदमाहल। मै.

झगड़ुआ-विशे., झगड़ा वा विरोध उत्पन्न करैवाला। मै.

झगड़ौआ-विशे., झगड़ा मे फँसलहा। मै.

झझकार-सं., खौंझाएल शब्द। मै.

झझकारब-क्रि., खौंझाएल शब्दें गंजन करब। मै.

झझकाह-विशे., अनेरो खौंझा क' गप करैवाला। मै.

झंझट-सं., अनेक प्रकारक कठिन काजक व्यग्रता। मै.

झंझटिया-विशे., १. अनेक ओझरौटवाला काज। २. बिच्चे मे अड़ङ्गा रोपैवाला। मै.

झंझराह-विशे., बीच बीच मे फाँकवाला वासन। मै.

झंझरी-विशे., छेदवाला नाओ। मै.

झझाएब-क्रि., आवश्यकताक अनुसार खेत मे पानि बहब। मै.

झंझावात-सं., बिहारि, वर्षाक संग आन्ही। सं. तत्सम

झझो (पात)-सं., बसातक द्वारे काटल फाटल केराक पात। मै.

झट्टा-सं., पटकि पटकि दाना झारल धानक डाँट। मै.

झट द'-अव्यय, जल्दी सँ। मै.

झटक-सं., तेज बसातक संग वर्षा। मै.

झटकन-सं., सूपक बसातक संगें अन्नक परिष्कार। मै.

झटकब-क्रि., सूपक बसातें अन्न कें स्वच्छ करब। मै.

झटका-सं., १. गर्दनिक उपर देने छागरक बलि। मै.

झँटका-सं., जोर सँ कथुक आक्षेपें चोट। मै.

झटकारब-क्रि., तेज चलब। मै.

झटकी-सं., बसातक वेग पर एक लक्खत वर्षा। मै.

झटझट-अव्यय, लगले लागल। शीघ्रता सँ। मै.

झँटना-सं., गुच्छावाला वस्तु सँ मारैक साधन। झँटैक वस्तु। मै.

झटपट-अव्यय, अतिशीघ्र। मै.

झटहा-सं., मारैक हेतु तथा फल तोड़ैले फेंकैवाला छोट डंटा। मै.

झटहा मारब-क्रि., (लाक्षणिक) तात्पर्य्य सँ अर्थ बहार करैवाला शब्द कहब। मै.

झँटुआ-विशे., झाँटिकय झाड़ल दानावाला। मै.

झंठी-विशे., डारि पात झड़ल गाछ। मै.

झड़-विशे., १. असमय खसल फल। २. सींस सँ झड़ल दानाक गाछ। मै.

झड़ना-विशे., सींस सँ झट द' झड़ैवाला। मै.

झड़नमा-विशे., झड़ै मे अत्यन्त सुगम। मै.

झड़ब-क्रि., १. अपन जड़ि सँ अलग भ' क' खसब। २. स्त्रीक मासिक धर्म होएब। ३. पशु स्त्री कें लज्झा खसब। मै.

झड़र-सं., छोटका वड़र। मै.

झड़री-सं., बुढ़ारी मे देहक कारी कारी चिह्न। मै.

झड़लहा-विशे., अपनें खसलहा। मै.

झंडा-सं., पतक्खा, पताका। मै.

झड़नी-सं., बाँसक पातर काइमक बनल मूठदार वस्तु। मै.

झड़ाठ-विशे., कोनो वस्तु कें उठा बैसा कयला सँ झड़ल दाना। मै.

झड़ीकस-सं., काठ मे खाँच कढ़ैवाला कमारक अस्त्र। मै.

झड़ी लागब-क्रि., लगातार बुन्ना बुन्नी वर्षब। मै.

झड़ुआ-विशे., झड़ि झड़ि क' खसलहा। मै.

झन्न द'-अव्यय, धातुक वर्तनक खसैक शब्द। मै.

झनक-सं., मालक व्याधि। मै.

झनकब-क्रि., १. कनेक नेङराएब। २. रोमाञ्चक संग देहक काँपब। मै.

झनक बताह-विशे., कखनो कखनो बताहक रंग धयनिहार। स्त्री० झनक बताहि। मै.

झनकाएब-क्रि., भीतर सँ देह कें सिहराएब। मै.

झनकार-सं., काड़ा, नूपुर आदिक शब्द। मै.

झनकारब-क्रि., गहना आदिक शब्द करब। मै.

झनकाह-विशे., कोनो बातक सूरि मे बहैवाला। जाही ताही बातक झोंकवाला। स्त्री० झनकाहि। मै.

झनकी-सं., बतहपनाक काज। मै.

झनझनाएब-क्रि., १. पातर धातुक झनझन बाजब। २. झुनझुन कय देहक काँपब। मै.

झनन झनन-सं., नचैक काल ताल पर नूपुरक शब्द। मै.

झनपटहा-विशे., खाइक सूतैक काल अनेर झमेल करैवाला नेन्ना। खौंझाह। मै.

झनरझनर-सं., कोनो धातु सँ बहराएल अप्रिय शब्द। मै.

झन सन-अव्यय, धातुक वस्तुक जोर सँ खसैक ध्वनि। मै.

झनाक द'-अव्यय, धातुवाला वस्तुक चोट सँ मस्तिष्क मे प्रतिक्रिया। मै.

झप्पड़-सं., हल्लुक हाथें थापड़क मारि। मै.

झँप्पा-सं., कोनो वासनक मुह कें सक्कत सँ झँपैक बस्तु। मै.

झप्पा-विशे., गरम दूध मे द' क' झाँपल भात। मै.

झपक-सं., नुका क' अचानक हाथ सँ ल'लैक क्रिया। मै.

झपकब-क्रि., नुका नुका क' ल' भागब। मै.

झपका-विशे., झपकि क' ल' लैक लतिवाला। मै.

झपकी-सं., कोनो अवस्था मे निन्न भ' जाइक अभ्यास। मै.

झपट्टा-सं., कोनो वस्तु पर आक्रमण करैले अचानक तेजी भरल चेष्टा। मै.

झपट-सं., अलक्षित आक्रमणक वेग। मै.

झपटब-क्रि., छीनैक हेतु अचक्कें वेग सँ आक्रमण करब। मै.

झपटा मारब-क्रि., कोनो वस्तु पर अचक्कें जोर सँ टूटि पड़ब। मै.

झपटान-सं., अचूक झपटैक क्रिया। मै.

झपताला-सं., संगीतक तालक प्रभेद। मै.

झँपन-सं., मेघक अस्थायी छाया। मै.

झँप्पन तोपन-सं., बहुत दिन धरि मेघक छाया। मै.

झपना-सं., झँपैक अस्थायी वासन। मै.

झँपसी लाधब-क्रि., पूस मासक धौन्ह लागब। मेघक द्वारें टिपिर टिपिर बुन्न पड़ैत दिन झाँपल रहब। मै.

झँपाओन-विशे., १. धौन्ह वा मेघ सँ झाँपल दिन। २. झँपैक मूल्य वा पुरस्कार। मै.

झपाक द' उठब-क्रि., पानिक धोखा सँ थाल मे पैर पड़ने अचानक धँसैक शब्द होएब। मै.

झँपोन-सं., अढ़ करैक आ झँपैक सन क' दैक चेष्टा। मै.

झब्बा-सं., एक आधार (डन्टी) मे अनेकक स्थिति। मै.

झबझब-अव्यय, जल्दी जल्दी। मै.

झब द'-अव्यय, शीघ्रता सँ। मै.

झबरब-क्रि., चारू दिश झब्बाक झब्बाक लटकल रहब। मै.

झबरा-विशे., गरदनि पर नमहर केश लटकल रहैवाला। स्त्री० झबरी। मै.

झबसन-अव्यय, झट द'। मै.

झबसी-सं., काज नष्ट करैवाला, जल्दीबाजी। मै.

झबहा-सं., एक सेरवाला बड़का दूधक नप्पा। मै.

झबही-सं., आधा सेरक छोटका नप्पा। मै.

झबिया-सं., कुन्जीक गुच्छा। मै.

झमक-सं., प्रदर्शनक हेतु तेजी सँ अंग चालन। मै.

झमक झमक-सं., विभिन्न चेष्टा आ तेजी सँ अंग चालनक द्वारें आभूषण सभक ध्वनि। मै.

झमकब-क्रि., मधुर ध्वनिक संग प्रकृतिक अभिव्यक्ति होएब। मै.

झमकाएब-क्रि., अपन झमक सँ वातावरण आ परिवेश मे मधुरता एवं आनन्द पसारब। मै.

झमझौहरि-सं., अनेक लोकक एक संग जोर सँ क्रन्दन वा विवाद। मै.

झमटगर-विशे., डारि पातक अधिकता सँ सघन भेल। मै.

झम द' उठब-क्रि., द्रव्य (धातु) क वस्तु खसने ध्वनि होएब। मै.

झमर झमर-सं., अनेक द्रव्यक सम्मिलित ध्वनि। मै.

झमरुआ-विशे., वासन मे अँचार कें मसाला द' क' वासन कें झोंक सँ डोला डोला कय मसाला मिलाओल अँचार। मै.

झमाएब-क्रि., १. एकठाँ अधिक काल रौद बसात मे पड़ल रहने वस्तुक विकृत होएब। २. (लाक्षणिक) शोचक द्वारें एकठाँ सँ दोसर ठाँ नहि होएब। मै.

झमाक-सं., एक संग अनेक धातुक वस्तुक खसैक ध्वनि। मै.

झमाझम-अव्यय, १. मुसलाधार वर्षाक ध्वनि। २. धातुक बासन आ गहना सभक कम्पनक ध्वनि। मै.

झमान-सं., कष्ट, चिन्ता आ विवशता सँ दुखी होइत निष्क्रिय। मै.

झमान सँ खसब-क्रि., अचानक निराशा सँ चिन्तित भय उठब। मै.

झमार-सं., अथक परिश्रम आ शारीरिक एवं मानसिक अव्यवस्था सँ उत्पन्न क्लेश। मै.

झमारब-क्रि., झोंक सँ अधिक डोलाएब। मै.

झमेल-सं., अपन अपन बात के रखैक हेतु उठाओल समस्या। मै.

झमेलिया-विशे., बात बात मे समस्या ठाढ़ करैवाला। मै.

झऽर-विशे., असमय मे गाछ सँ खसल। मै.

झर-विशे., कटु शब्द। मै.

झरक-सं., बसातक संग आएल ताप। मै.

झरकन-सं., झरकऽवैक, केवल आगि मे पकवैक क्रम। मै.

झरकब-क्रि., आगि सँ वे गर पाकब। डहब। मै.

झरकबाहि-सं., मानसिक उत्तापक लहरि। मै.

झरकल मुह झँपनै पावी-लोकोक्ति, अभद्र मुह कें नै देखाबी सैह नीक। मै.

झरकलहा-विशे., (लाक्षणिक) रूपें स्वभावें अदर्शनीय। मै.

झरकाएब-क्रि., आगि मे पकाएब। डाहब। मै.

झरका लागब-क्रि., अनेर सुखाइक क्रम होएब। मै.

झरकाह-विशे., झरकल जकाँ। झरकऽवैक योग्य। मै.

झरकौआ-विशे., झरका क' बनाओल। झरकाएल। मै.

झरझर-अव्यय, गह पैंच रहैक द्वारें बासन सँ वेगें वस्तुक खसब। मै.

झर झमेल-सं., झमेलक विशेषता। मै.

झरझराएब-क्रि., झरझरा कय खसब। मै.

झरड़-सं., बुढ़ारी मे उगल मुहक फोंसरी। मै.

झरना-सं., घर तर कोनो वस्तु के झारैक (स्वच्छ करैक) वस्तु। मै.

झरनी-सं., स्त्रीगणक केश झारैक साधन। मै.

झर पड़ब-क्रि., कान मे निरन्तर कटु ध्वनिक द्वारें शून्यता उत्पन्न होएब। मै.

झरब-क्रि., १. बिना प्रयासें आमद होएब। २. धनवानक हाथें द्रव्यक प्राप्ति होएब। ३. मन्त्र सँ विष नीचाँ खसब। मै.

झरबड़र-सं., देखू—'झरड़'। मै.

झरबेर-सं., आँठी सँ उत्पन्न गाछक छोट दानावाला बैर (फल)। मै.

झरलहा-विशे., गाछ सँ स्वयं खसलहा। मै.

झराएब-क्रि., १. मन्त्र द्वारा विष आदि नीचाँ उतरबाएब। २. घरद्वार सभक जमल मैल स्वच्छ कराएब। मै.

झरोखा-सं., खिड़की। मै.

झरौड़-सं., उचित सँ छोट दानावाला वस्तु। मै.

झल्ला-सं., विशेष प्रकारक बथुआ साग। मै.

झऽल-सं., फाँक, छेद, बहारक प्रकाश अबैक छोट छोट गह। मै.

झलक-सं., क्षणिक दर्शन। प्रकाशन। मै.

झलक देब-क्रि., नाम मात्रक दर्शन देब। मै.

झलकब-क्रि., प्रकाशित होएब। मै.

झलकी-सं., प्रकाशक रेखा। मै.

झलकाएब-क्रि., चिक्कन कय के चमकाएब। मै.

झलझल-विशे., अत्यन्त मेंही आ स्वच्छ रहैक द्वारें पारदर्शी। मै.

झलझली-सं., आवरणक मेंही सँ नग्नता। मै.

झलफल-सं., कनेक कनेक अन्हारक आगम। मै.

झलफलाएब-क्रि., स्पष्ट नहि सूझब। मै.

झलफली-सं., १. अन्हारक द्वारें देखै मे बाधा। २. सूझैक शक्तिक अभाव। मै.

झलब-क्रि., उठा उठा क' डाँट सँ अन्न झाड़ब। मै.

झलमल-सं., खनहि पूर्ण आ खनहि क्षीण प्रकाश सँ चमक। मै.

झलमलाएब-क्रि., खनहि पूर्ण खनहि थोड़ प्रकाशें चमकब। मै.

झलरी-विशे., पातर आ पुरान भेला सँ पर्दाक अयोग्य, झालरि बनल। मै.

झलहेर-सं., नाओ सँ जल भ्रमण । मै.

झलाक झलाक-अव्यय, अत्यन्त चमक सँ देखार । मै.

झलाबोर-सं., पानि सँ सब किछु डूबल रहैक दृश्य । मै.

झलिबज्जा-विशे., झालि बजबैं मे निपुण । मै.

झलौआ-विशे., बिना छोपल (जड़ि छोड़ुआ) धान । मै.

झंसिगर-विशे., कड़ुअइ भरल तेज मन्धवाला । मै.

झहर झहर-अव्यय, तीव्र वेग सँ वर्षाक क्रम । मै.

झहरब-क्रि., झरि झरि खसब । (लाक्षणिक) अनायास सतत् लाभ होएब । मै.

झहार-सं., अनायास झरि झरि खसैक क्रम । मै.

झहुरा होएब-क्रि., कोनो कारणे टूटि टूटि नष्ट होएब । मै.

झा

झा-सं., मैथिल ब्राह्मणक एक उपाधि । मै.

झांइ-सं., १. कनेक मात्रक स्थिति । २. दुराग्रह । मै.

झांइ चढ़ब-क्रि., अनेर कोनो बातक जिद्द होएब । मै.

झाइंग बान्हब-क्रि., फूसि दोष लगाएब । मै.

झांइ झांइ-अव्यय, अस्पष्ट उग्रतापूर्वक अधिक लोकक ध्वनि । मै.

झांइस-सं., कड़ुतेलक नाक मुह मे कड़ुआहटिक स्वाद । मै.

झाउँ झाउँ-अव्यय, कुकूरक आ ओकर जकाँ मनुष्यक बजैक शब्द । मै.

झाक-सं., सुखऽवैले चुलहा पर देल काँच जारनि । मै.

झाकन-सं., धानक उसिना आ भोजक भात वर्तन सँ उझिलैक क्रम । मै.

झाकब-क्रि., सिद्ध भात आ उसिनल धान आन वासन मे बारम्बार उझिलब । मै.

झांकी लेब-क्रि., अल्पकालक दर्शन । मै.

झांखब-क्रि., एकै ठाम अधिक बोझि क' राखब । मै.

झांखी-सं., गाछक छकड़ल पाड़ल डारि पातक समूह । मै.

झांखुर-सं., छोट छोट गाछ आ लत्तीक सघनता सँ बनल बोन । मै.

झाग-सं., साबुन आदिक सघन फेन । मै.

झागन-सं., तौलिया गमछाक फर । मै.

झांझ-सं., पकवान आ पैघ वर्तन सँ भात छनँ लेल पैघ डंटावाला सघन छेदवाला गोल चापट धातुक बनल वर्तन । मै.

झांझन-सं., बाँसक लागि लागल फाड़ल पसारल टाट बन्हैक साधन । मै.

झांझरि-विशे., अनेक छेद भरल । मै.

झांझो-विशे., कुत्ताक प्रभेद । छोट शरीरक विशेष भूकैवाला कुत्ता । मै.

झांट-सं., अचक्कँ हल्लुक वस्तुक चोट । मै.

झांटन-सं., धान आदि झँटैक क्रम । मै.

झांटब-क्रि., १. हल्लुक वस्तु सँ चोट करब । २. धान आदिक डाँट सँ दाना झाड़ब । मै.

झांट बाढ़नि करब-क्रि., दुर्वाक्य कहि कय भगाएब । मै.

झांटि-सं., गुप्तांग लगक केश । मै.

झांटी-विशे., तेज बसात । मै.

झाड़-सं., एकठाँ अनेक छोट गाछ आ लत्तीक गोल । मै.

झाड़नि-सं., १. घर द्वारक भीतर बाहर झाड़ैक प्रकार । २. दाओन करैं मे बराबरि डाँट झाड़ि-कय दाना नीचाँ खसबैक क्रम । मै.

झाड़ फानूस-सं., शोभाले कोठाक भीतर लटकाओल काच वा कागजक विभिन्न आकारक गुच्छा । उ. तद्भव

झाड़फूँक-सं., तन्त्र मन्त्रक विधि सँ क्लेशक शान्तिक प्रयास । मै.

झाड़ब-क्रि., वस्तु कें परिच्छ करब । मै.

झाड़ा फिरब-क्रि., मलत्याग करब । मै.

झाड़ी-सं., छोट छोट गाछ आ लत्ती सँ झाँपल स्थान । कुञ्ज । मै.

झाड़ू-सं., बाढ़नि । (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

झात् !-अव्यय, मुह नुकाकय छोट नेन्नाक मनोरंजनक हेतु कहैक शब्द । मै.

झांप-सं., १. सवारी (महफा, चौपाला) क ओहार । २. देवताक उपर लटकऽवैंवाला ओहार । मै.

झापट-सं., अनचोकें वस्त्र आ पक्षीक पाँखि सभक झटका । मै.

झापड़-सं., पञ्जा पसारि हल्लुक हाथक थापड़। मै.
झांपनि-सं., आवरण, झँपैक साधन वा क्रम। मै.
झांपब-क्रि., आवरण देब। आच्छादन करब। मै.
झापस-सं., बुद्धि पर अन्हरजाली देब। झासा। मै.
झाबा-सं., गुच्छा। मै.
झाबी-सं., कुञ्जी आदि वस्तुक गुच्छी। मै.
झाम-सं., ताप सँ बरकल पजेबा। मै.
झाम गूड़ब-क्रि., चिन्ता दीनता आ असमर्थता सँ शोच मे पड़ल निष्क्रिय होएब। मै.
झामर होएब-क्रि., परिष्कारक बिना तथा कष्टक द्वारें घर आ देह आदि विवर्ण होएब। मै.
झामरि लेब-क्रि., १. दौड़ दौड़ क' कुकुरक भूकब। २. नर्तकीक उन्मत्त भ' क' नाचब। मै.
झामा-विशे., कत्तौ कत्तौ ताप सँ बरकल भट्ठाक ईंटा। मै.
झार-सं., पानि सन पातर मल। मै.
झारझूर-विशे., वासन कें नीक जकाँ झारला सँ बहराएल शेष वस्तु। मै.
झारनझूरन-विशे., झारि झूरिकय एकत्रित कयल। मै.
झारनि-सं., १. मन्त्र द्वारा कोनो वस्तु ल' क' विष आदि अदृश्य वस्तु कें उतारैक प्रयास। वस्त्र सँ गर्दा झारैक हेतु जोर सँ कम्पन। मै.
झारनिहार-विशे., मन्त्र पढ़ि झारैवाला। मै.
झारब--क्रि., १. वस्त्र आदि सँ धूरा आदि खसबैले झोंक सँ कँपाएब। २. मन्त्र सँ विष आदि उतारब आ भूत भगाएब। मै.
झारी-सं., टोंटीवाला साँकर मुहक जलपात्र। मै.
झालरि-सं., कपड़ाक विभिन्न रूपक बनाओल मालाकार गेरुआ आदि वस्तुक शोभा। मै.
झालि-सं., पातर गोल पत्र जकाँ दूनू हाथ सँ बजबैवाला वाद्य विशेष। मै.
झाँसि-सं., देखू—"झाँइस"। मै.
झाँसी-सं., लत्ती फत्तीक पात कें खाइवाला लाल छोट कीड़ी विशेष। मै.

झि

झिक्काझोरी-सं., एके वस्तु कें अपना अपना दिश खींचैक प्रयास। मै.
झिंगा-सं., १. इचना माछ। २. घेरा (तरकारीक फल)। (स्थान भेदें शब्द भेद)। मै.
झिंगुनी-सं., लत्ती मे फड़ैवाला छोट व्यंजन। मै.
झिंगुर-सं., राति कें शब्द करैवाला जंगली कीड़ा। मै.
झिझकब-क्रि., कोनो विषय कें करै मे आगाँ पाछाँ करब। मै.
झिझकाह-विशे., झिझकैक स्वभाववाला। मै.
झिझकी-सं., कोनो काज कें करै मे आगाँ पाछाँ करैक प्रकृति। मै.
झिझिया-सं., तौला कें रंग सँ लिखनि कय कें बीच सँ नीचाँ असंख्य छेद कय, दीप बारि कय माथ पर लय गीत गबैत नवरात्र मे भरि गाम घुमवैत डाइनि योगिन सँ रक्षाक हेतु दुर्गाक प्रार्थना भरल टोना विशेष। मै.
झिझिर कोना-सं., आँखि झाँपि कोन सँ कोन बूलैक खेल। मै.
झिझिरी-विशे., पुरान होइक कारणें अधिक फाटल चीटल। मै.
झिटका/झिटुका-सं., फूटल माटिक वासनक छोट टुकड़ा। झिटकी। मै.
झिटकी मारब-क्रि., धोखा दय अपन लक्ष्य पर आनब। मै.
झिटब-क्रि., छल, बल आ कल सँ वस्तु ल' लेब। मै.
झिड़काह-विशे., पहिनहि अनेरो बात पर बिगड़ि उठनिहार। मै.
झिड़की-सं., पहिनै खिसियाएल बात कहैक स्वभाव। मै.
झिनकी-सं., मालक रोग विशेष। मै.
झिमझिम-विशे., सघन बुन्नीवाला बिन बसातक वर्षा। मै.
झिमिर झिमिर-विशे., लगातार थोड़ वेगक वर्षा। मै.
झिल्लम-सं., बाँहि सक्कत करैलेल काठक बनाओल मुद्गर। मोट आ छोट काठक गोल खण्ड। मै.
झिल्लम झाड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) क्रोधें हाथ फेंकि फेंकि बिगड़ब। मै.

झिल्ली-सं., १. मनुष्यक कानक भीतर तथा अक्षत यौवनाक योनि मे पातर आ कोमल चमड़ाक आवरण। २. तार जकाँ बेसनक खाद्य। मै.
झिलमिली-सं., घरक भीतर मे देवाल मे देल रौद बसात अबैक छोट झरोखा (छेद)। मै.
झिलिया-सं., बेसनक तार जकाँ जिलेबीसन सघन लपेटल तेल घीक छानल नोनगर खाद्य पदार्थ। मै.
झिलियाएब-क्रि., कोड़ल खेत कें कोदारि सँ चौरस करब। मै.
झिसियाएब-क्रि., अत्यन्त मेंही बुन्नीवाला वर्षा। मै.
झिहरी-सं., कनेक कनेक झरैवाला वासनक छेद। मै.
झिहिरझिहिर-विशे., मन्द आ निरन्तर अबैवाला वायु। मै.

झी

झीँक-सं., पीसैक काल निरन्तर जाँत मे देबाक मुट्ठीभरि अन्नक मान। मै.
झीँकब-क्रि., अपना दिश क' खींचब। मै.
झीँकातीरी-सं., अपना अपना दिश एकै वस्तु कें खीचैक चेष्टा। मै.
झीरो-सं., धानक गाछक संग बढ़ैवाला घास। मै.
झीसी-सं., मेघ सँ खसैत अत्यन्त मेंही बुन्नी। मै.

झु

झुक्का-सं., डन्टी लागल लगुजा भट्टा कें चीरि कय बिना पिठारक तरुआ तरकारी। मै.
झुकनी-सं., ओंघी सँ झुकि झुकि खसैक अभ्यास। मै.
झुकब-क्रि., नीचाँ लिबब। नत होएब। मै.
झुकाएब-क्रि., नीचाँ लिबाएब। नवाएब। मै.
झुकाओ-सं., एक दिशाह मनक आकर्षण। मै.
झुकान-सं., झुकैक क्रम। मै.
झुकाह-विशे., एक दिश लिबल सन भेल। मै.
झुग्गी-सं., अस्थायी वाटक कातक फूसक घरवाला छोट दोकान। मै.
झुझुआएब-क्रि., थोड़ वस्तु सँ असन्तोष प्रकट करब। मै.
झुझुआन-विशे., थोड़ रहला सँ असन्तोषजनक। मै.
झुझुआह-विशे., १. थोड़ होइक द्वारें मन भरै मे अयोग्य। २. झुझुआइक गुणवाला। मै.
झुट्ठा-विशे., फुसियाह। फूसि बजैवाला। मै.
झुड़ुर-विशे., बुढ़ारीक द्वारें लटकल चमड़ावाला बूढ़। मै.
झुण्ड-सं., समूह, दल। मै.
झुत्थुर-विशे., झुकल अंग, नमड़ल चमड़ा आ पाकल पिपनीवाला बूढ़। मै.
झुनकी-विशे., बाजनवाला ठेङा। मै.
झुनकुट पुरान-विशे., अत्यन्त पुरान वस्तु आ अत्यन्त वृद्ध लोक। मै.
झुनझुन-अव्यय, द्रव्यक बनल वस्तुक मेंही ध्वनि। नूपुर आ घुघरू काड़ा आदिक ध्वनि। मै.
झुनझुना-सं., अत्यन्त नेन्नाक झुनझुन शब्द करैवाला खेलौना। मै.
झुनझुनी-सं., एकै गरें अधिक काल अंगक रहला सँ रक्त संचार अवरुद्ध भेनें अथवा विशेष रोग भेनें अथवा दुर्बलता सँ अंगक भीतर झुनझुन शब्द करै सन अनुभव। मै.
झुनझुनी भरब-क्रि., आश्चर्य, आनन्द आ भय सँ रोग विशेष सँ अंग मे झुनझुन अनुभव होएब। मै.
झुनाएब-क्रि., खेत मे फसिलक अत्यन्त पाकि जाएब। मै.
झुनुक-सं., नूपुरक शब्द। काड़ाक ध्वनि। मै.
झुनुर झुनुर-अव्यय, कंकड़ भरल फोंक गहनाक ध्वनि। मै.
झुम्मक-सं., कर्णफूल आदि गहना मे शिरीषक फूल जकाँ लागल डोलैत वस्तु। मै.
झुम्मरि-सं., १. गीतक लयक प्रभेद। २. तानल हाथ मे हाथ जोड़ि आ पैर मे पैर जोड़ि वेग सँ दू नेन्ना युवतीक नचैक खेल। प्रयोग—"करिया झुम्मरि खेलै छी।" मै.
झुमका-सं., गहना विशेष। मै.
झुरकुटिया-विशे., केराक भेद। पातर आ छोट केरा। मै.
झुरखी-सं., छोट छोट ठहुरीवाला जारनि। मै.
झुरझुर-सं., नेन्नाक खाइक आ सुतैक वेरक झमेल। मै.
झुरझुराएब-क्रि., रहि रहि क' दुखिताह होएब। मै.
झुरझुरी-सं., अधिक वासनाक वेग, आश्चर्य आ भयक आवेग सँ देहक सिहरन आ सनसनाएब। मै.
झुरमुठि-सं., परस्परक सक्कत पकड़। मै.

झुल्ला-सं., डोरी आ तार सँ नेन्ना भुटका कें झुलबैक बनल वस्तु। मै.

झुलझुल-अव्यय, विनोदक लेल नेन्ना कें झुलबैक कालक शब्द। मै.

झुलना-सं., उतनुआ नेन्नाक उपर देल (लटकाओल) झूलैत रंग विरंगक चिड़ै आदि वस्तु। मै.

झुलनी/झुलबा-सं., उतनुआ नेन्नाक झूलैक पलना। मै.

झुलहाल होएब-क्रि., दुख, चिन्ता आ व्यग्रता सँ व्याकुल होएब। मै.

झुलाएब-क्रि., शिशुक मन बहटारैले झुलबा पर आस दय कें डोलाएब। मै.

झुलेझुले-अव्यय, बच्चा कें झुलबैक कालक शब्द। मै.

झू

झूटब-क्रि., बारम्बार वेग सँ आक्रमण ले दौड़ब। मै.

झूट होएब-क्रि., चोट आदि सँ अंग सुन्न होएब। मै.

झूठ-विशे., फूसि। हि. तत्सम

झुठफूसि बनाएब-क्रि., मिथ्या गप गढि गढि दोष देब। मै.

झूना मलमल-सं., विशेष प्रकारक मेहीं वस्त्र। मै.

झूमब-क्रि., मत्त जकाँ अंग चलाएब। मै.

झूर-विशे., १. अधिक कड़ा कय तरल। २. मन मे चिन्ता आ विरक्ति भरल। मै.

झूरझमान होएब-क्रि., चिन्ता, कष्ट आ निराशा सँ अत्यन्त पीड़ित रहब। मै.

झूल-सं., प्राचीन राजा आ आधुनिक अधिवक्ता (वकील) एवं हाथीक पीठ परक विस्तृत आ विलक्षण वस्त्र। मै.

झूलन-सं., श्री कृष्ण कें झुलबैक वार्षिक पर्व। झूला पर नेन्ना के झुलबैक प्रयास। मै.

झूलब-क्रि., लटकैवाला पर चढ़ि आगू पाछू बारम्बार डोलब। मै.

झूला-सं., बैसि कय आ ठाढ़ भ' क' शून्य मे डोलैक साधन। मै.

झूला झूली-सं., झूला झूलैक निरन्तर क्रम। मै.

झूस-विशे., अल्पता, थोड़, घट्टी, कमी। मै.

झो

झोंक-सं., हठ करैक आवेग। मै.

झोंकगर-विशे., अधिक पुष्ट, वेशी तेज। प्रयोग—"कने झोंकगर आँच दियौ जे झट द' भानस भ' जाय। मै.

झोंक झाँक-सं., तेजी सँ आँच दैक काज। मै.

झोंकन-सं., १. कोनो विषय पर एक दिशाहे जोर। २. भट्ठी मे अधिक जारनि बोझैक क्रम। मै.

झोकब-क्रि., १. कोनो बात पर एके पक्षक जोर देब। २. कोनो वस्तुक विशेषता सँ व्यवहार करब। ३. चुल्हा मे अधिक जारनि बोझब। मै.

झोंका-सं., १. कोनो आन्तरिक आ मानसिक रोगक दौड़। २. माल महिसिक भौतिक रोग। मै.

झोंकाइ-सं., निरन्तर अधिकता सँ आपूर्ति। मै.

झोकाड़-सं., १. भट्ठी आ चुल्हि मे लगातार इन्धन भरब। २. कोनो वस्तुक विशेष आपूर्ति। मै.

झोंकान-सं., कोनो एक वस्तुक एकै बेर अधिकता रखैक चेष्टा। मै.

झोंकारब-क्रि., अधिकता सँ कोनो वस्तुक प्रयोग करब। मै.

झोंकारा-सं., १. एक पर एकक तेजी सँ भरैक क्रम। २. जरबै लेल चुल्हि आदि मे जारनि अधिक दैक चेष्टा। मै.

झोंकाह-विशे., भावनाक वेग पर चलनिहार। स्त्री० झोंकाहि। मै.

झोंकी-सं., १. बसातक वेग। २. मानसिक आवेग। मै.

झोखरब-क्रि., अंग अंग मे शक्तिहीनता सँ ढील होयब। चमड़ा लटकब। मै.

झोकौआ-विशे., झोंकैक अर्थात् अधिकता सँ भरैक योग्य वा भरैवाला। मै.

झोंझ-विशे., डारि पातक अधिकता सँ सघन। मै.

झोंझगर-विशे., अधिक सघन। मै.

झोंझराह-विशे., सघनता सँ अगम्य। मै.

झोंझा-सं., देखू—"झोंझ"। मै.

झोंझाह-विशे., झोंझ सब सँ भरल। मै.

झोंझि-सं., सघन झोंझवाला स्थान। मै.

झोंझों-अव्यय, १. नेन्ना कें खेलबैक हेतु पीठ पर लदैक प्रक्रिया। २. अधिक लोकक जोर सँ परस्पर बाजब आ विवाद करब। प्रयोग—"कथीले सब क्यो झोंझों करै छी।" मै.

झोंट-सं., स्त्रीगणक माथक नमहर केश। मै.

झोंटकी-सं., छोट बच्चाक नाम नाम केश। मै.

झोंटगर-विशे., वयस्कक पैघ पैघ केशवाला। मै.

झोंटहा-सं., स्त्री जाति। मै.

झोंटा-सं., स्त्रीक माथक केश। मै.

झोंटाझोंटी-सं., झोटा पकड़ि स्त्रीक झगड़ा। मै.

झोंटा झोंटौअलि-सं., स्त्री जातिक परस्पर झोंट पकड़ि लड़ाइ। मै.

झोंटी-सं., १. अनावश्यक बढ़ल केश। २. विशेष स्थानक कबुला मे कटै लेल बढ़ल नेन्नाक केश। मै.

झोटैला-विशे., अधिक नमहर केशवाला किशोर। मै.

झोपड़ी-सं., धरती लागल मोड़ल टाटक एकजनियां खोपड़ि। मै.

झोर-सं., तीमनक अधिक विशेष जल। मै.

झोरगर-विशे., उचित सँ वेशी रसदार। मै.

झोरगराह-विशे., अधिक जलवाला तीमन। मै.

झोरब-क्रि., १. ताकब, सघन वन मे शिकारक अन्वेषण करब। २. कपड़ा द्वारा हाथ सँ मथि गर्दा वा रस बहार करब। मै.

झोरमाण-सं., रसदार तीमन। मै.

झोरा-सं., हाथ मे लटका कय लय जाइवाला कपड़ा आदिक पैघ धोकड़ी। मै.

झोराझार-सं., १. (लाक्षणिक) वस्तुक समाप्त होएब। २. उपनयनक उपरान्त चरिमा (रातिम) दिन बरुआक भीखिक झोरा झारैक विधि विशेष। मै.

झोराएब-क्रि., बड़ी, माछ आदि तीमन मे मसालाक संग जल देब। मै.

झोराह-विशे., अधिक जलदार। मै.

झोरी-सं., १. झोराक छोट रूप। २. झोरैक काज। मै.

झोरौआ-विशे., झोर दैक योग्य तीमन। मै.

झोल-सं., वस्तुजात आ घरद्वार मे धूआँ धुकुर सँ जल्ला मकड़ाक जालक कारी रंगक घिनाओन जमल दूषित वस्तु। मै.

झोल अन्हारी-सं., झलफल अन्हारवाला समय। मै.

झोलङ्गा-विशे., देहक नाप सँ पैघ कुढब अङ्गा। मै.

झोलड़ी-विशे., अत्यन्त ढील खाटक घोरान आ देहक अंगा। मै.

झोलन-सं., कपड़ा सँ झोरि कय मेहीं सुखाएल वस्तु कें छानि बहराएल वस्तु। मै.

झोलब-क्रि., १. (लाक्षणिक) मानसिक रूपें हिलाएब। २. शरीर कें डोलाएब। ३. कपड़ा सँ गर्द पर सुखाएल वस्तु केर विकृत वस्तु कें छानब। मै.

झोलरत्तू-विशे., झोलक द्वारें विकृत बनल। मै.

झोलराह-विशे., घोराइक ढील भेला सँ कुरूप भेल खाट आदि। मै.

झोलरी-विशे., यत्र तत्र टूटल फाटल रहैक द्वारें ढील आ नीचाँ लटकल। प्रयोग-"की कहू हमर खाट तेहन झोलरी भ' गेल अछि जे सूतिओ नै सकै छी।" मै.

झोला-सं., खाँचा मे गाड़ी चलला सँ देहक अधिक हिलब। मै.

झोला देब-क्रि., आकाश पाताल देखा कय भय आतङ्क बढ़ाएब। मै.

झौ

झौआ-सं., जटा सन पातवाला छोट गाछ। मै.

झौल करब-क्रि., अबोध नेन्नाक खाइक, पिबैक आ सुतैक काल खौंझाएब, कानब। मै.

झौंस-विशे., अत्यन्त कम तेल मे भुजला वा तरला सँ झरकल तरकारी तीमन। मै.

झौंसब-क्रि., अत्यन्त थोड़ तेल मे तीमन के धूमिल करब। मै.

झौंसा-विशे., (गारि) झरकलहा। मै.

झौहरि-सं., १. एकै बेर झगड़ाक रूपें जोर सँ बाजब। २. शोक सँ आकुल बहुत लोकक एक संग आक्रन्द करब। मै.



ट वर्ग

ट्रक-सं., माल (सामग्री) बाही बड़का मोटर। अं. तत्सम

ट्रैक्टर-सं., हरजोतैवाला स्वचालित कल। अं. तत्सम

टक्कर-सं., एक दोसरा मे परस्पर संघर्ष सँ धक्का। मै.

टक्का-सं., मुद्रा, राजकीय विनिमय द्रव्य। टाका। मै.

टक्केकोस चलब-क्रि., मन्द चलब। गति मे तेजी नहि रहब। मै.

टकगर-विशे.,पूर्ण रुपैयावाला। मै.

टकटक-अव्यय, आँखि क' एकैठाँ स्थिर दृष्टि। मै.

टकटकी लागब-क्रि., एकैठाँ स्थिर नजरियें देखब। मै.

टकटोरब-क्रि., अन्हार मे ताकब (खोजब)। मै.

टकटोरिया देब-क्रि., अन्हार मे आँखि फाड़ि क' तकैले हाथक संचार करब। मै.

टक द' ताकब-क्रि., एकाएक नजरि खोलि क' ताकब। मै.

टकदुम टकदुम करब-क्रि., सदिखन बिगड़ल स्थिति मे रहैत कोनहुना निर्वाह करब। मै.

टकर टकर-अव्यय, अपलक दृष्टि। मै.

टकराएब-क्रि., मानसिक वा गतिविधि वा शरीरें परस्पर संघर्ष होएब। मै.

टक लगाएब-क्रि., प्रतीक्षा आ लोभ सँ दृष्टि गड़ौने रहब। मै.

टकसब-क्रि., हटि जाएब, कोनो प्रकारें चल जाएब। मै.

टकसाल-सं., मुद्रा (सिक्का, रुपैया) गढ़ैक स्थान। मै.

टकही-विशे., १. एक टाका सँ प्राप्त होम'वाला। २. (निन्दा मे) तुच्छ। मै.

टँकाइ-सं., १. तोसक आ शीरक टँकैक (तूर बैसबैले दूर दूर पर सीबैक) काज। २. टँकैक बोनि। मै.

टकाटुकुर-सं., रुपैया आ छोट सिक्का। रुपैया कैंचा। मै.

टँकान-सं., तोसक आदि सीयैक क्रम। मै.

टकार-सं., 'ट' अक्षर। मै.

टंकार-सं., 'ट' क ध्वनि मे गम्भीर धनुष आदिक शब्द। मै.

टँकारी-सं., टँकैवाला सूइआ। मै.

टकिया-विशे., एक टाकाक मुद्रा, एक टाका मे भेटल वस्तु। मै.

टंकी-सं., जलक सुरक्षित भंडार। अं तद्भव

टकुआ-सं., छेदैवाला लोहक पातर आ गोल पातर अस्त्र। मै.

टकुआतान-विशे., एकदम सोझ आकार भेल। टकुआ जकाँ तानल। मै.

टकुआरी-सं., १. काठ मे पातर छेद करैले लोहक टकुआ सँ मोट अस्त्र। २. टकुरी सँ पैंघ सूतक पातर डोरी बँटैक साधन। मै.

टकुरी-सं., पातर छोट चकतीक छेद मे पातर काइम लगाकय तूर सँ सूत बहार करैक वस्तु। मै.

टकुरी काटब-क्रि., टकुरी नचा नचा कय सूत बहार करब। मै.

टकेसेर भाजा/टके सेर खाजा-लोकोक्ति, शस्त आ महग वस्तुक समाने भाओ। मै.

टखना-सं., टाङ आ पैरक जोड़ परक कील। हि. तत्सम

टगब-क्रि., दुर्बलता सँ अचेतन जकाँ खसैक स्थिति मे रहब। मै.

टग हनब-क्रि., अत्यन्त दुर्बलता सँ खसि पड़ैक स्थिति मे चलब। मै.

टगाएब-क्रि., उपेक्षा सँ झुका कय खसाएब। मै.

टगाह-विशे., स्वतः झुकि जाइक योग्य। मै.

टगौआ-विशे., टगबैवाला, टगि जाइवाला। मै.

टघड़न-सं., सूप सँ अन्न गड़का कय जमा कयल निःसार वस्तु तथा पृथक् कयल अन्न। विशे., अपनै टघड़ि जाइक योग्य। मै.

टघड़ब-क्रि., १. स्वतः गड़कि जाएब। २. स्वच्छन्द मनें जाएब। मै.

टघड़ाएब-क्रि., प्रयास सँ गड़का कय अलग करब। मै.

टघड़ाह-विशे., स्वतः गड़कि जाइवाला सब दिशक गोल। मै.

टघरौआ-विशे., स्वतः टघड़ैवाला। मै.

टघाड़-सं., पानि वा घी आदि वस्तुक टघड़ैक चिह्न। धारा रूपक प्रवाहक चिह्न। मै.

टघाड़ब-क्रि., धारा रूपें द्रव वस्तु कें प्रवाहित करब। मै.

टङगर-विशे., १. अपना टाङक भरें चलनिहार बच्चा। २. पैंध टाङवाला। मै.

टङटूटा -विशे., टूटल एक टाङवाला। मै.

टटघर-विशे., टाटक घर। मै.

टटोलब-क्रि., अदृश्य मे हाथक संचार कय ताकब। मै.

टटौ-विशे., टाटक घर। मै.

टन्टन-अव्यय, धातुक चोटक ध्वनि। मै.

टन्टनाएब-क्रि., टन्टन शब्द करब। मै.

टन्टना क'-अव्यय, उत्तेजनापूर्वक। मै.

टन्टनी-सं., रुपैया, मुद्रा। मै.

टनकब-क्रि., तरङ्गक रूपें दुखाएब। जाड़क समय मे आगि तपला सँ जाड़ सँ शान्ति पाएब। मै.

टनका-विशे., १. बातें बात मे बिगड़ि कय' रूसै-वाला। २. रौदीक द्वारें अत्यन्त सुखाएल। मै.

टनकाएब-क्रि., ताप द' क' शीतक आकुलता सँ बचाएब। मै.

टनकाह-विशे., कनेकै मे अधिक पाक सँ फूटैवाला माटिक वासन। मै.

टनकी-सं., १. माथ आदि टनकैक रोग। २. पक्षी विशेष। मै.

टनटन बाजब-क्रि., १. घंटा आदि धातुक शब्द होएब। जकरी सँ सोंझाँ सोझी नै बजैक चाही तकरौ सँ निधोख बाजब। मै.

टन द' रहब-क्रि., अचानक प्राण वियोग होएब। मै.

टन बाजब-क्रि., समाप्त भ' जाएब। मै.

टनमन-विशे., रोग मुक्ति सँ प्रसन्न। क्रमशः सबल। मै.

टनमनाएब-क्रि., रोग छूटैक क्रम होएब। मै.

टनाक द'-अव्यय, खसैक विकट शब्दक संग। मै.

टनाटन-अव्यय, देवाल घड़ी आ घड़ी घंटाक लगा-तार शब्द। मै.

टनाटनी-सं., कोनो वस्तुक दुलर्भता, महगी। मै.

टनामनी-सं., भितरिया बिगाड़ि। मै.

टप्पड़-सं., बैलगाड़ीक यात्रा मे रौद सँ बचैले देल स्थायी रूपें झोपड़ी जकाँ छाया। मै.

टप्प द'-अव्यय, किछु बिना सोचनै बुझनै आनक गप्प मे बाजि उठब। मै.

टप्पा-विशे., १. अवश्य रूपें कष्टें टपै योग्य। नुका छिपा कय सीमा टपैवाला। मै.

टप्पा टोइआ देब-क्रि., सूझैक अभाव मे अन्हार मे थाहि थाहि चलब। मै.

टापू-सं., द्वीप दूर धरि पसरल पानि सँ घैरल स्थान। मै.

टप-सं., मोट कपड़ाक बनल चारू दिश सँ पर्दा करैक साधन। मै.

टपकनवीस-विशे., अनकर गप्पक बिच्चहिं मे अनावश्यक बाजि उठनिहार। मै.

टपकब-क्रि., १. अचानक उपस्थित होएब। २. धीरें धीरें ठोपें ठोपें चूअब। ३. बीचै मे बाजि उठब। मै.

टपका-विशे., शब्दे वा शरीरें बिच्चहिं मे टपकि पड़ैवाला। मै.

टपकाएब-क्रि., ठोपें ठोपें चुबाएब। बुन्दें बुन्दें खसाएब। मै.

टपकाह-विशे., १. बिच्चहि मे टप द' बाजि उठै-वाला। २. ठोपें ठोपें चुबैत रहैवाला। मै.

टपकि पड़ब-क्रि., अनुचित अवसर पर अचानक उपस्थित भ' जाएब। मै.

टपटप-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ एक पर एक तुरन्त लगातार। मै.

टपटप करब-क्रि., बिन पुछनै अनेर रहस्यक बात बाजि उठब। मै.

टपदन-अव्यय, शीघ्रता सँ। मै.

टप द' बाजब-क्रि., १. बिन पुछनौ प्रौढ़ लोकक गप्पक बीच मे नेन्नाक बाजि उठब। २. शीघ्रता सँ उत्तर देब। मै.

टपब-क्रि., १. पार उतरब। २. अचानक पहुँचब। मै.

टपाएब-क्रि., १. पार उतारब। २. (लाक्षणिक) चोराएब। मै.

टपाक सन-अव्यय, अतिशीघ्रता सँ। मै.

टपान टपब-क्रि., कष्ट उठा कय कठिनता सँ पार उतरब। मै.

टब-सं., गोल, नाम आ गहींर पानि रखैक वासन । अं. तत्सम

टभकब-क्रि., १. अधिकता सँ आमद होएब । २. गाछ सँ फलक पाकि पाकि अधिक खसब । मै.

टभका-विशे., १. आनक गप मे अनेर बाजि उठै-वाला । सं., माछ बझबैक हेतु बाँसक कामि सँ बीनल गोल आ नामसन वस्तु । मै.

टभकि उठब-क्रि., अनावश्यक बेमेल बात बाजि उठब । मै.

टभटभ करब-क्रि., अपना सँ श्रेष्ठक गप मे नेन्ना भुटका सभक बीच बीच मे बाजि उठब । मै.

टभ द'-अव्यय, बिन पुछनै अपने सँ । मै.

टभनी-सं., जलाशय मे बन्सी पथैक हेतु जंगलरहित स्थान । मै.

टमटम-सं., बिना ओहारवाला घोड़ागाड़ी । मै.

टमाटर-सं., कनेक खटमधुर रस भरल भट्टासन छोट लत्ती मे फड़ैवाला व्यंजन । टोमैटो, अंग्रेजिया भाँटा । अं. तद्भव

टरकब-क्रि., चुपचाप घसकि देब । मै.

टरकाएब-क्रि., १. चुपचाप भगाएब । २. वरषाक दूर भ' जाएब । ३. बात कें अनठा देब । मै.

टरकाओ-सं., टरकऽवैक स्वभाव । मै.

टरकाह-विशे., टरकऽवैक प्रवृत्तिवाला । मै.

टरकी-सं., गहना विशेष । मै.

टरटर-अव्यय, १. बेङक ध्वनि । २. असम्बद्ध प्रलाप । मै.

टरटराएब-क्रि., निरन्तर ध्यान नै दै योग्य बात बजैत रहब । मै.

टरब-क्रि., विचारपूर्वक हँटि जाएब । मै.

टरराएब-क्रि., निश्चिन्तता सँ व्यर्थ एम्हर ओम्हर घूमैत रहब । मै.

टरुआएब-क्रि., दुर्बलता सँ अपनो देहक भार थम्है मे असमर्थ होएब । मै.

टल्लो देब-क्रि., कोनो बातक कहाबदी कय उचित समय पर धोखा देब । मै.

टल्लीबाजी-सं., कहल बात कें बारम्बार अनठऽ-वैक प्रवृत्ति । मै.

टल्ली मारब-क्रि., बनियाक वस्तु तौलैक काल हाथक विशेष प्रकारक कला सँ कम तौलब । मै.

टलब-क्रि., अपन स्थान आ वचन सँ विचलित होएब । मै.

टलहा-सं., चानीक रंगक अत्यन्त अधम धातु । मै.

टलियाएब-क्रि., टाल जकाँ एकठाँ जमा करब । मै.

टसक-सं., मन मे गुम्हरैत तामस कें व्यक्त करैले समयक प्रतीक्षा । मै.

टसकब-क्रि., कनेको घुसकब, विचलित होएब । हिलब । मै.

टस टस करब-क्रि., दुष्टताक मनें बिच्चहि मे विरोधी बात बजैक चञ्चलता करब । मै.

टँसब-क्रि., साँकरो वासन मे कोंचि कोंचि कय भरब । मै.

टसमस करब-क्रि., एको रत्ती हिलब, घसकब, चलब । मै.

टस सँ मस नै होएब-क्रि., कोनो प्रकारें अपने सँ विचलित नहि होएब । मै.

टहकब-क्रि., १. बन्न घाओ मे भीतर सँ उपर चलैक रूपें वेदना होएब । २. जमल द्रव पदार्थक घमब । मै.

टहकाएब-क्रि., जमल तेल घी आदि द्रव कें ताप लगा कय द्रवणशील करब । घमाएब । मै.

टह टह करब/टहटहाएब-क्रि., टहकैक क्रमे अधिक दर्द करब । मै.

टहटहा-विशे., (रौदक हेतु) अत्यन्त तेज बसातहीन समयक कड़ा रौद । प्रयोग-"अखन ऐ टहटहा रौद मे कत' बौआइ ले जाइ छी ।" मै.

टहल-सं., सेवा काज । मै.

टहल टिकोरा-सं., नियमपूर्वक श्रद्धा, आवेश आ स्नेह सँ सेवा, परिचर्य्या । मै.

टहलनी-विशे., घरक नियमित सेवा केनिहारि स्त्री । मै.

टहलब-क्रि., जाएब, उन्मुक्त मनें भ्रमण करब । मै.

टहल लगाएब-क्रि., द्वार द्वार पर जा कय अपन उपस्थिति जनाएब । मै.

टहलू-विशे., घरक नियमित सेवा केनिहार पुरुष । मै.

टहाटहो-विशे., (इजोरियाक हेतु) स्वच्छ आकाश मे खूब प्रकाशमान चन्द्रमाक किरण । मै.

टहारम-सं., घरक भोजन आदि काजक प्रक्रिया । मै.

टहुकी-सं., गोलाएम चापट छोट बाँसक कामिक बीनल खेत सँ बहैत पानि सँ माछ फँसबैक साधन। मै.

टा

टाइँ टाइँ-अव्यय, १. टिटकी पक्षीक ध्वनि। २. एकाकीपनक हृदय मे उठल मूक हाहाकार। प्रयोग—"घर मे एकशरे टाइँ टाइँ करैत रहै छी।" मै.

टाइँ टाइँ फिस-अव्यय, बातक भड़कताली बड़ क्रिया मे किछु नै। मै.

टाइँ टुइँ-अव्यय, धातुक वासनक उठा बैसा सँ उत्पन्न अप्रिय ध्वनि। मै.

टाइप-सं., १. बाँसक कामि सँ बीनल थोड़ पानि मे माछ मारैक हेतु उपर साँकर नीचाँ पसरल खुलता मुहवाला अस्त्र। २. अक्षर छापी करैक यन्त्र। ३. छटा। मै./अं. तत्सम

टाँक-सं., १. थोड़ दूरक सीयनि। २. गहना जोड़ैक हेतु आन द्रव्यक प्रयोग वा मिलान। मै.

टाँकनि-सं., सीयनि। मै.

टाँकब-क्रि., तूर भरल वस्तु के सीबिकय तूर जमाएब। मै.

टाँका-सं. १. कटल फूटल अंग कें सीबै मे देल सूत। २. टाँका करैवाला सूई। मै.

टाका-सं., रुपैया, बंगलादेशक मुद्रा। मै.

टाँकी-सं., गुप्ताङ्गक गुप्त रोग। मै.

टाकु-सं., देखू—"टकुआ"। मै.

टाङ-सं., एड़ सँ उपर ठेहुना सँ नीचाक अंग। मै.

टाङब-क्रि., १. उपर लटका कय राखब। २. सुखाइले कपड़ा पसारब। मै.

टाङी-सं., बैसला सन आकार एवं धारवाला कुड़हरि। मै.

टाट-सं., आवश्यकतानुसार नाम चाकर खढ़पात आ बाती कर्ची सँ बनाओल अढ़ पर्दा आ घैरन करैक साधन। मै.

टाँट-विशे., सुखा कय अत्यन्त कठोर। मै.

टाटक-सं., अभिनयक द्वारा वास्तविकताक अन्हरजाली भ्रमक उत्पादन। मै.

टाटफड़क-सं., पर्दाक साधन आ माल जालक रोकैक उपाय। घैरन बेढ़न। मै.

टाटा !-अव्यय, विदा करैक आधुनिक शब्द। मै.

टाँटि-सं., झार, छोट छोट गाछ विशेष। मै.

टाटी-सं., शव (मुर्दा) लय जाइक चचरी। मै.

टाड़-सं., बाँहिक गहना विशेष। मै.

टान-सं., अप्राप्ति, महगी, दुर्लभता। मै.

टानब-क्रि., अनजानै मे चोरि सँ ल' जाएब। मै.

टाना-सं., खुट्टा कें तानि क' रखैवाला मोट तारक रस्सा। मै.

टानाटानी-सं., निरन्तर चलैवाला महगी। मै.

टाप-सं., दूर दूर पर नमहर डेग। मै.

टाप हनब-क्रि., घोड़ाक आ घोड़ा जकाँ नमहर डेग धरब। मै.

टापि-सं., देखू—"टाइप"। मै.

टापू-सं., चारूकात जलक बीच पैघ भूखण्ड। मै.

टाफी-सं., नेन्ना फुसलाओन मिठाइ। अं. तत्सम

टाबर-सं., चौबट्टी परक घंटा घड़ी। अं. तत्सम

टाभनेबो-सं., फलक रूप मे खाइवाला बड़का नेबो। मै.

टामनगुड़िया-सं., लगक स्थान मे बराबरि जाइ अबैक क्रम। मै.

टायर-सं., यन्त्रवाला गाड़ीक पहियाक सक्कत मोट रबरक आवरण। मै.

टारनि-सं., कोनो वस्तु आ विषय कें अपना सँ तत्काल दूर रखैक चेष्टा। मै.

टारब-क्रि., कोनो वस्तु आ विषय कें दूर करब। हटाएब। तेजब। उपेक्षा करब। मै.

टारा-सं., घुटमुटार घैलक आकारक छोट माटिक तेल वा घी रखैक बड़का वासन। मै.

टारी-सं., टाराक आकारवाला छोट प्राचीन वासन। मै.

टाल-सं., १. धान आदिक डाँट कें सुव्यवस्थित आ सुरक्षित रखैले एकठाँ जमा कय उपर घर जकाँ चारू दिश ढाल बनाओल वस्तु। २. दूर धरि पसरल बाध। ३. ढेरक ढेर। मै.

टाल ठोकब-क्रि., परस्पर मल्ल युद्ध मे जांघ पर उत्साहवर्द्धक चाटी मारि ध्वनि करब। मै.

टालब-क्रि., १. टाल बनाएब। २. दूर करब आ अन्ठाएब। मै.

टालमटोल-सं., अन्ठा देबाक यत्न। मै.

टाला-सं., माटिक भार उठयबाक मुसहर सभक डोरीक जाली बनाओल तराजूक तरछा जकाँ भार। मै.

टालि-सं., तौल मे कम करैले तराजू मे तौलैक काल हाथक कौशल। मै.

टालिगुल्ली खेलाएब-सं., १. किशोर सभक गुल्ली डन्टाक खेल। २. (लाक्षणिक) फुसला फुसला क' बात कें अन्ठऽवैक प्रयास करब। मै.

टालि मारब-क्रि., देखू—"टल्ली मारब"। मै.

टाली-सं., यन्त्र चालित गाड़ी मे जोड़ल सामग्री उगहैवाला उपर खुलता गाड़ी। ट्राली। अं. तद्भव

टाँस-विशे., १. जोर सँ कठोर ध्वनि। प्रयोग-"एकर बोली बड़ टाँस छै।" २. मिझराएल। मै.

टाहि-सं., एकाएक खूब जोरक चीत्कार। मै.

टाँहि द' उठब-क्रि., उच्च स्वरें करोट बाजि उठब। मै.

टाहि मारब-क्रि., जोर सँ अप्रिय शब्दें सोर करब। मै.

टि

टिक्कर-सं., खण्डक एक अंश। मै.

टिक्का-सं., कपाड़ पर सिन्दूर आदिक ठोप। मै.

टिक्की-सं., शिखाक केश। मै

टिक्कू-विशे., पैघ ठीकवाला। मै.

टिक-सं., विशेष प्रकारक चिह्न। अ. तत्सम

टिकट-सं., यात्रा आदि केर अधिकार पत्र। अं. तत्सम

टिकटिक करब-क्रि., घड़ी चलैक आ तार दैक यन्त्रक शब्द होएब। घोड़ा हँकैक शब्द होएब। मै.

टिकटिकाएब-क्रि., दीर्घ रोग सँ क्रमशः उबरैक लच्छन होएब। मै.

टिकटिकिया-सं., अशुभ सूचक गिरगिट। मै

टिकब-क्रि., अड्डा पर अटकब। मै.

टिकरी-सं., कोनो वस्तुक छोट खण्ड। मै.

टिकहा-विशे., पैघ पैघ टीकवाला। मै.

टिकाउ-विशे., अधिक दिनधरि थम्हैवाला आ चलैवाला। मै.

टिकाएब-क्रि., अँटकाएब, रोकब, स्थान पर विश्राम कराएब। मै.

टिकान-सं., अड्डा, अँटकैक निश्चित स्थान। मै.

टिकासन-सं., टीकावाला स्थान, टीकक जड़ि। मै.

टिकिया-सं., कोनो वस्तुक गोल आ चापट छोट रूप। मै.

टिकुला-सं., आमक मंजर मे वहराएल फलक पहिल रूप। मै.

टिकुली-सं., सौन्दर्य आ सोहागक चिह्न रूपक चमकैवाला छोट कपाड़ मे सटै जोग विभिन्न आकारक पन्नी। मै.

टिकुलीहारिन-विशे., टिकुली आदि बेचैक फेरी करैवाली। पु० टिकुलहारा। मै.

टिकैत-विशे., विशेष चानन टीकावाला। मै.

टिकौआ-विशे., अधिक दिन धरि थम्हैवाला। मै.

टिटकारी-सं., फुसि जोश दैक बात। मै.

टिटकारी देब-क्रि., मिथ्या उत्साहक वचन सँ परतारब। मै.

टिटही-सं., टीं टीं बजैवाली चिड़िया। मै.

टिटियाएब-क्रि., कथूले आतुर भ' क' व्याकुल होइत रहब। मै.

टिटिम्भा-सं., कोनो काजक साधना सँ वेशी आडम्बरक प्रधानता। मै.

टिड्ढी-सं., फसिलक नाश करैवाला उड़न बाजशलभ (पैघ कीड़ा)। मै.

टिनही-विशे., टीनक वासन, टीन (द्रव्य) क बनल वस्तु। मै.

टिप्पणी-सं., कोनो विषयक थोड़ शब्दें स्पष्टीकरण। सं. तत्सम

टिप्पनि-सं., जन्म कालक प्रत्येक वस्तुक विचार कय जीवन भरिक विस्तार सँ फलाफलक ज्ञान दैक लिखित पत्र। मै.

टिप्पा-विशे., १. कौड़ी टीप खेलाइक विशेष कौड़ी। २. अचक्कै अलक्षित रूपें उठा क' ल' जाइवाला जानवर। मै.

टिप्पा-सं., औंठा छाप। मै.

टिप्पी-सं., ठेकान रखैले प्रतिदिनक गिनती लेल देल रेखा। मै.

टिपकब-क्रि., आनक कोनो विषयक चरचा मे अनेर बाजि उठब। मै.

टिपकाएब-क्रि., १. कोनो विषयक चरचा मे एक पक्षक बात कें ठोस करै मे सहायता करब। २. बीच बीच सँ कोनो वस्तु उठा लेब। मै.

टिपकाटिपकी-विशे., कत्तौ कत्तौ, गोटेक गोटेक। मै.

टिपकारी-सं., देवाल मे मसाला सँ ईंटा सभक गह बन्द करैक विधि। मै.

टिपकाह-विशे., आनक गप्पक बीच अनर्गलो व्यर्थ बाजि उठैवाला। मै.

टिपरहौट-सं., अपन भड़कताली दैक हेतु बात बात मे आडम्बर। मै.

टिपाएब-क्रि., नोट कराएब। मै.

टिपिर टिपिर-अव्यय, गोटेक आधेक बुन्नी सँ निरन्तर वर्षा। मै.

टिपौड़िया-विशे., विशेषे वस्तुक प्रति आकांक्षा कयनिहार। मै.

टिपौटी-सं., अनुचित कार्यभारक हेतु व्यक्ति चुनाओ। मै.

टिपौड़ी-सं., विशेषे वस्तुक टा सेहन्ता। मै.

टिपौत-सं., जन्म कालक राशि नक्षत्र आदिक आधार पर कुण्डली। मै.

टिफिन-सं., थोड़ समय ले काजक बीच भोजन हेतु विश्राम। अं. तद्भव

टिभटिभ करब-क्रि., चेतनक गप्पक बीच नेन्ना सभक वेर वेर बाजि उठब। मै.

टिमटिम करब/टिमटिमाएब-क्रि., क्षीण ज्योति सँ अस्तित्व मात्रक बोध करबैत रहब। मै.

टिरकब-क्रि., धोखा द' क' चलि देब। मै.

टिरकाएब-क्रि., अनका धोखा द' क' भगाएब। मै.

टिरकी देब-क्रि., धोखा दय नुका जाएब। मै.

टिरङ्गा-सं., अत्यन्त ऊँच स्थान। मै.

टिरबी-सं., परम्परागत गौरवक आग्रह। आनि। मै.

टिररी-विशे., क्षीणकाय नेरू (बच्छा बाछी)। मै.

टिरहुल्ला-सं., कृत्रिम अत्यन्त उँचगर स्थान। मै.

टिरिकबाजी-सं., दाओ लगबैक चेष्टा। अं. तद्भव

टिरीरीरी-अव्यय, भावनात्मक लोभीक असफलता मे निरादरक शब्द। मै.

टिरुआएब-क्रि., दुर्बलता सँ अधिक संचार मे असमर्थ बनब। मै.

टिरुसब-क्रि., साधारणो बात मे मुह फुला लेब। मै.

टिरुसाएब-क्रि., कोनो बातें तुरन्त बिगड़ाएब। मै.

टिरुसाह-विशे., तुरन्त फुच्च भेनिहार। स्त्री० टिरुसाहि। मै.

टिल्हा-सं., शिखर जकाँ प्राकृतिक ऊँच भूमि। मै.

टी

टीक-सं., शिखा, हिन्दूक चिह्न। मै.

टीक काटब-क्रि., (लाक्षणिक) समाज मे अपमानित आ बहिष्कृत बनाएब। मै.

टीक ठाढ़ करब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त क्रोध वा भय करब। मै.

टीकर-सं., कोनो वस्तुक पैघ खण्ड। मै.

टीका--सं., १. कोनो विशेष गहन विषय कें सरलता सँ बुझबैक प्रक्रिया। २. कपाड़क ठोप। ३. चेचक आदि रोगक शल्य क्रिया द्वारा निरोधक औषधी। मै.

टीट-सं., भगाङ्कुर। योनिक अग्रभाग। स्त्रीक मूत्र मार्ग। मै.

टीन-सं., निम्न कोटिक मृदु धातुक अत्यन्त पातर पसरल वस्तु। मै.

टीप-सं., १. एक दू ठामक साधारण सीयनि। २. कोनो बातक पक्ष वा विपक्ष मे बिन पुछने बजैक प्रकृति। ३. कौड़ी टीपक खेल मे कौड़ी सँ कौड़ीक मारि। ४. औंठा छाप। ५. होटल मे बैराक देय। अं. तद्भव/मै.

टीप देब-क्रि., औंठा छाप देब। मै.

टीपब-क्रि., १. अनेर ककरो गप्पक बीच अपन मतक प्रकाश करब। २. कोनो विशेष बात के कत्तौ लिखि राखब। (नोट क' लेब) मै.

टीपा-सं., कौड़ीक खेल मे कौड़ी सँ कौड़ी मारैक विधि। मै.

टीस-सं., १. आन्तरिक कोनो बातक व्यथा। २. खूब जोर सँ भीतरैं भीतर अंगक वेदना। मै.

टीसन-सं., रेलगाड़ी अँटकैक निश्चित स्थान। अं. तद्भव

टीसा टीसी-सं., दू व्यक्तिक बीच अन्तर्विरोध। मै.

टु

टुइआँ-विशे., अत्यन्त छोट जलपात्र। अनुपयोगी पात्र। मै.

टुकड़ा-विशे., पैचसन कोनो वस्तुक खण्ड। मै.

टुकनी-सं., छोट जलपात्र। मै.

टुकला-सं., बिना कोशा भेल आम। मै.

टुकुर टुकुर ताकब-क्रि., आँखि खोलने दृष्टि गड़ा क' ताकब। मै.

टुघरब-क्रि., नेन्ना भुटकाक थाहि थाहि वा ठेहुन भरें चलब। मै.

टुघराएब-क्रि., १. गोल वस्तु कें गड़काएब। २. धीरें धीरें छोट नेन्ना कें चलाएब। मै.

टुँघराएब-क्रि., नवजात मालक बच्चाक कनेक कनेक कोमल घास खाएब। मै.

टुट्टा-विशे., टूटल भ' क' रहैत वस्तु। मै.

टुट्टी-सं., व्यापार मे डाँर। मै.

टुट्टी लागब-क्रि., कीनि बेचै मे मूलोधन मे घाटा। मै.

टुड्ढी-सं., दाढ़ीवाला अंगक निचला भाग। मै.

टुड़नी-सं., कोनो वस्तुक एकदम अगिला भाग। मै.

टुनकब-क्रि., बाते बात पर चुपचाप बिगड़ि जाएब। मै.

टुनकाएब-क्रि., बातें बातें क्रोध जगाएब। मै.

टुनकाह-विशे., १. साधारणो बात मे बिगड़ि गेनिहार। २. कनेको ढेहा लगने तुरन्त फूटैवाला वासन। मै.

टुनकी-सं., मरकी, महामारी। मै.

टुनटुनी-सं., टुनटुन बजैत रहैक प्रकृति। विद्यालय आदि मे एक स्वरें टुनटुन बजैक क्रम। मै.

टुनमुनियाँ-विशे., छोट आकारक वस्तु। मै.

टुना-विशे., छोट गाइक बच्चा। मै.

टुप द'-अव्यय, नेन्ना के जल्दी खाऽलैक परतारैवाला शब्द। मै.

टुरनी-सं., कोनो वस्तुक अन्तिम छोरक अगिला भाग। मै.

टुस्सा-सं., कोनो गाछ वृक्षक मूड़ी परक बहराइत प्रथम अंकुर। मै.

टुह टुह-विशे., १. फुटैक बहैक स्थिति मे पाकल। २. अपन रंग मे डग डग करैत। प्रयोग—"लाल टुह टुह भ' गेल छै।" मै.

टू

टूअर/टूगर-विशे., थोड़बै वैस मे माता पिताहीन नेन्ना। मै.

टूक-सं., एवम् विशे., खण्ड आ खण्डित। मै.

टूट-सं., भग्नता, भंग। मै.

टूटफाट करब-क्रि., ज्वर आ अधिक श्रम सँ अंग मे अधिक वेदना होएब। मै.

टूटब-क्रि., भंग होएब। सम्पर्कहीन होएब। मै.

टूटा टूटी-सं., आपसी बिगाड़ि। मै.

टूमटाम-सं., घरक नियमित काजक संचार। हलचली। मै.

टूर खसब-क्रि., अधिक झुनाएल धानक सीस मे रौद लगला सँ सीसक टुकड़ा हैब। मै.

टूर खसाएब-क्रि., हरक पाछू लागल सिरौड़ मे गहूम आदिक बीयाक दाना खसाएब। मै.

टू सा !-अव्यय, आ चन्ना, आ चन्ना··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···बाउ मुह मे टू सा। मै.

टे

टें-अव्यय, १. चिलहोरिक बजैक ध्वनि। २. एहन ककरो कटु शब्द। मै.

टेक-सं., १. प्रतिज्ञा। २. आत्म विश्वास। ३. आरम्भ। ४. अड़ना सीमा। मै.

टेकना-विशे., अड़ा कय रखैवाला। मै.

टेकब-क्रि., १. प्रारम्भ करब। २. भार उठौने रहब। ३. पकड़ब। ४. प्रतिज्ञा करब। ५. कसि कय बान्हब। मै.

टेक राखब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रतिष्ठा बचाएब। मै.

टेका देब-क्रि., १. अवधि राखब। २. प्रतिज्ञा पूर्तिक अवधि देब। मै.

टेकान-वशे., कोनो वस्तु कें टेकि रखैवाला वस्तु। टेकक निश्चित अवधि। मै.

टेङरा-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

टेङारी-सं., छोट हथलग्गू कुड़हरिक आकारक अस्त्र। मै.

टेंट-सं., डाँर, डाँरक हरिरा। मै.

टेंटगर-विशे., (लाक्षणिक) डाँर मे रुपैया रखैवाला। मै.

टेटर-सं., १. अंगक चमड़ा मे भीतरै भीतर स्वभाव सँ वा चोट लगला सँ फूलि कय बनल कठोर गोल। २. (लाक्षणिक) दोष, ऐब। मै.

टेटराहा-विशे., प्राकृतिक टेटरवाला। दोष भरल। स्त्री० टेटराही। मै.

टेंटा-विशे., कत्तौ अनेर गुप्त आ मर्मौक बात कें बाजि उठैवाला । मै.
टेंटाह-विशे., कठोर सत्य बाजि उठैवाला । मै.
टेंटियाएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) एकाकीपनक वा विवशताक अवसाद होएब । २. स्वार्थ सिद्धि नहि भेला सँ विखिन्न रहब । मै.
टेंटियाहा-विशे., कटु वचन सँ कत्तौ किछु बाजि देनिहार । स्त्री० टेंटियाही । मै.
टेंटी टापर-विशे., अत्यन्त छोट छोट । मै.
टें टें करब-क्रि., १. (लाक्षणिक आतुरता सँ दीनता देखाएब । २. सूगाक बोली । मै.
टेढ़-विशे., वक्र, कुटिल । मै.
टेढ़का-विशे., अनेक स्थान (अंग) मे मोड़वाला । मै.
टेढ़वकुची-विशे., अनेक स्थान मे पसरि मोड़ खाएल । मै.
टेढ़बराह-विशे., स्थान स्थान पर मोड़ नेने । मै.
टेढ़ी-सं., (लाक्षणिक) मिथ्या अभिमान, फूसि बड़प्पन । मै.
टेन-सं., रेलगाड़ी । अं. तद्भव
टेप-सं., बोली कें अभिलिखित (पुनः सुनय योग्य सुरक्षित) क' लैवाला यंत्र । फीता । अं. तत्सम
टेब-सं., निश्चित कालक काज । मै.
टेबब-क्रि., बहुत मे वा कोनो वस्तु कें अपन मनोऽनुकूल बीछब । मै.
टेबा-सं., नियमित कार्य आ नियमित समयक तत्परता । मै.
टेबाएब-क्रि., अनका द्वारा कोनो वस्तु कें काजक योग्य निर्द्धारित करब । मै.
टें बाजब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बेर पर अक्षमताक प्रदर्शन करब । २. मरि जाएब । मै.
टेबानी-सं., कोनो वस्तु कें गम्भीरता सँ टेबैक चेष्टा । मै.
टेबैंक-विशे., टेबैवाला काज मे निपुण । मै.
टेम-सं., १. विधि विधान सँ आडम्बरक आग्रह आ विस्तार । २. समय । मै./अं. तद्भव
टेमबरब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच अपन व्यवसायें ख्याति सँ गनती मे आएब । मै.
टेमरि-सं., निरर्थक परम्परा निवाहैक दुराग्रह । मै.
टेमी-सं., दीप क बाती । मै.
टेमी पाड़ब-क्रि., मधुश्रावणी मे नव कनियाँक ठेहुन पर टेमी देब । मै.
टेर-विशे., मगन, तल्लीन, गौरव भरल । मै.
टेरब-क्रि., बात कें विषय कें ध्यान दय धारणा करब । बात मानब । २. बँसुली वजबै मे मस्त होएब । ३. मगन भ' क' गाएब । मै.
टेर लगाएब-क्रि., लोक कें सजग करैले विशेष ध्वनि करब । मै.
टेरुआ-सं., चारि भुजाक बीच छेद मे पैसल डन्टीवाला सुतरी बँटैक लकड़ीक साधन विशेष । मै.
टेल्ह-विशे., अबोध बच्चा । मै.

टो

टोअब-क्रि., वचन आ आकृतिक भाव व्यञ्जना सँ भीतरी विचार जनैक चेष्टा करब । मै.
टोइआ-सं., १. घरक उपरक सब सँ उँचका भाग, माथी । २. सर्वोच्च शिखर । मै.
टोइआ करब-क्रि., अनदेखी मे छूबि छूबि ढील (केशक सूक्ष्म कीड़ा) कें ताकि ताकि पकड़ब । मै.
टोक-सं., निश्चित परिधिक विस्तृत क्षेत्र । मै.
टोकगर-विशे., दूर धरि पसरल रहैवाला खेत वा खेत रखैवाला । मै.
टोक चाल-सं., परस्पर सम्बोधन आ बातचीत । मै.
टोकन-सं., १. रेलगाड़ीक टीसन सँ खूजैक प्रमाण । २. प्रतीक प्रमाण पत्र । अं. तत्सम
टोकना-सं., साँकर आ गोल उठल मुहवाला उतार पसरल पेनवाला वर्तन । मै.
टोकनि-सं., खेतक ढेपा फोड़ब । मै.
टोकब-क्रि., १. परस्पर सम्बोधन कय गप सप करब । २. कोदारि सँ खेतक जंगल साफ करब । मै.
टोकर-सं., दूर पसरल खेतक चकला । मै.
टोकरी-सं., घपोली सन बाँसक पैंघ वासन । मै.
टोकाएब-क्रि., १. खेतक जंगल साफ कराएब । २. विरुधल दू गोटए मे बोलचाल कराएब । मै.
टोका चाली-सं., आपस मे बोलचाल । मै.
टोकार-सं., यथार्थताक ज्ञानक जागृति, चेतावनी, सतर्कता । एक विषयक ज्ञान सँ आन विषय मे सम्भावना कय नीक अधलाहक सचेत बुद्धि । मै.

टोकारय-सं., बहुत छोट नेन्ना कें टोकैक क्रम। मै.

टोङब-क्रि., नाम वस्तु कें छोट टुकड़ी मे खण्ड करब। मै.

टोटका-सं., तन्त्र मन्त्र आ विशेष मुद्राक प्रयोग। मै.

टोटमा-सं., विभिन्न मुद्रा आ तन्त्र मन्त्र सँ क्लेश हरैक चेष्टा। मै.

टोटल-सं., लेखा जोखाक जेर। अं. तत्सम

टोंटा-सं., कोनो वस्तु मे लागल फोंक धातुक डंटी। मै.

टोटा-सं., बाँस काठक छोट छोट खण्ड। मै.

टो टा करब-क्रि., अनदेख मे हाथ सँ छूबि छूबि वस्तु कें पकड़ि ओकर ज्ञान करब। मै.

टोंटी-सं., कोनो वस्तु मे (वर्तन मे) कोनो जलपात्र आदि मे पानि बहै लेल धातुक वर्तन मे लागल गोल नाम डन्टी। मै.

टोन-सं., बाँस काठक छोट छोट काटल टुकड़ा। मै.

टोनगर-विशे., अनेक छोट टुकड़ी करै जोग वा कयल बाँस, काठ आ खेत। मै.

टोनटान-सं., छोट छोट टुकड़ी मे करैक प्रक्रिया। मै.

टोनब-क्रि., १. छोट छोट टुकड़ी कय काटब। २. बिगड़'वैक चेष्टा करब। मै.

टोना-सं., विशेष प्रक्रिया, मुद्रा आदि सँ शारीरिक, मानसिक उपद्रव शान्तिक विधि। मै.

टोना टापर-सं., तन्त्र मन्त्र मुद्रा आदि एवम् औषधक सम्मिलित प्रयोग। मै.

टोनामानी-सं., परस्पर बिगड़ा बिगड़ौअलि। मै.

टोनाह-विशे., कनेकै मे फूटि जाइवाला वासन। अनायास नष्ट होम'वाला वस्तु। बातैं बातें खिसिआइ वाला लोक। मै.

टोनी-सं., १. कुशियार आदि वस्तुक छोट टुकड़ी। २. मलाहक हाथ मे जाल बीनैक काल सूत लपेटल कमची। मै.

टोप-सं., पैंघ आ सक्कत विदेशीय शिर पर रखैक वस्तु। मै.

टोपनि-सं., काँटी धँसबैवाला काँटी। मै.

टोप टहंकार-सं., पहिरै ओढ़ैक भड़कदार स्थिति। मै.

टोपर-सं., १. घाओक फूलैक परिधि (व्यास)। प्रयोग-"जाँघ पर गूर बेस टोपर बन्हने अछि।" २. गोल बखारीक छप्पर। ३. अंगक जोड़ पर गरम रखैले कपड़ा आदिक लपेटन। मै.

टोपा-सं., हर जोतै काल रौद सँ बचैक लेल चाकर गोल छायादार ताड़क पातक बनाओल माथ पर रखैक वस्तु। मै.

टोपी-सं., माथ पर रखै लेल आ संगहि कान झँपैक शिरस्त्राण वा माथक आवरण। मै.

टोबब-क्रि., हाथ सँ छूबि अपन मनें बीछब। पसिन्न करब। अन्तःकरणक थाह लेब। मै.

टोबाइ-सं., हाथ सँ छूबि छूबि मनोऽनुकूल बूझैक चेष्टा। मै.

टोभ-सं., बिन जोतैवाला स्थान पर कत्तौ कत्तौ खुरपी सँ कोड़ि बीआ रोपैक प्रक्रिया। मै.

टोभब-क्रि., बिन जोतल स्थान मे खुरपी सँ कोड़ि भूमि मे बीआ देब। मै.

टोभुआ-विशे., टोभि कय उपजाओल अन्न। मै.

टोर-सं., स्थितिक आभास। मै.

टोरब-क्रि., लक्षणें सँ स्थितिक आभास करब। मै.

टोल-सं., एक गामक भिन्न भिन्न समाजक खण्डें खण्डें बस्ती। मै.

टोला परोसा-सं., समाजक एक खण्ड आ घर लागल दोसर घरक समाज। मै.

टोली-सं., १. गामक आ समाजक एक अलङ। २. समूह, झुण्ड। मै.

टोस-सं., खेल मे समानता रहैक स्थिति मे कोनो मुद्रा (सिक्का) उछालि निश्चित चिह्नवाला पक्षक चिह्न उपर रहने हारै जितैक निर्णय। अं. तद्भव

टोह-सं., कोनो व्यक्ति वा वस्तुक अस्तित्वक (रहैक) स्थानक ठेकान बुझैक प्रवृत्ति। मै.

टोहब-क्रि., चुप्पैंचाप पता लगाएब। ककरो अनुसंधान करब। मै.

टोह लेब-क्रि., गुप्त रूपें बातक भेद जानब। मै.

टोहियाएब-क्रि., विभिन्न रूपें विभिन्न स्थान मे विभिन्न लोकक द्वारा ककरो आ कोनो बातक पता लगाएब। मै.

टौ

टौआएब-क्रि., असहाय एवं अनुशासनहीन दशा मे लक्ष्य शून्य भ' क' एम्हर ओम्हर निरर्थक बौआएब। मै.

ठ

ठक्कर-सं., परस्पर जोर सँ ठक् शब्दक संग चोट। मै.

ठक-विशे., विश्वास द' क' अविश्वासक क्रिया कय लाभ उठौनिहार। मै.

ठकठकाएब-क्रि., साँप कुकूर आदि दुष्ट जीव कें भगबैक हेतु लाठी ठेङा सँ भूमि पर जोर सँ ठक ठक शब्द करब। मै.

ठकठकिया-विशे., मछहर करैक क्रम मे जलाशयक माछ कें एक दिश करैक हेतु नाओ पर चढ़ि ठकठक करैत नाओ चलौनिहार। मै.

ठकठांइ-सं., निरन्तर लकड़ी पर चोट पड़ला सँ ठक ठक शब्दक क्रम। मै.

ठकठाएब-क्रि., ठकि ठकि समय ठारब। मै.

ठकठुक-सं., निरन्तर कोनो वस्तु पर किछु ठोकैक कर्णकटु शब्द। मै.

ठकठेना-सं., कोनो काज मे निरर्थक विषय उठा कय बाधा दैक चेष्टा। मै.

ठक द'-अव्यय, सर्वात्मना, सम्पूर्ण रूपें। प्रयोग– "भरि राति ठक द' उपास पड़ि गेलौं।" मै.

ठकदरुआ-विशे., धूर्ता (ठट्ठा) परिहास करैक योग्य। मै.

ठकनिहार-विशे., वञ्चना करैवाला। मै.

ठकपनी-सं., ठकैक प्रकृति, ठकक आचरण। मै.

ठकब-क्रि., वञ्चना करब। मै.

ठकबक-सं., विवाह सँ पूर्व वरक परिछनि समयक माटिक मूर्ति आगू मे रखैक मिथिलाक विधि। मै.

ठकभार-सं., थोड़बैक वस्तु कें चङेरा भरि पसारि चङेरा भरल देखबै मात्र ले बनाओल भार। मै.

ठक मूड़ी लागब-क्रि., आश्चर्य, आकस्मिक दुःखद घटना आदि सँ ज्ञानशून्य होएब। मै.

ठकर ठकर-अव्यय, लगातार ठोकैक कटु शब्द। मै.

ठकहरबा-विशे., सतत् ठकैक प्रवृत्तिवाला। मै.

ठकहरुआ-विशे., ठकि ठकि ल' जाइवाला। मै.

ठकाइ-सं., ठकैक प्रकृत्ति। विशे., ठकि दैवाला। मै.

ठकाएब-क्रि., अनका सँ ठकल जाएब। बञ्चित होएब। मै.

ठकान ठकब-क्रि., अचूक आ पैघ रूपे ठकि देब। मै.

ठकुआ-सं., साँच पर छापि क' पकाओल पकवान। मै.

ठकुआएब-क्रि., किंकर्त्तव्यविमूढ़ होएब। मै.

ठकुरपन-सं., धनिकत्वक दाबी। मै.

ठकुराइन-विशे., प्रसिद्ध, श्रेष्ठ आ माननीय नारी। मै.

ठट्ठ-सं., विशेष लोकक आ वस्तुक अधिकता। मै.

ठट्ठर-सं., हड्डी मात्र, शरीरक मांसहीन अस्थि पञ्जर। मै.

ठट्ठा-सं., परिहासक विनोद। मै.

ठठनिहार-विशे., प्रतियोगिता वा कार्यभार वा दायित्व मे सक्षम आ दृढ़ रहनिहार। मै.

ठठब-क्रि., बराबरी करब, प्रतिद्वन्द्वी बनब, सोझा सोझी अड़ल रहब, भार थम्हब। मै.

ठठरी-सं., मृत अस्थि पञ्जर। मै.

ठठाइ-सं., १. ठठैक प्रकृति। २. सन्तोष साधना। मै.

ठठाएब-क्रि., उपासल राखब। मै.

ठठान-सं., सहबैक, भूखल रखैक प्रक्रिया। मै.

ठठेर ठठेरक बदला-सं., (लाक्षणिक) समान जाति आ वस्तु मे संघर्षक सफलता। मै.

ठठेरि-विशे., काँस पित्तरि धातु सभक व्यवसायी, हैहय क्षत्रिय। मै.

ठढ़क्का-क्रि., उपर उठल कयल कपाड़क चानन। मै.

ठढ़का-विशे., १. ठाढ़ जकाँ उपर मुहें उठल। २. ठाढ़ भेल अथवा कयल। मै.

ठढ़कानर-विशे., करीन कें ठाढ़ जकाँ कयलै पर पानि लैक जोग करीन सँ पानि उपछैवाला खढ्ढा। मै.

ठढ़गर-विशे., (लाक्षणिक) नमहर। मै.

ठढ़ मनसा-विशे., १. ठाढ़ भय स्त्रीगण कें सतृष्ण देखनिहार। २. अधिक नाम पुरुष। मै.

ठढ़ सगाइ-सं., ठाढ़े ठाढ़ स्त्री कें सिन्दूर दय पत्नी सम्बन्ध करैक विधि। विधवा सँ अवैदिक पुनर्विवाहक प्रक्रिया। मै.

ठढ़िया-सं., सागक एक प्रभेद। मै.

ठन्ठन गोपाल-सं., (लाक्षणिक) अन्नक अभावें उपास। मै.

ठन्ठनाएब-क्रि., क्रोध, जोश आ अन्य बासना सँ सक्कत चञ्चल आ उत्तेजित होएब । मै.
ठन्ढइ-सं., शीतल वस्तु मिलाओल पेय । मै.
ठन्ढक-सं., ठार, जाड़, पाला, शीत । मै.
ठन्ढा-विशे., शीतल, सर्द । मै.
ठन्ढाएब-क्रि., १. कोनो श्रमक अवधि मे विश्राम करब । २. तप्पत वस्तुक शीतल होएब । ३. (लाक्षणिक) शारीरिक मानसिक आ सामूहिक उत्तेजना एवं आवेगक शान्त होएब । मै.
ठन्ढा ठन्ढी-अव्यय, ठन्ढाक समय मे । मै.
ठन्ढी-सं., शीतलता, जाड़, पाला । मै.
ठनक-सं., १. कठोरता । २. स्पष्ट रोबदार शब्द । ३. गर्जन । मै.
ठनकब-क्रि., मेघक घोर गर्जन करब । मै.
ठनका-सं., वज्र, मेघक बिजली । मै.
ठनब-क्रि., एक दोसरा मे विरोधक उग्र रूप होएब। प्रयोग—"दूनू मे झगड़ा ठनि गेल ।" मै.
ठनाक द' उठब-क्रि., १. माथ कपाड़ मे आकस्मिक चोट लागब । २. धातु वर्तनक खसला सँ आकस्मिक शब्द होएब । मै.
ठप्पा-सं., मोहर । मै.
ठप्पा पड़ब-क्रि., अभाव बढ़ब । निष्क्रियता होएब । मै.
ठप पड़ब-क्रि., बन्न भय निष्क्रिय रहब । प्रयोग—"की कहू हमर काज ठप पड़ल अछि ।" मै.
ठपकब-क्रि., रुकि जाएब, कोनो काजक गति अचानक रुकब । म.
ठपकाएब-क्रि., रोकब, ठप क' देब । मै.
ठमकब-क्रि., वेग तथा गतिक शान्त होएब । चलैत चलैत ठाढ़ भ' जाएब । मै.
ठमछोड़ू-सं., अपन नियत स्थान सँ दोसर ठामक रहन सहन । मै.
ठमठमाएब-क्रि., १. दुविधा मे रुकि जाएब। २. कोनो वस्तुक वेग थम्हब । प्रयोग—"हुनका आइ ज्वरक वेग किछु ठमठमाएल छनि ।" मै.
ठमाएब-क्रि., १. निश्चित कऽ राखब । २. कोनो वस्तुक भेटैक पता क' राखब । मै.
ठमौआ-विशे., निश्चित कय राखलवाला । मै.
ठर्रा-विशे., १. असिद्ध मदिरा । २. गाछ सँ चुबाओल ताड़ी । मै.
ठरठीक-विशे., विधिपूर्वक निश्चित । मै.
ठरठेकान-सं., स्थितिक निश्चित पता । मै.
ठरड़-सं., शब्द सहित सूतल मे नाकक श्वास प्रश्वास । मै.
ठरड़ पाड़ब-क्रि, जोर सँ कटु शब्द करैत सूतल मे श्वास फेंकब । मै.
ठरब-क्रि., अत्यन्त ठन्ढा होएब । मै.
ठरलहा-विशे., अत्यन्त ठन्ढा बनल । मै.
ठराएब-क्रि., शीतल बनाएब । जाड़ें विकल करब । मै.
ठरुआ-विशे., बड़ी काल सँ ठन्ढाएल । मै.
ठस-विशे., १. दृढ़, सक्कत । २. कम रूपें तौलल । प्रयोग—"बनियाँ कने ठस जोखितैं छै ।" मै.
ठसक-सं., १. निष्कलुष रूप । २. आत्म विश्वास । मै.
ठस ठसाएब-क्रि., सक्कत सँ मुनना लगा कय बैसाएब । कोंचि कोंचि कय भरि देब । मै.
ठँसब-क्रि., थोड़ आँट मे वेशी अँटबैक प्रयास करब। मै.
ठसाठस-अव्यय, तिल धरैक नहि स्थान रहैक स्थिति में भरब । मै.
ठहक्का-सं., जोर जोर हँसैक शब्द । मै.
ठहकब-क्रि., लोक कें सजग करैत ग्राम रक्षक आ कोतवालक अव्यक्त शब्द करब । मै.
ठहकी-सं., जोर सँ लोक कें सचेत करैक अव्यक्त शब्द । मै.
ठहठह करब-क्रि., अनका मूर्ख बनबैत अनेर बिन बातौं हँसब आ हँसि हँसि बाजब । मै.
ठहरब-क्रि., टिकब, विलमब, थम्हब, रुकब । मै.
ठहाठही-विशे., स्वच्छ आ सुन्दर इजोरिया । मै.
ठहार-सं., जोगाड़, धैर्य, आधार, आश्रय । मै.
ठही-सं., थाकनि, लगातार श्रमक द्वारें शरीरक पीड़ा । मै.
ठहुरी-सं., गाछ वृक्षक छोट छोट मूड़ीवाला अगिला डारि । मै.

ठा

ठाँ-सं., स्थान । मै.
ठाइँ ठाइँ-अव्यय, लकड़ी कटैक कटु शब्द । मै.
ठाओं-सं., आश्रय, स्थान, नीपल परिष्कृत भूमि । मै.

ठाकुर-सं., धनिक आ वैष्णव देवताक एवं विशेष जाति सभक उपाधि। मै.

ठाट-सं., भड़कताली, आडम्बर। मै.

ठाठ-सं., फूसक घरक बाँस काठ सँ बनल सक्कत आधारवाला साँचा। मै.

ठाठनि-सं., घर ठठैक (बन्हैक) प्रक्रिया। मै.

ठाठब-क्रि., घर बनबै ले बाँस काठ साँचा बान्हब। मै.

ठाँठि-विशे., बिनु गर्भधारणवाली गै महींस। मै.

ठाड़-सं., जाड़क अत्यधिक कनकनी। मै.

ठाढ़-विशे., पैर भरें उठल, (हि.) खड़ा स्त्री॰ ठाढ़ि। मै.

ठाढ़ि-सं., मूल सँ फुटल मुख्य शाखा, फेण। मै.

ठाढ़े ठाढ़-अव्यय, ठाढ़े भेल मे जल्दी निपटऽबैवाला काज। मै.

ठाढ़ेलाल-विशे., पचीसीक खेल मे दश वा पचीसक गनती मे उठैवाला गोटी। मै.

ठान-सं., कोनो नियम चालू करैक निश्चय। मै.

ठानब-क्रि., कोनो नव नियम वा काज आरम्भ करब। मै.

ठाम-सं., स्थान। मै.

ठामठीम-अव्यय, कोनो कोनो स्थान मे। मै.

ठाँसब-क्रि., सक्कतो छेद मे कोनो वस्तु सन्हियाएब, कड़ा कय बैसाएब। मै.

ठाँसा-सं., गहना गढ़ैक विभिन्न चित्रवाला सोनारक साँच। मै.

ठाँहि द'-अव्यय, शब्दक संग कोनो वस्तु सँ माथक चोट। मै.

ठाँहि पठाँहि-अव्यय, मुहै पर स्पष्ट रूपें। मै.

ठि

ठिकगर-विशे., उचित सन लगैवाला, नीक। मै.

ठिकरी-सं., तासक चौखुट चिह्नवाला पत्ती। मै.

ठिकरी करब-क्रि., झुटका जकाँ रुपैया फेंकब अर्थात् मोहहीन भ' क' खर्च करब। मै.

ठिकलहा-विशे., अनुमान द्वारा निश्चित कयलहा। मै.

ठिकाउ-विशे., अँटकर लगबैक जोग। मै.

ठिकाएब-क्रि., १. निशाना (लक्ष्य) साधब। अनुमान द्वारा अनका सँ परिमाण स्थिर कराएब। मै.

ठिकाठीक-विशे., सम तूल समय वा स्थितिवाला। प्रयोग—"ठिकाठीक दुपहरियै चलि देलियै।" मै.

ठिकेदार-विशे., ठीका लय के काज कयनिहार। मै.

ठिकौती-विशे., निश्चित नियमक अनुसारवाला विषय। मै.

ठिङना-विशे., छोट खाँटक लोक। (स्थान भेदें शब्द भेद)। हि. तद्भव

ठिठियाएब-क्रि., १. अनेर कोनो बात पर ठी ठी कय हसैत रहब। २. कामवासनाक वेग भेने लिंगक सक्कत होएब। मै.

ठिठुआ-सं., हाथक कड़ा कयल बुढ़बा आङुर। मै.

ठिठुरब-क्रि., जाड़ें हाथ पैरक शक्तिहीन भय निष्क्रिय होएब। मै.

ठिठुराहटि-सं., जाड़क ठिठुर'बैक गुण। मै.

ठिन-सं., स्थान। प्रयोग—"ऐ ठिन ओइ ठिन।" मै.

ठी

ठीआँ-सं., स्थान स्थान पर। प्रयोग—"ऐ ठीआँ नैं रहि सकब।" मै.

ठीक-विशे., प्रस्तुत, (तैयार) काज मे सक्षम (दुरुस्त) उचित, शुद्ध। मै.

ठीकठाक-विशे., प्रस्तुत, सुसज्जित, व्यवहार हेतु वृत्त भेल। मै.

ठीकब-क्रि., अनुमान कय निश्चित करब। मै.

ठीकर-विशे., चौकठी रंगक तास। मै.

ठीका-सं., नियत राशि पर नियत काज पुरबैक विशेष काज। मै.

ठीका पट्टा-सं., १. ठीकाक हेतु कयल आलेख। २. ठीका कयके देल कार्यभार। मै.

ठीके-अव्यय, सत्ते। मै.

ठु

ठुएठक्के-अव्यय, एक मात्र केवल। मै.

ठुकुर ठुकुर-अव्यय, लगातार किछु ठोकैक मद्धिम ध्वनि। मै.

ठुट्ठ-विशे., १. शाखा प्रशाखाहीन वृक्ष। २. (लाक्षणिक) निकटक सरसम्बन्धीरहित लोक। मै.

ठुट्ठा-सं., १. पसारल औंठा आ तर्जनीक बराबरिक माप। २. शाखाहीन (विशे.)। मै.

ठुड्ढी-सं., दाढ़ीवाला अंगक अगिला भाग। मै.

ठुड़री-विशे., १. अत्यन्त काँच लताम आदि फल। २. प्राचीन कालक लोहक छोट मुद्रा। मै.

ठुनकब-क्रि., बिना नोरक तोड़ मारि मारि कानब। मै.

ठुनका-सं., मुट्ठी बान्हि मुहें मुह हल्लुक चोट। मै.

ठुनकाएब-क्रि., ठुनका सँ मारब। मै.

ठुनकी-सं., लगातार ठुनकि कय कनैक क्रम। मै.

ठुन ठुन करब-क्रि., मनोनुकूल नहि होइक कारणें हरदम नेन्नाक ठुनकैक क्रम होएब। मै.

ठुमरी-सं., संगीतक राग आ लय विशेष। मै.

ठुमुक्का-सं., जोर सँ ठुनकाक मारि। मै.

ठुमुकचालि-विशे., ताल पर नचैक क्रमसन विराम दय के चलनिहार। मै.

ठुमुक ठुमुक-अव्यय, नाचक कलापूर्ण गति। मै.

ठुमुकन-सं., छोट छोट नेन्नाक चलैक क्रम। मै.

ठुमुकब-क्रि., छोट छोट नेन्नाक विशेष डेग हनब। मै.

ठुमुकी-सं., ताल ताल पर डेग देबाक प्रक्रिया। मै.

ठुसका-विशे., अधिक खाइवाला। मै.

ठुसना-विशे., १. अधिक खाइक प्रकृतिवाला। २. भीतर घुसाकय मुह मूनैक साधन। मै.

ठुसाएब-क्रि., अधिक खोआएब। मै.

ठुसान ठूसब-क्रि., मात्रा सँ अधिक खाएब तथा वासन भरब। मै.

ठू

ठूँठ-विशे., सर्वाङ्ग शून्य। मै.

ठूठ सूठ-विशे., लोक वेद आ सन्तानहीन। मै.

ठूठी-विशे., छोपैत छोपैत छोट बनल। मै.

ठूसब-क्रि., १. संकीर्ण स्थान मे अधिक भरब। २. उचित सँ वेशी खाएब। मै.

ठूसाठूसी-सं., नहियों अँटैक स्थान मे अधिक भरैक प्रयास। बराबरि खाइत रहैक क्रम। मै.

ठे

ठेक-सं., १. ओर धरि पहुँचने अवरोध। २. ठेकना। ३. निशान। ४. अवधि। मै.

ठेकनगर-विशे., विषय बुझैवाला। बुझनुक। मै.

ठेकना-सं., कोनो वस्तुक अड़ैक हेतु देल साधन। मै.

ठेकनाएब-क्रि., १. मोन पाड़ब आ राखब। २. ठमाएब। मै.

ठेकनाह-विशे., विश्वास करैक योग्य। आस्था करैवाला। मै.

ठेकब-क्रि., १. ओरधरि पहुँचब। २. अभड़ब। ३. उपर वा नीचाँ लागि भ' जाएब। ४. खेत कें समतल करै लेल चौकी दैक चेष्टा करब। ५. भीरब, पहुँचब। मै.

ठेकर-विशे., १. बर्जना कयलौ पर अपन स्थान सँ टस सँ मस नहि भेनिहार। २. माथ मे उपरैं उपर लागल चोट। मै.

ठेका-सं., १. दिनक निश्चयपूर्वक अवधि। २. तबला सँ बोल बहार करैक अभ्यास। मै.

ठेकाएब-क्रि., पहुँचाएब। अन्तिम लक्ष्य धरि मिलाएब। मै.

ठेकान-सं., पता, स्थिरता, अनुसन्धान, स्मरण, निश्चित स्थान। मै.

ठेकानब-क्रि., सुमिरन करब, मोन पाड़ब, अभ्यास करब। मै.

ठेकाना-सं., पता, निश्चित स्थान। निश्चय। मै.

ठेंघुन-सं., टाँग आ जाँघक जोड़। मै.

ठेंघुनियाँ-सं., ठेंघुन भरें चलैक चेष्टा। मै.

ठेंघुनियाँ देब--क्रि., शिशुक ठेंघुन भरें चलब। मै.

ठेङना-विशे., किशोरावस्थाक नेन्ना। मै.

ठेङा-सं., हाथ मे हल्लुक डंडा। मै.

ठेङियाह-विशे., ठेङीवाला स्थान। मै.

ठेङी-सं., घास पर चलैवाला जोंक। मै.

ठेंठ-विशे., १. अधम लोक। २. बाँझ। मै.

ठेंठपन-सं., नीचता। मै.

ठेंठा-विशे., कदोआ करैवाला छोट आकारक हर। मै.

ठेंठियाहा-विशे., हरदम ठें ठें क' क' हुँसैवाला। मै.

ठेंठी-विशे., अधिक छाटला सँ आ खिअएला सँ छोट भेल कोदारि, खुरपी आ कुड़हरि। मै.

ठेड़ी-सं., समतलक बीच ऊँच स्थान। मै.

ठेपी-सं., सीसी बोतल आदि वस्तुक मुनना। मै.

ठेल-सं., पाछू दिश पकड़ि कय आगू दिशक गति। मै.

ठेलगाड़ी-विशे., पाछू दिश सँ धकेलि क' चलैवाला गाड़ी। मै.

ठेलब-क्रि., जोर सँ धकेलि कय गति देब। मै.

ठेलम ठेला-सं., लोकक घन भ' क' रहला सँ धकेलि धकेलि काज चलैक स्थिति । मै.

ठेला-सं., १. कठोर वस्तुक अधिक घर्षण सँ बनल सुखाएल मांस पिण्ड । २. ठेलि क' चलबैवाला दू पहियाक गाड़ी । ३. रेलक पटरी पर चलबैवाला चारि पहियाक गाड़ी । मै.

ठेलाएब-क्रि., अनका सँ जोर लगाकय आगू गति बढ़ाएब । मै.

ठेला ठेली-सं., १. एक दोसरा कें ठेलैक खेल । २. अधिक घन लोकक बिच ठेलि ठेलि कय आगू बढ़ैक स्थिति । मै.

ठेस-सं., पैर मे अचानक ठोस वस्तुक ठोकर । मै.

ठेसगर-विशे., ढीठ, निर्भीक । मै.

ठेसब-क्रि., १. चलैत चलैत पैर मे अचानक चोट-वाला ठोकर लागब । २. धोखा खाएब । मै.

ठेस लगने बुद्धि बढ़ए-लोकोक्ति, कोनो प्रकारक मानसिक वा शारीरिक धक्का लगनै चेत होइ छै । मै.

ठेसर-विशे., संकोचहीन आ बुद्धिमानी सँ निडर रहनिहार । मै.

ठेसी-सं., आत्मविश्वास सँ बनल दृढ़ता । मै.

ठेहकब-क्रि., पूर्वानुभवक कारणें शंकित भय मनक चेतब । मै.

ठेहियाएब-क्रि., थाकि कय बैसब, हारब । शान्त होएब । मै.

ठेही-सं., १. लगातारक थाकनि सँ शारीरिक पीड़ा सँ उत्पन्न क्लेश । २. कठोर भूमिक उँचगर स्थान । मै.

ठो

ठोक-सं., कोनो ठोस पदार्थ कें कोनो वस्तुक भीतर वा छेद मे धँसबैक लेल तथा निःसार वा सुखाएल पदार्थक शब्द करैक लेल जोर सँ चोट । मै.

ठोक ठोका-सं., निरन्तर ठोकैक आवश्यक क्रम । मै.

ठोकड़ा-सं., १. चूरा कूटै मे उखरिक धान लाड़ैक चापट कयल फट्ठी । २. खेतक घास । मै.

ठोकना-सं., ठोकैक क्रिया ले सक्कत साधन । मै.

ठोकब-क्रि., कोनो वस्तु पर उपर सँ चोट देब । मै.

ठोकर-सं., १. कोनो ठामक आगूक अचानक जोर सँ कठिन वस्तुक आघात । संघर्ष सँ चोट । २. ताना मे कपड़ा बीनी घुरबैवाला दुहू कातक लोहक कुम्भी । मै.

ठोकरा-सं., खेत मे मोट डाँटवाला छोट गाछ । मै.

ठोकराएब-क्रि., १. कोनो वस्तुक अगिला भाग सँ चोट करब । २. (लाक्षणिक) तिरस्कार सँ उपेक्षा करब । मै.

ठोकरा ओलब-क्रि., खेतक खढ़पात आ जंगल बीछि क' स्वच्छ करब । मै.

ठोकलाहा-विशे., ठोकल गेलवाला । मै.

ठोकाइ-सं., १. ठोकैक बोनि । २. ठोकैक चलैवाला काज । ३. (लाक्षणिक) पिटाइ । मै.

ठोकाएब-क्रि., ठोकैक काज कराएब । मै.

ठोका जबाब-सं., बातक अपेक्षाहीन स्पष्ट उत्तर । मै.

ठोकान-सं., १. मारि पड़ैक क्रम । २. ठोकैक निरन्तर काज । मै.

ठोका नमस्कार-सं., (लाक्षणिक) तुरन्त ठाढ़े ठाढ़ विदा करब । मै.

ठोकुआ-विशे., ठोकि कय जोड़लवाला । मै.

ठोकैया-सं., ठोकैक कार्य । पिटैया । मै.

ठोङा-सं., कागजक बनल झोरी । मै.

ठोंठ-सं., कण्ठक अगिला भागक मोट नली । मै.

ठोंठ ठेकब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक व्यग्रता बढ़वैक कारणें भार बनल रहब । मै.

ठोंठ मोकब-क्रि., प्राण लैक विचारें कण्ठक आगूक भाग कें जोर सँ दबाएब । मै.

ठोंठ लागब-क्रि., सर्दीक प्रकोपे स्वर बहरयबा मे कष्टक संग व्यतिक्रम होएब । मै.

ठोठियाएब-क्रि., ठोंठ पकड़ि अनादर सँ भगाएब । मै.

ठोप-सं., १. कपाड़ मे सुन्ना जकाँ चिह्न । २. पानिक वा कोनो द्रवक बिन्दु । मै.

ठोर-सं., निचला ओठ, अधर । मै.

ठोर बिजकब-क्रि., कनैक उपक्रम मे ठोरक स्पन्दन संग विकृत होएब । मै.

ठोरबिजका-विशे., ठोर बिजक'बैक स्वभाववाला । मै.

ठोर बिजकाएब-क्रि., कनैक उपक्रम मे, आश्चर्य प्रकट करै मे आ घृणा व्यक्त करै मे ठोर कें संकुचित कय विकृत करब। मै.

ठोरबिदरा-विशे., ठोरक मोट रहैक द्वारें बिदरल ठोरवाला। स्त्री० ठोरबिदरी। मै.

ठोर रंगू-विशे., फसिलक पकैक क्रम मे कनेक कनेक आगू दिश रंग धयल दाना। मै.

ठोराह-विशे., अधिक फट फट अशिष्टता सँ बजनिहार। स्त्री० ठोराहि। मै.

ठोरी-सं., ठोरलागल निचला भाग। मै.

ठोला-विशे., मुहलगुआ दुलारू। मै.

ठोस-विशे., सक्कत, कठोर, दृढ़। मै.

ठोसगर-विशे., (उ.) मजबूत, कड़गर। सक्कत। मै.

ठोहर-सं., गाछक कुम्भी, गाछ मे बनल घेघ। विशे., निराश। मै.

ठोहराएब-क्रि., एकाएक तमसाइत गरजि उठब। मै.

ठोहराह-विशे., अचानक तामसें गरजि उठैवाला। मै.

ठोहि ठोहि क' उठब-क्रि., बिगड़ैत तुरन्त गरजि उठब। मै.

ठोहि पाड़ब-क्रि., उच्च स्वरें कानि उठब। मै.

ठोहियाएब-क्रि., उच्च स्वरें तुरन्त तमसा उठब। मै.

ड

ड-सं., ट वर्गक तृतीय वर्ण। मै.

डंक-सं., मोस (मच्छर) आ डाँस आदि कीटक द्वारा जोर सँ सूंघ गड़ा कय शोणित चूसैक प्रक्रिया। मै.

डंक मारब-क्रि., सरीसृपक (साँप आदि जीवक) द्वारा चोट करब। मै.

डँकब-क्रि., विकट उत्कट गन्धक प्रकाश होएब। मै.

डकब-क्रि., १. कौआक बाजब। पक्षीक प्रभात काल मे प्रथम शब्द उचारब। २. उत्कट गन्ध सँ वातावरण दूषित होएब। मै.

डकरब-क्रि., बान्हल माल (गाय महिसिक) चरैक आतुरता सँ बाजब। मै.

डकलिलामी-सं., १. सामूहिक रूपें डाक करा कय कोनो वस्तु बेचैक प्रकिया। २. सामूहिक लोकक उपद्रव। मै.

डकहा-सं., माल जालक संक्रामक रोग विशेष। महामारी। मै.

डंका-सं., द्वन्द्व युद्धक वाद्य। मारूबाजा। मै.

डकाएब-क्रि., १. स्पष्ट रूपक उद्घोष कराएब। २. कोनो वस्तुक डाक कराएब। बजाएब। मै.

डकूबा-विशे., १. डाका दैवाला। २. (लाक्षणिक) अन्याय करैवाला। मै.

डकैती-सं., डाकूक द्वारा मारिक संग लूटि। मै.

डकौड़-विशे., बराबरि सबठाँ डाक बजनिहार। मै.

डखाना-सं., अंग्रेजी औषधालय। मै.

डगड़-सं., केवल ढोलक चोटवाला शब्द। मै.

डगड़ पड़ब-क्रि., ढोल मात्रक शब्द सँ विशेष घटनाक सामूहिक सूचना होएब। मै.

डगडग-विशे., कोमलता आ स्वच्छताक द्वारें भीतर सँ रसमय आभा भरल। मै.

डगडगी-सं., १. कोमलता, स्वच्छता आ सरसताक कारणें भीतर सँ छिटकैत सौन्दर्य। २. टीनक बनल विशेष प्रकारक छोट गंगाजल रखैक वासन। मै.

डगड़ा-सं., चारि ठुट्ठा पेटवाला गोलाकार बाँसक बीनल वासन। छोटका सूप। डगड़ी। मै.

डगडग-विशे., १. अपन स्थान पर स्थिर नहि भेल। २. (लाक्षणिक) विचलित रहैवाला। द्विविधा मे रहैत मनवाला। मै.

डगमगाएब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर भेल डोलैत रहब। अव्यवस्थित मन होएब। मै.

डगमगाह-विशे., अस्थिर रहैवाला, डोलैवाला। मै.

डगमगी-सं., अस्थिरता, तारतम, विचलित रहैक स्थिति। मै.

डगर-सं., एकै स्थान मे लोकक आ मालक एकै स्थान मे चलैत रहैक कारणें बनल चिक्कन बाट। मै.

डगरना-सं., छोट छोट पातर ठाढ़िक टुकड़ी बाँसक छोट छोट खण्ड। मै.

डगहर-सं., पाँती जोर सँ समूहक चलैक क्रम। मै.

डघड़-सं., बाट। मै.

डघड़ब-क्रि., जेर बान्हि कय चलब। मै.

डघड़ाएब-क्रि., १. जेर बनाकय एकै दिश हाँकब। २. सूप सँ मिझहर अन्न कें अलग अलग करब। मै.

डघड़ौनिहार-विशे., वाट धरा क' लय गेनिहार। सूप चलाकय अन्न गड़काकय अलग कयनिहार। मै.

डँटकी-सं., कोनो वस्तुक (अन्न फलक) नाल दण्ड, डाँट। मै.

डँटगर-विशे., १. सक्कत डाँटवाला। २. परिपूर्ण रूपक। ३. पूर्णतया नहि सुसिद्ध भात। मै.

डटनिहार-विशे., प्रतियोगी होइक योग्य। अड़िकय सोझाँ सोझी ठाढ़ भेनिहार। मै.

डटब-क्रि., सामना करब, सोझाँ सोझी अड़ब, निडर भेल रहब। मै.

डँटहा-विशे., डाँट (नाल) सँ भरल। मै.

डंटा-सं., बिन सजल ठेङा, कोनो रूपक दण्ड। मै.

डटाएब-क्रि., १. युद्धक हेतु दूनू पक्ष कें उत्साहित करब। २. तृप्ति सँ भोजन करब। मै.

डटा क'-अव्यय, अछिन्नरै भोजन। मै.

डटान-सं., १. विरोध मे दूनू पक्षक सामना। २. उत्कृष्ट आ अधिकता भरल भोजन। ३. अत्यन्त क्रोधपूर्वक फटकार। मै.

डटुआ-सं., गहूमक सीस कतरल डाँट। मै.

डटौ-सं., अनेक फसिल आ खढ़क मिलल जुलल डाँट। मै.

डँड़ेर-सं., देहक आधा पर विचला अंश। मै.

डन्टी-सं., कोनो गाछ वृक्षक पातर डारिक नाल। शाखा दण्ड। मै.

डन्ड-सं., अभियुक्त (अपराधी) क दोषक अनुसार आर्थिक वा शारीरिक दण्ड। सं. तद्भव

डन्ड प्रणाम देब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त विनीत भ' क' प्रार्थना करब। मै.

डन्डा-सं., छोट आकारक पातर सनक ठेङा। मै.

डन्डी-सं., तराजूक पलड़ा लटक'बैवाला डन्डा। मै.

डन्स-सं., आनक नीक देखि विरोधक भाव। मै.

डनिपन-सं., डानिक चालि। तन्त्रमन्त्र सँ मारण मोहन आदि प्रयोग करैक गुण। मै.

डनियाही-विशे., समाज मे डानिक रूपें प्रसिद्ध स्त्री। मै.

डपट-सं., कठोर वचनक द्वारा क्रोधक प्रकाशन। मै.

डपटब-क्रि., कोनो बातक निषेध मे वा विरोध मे क्रोधें बात कहब। मै.

डपटान-सं., दवाड़ैक रूपें कठोर शब्दक प्रयोग। मै.

डपोड़ शंख-विशे., बात बनवै मे बहुत क्रिया मे किछु नहि कयनिहार। मै.

डपौ-सं., केराक पातक बीचवाला मोट डन्डा। निर्जीव। मै.

डपौड़-सं., केराक गाछक छाल निर्जीव। मै.

डफरा-सं., चाकर गोल एके पीठ चाम सँ छारलवाला वाद्य विशेष। मै.

डब्बा-सं., रेलगाड़ी मे जोड़ल सवारीवाला खण्ड। मै.

डब्बूक-सं., रसदार तीमन परसैक गहींर पेट आ छोट डन्टावाला करौछ सन वासन। मै.

डबकब-क्रि., बहिकय पानिक एकठाँ जमा होएब। मै.

डबकाह-विशे., पानि जमा होइवाला स्थान। मै.

डबडब-क्रि., १. जल भरल मेघ। २. बाढ़ि भरल। ३. ज्वर आदि सँ चढ़ल आँखि। मै.

डबडबाएब-क्रि., मेघ मे जल भरि जाएब। आँखि मे नोर भरि आएब। मै.

डबडोहि-विशे., ज्ञान शून्य। किछु कहलो पर केवल मुह तकैत रहैवाला। मै.

डबरा-सं., पानि बसैवाला पैघ आ गहींर खत्ता। छोट डबरी। मै.

डबल-विशे., अनबूझ, जड़। प्रयोग-"अहूँ खूब डबल छी। एतबो नै बूझै छियै जे दू विजातीय पदार्थक मिलान सँ तेसर उत्पन्न भ जाइ छै।" मै.

डबाडब/डबोडब-विशे., चारू दिशक कोर जल सँ भरल। मै.

डम्फा-सं., १. वाद्य यन्त्र विशेष। २. चिमनी भट्ठा मे एक निश्चित ईंटाक लगाओ। मै.

डम्भा-विशे., पकैक स्थिति मे आएल फल। मै.

डमखोर-सं., केराक सजीव छाल। मै.

डमडम-अव्यय, ढोल आ डमरूक शब्द। मै.

डमरू-सं., एक हाथ मे लय के झोंक सँ डोलौला सँ बजैवाला महादेवक प्रसिद्ध वाद्य। मै.

डमरूमध्य-सं., समुद्रक भीतर धरि गेल दूनू छोर पर चाकर आ बीच मे पातर स्थल। मै.

डमहा-विशे., देखू—"डम्भा"। मै.

डमाडम-अव्यय, डंका चोट सँ उत्पन्न शब्द। मै.

डमाडोल-विशे., अनिश्चित। मै.

डर-सं., भय। मै.
डँरकस-सं., १. स्त्रीक डाँरक गहना। काञ्ची। २. पुरुषक धोती सँ अतिरिक्त पहिरन कसैक साधन। पेटी। मै.
डँरखिल-विशे., पातर डाँरवाला स्त्री वा पुरुष। मै.
डर पैसब-क्रि., सम्भावित बातक अनिष्ट सोचि कय डर होएब। आदङ्क होएब। मै.
डरपोँक-विशे., अधिक डर रखैवाला। मै.
डरब-क्रि., भयभीत होएब। मै.
डँरबासा-सं., डाँरवाला अंग। मै.
डराएब-क्रि., डर देब, डर पैसाएब। मै.
डराँडोरि--सं., सदा धारण करैवाला। डाँरक बन्धन। मै.
डरीर-सं., अक्षरक पाँती सोझ करैक रेखा। मै.
डल-सं., निर्भयतापूर्वक आचरण। प्रयोग-"हिनक डल देखियौनि जे धड़धड़ाएल सोझे घर ढूकि गेला।" मै.
डलबाह-विशे., भगता (भाओ खेलाइवाला) क लग गोहारि ले आएल डाली कें क्रमबद्ध राखि बुझबैवाला सहायक। मै.
डलिया-सं., चाकर आ गोल बाँसक बीनल फूल आदि रखैक वासन। मै.
डँसब-क्रि., मधुमाछी आदिक बीन्हव, बीछ आ बिच्छू आदि जीवक डंक मारब, साँप एहन जीवक दाँत सँ काटब। मै.
डहकन-सं., मिथिलाक सभ्यताक अनुसार वैवाहिक सम्बन्धक नव कुटुम्ब कें गीतबद्ध मधुर गारि। मै.
डहब-क्रि., जरब, दग्ध होएब। मै.
डहरगाँड़ि/डहर गेंड-विशे., वचन आ कर्मक अव्यवस्थित। तुच्छ, अधम। मै.
डहरा-सं., सूगरक बच्चा। मै.

डा

डाइ-विशे., उपर सँ प्रशंसा आ भीतर सँ अधलाहक कामना कयनिहार। मै.
डाइँ डाइँ-सं., खाइक हेतु आतुरताक सतत् प्रदर्शन। मै.
डाइन-विशे., घृणित तन्त्र साधना कय लोकक अधलाह आ हत्याधरि कय दैक सिद्धि करैवाली। मै.
डाउँ डाउँ-सं., सदिखन खयबैक चेष्टा। मै.
डाक्टर-विशे., चिकित्सक। सिद्ध विद्वान्। अं. तत्सम
डाक-सं., १. डकैती। २. शासन द्वारा बेरोक टोक पत्र एवं मुद्राक नियत स्थानक यातायात। ३. खूब जोर सँ सोर करैक चेष्टा। ४. कौआक कटु स्वरक शब्द। ५. प्रसिद्ध अनपढ़ पण्डित। ६. कीनब बेचब मे अधिक सँ अधिक दामक बात। मै.
डाकखाना-सं., पत्रालय, डाक द्वारा आएल पत्र आदिक व्यवस्थाक घर। पोस्ट आफिस। मै.
डाकगाड़ी-सं., मार्ग मे कत्तौ नै अँटकैवाला रेल आदि यान। मै.
डाकनि/डाकनि देब-सं./क्रि., १. जोर सँ सोर करब। २. सँपकट्टाक कान मे जोर सँ साँपक विष झारैक लेल मन्त्र पाठ करब। मै.
डाक पड़ब-क्रि., अप्रत्याशित अनहोनी शोकक घटना होएब। मै.
डाकब-क्रि., १. बढ़ि क' दाम बाजब। २. जोर सँ सोर करब। ३. भविष्यक निश्चयात्मक घोषणा करब। मै.
डाकबाबू-विशे., डाकघरक प्रधान कर्मचारी। मै.
डाका-सं., हत्या एवं लूटि सँ धनक हरण। मै.
डाका पड़ब-क्रि., १. दस्युक द्वारा हत्या आ धनक लूटि करब। २. (लाक्षणिक) अनर्थ होएब। मै.
डाकिया-विशे., डाक लय गेनिहार कर्मचारी। मै.
डाकिनि डाकिनी-अव्यय, अदृश्य भौतिक घातक शक्ति। मै.
डाकू-विशे., हत्या आ लूटि सँ धनक हरण कयनिहार। मै.
डाखाना-सं., डाक्टरक चिकित्सालय। मै.
डाङ-सं., दण्ड, ठेङाक प्रहार। प्रयोग-"दैवक डाङ सभक उपर।" मै.
डाङर-विशे., हड्डी मात्र बाँचलवाला मांसहीन दुर्बल शरीर। मै.
डाँट-सं., १. गाछ वृक्षक मुख्य शाखा दण्ड। २. फसिलक नाल। ३. उच्च स्वरें खिसियाएब। मै.
डाँटनि-सं., जोर सँ क्रोधक शब्दे निषेध। मै.

डाँटब-क्रि., खिसियाइत दबाड़ब । गर्जनसहित तर्जन करब । मै.

डाँटी-सं., अन्नक दाना झारल डाँट, नाल । मै.

डाँटू-सं., गहूमक सीस कतरल डाँट । मै.

डाँड़-सं., १. आर्थिक दण्ड । २. उचित सँ वेशी कोनो वस्तुक दाम । मै.

डाँड़ब-क्रि., १. आर्थिक दण्ड करब । २. उचित सँ वेशी मूल्य लेब । मै.

डाँड़बान्ह-सं., दण्ड करैक कड़ा व्यवस्था । मै.

डाँड़रि-सं., १. पतझड़ । २. केराक पातक डाँट । मै.

डाँड़ लागब-क्रि., दामक अनुसार वस्तु नहि होएब । मै.

डाँड़ि-सं., रेखा, चीच । मै.

डाँड़ी-सं., १. नाओ खेबैक लग्गा आ करुआरि । २. बदरीनाथ यात्रा मे बोको द्वारा बनाओल वाहन विशेष । मै.

डाढ़ी-सं., दूध औंटला पर वर्तनक पेन मे जमल दूधक विकार । मै.

डाफ-सं., बड़का ढोल (अं. 'ड्रम') । मै.

डाबर-सं., १. पोखरि सँ छोट स्नान पानक अयोग्य जलाशय । २. हाथ मुह धोइक फैल मुहवाला धातुक वर्तन । मै.

डाबा-सं., दूध दुहैक हेतु बनाओल विशेष माटिक वासन । मै.

डाभ-सं., १. खढ़क लगुजा मूड़ी । २. काँच नारिकेर । मै.

डाभ नेबो-सं., बहुत पैघ आकारक फल जकाँ खाइक योग्य नेबो । मै.

डाभी-सं., लरगुज सक्कत खढ़ विशेष । मै.

डाँर-सं., १. देहक बीचक जोड़ । कटि प्रदेश । २. नाओ घुमवैक कील । मै.

डारि-सं., विभिन्न दिशा मे पसरल गाछक प्रशाखा । मै.

डालना-सं., अनेक तरकारीक मिश्रण सँ बनल तीमन । मै.

डाला-सं., बाँसक बनाओल छोट आ पैघ पसरल उत्थर वासन । मै.

डाली-सं., १. कनेक कानवाला छोट डाला । २. फलक हेतु कीनल गाछक मूल्यक अतिरिक्त देय फल । मै.

डाँस-सं., पैघ माछीक आकारक डँसैवाला कीड़ा, फतिङ्गा । मै.

डाँसब-क्रि., बिच्छू आदिक डंक मारब । माछी आदिक कीड़ाक सुँघ सँ रक्त पीयब । मै.

डाह-सं., १. ईर्ष्या । २. दाह, आनक नीक सँ शत्रुताक स्वभाव । मै.

डाहनि-सं., पीड़ित करैक प्रवृत्ति । मन मे पीड़ा दैक स्वभाव । मै.

डाहब-क्रि., १. दग्ध करब । २. जराएब । मै.

डाही-विशे., दोसराक नीक नै सहन कयनिहार । ईर्ष्या कयनिहार । मै.

डि

डिक-सं., १. तासक खेलक एक परिभाषा । (डिक्लेयर) अट्ठैसा खेल मे रंगक उद्घाटन । (अं. तद्भव) २. अव्यवस्थित रूपें उँचकय वस्तुक जमाओ । मै.

डिकब-क्रि., वस्तुऐ पर वस्तु राखि उँचगर कय जमा करब । मै.

डिकबाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपें जमा कराएब । मै.

डिक लागब-क्रि., जेना तेना एकठाँ जमा होएब । मै.

डिकाइ-सं., जमा करैक लगातार क्रम । मै.

डिग्गा-विशे., १. अड्ढेल (सर्वोच्च) बूड़ि । २. कौड़ी टिपक खेल मे राङ मारि क' घुच्चाक कौड़ी मारैवाला कौड़ी । मै.

डिगडिगिया-सं., सामाजिक एवं राजकीय सूचना हेतु ढोलक शब्द । मै.

डिगब-क्रि., अपन स्थान आ नियम सँ विचलित होएब । मै.

डिगरी-सं., १. न्यायक संघर्ष मे जीत । डिक्री । २. उपाधि पदवी । अं. तद्भव

डिगाएब-क्रि., विचलित क' देब । मै.

डिघरी-विशे., ऊँच धनहर खेत । मै.

डिङबाज-विशे., बड़का बड़का गप हाँकि अपन महत्त्व बढ़बैक प्रयास कयनिहार । मै.

डिङबाजी-सं., गप हुँकैक प्रवृत्ति । मै.
डिट्ठा-विशे., ढीठ, धर्कट, असभ्य । मै.
डिठवरना-विशे., गारि विशेष । (धृष्ट वर्णक वर्ण संकर) । मै.
डिठौरी-सं., दृष्टि दोषें भेल घाओ । मै.
डिँड़ियाएब-क्रि., पशुक आतुरताक शब्द । मै.
डिब्बा-सं., सक्कत मुनना ओझँपनावाला धातुक वासन । मै.
डिब्बी-सं., छोट सँ छोट मुननावाला आ झँपनावाला धातुक वासन । मै.
डिब्भी-सं., माटि सँ बहराएल बीज सँ सोझ अंकुर मात्र । मै
डिबडिब-अव्यय, ढोल केर कटु शब्द । मै.
डिबडिबाएब-क्रि., ढोलक शब्द जकाँ अनेर कथू सँ शब्द बहार करब । मै.
डिबिया-सं., १. कोनो वस्तु रखैक मुननावाला छोट वासन । २. मुह बन्न कय रखैवाला छोट कीया । मै.
डिम्भा-सं., नीक जकाँ प्रकट बीजक अंकुर । मै.
डिमडिम-अव्यय, ढोल तबला डुग्गी ढोलक मृदङ्ग आदिक मधुर शब्द । मै.
डिमहा-सं., आँखिक भीतरक गोल अंग । मै.
डिँरियाएब-क्रि., १. मालक बाजब । २. विकल बौआएब । मै.
डिलगरि-विशे., उच्च आ उदार आकांक्षावाली स्त्री । मै.
डिहबार-विशे., डीहक हितकारी । ग्राम देवता । मै.
डिहली-विशे., डीह जकाँ उँचगर खेत । मै.
डिहार-विशे., पुरान डीहवाला भूमि । मै.
डिहुली-सं., छोट पक्षी । प्रयोग–"आ गै डिहुली सामा जाइ छै सासुर किछु गहनो चाहि गै डिहुली ।" (सामाक गीत) मै.

डी

डीङ मारब-क्रि., अपन प्रशंसा मे बढ़ि वाढ़ क' बात करब । भड़कताली देब । हि. तत्सम
डीङ हांकब-क्रि., असम्भवो बात कें क' लैक दाबी करब । मै.
डीङा बोझाइ-सं., लाभ-हानि कें अवधारि के काज करैक निश्चय । मै.
डीठ-सं., दृष्टि । सं. तद्भव
डील-सं., शरीरक पुष्टता एवं गठन । मै.
डीलडौँल-सं., बहारक विशेष आडम्बर । मै.
डीह-सं., बासस्थल, बसोबास । मै.
डीही-विशे., सनातन सँ एके डीह वा गामक वासी । प्रयोग–"भगिनमान ओ गेले छथि जे, डीही गौरव मानथि अपने ।" मै.

डु

डुग्गी-सं., पैघ मुह आ छोट पेनीवाला ढोलक आकारक तबला संग बजबैक संगीतक ताल दैवाला वाद्य । मै.
डुगडुगी-सं., राजकीय सूचनाक वाद्य । डंका । मै.
डुब्बा-सं., डूबैक स्थिति, डूबि डूबि कय नहाइक चेष्टा । डूबि मरैक वार्ता । मै.
डुबकी-सं., बारम्बार डूबिकय नहाइक व्यापार । डूबि कय पानिक भीतर छिपैक क्रिया । मै.
डुबकुनियाँ-सं., पानिक भीतर कतौ सँ कतौ डुबिये कय चल जाइक क्रिया एवं अभ्यास । मै.
डुबाएब-क्रि., १. पानि मे निमग्न कय देब । २. (लाक्षणिक) समाप्त क' देब । मै.
डुबाओ-विशे., डूबैक स्थितिवाला पानि । अथाह । मै.
डुम्मरि-सं., गुल्लरि वृक्ष । मै.
डुमरिकफूल होएब-क्रि., अदृश्य रहब । मै.

डू

डूब-सं., पानि मे निमग्न भ' क' स्नान । मै.
डूबब-क्रि., पानि मे निमुआन होएब । मै.
डूम-सं., देखू—"डूब" । मै.
डूमब-क्रि., पानि मे डूबि क' मरब । (लाक्षणिक) कोनो विषय मे निमग्न रहब । मै.

डे

डेओढ़-विशे., एकक संग आर आला मिलल । मै.
डेओढ़वाढ़-विशे., डेढ़ दिन पर लगैवाली महींस । बेरा बेरीक काज । मै.
डेओढ़ा-विशे., १. मूलधनक ढेढ़ गुना सूदिवाला ऋण । २. डेढ़वर वस्तु देला पर भेटैक वस्तु । ३. एक संग आर आधा मिलौला सँ बनल । मै.
डेकची-सं., गोल ठाढ़ फैलल मुहवाला रन्हा वर्तन । मै.

डेग-सं., १. चलैक चेष्टा। २. दूनू पैरक बीच चलैक काल बनल दूरीक मान। मै.

डेगहनब-क्रि., चलैक चेष्टा करब। मै.

डेगा डेगी-सं., नेन्नाक एक आध डेग चलैक चेष्टा। मै.

डेगार होएब-क्रि., तेजी सँ चलब। मै.

डेङाएब-क्रि., १. डाङ सँ मारब। २. डाङ सँ चोट-दय अन्न झारब। मै.

डेङी-सं., नाओक छोट प्रभेद। मै.

डेङौनिहार-विशे., डाङ मारनिहार। डाङ सँ अन्न झारनिहार। मै.

डेढ़-विशे., एक आ आधा। एक एकबटे आधा। मै.

डेढ़बराह्-विशे., एकटा छोट आ एकटा पैघ। बेमेल। मै.

डेढ़बा-सं., छोट माछक समूह। मै.

डेढ़हत्थी-सं., छोटका मोटका लाठी। मै.

डेढ़ही-विशे., डेढ़वर अन्नक बदला एकवर वस्तु। मै.

डेढ़ाडौढ़-विशे., डेढ़ दिन पर होइक रीतिवाला। मै.

डेढ़िया-विशे., डेढ़ दोबर। मै.

डेढ़ी-सं., काजक विस्तार। मै.

डेन-सं., बाँहिक जड़ि। मै.

डेनबाह्-विशे., सहायता करैवाला। बाँहि पुरैवाला। मै.

डेबब-क्रि., १. व्यवस्थित जकाँ निर्वाह करब। २. कठोरता सँ नियम पालन करब। मै.

डेबा-सं., नियमक पालन। मनौतीक निर्वाह। मै.

डेबाएब-क्रि., व्यवस्था सँ निमाहब। नियमक पालन कराएब। मै.

डेमता-सं., १. बड़प्पनक दाबी। २. कुल गौरव रक्षाक फूसि आ पतिकरनी करब। मै.

डेमसतीले-अव्यय, निरपेक्षता आ कोनो वस्तुक तुच्छता द्योतक शब्द। मै.

डेर-विशे., भिन्न-भिन्न दिशा मे दूनू आँखिक पुतली-वाला। मै.

डेरबुक-विशे., अधिक डर रखैवाला। मै.

डेरा-सं., १. अस्थायी निवास। २. अवान्तर कौलिक महत्ता। मै.

डेराएब-क्रि., १. डर करब। २. डर पैसाएब। मै.

डेराओन-विशे., भयावह, डर उत्पन्न करैवाला। मै.

डेरान-सं., अत्यन्त डरक क्रम। मै.

डेराह्-विशे., डर भरल। मै.

डेरौआ-विशे., डेरबैवाला। मै.

डेरौना-विशे., केवल डर देनिहार। प्रयोग—"उजरा मेघ मे मामू हो मामू, करिया मेघ डेरौना।" मै.

डेली-सं., माछ रखैक बाँसक बीनल गोलाकार वासन। मै.

डेलीखोङी-सं., (लाक्षणिक) अपन नित्य व्यवहारक आवश्यक वस्तुक सब सामग्री। मै.

डो

डोकहर-सं., मछखौका पैघ पक्षी विशेष। मै.

डोकहा-सं., सूगरक बच्चा। मै.

डोका-सं., बड़का घोंघा बरसाती छोटका जलजीव। मै.

डोङनी-सं., केबाड़ मे ठोकल हथकल पैसबैक चौकठि मे ठोकल यन्त्र। मै.

डोंड़ा-सं., अधिक नाम आ चाकर कम गहींर खेत। मै.

डोभनि-सं., सस्य रोपल खेत मे घास उखाड़ैक प्रक्रिया। मै.

डोभब-क्रि., खेत कें घास उखाड़ि स्वच्छ करब। मै.

डोभी-सं., खेतक घास विशेष। मै.

डोम-सं., सब सँ पैघ हरिजन। प्राचीन कालक निम्नतम जाति। चाण्डाल। मै.

डोमकछ-सं., स्त्रीगणक परिहास पूर्वक खेलमय नृत्य विशेष। मै.

डोमरा/डोमा-विशे., डोम शब्दें व्यवहारवाला। मै.

डोमा डिगरी उठाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ हेतु डोम जकाँ गरजि क' छबाछटि लगाएब। मै.

डोमासी-सं., डोम जातिक बस्ती। मै.

डोमिन-सं., डोमक स्त्री जाति। मै.

डोमौ-विशे., डोमक योग्य वस्तु, डोमक निर्मित वासन। मै.

डोर-सं., भावना मय आकर्षण। मै.

डोरा-सं., ताग (मोटगर)। मै.

डोरि-सं., १. डोरी तानि बनाओल टङनी। २. यातायात मे मनोनुकूल स्थान। मै.

डोरिगर-विशे., आबर जातक अनुकूल । मै.

डोरिया-विशे., डोरा जकाँ रंग विरंगक रेखा सँ भरल । मै.

डोरियाएब-क्रि., १. डोरी पकड़ि नेने जाएब । २. (लाक्षणिक) वाट धराएब । ३. दिग्दर्शन करैत त' जाएब । ४. अपन मत मे आनब । मै.

डोरी-सं., सावे आ आनो पदार्थ कें गुनदय कें दू वा अतिरिक्तो भत्ता कें एक बना बन्धनक वस्तु । रज्जु । मै.

डोल-सं., इनार सँ जल बहार करैक आ जल रखैक द्रव्यक पात्र । मै.

डोलडाल-सं., पेट साफ करैक क्रिया । मै.

डोलब-क्रि., बारम्बार निराधार मे एम्हर ओम्हर होएब । मै.

डोलमडोल-विशे., अस्थिरता सँ हिलैत रहैवाला । मै.

डोलाएब-क्रि., अस्थिरता सँ हिलाएब । कँपाएब । मै.

डोली-सं., सवारी, स्त्री सवार भरल कहारक द्वारा महलधरि ल' जाइक वस्तु । मै.

डोलौआ-विशे., हरदम डोलैत रहैक स्वभाववाला । मै.

डोह-सं., निचरस खेतवाला चौर (बाध) । मै.

डौ

डौआएब-क्रि., लक्ष्यहीन निरर्थक एम्हर सँ ओम्हर बौआएब । मै.

ढ

ढक्कन-सं., १. यन्त्रक कोनो अंग मूनैक वस्तु । २. कोनो डिब्बा आ वर्तनक मुह बन्न करैक वस्तु । मै.

ढक-विशे. १. कोनो यन्त्रक पेंच ढील भेला पर हिल डोल करैवाला यन्त्र । २. अनबूझ मूर्ख । मै.

ढकढक-सं. शून्य डिब्बा मे कोनो वस्तुक चोट पड़ने विशेष शब्द आ कसल नहि रहने हिलब डोलब । मै.

ढकढकाएब-क्रि., ढकढक शब्द करब । प्रयोग-"आइ भोरे रामू केबाड़ ढकढकाएब चालू कयलनि ।" मै.

ढकढियारब/ढङढियारब-क्रि., कोनो वस्तु कें तकैत तकैत सब वस्तु कें उधेसब । मै.

ढकढोल-विशे., उचित सँ वेशी पैघ । अनादर योग्य व्यक्ति । वे सम्हार । मै.

ढँकना-सं., सरवाक आकारवाला पैघ माटिक वासन । वर्तन वासनक मुह झँपैवाला । मै.

ढकपेंच-सं., कोनो प्रकारें जुगुति । मै.

ढँकब-क्रि., ढँकना (झँपनी) सँ वासनक मुह आ ओढ़ना सँ अपन वा आनक मुह कें झाँपब मै.

ढकर ढकर-अव्यय, बन्द वस्तुक भीतर थोड़ वस्तुक डोलैला सँ शब्द । तथा यान्त्रिक वस्तुक (कलक) मन्दगति आ तेज शब्द । मै.

ढँकसब-क्रि., हहूती जकाँ मुह में ठुँसने जाएब । मै.

ढकहा-विशे., १. अनेर अधिक बात गढ़निहार । २. ढकवाला यन्त्र । मै.

ढकिया-सं., बाँसक बीनल पैघ पथिया । मै.

ढकोसब-सं., १. अनेक वेर खेलो पर खाएब । २. अपन बहादुरीक फूसिबखान करब । मै.

ढकोसला-सं., अपन स्वार्थक हेतु मनगढन्त बात । मै.

ढंग-सं., शैली, लूरि, व्यवहार । मै.

ढङगर-विशे., लूरिवाला । मै.

ढङौला-विशे., नाना प्रकारक ढंग धरैवाला । मै.

ढट्ठा-सं., १. बाँस सँ बनाओल घेरा । २. धोतीक आधा कें लपेटिकय बन्हैक प्रक्रिया । मै.

ढट्ठा मारब-क्रि., आधा धोती कें डाँर मे लपेटि पहिरब । मै.

ढठाएब-क्रि., धीरें धीरें निर्भीक बनब । मै.

ढठियाएब-क्रि., कोनो काज मे धीरें धीरें प्रवृत्त होएब । प्रयोग-"बच्चा पाठशाला मे पढ़ै लिखैले ढठियाएल अछि ।" मै.

ढड्ढर-सं., कोनो आलेख (चिट्ठी पत्री) क विस्तृत आकार । मै.

ढड़कब-क्रि., १. द्रवणशील पदार्थक हठात् वासन सँ बहब । २. लेऊँच स्थान मे वेग सँ नीचाँ दिश ससरब । मै.

ढड़का-सं., उतार, ढार । ढालू । मै.

ढड़काह-विशे., ससरि खसैवाला । एक दिश अधोगामी स्थान । मै.

ढड़हा-सं. १. बाँसक पातर बातीक बीनल अन्न रखैक पैघ वासन । २. बड़का पत्र । मै.

ढड़ाएब-क्रि., गाछ वृक्ष एवं फसिलक उचित सँ वेशी बढ़ि जाएब । मै.

ढड़ैया-विशे., १. थोड़ दिनक हेतु भेनिहार । प्रयोग-"झुङनीक लत्ती ढढ़ैया होइ छै । एकै मास मे समाप्त ।" २. एकै व्यक्ति पर प्रसन्न भ' क' खूब भरैवाला । मै.

ढढौ-विशे., शरीर नाप सँ अधिक पैघ होम'वाला अंगा टोपी। मै.

ढनका-विशे., १. गढ़ि गढ़ि गप्प हाँकनिहार। २. ढन ढन शब्द सँ अधो वायु छोड़निहार। मै.

ढनकाएब-क्रि., शब्दसहित अधोवायुक त्याग करब। मै.

ढनढन-अव्यय, ढोलक शब्द। मै.

ढनढनाएब-क्रि., १. मेघक गम्भीर शब्द करब। २. शून्यता भरल रहब। प्रयोग—"लोक वेत्रेक सब घर ढनढनाइत रहैत अछि।" मै.

ढनमन-विशे., अव्यवस्थित भ' क' छिड़ियाएल। मै.

ढनमनाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपें ओंघराएब। मै.

ढनमनाह-विशे., अनेर खसै पड़ैवाला। मै.

ढनमनी लागब-क्रि., बिन कारण उनटि पुनटि कय फूटि जाएब। अव्यवस्थित भ' क' खसि पड़ि जाएब। मै.

ढनाक द'-अव्यय, पैघ आ स्थूल वस्तुक अचानक खसैक शब्द। मै.

ढप द'-अव्यय, अचानक उपस्थित। मै.

ढब्बू-विशे., (लाक्षणिक) शरीर आ बुद्धिक कुरुप। मै.

ढब-सं., आकृतिक, छटा, चेहरा मोहरा, आकार प्रकार। मै.

ढबगर-विशे., उचित आकृतिवाला, सुन्दर रूप रंग-वाला। मै.

ढबक-सं., संकीर्ण स्थान मे पानिक जमाओ। मै.

ढबकब-क्रि., साकर स्थान मे आपत्ति रूपें पानि जमा होएब। मै.

ढबकाएब-क्रि., थोड़ थोड़ क' संकीर्ण स्थान मे द्रव पदार्थ के एकत्र करब। मै.

ढबकाह-विशे., पानि जमा होइक योग्य ऊँच स्थानक गहींर बनल। एकठा अनावश्यक ऊँच भेला सँ दोसरठा गहींर भ' गेनें पानि जमा होइ योग्य। मै.

ढबढब-अव्यय, १. फूल धातु पर चोट देला सँ उठै-वाला शब्द। २. स्थूल बिन्दुक प्रादुर्भाव आ पतन। प्रयोग—"हमरा दुखित पड़ल देखितैं बौआक आँखि मे ढबढब नोर भरि गेलैन।" मै.

ढबढबा कय-अव्यय, स्थूल बिन्दुक वेगपूर्ण भ' क'। मै.

ढरक-सं., ढार, अधोगामी स्थान। अधः गमन। मै.

ढरकब-क्रि., नीचाँ दिश जाइवाला स्थान मे अना-यास ससरब। मै.

ढरकाह-विशे., निम्न गामी भूमि मे अनायास ससरै वाला। मै.

ढरब-क्रि., १. प्रसन्नता सँ कृपापूर्ण होएब। २. शीतला रोगक (चेचकक) अनुकूल होएब। मै.

ढररा-सं., १. देहक छाल। २. विशेष शैली। ३. उचित क्रम। मै.

ढररा ओदरब-क्रि., आगि मे पाकि गेने सिद्ध चामक अलग भ' जाएब। मै.

ढरुआ-विशे., धातु कें गलाकय आ ढारि कय बना-ओल वर्तन। मै.

ढलढल-विशे., आडी आदि ढील वस्तु विशेष। मै.

ढलाइ-सं., सिमटी बालु आ कंकरीट मिलाकय कोठाक छतक निर्माण। मै.

ढलान-सं., अधोगामी भूमि। मै.

ढलै-सं., माछ विशेष। मै.

ढलैया-सं., मसाला कंकरीट जमाकय देवालक निर्माण। मै.

ढलौआ-विशे., सिमटी कंकरीट जमा क' बनल। मै.

ढहनाएब-क्रि., कोनो काज मे लागल नै रहला सँ अनेर द्वारें द्वारें घूमल फिरब। मै.

ढहब-क्रि., ध्वस्त होएब। (लाक्षणिक) अचानक पैघ शोक वा निराशा सँ शक्तिहीन बनब। मै.

ढहलेल-विशे., छओ पाँच नहि जाननिहार बूड़ि। मै.

ढहाएब-क्रि., ध्वंस कराएब। मै.

ढहु-सं., मूत्राशयक उपरका भाग। मै.

ढहुरी-विशे., आनक गर्भधारण करैवाली। मै.

ढहैत ढहैत-अव्यय, गाइक संग मैथुनक हेतु साँढ़ कें बजबैक शब्द। मै.

ढा

ढाँइ ढाँइ-अव्यय, पैघ ढोल ढाकक शब्द। मै.

ढाक-सं., पैध, गोल आ नाम ढोल, ढक्का। मै.

ढाकन-सं., वासनक मुह झँपैक उत्थर पैघ ढकना। मै.

ढाँकब-क्रि., वासनक मुह बन्न करब। मै.

ढाकी-सं., बाँसक कमचीक बीनल बड़का छिट्टा । मै.

ढाँच-सं., १. रेखाचित्र । २. ठट्ठर । ३. कंक मात्र । मै.

ढाठ-सं., १. घैरन, बाँस सँ बनाओल घेरा । २. (लाक्षणिक) बन्धन, निषेध । मै.

ढाठब-क्रि., रोक लगाएब, मना करब, मनाहीक नियम करब । मै.

ढाठी-सं., १. वंशानुगत स्वभाव । २. आचरण आ प्रकृति । मै.

ढाढ़-सं., बड़का ढड़हा । मै.

ढाढ़स-सं., १. बोल भरोस, आश्वासन, धैर्य आ ओलाविलम । २. आडम्बरक बात । प्रयोग—"ई हुनक ढाढ़स थिकनि जे बिना दही चूराक जलखै नै करै छी ।" मै.

ढाबा-सं., दोषक उद्घोषणाकय फुटबैक चेष्टा । मै.

ढाबा लगाएब-क्रि., फूसि बात गढ़ि एक दोसरा मे फूट कराएब । मै.

ढाबुस-सं., पैघ पीरा रंगक बेङ । मै.

ढार-विशे., ढालू, निम्नगामी भूमि । प्रयोग-"उतरा ढार, पुवाढार ।" मै.

ढारब-क्रि., १. धारा रूपें खसाएब । (द्रवणशील वस्तुक हेतु) २. (लाक्षणिक) एकै व्यक्ति पर प्रसन्न भ' क' खूब धन देब । मै.

ढाल-सं., १ .गेंड़ाक चामक बनल अस्त्र शस्त्रक चोट रोकैक साधन । २. निम्न गामी (विशे.) । मै.

ढालू-विशे., नीचाँ मुहक भूमि । मै.

ढाहब-क्रि., १. ऊँच भूमि कें तोड़ि कोड़ि चौरस करब । २. घर आ मकान कें तोड़ब, ध्वंस करब । मै.

ढाही-सं., माथक टक्कर । मै.

ढाही मारब-क्रि., माथ सँ माथ मे टक्कर दय लड़ब । मै.

ढि

ढिकरी-सं., छोट सँ छोट टुकरा ढेला, माटि पाथरक खण्ड । मै.

ढिठगर-विशे., धृष्ट स्वभाववाला । अधिक ढीठ । मै.

ढिठपनी-सं., निर्भयता, धृष्टता, प्रगलभता । मै.

ढिठाइ-सं., प्रौढ़ता, निडरपना । मै.

ढिठियाएब-क्रि., ढीठ बनाएब, संकोच आ भयहीन होएब । मै.

ढिढ़की-सं., कोही जकाँ उगल पेट । मै.

ढिढ़मदरा-विशे., स्वभाव सँ विशेष नमरल पेटवाला । स्त्री० ढिढ़मदरी । (गर्भवती) मै.

ढिढ़री-विशे., (अनादर मे) आन पुरुषक गर्भधारणा कयनिहारि । मै.

ढिढुकी-सं., खेत बीच उचाँस । मै.

ढिढुकाह-विशे., बीच बीच मे उँचगर रहैवाला । मै.

ढिन्ढा-सं., सामान्य उँचगर पेट । मै.

ढिप ढाप-सं., आकाश पाताल देखवैत भय आ आदङ्क बढ़बैक चेष्टा । मै.

ढिप देब-क्रि., ठकैक ध्येय सँ आकाश पाताल देखाएब । मै.

ढिबरी-सं., इजोत करैक लेल टेमी बारैवाला डिबिया । मै.

ढिमकी/ढिमरी-सं., स्वयं प्राकृतिक रूपें उगल छोट आ कठोर मांस ग्रन्थि आ सक्कत मूर्इ । मै.

ढिल्लौ/ढिली-सं., शिथिलता, मृदुता, मन्दता । मै.

ढिलीसिली-सं., शिथिलताक प्रवृत्ति । मै.

ढिलढिल-विशे., अत्यन्त शिथिल । मै.

ढिलढिलाह-विशे., अनवरत शिथिल रहैवाला । मै.

ढिलाइ-सं., मन्दता, निरपेक्षता । मै.

ढी

ढीठ-विशे., निडर, प्रगलभ । मै.

ढींढ़-सं., गर्भक द्वारें बढ़ल पेट । मै.

ढींढ़ा-सं., पैघ पेट । मै.

ढीमक-सं., कत्तौ स्वतः ऊँच आ कठोर भूमि । मै.

ढील-सं., माथक झोटकीक मेंही कीड़ी । विशे., शिथिल । लड़वर । मै.

ढु

ढुकना-विशे., बिना पुछारीक आ बिन अनुमति सोझे घर आङन मे चल जाइवाला । मै.

ढुकब-क्रि., अचानक आ बल सँ प्रवेश कए लेब । मै.

ढुकाएब-क्रि., बलपूर्वक पैसाएब । भीतर करब । मै.

ढुड्ढुर-विशे., साफ, स्वच्छ, चिक्कन । मै.

ढुनकब/ढुनकाएब-क्रि., अधो वायुक शब्द करब । मै.

ढुनका-विशे., अधिक काल अधो वायुक शब्द कय-निहार। मै.

ढुलगर-विशे., अधिक डाँट पत्ती भरल अन्न। मै.

ढुलाह-विशे., अधिक डाँट पत्तीवाला। मै.

ढू

ढूँढब-क्रि., अन्वेषण करब। ताकब। मै.

ढूँढ़िया पसारब-क्रि., कोनो वस्तुक अन्वेषणक क्रम मे सब वस्तु कें अव्यवस्थित करब। मै.

ढ़ूल-सं., डाँट आ पत्तीक ढेर। मै.

ढूसि-सं., माथा मे माथा लड़ाकय युद्ध। प्रयोग—"भोरक घाघस बकरीक ढूसि, सँ बहुक झगड़ा तीनू फूसि।" मै.

ढूह-सं., माटि आ पाथरक शृङ्ग जकाँ ऊँच भूमि। मै.

ढूहि-सं., ढूहि मे माथ सँ धक्का। माथक धक्का सँ युद्ध। मै.

ढे

ढे करब-क्रि., कण्ठ देने शब्द सहित वायुक उद्‌गार करब। उदान वायु बहार करब। मै.

ढेका-सं., धोती पहिरला सँ पाछू दिश खोंसल धोतीक छोर। मै.

ढेकार-सं., मुह देने पेट सँ वायुक निर्गम। मै.

ढेकी-सं., १. धान कुटैक गृह कार्यक कल। २. हरदिक बिन पीसल कन्द। मै.

ढेकुल-सं., बिन गोड़ावाला लोहक चदराक नमहर इनार सँ पानि खींचैक विशेष डोल। मै.

ढेङ-सं., छोट, मोट आ भारी लकड़ीक टुकड़ा। मै.

ढेङराएब-क्रि., अधिकताक द्वारें उपेक्षित होएब। मै.

ढेङी-सं., छोट, मोट आ गीरहवाला काठक खण्ड। मै.

ढेँढ़/ढेँढबा-विशे., ने नेन्ना ने चेतन अवस्थावाला। मै.

ढेँढ़ी-सं., मरुआ आदि फसिलक गुच्छावाला सीस। मै.

ढेनमा-विशे., अबोध बच्चा। स्त्री० ढेनमी। मै.

ढेप-सं., माटिक छोट गुठरी। मै.

ढेपगर-विशे., माटिक गोला सँ भरल। मै.

ढेपचेप-विशे., (अनादरक लाक्षणिक) तुच्छ, उपेक्षित। मै.

ढेपा-सं., ठोस माटिक वा ईंटा पाथरक फेंकैक योग्य गोला। मै.

ढेपाउजि-सं., ढेपा फेंकि मारि करैक अभ्यास वा मारि। मै.

ढेपियाएब-क्रि., ढेपा मारि कय भगाएब। मै.

ढेबा-सं., भेद करबैक ध्येय सँ निर्दोष के दोषी बनाएब। मै.

ढेबाहि-सं., एकक नीक अधलाह दोसरो वा आनो आन मे होइक क्रम। संक्रामण। मै.

ढेबाहि लागब-क्रि., क्रमशः कोनो प्रकृतिक पसरब। मै.

ढेर-सं., एकट्ठा कयल वस्तु। बहुत, समुदाय। मै.

ढेरियाएब-क्रि., समेटि कय एकट्ठा करब। मै.

ढेरी-सं., पुञ्ज, समूह, एकट्ठा। मै.

ढेलबाहि-सं., ढेला फेंकैक अथवा ढेपा सँ कोनो वस्तु कें मारैक अभ्यास वा प्रयास। मै.

ढेलमासु-सं., जोर सँ दूर ढेपा मारैक हेतु डोरी सँ बनाओल यन्त्र। मै.

ढेला-सं., मारैक (फेंकैक) जोग ठोस माटिक गुठरी। मै.

ढेँसब-क्रि., मालक उकासी करब। मै.

ढेँसर-सं., मरुआ आदि ढेंढीक सघन गुच्छा। मै.

ढेँसी-सं., मालक उकासी जकाँ सतत् मनुष्यक उकासी (कफक प्रकोप)। मै.

ढेहा-सं., चोट, वेग सँ विरुद्ध दिशाक वस्तु मे परस्पर आघात। मै.

ढेहियाएब-क्रि., (निन्दा मे) बिन प्रयोजन एम्हर ओम्हर कत्तौ बड़बड़ करैत बौआएब। मै.

ढेही-सं., अनेर गुड़कैक क्रम। मै.

ढेहु-सं., समुद्र आदिक बड़का तरङ्ग। मै.

ढो

ढोअब-क्रि., उठा उठाकय एक स्थान सँ दोसर स्थान पर पहुँचाएब। मै.

ढोंकब-क्रि., अविश्वसनीय बात कें बखानब। मै.

ढोकहा-विशे., अविश्वसनीय फूसि बात गढ़निहार। मै.

ढोका-सं., सड़कक कातक अस्थायी छोट छोट फूसक दोकान। विशे., बूड़िबक। मै.

ढोङ-सं., १. विशाल काठक खण्ड। २. कपट क्रिया। मै.

ढोङा-विशे., किछु कहला पर मुह मात्र तकैत रहै-वाला विशेष बूड़ि। देखू—"ठहक्का"। मै.

ढोङी-विशे., कपट क्रिया करै मे चतुर। मै.

ढोंढ़-सं., १. साँप विशेष। २. पैंघ नाभी। मै.

ढोंढ़हा/ढोढ़वा-विशे., बड़का टा बहार नमहर नाभी वाला। मै.

ढोंढ़ा-सं., बहार नमहर नाभी। मै.

ढोंढ़ी-सं., नाभी कुण्ड। मै.

ढोंढों करब-क्रि., कफक अधिकता सँ विकृत उकासी करब। मै.

ढोर-सं., माल जालक जेर। मै.

ढोल-सं., ताल मात्रावाला वाजन। चोट द' क' बजैवाला। मै.

ढोलक-सं., संगीतक ताल मात्रावाला वाद्य (नमहर वाद्य)। मै.

ढोलकी-सं., बाबाजी सभक वाजन। मै.

ढोलढाक-सं., पीठि क' बजबैवाला अनेक वाजन।

ढोल पीटब-क्रि., (लाक्षणिक) गुप्तो बात कें सगरे पसारि आएब, खोलि आएब। मै.

ढोलहो-सं., ढोल बजा बजाकय वार्ताक उद्घोष। मै.

ढोलाइ-सं., अनेक सामग्रीक एकठाँ सँ दोसर ठाम चढ़ा उतार, ल' जाएब आ ल' आनब। मै.

ढोलाएब-क्रि., ढोलाइ कराएब। मै.

ढोली-सं., पानक दू सै पातक एक मान। मै.

ढोही-विशे., विशेष प्रकारक बूड़ि। अनेर बिन बात बुझनो हँसनिहार। मै.

ढौ

ढौआ-सं., पाइ, कौड़ी, सिक्का। मै.

ढौआही-सं., छोट सँ छोट माप। आधुनिक ग्राम। मै.

ढौकी-सं., छोट सँ छोट करीन। मै.

ढौर-सं., पिठार वा चून सँ कयल उज्जर रंग। मै.

ढौरन-सं., उज्जर करैक प्रकार। मै.

ढौरब-क्रि., चून सँ वा पिठार सँ पोतब। मै.

ढौह-सं., देखू—"ढहु"। मै.



त वर्ग

त्रयोदशी-सं., पक्षक तेरहम तिथि । सं. तत्सम

त्राटक मुद्रा-सं., अधिक काल धरि एकटक सूर्य दिश तकैत रहैक योग साधना । सं. तत्सम

त्राण-सं., रक्षा, बचाओ । सं. तत्सम

त्रास-सं., १. भय । २. अनेक कारणें पियास । सं. तत्सम

त्राहि-क्रि., बचबैक प्रार्थना, रक्षा करू । सं. तत्सम

त्राहि मचब-क्रि., दलन सँ आ उत्पीड़न सँ आकुलता होएब । मै.

त्राहि त्राहि करब-क्रि., सम्भावित आपत्ति सँ बचै लेल ईश्वर सँ प्रार्थना करब । मै.

त्रिक विश्वे देब-सं., ब्रह्मा विष्णु महेशक समष्टि रूप । सं. तत्सम

त्रिकटु-सं., सूँठि, मरीच आ पीपरिक समान भागक मिश्रण । कफ मूलक व्याधि मे प्रयोग होइछ । सं. तत्सम

त्रिकालदर्शी-विशे., भूत भविष्य आ वर्तमान से तीनू कालक विषय बूझनिहार । सं. तत्सम

त्रिकूट-सं., लंकाक पर्वत विशेष । सं. तत्सम

त्रिगुण-सं., सत्त्व, रजस् आ तमस् ऐ तीनू गुणक समष्टि । स. तत्सम

त्रिताल-विशे., तीन तालक संगीत । सं. तत्सम

त्रिपटांग-विशे., कोनो प्रकारे नै गऽर धरैवाला । मै.

त्रिपिटक-सं., बौद्ध विद्वानक उपाधि । सं. तत्सम

त्रिपुर सुन्दरी-सं., देवी विशेष । मै.

त्रिफला-सं., हरीर, औरा बहेड़ाक समान भाग मे मिश्रित औषध । सं. तत्सम

त्रिबेणी-सं., तीन नदीक संगम स्थान । प्रयाग । सं. तत्सम

त्रिभङ्ग-सं., तीन स्थान मे टेढ़ स्थिति । (राधे श्याम) । सं. तत्सम

त्रिभुज-सं., तीन रेखाक द्वारा बनल कोण । गणित । सं. तत्सम

त्रिभुवन-सं., तीन भुवनक समष्टि । सं. तत्सम

त्रिमुहानी-सं., तीन रास्ताक समष्टि । मै.

त्रिया-सं., स्त्री जाति । मै.

त्रियाचरित-सं., स्त्री जातिक रहस्यमय आचरण । मै.

त्रिशूल-सं., महादेवक प्रसिद्ध अस्त्र । सं. तत्सम

त्रुटि-सं., दोष, कमी, हीनता । मै.

त्रेंटक-विशे., उटपटाङ, जटिलता सँ कठिनाह । मै.

तवञ्चाहञ्च-अव्यय, परस्पर वाग्युद्ध । झगड़ा । मै.

त-अव्यय, घृणा, अनादर, उपेक्षा द्योतक । प्रयोग-"त ओ बड़ बूड़ि छथि ।" मै.

तऽ-अव्यय, प्रश्नक पूरक । प्रयोग-"तऽ हमरा की कहै छी । हम चले जाउ तऽ ।" मै.

तँ-अव्यय, १. जँ शब्दक विधेयक । प्रयोग-"जँ तों लड़वें मीता । एहि युद्ध मे तँ हम नै जयवौं ।" २. यदि क अर्थ मे जँ शब्दक प्रयोग भेला पर ओकर पूरक । प्रयोग-"ओ हमरा सँ रुपैया मङता तँ हम की कहवनि ?" मै.

तऽऽ-अव्यय, उछ्वसित भेला पर । प्रयोग-"तऽऽ कोनहुना हिनका सँ पिण्ड छूटल ।" मै.

तक्कर-सं., वाद विवाद । मै.

तक्काहेरी-सं., ताकि हेरि कय कोनहुना निर्वाह । मै.

तक्की-सं., ताकि ताकि अनेक काज । मै.

तक्खा-सं., देवाल आदि मे बनाओल वस्तु रखैक स्थान । चक्का । मै.

तक्त-सं., चारू दिशक सम्पर्कवाला सुन्दर स्थान । मै.

तक्तपोस-सं., काठक पातर चीरा सँ बनल ऊँच खाट जकाँ सूतैक साधन । चौकी । उ. तत्सम

तक्था-सं., काठक नाम मोटाइ मे पातर चीरा । उ. तत्सम

तक्थी-सं., काठक छोट छोट चीरा । उ. तत्सम

तक्र-सं., नोन पानि सँ बनल दहीक घोर । सं. तत्सम

तक्षक-सं., प्रसिद्ध सर्प विशेष । सं. तत्सम

तक-अव्यय, पर्यन्त । मै.

तकड़ार-सं., झगड़ा पूर्वक विवाद । उ. तत्सम

तकने-अव्यय, ताकि कय, अन्वेषण कयने । मै.

तकबाएब-क्रि., १. अन्वेषण कराएब । २. देखाएब । ३. आँखि खोलाएब । मै.

तकबाक-अव्यय, तकैक, अन्वेषणीय । मै.

तकमीना-सं., देखभाल । मै.

तकर-सर्व., (निश्चयवाचक) ओ शब्दक सम्बन्धक रूप । मै.

तकरा-निश्चियवाचक सर्वनाम, कर्म कारक। मै.
तकाइ-सं., रक्षा करैक, तकैक बोनि। मै.
तकाएब-क्रि., अन्वेषण कराएब, देखाएब। मै.
तकिया-सं., सिरहौना, गेरुआ। हि. तत्सम
तकैक-विशे., देखू—"तकबाक"। मै.
तखनि/तखन-अव्यय, ओहि समय मे। मै.
तखनुक/तखनुका-विशे., ओहि समयक। मै.
तगड़-सं., फूल विशेष। मै.
तग्गी-सं., माछ मारैक यन्त्र विशेष। मै.
तगनाइ-सं., तगैक सीबैक काज। मै.
तगवा साँप-सं., तागसन पातर अधिक दाम साँप। मै.
तगबाएब-क्रि., अनका द्वारा तुराइ तोसक भराकय सियाएब। मै.
तगमा-सं., पुरस्कार स्वरूप धातुक पदक। मै.
तगाइ-सं., १. तगैक कार्यक्रम। २. तगैक पारिश्रमिक। मै.
तगान-सं., तगैक रूपन। मै.
तगारी-सं., दिबाल जोड़ै मे मसाला उठबैक बासन। मै.
तगेदा-सं., देल वस्तु के घुमबैक हेतु बारम्बार कहब। तवाहटि। तकाजा। उ. तद्भव
तङ-विशे., आकुल, दिक्क। मै.
तङङी-सं., कठिनता, आकुलता तथा चिन्तायुक्त व्यग्रता। मै.
तङतढ़या-सं., कोनो क्रियाक योजना मे सम्पूर्ण सामग्री। प्रयोग—"करीन लगबैक अछि तैं ओकर सब तङतढ़या नेने चल।" मै.
तङब-क्रि., कोनो काज करैक हेतु सब जोड़ जोड़ैक क्रिया करब। मै.
तङरा-सं., बीनैक वा पटबैक वा बनबैक सब साधन। मै.
तङार-सं., कोनो काज करैक एक एक साधन। मै.
तङोर-सं., रचना एवं उद्योगक सामग्रीक जोगाड़। मै.
तच्छ-विशे., अपच सँ फूलि सक्कत। मै.
तजब-क्रि., छोड़ब। त्यागब। मै.
तट-सं., किनार, कछेर। सं. तत्सम
तड़कब-क्रि., बिजलोता छिटकब। मै.
तड़क भड़क-सं., भड़कतालो, आडम्बर, देखाउट। मै.
तड़का-सं., काचक पैच गहता। ताटङ्क। छोट तड़को। मै.
तड़ख-सं., घरक चारू चारक चारू कोन पर दू चारक आधार करैक हेतु ठोस काठ वा बाँस। मै.
तड़गर-विशे., कड़ा, सोझ। मै.
तड़ंघब-क्रि., खेतक सुखाएब, सुखबै मे उचित सँ बेशी अन्नक सुखा जाएब। मै.
तड़ङब-क्रि., हठात् क्रोधक द्वारें हाथ पैर चलाएब मै.
तड़छेबा-सं., ताड़ी चुबवै ले ताड़ के छेबैक (कतरैक) अस्त्र विशेष। मै.
तड़ड़ब-क्रि., अनेर एकशरे तामसँ गरजब। मै.
तड़तड़-अव्यय, टूटैक कमक ध्वनि। मै.
तड़तड़ाएब-क्रि., टूटै सँ पहिले शब्द करब। मै.
तड़ द'-अव्यय, १. तुरन्त, लगले। २. एहि रूपक शब्द कय। मै.
तड़पनिहार-विशे., तड़पैक कलावाला। मै.
तड़पब-क्रि., बेलागि कूदि कय फानि जाएब। मै.
तड़पाएब-क्रि., बेलागि फनाएब। मै.
तड़फड़-अव्यय, अत्यन्त शीघ्र। मै.
तड़फड़ाएब-क्रि., अत्यन्त शीघ्रता सँ काज करब। मै.
तड़फड़िया-विशे., तड़फड़ काज क' लैवाला। मै.
तड़ाक द'-अव्यय, लगले ओही क्षण। मै.
तड़ाका-अव्यय, लगले पाछुए लागल। मै.
तड़ि चूबा-विशे., १. ताड़ी चूबि एकट्ठा होइवाला बासन लबनी। २. ताड़ी चुबबैवाला पासी। मै.
तड़िपत्र-सं., प्राचीन कालक लेखन करैक ताड़क पत्र, जाहि पर हस्तलिखित पुस्तक होइत छल। मै.
तड़िपीबा-विशे., अधिक ताड़ी पीबैक अभ्यासवाला। मै.
तत्काल-अव्यय, ओही समय। मै.
तत्त/तत्ते-अव्यय, ततेक। प्रयोग—"तत्त मारि मारब जे मुह फुला देब। तत्ते ने ओ कहऽ लगला जे अकच्छ भ' गेलौं।" मै.
तत्तथै-अव्यय, ताल मात्रावाला संगीतक तबला परक बोल। मै.
तत्पर-विशे., एकाग्र। सं. तत्सम

तत्त्व-सं., सार भाग, यथार्थता । सं. तत्सम

ततए-अव्यय, ताहि ठाम । ततय सेहो प्रयोग होइछ । मैं.

ततखनात-अव्यय, ओही क्षण । मैं.

ततयँ-अव्यय, तबला ढोलकक बोल । मैं.

ततनी/ततनें-अव्यय, ओहि थोड़ परिमाणक । मैं.

ततःपर-अव्यय, तदुपरान्त । सं. तत्सम

ततबर-विशे., ताहि अनुसार । मैं.

ततबा/ततबाक-अव्यय, ताहि परिमाणक । मैं.

ततबी/ततबें-अव्यय, ओतबेक परिमाण मे । मैं.

ततभविता-सं., संशयात्मक शोच । मैं.

ततमत-सं., तारतम्य, मनक आगू पाछ करब । मैं.

ततमताएब-क्रि., तारतम्य करब । मैं.

ततमा-सं., बुनकर जाति । स्त्री० ततमैनी । मैं.

ततहिं-अव्यय, ओही ठाम । मैं.

तताएब-क्रि., उचित सँ बेशी गरम होएब । मैं.

ततारब-क्रि., विशेष रूपक शुष्क सेक करब । मैं.

ततार लगाएब-क्रि., एक पाँती मे सब सँ सब के भिरा कय राखब । मैं.

तते/ततेक-अव्यय, ताहि परिमाणक । मैं.

ततै-अव्यय, ओही ठाम । मैं.

ततौ-अव्यय, ताहू ठाम । मैं.

तथ्य-सं., यथार्थता । सं. तत्सम

तथा-अव्यय, ओहिना, आर, ओहि प्रकार । सं. तत्सम

तथापि-अव्यय, तैओ, ओहू रूपें । सं. तत्सम

तथै-अव्यय, मृदङ्ग आदिक बोल । मैं.

तन्द्रा-सं., औंघी, अध निद्रा । सं. तत्सम

तन्देही-सं., तत्परता सँ सेवा, (उ.) हिफाजति । मैं.

तन्मुक-विशे., कोमल, बलहीन । मैं.

तन्मय-विशे., तल्लीन, एकाग्र । सं. तत्सम

तन-सं., शरीर, तनु । सं. तद्भव

तनकब-क्रि., चमड़ाक उपरी भाग पर विस्फोट जकाँ वेदना होएब । मैं.

तनकाह-विशे., चमड़ा पर वेदना देवाला । मैं.

तनकी-सं., चमड़ाक उपर वेदनाक विस्फोट । मैं.

तनखोधी-सं., छाताक कमानी मे छेद करैवाला अस्त्र । मैं.

तनतन-विशे., आन्तरिक विकार सँ भरल रहने कखनों विस्फोट करैवाला । फुटैवाला । मैं.

तनतनाएब-क्रि., आन्तरिक विकार सँ भरि गेने फुटैक स्थितिक वेदना होएब । मैं.

तनतनाह-विशे., लगले क्रोध मे तन तन करऽ लगैवाला । मैं.

तनतनी-सं., १. क्रोधक आवेग । २. उपर मुहक वेदना । मैं.

तननन-अव्यय, आलापक ध्वनि । मैं.

तनना-सं., कोनो वस्तु कें तनैक साधन । मैं.

तनब-क्रि., आवेश (जोश) मे आएब । मैं.

तनबाएब-क्रि., अनका द्वारा कोनो वस्तु विथारब, पसारब । मैं.

तनभगति-सं., शारीरिक एवं आर्थिक बल । मैं.

तनमन-सं., शरीर आ मनक संतुलन । तत्परता । मैं.

तना-सं., उपरक पसार (गाछक अर्थ मे) । मैं.

तनाइ-सं., कोनो वस्तु पसारैक वा विथारिकय काज करैक प्रक्रिया एवं तकर पारिश्रमिक । मैं.

तनाएब-क्रि., विथारैक वस्तु के रचना करैक लेल योजना रूपें अनका सँ विथारबाक साहाय्य लेब । मैं.

तनाओ-सं., दू पक्षक बीच विरोधक द्वारें संघर्षक स्थिति । मैं.

तनातनी-सं., दू पक्ष मे कखनो भिड़न्त होइक स्थिति । मैं.

तनिक-अव्यय, थोड़बेक । मैं.

तनिक-सर्व., सम्बन्ध कारकक रूप । हुनक । मैं.

तनिकर-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारक, हुनकर । मैं.

तनिकाँ-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनामक कर्म कारक, हुनका । मैं.

तनियें-अव्यय, कनेके । मैं.

तनीमनी-अव्यय, कनेक मनेक । मैं.

तनु-सं., शरीर । सं. तत्सम

तनुका-सं., देवताक रान्हल प्रसाद । मैं.

तप्त-विशे., गरम । सं. तत्सम

तप्पत-विशे., धीपल । सं. तद्भव

तप्पा-सं., चुल्हा पर चढ़ले पर सँ परसल भोजन । मैं.

तप-सं., १. तपस्या । २. धाह, गर्मी । सं. तत्सम

तपनाह-विशे., ताप सँ तुरन्त गरम तथा कठोर भ' जाइवाला । मैं.

तपब-क्रि., तपस्या करब, साधना मे कष्ट काटब। मै.

तपमरू-विशे., तापहीन। मै.

तपस्वी-विशे., तपस्या करैवाला। स्त्री० तपस्विनी। सं. तत्सम

तपसी-विशे., तापसी। तपस्या करैवाली। सं. तद्भव

तपाएब-क्रि., ताप भरब। गरम करब। मै.

तपेदिक-सं., राजयक्ष्मा रोग। मै.

तपेसरी-विशे., तपस्या मे लीन स्त्री। मै.

तब-अव्यय, तखन, ओकरबाद। हि. तत्सम

तऽऽब-सं., पसरल (उत्थर) लोहक छोट रोटी पकबैक वर्तन। मै.

तबक-सं., पानक स्वाद एवं सौन्दर्य्य बढ़बैवाला उपर सँ सटैवाला सोन चानी रंगक कोमल पत्र। मै.

तबकल-विशे., गरम भेल। मै.

तबधल-विशे., गरमाएल, (लाक्षणिक) व्यग्रता सँ भरल। मै.

तबब-क्रि., अत्यन्त गरम होएब। मै.

तबलहा-विशे., गरम बनल। मै.

तबला-सं., संगीतक बीच ताल भरैवाला दहिना वाद्य विशेष। मै.

तबाएब-क्रि., ताप सँ भरि जाएब। मै.

तबालची-विशे., तबला बजबै मे निपुण। मै.

तबाहटि-सं., व्यग्रता भरल मनक ताप। मै.

तम्मा-सं., मिथिला मे प्रचलित काठक बनल सिदहा नपैक नप्पा। पैली। मै.

तम्बुक-सं., अस्थायी कपड़ाक कृत्रिम घर। चलता फिरता घर। तम्बू। उ. तद्भव

तम-सं., अन्धकार। सं. तत्सम

तमकब-क्रि., एकाएक गरजि उठब। मै.

तमकुलाइन-विशे., (लाक्षणिक) तमाकूक गन्ध आ स्वाद जकाँ कटु एवं अरुचिकर वचन। मै.

तमगा-सं., सोझ कम चाकर तरुआरि जकाँ कटैवाला आ भोंकैवाला अस्त्र। मै.

तमघैल-सं., द्रव्यक बनल घैलक आकारक जलपात्र। मै.

तमञ्चा-सं., देखू—"तमगा"। मै.

तमठाएब-क्रि., अधिक सुखयने बरकि कय बैसल रसवाला अन्न होएब। मै.

तम तम करब/तमतमाएब-क्रि., आवेग मे प्रतिक्रिया करैक लेल उद्यत होएब। मै.

तमनो-सं., कोदारि सँ खेतक माटि कोड़ैक व्यापार। मै.

तमसगीर-विशे., तमासा देखनिहार। उ. तत्सम

तमसाएब-क्रि., क्रोध करब। मै.

तमसाह-विशे., झटदय क्रोध मे अबैवाला। सतत तमसाएल प्रकृतिवाला। मै.

तमहा-विशे., तम्मा सँ नापि कय देल धानक कुट्टी मे तम्मै सँ देल चूरा। लट्टावाला चूरा। मै.

तमाइ-सं., खेत तमैक काज। मै.

तमाइन-विशे., १. तामक रस सँ विकृत। २. तमैक प्रकार। ३. तमबैक बोनि। मै.

तमाओन-सं., खेत तमैक बोनि। मै.

तमाकू-सं., कड़ू स्वादवाला पातक रस। खैनी। मै.

तमाचा-सं., अत्यन्त जोर सँ थापड़क मारि। मै.

तमादी-विशे., अवधि बितने नियम नै लगैवाला। उ. तत्सम

तमाल-सं., उपवनक वनस्पति विशेष। मै.

तमासा-सं., कौतुक, दृश्य। उ. तत्सम

तमाह-विशे., तामक रंग आ स्वादवाला। मै.

तमिआ-सं., तामक बनाओल पैघ जलपात्र। मै.

तमेचा-सं., देखू—"तमाचा"। मै.

तमोलि-सं., पानक व्यवसायी जाति। स्त्री० तमोलिन। मै.

तमौठ-विशे., तामल खेत। मै.

तमौर-सं., सितार वीणा आदि वाद्यक निचला तुम्मा। मै.

तर्क-सं., युक्ति। सं. तत्सम

तर्पण-सं., पितरक उद्देश्य मे जलाञ्जलि। सं. तत्सम

तर-सं., १. भीतरक अदृश्य स्थल आ निम्न प्रदेश। २. आर्द्र, सरस। मै.

तऽऽर-विशे., अत्यधिक रूपें तृप्त। प्रयोग—"एँः की कहू भोज मे मधुरक लेल तँ तऽऽर कय देलक।" मै.

तरउपरा-सं., एकै सँ नीचाँ सँ उपर धरि झँपैवाला वस्त्र। शाड़ी, मौगीक वस्त्र पहिरैक प्रक्रिया। मै.

तरक-विशे., नीचाँ दिश समतल रहैवाला बेटक संग अस्त्र । मै.

तरक-सं., १. प्रभात काल । २. तर्क । ३. बड़द कें दोसर आँतर पकड़ैक आदेश आओ 'तरक' । मै.

तरकछ-सं., तर मे पहिरैवाला कच्छा, जंघिया । मै.

तरकट-सं., तर मे जमल दही वा अन्य पदार्थक शेष भाग । विकार । मै.

तरकठ-सं., उपर सँ बाकल छूटलाक उपरान्त बचल काठक सारिल भाग । मै.

तर कऽ देब-क्रि., सरसता देब, आनन्दित कऽ देब आ तोपि देब । मै.

तरका-विशे., तर मे रहैवाला । मै.

तरकारी-सं., व्यञ्जन । मै.

तरख-सं., कोन पर दू चारक मिलान कय तानल रखैवाला बीचौक तानैवाला नम्मा नमहर काठ वा बाँस । विशे., अधिक तानल । मै.

तरखब-क्रि., थोड़ेक सुखाएब । मै.

तरखाएब-क्रि., सुखाएब । मै.

तरखाह-विशे., सुखाएल । मै.

तरघुसकी-विशे., तरैं तर अर्थात् भीतरैं भीतर चुप्पैचाप पाओल द्रव्य । मै.

तरङ्ग-सं., आवेग, पानिक ढेउ, हिलकोर । सं. तत्सम

तरङब-क्रि., सूखि गेनें जोतंक अयोग्य खेत । मै.

तरङाएब-क्रि., सुखाएल बनाएब । मै.

तरङाह-विशे., बात कें बिना विचारनें कोधक लेल कूदि उठैवाला । मै.

तरछन-सं., रहि रहि पेट मे भोंकैक सन दर्द । मै.

तरछब-क्रि., रहि रहि पेट मे भोंकैक सन दर्द होएब । मै.

तरछा-सं.,तराजूक भिन्न भिन्न पलड़ा । मै.

तरछाएब-क्रि., एक रंग कय अलग करब । मै.

तरनि-सं. तारण, भरण, अपन अवस्था सँ अधिक नीक अवस्था । प्रयोग—"कृष्ण तँ सुदामा कें तरनि क' देलथीन ।" मै.

तरनिहारि-विशे., तरैक वस्तु कें घी वा तेल मे तरैवाली । मै.

तरनी-सं., नाओ । सं. तद्भव

तरपट-सं., बीच, अन्तर, विभेद । मै.

तरपन-सं., देखू—"तर्पण" । सं. तद्भव

तरपब-क्रि., १. उत्कण्ठित होएब उद्वेग होयब । २. कूदि जाएब । मै.

तरपाएब-क्रि., अधिक उद्विग्न आ पीड़ित करब । मै.

तरपेसकी-सं., चुपचाप कयल चेष्टा । मै.

तरपौआ-विशे., उत्कण्ठा बढ़ा कय दुख देनिहार । मै.

तरब-क्रि., १. तेल वा घी मे भोज्य वस्तु सिद्ध करब । छानब । २. मुगति पाएब । मै.

तरब-क्रि., पार उतरब । मै.

तरबतर-विशे., अधिक बहुल देहक द्रव सँ भीजल । मै.

तरबा-सं., पैरक निचला सपाट भाग । मै.

तरबातारू-सं., देहक सम्पूर्ण सेवा । मै.

तरबा मलब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक खुशामद करब । मै.

तरबैया-विशे., पार उतारैवाला । तरैवाला । मै.

तरबोरा-सं., तिरछल उगल इन्द्रधनुष । मै.

तरल-विशे., १. अस्थिर । २. तेल घीक छानल । सं. तत्सम/मै.

तरलम-अव्यय, सैनिकक प्रस्थानक वाद्य ध्वनि । मै.

तरलहा-विशे., तरलवाला खाद्य पदार्थ । मै.

तरस-सं., लालसा सँ उत्कण्ठा सँ बनल आशाक बिना पूर्तियें उपजल व्यथा । मै.

तरसब-क्रि., लालसा सँ बनल आशाक पूर्तिक बिना पीड़ा उत्पन्न होएब । मै.

तरसाएब-क्रि., आशा बढ़ा कय लालसा बनाकय पूर्ण बिना कयने व्यथा बढ़ाएब । मै.

तरसाह-विशे., लमले कोनो वस्तु लें तरसि जाइक स्वभाववाला । मै.

तरहट्टी-सं., पहाड़ आदिक नीचाँ दिशुक क्षेत्र । मै.

तरहत्थी-सं. हाथक निचला चिक्कन भाग जाहि मे मुट्ठी बान्हल जा सकैत अछि । मै.

तरहरा-सं., धरतीक भीतर बनल सुरक्षित स्थान । मै.

तरहा-सं., घोड़ाक पीठ परक आसन (जीन) मे बिचला धँसल भाग । मै.

तराइ-सं., कोनो ऊँच स्थानक नीचाँ समतल प्रदेश। मै.

तराउपरी-सं., तर उपर भ' क' रहैक आ रखैक प्रक्रिया। मै.

तराएब-क्रि., पार उतरबाएब, तरकारी तराएब। मै.

तराजू-सं., कोनो वस्तु तौलैक साधन वा यन्त्र। मै.

तराटक-सं., आश्चर्य, डर आदि सँ ज्ञान शून्य भेला सन्ताँ दृष्टिक स्थिरता। मै.

तराटक लगाएब-क्रि., तपस्याक साधना मे देवताक उपर एकाग्र दृष्टि बनाएब।अपलक दृष्टि राखब। मै.

तराठी-सं., तर दिशुक भाग। मै.

तरातरी-अव्यय, लगातार। तुरन्ते तुरन्त। मै.

तरान-सं., तरेक विस्तृत काज। मै.

तराबोर-विशे., उपर नीचाँ सबतरि भरल तथा जल सँ डूबल। मै.

तराय-सं., ताड़क पातक बीनल चटाइ। मै.

तरास-सं., १. डर। २. पियास। ३. छेदैक, कतरैक, छीलैक आ खतैक प्रक्रिया। मै.

तरासब-क्रि., छेदब, काटब, खतब आ कतरब। मै.

तरासनि-सं., छेदैक, कटैक आ छीलैक काज। मै.

तरिआएब-क्रि., १. नीचाँ मे जड़ि बैसाएब। २. (लाक्षणिक) धन जमा भ' जाएब। मै.

तरिऔटा-विशे., नार पोआर आदिक टालक तर मे जड़ि बैसबै योग्य वस्तु। मै.

तरी-विशे., कोनो वस्तुक सुरक्षा ले तर मे दैक वस्तु। मै.

तऽरी-सं., टाल आ देवाल आदिक सक्कत जड़ि तथा धरती सँ दृढ़ सम्बन्ध। मै.

तरीघट्टी-सं., आन्तरिक बात आ व्यवहार। मै.

तरुआ-विशे., तरि क' बनल तरकारी। मै.

तरुआरि-सं., खाँड़ (तलवार) तखारि। सं. तद्भव

तरुण-विशे., युवक, जोआन। सं. तत्सम

तरुवन-सं., गाछी, वनस्पति विशेष। मै.

तरेगन-सं., तारागण, नक्षत्र मण्डल। सं. तद्भव

तरेठ-विशे., तर मे धरैक योग्य। मै.

तरेरब-क्रि., आँखि कड़ाकय देखब। मै.

तरेरा-सं., बन्सीक डोर मे बान्हल फोंकिला काठी, बन्सी मे माछ फँसैक बोध करबैक वस्तु। मै.

तरैं-सं., देखू—"तराय"। मै.

तरैन-विशे., परम्परा सँ घटल कें भरल कयल। मै.

तरोटा-सं., १. तर मे पहिरैक वस्त्र अथवा नीचाँक वस्त्र। २. कोनो वस्तुक पेनी। मै.

तरौठ-विशे., तऽर मे रहैवाला। होइवाला। मै.

तल्ला-सं., १. गुप्त आधार, कोनो वस्तुक नीचाँक अंश। २. जूताक नीचाँक अंश। मै.

तल्ली-सं., १. कर्ण फूल आदि गहनाक फोंफी बन्न कय कान आदि मे अड़बैक धातुक सक्कत कील। २. निचला अंश। मै.

तल-सं., आधारक नीचाँ अदृश्य स्थान। मै.

तलका-विशे., कनेके हर्ष विषाद मे मन कें उड़ा दैवाला अर्थात् अलगल बुद्धिवाला। मै.

तलतल-अव्यय, कोनो विशेष यात्रा वा दृश्यक अवसर पर विशेष उत्कण्ठा। मै.

तलना-सं., सेवा आ सेवाक संग उचित व्यवहारक निर्देश। मै.

तलबल-अव्यय, चञ्चल चेष्टा। मै.

तलमलाएब-क्रि., अपना भरें चलबा मे खसैक संभावना रहब। मै.

तलय-सं., आन्तरिक आशय। मै.

तलाओ-सं.,१. पैघ (विस्तृत आ कृत्रिम) जलाशय। तालाब। २. अन्तर्भूमि। हि. तद्भव

तलिया/तली-सं., देखू—"तल्ली"। तरका भाग। मै.

तसफीस-सं., आपसी समझौता, निर्णयात्मक सामञ्जस्य। मै.

तसबाहि-सं., तास खेलाइक निरन्तरता। मै.

तसवीर-सं., रूपक छाया। चित्र। मै.

तसमै-सं., खीर, पायस, दूध मे रान्हल चाउर। मै.

तसर-सं., विशेष प्रकारक रेसमी वस्त्र। हि. तत्सम

तसला-सं., विशेष आकार प्रकारक भात रन्हैक हेतु धातुक अत्यन्त पैघ वर्तन। मै.

तसली-सं., तसला सँ छोट सँ छोट वर्तन। मै.

तह-सं., पसारै योग्य मृदु वस्तु कें सुन्दर ढंगें सरियाएल मोड़ पर मोड़ आ मोड़ि क' बिछबैक प्रक्रिया। मै.

तहखाना-सं., घरक भीतर भूमिगत गुप्त स्थान। उ. तत्सम

तहतहाएब-क्रि., रोब आ व्यग्रता सँ भरल अगुताएब। मै.
तहदर्ज-विशे., व्यवहाररहित नवीन वस्तु। मै.
तहब-क्रि., एक पर एक सरिया क' पसरल वस्तु राखब। मै.
तहस नहस-विशे., ध्वस्त, ध्वंस भेला सँ अस्त व्यस्त। उ. तत्सम
तहाँ-अव्यय, ओहि ठाम। लगले। मै.
तहाएब-क्रि., तह लगाएब। मै.
तहाड़ी-सं., अगुताहटिक संग आवश्यकता। मै.
तहात-अव्यय, पर्यन्त, तावत्। मै.
तँहि-अव्यय, तहिना, तहिँखन। मै.
तहिना-अव्यय, ताही रूपेँ, तथा। मै.
तहिया-अव्यय, ताहि समय मे। मै.
तहियाएब-क्रि., तहेँ तहेँ अर्थात् एक पर एक सरिया क' बैसाएब। मै.

ता

ता-अव्यय, तावत्। मै.
ताइ-सं., माटि आ द्रव्यक वासन सँ अतिरिक्त बनल दही पौड़ैक वासन। मै.
ताँइत-सं., जीवक स्नायु सँ बनल सूत डोरी। मै.
ताई-विशे., पितियानि, दही पौड़ैक पैंघ वासन। हि. तत्सम
ताओ-सं., ताप, धौंक, ज्वाला। आवेश। मै.
ताक-सं., १. तर्क। २. कोनो क्रियाक उचित अवसर। ३. प्रतीक्षा। प्रयोग-१. "अनको मनक ताक कय किछु करैक चाही।" २. "ताक पर खेती कयने उचित लाभ भ' सकै छै।" ३. "हम तँ फल प्रकाशक ताक मे छी।" मै.
ताकनि-सं., ओगरबाहि। सावधानी सँ सतत रक्षाक भार। मै.
ताकब-क्रि., १. रक्षा करब। २. आँखि खोलि कय देखब। ३. अन्वेषण करब। मै.
ताकहेर-सं., खोज पुछारी, खरोसाक सावधानी। मै.
ताकाहेरी-सं., आवश्यकताक पूर्ति ले अभाव मे व्यग्रता। मै.
ताकुत-सं., १. तर्कैक चेष्टा। २. रक्षा करैक संग सेवा। मै.
ता के-अव्यय, ओकर। प्रयोग-"कुमारि भोजन ताके दही, चूरा, चीनी आदि भोजन सामग्री। वस्त्र आ दक्षिणा।" मै.
ताख-सं., देखू—"तकखा तथा चक्का"। मै.
ताखी-सं., नेत्रा सभक वा चेतनौक जड़ीदार कड़गर आधा माथ झँपैवाला मुसलमानी ढंगक टोपी। उ./मै.
ताग-सं., मेँही डोरा। मै.
तागति-सं., दैहिक वल, ताकत। उ. तद्भव
तागनि-सं., तुराइ आदि ताग सँ सीबि नथैक प्रक्रिया। मै.
तागब-क्रि., ताग सँ सीबि कय तुराइ तोसक आदि नाथब। मै.
ताड्ब-क्रि., असमय मे क्षीण होएब। मै.
ताड्र-विशे., असमय मे अत्यन्त क्षीण। मै.
ताङा-सं., जीवक द्वारा चलैक योग्य गाड़ी। बैलगाड़ी वा घोड़ागाड़ी (टमटम)। मै.
ताज-सं., मुसलमानी ढंगक विशेष प्रकारक सामन्ती टोपी। मुकुट। उ. तत्सम
ताजी-विशे., तेजगर आ विशेष रोइयाँवाला कुत्ता। मै.
ताटङ्क-सं., कानक गहना विशेष। सं. तत्सम
ताड़-सं., १. ताड़क गाछ एवं फल आदि। २. अनेक काज कर्त्तव्यता एक संग सम्पन्न करैक तत्काल आवश्यकता। मै.
ताड़कुन-सं., ताड़ फलक भीतरक गुद्दा मै.
ताड़नि-सं., डाँटि डपटि कय अनुशासनक शिक्षा। मै.
ताड़ब-क्रि., डाँट डपट करब। मै.
ताड़ी-सं., ताड़क गाछ सँ चुबाओल द्रव। मै.
ताड़ीखाना-सं., ताड़ी बिकाइक स्थान। मै.
ताण्डव-सं. विकट अंग चालनवाला नृत्य। सं. तत्सम
तात्पर्य्य-सं., आशय, अभिप्राय। सं. तत्सम
तात-विशे., प्रिय श्रेष्ठ वा कनिष्ठ (पिता वा पुत्र) क सम्बोधन। सं. तद्भव
तातल-विशे., अत्यन्त तप्पत। प्रयोग-"तातल सैकत वारि बिन्दु सम...... ... ...।"—विद्यापति। मै.

तांति-सं., देखू—"तांइत"। मै.
ताँती-सं., सूत सँ वस्त्र बीनैवाला जाति विशेष। मै.
तान-सं., १. संगीत स्वरक प्रस्तार। एक श्रुति मे अनेक ग्राम। २. कोनो वस्तुक पसार। ३. जोर सँ खींचि तनैक प्रक्रिया। मै.
तानन-सं., तनैक रूपरेखा। मै.
तानपूरा-सं., गवैयाक उत्कृष्ट वाद्य। बड़का वीणा। मै.
तानब-क्रि., खींचिकय कड़ा बनबैत पसारब। मै.
तान मारब-क्रि., उग्रता सँ कोनो वस्तुक खोभाटनि (तगेदा) करब। मै.
ताना-सं., १. कोनो वस्तु (पटिया आ वस्त्र आदि सन) बीनैक पसारल कल पुर्जा। २. करचा। मै.
तानाबाना-सं., बीनैक हेतु सब सामग्री। मै.
ताना मारब-क्रि., व्यंग्य सँ हार्दिक मर्म पर चोट करब। मै.
तानी-सं., १. जनौ आदि तागक अभग्न लम्बाइ। २. लम्बाइ मे तानल बीनैक वस्तु। मै.
ताप-सं., ज्वाला, गरमी। सं. तत्सम
तापनि-सं., तापलैक विधि वा प्रकार। मै.
तापब-क्रि., ताओ लेब, धाह सँ जाड़ कें रोकब। मै.
ता पर-अव्यय, ताहि पर, तै पर। मै.
तापस-विशे., तपस्या कयनिहार। सं. तत्सम
ताबरतोड़-अव्यय, लगले लागल, निरन्तर। मै.
ताबा-सं., रोटी पकबैक माटिक तव। मै.
ताबे-अव्यय, तावत् काल। मै.
ताम-सं., अष्ट धातु मे धातु विशेष। मै.
तामठ-विशे., सकताएल (चूरा चाउर)। मै.
तामड़-विशे., सरस खेत कें जोतला सँ माटि सुखयला पर सक्कत भेल। मै.
तामदान-सं., सामन्ती युगक चारि कहार सँ उठाओल जाइवाला कुर्सीसन पुरुषक सवारी। मै.
तामरस-सं., रसायन (ताम्र भस्म) औषध विशेष। मै.
तामस-सं., खीस, कोध। मै.
तामा-सं., १. काठ कें खोधि कय खोल जकाँ गोलाकार बनाओल अन्नक नपना, पैली। २. मण्डप आदि विना धरनिवाला चौचारा घरक चारू कोन वाला तरख पैसबैक बीच मे छेद कयल गोल काठ। मै.
तामा मानब-क्रि., धैर्य राखब। समयक हेतु प्रतीक्षा करब। मै.
तामि-सं., प्राचीन कालक समय सूचक यन्त्र विशेष। मै.
तार-सं., १. मेहीं लोहक ताग। २. चीनी आदि पदार्थ कें गाढ़ कयला पर लाड़नि सँ खसैत काल अभग्न पातर रूप। मै.
तारक-विशे., तारण करैवाला। उद्धारक। सं. तद्भव
तारका-सं., तरेगन। सं. तद्भव
तारतम-सं., मनक आगाँ पाछाँ होइक भाव। संकल्प विकल्प। तारतम्य। सं. तद्भव
तार तार होएब-क्रि., रत्ती रत्ती काटब, भाङब। मै.
तारनि-विशे.,१. उद्धार करैवाली। सं., २. खौलैत पानि में द' क' अन्न कें मृदु करैक कार्यक्रम। मै.
तारब-क्रि., १. उद्धार करब। २. खोलैत पानि मे द' क' अन्न कें कोमल बनाएब। मै.
तार बजरब-क्रि., तुरन्त अनेक काज पुरबैक वा सम्पन्न करैक स्थिति होएब। मै.
तारभुज-सं., सुस्वाद पँघ आ लत्ती मे फड़ैवाला बैशाखी फल। मै.
तारमतोर-अव्यय, एक पर एक विभिन्न क्रिया। मै.
तारा-सं., तरेगन, नक्षत्र, देवी विशेष। सं. तत्सम
ताराचानी-सं., उज्ज्वल तरेगन आ चन्द्रमाक रहने आकाशक स्वच्छता। मै.
तारिका-विशे., १. तारण करैवाली। २. चलचित्रक अभिनेत्री। सं. तत्सम
तारिख-सं., दिनांक, तिथि। उ. तत्सम
तारु-सं., तालु। मुहक एक अंग। सं. तद्भव
तारुमान करब-क्रि., व्यर्थ वस्तु सब कें एम्हर सँ ओम्हर करैत रहब। मै.
ताल-सं., १. पोखरि। २. संगीतक मात्राक प्रतीक मृदंग वा ढोलकक ध्वनि। ३. विचित्रता। मै.
ताल करब-क्रि., असम्भव एवं व्यवहारहीन वा अनुपयुक्त बातें लोक कें अबका बबका लगाएब। विचित्रिता करब। मै.
ताल ठोकब-क्रि., मल्ल युद्धक हेतु जांघ पर चाटी मारि ललकारा देब। मै.

तालतलबा मचब-क्रि., कनेके, एकै छन मे संकटक भय सँ व्याकुल भ' क' हल्ला एवं व्यग्रता होएब। मै.

तालता-सं., सेवा वरदासि, देखरेख। मै.

ताल देब-क्रि., १. संगीत मे मात्राक ध्वनि करब। २. (लाक्षणिक) कोनो नीक वा अधलाह काज मे ककरौ योग द' क' बढ़ाएब। मै.

तालब-क्रि., हाथ सँ ताल द' क' अबोध बच्चा के अंग चालन करबैक वा नचबैक विनोद करब। मै.

तालबाल करब-क्रि., विचित्र अभिनय सँ विभिन्न चेष्टा कय लोक कें घबरा देब वा विस्मय मे द' दैक कपट करब। मै.

ताल मचब-क्रि., अकस्मात् घबराहटिक विचित्र परिस्थिति भ' जाएब। विकट स्थिति होएब। मै.

ताल मचाएब-क्रि., अपन मनोनुकूल नै भेला स' स्थिति कें विकट बनाएब। मै.

तालमाल करब-क्रि., आडम्बर सँ विधान आ विन्यास करब। मै.

ताल लागब-क्रि., विचित्र स्थिति उत्पन्न होएब। मै.

ताला-सं., कोनो वस्तु कें सुरक्षित कय बन्न करैक यन्त्र। यन्त्रिका। मै.

ताली-सं., ताला खोलैक पेंच। कुञ्जी। विशे., विचित्रता करै मे निपुण। मै.

ताली देब-क्रि., १. हँसी उड़ाएब। २. प्रोत्साहन करब। मै.

ताली पीटब/ताली बजाएब-क्रि., दू हाथ कें जोर सँ मिला के प्रोत्साहनक ध्वनि करब। मै.

तालीश-सं., औषध विशेष। मै.

तालु-सं., देखू—"तारु"। सं. तत्सम

तालेवर-विशे., अधिक धनवान। मै.

तावत्-अव्यय, देखू—"ताबे"। सं. तत्सम

तास-सं., खेलाइक बाबन पत्ती। मै.

तासा-सं., लड़ाइक उत्साहवाला बाजा। मै.

ताहि-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनाम, ओहि। मै.

ताहू-उपर्युक्त सर्वनाम पर जोर दैक शब्द। ओकरौ। मै.

ति

तिअ-सं., स्त्री। मै.

तिक्कत-विशे., तिक्त, तीत (रस विशेष)। सं. तद्भव

तिक्खर-विशे., तेज, कड़कड़ौआ, कड़ा। मै.

तिकड़म-सं., प्रपञ्च, षड्यन्त्र। पेंच, ढकपेंच। हि. तत्सम

तिकड़मबाज-विशे., प्रपञ्ची, ढकपेंच कयनिहार। हि. तत्सम

तिग्गी-सं., तासक तीन चिह्नवाला पत्ती। मै.

तितका-विशे., तीत रसवाला। मै.

तितपड़ली-सं., बनैया लत्तीक छोट अखाद्य फल। मै.

तित भाइंट-सं., छोट गाछक वनस्पति। मै.

तितलाह-विशे., तीतल (भीजल) सन लगैवाला। मै.

तितालाहा-विशे., भीजलवाला। मै.

तिताइ-सं., तीत रसक विशेषता। मै.

तिताइन-सं., तीत जकाँ स्वाद। मै.

तिताएब-क्रि., कोनो वस्तु कें पानि सँ भिजाएब। आर्द्र बनाएब। मै.

तिताह-विशे., तीत स्वादवाला। मै.

तितीर-सं., पक्षि विशेष। मै.

तितुआ-सं., १. शिशुक कण्ठ लगक रोग विशेष। लबलबी लग जीह मे मांस वृद्धि भ' गेने बच्चा कें बजैक क्षमता नष्ट करैवाला रोग। २. विशेष घास। मै.

तिथि-सं., चन्द्रमाक गतिक अनुसार दिनक नाम परीव, द्वितीया, तृतीया आदि। मै.

तिग्ना-विशे., त्रिगुण, तेगुना, तिया। मै.

तिनक/तिनकर-निश्चयवाचक परोक्षवृत्ती सर्वनाम, "ओ" शब्दक सम्बन्ध कारकक रूप। मै.

तिनका-सर्वनाम, "ओ" शब्दक कर्मक रूप। मै.

तिनगुना-विशे., तेगुना, तीनवर। मै.

तिनतसिया खेलाएब-क्रि., अन्हरजाली द' क' ठकि लेब। मै.

तिनपढ़िया-विशे., तीन पाढ़िवाली शाड़ी। मै.

तिन पहिया-विशे., तीन पहियावाला गाड़ी, बच्चाक लरौना गाड़ी। मै.

तिनपेरिया-विशे., तीन बाटवाला स्थान। मै.
तिनपै-सं., तीन पाओवाला मान। मै.
तिनफसिला-विशे., वर्ष मे तीन उपजा दैवाला खेत, तीन बेर फड़ैवाला आम। मै.
तीना तीन/तिनिया तीन-सं., एकाइक खाँत मे तीनकाँ पढ़ैक पहिल अंक शब्द। मै.
तिमनचीखा-विशे., कत्तौ स्थिर नै रहि घरे घरे थोड़ समय ले रहनिहार। मै.
तिमिंगिल-सं., दीर्घाकार समुद्री माछ। (एकर रूप संस्कृत मे एना वर्णित अछि) अस्ति मत्सस्तिमिर्नाम शतयोजन विस्तरः, तिमिंगिल गिलोऽप्यस्ति तद्गि-लोऽप्यस्ति राघवः। सं. तत्सम
तिमिर-सं., अन्धकार। सं. तत्सम
तिया-सं., कोनो अंकक तेगुना केर संकेत। मै.
तियापच्चा-सं., सेवा वर्दासि, सेवा शुश्रूषा। मै.
तिर्री-सं., तानीक सूत पर भरनीक नरी घुरबै-वाला। मै.
तिरकिट धा-सं., ढोलक आदि तालक बोल। मै.
तिरंगा-विशे., तीन रंगवाला, भारतीय झंडा। मै.
तिरछट-विशे., स्वच्छताक संग एक रूपवाला। मै.
तिरछब-क्रि., छनहि एक दिश छनहि दोसर दिश झुकि झुकि अर्थात् कैर भ' क' गति होएब। मै.
तिरछा-विशे., एक दिश झुकल सन। मै.
तिरछाएब-क्रि., एक दिश झुकल सन बनाएब। मै.
तिरछाह-विशे., एक दिश कैर अर्थात् झुकल। मै.
तिरछी काटब-क्रि., भगैत रहैक क्रमे टेढ़ गतियें जाएब। मै.
तिरटब-क्रि., एक गऽर छोड़ि दोसर गऽरें होएब। मै.
तिरटाएब-क्रि., एक गऽर सँ दोसर गऽर धराएब। मै.
तिरपट-विशे., ऐंठि क' एक दिश ढाल आ दोसर दिश ऊँच भ' क' वे उरेब। मै.
तिरपटाङ-विशे., बेमेल, विचित्र आचरण सँ कठिन करैवाला। मै.
तिरपटाह-विशे., टेढ़ टूढ़ बनि गेल। मै.
तिरपन-सं., पाँच दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तिरपित-विशे., तृप्त, अघाएल। सं. तद्भव
तिरलट-विशे., तरङ्गक विशेषण जेकर शिखर उठि टेढ़ रहैछ। मै.
तिरसठि-सं., छऽ दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तिरहुत-सं., मिथिला प्रदेश। मै.
तिरहुता-सं., तिरहुतक लिपि, मिथिलाक्षर। मै.
तिरहुताम-सं., तिरहुतक व्यवहार विचार। मै.
तिरहुतिया-विशे., तिरहुत मे होम'वाला, रहैवाला, मैथिल। मै.
तिराएब-क्रि., वृद्धि होएब, स्थितिक अनुरूप होएब। मै.
तिरानबे-संख्या, नौ दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तिरिया-सं., स्त्री जाति। मै.
तिल्ली-सं., दियासलाइक काठीक मसालावाला अगिला भाग। मै.
तिल-सं., एक सूक्ष्म आ पवित्रतम अन्न विशेष। मै.
तिलक-सं., १. कपाड़ मे चाननक चिह्न, ठोप। २. वैवाहिक व्यवस्था करैक प्रक्रिया। मै.
तिलकतरी-सं., अन्न सँ बनल तिल मिलल मधुर। मै.
तिलकब-क्रि., क्रमशः फसिलक पाक आरम्भ होएब। मै.
तिलकाएब-क्रि., १. चानन लगाएब। २. विशेष व्यवस्था सँ वर कें छेंकि राखब। मै.
तिलकुट-सं., गया तीर्थक विशेष प्रसिद्ध मधुर। मै.
तिलकोर-सं., मिथिलाक प्रसिद्ध तरुआ तरकारी। ऐ नामक लत्तीक पात के पिठार लगा क' तरल बड़। मै.
तिलबा-सं., १. देह पर तिलक चिह्न। २. तिल सँ बनल मधुर खाद्य। मै.
तिलमिलाएब-क्रि., घुरमल जकाँ होएब। मै.
तिलसर-विशे., एकोद्दिष्ट मे तिल आ दूध मात्र दय पितरक बिना व्यञ्जनक भोजन। मै.
तिला-सं., तिलक आकार आ रंगक मांस वृद्धि। मै.
तिलाञ्जलि-सं., मृत व्यक्ति कें देम'वाला अर्घ। सं. तत्सम/मै.
तिला सँकराँति-सं., मकर संक्रान्ति। मै.
तिलिया-सं., तिलक रंग आ आकारवाला चेन्ह। मै.

तिलिया फुलिया-सं., तिल आ फूलक कयल निखार। मै.

तिलोरि-विशे., एकाँ एकी, बेराबेरी। मै.

तिलौड़ी-सं., तिल मिलाकय बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी। मै.

तिसियौटा-सं., १. तीसी फुला क' बनाओल लसिगर पदार्थ। २. तीसीक डाँट। मै.

तिसियौड़ी-सं., तीसी सँ बनाओल रौद पक्कू बड़ी। मै.

तिहार-सं., त्योहार, पर्व, पावनि, उत्सव। हि. तद्भव

ती

तीआ-विशे., त्रिगुण, तीन गुना (तीन तीआ नौ)। मै.

तीख-विशे., तीक्ष्ण, तेज। सं. तद्भव

तीज-सं., तृतीया तिथि मे होम'वाला पर्व। हरि-ताली आदि। तृतीया तिथि। मै.

तीत-सं., तिक्त रस, अनाकर्षक रस। मै.

तीतब-क्रि., पानि सँ आर्द्र होएब। भीजब। मै.

ती ती ती-अव्यय, पक्षी कें बजबैक शब्द। मै.

तीन-सं., एक अंकक तेसर अंक।तीन एकाँइक अंक। मै.

तीन तेरह करब-क्रि., बल सँ (स्वार्थ राखि) पर-गोत्री आ देयादी सम्बन्ध जोड़ब। मै.

तीव्र-विशे., तेज। सं. तत्सम

तीमन-सं., रसदार (लटपटी) व्यञ्जन। मै.

तीया-सं., सेवा। विशे., तेगुना। मै.

तीर्थ-सं., देव साधनाक पवित्र स्थान। सं. तत्सम

तीर-सं., वाण, शर। मै.

तीर-सं., किनार, तट। सं. तत्सम

तीर फिरब-क्रि., बिजुरी जकाँ मस्तिष्क मे छिटकि कय ज्ञानशून्य होएब। मै.

तीरब-क्रि., नमराकय खींचब। मै.

तीरा-सं., सामयिक फूल विशेष। मै.

तीला-सं., कृत्रिम बनाओल मुहक तिल। मै.

तीस-सं., तीन दहाँइ शून्य एकाँइक अंक। मै.

तीसाँ-विशे., तीसक लगभग बैसवाला। मै.

तीसी-सं., १. तेलहन विशेष। विशे., २. तीस वर्षक बैस। ३. पूसक जाड़। (बीसी तीसी मकर पचीसी) मै.

तु

तुअ-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्ध कारक, तोहर। प्रयोग—"हन हन कर तुअ काता।" —विद्यापति। मै.

तुआएब-क्रि., अनायास खसाएब। मै.

तुइँत-सं., कोमल आ छिम्मरिसन फल विशेष। मै.

तुइन-सं., वनस्पति विशेष, फल विशेष। मै.

तुक-सं., परस्पर मेल। पद्यक अन्तिम चरण सभक समानता। मै.

तुकबन्दी-सं., पद्यक चरणक अन्तिम शब्दक दोसर चरणक अन्तिम शब्दक संग मेल करबैत रचना प्रकार। मै.

तुच्छ-विशे., अत्यन्त हीन, हल्लुक, नगण्य। सं. तत्सम

तुतना-सं., कण्ठ सँ स्वर बहराइक यन्त्रवाला अंगक वृद्धि। मै.

तुतीया-सं., रसायन द्रव्य विशेष। मै.

तुन्न-विशे., मुह फुलल। मै.

तुन्न होएब-क्रि., मुह फुलौने मात्र सँ क्रोध प्रकट करब। मै.

तुनकब-क्रि., कनेकै मे मनैमन क्रोधित भ' जाएब। मै.

तुनक बुद्धि-विशे., भीतरैं भीतर बिगड़ि जाइक बुद्धिवाला। मै.

तुम्मा-सं., अत्यन्त विस्तृत आशयवाला फूलल पेट-वाला वासन। सुखाएल सजमनिक फोंक। मै.

तुम्मी-सं., शरीर सँ लेहू खीचैवाला यन्त्र। मै.

तुमरी-सं., फूलल पेटवाला साधारण आ छोट सन बाजा, सारंगी। साधु सभक बाजा। मै.

तुमौड़ा-सं., गोल मोल फूलल मोटरी, वासन आ पेट आदि। मै.

तुर्छ-विशे., तुर्क, विजातीय रंग घातक भेल खिसि-एल। मै.

तुरछब-क्रि., विशेष रूपक बिगड़ब, तमसाएब। मै.

तुरन्त-अव्यय, अत्यन्त शीघ्र। मै.

तुरभरा-विशे., तूर भरल प्राचीन कालक अंगा। ओढ़न। मै.

तुरही-सं., शंख जकाँ ध्वनि करैवाला विशेष बाजा। मै.
तुराइ-सं., तूर भरल ओढ़ना, शीरक, रजाइ। मै.
तुरिया-विशे., एकसन वैसक संगी। सहचर। मै.
तुरुक-विशे., तुर्क जातिक लोक, तुर्क। उ. तद्भव
तुरुछाह-विशे., विशेष रूपें तमसाइवाला। मै.
तुरुम-सं., पोथी आदि विशेष भारी वस्तु रखैवाला बड़का बड़का बकसा। मै.
तुरौरा-सं., तूर भरल छोट बच्चाक छोट गद्दी। मै.
तुल-विशे., समान, सदृश, एकरंग। स. तत्सम
तुल-सं., प्रस्तुत। राशि विशेष। मै.
तुलना-सं., उपमा, समानता, मिलान। सं. तत्सम
तुलब-क्रि., उद्यत होएब। प्रस्तुत रहब। मै.
तुलसी-सं., औषध विशेष सं. तत्सम
तुला-सं., तराजू। तौलैक वासन। सं. तत्सम
तुलाएब-क्रि., प्रस्तुत होएब। वृत्त रहब। प्रयोग— "दामिनि आबि तुलाएल रे।" —विद्यापति। मै.
तुलादान-सं., तुला पर चढ़ि अपन बराबरि वस्तुक दान। मै.
तुलिया-सं., चित्र बनबैक हेतु बनल छोट कुच्ची। मै.
तुष्ट-विशे., तृप्त, अघाएल। सं. तत्सम
तुषार-सं., पाला, बर्फ, ओस कण। सं. तत्सम
तुसारी-सं., मकर संक्रान्ति सँ एक मासधरि प्रभात काल मे कुमारि कन्याक गौरी पूजन। मै.

तू

तूअब-क्रि., बिना कोनो कारण गाछ सँ अपनै फड़क झरि झरि खसब। नक्षत्रक प्रवेश समयक कम सम वर्षा भ' क' अशुभ लक्षण होएब। मै.
तूनब-क्रि., सट्टल तूर कें नोचि नोचि अलग करब। मै.
तूमब-क्रि., बाङ (तूरक) फड़क फाँक सँ तूर छोड़ा कय पीर बनबैक हेतु पातर करब। मै.
तूर-सं., कपास, कार्पास, रुई, तूल। सं. तद्भव
तूर-विशे., एक वयसवाला। मै.
तूल करब-क्रि., अपना मत पर लाएब। प्रस्तुत करब। मै.
तूस-सं., टूस, विशेष प्रकारक ऊनी ओढ़ना। अं. तद्भव

तृ

तृण-सं., घास, दूभि। सं. तत्सम
तृतीय-विशे., तेसर। सं. तत्सम
तृतीया-सं., पक्षक तेसर तिथि। सं. तत्सम
तृप्त-विशे., अघाएल। सं. तत्सम
तृप्ति-सं., अघान, मनक भरब। सं. तत्सम
तृष्णा-सं., कामनाक विस्तार। सं. तत्सम
तृषा-सं., पियास, इच्छाक शाखा प्रशाखा। सं. तत्सम

ते

तें-अव्यय, ओहि कारणें। मै.
तेआगब-क्रि., छोड़ि देब। वर्जित करब। मै.
तेकट-सं., तीन दिशुक आपत्ति तथा काजक संकट। मै.
तेकठ-सं., तीन संख्याक अशुभ वस्तु। मै.
तेकठी-सं., १. करीन ठाढ़ करै में तीन बाँसक द्वारा आधार बनबैक सामग्री। तीन बाँसक आधार सामग्री। २. प्रेतक अर्घक तीन काठी। मै.
तेकमियाँ-विशे., तीन कामि (आधारवाला काठी) सँ बनल। तीन नोकवाला अस्त्र। मै.
तेकर-निश्चयवाचक सर्वनाम 'से' शब्दक सम्बन्ध कारकक रूप। मै.
तेकरा-निश्चयवाचक सर्वनाम 'से' शब्दक कर्मक रूप। मै.
तेकुना-सं., व्यञ्जन योग्य स्थूल कन्द। मै.
तेकुरी-सं., तेसर अंश। मै.
तेकुशा-सं., तीन कुशक समूह। मै.
तेख-सं., आनि भरल क्रोध। मै.
तेखार-सं., एकहि बेर एके खेतक तीन जोत। मै.
तेखारब-क्रि., (लाक्षणिक) दबल बात कें खोधि खोधि उघारब। खेत कें तीन चास करब। मै.
तेखी-सं., आनि भरल क्रोधक प्रकृति। मै.
तेखुर-सं., त्रिक्षुर, औषधिस्वरूप पौष्टिक। मै.
तेंगा-सं., गुप्ती, छड़ीक भीतर घातक अस्त्र। मै.
तेगार-सं., तीन ठाम करीन लगौने पटवैक जोगाड़। मै.
तेगुर-विशे., तीन रहस्यमय काज। मै.
तेगुना-विशे., तीन गुना, तेवर। मै.
तेगुनियाँ-विशे., तीन गुन (भत्ता) वाला डोरी। मै.

तेङा-सं., तृतीय यात्रा । मै.

तेज-सं., प्रकाश । विशे., तीव्र । मै.

तेज करब-क्रि., पिजाएब, चोख बनाएब, शान चढ़ाएब । तीव्र बनाएब, बढाएब । मै

तेजगर-विशे., अधिक तीव्र बुद्धिवाला, विशेष शीघ्र कटैक योग्य पातर धारवाला अस्त्र । झटकल गति । मै.

तेजपात-सं., मसालाक सुगन्धित पात । मै.

तेजब-क्रि., १. तेज बनाएब, तीव्र बनाएब । २. त्याग करब । मै.

तेजबल-सं., काँटवाला छड़ीक योग्य मोट बनैया लत्तीक काठ । मै.

तेजाब-सं., तीक्ष्ण (जलनशील) द्रव । मै.

तेजी-सं., तीव्रता, बुद्धिक प्रखरता । मै.

तेठठ-सं., तीन विभिन्न स्थान परक घर । मै.

तेढ़ी-सं., परम्परागत कुलाभिमान । मै.

तेतर-विशे., १. तीन बेटी पर जनमल बेटा । प्रयोग- "तेतरि बेटी शीतलि तेतर बेटा बाँतर ।" २. तीन खुदरा सँ उठैवाला पचीसीक गोटी । मै.

तेतरि-सं., इमली (खटाइ) । मै.

तेतलिया-सं., बैलगाड़ीक विशेष अंग । मै.

तेताढ़-सं., बनैया घास । मै.

तेताला-विशे., तीन तालवाला गीत । मै.

तेना-अव्यय, तथा, ताहि प्रकारें । मै.

तेनु-सं., वनस्पति विशेष । मै.

तेनुआँ-सं., बाघक आकार एवं प्रकृतिवाला बाघ सँ छोट हिंसक पशु । मै.

तेपख-विशे., तीन पक्षक अवधि में होम'वाला । मै.

तेपटा-सं., तीन भाग मे कयल एक भाग । मै.

तेपत्ती-विशे., तीन पत्तीवाला गाछ । मै.

तेफसिला-विशे., तीन फसिल उपजैवाला खेत । मै.

तेबखा-सं., उड़ीद, केलाइ । मै.

तेबर-विशे., १. तीन गुनवाला । सं., २. विरोधी क्रोधी भावक द्वारें उग्रता । मै.

तेबराएब-क्रि., तीन गुन बनाएब । मै.

तेबारा-अव्यय, तीन बेर होम'वाला एके काज । मै.

तेबासि-विशे., तीन तीन साँझक रान्हल पुरान । मै.

तेमहर-अव्यय, ताहि दिश । मै.

तेमाही-विशे., तीन मासक अवधि मे होम'वाला । मै.

तेरस-सं., त्रयोदशी । मै.

तेरह-संख्या, एक दहाँइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेरहम-विशे., पूरणार्थक विशेषण, तेरह संख्या मे पड़ैवाला । मै.

तेरहम विद्या-सं., (लाक्षणिक) मारि, पिटाइ । मै.

तेरहा-विशे., तेरह दिन पर श्राद्धक रीतिवाला । मै.

तेरही-सं., १. तेरह दिन पर श्राद्धक अवसान । २. तेरह पुरुषाक प्रति उलहन । मै.

तेरानबे-संख्या, नौ दहाँइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेरासी-संख्या, आठ दहाँइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेल-सं., स्निग्ध द्रव पदार्थ । मै.

तेलकसँ-सं., तेल आ कसँ कोनो विवाह सम्बन्धी काज मे पठाओल जाइवाला विधि । मै.

तेल खरि-सं., तेलक संग खरि कें मृतक के उत्सर्ग करैक विधि । मै.

तेलगर-विशे., तेल भरल, तेल मिलाओल । मै.

तेलचट्टा-सं., १. मेहीं कीड़ा, दंशक जीव । २. तेल सँ मैल । मै.

तेलचिट्ठ-विशे., तेलक द्वारें चिटचिट करैवाला । मै.

तेलचिटाह-विशे., तेल सँ चिटचिट लगैवाला । मै.

तेलट-सं., तीन घरक सामञ्जस्य सँ कन्या वरक आदान प्रदान । मै.

तेलबोरा-विशे., तेल मे डुबा क' रखैवाला एवं रहैवाला । मै.

तेल मरीच-सं., तेल मे मरीच मिला क' परसौतीक खाइक औषध । मै.

तेलहन-सं., तेल उत्पन्न करैवाला अन्न । मै.

तेलही-विशे., तेल मे छानल पकवान, मधुर । मै.

तेलाइन-विशे., तेल लागल तथा तेलक स्वादवाला । मै.

तेलाएब-क्रि., तेल मे भिजाएब आ तेल मे मिलाएब । मै.

तेलाढ़ि-सं., पोखरि झाँखरिक पसरैवाला घास विशेष । मै.

तेलाह-विशे., तेल भरल, तेल मिलल । मै.

तेलि-सं., तेल पेरैक व्यवसायी जाति । मै.

तेलि बभना-विशे., तेलि जातिक पुरोहिती करैवाला ब्राह्मण। मै.
तेलियारी-सं. तेलि जातिक बस्ती, टोल। मै.
तेलिया सांप-सं., पातर चाली जकाँ छोट साँप। मै.
तेलियाह-विशे., (लाक्षणिक) अत्यधिक कृपण, उचितो खर्च सँ कतराइवाला। मै.
तेली-विशे., तेलि जातिवाला। स्त्री० तेलिन। मै.
तेसञ्झा-विशे., तीन लोकक साझीवाला। मै.
तेसर-विशे., तीन संख्यावाला। मै.
तेसारि-विशे., तीन फसिलवाला खेत। मै.
तेहइआ-विशे., तीन दिन पर अबैवाला ज्वर आदि। मै.
तेहट-विशे., अलग अलग तीन स्थानक काज। मै.
तेहत्तरि-संख्या, सात दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तेहन-सं., तीन प्रकारक अन्नक समुदाय। (खेत मे)। मै.
तेहन-अव्यय, ओहिना, ओहेन, ओहि प्रकारक। मै.
तेहना-विशे., ताहि प्रकारवाला। मै.
तेहनी-विशे., ताहि प्रकारक स्त्री। मै.
तेहरा-सं., एक आँच सँ तीनटा वर्तन मे पाक होइक हेतु तीन पुता (मुह) वाला भूमि मे कोड़ल चुलहा। मै.
तेहराएब-क्रि., कोनो काज कें तीन बेर सँ शुद्ध वा सम्पन्न करब। मै.
तेहराओन-सं., जे काज एकै बेरें सम्भव रहए तीन बेरें तकरा करैक पड़ने काजक वृद्धि। मै.
तेहराठ-सं., एकैठाँ सँ भ' सकैवाला काजक हेतु तीन तीन ठाम सँ होइक सम्भावना। मै.
तेहराइ-विशे., तीन बेर लगने भेनिहार। मै.
तेहल्ला-विशे., निरपेक्ष तेसर लोक। मै.
तेहाइ-विशे., तीन भाग सँ एक भाग। मै.
तेहियाएब-क्रि., देखू—"तहियाएब"। मै.
तेहैया-विशे., देखू—"तेहइआ"। मै.

तै

तै-निश्चयवाचक सर्वनामक अव्यय ताहि। प्रयोग—"जै गाम मे मुर्गा नै बाजय तै गाम मे प्रात नै होए की।" मै.
तैं-अव्यय, ताहि हेतु। ओहि ले। मै.
तैं-सं., निर्णय, फरिछौट। तय। प्रयोग—"कथा तैं (तय) भ' गेल किने।" मै.
तैओ-अव्यय, तथापि, तदपि, तहुखन। मै.
तैंतालीस-संख्या, चारि दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तैंतीस-संख्या, तीन दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तैलाङ्ग-सं., आन्ध्रप्रदेश। तैलङ्ग। सं. तत्सम
तैंस-संख्या, दू दहाँइ तीन एकाँइक अंक। मै.
तैँस-सं., स्वाभिमान सँ उत्पन्न क्रोध। हि. तत्सम

तो

तों-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्त्ता—सुनैवाला समकक्ष अनादरणीय व्यक्ति। मै.
तोख-सं., मन रखैक चेष्टा। मै.
तोड़-सं., १. तोड़ैक सीमा। २. बीच मे क्रियाक तथा गतिक मन्दता। मै.
तोड़ खाएब-क्रि., बीच बीच मे रुकि जाएब। मै.
तोड़नि-सं., तोड़ैक क्रम। मै.
तोड़ब-क्रि., कथुक गाछ सँ फल फूल आ पत्ती कें अलग करब। मै.
तोड़ लागब-क्रि., अन्त होएब। समाप्त होएब। मै.
तोड़ा-विशे., तोड़ैवाला। मै.
तोड़ा-सं., कसिकय भरल मोटा, झोरा आ बोराक अधिकता। रुपैया रखैक झोरा। मै.
तोड़ाइ-सं., तोड़बैक लगातार काज। मै.
तोड़ाएब-क्रि., अनका सँ तोड़बैक काज करब। मै.
तोड़ा भरब-क्रि., (लाक्षणिक) इच्छानुसार बेरोक टोक ल' लेब।। मै.
तोड़िया-विशे., नीक जकाँ विशुखि गेला पर (दूध देब बन्न भेला पर) गर्भ धारण करैवाली विशेष महिस। मै.
तोड़ी-सं., सरिसो (गोट) क आकारवाला कारी तेलहन। मै.
तोड़ुआ-विशे., तोड़ि क' आनलवाला। मै.
तोड़ें तोड़ें-अव्यय, रुकि रुकि कय। मै.
तोतराएब-क्रि., बजैक काल बोल लागब। मै.
तोतराह-विशे., बोल लगने प्रवाहित रूपें वा रुकि रुकि बजैवाला। मै.
तोता-सं., सूगा पक्षी। मै.
तोन-सं., धोधि, तोन्द। हि. तद्भव
तोनी-सं., पुरुष मूत्र मार्गक अगिला भाग। मै.

तौनुआ-विशे., अंगक कोमलतम भाग। मै.
तोप-सं., विशाल बारुदवाला मारक अस्त्र। मै.
तोपची-विशे., तोप छोड़ै मे निपुण। मै.
तोपन्तोप-सं., आवश्यकता सँ अधिक पूर्ति। मै.
तोपनि-सं., १. झापनि। २. आवश्यकता सँ अधिक पूर्ति। मै.
तोपनी-सं., दाबनि। मै.
तोपब-क्रि., १. अनेक वस्तु सँ दाबब। २. बहुत प्रकार सँ पूर्ति करब। मै.
तोपाएब-क्रि., १. दबाएब। २. अधिकता सँ पूर्ति कराएब। मै.
तोपान-सं., झाँपि क' दबा दैक चेष्टा। मै.
तोपुआ-विशे., सघन कय झँपैवाला। मै.
तोभ-सं., तीव्रताक गति भंग, गति रुद्धता। मै.
तोर-सं., १. वेग, झोंक। २. तोहर। मै.
तोर मारब-क्रि., रहि रहि झोंक कढ़ब। मै.
तोरी भला के-अव्यय, विस्मय आदि मे पूरक। मै.
तोला-सं., रुपैया बराबरीक मान। मै.
तोष-सं., मनक तृष्णाक अभाव। मै.
तोसक-सं., तूर सँ भरि क' बनाओल ओछाओन। गद्दी। उ. तत्सम
तोसखाना -सं., अन्तर्गर्भक गुप्त भण्डार। मै.
तोह-सं., सीमा धरि समाप्ति। मै.
तोहर-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक सम्बन्ध। मै.
तोहरा-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्मकारक। मै.
तोंहि-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्मक रूप। मै.
तोहें-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्त्ता। प्रयोग–"तोहर सरिस एक तोहें माधव।" –विद्यापति। मै.

तौ

तौजी-सं., जमीन्दारीक विशेष संख्या चिह्न। मै.
तौनी-सं., उपर देह परक दोसर वस्त्र, उत्तरीय चद्दरि। मै.
तौल-सं., अन्न आदि कें वाटक अनुसार जोख। मै.
तौल जोख-सं., बारम्बार वस्तु जोखैक कार्यक्रम। मै.
तौलब-क्रि., वस्तु कें तराजू पर वाटक बराबरि करब। मै.
तौला-सं., बड़का माटिक रन्हा वासन। भाँड़। मै.
तौलाइ-सं., जोखि जोखि लै दैक क्रम। मै.
तौलिया-सं., फरवाला मोटगर गमछा। मै.

थ

थक्का-सं., द्रव अर्थात् दूध सन वस्तुक फटैक क्रम मे जमि क' घन बनल अनेक खण्ड। मै.
थक्की-सं., कागज पत्र सभक तहियाओल भारी गुच्छा। तहियाओल कागजक गोल। मै.
थकथकाएब-क्रि., जमल सन भ' जाएब। मै.
थक द'-अव्यय, एकाएक स्तब्ध भ' क'। मै.
थकनी-सं., अत्यन्त परिश्रमक प्रभाव। मै.
थकमकाएब-क्रि., हठात् गति कें रोकि तारतम्य मे पड़ब। मै.
थकरब-क्रि., केश कें ककबा सँ संयत करब। मै.
थकाएब-क्रि., परिश्रान्त क' देब। मै.
थकान-सं., परिश्रम सँ उपजल क्लेश। मै.
थकियाएब-क्रि., एकठाँ थाक लगाकय राखब। मै.
थकुचनि-सं., निर्दयता सँ पिटाइ। मै.
थकुचब-क्रि., चूरि कय छिन्न भिन्न करब। मै.
थकुचा-विशे., चूरि कय अंग भंग कयल। मै.
थतमताएब-क्रि., हठात् अनिश्चित दशा मे रुकि जाएब। मै.
थथकारब-क्रि., बच्चाक बोली जकाँ बाजि बच्चा कें दुलारब। मै.
थथ मारब-क्रि., ककरो सब प्रकारक ध्यान राखि सम्हारैत पालन करब। मै.
थन-सं., स्तन, अड़ुआर। ऊध। मै.
थनैल-सं., दूधक विकार सँ उत्पन्न स्तनक फूलि क' वेदना। मै.
थप्पा-सं., हाथ मे रंग लगा क' पंजाक चिह्न। मै.
थपकाएब-क्रि., हलुक हाथक स्पर्श क' क' आराम आ प्रोत्साहन देब। मै.
थपकी-सं., हलुक हाथ कें मारि क' स्नेहक अभिव्यक्ति। मै.
थपड़ाएब-क्रि., थापड़ सँ मारैक सिलसिला राखब। मै.
थपड़ी-सं., हाथ पर हाथ मारि शब्द करब। मै.
थपड़ी देब-क्रि., उपहास मे दुहु हाथक संयोग कय शब्द बहार करब। मै.

थपड़ी पड़ब-क्रि., कोनो बात कें लोक प्रिय होइक प्रमाण स्वरूप सामूहिक हाथक शब्द होएब। मै.
थपथप-सं., स्नेह उत्साह बढ़बैक हल्लुक हाथ सँ बारम्बार मारि। मै.
थपथपाएब-क्रि., स्नेह उत्साह आ उत्तेजित करै लेककरो देह पर बारम्बार हल्लुक हाथ सँ बारम्बार मारब। मै.
थप द'-अव्यय, हल्लुक हाथक मारि द' क'। मै.
थपना-सं., स्थापना। सं. तद्भव
थपब-क्रि., १. थप्पा द' क' चिह्न बहार करब। २. थप्पा द' क' अपन अधिकार बनाएब। मै.
थपरथपर-सं., कोमल वा सरस वस्तु पर हल्लुक हाथ मारि बारम्बार बहराएल शब्द। मै.
थभकनि-सं., जै तै ठाँ असर्थ रूपें बैसि जाइक कम। मै.
थभकब-क्रि., बेढंगें कत्तौ पसरि क' बैसब। मै.
थभका-विशे., हरदम गूँह मूत पर बैसि रहैवाला। मै.
थभकाएब-क्रि., यत्र तत्र गूँह मूत पर बैसाएब। मै.
थभ द'-अव्यय, अचानक अव्यवस्थित रूपें। मै.
थम्ह-सं., स्तम्भ, केराक गाछक मोटका अंग। मै.
थम्हगर-विशे., अधिक काल धरि टिकैवाला। मै.
थम्हब-क्रि., टिकब, अँटकब। स्थिर होएब। मै.
थम्हा-विशे., द्रव वस्तुक जमि कय बनल गोला। मै.
थम्हाएब-क्रि., पकड़ाएब, धरैले देब। अँटकाएब। मै.
थर-सं., १. माछक पैघ बच्चा। २. स्त्रीक गर्भ। प्रयोग—"गर के लगले थर।" मै.
थरथर-अव्यय, स्वाभाविक रूपें अस्थिर भ' क'। मै.
थरथराएब-क्रि., स्वाभाविक रूपें अस्थिर भ' क' काँपब। मै.
थरथरी-सं., अंगक स्वतः भीतर सँ अस्थिरता। मै.
थरथरौआ-विशे., थरथर करबैवाला। मै.
थर बान्हब-क्रि., अंग मे वा अंगक गोलाकार भ' क' फूलब। मै.
थरराएब-क्रि., भीतर सँ डरि क' स्तब्ध होएब। मै.
थरि-सं., मालजाल के बान्हल जाइवाला स्थान। मै.
थरियाएब-क्रि., जड़ि सक्कत होएब। मै.
थरि बान्हब-क्रि., गूर आ स्तन आदि अंग वा अंग विकारक स्थान बनब। मै.
थरिया-सं., छोट थारी। मै.
थरी-सं., स्थली, कृत्रिम स्थान। मै.
थल्ला-सं., अस्थायी रूपें बीज कें भूमि मे देब आ अस्थायी रूपें बीजक अंकुर कें लगाएब। मै.
थल-सं., स्थान, निश्चित ठाँम। मै.
थल कमल-सं., फूल विशेष। मै.
थलगर-विशे., थाल सँ भरल, थालवाला। थाल जकाँ माटिवाला। मै.
थलथल-विशे., १. पैर चँपैवाला। २. अध जनमू दही। मै.
थल थलाएब-क्रि., १. दहीक जनमैक क्रम होएब। २. हल्लुक हाथें मारि मारि कय, स्नेह, दुलार आ प्रोत्साहन बढाएब। मै.
थलियाएब-क्रि., रोपल गाछक जड़ि कें कोड़ि माटि हल्लुक बनाएब। मै.
थस मारब-क्रि., कोनो काज मे पाछू हँटि जाएब। मै.
थस लेब-क्रि., मन आ शरीरें असमर्थ भ' जाएब। मै.
थहियाएब-क्रि., थाह लैक चेष्टा करब। मै.

था

थाक-सं., १. विशेष परिमाण मे सञ्चित वस्तु, जमा कयल पदार्थ। २. परिश्रम। मै.
थाकनि-सं., श्रान्ति सँ उपजल शरीर कष्ट। मै.
थाकब-क्रि., परिश्रमक उपरान्त कष्ट होएब। मै.
थाकी-सं., छोट छोट आकार मे जमा कयल वस्तु। मै.
थातो-सं., गुप्त क' क' जमा कयल धन। मै.
था था-अव्यय, तबला आ ढोलक आदिक बोल। मै.
थाथा थैया-अव्यय, तबला आदि बाजनक बोल। मै.
था थैया-अव्यय, छोट बच्चा कें अपना भरें ठाढ़ आ चलन करैक प्रोत्साहनक शब्द। मै.
थान-सं., १. निश्चित मान मे तहियाएल कपड़ाक गेंट। २. देवताक पवित्र स्थान। मै.
थाना-सं., आरक्षीक केन्द्र। मै.

थाप-सं., १. निश्चय, ठेकान । २. मोहर, हाथ वा आने कोनो वस्तुक निजी चिह्न । मै.

थापक-विशे., स्थापक, कथुक स्थापना करैवाला । सं. तद्भव

थापड़-सं., हाथक पंजा पसारि क' मारिक प्रक्रिया । मै.

थापब-क्रि., अपन अधिकार बुझबैक चिह्न देब । मै.

थापी-सं., १. विशेष पर्वक शुभ अवसर पर सिन्दूर पिठार सँ हाथक चिह्न । २. पीटैवाला चाकर मुङरी । मै.

थाम्हब-क्रि., भार सम्हारि लेब । मै.

थार-सं., बड़का थारी । विशेष भोजन पात्र । मै.

थारी-सं., छोट पैघ सब प्रकारक भोजन पात्र । मै.

थारीपान-सं., वरक विदाइक समय पैघ थारी मे लागल पान सुपारी जनौ आदि श्रेष्ठ स्त्री वर्गक सामूहिक रूपें देबाक मिथिलाक व्यवहार । मै.

थाल-सं., कादो, जल घुलल माटि । मै.

थाला-सं., अस्थायी रूपें बीज वा अंकुर कें भूमि मे गाड़ब । मै.

थाह-सं., १. जल वा हृदयक अन्तस्तलक पकड़ । २. विस्तृत रूपें त्यागल मल । मै.

थाह पाड़ब-क्रि., वेशी दूर सँ पसारि मल त्यागब । मै.

थाहब-क्रि., १. अन्तस्तल पकड़ब । २. जाँचि क' डेग धरब । मै.

थि

थिकथि-क्रि., मान्यलोकक होइक वर्तमान क्रिया । मै.

थिकनि-क्रि., मान्य व्यक्तिक परोक्षवर्ती वस्तुक अस्तित्वक क्रिया । मै.

थिका-क्रि., मान्य व्यक्तिक प्रति होइक क्रिया । मै.

थितगर-विशे., सम्पत्तिशाली । मै.

थिर-विशे., स्थिर । सं. तद्भव

थिरक-सं., नृत्यक सन्दर्भ मे पाद प्रक्षेप । मै.

थिरकब-क्रि., नृत्यक रूप मे पाद प्रक्षेप करब । मै.

थिराएब-क्रि., १. स्थिर होएब । २. माल बकरीक मैथुनक इच्छा प्रकट करब । मै.

थिरीथमन-सं., निश्चय रूपक स्थिरता । मै.

थी

थीक-क्रि., परोक्ष आ अपरोक्ष अनादरक क्रिया । मै.

थीत-सं., स्थिति । सं. तद्भव

थीतवृत्ति-सं., सम्पत्ति आ उद्योग । मै.

थीर-विशे., स्थिर । अचंचल । मै.

थु

थुक थुकाएब-क्रि., बारम्बार थूक फेंकैक प्रक्रिया करब । मै.

थुकना-सं., थूक फेंकैक पात्र । पिकदानी । मै.

थुक्कमथुक्का-सं., एक दोसरा पर थूक फेंकि फेंकि झगड़ा । मै.

थुकम फज्ञैती-सं., मुह सँ थूक बहार कय परस्पर गंजन । मै.

थुकरब-क्रि., थूक जकाँ मुहक वस्तु कें फेंकब । मै.

थुकहा-सं., एक घास विशेष । विशे., अधिक थूक फेंकैवाला । मै.

थुकारब-क्रि., १. मुहक वस्तु कें थूक जकाँ फेंकब । २. (लाक्षणिक) घृणा सँ ककरो नामें थूक फेंकि तिरस्कार करब । मै.

थुत्ती-अव्यय, कोनो खेलक बीच खेल सँ व्यक्तिगत विराम लेबाक शब्द । मै.

थुथना-सं., मुहक अगिला भाग (मनुष्यक हेतु) । मै.

थुथनाएब-क्रि., माल जालक वासना सँ कामोद्दीपन करैक चेष्टा करब, वा नेरू पररूक दूध पीबैक चेष्टा करब । मै.

थुथून-सं., मालजालक मुह । मै.

थुथूरमुहाँ-विशे., मालजाल सन अप्रिय मुहवाला लोक । मै.

थुनब-क्रि., १. नीक जकाँ पीटब । २. जहल मे सक्कत क' क' बन्न करब । मै.

थुम्ह-विशे., स्थूल देहक द्वारें चलै फिरै मे असमर्थ । मै.

थुम्हा-सं., माटि वा पाथरक बनाओल गोल । मै.

थुरब-क्रि., १. थकुचब । २. पीटब । मै.

थुराइ-सं., विकट रूपक मारि । मै.

थुरीथुरी करब-क्रि., १. नीक जकाँ थकुचि क' चूरब । २. कोनो दोष (अपराध) पर वचन सँ लज्जित करब । मै.

थुलथुल-विशे., अधिक मोट भेला सँ संचार करै मे अक्षम । मै.

थुलथुली-सं., देहक अधिक मोटाइ। मै.

थुसकुन मारब-क्रि., यत्र तत्र पसरि क' बैसि जाएब। मै.

थुस द' बैसब-क्रि., लाज संकोच वा डर सँ जाही ताही अवस्था मे जत्तै तत्तै बैसि जाएब। मै.

थुसमाथुम्ह-विशे., नहि टकसैक ध्येय सँ अचल भ' क' बैसल। मै.

थुहथुह करब-क्रि., मोट शरीर सँ दौड़ैक चेष्टा मे चलैक द्वारें विकृत चेष्टा होएब। मै.

थू

थू-अव्यय, थूक फेंकैक शब्द। मै.

थू करब-क्रि., १. (लाक्षणिक) कोनो क्रिया आ बातक त्यागक प्रतिज्ञा करब। २. थूक जकाँ मुहक वस्तु फेंकब। मै.

थूक-सं., मुहक जमा रस। मै.

थूक चाटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) अपराधक दण्ड स्वरूप अपने फेंकल थूक कें चाटब। २. (लाक्षणिक) अपने निरसल वस्तु कें फेर अपनै अपनाएब। मै.

थूक देब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणा आ अक्षम्य अपराध सँ तिरस्कारपूर्वक त्याग करब। समाज मे अधम सिद्ध करब। मै.

थूथू करब-क्रि., १. अधिक थूक फेंकैक अभ्यास राखब। २. सब दिश सँ तिरस्कृत बनाएब। मै.

थूरब-क्रि., विशेष रूपक मारि देब। मै.

थे

थेथर-विशे., तिरस्कृतो भेला पर अपन स्वार्थ ले डटल रहब। मै.

थेथरिया देब-क्रि., अपमानो सहि स्वार्थ सिद्धि केर प्रतीक्षा करैत रहब। मै.

थेहगर-विशे., शरीरें काजक वृद्ध। स्त्री० थेहगरि। मै.

थै

थै थै-अव्यय, तबलाक बोल विशेष। मै.

थै थै होएब-क्रि., कोनो वस्तु यथेष्ट होएब। विशेष रूपें अर्थात् पुष्ट होएब। मै.

थैर-सं., स्थान। मै.

थैर बान्हब-क्रि., कोनो अंगक विकार सँ चारू दिश सक्कत बनैत फूलब। मै.

थैला-सं., वस्तु रखैक खैंझा, झोरा। मै.

थैली-सं., गुप्त रूपक धन राशिक पोटरी। मै.

थैहरि लागब-क्रि., यथेष्ट भ' क' पूर्ण होएब। अगणित जमा होएब। मै.

थो

थोक-सं., एक डंटी मे असंख्यक स्थिति। मै.

थोका-सं., गुच्छा, एकत्रित सघनता, एक नाल मे असंख्यक स्थिति। मै.

थोड़-विशे., कम, अल्प। मै.

थोड़ेक-विशे., कम परिमाणवाला। मै.

थोँथ-विशे., बिन दाँतवाला। मै.

थोथरब-क्रि., बिना दाँतक प्रयोग कय अधिक चुम्बन क्रिया सँ बच्चा कें अकछाएब। मै.

थोँथा-विशे., दन्तहीन लोक। मै.

थोँथी-सं., वचन सँ प्रभाव दैवाला मुह। मै.

थोपब-क्रि., १. कोनो सरस वस्तु कें अधिक दाबब। २. (लाक्षणिक) आक्षेप वा आरोप लगाएब। मै.

थोपी-सं., १. थोपैक प्रक्रिया। २. मुह मुनैक वस्तु। ३. फुदनावाला खोपाक डोरी। मै.

थोपुआ-विशे., थोपि थोपि क' बनाओल। मै.

थोभ-सं., स्तोभ, अवरोध, समाप्ति, अन्त। सं. तद्भव

थोभ लागब-क्रि., पूर्ति भ' क' अन्त होएब। मै.

थोभ लगाएब-क्रि., विरारक थानक बीआ उखाड़ि कय सघन कय रोपि क' खाउर लगाएब। मै.

थोभी-विशे., १. थोभ लगाओल धानक बीआ। २. थमैक क' बैसनिहार। मै.

थोसथाम करब-क्रि., अनेक उपाय सँ दूक झगड़ा शान्त करब। मै.

थौ

थौआ-विशे., अंग अंग सँ टूटल, भग्न। मै.

थौक-सं., एकठाँ जमा कयल वस्तुक समूह। मै.

द्र

द्याद-विशे., कौलिक सम्पत्तिक अधिकारी, भागीदार। दायाद। सं. तद्भव

द्रव्य-सं., धातु (सोना चानी काँस ताम आदि)। सं. तत्सम

द्रव-सं., पघिलै आ बहैवाला पदार्थ। सं. तत्सम

द्रवण-सं., पघिलब, घमब। सं. तत्सम

द्रुपद-विशे., रक्षावाहिनी (स्काउट आदि) क प्रशिक्षित भेद। सं. तत्सम

द्वादशाह-सं., बारहम दिनुक श्राद्ध। सं. तत्सम

द्वादशी-सं., पक्षक बारहम तिथि। सं तत्सम

द्वार-सं., घरक अथवा आलयक आवाजाहीक वाट। सं. तत्सम

द्वारका-सं., तीर्थ विशेष। मै.

द्वेष-सं., पैर, कनारि। मै.

दऽ-अव्यय, हेतु, प्रसंग। प्रयोग—"हम हुनका दऽ नै कहलौं। अपना दऽ अनैले कहने रही।" मै.

द-सं., तवर्गक मध्य अक्षर दकार। मै.

द'-अव्यय, देबाक क्रिया। प्रयोग—"हुनका ई द' देबैन मोन पाड़ि क'।" मै.

दक्ष/दच्छ-विशे., निपुण, प्रस्तुत। सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक्षिण/दच्छिन-सं., प्रातःकाल सूर्यक मुहें ठाढ़ भेला सँ दहिना हाथक दिशा। सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक्षिणा/दछिना-सं., कोनो कर्म (सेवा) क संतोषक द्रव्य अथवा पारिश्रमिक। सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक-सं., तीव्र गन्ध, कटु गन्ध। मै.

द' क'-अव्यय, देबाक क्रिया क' लेला उत्तर। प्रयोग—"अपनो द' क' पलिताहि।" मै.

दकचन-सं., असंयत रूपें अस्त्र वा कथू सँ आघातक चिह्न। मै.

दकचब-क्रि., अस्त्र सँ अन्धाधुन्ध अधे काटब। मै.

दकचमदकचा-सं., अनठेकान अस्त्रक चोटें काटैक स्थिति। मै.

दकचा-विशे., अनठेकान आधे काटल। मै.

दकड़ब-क्रि., कठोर आ सक्कत वस्तु दाँत सँ काटि काटि हबर-हबर खयने जाएब। मै.

दकदक-विशे., अधिक प्रकाशमान, तेज भरल। मै.

दग्ध/दगध-विशे., जरल, झरकाओल, ताप लागल। मै.

दंग-विशे., आश्चर्य चकित, मतिसुन्न। हि. तत्सम

दगदग-विशे., अधिक उज्ज्वल। मै.

दगदगाएब-क्रि., अधिक स्वच्छ कान्तिवाला होएब। मै.

दगदगी-सं., छविक स्वच्छता, लावण्यक निखार। मै.

दगधब-क्रि., (लाक्षणिक) पीड़ा अथवा क्रोध सँ मनक बिगड़ब होएब। मै.

दगधल-विशे., पीड़ा तथा क्रोधें भरल विकृत मनवाला। मै.

दगधी-विशे., सतत रोग शोक पीड़ा आ क्रोध सँ जरैत रहैवाली। एक प्रकारक गारि। मै.

दगनी-सं., दगैक हेतु बनाओल विशेष साधन। मै.

दगरिन-विशे., प्रसव करबैवाली चमैन आ नर्स आदि। मै.

दगा देब-क्रि., १. दोसराक द्वारा दाग देयाएब। २. धोखा देब, वचन द' क' मुकरि जाएब। मै.

दगा फँसा-सं., धोखा द' क' फँसबैक चेष्टा। मै.

दगाबाज-विशे., धोखा दैक प्रकृतिवाला। मै.

दङफङ-सं., विशेष स्वार्थ साधैले बल सँ फँसाद उठा क' गरजि गरजि क' झगड़ा। मै.

दछिन बरिया/दछिनबारि-विशे., दच्छिन दिश रहैवा होइवाला। मै.

दछिनभर-अव्यय, दच्छिन दिशक वा दच्छिन दिश। मै.

दछिनाहा-विशे., दच्छिन दिशा मे भेनिहार आ रहनिहार। मै.

दछिनाही-विशे., दच्छिन दिशक बसात। मै.

दछिनाहुत-विशे., दच्छिन दिश दबल, दच्छिन दबि क' रहैत। मै.

दछिनी अड़ाँची-सं., छोट आकार एवं उज्जर खोंइचावाला अड़ाँची। मसाला। मै.

दड़रब-क्रि., जाँत सँ अन्न कें दू दालि अर्थात् दू फाँक बनाएब, खण्ड खण्ड करब। मै.

दड़रा-विशे., दड़रि क' खण्ड कयल अन्न। मै.

दड़री-विशे., बिन पीसल खण्ड खण्ड जाँत सँ कयल। मै.

दड़िमी-सं., १. दाड़िम दानाक रूप। २. धान विशेष। मै.

दऽढ़-विशे., अभग्न, खण्डित नहि। मै.

दऽढ़गर-विशे., बिन फाटल चिटल। मै.

दढ़ियल-विशे., बेशी बढ़ल दाढ़ीवाला। मै.

दण्ड-सं., १. लाठी। २. अपराधक सजै। सं. तत्सम

दण्डताल-सं., लोहक ठेङा जकाँ बाजा। सं. तत्सम

दण्ड प्रणाम-सं., पट भ' क' नामा नामी सूति प्रणामक प्रक्रिया। सं. तत्सम

दण्ड प्रणाम देब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ साधना स्वरूप अत्यन्त विनीत भ' क' खेखनियाँ करब। मै.

दण्डी-सं., १. दूनू पलड़ा लटकऽबैवाला तराजूक डण्टा। २. (विशे.) दण्ड धारण करैवाला सन्यासी। सं. तत्सम

दण्डी तराजू-सं., १. जोखैक साधन। २. तारा विशेष। मै.

दत्तक-विशे., पोसपुत्र। सं. तत्सम

दँतकट्टा-विशे., दाँत कटैक अभ्यासवाला। मै.

दँतकरारि-विशे., अनेर दाँत कर करबैत रहैवाला। (लाक्षणिक) बाजि क' आनक नीक सँ इर्ष्या करैवाला। मै.

दँतकिच्च-विशे., १. दाँत पर दाँत बैसा क' बजैवाला, तमसाइवाला आ कोनो वस्तु के पकड़ि रखैवाला। २. असिद्ध रहैवाला अन्न। ३. बिन गूमल नै दाना झरैवाला अन्न। मै.

दँत खिस्टी-सं., दीनता सँ दाँत बहार कय प्रार्थना। मै.

दँत खिसोट-विशे., अनेरो दाँत बहार करैत हँसि क' लाज उड़बैक चेष्टा कयनिहार। मै.

दँतगर-विशे., शक्तिशाली अर्थात् सक्कत दाँतवाला। मै.

दँतनिपोड़-विशे., अनेर हँसैक मुद्रा मे दाँत बहार कय अपन मूर्खता प्रकट करैवाला। मै.

दँतब-क्रि., मालजालक दुद्धा दाँत टूटि कय दाँत होएब। मै.

दँतबाहि-सं., निरन्तर दाँतक वेदना। मै.

दँत मंजन-सं., दाँत मँजैक कृत्रिम औषध। मै.

दँतमनि-सं., दाँत मँजैक प्रक्रिया आ काठी। मै.

दँतारि-सं., दाँतक व्याधि। मै.

दँतियाएब-क्रि., (लाक्षणिक) दीनता सँ प्रार्थना करब। दाँत बहार क' क' प्रार्थना करब। मै.

दँतुल-विशे., उगल पैघ दाँतवाला। मै.

दँतुलाह-विशे., वेशी बहराएल दाँतवाला। मै.

ददरी-सं., चून सँ अतिरिक्त चून मे पैघ पैघ टुकड़ी। मै.

ददियासासु-विशे., पति वा पत्नीक पितामही। मै.

दऽ देब-क्रि., अधिकारक त्याग समेत दान करब। मै.

दन्तकथा-सं., परम्परा सँ अबैत विशेष प्रकारक खिस्सा। मै.

दन्तभर देब-क्रि., तत्परता राखब। मै.

दन्तरबा-विशे., पैघ पैघ दाँतवाला तथा दाँत बहराएल हाथी। मै.

दन्स-सं., अनिष्टक कामना भरल विरोध। मै.

दन्तार-विशे., पैघ पैघ दाँतक द्वारें भयंकर हाथी। मै.

दऽन-सं., छेदवाला जल बहैक वाट। मै.

दन-अव्यय, अनिश्चय व्यंजक शब्द खण्ड। प्रयोग—"कोनदन, किदन, कथीदन आदि।" मै.

दन द'-अव्यय, अलक्षित रूपें उपस्थित भय। मै.

दनगर-विशे., दाना भरल, दानावाला। मै.

दनदन-अव्यय, तुरन्ते तुरन्त, एकक लगले दोसर। मै.

दनदनाएब-क्रि., कुशल आ प्रसन्नता सँ बढ़ैत रहब। मै.

दनपट-सं., पानि बहैक हेतु अस्थायी वाहा, नाली। मै.

दनफन-सं., उच्च स्वरें विरोध। मै.

दऽनही/द'लही-सं., बरुआ एवं नवविवाहिताक विधिपूर्वक जलाशय मे स्नान। मै.

दनाक द'-अव्यय, स्मरण, इच्छा आ चर्चा करैत मात्र ओही क्षण मे। मै.

दनाका-अव्यय, तत्खनात, तुरन्त, तेजी सँ। मै.

दनाढ़/दनाड़-सं., १. भूर (बिल) द्वारा पानिक विशेष विस्तृत बहैत वाट। २. विशेष रूपें कपड़ा आदि मे फाट क' चिह्न। मै.

दनादन-अव्यय, लगले लागल, तुरन्ते तुरन्त। मै.

दनासब-क्रि., अस्त्र द्वारा सम्पूर्ण रूपक काटब। मै.

दनासी-सं., कोनो अस्त्रक धारवाला भाग। मै.

दनुज-सं., राक्षस। सं. तत्सम

दनूफ-सं., औषधक छोट वृक्ष, द्रोण। मै.

दनौड़ी-सं., घाटि मे पोस्तादाना मिला कय बनाओल अदौड़ी। मै.

दप-सं., प्रकाश सँ उत्पन्न धाह । गन्धक तीव्रता । मै.

दपदऽ-अव्यय, अचानक प्रकट भ' क' । मै.

दपदप-विशे., अपन रंग मे अत्यन्त प्रकाशमान । मै.

दपाएब-क्रि., १. घात लगाएब । २. प्रकाशमान होएब । मै.

दफानब-क्रि., अनुचित ढंगें अधिकार करैक प्रयास करब । मै.

दफियाएब-क्रि., बल सँ अधिकार क' लेब । मै.

दब्बू-विशे., अनका सँ प्रभावित भय डरि क' दबि रहैक स्वभाववाला । मै.

दब-विशे., तुलना मे हीन । नीच, घटल । मै.

दबकब-क्रि., अवसर पर छिपि रहब । दबि (नुका) रहैक चेष्टा करब । मै.

दबकाएब-क्रि., नुका राखब । दबा क' ल' लैक चेष्टा करब । मै.

दबकान-सं., गुम क' लैक अमोघ चेष्टा । मै.

दबकाह-विशे., १. संकीर्ण बनल । २. लोकक समक्ष होइ सँ डरैवाला । मै.

दबंग-विशे., प्रभावशाली आ निर्भीक । मै.

दबदबा-सं., लोकक बीच मान्यता, समाज मे प्रभाव । मै.

दबदबाएब-क्रि., शासन मे राखब । अनुशासन सिखाएब । वश मे आनब । मै.

दबब-क्रि., १. घटब, कम होएब । २. ककरो लग हीन भ' क' वश मानब । मै.

दबाइ-सं., औषध । हि. तद्भव

दबाएब-क्रि., जाँतब । २. कम करब । ३. छाँटि काटि अपना मे मिलाएब । प्रयोग—"हमर खेत दबा लेलैन"। मै.

दबाओ-सं., बल सँ दबैक चेष्टा । दवाब । मै.

दबाचब-क्रि., दौड़ क' पकड़ि दबाएब । मै.

दबाड़-सं., जोर जोर सँ डाँटैक प्रक्रिया । मै.

दबाड़ब-क्रि., जोर सँ डाँटब । मै.

दबिया-सं., घास आ छोट छोट गाछ कटैवाला सोझ धारवाला छोट खाँड़ । मै.

दबियाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें चोरा क' दाबि राखब । मै.

दबिला-सं., भारी आ टेढ़ धारवाला खाँड़ । मै.

दबीज/दबीजगर-विशे., अधिक भारी । मै.

दबेंठ-विशे., संकीर्ण, जाँतल स्थान । मै.

दबेल-सं., चारू दिश सँ अनेक रूपें दाबल अथवा जनसञ्चारहीन स्थान । मै.

दम्भ-सं., मिथ्या अभिमान । मै.

दम्म-सं., अपन बड़ाइक बात । मै.

दम्मा-सं., साँसी रोग । मै.

दम-सं., श्वास, बल, भाफ । मै.

दमक-सं., भीतर सँ अबैवाला प्रकाश । मै.

दमकढ़ू-विशे., दामो कयला उत्तर नहि बिकाएल वस्तु । मै.

दमकब-क्रि., भीतर सँ प्रकाशित होइत रहब । मै.

दमकल-सं., पानि फेंकैवाला स्वचालित यन्त्र । मै.

दमगर-विशे., बलगर, भारी, वेशी दामक । मै.

दम घोंटब-क्रि., निमुन स्थान मे श्वास लै मे कष्ट होएब । मै.

दम घोंटू-विशे., दम लेबा मे कष्ट देवाला स्थान । मै.

दम छूटब-क्रि., श्वास (प्राण) बहार भ' जाएब । मै.

दम छोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) शान्ति सँ श्वास लेब अर्थात् अथक परिश्रमक उपरान्त विश्राम करब । मै.

दमड़ी-सं., छोट सँ छोट भारतीय सिक्का । मै.

दमदम करब-क्रि., उत्साह आ आवेग सँ भरल रहब । मै.

दमन-सं., दबबैक उत्पीड़न करैक चेष्टा । सं. तत्सम

दमपोसिया-सं., मालक दाम कराकय पोसिया दैक रीति । मालक दामक अतिरिक्त दाम आ ओकर जरोह मे आधा स्वामी आ आधा पोसिया लेनिहारक रीति । मै.

दम बहराएब-क्रि., (लाक्षणिक) १. काजक व्यग्रता आ अधिकता सँ आकुलता होएब । २. प्राण बहराएब । मै.

दम भरब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि अपन बहादुरी देखाएब । मै.

दम मारब-क्रि., १. हुक्का चिलम कें पीबैत श्वास खींचब । २. रान्हल भात रोटी आदिक भाप मिझाएब । मै.

दम रोकब-क्रि., श्वास कें बन्न कय कें राखब। मै.

दम लेब-क्रि., १. बीड़ी सिगरेटक कस खींचब। २. (लाक्षणिक) क्षणे विश्राम करब। मै.

दमस-सं., ध्वनिक गम्भीरता। मै.

दमसगर-विशे., गम्भीरता आ उच्चता भरल ध्वनि। मै.

दमसब-क्रि., जोर सँ गम्भीर शब्द करब। आ गम्भीर शब्दें डाँटब। मै.

दम साधब-क्रि., श्वास रोकब। कोनो उग्र भावना मे अपना के नियन्त्रित कयने रहब। मै.

दमाइन-सं., फलाहारी मधुर स्थूल कन्द विशेष। मै.

दमाएब-क्रि., कोनो वस्तुक दाम करब। मै.

दमाही-सं., (स्थान भेदें शब्द भेद) दौनी। मै.

दय (द')-अव्यय, प्रसंग हेतु। प्रयोग–"हम अहाँ दय (अथवा, द') कहाँ किछु कहने रहियनि।" मै.

दया-सं., कृपा। स. तत्सम

दयालु-विशे., कृपा करैक स्वभाववाला। सं. तत्सम

दर्शन-सं., देखब, देखैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

दर्शनिया-सं., श्रीवैद्यनाथ धामक मन्दिरक ध्वज देखि पड़ैवाला स्थान। मै.

दर्शनी-सं., कोनो देवताक दर्शनक काल देबाक द्रव्य। मै.

दर्शाएब-क्रि., देखाएब। प्रकट कराएब। मै.

दर-सं., १. मूल्यक क्रम। २. उत्पादन क्रम। ३. लेखा क्रम। मै.

दरक्का-सं., स्वतः फटैक विस्तार। मै.

दरक-सं., फटैक क्रम। (स्वतः) मै.

दरकब-क्रि., फाटब। (स्वतः) मै.

दरजी-विशे., सीयै फाड़ैक व्यवसायी। मै.

दरद-सं., वेदना, बेथा। मै.

दरदर-विशे., धारा प्रवाह। मै.

दरदराएब-क्रि., कड़ो वस्तु कें दाँत सँ पीसि देब। मै.

दरदी-सं., अनेक वनस्पतिक गरदी मिलल औषध। मै.

दरब-क्रि., १. अपना सँ भिन्न श्रेणी (वर्ग) मे मिलि जाएब वा पचि जाएब। मै.

दरब-सं., द्रव्य, धातु, धातु निर्मित वस्तु, रुपैया। सं. तद्भव

दरबगर-विशे., तौल मे भारी, भारी। मै.

दरवज्जा-सं., दरबाजा, द्वार, घर आङन मे प्रवेश-बाला स्थान। उ. तद्भव

दरबर-सं., १. भाओ बट्टा, कोनो वस्तुक निर्धारित मूल्य। २. निच्छोह दौड़। मै.

दरबार-सं., सामन्ती खुशामदी सभा। उ. तत्सम

दरबारी-विशे., सामन्ती सभा मे आवरजातबाला। सामन्तक चाटुकारीक कला जाननिहार। मै.

दरमाहा-सं., वेतन, मासिक पारिश्रमिक। उ. तत्सम

दरमेसब-क्रि., १. गर्दनि मोकि कय लातें मुक्के अधिक पीटब। २. नीक जकाँ मरोरिऽक मेहीं पोसब। मै.

दरस-सं., रूपक प्रत्यक्ष। मै.

दरसाएब-क्रि., देखाएब। मै.

दरहा-सं., माटि कटला सँ बनल खद्धा। स्वतः फाटि गेने बनल वस्त्र आदिक छेद। मै.

दरही-सं., माछ विशेष। मै.

दराक द'-अव्यय, शब्दसहित अनायास। मै.

दरारि-सं., फाटि गेने बनल अवकाश (शून्य स्थान)। मै.

दरिआओ-सं., नदी, पैघ जलाशय। मै.

दरिजाएब-क्रि., निम्न वा उच्च वर्ग मे पचि वा मिलि जाएब। मै.

दरिद्र-विशे., धनहीन। अकिञ्चन। मै.

दरिद्रहा-विशे., दरिद्रता सँ भरल। मै.

दरिद्राठ-विशे., अत्यन्त दरिद्र। मै.

दरिया-सं., नदी। उ. तत्सम

दऽरी-सं., कोनो वस्तु गाड़ैक हेतु खूनि क' बनाओल स्थान। मै.

दरी-सं., सतरंजी। उ. तत्सम/मै.

दरेग-सं., दयापूर्वक सहानुभूति। उ. तद्भव

दरेर-सं., सोन्हि। मै.

दरोगा-विशे., आरक्षी अधिकारी। उ. तत्सम

दल्लू-विशे., दलक अगुआ मोट डाँट वानर। मै.

दल-सं., झुण्ड, एक मतवाला संगठित समाज। मै.

दऽल-सं., पैंघ गोला (माटिक चकला)। मै.
दलक-सं., भीतर सँ उत्पन्न कम्पन। मै.
दलकब-क्रि., स्वभावतः भीतर सँ कम्पन उठब। मै.
दलकाएब-क्रि., भीतर सँ अपनै कम्पन जगाएब। मै.
दलकी-सं., भीतर सँ स्वतः उत्पन्न कम्पन। मै.
दलगर-विशे., १. दलवाला। २. अधिक मुद्दावाला। मै.
दलदल-सं., धँसैवाला पाँक (कादो)। मै.
दलदली-सं., थाल माटि। मै.
दलपति-विशे., विशेष संख्याक सैनिक टुकड़ीक नायक। मै.
दलपरदा-सं., झपासा, परतारि क' ठकि देनाइ। बातें चितें मन घुमा क' धोखा। मै.
दलपलटू-विशे., अपन दल कें दोसर रूप देनिहार। मै.
दलफुट्टू-विशे., दल सँ फूटि क' रहनिहार। मै.
दलबदलू-विशे., एक दल छोड़ि क' दोसर दल मे मिलनिहार। मै.
दलबन्दी-सं., अपन दल मे लोक के मिलवैक चेष्टा। मै.
दलबल-सं., अपन दलक लोक तथा अपन दलक रक्षक अर्थात् अपन परिवार आ पक्षक सम्पूर्ण लोक। मै.
दलमलाएब/दलमलीत करब-क्रि., अपन गर्जन तर्जन एवं हाक आदि ध्वनि सँ सगरे अशान्त करब। मै.
दलमली-सं., गर्जन आ उच्च स्वरें बजैक एवं बाजाक ध्वनि। मै.
दलमा-सं., लोथड़ा, कोमल स्थूल छहलैवाला पदार्थक सरस खण्ड। जमि क' बनल खण्ड। मै.
दलमेट-विशे., एक जेरक एक मुखिया। मै.
दलान-सं., बहरीक पुरुष पात्रक स्वतन्त्र बैसै उठैक स्थान। दालान। उ. तद्भव
दलाल-विशे., कीननिहार आ बेचनिहार दूहू सँ लाभ उठौनिहार। मै.
दलाली-सं., दलालक काज। मै.
दलिपिट्ठी-सं., चिकस सानि क' गोल गोल गुलिया के दालिक संग रान्हल भोज्य पदार्थ। मै.
दलिपुरी-सं., दालि कें उसिन कय चिकसक गुलिया में ओ दालि भरि क' बेलि कय रोटी जकाँ बना क' तेल वा घी मे छानल पदार्थ। मै.
दलिया-सं., १. दालि कें दरड़ि दोखड़ा कयल वस्तु। २. दालिक वेसन। मै.
दलिरन्हा-सं., दालि रन्हैवाला वर्तन। मै.
दलिसगा-सं., दालि साग संग मिला क' रान्हल तीमन। मै.
दलिहन-सं., दालिवाला अन्न। मै.
दंश-सं., कोनो कीड़ा मकोड़ाक डंक, दाँत वा सूँघ गड़ा क' काटब। सं. तत्सम
दश-संख्या, एक दहाँइ शून्य एकाँइक अंक। मै.
दशक-सं., दशटाक वा दश वर्षक एक मान। सं. तत्सम
दशकर्म-सं., जन्म संस्कार सँ दाह संस्कार धरि जीवनक प्रमुख दश टा कर्म। मै.
दशगर-विशे., शारीरिक वा मानसिक नीक स्थिति-वाला। मै.
दश दिक्पाल-सं., दशो दिशाक स्वामी देवता। सं. तत्सम
दशधर्म करब-क्रि., पुराण मे वर्णित दशो "यम नियम" आदि दशो धर्मक आचरण करब। सं. तद्भव
दशपैसाही-सं., दश पाइक एक मानवाला सिक्का। मै.
दशम-विशे., दश संख्यावाला। मै.
दशमी-सं., १. दश दिनक देवी आराधनाक समय। दशहरा, नवरात्र। २. पक्षक दशम तिथि। सं. तद्भव
दशमूल-सं., दश टा सीरक सम्मेलन सँ बनल औषध। मै.
दशहरा-सं., दश दिनक दुर्गापूजा पर्व। मै.
दशहरी-सं., उत्तरप्रदेशक प्रसिद्ध आम विशेष। मै.
दशहा-विशे., दश दिन पर क्षौर कर्म करैवाला। मै.
दशा-सं., अवस्था, परिस्थिति। सं. तत्सम
दशावतार-सं., विष्णुक दश प्रकारक अवतार। (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध आ कल्कि)। मै.

दशाह-सं., मृत्यु सँ दश दिन पर्य्यन्तक अशौच। सं. तत्सम

दस्त-सं., मल त्याग, अधिक मलस्राव (रोग)। मै.

दस्ती-सं., हथलग्गू कागज पत्र आदिक लघुतम कन्तोड़ी। उ. तत्सम

दस्ताना-सं., सुरक्षाक लेल हाथक आवरण अंगा। उ. तत्सम

दस्तूर-सं., प्राकृतिक रीति, परम्परागत स्वभाव। उ. तत्सम

दसी-सं., कमलक नाल, मृणाल तन्तु। मै.

दसगरदा-विशे., सार्वजनिक। मै.

दसोत-सं., नव वर बधूक मनोरञ्जनात्मक मौगियाही विधि। मै.

दसोसोआ-सं., दश स्रोतक स्तनक दूध। मै.

दह-सं., जलाशय, पोखरि। मै.

दहकब-क्रि., भीतर सँ चमकैत ज्वालाक उपर आएब। मै.

दहदह करब-क्रि., वेसम्हार उत्तेजना करब। मै.

दहन-स., जरबैक क्रिया। मै.

दहनाल-विशे., बाढि सँ दहि जाइवाला। मै.

दहब-क्रि., भसिया जाएब, बहि जाएब। मै.

दहलब-क्रि., अधैर्य्य अन्देशा सँ अस्थिर (चंचल) होएब। मै.

दहलाएब-क्रि., अधैर्य्यक अन्देशाक बात सँ चंचल बनाएब। मै.

दहसति-सं., भीतरी डर आ आतङ्क। मै.

दहाँइ-सं., दश संख्यावाला अंक। मै.

दहाएब-क्रि., भसि जाएब, भासब, बहि जाएब। मै.

दहार-सं., भसैक प्रक्रम। निरन्तर दहि जाइक अभ्यास। मै.

दहि जरुआ-अव्यय, दुःख सूचक वाक्यालंकारक सम्बोधन। दाही जरती दुहू सँ हानिवाला। मै.

दहिन-विशे., १. (लाक्षणिक) सहायक। २. सं., दक्षिण। मै.

दहिना-विशे., दक्षिण भागवाला। मै.

दहिवाला-सं., दही मे बोरि क' बड़क भोज्य पदार्थ। मै.

दहिया-सं., फुफड़ी, कोनो वस्तु पर छारल उज्जर रंगक विकार। मै.

दहियार-विशे., दही बेचैवाला व्यवसायी। मै.

दही-सं., जमाओल, घनीकृत दूध। मै.

दहेज-सं., विवाह मे वर कें देय। मै.

दहोदिस-अव्यय, सब दिशा मे। मै.

दहोदिसिया-विशे., सब दिश मुह रखैवाला। मै.

दहोबहो-अव्यय, तीव्र वेग सँ। मै.

दहोआ भसौआ-विशे., दहा क' भासि क' आएल। मै.

दा

दा-सं., कटैक हेतु खाँड जकाँ छोट अस्त्र। मै.

दाइ-विशे., मिथिला मे पुत्री (बेटी) सम्बन्धक स्त्रीक सम्बोधन शब्द। आदरणीय बूढ़ि स्त्री कें दाइजी कहल जाइछ। मै.

दाओ-सं., कोनो विशेष लक्ष्य सिद्धिक हेतु अवसर आ परिस्थितिक सन्तुलन। मै.

दाओन-सं., बड़द द्वारा डाँट लागल सीसवाला अन्नक मर्दन। मै.

दाओन दोगाओन-सं., दानाक मर्दन, झारन आ ओसौनी आदि सम्मिलित अनेक काज। मै.

दाख-सं., सुखाएल छोट फल विशेष, द्राक्षा। मै.

दाग-सं., १. अमिट चिह्न। २. (लाक्षणिक) कलंक। मै.

दागनि-सं., लोह धिपा क' चिह्न करैक प्रक्रिया। मै.

दागब-क्रि., लोह धिपा क' चिह्न देब। मै.

दाढ़-सं., १. सर्प आदि जीवक दाँत गड़बैक चिह्न। २. अधिक नम्मा दाढ़ी। मै.

दाढ़ी-सं., मुहक काउच सँ नीचाँवाला अंग तथा ओहि मे जनमल केश आ नमहर केश। मै.

दाँत-सं., दशन, मुहक भीतर चिबबैवाला एवं कटैवाला कठोर आ सक्कत अंग। मै.

दाँत कीचब-क्रि., तामस आ अधिक कष्ट सहैक मुद्रा मे दाँत पर दाँत जोर सँ बैसा क' दाबब। मै.

दाँत खिसटब-क्रि., १. दाँत बहार क' क' निर्लज्जता प्रकट करब। २. दाँत बहार कय दीनता देखबैत प्रार्थना करब। मै.

दाँतनिपोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) केहनो बात कें दाँत बहार कय हँसी मे उड़ा देब। मै.

दाता-विशे., दान करैवाला । मै.

दाँती लागब-क्रि., मूर्छित होएब । मूर्छाक अवस्था मे सक्कत सँ दाँत पर दाँत बैसि जाएब । मै.

दाँतें काटब-क्रि., दाँत सँ कटैक चेष्टा करब । मै.

दातें आङुर काटब-क्रि., (लाक्षणिक) बेर हुसने पश्चात्ताप करब । मै.

दाद-सं., १. दिनै रोग । २. महत्त्व । हि. तत्सम

दादनी-सं., आगू आगू कयल व्यवस्था । मै.

दादा-विशे., १. पितामह अथवा भाइ । २. (लाक्षणिक) प्रभावशाली नेता । सर्वोच्च अगुआ । मै.

दादुर-सं., बरसाती बेङ । मै.

दान-सं., देवाक चेष्टा वा प्रक्रिया । मै.

दानर-सं., पानि बहैक द्वारें अपनै बनल गहींर खद्धा । मै.

दानव-सं., राक्षस जाति प्रभेद । सं. तत्सम

दाना-सं., १. (लाक्षणिक) अन्न । अन्नक वा आनो वस्तुक कण । मै.

दानी-विशे., दान करैवाला । मै.

दानो-सं., १. (लाक्षणिक) अन्हड़ तूफान । २. देखू—"दानव" । मै.

दाप-सं., एकाएक तीव्र गन्ध । मै.

दाब-सं., १. दबैक लेल भारी वस्तु । २. दिवाल मे केवाड़ खिडकी आदिक चौकटि कें उपर सँ दबैवाला वस्तु । मै.

दाबनि-सं., उपर सँ दबैक हेतु निश्चित वस्तु । मै.

दाबब-क्रि., कोनो वस्तु कें कोनो भारी वस्तु सँ जाँतब । मै.

दाबा-सं., १. अधिकार करैले प्रमाण दैक चेष्टा । २. घरक न्यों (नीव) क बान्हल कछेर । मै.

दाबि-सं., लोहक छोलनी जकाँ काठक बनाओल पाकक वस्तु कें लाड़ैक वस्तु । मै.

दाबी-सं., १. अधिकार करैक चेष्टा । २. दर्प । मै.

दाम-सं., मूल्य । कोनो वस्तुक मुद्राक रूपक देय । मै.

दामस-सं., एक प्रकारक फोंकावाला चेचक । उपरी चर्म पर पैघ आकारक फोंकावाला फोंसरीक मैया । मै.

दामिनि-सं., बिजलोता । प्रयोग—"दामिनि आवि तुलाएल रे ।"—विद्यापति । मै.

दामी-विशे., बेशी दामवाला । मै.

दायभाग-सं., हिस्सेदारी, बाँट बखड़ाक नियम । सं. तत्सम

दायाद-विशे., हिस्सेदार, देआद । सं. तत्सम

दार-विशे., विशेषणक प्रत्यय विशेष । उदाहरण "हिस्सेदार" । सं.,—स्त्री । मै./सं. तत्सम

दारक-विशे., १. पुत्र । २. चीरैवाला । सं. तत्सम

दारन-सं., चीरै, फाड़ैक चेष्टा । सं. तद्भव

दारब-क्रि., फाँड़ब, चीरब । मै.

दारमदार-सं., निश्चितरूपक निर्भरता वा दायित्व । मै.

दारा-विशे., पत्नी । प्रयोग-"आध अंग छथि दारा" । सं. तत्सम

दारिद्र-सं., दारिद्य, दरिद्रता, निर्धनता । सं. तद्भव

दारु-सं., जलाशयक कात मे बैसैक आ वस्त्र कें खिचैक सुविधा लेल देल मोट काठ । मै.

दारुन-विशे., भेओन, भयंकर, विकट । सं. तद्भव

दारू-सं., मदिरा, मद्य । मै.

दालचीनी-सं., मसल्लाक हेतु प्रसिद्ध स्वादिष्ट गाछक छाल । मै.

दालमोट-सं., अनेक स्वादिष्ट वस्तु भरल दालिक प्रधानतावाला भोज्य पदार्थ । हि. तत्सम

दालहरदि-सं., काष्ठौधि विशेष वनस्पति । मै.

दालि-सं., दू दल मे विभक्त होम'वाला भोजनक विशिष्ट आ आवश्यक अन्न । मै.

दावानल-सं., वन मे अपनै आप लगैवाला आगि । बनैया आगि । मै.

दास-विशे., सेवक । स्त्री० दासिन । सं. तत्सम

दासा-सं., केवाड़ आ पाया आदि पर द' क' जोड़ैया करैक आधारवाला पट्टी । देखू—"दाब" । मै.

दासोदास-विशे., सतत आज्ञाकारी । मै.

दाह-सं., जरैक वा जरबैक रूप । सं. तत्सम

दाहा-सं., मुसलमानक मोहर्रम पर्व मे रचल लम्बाकार कागजक महजिद । मै.

दाहीजरती-सं., दहार आ रौदी । खेतीक हेतु परमनाशी स्थिति । मै.

दि

दिक्क-सं., सब दिश सँ मनक व्याकुलता । मै.

दिक करब-क्रि., मन कें व्याकुल बनाएब। मै.

दिकदारी-सं., कष्ट सँ वा कठिनता सँ निर्वाह। मै.

दिकेंसिकें-अव्यय, कठिनता पूर्वक। मै.

दिग्गज-विशे., १. दिशा कें टेकैवाला हाथी। २. (लाक्षणिक) कोनो गुण मे महान्। नामी। सं. तत्सम

दिग्दर्शन-सं., कोनो विषयक बाट धरओनाइ। विषयक संकेत करब। सं. तत्सम

दिग्भ्रम-सं., दिशाक उचित ज्ञानक विपर्य्यय अर्थात् भिन्नताक बोध। सं. तत्सम

दिगन्त-सं., दिशाक ओर छोर। मै.

दिगार-सं., परोपट्टा, क्षेत्र खण्ड, प्रखण्ड। मै.

दिघोंच-सं., खाद्य स्थूल पक्षी। मै.

दिन-सं., सूर्य्योदय सँ सूर्य्यास्त धरिक काल। सं. तत्सम

दिनकर-सं., सूर्य्य। सं. तत्सम

दिनक फल-सं., जाहि दिनक जे भावी। मै.

दिनक फेर-सं., समय समय मे भाग्यक परिवर्तन। मै.

दिनगर-अव्यय, दिन अछैत। समय शेष बँचैत। मै.

दिनदेखार-अव्यय, सूर्यक प्रकाश धरिक समय मे। मै.

दिन लागब-क्रि., दुर्भाग्यक संगहि रहब। मै.

दिनाइ-सं., दिनै, कुड़ियबैक तृष्णावाला चकता रूपक सघन फोंसरीवाला चर्मरोग। मै.

दिनादिनी-अव्यय, एक एक दिन कयके। मै.

दिनादिष्टी-अव्यय, दिन देखार, सभक आँखिक समक्ष। बलपूर्वक। मै.

दिनोंदिन-अव्यय, दिनानुदिन। सब दिन क' क'। एक एक दिनक क्रमें। मै.

दिनियाएब-क्रि., असमयौ मे सर्वत्र व्यर्थ घूमल फिरब। मै.

दिनुका-विशे., दिन बीचक, दिन भरिक। मै.

दिनेक-अव्यय, कोनो दिन। मै.

दिपहरा-विशे., दीप रखैक आधार, दीप पकड़ि क' रखैवाला। मै.

दिब्ब-विशे., दिव्य, अति सुन्दर। सं. तद्भव

दिबड़खौकू-विशे., दिवाड़ (कीड़ा) लगला सँ खण्डित भेल। मै.

दिबड़ाभीड़-सं., दिवाड़ माटि सँ बनल टीला। मै.

दिबड़ाह-विशे., दिवाड़ लगैक प्रकृतिवाला। मै.

दिवाड़-सं., एक प्रकारक कीड़ा जे असंख्य भ' क' कोनो वस्तु कें खा क' माटि बना दैत अछि। मै.

दिबारी-सं., दीप पात्र। टेमी आ तेलक उत्थर आधार। मै.

दिबाली-सं., दीपावली। सं. तद्भव

दिमिक दिमिक-अव्यय, ठुमुक चालि सँ चलैत। मै.

दिया-अव्यय, द्वारा (मार्फत)। प्रयोग–"श्याम दिया समाद पठा देने रही।" मै.

दियामान-विशे., समाज मे सब प्रकारे विषय प्रसिद्ध, भाग्य आ क्रिया सँ जगजियार। मै.

दियारी-सं., अस्थायी दीप। नेसल दीप। मै.

दिर दिर-अव्यय, तबलाक बोल। मै.

दिल जमाओ/दिलजमै-सं., हृदय मे विश्वास जमवैवाला, कथू पर निर्भर रहैवाला भाव। मै.

दिल मोटाओ-सं., हृदय मे उत्पन्न विरोध। मै.

दिव्य-विशे., अति सुन्दर। सं. तत्सम

दिवंगत-विशे., स्वर्गगामी। सं. तत्सम

दिवा स्वप्न-सं., दिनक सपना। (लाक्षणिक) नै होम'वाला कल्पना। मै.

दिश-अव्यय, ओर। प्रयोग–"ओइ दिश नै जाउ जंगल छै।" मै.

दिशा-सं., दिक् समूह। मै.

दिशान्स-सं., देखू—"दिग्भ्रम"। मै.

दिशेक-अव्यय, कोनो दिश। मै.

दी

दीआ/दीया-सं., दीप, माटिक बनाओल दीप। मै.

दीठ-सं., दृष्टि। सं. तद्भव

दीदी-विशे., बहिन अथवा पीसी। मै.

दीन-विशे., दुखी, दरिद्र। मै.

दीनानाथ-विशे., गरीब पर दया करैवाला। मै.

दीप-सं., दीया, प्रकाशक वस्तु। सं. तत्सम

दीपदानी-सं., दीप रखैक आधार। मै.

दीपमाला-सं., देवताक लग माला जकाँ बनल दीपक स्थान। सं. तद्भव

दीपावली-सं., सुखरात्रि। मै.

दीयठि-सं., दीप रखैक उँचगर काठक वासन। मै.

दीयर-सं., नदीक बीच मे जागल स्थल। मै.

दीयाबाती-सं., १. दीपावली । २. सन्ध्या काल मे दीप बारैक क्रम । मै.

दीर्घ-विशे., लम्बा, पैघ । मै.

दीर्घजीवी-विशे., अधिक दिन धरि जीवैंवाला । मै.

दीर्घसूत्री-विशे., कम समय मे होम'वाला काज कें अधिक विलम्ब सँ करैवाला । मै.

दीर्घा-सं., सार्वजनिक राजकीय सभा । मै.

दीर्घायु-विशे., अधिक दिनधरि जीवैंवाला । मै.

दीरा-सं., देखू—"दीयर" । मै.

दीसा फिरब-क्रि.,मल त्याग करब । मै.

दु

दुआरि-सं., द्वार, दोहारि । मै.

दुआली-सं., बरमा जकाँ काठ मे छेद करैवाला बरहीक अस्त्र, बरमा चलबैक यन्त्र । मै.

दुई-सं., एक अंकक दोसर संख्या । मै.

दुक्का-सं., दुई संख्यावाला । मै.

दुख-सं., कष्ट रोगक द्वारें क्लेश । मै.

दुःख-सं., सामान्य कष्ट । सं. तत्सम

दुखद-विशे., दुखदायी । सं. तद्भव

दुखदैक-विशे., दुख देनिहार । मै.

दुखनामा-सं., दुःखक कथा, अनुभूत कष्टक वृत्तान्त । मै.

दुखवेफल-सं., रोग व्याधि । मै.

दुखाएब-क्रि., दर्द करब । वेदना होएब । दुख देब । मै.

दुखित-विशे., रोग व्याधि सँ गरसित । सं. तद्भव

दुखिताह-विशे., दुख बेकलवाला । मै.

दुखिया-विशे., दुखमय जीवनवाला । मै.

दुखी-विशे., अन्तर्व्यथा भरल । सं. तद्भव

दुग्गी-सं., दू टा चिह्नवाला तासक पत्ती । मै.

दुगदुग करब-क्रि., संशयक स्थिति मे आदङ्क होएब । मै.

दुगदुगी-सं., संशय सँ आदङ्कक स्थिति । मै.

दुगोडबा/दुगोड़ा-विशे., दू व्यक्ति चढ़ै वा खेत सरि करैवाला चौकी । मै.

दुतिया/दुतीया-सं., पक्षक दोसर तिथि । द्वितीया । सं. तद्भव/मै.

दुद्धा (दाँत)-विशे., वाल्यावस्थावाला प्रथम दाँत । मै.

दुद्धा वैष्णव-विशे., जन्मजात वैष्णव सम्प्रदाय कें मानैवाला । मै.

दुद्धी-सं., १. एहि नामक लत्ती एवं वनस्पति । २. पेरल दूध । मै.

दुधगरि-विशे., अधिक दूध दैवाली । मै.

दुधपीबा-विशे., दूध पीबैवाला बच्चा । २. दूध पियबैवाला सीसी वा यन्त्र । मै.

दुधभर-विशे., दूधक रूपें दाना भरैवाला सींस । मै.

दुधमुहाँ-विशे., दूधैटा पर जीवैवाला जनमौटी बच्चा । मै.

दुधारि-विशे., अधिक दूधवाली । मै.

दुधारी-विशे., दुहू दिश धारवाला अस्त्र । मै.

दुधिया-विशे., दूधक रंगवाला । मै.

दुधी-सं., १. वनस्पति । २. धान विशेष । मै.

दुधुआ/दुधू-सं., शिशुक शब्द मे स्तनपान । मै.

दुन्ना/दुन्नी-विशे., दोबर, द्विगुण । प्रयोग—"दू दुन्ना चारि ।" मै.

दुपट्टा-सं., दू पाटवाला वस्त्र जोड़ि क' बनाओल ओढ़ना । मै.

दुपट्टी-विशे., १. एके रंगक दू टुकरी जोड़ि क' बनाओल वस्त्र । २. स्त्री जातिक तौनी । मै.

दुपत्ता-विशे., दू पत्तावाला अंकुर । मै.

दुपत्ती-सं., दू पत्ताक समूह । मै.

दुपहरि/दुपहरिया-सं., दू पहरक समय, दिन वा राति । मै.

दुपहरिया डाक-सं., (लाक्षणिक) शोक भरल अनिष्ट । मै.

दुपैसाही-सं., दू पाइवाला प्राचीन सिक्का । मै.

दुब्बर-विशे., दुर्बल, क्षीण । मै.

दुबराएब-क्रि., शरीरक क्षीण होएब । मै.

दुर्-अव्यय, निषेध, निवारण आ घृणाक शब्द । मै.

दुर्काल-विशे., प्रकृतिक विक्षोभ सँ विपरीत समय । मै.

दुर्ग-विशे., कठिन साध्य, कठिन । मै.
-सं., किला, गढ़ । स. तत्सम

दुर्गति-सं., दुर्दशा । अधोगति, नरक । मै.

दुर्गम-विशे., कठिनता सँ प्राप्य, कठिन । मै.

दुर्गा-सं., आदिशक्ति । सृष्टिक मूल तत्त्व स्त्रीत्व । मै.

दुर्छिः-अव्यय, ककरो दुर्वृत्ति पर निन्दा घृणा अपराध आ हीनताद्योतक धिक्कार । मै.

दुर्जन-विशे., दुष्ट बुद्धिवाला । सं. तत्सम/मै.

दुर्जी-अव्यय, मूर्खता हीनता बोध करबैक शब्द । मै.

दुर्जो-अव्यय, स्त्रीक प्रयोग योग्य निन्दा निषेध घृणा व्यञ्जक शब्द। मै.

दुर्दुराएब-क्रि., हीनता थोपैत निषेध आ घृणा पूर्वक कटु वचन सँ दूर हँटाएब। मै.

दुर्दुरुट-विशे., अधलाह बातक बेशी प्रयोग कयनिहार। सं. तत्सम

दुर्धर्ष-विशे., ककरो सँ नै पछड़ैवाला। सं. तत्सम

दुर्नामी-विशे., समाजक बीच अधलाह व्यवहार सँ कलङ्कित आ प्रसिद्ध। मै.

दुर्बल-विशे., देखू—"दुब्बर"। सं. तत्सम

दुर्बीन-सं., अधिक दूरक वस्तु देखैवाला यन्त्र। हि. तत्सम

दुर्भाग्य-सं., करमघट्टू, भाग्यहीन। सं. तत्सम

दुर्भिक्ष-सं., अकाल। रौदी। सं. तत्सम

दुर्भोग-सं., दैवी दोष सँ कष्टक अधिकता। सं. तत्सम

दुर्मति-सं., दुष्टबुद्धि वा विचारवाला। सं. तत्सम

दुर्मतिया-सं., अधलाह विचार। मै.

दुर्यश-सं., समाज मे बदनामी। सं. तद्भव

दुर्व्यवहार-सं., अनुचित आरचण, अधलाह वृत्ति। सं. तत्सम

दुर्वाक्षत-सं., दूबि अक्षत सँ सम्मिलित रूपें आर्शीवादक प्रक्रिया। मै.

दुर्वाक-सं., अधलाह बात वा शब्द। मै.

दुर्वार-विशे., नहि रोकै योग्य। नै निषेधक साध्य। सं. तत्सम

दुरगमनियाँ-विशे., द्विरागमनक अवसर पर देवाक अथवा आएल। मै.

दुरन्त-विशे., कठिनता सँ ओर लगैवाला। अन्तहीन। सं. तत्सम

दुरस्त-विशे., १. दूर रहैवाला। २. अधलाह रूपें अन्त होम'वाला। मै.

दुराग्रह-सं., अप्रिय आग्रह। बलजोरीक आग्रह। सं. तत्सम

दुराङमन-सं., नवबधूक दोसर बेर सासुर यात्रा। देखू—"द्विरागमन"। सं. तद्भव

दुराछ/दुराहु-विशे., दूर मे रहैवाला स्थान। मै.

दुराज-विशे., दू राजाक शासनवाला प्रदेश। मै.

दुरुक्खा-सं., द्वार प्रदेश, आङन मे प्रवेश करैक स्थान। मै.

दुरूह-विशे., अत्यन्त कठिनवाला विषय। सं. तत्सम

दुर्लहि-विशे., विवाहक विधि मे रहैवाली कन्या। मै.

दुलकब-क्रि., दौड़ैक क्रम मे उछलि उछलि क' डेग दैत चलब। मै.

दुलकाएब-क्रि., अपने स्थान पर उछलाएब। मै.

दुलकी-सं., उछलि उछलि क' तेजी सँ चलैक क्रम। मै.

दुलकी मारब-क्रि., उछलैत जकाँ तेजी सँ चलब। मै.

दुलरा-विशे., विशेष दुलार करै योग्य बच्चा। मै.

दुलराएब-क्रि., अधिक दुलारे टा करब। मै.

दुलहा-विशे., विवाहक क्रम मे रहैत वर। मै.

दुलहिन-विशे., नवबधू। मै.

दुलार-सं., अधिकतर स्नेह। मै.

दुलारब-क्रि., अधिक स्नेह करब। मै.

दुलारू-विशे., अधिक स्नेहे बिगड़ल स्वभाववाला। दुलारेटा चाहैवाला। मै.

दुविधा-सं., एके काज वा वस्तुक हेतु दू प्रकारक मनोभाव। सं. तद्भव/मै.

दुष्ट-विशे., आनक अनिष्टे टा करैवाला। सं. तत्सम

दुष्टता-सं., आनक अनहित करैक चेष्टा। सं. तत्सम

दुसवार-विशे., कठिन, असम्भव। मै.

दुहनिहार-विशे., दुहैवाला। मै.

दुहबी-विशे., घर मे उपेक्षा सँ देखल जाइवाली स्त्री। मै.

दुहाएब-क्रि., दोसरा सँ गै आ महिसक दूध निचोड़ब। मै.

दुहाओन-सं., दुहैक पारिश्रमिक बोनि। मै.

दुहाक-विशे., दुहैक काज मे निपुण। मै.

दुहानी-सं., दुहैक अवसर एवं क्रम। मै.

दुहौनी-सं., दुहैक काज एवं क्रम तथा बोनि। मै.

दू

दू-सख्या, देखू—"दुइ"। मै.

दूअम्मा-सं., एक डण्टी मे दू आमक झाबा। मै.

दूआँ दू-अव्यय, एकाँइ पढ़ैक प्रकार। मै.

दूकाँ दू-अव्यय, खाँत (दोनाइ) पढ़ैक प्रकार। मै.

दूआ पच्चा-सं., कौड़ी कौड़ी खेलाइक विधि। मै.

दू टा-सं., केवल दू संख्याक वस्तु। मै.

दू गो-सं., दू मात्र । मै.
दू गोट-सं., दू संख्यावाला मात्र । मै.
दू गोटे/दू गोटए-विशे., दू संख्या मे अवैवाला । मै.
दूत-विशे., सम्वादवाहक, सन्देशहर । मै.
दूति-सं., द्युति, प्रकाश । विशे.,वार्ता पहुचौनिहारि । मै.
दूती-विशे., सन्देश लय गेनिहारि । मै.
दूतीकार-सं., दूतक द्वारा काज परिचय । मै.
दूध-सं., दुग्ध । मै.
दूधा दाँत-सं., माइक दूध पीबैक स्थिति मे जनमल दाँत । मै.
दून/दूना/दूनी-विशे., द्विगुण, द्विगुणित । मै.
दूनू-विशे., दू संख्याक सब व्यक्ति । मै.
दूबि/दूभि-सं., खढ़ विशेष । मै.
दूभर-विशे., लालसाक संग अलभ्य । मै.
दूर-विशे., अधिक अलग रहैवाला । स. तत्सम
दूरा-सं., द्वार, दुआर, दुरुक्खा, दोहारि । मै.
दूरि-विशे., विनष्ट, विरुद्ध आचरणवाला, दुर्वृत्ती असंस्कारी । संस्कारहीन । मै.
दूरि करब-क्रि., नष्ट करब । मै.
दूरि जाएब-क्रि., संस्कार आ सदाचारक क्षीण होएब । मै.
दूरि होएब-क्रि., बरबाद होएब, छुएला सँ नष्ट बनब दुर्वृत्ती भ' जाएब । मै.
दूरी-सं., अलगाओक क्षेत्र । मै.
दूसब-क्रि., अधलाह बनाएब । वचन सँ अधम सिद्ध करब । मै.
दूहनि-सं., दूहैक निरन्तर क्रम । मै.
दूहब-क्रि., स्तन सँ रस निचोड़ब । मै.
दूहादूही-सं., दुहैक सिलसिला । मै.

दृ

दृग-सं., नयन । सं. तद्भव
दृढ़-विशे., सक्कत । सं. तत्सम
दृढ़ाएब-क्रि., सक्कत बनब । मै.
दृष्टि-सं., नजरि । सं. तत्सम
दृष्टि लज्जा-सं., समक्षक संकोच । मै.

दे

देआएब-क्रि., अनका सँ अनका लाभ कराएब । मै.
देई-विशे., देवी । सं. तद्भव
देओक-सं., अनका सँ अनका देअबैक प्रक्रिया । मै.
देओर-विशे., पतिक छोट भाइ । मै.
देख-सं., नजरि रखैक चेष्टा । मै.
देखना-सं., मुह देखला उत्तर द्रव्य देबाक विधि । मै.
देखनिहार-विशे., देखैवाला । स्त्री० देखनिहारि । मै.
देखनुक/देखनुहुक-विशे., लालसापूर्वक आ विशेषता पूर्वक दर्शनीय, देखै योग्य । मै.
देखब-क्रि., १. दृष्टि मे आनब । २. (लाक्षणिक) ओलि चुकाएब । मै.
देखरेख-सं., लगातार ध्यानपूर्वक देखैक चेष्टा । मै.
देखसी-सं., दोसराक अनुकरण । मै.
देखाइ-सं., देखैक क्रम । मै.
देखाउ-विशे., मात्र लोक कें बुझा क' धोखा मे रखै योग्य । मै.
देखाएब-क्रि., दोसरा कें दर्शन कराएब । मै.
देखाओट/देखाओटी-सं., आडम्बर, भड़कताली, लोक देखाओ । मै.
देखादेखी-सं., एक कें देखि क' दोसरा कें करैक क्रम । मै.
देखार-विशे., प्रकाश मे आएल । प्रकट, स्पष्ट । मै.
देखुआ-विशे., देखैवाला । सब कें देखा क' करैवाला । मै.
देखैक-अव्यय, देखबाक निमित्त मे । मै.
देखौआ-विशे., लोक कें देखबै आ बुझबैवाला । मै.
देखौंस-सं., एक कें देखि दोसरो कें करैक इच्छा । मै.
देन-विशे., देबाक आवश्यक । दातव्य । मै.
देनदार-विशे., दातव्यक उत्तरदायी । मै.
देनिहार-विशे., देवैवाला, दाता । मै.
देब-क्रि., दोसरा कें सौंपब । देबाक क्रिया । मै.
देब लेब-सं., देबाक आ लेबाक व्यवहार । मै.
देबाक-अव्यय, दैक हेतु मे । मै.
देवान-सं., देवताक समूह । प्रयोग—"चौदहो देवान ।" मै.
देवानजी-विशे., विचार विमर्श करैवाला एवं लेखा जोखा मे प्रवीण, कायस्थ । दिवान । उ. तद्भव
देबाल-सं., ईंटा वा माटिक भीत । दिबाल । मै.

देबाल-विशे., देम'वाला। प्रयोग–" बेर पर गरीब कें क्यो रीनो देबाल नै होइ छै।" मै.

देबाला-सं., सर्वस्वहीनता, सब पूँजी पगहाक विनाश। दिबाला। हि. तद्भव

देबैया-विशे., देवाला। मै.

देय-विशे., देन, दातव्य। सं. तत्सम

देयादनी-विशे., पतिक भाइक पत्नी। गोतनी। मै.

देर/देरि/देरी-अव्यय, विलम्ब। मै.

देलहा-विशे., पूर्व देल। मै.

देव-सं., अदृश्य शक्तिक केन्द्र, अति मानव। सं. तत्सम

देव डघर-सं., तारागणक रेखा। आकाशगंगा। सं. तत्सम

देवता-सं., देवी देवताक समूह। सं. तत्सम

देवता पितर-सं., पूजनीय देव समूह आ पूर्व मृत पुरुष। मै.

देवदारु-सं., सररक गाछ वनस्पति विशेष। मै.

देवनागरी-सं., हिन्दी लिपि। मै.

देवाइ धर्माइ-सं., देवताक आराधना आ धर्मक आचरण। मै.

देवाक्षर-सं., देवनागरी लिपि। मै.

देवालय-सं., देवताक मन्दिर। सं. तत्सम

देवी-सं., स्त्री देवता। सं. तत्सम

देवें सेवें-अव्यय, देवताक सेवा कयला उत्तर। मै.

देश-सं., स्थान, एक विशाल क्षेत्र, राष्ट्र। सं. तत्सम

देशकओर-सं., देशक विभिन्न तट। मै.

देशकोस-सं., जनपद, देहात। विभिन्न स्थान। मै.

देशाटन-सं., विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण। सं. तत्सम

देशान्तर-सं., १. एक स्थान सँ दोसर स्थानक भिन्नता। २. दोसर। सं. तत्सम

देशिल-विशे., क्षेत्रक बीच (भीतर) वाला। मै.

देशिला-विशे., देशक भीतर भेनिहार। मै.

देशी/देशीय-विशे., देशक वस्तु। सं. तद्भव/सं. तत्सम

देह-सं., शरीर। मै.

देहगर-विशे., पुष्ट शरीरवाला। मै.

देहदशा-सं., रूप रंग। मै.

देह देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन उपस्थितिक दर्शन कराएब। मै.

देहरि-सं., द्वारक समीपक स्थान। मै.

देहलग्गा मारब-क्रि., (लाक्षणिक) धैर्य सँ सहन क' लेब। मै.

देहात-सं., ग्रामीण क्षेत्र दिहात। हि. तत्सम

देहाती-विशे., ग्रामीण क्षेत्रक रहनिहार। मै.

देहादेही-अव्यय, अपन शरीर मात्र सँ। मै.

देहिया-सं., अपन शरीर। मै.

देही-सं., प्राणी। सं. तत्सम

दै

दैक-अव्यय, देबाक (उत्तर कालिक क्रिया)। मै.

दैत्य/दैत-सं., राक्षस जाति। सं. तत्सम/सं. तद्भव

दैन्य-सं. दीनता। स. तत्सम

दैया-विशे., आदर आ स्नेह भरल बेटी क्रमक सम्बोधन। मै.

दैव-सं., अदृश्य शक्ति। भाग्य। सं. तत्सम

दैवा-सं. ईश्वर। सं. तद्भव

दैवी-विशे. ईश्वरीय, दैवयोग सँ उत्पन्न। सं. तद्भव

दो

दोआरि-सं., १. घरक प्रवेश मार्ग। २. दू गोटएक खेतक आरि। मै.

दोआरि छेंकब-क्रि., विवाह आ द्विरागमन आदि शुभ काज मे धीयनि द्वारा रास्ता रोकब। मै.

दोआली-सं., बरमा (बरहीक अस्त्र) चलबैक एक अंग (साधन) विशेष। मै.

दोएम-विशे., तुलनाक दृष्टियें हीन। दोसर रंग ढंग वाला। मै.

दोकठ-सं., १. (लाक्षणिक) दू दिशक आपत्ति। २. एक डन्डा मे एक लागल दू फेरक बीचवाला शून्य स्थान। मै.

दोकड़ा-सं. प्राचीन कालक एक पाइक आधाक सिक्का। मै.

दोकड़ी-सं. प्राचीन पाइक चौठाइ भागक सिक्का। मै.

दोकन्हा-सं., दू कानक सक्कत स्थान। मै.

दोकनुआं-विशे., दोकान सँ आनल। मै.

दोकमिआं-विशे., दू कामि द' क' बनल। दू कामिवाला। मै.

दोकान-सं., व्यवसाय अर्थात् वस्तु जात विक्रय करैक व्यक्तिगत स्थान। मै.

दोकानदार-विशे., दोकानक अधिकारी तथा बेचै नेल बैसैवाला। मै.

दोकानदारी-सं., कीनैक बेचैक व्यवसाय, व्यापार। मै.

दोखड़ब-क्रि., जाँत सँ पीसैक अपेक्षया केवल खण्ड खण्ड करब। मै.

दोखड़ा-विशे., खण्ड पखण्ड कयल। मै.

दोखार-सं., दोसर जोत (खेतक समार)। मै.

दोग-सं., दू वस्तुक बीचक अत्यन्त संकीर्ण स्थान। मै.

दोगच्छा-सं., सम्मिलित दू गाछ। मै.

दोगमियाँ-विशे., दू विभिन्न जातिक कुल मूल सँ सम्बन्धित। मै.

दोगला-विशे., वर्ण संकर, विभिन्न जातिक मे बाप वाला। मै.

दोग सान्हि-सं., अत्यन्त संकीर्ण स्थान। मै.

दोगही-सं., छोट अत्यन्त संकीर्ण गहवाला स्थान। मै.

दोगाएब-क्रि., संकीर्ण स्थान मे नुकाएब। मै.

दोगाठी-सं., दोग सन बनल स्थान। मै.

दोगाड़-सं., दू ठाम गाड़ कय करीन सँ पटबैक स्थिति। मै.

दोगार-सं., दोगवाला स्थान। मै.

दोगें दोगें-अव्यय, संकीर्ण स्थान देनें। मै.

दो गोला-विशे., दू दलक मतवाला। मै.

दोघारा-विशे., दू मात्र घरवाला परिवार। मै.

दोङा-सं., नव बधूक दोसर बेर सासुरक यात्रा। (स्थान भेदें शब्द भेद)। मै.

दोच-सं., गलती, प्रमाद। मै.

दोचारन-सं., एके व्यक्तिक द्वारा दूनू दिशक प्रेरणा। मै.

दोचारनि-विशे., दूनू दिश उकसबैवाली। मै.

दोचारा-विशे., दू चारवाला घर। मै.

दोचारी-सं., दू चार सँ बनल घर। मै.

दोजनियाँ-विशे., दू गोटएक सुतै बैसैवाला खाट चौकी। मै.

दोजीवा-विशे., दू जीववाली गर्भवती। मै.

दोटप्पी-अव्यय, एके क्षणक हेतु। मै.

दोठट्ठ-सं., दू ठाम दू बेर एके क्रिया। मै.

दोतर-विशे., लाल होइले पहुँचल दोसर घर मे रहैवाला पचीसीक गोटी। मै.

दोतरफा-विशे., दूनू दिश मुह धरैवाला। मै.

दोदाओन-सं., १. एके वस्तुक दू बेर दाओन। २. (लाक्षणिक) एके बात केँ बारम्बार रगड़। मै.

दोदिना-विशे., दू दिन होम'वाला पर्व आदि। मै.

दोदिल-विशे., संकल्प विकल्प तथा संशय सँ भरल। मै.

दोदिशाह-विशे., दूनू दिश वा दूनू विषय केँ पुष्ट करैवाला गप। मै.

दोना-सं., पात केँ मोड़ि क' बनाओल कटोरी। मै.

दोनाइ-सं., दूकाँ दूवाला खाँत। मै.

दोनाली-विशे., दू नाल अर्थात् गोलीक दू वाटवाला बन्दूक। मै.

दोपख-सं., दू पक्षक जोड़वाला अर्थात् दुपहरियाक समय। मै.

दोपट्टा-विशे., दू पट्टावाला केवाड़। मै.

दोपटा-सं., दू टुकड़ा जोड़ल वस्त्र। डोपटा। मै.

दोपत-विशे., दू टा पातवाला अंकुर। मै.

दोपथ-सं., दू वाटक समूह। मै.

दोपहरि-पं., मध्याह्न काल। मै.

दोपाट-सं., अलग अलग दू टा भाग। मै.

दोफक्का-विशे., दू फाँक (खण्ड) कयल। मै.

दोफसिला-सं., दू समय मे होम'वाला। मै.

दोफाँक-सं., एक वस्तुक दू खण्ड। मै.

दोबगली-विशे., दूनू कात मे होइवाला, रहैवाला। मै.

दोबर-विशे., एके वस्तुक दुन्ना। मै.

दोबराएब-क्रि., दू बेर तहियाएब तथा दुन्ना करब। मै.

दोबारा-विशे., दोसर बेर कयल एके काज। मै.

दोम-सं., झोंक सँ हिलबैक प्रक्रिया। मै.

दोमंजिला-विशे., दू महल (खटाल) वाला कोठा। मै.

दोमत-सं., दू प्रकारक बुद्धि आ विचार। मै.

दोमब-क्रि., झोंक सँ हिलाएब। मै.

दोमरि-सं., दोसर बेरक वैह क्रिया। मै.

दोमस-सं., विकल्पक (दोसर) बात। मै.

दोमसिया-विशे., दू मासक वयसवाला। मै.

दोमहला-विशे., देखू—"दो मंजिला"। मै.

दोमाएब-क्रि., अनका द्वारा झोंक देया क' हिलाएव। मै.

दोमाङि चढ़ब-क्रि., (लाक्षणिक) परस्पर विपरीत दूनू बात चाहब। मै.

दोमास-सं., एके नामक दू टा मास। मलमास। मै.

दोमी-सं., (लाक्षणिक) भय उत्पन्न करा क' हृदय कें आतंकित करैक चेष्टा। मै.

दोरस-सं., १. दू टा रसक मिश्रित पदार्थ। २. पूरिबा आ पछबा दूनूक बहैक क्रम। ३. दू ऋतुक प्रभाव। मै.

दोलक-सं., देबाल घड़ी मे डोलैत रहैवाला यन्त्र। मै.

दोलखी-सं., गलीवाला बा दोगवाला स्थान। मै.

दोलङ-सं., विशेष प्रकारक धान। मै.

दोलङी-सं., उचित समय सँ पाछू उपजल वस्तु। मै.

दोलत्ती-सं., दूनू लातक एक संगें मारि। मै.

दोलन-सं., डोलबैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

दोलहरि-सं., दू घरक बीचक फाँक। मै.

दोला-सं., महफा वा चौपाला नामक स्त्रीक सवारी। मै.

दोलाइ-सं., थोड़ तूर भरि क' शीरक जकाँ बनाओल सतत ओढ़ैवाला गरम ओढ़ना। मै.

दोलेब-सं., दोसर बेरक घर लेबैक प्रक्रिया। मै.

दोलें-सं., ऐकारक मात्राक चिह्न, दू टा एकलें। मै.

दोष-सं., अपराध, पाप, घट्टी। मै.

दोष देब-क्रि., अपराध थोपब, मढ़ब। मै.

दोष लगाएब-क्रि., अनका पर गलती थोपब। मै.

दोषावह-विशे., दोष अर्थात् पाप आ अपराध दैवाला। स. तत्सम

दोषाह-विशे., हीनता तथा ऐब भरल। मै.

दोषी-विशे., अपराधवाला। अभियोग भरल। मै.

दोस्तियारय-सं., मित्रता, दोस्ती। उ. तद्भव

दोस-सं., दू संख्या। प्रयोग—"काग की दोष।" मै.

दोस-विशे., मित्र, दोस्त। उ. तद्भव

दोसज्झा-विशे., दू व्यक्तिक साझी (हिस्सा) वाला। मै.

दोसंझी-विशे., दूनू साँझ होम'वाला। मै.

दोसर-विशे., दू संख्या मे रहैवाला। मै.

दोसराइत-विशे., दोसर संगी। मै.

दोसरि साँझ-सं., कनेक बेशी अन्हारवाला साँझ। मै.

दोसाल-सं., दू वर्षक एक मान। मै

दोसाला-सं., बहुमूल्य ऊनी ओढ़ना। मै.

दोसाला-विशे., दू साल पुरान, दू साल मे होम'वाला। मै.

दोसीरा-विशे., मालिक आ प्रजाक भागीदारी। मै.

दोहट-सं., दू स्थानक निर्वाह, दू ठामक रहन सहन। मै.

दोहत्थी-सं., दूनू हाथक चोट। विशे., दूनू हाथक लाठी। मै.

दोहत्थू-विशे., दू व्यक्तिक हाथ मे होइत काज। मै.

दोहद-सं., गर्भिणीक इच्छा। सं. तत्सम

दोहन-सं., दूहैक व्यवसाय। सं. तत्सम

दोहमति-सं., ढेसा, निर्मूल दोष। तोहमत। उ. तत्सम

दोहराएब-क्रि., पुनरावृत्ति करब। एके काज फेर करब। मै.

दोहरि-सं., दू टा बराबरि लम्बाइ चौड़ाइ मे साटि बनल ओढ़ना। मै.

दोहरी-विशे., दोसर बेरुक वैह काज। मै.

दोहरौनी-सं., एके काज कें दोसरो बेर करैक व्यवहार। मै.

दोहसब-क्रि., दोसर बेरक कहब। मै.

दोहसाएब-क्रि., बात काटि क' फेर फेर उक्ति करब। मै.

दोहा-सं., पद्यक एक प्रसिद्ध छन्द। मै.

दोहारा-विशे., दू तह मे प्रस्तुत। मै.

दोहारि-सं., द्वार। मै.

दौ

दौगब-क्रि., वेग सँ चलब। मै.

दौड़-सं., दौड़ैक क्रम। मै.

दौड़धूप-सं., विशेष प्रकारक दौड़ैक क्रम। मै.

दौड़ब-क्रि., विशेष वेगें चलब, धावन क्रिया। मै.

दौड़बरहा-सं., बराबरि तेजी सँ जाइ अबैक सिलसिला। मै.

दौड़ाक-विशे., दौड़ै मे प्रवीण। मै.

दौड़ा दौड़ी-सं., दौड़ि दौड़ि क' अर्थात् तेजी सँ जाइ अबैक क्रम । मै.

दौड़ाहा-विशे., दौड़ल डाक ल' जाइवाला । मै.

दौँन-सं., डाँट सँ बड़दक झुण्ड सँ दानाक झारब । मै.

दौन दोगाओन-सं., दाना झारैक ओ ओसबैक व्यापार । मै.

दौनबाह-विशे., दौनक बड़द हँकैवाला सहायक । मै.

दौनी-सं., दौन । मै.

दौहित्र-विशे., बेटीक बेटा । स. तत्सम

ध्य

ध्यान-सं., निश्चित लक्ष्य पर मनक एकाग्रता । सं. तत्सम

ध्येय-सं., आन्तरिक विचार । सं. तत्सम

ध्राङ्-अव्यय, मृदङ्गक बोल । मै.

ध्रुपद-सं., संगीतक प्रभेद । मै.

ध्रुव-सं., १. निश्चय । २. पौराणिक पुरुष । ३. पृथ्वीक धूरी रूपें मानल तारा । सं. तत्सम

ध्वजा-सं., पताका । सं. तत्सम

ध्वनि-सं., १. अव्यक्त शब्द । २. काव्यक चरम-शक्ति । सं. तत्सम

धक्कम धक्का-सं., अनेक बेर शारीरिक वेगें आघात । मै.

धक्का -सं., जोर सँ ठेलैक रूपक आघात । मै.

धक्का धुक्की-सं., बल सँ धक्का द' क' खेल । मै.

धक-सं., भय आ लज्जाक मिलल सन्देह । मै.

धकड़ब-क्रि., जतेक भ' सकए ततेक पेट मे धकेलने जाएब । मै.

धक द'-अव्यय, एकाएक अलक्षित रूपें । मै.

धकचुक-सं., सन्देह सँ मनक संकल्प विकल्प । मै.

धकचुकाएब-क्रि., सन्देह आ डरें मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

धकधक करब/धकधकाएब-क्रि., सन्देह आ अन्देसा सँ छातीक धमनीक तेज गति होएब । मै.

धकरबी-विशे., धाकर जकाँ मत्त आ पुष्ट स्त्री । मै.

धकल-सं., अनुमान, लगभग । मै.

धकला धकली-सं., एक दोसरा कें ठेलि खसबैक खेल । मै.

धकियाएब-क्रि., १. धक्का दैक चेष्टा करब । २. (लाक्षणिक) आरि छाँटि क' आनक खेत मे अपन सीमा बढ़ाएब । मै.

धकेलब-क्रि., १. धक्का द' क' ठेलब । २. धक्का द' क' दूर हटाएब । ३. जे भेटय से खयने जाएब । मै.

धखछूट्टू-विशे., क्रमश: लाज संकोचहीन । मै.

धखाएब-क्रि., संकोच आ सन्देह करब । मै.

धखाह-विशे., धाख सँ भरल । मै.

धग्गर-विशे., अत्यन्त प्रभावशाली । मै.

धङाएब-क्रि., लात सँ अस्तव्यस्त कराएब । मै.

धज्जी उड़ाएब-क्रि., १. चेथड़ा चेथड़ा फाड़ि क' फेंकब । २. लोकक बीच अत्यन्त लज्जित करब । मै.

धज्जी करब-क्रि., कपड़ा आदि कें रत्ती रत्ती फाड़ब । मै.

धज्जी धज्जी होएब-क्रि., पुरान होइक कारणें रत्ती रत्ती फाटब । मै.

धड़क्का-अव्यय, तुरन्त आ तेजी सँ । मै.

धड़कन-सं., हृदयक धड़धड़ शब्द । मै.

धड़कब-क्रि., हृदयक धड़धड़ शब्द करब । मै.

धड़काएब-क्रि., बातचीत सँ भयभीत बनाएब । मै.

धड़की देब-क्रि., भयभीत क' क' प्रभाव जमाएब । मै.

धड़ द'-अव्यय, तुरन्त । मै.

धड़धड़-सं., एहि प्रकारक छातीक ध्वनि जे अन्देशा आ भय सँ होइत अछि । मै.

धड़धड़ाएब-क्रि., १. धड़धड़ शब्द करब । २. बेरोक टोक, निधोख जाएब आएब । मै.

धड़धड़ी-सं., अधिक जोर सँ छाती धड़कैक विकट रोग । मै.

धड़पट-अव्यय, निर्लज्जतापूर्वक बेरोकटोक । मै.

धड़पटाङ-विशे., आनक अनुरोधरहित निर्लज्जता भरल । मै.

धड़फड़-सं., चंचलता भरल अगुताइ । मै.

धड़फड़ाएब-क्रि., चंचलता सँ अगुताएब । मै.

धड़फड़िया-विशे., अस्थिरतापूर्वक अगुताइवाला । मै.

धड़हर-सं., अति प्राचीन उँचगर स्थान । डीह । मै.

धड़ाक द'-अव्यय, लगले अप्रत्याशित रूपें । मै.

धड़ाका-अव्यय, देखू—"धड़क्का" । मै.

धड़ाधड़ि-अव्यय, लगले लागल जल्दी सँ। मै.

धड़िङ-विशे., उचित सँ बेसी लम्बा। मै.

धत्तूर-सं., फूल विशेष। सं. तत्सम

धत !-अव्यय, संकोचवाला बातक निषेधक शब्द। मै.

धतपत-अव्यय, लगभग, करीब सम्भवतः। मै.

धताएब-क्रि., बात कें पकड़ि गञ्जनक द्वारा सिर नीचाँ कराएब। दोष प्रकाशित कराकय स्वीकार कराएब। मै.

ध' तानब-क्रि., अपन उत्साह मे बिन सोचनै विचारनै चलि देब अथवा कोनो काज ठानि देब। मै.

धताल-विशे., अविराम आ तेजी भरल गतिवाला। मै.

धतालबूढ़-विशे., भरिम देहवाला अधिक बूढ़। मै.

धतिङ-विशे., स्थावर बूढ़। अत्यन्त बूढ़। मै.

धथूर-सं., देखू—"धत्तूर"। सं. तद्भव

धधकन-सं., प्रज्ज्वलित होइक रूप। मै.

धधकब-क्रि., ज्वाला उठैत प्रज्ज्वलित होएब। मै.

धधकाएब-क्रि., प्रज्ज्वलित करब। मै.

धधकी-सं., (लाक्षणिक) अचानक क्रोधक बेग। मै.

धधरा-सं., घनीभूत ज्वाला। मै.

धधाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मद सँ उद्दण्ड होएब। मै.

धधिकत-अव्यय, ढोलक मृदङ्गक ताल। मै.

धधियाएब-क्रि., अचानक बिना श्रमक अधिक लाभ सँ उन्मत्त बनब। मै.

धन्धा-सं., जीविकाक व्यवसाय। मै.

धन्नासेठ-विशे., आकस्मिक धनक प्राप्ति सँ बनल महाधनिक। (लाक्षणिक)। मै.

धन्य-विशे., उत्तम भाग्यशाली। सं. तत्सम

धन्वन्तरि-सं., वैद्यक शास्त्रक प्रवर्तक। मै.

धन-सं. चल अचल सम्पत्ति। मै.

धनकट्टा-विशे., धान कटैवाला वोनिहार। मै.

धनकटनी-सं., धान कटैक समय क्रम। मै.

धनखेती-विशे., धान उपजैवाला वा धान भरल खेत। मै.

धनगर-विशे., अधिक धान भरल। मै.

धनचर-सं., संगहिं संग अनेक कार्य्यक चिन्ता आ व्यग्रता। मै.

धनछूहा-सं., ऐ नामक छोट पक्षी विशेष। मै.

धनतेरस-सं., पावनि विशेष, कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के धन्वन्तरि त्रयोदशी। मै.

धनपनियाँ-विशे., धानक गाछ कें वृद्धि करै मे उपयोगी पानि। आवश्यकतानुसार धानक खेतक पानि। मै.

धनबताहि-विशे., धन भेने उन्मत्त भ' गेनिहारि। मै.

धनबधहा-विशे., केवल धनखेतीवाला बाध। मै.

धनबालि-सं., मकइक डाँट मे उपर बहराएल सीस। मै.

धनमन्त-विशे., पूर्वापर सँ धनिक। मै.

धनमी-सं., धनुष। मै.

धनरोपनी-सं., धान रोपैक क्रम। मै.

धनवान-विशे., धनिक। सं. तद्भव

धनसीस-सं., देखू—"धनबालि"। मै.

धनहर-विशे., धान उपजैवाला खेत। मै.

धनहा-विशे., धानवाला, धानक बनल। मै.

धनाढ्य/धनाढ़-विशे., अधिक धनक कारणें प्रसिद्ध। सं. तत्सम/सं. तद्भव

धनि-सं., अभाव मे व्यग्रता भरल आवश्यकता पूर्तिक चिन्ता। मै.

धनिक-विशे., धनवान, धन भरल। सं. तत्सम

धनिकठेंठ-विशे., कनेके धन सँ गौरव करैवाला। मै.

धनिकत-सं., धनिकपनाक अहंकार। मै.

धनिकपन-सं., धनिक बनैक भाव। मै.

धनिकहा-विशे., धनवाला। मै.

धनिसन-सं., उपेक्षा भाव सँ अवहेलना, अनठा देवाक भाव। मै.

धनी-विशे., धन भरल लोक। सं. तत्सम

धऽनी-सं., मसालाक वस्तु। मै.

धनी-विशे., उत्तम स्त्री, धन्या। सं. तद्भव

धनु-सं., राशि विशेष। सं. तद्भव

धनुष-सं., धनमी। वाण छोरैवाला अस्त्र। सं. तद्भव

धनुही-सं., गुलेंती, गोली मारैवाला धनुष। मै.

धनेतरि-सं., औषध विशेष। मै.

धपड़ धपड़-अव्यय, वेग सँ पैघ डेग सँ चलैक शब्द। मै.

धपड़ि चलब-क्रि., जोर सँ पैघ पैघ डेगें चलब। मै.
धप द'-अव्यय, आकस्मिक रूपें। मै.
धपाएब-क्रि., नुकाकय आनक चरित्र देखब। मै.
धपाक द'-अव्यय, अचानक जल आदि मे खसैक शब्द। मै.
धपाड़-सं., जल मे अधिक एम्हर ओम्हर चलला सँ उत्पन्न विकार। मै.
धपाड़ब-क्रि., जल मे अधिक चलि क' विकार जगाएब। मै.
धपधप-अव्यय, अधिक दूरधरि अड़क बिना स्थिति। मै.
धपेधप/धपोधप-विशे., दूरधरि अनावृत, चारू दिश खुलता रहने दूरधरि बेपर्द। मै.
धब्बा-सं., दाग, कलङ्क, चिह्न। मै.
धबधब-अव्यय, अप्रत्याशित रूपें लगले लागल। मै.
धबब-क्रि., आभासित होएब। धीरें धीरें प्रवेश करब। प्रकाशित होएब। उगब। मै.
धबाएब-क्रि., पकड़ैक हेतु नुकाएल रहब। मै.
धम्म द'-अव्यय, अचानक तीव्र रूपें। मै.
धमक्का-सं., जोर सँ विस्फोटक ध्वनि। किछु भारी वस्तुक खसने धरतीक कम्पन समेत शब्द। उ. तद्भव/मै.
धमक-सं., भारी वस्तुक चलने वा वेग सँ खसने कनेक कम्पन सहित गम्भीर शब्द। मै.
धमकब-क्रि., भारी वस्तुक वेग सँ चलने वा खसने कम्पनसहित गम्भीर शब्द होएब। मै.
धमकाएब-क्रि., अनिष्टक सम्भावना देखाकय भय उत्पन्न कय तर्जन करब। मै.
धमकी-सं., अनिष्ट करैक डेरबैक चेष्टा सँ गर्जन। मै.
धमगज्जर-सं., एकै समय मे सब दिश गीत बाजनक उच्च ध्वनि। मै.
धमधूसर-विशे., शरीरें, बुद्धियें आ चालियें मोट। मै.
धमनभट्ठी-सं., धातु गलबैक यान्त्रिक चूल्हि। मै.
धमनी-सं., शरीर मे लेहू कें उत्क्षेपक शिरा। सं. तत्सम
धमर धमर-अव्यय, वेग सँ चलैक विशेष ध्वनि। मै.
धमाउर-सं., जोर सँ दौड़ैत उन्मत्त जकाँ नाच। मै.
धमाका-सं., भौतिक पदार्थक विस्फोट ध्वनि। उ. तत्सम
धमाड़-सं., जोर सँ दौड़ि नाचब। भारी वस्तुक जोर सँ चलैक ध्वनि। मै.
धमाधम-अव्यय, भारी वस्तुक लगले लागल चोटक ध्वनि। मै.
धमियाँ-सं., हाथक बीनल धपोली पेनवाला छोट वासन। मै.
धर्कट-विशे., मान आ आनि पीबि क' स्वार्थ साधैले आतुर। मै.
धर्खन-सं., निर्लज्जता, दीनतापूर्वक याचना। मै.
धर्खनाह-विशे., निर्लज्ज भ' क' याचना कयनिहार। मै.
धर्खनिया-सं., निर्लज्ज एवं दीन बनि क' याचना करैक चेष्टा। मै.
धर्छन-सं., दू व्यक्तिक द्वारा भारी वस्तु उगहैक बाँसक फट्ठीक चचरी। मै.
धर्छी-सं., वस्तु रखैक हेतु रस्सी सँ लटकाओल मचान जकाँ चचरी। मै.
धर्ता-विशे., धारण करैवाला। सं. तत्सम
धर्म-सं., सत्कर्मक व्यवहार, सद्भाव। पुण्य—प्रकृति सँ देल गुण धर्म थिकैक। मनुष्य, पशु, पक्षी आ कीट ऐ चारू प्रकारक जीव मात्रक जे गुण छैक सैह धर्म थिकैक। मनुष्य छोड़ि क' शेष तीनू जीव कें ज्ञान सुप्त रहैत छैक तँ ओ सब अपन धर्म (गुण) स्वयं नहि चीन्हि सकैत अछि।

मुदा मानवक ज्ञान विकसित रहैत छैक तँ मानव परक मानवता मात्र धर्म थिकैक। ओहि मानवताक पोषक जतेक व्यवहार (आचार) हेतै से सबटा धर्म थिकैक। ई धर्म मूलतः दू प्रकारक होइत अछि—लौकिक आ वैदिक।

लौकिक धर्म ओ थीक जे समाजक रीतिक अनुकूल कर्त्तव्य होइत अछि तथा जे समाजक हित होइत अछि जेना—परस्पर सहानुभूति, स्नेह आदि।

वैदिक अर्थात् आध्यात्मिक धर्म ओ थीक जाहि सँ अदृश्य शक्तिक अर्जन करैक अपन आतमाक प्रबल गुण केवल ज्ञान द्वारा प्रस्फुटित होइत रहए। दया, क्षमा आदि जे दशविध धर्म भागवत सब मे

कहल गेल अछि। सब सँ बढि अहंकारक त्याग मानवताक मूल धर्म थिकैक।

यैह सनातन धर्म थीक जे विश्व मे कतौ पाओल जाइछ आ भविष्यौ मे रहतैक। आन कोनो एकाँगी सिद्धान्तवाला धर्म सम्प्रदाय रूपें एहीं धर्मक अन्तर्गत भय जाइत अछि।

एहीं मानवता कें स्थिर अथवा उज्ज्वल करैक चेष्टा मे तीर्थ व्रत आदि अनेक अदृश्य शक्तिक उपासनाक समस्त मनक मृदुतावाला प्रकार धर्म कहबैत अछि। सं. तत्सम

धर्म कर्म-सं., धर्मक पोषक कर्म अर्थात् क्रिया। सं. तत्सम

धर्मतः-अव्यय, मनुष्यताक अनुकूल। सं. तत्सम

धर्मात्मा-विशे., धर्मक टा भावनावाला। सं. तत्सम

धर्मादा-विशे., धर्म काजक हेतु निहुछल। मै.

धर्मार्थ-विशे., धर्म कार्य ले राखल। सं. तत्सम

धर्माहु-अव्यय, धर्मपूर्वक, धर्म कें साक्षी कय। मै.

धर्मिष्ठ-विशे., धर्म मे लीन। सं. तत्सम

धर्मी-विशे., धर्मवाला। सं. तत्सम

धर्षण-सं., दबाएब, हराएब, धमकाएब। सं. तत्सम

धर-सं., शरीरक गर्दनि सँ निचला भाग। मै.

धऽर-सं., कपड़ा आदि सँ कयल ओहार, पर्दा। मै.

धरखन-सं., देखू—"धर्खन"। मै.

धरड-विशे., अत्यन्त ऊँच। मै.

धरछन-सं., भिख माङब जकाँ प्रार्थना। मै.

धरणी/धरती-सं., पृथ्वी। धर्त्री। सं. तत्सम/सं. तद्भव

धरती धमक-विशे., धरती कें धमक'बैवाला, (लाक्षणिक) एहन जमल दही जकरा कटै से धरती तक दलकि जाय। मै.

धरना देब-क्रि., एक प्रकारक सत्याग्रह करब। अपन स्वार्थ सिद्धि धरि द्वार नहि छोड़ब। मै.

धरनि-सं., घरक चार एवं बरेरी कें उठौने अर्थात् तनने रखैवाला नामानामी देल मोट काठ। धरैन सेहो कहबैछ। मै.

धरनी-सं., देखू—"धरणी"। सं. तद्भव

धरपट-अव्यय, बेरोकटोक। मै.

धरपटांग-विशे., बेरोकटोक तेज गतिवाला। मै.

धरपड़न-सं., स्वार्थ सिद्धिक प्रार्थना हेतु द्वारि सेवने रहब। मै.

धरब-क्रि., १. दाँत सँ काटब। २. पकब। ३. राखब। मै.

धरम-सं., देखू—"धर्म"। सं. तद्भव

धरमदोष-सं., धर्म मे होम'वाला अपराध। मै.

धरमाइ-सं., धर्मरम क्रिया। मै.

धररोहि-सं., आगू पाछू ओर छोररहित पाँती। मै.

धरहर-विशे., बहुत दिन सँ जोगा कय राखल वस्तु। मै.

धरहर-सं., पोखरि आ नदीक ऊँच कछेर। मै.

धरहा-विशे., धरैवाला। मै.

धरही-विशे., एक धारा (१० कौ०) क तौलक वासन। मै.

धरहेरि-सं., दू पक्षक मारि मे दूनू गोटा के रोकिकय पकड़ैक चेष्टा। मै.

धरहेरिया-विशे., मारि मे दूनू पक्ष कें रोकैत पकड़ैवाला। मै.

धरा-सं., पृथ्वी। सं. तत्सम

धराउ-विशे., जोगा क' रखैवाला। मै.

धराउर-विशे., पहिने सँ राखल वस्तु। मै.

धराएब-क्रि., १. रखाएब। २. पकड़ाएब। ३. कटाएब। मै.

धराठ-विशे., अधिक दिनुक राखल। मै.

धरानि-सं., धैर्यक संग विवेक। मै.

धरानी-सं., दुर्दशा वा गति, दुर्गति। मै.

धराह-विशे., धरैक (दाँत सँ कटैक) स्वभाववाला। मै.

धरि-अव्यय, पर्यन्त। प्रयोग—"जलाशय धरि शिष्ट लोक कें अरियातैक चाही।" मै.

धरि-सं., कोनो वस्तुक। ऊँच कछेर। मै.

धरिका-सं., अम्मटक नाम नास आ चाकर खण्ड। मै.

धरिया-सं., अबोध बच्चा कें पहिरैवाला विष्ठी। मै.

धरियाएब-क्रि., पाँती लगाएब। मै.

धऽरी-सं., तौलक मानक निश्चय। मै.

धरुआ-विशे., धरल राखल। मै.

धरोहरि-सं., थाती, दिनानुदिन जमाकयल राशि। मै.

धरौआ-विशे., १. धरबैवाला। २. धरल राखल आन लोकक वस्तु। मै

धलैया-सं., जोर जोर सँ पिटाइ। मै.

धवल-विशे., उज्ज्वल। सं. तत्सम

धसधसाएब-क्रि., कसि क' वेग सँ दबा देब वा धँसाएब। मै.

धसना-सं., कटि कटि क' माटिक विशाल खण्डक खसब। मै.

धसना खसाएब-क्रि., बिन बजाओल बिन आग्रहैं खाइक लोभें जमल रहब। मै.

धँसब-क्रि., १. नीचाँ दिशुक गति होएब। दबि जाएब। २. (लाक्षणिक) नीच संस्कारक समाज मे लोभें मिलि जाएब। मै.

धसमस-सं., तारतम्य। मै.

धँसलहा-विशे., दबि गेलवाला, नीचक संग मिलल-वाला। मै.

धँसाएब-क्रि., नीचाँ घुसाएब, भीतर दिश क' देब। मै.

धँसार-सं., धँसैवाला स्थान। मै.

धहगर-विशे, अत्यन्त उपर उठल, उँचगर। मै.

धहधह-विशे., अविच्छिन्न ज्वाला भरल। मै.

धहाएब-क्रि., बलक मद सँ उद्दण्ड बनल रहब। मै.

धा

धाइ-विशे., शिशु कें अपन दूध पिया क' सब प्रकारें पालन करैवाली, सेविका, धात्री। मै.

धाइँ-सं., जड़ि विशेष, विषहरा स्थान मे आगू जाइ-वाला विशेष औषधि। मै.

धाइँ द'-अव्यय, वेगर भ' क' अचानक। मै.

धाइँ धाइँ-अव्यय, लगले लागल। मै.

धाइम-विशे., कोनो लौकिक ग्राम देवताक विशेष साधक। मै.

धाएब-क्रि., दौड़ब। मै.

धाकर-सं., मोट आ भयंकर साँढ़। मै.

धारब-सं., भय मिलल संकोच। मै.

धाङनि-सं., पैर सँ खूनैक (पैर राखि राखि दूषित करैक) प्रक्रिया। मै.

धाङब-क्रि., पैर रखला सँ नष्ट करब। मै.

धाङर-सं., आदिवासी जाति विशेष। मै.

धात्!-अव्यय, कोनो जीव पशु आदि कें भगबैक शब्द। मै.

धात-सं., प्रवाह सँ आएल बालु वा माटि सँ बनल ऊँच मरुस्थल। मै.

धातु-सं., १. सोन, चानी, ताम पित्तरि, काँस, जस्ता, लोह आ राङ ई अष्ट द्रव्य। २. रस, रक्त, मांस, मेद, वसा, मज्जा, हाड़, वीर्य्य ई आठो शरीर धारण करैवाला वस्तु। ३. क्रियाक रूप बनबैवाला शब्द। सं. तत्सम

धातु खसब-क्रि., स्वप्न मे अथवा मल मूत्रक संग वीर्य्यक बहार होएब। (रोग विशेष)। मै.

धाधर-विशे., अशुभ सूचक। मै.

धाँधर-सं., अन्तहीन खोह। मै.

धाधा धिनता-अव्यय, तबला मृदङ्गक बोल। मै.

धान-सं., प्रसिद्ध अन्न विशेष। मै.

धाना-सं., उठल स्वाभाविक गर्दनि। मै.

धानी-सं., हरियर आ पीयर मिलल रंग। मै.

धाप-सं., १. बिना छतवाला घर लागल ओसारा। २. डेगक दूरी। मै.

धाबब-क्रि., १. दौड़ब। २. हुलकी देब। मै.

धाम-सं., तेज अर्थात् उग्रता भरल देवताक स्थान। सं. तत्सम

धामन-सं., विशाल साँप विशेष। मै.

धामा-सं., छितनाल मुहवाला घास पातक बीनल पैघ पथिया। मै.

धामि-विशे., देखू—"धाइम"। भगता। मै.

धामी-सं., धामाक छोट रूपवाला पथिया। मै.

धार-सं., १. नदी। २. अस्त्र आदिक कटैवाला तेज भाग। ३. ऋण बिना चुकाओल। मै.

धार-विशे., शुभवर्धक। मंगलदायी। मै.

धारक-विशे., धारण करैवाला। रखैवाला। मै.

धारकुधार-विशे., कोनो वस्तु कखनौ शुभदायी आ कोनो वस्तु ककरो अशुभकारी। मै.

धारकोन-अव्यय, कत्तौ कत्तौ। मै.

धारणा-सं., जमल विश्वास। सं. तत्सम

धारन-सं., रखैक क्रिया। सं. तद्भव

धारनि-सं., ऋण आदि लेल वस्तु। मै.

धारब-क्रि., १. बिना चुकाओल रीन राखब । पहिरब । २. मंगल करब । मै.
धारा-सं., नदीक जल आदिक प्रवाह वेग । मै.
धारावाही-विशे., बिना रोकल गतिवाला । सं. तत्सम
धारी-सं., पाँती । मै.
धारेझा बनब-क्रि., (लाक्षणिक) छानी बनैक दाबी करब । मै.
धाह-सं., ताप, प्रताप । मै.
धाही-सं., कनेक उगैक क्रम । मै.
धाही देब-क्रि., उगैक लच्छनवाला प्रकाश होएब। मै.

धि

धिक्-अव्यय, अधल वृत्तिवाला कें नीच बनवैक शब्द । सं. तत्सम
धिक्कार-सं., नीचता देखवैक शब्द । सं. तत्सम
धिङ रोपब-क्रि., अपन स्वार्थक हेतु उग्रता सँ जिद्द करब । मै.
धिन्ना/धिनता-अव्यय, तबलाक बोल । मै.
धिपाएब-क्रि., अत्यन्त गरम बनाएब । मै.
धिया-सं., कन्या जाति, बेटी । मै.
धिरकारब-क्रि., धिक्कार देब । मै.

धी

धी-विशे., बेटी । मै.
धीआ पूता-सं., बालक बालिक, बेटा बेटी मिलल बाल वर्ग । मै.
धीङ्-अव्यय, मृदङ्गक बोल । मै.
धीपब-क्रि., अत्यन्त गरम होएब । मै.
धीपल-विशे., अत्यन्त गर्म बनल । मै.
धीपन कोढ़ि-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त आलसी । मै.
धीमड़-विशे., मन्द गतियें काज कयनिहार। एके छनक काज मे विलम्ब कयनिहार । स्त्री० धीमड़ि । मै.
धीयनि-विशे., बेटी वर्गवाली स्त्री लोकनि । मै.
धीया-विशे., बेटी । प्रयोग—"एहन बुढ़बा कें कोनो देवनि धीया ।" नचारी । मै.
धीर-विशे., धैर्य सँ आ विवेक सँ काज कयनिहार । सं. तत्सम
धीरें धीरें-अव्यय, मन्दें मन्दें । मै.
धी सोआसीन-विशे., बेटी वर्गक सोहागिन । मै.

धु

धुआँइन-विशे., धूआँक रंग एवं गन्धवाला । मै.
धुआनि ढेकार-सं., अपच द्वारें विकृत गन्धवाला ढेकार । मै.
धुआँएब-क्रि., धूआँ सँ भरि जाएब । धूआँ सँ विकृत होएब । मै.
धुक्कड़-सं., वसातक वेग सँ अथवा सघन धूआँ सँ अन्हराओल स्थिति । मै.
धुक्क द' उठब-क्रि., एकाएक धूआँ, ज्वाला आ वसातक वेग होएब । मै.
धुकचुकाएब-क्रि., अन्देशा सँ मनक दहलैत रहब । मै.
धुकधुक करब-क्रि., अन्देशा, डर सँ हृदय मे विशेष कम्पन होएब । मै.
धुकधुकी-सं., १. छोट बच्चाक छातीक गहना । २. अन्देशा मे हृदयक तेज कम्पन । मै.
धुकारी-सं., अधिक धधराक संग धूआँवाला अगियासी । मै.
धुकुर धुकुर-विशे., १. मन्द मन्द जरैवाला आगि । २. मन्द गतियें चलैवाला गाड़ी । मै.
धुजा-सं., ध्वजा । सं. तद्भव
धुत्-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.
धुत्त-विशे., मद सँ ज्ञान ध्यानरहित । मै.
धुत्थुर बूढ़-विशे., अत्यन्त झोखरल देहवाला बूढ़ । मै.
धुतहू-सं., बड़का लम्बा सिंगा, वाजन । मै.
धुतहूर-सं., धत्तूर फूल । सं. तद्भव
धुँधकाएब-क्रि., धूआँ सँ अन्हार करब । मै.
धुँधकाल-सं., धूआँ, धौन्ह आ अधिक मेघ सघन रहला सँ अन्हरौन । मै.
धुँधराएब-क्रि., धूआँ धूरा सँ आच्छन्न रहब । मै.
धुँधराह-विशे., अन्हराएल । मै.
धुधुआएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) आडम्बरक विस्तार करब । २. अधिक धधरा करब । मै.
धुधुनमुहाँ-विशे., सदिखन धूआँसन मुह केने रहैवाला । मै.
धुन्ध-सं., अधिक धौन्ह सँ नहि सूझैक स्थिति । मै.
धुन्धकार-सं., धौन्ह सँ अन्धकारक स्थिति । मै.

धुनकी-सं., तूर फलक'वैक यन्त्र । मै.

धुनाइ-सं., १. (लाक्षणिक) अधिक पिटान । २. तूर धूनैक बोनि । मै.

धुनाएब-क्रि., तूर कें धुनकी सँ छिन्न भिन्न कराएब । मै.

धुनि-सं., मनक भावना । मै.

धुनियाँ-विशे., तूर कें तोड़ि छिन्न भिन्न करैवाला । मै.

धुनी-सं., स्थायी रूपक अगियासी । साधु सभक निरन्तर जरैवाला घूर । मै.

धुनेठ-सं., धुनैक यन्त्र । विशे., धुनला सँ उड़ि क' जमा भेल तूर । मै.

धुपकाठी-सं., धूपक द्रव्य भरल काठी । मै.

धुपछाँह-सं., मिलल जुलल धूप आ छाया । मै.

धुपदानी-सं., धूप जरबैक वासन । मै.

धुपबत्ती-सं., धूपवाला पदार्थ साटि बनाओल जरवैक लेल बत्ती । मै.

धुपाएब-क्रि., १. धूआँ भरि क' पकबैक काज कराएब । २. धूप मे पसारब । मै.

धुपुआ-विशे., धूप देला सँ पकाओल । मै.

धुम्मा-विशे., मोट डाँट आ नमहर शरीरवाला मूर्ख । स्त्री० धुम्मी । मै.

धुमधुमाएब-क्रि., लगातार मुक्का सँ मारब । मै.

धुमनाइन/धुमनाह-विशे., धुमनक गन्धवाला एवं धूमनवाला । मै.

धुमरी-विशे., मोटाइ आ आलस सँ भरलि स्त्री । मै.

धुमसाह-विशे., सोरगुलक संग उपद्रव करैवाला नेना । मै.

धुमसाही-सं., कोलाहलपूर्ण कार्य्यक व्यग्रताक संग अधिकता । मै.

धुमसिया-विशे., कोलाहल संग उपद्रावी नेना । मै.

धुमसुर-सं., कोलाहल आ उठापटकक संग अशान्ति । मै.

धुमसूर-सं., ईंटा माटि बैसाकय पीटि ठोस करैवाला भारी लोहक वस्तु । मै.

धुमुहां-विशे., धूआँसन अप्रसन्न मुहवाला । स्त्री० धुमुही । मै.

धुंछि:-अव्यय, व्यक्ति कें दूषित करैवाला शब्द । मै.

धुर-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.

धुरकिल्ली-सं., धूरी कें टेकने रहैवाला किल्ली । मै.

धुरखुर-सं., द्वार (दोहारि) क दूनू कातक स्थान । मै.

धुरझार-विशे., खुलल रूप वा बेरोकटोक । मै.

धुरता-सं., मधुर गारि आ गप्पक संग परिहास । मै.

धुर धुर करब-क्रि., कुकूर आदि कें भगबैक हेतु शब्द करब । मै.

धुरन्धर-विशे., विशेष निपुण, विशेषण । सं. तत्सम

धुरपटांग-सं., खुल्लम खुल्ला । मै.

धुरफन्दी-विशे., अनेक दाओपेंच सँ काज चलबैवाला । मै.

धुरबन्हू-विशे., विशेष देवताक हेतु निहुछि समयक प्रतीक्षा मे बान्हल । मै.

धुरबान्हब-क्रि., कबुला कय कोनो वस्तु देवताक नामे निहुछिकय राखब । मै.

धुर रपट-सं., उद्दन्डतापूर्वक व्यर्थ दौड़ धूप । मै.

धुरियाएब-क्रि., धूरा सँ भरि जाएब । धूरासन बनाएब । मै.

धुरिया साओन-सं., वर्षाक बदला धूरा उड़ैवाला साओन । मै.

धुसरी-सं., धान विशेष । विशे., अत्यन्त मोट विशाल आकारवाली स्त्री । मै.

धू

धू-सं., बहाना, छल । मै.

धूआँ-सं., जरैत वस्तु सँ वाष्पक सुखाएल आ सघन उठैत हल्लुक पदार्थ । मै.

धूआ-सं., आकार, चेहरा मोहरा । मै.

धूआँकस-सं., पक्का घर मे धूआँ बहराइक बनल विशेष बाट । मै.

धुआकाया-सं., आकृति अनुकूल शरीर । मै.

धूकब-क्रि., खाधि मे द' क' केरा आदि वस्तु कें पकै लेल फूकि कय धूआँ कसब । मै.

धूड़-सं., दू खेतक बीच देल मोट, चाकर आ सक्कत आरि । मै.

धू धू करब-क्रि., उमङ्ग सँ अतिशय भरब । मै.

धू धू जरब-क्रि., अत्यन्त वेग आ धधरा सँ जरब । मै.

धूनब-क्रि., यन्त्र सँ जमल तुर कें अलग क' क' ढील कय फलकाएब । मै.

धूनि-सं., अधिक तापक व्याकुलता । मै.

धूनि फेंकब-क्रि., १. अधिक कपड़ा पहिरने गर्मी उमगब । २. ज्वरक वेगक उपरान्त गर्मी सँ विकलता होएब । मै.

धूप-सं., सुगन्धित पदार्थक धूआँ । मै.

धूबब-क्रि., देखू—"धूकब" । मै.

धूमधाम-सं., बाजा गाजन, शब्द आडम्बर भरल उत्सव । मै.

धूमन-सं., धूपक सुगन्धित द्रव्य । मै.

धूम करब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु दुराग्रह सँ बारम्बार वेग सँ इच्छा प्रकट करब । मै.

धूम मचाएब-क्रि., कोनो वस्तु ले दुराग्रह सँ बारम्बार हल्ला मचाएब । मै.

धूमस-सं., हल्ला गुल्लाक संग उठा पटक करैत नेन्ना सभक खेलाएब । मै.

धूर्त-विशे., छल करैवाला । सं. तत्सम

धूर्तइ-सं., परिहास मे छल करैक चेष्टा । मै.

धूर्तबाज-विशे., छल करैवाला । मै.

धूर्ता-सं., परिहासक छल । सं. तद्भव

धूर-सं., १. एक कट्ठाक बीसम भाग क्षेत्रक मान । २. भजैत वा सपठैत (दोसर बड़दवाला) क बाँकी हर । मै.

धूर फढ़्या-अव्यय, लेश मात्रो । मै.

धूरा-सं., माटि आदि वस्तुक गर्दी, गर्दा । मै.

धूरी-सं., घूमैवा वस्तुक बीचक अड़ानी । मै.

धूलि-सं., गर्दा । सं. तत्सम

धूस-सं., अत्यन्त मोट आ गर्म ओढ़ना । मै.

धूसब-सं., दुर्गंजन करब । वचन सँ लज्जित करबैत दोष देखाकय आत्महीनताक बोध कराएब । मै.

धूसर-विशे., मलिन अगै बगैवाला । मै.

धूह-सं., खेत पथार मे उपद्रावी पशु कें डर समेत भ्रम देबाले बनल बाढ़ कयल मनुष्यक आबृत्ति । मै.

धृ

धृतघट्टू-विशे., धैर्य्यहीन । मै.

धृति-सं., धैर्य्य । सं. तत्सम

धृष्ट-विशे., ढीठ, निर्लज्ज याचक, धर्कट । सं. तत्सम

धे

धेनु-विशे., नव बियाएल गै' । मै.

धेनुआँ-विशे., धेनु गायवाला दूध । मै.

धेनुआर-विशे., नव बियाएल रहैक कारणें अधिक दूध वाली । मै.

धेह-सं., ध्येय, आन्तरिक विचार । सं. तद्भव

धै

धैं'-विशे., धाइ, धात्री । मै.

धैंड़-सं., ऊँच कछेर (किनार) । मै.

धैंन-सं., चिन्ता व्यग्रता सँ भरल मनोवृत्ति । मै.

धैंनसन-विशे., केहनो बातक कोनो प्रतिक्रियाक अभाव । मै.

धैर्य्य/धैरज-सं., आत्मसंयम, आत्मबल, सहनशक्ति । सं. तत्सम

धैल धरहर-विशे., राखल छिपाओल । मै.

धैलहा-विशे., बहुत दिनक छिपा क' राखलवाला । मै.

धैवत-सं., संगीतक मूल स्वर सब मे छठम स्वर "ध" विशेष स्वर । मै.

धो

धोअनि-सं., धोएला उत्तर बाँचल पानि । मै.

धोअब-क्रि., जल सँ परिमार्जन आ परिस्कार करब । मै.

धोआ-विशे., धोएल धोती आदि वस्त्र । मै.

धोआइ-सं., धोऐक पारिश्रमिक । धोएवाक क्रम । मै.

धोआएब-क्रि., अनका द्वारा स्वच्छ कराएब । मै.

धोआओन-सं., धोऐक बोनि । मै.

धोएब-क्रि., स्वच्छ करब, परिमार्जन आ परिष्कार करब । मै.

धोकड़कस्सा-विशे., धोकड़ा मे कसि क' ल' जाइवाला । मै.

धोकड़ा-सं., गहींर आ साँकर सीयल सौन वा मोट कपड़ाक वासन । बोरा । मै.

धोकड़ी-सं., अंगा मे बनल वा कपड़ाक छोट छीन वस्तु रखैक स्थान । मै.

धोंकनी-सं., कृत्रिम बसात दैक यन्त्र । भाथी । मै.

धोखरब-क्रि., जल आदि द्रव सँ विकार झरब, स्वच्छ होएब । मै.

धोखा-सं., भ्रम, गलती, चूक । मै.
धोखाएब-क्रि., भ्रम मे पड़ब । सन्देह करब । मै.
धोखा देब-क्रि., विश्वासघात करब । मै.
धोखोधड़ी-सं., सन्देह करैक क्रम । मै.
धोखाबाज-विशे., धोखा दैक स्वभाववाला । मै.
धोखार-सं., आघात सँ झरि क' खसल विकार । मै.
धोखारब-क्रि., जल आदि सँ आघात एवं मर्दन कय झरल विकार । मै.
धोखाह-विशे., सन्देह आ भ्रमवाला । मै.
धोंछ-विशे., नीचता भरल लोक । स्त्री० धोंछि । अत्यन्त अनादर मे धोंछिया । मै.
धोटकी-सं., दूनू ठोर जुटला उत्तर बनल मुहक रेखा । मै.
धोतियाहा-विशे., धौत परीक्षा मे उत्तीर्ण पण्डित । पूर्व मे राज द्वार मे पण्डितक परीक्षालय धोती दय सत्कृत पण्डित । मै.
धोती-सं., पुरुषक डाँर सँ नीचाँ पहिरैवाला नमहर वस्त्र । मै.
धोधराह-विशे., अनेक धोधरि भरल गाछ । मै.
धोधरि-सं., अपनै आप गाछ मे बनल खोह । मै.
धोधार-सं., भीतरै भीतर गाछ, पहाड़ मे स्वतः बनल बहुत दूरधरि सोन्हि । मै.
धोधि-सं., चर्बी सँ बढ़ि नमहर पेटक आकार । मै.
धोधिल-विशे., धोधिवाला । मै.
धोधैल-विशे., अधिक पैंघ धोधिवाला । मै.
धोन-सं., कोनो वस्तुक धोला पर बाँचल पानि । मै.
धोनधान-सं., कोनो वस्तु कें धो क' राखल पानि । मै.
धोनहा-सं., पोछि क' फेंकल,घृणावाला स्थूल वस्तु । मै.
धोनाह-विशे., वेशी नाक सँ नमरल पोटावाला । मै.
धोनि ढेकार-सं., अपच अन्नक विकृत गन्धवाला मुह देने हठात् वायु वेग । मै.
धोपचट-सं., असावधानता । मै.
धोपब-क्रि., १. आकाश पाताल देखबैत फज्झति करब । २. झाँपब । मै.
धोबि-सं., कपड़ा स्वच्छ करैक व्यवसायी जाति । मै.
धोबियाही-सं., धोबिक वस्ती तथा काजक स्थान । मै.
धोबिघट्टा-सं., धोबिक कपड़ा खीचैक नियत स्थान । मै.

धौ

धौंक-सं., ताप, ज्वालाक झोंक । मै.
धौजनि-सं., दुर्दशा भरल परिश्रम, खटनी । मै.
धौत परीक्षा-सं., पाण्डित्यक परीक्षा लय धोती सँ सम्मानित करैक प्राचीन प्रणाली । मै.
धौन्ह-सं., प्राकृतिक वाष्पक वायुमण्डल मे सघनताक द्वारें दिनौं कें अन्धकार । मै.
धौर-अव्यय, माउगिक निषेधसूचक शब्द । मै.
धौरबी-विशे., पत्नी सँ अतिरिक्त केवल भोग ले राखलि स्त्री । रखैल । मै.
धौरी-विशे., लगहरि गाय । मै.
धौंल-सं., अधिक जोर सँ मुक्काक चोट । मै.
धौंस-सं., भय आदिक अनिष्टक डर सँ भरि धोखा दैक बात । मै.

न

न्याय-सं., उचित फरिछौक । सं. तत्सम
न्यार-सं., इच्छाक प्रकाश । मै.
न्यास-सं., १. स्थापना । २. आन्तरिक विचार । सं. तत्सम/मै.
न्यौं-सं., पेनी छानब, जड़ि रोपैक प्रक्रिया । मै.
न्यौंत-सं., निमन्त्रण । मै.
न-अव्यय, निषेध, अस्वीकार । मै.
नइ-अव्यय, अस्वीकार । मै.
नएँ-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.
नओ-संख्या, एक अंकक सब सँ पैघ संख्या । नओ इकाइँ । मै.
नक्कट्टा-विशे., १. (लाक्षणिक) नाम हसबैवाला । २. काटल नाकवाला । मै.
नक्का-विशे., पैघ नाकवाला । मै.
नक्कू-विशे., (लाक्षणिक) दुर्नामी । अधलाहें प्रसिद्ध । मै.
नक्तव्रत-सं., दिन रातिक व्रत । सं. तत्सम
नक्र-सं., मकर, हिंसक जलजीव । सं. तत्सम
नक्षत्र-सं., तारा (अश्विनी भरणी आदि) । सं. तत्सम
नक्षत्री-विशे., (लाक्षणिक) भाग्यशाली । सं. तत्सम

नककट्टी-सं., (लाक्षणिक) नाक कटैक दुर्यशक स्थिति। मै.
नकगर-विशे., १. (लाक्षणिक) समाज मे अग्रगण्य। २. पैघ नाकवाला। मै.
नकछेदा-विशे., छेदल नाकवाला। मै.
नकटा-सं., पक्षी विशेष। मै.
नकटी-सं., नाकक मल, नाकक सुखाएल कफ। मै.
नकडुब्बा-विशे., परम बूड़ि। देखू—"ठहक्का"
डुबल गौरवैं फुलगाल मे
नकडुब्बाजन नाक रहै छथि।
नकदड़री-सं., (लाक्षणिक) बारम्बारक तगेदा करबैक स्थिति। मै.
नकपिच्चा-विशे., पीचलसन नाकवाला। मै.
नकफेंचरा-विशे., दूर सँ पसरल नाकवाला। मै.
नकवासा-सं., नाकक अगिला भाग। मै.
नकवेसरि-सं., नाकक एक भागक छेदक गहना। मै.
नकमानि होएब-क्रि., दुर्दशा सँ काज सम्हारब। मै.
नकमुन्नी-सं., देखू—"नकबेसरि। मै.
नकल-सं., अनुकरण। उ. तत्सम
नकलनबीस-विशे., निन्दा रूपें आनक अनुकरण करैक प्रकृतिवाला। उ. तत्सम
नकली-विशे., तत्वहीन, यथार्थतारहित। उ. तत्सम
नकलोल-सं., अज्ञ, जकर बुद्धि हठें बात नै पकड़ि सकय। मै.
नकसा-सं., कोनो क्षेत्रक मापचित्र। उ. तत्सम
नकसा लागब-क्रि., (लाक्षणिक) चिन्ता समेत आपत्ति आएब। मै.
नकट्टा-विशे., (लाक्षणिक) सब ठाम नाम हसौनिहार। मै.
नकाढ़-सं., हिंसक जलजीव, गोहि। मै.
नकाम-विशे., काजक अयोग्य, नाकाम। हि. तद्भव
नकार-सं., १. 'न' अक्षर। २. 'नहि' कथन। ३. अस्वीकार। मै.
नकारब-क्रि., १. अस्वीकार करब, अधलाह जानि नहि गछब। २. अनुमोदन नहि करब। मै.
नकारि-सं., नाक वेदना। २. नाक बराबरि। मै.
नकियाएब-क्रि., नाकक बलें बाजब। मै.
नकुब्बी-विशे., नाक बढ़ल आम आदि फल। मै.
नकुसी-सं., लग्गी आदि मे बनाओल अंकुश। मै.
नकोर-विशे., नाक जकाँ आवश्यक एवं प्रधान, (लाक्षणिक) अत्यन्त उत्तम (खेत)। मै.
नख-सं., नह। सं. तत्सम
नखड़ा-सं., अनुकरण, ढंग धरब, अवास्तविक आचरण, अभिनय। मै.
नखत-सं., नक्षत्र। सं. तद्भव
नखसिख-सं., पैरक नह सँ माथ धरिक वर्णन। मै.
नखासी-सं., खोदामा कय चित्रक निखार। नक्कासी। उ. तद्भव
नग्न-विशे., वस्त्रशून्य देह। सं. तत्सम
नग-सं., महनाक बीच मे जड़ल रत्न वा रत्नक विकल्प। उ. तत्सम
नगद-विशे., सद्यः देल मूल्यक सिक्का। उ. तत्सम
नगदी-विशे., सद्यः मूल्य दय के लेल गेल। मै.
नगनिप्पी-सं., द्विरागमन आएल कनेयाँक बनाओल नाग (परिधिवाला स्थान) क चारिम दिन मे नीपैक प्रक्रिया। मै.
नगर-सं., धनी आ सुव्यवस्थित व्यापार एवं प्रशासनिक सघन क्षेत्रक ग्राम। सं. तत्सम
नगाड़ा-सं., बड़का ढोल, बहुत दूरधरिक सूचनाक वाजन। मै.
नङ्गधड़ङ्ग-विशे., चेतनो अवस्था मे नाङट रहैवाला लोक। मै.
नङ्गट-विशे., नग्नता सँ उपद्रव कयनिहार अर्थात् क्षाख संकोच भय छोड़ि उद्दण्ड। मै.
नङझर-सं., ओझरौट पर उपस्थित ओझरौट। मै.
नङटा-विशे., १. नाङ जकाँ रहैवाला बालक। २. नाङट रहनिहार। मै.
नङटाह-विशे., निर्लज्जता सँ दुष्ट प्रकृतिवाला। मै.
नङटिनियाँ-विशे., निर्लजि उद्दण्ड स्त्री, समाज मे दूषित। मै.
नङटे-विशे., नाङट भेल रहनै। मै.
नङठाह-विशे., समस्या भरल उपद्रावी। मै.
नङरा-विशे., विकृत रूपें चलैवाला, पङ्गु। मै.
नङराएब-क्रि., खञ्ज, पैर आ टांग अबाह रहैक द्वारें विकृत चलब। मै.

नङ्न-विशे., नग्न । निर्वस्त्र । मै.

नङरिमोड़ देब-क्रि., (लाक्षणिक) खुशामद मे द्वार धेने रहब । मै.

नङहान-सं., १. मैथुनक हेतु साँढ़ भँसाक गाय महिसिक उपर चढ़ैक रूप । २. नङ्ग क स्थिति । मै.

नङोचङो-अव्यय, एक काल मे अनेक दिशक बहुत काज सँ उत्पन्न व्याकुलता । मै.

नच्छतर-सं., देखू—"नक्षत्र" । सं. तद्भव

नचनियाँ-विशे., नाच करैक व्यवसायवाला । मै.

नचरब-क्रि., अभाव सँ विवश होएब । मै.

नचाएब-क्रि., १. कोनो वस्तु कें घुमाएब । २. नाच कराएब । मै.

नचार-विशे., अभावक द्वारें विवश । लाचार । मै.

नचारी-सं., १. महादेवक विनोदी लीलाक गीत । २. अभाव सँ उत्पन्न विवशता । मै.

नचौनिहार-विशे., नचबैवाला । मै.

नछोर-सं., नह आदि वस्तुक आघात सँ बनल चिह्न । मै.

नछोरब-क्रि., छोट हल्लुक वस्तु सँ चमड़ा पर हल्लुक आघात करब । मै.

नजरि-सं., दृष्टि । उ. तद्भव

नट्टा-विशे., भुट्ट शरीरवाला । मै.

नट्टिन-विशे., सभक सोझाँ बिना संकोच सँ नाचि गवैक व्यवसायवाली । आधा वेश्या । मै.

नट-विशे., अनेक प्रकारें लोक कें आकर्षित कय अस्थायी कपड़ घरा मे रहि चलता फिरता जीवनवाला । मै.

नटक चटक-सं., पहिरब, ओढ़ब आ वेशभूषा मे वेशी भड़कपन । मै.

नटकिया-विशे., नाटक करै मे कुशल । मै.

नटखट-विशे., उपद्रवी नेन्ना । मै.

नटखटाह-विशे., १. उनटपुनट काज । २. उपद्रव करैवाला । मै.

नटक्की-सं., संगीत आ कविता मय कथोप कथनवाला छोट नाटक । मै.

नटछट करब-क्रि., यथार्थता सँ दूर अपन उत्कर्ष जमबैक प्रयास करब । मै.

नटिनियाँ-सं., एक प्रकारक गारि । दुर्वृत्ती स्त्री । मै.

नटुआ-विशे., ग्राम्य नृत्यक व्यवसायवाला । मै.

नठब-क्रि., बात कें नकारात्मक वा अस्वीकार रूपें बदलि देब । मै.

नड़छब-क्रि., अचानक हाथ पैर उछालि कय क्रोधें गरजि उठब । मै.

नड़छराह/नड़छाह-विशे., हाथ पैर फेंकैत क्रोधें गरजैवाला । मै.

नड़तारा-सं., नगाड़ाक तर आ लग रहैवाला वस्तु । मै.

नड़पड़या-विशे., अव्यवस्थित कर्म आ वचनवाला । मै.

नड़ बहतर-विशे., वासनाक वेग मे बहैवाला । मै.

नड़ भराह-विशे., अवढंग, शरीरें आ मनें असन्तुलित रहैवाला । मै.

नड़ भसिया-विशे., ज्ञानशून्य, स्फूर्तिहीन । मै.

नड़हा उपास-सं., व्रतक दिन दिन राति उपास नै क' क' दिनभरिक उपास । मै.

नड़हा फौदार-विशे., (लाक्षणिक) स्त्री वा स्त्री पुरुष आपसी झगड़ा मे बिन पुछनौ पञ्चैती करैवाला । मै.

नड़ाएब-क्रि., भोजनक क्रम मे देल वस्तु कें छोड़ि देब । मै.

नड़ाठ-विशे., नड़ाओल, ऍंठ कय छोड़ल वस्तु । मै.

नड़ार-विशे., तृष्णा सँ माउगि के देखनिहार । मै.

नढ़रा-विशे., निर्लज्ज भ' क' माउगि मेहरि मे रहैवाला । मै.

नढ़राहेल हेलब-क्रि., निर्लज्जपना सँ सब ठाँ उतरि जाएब । मै.

नढ़िया-सं., गाम घर मे चोरा क' घूमैवाला गीदड़ । मै.

नढ़ियाठब-क्रि., (लाक्षणिक) घरपैसा गीदड़ कुकुर जकाँ भगाएब, बैलाएब । मै.

नढ़िनियाँ-विशे., पुरुषक संगम चाहैक प्रकृतिवाली । मै.

नढ़ेर-विशे., सतत अधलाह दृष्टि सँ मौगीक पाछू लागल रहनिहार । स्त्री० नढ़री । मै.

नणचोख-विशे., अधिक मैथुन करैक स्वभाववाला । मै.

नत्थी-सं., एकठाँ बहुत पत्र आदि कें एक छेद मे बन्हैक प्रक्रिया । मै.

नऽतऽ-अव्यय, निषेधसूचक । प्रयोग–"नऽ तऽ एना करी जे ।" मै.

न तन-अव्यय, आक्षेपक क्रोधक वचन । प्रयोग–"बदमास न तन ....।" मै.

नतिनी-विशे., बेटीक बेटी । मै.

नथ-सं., नाकक गोलाकार बड़का गहना । मै.

नथाएब-क्रि., १. मालजाल कें नाथ पहिराएब । २. पोथी पतरा कें एकठाँ छेदि बन्हाएब । मै.

नथिया/नथुनी-सं., नाकक गोल गहना विशेष । मै.

नद-सं., बड़का चाकर धार । मै.

नदिया-सं., अत्यन्त छोट नदी । मै.

नदी-सं., सामान्य नदी । मै.

नदी फिरब-क्रि., (लाक्षणिक) मल त्यागब । मै.

नन्हका-विशे., छोटका । स्त्री० नन्हकी । मै.

नन्हिया-सं., धान विशेष । मै.

ननकिरबा-विशे., अत्यन्त छोट नेन्ना मै.

ननघस्सी-सं., अत्यन्त कोमल घास । मै.

ननदोसि-विशे., ननदिक पति, पतिक बहिनोइ । मै.

ननविरखी-विशे., चुप्पेंचुप झगड़ा लगौनिहार, छिपछिप क घातक उपद्रव कएनिहार । मै.

ननमुहाँ-विशे., मुह कें दयनीय बना क' कम बजनिहार । मै.

ननियासासु-विशे., पति आ पत्नीक नानी । मै.

ननिहर-सं., नानीक गाम, मातृक । मै.

ननू-विशे., अत्यन्त दुलारू आ स्नेह पात्र । प्रयोग–"जे ननू से गर्भे ननू ।" मै.

नप्पा-विशे., कोनो वस्तु नपैक लेल निश्चित कयल वासन । मै.

नपड़ा-विशे., सारहीन, काजक अयोग्य । मै.

नपना-विशे., तात्कालिक अस्थायी नपैक वासन । मै.

नपाइ-सं., नपैक अर्थात् माप करैक कार्य । मै.

नपाएब-क्रि., नाप कराएब । मै.

नपाओन-सं., नपैक काज, नपैक पारिश्रमिक । मै.

नपुंसक-विशे., हिजड़ा, पुरुपत्व आ स्त्रीत्वहीन । मै.

नपोड़-विशे., सब प्रकारें सन्तुलित, उपयुक्त । मै.

नपौआ-विशे., १. नपैवाला । २. नपाकय आनल । मै.

नफगर-विशे., लागत सँ बेशी लाभ दैवाला । मै.

नफा-सं., खर्च सँ अधिक लाभ । मै.

नब्बे-संख्या, शून्य एकाँइ नौ दहाँइक अंक । मै.

न'ब-विशे., नूतन, नवीन । सं. तद्भव/मै.

नबकबारि-विशे., नवका तूरक लोक, नवयुवक । मै.

नबकर्मी-विशे., नौ टा कर्म कयनिहार । मै.

नबका-विशे., नव आएल, नव बनल, नव भेल । मै.

नबब-क्रि., लीबब, झुकब, प्रणाम करब । मै.

नबम-विशे., नौ संख्या मे रहैवाला । सं. तद्भव

नबमी-सं., नौ संख्या मे रहैवाली, पक्षक नौ संख्याक तिथि । सं. तद्भव

नबसिक्खा/नबसिखुआ-विशे., नव नव काज सीखि क' आएल । मै.

नबाएब-क्रि., झुकाएब, लिबाएब । मै.

नबाबी देखाएब-क्रि., बाबुआनी टेढ़ी करब । उ. तद्भव

नबारी-विशे., नव बयसवाला । मै.

नबासा-विशे., स्त्रीक नैहर दिशुक आएल धन । मै.

नबासी-संख्या, नौ एकाँइ आठ दहाँइक अंक । मै.

नबैत-सं., उत्सव मे अलंकृत सुन्दर द्वार तोरण । उ. तद्भव

नबैतखाना-सं., उत्सवक अवसर पर तोरण पर बजनियाँक बैसार । उ. तद्भव

नभ-सं., आकाश । सं. तत्सम

नम्मा-विशे., लम्बाकार । मै.

नम्माइ-सं., लम्बा होइक मान । मै.

नम-विशे., देखू—"नबम" । मै.

नमका-विशे., लम्बावाला । मै.

नमगर-विशे., नम्मासन । मै.

नमघोर-विशे., उचित सँ बेशी नाम लोक । मै.

नमछोर-विशे., अधिक नामसन । मै.

नमन-सं., प्रणाम, नमस्कार । स. तत्सम

नमपोर-विशे., नम्मा नम्मा अंगवाला । मै.

नमब-क्रि., माल जालक पानि पीयब । मै.

नमबैया-विशे., मालजाल कें पानि पीय'बैवाला । मै.

नमरब-क्रि., ढील भ' क' पसरब । मै

नमराएब-क्रि., खींचिकय बढ़ाएब। मै.

नमरान-सं., नमर'बैक प्रक्रिया। मै.

नमराह-विशे., नमरैक स्वभाववाला। मै.

नमस्कार-सं., दूनू हाथ जोड़ि कय मात्र प्रणाम। मै.

नमस्ते-अव्यय, नमस्कार। ठाढ़े ठाढ़ हाथ जोड़ि वचन सँ प्रणाम। मै.

नमहर-विशे., पैंघ। मै.

नमाइ-सं., लम्बाइ, नम्मा होइक मान। मै.

नमाओन-विशे., लम्बा जकाँ लगैवाला। मै.

नमी-सं., आर्द्रता। मै.

नमूना-सं., प्रतिरूप, प्रति छाया, आदर्श। उ. तत्सम

नमेर-सं., अन्न मे मिलल विभिन्न रूप वस्तु। मै.

नयन-सं., आँखि। सं. तत्सम

नर्तक-विशे., नचै मे निपुण। सं. तत्सम

नर-सं., १. मनुष्य। २. पुरुष जाति। सं. तत्सम

नरक-सं., दुर्गति, अधलाह कर्मक अधलाह स्थिति। सं. तत्सम

नरकटि-सं., खरही जकाँ नमछोर मोट डाँटवाला खढ़, सरकण्डा। मै.

नरकासुर-सं., पौराणिक राक्षस विशेष। सं. तत्सम

नरङ्गी-विशे., (लाक्षणिक) धूआ काया मे अत्यन्त छोट शरीरवाला। मै.

नरम-विशे., कोमल, सरस। मै.

नरमाएब-क्रि., कोमल होएब, सरस बनब। मै.

नरमी-सं., कोमलता। सरसता। मै.

नरशर लगाएब-क्रि., शर मे शर जोड़ि घात करब। मै.

नरही-विशे., १. बिना वेंटवाला कोदारि खुर्पी आदि अस्त्र। २. अधिक दिनधरि पानि जमल रहैवाला चौर। मै.

नरहेर-विशे., स्त्रीक वासना सँ पाछू लागि घूमैत रहनिहार। मै.

नराएब/नेराएब-क्रि., मालजालक गर्भपात होएब। मै.

नराओन-विशे., अयोग्य, अकर्मक, अपाटक। मै.

नरासाइ-सं., नाम हसाइ। दुर्य्यश। बदनामी। मै.

नरिया-सं., खपड़ाक प्रभेद। झँपैवाला खपड़ा। मै.

न'री-सं., बाँटल ताग, तागक लच्छा। मै.

नरुआ-सं., परिपाटीक अनुसार आँटी बनाओल झाँटल धानक डाँट। मै.

नरेटी-सं., कण्ठक मोटका नली। श्वास नली। मै.

नरै-सं., व्यवस्थित रूपें लगाओल गाछी। मै.

नरैठा-सं., दाना झारल धानक नारक आँटी। मै.

नरौ-विशे., बिना साम लागल समाठ। मै.

नल्ली-सं., शोणित बहैवाला मोट सिरा तथा कृत्रिम नली। पाइप, ट्यूब। मै.

नल-सं., पानिक साँकर वाहा। मै.

नलकूप-सं., चापाकल। मै.

नलकूबर-सं., कुबेरक पुत्र, देवता विशेष। मै.

नलिया-सं., कृत्रिम पातर नली। मै.

नली-सं., देखू—"नल्ली"। मै.

नव-विशे., नवीन। सं. तत्सम

नवग्रह-सं., १. गहना विशेष। २. नौ ग्रहक दल (रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु)। सं. तत्सम

नवमी-सं., पक्षक न'म तिथि। सं. तत्सम

नवल-विशे., नवीन। सं. तत्सम

नशाएब-क्रि., नाश क' देब। मै.

नष्ट-विशे., दूरि भेल। सं. तत्सम

नह-सं., नख, आङुरक आगू मे बढ़ल मल। मै.

नहकट्टी-सं., नह कटैक विधि। मै.

नहकेश-सं., क्षौर कर्म, अशौचक अन्तिम कर्म। मै.

नहङा-सं., स्त्रीगणक भीतर मे पहिरैवाला वस्त्रक खण्ड। अन्तर्वस्त्र। मै.

नहछू-सं., समाज मे कोनो एक वर्गक विवाहक अवसर पर वर कनियाँक हाथक आङुरक नह सँ लेहू बहार कय पानक संग दूनू के खोअबैक मिथिलाक विधि। मै.

नहटब-क्रि., १. एके काज मे एक वेर 'हँ' कहि दोसर वेर 'नौ' करब। २. नह सँ भूमि कोड़ब। मै.

नहरनी-सं., नह कटैक अस्त्र। मै.

नहरनी दे की बनरनी दे-अव्यय, (लाक्षणिक) एहन स्थिति जाहि मे दू मे सँ किछु एक टा के दैयैक पड़य। मै.

नहरि-सं., धार रूपें पानि बहैक वाट। मै.

नहला-सं., नौ टा चिह्नवाला तासक पत्ती। मै.

नहला पर दहला-विशे., (लाक्षणिक) एक पर एक बढ़ि क' रहैवाला । मै.

नहसलोक-विशे., आनक नीक नै देखि सकैवाला । मै.

नहसपन-सं., आनक अनिष्टे टा मनवैक बुद्धि । मै.

नहसूर-सं., नहक कोन बढ़ला सँ नहक व्यथा । मै.

नहाँइत-अव्यय, जकाँ, समान । मै.

नहाएब-क्रि., स्नान करब । मै.

न'हि-अव्यय, निषेध, विरुद्धक शब्द । मै.

नहिरा-सं., स्त्रीक बापक घर । मै.

नहूँ नहूँ-अव्यय, धीरें धीरें । मै.

नहेरि-सं., चूड़ी लहठीक व्यवसायी जाति, नहेरिया । मै.

ना

ना-अव्यय, न, नहि । मै.

नाँ-सं., नाम । मै.

नाइद-सं., मालजाल कें खाइक हेतु बनाओल बाँस काठ आ सीमेन्टक पेंघ वासन । मै.

नाइर-सं., हासू खुरपी आदिक बेंट मे लोह कें मोड़ि बन्धन । मै.

नाऊँच-विशे., ऊँच नहि, माथ ठेकैवाला घर आदि । मै.

नाउठ-विशे., सतरंजक खेलक चालि मे सह लगैक द्वारें अपन स्थान सँ नै चलैवाला बादसाह । मै.

नाओ-सं., नौका, नाह । मै.

नाओं-सं., नाम । मै.

नाओ काढ़ब-क्रि., नौका खेबब । मै.

नाओं काढ़ब-क्रि., तन्त्र मन्त्र सँ चोरक नाम उचारब । मै.

नाक-सं., शरीरक अंग विशेष, नासिका । मै.

नाक अजबारब-क्रि., (लाक्षणिक) शुभे अवसर पर छींकब । मै.

नाक कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच अपकर्म सँ अप्रतिष्ठित होएब । मै.

नाक गड़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) लोलुपता सँ कोनो वस्तु हथियबैले आगू भेल रहब । मै.

नाक डुबाएब-क्रि., १. समाज मे अप्रतिष्ठित बनब । २. कोनो वस्तु कें पबै लेल तृष्णा सँ भरि लागल रहब । मै.

नाक पर मांछी नै बैस' देब-क्रि., (लाक्षणिक) मे अभिलाषा पुराएब ने अभिलाषा प्रकट करैक अवसर देब । मै.

नाक फड़काएब-क्रि., (लाक्षणिक) क्रोध प्रकट करब । मै.

नाक बोरब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो स्वार्थ साधैले चिरकाल तत्पर बनल रहब । मै.

नाक भाडब-क्रि., (लाक्षणिक) विरोध प्रकट करब, निषेध करब । मै.

नाक भिड़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बिन कारणौं सबठाँ बलक प्रदर्शन करब । मै.

नाक भिनकाएब-क्रि., सदिखन सबठाँ सब कें अश्रद्धा करब । मै.

नाक भौंह टेढ़ करब-क्रि., (लाक्षणिक) असम्मति प्रकट करब, घृणा देखाएब । मै.

नाक मारब-क्रि., (लाक्षणिक) अश्रद्धा सँ विरोध करब । मै.

नाक रगड़ब-क्रि., अपन काज साधैले अत्यन्त खुशामद करैत रहब । मै.

नाकर नुकर करब-क्रि., (लाक्षणिक) चेष्टा सँ अस्वीकार तथा निषेध प्रकट करब । मै.

नाँक साँक होएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) दम घोटैक स्थिति होएब । २. कसि कय सम्पूर्ण भरि जाएब । मै.

नाँक सिकोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणा करब, असम्मति प्रकट करब । मै.

नाक सुकरब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणित मानब । मै.

नाका-सं., थोड़ क्षेत्रक हेतु पुलिसक शाखा स्थान । हि. तत्सम

नाकी देब-क्रि., नाक दबाकय बाजब । मै.

नाकी भरब-क्रि., १. सूतल मे नाकक शब्द करब । २. दीनता प्रकाश करैले नाकक बलें बाजि क' खुशामद करब । मै.

नाखुर-सं., पीड़ा दैवाला नहक कोनी । मै.

नाग-सं., १. पुरुष काल सर्प । स्त्री० नागिन । २. विवाहक समय मे चारू कोन पर केरा आ करची गाड़ि क' नवीन वस्त्र घेरि कय नव कनियाँक चारि दिन धरि संयम नियम सँ रहैक स्थान । मै.

नाग केशरि-सं., काश्मीरी फूल विशेष । मै.
नागफेनी-सं., काँटवाला जंगल । मै.
नागर-विशे., समाजक श्रेष्ठ । स्त्री० नागरि । मै.
नागरी-सं., कैथी लिपि विशेष । मै.
नागरिक-विशे., राज्य आ नगरवासी जनता । मै.
नागा-विशे., अनुपस्थित । सं., गैरहाजिरी । मै.
नागा-विशे., १. नागा क्षेत्र वासी । २. विशेष सम्प्रदायक साधु । मै.
नागा करब-क्रि., बीच बीच मे अनुपस्थिति करब । मै.
नागेसर-सं., देखू—"नाग केशरि । मै.
नाङ्घन-सं., कोनो वस्तुक उपर द' क' उठल डेग । मै.
नाङ्घब-क्रि., डेग हुनब, कोनो स्थान कें पार करब । मै.
नाङट-विशे., निर्वस्त्र । मै.
नाङर-विशे., टांग आ पैरक दोषें टेढ़ भ' क' चलनिहार । खंज । मै.
नाङरि-सं., पुच्छ, पुच्छर । विशेष अंग । मै.
नांच-सं., नृत्य, अंग विक्षेप पाद प्रक्षेप । मै.
नांचब-क्रि., नृत्य करब । अपन धुरी पर घूमब । मै.
नाटक-सं., परोक्ष लोकक सम्पूर्ण स्वभावक अनुकरण प्रदर्शन । अभिनय । सं. तत्सम
नाटकीय-विशे., नाटक सम्बन्धी । मै.
नाट खुट-विशे., भुट्ट आकार प्रकारवाला । मै.
नाड़ी-सं., रक्त धमनक शिरा । मै.
नाढ़र-विशे., मौगी कें देखितें पाछू लगनिहार । स्त्री० नाढ़रि । मै.
नाढ़ि-विशे., छिनारि, बिन गर्भधारण करैवाली । मै.
नाण-सं., पुरुष लिंग । मै.
नाणिमाँणि-अव्यय, (लाक्षणिक) कोनो अंगक कोनो व्यवस्थाक ठेकान । मै.
नाति-विशे., बेटा बेटीक बेटा । मै.
नाथ-विशे., रक्षक, स्वामी । सं. तत्सम/मै.
नाथ-सं., मालजालक नाक मे पैसाओल वश मे करैक डोरी । मै.
नाथनि-सं., मालजाल कें नथैक कार्यक्रम । मै.
नाथब-क्रि., मालजालक नाक के छेदि डोरी पैसाक' विवश करब । मै.
नाथी-सं., मालजाल के नथैवाला डोरी । मै.
नाद-सं., १. बहुत विस्तृत वासन । ध्वनिक उत्पत्तिक केन्द्र । मै./सं. तत्सम
नादि-सं., देखू—"नाद" । मै.
नाधिन धिन्ना-अव्यय, तबलाक बोल । मै.
नान्दी-सं., नाटक आदिक मंगलाचरण । सं. तत्सम
नान्हि टा-अव्यय, कनेके गोट । मै.
नाना-अव्यय, अनेक । मै.
नाना-विशे., माइक पिता । मै.
नाप-सं., कोनो वस्तुक अनुमारक मान । मै.
नापजोख-सं., मानक अनुसार नापैक आ तौलैक क्रम । मै.
नापत्ता-विशे., निपत्ता, विलीन, खोजलो पर नहि भेटैवाला । मै.
नापब-क्रि., डंडा वा आने कोनो वस्तु अथवा तराजू सँ मान बहार करब । मै.
नापी-सं., नाप करैक क्रम । मै.
नाबन-सं., डंडा पर बनाओल दीपक आधार । मै.
नाभि-सं., देहक बीच पेट मे ढोंढ़ी । मै.
नाभी-सं., चक्र आ पहियाक बीच मे धुरी पैसबैक गोलाकार शून्य । मै.
नाम-सं., कोनो व्यक्ति आ वस्तुक संकेत शब्द । मै.
नाम-विशे., लम्बा । मै.
नामक-विशे., नामवाला । मै.
नाम कमाएब-क्रि., यश उपार्जन करब । मै.
नामकरण-सं., नाम रखैक विधि । मै.
नाम करब-क्रि., सुन्दर कृत्य सँ विख्यात होएब । मै.
नाम धराएब-क्रि., ककरो हेतु निहुछि क' राखब । मै.
नामधारी-विशे., (लाक्षणिक) धूह मात्र बनल, केवल प्रतीक रुपें राखल । मै.
नाम निशानो नै रहब-क्रि., कोनो प्रकारक किछु कहियोक अस्तित्व नै रहब । मै.
नामबर-विशे., अत्यन्त प्रतिष्ठा संग प्रसिद्ध । लोक मे पहिल नाम लैक योग्य । नामी । मै.
नाम ले-अव्यय, अस्तित्वहीन भ' क' रहैत । मै.
नाम हसाएब-क्रि., अप्रतिष्ठित बनब । निन्दा रुपें लोकक उपहासक योग्य बनब । मै.
नामी-विशे., प्रसिद्ध । मै.

नायक-विशे., १. कोनो समूहक अगुआ। २. नाटक-आदि दृश्यक पात्र। सं. तत्सम
नार-सं., १. फसिलक नमहर डन्टी। २. नवजात शिशुक नाभी सँ लागल प्रसूतीक जरायु धरि नमहर सिरा। मै.
नारद-विशे., (लाक्षणिक) झगड़लगौन लोक। मै.
नारदी भजन-सं., विरहा एवं उदासी गान। मै.
नाँ रसाइ-सं., अप्रतिष्ठा, नाम हसबैक स्थिति। मै.
नाराज-सं., वाण, शर। सं. तत्सम
नारायण-क्रि., तीन प्रधान देवताक एक देव। विष्णु। मै.
नारायणी क्षेत्र-सं., गंगाधारक जल सँ सवा हाथ धरिक भूमि। मै.
नारायणी धूप-सं., धूप विशेष। धूपक विशेष पदार्थ। मै.
नारि-सं., १. देखू–"नाइर"। २. बाहा (पनिवह)। ३. स्त्री। मै.
नारिकेर-सं., श्रीफल, नारियल। मै.
नारी-सं., स्त्रीजाति। सं. तत्सम/मै.
नाल-सं., १. कोनो वस्तुक पैंच डन्टा। २. बन्दूकक गोली निकसैक फोंफी। ३. घोड़ा आदि जीवक पैर मे वा जुत्ता मे ठोकैक लोह। सं. तत्सम/मै.
नाला-सं., पानिक निकास हेतु चकरगर वाट। मै.
नालिस-सं., प्रतिवादीक अभियोग विज्ञापन। मै.
नाली-सं., आङन घरक पानि बहैक संकीर्ण वाट। मै.
नाविक-विशे., नाओक चालक। सं. तत्सम
नाश-सं., समाप्ति, क्षय। सं. तत्सम
नाशी-विशे., नष्ट कयनिहार। सं. तत्सम
नाँस-सं., हरक एकदम अगिला पतरका भाग। मै.
ना सकार-सं., अस्वीकार। मै.
नासपाती-सं., फल विशेष। मै.
नासा/नासिका-सं., नाक। सं. तत्सम
नासी-सं., एकै ठाम देने अधिक पानी बहने बनल छोट नदी। मै.
नाह-विशे., नाथ, स्वामी, सं., नौका। मै.
नाहक-अव्यय, व्यर्थ। उ. तत्सम
नाहर-सं., सिंह। मै.
नाहस-सं., अनिष्ट कामना सँ कुदृष्टि। आ कुव्य-वहार। मै.

नि

निऐं-अव्यय, तरहें। मै.
निकट-अव्यय, लऽग। सं. तत्सम
निकती-सं., मूलवान् वस्तु तौलैक अत्यन्त छोट तराजू। सोना, हीरा जोखैक वस्तु। मै.
निकन्नन-विशे., जड़ि मूल सँ समाप्त। मै.
निकम्मा-विशे., कोनो काज उद्योग नहि केनिहार। मै.
निकमानि-सं., परिचर्या, सेवा। मै.
निकलब-क्रि., बहराएब। हि. तत्सम/मै.
निकलुआ-विशे., बहार भ' क' भागैवाला। मै.
निकसब-क्रि., बहार भ' जाएब। मै.
निःकसरि-विशे., निश्शेष। मै.
निकहा-विशे., बढ़ियाँवाला। मै.
निकाएब-क्रि., बनाएब, नीक बनाएब। उपयोगी करव। मै.
निकाओन-सं., निकौला पर बहराएल अधलाह वस्तु। मै.
निकाय-सं., विभाग। सं. तत्सम
निकालब-क्रि., बहार करब। मै.
निकास-सं., बहारक स्थान। मै.
निकासी-सं., बहार करैक प्रक्रिया। मै.
निकेना-विशे., नीक जकाँ। मै.
निकँ-विशे., आनन्दित, सर्वथा सुखी, कुशल। मै.
निकौनी-सं., खेत कें खढ़ पात सँ स्वच्छ करैक प्रक्रिया। मै.
निखट्टू-विशे., कोनो काज उद्योग मे बेलूरि। मै.
निखत्तर-सं., सत्यानाश, प्रलय। मै.
निखत्ता-सं., अतल गर्त, अत्यन्त गहींर खत्ता। मै.
निखन्नर-विशे., अनन्त, अन्तहीन। मै.
निखरब-क्रि., उगिकय देखार होएब। मै.
निखरलहा-विशे., उगि क' देखार भेलवाला। मै.
निखरुस-विशे., सब प्रकारें स्वच्छ आ सम्पूर्ण। मै.
निखार-सं., उपर उगल चेन्ह। मै.
निखारब-क्रि., चित्र उगाएब। मै.
निखोरब-क्रि., खोंइचा छोड़ा कय दाना बहार करब। मै.
निगम-सं., मूल शास्त्रक पोषक शास्त्र। मै.
निगमानि-सं., नीक जकाँ सेवा शुश्रूषा। मै.

निगलब-क्रि., गींर जाएब। मै.

निगोड़ी-विशे., एक प्रकारक स्त्रीगणक गारि। मै.

निघृष्ट-विशे., अत्यन्त नीच। मै.

निङ्हटब-क्रि., सब टा सधि जाएब। मै.

निङ्हार-सं., लालसा सँ दृष्टिपात। मै.

निङ्हारब-क्रि., आँखि गड़ा क' तृष्णा सँ देखब। मै.

निङ्हास-सं., खा क' मालजालक छोड़ल घासपात। मै.

निङ्हेस-सं., जमा कयल निङ्हास। मै.

निचका-विशे., नीचा मे राखल। मै.

निचगर-विशे., अधिक नीच। मै.

निचट्ट-विशे., सब ठाँ सब प्रकारक अभाव। मै.

निचपना-सं., नीचता। मै.

निचरस-विशे., नीचाँ दबल। मै.

निचला-विशे., नीचाँ मे रहैवाला। नीचाँ भागक। मै.

निचाइ-सं., नीचाँ होइक परिमाण। मै.

निचाओन-विशे., नीचाँ जकाँ। मै.

निचाट-विशे., देखू—"निचट्ट"। मै.

निचाठ-विशे., नीचाँ दिश झुकल। मै.

निचाँस-विशे., नीचाँ दिश रहैवाला। मै.

निचित-विशे., निश्चिन्त, निचैन। प्रयोग—"घर खरच त' सुती निचित, मन सुखी त' गाबी गीत।" लोकोक्ति। मै.

निचू-विशे., १. नीचाँ स्थानवाला। २. बिना चूबै वाला। प्रयोग—"निचू घर बरसातक सुख।" मै.

निचैन-विशे., शान्तिपूर्वक। बिना चिंता व्यग्रता सँ भरल। मै.

निचैनी-सं., शान्तिमयता, चिन्ताव्यग्रता हीनता। मै.

निचोड़-सं., १. निष्कर्ष। २. गारि क' बहार कयल रस। मै.

निचोड़ब-क्रि., रस गारि क' बहार करब। मै.

निचोल-सं., शाड़ी, स्त्रीक वस्त्र। मै.

निछक्का-विशे., बिना कोनो वस्तुक मिलल। मै.

निछच्छ-विशे., सम्पूर्ण रूपें उग्र आ उद्दण्ड भेल। प्रयोग—"कामेश्वर निछच्छ बताह भ' गेला।" मै.

निछट-विशे., सब सँ छाँटल विशेषतावाला। मै.

निछप-विशे., ककरौ मे नहि छपै (मिलै) जोग। मै.

निछाउर-सं., शुभोत्सवक प्रसन्नताक प्रसाद। पुरस्कार। मै.

निछाएब-क्रि., खढ़पात कातकय सरियाएब। शुद्ध रूप मे वस्तु कें आनब। मै.

निछाओन -सं., बीछ बीछ क' जमा कयल दूषित खढ़पात। मै.

निछाक-सं., पियासक पूर्ति। मै.

निछार-विशे., पूर्ण निकलल सीसवाला। मै.

निछुड़न-सं., अन्न सँ सूप द्वारा बहार कयल दूषित पदार्थ। मै.

निछुड़ब-क्रि., अन्न सँ दोसर अन्न वा दूषित पदार्थ बहार करब। मै.

निछुड़लहा-विशे., निछुड़ि क' फरिच्छ कयलवाला। मै.

निछोह-अव्यय, बिना आगू पाछू तकने तेजी सँ। मै.

निज-विशे., अपन। सं. तत्सम

निजगुति-सं., निश्चयात्मक विषय। मै.

निजगूती-सं., निश्चयात्मक व्यवस्था। मै.

निजर-विशे., एकदम ज्वररहित। मै.

निजाएब-क्रि., १. आत्मसात् करब। २. उद्गत होएब। मै.

निजाओल-विशे., आत्मसात् कयल। मै.

निजी-विशे., अपन अधीन वाला। मै.

निजुत-विशे., तत्पर बनाओल। मै.

निट्टाह-विशे., १. आन्तरिक सक्कत। २. सम्पूर्ण रूपें स्वस्थ। मै.

निठल्ला-विशे., उद्यमहीन, कार्यनहि कयनिहार। मै.

निठाल-सं., अभाव सँ बनल निराशा। मै.

निठुर-विशे., १. भीतर सँ निर्दय। २. शुद्ध दूध। मै.

निठोह करब-क्रि., आशा द' क' निराश करब। मै.

निठोहर-विशे., आशा द' क' निराश। मै.

निड़ड़ब-क्रि., आँखि पर जोर द' क' क्रोध प्रकट करब। मै.

निडर-विशे., भयशून्य, डरहीन। मै.

निड़ाड़ब-क्रि., क्रोधक द्वारें आँखि मे तीव्रता आनब। मै.

निढाल-विशे., निराशा सँ शिथिल भेल। मै.

नित्तह-अव्यय, सब दिन। मै.

नित्तोदिन-अव्यय, सब दिन। मै.

नित्य-विशे, १. अविनाशी। सनातन। ३. सदा। सं. तत्सम

नित-विशे., सदा। सं. तद्भव

नितम्ब-सं., डाँरक नीचाँ पाछूक अंग। मै.

नितम्बिनि-विशे., नारी-युवती। सं. तद्भव

नितराएब-क्रि., सौभाग्य सँ गर्वित होएब। मै.

नितातोर-सं., मोह माया छोड़ि क' सम्बन्ध-विच्छेद। मै.

नितान्त-अव्यय, अत्यन्त रूपें। सं. तत्सम

निद्रा-सं., आलस्य सँ मन बुद्धिक जड़ता। सं. तत्सम

निदरदी-विशे., निर्दय, कठोर। मै.

निदान-सं., १. कोनो बातक जड़ि। २. सब बढि चढि हीनता। ३. पराकाष्ठा। सं. तत्सम/मै.

निधक-विशे., बेरोकटोक, प्रकट। मै.

निधड़क-अव्यय, बेरोकटोक। मै.

निधन-विशे., धनहीन। मै.

निधप-विशे., पर्दाहीन। मै.

निधाख-विशे., धाखरहित। मै.

निधान-सं., कोष, खजाना। सं. तत्सम

निधारब-क्रि., निश्चय करब। मै.

निधि-सं., खजाना, भण्डार। मै.

निधुन-विशे., कोनो सोच विचारक भावनाहीन। मै.

निधुवन-सं., रति, सम्भोग। मै.

निधू-विशे., धूआँरहित। मै.

निधोख-विशे., धोखाहीन। मै.

निधोर-सं., निश्चय। मै.

निन्द-सं., निद्रा। मै.

निन्दा-सं., खिधांस। आनक कुत्सितवार्ता, कुचेष्टा। मै.

निन्न-सं., देखू—"निन्द"। मै.

निन्नक सूतल-विशे., निद्राक द्वारें चेष्टाहीन। मै.

निन गाएब-क्रि., निश्चिन्त भ' क' सुतैक आनन्द लेब। मै.

निन बेसरम-सं., लाज संकोच सँ दूर सूतल अवस्था। मै.

निन भेर-विशे., निन्न सँ निश्चेष्ट, गाढ़ निन्न मे पड़ल। मै.

निनवासल-विशे., गाढ़ निन सँ ज्ञान ध्यान शून्य, निन्न मे लीन, निन्नक अधीन। मै.

निनाइ-सं., पेटक वायुविकार विशेष। मै.

निनाद-सं., ध्वनि। गदमिसान। सं. तत्सम

निनानबे-सं., नौ एकाँइ नौ दहाँइक अंक। मै.

निनियाँ-सं., नेन्ना कें दुलार सँ सुतबै मे निन्नक सम्बोधन। मै.

निपट आन्हर-विशे., दूनू आँखि सँ एकदम दृष्टि-हीन। मै.

निपटब-क्रि., विरोधक फरिछाओक करब। मै.

निपटाएब-क्रि., दूनू पक्ष कें फरिछाएब। झगड़ा फरिछाएब। मै.

निपटारा-सं., १. झगड़ाक फरिछौंक। २. देनक चुकान। मै.

निपत्ता-विशे., अन्तर्हित, विलीन, अलोपित। मै.

निपना-सं., नीपैक सामग्री ओरियाओल वासन। मै.

निपनिहारि-विशे., नीपैवाली। मै.

निपरबाहि-विशे., निश्चिन्त। मै.

निपाएब-क्रि., दोसरा सँ नीपैक काज कराएब। मै.

निपाओन-सं., नीपैक बोनि। पारिश्रमिक। मै.

निपात-सं., अन्तर्धान। सं. तत्सम

निपिया-सं., नीपैक काज। मै.

निपुआङ्-विशे., सम्पूर्ण रूपें अन्तर्हित, समाप्त। मै.

निपुण-विशे., चतुर, कुशल। सं. तत्सम

निपुत्र/निपुत्री/निपुत्तर-विशे., पुत्रहीन। मै.

निपोटब-क्रि., (आँखि हेतु विशेष) खोलब। मै.

निपोरब-क्रि. (दाँतक हेतु विशेष) निर्लज्ज भ' क' दाँत खोलब। मै.

निबटब-क्रि., मलमूत्रक त्यागक क्रिया सब सँ निश्चिन्त होएब। हि. तत्सम

निबल-विशे., बलहीन। मै.

निबहब-क्रि., निर्वाह करब। मै.

निबाह-सं., निर्वाह, जीवनक व्यवस्था। सं. तद्भव

निबाहब-क्रि., ककरो जीवन चलाएब। मै.

निभरौस-सं., १. आशा आ धैर्यक अभाव। २. आश्वस्तिशून्यता। ३. निराशता। मै.

निबिड़-विशे., सघन। सं. तत्सम

निम्मन-विशे., उत्तम। पैंघ। मै.

निमकी-सं., सौंस नेबोक अँचार। मै.

निमग्न-विशे., डूबल। मै.

निमरजना-सं., निर्वाह, सेवासहित जीवनक उद्योग। मै.

निमरसेखा-सं., सर्वथा अन्त, समाप्ति। मै.

निमहता-सं., निर्वाह, निर्वाहक उपाय। मै.

निमहब-क्रि., निर्वाहक उपाय करब। मै.

निमाइन-सं., शीतला रोग सँ उद्धार भेला पर प्रथम प्रथम शरीर मे औषधयुक्त तेल लगबैक विधि। मै.

निमाह-सं., देखू—"निबाह"। मै.

निमाहब-क्रि., १. परम्परानुसार नियम सुरक्षित राखब। २. जीवन चलाएब। मै.

निमित्त-अव्यय, हेतु, उद्देश्यक। सं. तत्सम

निमिष-सं., पल, क्षण। सं. तत्सम

निमुआन-विशे., सर्वथा अदृश्य भ' क' विलीन वा डूबल। मै.

निमुछ-विशे., बिना मोछवाला, मोछहीन। मै.

निमुठ हाथ-विशे., मुट्ठी बान्हि क' हाथक नापवाला। मै.

निमुन्न-विशे., सब दिश सँ एकदम बन्न। मै.

निमुहधन-विशे., मुह सँ नहि बाजि सकैवाला माल जाल आदि धन। मै.

निमेख-सं., क्षण मात्रक समय। मै.

निमेरा-सं., सेवा शुश्रूषा आ जीवन चलबैक उपँ। मै.

निमोछिया-विशे., मोछ नहि भेलवाला। नव तरुण। मै.

नियत-विशे., निश्चित। सं. तत्सम

नियति-सं., भाग्य, विधान। सं. तत्सम

नियम-सं., सनातन विधि। सं. तत्सम

नियामक-विशे., निश्चिय पर डटल रहैवाला। सं. तत्सम

नियार-सं., देखू—"न्यार", नेआर। मै.

नियुत-विशे., नियुक्त। तैनात, काजक भारवाला। मै.

निर्कटैल-विशे., निःशेष। सब प्रकारें समाप्त। मै.

निर्गमन-सं., बहराएब। निकलब। मै.

निर्गुण-विशे., नाम रूपरहित। गुणहीन। सं. तत्सम

निर्गुनियाँ-विशे., उपकार नै मानैवाला, गुण नै बुझैवाला। मै.

निर्घिन-विशे., घिन बढ़ैक पदार्थ सँ भरल। मै.

निर्जन-विशे., लोक सब सँ शून्य। सं. तत्सम

निर्जु-विशे., अत्यन्त सुकुमार अबोध। मै.

निर्झर-सं., झरना, जलप्रपात। सं. तत्सम

निर्झार-विशे., बेरोकटोक शुद्ध। मै.

निर्णय-सं., फैसला, उचित न्याय। निष्पक्ष विधान। सं. तत्सम

निर्णायक-विशे., निर्णय दैवाला। सं. तत्सम

नित्त-सं., नृत्य, नाँच। सं. तद्भव

निर्दय-विशे., कठोर, दयारहित। सं. तत्सम/मै.

निर्दिस-विशे., दयनीय दरिद्र। अत्यन्त निर्धन। मै.

निर्दोष-विशे., दोषहीन। बिना दोषवाला। सं. तत्सम

निर्धन्ध-विशे., कोनो चिन्ता आ सोच सँ शून्य। मै.

निर्धन्धी-विशे., चिन्ता व्यग्रता सँ दूर। मै.

निर्धन-विशे., धनहीन। मै.

निर्धार-सं., विचारपूर्वक निश्चय। मै.

निर्धारण-सं., विचारि क' देल व्यवस्था। सं. तत्सम

निर्धारब-क्रि., विचारि क' निश्चित व्यवस्था करब। मै.

निर्धोख-विशे., धोखा अर्थात् भ्रम आ सन्देहरहित। मै.

निर्बल-विशे., अब्बल। सं. तत्सम

निर्बिषी-विशे., विष दूर करैवाला पदार्थ। मै.

निर्बुद्धि-विशे., बुद्धिहीन। सं. तत्सम

निर्बुद्धी-सं., काछु, कछुआ। मै.

निर्बोध-विशे., ज्ञान ध्यानहीन। सं. तत्सम

निर्भय-विशे., निडर, भयरहित। सं. तत्सम

निर्भर-विशे., सम्पूर्ण भरोस रखनिहार। ओठंघल। सं. तत्सम

निर्भीक-विशे., निडर । सं. तत्सम
निर्मम-विशे., ममताहीन, कठोर । सं. तत्सम
निर्मल-विशे., फरिच्छ, स्वच्छ । सं. तत्सम
निर्माण-सं., बनाइ, रचना । मै.
निर्माता-विशे., बनौनिहार, रचनाकार । मै.
निर्मिल-सं., देवताक उपरक वासि फूल पत्ती आदि । निर्माल्य । सं. तद्भव
निर्मूल-विशे., बिना जड़ि पेनक । सं. तत्सम
निर्मोह-विशे., मोह मायारहित । सं. तत्सम
निर्यात-सं., बहार जाइक प्रयास । बहार कें प्रेषण । सं. तत्सम
निर्लय-सं., देखू—"निर्णय" । सं. तद्भव
निर्लेप-विशे., बिना कोनो वस्तुक प्रभाववाला । सं. तत्सम
निर्लोक-विशे., १. निर्जन । २. लोकक कमीवाला । सं. तत्सम
निर्वंश-विशे., वंशहीन । सं. तत्सम
निर्वसन-विशे., नाङट । सं. तत्सम
निर्वाचन-सं., चुनाओ । सं. तत्सम
निर्वासन-सं., देश निकाल । मै.
निर्वाह-सं., देखू—"निवाह" । मै.
निर्विकार-विशे., कोनो वस्तुक नहि विकारवाला । मै.
निर्वीज-विशे., उकन्नन भेल । मै.
निर्वेद-सं., वैराग । मै.
निर्हेतु-विशे., बिना कारणक । मै.
निरखब-क्रि., नीक अधलाहक दृष्टियें देखब । मै.
निरखाएब-क्रि., सूक्ष्मता सँ देखाएब । मै.
निरत-विशे., तत्पर, संलग्न । मै.
निरधार/निधार-विशे., निराधार, कोनो प्रकारक बिना आश्रावाला । स. तद्भव/मै.
निरन्त-विशे., निर्जन, जनशून्य । मै.
निरन्तर-अव्यय, लगातार । एकाकरन । सं. तत्सम
निरपराध-विशे., दोषहीन व्यक्ति । सं. तत्सम
निरलंस-विशे., सम्बन्धहीन । उसट्ठ । मै.
निरलोभ-विशे., लोभरहित । सं. तद्भव
निरसब-क्रि., भरोस छोड़ि आशाहीन अथवा घृणा कय त्यागब । छोड़ि देब । मै.
निरसल-विशे., लोकक दृष्टि मे हीन बनल । मै.
निरहट-विशे., बात तथा हितक बात नै माननैवाला । मै.
निरहार-विशे., निराहार, अन्नक भोजनरहित । सं. तद्भव
निराइ-सं., खेत मे लागल फसिल सँ जंगल साफ करैक प्रक्रम । कमौनी । मै.
निराएब-क्रि., फसिलक कमठान करब । मै.
निराओ-विशे., वायुरहित वातावरण । मै.
निराओन-सं., खेतक कमौनीक काज । कमौनीक बोनि । मै.
निराकरण-सं., निर्णय, समाधान, उत्तर । सं. तत्सम
निराकार-विशे., नाम रूप शून्य । सं. तत्सम
निरादर-सं., अपमान । सं. तत्सम
निराधार-विशे., आश्रय वा शरणहीन । सं. तत्सम
निरापद-विशे., आपत्ति, खतराहीन । सं. तत्सम
निरामिल-विशे., आमिल वर्जित तीमन । मै.
निरामिष-विशे., मत्स्य मांसक सम्बन्धरहित । सं. तत्सम
निराल-विशे., एक मात्र । प्रयोग—"दालि आब लोक की खाइए, निराल पानि ।" मै.
निराला-विशे., स्वेच्छाकारी । मै.
निराश-विशे., आशाशून्य । मै.
निरासो-विशे., स्त्रीगणक प्रति एक प्रकारक स्त्रीक गारि । मै.
निराहार-विशे., बिना भोजन कयल । सं. तत्सम
निरीह-विशे., १. अभावक द्वारें सब सेहन्ता दबा रखैवाला निर्धन । २. तृष्णा आ मोहहीन वैरागी । सं. तत्सम/मै.
निरुत्तर-विशे., उत्तर देवा मे असमर्थ । मै.
निरुद्यम-विशे., धन्धा रोजगाररहित । सं. तत्सम
निरेंठ-विशे. बिन ऐंठाओल पदार्थ । मै.
निरोइ/निरोगि-विशे., नीरोग, कोनो रूपें नहि दोषाह । सं. तद्भव
निरोधी-विशे., रोकैवाला । स. तद्भव
निवस्त्र-विशे., नङटे, वस्त्रहीन सं. तद्भव
निवारण-सं., रोकैक, मना करैक प्रक्रिया । सं. तत्सम
निवास-सं., पुस्तैनी वास रहब । मै.

निबिया-सं., स्त्रीगणक नूआ मे डाँरक बन्हन । मै.
निविष्ट-विशे., निपुण, निष्णात । सं. तत्सम
निवेदन-सं., प्रार्थनापूर्वक कथन । सं. तत्सम
निबौरी-सं., नीमक फड़ । मै.
निश्चय-सं., ठेकान व्यवस्था । सं. तत्तम
निश्चल-विशे., अटल । सं. तत्सम
निश्चित-अव्यय, अवश्य । सं. तत्सम
निश्छल-विशे., कपट धोखारहित । सं. तत्सम
निःश्वास-सं., निसास, नीचाँ दिश नाकक वायुक त्याग । सं. तत्सम
निःशंक-विशे., शंकाहीन, बिना सन्देहवाला । सं. तत्सम
निःशेष-विशे., सम्पूर्ण । सं. तत्सम
निशगर-विशे., भरोस रखैवाला, आस्थावाला । मै.
निशच-विशे., शुद्ध । मै.
निशबद-विशे., शब्द आ संचारहीन । मै.
निशभेर-विशे., अत्यन्त गाढ, वेसुधिबुधि भेल । मै.
निशवासर-अव्यय, अहोरात्र, राति दिन । सं. तद्भव
निशा-सं., राति । सं. तद्भव
निशाचर-सं., राति कें भ्रमण कयनिहार । सं. तत्सम
निशान-सं., चिह्न, दाग । उ. तत्सम
निशाभाग/निशीभाग-सं., मध्यराति । दुपहरिया राति । मै.
निशाल करब-क्रि., चढ़ाएब, छोड़ब । प्रयोग-''माघी अमावास्याक उठाओल गंगाजल लोक वसन्त पंचमी दिन बैद्यनाथ कें निशाल करैये । मै.
निशोडंड-सं., मध्य रात्रिक चुप्पी, शब्दहीनता । मै.
निष्कपट-विशे., निश्छल । सं. तत्सम
निष्कंटक-विशे., (लाक्षणिक) कोनो अड़चनशून्य । मै.
निष्काम-विशे., कामनाहीन । मै.
निष्कासन-सं., निकाल बहार । सं. तद्भव
निष्टंक-विशे., दोष आ बाधाहीन । मै.
निष्ठा-सं., श्रद्धापूर्वक विश्वास । सं. तत्सम
निष्णात-विशे., निपुण, प्रवीण (उ. माहिर) । सं. तत्सम
निष्पक्ष-विशे., पक्षपात (तरफदारी) रहित । सं. तत्सम
निष्फल-अव्यय, (विशे.,) फलहीन, व्यर्थ । सं. तत्सम
निषंग-सं., शर रखैक वासन । सं. तत्सम
निषाद-सं., १. वन जातिक लोक । आदिवासी । २. संगीतक सातो स्वर मे प्रथम 'सा' स्वर । सं. तत्सम
निषिद्ध-विशे., वर्जित । रोकल, हीन, नीच । सं. तत्सम
निषेध-सं., मना; रोक, वर्जन । सं. तत्सम
निस्तार-सं., विधि विधान सँ कोनो व्रतक समाप्ति । मै.
निस्तुकी-विशे., निश्चयात्मक । मै.
निस्तेज-विशे., तेजहीन, प्रकाशहीन । मै.
निस्फाल-सं., फरिछा क' निर्णय । मै.
निस्सन-विशे., सशक्त, अन्तःसार, सारगर्भित । मै.
निस्सह-विशे., शब्द आ संचाररहित अन्धकारपूर्ण । मै.
निस्सहाय-विशे., अनाथ, बिना सहायकवाला । सं. तत्सम
निस्सार-विशे., तत्वहीन, अब्बल, खोंखला, बाकल । सं. तत्सम
निस्सीम-विशे., सीमारहित, बेहद । स. तत्सम
निसंख-विशे., चिन्ता व्यग्रताहीन । मै.
निसंग-विशे., निःसंज्ञ, चिह्नमानिहीन, निश्चेष्ट । सं. तद्भव
निसट्ठ-विशे., रसहीन । पानिरहित । मै.
निःसन्तान--विशे., सन्तानरहित । सं. तत्सम
निसफालन-सं., देखू—''निस्फाल'' । मै.
निसबति-सं., अपेक्षा । मै.
निसादर-सं., रासायनिक पदार्थ । मै.
निसाफ-सं., न्याय, इन्साफ । उ. तद्भव
निसार-सं., देखू—''निशाल'' । मै.
निसास-सं., देखू—''निश्श्वास'' । सं. तत्सम
निसास छाड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) शान्तिक अनुभव करब । मै.
निसोख-विशे., कनेको कचोट आ मात्सर्य सँ रहित । मै.
निसोहधार-विशे., अनिरुद्ध गतिवाला, प्रवाहित रूपक । मै.

निहत्था-विशे., बिना कोनो अस्त्रवाला । मै.
निहाइ-सं., लौह पिण्ड, जकरा पर राखि क' किछु ठोकल जाइत अछि । मै.
निहाइत-विशे., अधिकतर, सम्भवतः । उ. तद्भव
निहारब-क्रि., सतृष्ण दृष्टि सँ देखब । मै.
निहुछब-क्रि., ककरो मनौती सँ ओरिया क' राखब । अलग क' क' धरब । मै.
निहुरब-क्रि., झुकब । मै.
निहोरा-सं., प्रार्थना । मै.

नी

नी-सं., शरीरक परिमाणक प्रदर्शन । प्रयोग-"बौआक कन्टिरबा तँ नी गोड़ भ' गेलैन ।" मै.
नीक-विशे., बढ़ियाँ, उत्तम । मै.
नीक नहाइत/नीक नात-विशे., नीक जकाँ, नीक सन । मै.
नीक निकुत-विशे., अनेक प्रकारक नीक वस्तुवाला भोजन । मै.
नीच-विशे., १. अधम । २. समतल सँ नीचाँ । मै.
नीचाँ-अव्यय, निम्न स्थान । मै.
नीचाँ उतरब-क्रि., अपन मर्य्यादा सँ खसि पड़ब । अधम व्यवहारक अनुसरण करब । मै.
नीचाँस-विशे., निम्नतावाला खेत । मै.
नीड़-सं., खोंता, पक्षीक बासा । सं. तत्सम
नीति-सं., लौकिक व्यवहारक व्यवस्था । सं. तत्सम
नीन-सं., निद्रा, निन्द । मै.
नीनानबैक फेरी-सं., औझरौटक द्वारें काजक नहि पूर्ति । मै.
नीपनि-सं., देखू—"निपिया" । मै.
नीपब-क्रि., गोबर आदि सँ भूमि कें चिक्कन करब । मै.
नीपा-सं., अधिक दूरधरि नीपैक भार । मै.
नीब-सं., १. घर मकानक तरी काटि प्रथमारम्भ । २. कलमक चंचु (नोक) । हि. तत्सम
नीबार-सं., अन्न विशेष । आउरी । सं. तत्सम
नीबी-सं., देखू—"निबिया" । सं. तत्सम
नीम-सं., तीत रसवाला वनस्पति । मै.
नीमभट्टा-सं., नीमक पातक संग भूजल भट्टाक तरकारी विशेष होइछ चैत मास मे । प्रयोग-"चैत मास मधु मासक रीती, नीम भटा कें अतिशय प्रीती ।" लोकोक्ति । मै.
नीमा-सं., धनखेतीक घास विशेष । मै.
नीयति-सं., आशय, आन्तरिक विचार, अन्तःकरण । मै.
नीर-सं., जल । देवता पर चढ़ाओल जल । मै.
नीरफूल-सं., तन्त्रमन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल आ फूल । मै.
नील-सं., रंग विशेष, रङ्क द्रव्य । मै.
नीलम-सं., नीलमणि । मै.
नीलिमा-सं., नील रंगक आभा । सं. तत्सम
नीह होएब-क्रि., वैभव घटब । मै.
नीहारिका-सं., धौन्ह । सं. तत्सम

नु

नुक्कड़-सं., गलीक मोड़ । मै.
नुक्कानुक्की-सं., धीयापूताक खेल विशेष । मै.
नुकाएब-क्रि., छिपब, प्रच्छन्न होएब । मै.
नुकाओन-सं., नुकबैक चेष्टा । मै.
नुकाछिपी-सं., नुकाइक प्रयास । मै.
नुकान-सं., अलक्षित रूपें छिपैक चेष्टा । मै.
नुकौआ-विशे., नुकाकय राखल वा देल । मै.
नुड़ियाएब-क्रि., १. अव्यवस्थित रूपें पसरल वस्तु कें समेटब । २. (लाक्षणिक) स्वार्थ वशें लग मे सतत आ बारम्बार घूमब । मै.
नुनुआँ-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा । मै.
नुरहरि-सं., नीपैवाला नूर रखैक बासन तथा नूर । मै.
नुरियाएब-क्रि., ढंग सँ पसरल वस्तु कें लपेटब । मै.
नुरौठा-सं., नुरियाए के सक्कत कयल वस्तु । मै.
नुरौड़-सं., नूर बनबैक वस्तु । मै.

नू

नूआँ-सं., वस्त्र (विशेषतया स्त्री वस्त्र) । मै.
नूआँवस्तर-सं., सब कपड़ाक समूह मै.
नूज-विशे., चलै फिरै मे असमर्थ । टांग नै सोझ क' सकैवाला । मै.
नूजागढ़-सं., चक्रव्यूहक चित्र । मै.
नूड़ा-सं., अव्यवस्थित रूपें नुड़िया कऽ बान्हल वस्तुक गोल । मै.
नूड़ि तानब-क्रि., एकै रेखा पर घूरि घूरि चलैत रहब । मै.

नूड़ी-सं., अव्यवस्थित रूपें मोड़ि माड़ि कय बनाओल छोट नूड़ा। मै.

नून-सं., लवण, नोन, रस विशेष। मै.

नूनू-विशे., प्रिय बच्चा। मै.

नूर-सं., नीपैक हेतु बनाओल कपड़ा आदि वस्तुक विशेष गोल। मै.

नूर गोबरौड़-सं., नीपा करैक वस्तुक वासन। मै.

नृ

नृत्य-सं., नाँच। सं. तत्सम

नृप-विशे., राजा। सं. तत्सम

ने

ने-अव्यय, न, निषेध। मै.

नेआरभास-सं., कोनो काज करैक केवल कौतूहल। सेहन्ता मात्र करैक प्रयास। मै.

नेक-विशे., उचित विचारवाला, सद्भावनावाला। उ. तत्सम

नेक-सं., परिचर्या सेवा। मै.

नेकदम-सं., परिचर्या एवं संरक्षण। मै.

नेकी-सं., विवेक। मै.

नेङरा-विशे., झुकि झुकि चलैवाला, खञ्ज। मै.

नेङराएब-क्रि., झुकि झुकि विकृत भ' क' चलब। मै.

नेज-सं., सामग्री। मै.

नेटा-सं., नाकक मल, नाक सँ नमरल कफ। मै.

नेठा-सं., गहनाक तल्ली सक्कत रखैले देल कपड़ा। मै.

नेठुआ-सं., कोनो वस्तुक पेनी स्थिर रखैक लेल देल जाइवाला बनाओल बीड़ा। मै.

नेड़-सं., लम्बाकार सक्कत विशेष मोट पेट सँ बहराएल मल। मै.

नेंड़हा-सं., मकइ आ कटहरक बीच बीजक सक्कत आधार। मै.

नेड़हा लागब-क्रि., (लाक्षणिक) काजक पूर्ति नै क' सकब। मै.

नेड़ा/नेड़ार/नेड़ी-सं., पेटक बहराएल लम्बाकार सक्कत मल। मै.

नेड़ीबुच्ची-सं., छोट छोट नेन्नाक समूह। मै.

नेड़ी भेरी-विशे., चलै फिरैवाला, कोरा मे रहैवाला अनेक बच्चा। मै.

नेढ़न बाढ़न-विशे., उपेक्षा सँ दुरवस्था मे पहुँचल। मै.

नेढ़ लागब-क्रि., कुकूरक मैथुन काल मे अधिक काल धरि स्वभावतः दूनूक गुप्ताङ्क सटल रहब। मै.

नेढ़ा-विशे., दुर्वृत्ती आ मूर्ख किशोर। मै.

नेढ़ि-विशे., दुष्ट संगतिवाला नेना किशोर। मै.

नेढ़िया-विशे., वासना सँ अभिभूत नवीन अवस्था मे घूमैत रहैवाला। मै.

नेढ़ियाएब-क्रि., अनेर स्थान स्थान पर युवती कें देखैक लालसा सँ घूमैत रहब। मै.

नेत-सं., विचार एवं आचरण। मै.

नेता-विशे., अगुआ, दलक प्रमुख। सं. तत्सम

नेतागिरी-सं., नेता होइक काज। मै.

नेति-सं., १. नेत। २. तत्वदर्शन मे जगत् मे मिथ्याक बोध। सं. तत्सम

नेन्ना-विशे., छोट छोट किशोर। मै.

नेन्ना भुटका-विशे., अबोध बच्चाक समूह। मै.

नेन-सं., दूध सँ निकालल सार वस्तु। माखन। मै.

नेनपन-सं., नेन्नाक चालि। मै.

नेनमति-सं., नेन्नाक बुद्धि। मै.

नेनमतिया-विशे., नेना सन बुद्धिवाला। मै.

नेनी-सं., नेनी माछ विशेष। मै.

नेनी देनी-सं., लेनदेन। लेबा देबाक व्यवहार। मै.

नेनु-सं., दूध बहार कयल सत्त्व। मक्खन। मै.

नेनुआँ-विशे., १. विशेष प्रकारक केरा। २. मक्खन जकाँ कोमल नेना। मै.

नेने आएब-क्रि., ल' क' आएब। मै.

नेनौन-विशे., नेना सन स्वभाववाला। नेना वयसक स्वभाव भरल। मै.

नेप काढ़ब-क्रि., बल सँ कनैक जिद्द करैक नाटक करब। मै.

नेप चुबाएब-क्रि., बल सँ कानि अधिक स्नेहक नाटकीय प्रदर्शन। मै.

नेपथ्य-सं., नाटक मे बाहर सँ (अदृश्य) सँ कथोपकथन। सं. तत्सम

नेपुर-सं., पैरक बजैवाला गहना। सं. तद्भव

नेपोभाटिन होएब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु बल सँ कानि कानि क' रूसैक आडम्बर बनाएब आ जिद्द रोपब। मै.

नेबति-सं., उत्सव मे बनाओल सुन्दर द्वार, तोरण। मै.

नेबा-सं., सुखाएल मधुर फल। मै.

नेबाड़-सं., खाट घोरैक लेल विशेष प्रकारक अत्यन्त नमहर आ चारि आङुर चाकर कपड़ा। मै.

नेबारि-सं., फूल विशेष। मै.

नेबान-सं., नव अन्न खाइक विधान। मै.

नेबो-सं., रस मात्र प्रयोजन वा अम्मत आ मधुर फल। मै.

नेम-सं., नियम व्रत। मै.

नेम टेम-सं., नियम व्रतक विशेष आडम्बर। मै.

नेर-सं., मुह सँ खसैत रस, (लार)। मै.

नेरपोङ-सं., नीक जकाँ पोछि पाछि क' सुन्दर स्थिति मे रखैक बच्चाक परिचर्य्या। मै.

नेरसरै-सं., आँखि पिपनी आदि अंग मे भेल फोसरी अथवा घाओ। मै.

नेराह-विशे., १. अधिक नेर खसबैवाला बच्चा। २. खेत गील रहैक कारणें हरक संग माटि लटकैवाला तथा लम्बाकार माटिक दंड बनैवाला खेत। मै.

नेरू-विशे., गाइक छोट (नवजात) बच्चा। मै.

नेवेद-सं., देवताक उत्सर्गक वस्तु। सं. तद्भव

नेसब-क्रि., १. दीप बारब (जराएब)। २. (लाक्षणिक) गूढ़ भयंकर बात चुपचाप सम्बद्ध व्यक्ति कें कहि उत्तेजित करब। मै.

नेह-सं., स्नेह। सं. तद्भव

नेहरि-विशे., चूड़ी लहठीक व्यवसायी। मै.

नेहारु-सं., सोनारक काजवाला छोट छोट अस्त्रक समूह। मै.

नेहारुन-विशे., आशारहित। निराश। मै.

नेहाल-विशे., असम्भावित रूपक सुखी सम्पन्न। निहाल, कृतार्थ। उ. तद्भव

नेहाल सनाथ-विशे., (लाक्षणिक) समाप्त आ नष्ट भ्रष्ट। मै.

नेहा लगाएब-क्रि., प्रेम करब। मोह जोड़ब। मै.

नेहों नेहों-अव्यय, मन्द गति सँ। मै.

नेहोरा-सं., दीनतापूर्वक प्रार्थना। मै.

नै

नै-अव्यय, नहि, निषेध। मै.

नैँ-सं., पातर लोहाक पत्रक बनल बिना मोड़ैवाला तरकारी कटैक उपयोगी छूरी। मै.

नैँन-सं., नयन, आँखि। सं. तद्भव

नैया-सं., नाओ, नौका। मै.

नैवेद्य-सं., देवता कें उत्सर्ग कयल पदार्थ। सं. तत्सम

नैहर-सं., सासुर बसैवाली स्त्रीक पिताक घर। मै.

नो

नोक-सं., कोनो वस्तुक तेज पातर अगिला भाग। मै.

नोकगर-विशे., तेज पातर घातक अगिला भागवाला। मै.

नोक झोंक-सं., (लाक्षणिक) कड़ू मधुर प्रणय लीला। मै.

नोकनी-सं., कोनो वस्तु कें फँसबै योग्य तेज छोट अगिला भाग। मै.

नोकर-विशे., दास, सेवक। स्त्री० नोकरनी। मै.

नोकरसाही-सं., नोकरक भरोसें वा नोकर पर निर्भर जीवन चर्य्या। नोकरैक प्रधानता। मै.

नोकसा लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) नोक वा नोकसन मेंही आघातक बात सँ गति के अवरुद्ध करब। सामान्य आपत्ति उपस्थित करब। मै.

नोकसी-सं., फँसबै लेल बनाओल टेढ नोक। मै.

नोकही-सं., स्वतः बनल नोक। मै.

नोकाह-विशे., नोकवाला, नोक भरल। मै.

नोकी-सं., छोट कृत्रिम नोक, फाँस। मै.

नोख-विशे., सुन्दर, ऐँत। मै.

नोखक-विशे., सुन्दरवाला। मै.

नोखगर-विशे., सुन्दर जकाँ, अति सुन्दर। मै.

नोखी-सं., सुन्दरता। मै.

नोचनी-सं., कुड़ियैनी, हौहटि रोग। मै.

नोचनी लागब-क्रि., कबाउछ आदि विषाक्त वस्तुक लगला सँ कुड़ियैनी उठब। मै.

नोच पटका-सं., नोचि नोचि क' पटकैक तामसी प्रवृत्ति। मै.

नोचब-क्रि., अनुचित रूपें पकड़ि कय बहार करब। फेंकब। खींचब। मै.

नोचाएब-क्रि., पकड़ि पकड़ि तीरब, खींचाएब। मै.

नोचा नोची-सं., परस्पर अनुचित रूपें पकड़ि खींचैक चेष्टा। मै.

नोछरनी-सं., शरीर पर उपरी आघात करैक तेज वस्तु। मै.

नोछरब-क्रि., नह आदि तथा तेहने सन अस्त्र सँ उपरी आघात करब । मै.

नोछराह-विशे., नोछरैक स्थितिवाला । मै.

नोछार-सं., नोछरैक चिह्न । मै.

नोत-सं., निमन्त्रण । मै.

नोत पिहान-सं., निमन्त्रण, लेआओन । मै.

नोतब-क्रि., निमन्त्रण देब । मै.

नोतर-सं., पचीसीक नऽम घरक नीचाँक खोढ़ा । मै.

नोत लेब-क्रि., भ्रातृ द्वितीया मे बहिन सँ पूजा लेब । मै.

नोतहारी-विशे., निमन्त्रित लोक । मै.

नोताँ-सं., नोत पुरैक स्थान गाम । मै.

नोन-सं., लवण, प्रमुख रस विशेष । मै.

नोनगर-विशे., अधिक नोन भरल । मै.

नोनचट-सं., सूक्ष्मदंशक कीड़ा । मै.

नोनछराइन-विशे., नोन मिलल स्वादवाला । मै.

नोनछराह-विशे., नोनक स्वादवाला । मै.

नोन जाउर-विशे., वेशी नोन मिलाओल । मै.

नोनथरा-सं., नोन बनबैक स्थान । मै.

नोन पढ़ाएब-क्रि., तन्त्र मन्त्र सँ नोनक द्वारा वशीकरण करब । मै.

नोनपनियाँ-सं., नोनक संग इनहोर कफक औषध । मै.

नोनाइन-विशे., नोनक सम्पर्कवाला । मै.

नोनाह-विशे., नोन रखैवाला । मै.

नोनियाँ-विशे., नोन बनबैवाला । मै.

नोनियाएब-क्रि., नोन बढ़ैक कारणें घरक अंश झरब । खेत उसरार होएब । मै.

नोनियाह-विशे., नोन भरि गेने अधलाह । मै.

नोनी लागब-क्रि., भीत आ देवाल सब मे नोन वेशी भेने झरब । मै.

नोनी साग-सं., नोनक स्वाभाविक स्वादवाला स्वादिष्ट साग । मै.

नोर-सं., आँखिक पानि । अश्रु । मै.

नोराएब-क्रि., नोर भरि आएब । मै.

नोसक्कड़-विशे., अधिक नोसि लेनिहार । मै.

नोसि-सं., नाक मे लैक मादक चूर्ण । मै.

नोसिदानी-सं., नोसि रखैक वासन । मै.

नोसियाहा-विशे., नोसि लैक अभ्यासवाला । मै.

नौ

नौआ-सं., दाढ़ी केश कटैक व्यवसायी जाति । मै.

नौएँ कौएँ-अव्यय, संयोग आ दैवयोगे गोटेक । मै.

नौका-सं.; नाओ । सं. तद्भव

नौ गाँ गर्द करब-क्रि., (लाक्षणिक) सगरे प्रचार करब । मै.

नौड़ी-विशे., दासी, नोकरनी । मै.



प वर्ग

प्रकट-विशे., साक्षात् भेल । खुल्लम खुल्ला । सं. तत्सम
प्रकरण-सं., सन्दर्भ, बर्तमान मे चलैत क्रिया । सं. तत्सम
प्रकार-सं., १. विधि । २. भेद । सं. तत्सम
प्रकाल-सं., रेखा गढ़ैक आ नपैक यन्त्र, काँटा । मै.
प्रकाश-सं., इजोत । सं तत्सम.
प्रखर-विशे., ज्वलन्त, तेज, उज्वल । सं. तत्सम
प्रगति-सं., कोनो काज कें गति, साधनाक वृद्धि । सं. तत्सम
प्रचण्ड-विशे., बज्रबुद्धि । ने मानैवाला ने जानैवाला । सं. तत्सम
प्रचार-सं., सभक जानकारी । सब लोक कें बुझबैक प्रक्रिया । सं. तत्सम
प्रजनन-सं., जीव सँ जीवक उत्पन्न होइक विधि । सं. तत्सम
प्रजा-सं., १. संतान । २. संरक्षणक लोक समूह । सं. तत्सम
प्रजापति-सं., मानव आ मानवताक प्रवर्तक आदि पुरुष । सं. तत्सम
प्रण-सं., प्रतिज्ञा, टेक । सं. तत्सम
प्रणय-सं., स्त्री पुरुषक परस्पर आकर्षण । वासनामय प्रेम । सं. तत्सम
प्रणाम-सं., हाथ जोड़ि शिर झुकाकय पैरक स्पर्श करैत नमन । सं. तत्सम
प्रणाली-सं., क्षेत्रीय रीति तथा विधि । सं. तत्सम
प्रत्यवाय-सं., पाप कर्म । सं. तत्सम
प्रतप्त-विशे., अत्यधिक झुलसल । सं. तत्सम
प्रताप-सं., १. कठोरता भरल तेज । २. दबदबाओ । सं. तत्सम
प्रतारणा-सं., ठकि फुसियाक' आबेगक शान्ति । सं. तत्सम
प्रति-अव्यय, श्राद्धक सामान्योत्सर्गक वस्तुक दान । मै.
प्रतिक्रिया-सं., कोनो विषयक लगले उचित क्रिया तथा उत्तर । सं. तत्सम
प्रतिकार-सं., उचित उपाय । सं. तत्सम
प्रतिज्ञा-सं., वचनक टेक । सं. तत्सम
प्रतिभा-सं., विषय पर शीघ्र दौड़ैवाली बुद्धि । सं. तत्सम
प्रतिमा-सं., ककरो अनुरूप गढ़ल मूर्ति । सं. तत्सम
प्रतिष्ठा-सं., समाजक बीच मान्यता । सं. तत्सम
प्रतिहारी-सं., नाटकीय पात्र विशेष । सं. तत्सम
प्रतीक्षा-सं., ककरो आसरा रखैक, बाट तकैक क्रम । सं. तत्सम
प्रतीक-सं., बदला मे नामले देल वस्तु, धूह । सं. तत्सम
प्रतीति-सं., दिलजमाओ, विश्वास । सं. तत्सम
प्रथम-विशे., पहिल । सं. तत्सम
प्रथा-सं., परिपाटी, लोक परम्परा । सं. तत्सम
प्रदर-सं., स्त्रीगणक रक्तस्रावक रोग । सं. तत्सम
प्रदीप-सं., इजोत आ इजोतक साधन । सं. तत्सम
प्रदोष-सं., रात्रि स्पर्शक समय, साँझक उपरान्तवाला रातुक समय । सं. तत्सम
प्रधान-विशे., सब सँ उपर तथा आगू रहैवाला प्रमुख । सं. तत्सम
प्रबन्ध-सं., ब्योंत । सं. तत्सम
प्रबल-विशे., अधिक बलगर । सं. तत्सम
प्रबाल-सं., रत्न विशेष । सं. तत्सम
प्रभा-सं., ज्योति, इजोत । सं. तत्सम
प्रभात-सं., भोर, उषा काल । सं. तत्सम
प्रभाती-विशे., भोर मे गाओल जाइवाला गीत । सं. तत्सम
प्रभार-सं., ककरो काजक भार । काजक वहन । सं. तत्सम
प्रभारी-विशे., कार्यवाहक । सं. तत्सम
प्रभु-विशे.,सर्वशक्तिमान् । सं. तत्सम
प्रभुता-सं., शक्ति, सामर्थ्य । सं. तत्सम
प्रभेद-सं., भेदो मे भेद, अवान्त भेद । सं. तत्सम
प्रमाण-सं., सबूत, वास्तविक । सं. तत्सम
प्रमाद-सं., गलती, अपराध । सं. तत्सम
प्रमेह-सं., अधिक मूत्रस्रावक रोग । सं. तत्सम
प्रयत्न-सं., प्रयास, उद्योग । सं. तत्सम
प्रयाग-सं., महातीर्थ विशेष । गंगा, यमुना ओ सरस्वती नदीक संगम स्थल । इलाहाबाद । सं. तत्सम
प्रयास-सं., उद्योग, यत्न । सं. तत्सम

प्रयोग-सं., परताओ, परताएब, व्यावहारिक परीक्षण। सं. तत्सम

प्रयोजन-सं., हेतु, आवश्यक, लगाएब। सं. तत्सम

प्रलाप-सं., असम्बद्ध वाक्य वचनक उच्चारण। सं. तत्सम

प्रवचन-सं., कोनो विषय कें विस्तारपूर्वक व्याख्यान। सं. तत्सम

प्रवर-विशे., सर्वश्रेष्ठ। सं., जनौक गेंठ —प्रवर दू प्रकारक होइत अछि—१. तीन आ २. पाँच। अपन गोत्र मे जे मूल पुरुष सब उत्कट ख्याति कयने छथि हुनक नाम सँ प्रवर बनल अछि। तनिके लोकनिक स्मृति मे जनौ मे गेंठ देल जाइत अछि। उदाहरण–शान्डिल्य, काश्यप आदि अनेक गोत्र तीन प्रवरक थीक। तथा वत्स आ कात्यायन आदि पाँच प्रवरक गोत्र थीक। जेना—पाराशर गोत्रस्य शक्ति वशिष्ठ पराशेरति पञ्च प्रवराः। तथा सावर्ण्य गोत्रस्य और्वच्यवन भार्गव जामदग्न्या प्लवानेति पञ्च प्रवराः। देखू-मिथिलाक प्रचलित गोत्राध्याय। सं. तत्सम

प्रवाद-सं., गप्पक मूलक ठेकान नै लोक मे अनघोल। किम्वदन्ती। सं. तत्सम

प्रवास-सं., अपन देशकोस छोड़ि आन देश प्रदेशक वास। सं. तत्सम

प्रवासी-विशे., अपन समाज सँ दूर रहनिहार। सं. तत्सम

प्रवाह-सं., वेग, जलक गतिक तीव्रता। सं. तत्सम

प्रवीण-विशे., चतुर, दक्ष। सं. तत्सम

प्रवेश-सं., भीतर जाइक क्रिया। सं. तत्सम

प्रश्न-सं., पूछैक बात। सं. तत्सम

प्रशंसा-सं., बड़ाइ, गुणगान। सं. तत्सम

प्रसंग-सं., सन्दर्भ, विषय, मादे, मैथुन। सं. तत्सम

प्रसार-सं., पसार, अधिक दूरक क्षेत्र मे विस्तार। मै.

प्रसारण-सं., कोनो वस्तु के केन्द्रक लागि रखैत विस्तार। मै.

प्रसिद्धि-सं., ख्याति, नाम। सं. तत्सम

प्रसिद्ध-विशे., स्वनाम धन्य, नामी। सं. तत्सम

प्रहार-सं., चोट, घात, आघात। सं. तत्सम

प्रहेज-सं., आत्मसंयम, संयम, परहेज। उ. तद्भव

प्राण-सं., शरीर मे रहनिहार वायुक समूह। सं. तत्सम

प्राणी-विशे., जीवनधारी, जन्तुमात्र। सं. तत्सम

प्रात-अव्यय, रातिक अन्त आ दिनक आगमवाला मध्यकाल। प्रातः। सं. तद्भव

प्रान्त-सं., अत्यन्त दूर विस्तृत क्षेत्र, अंचल आ प्रदेश। सं. तत्सम

प्रायः/प्रायशः-अव्यय, साइत, शायद सम्भावना मात्र भरि। सं. तत्सम

प्रिय-विशे., मनक आह्लाद करैवाला। सं. तत्सम

प्रियतम-विशे., प्रणयी। अत्यन्त प्रिय। सं. तत्सम

प्रिया-विशे., प्रेम करैवाली नारी। सं. तत्सम

प्री-विशे., प्रिय। सं. तद्भव

प्रीतम-विशे., प्रियतम। सं. तद्भव

प्रीति-सं., हृदयक अटटू परस्पर आकर्षण। सं. तत्सम

प्रेत-सं., मृत्युक उपरान्तक जीवात्मा। सं. तत्सम

प्रेम-सं., स्नेह, प्रणय। सं. तत्सम

प्रेमिका-विशे., प्रणय (वासनात्मक प्रेम) करैवाली। सं. तत्सम

प्रेमी-विशे., १. प्रणय करैवाला। (केवल स्त्रीक हेतु) २. सब सँ सामान्य स्नेह रखैवाला। सं. तत्सम

प्रेय-विशे., सब कें प्रिय लगैवाला। सं. तत्सम

प्रेयसी-विशे., प्रिय लगैवाली पत्नी। सं. तत्सम

प्रेरणा-सं., सक्रियता अनैक चेतना, मानसिक शारीरिक क्रियाक उत्साहक संवर्धन। सं. तत्सम

प्रेस-सं., छापाखाना। अं. तत्सम

प्रौढ़-विशे., अर्न्तबल भरल। सब रूपें समर्थ। पकठोस। सं. तत्सम

प्लेग-सं., महामारी विशेष। मै.

पँ-अव्यय, कार्यक गतिक निकटता एवं शीघ्रताक द्योतक शब्द। प्रयोग–''हम अयलौं पँ!'' अर्थात् आबि गेलौं सैह बुझू। अथवा मे नहियें कोनो विलम्ब। मै.

प'-सं., गूर आदि घाओक मुह चीरकिय विकार बहबै लेल नहरनी आदि अस्त्रक प्रयोग। प्रयोग-''घाओ'' कतौ प' कतौ।'' लोकोक्ति। मै.

पऽ-सं., पचीसीक खेल मे कौड़ी भजै मे आठ कौड़ीक बीच एकेटा चित्त उनटल रहने दश कहबैछ ओकर बीस घर गोटी चलल जाइत अछि आ दू घर आर होइत छैक जे पऽ कहल जाइछ। प्रयोग—"पऽ बारह। अर्थात् पऽ पर सँ बारहो भेल तँ अति उत्तम हैत।" मै.

पइन-सं., पानिक अवर जातक स्थायी वाट। मै.

पओन-सं., चारि भागक तीन भाग। मै.

पओना-विशे., ककरौ सँ अवश्य प्राप्त करै जोग द्रव्य। मै.

पक्कड़-सं., परस्पर कोनो प्रकारक सम्मुख युद्ध। मै.

पक्का-विशे., १. निश्चित। २. पकाओल अर्थात् सक्कत आ शोधल एवं साधल वस्तु सँ बनल। ३. जाँचल वा परीक्षा कयल। ४. कोठा घर। ५. आगि मे पकाओल। मै.

पक्की-विशे., पकाओल, शोधल, ठोस, जाँचल। मै.

पक्कू-विशे., पकैक योग्य (फल आदि), पकैक क्रम-वाला। मै.

पक्ख-सं., अन्हरिया आ इजोरिया पक्ष। सं. तत्सम

पक्खा-सं., ओर, कात। प्रयोग—"घरक दछिन-बरिया पक्खा मे चोर सिन्ह द' सकैये।" मै.

पंक्ति-सं., पाँती, धारी। सं. तत्सम

पक्क-विशे., पाकल। सं. तत्सम

पक्ष-सं., भाग, खण्ड, पाँखि आ मतक मेल। सं. तत्सम

पक्षाधात-सं., लगबा रोग, शरीरक एक भागक शून्यता। सं. तत्सम

पक्षी-सं. चिड़िया। सं. तत्सम

पकगर-विशे. ताप सँ नीक जकाँ पकाओल। मै.

पकठी-विशे., अधिक ताओ लगला सँ पाकि कय ऐंठि गेल। मै.

पकठाएब-क्रि., अधिक जोआ गेला सँ काजक जोग नै होएब। मै.

पकठाएल-विशे., अधिक जोआएल हेबाक कारणें अनुपयोगी। मै.

पकठोस-विशे., प्रौढ़, प्रगल्भ। आत्मबलशाली। मै.

पकठोसल-विशे., उचित बैस सँ पहिनै बनल प्रगल्भ। मै.

पकड़-सं. धरैक, ग्रहण करैक आ विवश रखैक स्थिति। मै.

पकड़ना-सं., धरैक, गहैक आधार वस्तु। मै.

पकड़ब-क्रि., धरब, विवश करब, राखब। मै.

पकड़ाएब-क्रि., धराएब, ग्रहण कराएब। मै.

पकड़ा जाएब-क्रि., १. बन्दी भ' जाएब। धराएब। २. (लाक्षणिक) कोनो गुप्त बात मे देखार होएब। मै.

पकड़ा पकड़ी-सं., एक दोसरा कें धरैक चेष्टा। मै.

पक पक करब-क्रि., भीतरैं भीतर अत्यन्त तमसाएल रहब। मै.

पक पकाएब-क्रि., भीतरैं भीतर क्रोधें जरैत रहब। मै.

पकवान-सं., तेल घी मे छानल खाद्य वस्तु। मै.

पकमेल-विशे., कल (कोल्हु) मे मथल माटि जे पजेबा बनबै मे काज अवैये। मै.

पकलहन-विशे., पकैक क्रम मे रहैवाला जकाँ। मै.

पकला जौं पाथर-सं., (लाक्षणिक) काज सिद्धिक काल मे भयंकर आपत्ति। मै.

पकाएब-क्रि., १. आगि मे दय कठोर बनाएब। २. ताप द्वारा फल आदि कें घुलाएब। ३. जराएब। मै.

पकाओन-सं., कोनो रूपक पाकक प्रक्रिया। मै.

पकान-सं., पाक (ताप) क क्रम। मै.

पकिया-विशे., सब प्रकार सँ जाँचिकय ठोस सिद्ध कयल। मै.

पकुहा-सं., पाकल आमक सुखाएल आँठीक भीतरक सुखाएल कोइली। मै.

पकै करब-क्रि., अंगक कोनो प्रकारक आघात मे विकार उत्पन्न होएब, पीजु भरब। मै.

पकौआ-विशे., आगि मे द' क' पकाओल वस्तु। मै.

पकौड़-विशे., सिद्धो वस्तु के फेर आगि सँ ताप दय पकाओल। मै.

पकौड़ी-सं., बेसन मे अनेक मसाला द' क' चापट सन बना कय तेल मे छानल व्यञ्जन। मै.

पख-सं., पक्ष। अन्हरिया इजोरिया। सं. तत्सम

पंख-सं., चिड़ैक पाँखि वा पाँखिसन वस्तु। मै.

पंखा-सं., कृत्रिम वसात करैक पैघ साधन। मै.

पंखी-सं., कृत्रिम वसातक साधनक छोट रूप । मै.

पखरबाएब-क्रि., अनका द्वारा धोअब, पखारब, प्रक्षालन कराएब । मै.

पखरा खैर-सं., खैर, कत्थाक एक भेद । मै.

पखवारय-विशे., एक एक पक्ष पर होम'वाला । मै.

पखाउज-सं., मृदङ्ग सन वाजन विशेष । मै.

पखान-सं., पाषाण, पाथर । मै.

पखार-सं., धोऐ मजैक कार्यक्रम । मै.

पखारब-क्रि., धो माजि क' पवित्र करब । मै.

पँखिगर-विशे., १. उड़ैक योग्य पाँखिवाला पक्षीक बच्चा । २. (लाक्षणिक) सूझि बुद्धिवाला भ' क' संसार मे घूमैक योग्य । मै.

पखिना-सं., धरनिक मानिक थम्ह मे ठोकल हिलै डोलै सँ बँचबैवाला । मै.

पखुआ-विशे., पक्षक भीतर भेनिहार । मै.

पँखुड़ी-सं., दोपत्ती आँकुरक दूनू दिशक पात । मै.

पखेब-सं., दीपावलीक प्रात होम'वाला गोधनक पूजा एवं गो क्रीड़ा । मै.

पगड़ी-सं., १. अपन अपन क्षेत्रक रीतिक अनुसार सिर पर धरैवाला मोरेठा टोपी आदि । २. मैथिलक छोटसन पाग । मै.

पगलपनी-सं., अपन क्रिया सँ प्रकट बताहसन स्वभाव । मै.

पगलाहा-विशे., चीनीक संग थोड़ ताप लगाओल वाला मखान आदि । मै.

पगला-विशे., बतहवा । (अनादर मे) मै.

पगलाह-विशे., अवास्तविक पागल, पागल जकाँ करैवाला । मै.

पगहा-सं., महिस आदि पशु कें वश मे रखै लेल बान्हल पैघ डोरी । मै.

पंगा (नोन)-सं., क्षारीय जल सँ जमाओल नोन । मै.

पगार-सं., कुशियार अथवा तेहनसन वस्तुक अगिला भाग अर्थात् मूड़ी । मै.

पगुआ-विशे., पागि कय अर्थात् कनेक भूजि कय बनाओल पदार्थ । मै.

पगुआ-सं., पाजु, मालजालक खाएल वस्तुक फेर चर्वणा । मै.

पगुड़ाएब-क्रि., मालजालक पाजु करब । मै.

पगुड़ी-सं., देखू—"पगुआ" । मै.

पघड़िया-सं., धारदार भारी आ मोट लोहक बाँस काठ कटैवाला चन्द्राकार टेढ़ अस्त्र, दबिया । मै.

पघारि-सं., एक रेखा दिशक दर्शित क्षेत्र खण्ड । निर्दिष्ट प्रखण्ड । मै.

पघिलन-सं., १. घमिकय पसरल वस्तु । २. घमैक क्रम । मै.

पघिलब-क्रि., द्रवित होएब, घमब । मै.

पघिलाएब-क्रि., ठोस वस्तु कें द्रवित करब । घमाएब । मै.

पघिलाह-विशे., घमैवाला । मै.

पँघुरी-सं., गाछ मे निकलल छोट छोट डन्टी । मै.

पङ्क-सं., थाल, कादो, पाँक । सं. तत्सम

पङ्गु-विशे., नाङर, चलै मे अशक्त । सं. तत्सम

पङबाएब-क्रि., अनका द्वारा गाछक वृक्षक अनावश्यक डारि कटबाएब । मै.

पङाड़-सं., काटल छाँटल जाइवाला डारि पातक समूह । मै.

पङाओ-सं., गाछ वृक्षक डारि पात झारैक क्रम । मै.

पङार-सं., देखू—"पङाओ" । मै.

पच्चड़-सं., कोनो अस्त्रक बेंट कें सक्कत करै लेल ठोकल छोट टुकड़ी । छोट कील । मै.

पच्चादूआ-सं., दू हिस्साक पाँच भाग । मै.

पच्ची-सं., फोंक गहना कें भारी करैले लाह वा बालु दैक प्रक्रिया । मै.

पच्चीकारी-सं., हस्तकलाक वस्तुक सौन्दर्य्य बढबैक अनेक सूक्ष्म चित्रण । मै.

पच्छ-सं., १. अपन सिद्धान्त । २. देखू—"पख" । ३. तरफदारी । सं. तद्भव

पच्छिम-सं., पश्चिम दिशा । सं. तद्भव

पच्छी-सं., पक्षी । सं. तद्भव

पंच-विशे., निर्णायक । मै.

पंचक-सं., भदवा । मै.

पचकटारि-विशे., अत्यन्त दुर्बल । मै.

पँचकठिया-सं., दाह संस्कार मे गेल लोकक द्वारा देल जरि क' शेष बचल देहक पाँच टा काठी पाछू दिश फेंकि मांसभक्षी कें कयल जाइवाला उत्सर्ग । मै.

पँचकढ़ी-सं., पाँच टा जड़ी बूटी मिला क' बनोओल कढ़ावाला औषध। मै.
पचकन-सं. पचकैक, धँसैक, संकुचित होइक रूप विशेष। मै.
पचकब-क्रि., भीतर दिश धँसब, सुकुचब। मै.
पँचकलहा-विशे., भीतर दिश धँसैवाला, सुकुचलवाला। मै.
पचकाएब-क्रि., सुकुचाएब, भीतर दिश धँसाएब। मै.
पँचकोरबा-सं., उपनयन कर्मक काल मे स्थान भेदें पाँच कओर दही चूड़ा खाइक विधि। मै.
पँचकौड़ी-सं. पाँच कौड़ी मे टोनाक रूपें कीनल। मै.
पंचग्रास-सं., पहिलक पाँच कौर भोजन। सं. तत्सम
पंचड़-सं., पहियाक छेद, वसात बहराइक भूर। मै.
पचड़ा-सं., गुप्त रूपक संघर्ष। मै.
पचड़ा पड़ब-क्रि., रहस्यमय संघर्ष होएब। मै.
पचड़ी-सं., कोनो वस्तु के सक्कत रखैले देल छोट पातर कील। मै.
पचन्ता-विशे., पचैवाला, पचैक योग्य। मै.
पंचनामा-सं., पंच सभक लिखित निर्णय। मै.
पचनियाँ-विशे., धीयापूता कें चेचक निरोधक पाच (टीका) देम'वाला। मै.
पँचनोना-सं., पाँच प्रकारक नोनक सम्मिश्रण। मै.
पचपच-विशे., सदिखन जल खसला सँ भीजल भूमि। मै.
पचपचाइन-विशे., १. घृणा सँ मुह मे जल भरि अपने मुहक विकार भरल स्वाद। २. जलक आमद सँ हरदम आर्द्र बनल। मै.
पचपचाएब-क्रि., मन एवं मुह मे कुत्सित वस्तुक दर्शन आ स्पर्श सँ घृणा सँ आर्द्रता भरब। मै.
पचपचाह-विशे., आर्द्रता सँ घृणा जगवैवाला। मै.
पचपची-सं., सतत आर्द्रता, सलाबी। मै.
पचपन-संख्या, पाँच दहाँइ पाँच एकाँइक अंक। मै.
पंचपात्र-सं., पूजा मे जल उठाकय देवता पर देक जलपात्र। मै.
पंचम-विशे., पाँचम संख्या मे रहैवाला। मै.
पंचमी-सं., पक्षक पाँचम तिथि। मै.
पँचमी हिस्सा-सं., पाँच भागक एक भाग। मै.
पचमेर-सं., पाँच वस्तुक (मधुरक) समूह। मै.
पँचरंगी-विशे., पाँच रंग सँ रंगल। मै.
पचर पचर-अव्यय, सरसता भरल। मै.
पचराह-विशे., सतत गील रहैवाला। मै.
पचल-विशे., अत्यन्त सिद्ध भ' क' रूप बदलल। मै.
पचहत्तरि-संख्या, पाँच एकाँइ सात दहाँइक अंक। मै.
पचहर-सं., स्त्रीगणक प्राचीन निकास (मल त्याग) क कृत्रिम आलय। मै.
पचाएब-क्रि., १. भोजन कें पेट मे सिद्ध कय लेब। २. देह मे उपर सँ तेल आदि स्नेहन वस्तु कें मिला लेब। ३. (लाक्षणिक) केहनो कोनो गुप्त बात तथा अपराध कें दबाकय निर्मूल बना देब। ४. रीन आदि लेल वस्तुक नै गछब। मै.
पचाओन-सं., चेचकक टीका लगवैक कार्यक्रम। मै.
पँचागि-सं., जेठ मासक तबैत सूर्य, अपन आसनक चारू कोन पर धधकैत आगि, ऐ पाँचो आगिक ताप लैक व्रत, पंचाग्नि व्रत, पचाइक। सं. तत्सम
पंचानन-सं., शिव तथा सिंह। सं. तत्सम
पंचानबे-संख्या, पाँच इकाँइ नौ दहाँइक अंक। मै.
पंचामृत-सं., दूध, दही, घी, चीनी आ मधुक समूह सँ बनल। मै.
पंचायति-सं., पञ्च आ मुखिया आदि मिलिकय कय निर्णायक सभाक नियत स्थान। मै.
पचास-संख्या, पाँच दहाँइ शून्य एकाँइक अंक। मै.
पचासी-संख्या, पाँच एकाँइ आठ दहाँइक अंक। मै.
पंचैती-सं., पंच लोकनिक द्वारा करैक योग्य न्याय। मै.
पछ-सं., ककरो दिश रहैक निश्चय। एक दिशुक लागि। मै.
पछड़ब-क्रि., कमि जाएब, समानता मे न्यून भ' जाएब। मै.
पछड़म पछड़ा-सं., लगातार परस्पर दबाएब आ दबैक क्रम। मै.
पछता-विशे., पाछू उपजैवाला। मै.
पछताएब-क्रि., पश्चाताप करब। मै.
पछतावक-सं., पश्चाताप सँ उत्पन्न ग्लानि। मै.
पछतिया-विशे., पाछू भेनिहार। मै.

पछतौआ-विशे., १. पाछू कालक भेल । २. पश्चात्ताप उत्पन्न करैवाला । मै.

पछबरिया-विशे., पच्छिम दिश मे होइवाला तथा रहैवाला । मै.

पछबा-विशे., पच्छिम दिशक वसात । मै.

पछबारि-विशे., पच्छिम मे स्थित । मै.

पछलग्गू-विशे., १. एकक मतक समर्थन करैवाला। २. पाछू लागिकय रहैवाला । मै.

पछलगुआ-विशे., १. सब काज मे पाछू लगनिहार । संग रहनिहार । २. पुनर्विवाहवालीक पहिलुक बच्चा । मै.

पछाइत-अव्यय, पाछूकाल मे । मै.

पछाड़-सं., अशक्त पतन, खसादैक क्रम, पाछूवाला भाग । मै.

पछाड़ब-क्रि., दबा देब । बल मे नीचाँ खसाएब । मै.

पछाड़ी-सं., पाछू दिशक भाग । मै.

पछाँह-सं., पसरल छाया । मै.

पछाही-सं., पाछू दिशुक छाया, पाछू दिश सँ देल छाही । मै.

पछिमबरिया-विशे., पछिम भरक भेल । मै.

पछिमभर-अव्यय, पछिम दिश । मै.

पछिमा-विशे., पच्छिम प्रदेशक रहैवाला । मै.

पछिमाहा-विशे., पछिम प्रदेश मे होम'वाला । मै.

पछिमाहुत-विशे., पछिम दिश दबल रहैवाला । मै.

पछिया-विशे., पछबा वसात । मै.

पछिला-विशे., पाछू मे रहैवाला । मै.

पंछी-सं., पक्षी, चिड़ै । मै.

पछुआ-सं., १. गहना विशेष । २. बैलगाड़ीक पाछू दिश बढ़ल बांसक डन्डा । मै.

पछुआणी-सं., पाछू दिशक गति । मै.

पछुआर-सं., पाछू दिशवाला स्थान । मै.

पछुऐत-सं., घरक पाछू दिशक खण्ड । मै.

पछुऐनी-सं., पाछू लागल खेहार । पाछू लागल गति । मै.

पछेर-सं., आरि के सक्कत करैले आरि लग देल माटि । मै.

पछेरा-सं., घरक दाबाक जड़ि के दृढ़ रखैले माटिक भरनि । मै.

पछोर-सं., पाछू लागल जाइक क्रम । मै.

पंज-विशे., अत्यन्त दुर्बल शरीरवाला । मै.

पंज करब-क्रि., विवश करब । मै.

पँजबाहि-सं., १. पाँज मे भरैक क्रम । मै.

पंजर-सं., शरीरक हड्डीक समूह । सं. तद्भव

पजरब-क्रि., आगिक ज्वलित होएब । मै.

पँजरबार-विशे., पाँज दिशक गरवाला । मै.

पजरबाहि-सं., पाँजर मे वेदनाक क्रम । मै.

पँजरा-सं., पंजरवाला शरीरक अंग । मै.

पँजरी-सं., छातीक दूनू कात हड्डीवाला भाग । मै.

पंज होएब-क्रि., १. अति दुर्बल होएब । २. विवश होएब । मै.

पंजा-सं., पसरल हाथ । मै.

पजार-सं., आगि प्रज्ज्वलित करैक उपक्रम । मै.

पजारब-क्रि., आगि प्रज्ज्वलित करब । मै.

पंजा लड़ाएब-क्रि., हारै जीतैक विचार सँ एक दोसरक पंजा मे पंजा फंसाकय दबवैक प्रयास करब। मै.

पँजियाएब-क्रि., पाँज मे धरब । मै.

पँजियार-विशे., पंजीकार, कौलिक संबन्ध केर समाज विशेषक सम्पूर्ण लेखा अभ्यस्त रखैक कलाकार। शास्त्रीय नियमानुसार वर कन्याक बीच कौलिक संबन्धक अभाव देखि वैवाहिक निर्णय देनिहार । विशेष देखू-अधिकार माला । सं. तत्सम

पँजियारी-सं., सभक कुल मूल आ सम्बन्धक लेखा रखैक कला । मै.

पजेबा-सं., ईंटा खाच मे माटिक बनल वस्तु । मै.

पँजौड़-सं., पाँज मे दावि राखल धान आदि फसिलक अंश । मै.

पझाएब-क्रि., आगिक मिझाइक स्थिति होएब । मै.

पट्टशिष्य-विशे., कोनो संस्थाक प्रमुख शिष्य । सं. तत्सम

पट्टा-सं., १. कोनो वस्तुक बेचै में तथा लेन देन मे लिखित पत्र । २. केवाड़क बाँहि (जोड़ल जाइवाला) भाग । ३. जाँतक पाट । मै.

पट्टी-सं., १. घाओ आदि बन्हैक कपड़ा । २. एक वस्त्र खण्ड मे जोड़ल जाइवाला वस्त्र खण्ड । मै.

पट्टी पढ़ाएब-क्रि., फूसि फटक लगाबझाकय विरोध कें आर गम्भीर बनवैक बात कहब । मै.

पट्ठा-विशे., १. शौर्यक काज कयनिहार नवयुवक । २. हाथीक पुरुष बच्चा । मै.

पट-सं., वस्त्र, कपड़ा। सं. तत्सम

पट-विशे., नीचाँ मुहें पड़ल तथा भेल। मै.

पटक्खा-सं., छोट-छोट खेलवाला विस्फोटक द्रव्य। मै.

पटकन-सं., जोर सँ धरती पर बेलागि खसबैक चेष्टा। मै.

पटकब-क्रि., जोर सँ भूमि पर बेलागि खसाएब। मै.

पट करब-क्रि., नीचाँ मुहें कय सुताएब, खसाएब आ औन्हब। मै.

पटका-सं., खसबैक प्रकार। मै.

पटका पटकी-सं., परस्पर खसबैक चेष्टा। मै.

पटकाही-विशे., पुरुषक देल स्त्रीगणक गारि। मै.

पट द'-अव्यय, लगले, तुरन्त। मै.

पटदेहरि-सं., चौकठिक उपर दैवाला तकथाक पट्टी। मै.

पटपट-अव्यय, १. लगले लागल। २. गाछवृक्ष आ जनशून्य। प्रयोग–"पटपट मैदान।" मै.

पटपटाएब-क्रि., निराशा सँ चिन्तित आ व्यग्र होएब। मै.

पटपटाएल फिरब-क्रि., निराशा आ अभाव सँ उपायक चिन्ता आ व्यग्रता सँ घूमब। मै.

पटपटी-सं., १. पर्पटी जड़ी विशेष। २. घास विशेष। मै.

पटब-क्रि., १. समञ्जस रहब। २. मत मिलब। ३. जल सँ सिञ्चित होएब। ४. अन्तिम निर्णय पर रुकि जाएब। मै.

पटबन-सं., सरलता सँ सिञ्चित होइवाला खेत। सिञ्चित करैक सरल मार्ग। मै.

पटबरिका-सं., प्रजा सँ लगानक संग्रह करैक कार्यभार। मै.

पटबा-सं., गहना आदि गँथैवाला एवं शृङ्गारक वस्तु बेचैवाला व्यवसायी जाति। मै.

पटबारी-विशे., प्रजा सँ लगान वसूल करैवाला कर्मचारी। मै.

पटबाह-विशे., पटबैक काज मे सहायक। मै.

पटम्मर-सं., पट्टाम्बर। सं. तत्सम

पटर पटर-विशे., अव्यक्त शब्द। मै.

पटरानी-विशे., अभिषेक मे राजाक संगवाली रानी अभिषिक्त रानी। मै.

पटरी-सं., १. लिखै पढैक काठ आदिक तकथी। २. रेलगाड़ी चलैक लाइन। मै.

पटरी बैसब-क्रि., सभक एक मत पर आएब। मै.

पटल-सं. १. प्रकार, विभिन्न आडम्बर। २. समूह सं. तत्सम

पटसन-सं., पटुआवाला सन जूट। मै.

पटसार-विशे., कम ढालूवाला घरक चार। मै.

पटाइन-सं., मिलान, समञ्जस। मै.

पटाएब-क्रि., १. जल सँ आर्द्र बनाएब। २. फरिछाएब, निपटाएब। मै.

पटाओन-सं., पटबैक कार्यक्रम। मै.

पटाक द'-अव्यय, अविलम्ब छुटितैं। मै.

पटापटि-अव्यय, लगले लागल। मै.

पटिया-सं., मोथीक बीनल बिछाओन। मै.

पटियाएब-क्रि., ककरो अपन मत पर आनब। मै.

पटु-विशे., विशेषज्ञ, कार्य मे सक्षम। सं. तत्सम

पटुआ-सं., सन उपजैवाला फसिल। मै.

पटुआ साग-सं, स्वास्थ्यकर सागवाला पटुआ। मै.

पटेर-सं., नदी कातक नमहर विशेष घास। मै.

पटै-सं., दूनू दिश लटकल भार उठबैक लचकीला फट्ठा कान्ह पर भार उठबैवाला। मै.

पटोटन-सं., धरना असमर्थता सँ विकलता सँ पड़ल रहैक स्थिति। मै.

पटोर-सं., पाट (रेसमी) क शाड़ी, पट्टाम्बर। मै.

पटोहा-विशे., ताप सँ अत्यन्त सुखाएल, मुरझाएल। मै.

पटौनी-सं, पटबैक विधि विधान। मै.

पठन पाठन-सं., पढ़ब पढ़ाएब। सं. तत्सम

पठरू-सं., बकरीक बच्चा। मै.

पठाएब-क्रि., प्रेषित करब, पहुँचाएब। मै.

पठाओन-सं., पठबैक प्रक्रिया। मै.

पठा देब-क्रि., पठबैक आदेश, पठाएब। मै.

पठार-सं., पाथरवाला भूमि, प्रदेश। मै.

पठिया-सं., बकरीक स्त्री बच्चा। मै.

पठियार-सं., सभ्यताहीन व्यवहारवाला समाज। मै.

पड़काएब-क्रि., पदैक शब्द करब। मै.

पड़पड़-अव्यय, पदैक शब्द, कड़ा वस्तुक शब्द। मै.

पड़पड़ाएब-क्रि., पदैक अधिक शब्द करब। मै.

पड़ब-क्रि., बिछाओन पर बिना निन्नक देह पसारब। मै.

पड़रू-सं., महींसक बच्चा। मै.

पड़ाइत-विशे., भगैत रहैवाला। मै.

पड़ाएब-क्रि., भागब, नुकाइक बिचार सँ दौड़ब। मै.

पड़ाओ-सं., अस्थायी डेरा। शिविर। मै.

पड़ाक द'-"अव्यय" लगले शब्दसहित। मै.

पड़ाका-सं., देखू-"पटक्खा"। मै.

पड़ाँचब-क्रि., आदि सँ अन्तधरि सब कथा कहब। मै.

पँडाल-सं., पण्डाल, जनवासा, अस्थायी कृत्रिम वैसे उठैक स्थान। सभा स्थान। मै.

पँड़ुकी-सं., चड़ै विशेष। मै.

पड़ेन-सं., पड़ाइक क्रम। मै.

पड़ेन लागब-क्रि., भयावह आपत्ति सँ जड़िमूल सँ भागि जाइक स्थिति होएब। मै.

पड़ैया-विशे., भागि जाइक प्रकृतिवाला। मै.

पड़ोर-सं., तरकारी हेतु लत्तीवाला प्रसिद्ध फल। परबल, पटोल। मै.

पड़ोरिआ-विशे., पड़ोरक आकार प्रकारवाला। मै.

पड़ौआ-विशे., हरदम पड़ाइवाला। पड़ाकय आएल व्यक्ति। मै.

पढ़नाइ-सं., पढ़ैक आवश्यक काज। मै.

पढ़निहार-विशे., पढ़ैत रहैवाला। मै.

पढ़ब-क्रि., अध्ययन करब। स्पष्ट बाजिक' विषय कें बुद्धि मे भरब। मै.

पढ़ब गूनब-क्रि., अभ्यास करब आ विचारब। मै.

पढ़ल-विशे., पढ़िकय ज्ञानी बनल। मै.

पढ़लहा-विशे., शिक्षित, पढ़ै लिखै मे लागल। मै.

पढ़ाइ-सं., पढ़बैक काज। मै.

पढ़ाएब-क्रि., शिक्षा देब, विषयक ज्ञान कराएब। मै.

पढ़ाओन-सं., पढ़बैक विधि वा शैली। मै.

पढ़िया-विशे., पाढ़ि अर्थात् भिन्न रूपक कोरवाला। मै.

पढ़ुआ-विशे., पढ़ैवाला, विद्यार्थी। मै.

पढ़ौआ-विशे., पढ़ौनिहार, पढ़ाओल। मै.

पढ़ौनी-सं., पढ़बैक नियत काज। मै.

पण्डा-विशे., तीर्थ मन्दिरक नियत पूजक। मै.

पण्डागिरी-सं., तीर्थ मन्दिरक पूजा पाठक नियत व्यवसाय। मै.

पण्डित-विशे., पढ़ि गुनिकय विवेकशील विद्वान्। मै.

पण्डिताइ-सं., पण्डित होइक गुण। पण्डितक व्यवसाय। मै.

पण्डिताम-सं., पण्डितक उचित व्यवहार आ विचार। मै.

पण्डितारय-सं., पण्डितक काज आ आचरण। मै.

पत्तर-सं., लोहक पत्र, चदरा, टीन। मै.

पत्तल-सं. भोजनक हेतु बिछाओल पात। मै.

पत्ता-सं., १. गाछ वृक्षक छोट पैघ सुखाएल पात। २. हरक पालो मे अर्ध गोलाकार दुहू दिश पत्ता जकाँ बढ़ल काठ। मै.

पत्ती-सं., छोट तेज लोहक कटैवाला पत्र। ब्लेड। मै.

पत्नी-विशे., विवाहिकय आनल स्त्री, गृहिणी। मै.

पत्र-सं., पात, लोहक चदरा, चीठी। सं. तत्सम

पत्रशेष-सं., पात मे वा थारी मे छोड़ल भोजनावशेष। सं. तत्सम

पत्री-सं., पुर्जी, छोट लिखित पत्र। मै.

पतक्खा-सं., पताका। सं. तद्भव

पतगर-विशे., विशेष पातवाला, भोगार। मै.

पतङ्ग-सं., १. उड़ैवाला कीट, पक्षी। २. गुड्डी। सं. तत्सम

पतझर-सं., स्वाभाविक रूपें पात झरैक क्रम। मै.

पतन-सं., नीचाँ मुहक गति। मै.

पतना-सं., भगक दूनू कातक मांसल कोर। मै.

पतनार/पतनाल-विशे., खसैवाला स्थान, ढालू। मै.

पतनुक्का-विशे., छनै मे पातें पातें अर्थात् दोगें दोगें नुकाइवाला। मै.

पतनुकान-सं., एकदम गुप्त स्थान मे नुकाइक चेष्टा। मै.

पतनोना-सं., भोजन काल मे अलग सँ नोन खाइक अभ्यास। मै.

पतबार-सं., पानि मे धँसल चाकर तकथी लागल कीलवाला नाओ घुमबैक कल। मै.

पतरका-विशे., पातरवाला। मै.

पतरा-सं., पञ्चाङ्ग, दिन तिथि बुझैक लेखापत्र। मै.

पतराएब-क्रि., पातर करब, पातर होएब। मै.

पतलोढ़ा-विशे., बिन पढ़ै लिखैक प्रवृत्ति सँ मूर्ख। मै.

पता-सं., नाँ ठेकान, प्राप्ति स्थान। मै.

पताएब-क्रि., पत्ता जकाँ शक्तिहीन भेल खसैक क्रम मे रहब। मै.

पताका-सं., ध्वजा। सं. तत्सम

पताल-सं., पाताल, धरतीक सातम तह। सं. तद्भव

पताली-विशे., पताल दिश झुकल। मै.

पतासी-सं., बिल मे बास करैवाली। प्रयोग-"चुट्टी रे पतासी रानी।" मै.

पति-विशे., स्वामी, प्रियतम। सं. तद्भव

पति-सं., प्रतिष्ठा, मान। मै.

पतिकरनी-सं., केवल प्रतिष्ठा बचवैक नामक काज। मै.

पतित-विशे., धर्म कर्म मे खसल। सं. तत्सम

पतिताहा-विशे., धर्म, कर्म आ विचार सँ अधम। मै.

पतिया-सं., १. प्रायश्चित। २. चीठी। प्रयोग"-के पतिया लय जाएत हे मोर प्रियतम पास।" मै.

पतियाइक-विशे., पतिआइ जोग। मै.

पतियाएब-क्रि., विश्वासपूर्वक मानब। मै.

पतियानी-सं., सोझ पाँती, पंक्ति। मै.

पतियानी जोर सँ-अव्यय, एक एक पाँती सोझ क' क'। मै.

पतियाल-सं., देखू—"पतवार"। मै.

पतिव्रता-विशे., पतिक मनोनुकूल कयनिहारि। मै.

पतुरिया-विशे., ग्राम्य वेश्या, ठाम ठाम पर जा कय व्यवसाय करैवाली। मै.

पतेर-सं., पातक ढेरी। मै.

पतै/पतोइ-सं., कुशियारक पातक ढेर। मै.

पतौटी-सं., एक एक व्यक्तिक भोजनक हेतु बिछाओल पातक व्यवस्था। मै.

पतौड़ा-सं., पात मे धय के बान्हल वस्तुक पोटरी। मै.

पतौरी-सं., पातक बनाओल कटोरी जकाँ पुरा। मै.

पथ्य-सं., दुखिताहक हितकर भोजन। सं. तत्सम

पऽथ/पन्थ-सं., देखू—"पथ्य"। स. तद्भव

पथ-सं., बाट, मार्ग। सं. तद्भव

पथपानि-सं., दुखिताहक खाइ पीवैक परिचर्य्या। मै.

पथरचूर-सं., पातक स्वादिष्ट तरुआ करैक पातवाला छोट जड़ी सन गाछ। पथरी रोगक औषध विशेष। मै.

पथरचोट-विशे., पाथरक लागल चोट, पाथरक प्रहार। मै.

पथरब-क्रि., अस्त्र कें पाथर पर पिजाएब। मै.

पथराएब-क्रि., (आँखिक हेतु) पाथर जकाँ अचल भय जाएब। (लाक्षणिक) पाथर जकाँ कठोर आ स्थिर बनि जाएब। मै.

पथराहा-विशे., पाथरक कणवाला, पाथर सन कठोर भ' गेलवाला। मै.

पथरी-सं., १. अश्मरी अर्थात् मूत्राशय मे पाथर भ' जाइक रोग विशेष। २. अस्त्र तेज करैवाला पाथर। मै.

पथरौटी-सं., पाथरक बनल वाटी। मै.

पथाइ-सं., गील माटि सँ साँच पर वस्तु बनवैक विधि। मै.

पथाएब-क्रि., अनका द्वारा साँच पर वस्तु बनाएब। मै.

पथार-सं., नीचाँ सुखबै लेल पसारल अन्न। मै.

पथिक-विशे., बटोही। सं. तत्सम

पथिया-सं., अन्न वा अन्य वस्तु रखैक बाँसक बीनल घपोली सन बासन। मै.

पथुआ-विशे., पाथिकय बनाओल। मै.

पथेर-सं., पजेबा पथैक स्थान। मै.

पथेरा-विशे., ईंटा पथैवाला जन। मै.

पथैया-सं., ईंटा आदि पथैक कार्य्यक्रम। मै.

पथौटी-सं., ईंटा पथैक नियम पर देल अग्रिम राशि। मै.

पद्दा-विशे., अधिक आ अधिक जोर सँ पदैवाला। मै.

पद्दानोन-सं. बीटनोन। मै.

पद्धति-सं., कोनो विषयक क्रमबद्ध नियम तथा दिशा-निर्देश। मार्ग। सं. तत्सम

पद्म-सं., कमलक फूल। सं. तत्सम

पद्मा-सं., १. लक्ष्मी। २. नदी विशेष। सं. तत्सम

पद्मासन-सं., योग साधनाक विशेष आसन। सं. तत्सम

पद-सं., १. स्थान, प्रतिष्ठित नियुक्तिक स्थान। २. सुबन्त आ तिङन्तवाला वर्ण वा वर्ण समूह। सं. तत्सम

पदक-सं., प्रतिष्ठाक चिह्न। सं. तत्सम

पदन्धोत-सं., अपन शरीरक सुनें नमहर धोती। मै.

पदना-विशे., यत्र तत्र हरदम पदैत रहैवाला। मै.

पदवी-सं., प्रतिष्ठाक पैघ चिह्न। वाट। सं. तत्सम

पदभार-सं., विशेष अधिकारीक कार्यक दायित्व। सं. तत्सम

पदाएब-क्रि., (लाक्षणिक) दो कें अधिक तंग करब। मै.

पदान-सं., अत्यन्त जोर सँ पदैक चेष्टा। मै.

पदावली-सं., कोनो विशेष कविक कविता समूह। सं. तत्सम

पदुआ-विशे., सदिखन पदैवाला। मै.

पदुमकाठ-सं., वनस्पतिक वृक्ष विशेष। मै.

पन्थ-सं., वाट, पेरा। मै.

पन्द्रह-सं., पाँच एकाँइ एक दहाँइक अंक। मै.

पन्ना-सं., १. पत्र, कागज आदिक एक एक अंश। २. कोनो डारि वा ठहुरी सँ मूड़ी छूटैक क्रम मे पात बहराइक रूप रेखा। मै.

पन्नापोठी-सं., एक बूटी विशेष। धीयापूताक पान जकाँ खा कय मुह रङैवाला। मै.

पन्नी-सं., अनेक रंगवाला सक्कत आ पातर सजबैवाला कागज। मै.

पन-सं., १. संज्ञावाची मैथिली भाषाक तद्धितीय प्रत्यय। २. अवस्था। प्रयोग–"जखन तेसर पन मे लोक पहुँचैये तखन सामर्थ्य नै रहै छै।" मै.

पनखौका-विशे., पान खयबाक अभ्यासवाला। मै.

पनपथिया-सं., पान रखैक डालीसन वासन। मै.

पनपब-क्रि., जीवित भ' क' नव पल्लव छोड़ब। मै.

पनपियाइ-सं., जलपान, प्रातः कालक अल्पाहार। मै.

पनबट्टा-सं., प्राचीन कालक गोल चापट सन द्रव्यक बनल पान रखैक दू खप्पावाला वासन। मै.

पनवसना-सं., सामान्य पान रखैक वासन। मै.

पनबीछी-सं., पान बीछैक कौतुक विशेष। विवाह मे वरक कन्यागतक आङन पहुँचला पर अढ़ सँ कन्या द्वारा छिरियाओल पान कें बारम्बार वरक द्वारा बीछैक विनोद विधि (मैथिल सम्प्रदायक व्यवहार विशेष)। मै.

पनमा-विशे., एवं सं., १. पानक पातक आकारवाला। २. तासक पत्तीक एक रंग विशेष। मै.

पनरहमा-विशे., पन्द्रह दिन परक अवधिवाला। मै.

पनहाएब-क्रि., स्तन मे दूध भरि आएब। मै.

पनहाओन-सं., मुइल बच्चावाली महिंस कें हाथ सँ स्तन कें पनह'बैक प्रक्रिया। मै.

पनहान-सं., गाइक दुहैक काल पनह'बैक खेप। मै.

पनहान देब-क्रि., महिंसिक थिराइक (मैथुनेच्छा प्रकट करैक) पूर्वाभास मे स्वतः स्तन मोट भ' जाएब। मै.

पनही-सं., पादत्राण। जूता। मै.

पन/पना/पनी-सं., तद्धितीय संज्ञा प्रत्यय। प्रयोग–"बूड़िपना।" मै.

पनाली-सं., १. नाली सँ निकालल नाली। २. सामाजिक रीति। प्रणाली। सं. तद्भव

पनिआएब-क्रि., १. खेत पानि सँ भरि जाएब। २. कोनो रुचिगर वस्तुक दर्शन सँ स्वादक लोभें जीह मे पानि भरि आएब। ३. (लाक्षणिक) लोभ आ तृष्णा सँ भरि ललचाएब। मै.

पनिआगर-सं., फूसक घरक ओलती मे छारैवाला खढ़ कें तनने रखैले देल विशेष रूपें बिछाओल खढ़। मै.

पनिऔरा-सं., भदवारिक छोट फल विशेष। मै.

पनिकच्छा-सं., नदी, पोखरि, उबरा आ खत्ताक पानिक लगवाला स्थान। मै.

पनिकट्टी-सं., सासुर सँ वियाहि कय वरक विदा होइक काल–जहिना पानि कें काटल नहि जा सकैत अछि तहिना कनेयाँक सोहाग आ वर बधूक प्रेमक विच्छेद नै हो—एहि तात्पर्य तथा शपथ रूपें मिथिला मे पानि कटैक मुख्य विधि। मै.

पनिकानर-सं., बिना खत्ता बनौनै पानिक भण्डारै सँ पानि करीन द्वारा खींचैक सुविधा। मै.

पनिकिरबा-सं., पानि मे रहैवाला कीरा। प्रयोग–"पानी मे पनिकिरबा मेरुली राज विराजै। मै.

पनिगर-विशे., १. बेशी पानि भरल। २. तेजगर बड़द आदि। ३. लावण्यवाला। मै.

पनिगढ़हा-विशे., पानि भरल गड्ढा। मै.

पनिघट-सं., अधिक पानिवाला घाट। मै.

पनिचहटा-विशे., पानि सँ सलसलाएल खेत। मै.

पनिछक्का-विशे., अधिक पानि मिलाओल दूध आ तीमन आदि । मै.

पनिछेक-सं., बहैत पानिक रोक । मै.

पनिझाओ-सं., पोखरि आदि जलाशय मे पानि बसल रहैवाला स्थान । मै.

पनिझाली-सं., अधिक ठाँ पानि पार करैवाला बाट । मै.

पनिडुब्बी-सं., जलीय शरीरवाला प्रेत । मै.

पनितौआ-सं., रसगुल्ला जातिक मधुर विशेष । मै.

पनिदुद्दर-सं., जलोदर रोग । मै.

पनिबह-सं., आकस्मिक जमा पानिक बहैक अस्थायी बाट । मै.

पनिबट-सं., आङन सँ बरिसाती पानि बहराइक बाट । मै.

पनिबाह-विशे., पानि उगहैवाला । पानिक पूर्ति करैवाला । मै.

पनिबाहा-सं., पानि बहैत रहैक हेतु नियत कयल नाली । बोरिंगक स्थायी नाली । मै.

पनिभर-विशे., लोक कें पानि भरि कय दैक व्यवसायवाला । मै.

पनिमरू-विशे., कनेक सुखाएल जकाँ बनल । मै.

पनियारी-सं., बाढ़िक द्वारें सगरे पसरल पानि । मै.

पनियाह-विशे., १. पानि भरल । २. (लाक्षणिक) किछु नीक वस्तु देखि लोभाइवाला । मै.

पनियाहा-विशे., दूध मे अधिकतर पानि दैवाला । मै.

पनिशाला-सं., धर्मक विचार सँ सामान्य लोक कें पानि पिअबैक घर । सं. तद्भव/मै.

पनिसहा-विशे., अधिक पानि सहैवाला । मै.

पनिसारा-विशे., सब प्रकारक वस्तु बिकाइवाला दोकान । मै.

पनिसुररा-विशे., अधिक आ पातर झोरवाला तीमन आदि । मै.

पनिसोखा-सं., मेघ मे निखरल इन्द्रधनुष । मै.

पनिसोह-विशे., पानिक अधिक स्वादवाला । मै.

पनिहारी-सं., अधिक पानिवाला समय । उचित सँ बेशी पानि पड़ने तथा लगातार अधिक दिनधरि वर्षा होइत रहने कष्टकर समय । मै.

पनी-सं., संज्ञावाचक तद्धितीय प्रत्यय । प्रयोग-"एहन मूर्खपनी नहि करू ।" मै.

पनीर-सं., औषध विशेष । मै.

पनुधब-क्रि., पुनर्जीवित होएब । फेर अंकुर जागब । मै.

पप्पा-सं., पिता, नवीनतम मिथिलौ मे पिताक सम्बोधनक प्रचलित प्रति शब्द । अं. तद्भव/मै.

पपड़ा-सं., गाछ वृक्षक छाल । मै.

पपड़ी-सं., घाओ आदि परक सुखाएल चमड़ी । मै.

पपहिया-सं., जीह मुहक घाओ, अधलाहा । मै.

पपियाह-विशे., घृणित कुत्सित निन्दित काज आ व्यवहार करैवाला । मै.

पपीता-सं., अररनेबा फल । मै.

पपीहा-सं., मधुर बोलीवाला पक्षी विशेष । मै.

पपोहब-क्रि., इच्छानुसार खूब नीक नीक वस्तु खाएब । मै.

पबन्नो-सं., पचीसीक खेल मे बिना पऽ सँ नै उठैवाला । पबहारिवाला घर मे गेल गोटी । मै.

पबनाह-विशे., पावनिक निमित्त निहुछल । मै.

पबनी-सं., पावनि, पर्व । मै.

पबनैतिन-विशे., पावनि करैवाली स्त्री । मै.

पबनौट-सं., पावनिक वस्तुक अंश । मै.

प' बहारि-सं., पचीसीक खेल मे दश की पचीस भेला पर गोटीक निकासी । मै.

पबहो-विशे., एक पाओ मानवाला । मै.

पबाइ-सं., पैर मे पहिरैक वस्तुक जोड़ाक भाग । मै.

पबाहरि-सं., प' भेला पर पचीसीक गोटीक घर सँ बहराइक क्रम । मै.

पबै-सं., दश आ पचीस भेला पर पचीसीक गोटी कें घर सँ बहार कय चालू करैक चेष्टा । मै.

पम्ह-सं., मोछ बहराइक क्रम मे नाक सँ नीचाँ मोछक स्थान मे रोइयाँक सघनता । मै.

पम्ही-सं., तैयार कयल तथा मलल आ चूरिकय दाना बहार कयल अन्न मे डाँटक पातर पत्ती । मै.

पमरिया-विशे., पुत्रक जन्म मे नाचि गावि कय लोकक घर सँ धन कमाइवाला । मै.

पमारा-सं., वेग सँ बहराएल देहक शोणितक धारा आदि । मै.

पयोधर-सं., १. स्तन । २. मेघ । सं. तत्सम

पयोधि-सं., समुद्र । सं. तत्सम

पर्यटन-सं., भ्रमण, उद्देश्य सँ घूमैक चेष्टा । सं. तत्सम

पर्व-सं., पावनि। सं. तत्सम

पर्वत-सं., पहाड़। सं. तत्सम

पर्वतीय-विशे., पर्वत पर हौम'वाला, रहैवाला। सं. तत्सम

पर-सं., अधिकरण कारकक चिह्न। आधार। मै.

परक-विशे., आनक, उपर रहैवाला। मै.

परगट-विशे., प्रकट, बहराएल, प्रकाश भेल। मै.

परगास-सं., प्रकाश, स्पष्ट। सं. तद्भव/मै.

परगोत्री-विशे., अपन गोत्र (वंश) सँ भिन्न गोत्र-वाला। सं. तद्भव

परञ्च-अव्यय, किन्तु। सं. तत्सम

परचार-सं., प्रचार। सं. तद्भव

परचारब-क्रि., व्यापक रूपें सूचित क' देब। मै.

परछाँही-सं., अपन देहक छाया। मै.

परजा-सं., प्रजा, सन्तान। सं. तद्भव/मै.

परजाति-विशे., भिन्न जातिवाला। सं. तत्सम

परत-सं., भिन्न भिन्न रूपक जमल तह। मै.

परतच्छ-विशे., प्रत्यक्ष। सं. तद्भव

परतर-सं., स्वभावक समानता। मै.

परता-विशे., बिना जोत कोड़वाला खेत। मै.

परताँ-अव्यय, बाद मे रहला सँ। मै.

परताएब-क्रि., जाँचब, परीक्षा कय अनुभव लेब। मै.

परताएल-विशे., अनुभव कयल। मै.

परताओल परतावी बुद्धिक विनाश-लोकोक्ति, अनुभव कैले वस्तुक जँ फेर अनुभव करी तँ मूर्खते कहाबय। मै.

परतान-सं., पटिया आदि बीनैक हेतु छेद मे डोरी पहिराओल कसैवाला बीनैक साधन। प्रतान। मै.

परता परब-क्रि., लगताक लाभ होएब। मै.

परतार-सं., फुसियबैक ढंग। मै.

परतारब-क्रि., फुसियाकय मन बहला देब। मै.

परती-विशे., बिन जोतैवाला घास भरल भूमि। मै.

परतीत-सं., आस्थापूर्वक विश्वास। प्रतीति। सं. तद्भव

परती परांत-सं., बिन जोतलाहा भूमिक विस्तार। मै.

परतुआ-विशे., प्रातः कालवाला जलपान। मै.

परथन-सं. सोहारी बेलैक हेतु सुखाएल चिकस। मै.

परदर-सं., देखू—"प्रदर"। मै.

परदा-सं., १. गुप्ताङ्ग। २. अढ़। ३. अढ़क साधन। मै.

परदादा-विशे., प्रपितामह। मै.

परदेशी/परदेसिया-विशे., आन प्रदेशक लोक, अनतय रहैवाला। मै.

पर धी-विशे., आनक बेटी। मै.

परन्तु-अव्यय, देखू—"परञ्च"। मै.

परना-सं., पारणा, व्रतक उपरान्त भोजन। मै.

परनामी-सं., प्रणाम करैक संग दैक वस्तु। मै.

परपट-विशे., बिना कोनो अढ़ घातवाला। प्रयोग—"कोशी कातक दूरधरि परपट मैदान।" मै.

परपन-विशे., प्रपन्न। श्रद्धा। प्रयोग—"अपवित्र स्थान मे खयबा मे मन परपन नै होइ छै।" सं. तद्भव

परब-सं., पावनि। सं. तद्भव

परबतिया-विशे., पर्वतक लोक। मै.

परबल-सं., १. परोड़। २. आनक बल। मै.

परबरिस-सं., निर्वाह। उ. तद्भव

परबा-सं., कबूतर, कपोत। मै.

परबापांखि-सं., धान विशेष। मै.

परबाहि-सं., संकोचपूर्वक अपेक्षा, सोच विचार। मै.

परबी-सं., पावनिक अवसरक अंश। मै.

परबुद्धी-विशे., आनक देल बुद्धिक अनुकूले चल-निहार। मै.

परबोधब-क्रि., स्नेहपूर्वक बुझाएब। मै.

परभाच्छय-सं., अरुचिपूर्वक असम्मति। मै.

परभुत/परभुता-सं., प्रभुत्व, प्रभुता। सामर्थ्य। शक्ति। सं. तद्भव

परम-विशे., सब सँ पैघ, सब सँ अधिक। सं. तत्सम

परमात्मा-सं., व्यापक पुरुष, ईश्वर। सं. तत्सम

परमाद बारब-क्रि., अपन दोषक शंका आ आनक गौरवक हानि तथा एकर उनटा बूझब। मै.

परमादी-विशे., प्रमाद कयनिहार। मै.

परमान-सं., प्रमाण, नियम। मै.

परमार्थ-सं., आनक नीक, परोपकार। मै.

परमेश्वर-सं., सर्वशक्तिमान देवता। मै.

परस्पर-अव्यय, आपस मे। सं. तत्सम

परस-सं., स्पर्श। सं. तद्भव
परसन-सं., १. फेर फेर भोजन कालक वस्तुक याचना एवं देबाक क्रम। २. विशे. ,प्रसन्न। मै.
परसमनि-सं., स्पर्शमणि। मणि विशेष। मै.
परसब-क्रि., भोजनक काल भोजन कयनिहार कें भोजन देब अथवा पात मे राखब। मै.
परसाएब-क्रि., १. भोज्य वस्तुक वितरण कराएब। २. फलक अत्यधिक पाकब। मै.
परसाद-सं. प्रसाद, विशेष नैवेद्य। सं. तद्भव
परसादी-सं., १. प्रसाद बनबैक वस्तु। २. प्रसन्नताक फल। मै.
परसुका-विशे., परसूवाला। मै.
परसू-सं., कालिह सँ पहिलुक (अग्रिम) दिन। मै.
परसौत-सं., प्रसूती स्त्रीक स्वाभाविक रोग। मै.
परसौती-विशे., नव नव बच्चा भेल स्त्री। मै.
परहेज-सं., सम्पर्क एवं संगक वर्जना। उ. तत्सम
पराइत-अव्यय, बाद मे। मै.
पराओ-सं., चलता फिरता डेरा। मै.
पराग-सं., फूलक धूलि। सं. तत्सम
परात-सं. १. प्रातःकाल। २. बड़का थार। मै.
परांत-सं., बहुत दूरधरि बिन जोतल भूमि। मै.
पराती-सं., प्रभात कालक गीत। मै.
परान-सं., १. प्राण। २. परान्न, आनक अन्न। सं. तद्भव
परानी-सं., प्राणी। सं. तद्भव
परापति-सं., प्राप्ति। सं. तद्भव
पराभव-सं., पराजय हारि, अनेक रूपक संकट। सं. तत्सम
परार-विशे., अपन सम्बन्ध आ अनुबन्ध सँ भिन्न लोक। मै.
परि-सं., १. तुलना, उपमा। प्रयोग—"अधिक दाबी कयनिहार कें दुर्योधनक परि होइत छै।" २. उपाय। प्रयोग—"माइ गै कोन परि राखब भाइ केर मान।"—सामा गीत। मै.
परिकठ-सं., कोनो वस्तु कें चीरै फाड़ै काल तर मे देवाला लकड़ी। मै.
परिकन्हा-सं., कन्हा लगाकय जोर लगबैक युक्ति। मै.
परिकब-क्रि., बारम्बार अनेक स्वार्थ साधैक हेतु पहुँचल करब। एकै ठाँ दौड़ करब। मै.
परिकर-विशे., सहायक। परिचारक। सं. तत्सम
परिकरमा-सं., परिक्रमा, चारू दिश भ्रमण। सं. तद्भव
परिकल-विशे., अपन प्रयोजन सिद्धि हेतु एके ठाँ लक्ष्य बनौनिहार। मै.
परिकाएब-क्रि., बारम्बार स्वार्थक गर बैसाकय ककरो अबैक अवसर देब। मै.
परिकाओल-विशे., एक बेर नीक कयनो दोसरो बेरक हेतु लोभ जगाओल। मै.
परिका परब-क्रि., एक दिनुक प्रयोजन सिद्ध होइक स्थान पर बारम्बार पहुँचैक नियम जकाँ बना लेब। मै.
परिकौआ-विशे., बारम्बार परिकाओल। मै.
परिच्छा-सं., १. बलि कटै सँ पहिने छागरक शरीरक तेजी सँ कम्पन। २. जाँच। सं. तद्भव
परिचय-सं., लोकक वा वस्तुक नाँ ठेकानक ज्ञान। सं. तत्सम
परिचर्य्या-सं., सेवा शुश्रूषा। सं. तत्सम
परिचायक-विशे., बुझौनिहार, परिचय देयोनिहार। सं. तत्सम
परिचारक-विशे., सेवा कयनिहार। सं. तत्सम
परिचित-विशे., चिन्हार। सं. तत्सम
परिचिताह-विशे., परिचित जकाँ लगैवाला। मै.
परिछनि-सं., स्नेह सम्मान आ शुभकामनाक विशेष प्रकारक स्त्री वर्गक करैक लौकिक विधि। मै.
परिछनियाँ-विशे., परिछनि करैवाली स्त्री। मै.
परिछब-क्रि., स्नेह सम्मान आ शुभकामना भरल शुभ अवसर विशेषक लौकिक विधि करब। मै.
परिछाएब-क्रि., परिछनि कराएब। मै.
परिछांही-सं., नाम ले देल कृत्रिम छाया। मै.
परिजन-सं., अपन लगक जन समूह। सं. तत्सम
परिणाम-सं., अन्तक फल। सं. तत्सम
परिपक्व-विशे., नीक जकाँ पाकल। सं. तत्सम
परिपाटी-सं., प्रचलन, रीति। सं. तत्सम
परिबा-सं., पक्षक प्रथम तिथि। (अनादर मे) मै.
परिमल-सं., १. सुगन्धित द्रव्य। २. नोसिक एक प्रभेद। सं. तत्सम

परिमाण-सं., देखाओल मान। अटकर। सं. तत्सम

परिमित-विशे., थोड़, अल्पमात्रा। सं. तत्सम

परिया भोगब-क्रि., कयल अधलाह काजक भोग करब। मै.

परि लागब-क्रि., प्राप्त होएब, पकड़ै मे आएब। मै.

परिवार-सं., सम्मिलित आश्रमक लोक। (प्राचीन परिवारक सामाजिक व्यवस्था) पिता माता, स्त्री आ सन्तान (विच्छिन्न परिवारक आधुनिक वैधानिक व्यवस्था)। सं. तत्सम

परिश्रम-सं., थाकनि, खटनी, उद्यम। सं. तत्सम

परी-सं., काल्पनिक देव योनिक गन्धर्व कन्या। मै.

परीक्षा-सं., लिखित वा मौखिक बौद्धिक जाँच। सं. तत्सम

परीब-सं., १. परी। २. कोनो पक्षक पहिल तिथि। मै.

परुकाँ-सं., बीतल वा अग्रिम (अबैवाला) वर्ष। मै.

परेख-सं., देखितैं वा सुनितैं बूझैक शक्ति। प्रेक्षा। मै.

परेखब-क्रि., देखैत सुनैत मात्र बूझि जाएब। मै.

परेखी-विशे., देखैत सुनैत देरी बूझि जाइवाला। मै.

परेड-सं., सैनिकक अनुशासनबद्ध प्रशिक्षण क्रम। अं. तत्सम

परेत-सं., मृतात्मा। प्रेत। सं. तद्भव

परेम-सं., स्नेह, प्रणय। प्रेम। सं. तद्भव

परैया-विशे., सम्बन्ध आ सम्पर्क सँ बाहरक लोक। मै.

परोक्ष/परोछ-विशे., नजरिबाहर रहैवाला। सं. तत्सम/सं. तद्भव

परोजन-सं., प्रयोजन। सं. तद्भव

परोठा-सं., घी औंस औंसकय' मोड़ि पकाओल रोटी। मै.

परोड़-सं., व्यञ्जनक प्रसिद्ध फल। मै.

परोपट्टा-सं., क्षेत्र खण्ड, स्थानक समीप चारू कातक विस्तृत क्षेत्र। प्रान्त। मै.

परोमिन-विशे., सम्बन्धी सँ भिन्न लोक। मै.

परोस-सं., घर लगक स्थान। मै.

परोसिया/परोसी-विशे., घरक लग मे रहनिहार। मै.

पल्लव-सं., गाछक ठहुरीक मूड़ी समेत पात। मै.

पल्ला-सं., कोनो जोड़ा वस्तुक एक अंग। मै.

पल्ला पड़ब-क्रि., संघर्ष होएब। मै.

पल-सं., सूक्ष्मतम काल। सं. तत्सम

पलक-सं., पिपनी खसै उठैक क्षण आ प्रक्रिया। सं. तत्सम

पलखति-सं., अवकाश, कार्यहीन समय। मै.

पलगर-विशे., दूर। मै.

पलङ्ग-सं., सुतैक उँचगर सुखद साधन। मै.

पलङडी-सं., छोट आ विन्यासरहित पलङ्ग। मै.

पलङा-सं., पलङ्ग, सामान्य खाट। मै.

पलङी-सं., छोट छीन खाट। मै.

पलटन-सं., १. सैनिक समूह, सेना। २. घूमब। मै.

पलटनियाँ-विशे., सेना मे रहैवाला। सं., गर घूमैक क्रम, उनटब पुनटब। मै.

पलटब-क्रि., ग'र घूमि जाएब। मै.

पलटाएब-क्रि., गर घुमाएब। मै.

पलटान-सं., बराबरि गर घूमैक क्रम। मै.

पलड़ा-सं., तराजूक दूनू भागक डाली। लटकैवाला वस्तु। मै.

पलथा-सं., आसन विशेष। दूनू जाँघ दिश दूनू पैर चाकर कय मोड़ि बैसैक प्रक्रिया। मै.

पलथी मारब-क्रि., पलथा आसन सँ बैसब। मै.

पलना-सं., अत्यन्त छोट नेन्नाक झूला। मै.

पलपल-विशे., आङुर धँसै योग्य कोमल। गुलगुल। मै.

पलपलहा-विशे., पलपल करैवाला। मै.

पलपलाएब-क्रि., अधिक पाक आ कोमलता सँ गुल-गुलाएब। मै.

पलब-क्रि., पालित होएब। मै.

पलशल-विशे., पुष्ट भेल, इच्छानुसार भोगक हेतु राखल पड़ल। मै.

पलहासब-क्रि., छाँटि कय आ कतरि कय सोझ करब। मै.

पलाएब-क्रि., डाँट पातक केवल खूब वृद्धि होएब। मै.

पलाकी-सं., साग विशेष। मै.

पलाँचब-क्रि., हल्लुके हाथें सरि करब, समतल बना-एब। मै.

पलान-सं., बाँसक टोना लगाकय सोझ रखैक क्रम। मै.

पलानि पड़ब-क्रि., कोनो काज मे आग्रह आ दृढ़ता सँ लागि पड़ब। मै.

पलानी-सं., घरक संग वा अतिरिक्तो स्थान मे जोड़ल अलग चार। मै.

पलायन-सं., भागैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

पलार-सं., ऊँच पर सँ नीचाँ दिश जलक प्रवाह। मै.

पलारी-सं., ऊँच सँ नीचाँ दिश जलक प्रवाहक वेग। मै.

पलाश-सं., लाल फूल आ ओकर बड़का वनस्पति। मै.

पलास पीपरि-सं., औषध विशेष। मै.

पलासी-सं., पलासक बीआ। मै.

पलिताइन-विशे., अश्रद्ध लगैवाला। मै.

पलिताह-विशे., असर्ध रहैवाला। स्त्री० पलिताहि। घिनौन। मै.

पलिया-सं., धान विशेष। मै.

पलियाएब-क्रि., अस्तव्यस्त रूपें एकठाँ जमा करब। मै.

पलीत-विशे., घिनाओन रहैवाला, घृणित काज करैवाला। मै.

पलीन-विशे., चौरस कयल, एक रंग चिक्कन कयल। मै.

पलेन-सं., लकड़ी कें चिक्कन आ शुद्ध करैवाला कमारक अस्त्र। मै.

पलै-सं., मांसवाला खण्ड। माछक मांसल टुकड़ा। मै.

पवन-सं., बसात। सं. तत्सम

पवित्र-विशे., शुद्ध, स्वच्छ, निर्विकार। सं. तत्सम

पवित्री-सं., १. चानी वा सोनक मढ़ल औंठी। २. कमरथुआक कामौर मे लटकाओल अलग सँ कुश आ गंगा जलक सीसी। सं. तत्सम

पश्चात्-अव्यय, पाछू काल। स. तत्सम

पश्चात्ताप-सं., देखू—"पछताबक"। सं. तत्सम

पश्चिम-सं., पूबक उनटा दिशा, पाछू। सं. तत्सम

पशमिना-सं., कन्दहार देशक मेंही ऊन। उ. तत्सम

पशु-सं., अज्ञानी, चारि पैरवाला जीव। सं. तत्सम

पशुत-सं., पशुता। सं. तत्सम

पष्ट-विशे., साफ, खुलिकय कहल वा झलकल, स्पष्ट। सं. तद्भव

पस्त-विशे., दबल, मलल, दुर्दशा कयल। उ. तत्सम

पसङा-सं., तराजूक एक दिश कनेक वेशी भार। मै.

पसर-सं., रातुक अन्तक समय, महिंसिक चरैक भोरुका बेर। मै.

पसरब-क्रि., चारु दिश अधिक दूरधरि फैल बनब। विस्तृत होएब। मै.

पसरहट्टा-सं., अनेक वस्तु पसारिकय बिकाइवाला स्थान। मै.

पसरा पसरौअलि-सं., अनेक बेशी पसार करैक प्रक्रिया। मै.

पसली-सं., पैर आ घुट्टीक जोड़वाला अंग। मै.

पसाएब-क्रि., भात सँ माण गारब। कोनो वस्तु सँ गारि (खसाकय) द्रव बहार करब। मै.

पसाओन-विशे., पसाकय बहार कयल द्रव। मै.

पसाठ-सं., कोनो कुड़हरि, खन्ती आदि अस्त्रक धारक पछिला भाग। मै.

पसार-सं., १. विस्तार, फैलाओ। २. लोहार, कमारक काजक स्थान, आयोजन। मै.

पसारब-क्रि., विस्तार करब। फैलाएब। मै.

पसारी-विशे., विशेष काजक विशेष व्यवसायी। कुम्हार, सोनार, डोम, चमार आदि। मै.

पसाहनि-सं., देहक सौन्दर्य बढ़बैक प्रसाधन। मुहक चित्र रचना। मै.

पसाही-सं., क्रमश: एकठाँ सँ दोसरो ठाँ बढ़ैत आगिक गति। (लाक्षणिक) एकठाँ सँ दोसर ठाँ वार्ता पसरैक क्रम। मै.

पसिझब-क्रि., घमि घमि कय चूअब। मै.

पसिन्न-विशे., प्रिय लागैवाला, मनोनुकूल होमैवाला। मै.

पसीझ-सं., औषधीय वनस्पति विशेष। मै.

पसीबा-विशे., (अनादर मे) पासी जातिक लोक। मै.

पसेना-सं., देहजल, रोमकूप सँ बहराएल स्वेद। मै.

पसेरी-सं., पाँच कीलोक एक परिमाण। मै.

पह-सं., मुख्य नदीक पातर शाखा नदी। मै.

पहटन-सं., लकड़ी कें कतरि कय सोझ आ चौरस करैक क्रम । मै.
पहटब-क्रि., लकड़ीक सिल कें छीलि कय गोला सँ चौकोर आ सोझ करब । मै.
पहटा-सं., १. बाँसक कमची सँ बनल माछ फँसबैक साधन । २. समतल करैवाला छोट गोलायम काठक पट्टी । मै.
पंहति-सं., भोजनक हेतु बैसल लोकक पाँती । मै.
पहथ-सं., हाथ पसारिकय बनाओल परिमाण । मै.
पहपटि-सं., समस्या मे समस्याक उत्पत्ति सँ परि-स्थितिक विकटता । मै.
पहपटिया-विशे., पहपटि उत्पन्न करैवाला । मै.
पहर-सं., तीन घंटाक एक मान । प्रहर । मै.
पहर रतिया-सं., एक पहरक राति । मै.
पहरा-सं., रक्षा, ताकुत करैक सावधानता । मै.
पहरिया/पहरुआ/पहरूदार-विशे., पहरा करैवाला नियुक्त व्यक्ति । मै.
पहलमान-विशे., मल्लयुद्ध विशेषज्ञ, सरौं खेलाइ-वाला । मै.
पहलमानी-सं., सरौं खेलाइक कला, मल्लयुद्धक लूरि । मै.
पहलेज-सं., लत्ती मे फड़ैवाला स्वादिष्ट फल । मै.
पहाड़-सं., पर्वत । मै.
पहाड़ा-सं., अंक आ अक्षर सीखैवाला प्रारम्भिक शिक्षाक पोथी । मै.
पहाड़ी-विशे., १. पहाड़ पर रहैवाला । २. छोट खाँटक लोक । मै.
पहिया-सं., गड़कैवाला गोल चक्का (चक्र) । मै.
पहियाएब-क्रि., एक रेखा आ परिधि मे होएब । पाहि मे अर्थात् सोझाँ सोझी काज करैत चलब । मै.
पहिगर-विशे., पँघ पाहिवाला । मै.
पहिनें-अव्यय, प्रथमहि, आरम्भ में, आदि मे । मै.
पहिरन-सं., पहिरैक, देह मे धरैक वस्त्र आ भूषण । मै.
पहिरना-सं., नित्तह पहिरैक वस्त्र । मै.
पहिरब-क्रि., देह मे धरब, उपर वा नीचा सँ देह-लगाएब । मै.
पहिराएब-क्रि., देह मे वस्त्रक सज्जा करब, ग्रहण कराएब । मै.
पहिल-विशे., एक संख्या मे रहैवाला । मै.
पहिला-विशे., आगू मे रहैवाला । मै.
पहिलुका-विशे., पुरान समयवाला, पहिल स्थान मे रहैवाला । मै.
पहिलौठ-विशे., पहिल वेर बच्चा दैवाली । मै.
पहिलौठा-विशे., पहिल होम'वाला बच्चा । मै.
पही-सं., माछ मारैक पसरल पँघ साधन । मै.
पहुँ-विशे., प्रियतम, पति । मै.
पहुँच-सं., पहुँचैक गति । मै.
पहुँचनामा-सं., पहुँचि जाइक वार्ताक पत्र । मै.
पहुँचब-क्रि., जाएब, लक्ष्य प्राप्त करब । मै.
पहुँचा-सं., हाथक गट्टा सँ उपरवाला अंग । मै.
पहुँचाएब-क्रि., लक्ष्य पर धरि द' आएब । मै.
पहुँची-सं., पहुँचाक गहना विशेष । मै.
पहुनघरा-सं., अतिथि, पर पाहुन रहैक घर । मै.
पहुनबाहि-सं., पाहुन अबै जाइक क्रम । मै.
पहुना-विशे., जमाय आ बहिनो सम्बन्धवाला । मै.
पहुनाइ-सं., कत्तौ पाहुन बनैक काज । मै.
पहुलाठ-सं., पोन सँ ऊपरक आ कातक अंग । मै.
पहेलीं-सं., बुझौअलि । हि. तत्सम

पा

पाइ-सं., सब सँ छोट सिक्का । मै.
पाइट-सं., खेत आरिक कात करोट । प्रान्त । प्रयोग-"ऐ बेर ऐ पाइट में धान नै उपजलै ।" मै.
पाउज-सं., माल जालक खाएल घास पातक फेर चिबवैक चेष्टा । मै.
पाएब-क्रि., प्राप्त करब । मै.
पाओ-सं., एक वस्तुक चारिम भाग । १/४ । मै.
पाक-सं., १. रन्हैक प्रक्रिया । २. कसिकय डोरी आदि वस्तु मे भत्ता मे गुन दैक विधि । ३. शोध आ शुद्धि । सं. तत्सम
पाँक-सं., लसियाएल माटिवाला थाल । मै.
पाकड़ि-सं., वृक्ष विशेष । पर्कटी । मै.
पाकनि-सं., १. आगिसँ पकैक चिह्न । २. गूर आदि घाओक पकैक क्रम । मै.
पाकब-क्रि., १. आगि सँ दग्ध होएब । २. फल आदि वस्तुक सिद्ध होएब । मै.
पाँका लागब-क्रि., (लाक्षणिक) फँसि क' अन्तिम (मृत्यु) क स्थिति मे पड़ल रहब । मै.

पाँकी-सं., पाँक मिलल माटि। मै.

पाकी-सं., पकैक गुण। मै.

पाखड़ि-सं., धानक प्रभेद विशेष। मै.

पाखण्डी-विशे., एक पक्षीय धर्मक चर्चा कय आन सम्प्रदायक कुचेष्टा कयनिहार। ईश्वर कें नहि माननिहार। मै.

पाँखि-सं., पक्षीक पंख। उड़ैक प्राकृतिक साधन। मै.

पाँखुर-सं., पीठ दिश बाँहिक जोड़वाला अंग। मै.

पाग-सं., मैथिलक शिर पर रखैक अर्थात् टोपी जकाँ धरैक विशिष्ट शिरक आवरण। मै.

पागब-क्रि., वर्तन मे घी आ चीनीक संग भोज्य पदार्थ के राखि थोड़ आँच सँ थोड़ भूजब। मै.

पागल-विशे., १. बताह। २. थोड़ आँच सँ भूजल भोज्य पदार्थ मखान आदि। मै.

पागु करब-क्रि., माल जालक खाएल वस्तुक चिबाएब। बिन दाँतवाला लोकक अनेर मुह लाड़ब। मै.

पागुर-सं., देखू-"पाउज"। मै.

पाङ-सं., गाछक डारि पात कें छँटैं कटैक क्रम। मै.

पाङड़-विशे., गाछक काटल छाँटल डारि पात। मै.

पाङनि-सं., गाछ वृक्षक डारि पात कें कटैक उपक्रम। मै.

पाङब-क्रि., गाछ वृक्षक अनावश्यक डारि पात कें काटि छाँटिकय झाड़ब। मै.

पाँच-संख्या, एक अंकक पाँचम संख्या। पाँच एकाँइ मात्र। मै.

पाच-सं., चेचकक टीका। मै.

पाचक-विशे., १. पटेक अन्न कें पचबैवाला औषध। २. श्राद्ध कर्म मे नियुक्त कयल पिण्डक पाक करैवाला। ३. भनसिया। मै.

पाचड़-सं., कोदारि आदिक बेंट सक्कत रखैक कील। मै.

पाचन-सं., पचवैक शक्तिवाला तथा पचैवाला। मै.

पाचनि-सं., १. पचवैक शक्ति। २. पाच दैक विधि। मै.

पाचब-क्रि., १. पाच देब। २. (लाक्षणिक) खोधि खोधि कय तत्त्व बहार करब। क्षत विक्षत कय शोणित चूसब। ३. अर्थ खींचब। मै.

पाँचम-विशे., पाँच संख्या मे रहैवाला। मै.

पाछाँ-अव्यय, पाछू दिश। मै.

पाछाँ पाछाँ-अव्यय, पाछू लागल। मै.

पाछु-अव्यय, पाछू दिश। मै.

पाछु धरब-क्रि., पाछू लागल संग होएब। मै.

पाछू-अव्यय, पश्चात् काल, पाछू दिश। मै.

पाछू आयब-क्रि.. कालक अन्तर कय आयब। मै.

पाँज-सं., बाँहि मोड़िकय धरैक जोग बोझ। मै.

पाँजर-सं., बाँहिक तरवाला अंग। छाती कातक अंग। मै.

पाँजा-सं., दूनू हाथ मोड़िकय उठबैवाला बोझ। मै.

पाँजि-सं., पञ्जी प्रबन्ध, जाति एवं मैथिलक कौलिक डेराक व्यवस्था। मै.

पाजी-विशे., सिखौलौ बुझौलौ उत्तर अपने मने दुष्टतापूर्ण व्यवहार कयनिहार। मै.

पाजु-सं., माल जालक खाएल वस्तुक पुनि चर्वणा। मै.

पाँजेब-सं., स्त्री पैरक गहना। मै.

पाट-सं., १. धोबिक कपड़ा खीचैक काठ। २. जलाशयक जलमय स्थानक विस्तार अर्थात् चकराँइ। ३. पटुआ फसिल। ४. पक्ष। प्रयोग—"घूटर हमर विरोधीक पाट ध' लेलनि।" मै.

पाटन-सं., व्यापव, सन्तति पसार। मै.

पाटनि-सं., फैलाओ, दूर धरि कयल छाप। मै.

पाटब-क्रि., व्याप्त होएब। मै.

पाटा-सं., १. जोतल खेतक माटि कें समतल करैवाला चौकी। २. देवालक पलस्तर करैवाला नाम मोट चौकोर लकड़ी। मै.

पाटापाटी-सं., झगड़ा, गोलैसी, दलबन्दी। मै.

पाटि-सं., प्रशिक्षण, अभ्यास धराएब। माल जालक (घोड़ा बड़द आदिक) शिक्षा। मै.

पाटी-सं., १. दल, पक्ष। २. लिखैक तकथी, प्रारम्भिक शिक्षाक बच्चाक लिखैक पट्टी। मै.

पाठ-सं., प्रत्यह पढ़ैक एक प्रकारक मान। पढ़बाक अवधि। नियत विषय। सं. तत्सम

पाठक-विशे., पढ़ैवाला। सं. तत्सम

पाठशाला-सं., पढ़ैक घर स्थान। सं. तत्सम

पाठा-सं. हाथीक पुरुष बच्चा, छागर। मै.

पाठि-सं., नियमानुसार काजक अभ्यास। मै.

पाठि लगाएब-क्रि., संग लागल काज कराकय अभ्यास कराएब। अनुशासनबद्ध करब। मै.

पाठी-सं., बकरीक स्त्री बच्चा। मै.

पाड़नि-सं., गोयठा पाड़ैक बनाओल स्थान । मै.
पाड़न-सं., पजेबा पथैक स्थान । मै.
पाड़ब-क्रि., १. सुताएब । २. राखब । ३. गील वस्तु कें खाँच वा साँच मे द' क' विभिन्न आकारक बनाएब । (जेना-ठकुआ, पूरी, ईंटा, खपड़ा, गोयठा, गोरहा आदि । मै.
पाँड़रि-सं., बुनबुना, फोंका । प्रयोग—"ओठ फुट पाँड़रि"। मै.
पाड़ा-सं., महिंसिक पुरुष बच्चा । स्त्री० पाड़ी । मै.
पाढ़-सं., पोखरिक महार, भींड़ा । मै.
पाढ़ि-सं., विभिन्न रंगक कपड़ाक कोर, किनार । मै.
पाण्डिल-सं., केवाड़क विशेष पट्टा गढ़ै मे रचल पट्टीक समूह । मै.
पाण्डु-सं. रोग विशेष । मै.
पाणि-सं., हाथ । सं. तत्सम
पाणिग्रहण-सं., विवाह । सं. तत्सम
पात्र-सं., १. वासन । २. विशे., योग्य । ३. पितृकर्म करौनिहार आ ओकर दान लेनिहार । सं. तत्सम
पात-सं., खाइक हेतु गाछ वृक्षक पत्र । सामान्य गाछ सभक पत्ता । मै.
पातक-सं., पाप । सं. तत्सम
पातकी-विशे., महापाप कयनिहार । मै.
पातर-विशे., शरीरक क्षीण । दुर्बल, दुब्बर । मै.
पाँतर-सं., प्रान्तर, दूरधरि घर आ गाछ वृक्ष आदि सँ शून्य क्षेत्र । सं. तद्भव
पातरि-सं., दूधक संग वा दूधै मे रान्हल पदार्थक पात्र मे पसारल नैवेद्य । देवी देवताक हेतु पायसक प्रसाद । मै.
पाता-सं., सम्माननीय निमन्त्रणक पैघ विशिष्ट पत्र । मै.
पाताल-सं., देखू—"पताल"। मै.
पाँति/पाँती-सं., पंक्ति । मै.
पाति-सं., बाँहि (केहुनी सँ उपर)क गहना । मै.
पातित-सं., पातित्य, पतितपना । सं. तद्भव
पातिब-विशे., नवविवाहित कनियाँ । मै.
पातिल-सं., शुभक अवसर पर आगू मे राखल जाइवाला रंगल ढौरल घैल सन वासन । मै.
पाती-विशे., खसैवाला । सं. तत्सम
पाथब-क्रि., गील वस्तु कें आकार द' क' बनाएब । मै.
पाथर-सं., पाषाण, प्रस्तर । मेघ सँ खसल बर्फक गोलाकार वर्षा विन्दु । मै.
पाथरि-सं., कोनो वस्तु पथैक स्थान । मै.
पथेय-सं., वटखर्चा । मै.
पाद-सं., १. चरण । सं. तद्भव । २. अधोवायु । मै.
पादब-क्रि., नीचाँक अंग सँ वायु छोड़ब । मै.
पान-सं., १. मुखशुद्धिक पात । २. पीबैक प्रक्रिया । सं. तत्सम/मै.
पानि-सं., १. जल । २. (लाक्षणिक) दया आ प्रतिष्ठा । मै.
पानि पानि क' देब-क्रि., दोष कें प्रमाणित कय अत्यन्त लज्जित करब । मै.
पाप-सं., अधलाह कर्म । सं. तत्सम
पापड़-सं., बेसनक मसाला भरल व्यञ्जनक पत्र । मै.
पापड़ बेलब-क्रि., (लाक्षणिक) कष्टकर आ अधिक श्रमवाला काज करब । मै.
पापी-विशे., अधलाह कर्म करैवाला । मै.
पाबनि-सं., पर्व, देवताक उपासनाक विशेष तिथि । मै.
पाबनि तिहार-सं., पर्व आ उत्सवक अवसर । मै.
पाबब-क्रि., छूवि आ पकड़ि सकब । प्राप्त करब । मै.
पाबस-सं., बरिसात समयक प्रसिद्ध गीतक राग । बरिसातक समय । मै.
पाभरि-अव्यय, एक पाओक मान मे । मै.
पामर-विशे., नीच विचार आ व्यवहारवाला । सं. तत्सम
पाय-सं., पैर, चरण । प्रयोग-"परसल माय पाय तुअ पानी ।"—विद्यापति । मै.
पायब-क्रि., प्राप्त करब । प्रयोग-"सपनहु नहि पायब सखि हे हमर उदेश ।" मै.
पायल-सं., पैरक गहना, पैरी । हि. तत्सम
पायस-सं., खीर, दूध मे रान्हल भोज्य । सं तत्सम
पाया-सं., कोठा आ मकानक ईंटाक जोड़ल खम्भा । मै.
पार्वण-सं., विशेष अवसर पर पितर सभक विशेष उपासना । सं. तत्सम

पार्वती-सं., देवी गौरी, शिवपत्नी । सं. तत्सम

पार-सं., १. दोसर तट, किनार । २. उद्धार । ३. खेप । मै.

पार उतरब-क्रि., उद्धार होएब, कष्ट आ चिन्ता सँ मुक्त होएब । मै.

पार करब-क्रि., चुपचाप वस्तु कें गुम करब । मै.

पारबारी-सं., पानि कें जेना तेना पार करैवाला स्थान । मै.

पार लागब-क्रि., काज सम्पन्न होएब, सामर्थ्यक अधीन रहब । मै.

पारस-सं., १. परसल भोजन । २. परसमणि । मै.

पारा-सं., पारद, चमकदार भारी बढै घटैवाला द्रव । मै.

पारापारी-सं., अव्यय, समय बान्हि कय बेराबेरी । मै.

पाराबटन-सं., समतल करैवाला पारावाला काठक पट्टी । मै.

पारावार-सं., (लाक्षणिक) समुद्र, बिना ओर छोर। प्रयोग-"की कहू हमरा तँ दुखक पारावार नै रहल" । सं. तत्सम

पारी-सं., १. खेप, काजक बाँटल बेर । २. मैथुनक हेतु महिंस पर महिसाक चढ़ैक खेप । मै.

पाल-सं., नाओ चलबैक हेतु नाओ पर पसारिकय टाङल मोट कपड़ा । मै.

पालक-विशे., १. पालन करैवाला । २. सं., साग विशेष । मै.

पालकी-सं., छोट महफासन खुजल आ कहार सँ उठवैवाला सवारी । पाल्यङ्की । मै.

पाल खाएब-क्रि., मैथुन सँ माल जालक गर्भधारण करब । मै.

पालट-सं., एकै घर मे वर कनियाँक वा कोनो वस्तुक बदला बदली । मै.

पालतू-विशे., पालित होम'वाला, पालै योग्य । मै.

पालन-सं., भोजन छाजन आदि सँ रक्षा करैक व्यवस्था । जीवन निर्वाह । सं. तत्सम

पालपाल कय पाएब-क्रि., बहुत दिन आश धयल आ चाहल अप्राप्य वस्तुक अनायास प्राप्त कय अत्यधिक प्रसन्न भ' जाएब । मै.

पालब-क्रि., जीवन निर्वाह करब । मै.

पाला-सं., १. शीत, ओस, प्रालेय, शीतलहरी । २. दोकानदारक अन्न संग्रह । मै.

पालि-सं., सन्तान, वंशक गति । मै.

पालित-विशे., जीवननिर्वाह कयल । सं. तत्सम

पालिस-सं., कोनो वस्तु पर देल लेप । अं. तत्सम

पाली-सं., अपन बस्तीक पास परोसक गामक समूह, एक संस्कृतिवाला समाज । मै.

पालो-सं., युग काष्ठ, हर जोतै मे वड़दक कान्ह पर रहैवाला हरखराक अंग । मै.

पावक-सं., आगि । सं. तत्सम

पाश-सं., फन्दावाला डोरी । सं. तत्सम

पाशविकता-सं., पशुक आचरणवाला गुण । सं. तत्सम

पास-सं., कुड़हरि कोदारि आदि अस्त्र मे वेंट पैसवैक गोलाकार छेद । मै.

पास-विशे., परीक्षा मे जाँचल योग्य । अं. तद्भव

पास-अव्यय, निकट, प्रयोग-"के पतिया लय जाएत हे मोर प्रियतम पास ।" मै.

पास होएब-क्रि., १. उत्तीर्ण होएब । २. निकलि जाएब । हि. तद्भव

पासङ्ग-सं., तराजूक पलड़ा मे असमानता । मै.

पासनि-सं., लकड़ी मे सक्कत कय कील ठोकैक लेल कोदारिक पास जकाँ छेदक विधान । मै.

पासब-क्रि., लकड़ीक छेद मे सक्कत कय कील ठोकब । मै.

पासा-सं., जूआ खेलाइक कृत्रिम गुल्ली । मै.

पासा खेलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) जूआ खेलाइक जकाँ अपन भाग्य अजमबइक चेष्टा करब । मै.

पासा फेंकब-क्रि., (लाक्षणिक) सफलता असफलता दूनू अवधारिकय प्रयास करब । मै.

पासि-सं., खाट वा चौकीक चारू कातक सक्कत लकड़ीक डन्टा । मै.

पासी-सं., ताड़ी चुबा कय व्यवसाय करैक जाति । मै.

पाहन-सं., पाषाण, पाथर । मै.

पाहि-सं., खेत मे रोपैक आ कटैक सोझ आगूक क्षेत्र । मै.

पाहि लागब-क्रि., खेतक ऐ आरि सँ ओहि आरि धरि अपन छानल क्षेत्र समाप्त होएब । मै.

पाही पट्टी-विशे., आन गाम रहनिहार भूस्वामी। मै.
पाहुन-विशे., अभ्यागत तथा जमाय बहिनो। मै.
पाहुन परक-विशे., अतिथि अभ्यागत। मै.
पाहुर पड़ब-क्रि., सूगरक बच्चाक बलि देब। मै.

पि

पिअ-विशे., प्रिय, प्रणयी, पति। मै.
पिआएब-क्रि., पान कराएब। मै.
पिआक-विशे., अधिक मद्य पियैवाला। मै.
पियास-सं., पानि पीबैक प्रबल इच्छा, पिपासा। मै.
पिक्की-सं., जोर सँ सोर करैक ध्वनि। मै.
पिक-सं., कोकिल, पपीहा, मधुर ध्वनिवाला पक्षी। सं. तत्सम
पिकदानी-सं., मुह सँ पानक रस फेंकैक द्रव्यक वासन। मै.
पिच्च-सं., आँखि मे लगबैक पिचला सँ बहराइ-वाला अंग्रेजी औषध। मै.
पिच्ची-सं., आँखि मे बहराएल आँखिक विकार स्वरूप मल। मै.
पिच्छड़-विशे., पैरक स्वतः ससरैवाला स्थान। मै.
पिचक-सं., १. स्वतः धँसैक वा सिकुड़ि जाइक क्रम। २. मलमार्ग सँ कनेक अकस्मात् मलक निर्गम। मै.
पिचकब-क्रि., १. मलमार्ग सँ स्वतः अकस्मात् मलक बहरा जाएब। २. दबब, सिकुड़ब। मै.
पिचकलहा-विशे., १. सिकुड़ि कय धँसलवाला। २. मलमार्ग सँ कनेक स्वतः बहराएल मलवाला। मै.
पिचकाह-विशे., १. दबि कय धँसिकय सिकुड़ि जाइ-वाला। २. कनेक मलक स्वतः बहार भ' जाइवाला नेन्ना। मै.
पिचकारी-सं., फुहारा जकाँ दबला सँ वा जोर देला सँ जल छोड़ैवाला यन्त्र। मै.
पिचरा-विशे., बिना विखण्डित भेल चूरल। मै.
पिचरा पिचरा-विशे., दाबल गेने बिना विभक्त भेल चूर्ण भ' क' पसरल। मै.
पिचाएब-क्रि., दबिकय चूरल भ' जाएब। मै.
पिचाठ-सं., पिचला सँ उत्पन्न विकलता। मै.
पिचान-सं., पीचल गेने भयंकरता। मै.
पिचाँस-सं., पिशाच। मै.
पिछड़ब-क्रि., १. स्वतः वा विवश भ' क' पैर सँ ससरि जाएब। २. (लाक्षणिक) अवसर चूकि जाएब। मै.
पिछड़लहा-विशे., पिछड़लवाला। मै.
पिछड़ा-सं., १. पिछड़ैवाला स्थान। २. सभ्यता संस्कृति सँ हीन पिछड़ा वर्ग। मै.
पिछड़ाह-विशे., पिछड़ैक योग्य। मै.
पिजबैया-विशे., धारदार वस्तु कें तेज करबैवाला। मै.
पिंजर-सं., चारू कात सँ हड्डीक छड़ सँ बन्न कयल छाती आ पांजरवाला अंग। मै.
पिँजड़ा-सं., चारू कात सँ लोहक छड़ सँ बन्न कयल वस्तु। पशु पक्षीक स्थान। मै.
पिजाएब-क्रि., अस्त्र कें तेज करब। मै.
पिजाठ-सं., अस्त्र पिजबैक आधार पर बनल चिह्न। मै.
पिजुआएब-क्रि., घाओ पर विकार भरि जाएब। मै.
पिजुआह-विशे., पीजु (विकार) भरल घाओ। मै.
पिजौनिहार-विशे., अस्त्र कें तेज करैवाला। मै.
पिट्ठा-सं., चिकसक गोल मोल आ चापट कय बना-ओल प्रसाद। मै.
पिट्ठा पहलवान-विशे., मोट डाँट हड़गर कठगर। मै.
पिट्ठी-सं., चिकसक गोल मोट मसाला भरल पका-ओल खाद्य पदार्थ। मै.
पिट्ठू-विशे., पक्षपात करैवाला, पाट ध' क' विरोध करैक उत्साह बढ़बैवाला। मै.
पिटना-सं., पीटैक, ठोकैक आ मारैक साधन। मै.
पिटपिट करब-क्रि., आनक विरोधक काल मे व्यर्थ अपन बहादुरी देखाएब। मै.
पिटबाएब-क्रि., अनका सँ मारि खोआएब। मै.
पिटाइ-सं., मारि पड़ैक स्थिति आ क्रम। मै.
पिटाएब-क्रि., मारि खाएब। (लाक्षणिक) क्षति मे पड़ि जाएब। मै.
पिटान-सं., पीटैक भयंकरता एवं क्रम। मै.

पिटुआ-विशे., पीटि (ठोकि) क' बनाओल धातुक वासन। मै.

पिठकट-विशे., पीठ (खोइँचा) दिशक गुद्दाक बनल तरकारी। (कटहर, कदीमा आदिक) मै.

पिठपोहक-विशे., पृष्ठ पोषक, सहायक। मै.

पिठबन-सं., वनस्पति विशेष। मै.

पिठबा-विशे., चाकर चौरस मोट डाँट। मै.

पिठममोड़-सं., पीठै परक खेहार। मै.

पिठराइन-विशे., पिठारक स्वादवाला, पिठार लागल। मै.

पिठार-सं., अरवा चाउरक पानिक संग पिसान। मै.

पिठारी-सं., अत्यन्त छोट नेन्नाक इन्द्रियक विकार। मै.

पिठियाएल-क्रि., पाछू लागल दौड़ब आ जाएब। मै.

पिठियाघाओ-सं., पीठ परक अनदेखक घाओ। मै.

पिठियाठोक-सं., पाछुए लागल जाइक आ खेहारैक क्रम। मै.

पिठिया पीठ-विशे., थोड़ अन्तर मे एकक उपरान्त एक। मै.

पिड़ाएब-क्रि., पीड़ा देब तथा पीड़ित होएब। मै.

पिड़ार-सं., पैघ फल आ फूलवाला वृक्ष। मै.

पिड़िया-सं., छोटसन पीड़ी (चबूतरा)। मै.

पिड़ौआ-विशे., पीड़ा दैवाला। मै.

पिढ़िया-सं., चेरासन चाकर आ छोट पीढ़ी। मै.

पिण्ड-सं., श्राद्ध मे पितर कें उत्सर्ग करैक लेल अन्नक बनाओल गोलाकार वस्तु। सं. तत्सम

पिण्डा-सं., १. ग्राम्य भाषा मे पिण्ड। २. ऊँच कय बनाओल चबूतरा। मै.

पिण्डखजूर-सं., छहोरा। सं. तद्भव

पिण्डली-सं., शरीरक जोड़ एवम् कील परक चक्र तथा विशेष अंगक मांस गुठरी। सं. तत्सम

पिण्डश्याम-विशे., थोड़ेक कारी शरीरक रंगवाला। सं. तत्सम

पित्त-सं., शरीर धारण करवैवाला आग्नेय तत्वक शरीरक विशेष तत्व। त्रिदोष मे एक दोष तथा ओकर कोशिका। सं. तत्सम

पित्तरि-सं., पीयर रंगक एक धातु। मै.

पित्ती-विशे., पिताक छोट आ पैघ भाइ, काका। पितृव्य। मै.

पितमरू-विशे., तामस कें दबा दैक स्वभाववाला, क्रोधहीन। मै.

पितर-सं., मुइल पुरुषा। सं. तद्भव

पितरपच्छ-सं., एक पक्ष भरिक पितरक निमित्त खोअबैक पर्व। आश्विन कृष्ण पक्ष। मै.

पितराइन-विशे., १. पित्तरिक विकृत स्वादवाला। २. मुइल स्त्री सम्बन्धी। मै.

पितराह-विशे., पित्तरिक विकारयुक्त। मै.

पितरिया-विशे., पित्तरि धातुक बनल वर्तन। मै.

पिता-विशे., एवं सं., जन्मदाता, बाप। सं. तत्सम

पिताएब-क्रि., मनक व्याकुल होएब, तप्त होएब आ तमसाएब। मै.

पिताँट-विशे., भूख पिआसक संग परिश्रमक द्वारें पित्त बढ़ने विकृत मन। मै.

पितामह-विशे., पिताक पिता। सं. तत्सम

पिताह-विशे., १. पित्तक विकारवाला। २. तमसाह। मै.

पितिआइन-विशे., काकी। पित्तीक पत्नी। मै.

पितिऔत-विशे., पित्तीक पुत्रक सम्बन्धें भाइ वा बहिन। मै.

पितियौताक पितिऔत-विशे., बापैक पितियौत भाइक पुत्र। मै.

पितौझिया/पितौहिया-सं., एक वनस्पति विशेष। मै.

पितौटनि-सं., भूख पिआस सँ मनक व्याकुलताक बीच परिश्रम। मै.

पिनकब-क्रि., एकाएक तामस मे आबि जाएब। मै.

पिनकाएब-क्रि., हठात् क्रोध जगा देब। मै.

पिनकाह-विशे., एकाएक खिसिया उठैवाला। मै.

पिनकी-विशे., अचानक बिगड़ैक स्वभाववाला। मै.

पिनाक-सं., महादेवक धनुष। सं. तत्सम

पिप्पड़-सं., बड़का देववृक्ष विशेष। मै.

पिप्परि-सं., औषध विशेष। मै.

पिपनी-सं., आँखिक पलक केश। मै.

पिपरपत्ता-सं., पिपड़क पातसन कानक गहना। मै.

पिपरमिन्ट-सं., कर्पूरसन स्वच्छ स्वादिष्ट आ सुगन्धित द्रव्य विशेष। मै.

पिपरा-सं., रब्बी फसिलक संग उपजैवाला अखाद्य दाना, मसुरीक आकार प्रकारवाला। मै.

पिपरी-सं., मेहीं कीट चुट्टी । मै.

पिपरौटा-सं., पिपड़क छाल आ जमानि आदि औषधक द्वारा बनाओल परसौतीक पानि । मै.

पिपहिया-विशे., पिपही बजबैवाला बजनियाँ । मै.

पिपही-सं., १. खुर्दक बाजनक एक बसुरी जकाँ बजबैवाला बाजन विशेष । २. आमक आँठी सँ बहराएल अंकुर । मै.

पिपासा-सं., पिआस । सं. तत्सम

पिपियाएब-क्रि., कोनो वस्तु सँ बारम्बार बेसुरा ध्वनि बहार करब । मै.

पिपीलिका-सं., चुट्टी पिपरी । मै.

पियक्कड़-विशे., अधिक ताड़ी दारू पियैवाला । मै.

पिया-विशे., प्रिय स्वामी । मै.

पियासल-विशे., पानि पीबैक इच्छा सँ आतुर । मै.

पियोरी-सं., पसाहनि मे पीयर रंगक खड़ी । मै.

पिरीत-सं., प्रीति । विशे., प्रीत । सं. तद्भव

पिरुकिया-सं., बीच मे मीठ फूटि द' क' मढ़ल पकवान विशेष । मै.

पिरोअब-क्रि., मालाक हेतु दानाक छेद मे ताग के सन्हिया कय माला गाँथब । हि. तद्भव

पिरौछ-विशे., पीयर रंगक छविवाला, पीयर जकाँ लगैवाला । मै.

पिल्ला-सं., कुत्ताक पुरुष बच्चा । स्त्री० पिल्ली । मै.

पिल्लू-सं., बिना प्रशाखावाला घिनाओन स्थल मे रहैवाला ससरैवाला जीव । मै.

पिल्ही-सं., पेटक बामा कात रहैवाला रक्त कोशिका आ रक्त ग्रन्थि । बढ़ि गेने रोगक रूपवाला । सं. तद्भव

पिल्ही चमकब-क्रि., (लाक्षणिक) आदङ्कक संग चौंकब । मै.

पिल्ही कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) सतत अत्यन्त खिन्न जकाँ रहब । मै.

पिलपिलाह-विशे., अत्यन्त दुर्बल काँतिवाला । मै.

पिलब-क्रि., घुच्चा (खाधि) मे गोटी वा गोली खसब । मै.

पिलाएब-क्रि., घुच्चा मे गोटी खसाएब । मै.

पिलाओ-सं., पिलबैक अभ्यास । मै.

पिलाठ-सं., ठोकैक सक्कत वस्तु कील काँटी आदि । मै.

पिलान-सं., घुच्चा मे गोली खसबैक क्रम । मै.

पिलास-सं., चुट्टा जकाँ पकड़िकय खींचै तोड़ैवाला अस्त्र विशेष । मै.

पिलिया-सं., कुतिया । मै.

पिलुआ-सं., पिल्लू, कीड़ा । मै.

पिलुआह-विशे., पीलु भरल । मै.

पिलुआहा-विशे., पीलु होम'वाला, पीलु उत्पन्न करैवाला । मै.

पिशाच-सं., शरीरहीन उपद्रावी देवयोनि । सं. तत्सम

पिशुन-विशे., चुगलखोर, दुष्ट । सं. तत्सम

पिष्टपेषण-सं., (लाक्षणिक) बुझले बातक बुझौअलि । सं. तत्सम

पिस्ता-सं., नेवा विशेष । मै.

पिसनियाँ/पिसनिहारि-विशे., पीसैक काज करैवाली । मै.

पिसाओन-सं., पीसैक पारिश्रमिक । मै.

पिसान-सं., १. मेहीं बुकनी । २. पीसैक क्रम । मै.

पिसिआ-सं., पीसैक दीर्घकालक कार्यक्रम । मै.

पिसिया-विशे., दीदी, बापक बहिन । मै.

पिसियौत-विशे., पिसियाक पुत्र होइक सम्बन्धे भाइ सम्बन्धी । मै.

पिसीमाल-विशे., पीसल जकाँ बनाओल । मै.

पिसुआ-विशे., पीसि कय प्रस्तुत कयल । मै.

पिसू !-अव्यय, बिलाइ कें सोर करैक शब्द । मै.

पिहकारी-सं., निन्दाक रूप मे विकृत शब्द । मै.

पिहना-सं., कोठीक उपरक मुनना । मै.

पीह पाह मचब-क्रि., आनन्द आ उल्लासक शब्द होएब । मै.

पिहानी-सं., कथा, देहाती खिस्सा । मै.

पिहुआ-सं., १. जल पक्षी । २. जनमौटी बच्चा कें पिअ'बैक हेतु बनाओल तूरक बत्ती । ३. (लाक्षणिक) अत्यन्त छोट निर्जु बच्चा । मै.

पी

पी-विशे., प्रियतम, प्रणयी, प्रेमी । (स्त्रीक हेतु) । मै.

पीक-सं., मुह मे बनल पानक रस । मै.

पीचनि-सं., भारी वस्तु सँ दाबि कय चूरैक क्रम। मै.

पीचब-क्रि., कोनो वस्तु कें भारी वस्तु सँ दाबिकय चूरिकय नष्ट करब, तोड़ब। मै.

पीछू-अव्यय, प्रत्येक। प्रयोग—"घर पीछू एक एक रूपैया कय बेहरी लागत।" मै.

पीजु-सं., घाओक द्रवित विकार। मै.

पीटनि-सं., ठोकैक तथा सक्कत कय बैसबैक आ मारैक प्रक्रिया। मै.

पीटब-क्रि., १. कोठा बान्हि उपर ठोस छत बनाएब। २. कोनो सक्कत वस्तु सँ ढील माटि आदि कें ठोकि सक्कत करब। उताड़न देब। मै.

पीटा पीटी-सं., १. परस्पर मारैक क्रम। २. ठोकैक लगातार कार्यक्रम। मै.

पीठ-सं., १. देहक पाछूक अर्थात् छाती आ पेटक विपरीत दिशाक सपाट अंग। २. देवताक आवाहनक प्रसिद्ध स्थान। (सं. तत्सम) ३. पत्रक दूनू भाग। मै.

पीठ देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पड़ाएब। मै.

पीठापीठी-विशे., क्रम लागल। एकक उपरान्त दोसर। प्रयोग—"लल्लू आ गल्लू पीठापीठी सहोदरे थिका।" मै.

पीठू-विशे., देखू—"पिट्टू"। मै.

पीड़ा-सं., व्यथा, आन्तरिक दुःख। स. तत्सम

पीँड़ा-सं., ऊँच कयल पूजा आदिक पवित्र स्थान, चबूतरा। प्रयोग—"आङन मे कुलबधू कें सब दिन तुलसी पीँड़ा नीपैक चाही।" मै.

पीँड़ी-सं., छोट ऊँच कयल पूजनीय स्थान। प्रयोग—"कोन घर मे गोसाउनिक पीँड़ी नहि रहैत अछि।" मै.

पीढ़ा-सं., छोट सन बैसैक निमित्त बनल तकथी। मै.

पीढ़ी-सं., व्यवस्थित जकाँ बैसैक हेतु नाम चाकर एकजनिया तकथाक बनल वस्तु। काष्ठ पीठिका। मै.

पीताम्बरी-सं., पीयर रंगक रेशमी वस्त्र। कृष्णक प्रसिद्ध वस्त्र। मै.

पीनी-सं., चिलम हुक्का सँ धूम्रपानक हेतु तमाकू सँ बनाओल मसाला। मै.

पीपड़-सं., बड़का वृक्ष विशेष। पिप्पड़। मै.

पीपा-सं., नाम आ गोल वासन। मै.

पीब-क्रि., १. भविष्यत् कालक पीबैक क्रिया। २. पीजु। मै.

पीयब-क्रि., पान करब। मै.

पीयर-सं., एवं विशे., हरदिक रंग वा रंगवाला। मै.

पीयर ढूसि-विशे., अत्यन्त पीयर रंगवाला। मै.

पीर-सं., बाङ (तूर) कें तूनिकय गोल नाम तहियाओल टकुरी कटै जोग तूर। मै.

पीरा-विशे., पीयर रंगवाला। मै.

पीरी-सं., पीयर रंगक छवि। पीयरपना। मै.

पीलिया-सं., कमला रोग। मै.

पीलु/पीलू-सं., देखू—"पिल्लू"। मै.

पीसब-क्रि., कण कण मेंही करब, गर्दी बनाएब। मै.

पीसी-विशे., बापक बहिन। पु० पीसा। मै.

पु

पुईंपुईं-अव्यय, खेल मे मारैक ध्वनि। प्रयोग—"मार गदा पुईंपुईं।" मै.

पुक्की-सं., सोर करैक काल जोर सँ पू कहैत सोर करैक ध्वनि। मै.

पुक्की पाड़ब-क्रि., जोर सँ पू कहैक संग सोर करब। मै.

पुक्ख-सं., पुष्य नक्षत्र। प्रयोग—"पुक्ख नै राखए रुक्ख।" लोकोक्ति। सं. तद्भव/मै.

पुकार-सं., सोर करैक आह्वान करैक शब्द वा संकेत। मै.

पुकारब-क्रि., जोर शब्दे अथवा इशारा सँ ककरो सोर करब। मै.

पुख-सं., देखू—"पुक्ख"। मै.

पुङब-क्रि., अवधि अथवा सीमा पर पहुँचब, समाप्ति पर क्रियाक पहुँचि जाएब। मै.

पुङाएब-क्रि., पवित्र कराएब। लक्ष्य पर पहुँचाएब। मै.

पुच्छ-सं., नाङरि। सं. तत्सम

पुच्छड़-सं., नमहर लटकल कोनो वस्तु। मै.

पुच्छलतारा-सं., पुच्छ जकाँ नमहर ज्योतिवाला तारा। मै.

पुच्छी-सं., माछक नाङरि दिशुक अंग (कुटिया)। मै.

पुचकारब-क्रि., अकृत्रिम स्नेह सँ दुलारब। मै.

पुछड़ी-सं., छोट सन नाङरि। मै.

पुछनिहार-विशे., पुछैवाला। मै.

पुछारि/पुछारी-सं., खरोसा, जिज्ञासा, कुशल वार्ताक ज्ञान। मै.

पुछारी भार-सं., कन्या वरक कुशल वार्ताक ज्ञान करैले भार देबाक विधि। मै.

पुछैवाला-विशे., १. (लाक्षणिक) स्नेह सँ कुशल वार्ताक ज्ञान रखैक विचारवाला। २. प्रश्न करैवाला। मै.

पुजाएब-क्रि., १. पूजा कराएब। २. विशिष्टताक कारणें लोक सँ अपन सम्मान कराएब। मै.

पुजेगरी-विशे., १. अधिक पूजा करैक स्वभाववाला। २. कोनो देवताक स्थानक पूजा कयनिहार। मै.

पुञ्ज-सं., एकत्र राशि, ढेरी। सं. तत्सम

पुट्ठा-सं., नितम्बक उपरका अंग। मै.

पुट देब-क्रि. गपक शेष अंश कें पूर्ण करब। मै.

पुटित-विशे., उपर नीचाँ दुहु दिश सँ बन्न। मै.

पुठपुरी-सं., आँखि आ कानक बीचक अंग। मै.

पुड़पुड़ करब-क्रि., डरक लेल नीचाँ देने ध्वनिक संग वसात छोड़ब। मै.

पुड़पुड़ाएब-क्रि., बारम्बार पदैक शब्द करब। मै.

पुड़पुड़ी-सं., मुह सँ फेनक संग शब्द। मै.

पुड़िया-सं., कागज कें मोड़िकय वस्तु कें बन्न करैक ढंग। मै.

पुण्य-सं., सत्कर्म। सं. तत्सम

पुण्याह वाचन-सं., उद्यापन आदि यज्ञ सभक पहिने सद्ब्राह्मणक द्वारा पुण्याह कहबैक विधि। अर्थात् ब्राह्मणक द्वारा कर्मक आज्ञा। सं. तत्सम

पुत्ता-सं., चुल्हा मे उपर देल तीन वा चारिटा माटिक बनाओल वर्तन अलगा रखैवाला साधन। मै.

पुत्ती-सं., मरुआ आदि अन्नक दाना झारलाक उपरान्त दानाक उपरवाला मेंही पत्ती। मै.

पुतखौकी-विशे., १. एक प्रकारक सराप भरल गारि। २. अपने बच्चा कें अपनै खेनिहार जीव। मै.

पुतरा-सं., कपड़ा आदि सँ बनाओल मनुष्यक आकारवाला खेलौना। मै.

पुतरी-सं., स्त्रीक आकारवाला कपड़ाक रचित खेलौना। मै.

पुतोहु-विशे., पुत्रबधू, बेटाक गृहिणी। मै.

पुदीना-सं., स्वादिष्ट सुगन्धित छोट पातवाला लत्तीक रूपक जड़ी औषध विशेष। मै.

पुन्याह-सं., जमीन्दारीक लगान (कर) संग्रह करैक शुभारम्भ। मै.

पुन-सं., देखू—"पुण्य"। मै.

पुनर्वसु-सं., नक्षत्रक नाम। मै.

पुनानय-सं., पुनर्नवा। साग। मै.

पुनि-अव्यय, फेर, पुनः। सं. तत्सम

पुनीत-विशे., पवित्र, पुण्य फल देम'वाला। मै.

पुबरिया-विशे., पूव दिशाक घर। मै.

पुबहा-विशे., पूव दिशाक रहैवाला। मै.

पुबाहुत-विशे., लगै मे पूवदिश दबल। मै.

पुबारि-विशे., पूव दिश रहैवाला। मै.

पुर्चुक-सं., दुष्टता भरल साहस। मै.

पुर्जा-सं., कागजक टुकड़ी, लिखित टुकड़ा। मै.

पुर्जी-सं., आलेखवाला कागजक खण्ड। मै.

पुर्जी पुर्जी उड़ब-क्रि., कागजक टुकड़ी जकर टुकड़ा टुकड़ा होएब। मै.

पुर्जी काटब-क्रि., प्रमाणक लेख बाँटब। मै.

पुर्निमा-सं., पूर्ण चन्द्रक राति। पूर्णिमा। सं. तद्भव

पुर्री पाड़ब-क्रि., १. मुह सँ फेन सहित शब्द करब। २. मूर्ख बनबैक हेतु अनादर मे विकृत शब्द करब। मै.

पुर्वासाइ-सं., सामना सामनी ढेसाक स्पष्टीकरण। समक्ष मे अभियोगक प्रमाणीकरण। मै.

पुर-सं., नगर। सं. तत्सम

पुरखा-विशे., वर्तमान व्यक्तिक पहिलुक पुरुष। मै.

पुरखाह-विशे., प्रौढ़, निर्भीक, ढीठ। मै.

पुरखाही-विशे., १. पुरुषक करैक योग्य। २. पुरुषक गुण आ चिह्नवाला। ३. पुरुष जकाँ करैवाली स्त्री। मै.

पुरखिन-विशे., पुरुषक शौर्य, गुण आ चेष्टा भरलि स्त्री। मै.

पुरदरा-विशे., पुष्ट अथवा पूर्ण रूपक। मै.

पुरना-विशे., अधिक दिनवाला, पुरान भेल। मै.
पुरनाएब-क्रि., पुरान बनि जाएब। मै.
पुरब-क्रि., पहुँचब, व्यवस्थाक अनुसार चलब। प्रयोग—"नोत पुरब, आइ ममियौतक ओत' उपनयनक नोत अछि। हम अपन कर्तव्य पुरै छी।" मै.
पुरब-सं., पूर्व फल्गुनी नक्षत्र। सं. तद्भव
पुरश्चरण-सं., कामना सँ देवताक उपासना। सं. तत्सम
पुरहर-सं., शुभ काजक अवसर पर रंगल शुभसूचक चित्रकारीवाला घैल। मै.
पुरहित-विशे., कौनो कर्म पूजा पाठ आ मन्त्रोच्चारण करबैवाला पंडित। सं. तद्भव
पुरहिताइ-सं., पुरोहिती। पुरहितक काज। मै.
पुरहिया-विशे., वर्षे वर्षे गर्भ रखैवाली गाय एवं महिस। मै.
पुराएब-क्रि., आपूर्ति करब, पूर्ण बनाएब, भरैत रहब। मै.
पुराओन-विशे., घटल बढ़ल कें पुरबैवाला वस्तु। मै.
पुराण-सं., धार्मिक प्राचीन कथा निबन्ध। सं. तत्सम
पुरान-विशे., अधिक दिनक भेला सँ जर्जर। मै.
पुरि जाएब-क्रि., पूर्णता पाबि जाएब, जतबैक ततबैक मे सन्तुष्टि होएब। मै.
पुरिबा-विशे., पूव दिशक वसात। मै.
पुरी-सं., विशेष नगर, शहर। सं. तत्सम
पुरुष-सं., नर जाति अर्थात् पुलिङ्ग। सं. तत्सम
पुरैन-सं., जन्मक काल बच्चाक शरीर सँ लागल गर्भक जरायु। मै.
पुरौनि-सं., १. कमल फूलक गाछक पानि पर पसरल पात। २. घरक चारक छहनिक नीचाँ गोल पुरैनिक पातसन पसारल खढ़। मै.
पुरौंत-विशे., घटल कें पुरबैक हेतुक वस्तु। मै.
पुरोहित-विशे., देखू—"पुरहित"। मै.
पुरौना-विशे., संख्या पुरबैवाला। मै.
पुल्ला-सं., लम्बा आ पातर बान्हल आँटी। छोट पुल्ली। मै.
पुल-सं., नदी, नाली टपैक हेतु उपर सँ बनाओल सेतु, सुखाएल बाट। मै.
पुलक-सं., रोमाञ्च, देहक भुलकन। सं. तत्सम
पुलकब-क्रि, पुलकित होएब। सं. तद्भव
पुलिया-सं., १. छोट छोट पुल्ली। २. छोटका पुल। मै.
पुलिस-सं., आरक्षी वर्ग। अं. तत्सम
पुष्ट-विशे., भरल पुरल। सं. तत्सम
पुष्टाइ-सं., शरीर के पुष्ट करैवाला पदार्थ। मै.
पुष्टि-सं., भरब। पूर्णता। सं. तत्सम
पुष्प-सं., फूल। सं. तत्सम
पुष्पांजलि-सं., देवताक आराधनाक एक अंग। सं. तत्सम
पुष्पित-विशे., फुलाएल, विकसित। सं. तत्सम
पुष्य-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम
पुस्त-सं., वंश परम्परा। उ. तत्सम
पुस्तक-सं., पोथी। सं. तत्सम
पुस्त पुस्तानि-अव्यय, दूर वंशपरम्पराधरि। मै.
पुस्ता-सं., घर लागल घरक आगू बिना छतवाला चबूतरा। उ. तत्सम
पुस्तिका-सं, छोट आ पातर पोथी। सं. तत्सम
पुस्तैनी-विशे., कुल परम्परागत। उ. तत्सम
पुसबगिया-सं., पूस मासक विशिष्ट भोजन बगिया। मै.
पुसिया-विशे., पूस मास मे होइवाला। मै.
पुसौठ-सं., नव बच्चा के बगिया ल' क' पूस मे सेदैक मनोरञ्जन। मै.

पू

पू-सं., थोड़ घी मे गील चिकस कें पसारि कय पकाओल मधुर पकवान। मै.
पूऽऽऽः-अव्यय, सोर कयला उत्तर सम्बोधित व्यक्तिक अपन साकांक्षताक द्योतना तथा साकांक्ष करैक शब्द। मै.
पूआ-सं., आँटा मैदा मे विशेष वस्तु मसाला दय छानल पकवान। मै.
पूंगीफल-सं., सुपारी। सं. तत्सम
पूछ-सं., प्रश्न करैक प्रक्रम। (लाक्षणिक) लोकक बीच मान्यता। मै.
पूँछ-सं., नमहर नाङरि। मै.
पूछताछ-सं., पूछि कय जानकारी लैक चेष्टा। मै.
पूछब-क्रि., १. प्रश्न करब। २. (लाक्षणिक) आवेश करब। मै.

पूछापूछी-सं., कोनो विषय पर सब सँ अथवा दुहू पक्ष सँ पूछैक आवश्यक । मै.

पूजक-विशे., पूजा कयनिहार । सं. तत्सम

पूजन-सं., पूजा करैक क्रम । सं. तद्भव

पूजब-क्रि., पूजा अर्थात् आत्मसमर्पणक विधि । देवताक आराधना करब । मै.

पूजा-सं., आराधना कय देवताक आगू अपन उत्सर्ग सं. तत्सम

पूजापाठ-सं., देवताक वृहत् प्रक्रिया सँ उपासनाक संग वचन सँ आराधनाक क्रम । मै.

पूँजी-सं., कोनो व्यापार मे लागल वा लगैवाला धनराशि । लागत, लगता । मै.

पूठ-सं., पोन (नितम्ब) क दूनू कातवाला अंग । मै.

पूड़ा-सं., १. नाकक दूनू कातक रन्ध्र (भूर) । २. पात कें मोड़ि गाँथल कटोरी । मै.

पूड़ी-सं., १. धातुक अत्यन्त छोट कटोरी । पूटिका । चन्दन आदि रखैक वासन । २. दालिक फूँटि दय कें बनाओल सोहारी सन पकवान । मै.

पूत-विशे., पुत्र । सं. तद्भव

पून-सं., पुण्य, सत्कर्म । सं. तद्भव

पूब-सं., पूर्व दिशा । स. तद्भव

पूबभर-अव्यय, पूव दिशाक स्थान मे । मै.

पूबा-सं., १. माटिक वासन विशेष । विशे., पूव दिशाक लोक । मै.

पूबाढार-विशे., पूव दिश झुकल । मै.

पूभर-अव्यय, लगैक पूव दिशा मे । मै.

पूर्ण-विशे., भरल पूरल । सं. तत्सम

पूर्णिमा-सं., इजोरियाक पन्द्रहम तिथि, पूर्ण चन्द्र-वाली राति । सं. तत्सम

पूर्ति-सं., भरैक । पूर्ण करैक भाव । सं. तत्सम

पूर्व-अव्यय, पहिने । विशे., पहिलुक । सं., दिशा । सं. तत्सम

पूर्व फल्गुनी-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

पूर्वभाद्र-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

पूर्वाषाढ़-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

पूर्वी-सं., रागिणी विशेष मै.

पूर-विशे., गुणक अधिकतावाला । प्रयोग—"ई: अपने बड़ पूर छथि जे अनकर निन्दा करै छथि ।" मै.

पूरक-विशे., पोषक, पूर्ति करैवाला । सं. तत्सम

पूरब-सं., देखू—"पूर्व" । सं. तद्भव

पूरमपूर-विशे., नापतौल मे समतूल । मै.

पूरा-विशे., पुष्ट, पूर्ण । मै.

पूरारास-विशे., तृप्तिक अनुकूल, अत्यन्त पूर्ण । मै.

पूरापूरी-विशे., अनुमान आ भविष्यवाणी । जोख तौल आ नापक अनुकूल । मै.

पूरे-अव्यय, पूर्ण अनुमानक अनुसार । मै.

पूला-सं., नदीक उपरक कृत्रिम स्थल मार्ग । मै.

पूस-सं., पौष, मास विशेष । मै.

पूसी-विशे., १. पूस मासवाला । २. अधिक दुलारू बिलाड़ि । मै.

पृ

पृथ्वी-सं., धरती । सं. तत्सम

पृथक्-अव्यय, अलग । सं. तत्सम

पृथा-सं., अर्जुनमाता । सं. तत्सम

पृथिवी-सं., धरती । सं. तत्सम

पृथुल-विशे., पैघ । सं. तत्सम

पृष्ठ-सं., पीठ, पाछू । पन्ना । स. तत्सम

पे

पेखब-क्रि., नीक जकाँ देखब । विचारपूर्वक दृष्टि देब । मै.

पेङना-सं., हरदम प्रेरणा करैक साधन । मै.

पेङब-क्रि., कोनो वस्तुक द्वारा प्रेरित करब । मै.

पेङरा-सं., भारी वस्तु कें चलबैक डन्टा । मै.

पेङा-सं. प्रेरणा । मै.

पेङिया-विशे., प्रेरित करैवाला । मै.

पेंच-सं., १. सक्कत सँ बैसवैक हेतु बनाओल गुना । २. प्रपञ्च । मै.

पेंचकस-सं., कोनो पेंच कें गुना पर बैसवैवाला यन्त्र । मै.

पेंचगर-विशे., १. गुनादार । २. प्रपञ्चवाला । मै.

पेंचा खेलाएब-क्रि., प्रपञ्च चलाएब । मै.

पेंचाह-विशे., १. पेंच भरल । २. प्रपञ्ची । ३. पेंच लागल । ४. प्रपञ्च भरल । मै.

पेंचिल-विशे., प्रपञ्च करै मे चतुर । मै.

पेंची-सं., ऐ नामक कन्दवाला तरकारी अरुआ । मै.

पेचुआ-विशे., पेंचवाला गहना आदि मे बनल कील । मै.

पेंचुल-विशे., प्रपञ्च द्वारा काज करैवाला । मै.

पेट-सं., देहक अंग विशेष, उदर । मै.

पेटकट-विशे., अनकर पेट भरैक अन्न मे कपचि लेनिहार। उचित परिमाण मे थोड़ कयनिहार। मै.

पेटकनाहि-विशे., सतत पेट भरैक लेल असन्तोष रखनिहारि। पेट नै भरैक हरदम दुखी। मै.

पेट कसब-क्रि., १. पेट कें कसिकय बन्हने रहब। २. (लाक्षणिक) कसिकय खाएब। मै.

पेट काटब-क्रि., आनक भोजनक परिमाण मे सँ कम्मे भोजन देब। मै.

पेटकान देब-क्रि., दुख आ शोच प्रकट करै लेल पट (नीचाँ मुहें) पड़ल रहब। मै.

पेटकान मारब-क्रि., पेटक भरें विशेष स्थिति मे सूतैक चेष्टा करब। मै.

पेटकान लाधब-क्रि., (लाक्षणिक) गुप्त रूपें तामस वा रुष्टता सँ पेटक भरें सूतिकय मनक क्रोध प्रकट करब। मै.

पेटकुनियाँ-सं., पेटक भरें सुतैक प्रकार। मै.

पेट कुलकुलाएब-क्रि., भूखक द्वारें पेटक अँतरी सँ ज्वाला उठब अर्थात् अत्यन्त भूख सँ व्याकुल होएब। मै.

पेट कुहाक-सं., अधिकतर पेटे भरै पर उपस्थित संकट। मै.

पेटगर-विशे., १. कोनो कृत्रिम वस्तुक बीचक अधिक वा उचित फाँक (अवकाश)। २. अधिक खयनिहार। मै.

पेट डेङाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पेट भरैक कारणें सदति असन्तोष रखैत बलेल्ला रहब। मै.

पेट दुखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पातर दस्त होएब। निराल पानिसन मल उतरब। मै.

पेट पीटब-क्रि., (लाक्षणिक) उद्योग सँ बेशी प्रधानता पहिने पेटे भरैक भावना राखब। खाइक लेल उग्र बनल रहब। मै.

पेट पोसब-क्रि., आनैक भरोसें अपन भरण पोसण करब। मै.

पेटफुल्ली-सं., अनपच सँ पेट फुलैक रोग। मै.

पेटबद्धी-सं., ऐ नामक गहना विशेष। मै.

पेट बान्हब-क्रि., भूख पियास रोकि क' तथा भूखल रहि क' काज करब। पातर दस्त रुकब। मै.

पेटबाहि-सं., (लाक्षणिक) पेट अधिक झरैक क्रम। मै.

पेटभरा-विशे., १. थोड़बहि सँ पेट भरि दैवाला। २. कोनो वस्तुक भीतर खाली स्थान कें भरि दैवाला। मै.

पेटमधबा-विशे., (लाक्षणिक) खाइक लोभें सब ठाँ उपस्थित रहनिहार। मै.

पेटरा-सं., बड़का पेटी। मै.

पेटरागो-विशे., भंडारा सब मे पेट भरैले बनल बाबाजी (साधु)। मै.

पेटहा-विशे., पेट भरैक लोभ सँ सबठाँ अनेर जाइक चेष्टा रखनिहार। खाइक लोभी। मै.

पेट होयब-क्रि., गुप्त गर्भ रहब। मै.

पेटा-विशे., १. पेटी सब मे पैघ। २. बड़का पेटवाला। मै.

पेटाढ़-सं., पन्नीक बनाओल मसाला सँ उड़ैवाला गुब्बारा। मै.

पेटाढ़ी-सं., कटहरक कोमे उपर सँ छारल सक्कत परत। मै.

पेटापेटी-विशे., (लाक्षणिक) गुप्त रूपें एक दोसरक जानकारीवाला बात। मै.

पेटारा-सं., बाँसक कमचीक बनाओल बड़का झप्पावाला बासन। पेटरा। मै.

पेटारी-सं., हथलग्गू छोट पेटी वा बाँसक बीनल वस्तु रखैक बासन। मै.

पेटाह-विशे., खाइक लोभें सबठाँ बिन कारणों ढुकैवाला। मै.

पेटी-सं., १. वस्तु सुरक्षित रखैक चदरा आदि सक्कत पदार्थक छोटका सन्दूकचा। २. बाँस आदि फोंकला वस्तुक भीतरक गुहा। मै.

पेटू-विशे., खयवाक लोभी। खाइ पर भर देनिहार। मै.

पेठिया-सं., हाट, चलता (अस्थायी) बाजार। मै.

पेंड़-सं., गाछ। हि. तद्भव

पेड़न-सं., पीड़ाक परम्परा। मै.

पेड़ब-क्रि., पीड़ा देब। मै.

पेड़ा-सं., खोआ सँ बनल मधुर विशेष। मै.

पेड़िया-सं., पीड़ा दैक बुद्धि। मै.

पेड़ाएब-क्रि., पीड़ित होएब। मै.

पेंड़ुआ-विशे., पीड़ा देनिहार । मै.

पेन्ड-सं., पैन्ट । अं. तद्भव

पेन्हन-सं., देह पर धरैक अनेक रूपक कपड़ा । मै.

पेन्हब-क्रि., पहिरब । मै.

पेन-सं., कोनो वासनक निचला भाग । मै.

पेनकट्टा-विशे., पेन काटिकय जोड़लवाला तथा पेन काटलवाला वासन । मै.

पेनड़-सं., पेना, हाथक पातर ठेंङा सँ ठोकर दैक प्रक्रिया । प्रेरणा देबाक चेष्टा । मै.

पेनब-क्रि., पेनाक हूर सँ बराबरि ठोकर देब । मै.

पेना-सं., मालजाल कें प्रेरित करैवाला आ हँकैवाला बाँसक फट्ठीक छोट ठेंङा । मै.

पेनाठ-सं., पेनाक मारि तथा हूर सँ ठोकर । मै.

पेनिया-विशे., अनावश्यक संग लगनिहार जकर उत्तरदायित्वो रखैक पड़ए । मै.

पेनियाएब -क्रि., सुरक्षाक भरोसें संग लागब । मै.

पेनी-सं., कोनो वासनक भीतरी तरका अंश । मै.

पेनी छानब-क्रि., कोनो वस्तुक बनवैक, बीनैक आ मढ़ैक लेल आरम्भक पृष्ठभूमि (जड़ि) प्रस्तुत करब । मै.

पेंप-सं., पाइप, भीतर शून्य नली । अं. तद्भव

पेपच पड़ब-क्रि., १. थाल पानिक द्वारें घृणित लागब । २. कोनो वस्तुक अधिकताक कारणें उपेक्षित रहब । मै.

पेंपी-सं., नव मूड़ी चलैक अंकुर । मै.

पें पें करब-क्रि., बेसूरा बाजाक शब्द बनब । मै.

पेमारा-सं., तेजी सँ बहराएल प्रवाह । मै.

पेमाल-विशे., नष्ट भ्रष्ट । मै.

पेय-विशे., पीबैवाला । मै.

पेरन-सं., निचोड़ि कय रस बहार कयला पर जमल विकार । मै.

पेरब-क्रि., कोनो वस्तु सँ दाबि कय रस निचोड़ब । मै.

पेराइ-सं., कुशियार सरिसो आदि निचुड़ैवाला वस्तुक रस निचोड़ैक लगातार क्रम । मै.

पेराएब-क्रि., अनका सँ रस वा तेल चुबवैक क्रिया करब । मै.

पेरा-सं., वाट, रास्ता । मै.

पेरू-सं., मूत्राशयवाला ढोंढ़ीक नीचाँवाला अंग । मै.

पेल-सं., जन प्रवाह, मेला । मै.

पेलता-सं., भारी वस्तु के चलवैवाला बाँसक टोना । मै.

पेलना-विशे., लकड़ी आदि भारी वस्तु कें घुसकैवाला टोंटा । मै.

पेलब-क्रि., भारी वस्तु कें बाँसक टोना सँ चलाएब । मै.

पेला-सं., पेलैक क्रम । मै.

पेशकार-विशे., वादीक आवेदन न्यायकर्त्ता लग धरैवाला । मै.

पेशी-सं., अपन आवेदन अधिकारीक आगू पहुँच'बैक प्रक्रिया । उ. तत्सम

पेसगी-सं., नियत मूल्यक अग्रिम किछु अंश । उ. तत्सम

पेसना-विशे., पेसैक लकड़ी वा बाँस । मै.

पेसब-क्रि., कोनो स्थान कें सामान्य रूप दैक हेतु भीतर सँ सोझ लकड़ी वा बाँस घुसाएब । मै.

पेसुआ-विशे., पैसाकय देल गेल लकड़ी वा बाँस । मै.

पै

पैं-सं., अंगक वा स्वभावक दुर्गुण वा दोष । मै.

पैंकड़-सं., पैर जिञ्जिरवाला भारी बेड़ी । मै.

पैकार-विशे., एकठाँ सँ कीनिकय दोसर ठाँ बेचैवाला बनियाँ । मै.

पैकारी-सं., कीनै आ बेचैक व्यवसाय । मै.

पैखना-सं., १. चड़ैक पसरल पाँखि । २. मानिक थम्ह सँ धरनि धरि लागि धरबैवाला लकड़ी । मै.

पैखाना-सं., मनुष्यक मल आ मलत्यागक स्थान । उ. तत्सम

पैंघ-विशे., आकार प्रकार आ विचार सँ नमहर, श्रेष्ठ । मै.

पैंघत-सं., उच्चता, महत्ता आ विशालता । मै.

पैंघहा-विशे., पैंघवाला । उच्चतावाला । मै.

पैंच-सं., उधार, बिना कोनो निमयक ऋण । मै.

पैंचन-विशे., सूप सँ टघराकय बहार कयल अन्नक अतिरिक्त वस्तु । मै.

पैंचब-क्रि., मिलल जुलल अन्न कें सूप सँ टघराकय पृथक् करब । फरिछाएब । मै.

पैंचार-सं., पैंच लेबा देबाक व्यवहार । मै.

पैंजनी-सं., पैरक घुघरू, नूपुर । मै.
पैंठ होएब-क्रि., प्राप्त होएब, भोग होएब । मै.
पैत्रिक-सं., पिताक परम्परागत कुल एवं स्थान । सं. तत्सम
पैता-सं., पवित्र करैक हेतु कुशपत्र । मै.
पैंतालीस-संख्या, चारि दहाँइ पाँच एकाँइक अंक । मै.
पैंतीस-संख्या, तीन दहांइ पाँच एकाँइक अंक । मै.
पैन-सं., पानि बहैक सार्वजनिक वाट । बाहा । मै.
पैबन्द-विशे., विवश, बाध्य । परवश । मै.
पैबन्दी-सं., विवशता । मै.
पैँर-सं., चरण, पाद, गोड़ । मै.
पैँरकन्ह-विशे., जोड़ा बड़दक एकक नीचाँ छोट कन्हावाला । मै.
पैरबी-सं., प्रार्थना । उ. तत्सम
पैर लागब-क्रि., प्राप्त होएब । मै.
पैरी-सं., पैँरक अलंकार । मै.
पैली-सं., अन्न नपैक वासन । नप्पा । तम्मा । मै.
पैस-सं., खन्ती, खुरपी आदि अस्त्रक वेंट मे नारि पैसवैक छेद । मै.
पैंसठि-संख्या, पाच एकाँइ छः दहाँइक अंक । मै.
पैसब-क्रि, घुसब, जाएब, प्रवेश करब । मै.
पैसा-सं., पाइ, छोट सँ छोट राजकीय सिक्का । मै.
पैसाएब-क्रि., घुसाएब । मै.
पैसान-सं., पैसैक प्रक्रम । मै.
पैसार-सं., प्रवेश करैक निरन्तर क्रम । मै.
पैसुआ-विशे., पैसाओलवाला । मै.
पैसू-विशे., पैसैवाला । मै.
पैसौनिहार-विशे., पैसबैवाला । मै.

पो

पोँ-अव्यय, गाड़ी आदिक पुक्कीक ध्वनि । पदैक ध्वनि । मै.
पोआ-विशे., वंशधर, सद्यः जनमल साँप आदिक सन्तति । मै.
पोआर-सं., दाओन कयलाक उपरान्त धानक डंटीक ढेर । मै.
पोक करब-क्रि., विरोध मे गुप्त रूपें उकसाएब । मै.
पोंक पाड़ब-क्रि., कनेक कनेक कय अनेक ठाम मल त्याग करब । मै.
पोख-विशे., अत्यन्त पुष्ट । प्रयोग–"भरि पोख खाएल ।" मै.
पोखत-विशे., पुष्ट रूपक । मै.
पोखता-विशे., अत्यन्त पुष्ट रूपक । मै.
पोङा पंडित-विशे., बिना विषयक ज्ञानवाला पण्डित । मै.
पोङा पन्थी-विशे., परम्परावादी, रहस्य बिनु जननै रूढि कें पकड़निहार । मै.
पोचकार-सं., उचित सँ वेशी देह मे लेप । मै.
पोचकारब-क्रि., देह मे तेल आदि अधिक लेपब । मै.
पोचारब-क्रि., देबाल आ कोठा आदि घर कें चून सँ रङि कय उज्जर करब । ढौरब । मै.
पोचारा-सं., ढौरैक कार्यक्रम । मै.
पोछब-क्रि., हाथ सँ टारि कय गील कें रुक्ख करब । गमछा सँ देहक पानि कें शोषब । मै.
पोछबाएब-क्रि., चिक्कन कराएब । मै.
पोछाइ-सं., पोछैक अर्थात् कपड़ा आदि सँ चिक्कन करैक प्रक्रिया । मै.
पोछुआ-विशे., पोछिकय सूखल बनाओल पू आदि । मै.
पोटब-क्रि., गुप्त रूपें मन्त्रणा द' क' अनुचित विश्वासक संग उत्साह देब । मै.
पोटरी-सं., छोट गेंठरीवाला मोटा । मै.
पोटहा-विशे., (अनादर मे) सदिखन नाक सँ नमरल कफवाला बच्चा । मै.
पोटा-सं., नाकक कफ । मै.
पोटाह-विशे., पोटा भरल नाकवाला । मै.
पोठी-सं., पोठी माछ । मै.
पोत-सं., उपर सँ देल गाढ़ लेप । मै.
पोतब-क्रि., गाढ़ लेप कय चिक्कन करब । मै.
पोता-विशे., पौत्र । मै.
पोताइ-सं., लेपाइ, लेपैक, छछारैक पोचकारैक कार्यक्रम । मै.
पोताएब-क्रि., पोत कराएब । मै.
पोतान-सं., पोतैक व्यवस्था । मै.
पोतुआ-विशे., पोतवाला । मै.

पोथा-सं., नमहर आ मोट पैंघ पोथी। मै.
पोथी-सं., सामान्य पुस्तक। मै.
पोथौना-सं., सूतल लोकक पैरक दिशा। मै.
पोन-सं., डाँरक नीचाँ पाछू दिशक मांसल अंग। चूतर। मै.
पोनखसक-विशे., सुखाएल पोनवाला। मै.
पोनचटक-सं., पोन परक देल मारि। मै.
पोनाठ-सं., ऊँच आ पैंघ पोन। मै.
पों पां मचब-क्रि., अनेक बाजा सभक एक संग ध्वनि होएब। मै.
पोर-सं., बाँस तथा आङुर आदिक गीरहवाला स्थान। मै.
पोरगर-विशे., १. वेशी दूर दूर पर पोरवाला। २. (लाक्षणिक) नमहर धूआ कायावाला। मै.
पोरो-सं., लत्तीवाला पातक साग विशेष। मै.
पोल-सं., १. रहस्य भरल बात। २. बिजलीक खम्भा। ३. मतदान। मै./अं. तत्सम
पोलखाह-विशे., बीच मे कत्तौ पातर तथा दबल काठ। मै.
पोल खोलब-क्रि., भेदक बात प्रकट क' देब। मै.
पोलहाएब-क्रि., स्नेह सँ मधुर वचन द्वारा परतारि कय अपन पक्ष मे बनाएब। मै.
पोला-सं., तागक एक मानक लपेटल गुच्छा। मै.
पोलाओ-सं. मांसक संग घी मे रान्हल अनेक कटुक भरल भातक विशिष्ट पाक। पुलाव। उ. तद्भव
पोली-विशे., १. अपन मतपत्र खसबैवाला। २. तागक छोटका लपेटल गुच्छा। मै.
पोलो-सं., विशेष प्रकारक अंग्रेजी खेल। अं. तत्सम
पोष-सं., पुष्टि। सं. तत्सम
पोषक-विशे., पुष्टिकारक। सं. तत्सम
पोस्तादाना-सं., पकवान मे देम'वाला सूक्ष्म कणवाला मसाला। उ. तत्सम
पोस-सं., पोसैक गुण। पालन। मै.
पोसब-क्रि., पालन करब। पालब। मै.
पोसा-विशे., पालल जाइवाला, पालतू। मै.
पोसाइ-सं., पोसैक लाभ, परिश्रमिक। मै.
पोसाउ-विशे., पोसैक योग्य। मै.
पोसाएब-क्रि., १. अनका ओतय अपन कोनो जीव पोसैक लेल देब। अनका द्वारा पोसैक प्रक्रिया करब। २. (लाक्षणिक) लगाओल लगताक लाभ होएब। मै.
पोसाओन-सं., पोसैक भार आ तकर लाभ। मै.
पोसाक-सं., वेशभूषा, पहिरना आ गहना। हि. तद्भव
पोसिया-सं., पोसैक लाभक नियमक अनुसार पशु पोसैक भार। मै.
पोसियादार-विशे., पोसिया रूपें माल कें रखैवाला। मै.
पोसुआ-विशे., बहुत दिन सँ पालल जाइवाला। पालित होम'वाला। मै.
पोसौनी-सं., देखू—"पोसिया"। मै.
पोह करब-क्रि., १. दोग सान्हि मे अन्वेषण करब। २. दिशाक क्रमहीन मूसक बिल करब। मै.

पौ

पौआ-सं., १. एक कीलोग्रामक चौठाइ भाग। चौठाई। २. खाट चौकी आदि काठक वस्तुक चारू टाङ, खड़ाइक अंग। मै.
पौआही-सं., एक पाओक नप्पा। मै.
पौंच-सं., दाना झारल अन्नक पातर पात आ डन्टी। मै.
पौंछ-सं., केराक गाछक अंकुर आ छोट गाछ। मै.
पौत्र-विशे., बेटाक बेटा। स्त्री० पौत्री। सं. तत्सम
पौती-सं., स्त्रीगणक श्रृङ्गारक वस्तु रखैक बीनल झप्पावाला वासन, पेटी। मै.
पौथान-सं., बिछाओन मे पैर दिशुक भाग। मै.
पौदान-सं., गाड़ी सब मे पैर धरैवाला स्थान विशेष। मै.
पौध-सं., छोट छोट गाछ। हि. तत्सम
पौन दोबर-विशे., एक पूर्णांक एक बटे तीन गुना। मै.
पौने-अव्यय, चारि भाग मे केवल तीन भागक परिमाण मे। मै.
पौना-सं., प्राप्त करैक वस्तु वा राशि। मै.
पौनी-विशे., कोनो विशेष अवसर पर अपन अंश पबैक अधिकारी पसारी। मै.
पौर-सं., अन्न दौनी मे पसरल चक्राकार झरल अन्नक दानाक पसार। मै.
पौरब-क्रि., मधुर रस वा दूध आदि द्रवणशील वस्तु कें विशेष वर्तन मे जमबैक हेतु सावधानी सँ ढारब। मै.
पौश-सं., १. पशु। २. तरुण महिंस। सं. तद्भव

फ

फ्याओ-अव्यय, बताह गीदड़क बजैक ध्वनि तथा बताह गीदड़। मै.

फ्राक-सं., अंग्रेजी ढंगक छोट कन्याक पहिरना। अं. तत्सम

फ्री-विशे., उन्मुक्त, छुट्टा। अं. तत्सम

फक्कड़-विशे., कोनो धनक एकदम अभाववाला। मै.

फक्का-सं., सुखाएल (भूजल वा फरहर) वस्तुक हाथ सँ लौकैत मुह मे फेंकि खाइक प्रक्रिया। मै.

फक्काडोका-सं., फाँकिकय रुख सुख खाइवाला बस्तु। मै.

फक्की-सं., गर्दीवाला औषध, त्रिफला आदि। मै.

फकचोद-सं., निरर्थक अनर्गल विवाद। मै.

फक द' रहब-क्रि., अचानक आशा टूटि गेने शून्य होएब। मै.

फक द' निसास छाड़ब-क्रि., एकाएक मन पर सँ बोझ उतरब। मै.

फक डोलबा-विशे., अव्यवस्थित वचनवाला। मै.

फँकना-विशे., फाँकैक वेशी अभ्यासवाला। मै.

फकफक करब-क्रि., दुर्बलता सँ शक्तिहीन रहब। मै.

फकफकी-सं., दुर्बलता सँ नाकक बदला मुह सँ अधिक निसास छाड़ब। मै.

फकरब-क्रि., जोर जोर सँ कानब, आक्रन्द करब। मै.

फकरा-सं., ग्राम्य भाषा मे छोट छोट लाक्षणिक रूपक तुकबन्दीवाला पद्य। प्रयोग—"हम सुनरी पिया सुनरी। गामक लोक बनरा बनरी।" मै.

फकसियार-सं., गीदड़क जातिवाला, बाघ सँ आगुए आगू त्रस्त जकाँ शब्द करैत जंगल मे चलैवाला छोट पशु। मै.

फकसियारी काटब-क्रि., बहुत जोर जोर सँ एकै सूरे बहुत काल धरि कानब। मै.

फकारि-सं., वसात जोर पर मेघ खण्ड सँ कनेक वर्षा। मै.

फकिरना-विशे., साधु सन्त कें देल भूमि। मै.

फकीर-विशे., साधु संन्यासी। मै.

फकैत-विशे., फाँकी दैवाला, किछु बजैवाला आ किछु करैवाला, वचन आ क्रियाक मिलान नहि रखैवाला। मै.

फगुआ-सं., फागुन पूर्णिमा दिन उन्मुक्त आनन्दक पर्व। मै.

फगुनहरि-सं., फागुन मासक प्रकृति। मै.

फगुनी-विशे., फागुन मास मे होम'वाला। मै.

फच्च द' उठब-क्रि., अत्यन्त गील वस्तु मे भारी वस्तुक अचानक चोट पड़ने ध्वनि होएब। मै.

फचका-विशे., मुह सँ गाउज उड़बैत बजैवाला। मै.

फचका उठाएब/फचकाएब/फचकारब/फचकार करब-क्रि.,सगरे गील बनाएब। मै.

फचड़-विशे., अनेर बिना रोक टोकक गप बजैवाला। मै.

फचफच-विशे., बिना व्यवधानक वचन। मै.

फचफचाएब-क्रि., व्यर्थ फचफच बाजब। मै.

फचर फचर-अव्यय, व्यर्थ गप्प बजैक प्रवाहित रूप। मै.

फचराह-विशे., अनेर अधिक बजैक स्वभाववाला। मै.

फचाँड़ि-विशे. सब बात कें स्वीकार कय बात कें नहि निमाहैवाला। मै.

फज्झति-सं., क्रोध सँ दुर्वाक्यक कथन। गंजन, फजीहत। उ. तद्भव

फट्-अव्यय, १. अङ्गन्यासक मन्त्र। २. संक्षेप मे डँटैक शब्द। मै.

फट्ट द'-अव्यय, छूटितैं तुरन्त, एकोक्षणक देरी नैं। मै.

फट्टा-विशे., फाट (दरक्का) वाला। मै.

फट्टो-विशे., कोइली धरि फाटलवाला रोगाह आम। मै.

फट्ठा-सं., बाँसक चारि चीरा। मै.

फट्ठी-सं., १. चीरल बाँसक छोट टुकड़ा। देहक हड्डी। मै.

फटक-सं., फाटक, बाँसक फट्ठी आ झाँझन सँ बनाओल केवाड़। मै.

फटकन-सं., १. फटकि कय बहार कयल गर्दीस। २. फटकैक प्रक्रिया। मै.

फटकनिहारि-विशे., सूप सँ फटकैक काज कयनिहारि। मै.

फटक फन्द-सं., चारू दिशक घेराओ। मै.

फटकब-क्रि., सूप सँ अन्नक परिष्कार करब। मै.

फटकबाहि-सं., अधिक फटकैक कार्यक्रम। मै.

फटका-सं., फटकैक क्रम। मै.
फटकार-सं., दूर हटवैक तिरस्कृत वाक्य। फज्झति। मै.
फटकारब-क्रि., फज्झति करब। मै.
फटकिया-सं., लगातार फटकैक क्रम। मै.
फटकी-सं., १. छोट फटक। २. दूर। प्रयोग—१. "फटकी भिड़ा दियौ। २. अशुद्ध वस्तु कें पूजा पाठ सँ फटकी राखू।" मै.
फटना-सं., बड़ जल्दी फटैवाला। मै.
फट फट-अव्यय, लगले लागल। मै.
फटफटाएब-क्रि., कोनो वस्तुक विकट फट फट शब्द करब। मै.
फटफटार-विशे., अधिक भड़कदार आ चमकदार ओढ़न पहिरनवाला। प्रयोग—"वेश फटफटार भेल गेला।" मै.
फटफटिया-विशे., एवं सं., १. फट फट शब्द करैवाला। २. मोटरसाइकिल। मै.
फटफटी-सं., फट फट काज करैक आ शब्द करैक प्रकृति। मै.
फटब-क्रि., फाटि जाएब। (स्वतः बिदीर्ण होएब)। मै.
फटर फटर-अव्यय, अनेर अनर्गल बजैत रहैक क्रम। मै.
फटहाल-विशे., फटेहाल, अन्न वस्त्रक अभाववाला। मै.
फटाओन-सं., दूधक फटला सँ बनल खिरसा। विखण्डित दूधक कण। मै.
फटाक द'-अव्यय, ओही क्षण, लगले। मै.
फटाक द' उठब-क्रि., बाँस फटैक सन अचानक जोर सँ विकृत शब्द होएब। मै.
फटान-सं., फटैक विस्तृत रूप। मै.
फटाफटि-अव्यय, लगले लागल। मै.
फटीचर-अव्यय, देखू—"फटहाल"। मै.
फटेदार-विशे., हिस्सेदार, कानूनी बखरा लैवाला। मै.
फटोफट मे पड़ब-क्रि., विकट परिस्थिति मे रहब। मै.
फड़-सं., फल (गाछक फल)। सं. तद्भव
फड़क-सं., स्फुरण, जोर सँ अकस्मात् छिटकि कय चलायमान। मै.
फड़कब-क्रि., अंगक वा कोनो वस्तुक हठात् वेग सँ चंचल भ' जा क' छिटकब। मै.
फड़की-सं., देखू—"फटक"। मै.
फड़गोड़-विशे., तेजी सँ चलैवाला। मै.
फड़नमा-विशे., अधिक फड़ैवाला गाछ। मै.
फड़नसैर-विशे., फड़ैक योग्य वयसवाला गाछ। मै.
फड़ना-विशे., अधिक फड़ैक स्वभाववाला। मै.
फड़फड़ करब-क्रि., १. अधिक वेग सँ तेजी देखाएब। २. उड़ैक प्रयास मे पक्षी सँ पतङ्गधरिक पाखि चलाएब। ३. वसात मे कागज आ ओकर सन वस्तुक उधियाएब। मै.
फड़फड़ी-सं., तेजी, चञ्चलता। मै.
फड़ब-क्रि., गाछ मे फल निकलब। मै.
फँरबन्ही करब-क्रि., (लाक्षणिक) लड़ैक हेतु उद्यत होएब। मै.
फड़ाक फड़ाक उठब-क्रि., कोनो कड़ा वस्तुक लगातार फटैक शब्द होएब। फुटैक ध्वनि होएब। मै.
फँड़ियाएब-क्रि., १. फाँड़ मे धरब। २. कोनो रूपें फरिछाकय स्पष्ट करब, एक निर्णय पर निश्चित करब। मै.
फड़ी-सं., फड़ होइक विशेषता। मै.
फँड़ुआ-विशे., फाँड़िकय (चीरिकय) बनाओल। मै.
फड़ुआ-सं., आरु तेकुना आदिक फड़। मै.
फण्ड-सं., सुरक्षित राशि। अं. तत्सम
फणा-सं., गहुमन साँपक मुहक छत्ता। सं. तत्सम
फतहा पढ़ब-क्रि., एक दिशाहे तमसाएल बात एकै सूरें बजैत रहब। मै.
फतिङ्गा-सं., छोट छोट उड़ैवाला कीड़ा। मै.
फतिङ्गी-सं., सूक्ष्म (मेंही) उड़ैवाला कीड़ा। मै.
फतूल-अव्यय, व्यर्थ, निरर्थक, अनेर। मै.
फदकब-क्रि., एकै सूरें अनैर अर्रदर्र बजैत रहब। मै.
फदका-विशे., व्यर्थ अनर्थक बजैक प्रकृतिवाला। मै.
फदफदाएब-क्रि., अनेर विशृंखल बात बड़बड़ाइत रहब। मै.
फन्द-सं., विवशताक स्थिति। मै.
फन्दा मे पड़ब-क्रि., विकट स्थिति सँ जकड़ल रहब। मै.

फन्ना-सं., स्वतः बन्धन कसि जाइक योजना। मै.
फन्ना लगाएब-क्रि., बन्धन मे फँसबैक योजना करब। मै.
फन्नी-सं., कपड़ा बीनै मे सूत कें गसैक परतान। मै.
फन-सं., देखू-"फणा"। सं. तद्भव
फनकब-क्रि., क्रोधें उत्तेजित भ' क' बाजब। मै.
फनका-विशे., बात बात मे फनकैक प्रकृतिवाला। मै.
फनकी-सं., कोनो जीव जन्तु कें फँसबैक हेतु सूत वा डोरीक बन्धनक योजना। मै.
फन काढ़ब-क्रि., साँपक फणा पसारब। मै.
फनगर-विशे., चूड़ी लहठी आदि गहनाक बीचक विशेष शून्य स्थानवाला। मै.
फनफन करब-क्रि., मन आ शरीर सँ क्रोधें असन्तुलित रहब। मै.
फनफनाएब-क्रि., १. विशेष तामसक भाव सँ मुहक मुद्रा बनाएब। २. कोनो घाओ आदिक उपर फुटैत जकाँ पीड़ा होएब। मै.
फनफना कय जरब-क्रि., हल्लुक (सोन कागज आदि) वस्तुक तुरन्त जरि जाएब। मै.
फनफनी-सं., उत्तेजित होइक मुद्रा। मै.
फनाएब-क्रि., १. कोनो वाट परक वस्तु के टपाएब। २. कोनो वस्तु कें बन्हैक प्रक्रिया मे कुदाएब। मै.
फनिगा-सं., देखू-"फतिङ्गा"। मै.
फनू-अव्यय, फेर (गाम्य भाषा) पुनः। मै.
फनैत-विशे., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ साधै ले अनेक प्रयास करनिहार। मै.
फफक-सं., शून्य समयक अवधि। मै.
फफकब-क्रि., कनैक क्रम मे स्वरक स्वतः तीव्र कम्पन होएब। मै.
फफड़दलाली-सं., बल सँ दलाल बनैक चेष्टा। मै.
फफनब-क्रि., वेशी विस्तृत होएब। मै.
फफनाएब-क्रि., कोनो रोग वा घाओक अधिक बढ़ि जाएब। मै.
फफनाह-विशे., रोग आ घाओ बढ़बैवाला। मै.
फबकी-सं., अनेक काजक बीचक शून्य समय। लाभक अवसर। मै.
फबब-क्रि., १. अकस्मात् लाभक अवसर भेटब। २. विशेष वस्तु सँ सौन्दर्य निखरब। मै.
फबता-सं., फबैक अवसर। मै.
फर्द-सं., कागज वा पातक खण्ड, टुकड़ा। मै.
फर्दबाल-सं., दूनू अगिला टाँग उठाकय फनैत जकाँ घोड़ाक तेज चालि। गतिक वेग। मै.
फर-सं., माटिक भीतर फरैवाला कन्द, आरु तथा तेकुना। मै.
फरक-अव्यय, अन्तर, फर्क। उ. तद्भव
फरकझरा/फरकझार-विशे., घनत्वहीन। एक सँ दूरी पर रहैवाला दोसर। परस्पर विशेष दूर पर अन्तर राखि कय रहैवाला। मै.
फरकब-क्रि., अकस्मात् अंगक कोनो भागक चञ्चता सँ अनेर फड़फड़ा उठब। वस्तुक अचानक अनेर उछलि जाएब। स्फुरण होएब। मै.
फरकाँ-विशे., अलग। मै.
फरकाह-विशे., अनेर फरकैत रहैवाला। मै.
फरकोस-विशे., चलै फिरै मे चरफर, तेज। मै.
फरजी-विशे., अनकर नामें छिपाओल। फर्जी। उ. तद्भव
फरफराएब-क्रि., १. अपन स्थान भरि मे चञ्चल होएब। २. फरफर शब्द करब। मै.
फरफैसी-सं., जोर सँ फूसि आरोप लगाकय दोषी बनवैक चेष्टा। मै.
फरब-क्रि., १. छोट नेन्नाक मलमूत्र त्यागब। २. स्त्रीक गर्भधारण करब। मै.
फरबी-सं., फसिल कटला उत्तर खेत मे आगि लगौला पर बनल अन्नक लाबा। मै.
फरमा-सं., कोनो वस्तुक आकृति बनवैक साँच, खोली, ढाँचा। अं. तद्भव
फररोस-विशे., प्रौढ़, निर्भीक। मै.
फरसनाओ-विशे., फैलल पेटवाला नाओ। मै.
फरसा-सं., चन्द्राकार कुड़हरि जकाँ मारैवाला अस्त्र। परशु। मै.
फरहर-विशे., आधा सुखाएल। मै.
फरहरी-सं., दिक्कत, कठिनाइ, अभाव सँ जागल तंगी। प्रयोग-"हड़तालक द्वारें पैसा कौड़ीक बड़ फरहरी भ' गेल अछि। मै.

फरही-सं., मछही जाल बीनै मे फाँक गढ़ैक बाँसक फट्ठीक बनाओल पटरी । मै.

फराक-विशे., अलग, दूर, भिन्न । मै.

फराकित-विशे., अलग कयल । मै.

फराठी-सं., अत्यन्त पातर बाँसक फट्ठीक बनाओल ठेङा । मै.

फरार-विशे., भगौड़, नुकाकय पड़ाएल । उ. तद्भव

फराहिन-विशे., उद्धारक रूपें स्वच्छ अथवा फरिच्छ । मै.

फरिआएब-क्रि., परस्पर निर्णय करब । मै.

फरिच्छ-विशे., स्वच्छ, परिष्कृत । मै.

फरिछाएब-क्रि., १. मिलल जुलल कें अलग कय एक रूप कें एकठाँ करब । २. आपसी विरोध कें जय वा क्षय रूपें निपटाएब । ३. स्वच्छ करब । मै.

फरिछाओन-विशे., स्वच्छ । सं., स्वच्छता । मै.

फरिछाह-विशे., स्पष्ट निखरैवाला । मै.

फरिछौक-सं., कोनो विवादक निराकरण । मै.

फरिछौट-सं., कोनो विवादक न्यायपूर्वक निर्णय । मै.

फरी-सं., सम्पूर्ण (अभग्न, अखण्डित) पँघ माछ । मै.

फरीक-विशे., पट्टीदार, देयाद । उ. तद्भव

फरुआ-विशे., फरैवाला, फरैक योग्य । मै.

फरुहा-सं., आरु आ तेकुना आदि कन्दक लत्तीक फर । मै.

फरुहात-विशे., अनावश्यक विषय । मै.

फरेब-सं., षड्यन्त्र, गढ़िकय दोषी बनवैक प्रक्रिया । मै.

फल्लड़-विशे., देहक अनुसारें बेशी ढील, फैल । मै.

फल्ली-सं., ताड़ वा लकड़ीक मोट आ नाम चीरा कयल गोल । मै.

फल-सं., गाछक उपजा । मै.

फलक-सं., माला आदि आ शरक चोख अगिला भाग । सं. तत्सम

फलकब-क्रि., विकास करब, पसरब, विस्तृत होएब । मै.

फलकर-सं., फलक अर्थात् आम आदि फल केर उपभोगक राजस्व । (लगान) सं. तत्सम

फलका-सं., बगड़ा पक्षीक आकार प्रकारवाला छोट खाद्य पक्षी विशेष । मै.

फलका उड़ब-क्रि., अधिक जोत कोड़क द्वारें खेतक माटि कें गर्दा गर्दा बनि जाएब । मै.

फलकाएब-क्रि., विकसित करब, फैल करब, पसारब । मै.

फलकी-सं., बच्चाक टोपीक चारू कात लागल झालरि । मै.

फलगर-विशे., अधिक फलवाला । मै.

फलगू-सं., कनीटा नेन्नाक टोपी मे पाछू दिश लागल झूल । मै.

फलतः-अव्यय, परिणाम मे । सं. तत्सम

फलना-विशे., अमुक । स्त्री० फलनी । मै.

फलना चिलना-विशे., अमुक अमुक । मै.

फल फलहरी-सं., फलक संग फलाहारक योग्य वस्तु । दूध कन्दमूल आदि । मै.

फलहार-सं., फलाहार । सं. तद्भव

फलहारी-विशे., फलाहारी, फल मात्र खयनिहार । मै.

फलाँ-सार्वनामिक विशेषण अमुक व्यक्ति । मै.

फलानेन-सं., कपड़ाक विशेष प्रभेद । मै.

फलित-विशे., १. भल रूपें प्रकट । २. फल कहैवाला ज्यौतिष शास्त्र । सं. तत्सम

फलिहारब-क्रि., नीक जकाँ फसारि पसारि क' कपड़ा खींचब । मै.

फस द' उठब-क्रि., बिना प्रयासें निःशब्द भग्न होएब । मसुआएल रहब । मै.

फस द' रहब-क्रि., (लाक्षणिक) आशा पर निर्भर रहि हठात् निराश भ' जाएब । मै.

फसफस उठब-क्रि., मसुआएल रहैक द्वारें दाँतक बिना जोर लगौने दबैवाला होएब । मै.

फँसब-क्रि., बन्धन मे पड़ि जाएब । मै.

फँसराह-विशे., ढील बन्धनवाला । हाथ फँसैवाला । मै.

फँसरी-सं., गर्दनि मे प्राण लेबाक हेतु देल बन्धन । फँसि जाइवाला डोरी । मै.

फँसाएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) मिथ्या दोष लगाकय दोषी बनाएब । २. जाल आ पानी सँ कोनो जीव कें बन्धन मे लाएब । मै.

फँसाद-सं., विरोधपूर्वक उत्पात । उ. तत्सम

फँसाद जगाएब-क्रि., उत्पात बढ़ाएब । मै.

फँसादी-विशे., फँसाद करैवाला। मै.

फसिल-सं., उपजा। अन्नक उत्पादन। मै.

फँसिहारा-विशे., बधिक, बध करैवाला, फाँसी दैवाला। मै.

फहरब-क्रि., उपर मे वसात सँ चञ्चल होएब। मै.

फहराएब-क्रि., उपर उठाकय उड़ाएब। उड़ब। मै.

फा

फा-विशे., फाओ, बिना परिश्रम आ दामवाला। मै.

फांइ फांइ करब-क्रि., अभावक कारणें अत्यन्त व्यग्र रहब। मै.

फाओ-विशे., देखू—"फा"। मै.

फाँक-सं., खण्ड। मै.

फाँक करब-क्रि., चीरिकय खण्डित करब। मै.

फाँकनि-सं., फक्का करैक प्रवृत्ति। मै.

फाँकब-क्रि., हाथ सँ मुह मे फेंकि क' सुखाएल वस्तु खाएब। मै.

फाँका-सं., शून्यता, उपास, फाँकि कय भोजन। मै.

फाँकी-सं., १. बीचक शून्य काल। प्रयोग-"एही फाँकी (अवकाश) मे बैद्यनाथ धाम सँ भ' अयलौं।" २. शास्त्रीय बातक विस्तृत शास्त्रार्थ। मै.

फागु-सं., फागुन मासक गीत। मै.

फागुन-सं., मास विशेष। मै.

फाजुल-विशे., अतिरिक्त, अधिक, फाजिल। उ. तत्सम

फाट-सं., फटैक रूप रेखा चिह्न। मै.

फाँट-सं., १. बखरा, हिस्सा। २. शून्य मे (निर्जन मे) भयक आवेग सँ मानसिक प्रभाव। मै.

फाटचीट-विशे., भग्न भेल, फाटल, खण्डित। मै.

फाटनि-सं., फटैक लगातार क्रम। मै.

फाटब-क्रि., विदीर्ण होएब। खण्डित होएब। टूटब। मै.

फाँटब-क्रि., बिभाजित करब। मै.

फाटाफाटी-सं., मानसिक रूपें बेलागि रहैक प्रकृति। मै.

फाँटि-सं., स्थितिक विकटता। प्रयोग-"अखन हड़तालक द्वारें फाँटि पर चढ़ि गेलौं।" संकटक स्थिति। मै.

फाँड़-सं., समेटिकय कसल पहिरल धोती। मै.

फाँड़ कसब-क्रि., (लाक्षणिक) लड़ैले उद्यत होएब। मै.

फाँड़ा-सं., आम आदि कें चीराकय बनाओल अँचार। मै.

फाड़न-सं., फाड़ैक, चीरैक, फाँक करैक प्रक्रिया। मै.

फाड़ब-क्रि., खण्ड पखण्ड कय चीरब, फाँक करब। मै.

फाँड़न-सं., फल आदि वस्तु कें चीरिकय भीतर सँ विकृत वस्तु बहार करैक प्रक्रिया। मै.

फाँड़ब-क्रि., फाँक करब, दू चीरा करब। मै.

फाँड़ी-सं., बीच सँ फाँड़ल खण्ड। मै.

फाँणी-सं., आरक्षी (पुलिस) क खेमा शिविर। मै.

फान-सं., १. चूड़ी, कँगना आदि गोल परिधिवाला गहना आदिक बीचक शून्य स्थान। २. उछलिकय टपैक अभ्यास। मै.

फानन-सं., कूदि जाइक प्रवृत्ति। मै.

फानब-क्रि., कोनो विशेष स्थान कें कूदिकय उपरें उपर टपि जाएब। मै.

फाननिहार-विशे., फानि जाइक अभ्यासवाला। मै.

फानी-सं., पशु पक्षी कें बझबै लेल बनाओल गीरह पड़ि जाइवाला डोरी। मै.

फानी लगाएब-क्रि., डोरीक बन्धन मे पशु पक्षी कें बझवैक योजना करब। मै.

फाँफ-विशे., तेज आ खोकार माल मेसी। मै.

फाँफर-सं., पहिरल धोतीक भीतर बनाओल वस्तु रखैक स्थान। झोरी वा पोटरीक आकार। मै.

फार-सं., खेत जोतै मे हर मे लागल नाम पातर लोहक अस्त्र। खेत कोड़ैवाला हरक अंग। मै.

फारक-सं., फारि कय देम'वाला कागजी प्रमाण, रसीद। मै.

फारकती-सं., लेनदेन आदि राफ साफ करैक क्रम। मै.

फांरा-सं., मोट अन्न मे लागि जाइवाला उड़ै योग्य कीड़ा। मै.

फारि-सं., फारल अंग, मुहक चीराक मान। मै.

फाल-सं., भाला बर्छा आदि अस्त्रक अगिला भाग। सं. तत्सम

फाँस-सं., बन्धन, विवशता। मै.

फाँसनि-सं., फँसैक स्थिति, बझैक लच्छन। मै.
फाँसब-क्रि., बझाएब, बन्धन देब, मोहित करब। मै.
फाँसी-सं., गर्दनि मे फँसरी लगाकय मृत्युक उपाय। मै.
फाँसी चढ़ब-क्रि., कोनो रूपें मृत्युक भागी बनब। मै.
फाहा-सं., कोमलतावाला वस्तु सँ आगू दिशक छोर बनल सूक्ष्म डन्टीक साधन। प्रयोग-"कान कें स्वच्छ करें लेल पातर आ सक्कत काठी मे आगू तूर लपेटि कय फाहा बना लिअ'।" मै.
फाँहि द' रहब-क्रि., (लाक्षणिक) अवसर पर वचनक वा योजनानुसार काज नहि भेने निरुपाय भ' जाएब। मै.

फि

फिक्का-विशे., कुस्वादु, विकृत स्वादवाला। मै.
फिकिर-सं., चिन्ता। उ. तद्भव
फिचकारी-सं., दवाओ पड़ला सँ प्रवाह रूपें वेग सँ छिद्र देने पानि फेंकैवाला यन्त्र। मै.
फिटकिरी-सं., रासायनिक द्रव्य विशेष। मै.
फिड्डी-विशे., खेल विशेषक हारल। मै.
फित्ता-सं., १. नपैक लेल बनाओल कपड़ाक नमहर कम चाकर पट्टी। २. केशक श्रृङ्गारक पट्टी। मै.
फिन-अव्यय, (ग्राम्य) फेर, पुनः। मै.
फिनाइन-सं., कीटनाशक तेल विशेष। मै.
फिफियाएब-क्रि., अभाव (खग्गी) क द्वारें व्यग्रता सँ हताश भेल बौआएब। मै.
फिरका-सं., सोच, चिन्ता। मै.
फिरंट-विशे., घुमक्कड़, अनेर घूमैत रहैवाला। मै.
फिरता-विशे., घुरा क' देम' योग्य अधिक वस्तु। वस्तुक दामक अतिरिक्ति घुरबैक पाइ। मै.
फिरताभार-सं., विशेष अवसर पर मिथिलाक रीतिक अनुसार कुटुमैती मे गेल भार सब मे एकटा पठौनिहार कें घुराकय पठाओल भार। मै.
फिरती-सं., घूमैक, वापस होइक समय। मै.
फिरनाइ-सं., लक्ष्यहीन रूपें घूमैक क्रम। मै.
फिरब-क्रि., घूमब, वापस होएब। मै.
फिराएब-क्रि., १. घुमा देब। २. पेट शुद्ध कराएब। मै.
फिराक-सं., उद्योग आ उपाय। मै.
फिराकी-विशे., फिराक मे रहैवाला। मै.
फिरांत-विशे., देखू—"फिरंट"। मै.
फिरा देब-क्रि., वापस क' देब। मै.
फिरीसान होएब-क्रि., अत्यन्त व्याकुलता सँ परिश्रान्त होएब। मै.
फिरीसानी-सं., चिन्ता आ व्यग्रता सँ व्याकुलता। मै.
फिरुआ-विशे., फिराओलवाला, घुमाओल गेल। मै.
फिरौती-सं., फिरबैक अर्थात् वापस क' दैक निश्चित राशिक करार। मै.
फिल्ली-सं., पैर सँ उपर घुट्ठी सँ नीचाँ जोड़वाला अंग। मै.
फिलमान-विशे., महौथवार, हाथीक चरवाह। मै.
फिस होएब-क्रि., काजक हेतु उत्साहितो भ' क' अवसर पर हुँटि जाएब। मै.

फी

फी-अव्यय, प्रत्येक। प्रयोग—"घरक फी व्यक्ति कें नोत देल गेल अछि।" मै.
फी'!!-अव्यय, उपहासक हँसी। मै.
फीट-सं., मापदण्ड विशेष, बारह आङुरक मान। मै.
फीरब-क्रि., त्याग करब, लाक्षणिक शब्द संग एहि क्रियाक। प्रयोग—"दिशा, नदी फीरब अर्थात् मलत्याग करब।" मै.
फीसाँ-विशे., कोनो क्रीड़ा विशेष मे द्वितीय स्थान पाव'वाला। मै.

फु

फुकना-सं., फूकि क' फुलबैवाला रबरक खेलौना।
फुकबाएब-क्रि., अनका द्वारा फुकैक क्रिया करब। मै.
फुकाएब-क्रि., फूँक करबैक आयोजन करब। मै.
फुकान फूकब-क्रि., अधिक जोर सँ फूकब। मै.
फुकैया-सं., आबा तथा ईंटाक भट्ठा मे आगि लगबैक प्रक्रिया। मै.
फुच्च-विशे., गौरव आ भीतरी क्रोध सँ मुह सँ गम्भीरता आ विचार सँ हीन बनल रहनिहार। मै.
फुच्च होएब-क्रि., भीतरें भीतर तमसाएल रहब। मै.

फुच्ची-सं., अत्यन्त छोट वासन। मै.
फुचफुच करब-क्रि., अपन अधिक वर्चस्व देखाएब। मै.
फुचफुची-सं., अपन शक्तिशाली होइक प्रदर्शन। मै.
फुचुक्का-सं., बाँसक पोर सँ बनाओल फिचकारी। मै.
फुट्टा-सं., १. प्रयोजन (दाम) सँ अलग फिरता रेजकी। २. फुटैक प्रकृति। मै.
फुट्टी उसिना-सं., अदनार धानक उसिनल धानक चाउर। मै.
फुटकब-क्रि., अलग भ' जाएब। मै.
फुटकर-विशे., अलग अथवा भिन्न प्रकारवाला। मै.
फुटकल-विशे., अलग मे रहैवाला। मै.
फुटकलहा-विशे., फूट मे रहैवाला। मै.
फुटका-विशे., फूट रहैक प्रकृतिवाला। मै.
फुटकाएब-क्रि., दू कें अलग अलग करब। मै.
फुटकाह-विशे., फूटे रहै मे प्रसन्न रहैवाला। मै.
फुटकुटिया-विशे., अलग अलग भँजाओल पाइ। मै.
फुटब-क्रि., भग्न होएब। मै.
फुटले आँखि नँ सोहाएब-लोकोक्तिक क्रिया, (लाक्षणिक) अत्यन्त अप्रिय लागब। मै.
फुटहरबा-विशे., सब सँ सदा अलग रहैवाला। मै.
फुटहा-सं., दलिहन अन्न कें भूजिकय बनल खाद्य। मै.
फुटाएब-क्रि., अलग अलग करब। मै.
फुटाढ़-विशे., फूट रहैक प्रकृतिवाला। मै.
फुटार-विशे., फूट करबैक प्रकृतिवाला। मै.
फुटानि-सं., विरोधक स्थिति। मै.
फुटानी करब-क्रि., एकक प्रति दोसर कें उकसाएब, प्रेरित करब। मै.
फुटाह-विशे., फूटैक योग्य, फूट पसिन्न करैवाला। मै.
फुटिया-विशे., अलग रेजकी। मै.
फुटौअलि-सं., फुटबैक चेष्टा। मै.
फुटौआ-विशे., फुटबैवाला। मै.
फुद्दी-सं., छोट सँ छोट पक्षी विशेष। मै.
फुदकब-क्रि., आनन्द सँ उछलब आ कूदब। मै.
फुदका-विशे., विनोदक क्रम मे उछलनिहार आ आनन्दित रहनिहार। मै.
फुदड़ी-विशे., अत्यन्त छोट आकारवाला फसिलक सीस। मै.
फुदना-सं., माला आदि वस्तु मे देल गुच्छा। मै.
फुदफुद करब-क्रि., आनन्द सँ अधिक चलायमान रहब। मै.
फुनगी-सं., गाछ वृक्ष मे सब सँ उपरक मूड़ी। मै.
फुनगुनी छूटब-क्रि., क्रोध, विस्मय आ आदंक सँ देह मे चिनकी जकाँ फुटैक क्रम होएब। मै.
फुनफुन करब-क्रि., पसाही लागि क' तुरन्त जरि जाएब। मै.
फुनसी-सं., मेंही मेंही फोंसरी तथा अत्यन्त मेंही वर्षाक बुन्नी। मै.
फुफकार-सं., साँप आदि जीवक क्रोध व्यंजक श्वासक त्याग। मै.
फुफकार काटब-क्रि., रहि रहि क' साँप आदि जीवक क्रोधित श्वास छोड़ब। मै.
फुफड़ब-क्रि., अधिक दिन भेला सँ सरस वस्तुक उपर विकार उपजब। मै.
फुफड़ी-सं., सरस वस्तु मे रौद वसातक अभाव मे विकार रूपें लागल दहिया अथवा फुफुन्दी। मै.
फुफुआएब-क्रि., फू फू क' क' क्रोध करब। मै.
फुफुस-सं., छोट सन उज्जर माथी जकाँ उज्जर कोढ़क अंग। मै.
फुतियाह-विशे., फुर्ती सँ होम'वाला। फुर्ती करैवाला। मै.
फुर्ती-सं., जल्दीबाजी, अत्यन्त शीघ्रता। मै.
फुर्तीबाज-विशे., शीघ्रता सँ काज कयनिहार। मै.
फुर्-अव्यय, जल्दी आ शब्दसमेत। मै.
फुर्र द'-अव्यय, शीघ्रता सँ शब्द करैत। मै.
फुरफुर करब-क्रि., १. पाँखि फरफराएब। २. उड़ैत जकाँ चञ्चल होएब। मै.
फुरफुरी देब-क्रि., छोट नेन्ना कें मल उतारैं लेल मल मार्ग मे औषध सँ प्रक्रिया करब। मै.
फुरफें करब-क्रि., अव्यस्थित रुपें धनक उठानि करब। मै.
फुरब-क्रि., कोनो विशेष बात बुद्धि वा कल्पना मे आएब। मै.
फुरसति-सं., अवकाश, छुट्टी, उन्मुक्तता, फुर्सति। उ. तद्भव

फुराएब-क्रि., बुद्धि मे विषय कें उपजाएब । कल्पना करब । मै.
फुरौनिहार-विशे., कल्पना कयनिहार । मै.
फुल्ला-सं., आँखिक रोग, मांस वृद्धि । मै.
फुल्ली-विशे., अत्यन्त कोमल आ सद्यः उत्पन्न फल । मै.
फुलका-विशे., फूल जकाँ हल्लुक । मै.
फुलकाएब-क्रि., फुलाएब, फलकाएब, विस्तार करब । मै.
फुलकाह-विशे., फूल जकाँ हल्लुक । मै.
फुलकी-सं., १. खड़ही राड़ी खढ़ आ कुशियार आदिक फूल । २. फुलाकय बनाओल छोट सोहारी । मै.
फुलगर-विशे., फूल सँ भरल । मै.
फुलचठेल-सं., बिना फड़वाला चठैलक गाछ । मै.
फुलझरी-सं., बारुद द' क' बनाओल आगि लगाकय छोड़ैवाला विस्फोटक वस्तु । मै.
फुलझार-सं., पन्नी सँ बनाओल फूल आ फूलक गाछ । विशे., फूल झरलवाला । मै.
फुलडाली-सं., चाकर पसरल बाँसक बीनल फूल तोड़ैक वासन । मै.
फुलतोड़ा-सं., १. पैंघ आ डन्टी लागल गहींर फूल तोड़ैक बाँसक वासन । विशे., फूल तोड़ैक काज मे नियुक्त व्यक्ति । मै.
फुलतोड़ी-सं., फुल तोड़ाक छोट रूप । मै.
फुलफुलाह-विशे., सदिखन अंग मे फूलल रहैवाला । फूललसन लगैवाला । मै.
फुलबत्ती-सं., दूर सँ फूल जकाँ दीप जरबैक बनल बाती । मै.
फुलबसाती-विशे., बसात मे फूल जकाँ उड़ैवाला वस्तु । मै.
फुलवाड़ी-सं., फूलक हेतु बनाओल वन । मै.
फुलबाँस-सं., वनस्पति विशेष । मै.
फुललाह-विशे. फूलल जकाँ लगैवाला । मै.
फुलसज्जी-सं., फूल सँ सजाओल प्रथम मिलनक रातिक वर बधूक बिछाओन । मै.
फुलही-विशे., १. फूल (विशिष्ट काँस) वाला वर्तन । २. फूलसन हल्लुक । मै.
फुलाएब-क्रि., विकसित होएब । मै.
फुलेल-सं., फूलक सुगन्धि सँ बनोओल तेल । मै.
फुलौकी-सं., उपर सँ छत्ता लागल विवाहक अवसर पर गौरी पूजाक सामग्रीक वासन । मै.
फुलौड़ी-सं., छोट छोट आ फूलल फूलल बड़ी । मै.
फुसकी करब-क्रि., कान लग सटि क' अत्यन्त थोड़ शब्दें अनका नहि सुनै योग्य गप करब । मै.
फुसकाएब-क्रि., धीरें धीरें टारब । चलाएब । मै.
फुस द'-अव्यय, अलक्षित भ' क' । मै.
फुसफुस-अव्यय, अनका नहि सुनै योग्य शब्दरहित रूपें । मै.
फुसफुसियाएब-क्रि., फूसि कहि क' ठकि देब । मै.
फुसफुसी-सं., अत्यन्त कम जोर सँ बिना शब्दें वायु त्याग करब । मै.
फुसराहटि-सं., परस्पर एकान्तीक वार्तालाप । मै.
फुसलाएब-क्रि., फूसि बाजि क' अपन मत पर लाएब । मै.
फुसियाएब-क्रि., परतारब । मै.
फुसियाह-विशे., फूसि बजनिहार । मै.
फुहफुह करब-क्रि., १. गौरवें उन्मत्त जकाँ रहब । २. अधिक भोजन कयला पर असविस करब । मै.
फुहराम-विशे., अधिक शीघ्र आ तेजी सँ काज कयनिहार । मै.
फुहार (रा)-सं., मेंही बिन्दु सँ फिचकारी जकाँ पानीक छींटा । मै.
फुहास-सं., फुहारा जकाँ वर्षाक वेग । मै.
फुहियाएब-क्रि., थोड़ थोड़ कनेक काल ले बुन्नी पड़ब । मै.
फुहियाह-विशे., फूही पड़ैवाला समय । मै.

फू

फूक-सं., फूकैक प्रक्रिया । तन्त्रमन्त्रें झारैक विधि । मै.
फूकन-सं., फूकैक विधि वा मुहक बसातक वेग । मै.
फूकब-क्रि., मुह कें विशेष रूपें चेष्टा दय के जोर सँ वायु छोड़ब । मै.
फूक मारब-क्रि., जोर सँ मुहक बसात छोड़ब । मै.

फू करब-क्रि., फूकिकय परतारैक क्रमें चोट बिसराएब। मै.
फूका फूकी-सं., अधिक आ बारम्बार फूकि फूकि कय आगि प्रज्वलित करैक चेष्टा। मै.
फूकिया-सं., लगातार फूकैत रहैक क्रम। मै.
फूकि देब-क्रि., (लाक्षणिक) व्यर्थ खर्च कय धन कें उड़ा देब। नष्ट क' देब। मै.
फूजब-क्रि., खूजब, स्वतः बन्धन ढील होएब। मै.
फूजा-सं., धान रोपैक समय बीआक आँटी खोलि कय रोपैक पाहि पर देल खूजल बीआक मुट्ठी। मै.
फूट-सं., अलगाओ। विशे., पृथक्। मै.
फूट करब-क्रि., अलग करब। फुटाएब। मै.
फूट देब-क्रि., (लाक्षणिक) विरोध उत्पन्न होइक चेष्टा करब। मै.
फूटब-क्रि., १. भग्न होएब। २. अलग रहब। मै.
फूँटि-सं., लत्ती मे फड़ैवाला स्वादिष्ट पैघ फल विशेष। मै.
फूटि-सं., १. दलिपूड़ी तथा पिरुकिया आदि पकवान मे भीतर मे देल पदार्थ। विरोध। मै.
फूटे फूटे-अव्यय, अलग अलग। मै.
फूत्कार-सं., मुहक वसातक वेग। मै.
फू फू करब-क्रि., १. अधिक भोजन सँ अकसक करब। २. अधिक उत्तेजित रहब। मै.
फूल-सं., पुष्प। कुसुम। मै.
फूलब-क्रि., विस्तृत भ' क' विकास करब। मै.
फूला-सं., दाह संस्कारक उपरान्त जरल हड्डीक खण्ड। मै.
फूस-सं., खढ़पात एवं घास। मै.
फूसि-सं., मिथ्या, झूठ। मै.
फूसि फटक-सं., फूसि कल्पना सँ गढ़ल बात। गढ़ल फूसि बात। मै.
फूह-सं., लगले सूखि जाइवाला वर्षा तथा सिञ्चन। मै.
फूह खेलाएब-क्रि., उन्मुक्त भ' क' रहब, स्वच्छ भेल रहब। मै.
फूहड़-विशे., अव्यवस्थित विचारवाला। मै.
फूही-सं., सूखि जाइवाला मेघक बुन्नी। मै.

फे

फेकनिहार-विशे., फेंकैवाला। मै.
फेंक फेका-सं., एम्हर सँ ओम्हर अधिक नीको वस्तु फेंकैक क्रम। मै.
फेकब-क्रि., जोर सँ दूर करब। अवहेलना सँ उठा कय दूर हटाएब। मै.
फेंकबाएब-क्रि., अनका द्वारा दूर कराएब। मै.
फेंकलाहा-विशे., उठाकय दूर क' फेकलवाला। मै.
फेकाएब-क्रि., फेकल भ' जाएब। मै.
फेकान-सं., दूर कय प्रक्षेपण। मै.
फेकाफेकी-सं., फेंकि फेंकि कय खेल। मै.
फेकिया-सं., कूड़ कचरा आदि निरन्तर फेंकैक कार्य। मै.
फेंच-सं., १. साँपक फन। २. बेशी नमहर आ धूआँ सन मुहक आकृति। मै.
फेंच काढ़ब-क्रि., गहुमनक फणा पसारब। मै.
फेंच नमरब-क्रि., (लाक्षणिक) लज्जा, क्रोध आ पश्चात्ताप सँ मूड़ी झूकब। मै.
फेंचराह-विशे., अधिक नमरल ठोर आ नाकवाला। मै.
फेंट-सं., मिझरौट, मिश्रण, मिलाओट। मै.
फेंट कसब-क्रि., १. पहिरल निचला धोती कें समेटि कय लड़ैक हेतु कच्छी जकाँ कसि कय बान्हब। २. मोरेठा कसिकय बान्हब। मै.
फेंटन-सं. अलग कयल फेंटल वस्तु। मै.
फेंटब-क्रि., मिलाएब, मिझराएब। मै.
फेंटबाएब-क्रि., दोसरा सँ मिझराएब। मै.
फेंटलाहा-विशे., मिझहरवाला। मै.
फेंटा-विशे., आन प्रकारक वस्तु सँ मिझहर। मै.
फेटा-सं., मोरेठा बन्हैवाला कपड़ा। मै.
फेंटाएब-क्रि., मिश्रित भ' जाएब। मै.
फेंटुआ-विशे., फेंटल आनो वस्तु सब सँ मिलल। मै.
फेंड़-सं., डारि सँ बहराएल गाछक डारि। मै.
फेंड़ा छूटब-क्रि., गाछ मे शाखा सँ प्रशाखा बहराएब। मै.
फेदरति-सं., व्यग्रता भरल चिन्ता फिदरत। उ. तद्भव
फेदा-सं., लाभ, फायदा। उ. तद्भव
फेन-सं., उपर मे फलकल जल वा दूधक विकार। मै.

फेंनन-सं., फेंनैक मथैक विशेष प्रक्रिया । मै.
फेंनब-क्रि., फेन जकाँ बनवैक हेतु अधिक मथब । मै.
फेनाएब-क्रि., फेन सँ भरल होएब । मै.
फेनाएल-विशे., फेन भरल । मै.
फेनाह-विशे., फेन सँ छारल । मै.
फेनिल-विशे., फेन मिलल । सं. तत्सम
फेनी-सं., उपर अलगल फेनवाला पानि । मै.
फेनू-अव्यय, फेर, पुनः । मै.
फेफस-सं., तुरन्त काटल अंग मे शोणितहीन फूलल जीवित मांस । मै.
फेर-अव्यय, पुनः । मै.
फेर-सं., १. विपरीत भाग्य । आपत्ति एवं समस्या । २. घुमान । मै.
फेरन-सं., १. बदलिकय छोड़ल वस्त्र आदि । २. घुमबैक, चरफर बनवैक प्रक्रिया । मै.
फेर फेर-अव्यय, बारम्बार । मै.
फेर फेरा-सं., बारम्बार वस्तु कें ल' जाइक आ घुमा दैक क्रम । मै.
फेरब-क्रि., १. ल' जा क' घुमा देब । २. दच्छ, चतुर आ अपन चालि कें व्यवस्थित करैक अभ्यास बनाएब । ३. उनटाएब पुनटाएब । मै.
फेरबाएब-क्रि., अनका हाथें घुमा देब । मै.
फेरल-विशे., अपन काज मे निपुण कयल । अनुभव भरल । मै.
फेर लागब-क्रि., आपत्तिवाला समस्या ठाढ़ होएब । मै.
फेरलाहा-विशे., १. घुमा देलवाला । २. छोड़लहा वस्त्र । मै.
फेरा-सं., १. बारम्बार एक धुरी पर घूमैक क्रम । २. घुमान । ३. लौटादैक चेष्टा । ४. आपत्तिजनक स्थिति । ५. दहिन बरिया बड़द । (हर मे) मै.
फेराएब-क्रि., घुमा क' द' आएब वा पठा देब । मै.
फेरा देब-क्रि., प्रदक्षिण (परिक्रमा) करब । मै.
फेरान-सं., फेरि दैक तथा घुमादैक क्रम । मै.
फेराफेरी-सं., अदला बदला करैत बोझ (भार) उठाकय ल' जाइक विधि । मै.
फेरि-अव्यय, पुनि । सं., संकटक स्थिति । मै.
फेरी-सं., १. ओझरौटक आ संकटमय परिस्थिति । २. घूमि घूमिकय बेचैक व्यवसाय । मै.
फेरीवाला-विशे., घूमि घूमिकय बेचैवाला । मै.
फेरी लागब-क्रि., देखू—"फेर लागब" । मै.
फेरुआ-विशे., फिराओल वा फिरबैक योग्य वस्तु । फेरैक योग्य । मै.
फेरैया-विशे., फेरैवाला, प्रौढ़ बनबैवाला । मै.
फेरो-अव्यय, पुनः । मै.
फेरौआ-विशे., फेरिकय प्रस्तुत कयल । घुमा देल । मै.
फेल-विशे., असफल । अं. तत्सम
फेलहा-विशे., असफल भेल । मै.
फेलुआ-विशे., फेल करैवाला । फेल होम'वाला । मै.
फेहम-विशे., सूझि बूझिवाला, प्रौढ़ । मै.

फै

फैर-सं., बैलगाड़ीक मोट आ नमहर भार थम्है-वाला काठक अंग । मै.
फैल-विशे., विस्तृत, पसरल । मै.
फैलगर-विशे., अधिक विस्तृत । मै.
फैलहारी-सं., १. अधिक आ सवतरि प्राप्ति । २. विस्तार । मै.
फैलाह-विशे., विस्तृत वा पसरल सन । मै.

फो

फोंक-विशे., भीतर मे खाली, अन्तःशून्य । मै.
फोंकगर-विशे., उपर सँ फूलल फूलल, भीतर शून्य । मै.
फोंकचा-सं., माछक भीतरक एक अंग । विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त कोमल भ' क' सिद्ध । मै.
फोकट-अव्यय, बिना उद्देश्यक आ लाभक । मै.
फोंकना-विशे., सारहीन, धोधरिवाला । मै.
फोकराइन-विशे., काँच दूधक गन्धवाला । मै.
फोंकल्य-विशे., भीतर मे खालीवाला । मै.
फोकस-सं., एक सोझें ज्योति पुंज । अं. तत्सम
फोंकहा-विशे., अन्तःशून्य (खाली) रहैवाला । मै.
फोंका-सं., १. रोग सँ वा आगिक ताप सँ उठल देहक चमड़ी पर गोल रंगक घाओ । २. द्रवणशील वस्तुक बुनबुना । ३. मखानक फूलल फूलल रूप । मै.

फोकाएब-क्रि., घाओक फोंका जकाँ उपर उठब । मखान आदि वस्तुक अधिक फूलब । मै.
फोंकी-सं., वसात दैक यन्त्र । पंप । मै.
फोचकारब-क्रि., उचित सँ वेशी लेपब । मै.
फोटा-सं., तासक खेलक पत्तीक अंक । मै.
फोटार-सं., टीप, टिप्पा । मै.
फोटो-सं., चित्र, छापी । अं. तत्सम
फोड़-सं., भंग करैक चेष्टा । मै.
फोड़ना-सं., भंग करैक साधन । मै.
फोड़ब-क्रि., भंग करब । मै.
फोड़बैया-विशे., भंग करैवाला । मै.
फोड़ा-सं., देहक छोट छोट सक्कत उठल घाओ । मै.
फोड़ाएब-क्रि., भंग कराएब । मै.
फोड़आ-विशे., फोड़िकय बनल । मै.
फोता-सं., बढ़ल अण्डकोष । मै.
फोन-सं., दूरभाष । अं. तत्सम
फोंफ-सं., निन्न मे नाकक ध्वनि । मै.
फोंफ काट-क्रि., निन्न मे जोर सँ नाक द्वारा विकट शब्द करब । मै.
फोंफियाएब-क्रि., साँप आदि जीवक भयंकर शब्द करब । मै.
फोंफी-सं., भीतर ऐ पार सँ ओहि पार धरि शून्य-वाला बाँस आदिक डन्टी । मै.
फों फों करब-क्रि., क्रोध सँ तथा अधिक भोजन कय अकसक भेला सँ साँपक क्रोधित भ' क' फोंफ कटैसन श्वास फेंकब । मै.
फोम-सं., आधुनिक रासायनिक द्रव्य । अं. तत्सम
फोरन-सं., खाद्य पदार्थ बनबैक समय तेल जरबैक हेतु मसाला जीर मेथी आदि । मै.
फोल-सं., कोनो गोल वस्तुक भीतरक शून्य स्थान । मै.
फोलब-क्रि., देखू—"खोलब" । मै.
फोंसरी-सं., छोट छोट अर्थात् मेंही मेंही चमड़ा पर उगल मांस विन्दु । मै.
फोंसरी फोड़ि भोकन्नर करब-क्रि., (लाक्षणिक) साधारण बात कें चेथारि कय भयंकर बनाएब । मै.

फौ

फौज-सं., हुँसेरी, झुण्ड, सेना । उ. तत्सम
फौती-सं., मरकी, महामारी । मै.
फौद-विशे., बढ़ैवाला । मै.
फौदाएब-क्रि., बढ़ि क' नीरोग रहैत उपर मुहें उठब । वर्धिष्णु होएब । मै.
फौदार-विशे., समाजक बीच प्रभावशाली । मै.
फौदारी-सं., प्रशासनिक न्याय विभाग । फौजदारी । प्रशासनिक निर्णय । अं. तद्भव/मै.
फौरसा-सं., परशु, अस्त्र विशेष । मै.

ब

बक् !-अव्यय, कोनो बात पर घृणात्म निषेध । मै.
बक्कर-सं., विदेशी बड़की बकरी । मै.
बक्कस-सं., बकसा, बौक्स सन्धूक । अं. तद्भव
बक्खो-सं., घरें घरें जाकए दम्पती गाबि कय भीख मङवाला जाति । स्त्री० बखोनी । मै.
बक-सं., श्वेत पक्षी विशेष । मै.
बकछुछरू खेलाएब-क्रि. चाकर झिटका कें पानि पर छछला कय खेलाएब । मै.
बकछुहुल लागब-क्रि., अत्यन्त अरुकर बात होएब । मै.
बकझक-सं., विरोधक वाद विवाद । मै.
बकझोंझो-अव्यय, छोट बच्चा कें पीठ पर लादिकय एहि शब्दें मनोरंजन । मै.
बकटेंट/बकटेटहा/बकटेंटही-विशे., शरीरें टेढ़ मेढ़ तथा प्रचण्ड मूर्ख । मै.
बकटेंटाह-विशे., शरीर बुद्धिधरि संतुलनहीन । मै.
बकठाईं-सं., बाधा दय कें गतिरोध, बाधा । मै.
बकतम्-सं., कथन । प्रयोग—"लिखतं आगू बकतं नै होए ।" मै.
बकतब-क्रि., एकदिशाहे बजैत जाएब । मै.
बकतब-विशे., वक्तव्य, बजैक योग्य । सं. तद्भव
बकताएब-क्रि., बुद्धिगत बात बजाएब । मै.
बकतूति-सं., व्यर्थ विवाद । मै.
बकतौआ-विशे., बजैक योग्य । मै.
बकनाएब-क्रि., रुकि जाएब बन्न भ' जाएब । मै.
बकनेढ़-विशे., बिना बूझैवाला बिना बजैक लूड़ि-वाला बूड़ि । मै.
बकब-क्रि., अन्ट सन्ट बाजब, गंजन करब । मै.
बकबक करब-क्रि., अनेरो प्रसंगहीन बात बजैत रहब । मै.
बकबकाएब-क्रि., सक्कत सँ पकड़ब । मै.
बकबकाकय धरब-क्रि., कसिकय पकड़ब । मै.

बकबाइँ-अव्यय, तूर धुनैकाल धुनकीक ध्वनि । मै.
बक बुढ़यने कुरेर-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) बूढ़ भेला पर ककरो नहि सोहाइवाला । मै.
बकर बकर-अव्यय, अपलक दर्शन । मै.
बकरा-सं., पुरुष बकरी जाति । मै.
बंकरा-विशे., अत्यन्त झगड़ाहु, झगड़ा करै मे हरदम सब सँ आगू रहैवाला । मै.
बकरिहारा-विशे., बकरीक व्यवसाय करैवाला । मै.
बकरी-सं., बकरी नामक स्त्री पशु । मै.
बकलेल-विशे., बिना ऊहि आ सूझिवाला मूर्ख । मै.
बकलेलक टाड़ी-विशे., (लाक्षणिक) कोनो बात मस्तिष्क मे नै पैसैवाला मूर्ख । मै.
बकलेलहा-विशे., (अनादर मे) ज्ञान ध्यानहीन मूर्ख । मै.
बकलेलाह-विशे., अत्यन्त वेबूझ । मै.
बकलोल-विशे., बजैक आ बुझैक बेर मे कहलौ पर बक जकाँ टक्क लगाकय देखनिहार । मै.
बकवास-सं., अनेर बातक वाद विवाद । मै.
बकसब-क्रि., अभय दान देब । मै.
बकसाएब-क्रि., अभयदान दियाएब । मै.
बँकहिया रहब-विशे., शेष बाँचल होएब । मै.
बकाइन-सं., बनैया औषध विशेष । मै.
बकार-सं., मनुष्यक बोल । मै.
बकार फूटब-क्रि., मुह सँ स्पष्ट बोल बहराएब । मै.
बकारा-सं., भविष्यक हेतु कयल सत्य वचन । भविष्यक वाणी । मै.
बंकावीर-विशे., बहादुर, अत्यन्त शौर्यशाली । मै.
बँकिऔता-विशे., पहिलुक बाँकी बाँचल । मै.
बकुच्चा-सं., मनुष्यक पीठ पर कयल लाद । मै.
बकुची-सं., औषध विशेष । मै.
बकुटब-क्रि., हाथ सँ कसिकय पकड़ब । मै.
बकुटी-सं., हाथक मुट्ठी प्रमाण । मै.
बकुल-सं., फूल विशेष । मै.
बकेन-विशे., अधिक दिनुक बियाएलि लगहरि माल । मै.
बकेनिया-विशे., अधिक दिनुक बियलौ पर लगैत रहैवाली गै महिंस । मै.
बकैत-विशे., अनेर बकबक करैत रहैवाला । मै.
बकोचनि-सं., मुह मे अधिक ठूँसैक चेष्टा । मै.
बकोचब-क्रि., संकीर्णो स्थान मे अधिक ठूँसब । मै.
बखरा-सं., हिस्सा, भाग, अंश । मै.
बखलोइआ-सं., कोनो वस्तुक उपरक सक्कत छारन, चमड़ा, खोँइचा । मै.
बखान-सं., विस्तारपूर्वक वर्णन । मै.
बखानब-क्रि., विस्तारपूर्वक वर्णन करब । मै.
बखार-सं., बड़का अन्न भण्डार । मै.
बखारी-सं., अन्न रखैक छप्परवाला छोट स्थान । मै.
बखिया-सं., हाथ सँ कपड़ाक सीबैक ढंग । मै.
बखियान-सं., हाथ सँ कपड़ा सीबैक विशेषता । मै.
बखियाएब-क्रि., हाथ सँ सीयब । मै.
बखेड़ा-सं., झंझट, आपत्ति, विरोध बाधा । मै.
बखेड़िया-विशे., झंझटिया, विरोध ठाढ़ करैवाला । मै.
बखोड़-सं., केराक थम्हक तह । मै.
बखोनी-विशे., बक्खोक स्त्री । मै.
बखोब-विशे., मालजालक रोगक अस्त्र सँ औषधी करैवाला । मै.
बग्गी-सं., विशेष प्रकारक घोड़ागाड़ी । मै.
बग्घा लागब-क्रि., अंगक शक्तिहीन भेला सँ संचार मे विवश होएब । मै.
बंगट-विशे., उद्दण्ड उपद्रावक । मै.
बगदब-क्रि., बिगड़ब, बताह होएब, उत्तेजित बनब । मै.
बगबग करब-क्रि., स्पष्ट झलकब, समूह मे होएब । मै.
बगबगाएब-क्रि., स्पष्ट देखार होएब । मै.
बगबार-विशे., गाछी, कलम (बाग) क रक्षक । मै.
बगवारि-सं., १. गाछी कलमक रक्षाक भार । २. बागक रक्षाक पारिश्रमिक । मै.
बगय-सं., आकृति, रूप । मै.
बगयबानि-सं., छवि छटा, रूप रंग । मै.
बगरा-सं., पक्षि विशेष । छोट पक्षी । मै.
बगराएब-क्रि., समूहक बिथरिकय पसरब । मै.
बगल-सं., एक कात, एक किनार । उ. तत्सम
बगलबन्दी-सं., प्राचीन अंगा विशेष । उ. तत्सम
बगलब-क्रि., कात होएब । मै.
बगलाएब-क्रि., एक दिश करब । मै.

बगलामुखी-सं., दश महाविद्याक एक महाविद्या। मै.
बगहा-विशे., बाओग कयलवाला फसिल। मै.
बगान-सं., फुलबाड़ी। मै.
बगिआ-सं., छोट गाछी वा कलम। मै.
बगिया-सं., चाउरक चिकसक खाद्यान्न विशेष। मै.
बगुन्नी-सं., छोट धातुक वर्तन। मै.
बगुनी-विशे., टेढ़ कुद्रूप फल। मै.
बगुला-सं., पैंच गर्दनिवाला वक। मै.
बगुली-सं., छोट जालीवाला बटुआ। मै.
बगूना-सं., धातुक बड़का वर्तन। मै.
बगूर-सं., बबूर, काँटवाला वनस्पति। मै.
बगेरी-सं., देखू—"फलका"। मै.
बघछाला-सं., बाघक छालक वस्त्र वा आसन। मै.
बघजर-सं., बाघक डर वा आघात सँ भेल ज्वर। मै.
बघण्डी-सं., छोटका वनस्पति विशेष। मै.
बघदुलार-सं., बाघ जकाँ नोचि पटकि क' दुलार। मै.
बघनखा-सं., १. बाघक नहक बनल गुप्त अस्त्र। २. बाघक नहक अलंकार। मै.
बघबा-सं., बाघ। विशे., (लाक्षणिक) बाघ जकाँ भयंकर हिंसक। मै.
बघम्मर-सं. बाघक छाल (चमड़ा) क वस्त्र। मै.
बघमुहाँ-विशे., बाघ जकाँ भयंकर आ कुरूप मुहवाला। मै.
बगहा सँपहा-सं., बाघ आ साँप सँ मुइल लोकक मृत्युक तिथिक पितृपक्षक कर्म। मै.
बघार-सं., अपन महत्त्वक प्रकाश। मै.
बघारब-क्रि., अपन महान होइक बड़ाइ करब। मै.
बघुआएब-क्रि., बाघ जकाँ घात करैक ध्येय सँ क्रोधेँ ताकब। मै.
बघेड़ा-सं., सवारी करैवाला पशु, याक। मै.
बघेला-सं., चीता, बाघ। छोटका बाघ। मै.
बङ्ग-सं., एक प्रदेश विशेष। सं. तत्सम
बङ्गाल-सं., देखू—"बङ्ग"। मै.
बङ्गाली-विशे., बंगालक लोक। मै.
बङ्गोपसागर-सं., बङ्गालक खाड़ी। सं. तत्सम
बङटाह-विशे., उपद्रावी, निर्भय उत्पाती। मै.
बङलभुट्टा-विशे., अत्यन्त भुट्ट तथा मोटगर। मै.
बङला-सं., ओसाराक चारू चार सँ अलग उपर चारू चारवाला घर। मै.
बङलाही-सं., लाल फलवाला काँटवाला बनैया लत्ती विशेष। मै.
बङाला-सं., बाङ्गलादेश, पूर्वी बंगाल। मै.
बङौर-सं., बाङ (कपास) क बीया। मै.
बच्चा-विशे., शिशु। मै.
बच्चादानी-सं., गर्भाशय। मै.
बच्चू-विशे., डरबैक आ धमक' बैक क्रमक सम्बोधन। मै.
बच्छा-सं., गाइक पुरुष बच्चा (नेरू)। मै.
बच-सं., कफक प्रकोपक औषध विशेष। मै.
बचकानी-विशे., बच्चाक प्रकृतिक समान। मै.
बचत-सं., बचवैक (जमा रखैक) प्रवृत्ति। मै.
बचन्ता-सं., बचैक स्थिति, धनक जमा करैक स्थिति। मै.
बचपन-सं., बच्चाक गुण। मै.
बचब-क्रि., व्यय (खर्च) सँ अवशेष होएब। मै.
बँचब-क्रि., जीवित रहब, सुरक्षित रहब। मै.
बचबा-सं., माछ विशेष। मै.
बचबाएब-क्रि., पढ़बाएब, व्यय सँ धन कें अवशिष्ट कराएब, सुरक्षित कराएब। मै.
बचलहा-विशे., खर्च सँ बाँचलवाला। मै.
बचाएब-क्रि., १. सुरक्षित बनाएब। २. धन सँ किछु कय जमा करब, शेष राखब। मै.
बचाओ-सं., बचबैक, रक्षा करैक चेष्टा। मै.
बचान बचब-क्रि., अत्यन्त विकट स्थिति सँ सुरक्षित होएब। मै.
बचौआ-विशे., शेष बचाकय राखल। मै.
बछड़ा-सं., दूध छोड़ि दैवाला पुरुष नेरू। मै.
बछबाएब-क्रि., बीछि बीछि कय नीक अधलाहक विभाजन कराएब। मै.
बछरू-सं., नेरू। (गाइक कोनो बच्चा) मै.
बछलहा-विशे., बीछिकय अलग कयलहा। मै.
बछिया-सं., गाइक स्त्री नेरू। मै.
बछुआ-विशे., नीक बीछि लेला पर बचल अधलाह। मै.
बछेड़ा-सं., घोड़ाक पुरुष बच्चा। मै.

बछौंरा-विशे., छोट खाँटक तेज माल एवं घोड़ा। मै.

बज्जर-विशे., अत्यन्त सक्कत। वज्र। सं. तद्भव

बज्जा-विशे., बाजि उठैवाला। मै.

बज्झा-विशे., बझबैवाला। मै.

बज्र-सं., ठनका, विजुरीक पतन। सं. तत्सम

बजक्कड़-विशे., विशेष बजैक प्रकृतिवाला। मै.

बजट-सं., योजनाक निर्धारित खर्च। अं. तद्भव

बजड़ा-सं., १. अन्न विशेष। २. असन्तुलित पतन। मै.

बजड़ाबजड़ी-सं., एक दोसराक पटकैक खेल। मै.

बजन्ता-विशे., अधिक बजैवाला। मै.

बजना-विशे., बजबैक प्रयास कयला पर बजैवाला। बजनिहार। मै.

बजनियाँ-विशे., बाजा बजौनिहार। ढोल पिपही बजबैवाला। मै.

बजब-क्रि., अपनै बाजि उठब। मै.

बजबज-विशे., सड़ैक क्रम मे सरता आ वेशी फूलल घृणा उत्पन्न करैवाला। मै.

बजबजाएब-क्रि., सड़ैक क्रम मे अधिक आर्द्र आ फूलि उठब। मै.

बजबजी-सं., बजबज होइक गुण। मै.

बजबाएब-क्रि., बजैक प्रेरणा करब। मै.

बजबैया-विशे., बजबैवाला। मै.

बंजर-विशे., बिना जोत कोड़क भूमि। मै.

बजर-सं., सक्कत। कड़ा। मै.

बजरकेराइ-सं., वनस्पति विशेष। मै.

बजरगेंठ-सं., अत्यन्त सक्कत बन्हन। मै.

बजरब-क्रि., उपस्थित होएब। प्रयोग—"हम दूनू गप्पे करैत रही बतहू तखनै बजरि गेला।" मै.

बजरवट्ट-सं., ताड़क फल। मै.

बजरम बजड़ा-सं., परस्पर बजाड़ि बजाड़ि कय झगड़ा। मै.

बजरुआ-विशे., बजार सँ कीनल वस्तु। मै.

बजाएब-क्रि., शब्द अथवा ध्वनि बहार करब। मै.

बजांटी-विशे., अधिक दिनक भेलौ पर ने बढ़ैवाला ने बुझैवाला। मै.

बजाणी-विशे., अत्तन्त सक्कत। मै.

बजार-सं., नगर रूपें व्यवस्थित अनेक बहुतरास वस्तु सभक कीनैक दूर धरि पसरल सामूहिक स्थान। स्थायी हाट। मै.

बजारू-विशे. बजार मे रहैवाला आ होइवाला। मै.

बजे-अव्यय, समयक मानक अनुसार। मै.

बजौआ-विशे., बजवैक स्थिति उत्पन्न करैवाला। मै.

बजौना-सं., बजबैक वस्तु। मै.

बझब-क्रि., १. ओझरा जाएब। २. झगड़ाक रूपें विवाद उठब। मै.

बझलहा-विशे., विवाद मे पड़ल, अनिर्णय मे राखल। मै.

बझाएब-क्रि., १. फँसाएब, ओझरा देब। २. भावनात्मक रूपें आर्कषित क' लेब। मै.

बझान-सं., ओझरौट, फाँस। आपस मे दू व्यक्तिक संकल्प विकल्पक स्थिति। मै.

बँझिनियाँ-विशे., (अनादर मे) बन्ध्या स्त्री। मै.

बँझिया-सं., बाँझीक ठहुरी। मै.

बझौआ-विशे., क्रिया वा बुद्धि सँ फँसाकय आनल। मै.

बँझौनी-सं., बँझबैक प्रक्रिया। मै.

बञ्चना-सं., ठकैक प्रकृति। सं. तत्सम

बट्टम-सं., अंगाक मुह जोड़ैक चापट छोट वस्तु। अं. तद्भव

बट्टा-सं., १. बड़का कटोरा। २. घट्टी। ३. कमी। ४. अशुद्धि। मै.

बट्टा लागब-क्रि., १. घटी होएब। २. अप्रतिष्ठा होएब। मै.

बट्टी-सं., हाट बजारक भूमि पति कें दोकानदारक देय कर। मै.

बट्टुक-सं., काँसक रन्हा गोल वर्तन। मै.

बट-सं., १. मार्ग। २. बटवारा। ३. बड़क गाछ। सं. तत्सम/मै.

बटकढ़वा-विशे., मार्गदर्शक। मै.

बटकर-सं., काँच दानावाला केराओ बदामक तीमन विशेष। मै.

बटखर्चा-सं., वाट मे खर्च करैक द्रव्य। मै.

बटगबनी-सं., वाट चलैत गबैक गीत विशेष। मै.

बटगमनी-सं., अभिसारिका । मै.
बँटब-क्रि., विभाजित होएब । मै.
बटबा-सं., हीन वाट । मै.
बटबार-विशे., वाट मे उत्पात करैवाला । मै.
बँटवारा-सं., विभाजन, फाँट । मै.
बटबारि-सं., बटोहीक वाटक उपद्रव । मै.
बटबैया-विशे., बाँटैवाला, बाँटिक' लैवाला । मै.
बटमारि-सं., वाटें वाटें चलैत मारि । मै.
बटलोही-सं., पित्तरिक पातर आ छोट वर्तन । मै.
बटाइ-सं., खेतक आधा उपजा दैक करार पर किसान कें खेत देबाक नियम । मै.
बटाइदार-विशे., उपजाक आधा बाँटि कय दैक कहावदी पर खेत जोति उपज'बैवाला । मै.
बँटाएब-क्रि., १. अपन (आधा) हिस्सा बहार कय अलग क' लेब । २. लोक सब मे वितरण कराएब । ३. भत्ता देयाकय डोरी बनबाएब । मै.
बँटाओन-सं., डोरी मे पाक दय डोरी बनबैक बोनि । मै.
बटान-सं., १. वितरण करैक सिलसिला । २. डोरि बँटैक विशेषता । ३. हिस्सा अलग करैक क्रम । मै.
बटाबटी-सं., प्रतीक्षा । प्रयोग-"कती काल सँ ने हम अहाँक बटाबटी मे बैसल छी ।" मै.
बटाम-सं., १. देखू—"बट्टम" । २. बरही मिस्त्रीक सोझ रेखा करैक अस्त्र । मै.
बटारी-सं., बरही मिस्त्रीक लकड़ीक छेद कें चिक्कन करैक अस्त्र विशेष । मै.
बटिखारा-सं., तौलै जोखैक मानक एकाइ । मै.
बटियारी-सं., नीपल अर्थात् ठाओं कयल वाट । मै.
बटी-सं., औषधक गोली । प्रयोग—"सोहागवटी ।" सं. तत्सम
बटुआ-सं., हथलग्गू छोट धोकड़ी (बैग, पर्स) । मै.
बटुक-विशे., किशोर वयसवाला । सं. तत्सम
बटेर-सं., पक्षी विशेष । मै.
बटैदारी-सं., आधा बाँटिकय खेतक स्वामी कें उपजा दैवाला किसानक खेती । मै.
बटैया-सं., देखू—"बटाइ" । मै.
बटोरब-क्रि., बीछि बीछि कय एकट्ठा करब । मै.
बटोही-विशे., वाट पर चलैत रहैवाला, पथिक । मै.
बँटौआ-विशे., १. बाँटि (विभाजन कय) प्राप्त । २. गुन (पाक) लगा क' बाँटल डोरी । मै.
बड़ु/बड़ुँ-विशे., अत्यधिक । मै.
बड़ढी-विशे., उचित सँ वेशी बढ़िकय शेष बाँचल । मै.
बड़-विशे., १. बहुत, अधिक । २. वनस्पति विशेष । मै.
बऽड़-सं., बेसनक बनल तरुआ तरकारी । मै.
बड़का-विशे., पैघ, महान्, विशाल । स्त्री० बड़की । मै.
बड़द-सं., हर, गाड़ मे जोतल जाइवाला पुरुष गोजाति । मै.
बड़दबार-विशे., बड़द चरबैवाला । मै.
बड़दहासा-विशे., अगिन कोनक हवा । मै.
बड़प्पन-सं., महत्त्वक प्रदर्शन । मै.
बड़बड़ करब/बड़बड़ाएब-क्रि., निरर्थक प्रलाप करब । मै.
बड़बड़ैनी-सं., विशेष रूपें बड़बड़ाइक स्वभाव । मै.
बड़र (रँ)-सं., युवावस्था मे बहराएल मुह पर फोंसरी । मै.
बड़री-सं., कमल फूलक आ कुसुम फूलक फड़ । मै.
बड़रुखि-सं., बड़क गाछक नमरल जटा जकाँ सीर । मै.
बड़हर-सं., अमजिहुल फलवाला बनस्पति । मै.
बऽड़ा-सं., बड़का बऽड़ । मै.
बड़ाइ-सं., प्रशंसा, पैघतक गुण । मै.
बड़ारी-विशे., भरैनवाली भूमि । मै.
बड़िजना-विशे., बन्हुआ श्रमिक, मजूर । मै.
बड़िया-सं., औषधक टिकिया । गोली । मै.
ब'ड़ी-सं., १. घरक दूनू चारक आधारवाला नमहर गोल काठ वा बाँस । २. अत्यन्त छोट ब'ड़ । मै.
बड़ीखन-अव्यय, बहुत विलम्ब । बहुत देर । मै.
बड़ी माँइ-सं., जड़ीबूटीवाला औषध विशेष । मै.
बड़ुका-सं., माटिक छोट लोटकीक आकार प्रकार वाला वासन । मै.
बड़ें-अव्यय, बहुत । मै.
बड़ेरी-सं., देखू—"बऽड़ी" । मै.
बढ़न्ती-सं., उन्नति । अभ्युदय । मै.
बढ़ना-विशे., बढ़ैक योग्य । मै.
बढ़नुक-विशे., बढ़ैक प्रकृतिवाला । मै.

बढ़ब-क्रि., उन्नति करब, पसरब, विस्तृत बनब । मै.

बढ़लहा-विशे., बढ़लवाला । मै.

बढ़ाएब-क्रि., उपर उठाएब, आगू करब, उन्नति कराएब । मै.

बढ़ाबा-सं., बढ़ैक आस्रा, बढ़ै मे छूट, बढ़बाक सहायता । मै.

बढ़ार-सं., घर बढ़ारैक काज । मै.

बढ़ारन-सं., बढ़ारि जमा कयल गदौस । मै.

बढ़ारब-क्रि., बाढ़नि सँ झारि स्थान कें स्वच्छ करब । मै.

बढ़िआएब-क्रि., निश्चित सँ वेशी भ' जाएब । मै.

बढ़ियाँ-विशे., नीक, वेश, उत्तम । मै.

बढ़ुआ-विशे., अधिक भेल । बढ़िकय वेशी बनल । मै.

बढ़ोतरा-विशे., बढ़िकय निश्चित सँ अधिकवाला । मै.

बढ़ौआ-विशे., बढ़लवाला । मै.

बढ़ौतरी-सं., वृद्धि । मै.

बत्तक-सं., पक्षी विशेष । मै.

बत्ती-सं., १. बाँसक पातर चीरा । २. दीपक टेमी । मै.

बत्तीस-संख्या, दू एकाँइ तीन दहाँइक अंक । मै.

बत्तीसा-विशे., बत्तीस छिमड़िवाला केरा । मै.

बत्तू-सं., बकरी कें गर्भधारण करबैवाला छोड़ल बकरा । मै.

बतकट-विशे., बात कें कटैक अभ्यासवाला । मै.

बतकहाँ-सं., नहू नहू अधिक गप । मै.

बतकही-सं., उलहन उपदरवाला गप । मै.

बतकुट्टनि/ बतकुटौवलि-सं., व्यर्थ विवाद । वितण्डा वाद । मै.

बतगढ़हा-विशे., अपन कल्पना सँ बात बनाकय गप कहनिहार । मै.

बतगढ़ुआ-विशे., गढ़ि गढ़ि बात बजैवाला । मै.

बतङ्‌ङर-सं., बढ़ि क' भयावह बनल साधारणो बात । मै.

बतचोथरि-सं., छोटो बात कें विस्तार करब । गुप्तो बात कें खोधि खोधि खोलैक चेष्टा । मै.

बतबैया-विशे., बुझबैवाला । मै.

बतमारि-सं., मर्म पर घातक आघात । घातक चोट । मै.

बतरख-सं., बाती कें तानि कें रखैवाला बाँसक छेदवाला फाँक । मै.

बतसू-सं., डोरी पैसबैक हेतु बातीक बनल सूइया । मै.

बतहनन्ड-विशे., बताह जकाँ स्वच्छन्द अन्ट सन्ट आचरण कयनिहार । मै.

बतहा-विशे., बताह जकाँ चालि रखनिहार । स्त्री० बतही । मै.

बतहिया-विशे., बताहक गुणवाली स्त्री । मै.

बताएब-क्रि., बुझाएब, सिखाएब । मै.

बताओन-सं., अभिनय, कलापूर्ण अंगक चालन । मै.

बतारी-विशे., समान वयसवाला । मै.

बतास-सं., वाताशय, वसात, वसातक वाट । मै.

बतासा-सं., फोका सन बनाओल चीनीक मधुर । मै.

बताह-विशे.,उमतल । ज्ञान ध्यान शून्य । पागल । मै.

बतिया-विशे., बहराएल मात्र फल, अत्यन्त कम वयसक फल । मै.

बतियाएब-क्रि., १. बत्ती बनाएब । २. गप करब । ३. बाओग करैक योग्य खेतक माटि कें कोमल करब । मै.

बतियान-सं., बाओग करैक योग्य खेत कें कोमल करैक विधि । मै.

बतिहर-सं., घाओघोस मे देबाक योग्य कपड़ाक बाती । मै.

बतुआएब-क्रि., बत्तू जकाँ जोआएल होएब । मै.

बतुलाएब-क्रि., हिलडोल करैत ढेकीक चोट पड़ब । मै.

बथनियाँ-विशे., मालजालक चरैक हेतु चलता फिरता बथान बनबैवाला । मै.

बथान-सं., मालजाल बन्हैक स्थान । मै.

बथानी-विशे., बथानवाला । मै.

बथुआ-सं., १. साग विशेष । २. भदैया आम । मै.

बद्दी-सं., वचन क' प्रमाण । मै.

बद्धी-सं., रक्षा सूत्र, देव प्रसादवाला सूत । मै.

बद-विशे., दुष्ट, उपद्रावक, उत्पाती । उ. तत्सम/मै.

बदखाह-विशे., विरोधी मानिकय तिरस्कृत। उ. तद्भव

बदन-सं., मुह। मै.

बदनाम-विशे., दुर्नामी। कलंकित। उ. तत्सम/मै.

बदब-क्रि., शब्द द्वारा हृदयक भाव प्रकट करब। मै.

बदमासी-सं., कूटबुद्धि सँ दुष्टताक व्यवहार। बदमस्ती। उ. तद्भव

बदरियाह-विशे., बदरीक लक्षणवाला। मै.

बदरी-सं., मेघ छारल बुन्ना बुन्नी वर्षा। मै.

बदल-विशे., स्थानापन्न, एकक अभावक पूर्ति करैवाला दोसर। मै.

बदलन-सं., हेरफेर करैक प्रक्रिया। मै.

बदला-सं., ओजी एकक स्थान पर दोसर। मै.

बदला बदली-सं., परस्पर विनिमय, हेराफेरी। मै.

बदली-सं., एकठाँ सँ दोसर ठाँ फेरैक विधि। मै.

बदलुआ-विशे., बदला कयल। मै.

बदलेन-सं., एकक बदला मे लेल दोसर वस्तु। मै.

बदाएब-क्रि., कहाएब। मै.

बदाम-सं., चना, काबूली। मै.

बदामी-सं., बदामक रंग। मै.

बदि-सं., कृष्ण पक्ष। मै.

बदियल-विशे., बिगड़ैल, बदमास। मै.

बध-सं., हत्या। सं. तत्सम

बधना-सं., मुसलमानक जलपात्र। मै.

बधबारि-सं., उपजल बाधक रक्षाक भार। मै.

बधहा-सं., डोरीवाला खड़ाओं। मै.

बधाइ-सं., धन्यवाद, आनन्दवर्धन। मै.

बधिक-विशे., बध करैवाला, हत्या करैवाला। मै.

बधिया-सं., नपुंसकता, प्रजनन शक्तिक नाश। मै.

बधैया-सं., आनन्दवर्धनक प्रदर्शन। मै.

बन्टाढार करब-क्रि., नीकक स्थान मे सत्यनाश करब। मै.

बन्द-विशे., जकड़ल, मूनल। मै.

बन्दी-विशे., निगड़ (बेड़ी) मे बान्हल जहलक दण्डभागी। सं. तत्सम

बन्दूक-सं., दूरघाती आग्नेयास्त्र। मै.

बन्ध-सं., बन्धन, बन्हैक रूप। सं. तत्सम

बन्धक-विशे., कोनो विशेष नियमक अन्तर्गत द्रव्य (धातुक वस्तु) राखि कय लेल ऋण अर्थात् ऋणक विश्वासक रूपें देल धातुक वस्तु। मै.

बन्धकी-सं., बन्धक रखैक रीति। मै.

बन्धन-सं., बन्हैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

बन्न-विशे., निमीलन, देखू—"बन्द"। मै.

बन्हक-विशे., देखू—"बन्धक"। मै.

बन्हा-विशे., बान्हल रहैक प्रकृतिवाला। मै.

बन्हिसार-सं., जहल, जेल, कारागार। मै.

बन्हेज-सं., नियमक बन्धन। मै.

बन्होटा-विशे., हरदम बान्हल रहैवाला। मै.

बन-सं., हाथक चूड़ी लहठीक आगू सक्कत मोट चूड़ी। मै.

बनब-क्रि., १. अपन ढंग छोड़ि दोसर ढंग धरब। २. रचल जाएब। मै.

बनबाएब-क्रि., रचाएब। मै.

बनरनी-सं., बानरक स्त्री जाति। मै.

बनरफाँस-सं., १. बानर कें बझबैक यन्त्र। २. बन्धन विशेष। मै.

बनरबज्झा-सं., बानर बझबैक संयन्त्र। मै.

बनरमाछी-सं., गाछ पर रहैवाली माछी विशेष। मै.

बनरा-सं., (अनादर मे) बानर। मै.

बनसी-सं., माछ फँसबैक डोरी मे बान्हल लोहक पातर कमानीक छोट अस्त्र। मै.

बनसोह-सं., बनक छायाक शीतलता, बनक स्रोत। मै.

बनहुलुक-सं., बनैया छोट जीवक प्रभेद। मै.

बनाइ-सं., बनबैक पारिश्रमिक। मै.

बनाएब-क्रि., रचना करब। मै.

बनाओ-सं., परस्पर एकता, मेल। मै.

बनाओन-सं., बनबैक बोनि। मै.

बनाओन सोनाओन-सं., कोनो वस्तु सँ सार भाग ल' लेला पर निरसल निकृष्ट भाग। मै.

बनिजारा-सं., १. भ्रमणशील। २. मूर्तिभंजक। मै.

बनिजारी-सं., मालजालक गराँ मे बन्हैवाला डोरी। मै.

बनियाँ-विशे., वाणिज्य व्यवसाय करैवाला। मै.

बनियाइन-सं., १. आङी (गञ्जी) । २. बनियाँक पत्नी । मै.
बनियौटी-सं., बनियाक मोल मोलाइ, दाम तोड़ैक नोकझोंक । मै.
बनीज-सं., एकठाँ सँ कीनिकय दोसर ठाँ बिक्री । मै.
बनैया-विशे., वन मे जन्मैवाला आ रहैवाला । मै.
बनैल-विशे., वनवासी, नगरक अज्ञानी । मै.
बनैला-विशे., वन मे भेनिहार आ रहनिहार । मै.
बनौआ-विशे., बनाकय, रचिकय प्रस्तुत कयल । मै.
बनौतरी-विशे., अपना दिश सँ गढ़ल बात । मै.
बनौनिहार-विशे., बनबैवाला । मै.
बप्-अव्यय, डाँटैक आ विरोध करैक शब्द । मै.
बप्पाबैरी-सं., बापैक समय सँ अबैत विरोध । मै.
बपकोरा-सं., बापक अंक । मै.
बपमुह-विशे., बापक मुहसन मुहवाला बेटा । मै.
बपलहरि-विशे., बापैक कोरा जाइक बच्चाक झोंक । मै.
बपहारि काटब-क्रि., बाप रौ बाप करब । मै.
बपहिया-सं., गारि विशेष, जन्म दैवाला सँ भिन्न बाप । मै.
बपाईं बपाईं-अव्यय, भय आ आपत्ति मे बाप बाप करैक ध्वनि । मै.
बपौती-विशे., कुल पम्परा सँ अबैवाला । मै.
बब्बर-सं., बड़का बाघ । मै.
बंबखेड़ा-सं., बिच्चहि मे देल आपत्ति, बाधा । मै.
बबब-क्रि., बाओग करब, खेत मे बीआ छींटब । मै.
बबुआ-विशे., अत्यन्त दुलारू नेन्ना । मै.
बबुआन-विशे., जमीन्दार, विलासी सामन्त । मै.
बबुआनी-सं., सामन्ती । मै.
बबूर-सं., नमहर काँटवाला वनस्पति । मै.
बभनगामा-विशे., ब्राह्मणक अधिकतावाला गाम । मै.
बभनगोष्ठी-सं., ब्राह्मणैक प्रभाव । मै.
बभनटोली-सं., ब्राह्मणक टोल, बस्ती । मै.
बभनभोज-सं., ब्राह्मण भोजन । मै.
बभना-विशे., अनादरणीय ब्राह्मण । मै.
बभनाह-विशे., केवल ब्राह्मणैक छूबैक योग्य । मै.
बभनियाँ-विशे., अनादरणीय ब्राह्मणी । मै.
बभनी-सं., धानक गाछ मे लगैवाला रोग विशेष । मै.
बभनैठी-सं., ब्राह्मणक दावी । मै.
बभनौज-सं., ब्राह्मणक जोरगरीक दावी । मै.
बभनौती-सं., ब्राह्मणक आचारक आडम्बर । मै.
बम्मा-सं., आकाश लागल नाम आ गोल भीतर फोंक लोहाक धूआँ फेंकैवाला यन्त्रक अंग । चिमनी । मै.
बम्मा देब-क्रि., अत्यन्त जोर सँ यन्त्र वा कारखानाक ध्वनि होएब । मै.
बम-सं., शंकर आराधनाक प्रणव (ओंकार) क अनुकल्प । बम बैद्यनाथ । मै.
बम-विशे., बैद्यनाथक उपासनाक हेतु गंगाजल लय गेनिहार तीर्थयात्री । मै.
बमक-सं., अनेक बेर टोकला पर एकै बेर खूब जोर सँ बाजि उठैक प्रकृति । मै.
बमकन्हौर-विशे., बामा कात झुकल कनहीरवाला । मै.
बमकब-क्रि., आदि सँ चुप रहि अन्त मे खूब जोर सँ बाजि उठब । मै.
बमकाह-विशे., बमकैक प्रकृतिवाला । मै.
बमकी-सं., बमकैक प्रकृति । मै.
बमगोला-सं., आग्नेय प्रक्षेपास्त्र विशेष । मै.
बमछब-क्रि., क्रोधें गरजि उठब । मै.
बमण्डर-सं., बबण्डर, चक्रवात । हि. तद्भव
बमन-सं., औक, रद्द, उल्टी । सं. तत्सम
बमरोटिया-सं., बामा हाथें काज करैक प्रकृति । मै.
बमहत्था-विशे., सदिखन बामा हाथ चलबैक प्रकृतिवाला । मै.
बमार-सं., बामा कात । मै.
बमेरिया-विशे., हर, गाड़ी मे बामा कात बहैवाला । मै.
बयस-सं., आयु, जीवन गतिक अवधि । सं. तत्सम
बयसगर-विशे., अधिक बयसवाला । सं. तत्सम/मै.
बयसाहु-विशे., उचित सँ वेशी बयस बीतल । मै.
बर्चस्व-सं., प्रभाव । सं. तत्सम
बर्छा-सं., भोंकैवाला अस्त्र । मै.

बर्छी-सं., भोंकैवाला छोट कमानीक अस्त्र। मै.
बर्जना-सं., रोक, निषेध, त्याग। सं. तत्सम
बर्फ-सं., घनीभूत जल, जलपिण्ड। मै.
बर्बर-सं., आदिवासी जाति। मै.
बर-सं., गुण। प्रयोग—"एकबर, दोबर, तेबर आदि।" गुना। मै.
बरक्कति-सं., वृद्धि। बरक्कत। उ. तद्भव
बरकन-सं., पाक होइक कालक झोरक खलबलाइक क्रम। मै.
बरकब-क्रि., द्रवणशील वस्तुक खौलब। मै.
बरकरार-विशे., बाँचल, वर्तमान, अपने रूप मे रहैवाला। उ. तद्भव
बरकलहा-विशे., खौलाएल। मै.
बरकस-सं., कहारक उठबैवाला सवारी कें बाँस सँ बन्हैवाला डोरी। मै.
बरकाएब-क्रि., झोर द' क' रान्हब। खौलाएब। मै.
बरकान-सं., बरकैक प्रक्रिया। मै.
बरकुमारि-विशे., वरक अभिलाषावाली कुमारि। प्रयोग—"राँड़ कानय ऐहब कानय तँ पाछू वरकुमारि कानए।" मै.
बरकौआ-विशे., बरकाकय प्रस्तुत कयल। मै.
बरख-सं., वर्ष। सं. तद्भव
बरखमा-विशे., वर्षे वर्षे होम'वाला। मै.
बरखा-सं. वर्षा। सं. तद्भव
बरखी-सं., वर्ष दिन परक श्राद्ध। मै.
बरखुआ-विशे., वर्ष दिनक वयसवाला बच्चा। मै.
बरगा-सं., कोठा मे ईंटा बैसबैवाला, ईंटाक आधार बनैवाला नम्मा मोट लकड़ी पर सँ देल पातर कम नाम लकड़ी। मै.
बरगाएब-क्रि., नापक अनुसार दूरी राखि बैसाकय सक्कत बनाएब। मै.
बरँगाही/बरङाही-विशे., गारि विशेष। मै.
बरजब-क्रि., त्यागब, छोड़ब, हटाएब। मै.
बरजलहा-विशे., छोड़लवाला। मै.
बरजाति-विशे., बदमास। मै.
बरजीत-सं., बाजी, हार जीतक क्रम मे जीतैवाला कें दैवाला राशि, द्रव्य। मै.
बरतन-सं., १. वर्तन। २. निर्वाह, खेपब, समय काटब। मै.
बरतब-क्रि., निर्वाह करब, जीवन बिताएब। मै.
बरतिहार/बरतुहार-सं., वरक (कन्याक हेतु) अन्वेषण करैवाला। मै.
बरदाएब-क्रि., चलैत काज मे बाधा पड़ने रोकल रहब। निष्क्रिय बनब। मै.
बरदाठ-सं., मुख्य काजक रोक। निष्क्रियता। मै.
बरदीलाद-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त भरल, बरद पर लादिकय ल' जाइक योग्य भार। मै.
बरन-सं., १. रंग, अक्षर, जाति। वर्ण। २. पसिन्न करैक चेष्टा। सं. तद्भव
बरनन-सं., वर्णन, बेकछाकय वस्तुक गुणक कथन। सं. तद्भव
बरनब-क्रि., वर्णन करब। मै.
बरना-सं., रोक, त्याग। मै.
बरनी-अव्यय, वेश, नीक (स्वीकारोक्ति)। मै.
बरनेका-सं., छोड़ैक प्रयास। त्यागैक चेष्टा। मै.
बरपँ-सं., वृद्धि, उन्नति, अभ्युदय। मै.
बरफी-सं., मिष्टान्न विशेष। मै.
बरब-क्रि., चूनब, बीछब। मै.
बरबरनी-विशे., वरवर्णिनी, अत्यन्त सुन्दरी। सं. तद्भव
बरबँ-सं., भाषा काव्यक छन्द विशेष। मै.
बरमा-सं., लकड़ी मे छेद करैक कमारक यन्त्र। मै.
बरलाहा-विशे., त्यागलवाला। मै.
बरहचोदी-विशे., गारि, बारहगोटा सँ प्रसंग करैवाली। मै.
बरहधना-विशे., अनेक धान मिझहरवाला। मै.
बरहबट्टू-विशे., अनेक वाटवाला घर। मै.
बरहवरना-विशे., बारहो वर्णक अर्थात् सब जातिक छूबैक योग्य। मै.
बरहवरनी-विशे., सब वर्ण सँ सम्भोग करैवाली। मै.
बरहम-सं., ब्रह्म, ग्राम देवता। मै.
बरहमण्डल-सं. ब्रह्माण्ड, मस्तक। मै.
बरहमसिया-विशे., बारहो मास होम'वाला। मै.
बरहमासा-विशे., बारहो मासक वर्णनवाला गीत। मै.

बरहरी-सं., बाँहि परक गहना विशेष । मै.

बरहरूपिया-विशे., अनेक रूप धारणकय लोक कें मनोरंजन करबैवाला । मै.

बरहसिंगा-विशे., १. बारह डारि फूटलवाला सींग । २. बारह डारि फूटल सिंगवाला हरिण । मै.

बरहहत्थू-विशे., सभक हाथ मे जाइवाला । मै.

बरहा-सं., चौकी (पाटा) मे बन्हैवाला रस्सी । मै.

बरहाबरही-सं., रस्सीक दूनू छोर पकड़ि कय जोर सँ दूनू दिश खींचैक खेल । मै.

बरहिया-सं., बारह बोझ फसिल पर एक बोझ वोनि लैक नियम । मै.

बरही-सं., १. बरहिया । २. कमार जाति । मै.

बराइत-विशे., बर पक्षक लोक । मै.

बराएब-क्रि., हाथ पैर धोइक हेतु पानि ढारब । मै.

बराँह-विशे., उपनयनक वयस कें पार कयलैवाला बड़ुआ । मै.

बराबरि-अव्यय, हरदम । विशे., एक रंग, सरि । मै.

वराह-सं., सूगर । सं. तत्सम

बराहिल-विशे., लगान देबाले प्रजा कें बजबैवाला नियुक्त दूत । मै.

बरिया-विशे., शक्तिशाली धनवान् । मै.

बरियाती-विशे., बरक संग जाइवाला लोक । मै.

बरियार-सं., छोट झाड़वाला गाछ । मै.

बरिसकाल-सं., वर्षाक समय । मै.

बरिसन्हन-सं., कुमारि अवस्थाक पूजल गौरीक भसाओन । मै.

बरिसब-क्रि., वर्षा करब । मै.

बरिसाइत-सं., वट सावित्री व्रत । मै.

बरिसात-सं., वर्षाक समय । मै.

बरिसाती-विशे., वर्षा सँ बचबैवाला । मै.

बरी-विशे., निर्मुक्त, दोषहीन । मै.

बरी होएब-क्रि., अभियोग, दोषरहित बनब । मै.

बरु-अव्यय, विकल्पक शब्द । प्रयोग—"बैसल छी तँ बरु किछु लिखबे करू ।" मै.

बरुआ-सं., बच्चा वयसवाला वर । मै.

बरुआर-सं., पैघ माटिक वासन । मै.

बरुकी-सं., चुकड़ी, अत्यन्त छोट माटिक वासन । मै.

बरेठ/बरेब/बरेंग-सं., झझराह टाट सँ घैरल आ झाँपल बरै (पान उपज'बैवाला) क पानक गाछ लगबैक स्थान । मै.

बरै-सं., पानक व्यवसायी जाति, तमोली । मै.

बरैन-सं., हरीसक जड़ि मे हर कें अड़ौने रखैवाला कील । मै.

बरैबा-विशे., (अनादर मे) पान वेचैवाला । मै.

बरोत-सं., घरक माथी पर मठहट पीटैवाला बाती । मै.

बरौनी-सं., पिपनी, आँखिक पल परक केश । मै.

बरोबर-विशे., आधा सुखाएल अन्न । मै.

बरोबर-धान विशेष । मै.

बरोबर करब-क्रि., आधा सुखाएब, सरता उड़ाएब । मै.

बरोबरि-विशे., १. एक वस्तुक समान दोसर वस्तु । २. सदिखन । मै.

बल्लम-सं., अस्त्र विशेष, सामन्ती यात्राक साज वाला वस्तु । मै.

बल्ला-सं., १. धातुक गेन जकाँ गोल वस्तु खेल प्रतियोगिताक विशेष वस्तु । २. कोनो वस्तु के घरक चार आदि कें उपर तनैक हेतु देल बाँस वा काठक नम्मा टोना । मै.

बल्ली-सं., बाँस काठक छोटका टोन । मै.

बल्लौं-अव्यय, निरर्थक । मै.

बल-सं., शक्ति, बुत्ता । सं. तत्सम

बलकानन-सं., बल सँ कनैक अभिनय । मै.

बलकुचाहि-विशे., बालु मिलल पदार्थ । मै.

बलगम-सं., कफ । उ. तत्सम

बलगर-विशे., बलवाला, अधिक सक्कत । मै.

बलगरी-सं., अधिक बल रखैक दाबी । मै.

बलगोबिना-विशे., हिजड़ा, नपुंसक । मै.

बलजोरी-सं., बलात्कार, बल लगाकय कोनो क्रियाक प्रवृत्ति । जबरदस्ती । मै.

बलतोड़-सं., केश वा रोइआँ उखड़ला सँ बनल घाओ आ पीड़ा । रोइ उपाड़ । मै.

बल द'-अव्यय, तेजी सँ । मै.

बलदाउनि-सं., अनुचित आग्रह, दुराग्रह । मै.

बलदाब-क्रि., कनेको बल लगौला सँ बहराएल मालजालक गुप्ताङ्ग । मै.

बलधकेल-सं., जबरदस्ती, जोरें धकिया कय। मै.

बलधारा-सं., चार मे खम्भाक लागि रखै लेल खाम्हक कान्ह अड़ैक हेतु बान्हल बाँसक टोंटा। मै.

बलधिङरो-सं., व्यर्थ जिद्द रोपैक चेष्टा। मै.

बलफ-सं., ब्लफ, झपासा, धोखा। अं. तद्भव

बलबलाएब-क्रि., भीतर सँ उपर मुहें विकारक प्रवाह होएब। मै.

बलभुज्जा-विशे., बालु द' क' भूजल तथा बालुक संग भूजल। मै.

बलमन्त-विशे., बल रखैवाला। मै.

बलमा/बलमुआँ/बलुम-विशे., प्रियतम, स्वामी, पति। मै.

बलमारि-सं., व्यर्थक युद्ध, मारि करैक प्रवृत्ति। मै.

बलय-सं., कँगना। सं. तत्सम

बलरबलर-अव्यय, व्यर्थ असंगत गप्पक शब्द। मै.

बलशाली-विशे., बल भरल। सं. तत्सम

बलहा-विशे., बालु भरलवाला। मै.

बलही-सं., दू जुन्ना पर बैसाकय बान्हल बड़का बोझ। मै.

बलहुत्थनि-सं., बिन कारणें निरर्थक दुराग्रह। मै.

बलात्कार-सं., १. जबरदस्ती। २. (लाक्षणिक) शीलहरण। मै.

बलाय-विशे., आपत्तिजनक, भार स्वरूप। मै.

बलाह-विशे., बालु भरल। मै.

बलि-सं., आत्मसमर्पण, अपन उत्सर्ग। सं. तत्सम

बली-विशे., बलवाला। सं. तत्सम/मै.

बलिकट्टा-विशे., देवी पूजाक अवसर पर छागर आदि पशुक बलि कटनिहार। मै.

बलिदान-सं., देवीक आगू पशुक मूड़ी काटिकय प्रसाद चढ़बैक विधि। सं. तत्सम

बलिया-सं., हाथक निस्सन चानी वा सोनाक गहना मट्ठा। मै.

बलुआह-विशे., बालुवाला। मै.

बलुआही-विशे., बालुमय भूमि। मै.

बलुआओल-विशे., बालु मिलाकय बनाओल भूजल। मै.

बलुमटेर-सं., धानक प्रभेद। मै.

बलू-अव्यय, गप्पक अलंकारक शब्द। वरु। मै.

बलूच-विशे., बलूचिस्तानक वासी। मै.

बलेल-विशे., अत्यन्त मूढ़, बूड़ि। मै.

बलैँ-विशे., देखू—"बलाय"। मै.

बलैया-सं., शुभकामनाक हेतु सब अकल्याणक ग्रहण। मै.

बस्तर-सं., वस्त्र। सं. तद्भव

बस्ता-सं., पोथी पतरा रखैक कपड़ाक मोटरी तथा झोरी। मै.

बस्ती-सं., लोकक वासक विभिन्न खण्ड। मै.

बस्तु-सं., पदार्थ। सं. तत्सम

बस्तुजात-सं., सामग्री। सं. तत्सम

बस्स-अव्यय, परिपूर्णता आ निषेधबोधक शब्द। मै.

बँसकट्टा-विशे., व्यवसाय ले बाँस कटैवाला। मै.

बँसकट्टी-सं., शुभ कार्यक हेतु बाँस कटैक विधि। मै.

बसन्त-सं., ऋतु विशेष, मधु मास। मै.

बसन्ती-विशे., लाल पीयर मिझहर रंग। मै.

बसना-सं., पोथी बन्हैक वस्त्र खण्ड। मै.

बसनिहार-विशे., बसैवाला। मै.

बसनी-सं., छोट आकार प्रकारवाला थैल। मै.

बसब-क्रि., खुट्टा गाड़िकय अर्थात् घरबान्हि कय रहब। मै.

बँसवाड़ि-सं., बाँसक बाड़ी, बाँसक वन। मै.

बँसविट्टी-सं., बाँसक जड़िक पसारवाला खण्ड। मै.

बँसहर-विशे., बाँसक बनल विभिन्न प्रकारक वस्तु। मै.

बँसहरी-विशे., बाँसक बनाओल वासन। मै.

बसहा-विशे., बाँसक बनल। सं., शिवक वाहन। मै.

बँसही-विशे., देखू—"बँसहरी"। मै.

बसाएब-क्रि., स्थापित करब, रहैक स्थान देब। मै.

बँसाड़ि-सं., सघन बाँसक वन। मै.

बसात-सं., हवा, वायु। मै.

बसिन्ना-विशे., बसैत रहनिहार। मै.

बसिया-विशे., १. निश्चित बास करैवाला। २. दोसर (पहिलुक) दिनक रान्हल विकृत अन्न। मै.

बसियाइन-विशे., बासि। अधिक कालक बिन खयने आ बहुत कालक रान्हल जकाँ विकृत। मै.

बसियाएब-क्रि., बहुत कालक रान्हल रहने विकृत होएब। मै.

बसियाहा-विशे., अधिक कालक रान्हल भेने विकृत भेलवाला। मै.

बसिला-सं., कमारक काठ छीलैक विशेष अस्त्र। मै.

बंशी/बसुरी/बसुली-विशे., १. वंशवाला। २. बसुली। सं., बाँसक पोर सँ सातो स्वरक वाजन। मै.

बसूला-सं., ईंटा जोड़ै मे ठोकैक आ कटैक राज-मिस्त्रीक अस्त्र। मै.

बसेढ़ करब-क्रि., बलजोरी रहिकय अधिकार करब। मै.

बसेरा-सं., अस्थायी निवास। डेरा। मै.

बँसैला-विशे., बाँसक बनल खुट्टा आदि। मै.

बसौआ-विशे., बसाओल गेल। मै.

बसौड़ी-विशे., वासवाला भूमि। मै.

बऽह-सं., १. बहैक वाट। २. गाछक सीर सँ बहराएल गाछ। मै.

बहक-सं., उचित वाट छोड़ि कुमार्गक प्रवृत्ति। मै.

बहकब-क्रि., १. निकलब, फुटब। २. कुमार्ग दिश चल जाएब। मै.

बहक'बैवाला-विशे., कुवृत्ति सिखबैवाला। मै.

बहकलहा-विशे., १. कुपथ पर चलैत रहैवाला। २. निकललवाला। मै.

बहकाएब-क्रि., अनुचित बात सिखाएब, सनकाएब। कुमार्ग पर चलाएब। मै.

बहकान-सं., बहक'बैक विशेषता, चेष्टा। मै.

बहकी-विशे., लगले बहकि जाइक बुद्धिवाला, आनक कहल पर बिना उचित अनुचित सोचने चलैवाला। मै.

बहकौआ-विशे. बहकौनिहार। मै.

बहटब-क्रि., मालजालक जेरक चरैले अथवा बथान दिश एक संग चलब। मै.

बहटवार-विशे., हर मे बहैक योग्य बच्छा। मै.

बहटार-सं., मालजाल कें चरैले अथवा बथान पर जाइ ले एक संग हँकैक बेर आ प्रक्रिया। मै.

बहटारब-क्रि., मालजालक जेर कें एक संग हाँकब। मै.

बहत्तरि-संख्या, सात दहाँइ दू एकाँइक अंक। मै.

बहत्रा-विशे., १. उद्दण्ड उपद्रावी किशोर। २. ज्ञान ध्यानशून्य बूढ़। मै.

बहत्रासि-विशे., अलट विलट करैवाला आ उनट पुनट अन्ट सन्ट बाजि उठैवाला सुधि बुधिहीन बूढ़। मै.

बहतर-विशे., बात नहि मानिकय उद्दण्ड रहैवाला छौंरा, किशोर। मै.

बहता-विशे., हरदम प्रवाहित रहैवाला। प्रयोग—"बहता धार, बहता घाओ।" मै.

बहताओन-सं., कोल्हु बहैक बोनि। मैं.

बहती-सं., छोट आ पातर नाली। मै.

बहन्तू-विशे., पुंयोग अर्थात् बाहैक योग्य मालजाल। साँढ़ भैंसाक मैथुन योग्य। मैं.

बहनरि-सं., पोखरि मे पानि अबैक जाइक योग्य वाट। मै.

बहना-विशे., हरदम बहैत (खटैत) रहै मे दक्ष। मै.

बहपोत-सं., आडम्बरक विस्तार। मै.

बहपोर-विशे., दूर दूर पर पोरवाला बाँस आदि। मै.

बहब-क्रि., पानि आ बसातक गतिशील वेग युक्त रहब। बड़दक हर आदि मे चलब। मनुष्यक खटब। मै.

बहबह-विशे., उद्दण्ड आचरणवाला नेन्ना। मै.

बहबाएब-क्रि., मालजालक मैथुन कराएब। मै.

बहबाँड़ि-विशे., बहुमुखी वृत्तिवाला, निरर्थक बहुत प्रकारवाला। मै.

बहम-सं., अनर्गल जाड़ियाएल धारणा। उ. तत्सम

बहरघरा-सं., बहारक बैसै उठैवाला घर। मै.

बहरपेन-विशे., बहार दिश जड़िवाला खुट्टा। मै.

बहरा-अव्यय, बहार। मै.

बहराएब-क्रि., बहार होएब। घर सँ वा शून्य सँ प्रकट होएब। मै.

बहरिया-विशे., बहार रहनिहार। मै.

बहरी-सं., घर आङन सँ बहारक स्थान। मै.

बहलमान-विशे., बैलगाड़ी हुँकैवाला। मै.

बहलहा-विशे., अपन वासन सँ बहलवाला। मै.

बहलाएब-क्रि., मन कें फेरि विनोद मे भुलाएब। मै.

बहस-सं., १. तर्क वितर्कवाला विवाद। उ. तत्सम २. अपन विनयशीलता सँ वा शालीनता सँ बहार भ' जाइक प्रवृत्ति। मै.

बहसब-क्रि., विनयशीलता आ शालीनता तेजि मर्य्यादा तोड़ब । मै.

बहसाएब-क्रि., मर्य्यादा तोड़ैक प्रेरणा देब । मै.

बहसी-विशे., १. अपन झोंक मे सीमा तोड़ैवाला । सं., २. उद्दण्डता सँ अनुचितो करैक प्रवृत्ति । मै.

बहाएब-क्रि., प्रवाहित क' देब । मै.

बहाओ-सं., बहैक वाट । मै.

बहाँड-सं., भरि बाँहिक प्रमाण । मै.

बहाँड फूटब-क्रि., पारदर्शी पँघ भूर होएब । मै.

बहान-सं., १. बहैक क्रम । २. मालजालक मैथुन करैक समयक प्रभाव एवं सिलसिला । मै.

बहाना-सं., छलनामय कारण, लाथ । मै.

बहार-अव्यय, छादन सँ निकलि प्रकट मे । सं., प्रकाश । मै.

बहारन-सं., बहारि कय जमा कयल गदौस । मै.

बहारब-क्रि., बहारैक काज, बाढनि सँ घरद्वार स्वच्छ करब । मै.

बहारसोहार-सं., बाढनि सँ स्वच्छ करैक काज । मै.

बहारी-विशे., बहारक वस्तु वा लोक । मै.

बहाल-सं., नियुक्त, पदस्थापित । मै.

बहाली-सं., नियुक्ति, पदस्थापना । मै.

बँहि-अव्यय, गारि । प्रयोग—"धुर बँहि ।" मै.

बँहिआँ-विशे., १. बाँहि पर सघन धातुक चूड़ीसन गहना । २. काज मे हाथ बँटबैवाला । मै.

बहिक्रम-सं., अनुमानित वयस, तूर । मै.

बहिकिरनी-विशे., बहियाक स्त्री । मै.

बहिखत-सं., बहिया (बन्हुआ) बनबैक लेख । मै.

बहिङा-सं., बोझ उठबैवाला बाँसक फट्ठीक चापट दूनू छोर पर उतार लचकदार डन्डा । मै.

बहिङासारि-सं., धानक विशेष प्रभेद । मै.

बहिन-सं., सहोदरक सम्बन्ध जकाँ सम्वन्धी स्त्री । मै.

बहिन जसै-विशे., छोट बहिनिक पति । मै.

बहिनधी-विशे., बहिनिक बेटी । मै.

बहिनपा-सं., बहिनिक सम्बन्धक भाव । मै.

बहिना-विशे., बहिन जकाँ बनाओल संगी । मै.

बहिनो-विशे., बहिनिक स्वामी । मै.

बहिनौत-विशे., बहिनिक बेटा । मै.

बहिया-विशे., बन्धुआ मजदूर । मै.

बहियाएब-क्रि., पाछू लागल खेहारब । मै.

बहियार-सं., बाध, चौर । मै.

बहियारब-क्रि., पाछु लागि कय खेहारब । मै.

बहिरा-विशे., (अनादर मे) नै सुनैवाला । मै.

बहिरू-विशे., (अनादर मे) नै सुनैवाला । मै.

बहिला-विशे., बाँझ, बन्ध्या । मालजाल । मै.

बही-सं., लेखा जोखावाला नमहर पुस्तिका । मै.

बही हाँकब-क्रि., मरकी मे तन्त्र मन्त्रकय बड़द पर विशेष रूपक चेष्टा बनाकय दोसर दिश मरकी कें बिदा करैक विधि करब । मै.

बहीर-विशे., नै सुनैवाला । सुनैक शक्तिहीन । मै.

बहु-विशे., बधू, स्त्री, पत्नी । मै.

बहुआँ-सं., आङीक बाँहिवाला भाग । मै.

बहुआसीन-विशे., घरक पुतोहु । (अनादर मे) मै.

बहुगुना-विशे., बहुत प्रकारक काजक उपयोगी वर्तन । मै.

बहुजुतिया-विशे., बहुत लोकक प्रधानतावाला काज । मै.

बहुजूती-विशे., पत्नीक मुख्यता सँ चलैवाला । मै.

बहुत-विशे., अधिक, अनेक । मै.

बहुतर-विशे., अधिक प्रकार, अधिकतर । सं. तत्सम

बहुवात-सं., अनेक लोकक मत । मै.

बहुरंगी-विशे., अनेक रंगवाला । मै.

बहुर-सं., फेर फेर घूरि जाइक विचार । मै.

बहुरब-क्रि., घूरब, लौटब । मै.

बहुराएब-क्रि., घुमा लाएब । मै.

बहुरिया-विशे., नव कनियाँ । मै.

बहुरूपा-विशे., बहुत रूप धारण करैवाला । मै.

बहेड़-सं., खच्चर, ने घोड़ा ने गदहा । मै.

बहौआ-विशे., बहाओल गेलवाला । मै.

बा

बाइ-सं., पेटक वायु विकार । मै.

बाइ-विशे., १. वेश्या । २. राजस्थानक धीयनि । मै.

बाइन-सं., क्रमबद्ध गूहनि तथा गेंठ । मै.

बाईं बाईं करब-क्रि., लोभक द्वारें व्यग्र होएब । मै.

बाइभिरिंग-सं., औषध विशेष, विडङ्ग । मै.
बाइस-संख्या, दू दहाँइ दू एकाँइक अंक । मै.
बाइस-सं., पहिलुक दिनक रान्हल भोरक जलपान । प्रयोग—"बासि बेरहट ।" मै.
बाइसकिल-सं., दू चक्कावाला यान्त्रिक वाहन, साइकिल । अं. तद्भव
बाउ-विशे., स्नेहक सम्बोधन । मै.
बाउड़ी-सं., अति छोट जलाशय । मै.
बाउल-सं., बालू । मै.
बाएब-क्रि., मुह खोलिकय पसारब । मै.
बाओग-सं., खेत मे बीज (बीया) छीटैक प्रक्रिया । मै.
बाओग करब-क्रि., खेत मे बीया छींटब । मै.
बाओग बतियान-सं., जोत कोड़कय बीआ छींटैक क्रम । मै.
बाओन-विशे., भुट्ट शरीरवाला । मै.
बाओनबीर-विशे., अत्यन्त छोट देहक मनुष्य । मै.
बाँक-सं., बाँहिक गहना विशेष । मै.
बाकल-विशे., निःसार काठ, काठक बखलोइआ । मै.
बाकस-सं., पैघ बकसा, सन्धुकचा । मै.
बाँकी-सं., शेष । मै.
बाकुट-सं., आङ्ुर तानिकय पकड़ल वस्तुक मान । मै.
बाँकुर-विशे., टेढ़ मेढ़, स्थान स्थान पर उभर खाभर । मै.
बाखर-विशे., अनेर उत्तेजित भ' क' गरजिकय बजनिहार । मै.
बाखूबी-विशे., नीक जकाँ, सम्पूर्ण रूपें । प्रयोग—"ओ बाखूबी कहाँ स्वस्थ भ' सकल छथि ।" मै.
बाग-सं., उपवन, बगीचा, फलक वृक्ष समूह । मै.
बागगोटी-सं., कौड़ी लोकीकय क्रीड़ा विशेष । मै.
बागड़-विशे., मिझहर, मिश्रित । मै.
बागपट्टा खेलाएब-क्रि., ठकैक ध्येय राखब । मै.
बागब-क्रि., बीछि बीछिकय हटाएब । मै.
बागल-विशे., निरसल । मै.
बाघ-सं., हिंसक पशु । स्त्री० बाघिन । मै.
बाघी-सं., शरीरक शिराक ग्रन्थि पर पीड़ा आ फूलब । गिल्टी । मै.
बाङ-सं., तूरक फड़ । मै.
बाङ देब-क्रि., मुर्गाक बाजब । मै.
बाङनर-सं., मोट नाम जातिक केरा । मै.
बाँचब-क्रि., सुरक्षित रहब । मै.
बाचब-क्रि., कथा पुराण आदि कें शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठकय अर्थ कहब । पढ़ब । मै.
बाछनि-सं., बीछि बीछिकय अलग करैक क्रम । मै.
बाछब-क्रि., बीछि बीछिकय अलग अलग करब । मै.
बाछा-सं., गाइक पुरुष बच्चा । स्त्री० बाछी । मै.
बाज/बाझ-सं., १. चिड़ै पर झपट्टा मारैवाला पक्षी । २. कारा आ आनो गहना मे ध्वनि । मै.
बाज आएब-क्रि., विमुख होएब । मै.
बाजन-सं., शुभ अवसरक ढोल पिपही । वाद्य । मै.
बाजब-क्रि., मुह सँ शब्द बहारकय मनक भाव प्रकट करब । मै.
बाजा-सं., वाद्य । मै.
बाजाभूकी-सं., आपस मे बोलचाल । मै.
बाजार-सं., दूर धरि पसरल किनै बेसाहैवाला सब वस्तु मात्रक स्थायी स्थान । मै.
बाजी-सं., पण, कोनो क्रिया मे हारै जितैक स्थिति मे कयल नियमक निश्चित वस्तु अर्थात् काँति । मै.
बाजी मारब-क्रि., अक्लेश मे सफलता पावि लेब । मै.
बाजूबन-सं., बीच बाँहि परक चूड़ी जकाँ गहना । मै.
बाजे मेंही-विशे., कोनो मेंही अन्न । मै.
बाझ-सं., बाधा, बझैक स्थिति । मै.
बाँझ-विशे., बन्ध्या । मै.
बाझनि-सं., ओझराओट । मै.
बाझब-क्रि., कोनो वस्तु मे फँसि जाएब । बन्धन मे पड़ब । ओझरा जाएब । मै.
बाँझी-सं., गाछक डारि पर जनमल डारि कें फलशून्य करैवाला अन्य जातिक अंकुर । गाछक फल कें रोकैवाला रोग । मै.
बाट-सं., मार्ग, पेरा । मै.

बाँट-सं., प्रतिव्यक्ति कें कोनो वस्तु देबाक क्रम। मै.
बाट चलैत बटवारि-लोकोक्ति, बाटें बाटें चलैत अधलाह वा उपद्रव करब। मै.
बाट ताकब-क्रि., प्रतीक्षा करब। मै.
बाँटनि-सं., बाँटैक काज। मै.
बाट परक पानि तरपनै पाबी-लोकोक्ति, अपन प्रगतिक वेग मे आएल बाधा सँ लड़नै लाभ। मै.
बाँटब-क्रि., वितरण करब, बाँट करब। मै.
बाँट बखरा-सं., अलग अलग रूपें विभाग कय बँटैक प्रक्रिया। मै.
बाट बाट मे जाएब-क्रि., बिना कोनो उद्देश्यक व्यर्थ नष्ट होएब। मै.
बाटा-सं., बहुत पैघ वाटीक आकारक वासन। मै.
बाटा बाटी ताकब-क्रि., विलम्बधरि प्रतीक्षा। मै.
बाटी-सं., कटोरा। मै.
बाटें बाटें-अव्यय, रस्तैं रास्ता। मै.
बाटेंबाट-अव्यय, अनर्गल रूपें। मै.
बाटो बहिनो-सं., वाट पर रखैवाली सामा। मै.
बाड़ी-सं., तीमन तरकारी उपजैक योग्य घरक पास परोसक खेत। मै.
बाड़ी झाड़ी-सं., बाड़ीक संग गाछ वृक्षक भूमि। मै.
बाढ़नि-सं., घर आदि कें स्वच्छ करैक झाड़ू। मै.
बाढ़ब-क्रि., १. बढ़ैक क्रम होएब। २. बाढ़नि सँ स्वच्छ करब। मै.
बाढ़ि-सं., नव वर्षों आ जलक अम्बोही वृद्धि। मै.
बाण-सं., शर। सं. तत्सम
बाणप्रस्थ-सं., चारि आश्रमक एक भेद। घरक व्यवस्थाक अवस्थागुनें त्याग। सं. तत्सम
बाणी-सं., बोली। सं. तत्सम
बात-सं., वार्ता, वचन। मै.
बात गढ़ब-क्रि., अपन कल्पना सँ गप्पक संगति करब। मै.
बातचीत-सं., परस्पर वार्तालाप, सम्भाषण। मै.
बातर-विशे., दुःख वा रोग बढ़बैवाला। मै.
बातरोग-सं., वायु विकार सँ उत्पन्न व्याधि। मै.
बाताबाती-सं., परस्पर विवादक संग झगड़ा। मै.
बातास-सं., १. वसात। २. वसातक अबैक गर। मै.

बाती-सं., १. बाँसक चीरल खण्ड। २. दीपक टेमी। ३. प्रकाश, दीपक ज्योति। मै.
बातूनी-विशे., निरर्थक अधिक बजैवाला। अनावश्यक बजनिहार। मै.
बातेंबातें-अव्यय, प्रत्येक बात मे। प्रत्येक बात सँ। मै.
बातैंबात-अव्यय, बाते करैक क्रम मे। प्रयोग–"की कहू ओ दूनू गोटए बातैंबात झगड़ि उठला।" मै.
बाद-अव्यय, पाछू, पश्चात्। मै.
बादन-सं., बाजन बजबैक क्रम। मै.
बादब-क्रि., पाछू क' देब। बादक हेतु छोड़ब। मै.
बादरि-सं., बदरी। मै.
बादसाह-विशे.,विशाल भूखण्डक स्वतन्त्र राजा। मै.
बादी-सं., मासा, मांस बढ़ैवाला अर्श रोग, बाबासीर। मै.
बादुर-सं., १. रतिचर स्तनपायी पक्षी विशेष। २. घरद्वार मे दिनक अन्ध रहैवाला छोट चिड़ै। मै.
बाध-सं., धान उपजैवाला दूरधरि पसरल भूखण्ड। चौर। मै.
बाधक-विशे., बाधा (अड़चन) उपस्थित करैवाला। सं. तत्सम
बाधब-क्रि., बाधा करब। मै.
बाधबोन-सं., चौर आर जंगल समेत। मै.
बाधा-सं., अड़चन, विघ्न। सं. तत्सम
बान्ति-सं., बमन। सं. तत्सम
बान्ह-सं., १. ऊँचकय बान्हल चाकर बाट। २. नदीक जल कें रोकैक ऊँच चैरन। मै.
बान्हब-क्रि., कोनो वस्तु कें समेटि कय सक्कत गेंठ देब। विवश कय राखब। मै.
बान्हू-विशे., धोती वा शाड़ी विभिन्न स्थान पर बान्हि बान्हि कय अनेक रंग मे रंगल। मै.
बान-सं., देखू—"बाण"। सं. तद्भव
बानगी-सं., छेका, वस्तु केर नमूना। मै.
बानर-सं., मर्कट, कपि। स्त्री० बनरनी। मै.
बाना-सं., रूपरंग, छवि। मै.
बाना बनाएब-क्रि., छवि काढ़ब, विचित्र रूपरंग बनाएब। मै.

बाना बान्हब-क्रि., भाषण कय लोक (समाज) कें आनक विरुद्ध बनाएब । मै.
बानि-सं., आचरण एवं छवि छटा, स्वभाव । मै.
बानी-सं., १. बोली । २. प्रकृति । मै.
बाप-सं., पिता (सं० बप्र) । उ. तत्सम
बापी-सं., बाउड़ी । सं. तत्सम
बापूत-सं., बाप आ पुत्र (युग्म शब्द) । मै.
बाबन-संख्या, दू एकाँइ पाँच दहाँइक अंक । मै.
बाबब-क्रि., मुह फारब, खोलब । मै.
बाब्री-सं., बाउड़ी । विशे., बेहाल। मै.
बाबा-विशे., मातामह, पितामह तथा परमश्रेष्ठ । मै.
बाबाजी-विशे., साधु संन्यासी । मै.
बाबू भैया-विशे., समाजक सभ्य शिक्षित श्रेष्ठ । मै.
बाभन-विशे., साधारण ब्राह्मण । स्त्री० बाभनि । मै.
बाम-विशे., विपरीत, दहिनाक उनटा । मै.
बामन-विशे., भुट्ट । सं. तत्सम
बामनावतार-सं., बामन, भुट्ट शरीर धारणकय जन्म लेनिहार भगवान् । सं. तत्सम
बामरि-सं., धूआँक एकाएक तीव्र वेग । मै.
बामा-विशे., १. दहिनाक प्रतिकूल । २. स्त्री । मै.
बामा भाग-सं., दहिनाक विपरीत दिश । मै.
बामी-सं., माछक एक प्रभेद । मै.
बायोलिन-सं., सारङ्गीसन अंग्रेजी बाजा । अं. तत्सम
बार्ता-सं., बातचीत । मै.
बार-सं., गुप्ताङ्ग लगक केश, रोइयाँ । मै.
बारन-सं., निषेध, रोक । त्याग । मै.
बारब-विशे., त्यागब, समाज सँ बहिष्कृत करब । मै.
बारह-संख्या, दू एकाँइ एक दहाँइक अंक । मै.
बारहोबाट-विशे., सब दिश सँ खूजलवाला । मै.
बारहो बिरही-सं., अन्न सभक अनेक प्रकार । मै.
बाराबारी-सं., परस्पर बारैक क्रम । मै.
बारि-सं., घोड़ाक लगाम । मै.
बारिक-विशे., भोज आदि मे परसैवाला । मै.
बारिग-विशे., विरक्त, पृथक्, अलग । मै.
बारिस-सं., वर्षा । हि. तद्भव
बारी-सं., माछ मारैक हेतु लगाओल जाली । मै.
बारुद-सं., विस्फोटक पदार्थ । मै.
बारे-अव्यय, विषय मे । मै.
बाल-सं., बालु । विशे., बच्चा । सं. तत्सम
बालक-विशे., बच्चा । सं. तत्सम
बालग्रह -सं., बच्चाक भौतिक रोग । सं. तत्सम
बालचर-विशे., स्वयंसेवक, स्काउट सैनिक । सं. तत्सम
बालबच्चा-सं., किशोर आ दुधमुहाँक समूह । मै.
बाल विधवा-विशे., बच्चा वयस भय गेल विधवा । मै.
बालम-विशे., देखू—"बलमुआ" । मै.
बाला-सं., स्त्री जाति । मै.
बालापन-सं., छुटपन, बचपन । मै.
बालि-सं., मकइक दाना भरल (गुत्थल) सीस । मै.
बालिक-विशे., राजकीय विधिक् अधिकारी, चेतन, समर्थ । मै.
बालिका-सं., कन्या (जाति) । मै.
बाली-सं., कुण्डलक आकारवाला कानक गहना । मै.
बाली-विशे., विशेष रूपक परिचय मे जोड़ल शब्द । स्त्री० गामवाली, बुद्धिवाली आदि । मै.
बालूसाही-सं., विशेष प्रकारक मधुर । मै.
बालेसरी काँटी-सं., ढरुआ काँटी । मै.
बाँस-सं., वंशवृक्ष । मै.
बास-सं., सौरभ, सुगन्धि । मै.
बासठि-संख्या, दू एकाँइ छ दहाँइक अंक । मै.
बासन-सं., कोनो वस्तु रखैक वर्तन । मै.
बासब-क्रि., जल मे कोनो वस्तु कें बोरि कय राखब । मै.
बासमती-सं., मेंही आ सुबासित धान विशेष । मै.
बासा-सं., डेरा, अस्थायी ठिकान । मै.
बासि-विशे., बहुत कालक सिद्ध अन्न । मै.
बाँसी-सं., घास विशेष । मै.
बासीमुह-विशे., बिना मुहक परिष्कारें भूखल । मै.
बाह !-अव्यय, साधुवाद । प्रोत्साहनक शब्द । मै.
बाह-सं., मालजालक मैथुन, संयोग । मै.
बाहक-विशे., लय जाइवाला, उगहैवाला । सं. तत्सम

बाहन-सं., सवारी, जाइक साधन । सं. तत्सम

बाहब-क्रि., मालजालक सम्भोग करब । मै.

बाहर-अव्यय, बहार, प्रकट रूपें । मै.

बाहबाही-सं., प्रोत्साहन आ प्रशंसा । मै.

बाहा-सं., पानि बहैक बाट, नाला आ नाली । मै.

बाँहि-सं., शरीरक भुजा । अंग विशेष । मै.

बाँहीं-सं., भरि हाथक धातुक कस्सल चूड़ी । मै.

बाहुर कीचब-क्रि., बिना दाँतवाला बच्चाक अर्थात् छ मसिया बच्चाक मसकूर पर मसकूर जोर सँ जैसाएब । मै.

बि

बिअहुआ-विशे., विवाह मे भेल अथवा विवाह मे प्राप्त । मै.

बिअहुती-विशे., विवाह मे काज अबैवाला वा विवाहक उपयोगी वस्तु । मै.

बिकजी-सं., प्रातःकालक सुखाएल आ सरस फलक अल्पाहार । मै.

बिकट-विशे., अत्यन्त कष्टकर, भयावह । सं. तत्सम

बिकटाह-विशे., कठिनाइ, विकट जकाँ । मै.

बिकला (माल)-विशे., बिकाइवाला । मै.

बिकनी (माल)-विशे., बिकाइक हेतु उद्यत । मै.

बिकब-क्रि., बेचल जाएब । मै.

बिकराल-विशे., भयंकर । सं. तत्सम

बिकरी-सं., बेचैक काज, विक्रय । मै.

बिकरू-विशे., बिकाइक हेतु राखल । मै.

बिकल-विशे., दुखी, चिन्तित व्यथित । मै.

बिकलाहा-विशे., बिकाएलवाला । मै.

बिकसब-क्रि., फुलाएब । मै.

बिकाउ-विशे., बिकाइक योग्य । मै.

बिकाएब-क्रि., बिकरी होएब । मै.

बिकाठी-विशे., निर्लज्ज भ' क' उपद्रवी, हास विनोद रूपें उपद्रव कयनिहार । मै.

बिकान-सं., बिकयवाक विशेषता । मै.

बिकारी-सं., लेख मे बात कें घेरि कोष्ठ बन्न करैक संकेत । मै.

बिकाल-सं., वायुमंडलक उग्रता, अत्यधिक सर्दी, वसात, गरम आ वर्षा । मै.

बिकुआ-विशे., बिका गेलवाला । मै.

बिकौआ-विशे., विवाहार्थ स्वयं कें बेचि धन गढ़ैवाला । मै.

बिखबद-विशे., (लाक्षणिक) विषवत्, संकटजनक । मै.

बिखरब-क्रि., छींटल जकाँ पसरब । मै.

बिखराएब-क्रि., सगरे छींटब । मै.

बिखाइन-विशे., विष जकाँ तेज । मै.

बिखाह-विशे., छक द' लगैवाला । तमसाह । विष भरल । विषवाला । मै.

बिखिन्न/बिखीन-विशे., आन्तरिक दुख सँ दुखी । मै.

बिखिया-सं., जोर सँ पढ़ल जाइवाला साँपक मन्त्र । मै.

बिखुआ-विशे., विषक प्रयोग करैवाला । मै.

बिगड़न-सं., कड़ा बात, तमसाइक शब्द । मै.

बिगड़ब-क्रि., १. तमसाएब । २. बेमत होएब । ३. बताह बनब । ४. महामारीक प्रयोग होएब । मै.

बिगड़ाएब-क्रि., १. अधलाह क' देब, अनर्गल करब । २. तामस उत्पन्न क' देब । अव्यवस्थित करब । मै.

बिगड़ा बिगड़ी-सं., परस्पर विरोध । मै.

बिगड़ाह-विशे., तमसाह, अनट सनट । मै.

बिगड़ुआ-विशे., बिगड़ि कय साध करैवाला । मै.

बिगड़ैल-विशे., बात बात मे बिगड़ैवाला । मै.

बिगब-क्रि., फेंकब, निरसब । मै.

बिगलहा-विशे., फेंकलवाला । मै.

बिगहा-सं., प्राचीन कालक भूमिक सब सँ पैघ नापक मान । मै.

बिगाइ-सं., फेंकैक लगातार काज । मै.

बिगाड़ब-क्रि., अधलाह बनाएब, अव्यवस्थित करब । मै.

बिगाड़ि-सं., विरोध । परस्पर असमञ्जस । मै.

बिगुआ-विशे., फेंकल गेल, फेंकैक योग्य । मै.

बिगुल-सं., स्वचालित यन्त्रक चेतबैवाला उच्च ध्वनि । मै.

बिघटन-सं., अशुभ घटना, गड़बड़ी । संकट । मै.

बिच्चा-सं., अंकुरवाला बीजक गाछ । मै.

बिच्ची-सं., बीजक हेतु मेंही दाना । मै.

बिच्छा-सं., बीछ, कीट विशेष । मै.

बिच्छी-सं., १. बीछैक काज । २. पैरक आङ्ुर सभक गहना । मै.

बिच्छू-सं., डंक मारैवाला बिखाह कीट वृश्चिक । मै.

बिचकब-क्रि., टेढ़ मेढ़सन चमकब । मै.

बिचकाएब-क्रि., मुह अथवा कोनो अंग कें विकृत रूपें चमका कय असम्मति प्रकट करब । मै.

बिचड़ा-सं., गाछवाला धानक बीया । मै.

बिचबचाओ-सं., दू व्यक्तिक लड़ाइक बीच मे पड़ि कय दूनू दिश लड़ाइ सँ बँचबैक चेष्टा । मै.

बिचबिचो-सं., दूक अन्तरक स्थान । मै.

बिचबिचौआ-विशे., दूक बीच मे रहैवाला । मै.

बिचलब-क्रि., विचलित होएब, डगमगाएब, अधीर होएब । मै.

बिचलित होएब-क्रि., अधैर्य करब । मै.

बिचला-विशे., बीच मे स्थित आ रहैवाला । मै.

बिचें-अव्यय, समयक भीतर । मै.

बिछका-सं., अबोध अर्थात् ससरैवाला नेन्नाक चुटकी ल' क' कोनो वस्तु उठा उठाकय खाइक चेष्टा । मै.

बिछनि-सं., बीछैक प्रकार एवं काज । मै.

बिछनिहार-विशे., बीछैवाला । स्त्री० बिछनिहारि । मै.

बिछनी-विशे., बीछैवाली । मै.

बिछलहा-विशे., बिछलवाला । मै.

बिछाइ-सं., बीछैक कार्यक्रम । मै.

बिछाएब-क्रि., धरती पर पसारब । विथारब । मै.

बिछाओन-सं., ओछाकए सुतैक वस्तु, विथारिकय बनाओल शय्या । मै.

बिछाँड़ि-सं., मनोनुकूल वस्तुक प्राप्ति करैक अधिक तारतम्य वा तर्क वितर्क । मै.

बिछाबीछी-सं., कोनो वस्तु बीछैक लगातार क्रम एवं ओदाउजि । मै.

बिछिया-सं., पैरक आङ्ुरक गहना विशेष । मै.

बिछुआ-सं., गहना जकाँ हाथक आङ्ुर मे पहिरल गुप्त घातक अस्त्र । मै.

बिछुड़न-सं., वियोग, विरह अलगाओ । मै.

बिछुड़ब-क्रि., अलग होएब । वियोगक दुख होएब । विरह होएब । छूटब । मै.

बिछुड़लहा-विशे., वियोग भेलवाला, अलग भेल वाला, छुटलहा । मै.

बिछोह-सं., विरह । मै.

बिछौटा-विशे., नीक नीक बीछिकय बहार कयल । मै.

बिछौना-सं., देखू—"बिछाओन" । मै.

बिछौनी-सं., बिछबैक पसारैक काज । मै.

बिज्जी-सं., छोट पशु विशेष । नेवला । मै.

बिज्जू-सं., बीज सँ बहराएल गाछ । मै.

बिजकब-क्रि., कनैक क्रम मे मुह विकृत बनब । मै.

बिजकाएब-क्रि., कनैक क्रम मे मुह विकृत करब । मै.

बिजकाठी-विशे., प्रत्येक बात मे विवाद रोपैवाला । मै.

बिजकी-सं., बात बात मे कनै लेल मुह विकृत बनैक अभ्यास । मै.

बिजली/बिजुली-सं., विद्युत् । मै.

बिजलोका-सं., छिटकैत विद्युत् । मै.

बिजहो-सं., समूह कें भोजन करैक हेतु विनीत प्रार्थना । भोजन प्रस्तुत होइक सूचना । मै.

बिजाठी-विशे., असंगत बात गढ़ैवाला । मै.

बिजाती-विशे., विजातीय, भिन्न जातिवाला । सं. तद्भव

बिजाती रंग-सं., भिन्न प्रकारक अधलाह चालि ।

बिजाधर-सं., मुर्दा खोरैवाला बाँसक डन्टा । मै.

बिजे-सं., १. विजय । २. देखू—"बिजहो" । मै.

बिजो खेलाएब-क्रि., भगताक उपर देवताक अयलाक ढ़ंग धरैक लेल अंग चालन कय कूदब । मै.

बिजोठ-सं., बाँहि परक गहना विशेष । मै.

बिझाइन-विशे., बीझ लागल जकाँ । मै.

बिझाएब-क्रि., बीझ लागब । मै.

बिझाठ-विशे., बीझ भरल । मै.

बिझाह-विशे., बीझ लागलवाला । मै.

बिझौआ-विशे., बीझ लागलवाला लोहा । मै.

बिटू-सं., तर्जनी आ औंठा सँ दाबि कय जोर सँ चमड़ा कें पकड़ैक चेष्टा । मै.

बिट करब-क्रि., चिड़ैक उड़ैत मल छोड़ब । मै.

बिटगर-विशे., अनेक आ अधिक शाखा प्रशाखाक अंकुर भरल गाछ । मै.

बिटगरहाँ-सं.; कोनो संख्या कें एगारह गुना सँ बीस गुना करैक रीति। मै.

बिटगहाँ पढ़ब-क्रि.; (लाक्षणिक) अनेक राग द्वेष वाला बात कय बहाना करब। मै.

बिटण्डी-विशे., व्यर्थ असंगत विवाद कय कें अपन मत सिद्ध करैक यत्न करैवाला। सं. तद्भव

बिटारि-सं., घरहञ्ज, वंश विच्छेद। मै.

बिटिया-विशे., अधिक दुलारू बेटी। मै.

बिटियाएब-क्रि., गम्भीरता सँ बात पकड़ि कय प्रकाश मे आनब। मै.

बिठुआ-सं., देखू—"बिठू"। मै.

बिड़बा-सं.; माथ पर भार कें स्थिर करैवाला पैच चक्र जकाँ बीच मे शून्य वस्तु। मै.

बिड़रो-सं., चक्रवात। वसातक चक्कर। मै.

बिड़हरा-सं., बाँस वा सीकी सँ बीनल एहन अर्ध गोल लम्बाकार वासन जकर एक खप्पा मे दोसर खप्पा पैसा कय बन्न कयल जाइछ। मै.

बिड़ार-सं., बीआ पाड़ैवाला खेत। मै.

बिड़ारू-विशे., बिड़ार सँ उखाड़ल धानक बीआ। मै.

बिड़िया-सं.; बेसन मे साग लपेटिकय बनाओल सुखाओंत। मै.

बित्ता-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी आङुर पसारि कय बनाओल प्रमाण। मै.

बित्थुति-सं.; बेर पर काज मे नहि अबैक स्थिति। अवसरक खगाट। मै.

बितना-विशे., बीत प्रमाणवाला अर्थात् अत्यन्त छोट आकार प्रकारवाला। मै.

बितराएब-क्रि., गोटेक आधके भेटब। मै.

बितरोचार-सं., यत्र तत्र छींटैक चेष्टा। मै.

बितलहा-विशे., बीतलवाला। मै.

बितहां-विशे., बीत भरिक लोक। मै.

बिताएब-क्रि., यापन करब, समय काटब। मै.

बितौआ-विशे., बितबैवाला। मै.

बिथरब-क्रि., पसरब। मै.

बिथारब-क्रि., पसारब। मै.

बिद्दति-सं., उपद्रव सँ नाश। मै.

बिद्युत्लता-सं., बिजलोका। सं. तत्सम

बिदकब-क्रि.; आदंक सँ चौंकिकय प्रतिक्रिया करब। मै.

बिदकाएब-क्रि., बल सँ आदङ्क द' क' चौकाएब। मै.

बिदग्ध-सं., १. पण्डित। २. अत्यन्त क्रोध आ दुख सँ घोर, व्याकुल। सं. तत्सम

बिदबिदाएब-क्रि., निरन्तर गोटेक आधके बुन्नी सँ वर्षा होइत रहब। मै.

बिदरब-क्रि., फाटब, विदीर्ण होएब। मै.

बिदल-विशे., विकसित, फुलाएल। मै.

बिदा-सं., प्रस्थान, यात्रा। उ. तद्भव

बिदाइ-सं., प्रस्थान कालक सत्कार। मै.

बिदागिरी-सं., बिदा (यात्रा) करैक विधि वा काज। उ. तत्सम

बिदार-सं., फाट, विदीर्ण होइक चिह्न। मै.

बिदारण-सं., फाड़ब। सं. तत्सम

बिदारब-क्रि., फाँड़ब। मै.

बिदिर बिदिर-अव्यय, मन्द मन्द लगातार वर्षा। मै.

बिदेशिया-विशे., परदेश मे रहैवाला। मै.

बिदेह-सं., १. मिथिला। विशे., २. विशाल देहवाला। ३. बिना देहवाला। सं. तत्सम

बिदोरब-क्रि., १. प्रकट करब। २. अलग अलग कय ताकब। मै.

बिधकरी-विशे., विवाहक अवसर पर वर बधु सँ विधि करैक मार्गदर्शक स्त्री। सं. तद्भव

बिधनब-क्रि., वस्तुजात कें अव्यवस्थित आ उनट पुनट कय ताकब। मै.

बिधनी-सं.; ताना मे बीनल कपड़ा चौपेतैवाला काठी। मै.

बिधवा-विशे., मूइल पतिवाली। सं. तद्भव

बिधान-सं., शास्त्रक अथवा राजकीय नियम। सं. तत्सम

बिधार-विशे., थोड़ मात्रावाला। मै.

बिधि-सं., १. विधाता। २. कर्तव्यक औचित्य तथा नियम। सं. तत्सम

बिधुआएब-क्रि., १. ठंढाक द्वारें शक्तिहीन भेला सँ हाथ पैरक आङुरक टेढ़ भ' क' संचारहीन होएब। २. दुख, पीड़ा सँ मुहक मलिन रहब। मै.

बिन्दा-सं., बिन्दु, अनुस्वारक चिह्न, शून्यक अंक। ठोप। गोलाकार छोट चिह्न। मै.

बिन्दी-सं., शोभाक हेतु बनल कपाड़ मे सटैवाला छोट अनेक रंगक बिन्दु सन पदार्थ। मै.

बिन्दु-सं., अत्यन्त छोट जल कण। ठोप। शून्य चिह्न। सं. तत्सम

बिन्ना-सं., देखू—"बिन्दा"। मै.

बिन्यास-सं., विशिष्ट रूपक आयोजन। सं. तत्सम

बिन्हकी-विशे., डंक मारि पीड़ित करैवाला कीड़ा। मै.

बिन्हब-क्रि., डंक मारि विष सँ पीड़ा देब। मै.

बिन्हा-विशे., १. बिन्हैवाला। २. (लाक्षणिक) मर्मभेदी बात सँ उत्तेजना दैवाला। मै.

बिन-अव्यय, बिना। सं. तद्भव

बिनकर-विशे., कोनो वस्तु बीनैक व्यवसाय करैवाला। मै.

बिनकराइ-सं., बीनैक व्यवसाय। मै.

बिनका-सं., अनेक मेंही छोट बिन्दुक चिह्न। मै.

बिननिहार-विशे., बीनैक काज करैवाला। मै.

बिनबिन करब/बिनबिनाएब-क्रि., स्वच्छन्दता सँ असमय मे अनेर बूलब। मै.

बिनबैया-विशे., बीनैवाला आ बिनबैवाला। मै.

बिनलहा-विशे., बीनलवाला। मै.

बिना-अव्यय, अभाव मे, बगैर, बेगैर। सं. तद्भव

बिनाइ-सं., बीनैक विशेषता, विधि आ ढंग। मै.

बिनाएब-क्रि., एक एक मे एक एक कें अर्थात् तानी मे भरनी कें गूहिकय विस्तार रूप देयाएब। मै.

बिनाओन-सं., १. बीनबैक पारिश्रमिक। २. बीनैक शैली। मै.

बिनिया-सं., बीनैक निरन्तर काज। मै.

बिनु-अव्यय, बिना। मै.

बिनुआ-विशे., बीनि कय बनाओल। मै.

बिनोला-सं., चरखा वा टकुड़ी मे सूत बहार करैक लेल फलकाओल तूरक लपेटन, पीर। हि. तत्सम

बिनौआ-विशे., बीनि कय प्रस्तुत कयल। मै.

बिनौट-सं., बीनैक शैली वा विशेषता। मै.

बिपटइ-सं., नाच नाटक मे हास्यक अभिनय। मै.

बिपटा-विशे., नाच नाटकक हास्यक नायक। मै.

बिपतब-क्रि., विपत्ति मे पड़ब। मै.

बिपति-सं., संकट, अनहोनी, अधलाह घटना, विपत्ति। सं. तद्भव

बिपतिक मारल-विशे., दुर्दशाक भोग मे पड़ल। मै.

बिपति पड़ब-क्रि., पतिक विनाश। मै.

बिपतिया-सं., विपत्ति, संकट, दुर्दशा, मृत्यु। मै.

बिपन/बिपन्न-विशे., संकटग्रस्त। सं. तद्भव

बिपाक-सं., १. अन्नक अपच। २. परिणाम। सं. तत्सम

बिपंत-सं., विपत्ति। सं. तद्भव

बिफरब-क्रि., एकाएक गरजि कऽ बिगड़ि उठब। हि. तत्सम

बिभरम-सं., बिभ्रम। विलास एवं धोखा। मै.

बिम्ब-सं., छाया, मण्डल। सं. तत्सम

बिमन-विशे., दुखी, क्रोध भरल। सं. तद्भव

बियाएब-क्रि., प्रजनन करब, गर्भ सँ सन्तान कें उत्पन्न करब। मै.

बियान-सं., प्रजनन करैक क्रम। धान आदिक गाछक जड़ि सँ अनेक अंकुर फेंकैक क्रम। मै.

बियोड़ी-सं., कोनो वस्तुक बीया के बेसन मे मिलाकय अदौड़ी जकाँ बनाओल पदार्थ। मै.

बिर्त-विशे., वृत्त, प्रस्तुत, उपस्थित। सं. तद्भव

बिर्ता-सं., वृत्ता, जीविकाक हेतु देल भूमि। मै.

बिरखी-सं., मालजालक मुहक घाओ। मै.

बिरखी कटाएब-क्रि., बिरखी रोग कें कटवाकय जड़ि सँ उखाड़ि देब। मै.

बिरद-सं., कीर्तिगान। मै.

बिरनियाँछत-सं., बिरनीक छत्ता (घर) जकाँ बनल घाओ। मै.

बिरनी-सं., विषवाला डंक मारनिहार मधुमाछी सन पतङ्गकीट। मै.

बिरलहा-विशे., बीरल अर्थात् अंग अंग छोड़ाओल वाला तूर। मै.

बिरले/बिरलेक-अव्यय, गोटेक, एक आध मात्र। मै.

बिरस-विशे., १. विकृत रसवाला भीजल वस्तु। २. विमत, स्नेहरहित। मै.

बिरह-सं., वियोग, विछोह। सं. तद्भव

बिरहा-विशे., वैरागवाला गीत। मै.

बिरहिन-विशे., वियोगवाली । पु० विरही । मै.

बिरहोबाँट-सं., लुटाकय नाश । मै.

बिराध-विशे., (लाक्षणिक) क्रूर । मै.

बिरान-विशे., १. जन्तुशून्य । २. सम्बन्ध सँ बाइली । आन । मै.

बिरानबै-संख्या, नौ दहाँइ दू एकाँइक अंक । मै.

बिरासी-संख्या, दू एकाँइ आठ दहाँइक अंक । मै.

बिराह-सं., १. पीड़ा सँ उपजल वैराग्य । २. फसिल लागल खेत मे गर मारैले हरक जोत । मै.

बिराहब-क्रि., खढ़ कें नष्ट करैले फसिल लागल खेत मे हर फेरब । मै.

बिरिछ-सं., गाछ, वृक्ष । सं. तद्भव

बिरिज-सं., ब्रीज, बान्ह । अं. तद्भव

बिरित-विशे., वृत्त, तैयार, प्रस्तुत । मै.

बिरुझब-क्रि., विरोध करब । मै.

बिरो-सं., व्यवस्था, प्रबन्ध । मै.

बिल !-अव्यय, बिलाइ कें बैलबैक शब्द । मै.

बिलकुल-अव्यय, सम्पूर्ण रूपें । मै.

बिलखब-क्रि., हृदय सँ कानब । मै.

बिलग-विशे., सम्पर्करहित । मै.

बिलटब-क्रि., दुरवस्था मे पड़ि जाएब । दुर्दशाक द्वारें नष्ट होएब । मै.

बिलटलहा-विशे., नष्ट भेलवाला । मै.

बिलटा-विशे., विनष्ट । मै.

बिलटौआ-विशे., बिलट'बैवाला । मै.

बिलड़नोच-विशे., बिलाड़िक नोचलसन । मै.

बिलड़ा-विशे., बिलाड़िक आकार प्रकारवाला । मै.

बिलबिलाएब-क्रि., ऊँटक बाजब । मै.

बिलबिलाओन-विशे., लगातार घटैवाला । मै.

बिलम्ब-सं., देरी । मै.

बिलमब-क्रि., देरी करब, रुकब । थम्हब । मै.

बिलमाएब-क्रि., रोकब, देरी करैक हेतु बाधा करब । मै.

बिलय-सं., अन्तर्भाव, विलीन होइक भाव । मै.

बिलहा-सं., बाँट, वितरण । मै.

बिलहा करब-क्रि., बाँटब, बिना दामक देब । मै.

बिलहाबाँट-सं., बखरा बाट । मै.

बिलाइ-सं., घर द्वारक जीव विशेष । मै.

बिलाएब-क्रि., विलीन होएब, आलोप होएब । मै.

बिला देब-क्रि., विलीन क' देब । लोप क' लेब । मै.

बिलाड़-सं., घरौआ जीव (पशु) क पुरुष जाति । मै.

बिलाँयत-सं., पश्चिमीय देश विशेष, अंगरेजक देश, ब्रिटेन । मै.

बिलायती-विशे., बिलाँयतक वासी तथा होइवाला । मै.

बिलेक-सं., ब्लैक, चोरि सँ बिकरी । अं. तद्भव

बिलेट-सं., दाढ़ी कटैवाला पत्ती, ब्लेड । अं. तद्भव

बिलैनी लागब-क्रि., निश्चितो वस्तुक लोप होएब । मै.

बिलैया-सं., भीतर अर्थात् घर दिश सँ केवाड़ बन्न करैक काठक यन्त्र । मै.

बिलोड़ब-क्रि., मथब, घोंकब । मै.

बिलो बिलो करब-क्रि., बिलाड़ि जकाँ भगबैक चेष्टा कय अपमानित कर' लागब । मै.

बिलौकी-सं., नव नव कनिया आ वर कें गामक घरें घरें ल' जा क' लोक कें देखबैक विधि । मै.

बिष्टी-सं., केवल गुप्ताङ्ग मात्रक आच्छादन हेतु चारि आङुर चाकर कपड़ा । मै.

बिष्ठा-सं., मनुष्यक त्यागल मल । मै.

बिसखब-क्रि., मालजाल कें दूध नहि होएब तथा दूध होएब बन्न भ' जाएब । मै.

बिसखोपड़ा-विशे., (लाक्षणिक) वैमनस्य पसारैवाला । विरोध करबैवाला । मै.

बिसनाएब-क्रि., स्वप्न मे बाजब आ भावना के व्यक्त करब । मै.

बिसनारि-सं., जड़ीक वनस्पति विशेष । मै.

बिसपिपरी-सं., बीन्हैवाला, डंक मारैवाला कीट आ पतंग । मै.

बिसफोटक-विशे., विस्फोट करैवाला । (लाक्षणिक) गुप्त बात कें वेग सँ प्रकट करैवाला । मै.

बिसबिसाएब-क्रि., भीतर दिश छेदैत सन गतिशील वेदना होएब । मै.

बिसबिसी-सं., भीतर दिश छेदैत सन बढ़ैत शीत । मै.

बिसरब-क्रि., विस्मरण करब, मोन नहि रहब । मै.

बिसरभोर-विशे., बिसरैवाला, सुधि नै रखैवाला । मै.

बिसराह-विशे., बिसरि जाइक, सुधि नै रखैक प्रकृतिवाला । मै.
बिसरि जाएब-क्रि., मोन नहि राखब । मै.
बिसहरा-सं., मनसा देवी । नाग देवता । मै.
बिसाइन-सं., मूइल मांसक दुर्गन्ध । मै.
बिसाएब-क्रि., शंकित सम्भावित आपत्तिक होएब । मै.
बिसाँढ-सं., कमल फूलक कन्द । मै.
बिसाँढ़ी-सं., १. माछ विशेष । २. कमल फूलक डंटी लागल जड़ि । मै.
बिसोबन्हन-सं., (लाक्षणिक) नाम मात्रो गहना । मै.
बिहखारब-क्रि., १. बीयाक हेतु आन जातिक अन्नक सीस कें छाँटि कय बहार करब । २. गाछ आ घास कें चीरि कय दून् कात टारब । मै.
बिहँगड़ा-सं., मालजालक रोग विशेष । मै.
बिहटार-सं., उच्चाटन, उपटि जाइक प्रवृत्ति । मै.
बिहटारब-क्रि., उपटाकय दूर हटाएब । मै.
बिहबिहटार-सं., उपटाकय दहो दिश फेका जाइक स्थिति । मै.
बिहराओन-विशे., बिहारिक लच्छनवाला । मै.
बिहरियाहाल-सं., बिहारिक संग वर्षा भेला पर भूमिक सरसता । मै.
बिहाग-सं., उषा काल मे गबैवाला राग । मै.
बिहान-सं., उषाकाल, परात । मै.
बिहार-सं., १. भारत संघक एक राज्य । २. आनन्द भोग । मै.
बिहारि-सं., प्रचण्ड वेगवाला वसात, अन्हड़ । मै.
बिहारि वसात बनब-क्रि., अन्हड़ जकाँ गति मे वेग होएब । मै.
बिहि-सं., विधि । सं. तद्भव
बिहुन-विशे., विहीन । सं. तद्भव
बिहुँसब-क्रि., १. कनेक हँसैक क्रम करब । २. (लाक्षणिक) रस सँ फलक विदीर्ण होएब । मै.
बिहुँसी-सं., मुसकुराइक छवि । मै.
बिहौती-विशे., विवाहक उपयोगक योग्य वा उपयोग कयल । मै.

बी

बीघा-सं., देखू—"बिगहा" । मै.
बीच-सं., १. अन्तर । २. मध्य । मै.
बीछ-सं., डंक मारैवाला नाम पातर विषैला सरीसृप छोट जीव । मै.
बीछब-क्रि., एक एककय उठाएब, चूनब । मै.
बीछा बीछी-सं., बीछैक नियत आवश्यक काज । मै.
बीज-सं., बीया, उत्पत्तिक आदि । मै.
बीजी पुरुषा-विशे., वंशक मूल प्रवर्तक । मै.
बीझ-सं., माटि पानिक संयोग सँ उत्पन्न लोहक विकार । मै.
बीट-सं., जड़ि सँ उगल अंकुरक कारणें घनीभूत बाँस आदि गाछक समूह । मै.
बीड़-सं., गहना विशेष । मै.
बीड़ा-सं., १. लगाओल पानक खिल्ली । २. घैल आदि वस्तु कें स्थिर रखै लेल पहिया जकाँ वा कुण्डल जकाँ आधार । मै.
बीड़ी-सं., १. खढ़ आ नारक मोड़ि कय बैसै लेल बनाओल नूड़ी । २. धूम्रपानक वस्तु । मै.
बीड़ुआ-सं., वर्तन सँ माण पसबै लेल वर्तनक मुह पर देमवाला घासक नूड़ा । मै.
बीणा-सं., वाद्य विशेष । सं. तद्भव
बीत-सं., १. वित्त, सम्पत्ति । २. हाथ पसारला पर औंठा सँ तर्जनी धरिक मान । मै.
बीतब-क्रि., कालक पाछू पड़ब, समय कटब । मै.
बीत वासन-सं., धनक रूप मे छोट सँ पैघ सब वस्तुक समूह । मै.
बीध-सं., अवसर परक व्यवहार । विधि । सं. तद्भव
बीन-सं., साँप मोहैवाला बँसुलीसन बाजा महुअर । मै.
बीभत्स-विशे., घृणित । सं. तत्सम
बीम-सं., कोठाक छत कें अड़बैवाला सोझ चौरस काठ । मै.
बीमा-सं., जीवनक संरक्षाक हेतु बचत योजनाक नियम विशेष । मै.
बीया-सं., बीज । मै.
बीयावान-विशे., प्रचारित, प्रकाश मे आएल । प्रयोग—"एक कान दू कान बीयावान ।" मै.
बीर-विशे., बहादुर । मै.
बीरपात-सं., केरा सँ सब सँ नव बहराएल पात । मै.

बीरन-सं., जमल तूर कें अलग करैक काज । मै.

बीरब-क्रि., जमल तूर कें अंग अंग छोड़ाकय फलकाएब । मै.

बील-सं., भूर, बिल, बीहरि । सं. तद्भव

बीस-संख्या, दू दहाँइ शून्य एकाँइक अंक । मै.

बीसी-सं., बीस संख्याक अवधिक मान । मै.

बीहन-सं., सघन घासपात कें बीच सँ फाड़ैत वाट बनबैक काज । मै.

बीहनि-सं., बीया लेल निहुछल अन्न । मै.

बीहड़-विशे., सघन आ भयंकर जंगल । मै.

बीहब-क्रि., सघन घासपात दूनू कात उनारैत वाट बनाएब । मै.

बीहरि-सं., भूर, भूमिक छेद बिल । मै.

बु

बुइ/बुइआ-सं., धीयापूता कें डेरबैक हेतु भयंकरता जनबैले कीटक निर्देश । मै.

बुइर-सं., स्त्रीक गुप्ताङ्ग । मै.

बुक्का फाड़िकय कानब-क्रि., एकाएक जोर सँ कानि उठब । मै.

बुकना-सं., चूर्ण, गरदी करैक साधन, बूकैक वस्तु । मै.

बुकनी-सं., बनाओल गरदी, चूर्ण । मै.

बुकलहा-विशे., बूकलवाला । मै.

बुकाइ-सं., बूकैक निरन्तर कार्य प्रणाली । मै.

बुकाएब-क्रि., अनका द्वारा चूर्ण (गरदी) बनाएब। मै.

बुकान-सं., बूकैक विशेषता । मै.

बुकाबुकी करब-क्रि., बराबरि व्यर्थ बूकैक क्रम राखब । मै.

बुक्रिया-सं., बूकैक आवश्यक काज । मै.

बुकौर फाटब-क्रि. रहि रहि के कनैक वेग होएब । मै.

बुखार-सं., ज्वर । उ. तत्सम

बुच्च-विशे., ठोस भ' जाइक कारणें छोट आ घोंकचल । मै.

बुच्च होयब-क्रि., सुकुचि जाएब । मै.

बुच्चरखाना-सं., कसाइखाना, पशुक बधक स्थान । मै.

बुच्ची-विशे., अतिप्रिय कन्या । मै.

बुचकट-विशे., ओछ, उचित नाप सँ छोट । मै.

बुझगर-विशे., सरलता सँ बूझैक जनैक योग्य । मै.

बुझनुक-विशे., शीघ्र बुझैक बुद्धिवाला, बोधगर । मै.

बुझब सुझब-क्रि., जानकारी लेब, हालिचालि जानब । मै.

बुझबैया-विशे., बुझौनिहार । मै.

बुझलहा-विशे., बूझलवाला । मै.

बुझाएब-क्रि., बोध कराएब, जनाएब, ज्ञान कराएब । मै.

बुझारति-सं., वादी प्रतिवादी दूनू पक्षक बात बूझि कय पंचैती । मै.

बुझान बूझब-क्रि., (लाक्षणिक) बूझैक विपरीत आपत्ति भोगब । मै.

बुझौअलि-सं., कोनो बातक अर्थ बहार करब । प्रयोग–"जी जान छोड़ि क' चारि टाँग ककरा ।" पहेली । मै.

बुझौनिहार-विशे., ज्ञान दैवाला, बुझबैवाला । मै.

बुझौनी-सं., बुझबैक क्रम लागल काज । मै.

बुट्टा-सं., धान आदि फसिलक जड़ि एवं गाछ । प्रयोग–"धानक जेहन बुट्टा तेहन सीस नै भेलै ।" मै.

बुट्टी-सं., काटल गाछक जड़ि । मै.

बुटाम-सं., देखू—"बट्टम" । मै.

बुटियाएब-क्रि., उपर सँ काटि काटि जड़ि मात्र गाछक छोड़ब । मै.

बुड़ब-क्रि., नष्ट होएब, धनक व्यर्थ जाएब । मै.

बुड़राक-विशे., जानक डर नहि रखैत आ नीक अधलाह बिना सोचनै हूलैवाला । मै.

बुड़लहा-विशे., नष्ट भेलवाला । मै.

बुड़ाएब-क्रि., व्यर्थ नष्ट करब । मै.

बुड़ाक-विशे., व्यर्थ धनजन गमवैक प्रवृत्तिवाला । मै.

बुड़ाङ-विशे., उच्च कोटिक बूड़ि, मूर्ख विवेकशून्य । मै.

बुड़िआह-विशे., बूड़ि जकाँ लगैवाला । मै.

बुड़िआहि-विशे., बूड़ि लोकक जकाँ चालि । मै.

बुड़ित/बुड़ित्व-सं., बूड़ि लोकक गुण । मै.

बुड़िधनही-विशे., बूड़ि मे सर्वश्रेष्ठ । मै.

बुड़िपन-सं., बूड़ि लोकक स्वभाव । मै.

बुड़िबक-विशे., विचार शक्तिकहीन मूर्ख । मै.

बुड़िवकहा-विशे., बेवकूफ स्वभाव भरल। मै.
बुड़िबकी-सं., मूर्खता, अविवेक। मै.
बुड़ियाएब-क्रि., स्वभाव आ चालि सँ बूड़ि बनि जाएब। मै.
बुड़ियाह-विशे., बूड़ि बनल स्वभाववाला। मै.
बुड़ियाहा-विशे., बूड़िक स्वभाव भरलवाला। मै.
बुड़ियैनी-सं., नष्ट होइक स्थिति, बूड़ि बनैक गुण। मै.
बुड़ौअलि-सं., बारम्बार नष्ट करैक प्रवृत्ति। मै.
बुढ़गोड़-विशे., बूढ़सन भय गेल। मै.
बुढ़पन-सं., बूढ़क अवस्था। मै.
बुढ़बा-विशे., (अनादर मे) बूढ़। मै.
बुढ़हा-विशे., (आदर मे) बूढ़। मै.
बुढ़ाइ-सं., बूढ़क अवस्था। मै.
बुढ़ाएब-क्रि., बूढ़ जकाँ लागब। मै.
बुढ़ाओन-विशे., बूढ़सन लगनिहार। मै.
बुढ़ाँठ-विशे., वयसेँ बूढ़ जकाँ बनल। रूपरंग सँ बूढ़सन लगैवाला। मै.
बुढ़ारी-सं., वृद्धावस्था। मै.
बुढ़िया-विशे., (अनादर मे) बूढ़ि स्त्री। मै.
बुढ़ौ-विशे., उपहसनीय बूढ़। मै.
बुत्त-विशे., निसाँ (मद) सँ ज्ञानध्यानहीन। मै.
बुत्ता-सं., शारीरिक शक्ति, बल। मै.
बुतें-अव्यय, बलक द्वारा। मै.
बुद्ध-विशे. १. अवतार विशेष, एतिहासिक पुरुष, शुद्धोदन राजाक पुत्र। २. महाज्ञानी, तत्त्वज्ञ। सं तत्सम
बुद्धि-सं., ज्ञान, अकिल सं. तत्सम
बुद्धिमान्-विशे., बुद्धिवाला। सं. तत्सम
बुद्धू-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.
बुदबुद करब-क्रि., वर्तन मे रान्हल जाइत अन्न मे आँचक शब्द। मै.
बुदबुदाएब-क्रि., अस्पष्ट आ नीक जकाँ नै सुनि सकैवाला ध्वनि मुह सँ बहार करब। मै.
बुदबुदी-सं., १. अस्पष्ट ध्वनि। २. पातर बुन्न सँ निरन्तर वर्षा। मै.
बुधि-सं., बुद्धि। सं. तद्भव
बुधिबधिया-सं., शूद्रक ओतय राखिकय ब्रह्मणक बच्छा कें बधिया करैक छल। मै.
बुधिमन्त-विशे., देखू-"बुद्धिमान्।" मै.
बुधिमानी-सं., बुद्धिमान् लोकक गुण। मै.
बुधियरवा-विशे., (प्रशंसा मे) बुद्धि सँ काज लैवाला। मै.
बुधियार-विशे., बुद्धि भरल। मै.
बुधियारी-सं., बुद्धि सँ काज लैक गुण। मै.
बुधुआ-विशे., अग्ग, किछु नहि जानि सकैक शक्तिवाला। मै.
बुन्द-सं., द्रव वस्तुक लघुतम एकाइ। बिन्दु। मै.
बुन्दपात-सं., (लाक्षणिक) एको बिन्दु वर्षा। मै.
बुन्दाबुन्दी-सं., एक एक बिन्दु सँ वर्षा। मै.
बुन्न-सं., देखू-"बुन्द"। मै.
बुन्ना-सं., बिन्दु, अनुस्वार, शून्यक गोल चिह्न। मै.
बुन्नी-सं., (लाक्षणिक) पातर बुन्नवाला वर्षा। मै.
बुनकर-विशे., कपड़ा बीनैक व्यवसायवाला, जुलाहा। हि. तत्सम
बुनका-सं., बिन्दु जकाँ उगल चिह्न। मै.
बुनका बुनका नहाँइत-विशे., अनेक बिन्दुक गोल सन चिह्न। मै.
बुनकी-सं., सघन बिन्दुक चिह्न। मै.
बुनछेक-सं., वर्षा होइक विराम। मै.
बुन छोड़ि बरिसब-क्रि., मुसलाधार वर्षा होएब। मै.
बुनब-क्रि., १. बाओग करब। २. वस्तु बीनब। मै.
बुनबुना-सं., द्रव वस्तु केर फेन फोंका जकाँ। मै.
बुनबुनाएब-क्रि., द्रव वस्तुक उपर पैघ फोंका जकाँ विकार जागब। मै.
बुनलहा-विशे., बाओग कैलवाला, बीनलवाला। मै.
बुनबैया-विशे., बीनैक काज करबैवाला। बाओग करबैवाला। मै.
बुनाइ-सं., १. बीनैक काज। २. बाओग करैक काज। मै.
बुनाएब-क्रि., १. बीनबाएब। २. बाओग कराएब। मै.
बुनाओट-सं., बीनैक शैली, ढंग। मै.
बुनिया-सं., बीनैक वा बाओग करैक लागल काज। मै.
बुनियाँ-सं., मेंही गोल बिन्दु जकाँ बेसनक छानल मधुर। मै.
बुबकब-क्रि., धनक गौरव सँ उन्मत्त बनब। मै.
बुबकी-सं., धनक मद। मै.

बुमकौर फुटब-क्रि., धरती फोड़िकय पानिक वेग होएब। मै.
बुर्जखाप-सं., पताम कें चिक्कन करैवाला अस्त्र। मै.
बुरका-सं., पर्दाक हेतु मुसलमानक स्त्रीक पहिरन सँ अतिरिक्त संपूर्ण देहक एक आवरण। मै.
बुराई-सं., अपकार। हि. तत्सम
बुलकाएब-क्रि., परतारिकय मन फेरि देब। मै.
बुलकी-सं., बीच नाकक खम्भा मे पहिरैवाला ठोस गोल आ छोट भूषण। मै.
बुलन्द-विशे., उजागर प्रसन्न। हि. तत्सम
बुलन्दी-सं., प्रसन्नता। हि. तत्सम
बुलन्ती-सं., बूलैत रहैक प्रवृत्ति। मै.
बुलना-विशे., अधिक बूलैवाला। मै.
बुलबुल-सं., पक्षी विशेष। मै.
बुलबुला-सं., द्रव वस्तुक उपर उठल विकार। मै.
बुलबुली देब-क्रि., वचन सँ मन मे भय आ दुःख जगबैत अपन काज साधैक प्रयास करब। मै.
बुलाएब-क्रि., घुमाएब, टहलाएब। मै.
बुलाकी-सं., वेशी लटकल पत्ती जकाँ नाकक महना। मै.
बुलेट-सं., बन्दूकक गोली। अं. तद्भव

बू

बूकब-क्रि., कोनो वस्तु के चूरिकय गरदी बनाएब। मै.
बूझ-सं., ज्ञान। मै.
बूझब-क्रि., ज्ञान करब, जानकारी लेब। मै.
बूझि-सं., बूझैक शक्ति, बुद्धि। मै.
बूट-सं., काटल पैघ गाछक जड़ि। मै.
बूटी-सं., जड़ी, औषध। मै.
बूड़ि-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.
बूढ़-विशे., वृद्ध। स्त्री० बूढी। मै.
बूढ़ि गैक नेरू-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त दुर्बल। मै.
बून-सं., बाओग करैक ढंग। विन्दु। मै.
बूनब-क्रि., बाओग करब। मै.
बूलब-क्रि., घूमब, टहलब। मै.

बे

बे-अव्यय, बिना केर अर्थ मे उपसर्ग। मै.
बेउरेब-क्रि., बेमेल, मिलान नहि होम'वाला। मै.
बेओरा-सं., उद्योग। मै.
बेक छाएब-क्रि., व्याख्याकय कहब। विस्तार सँ बुझा सुझाकय कहब। मै.
बेकति-सं., व्यक्ति। सं. तद्भव
बेकरी-सं., बिस्कुट आ पाँव रोटी बनबैक भट्ठी। मै.
बेकल-विशे., विकल। सं. तद्भव
बेकार-अव्यय, व्यर्थ, अनेर। मै.
बेकारी समस्या-सं., उद्यमहीन आ बिना बेओराक जीवन यापनक जटिलता। मै.
बेकाल-विशे., व्यापारी। मै.
बेकाली-सं., व्यवसाय, व्यापार। मै.
बेख-सं., वन सम्पत्ति। मै.
बेखबुनियादि-सं., वन आदि मूल सम्पत्ति। मै.
बेखर-विशे., निधोख अश्लील बात बजनिहार। मै.
बेखी-विशे., अधिक वन सम्पत्तिवाला। मै.
बेघर-विशे., घरद्वाररहित। मै.
बेगड़-विशे., उनट पुनट। मै.
बेगम-विशे., मुसलमानक माननीय पत्नी। मै.
बेगरता-सं., व्यग्रता। सं. तद्भव
बेगरतित-विशे., व्यग्रता भरल। मै.
बेगरतू-विशे., अपने टा स्वार्थ ले व्यग्र रहैवाला। मै.
बेगहा-विशे., सब काज मे शीघ्रताक स्वभाववाला। मै.
बेगाएब-क्रि., वेग सँ काज करब, झटकि चलब। मै.
बेगान-विशे., अपनापन हीन आन। मै.
बेगार-विशे., बन्हुआ जन। मै.
बेगारी-सं., बिना पारिश्रमिकक काज। मै.
बेगाह-विशे., जल्दीबाजीक प्रकृतिवाला। हड़बड़ाइ। मै.
बेङ-सं., दादुर (मेढ़क)। मै.
बेङ्ची-सं., अत्यन्त छोट बेङक बच्चा। मै.
बेङ्ची फूलब-क्रि., देहक मांसल अंग कें दबला सँ हठात् मांसक आ शिराक ग्रन्थिक फूलब। मै.

बेन्च-सं., नाम आ कम चाकर बैसैक चौकी। अं. तत्सम

बेच-सं.; मूल्यक स्थान मे दैवाला अन्न। मै.

बेचन-सं., बेचैक काज। मै.

बेचब-क्रि., दाम ल' क' कोनो वस्तु देबाक क्रिया करब। मै.

बेचबबिकिनब-क्रि., दोकानदारी करब, व्यापार करब। मै.

बेचबिकिन-सं., वाणिज्य व्यवसाय। मै.

बेचलहा-विशे., बेचलवाला। मै.

बेचारा-विशे., दयाक पात्र। मै.

बेजाय/बेजै-विशे., अनुचित, असंगत। उ. तद्भव

बेजान-विशे., प्राण पण सँ। मै.

बेंट-सं., हाँसू, खुरपी, कोदारि आदि अस्त्र मे लागल काठ। मै.

बेंटछुट्टू-विशे., १. बिना बेंट लागल अस्त्र। २. (लाक्षणिक) अनुशानहीन, उडन्ड। मै.

बेटा-सं., पुत्र। स्त्री० बेटी। मै.

बेटिया-विशे., अधिक प्रिय बेटी। मै.

बेटियाहा-विशे., अधिक बेटीवाला। मै.

बेटे-विशे., बेगार। मै.

बेठीक-विशे., असमान, असंगत। मै.

बेड़-सं., कररिक थम्हक बनाओल नाओ। मै.

बेड़ा-सं., नदी आ समुद्र पार करैक साधन। मै.

बेड़ी-सं., बन्दी (कैदी) क हाथ पैरक कड़ी। मै.

बेडोल-विशे., बेमेल, मिलान नहि खाइवाला। कुरूप। मै.

बेढ़-सं., घैरन, अवरोध। मै.

बेढङ्ग-विशे., अनर्गल रूपवाला; काज करैक शैली नहि जननिहार। मै.

बेढ़न-सं., घैरैक क्रम, विशेष स्थान कें कोनो वस्तु सँ सुरक्षित बनबैक प्रक्रिया। मै.

बेढब-क्रि., अनुचित आकार प्रकारवाला। मै.

बेढ़लहा-विशे., घैरनवाला (क्षेत्र)। मै.

बेढ़ही-सं., मालजाल सँ सुरक्षाक हेतु गाछ वृक्षक चारूभर देल छोट क्षेत्रक घैरन। मै.

बेढ़ाइ-सं., बेढैक कार्यक्रम। मै.

बेढ़ाएब-क्रि., अनका द्वारा बेढ़ दैक प्रयास करब। मै.

बेढ़ान-सं., कसिक' बेढ़ैक क्रम। मै.

बेढ़िया-सं., बेढ़ैक विशेष काज। मै.

बेढ़ुआ-विशे., बेढ़लवाला। मै.

बेढ़ी-सं., चारू दिश सँ टाटक अवरोध। मै.

बेणी-सं., १. केशक जुट्टी। २. नदी। सं. तत्सम

बेणु-सं., बसुली। सं. तत्सम

बेंत-सं., सक्कत आ पातर छोट बनैया वनस्पति बेतस। मै.

बेतन-सं., दरमाहा। सं. तत्सम

बेंतब-क्रि., व्योंत करब, प्रबन्ध करब। मै.

बेतरेक-अव्यय, व्यतिरेक, विना। मै.

बेंतहा-विशे., बेंतक जंगल। मै.

बेंतही-विशे., बेंतक बनाओल वस्तु। मै.

बेताओ-विशे., क्रमशः उग्रता बढ़बैवाला। मै.

बेताक-विशे., तर्कहीन। उचित समयक उचित प्रक्रियारहित। मै.

बेताढ़-विशे., बताहक व्यवहार रखनिहार। मै.

बेतारकतार-सं., बिना कोनो सम्पर्कें वैज्ञानिक प्रक्रियावाला पठाओल ध्वनि। मै.

बेतासा-विशे., चिन्ता, व्यग्रता आ अन्देसाक संग व्याकुलता भरल चञ्चल। मै.

बेंती लीबब-क्रि., चित्त भरें बेंत जकाँ लीबब। मै.

बेतुकार-विशे., असंगत, अनर्गल, अनुचित। मै.

बेथा-सं., दर्द, मानसिक पीड़ा, व्यथा। सं. तद्भव

बेथित-विशे., व्यथित, पीड़ित। सं. तद्भव

बेद-सं., १. आदि कालक ज्ञान विज्ञानशास्त्र। २. (लाक्षणिक) जीवन चर्याक विधान। सं. तद्भव

बेदनमरू-विशे., जन्म होइक कालक चेतनाहीन बच्चा। मै.

बेदम-विशे., शक्तिहीन, निःसार। मै.

बेदर्दी-विशे., दोसराक पीड़ा नहि बुझनिहार। मै.

बेदरंग-विशे., भिन्न-भिन्न रंगवाला, रंग मे नहि मिलैवाला। मै.

बेदरा-सं., बच्चा, नेन्ना। मै.

बेदी-सं., वैदिक कर्मक स्थान, विवाह विधिक विशेष प्रकारे रचित स्थान। सं. तत्सम

बेधड़क-विशे., बिना धड़ी धोखा तथा मर्य्यादा आ संकोचवाला। मै.

बेध-सं., १. अस्त्र आदि सँ भोंकल जाइक स्थिति। २. ग्रह नक्षत्र मे परस्पर संलग्न रहैक भयंकर दोष। सं. तद्भव

बेधन-सं., बेध करैक प्रक्रिया । मै.
बेधब-क्रि., अस्त्र सँ भोंकब । फँसाएब । मै.
बेधलहा-विशे., अस्त्र सँ भोंकलवाला । मै.
बेधाएब-क्रि., काँट आदि भेंसाएब । बन्सी आदि सँ फँसाएब । मै.
बेधुआ-विशे., काँट वा पातर नाम अस्त्र सँ बेधि कय प्राप्त कयल । मै.
बेना-सं., १. कोनो वस्तुक कीनै बेचै मे वाग्दानक संग मूल्यक किछु मात्र अंशक प्रयोग । २. बीयनि । मै.
बेनाठी-सं., लाठी ठेङा आदिक उतार पछिला भाग । मै.
बेनामी-विशे., १. आनक नामे छिपाओल । २.नाम-हीन । मै.
बेनिया-सं., काठक वस्तु कें आन काठ सँ सम्बन्ध जोड़ैले देल छोट काठक टुकड़ी । मै.
बेनी-सं., १. कन्या द्वारा विवाह मे लावाक होम करै लेल बाँसक बीनल छोट वासन । २. केशक जुट्टी । ३. केवाड़क पट्टा मे पट्टी जोड़ैवाला पातर लकड़ीक टुकड़ी । मै.
बेपर्द-विशे., झाँपन (आच्छादन) हीन । उ. तत्सम
बेपार-सं., व्यापार, वाणिज्य । सं. तद्भव
बेपारी-विशे., व्यापार करैवाला । सं. तद्भव
बेबसैं-सं., व्यवसाय । सं. तद्भव
बेबा-विशे., विधवा । राँड । उ. तत्सम
बेबालि-सं., सुरक्षाहीन स्थान । मै.
बेबूझ-विशे., बुझौलो पर बात नहि मानैवाला । मै.
बेमार-विशे., दुखिताह, बीमार । हि. तद्भव
बेमारी-सं., रोग व्याधि । बीमारी । हि. तद्भव
बेर-सं., १. समय, अवसर । २. माछ फँसबैक सर-कीक टाट । मै.
बेर उठब-क्रि., सूर्य गोलक उपर उठब । मै.
बेर उनहब-क्रि., उचित समयक बीति जाएब । मै.
बेरक-विशे., समय पर उपयोगी । मै.
बेरकुबेर-अव्यय, नीक अधलाह समय पर । मै.
बेरखन-सं., अपराह्ण काल । मै.
बेरब-क्रि., अलग होएब । मै.
बेरबाद-विशे., बरबाद, नष्ट, ध्वंस । हि. तद्भव
बेर बेर-अव्यय, बारम्बार । मै.
बेरलहा-विशे., मिश्रित वस्तु सँ विशेष प्रक्रिया द्वारा अलग अलग कयल । मै.
बेरहट-सं., अपराह्णक जलपान । मै.
बेरहटिया-विशे., बेरहट खाइवाला समय । मै.
बेरहा-विशे., बेरखन (अपराह्ण) कालवाला । मै.
बेरा-सं., समय । मै.
बेराइ-सं., अन्न कें स्वच्छ कय अलग करैक काज । फुटबैक प्रक्रिया । मै.
बेराएब-क्रि., अलग करब, फुटाएब । मै.
बेरागन-सं., पूजापाठ आदिक हेतु सप्ताह मे निश्चित कयल शुभ दिन । मै.
बेरानबै-संख्या, नौ दहाँइ दू एकाँइक अंक । मै.
बेराबेरी-अव्यय, एकक बाद दोसराक पारक क्रम सँ । मै.
बेराम पड़ब-क्रि., दुखित पड़ब । मै.
बेरासी-संख्या, आठ दहाँइ दू एकाँइक अंक । मै.
बेरियाँ-अव्यय, बेरखन, अपराह्ण मे । मै.
बेरुका पहर-सं., दिन झुकलवाला समय । मै.
बेरेक-अव्यय, कदाचित् सम्भव । मै.
बेरोह-विशे., निराशा सँ दुखी । मै.
बेल-सं., स्थूल फल विशेष । मै.
बेलकठ-सं., श्रीखण्ड चन्दनक स्थान मे बेलक सीर-वाला काठ । मै.
बेलग होएब-क्रि., संग सँ फूटि जाएब । मै.
बेलगान-विशे., वासक हेतु बिना लगानवाला भूमि । मै.
बेलचा-सं., भूमि पर सँ ढेरीक वस्तु उठबैक चाकर पैघ लोहक पत्र सँ बनल अस्त्र । मै.
बेलदार-सं., माटि कटैक व्यवसायी जाति । मै.
बेलन-सं., उभर खाभर कें समतल करैवाला गोल नाम आ भारी यन्त्र । मै.
बेलना-सं., रोटी कें पसारैवाला गोल नाम काठक साधन । मै.
बेलना बेलब-क्रि., (लाक्षणिक) पहिलुक अनुभवक अनुभव करब । मै.
बेलनोती-सं., दुर्गापूजा मे छठम पूजा दिन विल्वा-भिमन्त्रण विधि । मै.
बेलपात-सं., पूजा मे चढबैवाला बेलक पात । मै.

बेलब-क्रि., चकइ पर सानल आँटा कें बेलना सँ पसारब । मै.

बेलबा-विशे., बेलक आकार एवं स्वादवाला । मै.

बेलल्ला-विशे., हताशा सँ व्यग्र । मै.

बेलसि-विशे., परस्पर सम्पर्क नहि रखैवाला संलग्न नहि रहैवाला । अपेक्षाहीन । मै.

बेलसूँठि-सं., गाछ सँ खसला पर बेलक सुखाओंत । मै.

बेला-सं., १. बेर । २. बड़का बेली फूल । मै.

बेलाइन-विशे., स्वाद आ रंग मे बेल जकाँ । मै.

बेलागि-विशे., परस्पर सम्बन्धहीन । मै.

बेलाह-विशे., बेलक रस लागल । मै.

बेली-सं., उज्जर सुवासित चैती फूल । मै.

बेलूरि-विशे., काज करैक ढङ्ग नहि जनैवाला । मै.

बेश्या-विशे., शरीर बेचैवाली स्त्री । सं. तद्भव

बेश-सं., १. अपन अनुकूल क्षेत्रक व्यवस्था । २. बगैवानि । सं. तद्भव मै.

बेशभूषा-सं., बगयवानि ।

बेशिर पैरक बात-सं., (लाक्षणिक) बेमेल गप । कत्तो सँ कोनो बातक सम्बन्ध नहि । मै.

बेशी-विशे., अधिक । मै.

बेस !-अव्यय, स्वीकारक शब्द । मै.

बेसकार-विशे., बिना स्वीकारवाला । मै.

बेसन-सं., दलिहन अन्नक पीसल घाठि । मै.

बेसनाइन-विशे., बेसन भरल । मै.

बेसबाहा-विशे., नीक जकाँ, उत्तम प्रकारवाला । मै.

बेसम्हार-विशे., सम्हार सँ बहार भेल । मै.

बेसरम-सं., विस्मरण, चेतनाशून्य अवस्थाक स्थिति । प्रयोग–"निन बेसरम ।" बेशर्म । सं./उ. तद्भव

बेसरि-सं., नाकक गहना विशेष । मै.

बेसरोकार-विशे., प्रयोजन संग सम्पर्कहीन अपेक्षा रहित । मै.

बेसहरू-विशे., बेसाह दैनिक भोज्य वस्तु कीनैवाला । मै.

बेसाती-विशे., विदेश सँ आएल व्यापारी । मै.

बेसाह-सं., भोजनार्थ अन्नक खरीद । मै.

बेसाहब-क्रि., नित्य खैकक अन्न कीनब । मै.

बेसियात-विशे., उचित मान सँ वेशी बाँचल । छेंठ । मै.

बेसुधि-विशे., निश्चेष्ट भ' क' चेतनाहीन ज्ञानशून्य । मै.

बेसूरा-विशे., बिना ताल मात्राक गीत । मै.

बेहरी-सं., चन्दा, दान रूपक द्रव्यक आहरण । मै.

बेहला-विशे., कन्यादान कयनिहारक ओतयक आगत लोक । सरियाती । मै.

बेहाल-विशे., अन्देशा हताशा आ व्यग्रता सँ व्याकुल । मै.

बेहुड़ल खाम्ह-विशे., (लाक्षणिक) सदिखन अव्यवस्थित रहनिहार, जेम्हरै तेम्हरै झुकि जाइवाला । बातक कोनो नै ठेकानवाला । मै.

बेहोस-विशे., संज्ञाहीन, सोच विचारक शक्तिहीन । मै.

बै

बैँ-सं., १. कपड़ा बीनैक संयन्त्र, ताना । २. स्वाभाविक जिद्द समेत आसक्ति । एक वस्तुक लेल आसक्ति । मै.

बैआह-विशे., वायु बढ़बैवाला । मै.

बैँ बैँ करब-क्रि., गुप्तो बात कें सगरे प्रकट करब । मै.

बैग-सं., सक्कत वस्तुक विशिष्ट प्रकारक छोट आ पँघ थैला । मै.

बैगन-सं., तरकारी विशेष, भट्टा । मै.

बैगनी-सं., १. रंग विशेष । २. बिना पिठारें तरल भटवर । मै.

बैठक-सं., बहारी लोकक बैसै उठैक स्थान । मै.

बैठकी-सं., १. भगता द्वारा रोग व्याधिक निराकरण हेतु भाओ । २. उठै बैसैक व्यायाम । मै.

बैठन-सं., कोनो वस्तु कें स्थिर रखैक गर । मै.

बैठब-क्रि., टाङ मोड़िकय स्थिर भय रहब । मै.

बैठलहा-विशे., बैसल (स्थिर) भेलवाला । मै.

बैठा-सं., धोबीक उपाधि । मै.

बैठाबैठी-सं., बैसैवाला खेल । मै.

बैठार-सं., सभक बैसैक तथा विश्राम लेल बाध बोनक उन्मुक्त स्थान । मै.

बैठारी-सं., बिना कोनो काजक बैसल रहैवाला समय । मै.

बैठी-सं., कत्ता, तरकारी कटैवाला हाँसू। मै.
बैड़चोद-विशे., गारिक शब्द। मै.
बैद्य/बैद/बैदा-विशे., चिकित्साशास्त्रक ज्ञाता। सं. तद्भव
बैदाइ/बैदागिरी/बैदइ-सं., चिकित्सा, औषधीक व्यवसाय। मै.
बैन-सं., उपहार, सनेस। मै.
बैन परसब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात लगले सब कें कहि आएब। मै.
बैना-सं., किछु अग्रिम मूल्य द' क' कीनैक वस्तु कें छेकि रखैक नियम। मै.
बैब-सं., कपट कारण, बिन कारणें गढ़ल कारण। प्रयोग—"कोनो बैब सँ घूटर कें झगड़े करैक मन रहै छनि।" मै.
बैमान-विशे., असत्य व्यवहार करैवाला। बेइमान। उ. तद्भव
बैॅर-सं., फल विशेष, बदरी फल। मै.
बैॅल-सं., बड़द। मै.
बैॅलगाड़ी-सं., बड़दक द्वारा चलैवाली गाड़ी। मै.
बैलाएब-क्रि., भगाएब, दूर करब। मै.
बैॅस-सं., वयस, आयु। मै.
बैसक्खा-विशे., वैशाख मास मे भेनिहार। मै.
बैसकी-सं., विचार विमर्शक हेतु बैसैक विधि। मै.
बैसब-क्रि., देखू—"बैठब"। हाथ पैर मोड़ि आसन लगाएब। मै.
बैसबनिया-विशे., वैश्य जातिवाला व्यापारी। मै.
बैसार-सं., देखू—"बैठार"। मै.
बैहार-सं., बाध। देखू—"बहियार"। मै.

बो

बो-अव्यय, गारि दैक बत्तूक ध्वनि। मै.
बोअब-क्रि., बाओग करब। मै.
बोआइ-सं., बाओग करैक सामयिक क्रम। मै.
बोआर-सं., बोआरी जातिक बड़का माछ। मै.
बोआरी-सं., सामान्य बोआरी माछ विशेष। मै.
बोइआम-सं., सीसाक झँपनीवाला वासन। मै.
बोकड़ा-विशे., जोआएल, अधिक बैसक छागर। मै.
बोकबा-विशे., (अनादर मे) छ पांच किछु ने जनै वाला मूर्ख। मै.
बोकरन-सं., वमन कयल पेटक अन्न आदि। मै.
बोकरना-विशे., अधिक वमन करैवाला बच्चा। मै.
बोकरब-क्रि., वमन करब। मै.
बोकराएब-क्रि., (लाक्षणिक) उगिलाएब, छिपाओल कें बहार करब। मै.
बोकल/बोकला-विशे., अकान सुन्न। मै.
बोकस-विशे., बिना कोनो काजक, अकर्मण्य। अं. तद्भव
बोका-विशे., मूर्ख बकलेल। मै.
बोकार-सं., १. वमनक वेग। २. बोकरल विकार। मै.
बोकियाएब-क्रि., बत्तू जकाँ बो बो शब्द करैत गरियाएब। मै.
बोको-सं., पीठ पर लादि क' ल' जाइवाला पहाड़क आ नेपालक मनुष्य वाहन। मै.
बोखला-सं., गाछ वृक्षक सुखाएल स्वत: ओदरल छाल। मै.
बोङ-सं., गुदा मार्ग मे जोर लगला सँ बहराएल मांस। मै.
बोङहा-विशे., बोङवाला। मै.
बोङ बहराएब-क्रि., मल मार्गक नली सँ मांस उतरब। बावासीर होएब। मै.
बोङाठी-सं., मल मार्गक उतरल मांस। मै.
बोच-सं., हिंसक जलजीव, नकार। मै.
बोझ-सं., बान्हल नालवाला भार तथा आन वस्तुक समेटल आ बान्हल भार। मै.
बोझब-क्रि. उपर सँ लदैत जाएब वा लादब। मै.
बोझलहा-विशे., लादलवाला। मै.
बोझहा-विशे., अधिक भारवाला। मै.
बोझा-सं., भार। मै.
बोझाइ-सं., लदैक क्रम। मै.
बोझाएब-क्रि., लदाएब। मै.
बोझान-सं., लदैक वा बोझैक विशेषता। मै.
बोझौनी-सं., बोझैक निरन्तर काज। मै.
बोट-सं., यान्त्रिक नाओ। मै.
बोटी-सं., मांस खण्ड। शाखा प्रशाखा। मै.
बोड़ा-सं., लत्ती मे फड़ैवाला पातर आ नमगर तरकारीक फल। मै.

बोंड़ी-सं., घुट मुटार साँप विशेष। मै.
बोतल-सं., द्रव पदार्थ रखैक गोल आ नाम पेंघ सीसा (काँच) क वासन। अं. तद्भव
बोँतब-क्रि., देखू—"गोँतब"। अंग कें नीचाँ दिश दबाकय विवश करब। मै.
बोदरि-विशे., अत्यन्त आर्द्र। सं., जलक छोटका चिड़ै। मै.
बोदा-विशे., अत्यन्त अनबूझ, बूड़ि। मै.
बोध-सं., ज्ञान। सं. तत्सम
बोधगर-विशे., विषय कें झट द' बूझैवाला। मै.
बोधब-क्रि., बुझा सुझाकय मनक आवेग कें शान्त करब। मै.
बोधाएब-क्रि., बोध कराएब। मै.
बोधिवृक्ष-सं., महात्मा बुद्ध कें परिनिर्वाण देम' वाला वट वृक्ष। मै.
बोन-सं., वन, जंगल। मै.
बोनझार-सं., बोन जकाँ लगैवाला छोट छोट झाँखुरक समूह। मै.
बोनट-सं., बन्दूकक अंग विशेष। अं. तत्सम
बोनस-सं., व्यवसाय मे सहयोगी केँ देय लाभांश। अं. तत्सम
बोनहा-विशे., बोनवाला, बोन सँ भरल। मै.
बोना-सं., बोनक समूह। मै.
बोनाएब-क्रि., सघन स्थान मे नुकाएब। मै.
बोनाठ-विशे., बोन जकाँ भयंकर। मै.
बोनाह-विशे., बोन जकाँ लगैवाला। मै.
बोनि-सं., पारिश्रमिक, दैनिक पारिश्रमिक, अन्न वा पाइ। मै.
बोनिबुता-सं., बोनि करैक शक्ति। मै.
बोनियाँ-विशे., बोनि करैवाला, मजूर, जन। मै.
बोनियाती-विशे., बोनि मे देल वा दातव्य वस्तु। मै.
बोनैया-विशे., बोन मे रहैवाला, होइवाला। मै.
बोमियाएब-क्रि., अनेर गरजि कय बाजब। मै.
बोमी देब-क्रि., अनेक प्रकारेँ दण्ड देब। मै.
बोर-सं., १. माछ कें फँसबैक हेतु बन्सी मे गँथैवाला माछक चारा। २. अम्मट बनबैक क्रम मे अम्मट मोटाइ ले अम्मट पर पसारैवाला आमक गाड़ा। मै.
बोरब-क्रि., रस मे (पानि) मे डुबाएब। मै.
बोरलहा-विशे., द्रव पदार्थ मे डुबाकय राखल। मै.
बोरा-सं., पटुआ सोनक बीनल धोकड़ा। मै.
बोरिया-सं., छोटका बोरा। मै.
बोरिया बिस्तर-सं., बिछाओनक संग सब सामग्री। मै.
बोरैस-सं., आगिक वासन। मै.
बोल-सं., वचन। वाणी। मै.
बोलक मोल-सं., वचनक महत्त्व। मै.
बोलचाल-सं., परस्पर मैत्रीपूर्ण गपसप। मै.
बोल फूटब-क्रि., मुह सँ बोल बहराएब। मै.
बोलभरोस-सं., धैर्य एवं आश्वासनक वचन। मै.
बोलवचन-सं., बजैक मधुर क्रम। मै.
बोलारय-सं., नेन्ना कें बाजि बाजि कय मन बहटारैक क्रम। मै.
बोलाहटि-सं., आह्वान, बजबैक आदेश। मै.
बोली-सं., भाषा। मै.
बोली देब-क्रि., मिथ्या वचन सँ मन कें बढ़ाकय बूड़ि बनाएब। मै.
बोह-सं., हठात् आएल बाढ़ि। मै.
बोहनि-सं., पहिल बिकरीक आरम्भ तथा कोनो काजक शुभारम्भ। मै.
बोहा-सं., बाढ़ि सँ आएल पानि। मै.
बोहाएब-क्रि., १. अनर्गल रूपेँ धन नष्ट करब। २. भसियाएब। मै.
बोहियाएब-क्रि., पानि मे अधिक कालधरि नहाइत रहब। मै.

बौ

बौआ-विशे., स्नेह पात्र बच्चा। मै.
बौआएब-क्रि., निर्देशहीन दिशा मे व्यर्थ घूमब। मै.
बौआसीन-विशे., कुलबधू। मै.
बौक-विशे., गोंङ, बजैक शक्तिहीन। मै.
बौक बकलेल-विशे., शब्दहीनक संग मूर्ख। मै.
बौका-विशे., बौक लोक। मै.
बौखलाएब-क्रि., हठात् बजैत बिगड़ि उठब। मै.
बौंड़ब-क्रि., अनिर्दिष्ट दिशा मे चल जाएब। मै.
बौड़ाहा-विशे., अपन मनमतङ्ग सँ बिना उद्देश्यें कोनो दिशा मे चल जाइवाला। मै.

बौड़ी-सं., बाउड़ी, छोट जलाशय। मै.
बौनवीर-विशे., अत्यन्त भुट्ट। मै.
बौना-सं., काठक वस्तु मे अलग सँ ठोकल जाइवाला काठक टुकड़ी। मै.
बौना-विशे., भुट्ट रहैक विशेषतावाला व्यक्ति। मै.
बौली-सं., लोहक चुट्टा जकाँ वर्तन पकड़ैक साधन। मै.

भ्र

भ्याओ/भ्याओन-विशे., भयानक। मै.
भ्रम-सं., धोखा। सं. तत्सम
भ्रमर-सं., भँभरा, भौँरा। सं. तत्सम
भ्रष्ट-विशे., चरित्रहीन, च्युत। सं. तत्सम
भ्राता-विशे., भाइ। सं. तत्सम
भ्रातृभाव-सं., भाइचारा। सं. तत्सम
भ्रातृस्नेह-सं., भाइक प्रेम। भाइसन प्रेम। सं. तत्सम
भ्रान्ति-सं., धोखा। सं. तत्सम
भ'-अव्यय, होइक क्रियाक पूर्वकालिक क्रिया। मै.
भक्-अव्यय, परिहास मे निषेधक शब्द। मै.
भक्का-विशे., छूबैत मात्र भभरि जाइवाला सिद्ध। मै.
भक्त-विशे., ककरो प्रेम मे श्रद्धा सँ समर्पित हृदयवाला। सं. तत्सम
भक्ति-सं., श्रद्धापूर्वक हृदयक समर्पण। सं. तत्सम
भकइजोत-सं., नाम मात्रक प्रकाश। मै.
भक खाएब-क्रि., भ्रम मे पड़ि जाएब। मै.
भकचक लागब-क्रि., आश्चर्य मूढ़ होएब। मै.
भकचब-क्रि., निरर्थक लिखैक कारणें कागज कें रंगब। मै.
भकड़ा-विशे., धान कें गोड़िकय बनाओल चाउर चूड़ा। मै.
भक द'-अव्यय, अचानक जागि क'। मै.
भकभक-विशे., अत्यन्त प्रकाशित। मै.
भकभकाएब-क्रि., चमड़ाक उपरी भाग पर वेदना होएब। मै.
भकभकी-सं., १. चमड़ाक उपरी भागक वेदना। २. (लाक्षणिक) कोनो कारणें तामस। मै.
भकमोड़-सं., अचानक मोड़ घूमि जाइवाला वाट। मै.
भकमोड़ी-सं., स्थान स्थान पर मुड़ि जाइवाला क्रम। मै.
भकरार-विशे., अत्यन्त प्रफुल्लित वृक्ष। मै.
भकलोल-विशे., बकलेल, अकान जकाँ तकैवाला। मै.
भकसी झोंकब-क्रि., प्राचीन कालक धूआँ सँ दम घोंटाकय मृत्युदण्ड देब। मै.
भकार-सं., 'भ' अक्षर। मै.
भकुआ-विशे., उसिनल धान कें गोरिकय बनाओल चाउर। मै.
भकुआएब-क्रि., अर्धनिद्रित अवस्था मे रहब, असमय निन्न टूटला सँ अलसाएब। मै.
भकुआह-विशे., सतत ओंघाएल जकाँ रहैवाला। मै.
भकोभण्ड-विशे., शून्य स्थान। मै.
भकोल-विशे., बकलेल जकाँ मुह तकैवाला बूड़ि। मै.
भखब-क्रि., अशुभ बाजब। मै.
भखड़ब-क्रि., पुरान हयबाक कारणें सारहीन होएब। मै.
भखड़लहा-विशे., पुरान भेला सँ झरलवाला। मै.
भखड़ाह-विशे., झटसन सड़िकय झरैवाला। मै.
भखियौटी-विशे., अपन मातृभाषाक अनुवाद। मै.
भग्न-विशे., टूटल, खण्डित। सं. तत्सम
भग-सं., योनि, स्त्रीक लिङ्ग। सं. तत्सम
भगत-विशे., १. भाओ खेलाइवाला। २. भक्ति करैवाला। मै.
भगतइ-सं., भूतप्रेत आ रोग व्याधिक झारफूक आ तन्त्र मन्त्र करैक विधि। मै.
भगता-विशे., भाओ खेलाइवाला। मै.
भगति-सं., भक्ति, श्रद्धापूर्वक विश्वास। सं. तद्भव
भगतिन-विशे., भक्ति करैवाली। मै.
भगतिया-विशे., भगता होइक ढंग धरैवाला। मै.
भगन्दर-सं., गुप्तांग लगक भयंकर घाओ विशेष। मै.
भगवतिया-विशे., भागवत कथा मात्र कहैवाला पण्डित। मै.
भगवती-सं., देवी, विशेष रूपें स्त्री जाति। मै.

भगबा-सं., खौँड़की, डाँर कें घेरिकय लज्जा निवारक वस्त्रक टुकड़ा। मै.
भगवान-विशे., पूजनीय देवता। मै.
भगाएब-क्रि., बैलाएब, दूर करैक लेल खेहारब। मै.
भगिन जमाए-विशे., भगिनीक पति। मै.
भगिन पुतोहु-विशे., भगिनक पत्नी। मै.
भगिनमान-विशे., सम्बन्धें भागिनक कोटि मे अबैवाला। मै.
भगिना-विशे., पुरुषक हेतु बहिनिक बेटा। मै.
भगिनी-विशे., पुरुषक हेतु बहिनिक बेटी। मै.
भगौड़ा-विशे., सदिखन भगैक चेष्टा रखैवाला। मै.
भङ्ग-सं., १. भाङ। २. खण्डन, टूट। सं. तत्सम
भङ्गी-विशे., १. हरिजन जाति। २. भङ पीबा। मै.
भङ-सं., लूरि, कला। मै.
भङघोंटना-सं., भाङ पीसैक खल। मै.
भङठब-क्रि., गड़बड़ाएब, कोनो अंशक व्यतिक्रम होएब। मै.
भङठल-विशे., (लाक्षणिक) बुद्धि सँ मतल जकाँ। मै.
भङठलहा-विशे., भङठल (गड़बड़ाएल) रहैवाला। मै.
भङठा-सं., बाधा, विघ्न, अड़चन। मै.
भङठाएब-क्रि., १. यन्त्र कें अकार्यक क' देब। २. बाधा करब। मै.
भङठाह-विशे., १. अधिक बाधा करैवाला। २. अधिक भङठैवाला। मै.
भङठी-सं., कल आदि कें काज जोग बनबैक चेष्टा, सुधार। मै.
भङठी करब-क्रि., बिगड़ल यन्त्र कें सुधारि के चालू बनाएब। मै.
भङतराह-विशे., तुरन्त तुरन्त बिगड़ैवाला (गड़बड़ा जाइवाला) यान्त्रिक वस्तु। (लाक्षणिक) अर्धबताह। मै.
भङना-सं., फोड़ैक वा खण्डित करैक साधन। मै.
भङपीबा-विशे., अधिक भाङक धूआँ पीबैवाला। मै.
भङब-क्रि., टूटब, फूटब। मै.
भङाइ-सं., भङैक चलैवाला काज, भङैक पारिश्रमिक (बोनि)। मै.
भङाएब-क्रि., फोड़ाएब, खण्ड कराएब। मै.
भङिया-विशे., पीसल भाङ अधिक खाइवाला। मै.
भङरिया-सं., एक धन खेती मे होम'वाला जड़ी विशेष। मै.
भङरी-विशे., अधिक भाङक सेवन करैवाला। मै.
भजकलदारम्-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) कलदारम् सोन कें भजन करू अर्थात् केवल जेना तेना धनक संचय करू। मै.
भजन-सं., भक्ति सँ नामक कीर्तन। सं. तद्भव
भजनिया-विशे., भजन करैक व्यवसायवाला। मै.
भजनी-विशे., भजन करैवाला लोक। मै.
भजब-क्रि., भजन करब। मै.
भँजब-क्रि., पैघ मुद्राक छोट मुद्रा समूह बनब। मै.
भँजरब-क्रि., झुण्ड बनिकय चलब। मै.
भँजलहा-विशे., भँजाओलवाला। मै.
भँजहा-सं., मालजालक रोग विशेष। मै.
भँजाएब-क्रि., पैघ मुद्रा कें छोट मुद्राक समूह मे परिवर्तित कराएब। मै.
भजाएब-क्रि., संगक हेतु झुण्ड बनाएब। मै.
भजार-विशे., मैत्रीक सम्बोधन। मै.
भँजारब-क्रि., सन्तुलित कय जाँचब। मै.
भँजियाएब-क्रि., खोजबीन कय सत्यताक ज्ञान करब। मै.
भजुआ-विशे., भजैक योग्य। मै.
भजैत-विशे., हर जोतै मे एक बड़दक जोड़ा लगा कय पारापारी खेत जोतनिहार। मै.
भजैती-सं., पारापारी हर जोतैक नियम पर दोसरक बड़द सँ लगाओल जोड़ा। मै.
भञ्जन-सं., तोड़ब, ध्वंस करब। सं. तद्भव
भञ्जित-विशे., भँजाओल, तोड़ल। मै.
भट्ट-सं., विद्वान् मे श्रेष्ठ। मै.
भट्ठा-सं., १. नीचाँ दिश भूमिक गति। २. पजेबा पकैक लगाओल आबा। ३. भूमि पर लिखैक अभ्यास हेतु माटि आदिक ढेला। मै.
भट्ठी-सं., सतत जरैत रहैवाला विशाल चुल्हा। मै.

भट-अव्यय, कोनो भारी वस्तुक खसैक शब्द । मै.
भट-विशे., सैनिक । सं. तत्सम
भट-विशे., नीचाँ मुहें खसल । मै.
भटकन-सं., भोतियाइक स्थिति । मै.
भटकब-क्रि., उचित वाट सँ दोसर वाट पर भूलि जाएब । वाट बिसरि जाएब । मै.
भटकलहा-विशे., वाट भोतिया कय आएल । मै.
भटका-सं., शब्दसहित खसैक स्थिति । मै.
भटकाएब-क्रि., भ्रमित करब । मै.
भटकाह-विशे., अधिक भटकैक प्रकृतिवाला । मै.
भटकि जाएब-क्रि., भोतिया जाएब । मै.
भटकौआ-विशे., भोतिअबैवाला । मै.
भट द'-अव्यय, खसैक शब्दकय । मै.
भटपुरैन-सं., छोट लत्ती विशेष । मै.
भटबर-सं., भाटाक चक्का काटि तरल तरकारी । मै.
भटबा-विशे., भाट जातिक लोक । मै.
भटभट-अव्यय, पेट आदिक शब्द विशेष । मै.
भटभटाएब-क्रि., भटभट शब्द करब । मै.
भटभटाह-विशे., भटभट शब्द करैवाला । मै.
भटभटी-सं., भटभट शब्द करैक क्रम । मै.
भटभेर-विशे., अपवित्रताक सम्पर्कवाला । मै.
भटमाह-विशे., जन्म सँ पहिने मुइल जेठ बन्धुवाला बच्चा । मै.
भटमेर-विशे., विभिन्न प्रभेदक मिलल अन्न । मै.
भटमेराह-विशे., अनेक जातिक मिललवाला अन्न । मै.
भटरंग-विशे., कत्तौ गाढ़ आ कत्तौ कम रंग मे रंगल । मै.
भटर भटर-विशे., १. व्यर्थ कटु शब्द आ गप्पक उच्चारण । २. कड़ा वस्तुक पाकक शब्द । मै.
भटसन-अव्यय, शब्दसहित खसैक क्रम । मै.
भटाक द'-अव्यय, शब्दक संगें पतन । मै.
भटोत्तर-विशे., भाट कें देल भूमि । मै.
भठा-विशे., नीचाँ दिशुक स्थान । मै.
भठा-सं., लिखैक हेतु गावीस माटिक ढेला । मै.
भठा धराएब-क्रि., गावीस माटि सँ लिखब सिखाएब । मै.
भठियार/भठियारा-विशे., स्वभाव सँ नीच कुल आ विचारक लोक । स्त्री० भठियारिन । मै.
भड़-सं., लड़ाकू जाति विशेष । मै.
भड़क-सं., आडम्बर । मै.
भड़कछ-सं., पुरुष भेष ध' क' मौगीक परिहासवाला विनोद । मै.
भड़कताली-सं., फूसि प्रभाव जमबैक अपन बड़ाई । मै.
भड़कदार-विशे., चमकदार, उज्ज्वल, दीप्यमान । मै.
भड़कन-सं., भड़कैक क्रम । मै.
भड़कब-क्रि., भय वा उत्तेजना सँ मालजाल आदिक भाग दौड़ करब । मै.
भड़कलहा-विशे., छिटकल, फुलाएल । पसरलवाला । मै.
भड़काएब-क्रि., पसारब, छिटकाएब । मै.
भड़कान-सं., भड़कैक स्वभाव । मै.
भड़काह-विशे., भड़कैत रहैवाला स्वभाव भरल । मै.
भड़की देब-क्रि., फूसि डर देखाएब । मै.
भड़कीला-विशे., चमकदार, अधिक उज्ज्वल । मै.
भँड़छब-क्रि., नाना प्रकारक भोज्यक लोभ आ तृष्णा होएब । मै.
भँड़छाएब-क्रि., अनेक नीक निकूतक सेहन्ता करब । मै.
भँड़छूह-विशे., नीक निकूतक लोभें खाइ पीबैक ठेकान रखनिहार । मै.
भँड़छूहा-विशे., नीक निकूतक लोभ सँ खाइक हेतु सब ठाँ मुह देनिहार । मै.
भँड़दुलहा-विशे., १. अव्यवस्थित रहनिहार, बातक ठेकान नहि रहने काज नष्ट कयनिहार । २. भानसक चुल्हा लग पहुँचनिहार घरक जमाय । स्त्री० भँड़दुलाहि । मै.
भँड़फोड़ी-सं., दुरगमनियाँ कनियाँक द्विरागमनक चारिम दिन विनोद रूप होमऽवाला विधि । मै.
भँड़वसना-सं., भाँड़कूर (भानसक वर्तन) रखैक स्थान । मै.
भँड़भूजा-सं., १. भूजा भूजैवाला जाति । २. कनसार । मै.

भड़री-सं., खापड़ि मे उलबैक काज। मै.

भँड़ली-सं., (लाक्षणिक) भाँड़ अर्थात् भानस चढ़बैक समय सन्ध्या। मै.

भड़हर-सं., नदीक कछेर मे कटाओ सँ कटि गेने बहुत ठाढ़ भूमि। मै.

भँरहर-सं., भाँड़ रखैक बनाओल निश्चित स्थान। मै.

भँड़हा-विशे., भाँड़क उपयोगी वासन। मै.

भड़ाक द'-अव्यय, अनेक वासनक एक संग खसैक शब्द कय। मै.

भँड़ार-सं., अन्न आदिक कोषागार। भण्डार। सं. तद्भव

भँड़ारी-विशे., कोषागार (भण्डार) सँ अन्न आदि वस्तुक आगम निर्गम करैवाला नियुक्त व्यक्ति। मै.

भँड़ास-सं., आतुरता भरल अभिलाषा एवं उत्कण्ठा। मै.

भँड़ाह-विशे., भाँड़ मे उपयोग कयल वासन। मै.

भड़ीम-विशे., उठबै मे अधिक दमगर। मै.

भँड़ुआ-विशे., वेश्यावृत्तिवाली स्त्रीक सहायक प्रचारक एवं ग्राहक अननिहार। मै.

भड़ुआ-विशे., भीजल अन्न कें खापड़ि मे दय आँच पर सुखाकय बनाओल अन्न। मै.

भँड़ेर-सं., माटिक वासनक समूह। मै.

भण्ड-विशे., यत्र तत्र छिरियाएल, ओङ्घराएल। मै.

भण्डाफोड़-सं., गुप्त बातक प्रकाश। मै.

भण्डार-सं., भाण्डागार। सं. तद्भव

भण्डारकोन-सं., वायुकोण। पच्छिम उत्तर कोन। मै.

भण्डारा-सं., अनेक लोकक एकठाँ भोज। साधु सन्तक भोजन। मै.

भण्डारी-विशे., भण्डारक रक्षक। मै.

भण्डुल-विशे., विश्वास द' क' समय पर गताखोर देनिहार, अव्यवस्थित। मै.

भत्ता-सं., १. जीवनयापनक अनुदान। २. गुन (पाक) देल डोरीक सूतक भाग। मै.

भत्थर-विशे., शरीर आ बुद्धिक मन्द। मै.

भतकढ़हा-विशे., वर्तन सँ भात बहार करैक साधन। मै.

भतखै-सं., परस्पर घर मे भात खाइक व्यवहार। मै.

भतखौका-विशे., भात खाइवाला लोक। मै.

भतगर-विशे., (लाक्षणिक) अधिक धानक कारणें धनिक। मै.

भतबरी-सं., परस्परक घर मे भात खाइक व्यवहारक त्याग। मै.

भतभोज-सं., भात खाइवाला भोज। मै.

भतरन्हा-विशे., भात रन्हैवाला वर्तन। मै.

भतरी-विशे., भात सड़ाकय बनाओल मद्य। मै.

भतरासि-सं., पावनि विशेष। मै.

भतरोंइ-सं., यत्र तत्र सघन उगल रोम। मै.

भतलोह-सं., कोमल लोह। मै.

भतहा-विशे., भाते टा पसिन्न करैवाला। मै.

भतहुलुक-विशे., १. भातक अधिक प्रिय। २. बिना बुद्धि जगबैवाला। मै.

भतार-विशे., भर्त्ता, पति। मै.

भतिजबा-विशे., (अनादर मे) भातिज। स्त्री० भतीजी। मै.

भतैर-सं., चाउर सिझाकय बनल उबटन। मै.

भतोल-विशे., भातक खाद द' क' उपजाओल ओल। मै.

भथन-सं., भरि जाइक क्रम। शून्य स्थानक भरण। मै.

भथब-क्रि., खाधि, इनार आ पोखरिक भरि जाएब आ भरब। मै.

भथम-विशे., माटि आदि सँ भरि गेल। मै.

भथाएब-क्रि., खाली स्थान कें भराएब। मै.

भथान-सं., विशेष प्रकारक भथन। मै.

भथियान-सं., वस्ति, मूत्राशयक अंग। मै.

भथुआ-सं., खाधि भरि क' ऊँच बनल स्थान। मै.

भद्दा-विशे., अशोभनीय, अदर्शनीय। मै.

भद्र-विशे., नीक, नीकलोक। सं. तत्सम

भद्रा-सं., अशुभ योग विशेष। सं. तत्सम

भदबरिया-विशे., भादव मासवाला। मै.

भदबा-सं., पञ्चक, छ वर्जनीय नक्षत्र। मै.

विशेष—श्रवणा सँ खेती धरि प्रतिमास छ टा नक्षत्र स्त्रीक यात्रा एवं खढ़ काठक रचनात्मक कार्य

करब निषिद्ध होइत अछि। यथा—ज्योतिःशास्त्र मे अछि जे किछु दण्ड मात्र एहि सब नक्षत्र मे समय निषिद्ध अछि—श्रवणान्ते घनिष्ठा दौ मध्ये शत-भिषा तथा। भाद्रदूये विलोमेन खेतीं सकलान्त्यजेत्।

भदवारि/भदवारी-सं., भादव मासवाला प्रकृति। मै.

भदरब-क्रि., भादव मास मे खेत कें जोतब। मै.

भदरसुक्खू-विशे., भादवक रौदीक कारणें सुखाएल खेत। मै.

भदरसोख-विशे., भादव मे सुखाएल। मै.

भदरा-सं., भादव मे होम'वाला अन्न (धान) विशेष। मै.

भदराह-विशे., भादव मे पनुघल घास भरल खेत। मै.

भदई-विशे., भादव मास मे उपजैवाला। मै.

भदैबा-विशे., बरिसात मे होम'वाला। मै.

भदैया-विशे., भादवक लगभग मे होम'वाला। मै.

भदौसी-विशे., मन्द प्रगतिवाला। मै.

भन-सं., पातर, मेंही मन्द शब्द। मै.

भनक-सं., आभास, गुप्त रहस्यक श्रवण। मै.

भनकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

भनकाएब-क्रि., दुर्गन्ध छोड़ब। मै.

भनकार-सं., दुर्गन्धसहित शब्द। मै.

भनकी-सं., गुप्त बातक चुपचाप आभास। मै.

भनब-क्रि., कहब। मै.

भनबैका-विशे., कहबैका, लोक मे बहुर्चचित व्यक्ति। मै.

भनबैया-विशे., लोकक बीच प्रसिद्ध बनैक चेष्टा कयनिहार। मै.

भनभन-विशे., मन्द आ मेंही मधुमाछी तथा लोकक शब्द विशेष। मै.

भनभनाएब-क्रि., भनभन शब्द कय रोष प्रकट करब। मै.

भनभनी-सं., भनभनाइक स्वभाव। मै.

भनर भनर-विशे., अनेर मन्द स्वरें लगातार होइ वाला अप्रिय शब्द। मै.

भनलहा-विशे., कथित शब्द। मै.

भनसा-सं., पाक करैक, भोजन रन्हैक प्रक्रिया। मै.

भनसाघर-सं., केवल भानसैक हेतु निश्चित कयल घर। मै.

भनसार-सं., पाक करैक भानसक प्रक्रियावाला स्थल। मै.

भनसिया-विशे., भानस करैक लेल निश्चित व्यक्ति। मै.

भनिता-सं., पदक अन्त मे अथवा गीतक अन्त मे कहल जाइवाला कविक परिचय। प्रयोग—"भनहि विद्यापति समदओं तोही।" मै.

भनुसार-सं., चुंगीघर। एक क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र ल' जाइवाला वस्तुक कर लैवाला कार्यालय। मै.

भनें-अव्यय, अनुकूल प्रकारें। मै.

भनेंनिकें-अव्यय, सुभ्यस्त मनें। मै.

भनौआ-विशे., भनबैवाला। मै.

भफाएब-क्रि., अपने टा काज बनबैले अगुताइत व्याकुल रहब। मै.

भफाएल-विशे., अपन स्वार्थे ले अगुताएल। मै.

भफुआ-विशे., भाफ सँ सिद्ध कयल। मै.

भबब-क्रि., पसिन्न पड़ब, नीक लागब। मै.

भभक-सं., दुर्गन्ध। मै.

भभकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

भभकाएब-क्रि., दुर्गन्ध पसारब। मै.

भभकौआ-विशे., दुर्गन्ध पसारैवाला। मै.

भभट-सं., रोष भरल जिद्द। मै.

भभटपन-सं., रोष भरल दुराग्रह। मै.

भभटनी-विशे., भभटपन करैवाली। मै.

भभटाह-विशे., दुराग्रहक स्वभाववाला। मै.

भभरब-क्रि., नीरस रहैक द्वारें अपनै विलग भ' क' झरब। मै.

भँभरा-सं., बाटक तर देने जल बहैक हेतु विस्तृत आ नाम एवं गोल वस्तु जे सीमेन्ट आ गिट्टी सँ बनाओल जाइछ। गोलाकार छोट पुल। मै.

भभराएब-क्रि., जानि जानि कय झारि झारिकय खसाएब। मै.

भभराह-विशे., झरि झरिकय खसैक प्रकृतिवाला। मै.

भभसन-सं., कनेक अंगक फूलि जाइक प्रकृति। मै.

भभसब-क्रि., अंगक कनेक फूलल सन लागब। मै.

भभसाह-विशे., तुरन्त फुलफुलाह लगैवाला । मै.
भभसी-सं., फुलफुलाह होइक गुण । मै.
भभाएब-क्रि., अकस्मात् जोर सँ हँसि उठब । मै.
भभाकय हँसब-क्रि., हठात् जोर सँ हँसि उठब । मै.
भभारा-सं., अधिक लोकक जोग सँ उठल हँसी । मै.
भभास-सं., अंगक कनेक फुलैक स्वभाव । मै.
भभूत-सं., शरीर मे लेपल भस्म, विभूति । सं. तद्भव
भभोग-सं., ग्रह आ नक्षत्रक दैनिक मान । सं. तत्सम
भम्हरा-सं., भ्रमर, पँघ आ कारी उड़ैवाला कीट । सं. तद्भव
भम्होर-सं., जोर सँ नोछार । नह सँ बकुटि कय आघात । मै.
भम्होरब-क्रि., नह वा दाँत गड़ाकय घाइल करब । मै.
भमर/भमी-सं., जलक वेग मे वन चक्राकार गति । मै.
भय-सं., डर । सं. तत्सम
भयंकर-विशे., डर बढ़ैवाला । सं. तत्सम
भयाकुल-विशे., डर सँ आर्त । सं तत्सम
भयात-सं., ग्रह आ नक्षत्रक निश्चित समय (इष्ट दण्ड) सँ पूर्व बीतल कालक मान । सं. तत्सम
भयातुर-विशे., डर सँ व्याकुल । सं. तत्सम
भयानक-सं., रस विशेष । विशे., डेराओन । सं. तत्सम
भयावह-विशे., डर जगबैवाला । सं. तत्सम
भर्ता-विशे., भरण करैवाला । (लाक्षणिक) पति । सं. तत्सम
भऽर-सं., अवलम्ब, आसरा । मै.
भर-संयुक्त विशेषण, पूव भर उत्तर भर । सं., भरण, पूर्ति । प्रयोग—"उपर भर तर झर ताहि लोक कें कथीक डर ।" मै.
भरकच्छ बान्हब-क्रि., धोती कें समेटिकय कच्छी जकाँ बनाएब । मै.
भरकुस्सा-विशे., एक एक कण सँ चूर्ण बनल । मै.
भरखरि-अव्यय, सघन रूपें, अधिकता सँ । मै.
भरगर-विशे., अन्तर्बलवर्धक । मै.
भरगरी-सं., अन्तर्बल । मै.
भरणी-सं., नक्षत्र विशेष । मै.
भरत-सं., १. नाटयशास्त्रक आदि प्रवर्तक । २. पौराणिक पुरुष विशेष । मै.
भरता-सं., साना, कोनो सीझल फल आ कन्द कें मलिकय बनाओल वस्तु । मै.
भरती-सं., नियुक्ति, अधिकार, आपूर्ति । मै.
भरदुतिया-सं., भ्रातृ द्वितीया । मै.
भरदूआ/भरदूल-सं., पक्षी विशेष । मै.
भरना-सं., रीनक तरें खेत दैक नियम । मै.
भरना देब-क्रि., बातक संपुष्टि (समर्थन) करब । मै.
भरनि-सं., नदीक जलक वेग सँ बनल उच्च भूमि । मै.
भरनियाँ-विशे., गहींर कें भरैवाला । मै.
भरनी-सं., बाम दहिन रूपें रेखा वा सूतक विन्यास । मै.
भरनें-सं., जलक बहाओ सँ आएल माटिक द्वारा बनल उच्चता । मै.
भरब-क्रि., पूर्ण (पूर्ति) करब । (लाक्षणिक) अत्यधिक देब । मै.
भरबाहि-सं., लगातार भार उठबैक क्रम । मै.
भरभर-सं., लाबा आदि फुटैक शब्द । मै.
भरम-सं., भ्रम । सं. तद्भव
भरमब-क्रि., भ्रम सँ उनट पुनट बाजब । मै.
भरमाएब-क्रि., भ्रम देब, भुलाएब । मै.
भरमाभुस-अव्यय, असंज्ञ अर्थात् चेतनाहीन जकाँ । मै.
भरमार-विशे., अधिकता सँ उपलभ्य । मै.
भरमाह-विशे., अधिक भरमैक स्भाववाला । मै.
भरमाहु-विशे. भ्रम उत्पन्न करैवाला । मै.
भरमौआ-विशे., भ्रम दैवाला । मै.
भरर-विशे., शून्य स्थान कें भरैवाला कोनो वस्तु । मै.
भरलपुरल-विशे., धनजन पूर्ण । मै.
भरलहा-विशे., पूर्णवाला । मै.
भरली-सं., साँझक अवसर । मै.
भरसह-विशे., भार (सनेस) क संग जाइवाला सहायक । मै.
भरसहा-सं., करीन पटबैक काल ठाढ़ होइक आधार, खुटरी पर देल बाँसक टोना । मै.

भरहा-विशे., भार (उपहार) मे दैक योग्य आ भार मे आएल । मै.
भराइ-सं., भरैक काज तथा भरैक बोनि । मै.
भराएब-क्रि., खाधि अथवा खाली स्थान कें पूर्ति कराएब । मै.
भराओ-सं., भरैक स्थिति । मै.
भराओन-सं., भरैक पारिश्रमिक । मै.
भराक-सं., खसैक शब्द । विशे., भरैक योग्य । मै.
भराठ-विशे., नव माटि भरल स्थान । मै.
भरान-सं., भरैक चलैत रहैवाला काज । मै.
भरि-सं., परिमाण । अनुमान । मै.
भरिआ-विशे., भार उठाकय ल' जाइवाला । मै.
भरिआएब-क्रि., सामान्यो सरल वा हल्लुक बात कें भारी बनाएब । मै.
भरिकय-अव्यय, पूर्ण कय । मै.
भरिगर-विशे., अधिक भारी । मै.
भरिगरसों-अव्यय, गरदनि पर्य्यन्त । मै.
भरिछाक-अव्यय, पियास (तृष्णा) क अनुसार । मै.
भरिपेँर-अव्यय, डेगक अनुकूल । मै.
भरिपोख-अव्यय, तृप्तिक अनुसार । मै.
भरिमुह-अव्यय, (खाइक अर्थ मे) मुहक स्थानक अनुसार ।(बजैक अर्थ मे) प्रकट भ' क', नीक जकाँ, खुलिकय । मै.
भरियाह-विशे., तुच्छो बात कें भारी बनबैवाला । मै.
भरियाहा-विशे., अधिक भारीवाला । मै.
भरिसक-अव्यय, प्रायः । मै.
भरिहत्था-विशे., सम्पूर्ण हाथक आवरणवाला । मै.
भरिहाथ-सं., एक हाथक मान । मै.
भरुआ-विशे., सरस वस्तु के खापड़ि मे उलाकय सुखाओल । मै.
भरें-अव्यय, अवलम्ब सँ । मै.
भरेठ-सं., चार आ भीत कें मिलबैवाला भरल माटि । मै.
भरैन-सं., देखू—"भरनै" । मै.
भरोस-सं., धैर्य्य, विश्वास । मै.
भरौक-सं., भरैक आवश्यक काज । मै.
भल-सं., हित, कल्याण । विशे., भद्र, नीक । मै.
भलमनसात-सं., भद्र लोकक गुण । मै.
भलमानुस-सं., मैथिलक एक प्रभेद । विशे., सज्जन । मै.
भला-सं., हित । अव्यय, गप्पक अलंकार । मै.
भलाइ-सं., कल्याण । हित । मै.
भलेजी भले-अव्यय, नीके नीक । मै.
भव-सं., संसार, शिव । सं. तत्सम
भवन-सं., सुन्दर व्यवस्थित घर । सं. तत्सम
भवानी-सं., पार्वती । सं. तत्सम
भस्म-सं., राख, छाउर । सं. तत्सम
भसकाएब-क्रि., १. पादब । २. अनायास चूरि देब । मै.
भसब-क्रि., प्रवाह पर विवश भय के डूबब । मै.
भसभस उठब-क्रि., अनायास मुह मे घुलब । मै.
भरमभेर-विशे., मोट निन्न सँ सूतल । मै.
भसर भसर-विशे., बिना दाँतक जोर सँ पिसाइ-वाला । मै.
भसाएब-क्रि., प्रवाह पर बहाएब । मै.
भसाठ-विशे., भसियाकय आएल जंगल । मै.
भसाठी-सं., भासि कय जमा माटि । मै.
भसियाएब-क्रि., जल वेगक गति पर विवश भ' क' गतिमान होएब । मै.
भसौआ-विशे., भसिया कय आव'वाला । मै.
भहरब-क्रि., माटिक अनेर झरि क' खसब । मै.
भा-सं., १. भाओ, भाग । २. ज्योति । सं. तत्सम
भाइ-विशे., समान स्तरक पुरुष सम्बन्धी । मै.
भाउज-विशे., जेठ भाइक स्त्री (पत्नी) । भाउजि । मै.
भाउर-विशे., बलैँ, भारी, कष्टकर । सं., घुरमी भ्रमि । मै.
भाउल-सं., वनैया हिंसक पशु विशेष । मै.
भाउली-विशे., आधा उपजा (लाभ) मे नियमित भूमि । मै.
भाएब-क्रि., सोहाएब, पसिन्न पड़ब । मै.
भाओ-सं., १. बेचैक निश्चित कयल मूल्य । २. कोनो देवताक अपना पर आरोप, भगतै । मै.
भाकुर-सं., माछ विशेष । मै.
भाखब-क्रि., बाजब । मै.
भाग्य-सं., अदृष्ट, कर्मफल । सं. तत्सम/मै.
भाग-सं., १. भाग्य । २. गणितक एक नियम । ३. अंश । मै.

भागफल-सं., भाग देला पर शुद्ध निष्कर्ष । मै.
भागब-क्रि., पड़ाएब । मै.
भागमन्त-विशे., भाग्यशाली । मै.
भागा-सं., फाँटैवाला अंक । मै.
भागिन-विशे., बहिनिक बेटा (पुरुषक हेतु) । मै.
भागी-विशे., उत्तरदायी, फलभोगी । मै.
भाङ-सं., शिवक बूटी, निशाँवाला वनस्पति जकर पत्ती कें पीसि पीयल जाइत अछि । मै.
भाङठ-सं., १. बाधा । २. (लाक्षणिक) मासिक धर्मक द्वारें स्त्रीक धर्म कर्मक अवरोध । मै.
भाङब-क्रि., तोड़ब, फोड़ब, काटिकय फाँक करब । मै.
भाज्य-विशे., भाग देला सँ तोड़ैवाला अंक । सं. तत्सम
भाँज-सं., १. कोनो विषयक तालमेल । २. कौड़ी आदि भँजैक (खेल मे फेंकि निश्चित मान अनैक) पारी । मै.
भाजक-विशे., स्थूल अंक मे भाग देम'वाला अंक । मै.
भाँजब-क्रि., १. खेल मे कौड़ी आदि उछालि कय फेरब । २. संग मिलि जाएब । मै.
भाँजल-विशे., संग मिलल बहुत लोक । मै.
भाँजा-सं., अनेक प्रकारक भूजल खाद्य । हि. तत्सम
भाँजि-सं., यातायातक चिह्न । मै.
भाँजी-सं., तेल आदि मे भूजिकय बनाओल भूजाखाद्य तथा तरकारी । मै.
भाञ भाञ करब-क्रि., अत्यन्त सुनसान रहैक द्वारें घर आदिक भयावह होएब । मै.
भाट-विशे., शुभ अवसर पर तथा सामन्त राजाक द्वार मे शुभकामना आ प्रशंसात्मक कवित्त पढ़ैक व्यवसायी लोक । मै.
भाँटा-सं., व्यञ्जनवाला फल विशेष । मै.
भाटा-सं., समुद्रक लहरिक नीचा दिश उतरैक क्रम । मै.
भाँटि-सं., छोट वनस्पति (झार) विशेष । मै.
भाँटिन-सं., गोल आ पैंघ भाँटा । मै.
भाठ-सं., बामा कातक अनादरक स्थान । मै.
भाठा-सं., १. नीचाँ मुह होइत स्थान । २. लिखैक अभ्यासक हेतु माटिक ढेला । ३. पकैक हेतु विशेष प्रक्रिया सँ लगाओल ईंटा सभक राशि । मै.
भाठि-विशे., बाम भागक रहनिहार । मै.
भाँड़-सं., भाण्ड, माटिक वासन । सं. तत्सम
भाँड़कूर-विशे., भानस मे उराहल अनेक माटिक वासन । मै.
भाँड़ब-क्रि., निश्चित वा अंकित कयके छोड़ि देब । मै.
भाँड़ बहरायब-क्रि., महिसिक योनि सँ गर्भाशयक आँत बहार होएब । मै.
भाँड़ा-सं., भानस मे प्रयोग करैवाला नित्तह दिनक अपैत माटिक वासन । मै.
भाड़ा-सं., आनक वस्तुक उपयोगक बदला देबा योग्य मूल्य । मै.
भात-सं., सिद्ध कयल चाउर । मै.
भातिज-विशे., भाइक पुत्र । मै.
भाथर-विशे., अकर्मण्य । मै.
भाथि/भाथी-सं., आगि कें प्रज्ज्वलित करैक चामक बनल यन्त्र । मै.
भाद्रपद-सं., भादव मास । सं. तत्सम
भादव-सं., मास विशेष । मै.
भान-सं., आभास सँ ज्ञान । सं. तत्सम
भानस-सं., पाकक प्रक्रिया । मै.
भाना-सं., छवि, रंगरूप । मै.
भाने-क्रि., भनथि, कहथि । मै.
भाँपब-क्रि., अनुमानक द्वारा रहस्यक बात बूझब । मै.
भाफ-सं., आँच पड़ला सँ धूआँक रूपें उड़ैत जलकण । मै.
भाफब-क्रि., उसिनब, अर्ध सिद्ध करब । मै.
भाफी-सं., गरम पानि सँ उठैत भाफक सेक । मै.
भाभट-सं., अपन आडम्बरक विस्तार । मै.
भाभन्स-सं., सदुपयोग सँ अभ्युदय । मै.
भाभरी-सं., भय प्रदर्शनक हेतु त्रासक बात । मै.
भाभा-सं., अर्क चुबबैक सरल यन्त्र । मै.
भाभी-विशे., भाउजि । हि. तत्सम
भाय-विशे., भाइ । मै.
भार-सं., गुरुता (तौल मे) । मै.
भारत/भारतवर्ष-सं., एक पूर्वी उपमहाद्वीप देश । मै.

भारती-सं., १. भारतवासी । २. सरस्वती । सं. तद्भव

भारतीय-विशे., भारतवासी । सं. तत्सम

भारदोर-सं., अनेक प्रकारक उपहार (सनेस) क सामग्री । मै.

भारपन-सं., गरिमा, गौरवशालिता । मै.

भारब-क्रि., भिजाओल धान आदि अन्न कें आँच पर सुखाएब । मै.

भार बहब-क्रि., १. निर्वाहक स्थायी व्यवस्था करब । २. सीक पटै पर दुहु दिश सनेस उठाकय कन्हा पर ल' जाएब । मै.

भारभीस-सं., फूसि बड़प्पन । मै.

भारी-विशे., गुरुत्ववाला । वजनदार । मै.

भारु-विशे., कष्टकर, बलै । प्रयोग—"प्रान भारु भेल छौह जे आगि मे कूद' जाइ छह ।" मै.

भारू-सं., दोसर देशक प्रचलित सिक्का (रुपैया) मे विनिमय ले देवा योग्य अधिक राशि । मै.

भाल-सं., कपाड़, ललाट । सं. तत्सम

भालरि-विशे., बिन फाटल सम्पूर्ण केराक पात । मै.

भालसरि-सं., बड़का वनस्पति मे सुगन्धवाला फूल । मेंही आ सुगन्धि भरल फूलवाला बड़का गाछ । मौलिसिरी । मै.

भाला-सं., अस्त्र विशेष । मै.

भालु-सं., हिंसक जंगली पशु । मै.

भाव-सं., १. शब्दक सारांश । २. प्रकृतिक अनुकरण । ३. अपेक्षितारय । मै.

भावना-सं., १. मनकथा, मन मे घूमैत विचार-धारा । २. कोनो वस्तु कें द्रव मे डुबबैक प्रक्रिया । मै.

भावब-क्रि., १. विचार करब, कोनो वस्तु कें डुबा कय राखब । मै.

भावा-सं., विक्रयक निश्चित मूल्य । मै.

भावी-सं., होनहार, भवितव्य, अदृष्ट । मै.

भावुक-विशे., अधिक सम्वेदनशील । मै.

भाष्य-सं., शब्द आ वाक्यक स्पष्ट तथा अर्थक प्रकाशन । सं. तत्सम

भाषण-सं., व्याख्यान । सं. तत्सम

भाषब-क्रि., वाजब । मै.

भाषा-सं., बोली । सं. तत्सम

भास्कर-सं., सूर्य । सं. तत्सम

भास-सं., १. लूरि, ढंग । २. गदौस । ३. गीतक स्वर । ४. अवगति । मै.

भासनि-सं., भासिकय आएल गदौस । मै.

भासब-क्रि., पानिक वेग पर बहब । मै.

भासा-सं., गदौसक ढेरी । मै.

भासा-विशे., दुगोड़बा चौकी बामा कातक बड़द । मै.

भि

भिक्षा-सं., याचना, अआदि वस्तुक बिन मूल्य आ घुरबैक रूपें प्रार्थना । सं. तत्सम

भिक्षाटन-सं., जीवन निर्वाह ले अन्न वस्त्र कें मङैक हेतु भ्रमण । सं. तत्सम

भिक्षुक-विशे., भीख मङैवाला । सं. तत्सम

भिखमंगा-विशे., भीख मङैवाला । मै.

भिखमंगी-सं., भीख मङैक स्थिति । मै.

भिखमङनी-विशे., १. भीख मङैवाली स्त्री । सं., भीख मङैक अवस्था । मै.

भिखहारि-विशे., भीख मङनिहारि स्त्री । मै.

भिखारि/भिखारी-विशे., भीख मङनिहार पुरुष । भिक्षुक । स्त्री० भिखारिन । मै.

भिजबाएब-क्रि., दोसराक द्वारा आर्द्र बनाएब । मै.

भिजलहा-विशे., सरस अथवा पानि सँ आर्द्र बनल रहैवाला । मै.

भिजलाह-विशे., कनेक सरस रहैवाला । मै.

भिजाएब-क्रि., पानि सँ आर्द्र बनाएब । मै.

भिजुआ-विशे., पानि मे भिजा कय तैयार करैवाला । मै.

भिट्ठा-विशे., डीहार ऊँच खेत । सं., द्रव्य विशेष । मै.

भिड़काएब-क्रि., परस्पर सटाएब । मै.

भिड़गर-विशे., विशेष मेला भरल । मै.

भिड़न्त-सं., परस्पर विरोधक उग्रता । मै.

भिड़ना-विशे., सटैवाला आ सटबैवाला । मै.

भिड़नी-सं., डोरी लपेटैक विशेष साधन । मै.

भिड़ाइ-सं., परस्पर टक्कर लड़बैक क्रम । मै.

भिड़ाएब-क्रि., परस्परक टक्कर लड़ाएब । मै.
भिड़ान-सं., परस्परक टक्कर । मै.
भिड़ाह/भिड़ुआ-विशे., अधिक मेलावाला स्थान । मै.
भिण्डा-सं., पोखरि आदिक महार । ढूहवाला स्थान । मै.
भिण्डी-सं., १. जौड़सन वस्तुक लपेटन । २. राम झिङुनी तरकारी । मै.
भित्ता-सं., किनारक उच्च भूमि । मै.
भित्ती-सं., भीत जकाँ बनाओल आरि । मै.
भितघर-सं., माटिक देवालवाला घर । मै.
भितधरा-सं., माटिक देवालवाला घरक समूह । मै.
भितटप्पा-विशे., (लाक्षणिक) चोराकय अनुचित बाटें समूह मे प्रवेश करैवाला । मै.
भितरका-विशे., भीतर (गुप्त) रहैवाला । मै.
भितरपेन-विशे., उपर सँ बहार दिश आ नीचाँ भीतर दिश रहैवाला खुट्टा । मै.
भितराएब-क्रि., भीतर मे नुकाएल रहब । छिपाकय राखब । मै.
भितराह-विशे., भीतर मे गुप्त रहैवाला । मै.
भितरिया-विशे., भीतर मे जमा गुप्त बात । मै.
भितरी-विशे., अन्तःकरणक बात । मै.
भितरें भीतर-अव्यय, अप्रकट रूपें । मै.
भितियाएब-क्रि., भीत जकाँ बोझ आदि पदार्थ कें छल्ली लगाकय राखब । मै.
भिद्दा-सं., रहस्य, भेद, तथ्य । मै.
भिन्न/भिन-विशे., दोसर, अलग । सं. तत्सम/सं. तद्भव
भिनकब-क्रि., कीड़ा मकोड़ा आ रौद वसात सब सँ घृणित बनब । मै.
भिनकलहा-विशे., घृणित बनल । मै.
भिनकाह-विशे., घिनौन । मै.
भिनकी-सं., घृणा । मै.
भिनभिनाएब/भिनभिन करब-क्रि., घृणित होएब । मै.
भिनसर-सं., प्रातःकाल । मै.
भिनसरवा-सं., उषा काल । मै.
भिनसरुका-विशे., प्रातः कालवाला । मै.
भिनाउज-सं., परस्पर सम्पत्तिक पृथक् करैक प्रक्रिया तथा स्थिति । मै.
भिनिर भिनिर करब-क्रि., अधिक कालधरि उपेक्षित रहने घृणित होएब । मै.
भिनुसार-सं., भोर, उषाकाल । मै.
भिरखा-सं., अपैत (अपवित्र) क सम्पर्क । मै.
भिरखाह-विशे., अशुद्धक सम्पर्कवाला । मै.
भिरगर-विशे., कठिनाह । मै.
भिरगरहा-विशे., सब सँ अधिक कठिनवाला । मै.
भिरहगर-विशे., अत्यन्त भारी एवं श्रम साध्य । मै.
भिराएब-क्रि., सटाएब, सम्पर्क कराएब । मै.
भिरान-सं., सम्पर्क । मै.
भिरुआ-विशे., सम्पर्क रखैवाला । मै.
भिरौआ-विशे., बल सँ सम्पर्क रखैवाला । मै.
भिलल-सं., जंगली जाति, आदिवासी । मै.
भिलबा-विशे., आदिवासी । मै.
भिसिण्ड-विशे., स्थूल आ पैघ आकारवाला । मै.
भिहगर-विशे., मोट डाँट आ अधिक नाम रहैक द्वारें भयंकर । मै.

भी

भीख-सं., भिक्षा, याचनाक फल । मै.
भीङब/भीजब-क्रि., आर्द्र होएब । पानि वा द्रव पदार्थ सँ गील होएब । मै.
भीठ-विशे., डीहार भूमि । मै.
भीड़-सं., मेला । मै.
भींड़-सं., ऊँच भूमि, पहाड़क चोटी जकाँ बनल भूमि । मै.
भीड़ा भीड़ी-सं., परस्पर टक्कर लड़ैक प्रवृत्ति । मै.
भींड़ी-सं., जौड़ आदि वस्तुक लपेटन । मै.
भीड़ैवाला-विशे., विरुद्ध मे डटैवाला, प्रतिरोध करैवाला । मै.
भीत-सं., घरक माटिक देवाल । मै.
भीतर-अव्यय, अन्दर, अन्तःस्थल । मै.
भीन-विशे., देखू—"भिन्न"। मै.
भीनभिनाउजि-सं., अलग होइक प्रवृत्ति । मै.
भीनी-विशे., मन्द आ गम्भीर । शान्तिपूर्ण । मै.
भीम-सं., पौराणिक पुरुष । विशे., भयंकर । मै.
भीर-सं., कठिनाइ । मै.

भौंरा-सं., स्थूल वस्तुक लपेट। मै.
भौंरी-सं., पातर एवं छोट वस्तुक लपेट। मै.
भील-सं., आदिवासी जाति। मै.
भीह-सं., डर, भय। मै.

भु

भुइँ/भुइँआँ-सं., भूमि। जमीन। मै.
भुक्खड़-विशे., कहियो भरि पेट खाइक स्थिति नहि रखैवाला। मै.
भुकतान-सं., चुकती, देय वस्तुक दान। मै.
भुक द'-अव्यय, हठात् प्रकाश कय। मै.
भुकनमा-विशे., अधिक भूकैवाला। मै.
भुकना-विशे., भूकैवाला। मै.
भुकनी लागब-क्रि., एकै बात कें मङैक रूपें बराबरि बाजव। मै.
भुकभुक करब/भुकभुकाएब-क्रि., थोड़ इजोत करैत अपन अस्तित्वक आभास देव, आभासित होएब। मै.
भुकाएब-क्रि., बल सँ कुकुर आ हाथी आदि जानवर कें मुहक शब्द कराएब। मै.
भुखला-विशे., नित्तह गरीबीक द्वारें पेट नहि भरैवाला। मै.
भुखाएब-क्रि., भूख सँ अधिक व्याकुल होएब। भूख सँ व्याकुल बनाएब। मै.
भुखिया-विशे., गरीब सँ अधिक काल भूखल रहनिहार। मै.
भुच्च-विशे., अज्ञ, किछु नै जनैवाला, ज्ञानहीन। मै.
भुच्चड़-विशे., बुझौलौ पर किछु नै बुझैवाला। मै.
भुज/भुजा-सं., बाँहि। सं. तत्सम
भुजंग-सं., साँप। सं. तत्सम
भुजना-सं., भूजैक वासन। मै.
भुजनिहारि-विशे., कोनो अन्न भूजैवाली। मै.
भुजवन्न-सं., बाजूबन्द गहना। मै.
भुजबी-सं., विशेष ढंगें अत्यन्त मेंही खण्ड। मै.
भुजलहा-विशे., भूजलवाला। मै.
भुजाइ-सं., भूजैक लगातारक क्रम। मै.
भुजाएब-क्रि., खापड़ि मे दय सुखले सिद्ध करब। मै.
भुजाओन-सं., भूजैक बोनि। मै.
भुजान-सं., भूजैक क्रम। मै.
भुजाली-सं., नेपाली खाँड। अस्त्र विशेष' मै.
भुजिया-सं., १. भूजल जकाँ मेंही पकवान। २. मेंही भुजवी कय तरल तरकारी। मै.
भुजुआ-विशे., तेल मे भूजि कय बनल खाद्य। मै.
भुजौआ-विशे., केवल भूजियैकय बनैवाला खाद्यान्न विशेष। मै.
भुट्ट-विशे., नट्टा, बौना, छोट धूआ कायावाला। मै.
भुट्टा/भुटबा-विशे., १. छोट शरीरवाला। २. मकैक दानावाला नेढा। मै.
भुटकब-क्रि., कोनो कारणें देहक रोइआँ ठाढ़ होएब। मै.
भुटकुनमा-विशे., छोट मुदा चाकर आ नोट देहवाला। मै.
भुटकुरी-विशे., छोट मोट शरीरवाला। मै.
भुटखुँट-विशे., भुट्ट मुदा पुष्ट देहदशावाला। मै.
भुटगर-विशे., भुट्ट जकाँ लगैवाला। मै.
भुटभुट-सं., कोनो अन्न उलबै काल अन्न फुटैक शब्द। मै.
भुटाँड़ि-विशे., भुट्ट जकाँ देखै मे रहैवाला। मै.
भुटाँस-विशे., देह दशा सँ भुट्ट बूझि पड़ैवाला। मै.
भुड़रब-क्रि., आगि मे द' क' पकाएब। मै.
भुड़भुड़ी-सं., चुट्टी आदि जीवक द्वारा धरती कोड़ि कय जमा कयल मेंही माटिक गर्दी। मै.
भुड़रा-विशे., आगि मे पाकि कय सुखाएल सिद्ध। मै.
भुण्डी-सं., १. भृङ्गराजक फड़। २. बुटामक स्थान मे बनाओल गोल साधन। मै.
भुतचट्ट-विशे., भूर लगैत रहला सँ दुर्बल। मै.
भुतराकस-विशे., (लाक्षणिक) राति बिराति किछु नै बुझनिहार। बुड़राक। मै.
भुतलग्गू-विशे., भूत लगैक प्रकृतिवाला। मै.
भुतसप्पा-विशे., बिना दाढ़ भेने झारला सँ बराबरि चढ़ै उतरैवाला साँपक विष। मै.
भुतहा-विशे., बहुत दिन सँ छोड़ल रहने अलक्षित भयावह घर मकान। मै.
भुतही-विशे., श्मशानवाली गाछी, भूतक उपद्रववाला स्थान। मै.
भुतान्सै-सं., भूतक आकस्मिक उपद्रव। मै.

भुताह-विशे., भूतक द्वारें भयावह । स्त्री० भुताहि । मै.

भुन्ना-सं., नाम चाकर माछ विशेष । मै.

भुन्नी-सं., छोट भुन्ना माछ । मै.

भुनचट्टी-सं., भुन्ना माछक बच्चा । मै.

भुभूका-विशे., अत्यन्त जगजियार रंगवाला । मै.

भुमगोल-सं., १. अचानक गर्दा धूरा सँ आन्हर । २. (लाक्षणिक) अपवादक प्रचार । मै.

भुमफोड़-विशे., (लाक्षणिक) भूमि फोड़िकय बहराएल । अकस्मात् उत्पन्न । मै.

भुमहुर-सं., छाउर मे नुकाएल आगिक कण । मै.

भुर्रा होएब-क्रि., झरकि झरकिकय पाकब । (आगि सँ) । मै.

भुरकी-सं., कम पेटवाला भूर । मै.

भुरकुरी-सं., गोल छोट माटिक कोठी । मै.

भुरकुस्सा-विशे., चूर्ण विचूर्ण । अत्यन्त कण कण छूटल । मै.

भुररा होएब-क्रि., ताप कण सँ अनेक ठाम पाकि जाएब । मै.

भुरड़ी-विशे., आँच पर भूजि कय स्वादिष्ट बनाएब । मै.

भुरभुरा-सं., सुखाएल माटि ढील करैवाला कीड़ा । मै.

भुरसा-सं., गर्दीवाला पदार्थ । मै.

भुरहा-सं., सुखाएल गर्दीवाला गुड़ । मै.

भुराङ-सं., पैघ भूर । मै.

भुल्ल-विशे., ललाओन केशवाला । मै.

भुल्लर/भुलक्कर-विशे., अधिक बिसरैवाला । मै.

भुलकब-क्रि., देहक रोमाञ्चित होएब । सिहरब । मै.

भुलकी-सं., देहक सिहरन । मै.

भुलब-क्रि., बिसरब । मै.

भुलाएब-क्रि., बिसरि जाएब । मै.

भुलौआ-विशे., बिसराह । मै.

भुवन-सं., संसार । सं. तत्सम

भुसकाएब-क्रि., बिना शब्दें नीचाँ सँ वसात छोड़ब । मै.

भुसकौल-विशे., पढै लिखै मे संस्कारहीन, बुद्धिक चौपट । मै.

भुसखाँड-सं., (लाक्षणिक) भुस्सा रखैक कृत्रिम साधन । अत्यधिक भुसहन खाइवाला । मै.

भुसना-विशे., गर्दी आ भट रंगवाला (सिन्दूर) । मै.

भुसबा-सं., छठिक उपासना मे चाउरक चिकस सँ बनाओल लड्डू । मै.

भुसभुस-सं., वायु छूटैक सांकेतिक शब्द । मै.

भुसभुसी-सं., भुस भुस क' क' अधोवायु छूटैक क्रम । मै.

भुसहन-सं., उपर खोइँचावाला अन्न धान गहूम आ राहरि आदि । मै.

भुसहा-विशे., भूसा भरल अन्न । मै.

भुसुर भुसुर-अव्यय, बिन प्रयासें मुह मे चिबबैक आ चूरैक योग्य । मै.

भू

भू-सं., पृथ्वी । सं. तत्सम

भूअंकर-विशे., विशालताक द्वारें भड़कदार । मै.

भूआ-सं., विषाक्त रोइआँवाला छोट आ नम्मा कीड़ा । मै.

भूकब-क्रि., कुकूर आदि जानवरक शब्द करब । मै.

भूकम्प-सं., धरतीक डोल, कम्पन । सं. तत्सम

भूख-सं., क्षुधा, शरीर कें खाद्य वस्तुक आवश्यकता । मै.

भूखल दूखल-विशे., अवसर पर भूखें आकुल । मै.

भूगोल-सं., १. शास्त्र विशेष । २. पृथ्वीक गोलायम रूप । मै.

भूचाल उठब-क्रि., (लाक्षणिक) भूकम्पक समय जकाँ आतंकक संग चञ्चलता होएब । मै.

भूजब-क्रि., खापड़ि मे द' क' अन्न कें आँच सँ सुखाकय सिद्ध करब । मै.

भूजा-सं., भूजल अन्न । मै.

भूजाभुरड़ी-सं., भूजैक आ गरम'बैक काज । मै.

भूटा-सं., दाना भरल मकैक नेढा । मै.

भूत-सं., मृतात्मा, अलक्षित रूप । मै.

भूतल-सं., धरातल । सं. तत्सम

भूत लागब-क्रि., मृतात्माक उपद्रव होएब । मै.

भूधर-सं., पहाड़ । (लाक्षणिक) अत्यधिक मोट आ नाम । सं. तत्सम

भूप-विशे., राजा । सं. तत्सम
भूमि-सं., जमीन, धरती । सं. तत्सम
भूर-सं., छेद, बिल । मै.
भूरभार-सं., अनेक प्रकारक बिल आ छेदक समूह । मै.
भूरा-सं., लाल चीनी, सक्कर । मै.
भूरा रंग-सं., कनेक खैरा रंगसन लाल । मै.
भूल-सं., गलती, घट्टी । मै.
भूलचूक-सं., घट्टी आ त्रुटि । मै.
भूलब-क्रि., बिसरब, गलती करब । मै.
भूलभुलैया-सं., मन कें भ्रम उत्पन्न करैवाला प्रक्रिया । मै.
भूसा-सं., अन्नक डाँटक गरदी कुन्नी धानक छिलका । मै.
भूसी-सं., अन्नक डाँटक खण्ड, टुकड़ी । मै.

भृ

भृङ्ग-सं., नचैवाला कीड़ा, भ्रमर । सं. तत्सम
भृङ्गराज-सं., भङेरिया घास । सं. तत्सम
भृङ्गी-सं., नन्दी, महादेवक परिकर । सं. तत्सम

भे

भेख-सं., बर्ग, रूपरंग । मै.
भेजब-क्रि., पठाएब, प्रेषण । मै.
भेज पूरब-क्रि., प्रतिनिधित्व करब । मै.
भेट-सं., १. पानि मे उपजैवाला राति मे फुलाइ वाला फूल जकर कन्द आ दानावाला फड़क फलाहार होइत अछि । मै.
भेंट-सं., साक्षात्कार । सामना सामनी । मै.
भेंटकी-सं., स्तनक अगिला गोल आ कारी रंगक अंग । मै.
भेंटघाट-सं., साक्षात्कार एवं सम्मेलन । मै.
भेटब-क्रि, प्राप्त होएब । मै.
भेटमास-सं., देखू—"भेट"। कैरब फूल । मै.
भेटाइ देब-क्रि., अकस्मात् बराबरि प्राप्त होएब । मै.
भेटाँड़ी-विशे., छोट खाँट आ भुट्ट । मै.
भेंड़-सं., पशु विशेष । स्त्री० भेंड़ी । मै.
भेंड़बा-सं., अशुद्ध अक्षरक विकृति चिह्न । मै.
भेंड़ा-सं., देखू-"भेंड़" । मै.
भेंड़ारी-सं., भेंड़ बकरीक दानादार मल । मै.
भेड़िया-सं., लाकर, हिंसक जानवर । मै.
भेड़िया धसान-सं., बिन सोचनै विचारनै समूह लोकक एकमुहरी होएब । मै.
भेड़िहर-विशे., भेड़ा पोसैक व्यवसायवाला । मै.
भेद-सं., १. फाटनि । २. रहस्य । ३. प्रकार । सं. तत्सम/मै.
भेद करब-क्रि., फुटाएब, अलग करब । मै.
भेद पीसब-क्रि., अनेक औषध कें एकठाँ मिलाकय पीसैक टोना । मै.
भेदभाव-सं., विचार आ व्यवहारक भिन्नता । मै.
भेदाएब-क्रि., कटाएब, फाँक कराएब । मै.
भेदिया-विशे., गुप्तचर, जासूस । मै.
भेंभियाएब-क्रि., बकरीक आकुलता सँ बाजब । मै.
भेम्ह-सं., भ्रमरसन कारी अशुभ कीड़ा । मै.
भेर-विशे., बेसुधि सूतल । मै.
भेर लागब-क्रि., समूह मे एकट्ठा रहब । मै.
भेरिखी-सं., अन्न मे मिलल घृणित आ अग्राह्य वस्तु । मै.
भेरी-सं., १. युद्ध बाजा । २. अत्यन्त गाढ़ निद्रा । मै.
भेल-विशे., होइक भूतकालक क्रिया । मै.
भेला-सं., औषधिक पदार्थ । मै.
भेला गेला पर-अव्यय, अन्त काल मे । मै.
भेली-सं., गोल आ मुठरावाला विशेष गुड़ । मै.
भेष-सं., रूपरंग । मै.
भेंसब-क्रि., काँट सँ ल' क' भाला बरछा आदि अस्त्र सभक शरीर मे प्रवेश कय घाइल करब । मै.
भेंसाएब-क्रि., स्वतः भोंकल होएब । मै.

भै

भै-सं., १. भाइक सम्बन्ध । २. डर । मै.
भैं भैं करब-क्रि., बकरीक आर्त शब्द करब । मै.
भैंबट-सं., भाइ सभक बीच कयल जाइवाला बाँट बखरा । मै.
भैमी-सं., विशेष (माघक) एकादशीक नाम । सं. तत्सम
भैया-सं., भाइक प्रति सम्बोधन । मै.
भैंस-सं., दूध देम'वाला बड़का जीव । मै.

भैंसा-विशे., महिंसिक गर्भाधान करैवाला पुरुष भैंस। मै.

भैंसुर-विशे., पतिक जेठ भाइ, भावश्वसुर। मै.

भो

भों-अव्यय, पदैक शब्दक अनुकरण। मै.

भोंकना-सं., भोंकैवाला अस्त्र। मै.

भोंकब-क्रि., भेंसवैक क्रिया, भेंसब। मै.

भोंक भोका-सं., लगातार भोंकैक क्रम। मै.

भोकन्नर फूटब-क्रि., १. भगन्दर घाओ होएब। मै. २. (लाक्षणिक) गम्भीर आ अनन्त छेद होएब। भूर होएब। मै.

भोकरनमा-विशे., अधिक चिकरैवाला। मै.

भोकराहा-विशे., जोर सँ बजैवाला। प्रयोग—"चिकराहा भोकराहा सँ लागी ननमुहाँ सँ नहि लागी।" मै.

भोंकाएब-क्रि., काँट सँ ल' क' अस्त्रधरि शरीर मे भेंसल भ' जाएब। मै.

भोकान-सं., विशेषता सँ भोंकैक भाव। मै.

भोकारि पाड़ब-क्रि., साधारणो बात मे जोर सँ कानि उठब। मै.

भोकासी देब-क्रि., अत्यन्त दुःख सँ शब्द करैत कानि उठब। मै.

भोंकाह-विशे., भोंकल जाइक योग्य। मै.

भोग्य-विशे., भोग करैक योग्य। सं. तत्सम

भोग-सं., जीवन मे सुख दुखक अनुभव। सं. तत्सम

भोगता-विशे., भोग करैक भाग्यवाला। मै.

भोगब-क्रि., सुख दुखक अनुभव करब। मै.

भोगाएब-क्रि., भोग कराएब। मै.

भोगान-सं., भोगक विशेषता। मै.

भोगार-विशे.,अत्यन्त प्रफुल्लित, पुष्ट आ सुन्दर। मै.

भोगी--विशे., भोग करैक अनुभववाला। सं. तत्सम

भोगीन्द्र-विशे., उत्तम भोग करैवाला। मै.

भोज्य-विशे., खाद्य पदार्थ। सं. तत्सम

भोज-सं., सामूहिक आ विशेष रूपक भोजन क्रम। मै.

भोजक बेर कुम्हड़ रोपब-क्रि., (लोकोक्ति) अधिक दिन सँ होम'वाला काज तुरन्त होइक इच्छा राखब। मै.

भोजखौका-विशे., भोज खाइक विशेष तृष्णा रखै-वाला। मै.

भोजघरा-सं., भोजक स्थान आ घर। मै.

भोजन-सं., खाएब। सं. तत्सम

भोजनी-सं., भोजन करैक बखरा। मै.

भोजपत्र-सं., कागज सन गाछक विशेष छाल। भुर्जपत्र। सं. तद्भव

भोजैत-विशे., भोज करैवाला व्यक्ति। मै.

भोट-सं., मतदान, वोट। अं. तद्भव

भोंट-सं., नम्मा आँत। मै.

भोंट चहकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पेट आँत कें आदङ्क द' क' फाड़ैक अनुभव कराएब। मै.

भोट देश-सं., पर्वतीय भुट्टान देश। मै.

भोटिया-विशे., भुट्टान देशक वस्तु। मै.

भोंटी-सं., पेटक विभिन्न प्रकारक आँत। मै.

भोंड़-विशे., अंगहीन, अपङ्ग। मै.

भोड़ही-सं., माछ विशेष। मै.

भोंड़ा-सं., पैघ माछ विशेष। मै.

भोतरी-सं., पेटक अन्नक कोश (थैला)। मै.

भोतियाएब-क्रि., भ्रमित होएब, भटकि जाएब। अज्ञान वश उचित वाट छोड़ि आन वाट ध' लेब। मै.

भोथ-विशे., मन्द बुद्धिवाला लोक आ मोट धार वाला अस्त्र। मै.

भोथका-विशे. मोट धारवाला हाँसू आदि। मै.

भोथड़-विशे., देखू—"भोथ"। मै.

भोथएब-क्रि., नेन्ना कें चंगकय दुलार करब। मै.

भोथहा-विशे., भोथवाला। मै.

भोथाएब-क्रि., बुद्धि आ धार मोट होएब। मै.

भोथुआ-विशे., भोथ रहैवाला। मै.

भोंदू-विशे., ज्ञान शून्य लोक। मै.

भोंपू-सं., स्वचालित यन्त्रक लोक कें सावधान करैक विशेष शब्द। मै.

भोंभां करब-क्रि., मालजालक लगातार शब्द करब। मै.

भोंभां शंख-विशे., अधिक जोर सँ कनैवाला आ शब्द करैवाला। मै.

भोंभांड़-सं., पैघ भूर आ छेद। मै.

भों भों-अव्यय, शब्द विशेष। मै.

भोम्हरब-क्रि., देहक अनेक ठाम दाँत आ नह सब सँ आघात करब। मै.

भोम्हरा-सं., भ्रमर। मै.
भोर-सं., प्रभात। मै.
भोरका-विशे., प्रभात कालवाला। मै.
भोरगर-विशे., अत्यन्त उषाकाल। मै.
भोरंभोर-सं., अत्यन्त भोरक समय। मै.
भोरहरबा-सं., उषाकालवाला समय। मै.
भोरहरिया-विशे., प्रभात कालवाला समय। मै.
भोर होएब-क्रि., प्रभात काल होएब। मै.
भोरुका पहर-सं., दिनुक पहिलुक पहर। मै.
भोरहरिया-सं., ब्राह्म मुहूर्त। मै.
भोलबा साग-सं., साग विशेष। मै.
भोला-विशे., सदा प्रसन्ने रहैवाला। मै.
भोस-सं., उड़ैवाला छोट कीड़ा। मै.

भौ

भौँ-सं., १. बिक्रीक वस्तुक दर। २. भगतई। मै.
भौँआँडेर-विशे., भौंह दिश उठल आँखिक डिम्भा वाला। मै.
भौँक-सं., वसात चाक जकाँ घूमब। मै.
भौँक मारब-क्रि., वसातक घूमि जाएब। मै.
भौंकी काटब-क्रि., घूमैत जकाँ टेढ़ मेढ़ भ' क' दौड़ब। मै.
भौजी-विशे., जेठ भाइक पत्नी। मै.
भौँड़ी-विशे., अपंग स्त्री। मै.
भौरी-सं., बिक्री करैले भ्रमण। मै.
भौँह-सं., आँखिक उपरक अंग मै.

म्य

म्याउँ-अव्यय, बिलाड़िक बजैक अनुकरण। मै.
म्यान-सं., अस्त्र (तरुआरि) क खोल। मै.
म्याद-सं., कालक अवधि। मै.
म-सं., सा रे ग म एहि मे चारिम स्वर, षड्ज। मै.
मइआ-सं., मैँ, माता, माँ। मै.
मइमुह-विशे., माइकसन मुहवाला नेन्ना। मै.
मक्का-सं., १. मकै अन्न विशेष। २. मुसलमानक तीर्थ विशेष। मै.
मक्खन-सं., दूधक नेनु, नवनीत। मै.
मक्खीचूस-विशे., (लाक्षणिक) कृपण, कदर्य। मै.
मकइ-सं., दाना गूहल नढ़ावाला अन्न विशेष। मै.
मकइआ-विशे., मकइक दानासन देखि पड़ैवाला तथा होम'वाला। मै.
मकड़गोड़-विशे., मकड़ जकाँ टेढ़ आ नाम पैरवाला। मै.
मकड़ा-सं., शरीरक सूत तनैवाला कीड़ा विशेष। मै.
मकड़ाजाल-सं., (लाक्षणिक) मकड़ाक जाल सन जटिल आ गुत्थीवाला समस्या। मै.
मकड़ी ऐंठब-क्रि., (लाक्षणिक) सुधरल काजक मूल मे बाधा क' देब। मै.
मकब-क्रि., उन्मत्त जकाँ मालजालक उछलि कूदि कय दौड़ब। मै.
मकमकाएब-क्रि., अवरुद्ध भ' जाएब। मै.
मकाएब-क्रि., उन्मत्त जकाँ मालजाल केँ नचाएब। मै.
मकर-सं., १. हिंसक जलजीव विशेष। २. राशि विशेष। सं. तत्सम
मकर पचीसी-सं., १. उलझन भरल युवावस्था। २. मकर संक्रान्ति सँ केवल २५ दिन धरि जाड़। मै.
मकर संक्रान्ति-सं., सूर्यक मकर राशि मे प्रवेश। सं. तत्सम
मकराएब-क्रि., ससरै बहैवाला वस्तुक गति मन्द होएब। मै.
मकराएल-विशे., थम्हल गतिवाला। मै.
मकान-सं., घर, स्थायी निवास। हि. तत्सम
मकार-सं., १. 'म' अक्षर। २. म आदि अक्षरवाला वस्तु। मै.
मकुआ-विशे., आगू सँ मोड़ल टेढ़। मै.
मकुट-सं., मुकुट। सं. तद्भव
मकुना-विशे., गर्दनि दिश सँ झुकलवाला छोट खाँटक हाथी। स्त्री० मकुनी। मै.
मकैया-विशे., मकैक दानासन नमहर मैया (शीतला)। मै.
मखरब-क्रि., अपना केँ पैघ बूझि देह चोरओने गौरव सँ बैसब। मै.
मखाएब-क्रि., कनेक मात्र लगाएब। मै.
मखाकय-अव्यय, कनेक छुबाकय। मै.

मखान-सं., जलीय फल विशेष । मै.
मखाना-विशे., मखान सन मोट कड़ा आ कोमल छाल्हीवाला सक्कत दही । मै.
मखुआ-विशे., अधिक रूपें मखैवाला । मै.
मखौआ-विशे., कनेके लगाओलवाला । मै.
मखौलिया-विशे., हँसी ठट्ठाक विनोद प्रिय व्यक्ति । मै.
मग-सं., १. शाक द्वीपीय ब्राह्मण । २. आधुनिक द्रव्यक जलपात्र । मै.
मगज-सं., चानि, कपाड़ सँ उपर माथक अंग। मस्तिष्क । उ. तद्भव/मै.
मगजी-सं., शीरकक चारू कातक शोभा करैवाला झालरि । मै.
मगन-विशे., तल्लीन, मग्न, मन सँ डूबल । सं. तद्भव
मंगल-सं., १. ग्रह विशेष, दिन विशेष । २. कल्याण । ३. शुभ । सं. तत्सम
मगह-सं., प्रदेश विशेष, मगध । मै.
मगहिया-विशे., मगध देश मे उत्पन्न । मै.
मगही-विशे., मगध देशक भाषा । मै.
मघही-विशे., माघ मास मे होम'वाला अन्न । मै.
मघा-सं., नक्षत्र विशेष । मै.
मघारि-सं., माघक वायुमण्डल । प्रकृति । मै.
मघुआ-विशे., माघ मासक उत्पन्न । मै.
मङता-विशे., माङल चाङल । सं., देवता सँ दीनता पूर्वक प्रार्थना । मै.
मङनचन-सं., मङैक मात्र स्थिति । मै.
मङनी-सं., याचना । मै.
मङरा-सं., खपड़ावाला घरक माथी पर (मुड़ेरा पर) देम'वाला खपड़ा । मै.
मङरैल-सं., कटुक (मसाला) वाला पदार्थ । मै.
मङलहा-विशे., अधिक देवता पितरक कबुलापाती आ आराधना सँ प्राप्त कयल । मै.
मङाएब-क्रि., १. अनका द्वारा अनाएब । २. आनक हेतु याचना करब । मै.
मङुरी-सं., माछ विशेष । मै.
मच्छर-सं., उड़ैवाला, देहक शोणित पीबैवाला छोटका (सूक्ष्म) जीव । मै.

मचक-सं., शरीरक अंग मे अधिक थाकनि तथा चोट आ मोड़ पड़ला सँ स्नायुक विकारक कारण आएल पीड़ा । मै.
मचकब-क्रि., स्नायु मे कोनो प्रकारें आएल विकार सँ पीड़ा होएब । मै.
मचकाएब-क्रि., १. विशेष कारणें अंगक स्नायु मे विकार कराकय पीड़ा देब । २. झोंक सँ अंग कें ऐंठब । ३. झोंक द' क' झुलाएब । मै.
मचकी-सं., झूला, विनोदक झूलि झूलि कय साधन। मै.
मचङा-सं., मचान जकाँ तकथा बैसाकय बनाओल उँचगर साधन । मै.
मच द'-अव्यय, भारी रहैक द्वारें कठिनता सँ उठाओल भ' क' । मै.
मचब-क्रि., विशेष परिस्थिति होएब । मै.
मचमच करब-क्रि., भारक द्वारें अधिक अवनतमय शब्दक संग भारी बनब । मै.
मचमचाएब-क्रि., टूटैक वा खसैक क्रम मे कोनो वस्तुक शब्द करब । मै.
मचमचौआ-विशे., भारी रहैक कारणें शब्द करैत अधिक झुकल रहैवाला । मै.
मचलहा-विशे., अधिक घन भ' क' उपजलवाला । मै.
मचाएब-क्रि., स्थिति मे तनाओ बढ़ाएब । मै.
मचान-सं., छ खुट्ठा पर वाला (बाँस) द' क' बाँसक फट्ठी बिछाकय ऊँच चौकी जकाँ बनाओल सूतै बैसैक साधन । मै.
मचिया-सं., बैसै मात्र योग्य खाट जकाँ छोट पौआ लागल आसन । मै.
मचोर-सं., अंगक अकस्मात् मोड़ पड़ला सँ स्नायु आ शिरा मे पीड़ा । मै.
मचोरब-क्रि., बल सँ कोनो अंग कें ऐठिकय पीड़ा उत्पन्न करब । मै.
मचौआ-विशे., मचबैवाला । मै.
मछखौका-विशे., अधिक माछ खयनिहार । मै.
मछगर-विशे., अधिक सुलभ माछवाला । मै.
मछगिध-विशे., माछक लाभ ले बेहाल रहैवाला । मै.

मछगिद्धी-सं., साँप विशेष । मै.
मछतरा-सं., माछ तरैवाला वासन । मै.
मछबार-विशे., माछ मारैक अभ्यासवाला । मै.
मछबारि-सं., माछ मारैक प्रक्रिया । मै.
मछरिया-सं., गहना विशेष । मै.
मछरी-सं., छोटका माछ । मै.
मछहट्टा-सं., केवल माछ बेचैक हाट । मै.
मछहर-सं., माछ मारैक विशेष योजना । मै.
मछही-विशे., माछ मात्र रन्हैक वासन । मै.
मछाइन-सं., माछक गन्ध । विशे., माछक सम्पर्क-वाला । मै.
मछारब-क्रि., पानि बहै सँ रोकैक हेतु कम ऊँच खेतक बीच आरि देब । मै.
मछारि-सं., पानि रोकैले बीच मे छोट छोट आरि । मै.
मछाल-सं., माछीक प्रचुरतावाला स्थान । मै.
मछाह-विशे., माछक सम्पर्कवाला वासन । मै.
मछियाएब-क्रि., कोनो खाद्य वस्तु पर अधिक काल-धरि माछी बैसब । मै.
मछिआनि-विशे., अधिक माछी भरल । मै.
मछुआ-विशे., माछक व्यवसायवाला । मै.
मज्झा खसब-क्रि., १. गै महिस कें बाहै सँ पहिने लस्सा सन पदार्थ योनि सँ खसब । २. डोरीक कड़ाम कें एक गलजोड़ सँ दोसर कें जोड़ैक लेल डोरी बान्हब । मै.
मज्झा चराएब-क्रि., गुड्डीक डोरी के अधिक कड़ा करैले लस्सा चढ़ाएब । मै.
मजगूत-विशे., सक्कत, मजबूत । उ. तद्भव
मजगूती-सं., दृढ़ता, सक्कतपना । उ. तद्भव/मै.
मंजन-सं., दाँत मँजैक पदार्थ । मै.
मंजर-सं., आमक मूड़ी आ मूड़ीक फूलाइक नव-कल्प । मै.
मंजरब-क्रि., १. आम आदि वृक्ष सभक विकसित होएब । २. (लाक्षणिक) नदी तथा देहक पुष्ट होएब । मै.
मंजरलहा-विशे., मँजर भरलवाला । मै.
मंजरी-विशे., फूल सँ बहराएल मात्र अजोह फल तथा बिना जोआएल केरा आदि । मै.
मँजलहा-विशे., माँजल अर्थात् धोअल पखारल-वाला । मै.
मजहूल-विशे., निम्न स्तरवाला, घटिया प्रकार वाला । मै.
मजा-सं., सांसारिक मनोरञ्जनक सुख । उ. तत्सम
मँजाइ-सं., मँजैक प्रक्रिया तथा मँजबाक पारि-श्रमिक । मै.
मँजाएब-क्रि., स्वच्छ कराएब, चमकदार बनाएब । मै.
मजाक-सं., परिहास, ठट्ठा । उ. तत्सम
मजाकी-विशे., विनोदक प्रकृतिवाला । उ. तत्सम
मजा चिखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) भयंकर दण्ड देब । मै.
मजाल-सं., दर्प, दाबी, दम । उ. तत्सम
मजीठ-सं., काष्ठौषधि विशेष । मै.
मजीरा-सं., वाद्य समूह । उ. तत्सम
मजील-सं., दूरी । मै.
मंजु/मंजुल-विशे., आकर्षक सुन्दर । मै.
मजुरपंखी-विशे., मयूर पाँखिक जकाँ रंगवाला । मै.
मजुरा-विशे., (अनादर मे) श्रमिक, जन । मै.
मजूर-सं., मयूर पक्षी । मै.
मजेदार-विशे., विनोदी मनोरंजन सँ भरल । उ. तत्सम
मँझधार मे पड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) जीवन सन्देहक संकट मे पड़ब । मै.
मँझिआएब-क्रि., बीच मे राखब, लेंव करब । मै.
मँझिआम-सं., गामक बिचला भाग । मै.
मँझिला-विशे., बीचवाला, बिचला मध्य मे होम'वाला । मै.
मट्टी-सं., माटि मे लय एवं माटि । मै.
मट्ठा-सं., १. नेन्ना भुटकाक हाथक गहना । २. दहीक पानि । मै.
मटक-सं., आँखिक पलक । प्रयोग–" आँखिक मटक लय छिटक ।" मै.
मटका-सं., चैलसन द्रव्यक आकि माटिक छोट वासन । मै.
मटकाएब-क्रि., आँखिक पल नचाएब । मै.

मटका मटकी-सं., परस्पर आँखि नचाकय इसारा । मै.

मटकी-सं., १. माटिक छोट कोही सन वासन । २. कटाक्ष, आँखिक पलक संकेत । मै.

मटकी मारब-क्रि., आँखिक पलक संकेत करब । मै.

मटकुर-सं., उत्थर आ बहुत पैघ दहीक वासन । मै.

मटकुरी-सं., चपोली सन छोट दही पौरैक वासन । मै.

मटमटाएब-क्रि., आँखि खोलै मे कष्ट होएब । मै.

मटमैल-विशे., माटिक रंग मे मलिन । मै.

मटर-सं., केराओ, केराओसन बड़का दानावाला केराओ । मै.

मटसून-विशे., बात सुनितों ध्यान नैं देनिहार । मै.

मटाल-सं., माटिक ढेरी । मै.

मटिआएब-क्रि., १. अनठाएब । बात कें तर क' देब । २. माटि लगाकय धोअब । मै.

मटिकम-सं., निरन्तर माटिक काज । मै.

मटिया-विशे., माटि सँ बनल (वासन) । मै.

मटियाएब-क्रि., माटिक संग वा माटि मे मिलाएब । मै.

मटियाइन-विशे., १. माटि मिलल । २. माटिसन बनल । मै.

मटियामेट-विशे., चिह्न समेत नष्ट, सब प्रकारें अलोपित । मै.

मटियारी-विशे., लस्सासन माटिवाला स्थान । मै.

मटियाह-विशे., माटि मिलल रहैक द्वारें घिनाओन । मै.

मटुक्का-सं., विशेष प्रकारक पैघ तौला सन माटिक वासन । मै.

मटुक्की-सं., मटुक्काक छोट रूप । मै.

मठ-सं., धार्मिक संस्थाक स्थान । सं. तत्सम

मंठ-सं., शिव मन्दिर । सं. तद्भव

मंठ जाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मृत्यु होएब । मै.

मठब-क्रि., छीलि छालिकय सुन्दर एवं चिक्कन बनाएब । मै.

मठहट-सं., फूसक घरक दू चारक जोड़वाला सब सँ उपरका स्थान । मै.

मठहट मारब-क्रि., उपर दूनू चारक मिलान कय छारब । मै.

मठलहा-विशे., छीलल बनाओलवाला वस्तु । मै.

मठाइ-सं., मठैक बोनि आ काज । मै.

मठाएब-क्रि.,चिक्कन कराकय सुन्दर बनबाएब । मै.

मठिया-सं., द्रव्यक कँगना सन निस्सन हाथक गहना । मै.

मठोमठार-विशे., वेशभूषा सँ भड़कदार बनल । मै.

मँड़गील-विशे., अधिक गलैक द्वारें माँड़ मिलल भात । मै.

मँड़फेंका-सं., भात पसाकय माँड़ फेंकैक माँड़ फेंकैवाला वासन । मै.

मंडप/मँड़बा-सं., यज्ञ आदि कार्यक हेतु बनल छोट घर । सं. तत्सम/सं. तद्भव

मड़र भाङब-क्रि., चन्द्रमण्डल जकाँ पसारल खीर कें चौठचन्द्र दिन घरक मुख्य पुरुष द्वारा खण्डित करब । मै.

मड़रा-सं., बाँसक कोनो वस्तु बीनैक बेर उपर देल सक्कत क' क' बन्हन । मै.

मँड़राएब-क्रि., उद्देश्य सँ एम्हर ओम्हर बारम्बार घूमब । मै.

मँड़सटका-विशे., सिद्ध होइत होइत सुखाएल माणवाला भात । मै.

मँड़िया-सं., लोहा पीटैवाला लोहाक घन । हथौड़ी । मै.

मड़ुक-सं., छोट गोलाकार ठाढ़ जकाँ बीनल बखारी । मै.

मड़ुऐन-सं., अन्नक संग मेंही गोलाकार अखाद्य पदार्थ । मै.

मड़ेर-सं., अन्नक संग उपजल कदन्न । मै.

मड़ैया-सं., रौद वर्षा शीत मात्र सँ बँचबै वा छोट फूसक घर । झोपड़ी । मै.

मढ़ब-क्रि., जुट्टी गूहब, पिरुकिया आदि वस्तुक मुह कें कला सँ बन्न कय कें मोड़ब । कसैले कोनो वस्तु ठोकब । मै.

मढ़लहा-विशे., गूहल, मोड़ल आ ठोकलवाला । मै.

मढ़ही-सं., छोट मुदा नियत स्थान । मै.

मढ़ाइ-सं., मढ़ैक ढब, मढ़ैक बोनि । मै.

मढ़ाएब-क्रि., मढ़ैक काज कराएब । मै.

मणबज्झू-विशे., माण भरल भात । मै.

मणाएब-क्रि., माण भरि जाएब । मै.

मणि-सं., रत्न, स्वयं प्रकाशमान पाथर। मै.
मणिद्वीप-सं., देवीक निवास। सं. तत्सम
मणियाएब-क्रि., माण जकाँ पसरल होएब। मै.
मत्त-विशे., १. कोनो निशा सँ मतल। बताह। सं. तत्सम
मत्ताहाथी-विशे., बिगड़ल हाथी। मै.
मत्ती-विशे., मन्त्र जाननिहार। मै.
मत-सं., विचार, अपन सिद्धान्त। पक्ष। सं. तत्सम
मतङ्-विशे., स्वेच्छाचारी। निश्चिन्त। मै.
मतब-क्रि., बुद्धि बिगड़ब, बताह होएब। मै.
मतलहा-विशे., बुद्धि भ्रष्ट, बताह लोक। मै.
मताएब-क्रि., निशाँ द्वारा बुद्धि भ्रष्ट कराएब। मै.
मति-सं., बुद्धि। सं. तत्सम
मतौआ-विशे., निशाँ सँ बुद्धि बिगड़' बैवाला लोक। मै.
मतौना-विशे., निशाँ लगबैवाला पदार्थ। मै.
मथदुक्खी-सं., माथ दुखाइत रहैवाला रोग। मै.
मथन-सं., कोनो द्रव पदार्थ कें बारम्बार घोंकैक प्रक्रिया। सं. तत्सम
मथनियाँ-विशे., मथैवाला व्यक्ति। मै.
मथनी-सं., चारक उपरका भाग। मै.
मथब-क्रि., बारम्वार घोंकब। सं. तद्भव
मथबाहि-सं., लगातार माथ दुखाइक क्रम। मै.
मथविकनी-सं., प्रत्येक लोकक माथक निर्देश कय वितरण, बटबारा। मै.
मंथर-विशे., मन्द गतिवाला। सं. तत्सम
मथनहा-विशे., मथिकय प्रस्तुत कयल। मै.
मथाइ-सं., मथैक क्रम, मथैक मूल्य। मै.
मथाएब-क्रि., मथैक (घोंकैक) काज कराएब। मै.
मथाक दर्द-सं., मथाँक पीड़ा। मै.
मथान-सं., मथैक विशेषता। मै.
मथानी-सं., मथैक नियमित साधन। मै.
मथाँ सोहार-सं., अक्षरक उपर अनुस्वार। मै.
मथाँ हाथ देब-क्रि., अचानक अत्यन्त चिन्ता करब। मै.
मथुआ-विशे., मथिकय बनाओल। मै.
मथौआ-विशे., मथला पर निःसत्त्व बनल। मै.
मद्दति-सं., सहायता। उ. तद्भव
मद्दी/मद्दो-सं., मान्यता, मानत, मुख्यता। मै.
मद्य-सं., दारू, मादक द्रव। सं. तत्सम
मद-सं., १. निशाँ। २. योजना विशेष, कार्य विशेष। मै.
मदक्की-विशे., अधिक मद्य पीबैवाला। मै.
मदन-सं., कामदेव। सं. तत्सम
मदब-क्रि., वरण करब। विशेष काजक हेतु विशेष व्यक्ति कें पसिन्न कय पद देब। मै.
मदारी-विशे., वानर, साँप आ भालु आदि नचबैवाला। मै.
मधछ-विशे., मध्यस्थ। सं. तद्भव
मधु-सं., १. वसन्त। २. चैत। ३. मधुमाछी सँ एकट्ठा कयल फूलक रस। मै.
मधुआएब-क्रि., मधु भरि आएब। मै.
मधुआएल-विशे., मधु टपकैत जकाँ प्रिय लगैवाला। मै.
मधुकुप्पा/मधुकुप्पी-सं., फूलक रस पीबैवाला छोट पक्षी। मै.
मधुप-सं., भ्रमर। सं. तत्सम
मधुमाछी-सं., फूलक रस आनि आनिकय जमा करैवाला माछी। मै.
मधुर-विशे., प्रिय स्वादवाला। सं., रस विशेष। सं. तत्सम
मधुरइ-सं., मिठपन। मधुरता। मै.
मधुराइन-विशे., कनेक मीठ स्वादवाला। मै.
मधुराँठ-विशे., मीठ लगैवाला। मै.
मधुराह-विशे., मधुरक सम्पर्क सँ विकृत स्वादवाला। मै.
मधुराहा-विशे., विशेष मधुरवाला। मै.
मधुरी-सं., फूल विशेष। मै.
मधुश्रावणी-सं., मिथिलाक नव कनियाक लेल गौरी पूजाक विशेष पर्व।

विशेष—श्रावण शुक्ल तृतीया मे वर्षक भीतर वियाहलि कनिया तथा तान्त्रिक विधि सँ केवल स्त्री जातिक हेतु गौरी पूजनक विशेष प्रक्रिया कयल जाइत अछि। श्रावण कृष्ण पंचमी सँ ई पूजा आरम्भ होइत अछि आ श्रावण शुक्ल तृतीया मे निस्तार होइछ। मधवा तृतीया कें केवल व्रत रखै अछि। मै.

मधोशिया-विशे., बीच देशक निवासी। मै.
मन्टिका-सं., सौंथ परक स्त्रीक भूषण, सीथी। मै.
मन्डील-सं., मन्दिर, देवालय। सं. तद्भव
मन्तर-सं., सिद्ध शब्द, मन्त्र। विचार। मै.
मन्द-विशे., वेगहीन, गति मे शिथिल। सं. तत्सम
मन्दाकिनी-सं., गंगा, नदी विशेष। सं. तत्सम
मन्दार-सं., १. स्वर्गक फूल विशेष। २. मन्दर नामक पर्वत। सं. तत्सम
मन्दी-सं., १. बिकाइवाला वस्तुक सस्ती वा नरमी वा भाओ घटब। मै.
मन-सं., शरीर मे रहनिहार मस्तिष्कक प्रेरक सूक्ष्म शरीर। सं. तत्सम
मनक्का-सं., द्राक्षा फल (बीजवाला)। मै.
मनकथा-सं., बीतल बात पर शोक युक्त सांसारिक कल्पना। सं. तद्भव
मनक पंच मनै निस्तार-लोकोक्ति, लोकक कयल उपकार कें मन मे राखि बदला सँ पुरबैक चेष्टा। मै.
मनखप-सं., नियत मानक नियम सँ अन्न द' क' भूमिपतिक खेत पर अधिकार। मै.
मनगर-विशे., उदार विचारवाला महत्त्वाकांक्षी। मै.
मनघुटाह-विशे., अपन भावना कें प्रकट करै मे असमर्थताक द्वारें मनैमन विखिन्न भेनिहार। स्त्री० मनघुटाहि। मै.
मनचहा-विशे., मन मे चाहैक अनुसार होम'वाला। मै.
मनजइ-सं., खेतक मानक अनुसार खेतक उपजा। मै.
मनता-सं., कबुलापाती। मै.
मनतोड़-विशे., आश कें तोड़ि देनिहार। मै.
मनन-सं., मनैमन कोनो विषयक विवेचना। मै.
मनपतियाएब-क्रि., भरोस कय मन कें सन्तुष्ट करब। मै.
मनपतिआओन-विशे., आश धराकय मन सन्तुष्ट रखैवाला। मै.
मन पाएब-क्रि., (लाक्षणिक) आनक इच्छा वा विचारक आभास करब। मै.
मन पाड़ब-क्रि., स्मरण करब। मै.
मनपै-सं., आनक कयल जोख मे ओकरा नियत अन्न दैक नियम। मै.
मनपैंच-सं., आनक कयल उपकार वा बेर पर देल वस्तुक कोनो लाथें बदला दैक मनैमन भावना सँ उपजल प्रेरणा। मै.
मनबहटारब-क्रि., व्यस्त मन कें कोनो विनोदक क्रिया सँ शान्त करब। मै.
मनभरि-अव्यय, १. एक मनक मानक अनुसार। २. इच्छानुसार, भरिपोख। मै.
मनभवब-क्रि., मन मे पसिन्न होएब। मै.
मनमसोसब-क्रि., भावनाक वेग दबबैक कष्ट सहब। मै.
मनमाखब-क्रि., मन मे सन्तोष होएब। मै.
मनमानी-सं., जे मन मे आबय तदनुसार काज। हि. तद्भव
मनमारब-क्रि., इच्छाक आवेगक दमन करब। मै.
मनमीलू-विशे., मन मिलैवाला, एक मतवाला। मै.
मनरंजन-सं., मनोरंजन। सं. तद्भव
मनरोग-सं., रोगक शंका सँ सतत मन मे होइत दुःख। मनोरोग। सं. तद्भव
मनसम्पँ-विशे., अत्यधिक। (उपजा मे)। मै.
मनसरबा-विशे., पुरुष जातिवाला। मै.
मनसरी-सं., धानक प्रभेद। मै.
मनसा-सं., पुरुष जाति। मै.
मनसी-विशे.,मनस्वी,मुन्सी,लेखापाल। उ. तद्भव/मै.
मनसीहरि-सं., देह सिहरिकय आव'वाला ज्वर मलेरिया। मै.
मनसुआएब-क्रि., केवल आशा पर मन मे योजना करब। उत्सुक होएब। मै.
मनसूआ-सं., काजक उत्साह, योजना, जोश। मनसूबा। उ. तद्भव
मनसोख-विशे., सहृदयताशून्य, उसट्ठ, भावनाहीन। मै.
मनसोठ-विशे., भीतरिया शठ, दुष्टबुद्धि। मै.
मनहकार-सं., निषेधक घोषणा। मै.
मनहानि-सं., आशा टूटने मनक व्यथा, मनोहानि। सं. तद्भव
मनहूस-विशे., हतोत्साह। मै.
मना-सं., निषेध, रोक। मै.
मनाएब-क्रि., गोहराएब, अपन पक्ष मे आनब, प्रार्थना करब। रिझाएब। मै.

मनाओन-सं., सम्मानित कय रिझबैक विधि। मै.
मना करब-क्रि., निषेध करब, रोकब। मै.
मनामनी-सं., परस्पर आन्तरिक विरोध। मै.
मना मानब-क्रि., निषेधाज्ञा पालब। मै.
मनाही-सं., रोक, निषेध। मै.
मनिआर-विशे., मणिवाला साँप। मै.
मनिहारा दुकान-विशे., अनेक उपयोगी वस्तुक दोकान। मै.
मनीषा-सं., विवेचनाक बुद्धि। सं. तत्सम
मनीषी-विशे., विवेचनाशील। सं. तत्सम
मनु-विशे., धर्मशास्त्रक निर्माता। मै.
मनुक्ख-सं., मनुष्य जाति (जीव)। मै.
मनुक्खक माढ़-विशे.,पशु समान अज्ञानी मनुष्य। मै.
मनुखगन्ह-सं., मनुष्य देहक गन्ध। मै.
मनुख देवा-सं., देवता रूपें मानल गेल प्रेतात्मा। मै.
मनुखाह-विशे., मनुष्यै लग रहब पसिन्न करैवाला जीव। मै.
मनुष्य-सं., देखू—"मनुक्ख"। मै.
मनुष्यता-सं., मनुष्यक धर्म। सं. तत्सम
मनुष्याभास-विशे., नामैले मनुष्य, बेलूड़ि निर्बुद्धि लोक। मै.
मनुहारि-सं., मनाओन। मै.
मनें-अव्यय, प्रायः, सम्भव, भरिसक। मै.
मनेजर-विशे., व्यवस्थापक, मैनेजर। अं. तद्भव
मनेजरा-सं., वनस्पति विशेष। मै.
मनें मनें-अव्यय, भीतरैं भीतर। मै.
मने मने गजब-क्रि., भीतरैं भीतर स्वार्थ सिद्धिक आनन्दकय नितराएब। मै.
मनेरक लड्डू-विशे., (लाक्षणिक) तृष्णा आ असम्मतिक केन्द्र। मै.
मनोज/मनोभव-सं., कामदेव। सं. तत्सम
मनोरथ-सं., सेहन्ता, इच्छा, लोचना। सं. तत्सम
मनोरम-विशे., अति सुन्दर। सं. तत्सम
मनोरी-सं., कपड़ा मे लागल गहना। मै.
मनोहर-विशे., सुन्दर। मै.
मनौआ-विशे., १. मनाकय अर्थात् बौंसिकय आनल। २. मनबैवाला। मै.
मनौती-सं., कबुलापाती। मै.
ममत/ममता-सं., अत्यन्त मोह भरल स्नेह। सं. तद्भव/सं. तत्सम
ममरखा-सं., बाल रोग, पाँच वर्षं सँ छोट बच्चा कें अनेक प्रकारक रोग सँ अवल। मै.
ममरी-सं., दीपक रासि (शिखा) मे पड़ल राखवाला विकार। मै.
ममहर (रा)-सं., मामाक गाम, माइक नैहर। मै.
महार-सं., पोखरिक माटि सँ बनल चारूकातक पहाड़ जकाँ उँच भूमि। मै.
ममिया ससुर-विशे., पति आ पत्नीक माम परस्पर दूनू लेल ससुर। स्त्री० ममिया सासु। मै.
ममियौत-विशे., मामक पुत्रक भाइक सम्बन्ध। मै.
ममिला-सं., मामला, मोकदमा। उ. तद्भव
ममोड़-सं., अंगक अचानक कुगर घूमब। पेट मे अपच सँ अन्नक ऐंठब। मै.
ममोड़ब-क्रि., अचानक कुगर घुमाएब। मै.
ममोला-सं., मनक लालसा। मै.
मय-सं., अधिकता द्योतक प्रत्यय। प्रयोग—"जलामय, गूँहाँमय आदि।" मै.
मयूर-सं., देखू—"मजूर"। मै.
मयूर पंखी-विशे., मयूरक पाँखि जकाँ रंगवाला। मै.
मयूरी नृत्य-सं., १. मयूर जकाँ नचैक कला। २. नचैत नचैत पैर सँ बाल वा मेंही धूरा पर मयूरक चित्र बनबैक कला। मै.
मर्जी-सं., स्वेच्छा। उ. तत्सम
मर्मर-विशे., सुखाएल खढ़पातक शब्द। मै.
मर्य्यादा-सं., यथा योग्य व्यवहारक सीमा परिधि। सं. तत्सम
मर्र !-अव्यय, कटुतापूर्ण विरोधक शब्द। प्रयोग—"मर्र ! हम अहाँक आज्ञा मे रहब ?" मै.
मर !-अव्यय, वाक्यक आदि मे विस्मय बोधक शब्द। प्रयोग—" मर ! ओ चल गेला।" मै.
मर-सं., असमय अप्रत्याशित आ अनुपयुक्त मरण। प्रयोग—"मर कें लगले थर।" मैथिली लोकोक्ति। मै.

मरक-सं., अपच भेला सँ पेट मे अँटकल अन्नक विकार सँ उत्पन्न पीड़ा। मै.
मरकछ-सं., कृत्रिम मृत्युक अभिनय। मै.
मरकछ लाधब-क्रि., मृत्यु वा मूर्छाक चेष्टा सँ लोक कें धोखा देब। मै.
मरकट-सं., बानर। विशे., (लाक्षणिक) अधिक उपद्रावी लोक। मै.
मरकट-सं., चिता जरै सँ बचल श्मशानक काठ। मै.
मरकत-सं., हरियर रंगक मणि। सं. तत्सम
मरकन-सं., १. खाद्यान्न मे मिलल दूषित कण। २. समय पर भेनिहार प्राकृतिक वस्तुक रोक। मै.
मरकब-क्रि., समय पर भेनिहार प्राकृतिक वस्तुक रुकब। प्रयोग–"रोपनियैक समय मे वर्षा मरकल (रुकि गेल)।" रौदीक द्वारें धान मरकि गेल। वृद्धि नहि क' सकल। मै.
मरकर-सं., १. मुमुर्षु अवस्था मे खाइक चेष्टा। २. समीप मे मूइल लोकक अछैत हबर हबर भोजन। मै.
मरकाइँ-विशे., जाहू बात आ वस्तु मे अपन नै लगैत होइ ताहू मे कृपणता केनिहार। मै.
मरकाएब-क्रि., प्राकृतिक प्रभाव रोकब। प्रयोग–"एहि बेर पालाक द्वारें मजरे मरका गेलै।" मै.
मरकाठी-सं., अधजरू चिता खोरैवाला बाँसक टोंटा तथा लकड़ी ठहुरी। मै.
मरकाह-विशे., कनेको पानिक अभाव मे फसिल कें दुर्बल क' दैवाला तपनाह खेत। मै.
मरकी-सं., महामारी। प्राकृतिक प्रभाव सँ उत्पन्न विशेष रोग। हैजा, प्लेग आदि व्यापक रोग। मै.
मरखहिया-विशे., अनेरो लोक पर मारैले दौड़ैक स्वभाववाला माल मवेसी। मै.
मरखाह-विशे., हिंसक स्वभाववाला गै, महिस। मै.
मरघट-सं., श्मशान घाट, नदी कातक श्मशान। चिता जरबैक स्थान। मै.
मरचर-सं., श्मशान गाछी। मै.
मरछाउर-सं., चिताक भस्म। मै.
मरजर-सं., प्राण वियोग (मरैक) कालक ज्वर। मै.
मरजाद-सं., विशेष रूपें माननीय अतिथिक सत्कारक प्रक्रिया। मै.
मरणासन्न-विशे., निकट मृत्युवाला। सं. तत्सम
मरतरिया-विशे., अधिक मारि पीट करैक प्रकृति आ कलावाला। मै.
मरतौल-सं., कमार (बरही लोहार) क यन्त्र विशेष। भारी हथौड़ा। मै.
मरद-विशे., पुरुष जीव। मर्द। उ. तद्भव
मरदन-सं., मर्दन, कण कण तोडब, छिन्न भिन्न करैक प्रकार तथा तेल आदि वस्तु कें शरीर पर रगड़ैक चेष्टा। सं. तद्भव
मरदब-सं., चूरी चूरी (चूर्ण विचूर्ण) करब। मै.
मरदुआर-विशे., क्रमशः अधिक शक्तिहीन। मै.
मरदे !-अव्यय, निन्दा स्तुतिक अर्थ मे करैक सम्बोधन। मै.
मरन-सं., मरण। सं. तद्भव
मरनैँ-विशे., प्रवाहहीन, सुखाएल नदी। मै.
मरनौती-सं., मृत्युक लेखा। मै.
मरब-क्रि., मृत्यु प्राप्त करब। मै.
मरबाएब-क्रि., १. अनका द्वारा मारैक चेष्टा करब। २. अश्लील व्यापार कराएब। मै.
मरम्मति-सं., १. गड़बड़ यन्त्र आदिक सुधार, भङठी। २. (लाक्षणिक) शारीरिक दण्ड। उ. तद्भव
मरम-सं., १. देहक मूल तन्त्र (धमनी)। २. रहस्य। ३. (लाक्षणिक) छिपाओल वैर भावना। ४. मर्म। सं. तद्भव
मरमर करब-क्रि., दीनता दरिद्रताक द्वारें सतत कष्ट भोगब। मै.
मरमराएब-क्रि., अत्यन्त सुखाएल रहैक द्वारें चोट सँ मरमर शब्द करब। मै.
मरमरी-सं., रेशमी वस्त्र विशेष। अं. तद्भव
मरमियाह-विशे., वैर छिपाकय रखनिहार। मै.
मरमी-विशे., भीतर मे दगावाला। मै.
मरमुठि लागब-क्रि., अधिक आश्चर्य, भय आ शोक सँ ज्ञानशून्य भ' क' चेष्टाहीन होएब। मै.
मरमेठब-क्रि., उचित सँ वेशी कोनो वस्तु के ऐंठिकय घुमाएब। मै.
मरहन्ना-विशे., सुखाइक गुण सँ फसिल नष्ट प्राय भय विपन। वृद्धिहीन। मै.

मराएब-क्रि., अनका सँ पिटबाएब, अश्लील क्रिया कराएब । मै.

मराठी-सं., १. मरनिहार लोकक वस्तु । २. मरैक स्थिति । मै.

मरिचाइ-सं., कड़ू स्वादवाला कटुक । मै.

मरिचैया-सं., १. पैघ सोझ सक्कत काठवाला वनस्पति विशेष । २. छोट झार । मै.

मरिसेराएब-क्रि., (लाक्षणिक) अन्त मे आशाहीन भय अत्यन्त थाकनि होएब । मै.

मरी-सं., मुइल जीवक शरीर । मै.

मरीच-सं., कारी गोल आ छोट दानावाला कड़ू रसक कटुक । मै.

मरुअनि-सं., खेतक अन्नक संग उपजल अखाद्य मेंही दाना । मै.

मरुआ-सं., निम्न स्तरवाला अन्न विशेष । मै.

मरुआएब-क्रि., मरैक स्थिति मे आएब । मै.

मरुछियाहि-विशे., बारम्बार मुइल बच्चावाली स्त्री । मै.

मरुभूमि-सं., निर्जल भूखण्ड, बालुकामय शुष्क प्रदेश । मै.

मरेड़-सं., १. अन्न संग मिलल कदन्न । २. कपड़ा मोड़िकय बनाओल काज । मै.

मरैकमान-विशे., मरैक स्थिति मे आएल । मै.

मरौआ-विशे., मरबैक अभ्यासवाला । मै.

मरौटी-सं., मरैवालाक फेंकल वस्तु । मै.

मरौत काढ़ब-क्रि., माथ सँ मुहधरि कपड़ा सँ झाँपि कय रहब । मै.

मरौना-विशे., मरबैवाला । मै.

मरौसी-विशे., कुल परम्परा सँ अबैवाला मोरूसी । उ. तद्भव

मल्ल-विशे., शारीरिक युद्ध करैवाला । सं. तत्सम

मल्ली-सं., लत्ती । स. तत्सम

मल्हनी-सं., चकरगर नाओ । मै.

मल्हाएब-क्रि., निश्चिन्तता आ भीतरक आनन्द आ मिथ्या दुलारुपन सँ अत्यन्त अगराएब । मै.

मल्हार-सं., बरिसातक राग विशेष, मलार । मै.

मल्हू-विशे., कम बूझैक शक्तिवाला । मै.

मल-सं., अङ्गक विकार एवं मुख्यतया पेट मे पचला उत्तर बहराएल भोजन विकार । निःसार भाग । मै.

मलकब-क्रि., मालजालक उन्मत्त जकाँ उछलब, कूदब आ दौड़ब । मै.

मलकाएब-क्रि., बल सँ मालजाल कें उन्मत्त बनाएब । मै.

मलकोका-सं., साँझ मे फुलाइवाला लाल कमल जकाँ पोखरि मे फुलाइवाला फूल । मै.

मलङ-विशे., झंझट सब सँ दूर पेट भरै मात्र सँ प्रसन्न निश्चिन्त रहैवाला । मै.

मलना-विशे., मलैवाला, मर्दन करैवाला । मै.

मलब-क्रि., मर्दन करब । मै.

मलबा-सं., ध्वस्त वस्तुक वस्तुजात । हि. तत्सम

मलमल-सं., कोमल आ मेंही कपड़ा । मै.

मलमास-सं., प्रति तीन वर्ष पर चन्द्रमाक गति सँ बढ़ल एक मास । मै.

मलय-सं , कवि सम्प्रदाय मे प्रशस्त पर्वत । मै.

मलरब-क्रि., अलसाकय पड़ल रहब । मै.

मलसी-सं., कटोरी जकाँ (छोटकी बाटी जकाँ) माटिक बनल वासन । मै.

मलहम-सं., घाओ पर लगबैक लेप । मै.

मलहा-विशे., (अनादर मे) मलाह जातिवाला । मै.

मलही-विशे., मलाहक उपयोगी । मै.

मलाइ-सं., दूध दहीक निहुछल छाल्ही । मै.

मलाएब-क्रि., मर्दन कराएब । मै.

मलान-विशे., म्लान, मुरझाएल । मै.

मलार-सं., मल्हार राग । प्रयोग—"किदनि फाटए तँ मलार गावी ।" मै.

मलाल-सं., देखू—"ममोला" । मै.

मलाह-सं., माछक व्यवसायी जाति । मै.

मलाही-सं., कोनो खाम्ह कें उपर तनेक लेल जड़ि मे बान्हिकय कन्हा लगाकय उपर उठबैवाला बाँसक टोना । मै.

मलिच्छ-विशे., अधिक मलिन । म्लेच्छ । मै.

मलिकाइन-विशे., गृहस्वामिनी । उ. तद्भव

मलिछाइन-विशे., मलिछ जकाँ लगैवाला । मै.

मलिछाह/मलिछौन-विशे., मलिन रहैवाला । मै.

मलिन-विशे., मैल भरल । सं. तत्सम

मलिनता-सं., मलिनपन । सं., तत्सम

मलिमुह-विशे., उपर सँ कनेक मौलाएल । मै.

मलीन-विशे., देखू—"मलिन"। सं. तद्भव

मलुआ-विशे., मलिकय बनाओल। मै.

मशक-सं.,१. बजनियाक बाजा विशेष। २. मच्छर। सं. तत्सम

मशकूर-सं., दाँतक जड़िवाला सक्कत मांस। मै.

मशमशाएब-क्रि., बिना शब्दे कोनो वस्तु हबर हबर चिबा जाएव। मै.

मशान-सं., मरघट। मै.

मशाल-सं., तेल मे लत्ता भिजाकय डन्टा मे बान्हि जराओल इजोत। उ. तत्सम/मै.

मशालची-विशे., मशाल पकड़ैवाला। उ. तत्सम

मस्त-विशे., शरीरे पुष्ट आ मनें निर्द्वंध लोक। उ. तत्सम

मस्तक-सं., माथ। सं. तत्सम

मस्तिष्क-सं., बुद्धि मण्डल, बुद्धिमय कोष। सं. तत्सम

मस्ती झाड़ब-क्रि., १. बलगरीक दाबी देखाएब। २. (लाक्षणिक) अनुरूप दण्ड करब। मै.

मस्तुल-सं., मन्दिर आदि उपर उठल वस्तुक विशेष रूपक सब सँ उपरका भाग। मै.

मस्ते (कं)-अव्यय, उपरक अनुस्वार। मै.

मसक-सं., १. इनार सँ बहुत जल एक बेर खीचि खेत पटबैक काज मे अबैवाला चामक जलपात्र। २. अनायास पुरान वस्त्रक फटैक क्रम। मै.

मसकब-क्रि., पुरान वस्त्रक अनायास शब्दहीन फाटब। मै.

मसकाएब-क्रि., जानिकय फाड़ब। मै.

मसखरा-विशे., हँसोढ़, विनोदी। उ. तत्सम

मसखरी-सं., हँसी ठट्ठा। उ. तत्सम

मसदग्धा-सं., मासादि, संक्रान्तिक प्रातवाला अशुभ दिन। मै.

मसनही-सं., परसौती तथा नव विवाहिता बधूक पोखरि वा नदी मे विधिपूर्वक स्नान। मै.

मसलङ-सं., गोल आ नाम मोट गेरुआ (ओठङवाला) मसनद। उ. तद्भव

मसहरी-सं., मच्छरदानी। मै.

मसाला-सं., तीमन कें स्वाद दैवाला पदार्थ। कटुक। उ. तत्सम

मसिया सासु-विशे., सासुक बहिन। पु० मसिया ससुर। मै.

मसियौत-विशे., मौसीक बेटा ओ बेटी। मै.

मसीपात्र-सं., मोसियानी, मोसिक वासन। सं तत्सम

मसुआइ-सं., मासुक (मांसक) भोजन। मै.

मसुआइन/मसुआह-विशे., मांसक सम्पर्कवाला अथवा मांसक गन्धवाला। मै.

मसुआएब-क्रि., सरस भेला सँ सक्कत भ' जाएब। मै.

मसुरी-सं., दलिहन अन्न विशेष। मै.

मसुवृद्धि-सं., मांसक गेंठ बढ़ब। मै.

मसोड़ब-क्रि., धाङि कय घोंकचा कय दूरि करब। मै.

मसोमात-विशे., विधवा, मुसम्मात। उ. तद्भव

मसोसब-क्रि., विवशता सँ पछत'बैत रहि जाएब। मै.

महँक-सं., गन्ध। मै.

महकब-क्रि., अपन गन्ध पसारब। मै.

महकाएब-क्रि., गन्ध प्रकट करब। मै.

महकारी-सं., काँटवाला लत्तीक फल विशेष। मै.

महकी-सं., महकैक क्रम। मै.

महकौआ-विशे., गन्ध छोड़ैवाला, महकैवाला। मै.

महखर-सं., मुख्य सम्मिलित सम्पत्तिक केन्द्र। मै.

महखरिया-विशे., १. मुख्य सम्पत्तिक सेवक। २. मुख्य सम्पत्ति सँ संबद्ध। मै.

महगी-सं., वस्तुक अप्राप्ति, वस्तुक मूल्य वृद्धि। मै.

महगोरिया-विशे., कम्मो दामक वस्तु कें दाम चढ़ा कय बेचैवाला। मै.

महगौआ-विशे., साधारणो वस्तु अधिक दामवाला। मै.

महजीद-सं., मुसलमानक देवताक मन्दिर, मस्जिद। उ. तद्भव

महत्व-सं., पैघत। सं. तत्सम

महत्तम-सं., गणितक प्रकार। सं. तत्सम

महतम-विशे., स्वामी। गृहस्वामी। मै.

महतमाइन-विशे., स्वामिनी। मै.

महतों-विशे., स्वामी, गृहस्थ। मै.

महदेवा-सं., पालो मे उपर दिश दूनू छोर पर बनल शिखर जकाँ ढिमकी। मै.

महन्थ-विशे., सार्वजनिक धार्मिक स्थानक ब्रह्मचारी सम्पत्तिक अधिकारी। मै.
महन्थी-सं., सार्वजनिक धार्मिक प्रतिष्ठानक सम्पत्तिक अधिकार। मै.
महनिहार-विशे., दूध आदि कें पेरि (मथिकय) माखन वा घी बहार कयनिहार। मै.
महफा-सं., कहारक द्वारा उठबैवाला मुरेड़ावाला सवारी। शिविका। मै.
महब-क्रि., दूध तथा छाल्ही कें मक्खन बहार करै ले मथब। (हाथ वा यन्त्र सँ)। मै.
महमह-सं., अत्यन्त सुगन्ध। सुवास। मै.
महल-सं., अट्टालिका। उ. तत्सम
महल-विशे., पेड़ल, मथल। मै.
महा-विशे., पैघ। सं. तत्सम
महाइ-सं., महैक काज। महैक खर्च। मै.
महाउथ-विशे., हाथी कें चलौनिहार। मै.
महाएब-क्रि., मथाएब, पेराएब। मै.
महाओन-सं., महैक बोनि। मै.
महाग-विशे., पैघ। मै.
महाड़-सं., पोखरियैक माटि सँ पोखरिक चारूकात बनल पहाड़ जकाँ ऊँच भूमि। मै.
महात्मा-विशे., विशाल समदर्शी हृदयवाला साधु पुरुष। मै.
महातम-सं., बड़ाइ, प्रशंसा। माहात्म्य। सं. तत्सम
महान्-विशे., पैघ लोक, उदार हृदयवाला। सं. तत्सम
महानता-सं., पैघत। सं. तद्भव
महावर-सं., पैर रंगैक रंग। हि. तत्सम
महावरी-सं., १. औषध विशेष। २. घरक शृङ्गारक हेतु बनल रंग विरंगवाला कपड़ाक झालरि। उ. तद्भव
महामहि करब-क्रि., अत्यन्त सौरभ छोड़ब। मै.
महामहिम-विशे., सर्वोच्च व्यक्तित्ववाला। मै.
महामहोपाध्याय-विशे., शास्त्र मे सर्वोच्च रहनिहारक विशिष्ट पदवीवाला। मै.
महामहो होएब-क्रि., वेशभूषा आ रूपरंग मे प्रतिष्ठित समाज मे गरिमामय बनब। मै.
महारथी-विशे., सैनिक संगठन मे वीरता आ बुद्धिक द्वारें सर्वोच्च पदाधिकारी। सं. तत्सम
महाराज-विशे., अनेक राजा आ सामन्त कें अपन अधीन मे राखि स्वतन्त्र रहनिहार राजा। सं. तत्सम
महारानी-विशे., महाराजक राजमहिषी। मै.
महाल-सं., आर्थिक स्रोतक विभाग। प्रजाक अधीनक खण्ड। उ. तत्सम
महि-सं., जड़ि, लसि। प्रयोग-"उबेर तँ कयलक मुदा मेघक महि नै गेल छै।" मै.
महिना-सं., मास, महीना। उ. तत्सम
महिमा-सं., गौरव, माहात्म्य। सं. तत्सम
महियाएब-क्रि., अधिक सँ अधिक मेंही बनाएब। मै.
महिषा-सं., दुर्गा कें बलि दैक कील। मै.
महिस-सं., अधिक दूध दैवाला पोस जीव। मै.
महिसवार-विशे., महिसिक चरवाह। मै.
महिसबारि-सं., महिस चरबैक काज। मै.
महिसमोढ़-विशे., महिस जकाँ मन्द आ ज्ञानशून्य। (लाक्षणिक) प्रचण्ड मूर्ख। मै.
महिसा-सं., महिस कें गर्भधारण करबै ले छोड़ल पुरुष महिस। मै.
मही-सं., १. महैक (मथैक) साधन मथानी। २. पृथ्वी। सं. तत्सम/मै.
महीन-विशे., मेंही, सूक्ष्म। उ. तत्सम
महु/महुआ-सं., वनस्पति विशेष तथा ओकर फड़। मै.
महुआरी-सं., मधु बनैक समय, वसन्त। मै.
महुआ लागब-क्रि., आमक मंजर आदि पर मधु खसैक द्वारें सगरे मधुमय होएब। आमक उत्पत्ति मे बाधक होएब। मै.
महुराएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) तामस सँ माहुर (विष) बनब। २. अत्यन्त पाकि जाएब। मै.
महेशवानी-सं., मैथिली गीतक विशेष लयवाला महादेवक गीत। मै.
महोमहो होएब-क्रि., उत्तमो मे उत्तम होएब। मै.
महोर भ' क' पाकब-क्रि., फलक अत्यन्त घुलिकय पाकब। मै.
महौथ-विशे., हाथीक चालक। मै.
महौथवार-विशे., हाथी कें चरबै आ चलबैवाला। मै.

मा

माँ-सं., माता। विशे., अनका मैंक सम्बोधन। मै.
माइ-विशे., मैं, माता। मै.
माइँ-सं., जड़ी बूटीवाला औषध। मै.
माई !-अव्यय, विस्मय, भय आ घृणा मे स्वतः बहराएल शब्द। प्रयोग—"माई गै कोन विध राखब भाइक मान। (सामा गीत)। मै.
माइङ (माङि)-सं., नाओक दूनू कातक छोर। मै.
माइधी-संयुक्त सं., मैं बेटी। मै.
माइन-सं., मान्यता। मै.
माइल-सं., माला कारक (मालीक) जाति। मै.
माउगि-सं., स्त्री जाति। मै.
माउगि मेहरि-विशे., घर मे रहनिहारि स्त्रीगण। (विवाहित, अविवाहित)। मै.
माउसि-विशे., मौसी, माइक बहिन। मै.
माए-सं., माता। मै.
माओत-विशे., विवश क' क' पकड़ल। मात। उ. तद्भव
माकरी-सं., मकराकार कुण्डल। स्त्री गहना। मै.
माकुल-विशे., पक्ष मे आएल, अनुकूल। उ. तत्सम
माँख-सं., गुप्त रूपक आन्तरिक रोष। मै.
माँखब-क्रि., चलैत चलैत घृणित वस्तु पैर मे लागि जाएब। मै.
मांग-सं., १. स्त्रीगणक बीच माथक सौंथ। २. याचना। मै.
माघ-सं., मास विशेष। मै.
माघी-विशे., माघ मे भेनिहार। मै.
माङ-सं., १. माथक सौंथ। २. माङब। मै.
माङनि-सं., विवश कय कें मङैक चेष्टा। मै.
माङब-क्रि., याचना करब। मै.
माछ-सं., खाद्य आ बिना हाथ पैरक जल जीव। मै.
माछी-सं., छोट उड़ैवाला कीड़ा। मै.
माँजब-क्रि., विशेष रगड़िकय झलकाएब। अखारब। मै.
माजूम-सं., भाङक संग विशिष्ट पदार्थ मिलाकय बनल मादक द्रव्य। उ. तत्सम
माँझ-सं., बीच, मध्य। मै.
माँझफारी-सं., औकारक मात्रा। मै.
माँझिल-विशे., स्थिति क्रम मे बीच मे रहनिहार आ भेनिहार। मै.
माझी-विशे., नाओ खेवनिहार। मै.
माट-सं., अधिक फैल साँकर मुहवाला अन्न आदि रखैंक पकाओल माटिक वासन। मै.
माटि-सं., मृत्तिका। मै.
माटि होएब-क्रि., २४ मासधरिक मुइल नेना कें तथा विधर्मी सभक शव कें माटि मे गाड़ब। मै.
माठ-सं., सजबैंक क्रम। (केवल अपना कें) प्रयोग—"शान माठ।" मै.
माठनि-सं., आन वस्तु कें सजबैंक विधि। मै.
माठब-क्रि., काठ बाँस कें छीलि कय चिक्कन करब। मै.
माठर-विशे., अधिक पिङ्गल स्वभाववाला। मै.
माड़ब-सं., मड़बा। मंडप। मै.
माड़रि-सं., गोल (मण्डलाकार) आ विशेष रंगक परिधि। मै.
माड़रि लागब-क्रि., सूर्य चन्द्रमाक चारू दिश गोलाकार छाया बनब। मै.
माढ़-सं., निम्न कोटिक अन्न विशेष। मै.
माण-सं., भात सँ पसाओल गाढ़ पानि। मै.
माणी-सं., कपड़ा आदि मे घन करैले पोतल कृत्रिम माण। मै.
माण्डी छारब-क्रि., आँखिक डिम्भा पर रोग रूपें पातर छाल पसरब। मै.
माणी बहकब-क्रि., सूतल मे मुह सँ नेर चूअब। मै.
माणें माउगि जीवए-लोकोक्ति, माणो पीबिकय स्त्री जाति जीवित रहि सकैये। मै.
मात्र-अव्यय, केवल। मै.
मात्रा-सं., विभिन्न स्वरक अर्थ मे बनाओल संकेत चिह्न। मै.
मात्सर्य-सं., १. दयाक संग आवेश। २. आनक नीक नहि देखैक गुण। सं. तत्सम
मात्सर्यी-विशे., १. ककरो हित चिन्तनक संग स्नेह करैक स्वभाववाला। २. आनक नीक नै सहन करैवाला। सं. तत्सम
मातंग-सं., हाथी। सं. तत्सम

मातनि-सं., मतबैक प्रक्रिया। मै.
मातब-क्रि., निशाँ मे भुत्त होएब। ज्ञानशून्य बनब। मै.
माता-सं., माय। सं. तत्सम/मै.
मातामह-विशे., मायक बाप। स्त्री० मातामही। सं. तत्सम
मातु-विशे., १. मैं। प्रयोग—"मातु गंगे।" २. शतरंजक खेल मे बादसाह विवश। मै.
मातृक-सं., माइक नैहर। सं. तत्सम
मातृका-सं., गोबर आदि पर दूभि आ सिन्दूर सँ षोडश देवीक आसनक चिह्न। सं. तत्सम
मातृका पूजा-सं., शुभ काज सँ पहिने मातृका चिह्न पर देवी सभक पूजा। देवीक नाम-गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः। हृष्ठिः पुष्टिस्तथा तुष्टि-रथात्म कुल देवता। (कात्यायन) सं. तत्सम
माथ-सं., मस्तक, शरीरक सब सँ उपर मुख्य अंग। मै.
माथ गरम होएब-क्रि., (लाक्षणिक) तामसक उन्माद बढ़ब। मै.
माथ चढ़ाएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बेचैक हेतु माथ पर ल' क' घूमैक कष्ट करब। २. अधिक खुशामद आ दुलारक द्वारें वेशी महत्त्व देब। मै.
माथ भुकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बजाएब, अधिक टोकब। माङब तथा तंग करब। मै.
माथ मे घूमब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो विषयक रहस्यक मन मे संचार होएब। मै.
माथ मे घूमब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो विषय झट-दय मस्तिष्क मे पहुँचब, बूझि जाएब। मै.
माथा-सं., (लाक्षणिक) मस्तिष्क। मै.
माथाँ ठनकब-क्रि., (लाक्षणिक) सचेत होएब, दूरक तर्क करब। मै.
माथाँ ठोकब-क्रि., आशा टूटने हतोत्साह होएब। मै.
माथाँवाला-विशे., (लाक्षणिक) अधिक बुद्धिवाला। मै.
माथाँ बिगड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) बताह होएब। मै.
माथाँ हाथ देब-क्रि., (लाक्षणिक) निराशा आ चिन्ता मे पड़ब। मै.
माथी-सं., घर आदि वस्तुक सब सँ उपरका भाग। मै.
मादा-सं., कोनो जीवक स्त्री जाति। मै.
मादे-अव्यय, विषय मे। मै.
माधवसिंहो-सं., माधव सिंहक चलाओल जलपात्र। मै.
माधवीलता-सं., वसन्ती फूलक लता विशेष। मै.
मान-सं., १. स्त्रीक प्रेमीक प्रति प्रणयक कोप। २. सत्कार, प्रतिष्ठा। ३. कोनो पशुक स्वरचित गुफावाला निवास। ४. साँप आदि जीवक भूर। मै.
मान करब-क्रि., १. ककरो सम्मान देब। २. प्रणय लीला मे स्त्रीक रूसब। मै.
मानत-सं., मान्यता, प्रतिष्ठा। मै.
मानब-क्रि., १. आवेश आ स्नेह करब। २. प्रतिष्ठा देब। ३. बूझब। मै.
मानव-सं., मनुष्य। सं. तत्सम
मानस-सं., मन। सं. तत्सम
मानहानि-सं., प्रतिष्ठाक क्षति। सं. तत्सम
मानि-सं., मान्यता, प्रतिष्ठा। मै.
मानिक-सं., माणिका, रत्न, हीरा। सं. तद्भव
मानिकचन्नी-सं., सुपारीक एक प्रभेद। मै.
मानिकथम्ह-सं., धरनिक बीच उपर मुहें ठोकल बरेड़ी तनैवाला खम्भासन काठ। मै.
मानिक रस-सं., माणिक्यक भस्मक औषध। सं. तद्भव
मानिजन-विशे. समाजक प्रतिष्ठित प्रधान। मै.
मानिजनी-सं., समाजक बीच मुख्यताक प्रभाव। मै.
मानिदानि-सं., स्नेह सत्कार। मै.
मानि देब-क्रि., प्रतिष्ठा देब, मान्यता देब। मै.
मानिनी-विशे., आत्माभिमानवाली स्त्री। मै.
मानी-विशे., १. मान्यतावाला। २. आत्माभिमानी पुरुष। सं. तत्सम
मानु-क्रि., आदेशात्मक मानैक क्रिया। मै.
मानुष-सं., मनुष्य। मै.
माने-सं., अर्थ, पर्य्याय, विषयक अर्थ। मै.
माप-सं., नपैक मानक वस्तु। सं. तत्सम
मापक-विशे., नपैवाला, अमीन। सं. तत्सम

माँफ/माँफी-सं., क्षमा, दोष (अपराध) क मान्यता सँ मुक्ति। उ. तत्सम

माबा-सं., उर्वर, सार, तत्त्ववाला अंश। मै.

मामा/मामू-विशे., माइक भाइ। स्त्री० मामि, मामी। मै.

मामूली-विशे., साधारण। उ. तत्सम

माय-विशे., जन्म देनिहारि। मै.

माया-सं., मोह-प्रपञ्च। सं. तत्सम

मायावी-विशे., माया रचैवाला। सं. तत्सम

मार्क-सं., १. विशेष चिह्न। २. तर्क। अं. तत्सम

मार्कण्डेय-सं., पौराणिक चिरजीवी ऋषि। मै.

मार्कर-सं., सैन्य सज्जाक विशेष प्रकार। अं. तत्सम

मार्ग-सं., वाट। सिद्धान्त। सं. तत्सम

मार्गी-विशे., वाट पर रहनिहार। सिद्धान्त माननिहार। सं. तत्सम

मार्जन-सं., सिञ्चन, धोअब माँजब। सं. तत्सम

मार्मिक-विशे., आन्तरिक रहस्यवाला। सं. तत्सम

मार-सं., मरैक रूप, मरण। मै.

मारक-विशे., मारैवाला। सं. तत्सम

मारकेश-विशे., मारैक योगक गतिवाला ग्रह। सं. तत्सम

मारण-सं., १. मारैक प्रवृत्ति। २. एक तान्त्रिक प्रयोग विशेष। सं. तत्सम

मारन-विशे., मारैवाला। सं. तद्भव

मारब-क्रि., देह पर कोनो रूपें आघात कय कष्ट देब। प्राण लेब। मै.

मारमारकय छूटब-क्रि., भगबैक क्रम मे खिसियाइत ककरो मारैक रूपें दौड़ब। मै.

मारल बसात-विशे., वेग रोकलवाला वसात। मै.

मार लेब-क्रि., फँसिकय मरैक स्थिति मे आएब। मै.

मारा-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

मारामारी-सं., हत्या करैक ध्येय सँ परस्परक अस्त्र सँ प्रहार। मै.

मारि-सं., लड़ाइ, युद्ध। मै.

मारि-अव्यय, अत्यधिक, अधिकता सँ। प्रयोग–"बजार मे तँ मारि आम बिक्रीक अभाव सँ सड़ै छै।" मै.

मारि करब-क्रि., आपस मे चोट कय लड़ाइ करब। मै.

मारि खाएब-क्रि., ताड़न भोगब। मै.

मारिगारि-सं., युद्धक संग संग अश्लील बातक परस्पर प्रयोग। मै.

मारिते-अव्यय, बहुतायत रूपें। प्रयोग–"आइ चौकरिही पर मारिते लोक एकट्ठा रहै।" मै.

मारिपीट-सं., मुक्का थापड़ सँ अस्त्रक चोटधरिक युद्ध। मै.

मारिमरौअलि-सं., बारम्बार एक दोसरा कें मारैक प्रवृत्ति। मै.

मारुक-विशे., घातक, हानिकारक। मै.

मारुत-सं., वसात। सं. तत्सम

मारुति-सं., एहि नामक मोटर यान तथा हनुमान जी। सं. तत्सम

मारुन-विशे., अनेर मारि बैसैक प्रवृत्तिवाला। मै.

मारे-अव्यय, अधिक, अधिकता सँ। प्रयोग–"हमरा तँ मारे लिखैक सामग्री पड़ल अछि मुदा छुट्टी कहाँ।" मै.

माल-सं., १. गै महिस आदि पोसैवाला पशु। २. चरखा मे घुमबैक साधनरूप ताँति (डोरी)। ३. बहुमूल्य विभिन्न सामग्री। मै.

मालक-सं., मालक चरैक योग्य उबेर। मै.

मालकोस-सं., पूर्वाह्ण मे गबैक राग विशेष। मै.

मालघर-सं., १. पशुक रहैक स्थान। २. रेल सँ आएल विभिन्न वस्तु जात (सामग्री) कें सुरक्षित रखैक स्थान। मै.

मालजाल-सं., पोसा पशुक समूहक संग घरद्वार आदि जीवनोपयोगी वस्तु। मै.

मालदह-सं., आमक विशेष प्रभेद। मै.

मालपूआ-सं., विशिष्ट रूपक स्वादिष्ट पकवान। मै.

मालभोग-सं., सुन्दर कोमल सुगन्धित धान तथा केराक प्रभेद। मै.

मालमेसी-सं., पोसा पशुक सम्पूर्ण समूह। मै.

माला-सं., १. फूलक हार। २. लकड़ी पर खति कय विभिन्न चित्रकारी। मै.

मालि-सं., मालाकार जाति। मै.

मालिक-विशे., स्वामी, अधिकारी। उ. तत्सम
मालिका-सं., छोट छोट अनेक अंगक माला। सं. तत्सम
मालिस-सं., मर्दन, मालिस्त। उ. तद्भव
माली-सं., तेल रखैक विभिन्न वस्तुक अत्यन्त छोट कटोरीसन वासन। मै.
मालोमाल होएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त धनवान् भ' जाएब। मै.
मास-सं., ३० दिनुक एक मान। सं. तत्सम
मांस-सं., शरीरक गुद्दा, धातु विशेष। सं. तत्सम/मै.
मासा-सं., १. सोन आदि तौलैक सूक्ष्म माप। २. अर्शस् (बाबासीर) रोग मे गुदा मे नमरल मांसक सूत तथा अन्य अंगक मसुवृद्धि। मै.
मासादि-सं., सौर मासक आरम्भक पहिल दिन। मसदग्धा। सं. तत्सम
मासान्त-सं., सौर मासक अन्तिम दिन। मै.
मासावधि-अव्यय, मासभरि, सम्पूर्ण मास। सं. तत्सम
मासिक-विशे., मास दिन पर नियमित रूपें होम' वाला। नौकरिहाराक वेतन। स्त्रीक रजःस्राव। मास दिनुक बच्चा तथा प्रति मासक आन काज। सं. तत्सम
मासी-विशे., मासवाला। मै.
मासु-सं., शरीरक गुद्दा। विशे., माउसि। मै.
मासूल-सं., यान (सवारीक) भाड़ा। महसूल। उ. तद्भव
मासेक-अव्यय, गोटेक मासक लगभग। मै.
मासें मासें-अव्यय, प्रतिमास। मै.
माह-सं., मास। उ. तत्सम
माहवारी/माही-विशे., मासें मासें देय। मै.
माहुर-सं., प्राकृतिक विष। उ. तत्सम

मि

मिचराएब-क्रि., मन्द गति सँ चिबाकय खाएब। मै.
मिचलाएब-क्रि., रहि रहिकय बमनक वेग होएब। मै.
मिचली-सं., औकक वेग। मै.
मिझर-विशे., मिलल जुलल, मिश्रित। मै.
मिझरा-सं., मिलल जुलल पदार्थ। मिलल वस्तुक समूह। मै.
मिझराएब-क्रि., सम्मिलित होएब। मिलि जाएब। मै.
मिझराह-विशे., मिलैक योग्य। मै.
मिझाएब-क्रि., आगिक शान्त(ठन्ढा)होएब। दीपकक ज्योति लुप्त होएब। मै.
मिट्ठा-सं., गुड़। (स्थान गुनें प्रयोग)। मै.
मिट्ठी-विशे., थोड़ मधुरइक मात्रावाला। मै.
मिट्ठू-विशे., चमचा, खुशामद मे मीठ बजैवाला। मै.
मिट-सं., लोप, मिटैक भाव, नाश। मै.
मिटब-क्रि., सब प्रकारें लुप्त होएब। मै.
मिटाएब-क्रि., ध्वंस करब। लुप्त होएब। मै.
मिठका-विशे., मीठ स्वादवाला। मै.
मिठाइ-सं., मधुर। मै.
मिठाएब-क्रि., मधुर करब, मधुर बनाएब। मै.
मिठाँस-विशे., कनेक मीठ स्वादवाला। मै.
मिठौआ-विशे., मीठ बनबैवाला, मीठवाला। मै.
मिड़ाएब-क्रि., हाथ आ लात सँ मर्दन कराएब। मै.
मिड़ुआ-विशे., मीड़ैवाला, मीड़िकय बनल। मै.
मित्त-विशे., मीत, मित्र, बन्धु। मै.
मितबा-विशे., मित्र कें अधिक स्नेहक सम्बोधन। मै.
मिताइ-सं., मित्रता। मै.
मितारय-सं., मीतक आलय (घर)। मै.
मिति-सं., दिनांक। मान। सं. तत्सम
मिथ्या-अव्यय, फूसि। सं. तत्सम
मिथक-सं., विभिन्न ऐतिहासिक संदर्भ। मै.
मिथिला-सं., एक प्राचीनतम सुसंस्कृत प्रदेश तिरहुत। मै.
मिनट-सं., घन्टाक साठिम भागवाला मान। मै.
मिनती-सं., विनती, प्रार्थना। मै.
मिनहा-सं., अन्तर्भाव, मिला जुला कय एकत्रित। मै.
मिमियाएब-क्रि., दीनता सँ मन्द आ अस्पष्ट बाजब। मै.
मियाँ-विशे., मुसलमान जातिवाला। मै.
मियादी-विशे., समयक निश्चित अवधि धरि रहै-वाला। मै.

मियानी-सं., पैजामा मे वा सलवार मे दूनू टांगक जोड़क बीच राग मे छोटसन अलग सँ जोड़ल चेफड़ी। उ. तत्सम

मिर्तुकी-विशे., कोनो क्षण मे मरैक स्थितिवाला। मै.

मिरगी-सं., रोग विशेष, देहक छटपटाहटिक संग ज्ञानशून्यता। मै.

मिरगी उठब-क्रि., मनक कोनो अभिलाषा सिद्धि ले हाथ पैर पटकि बताह बनब। मै.

मिरजई-सं., मुसलमानी ढंगक प्राचीन कालक अंगा। मै.

मिरदङ-सं., बाजा विशेष, ताल मात्राक ध्वनिवाला मृदङ्ग। सं. तद्भव

मिरदङिया-विशे., मृदङ्ग बजबै मे निपुण। मै.

मिरमिराएब-क्रि., नहूँ नहूँ अस्पष्ट बाजब। मै.

मिरहिन्नी-विशे., मेंही दानावाला अन्न आदि। मै.

मिल्लति-सं., परस्पर सद्भाव, मिल्लत। उ. तद्भव

मिलन-सं., परस्पर संयोग। मै.

मिलब-क्रि., १. प्राप्त होएब। २. एक सँ दोसरा कें भेंट घाँट करब। ३. संयुक्त होएब। ४. जुटब। ५. कोनो पक्ष (दल) मे जाएब। मै.

मिलब जुलब-क्रि., आपसी सद्भावक आनन्द लेब। मै.

मिलाएब-क्रि., जोड़ब, संयोग कराएब। मै.

मिलान-सं., आपसक नीक सम्बन्ध। मै.

मिलिटरी-विशे., सेनाक लड़ाकू लोक। अं. तद्भव

मिलीमीटर-सं., आधुनिक सूक्ष्म माप। अं. तत्सम

मिलुआ-विशे., मिलान रखैवाला। मै.

मिलौट-सं., मिलावट, एक वस्तु मे दोसर वस्तुक अन्तर्भाव एकाकार। मै.

मिश्र-सं., नामक पाछू लागल उपाधि। मै

मिश्रण-सं., कोनो वस्तु मे कोनो वस्तुक मेल। सं. तत्सम

मिस्त्री-विशे., स्थापत्य कला एवं लोह काठ आदि वस्तुक रचना मे निपुण। सुतिहार तथा करिन्ना। उ. तत्सम/मै.

मिस्सी-सं., दाँत कें सुन्दर करँले दाँतक रंग। उ. तत्सम

मिस-अव्यय, ब्याज, छल। मिष। सं. तद्भव

मिस-विशे., अविवाहित महिला। अं. तत्सम

मिसरी-सं., चीनीक जमाओल ढेला। मै.

मिसाइल-सं., आधुनिक दूरघाती अस्त्र। अं. तत्सम

मिसिया-सं., १. एहि नामक कदन्न। २. नापक आ संकेतक सूक्ष्मतम मान। प्रयोग—"रब्बी अन्न मे बहुत अकटा मिसिया अपनै भ' जाइ छै। एके मिसिया विष खेने प्राणों चल जाइ छै।" मै.

मी

मीचब-क्रि., मुह आँखि विकृत करब। मै.

मीजब-क्रि., कुड़िय'बैक क्रमें आँखि कान आदि अंग मलब। मै.

मीठ-विशे., स्वाद मे मधुर। मै.

मीड़ब-क्रि., मर्दन करब। मै.

मीत-विशे., मित्र। सं. तद्भव

मीता-विशे., स्नेहक सम्बोधन। मै.

मीनाकारी-सं., रंग विशेष सँ गहनाक शोभा बढ़-बैक कला। हि. तत्सम

मीनी-विशे., छोट। अं. तत्सम

मीमा-सं., १. घास विशेष, धनखेतीक वरिसाती घास। २. अनादरक सम्बोधन। मै.

मीरा-विशे., कौड़ी टीप खेलाइक काल मे पहिल स्थानक योग्य। मै.

मील-सं., १. पैघ उद्योगक यान्त्रिक संगठन। कम्पनी। २. वाटक दूरीक नाम। अं. तत्सम

मीस पड़ब-क्रि., मेलाक घन होएब। मेला लागब। मै.

मु

मुइल-विशे., निर्जीव बनल, मरल। मै.

मुक्का-सं., हाथक आङुर मोड़िकय चोट करैक रूपें बान्हल कड़ा मुट्ठी। मै.

मुक्का मुकौअलि-सं., परस्पर मुक्का सँ मारि। मै.

मुक्की-सं., हलुक हाथें, हलुक मुक्का। मै.

मुक्ता-सं., मोती, रत्न। सं. तत्सम

मुकियाएब-क्रि., मुक्का सँ मारब। मै.

मुकुट-सं., राजाक माथ परक राजचिह्न। मै.

मुकौअलि-सं., मुक्काक मारि। मै.

मुख्य-विशे., प्रधान। सं. तत्सम

मुख्यता-सं., प्रधानता । सं. तत्सम
मुख-सं., मुह । सं. तत्सम
मुखपात-सं., कपड़ाक शोभा ले जोड़ल आँचर । मै.
मुख पृष्ठ-सं., पुस्तक आदिक सब सँ पहिल उपर वाला पीठ । सं. तत्सम
मुखड़ा-सं., मुहक छवि । ढ़ब । खोल । मै.
मुखारी-सं., मालजालक शोभा ले देल मुह पर विशेष प्रकारक डोरी । मै.
मुखिया-विशे., समाजक प्रधान पदाधिकारी । मै.
मुखोतर-सं., मुहाँ मुहीँवाला उत्तर । मुखोत्तर । स. तद्भव
मुखौटा-सं., मुहक कृत्रिम बनाओल खोल । मुखड़ा । हि. तत्सम
मुङ्दर-सं., हथौड़ा, मजिया, ठोकिकय चोट दै-वाला कोनो भारी वस्तु । मै.
मुङ्बा-सं., मुङक बेसन सँ लड्डू जकाँ बनल बेलो सँ पैघ प्राचीन कालक मधुर । मै.
मुङरदन-सं., व्यायामक हेतु बनल भारी काठक नाम आ उतार गदा । मै.
मुङरी-सं., नीचाँ चौरस कोनो वस्तु चूरैवाला बाँस काठक छोट वस्तु । मै.
मुचुर मुचुर-विशे., शब्दसहित मुह सँ चिबबै योग्य । मै.
मुजेली-सं., खढ़ आ मूज सँ बीनल बान्हल छोट पथिया वा मौनी । मै.
मुट्ठा-सं., हाथक मुट्ठीक प्रमाणवाला । मै.
मुट्ठी-सं., आङुर सब मोड़िकय बन्न कयल हाथक आकार । मै.
मुठबार-सं., गोल कय बनाओल कागजक मुट्ठा । मै.
मुठबाँसी-सं., मुट्ठी सँ पकड़ै योग्य पातर बाँस । मै.
मुठरा-सं., एक हाथक मुट्ठी सँ बान्हल पिण्ड । मै.
मुठिया-सं., मुट्ठीभरि अन्न । मै.
मुठियाएब-क्रि., मुट्ठी सँ पकड़ब । मै.
मुड़ना-सं., मुण्डन । नेन्नाक जन्म केश उतारब । मै.
मुड़ब-क्रि., परतारि कय छल सँ प्राप्त क' लेब । मै.
मुड़री-विशे., माथक काटल केशवाला । मै.
मुड़ियाएब-क्रि., कोनो गाछ, घासक मूड़ी टा खोंटि लेब । मै.
मुड़ियारी देब-क्रि., कोनो काज वा बात मे निर-र्थक मूड़ी घोंसियाएब । मै.
मुढ़हा-विशे., मूर्ख, मूढ़ । मै.
मुण्डन-सं., देखू—"मुड़ना" । मै.
मुत्ती-सं., लघुशंका । मै.
मुतना-विशे., अधिक मूतैवाला । सं., मूत बहराइक वाट । मै.
मुतवास लागब-क्रि., मूतैक इच्छा होएब । मै.
मुताइन-विशे., मूतक जकाँ रूप, रस, गन्धवाला । मै.
मुताएब-क्रि., बल सँ लघुशंका कराएब । मै.
मुता मुता भरब-क्रि., डर, मारि आ शीत उपचार द' क' बारम्बार मूतैक स्थिति बनाएब । मै.
मुतौर फूटब-क्रि., प्रसव सँ पहिने गर्भक संग पातर कोमल चमड़ाक जल भरल थैली बहराएब । मै.
मुद्दालह-विशे., जकरा पर मोकदमा कयल जाइछ से विपक्षी, प्रतिवादी । उ. तत्सम
मुद्दै-विशे., वादी, अभियोग लगौनिहार मुद्दई । उ. तद्भव
मुदा-अव्यय, परन्तु, लेकिन । मै.
मुन्हारि साँझ-सं., गाढ़ अन्हार होइत साँझ समयक पछिला अंश । मै.
मुन्हियाएब-क्रि., फसिलक दाना समयक कुप्रभाव सँ छोट होएब । मै.
मुन्ही-सं., १. फसिलक प्राकृतिक प्रभावे मेंही दाना । २. कपड़ाक बनल भेटकीसन आङीक बुटामक बदलाक गोल वस्तु । मै.
मुनना-सं., कोनो वस्तुक मुह कें सुपुट मुनैक वस्तु । मै.
मुनाएब-क्रि., १. दोसरा सँ मुनैक काज कराएब । २. स्वयं मूनल भ' जाएब । मै.
मुनि-विशे., ज्ञानी, तपस्वी । सं. तत्सम
मुनिगा-सं., सोहिजन । मै.
मुनियाँ-सं., बड़ छोट आकारवाला पक्षी । मै.
मुर्गा-सं., पक्षी विशेष । मै.
मुर्दघट्टी-सं., मुर्दा जरबैक स्थान । मै.
मुर्दा-सं., मृतक शरीर । मै.
मुर्दारी-विशे., मुर्दा जरबैक उपयोग मे अएला सँ बाँचल बाँस, काठ, कपड़ा आदि । मै.

मुरखाहा-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.

मुरघण्ट-सं., एक व्यञ्जन विशेष, दालि मे माछ आ छागरक सीरा द' क' गरम मसाला आदि सँ बनल स्वादिष्ट पदार्थ। मै.

मुरछब-क्रि., १. तेज धारवाला अस्त्रक धार मोट होएब। २. बामे दहिने ज्ञानशून्य भ' क' खसैत रहब। मै.

मुरछाएब-क्रि., १. मूर्छा करब। २. धार भोथ करब। मै.

मुरझबा-क्रि., १. जीवनशक्तिक कमी होएब। २. मन्द पड़ब। मै.

मुरझाएब-क्रि., गाछ वृक्ष कें मरैक स्थिति मे सुखाएल सन होएब। मै.

मुरझार होएब-क्रि., मरैक स्थिति मे आएब। मै.

मुरदाशंख-सं., नेन्नाक घरौआ औषध विशेष। मै.

मुरधन-सं., १. कोनो वस्तुक अगिला (पहिलुक) अंश। पूँजी। मै.

मुरबड़-सं., मूरक बनाओल बड़। मै.

मुरमुर-विशे., शब्दसहित चिबबै जोग। मै.

मुररी बटेड़-विशे., (लाक्षणिक) देहक रोइयाँ आ माथक केश सँ हीन। मै.

मुरहन-सं., पूँजी, तैयार फसिलक अगिला मुख्य दाना, अन्न। मै.

मुरही-सं., विशेष प्रकारक खाद्य। मै.

मुरुख-विशे., मूर्ख। सं. तद्भव

मुरुत-सं., मूर्ति। सं. तद्भव

मुरेठा-सं., माथक पगड़ी। मै.

मुरेड़ा-सं., घर आ देबालक उपरका मथनी। मै.

मुरै-सं., व्यञ्जनक कन्द विशेष। मै.

मुरौड़ी-सं., बेसनक संग मूरक भुजबी कें लपेटि बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी। मै.

मुलकी-विशे., सामूहिक रूपें अधिक। मै.

मुलहक्की-सं., मुख्य वस्तुक लक्ष्य। मै.

मुलहन-सं., मूलधन। मै.

मुलहा-विशे., असल मुख्य जड़िवाला। मै.

मुष्टिका-सं., मुट्ठी। मुक्का। सं. तत्सम

मुस्त-सं., बान्ह मुट्ठीक भीतरक आँट बराबरिक प्रमाण वस्तु। मै.

मुस्सर-सं., उक्खरि मे अन्न आदि कूटैक हेतु काठक गोल मोट आ नाम दण्ड। मै.

मुसकाएब-क्रि., कनेक हँसैक चेष्टा करब। मै.

मुसकाणी-सं., मूस बझबैक यन्त्र। कल। मै.

मुसकी-सं., कनेक ठोर ढ़ील करैत हँसी। मै.

मुसकुराएब-क्रि., कनेक बिहुँसिकय, कनेक दाँत देखार कय हँसब। मै.

मुसरा-सं., फलक भीतरवाला रीढ़। दाँतक उपरका भाग। डंडासन पकड़ैवाला कोनो वस्तु। मै.

मुसरी-सं., छोटका मूस। मै.

मुसलमान-विशे., इसलाम धर्म मानैवाला। स्त्री० मुसलमानी। मै.

मुसहर-सं., जाति विशेष। स्त्री० मुसहरनी। हरिजन। मै.

मुसहरी-सं., मुसहर जातिक बसती, टोल। मै.

मुसाइन-विशे., मूसक सन। (गन्ध)। मै.

मुसाह-विशे., अधिक मूस लगैवाला। मै.

मुह-सं., मुख। मै.

मुह आएब-क्रि., मुह मे घाओ (रोग) होएब। मै.

मुहकी खाएब-क्रि., मुहें भरें खसब। (लाक्षणिक) कोनो बात मे उनटे असरि पड़ला सँ असफल होएब। मै.

मुहखर-विशे., अशिष्ट बजनिहार, ठाईं पठाईं कहनिहार। निर्धोख बजनिहार, मुखर। सं. तद्भव

मुह खोलब-क्रि., १. स्पष्ट बाजब, कहब। २. कोनो वस्तुक मुनना (ढक्कन) हटाएब। मै.

मुहगर-विशे., सब ठाँ निर्धोख बजनिहार। मै.

मुहगरीक दाबी-सं., अधिक आ ढीठ भ' क' उचित बात कहैक घमण्ड रखैवाला। मै.

मुहचूरू-विशे., १. मुह थकुचलवाला। २. (लाक्षणिक) टूटल घमण्डवाला हारल। असफल। मै.

मुहचोर-विशे., लोकक सोझाँ बजै मे धाख करैवाला। मै.

मुहछी मारब-क्रि., अदृश्य शक्तिक द्वारा गति बुद्धि कें रोकि राखब। मै.

मुहछुट्टू-विशे., सभक लग उद्धत जकाँ बाजब। मै.

मुहछुवौवलि-सं., औपचारिकता मात्रक निर्वाह। आग्रहहीनता। मै.

मुह छोड़ब-क्रि., याचना करब, दीनता सँ माङब। सम्पर्क छूटि जाएब। मै.

मुहजोर-विशे., १. (मनुष्यक हेतु) अधिक स्पष्ट सत्य आ निर्धोख बजनिहार। २. (मालक प्रसंग) अधिक चरनिहार। मै.

मुहठान-सं., मुहक ढब, अंगक छवि। मै.

मुहठाह-विशे., अप्रत्याशित व्यवहार सँ स्तंभित। क्षुब्ध। मै.

मुहठी-सं., आमक डंटी दिशुक अंग। मै.

मुहड़ा-सं., कोनो वस्तुक मुख्य अगिला अंश, रेलक इंजन आदि। मै.

मुहतक्की-सं., सतत भरण पोषणक हेतु आनक भरोस पर निर्भरता। पालकक भावक अध्ययन। मै.

मुहतोड़-विशे., (लाक्षणिक) बातक कठोर उत्तरा-निरुत्तर बात। मै.

मुहथारि-सं., आगूक प्रधान स्थान। मै.

मुहदुब्बर-विशे., कम बजनिहार, दयनीय स्थिति वाला। मै.

मुहदुस्सी-सं., उल्लूक छोट प्रभेदवाला पक्षी। मै.

मुह दूसब-क्रि., आनक बाजब कें आ मुह कें अपन मुह सँ विकृति कय कें देखाएब। मै.

मुहदेखना-सं., नव कनियाँ आदिक पहिल बेर मुह देखैक क्रम मे आशीर्वाद रूपक द्रव्य। मै.

मुहदेखाई-सं., १. मुह देखैक विधि। २. मुह मात्र देखैक वस्तु। ३. अपन उपस्थितिक आभास। मै.

मुहदेखाओन-सं., १. मुह देखैक द्रव्य। २. मुह मात्र देखबैक काज। ३. मुह देखबाक पारितोषिक। मै.

मुहदेखि मुङबा परसब-क्रि., (लाक्षणिक) जेहन जे लोक तकरे पक्ष मे खुशामद रूपें भ' जाएब। मै.

मुह धरब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थक लक्ष्य सँ समर्थ लोकक खुशामद करब। मै.

मुहनाल-सं., कांटी धँसबैक हेतु कांटीसन कमारक लोहक अस्त्र। मै.

मुहनि-सं., कोल्हु सँ तेल बहैवाला अंग। मै.

मुहपुरुष-विशे., समाजक अगुआ। दलक नेता। मै.

मुहपोछना-सं., मुह पोछैक कपड़ा। मै.

मुहफट-विशे., तुरन्त निःसंकोच बजनिहार। मै.

मुह फेरब-क्रि., संपर्क तोड़ब। विमुख होएब। मै.

मुहबज्जी-सं., वर बधूक प्रथम वार्तालाप। परस्पर टोकचाल। मै.

मुह बजाएब-क्रि., मुह लागल बजैले विवश करब। मै.

मुहबजाओन-सं., वर बधूक प्रथम टोकचाल मे वर दिश सँ देय गहना आदि पारितोषिक। मै.

मुह बनाएब-क्रि., मुह कें अवसरक अनुकूल विकृत करब। मै.

मुह बाएब-क्रि., सरलो बात कें देरी सँ मुह खोलि कय बुझैक प्रयास करब। (लाक्षणिक) बकलेल-पनाक प्रदर्शन करब। मै.

मुहबिजकाएब-क्रि., मुह टेढ़ करैत चमकाकय असम्मति आ विरोध प्रकट करब। मै.

मुहबौआ-विशे., बुझौलो पर नहि बूझि कय केवल मुह बाबिकय देखनिहार। मै.

मुहबौक-विशे., बजैक क्षमता रहितौं अवसर पर लोकक बीच बाजि नहि सकनिहार। मै.

मुह भरब-क्रि., द्रव्य सँ सन्तुष्ट करब। मै.

मुह मलान करब-क्रि., चिन्ता व्यग्रता आ सोच सँ अपना कें दुखी राखब। मै.

मुहरी-सं., १. कोनो निर्जीव वस्तुक अगिला भाग। २. अगिला अवसर। मै.

मुहलग्गू-विशे., (लाक्षणिक) अधिक प्रिय आ दुलारू रहैक कारणें अत्यन्त निकट रहनिहार। मै.

मुह लगाएब-क्रि., अयोग्य लोक सँ मुह लागल बात करब। अशिष्ट सँ गप करब। मै.

मुहलगुआ-विशे., देखू—"मुहलग्गू"। मै.

मुहसच्छ-विशे., बजै मे शालीनता रखनिहार, संकोच सँ कम बजनिहार। अप्रियो बातक उत्तर नहि देनिहार। स्त्री० मुहसच्छि। मै.

मुहानी-सं., वाटक मुह फुटैक स्थान। मै.

मुहाँबज्जी-सं., समक्ष भ' क' परस्पर वार्तालाप। मै.

मुहाँ मुहीं-अव्यय, सामने सामनी समक्ष। मै.

मुहाल-सं., खेतक विस्तृत चकला, भूखण्डक परिधि। मै.

मुहाँसी-सं., यौवनसूचक मुह पर उगल घन फोंसरी आ तकर दाग । मै.
मुहियाएब-क्रि., लक्ष्य दिश मुह करब । मै.
मुहूर्त-सं., केवल २४ मिनटक मानवाला समय । उचित क्रियाक उचित समय । सं. तत्सम/मै.
मुहैंमुह-अव्यय, मुहैक अंग पर (मारि) । प्रयोग— "मनोज कें गारिक कारणें मुहैंमुह मारि लगलैन ।" मै.
मुहेंमुहें-अव्यय, दुहू दिशक मुहैक द्वारा पठाओल सन्देश वाक्य । मै.

मू

मूक-विशे., गोंग, बौक । सं. तत्सम
मूङ-सं., ऐ नामक दलिहन विशेष । मै.
मूङा-सं., थोड़ दामक लाल रत्न । प्रवाल । मै.
मूङार-सं., फसिलक जड़ि आ डाँटक विस्तार । मै.
मूज-सं., सरपत (खढ़क) फूलक कोसावाला गोभी । (कोमल) पातक डोरी । मै.
मूजी-सं., मूज सँ बीनल वासन । मै.
मूठ-सं., तरुआरि आदि अस्त्र कें पकड़ैक स्थान । मै.
मूठि-विशे., मुट्ठी जकाँ बान्हल अन्नक गाछ । मै.
मूठि खोलब-क्रि., उद्गार सँ दान करब । मै.
मूठि जागब-क्रि., अनेक प्रकारें अनायास लाभ होएब । मै.
मूठि भाँजब-क्रि., पचीसी आदि मे कौड़ी लय कें अपन पारीक कौड़ी छिड़ियाएब । मै.
मूठि लेब-क्रि., देवता पितरक पहिने आराधना करैक हेतु तीन मुट्ठी नव धान काटब । मै.
मूड़-सं., उपर दिशक अगिला भाग । शिर, मस्तक । मै.
मूड़न-सं., मुण्डन । मै.
मूड़ पर मूड़ खसब-क्रि., कोनो वस्तु कीनै मे बहुत लोकक एकै बेर लैक चेष्टा करब । मै.
मूड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) ठकि कय आ छल कय कें ककरो मूल्यवान् वस्तु ल' लेब । मै.
मूड़ा-सं., माछ वा छागरक मूड़ीवाला भाग । मै.
मूड़ी-सं., गरदनि सँ उपरक प्रधान अंग । मै.
मूड़ी उठाएब-क्रि., लोक मे प्रभावशाली बनब । मै.
मूड़ी खसब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच लज्जित होएब । मै.
मूड़ी खसाएब-क्रि., समाज मे अप्रतिष्ठित बनाएब । मै.
मूड़ी झुकाएब-क्रि., समाज मे अपराध स्वीकार करब । मै.
मूढ़-विशे., महामूर्ख, जड़ । सं. तत्सम
मूत-सं., लघी, मूत्रमार्ग सँ बहराएल पेटक विकृत जल भाग । सं. तद्भव
मूतब-क्रि., लघी, लघुशंका करब । मै.
मूनब-क्रि., बीहरि आ कोनो वासनक मुह कें बन्न करब । मै.
मूर्ख-विशे., अज्ञानी, अनबूझ । सं. तत्सम
मूर्छा-सं., छग्यान, बेहोशी । सं. तत्सम
मूर्छित-विशे., अचेत । सं. तत्सम
मूर्ति-सं., प्रतिमा, अनुरूप आकार प्रकार । सं. तत्सम
मूर-सं., १. मूलधन । २. मूली व्यंजन । ३. अन्न आदिक अगिला । मै.
मूल्य-सं., दाम । मै.
मूल-सं., १. जड़ि । २. गोत्रक बीजी । ३. नक्षत्र विशेष । ४. पुरुषाक आदि स्थान । सं. तत्सम
मूलक-विशे., मूलवाला । बीजी पुरुषाक आदि स्थानवाला । स. तत्सम
मूस-सं., बिल क' क' धरतीक भीतर रहनिहार उपद्रावी छोटका जीव । मै.
मूसनि-सं., मूसक कोड़ल माटि । मै.

मृ

मृग-सं., हरिण तथा सामान्य बनैया पशु । सं. तत्सम
मृगचर्म-सं., १. बरुआ कें जनौ जकाँ पहिरैवाला । २. हरिण आ बाघक छालक आसन । सं. तत्सम
मृगछाला-सं., ओढ़ै पहिरैवाला हरिणक छाल । मै.
मृगा-सं., छोटका हरिण । मै.
मृत्यु-सं., मर, मरण । सं. तत्सम
मृतक-विशे., निर्जीव, मूइल । शव । सं. तत्सम
मृदङ्ग-सं., वाद्य विशेष । मिरदङ्ग । सं. तत्सम

मे

मे॑-अव्यय, बकरी बजैक शब्द । मै.

मे-अव्यय, शब्द मे अधिकरणक चिह्न । मै.
मेकचों-सं., समस्या भरल बाधा । मै.
मेघ-सं., मेघ, जलधर । मै.
मेघउनार-सं., मेघक फाटब, मुक्ति । मै.
मेघडम्बर-सं., बाँसक कमचीक बीनल छत्ता । मै.
मेघदिनाय-सं., मेघक लगला पर होइवाला दिनाय चर्मरोग । मै.
मेघाओन-सं., मेघक विस्तार, मेघ लगैक स्थिति । मै.
मेच-सं., अचानक मोड़ पड़ला सँ उपजल अंगक कष्ट । झोंक सँ कोनो वस्तुक उपर जोर । मै.
मेचन-सं., झोंक सँ कोनो वस्तु पर देल एके दिश क' जोर । मै.
मेचब-क्रि., झोंक सँ एक दिश कय जोर लगाएब । मै.
मेजन-सं., कोनो व्यञ्जनक स्वाद बढ़बैवाला, मेल खाइवाला दोसर पदार्थ । प्रयोग–"कोबी मे आलूक भाँटा मे अदौड़ीक मेजन बड़ दिब्ब होइ छै ।" मै.
मेठ-विशे., श्रमिक जन सभ मे मुखिया मजदूर । मै.
मेटन-सं., मेटाइक चिह्न । मै.
मेटब-क्रि., हटाएब, दूर करब । मै.
मेटाएब-क्रि., लोप करब । मै.
मेटिआ-विशे., जन सभक अगुआ, मुख्य । मै.
मेटिया-सं., दूध रखैक बड़का डाबा, चवै । मै.
मेटौना-सं., मेटबैक वस्तु । विशे., मेटबैवाला । मै.
मेठनि-सं., एकै काज कें बारम्बार करैत रहैक क्रम । मै.
मेढ़-सं., खेतक पानि रोकैले देल जाइवाला उँचगर आरि । मै.
मेढ़ब-क्रि., कोनो वस्तु कें ऐंठि कय सक्कत करब । मै.
मेथी-सं., फोरनक कटुक विशेष । मै.
मेद-सं., चर्बी, देहक धातु विशेष । सं. तद्भव
मेधा-सं., १. धारणा शक्ति (बुद्धि) । २. परस्परक समञ्जस । मिलान । सं. तत्सम/मै.
मेधावी-विशे., बुद्धिक धारणा शक्तिवाला । मै.
मेन-सं., सनैक काल चिकस मे मिलाओल घी । मै.
मेनदार-विशे., चिकस मे घी पियाओल पकवान । मै.
मेनसिल-सं., मनः शिला, पहाड़ सँ पघिलल द्रव, औषध विशेष । मै.
मेनहर-सं., काँट विशेष । मै.
मेनी-विशे., डोलैत आ मोड़ल सिंगवाली गाय । मै.
मेषा-सं., सुखाएल फलक समूह । अखरौट किसमिस आदि । मै.
मेम-सं., विदेशी (यूरोपीय) स्त्री जाति । मै.
मेमियाएब-क्रि., बकरीक अधिक बाजब । मै.
मेमना-सं., भेड़ीक बच्चा । मै.
में में करब-क्रि., भेंड़, बकरीक आर्त बाजब । मै.
मेर-सं., मण्डली, दल । मै.
मेरब-क्रि., दोसर मे मिलि जाएब तथा मिलान खाएब । मै.
मेराएब-क्रि., दोसराक संग सब प्रकारें मिलाएब । मै.
मेरिचाइ-सं., कड़ू रमक प्रधान फल । मै.
मेरिया-विशे., मण्डलीक लोक । मै.
मेल-सं., परस्पर समर्पित भाव । मिलान मतक एकता । हिं.
मेल खाएब-क्रि., समानता मे आएब । मै.
मेलजोल-सं., परस्पर स्नेह सद्भाव । मै.
मेल पाँच-सं., छोट पैघ नीक अधलाहक उचित मिलान । मै.
मेलब-क्रि., पीसी माल करब । अंग अंग तोड़ि देब । मै.
मेलमिलाप-सं., मतें आ शरीरें एकता । मै.
मेला-सं., मिस, करमान, एकट्ठा जनसमूह । मै.
मेलुआ-विशे., एक मत वा विचारवाला लोक । मै.
मेष-सं., भेंड़ा (पशु विशेष) । बारह राशि मे प्रथम राशि । सं. तत्सम
मेसी-सं., मालजाल, गै महिस । मै.
मेह-सं., अधिक लघुशंकावाला रोग । सं. तत्सम
मेंह-सं., दौनी करै मे बरदक समूह कें एक धूरी पर घुमबैवाला खुट्टा । मै.
मेहतर-सं., हलालखोर, मल उठबैवाला हरिजन जाति । मै.
मेहनति-सं., परिश्रम, खटनी, मिहनत । उ. तद्भव
मेहनतिया-विशे., अधिक परिश्रम करैवाला । उ. तद्भव

मेहदी-सं., छोट गाछक पात सँ बनल हाथ मे लिखनि दैवाला रंग। मैं.

मेहब-क्रि., मथन करब। मैं.

मेहरि-सं., स्त्री जाति। उ. तद्भव

मेहल्ला-सं., पीसल आ मथल वस्तुक गोला। मैं.

मेहाएब-क्रि., सरस हेबाक द्वारें ढील भ' जाएब। मैं.

मेहियाँ-सं., मेंही धान चाउर आदि। विशे., मेंही वस्तु। मैं.

मेहियाएब-क्रि., अधिक मेंही करब। मैं.

मेंही-विशे., अत्यन्त सूक्ष्म। मैं.

मेहौतिया-विशे., मेहलग (दाउन काल मे) रहैवाला बड़द। मैं.

मेहौती-सं., कड़ाम जोड़ैले देल सक्कत आ मोट डोरी। मैं

मै

मैं-सं., माय। मैं.

मैओ-अव्यय, आश्चर्य, भय, शोकक सम्बोधन। मैं.

मैथिल-विशे., मिथिलावासी। मै.

मैथिली-सं., मिथिलाक भाषा। मैं.

मैदा-सं., मेंही आ कोमल एवं स्वच्छ चिकस। मै.

मैदान-सं., समतल झारपातविहीन भूमि। मैं

मैदान जाएब-क्रि., शौच क्रिया हेतु जाएब, मल त्यागैले जाएब। मै.

मैना-सं., पक्षी विशेष। मैं.

मैया-सं., मैं। मैं.

मैयाँ-विशे., पितामही। मैं.

मैल-सं., मलिनता, देहक दूषण, कपड़ाक मटियाइन रंग, मनक कलुष (पाप), जमल माटिसन पदार्थ। मैं.

मैलका-विशे., बिन स्वच्छ। मैं

मैलखोर-विशे., मैल कें पचबैक रंगवाला कपड़ा। मै.

मैलखौक-विशे., मैल सहैवाला। मैं.

मैलगर-विशे., मैल रहैवाला। मैं.

मैलछन-विशे., मैल सन लगैवाला। मैं.

मैलन-सं., मर्दन कयला सँ बहराएल विकार। मैं.

मैलब-क्रि., कोनो वस्तु कें ऐढ़ैत जकाँ मर्दन करब। मैं.

मैलमुह-विशे., कनेक मुरझाएल। कनेक सुखाएल। मैं.

मैलहा-विशे., अतिशय मलिनवाला। मैं.

मैला-सं., विष्ठा, मनुष्यक मल। मैं.

मैलाह-विशे., मैल भरल। मैं.

मैली-सं., नीचाँ जमल वस्तुक दूषित भाग। मैं.

मैंहरि-सं., मजा, आनन्द आ सुख। मैं.

मो

मोक्ष-सं., उद्धार, छुटकारा, मुक्ति। सं. तत्सम

मोकन-सं., जड़ी, वनौषधी विशेष। मैं.

मोकब-क्रि., पकड़िकें नीचाँ दबबैत कष्ट देब। मैं.

मोकर/मोका-क्रि., फैल आँटवाला बड़का बीहरि। मैं.

मोंख-सं., टाटक बाम दहिनक अन्तिम ओर। मैं.

मोंख मारब-क्रि., टाटक बाम दहिन कात बातीक मुह कँपैले खढ़ बान्हिकय चिक्कन बनाएब। मैं.

मोंगल-सं., मुसलमानक एक जाति विशेष। मुगल। उ. तद्भव

मोंगली-सं., शतरंजक एक चालि। मैं.

मोगली भरब-क्रि., दण्ड देबा ले पीठ दिश हाथ पैर बान्हिकय ओहि मे लाठी देब। मैं.

मोच-सं., अचानक अंगक कुगर भेने सीर (शिरा) क तनला सँ पीड़ा। मैं.

मोचण्ड-विशे., नीक अधलाह बिन सोचनै काज कयनिहार बजनिहार मूर्ख। मैं.

मोचन-सं., छोड़ओन, मुक्ति, उद्धार। खोलनाइ। सं. तत्सम

मोचब-क्रि., खोलब। मैं.

मोचरन-सं., ऐंठिकय तोड़ैक चिह्न। मैं.

मोचरब-क्रि., कोनो वस्तु कें अमेठि कय तोड़ब। मैं.

मोचराह-विशे., मोचरला सँ बनल दुखित। मैं.

मोचरिया-सं., मोचरैक काज। मैं.

मोचार-सं., ऐंठिकय तोड़ैक प्रयास सँ टूटैक स्थिति। मैं.

मोछ-सं., १. कटहरक केवल फूलवाला छोट झरैवाला फल। २. उपरका ठोरक उपर बहराएल केश पंक्ति। मैं.

मोछाएब-क्रि., कटहर मे मोछ बहराएब, फड़ैक चिह्न होएब। मैं.

मोजर-सं., १. आम आदि फलक फूलक डन्टी। २. मिन्हा, आन मे मिलान। मैं.

मोजरब-क्रि., देखू—"मजरब"। मैं.

मोजरलहा-विशे., मोजर बहराएलवाला । मै.

मोजरा-सं., वेश्याक गाओल गीत । मै.

मोजरिया-सं., आन ढंगक खर्च मे मिलान । मै.

मोट-विशे., १. स्थूल (थुलथुल) शरीर । २. सबटाक एकट्ठा जोड़ (गणना) । मै.

मोटका-विशे., अधिक मोट शरीरवाला । मै.

मोटगर-विशे., देखै मे मोटसन, थोड़ेक मोट । मै.

मोटगरहा-विशे., मोटवाला । मै.

मोट डाँट-विशे., मोट आ नाम एक रंग । मै.

मोट बन्हना-सं., मोटा कसिकय बन्हैक डोरी । मै.

मोटर-सं., १. स्वचालित यन्त्र । २. स्वचालित तेज गामी गाड़ी । मै.

मोटरा मोटरी-सं., अन्न सँ अतिरिक्त वस्तुक छोट पैघ सबटा मोटा । मै.

मोटरी-सं., छोट मोटा । मै.

मोटा-सं., बिना अन्नक बड़का गोल कयल बान्हल वस्तुजात । मै.

मोटाइ-सं., मोटयबाक गुण, मोट होइक मान । मै.

मोटाएब-क्रि., मोट होएब । मै.

मोटान-सं., मोटाइक क्रम । मै.

मोटामोटी-विशे., (अव्यय) संकलित अनुमान रूपें । मै.

मोटिया-विशे., मोटा उगहैवाला । मै.

मोटूमल/मोटेमल-विशे., मोटाएल शरीरवाला । (निन्दा मे) । मै.

मोटैत-विशे., मोटावाला । मै.

मोठ-सं., इनार सँ बड़दक द्वारा पानि खींचैवाला चामक गोल बड़का धोकरा (थैला) । मै.

मोड़-सं., घूमैक टेढ़ स्थान । मै.

मोड़न-सं., मोड़ैक क्रम । घुमाकय टेढ़ करैक प्रक्रिया, झुकबैक चेष्टा । मै.

मोड़ब-क्रि., लिबाकय टेढ़ करब । घुमाएब । झुकाएब । मै.

मोड़लहा-विशे., मोड़लवाला । मै.

मोड़ा-सं., १. पितरक कर्मक उपयोगी ऐंठल आ मोड़ल कुश । २. उपर विस्तार मुहवाला (फैलल मुहवाला) गोल आ नाम कोठी जकाँ काँच माटिक बनाओल वासन । मै.

मोड़ाइ-सं., मोड़ैक काज तथा वेतन । मै.

मोड़ाएब-क्रि., मोड़ैक काज कराएब । मै.

मोड़ि-सं., नार पोआर सँ बनाओल थैला मे धान राखि बान्हल गोल पोटरी । मै.

मोड़ुआ-विशे., कोनो वस्तु मोड़िकय बनाओल । मै.

मोढ़नि-सं., मोढ़ैक (घुमाकय बन्हैक) विधि । मै.

मोढ़ब-क्रि., घुमा घुमाकय मुह बान्हब । प्रयोग– "दाइ कने पिरुकिया मोढ़ि दिअ' । " मै.

मोढ़ा-सं., १. काठक गीरहवाला गेंड़ी । २. एक गोटए कें बैसैक उँचगर विशेष प्रकारक काठक आसन । मै.

मोढ़ाइ-सं., १. काठ आदि मे चित्र मोढ़ैक काज आ पारिश्रमिक । २. नक्कासी । मै.

मोढ़ी-सं., गीरहवाला काठक छोट गेंड़ी । मै.

मोढ़ुआ-विशे., नक्कासीदार, घुमा घुमाकय चित्र बनाओलवाला । मै.

मोति/मोती-सं., मुक्ता । रत्न । मै.

मोतियाबिन-सं., आँखिक रोग । मै.

मोतीचूर (लड्डू)-सं., मेंही बुनियावाला लड्डू । मै.

मोती झाबा-क्रि., गुच्छावाला लत्तीक फूल विशेष । मै.

मोथा-सं., घासक एक प्रभेद विशेष । मै.

मोथी-सं., बहुत पैघ डन्टावाला पटिया बीनैक उपयोगी मोथा जातिक जलीय प्रदेशक खढ़ । मै.

मोदक-सं., १. अनेक पदार्थ जड़ी बूटी सँ बनाओल मधुर औषध विशेष । लड्डू । सं. तत्सम

मोदियाइन-विशे., मधुर खाद्य पदार्थ बनबैवालाक पत्नी (स्त्री) । मै.

मोदी-सं., मधुर खाद्य पदार्थं बनबैवाला जाति । मै.

मोन-सं., १. तौलक पैघ मान । २. मन । मै.

मोन छोट करब-क्रि., निराशा सँ मन मे दुखी रहब । मै.

मोन पाड़ब-क्रि., स्मरण करब । मै.

मोन रहब-क्रि., स्मरण रहब । मै.

मोन राखब-क्रि., स्मरण राखब । मै.

मोनहा-विशे., एक मोन अँटैवाला वासन । मै.

मोनहानि होएब-क्रि., आशाक प्रतिकूल भेला सँ मनक उदास होएब । मै.

मोनही-विशे., एक मोनक आधारवाला वासन । मै.

मोनाह-विशे., १. हरदम मन मे गुनि धुनि करैत रहने अप्रसन्न मुखाकृतिवाला कम बजनिहार । २. केवल कमरीवाला कटहर । मै.

मोनि-सं., चक्कर कटैत पानिक प्रबल प्रवाह सँ बनल धारक बीच गहींर गड्ढा । मै.

मोनी-विशे., मोन भरि अन्न समाइवाली कोठी । मै.

मोफत-अव्यय, मुफ्त, बिना खर्च आ परिश्रम सँ । उ. तद्भव

मो फों करब-क्रि., फूसि दाबीकय समाज मे प्रभाव जमबैक चेष्टा करब । मै.

मोम-सं., कोमल पघिलैवाला घी सँ अतिरिक्त ठोस भ' क' जमैवाला तेलाह द्रव । मै.

मोमजामा-विशे.,मोम सँ जमाओल । मै.

मोमबत्ती-सं., मोमक भीतर वाती द' क' बनाओल दीप । मै.

मोर-सं., मयूर । हि. तत्सम

मोर-सर्वनाम, हम शब्दक सम्बन्धकारक । मै.

मोरी-सं., घिनाओन पानि के घूरि फिरिकय बहबैक बाट । छेद नाली । मै.

मोल-सं., १. मूल्य, दाम । २. (लाक्षणिक) महत्त्व । मै.

मोल करब-क्रि., मूल्य निश्चित करब । मै.

मोलगर-विशे., अधिक दामवाला । मै.

मोल मोलाइ-सं., दाम निश्चित करै मे बातक झीका झोरी । मै.

मोलहा-विशे., कीनल । मै.

मोलाइ-सं., कोनो वस्तुक चढ़ाकय दामक बात । मै.

मोलाएब-क्रि., कोनो वस्तुक दाम बूझब । दाम घटबैक प्रयास करब । मै.

मोलाह-विशे., अधिक दाम सँ भेटैवाला । मै.

मोलान करब-क्रि., कोनो वस्तु कीनै मे दाम घटबै बढ़बै ले अधिक नोंक झोंक करब । मै.

मोलामा-सं., १. ककरौ अपन मत मे लबै ले प्रिय आ आकर्षक बातक रंग । २. सोन आ चानी आ चानी आदिक द्रवक लेप । मै.

मोलुआ-विशे., कीनिकय आनल । मै.

मोस्टण्ड-विशे., सक्कत गस्सल विशाल धूआ काया वाला । मै.

मोस-सं., मच्छर, उड़ैवाला दंशक सूक्ष्म जीव । मै.

मोसब्बर-सं., रासायनिक पदार्थ । मै.

मोसम्मात-विशे., निःसन्तान विधवा मुसम्मात । उ. तद्भव

मोसाफिर-विशे., यात्री, बटोही, मुसाफिर । उ. तद्भव

मोसाह-विशे., मोस (मच्छर) भरल । मै.

मोसियानी-सं., मोसि (रोसनाई) रखैक वासन । मै.

मोह-सं., कोनो वस्तु मे मनक अत्यन्त लागि । सं. तत्सम

मोहन भोग-सं., दूध, घी, उत्तम फल सब सँ बनल मधुर भोजन । मै.

मोहनमाला-सं., बहुमूल्य रत्न सब सँ गाँथल नमहर माला आ फूलक गजरा । मै.

मोहब-क्रि., मन मे लागि जगाकय आकर्षित करब । मै.

मोहर-सं., पद आ नामवाला ठप्पा, नाम निशान छपैक वस्तु । मै.

मोहरा-सं., जड़ी विशेष । मै.

मोहाएब-क्रि., कोनो वस्तु पर मुग्ध भ' क' खिचा जाएब । मै.

मोहित होएब-क्रि., मुग्ध भ' जाएब । वासना सँ प्रेरित बनब । मै.

मौ

मौआसी-सं., पानिक वेग सँ बहिकय आएल खेतक उर्वर शक्ति (खाद) । मै.

मौका-सं., अवसर । उ. तत्सम

मौगा-विशे., मौगीक स्वभाववाला पुरुष । मै.

मौगियाइन-विशे., मौगी जकाँ स्वभाव आ आचरण । मै.

मौगियाह-विशे., स्त्रीगणक बीच रहब अधिक पसिन्न करैवाला । मै.

मौगियाही-विशे., स्त्री जातिक उपयोगवाला । मै.

मौगी-सं., स्त्रीगण । मै.

मौगीमेहरि-सं., नेन्ना सँ बूढ़ आ धिया सँ पुतोहुधरि सब स्त्री जाति । मै.

मौज-सं., निधन्धपनाक सुख । उ. तत्सम

मौजी--विशे., मौज करैवाला । निधन्ध रहैवाला । उ. तत्सम

मौजे-सं., निबन्धित ग्रामक नाम । उ. तत्सम

मौत-सं., १. शतरंज खेलक बादसाहक धड़ पकड़ । २. मृत्यु । उ. तत्सम

मौध-सं., मधु । मै.

मौन-विशे., गुम्म रहैवाला, चुप रहैवाला । सं. तत्सम

मौनता-सं., चुप्पी । सं. तत्सम

मौनापंचमी-सं., श्रावण कृष्ण पंचमी, नागमाताक उपासना तिथि । मै.

मौनाह-विशे., टोकलौ पर चुप्पे रहैक अभ्यासवाला । मै.

मौनी-विशे., सदिखन चुप्पे रहैक व्रतवाला । मै.

मौनी-सं., बाँस आ सीकी खढ़क बीनल छोट सँ छोट वासन । मै.

मौर-सं., मुकुट, विवाह आदि मे वरक मस्तक पर रखैवाला वस्तु । मै.

मौलवी-विशे., मुसलमानक पण्डित । मै.

मौला-विशे., मुसलमानक पैघ पण्डित, महात्मा । उ. तत्सम

मौलाएब-क्रि., सुखाइक क्रम होएब । मै.

मौलि-सं., माथ । सं. तत्सम

मौलिसिरी-सं., मालसरि फूल । हि. तद्भव

मौली-सं., शुभ अवसर पर हाथ मे कंकण बन्हैक लाल सूतक गुच्छा । मै.

मौसी-विशे., माइक बहिन । मै.

मौह-सं., वनस्पति विशेषक फड़ महुआ । मै.

मोहक-सं., मोहक, नव वर बधूक परस्पर थारी मे पहिने अन्नक कऽर फेंकैक विनोद । मै.



य

यकार-सं., 'य' अक्षर । मै.
यज्ञ-सं., यज्ञ । जज्ञ । सं. तत्सम
यज्ञोपवीत-सं., जनौ । सं. तत्सम
यजन-सं., यज्ञ । सं. तत्सम
यजमान-विशे., यज्ञ कयनिहार । स्त्री० यजमानी । सं. तत्सम
यत्न-सं., प्रयास, उद्योग । सं. तत्सम
यथा-अव्यय, जाहि प्रकार, जेना । सं. तत्सम
यथाजाल-सं., चल अचल सब सम्पत्ति । मै.
यथेष्ट-अव्यय, परिपूर्ण, इच्छानुसार । सं. तत्सम
यथोचित-अव्यय, उचितक अनुसार । सं. तत्सम
यद्यपि-अव्यय, ओना तँ । सं. तत्सम
यदाकदा-अव्यय, जखन कखनौ । सं. तत्सम
यदि-अव्यय, जँ । सं तत्सम
यन्त्र-सं., कल । सं. तत्सम
यन्त्रणा-सं., जकड़न, बन्धन कष्ट । सं. तत्सम
यम-सं., मृत्यु देवता । सं. तत्सम
यमदिरी-सं., सुख रात्रि सँ एक दिन पहिने राति मे यमक उद्देश्य सँ देल दीप । मै.
यमराज-सं., मृत्यु देवता । सं. तत्सम
यमुना-सं., नदी विशेष । मै.
यमुनीरंग-विशे., यमुनाक जलक रंगवाला । मै.
यश-सं., नाम कीर्ति । सं. तत्सम
यशस्वी-विशे., सगरे विख्यात कीर्तिवाला । सं. तत्सम

या

याक-सं., हिमालयक पशु विशेष । चमरी गाय । मै.
याचक-विशे., मङनिहार । प्रार्थी । सं. तत्सम
याचना-सं., मङनी । सं. तद्भव
याज्ञिक-विशे., यज्ञ सम्बन्धी, यज्ञक उपयोगी । सं. तत्सम
याजन-सं., यज्ञ करबैक पुरोहिती । सं. तत्सम
यात्रा-सं., प्रस्थान, विदा । गमन । सं. तत्सम
यात्री-विशे., गेनिहार, बटोही । पथिक । सं. तत्सम
यातायात-सं., आवाजाही । सं. तत्सम
याद-सं., स्मरण । उ. तत्सम
यादव-विशे., यदुवंशी । सं., गोप जाति । सं. तत्सम/ मै.
यान-सं., सवारी । सं. तत्सम
याम-सं., पहर । सं. तत्सम
यार-सं., मित्र । दोस । मै.
यावत्-अव्यय, जाधरि । सं. तत्सम

यु

युग-सं., कालक एक स्थूल मान । सं. तत्सम
युक्त-विशे., संगत । सं. तत्सम
युक्ति-सं., तर्क, जोगाड़ । सं. तत्सम
युद्ध-सं., लड़ाइ, मारि । सं. तत्सम

यू

यूप-सं., इनार पोखरिक याग मे गाड़ल पुरुषाकार लकड़ी । सं. तत्सम

यो

योग्य-विशे., शिक्षा आ व्यवहार मे निपुण उपयुक्त । सं. तत्सम
योग्यता-सं., बुद्धि ज्ञान आदि सामर्थ्य । सं. तत्सम
योग-सं., जोड़, मिलन, आत्मसाधना । सं. तत्सम
योगाभ्यास-सं., आत्मसाधनाक अभ्यास । सं. तत्सम
योगी-विशे., योग साधना कयनिहार । सं. तत्सम
योद्धा-विशे., मारि आ लड़ाइ कयनिहार । सं. तत्सम
योनि-सं., गर्भ बहराइक मार्ग । स्त्री चिह्न । सं. तत्सम

र

र-विशे., बिन चोआ (सुगन्धि) वाला नोसि । मै.
रए/रओ-सम्बोधन अव्यय, नीच वा छोटक सम्बोधन । मै.
रक्त-वि. (सं.,) १. लाल रंगवाला । २. लाल रंग। ३. शोणित । सं. तत्सम
रक्त चानन-सं., लाल चाननक हेतु लाल काठ विशेष । मै.
रक्षा-सं., बचाओ, त्राण, पालन । सं. तत्सम
रक्षाबन्धन-सं., सलौनी पूर्णिमा दिन अपना सँ छोट कें तथा बहिन द्वारा भाइ सब कें रक्षाक हेतु कल्याण सूतक बन्हन । मै.
रक्षिका-सं., गणपति दुर्गा समेत षोड़श मातृकाक गोबर थोपि कय बनाओल चिह्न । सं. तत्सम
रकतकोइँ-सं., राति मे कमलसन फुलाइवाला फूल। मलकोका । मै.

रकती रंग-सं., आले रंग, अलता रंग। मै.

रकबा-सं., खेत (भूमि) क क्षेत्रफल। उ. तत्सम

रकम-सं., १. द्रव्यक (मुद्रा) राशि। २. क्रम, हालि चालि। उ. तत्सम/मै.

रकाब-सं., घोड़ा पर चढ़ला उत्तर पैर रखैक कड़ी। उ. तत्सम

रखना-सं., रखैक वासन। मै.

रखवरबा/रखवार-विशे., रक्षक। रक्षा करैवाला। मै.

रखवारि-सं., रक्षा करैक भार। मै.

रखबैया-विशे., रखैवाला, प्रतिपाल करैवाला। मै.

रखरखाओ-सं., रक्षा करैक आवश्यक स्थिति। मै.

रखलहा-विशे., निजी उपयोग ले सुरक्षित। धयल। मै.

रखाइन नै राखब -क्रि., अपशब्द सँ अत्यन्त अपमानित करब। प्रयोग—"रिनियाँ कोनो रखाइन नै रखलकैन।" मै.

रखाएब-क्रि., रक्षित कराएब, सुरक्षित धराएब। मै.

रखाउ-विशे., रखबाक योग्य। मै.

रखाओंत-सं., मालजाल चरैक हेतु सुरक्षित क्षेत्र। मै.

रखाओर-विशे., संचित कय के धयल। मै.

रखान-सं., गुप्त रूपें सुरक्षा। मै.

रखुआ-विशे., बहुत दिन सँ राखल। मै.

रखेली-विशे., केवल भोगक हेतु भरण पोषण कयल जाइत अवैध सम्बन्धवाली स्त्री। मै.

रखौआ-विशे., धयल, धरहर। मै.

रग-सं., १. स्नाउशक्ति। २. कम्बल। मै.

रंग-सं., विभिन्न वर्ण। मै.

रगड़-सं., घर्षणक चिह्न। मै.

रगड़न-सं., घर्षण। मै.

रगड़ना-सं., रगड़ैक साधन। मै.

रगड़पन-सं., बारम्बार कोनो वस्तुक आग्रह वा जिद्द सँ लेबाक चेष्टा। मै.

रगड़ब-क्रि., घर्षण करब। मै.

रगड़बाएब-क्रि., अनका द्वारा रगड़ैक काज कराएब। मै.

रगड़ा-सं., १. घर्षण। २. (लाक्षणिक) झगड़ा। मै.

रगड़ाएब-क्रि., १. रगड़ल भ' जाएब। २. अनका सँ अपन रगड़ कराएब। मै.

रगड़ा करब-क्रि., (लाक्षणिक) बल सँ झगड़ा करब। मै.

रगड़ा लागब-क्रि., घिसाट लागब। मै.

रगड़ी-विशे., एकै बात के पकड़ि धेने रहैवाला। मै.

रगाड़-सं., घिसाठ (घर्षणक चिह्न)। मै.

रगड़ुआ-विशे., रगड़िकय बनाओल गेल। मै.

रंगति-सं., लक्षण, अनुमानित संभावित रूप। मै.

रंगमञ्च-सं., नाट्यशाला। सं. तत्सम

रंगारंग-विशे., अनेक प्रकारें रोचक। मै.

रङ-सं., पानि मे घोरल रंग। मै.

रङताल मचब-क्रि., विकट स्थिति होएब। मै.

रङब-क्रि., रंगल होएब, रंग सँ सराबोर करब। मै.

रङबाज-विशे., अधिक वासनावृत्तिवाला। मै.

रङबाजी-सं., ठकिकय खेलाइक चेष्टा। मै.

रङ विरङ-विशे., अनेक प्रकारक तथा भिन्न रंग। मै.

रङरभस-सं., केलि क्रीड़ा। विलास। मै.

रङ रङ खेलाएब-क्रि., परस्पर रंग दैक खेल करब। मै.

रङरेज-विशे., कपड़ा आदि रङै मे निपुण। मै.

रङसाज-विशे., चित्र आदि मे रंग भरैवाला। मै.

रङाएब-क्रि., रंग सँ चमकाएब। मै.

रङिया-विशे., हास परिहास आ विनोद पसिन्न करैवाला वा ओहि मे लिप्त रहैवाला। मै.

रङिया पलिया-सं., धानक अगता भेद। मै.

रङीन-विशे., रंगवाला, रंगल कपड़ा आदि। मै.

रङीला-विशे., ललित कला आ आमोद प्रमोद एवं महिला सब मे भूलल रहैवाला। मै.

रङुआ-विशे., रंग मे डुबाकय असल रंग कें झाँपल वाला। मै.

रङरङ-विशे., खूब रंग सँ भरल भ' गेल। प्रयोग—"बजार मे हमरा सब रङरङ क' देलक होरीक दिन।" मै.

रच्छक-विशे., रक्षक। सं. तद्भव

रचना-सं., राश्ना, वनौषधि विशेष। मै.

रचना-सं., निर्माण, बनबैक क्रिया, सृष्टि। सं. तत्सम

रचनाकार-विशे., बनबैवाला, सृजनकर्ता। निर्माता। सं. तत्सम

रचनिहार-विशे., गढ़ि गढ़ि कय बनौनिहार। मै.
रचब-क्रि., गढ़ि गढ़ि कय बनाएब। मै.
रंचमात्र-विशे., थोड़बो परिमाणवाला, कनेको। मै.
रचाएब-क्रि., १. रचना कराएब। २. (लाक्षणिक) परिस्थिति जगाएब। मै.
रचुआ-विशे., गढ़ि गढ़ि कल्पना सँ बनैवाला। मै.
रछपाल-विशे., रक्षा करैवाला। मै.
रज-सं., १. धूरा, गर्दा। २. स्त्रीक मासिक धर्म। सं. तद्भव
रंज-सं., मानसिक क्रोध, अप्रकट तामस। मै.
रजक-विशे., धोबी। सं. तत्सम
रंजक-विशे., रङ्गैवाला, प्रसन्न करैवाला। सं. तत्सम
रंजकगंज-विशे., ढेरक ढेर। अधिकता सँ भरल। मै.
रजगिद्ध-सं., गिद्धसन आकारवाला उज्जर पक्षी। मै.
रजाइ-सं., शीरक, तुराइ। हि. तत्सम/मै.
रजिस्टरी-सं., निबन्धन, राजपुरुष प्रमाणित आलेख। अं. तत्सम
रजोधर्म-सं., मासिक धर्म, ऋतु धर्म। सं. तत्सम
र' झ' करब-क्रि., निष्कर्षक हेतु विवाद कयला उत्तर मत के समञ्जस करब। मै.
रट्टूमल-विशे., केवल रटिकय पढ़निहार। मै.
रटना करब-क्रि., निरुद्देश असमय मे घूमल फिरब। मै.
रटनी लागब-क्रि., एके अभिलाषा पूर्ण करैले बारम्बार बजैत रहब। मै.
रटब-क्रि., बारम्बार उच्चारण कय अभ्यास करब। मै.
रट लगाएब-क्रि., अपन इच्छाक वस्तु ले बारम्बार अभिलाषा प्रकट करब। मै.
रट लागब-क्रि., बारम्बार माङब। मै.
रटाएब-क्रि., अभ्यास कराएब। मै.
रटुआ-विशे., रटिकय अभ्यास कय। मै.
रँड़खेप खेपब-क्रि., राँड़ (विधवा) जकाँ कोनो रूपें जीवननिर्वाह करब, दुख काटब। मै.
रड़चालि-सं., असभ्यक व्यवहार। मै.
रँड़चालि-सं., विधवाक आचरण। मै.
रड़धूमस-सं., राड़ (असभ्य) जकाँ उद्दण्डता भरल खेल। मै.
रड़पनी-सं., राड़क गुणवाला स्वभाव। मै.
रड़पोस-विशे., राड़ कें अधिक पोसैवाला। मै.
रड़हा-विशे., राड़क उपयोगी। मै.
रडार-सं., शून्यक चित्र लैवाला यन्त्र। अं. तत्सम
रड़ाह-विशे., राड़क चालि आ गुण एवं संग रहनिहार। मै.
रड़िनियाँ-विशे., असभ्य उद्दण्ड स्त्री। मै.
रँड़ुआ-विशे., विधुर (मृत पत्नीवाला)। मै.
रण्डा-विशे., निरंकुश विधवा। सं. तत्सम
रण्डी-विशे., वेश्या। मै.
रण-सं., लड़ाइ। सं. तत्सम
रत्तासाग-सं., लाल रंगवाला ठढ़िया साग। मै.
रत्ती-सं., वाट (तौलवाला) मानक प्राचीन कालक सब सँ छोट मान। मै.
रत्ती रत्ती उड़ब-क्रि., एक एक कण झरि जाएब। मै.
रत्न-सं., हीरा। सं. तत्सम
रतजगा-सं., रातुक जागरणा। मै.
रतन-सं., रत्न। सं. तद्भव
रतनार-विशे., लाल प्रतिबिम्बवाला। मै.
रतरत-विशे., अत्यन्त उज्ज्वल। मै.
रति-सं., १. सम्भोग। २. अनुराग। ३. शृङ्गार रसक स्थायी भाव। सं. तत्सम
रतिगर-विशे., अधिक रातिवाला समय। मै.
रतिचर-विशे., रातिये टा के भ्रमण करैवाला। मै.
रतिया-सं., स्नेहिल राति। मै.
रतुआ-सं., विशेष प्रकारक व्यञ्जन। मै.
रतुका-विशे., रातिवाला पदार्थ। विषय। मै.
रतौन्ही-सं., रातिकय नै सूझैक रोग। मै.
रथ-सं., घोड़ा जोतल चारि पहियावाला सवारीक गाड़ी। सं. तत्सम
रथयात्रा-सं., जगन्नाथपुरीक प्रसिद्ध पर्व। सं. तत्सम
रद्द-सं., औक, बमन। उल्टी। उ. तत्सम
रद्दा-सं., भीत वा पजेबाक देबाल मे माटि आ ईंटा बैसबैक खेप। मै.

रद्दी-विशे., उपयोगहीन, अनुपयोगी । काज मे नै अबैक योग्य । उ. तत्सम

रन्ना-सं., कमारक काज करैक काल काठ कें चिक्कन करैक अस्त्र । मै.

रन्ना करब-क्रि., चिक्कन बनबैले काठ पर रन्ना चलाएब । मै.

रन्हा-सं., भानस, भोजन पाक । मै.

रन्हा करब-क्रि., भानस करब । मै.

रन्हुआ-विशे., रान्हिकय पकाकय बनाओल । प्रयोग- "रन्हुआ चाउरक चिकसक रोटी कोमल होइ छै। विशेष-खोलैत पानि मे चिकस देला सँ रन्हुआ कहबै छै ।" मै.

रन करब-क्रि., बारम्बार तेजी सँ एम्हर ओम्हर दौड़ करब । मै.

रनरन करब-क्रि., १. अधिक सुखयला सँ अन्न आदि पदार्थक शब्द करब । २. (लाक्षणिक) अभ्यास आ विषयक ज्ञान सँ बुद्धिक तेजी प्रकट होएब । मै.

रनिवास-सं., अन्तःपुर, स्त्रीगणक हेतु राजालय मे सुरक्षित स्थान । मै.

रनेवने-अव्यय, भयंकर स्थान सब मे । मै.

रपट-सं., १. डोरीक रचनाक सक्कत पदार्थ । २. असमय मे खेलाइक दौड़ । मै.

रपटब-क्रि., असमय मे खेलक क्रमे नेन्ना सभक दौड़ब । मै.

रफ-विशे., काट खोंटवाला लेख । अं. तत्सम

रब्बड़-सं., वृक्ष विशेषक सक्कत लस्सा । मै.

रब्बी-सं., चैतधरि तैयार होइवाला फसिल । मै.

रब्बी रत्ती-सं., चैती अन्नक समूह । मै.

रब-सं., १. ध्वनि । २. सुखाइक क्रम । ३. शुद्धता । मै.

रबगर-विशे., १. सुखायल (अधिक) । २. चानी आदि धातुक शुद्धतायुक्त । मै.

रबरल-विशे., अधिक तेज गतिवाला (चालि मे) । मै.

रबब-क्रि., शब्द सँ स्पष्ट कहब । मै.

रबर मचाएब/रबरब-क्रि., निरर्थक एम्हर ओम्हर दौड़ब । मै.

रबा-सं., अधिक सुखायला सँ बनल दाना । सं. तत्सम

रबाइस-सं., विस्फोटक पदार्थ सँ बनल शून्य मे शब्दयुक्त आग्नेय चित्र । उ. तत्सम

रबाएब-क्रि., अत्यन्त सुखा जाएब । मै.

रबाकरन-सं.,घोल सँ दाना बनबैक वैज्ञानिक विधि । मै.

रबाना-सं., प्रस्थान (विदा) । उ. तत्सम

रबियाती-सं., वसन्त समय सम्बन्धी उपजा । मै.

रभस-सं., आमोद प्रमोद । मै.

रभसन-सं., आमोद प्रमोद एवं केलि करैक अधिक चेष्टा । मै.

रभसब-क्रि., वासना भरल अधिक मनोरञ्जन करब । मै.

रमण-सं., केलि, खेल, आनन्द, रति । सं. तत्सम

रमता योगी-विशे., सतत घूमैत रहैवाला साधु । मै.

रमना-सं., बहारक समतल हरियरी भरल घूमै फिरै वाला स्थान । मैदान । मै.

रमब-क्रि., भुला जाएब, तल्लीन भ' जाएब । मै.

रमराहटि-सं., एकै बात पर झगड़ाक क्रमे अधिक परस्पर विवाद । मै.

रमा-सं., लक्ष्मी । सं. तत्सम

रमाएब-क्रि., तल्लीन बनाएब । बहलाएब । मै.

रवि-सं., १. दिनक नाम । २. सूर्य । सं. तत्सम

रस्सा-सं., अत्यन्त मोट अनेक भत्तावाला पैघ डोरी । मै.

रस्साकसी-सं., रस्साक दुहू छोर पर पकड़ि दू दलक द्वारा खींचैक खेल । मै.

रस्सी-सं., तीन भत्तावाला मोटगर पैघ डोरी । मै.

रस-सं., १. भौतिक पदार्थक विभिन्न छः प्रकारक स्वाद—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय आ तीत । २. अन्तःकरणक आनन्दमय साहित्यिक पद पदार्थक विशेष विशेष प्रकारवाला स्वादक अनुभूति । ३. चीनीक घोल । ४. आर्द्र करैवाला द्रव । ५. वासना । सं. तत्सम

रसगुल्ला-सं., रस मे डुबाओल छैनाक बनल गोल मधुर । मै.

रसदार-विशे., झोरवाला (व्यञ्जन) पदार्थ । मै.

रसनचौकी-सं., वाजन विशेष। मै.

रसपीपरि-सं., रासायनिक औषध। मै.

रसमें रसमें-अव्यय, धीरें धीरें। मै.

रसरी-सं., पातर तीन भत्तावाला डोरी। मै.

रसाएब-क्रि., १. (खेतक विषय मे) उर्वरता भरब, उपजैक भौतिक शक्ति आएब। २. (लोकक विषय मे) वासनाक भावना जागब। ३. (कोनो वस्तुक विषय मे) अधिक काल धरि द्रव वस्तु मे फूलैत रहब। मै.

रसिक/रसिया-विशे., १. साहित्यिक विषयक तत्त्वज्ञ। २. लौकिक वार्ता मे अधिक श्रृङ्गार रसक भावना रखैवाला। मै.

रसी-विशे., रस भरल लोक। मै.

रसीला-विशे., श्रृङ्गार रसवाला गप करै मे रुचि रखैवाला। मै.

रसें रसें-अव्यय, नहूँ नहूँ, क्रमें क्रम। मै.

रसौं-सं., मद्धिम ताप। मै.

रसौती-विशे., निकट मे भेल वर्षा सँ खेतीक काज। मै.

रहटि-सं., अधिक काल अबै जाइक क्रम। मै.

रहठि-सं., इनार सँ पानि खीचैक विभिन्न प्रकारक कल आ बड़का डोल। मै.

रहड़िया-सं., छोट छोट गाछवाला राहरिसन दाना वाला खेत मे उपजैवाला अन्न। मै.

रहन सहन-सं., दैनिक जीवनचर्य्या। मै.

रहनि-सं., गृह व्यवहारक व्यवस्था। आचरण। मै.

रहब-क्रि., थम्हब, ठहरब, वास करब। सत्ता राखब। मै.

रहस-सं., रहस्य। सं. तद्भव

रही-सं., दालि मिलबैक काठक बनल साधन विशेष। मै.

रहीस-सं., विशेष धनवान रहैक कारणें, सामन्ती विचारधारावाला। मै.

रहुआबोआर-सं., अधिक पैघ आ विशेष जोआ गेला सँ लाल मुहवाला बोआरी माछ। मै.

रा

रा-सं., सर्वोच्च भारतीय सत्ताधारी गुप्तचर संस्था। शब्द संक्षेपित अंग्रेजी

राइ-सं., रैंची, गोटक आकारवाला मेंही तेलहन। मै.

राइछित्ती-विशे., जेना रैंची छिड़ियेला सँ उठाओल नै जा सकैये तहिना छिड़ियाएल वस्तु। मै.

राइँ बांइ-विशे., अव्यवस्थित रूपें पसारला सँ नष्ट होइक स्थिति मे पड़ल। मै.

राइ भेला-सं., भेला (औषध विशेष) क संग रैंची आदि अनेक वस्तुक मिश्रण सँ बनाओल औषधक गेंठ। मै.

राइ मेराइ-सं., रैंचीक संग उपजे मे मिलाओल अनेक अन्न। प्रयोग–"आधा चित्रा राइ मेराइ आधा चित्रा जौ केराइ।" मै.

राइस राइसक-विशे., अनेक रूपक, अनेक प्रकार वाला, रंग रंगक। मै.

राउटी-सं., कपड़ाक चलता फिरता घर। मै.

राओट-सं., लोहाक छड़क ठेङासन टुकड़ा। अं. तद्भव

राक्षस-सं., सद्भावनाशून्य आदिम मनुष्य जाति। हिंसक मनुष्य। स्त्री० राक्षसी। सं. तत्सम

राकस-सं., श्मशान ज्योति। मै.

राका-सं., पूर्णिमाक राति। सं. तत्सम

राख-सं., छाउर, भस्म। उ. तत्सम

राखपति रखापति-लोकोक्ति, पहिने आनक प्रतिष्ठा राखू तखन अपन प्रतिष्ठा रहत। मै.

राखब-क्रि., धरब, पकड़ब, रक्षा करब। मै.

राखी-सं., रक्षा सूत्र, श्रावण पूर्णिमा दिन रक्षाक कामना सँ बहिन द्वारा भाइ कें आ मंगल कामना सँ पुरुष द्वारा सब कें बन्हैक सूत। मै.

राग-सं., १. इन्द्रिय आ जांघक बीचवाला अंग। २. भितराएल विरोध। मै.

राग-सं., १. आसक्ति, प्रेम। २. गीतक लय। सं. तत्सम

राग कुरयारब-सं., विरोध सँ दोषक उद्घाटन आ आरोप। मै.

रागा रागी-सं., परस्पर गुप्त विरोधक द्वारें जागल मनक मलिनता। मै.

रागिणी-सं., १. प्रेम करैवाली। २. शास्त्रीय गीतक विभिन्न लयक भेद। सं. तत्सम

रागी-विशे., राग रखैवाला, प्रेम करैवाला। मै.

राङ-सं., शीघ्र पघिलैवाला निकृष्ट धातु। मै.

राङी-सं., अगता अगहनी धान विशेष । मै.
राज्य-सं., एक सत्ता (शासन) क विशाल विस्तृत भूखण्ड । प्रदेश । सं. तत्सम
राज-विशे., १. राजा । २. पजेबा जोड़ैवाला मिस्त्री । सं., राज्य । सं. तद्भव/मै.
राजकीय-विशे., शासक आ शासन सँ सम्बन्ध रखैवाला । सं. तत्सम
राजतन्त्र-सं., राजा अर्थात् एक व्यक्तिक शासनवाला शासन प्रणाली । सं. तत्सम
राजदरबार-सं., राज सभा । मै.
राजनीति-सं., शासन करैक विधि विधान । सं. तत्सम
राजपाट-सं., राज्य आ ओकर उपकरण । मै.
राजपूत-विशे., राजाक सन्तान । मै.
राजमहल-सं., राजा महालय, रहैक स्थान । मै.
राजस-सं., राजभोगक विन्यास एवं व्यवहार । मै.
राजा-विशे., व्यक्ति आ सामन्तवादवाला शासक । सं. तत्सम
राजा दैव-सं., (लाक्षणिक) आकस्मिक आपत्ति । मै.
राजासाही-विशे., लोटाक विशेष प्रभेद । मै.
राजी-विशे., सहमत, मनमीलू । उ. तत्सम
राजीनामा-सं., प्रमाणित सहमति पत्र । मै.
राँट-सं., पाकिकय पाथर सन (झाम) बनल ईंटा । माटिक वासन । मै.
राटन-सं., कुशियार आदि बहुत भारी वस्तु कें तौलैक हेतु यान्त्रिक तराजूक स्थान । मै.
राँड़-विशे., विधवा स्त्री । मै.
रैंड़-विशे., पिछड़ाएल, असभ्य आ असंस्कृत । मै.
राँड़ साँड़ सीढ़ी सन्यासी- (लोकोक्ति) पहिलुक चारूटा बुद्धि प्राण आ अर्थक संकट उपस्थित करै वाला होइत अछि तँ ओकर उपदेश अछि-ऐ सब सँ बची तँ बसी काशी । मै.
राँड़ी-विशे., (गारि) राँड़ (विधवा) होइवाली । मै.
राड़ी-सं., सक्कत डाँटवाला घर छारैक खढ़ विशेष । मै.
राँड़ी बेटखौकी-विशे., (गारि) स्त्रीगणक गारागारी करैक सम्बोधन । सैं बेटा खाइवाली । मै.
राढ़ि-सं., आम विशेष । मै.
राढीय-विशे., बंगाल, उड़ीसाक ब्राह्मण आदिक भेद । मै.
रात्रि-सं., राति । सं. तत्सम
राताराती-अव्यय, रातुक काल, भरि रातिक भीतर । मै.
राति-सं., सूर्यास्त सँ सूर्योदय पर्य्यन्तक काल । रात्रि । मै.
राति बिराति-अव्यय, रातुक समय मे । मै.
रातिम-सं., उपनयनक चरिमा दिन होम'वाला रतुका विधि । चुमाओन । मै.
रातुक-विशे., रातिवाला । मै.
रादा-सं., देखू–"रद्दा" । मै.
राधा-सं., प्रसिद्ध पौराणिक देवी । मै.
रान्ह-सं., थोड़ आँचवाला पाक । मै.
रान्ह करब-क्रि., थोड़ ताप सँ सिद्ध करब । मै.
रान्हब-क्रि., भानस करब, चुल्हा पर सिद्ध करब । मै.
रानी-विशे., राजाक पत्नी । मै.
राब-सं., कुशियारक रसक मैलीवाला विकृत अंश । मै.
राबड़ी-सं., दूध मे मथिकय छाल्हीक बनाओल भोज्य पदार्थ । मै.
राबा-सं., गोल गोल कृत्रिम सूक्ष्म कण । मै.
राबी-सं., १. पंजाबक नदी विशेष । २. दानादार गुड़ तथा घी (जमला पर) आदि । मै.
राबीस-सं., ईंटाक भट्ठा मे देल कोइला सँ बनल राख । (छाउर) । मै.
राम-सं., १. दशरथक पुत्र । २. परमात्मा । मै.
राम झिङ्‌नी/राम तरोई-सं., हरियर व्यंजनवाला छोट गाछक फड़ । मै.
रामदाना-सं., मेंही दानावाला लावावाला अन्न विशेष । मै.
रामरुचि-सं. बदामक बेसन सँ विभिन्न प्रकारें अनेक कटुकक सहयोगें उत्कृष्ट व्यञ्जन । मै.
रामेश्वर-सं., चारू धाम मे दक्षिणक एक धाम । मै.
राय-सं., विचार, सम्मति । उ. तत्सम
रारि-सं., जड़ियाएल विरोध, लड़ाइ । मै.
राल-सं., चरखाक अंग विशेष । मै.
राशि-सं., १. ढेरी । २. मेष, वृष आदि १२ टा ग्रह चक्रक घर । ३. धन (रकम) । सं. तत्सम

रास्ता-सं., वाट । उ. तत्सम
रास-सं., गोकुलक प्रसिद्ध नाँचक भेद । मै.
रासन-सं., घरक दैनिक खाद्य सम्बन्धी पदार्थ । अं. तत्सम
रासि-सं., १. दीपक शिखा । २. घोड़ा वरद कें गाड़ी मे खींचैवाला डोरी । मै.
राहठ-सं., राहरिक फरक डाँट । मै.
राहरि-सं., दलिहनक मुख्य । मै.

रि

रिआज-सं., अभ्यास । उ. तद्भव
रिङ-सं., गोल फाँक वाला वस्तु । गोल परिधि । अं. तत्सम
रिङ मास्टर-विशे., पशु कें अनुशासित करैवाला । (सर्कसक महत्त्वपूर्ण लोक) । अं. तत्सम
रिङरिङ-सं., खेल विशेष । मै.
रिझाएब-क्रि., अपना दिश विश्वासपूर्वक आसक्ति बनाएब । अनुकूल करब । मै.
रिझान-सं., अनुकूल करैक, आसक्ति बढ़बैक प्रयास । मै.
रिञ्च-सं., कल (यन्त्र) क पेंच (बोल्ट) कसैक साधन यन्त्र । अं. तत्सम
रिट्ठा/रिट्ठी -सं., विशेष वनस्पतिक गोल छोट दानावाला फड़, छोटौ मे पैघ दाना रिट्ठा हैंठा आ छोट आँठी हैंठी । मै.
रित्ती छित्ती- विशे., सगरे अव्यवस्थित क' क' छीटल अन्न आदि वस्तु । मै.
रिताएब-क्रि., अपन परिवेशक लोक मे सब प्रकारें विश्वास सँ मिलि जाएब । एक भावना भ' जाएब । मै.
रिन्हब-क्रि., रान्हब । मै.
रिन्हुका-सं., सिद्ध अन्न (सद्यः रान्हल भात) क प्रातः कालक जलपान । मै.
रिनियाँ-विशे., रीन (कर्जा) दैवाला । मै.
रिबरिब-विशे., जीह पर कड़ू स्वाद सँ हल्लुक वेदना दैवाला । मै.
रिबरिबहा-विशे., रिबरिब स्वादवाला । मै.
रिबरिबी-सं., कड़ू स्वाद सँ जीह पर उत्पन्न होइ-वाला कनेक पीड़ा । मै.
रिबाज-सं., रीति । मै.
रिमझिम-अव्यय, वर्षाक पातर बुन्नी मुदा लगातार अधिक काल । मै.
रिरियाएब-क्रि., अनेर विकृत ध्वनि सँ कनैत रहब । मै.
रिरियाह-विशे., अनेर विकृत स्वरें कनैत रहैवाला । मै.
रिरियैनी-सं., रिरियाइक स्वभाव । मै.
रिसब-क्रि., कनेक कनेक कय वहब । चूअब । मै.
रिसाह/रिसियाह-विशे., साधरणों कनेकै बात मे बिगड़िकय रूसि रहैवाला । मै.

री

रीछ-सं., हिंसक पशु, भालु । मै.
रीछा-सं., कीड़ीक प्रभेद । दंशक । मै.
रीझब-क्रि., मोहित होएब, अनुकूल होएब । आसक्त बनब । सहमीलू भ' जाएब । मै.
रीत-सं., रीति, परिपाटी । सं. तद्भव
रीतब-क्रि., अपन परिवेशक वातावरण मे मिलि जाएब । मै.
रीन-सं., ऋण, कर्जा । सं. तद्भव
रीनरिनसै-सं., अगणित, अपरिमित रीन । मै.
रीबन-सं., बीच मे फाँकवाला गोल केश कें बान्हल रखैवाला साधन । फीता । अं. तत्सम
रीम-सं., कागजक पैघ मान । ५०० पन्ना । अं. तत्सम
रील-सं., नमहर लपेटल वस्तुक विशेष प्रमाण । (ताग, चलचित्रक पत्र (फिल्म) आदि वस्तु । अं. तत्सम
रीस-सं., इर्ष्या सँ उपजल क्रोध । मै.
रीसारिसी-सं., परस्पर ईर्ष्या क्रोधक भाव । मै.

रु

रुइआ-सं., तूर । हि. तत्सम
रुक्का-सं., रुपैया आदि लैक स्वलिखित प्रमाण । मै.
रुक्ख-विशे., कनेक सुखाएल माटि आदि । मै.
रुकता-विशे., रुकि रुकि चलैवाला । मै.
रुकब-क्रि., थम्हब, ठाढ़ भ' जाएब, ठहरब । बिलमब । मै.
रुकारुकी-सं., कोनो यात्रा मे समय समय पर आ स्थान स्थान पर विलमैक क्रम । मै.
रुखसुख-सं., सुखाएल स्थान आ समयक द्वारें सरलता वा आसानी अथवा सुविधा । मै.

रुखहा-विशे., सुखाएलवाला। मै.
रुखाइ-सं., (बोली मे) रुक्षता बेलसिपन। स्थान मे शुष्कता। मै.
रुखाएब-क्रि., सुखाएल होएब। आर्द्रताहीन बनब। मै.
रुखान-सं., काठ गढ़ैक बरहीक मुख्य अस्त्र। मै.
रुखानी-सं., कम चाकरवाला छोट रुखान। मै.
रुखि-सं., १. सोझाँ। २. घरद्वारक सम्मुखक अवकाश। ३. (लाक्षणिक) जड़ चेतन शरीरक उन्नति क्रम। अवकाश। मै.
रुखिगर-विशे., १. आगूक प्रकाश आ निस्तार वाला। २. विकास आ उल्लासवाला। ३. विकास प्रकाश आ अवकाशवाला। मै.
रुच्छ-विशे., रुक्ष, बेलसि, रसहीन। सं. तद्भव
रुचब-क्रि., स्वादिष्ट लागब। मै.
रुचि-सं., भोजन एवं कोनो विषय प्रति हार्दिक आकर्षण सँ जागल तृष्णा। सं. तत्सम
रुचिकर-विशे., रुचि बढ़बैवाला। इच्छा जगबैवाला। मै.
रुचिगर-विशे., आकर्षण भरल, रुचि सँ भरल। मै.
रुदन-सं., कनैक क्रम। मै.
रुनझुन-सं., (लाक्षणिक) गहना बाजन आदिक मधुर शब्द। मै.
रुनू झुनू-विशे., मधुर शब्दें भरल। मै.
रुपैगर-विशे., अधिक रुपैयावाला। मै.
रुपैया-सं., वस्तुक विनिमय लेल राजकीय मुद्रा। मै.
रुस्सी-सं., माथ आदिक मेंही चमड़ाक तह स्वयं उखड़िकय उज्जर भ' क' खसैक रोग। मै.
रुसना-विशे., अधिक रूसैवाला। मै.
रुसनिहारि-विशे., रुसि क' पड़ाइवाली स्त्री। मै.

रू

रूई-सं., तूर कपास। हि. तत्सम
रूक्ष-विशे., सरसतारहित। रुक्ष। मै.
रूढ़ि-विशे., परम्परा सँ चलैवाला। सं. तत्सम
रूप-सं., छवि, आकृति, वगै। सं. तत्सम
रूपा-सं., १. १ रुपैया। २. चानी प्रभेदक धातु। विशे., ३. रूपवाला। मै.
रूल-सं., संविधान, नियम। छोट छड़ी। अं. तत्सम
रूस-सं., एक महाशक्तिवाला राष्ट्र। देशज
रूसब-क्रि., चुप्पहिं क्रोध प्रकट करैत सब वस्तु सँ मुह मोड़ि लेब। मै.
रूसाफूली-सं., एक दोसरा पर क्रोध प्रकट करैत बाजब टोकब बन्न केने रहैक व्यवहार। मै.
रूसारूसी-सं., परस्पर रूसल रहैक क्रम। मै.

रे

रे-सं., १. संगीत वाचक दोसर मूल स्वर। सा, रे, ग, म, प, ध, नी मे दोसर सूर। मै.
रे !-अव्यय, नीचता द्योतक सम्बोधन। सं. तत्सम
रेकड़-सं., रिकार्ड। चरित्राङ्कण तथा शब्दक आबन्धन। अं. तद्भव
रेकन-सं., हरदम निरर्थक यत्र कुत्र उद्धत जकाँ दौड़ब। मै.
रेकब-क्रि., १. गदहाक बाजब। २. निरर्थक गदहा जकाँ दौड़ैत रहब। मै.
रेका-विशे., अनेर उद्दण्ड जकाँ यत्त' तत्त' दौड़ैत रहैवाला। मै.
रेकातोंकी-सं., झगड़ाक रूपें परस्पर रे तों (नीच) शब्दक प्रयोगक क्रम। मै.
रेकार-सं., रे, रे, शब्दक अनुचित प्रयोग। मै.
रेखा-सं., चीच। आयत, एक मेंही चिह्न, लकीर। सं. तत्सम
रेघा-सं., रेखा, डाँरि। सं. तद्भव
रेङनी-सं., कटगैनी, जड़ी विशेष। मै.
रेङब-क्रि., एके टाङ सँ उछलि उछलि चलब। मै.
रेङ रेङ खेलाएब-क्रि., एके टाङ सँ कूदि कूदिकय खेलाएब। मै.
रेङाएब-क्रि., बल सँ चलाएब। मै.
रेचक-विशे., कोठी (पेट) क मल ढील कय बहार क' दैवाला भोज्य वा औषधीय पदार्थ। सं. तत्सम
रेचन-सं., कोष्ठबद्धता (कब्जियति) भेला पर मल उतारैक प्रक्रिया। सं. तत्सम
रेजा-विशे., राजमिस्त्रीक संग काज करैवाला सहायक जन। मै.
रेजी (चाकू)-विशे., छोट अत्यन्त तेज छूरी। मै.
रेठान-सं., एक स्थान पर अनधिकार जाएब। मै.
रेठान मचाएब-क्रि., अनधिकार लोकक आएब जाएब। मै.

रेड़न-सं., १. बातक हुथान। २. अपने बात पर जोर। ३. एक मुहरी हठात् लोकक झोंक वा गति। मै.

रेड़ब-क्रि., हठात् बहुत लोक एक मुहरी गति होएव। कोनो वस्तु कें गर लगबैले झोंक सँ जोर द' क' ठेलब। मै.

रेड़ा-सं., एक मुहरी हठात् लोक समूह (मेला) क झोंक, वेग। मै.

रेड़ियाएब-क्रि., भारी वस्तु कें एक दिशक झोंक देब। मै.

रेणु-सं., धूरा, गर्दा, कण। सं. तत्सम

रेत-सं., प्रवाहक तीव्र वेग। मै.

रेताएब-क्रि., १. प्रवाहक वेग पकड़ब। २. रेती सँ तेज करब। मै.

रेती-सं., अस्त्र तेज करैवाला कठोर लोहक साधन। मै.

रेतुआ-विशे., रेती सँ विशेष तेज कयल। मै.

रेफ-सं., अक्षरक उपर र अक्षरक मात्रा। मै.

रेबा-सं., माछ विशेष। मै.

रेबाड़-सं., १. बातें अधिक धूसब (हूथब)। २. पाछाँ सँ खेहारब। मै.

रेबाड़ब-क्रि., १. बातें धूसब अर्थात् दोष पर बातक मारि देब। २. पाछू सँ दौड़िकय खेहारब। मै.

रेरम बहेरम-सं., अपन अपन बात पर अड़ल रहि झगड़ा क्रमक विवाद। मै.

रेरि मचाएब-क्रि., १. बारम्बार जिद्द पूर्वक कोनो वस्तुक माङ करब। अपन जिद्द पर अड़ब। मै.

रेरान-सं., एक दिशाह बिगड़ब। मै.

रेल-सं., स्वचालित एक रेखा पर दौड़ैवाला धूमयान। अं. तत्सम

रेलपेल-सं., अत्यधिक भीड़क आबरजात। हि. तत्सम

रेस-सं., वेग भरल दौड़। अं. तत्सम

रेसनि-सं., फूटल धातुक वर्तनक छेद फूटल अंश कें बन्न करैक जोड़ैक प्रकार। मै.

रेसनिहार-विशे., फूटल वर्तनक छेद बन्न कयनिहार। मै.

रेसब-क्रि., फूटल वर्तन कें रासायनिक द्रव्य सँ बन्न करब। मै.

रेसम-सं., पाटक सूत। मै.

रेसमी-सं., पाटक सूत सँ बनल कपड़ा। मै.

रेस लागब-क्रि., गुप्तचर (खुफिया) लागब। मै.

रेसा-सं., १. केशसन सूक्ष्म वस्तुक अंगक तन्तु। विशे., वर्तन रेसैवाला। मै.

रेसाएब-क्रि., वर्तनक छेद बन्न कराएब। मै.

रेसुआ-विशे., फूटल वर्तन रेसिकय बनाओल काजक जोग। मै.

रेह-सं., रेखा। मै.

रेहल-सं., मोट पुस्तक रखैक काठक बन्हन। फ्रेम। उ. तत्सम

रेहल खेहल-विशे.,पूर्ण परिचय सँ अनुभव कयल। मै.

रेहों रेहों-अव्यय, अत्यन्त मन्द गतियें। मै.

रै

रैअति-सं., अधीनक प्रजा, राजकीय भूमिक जोतैवाला। रैयत। उ. तद्भव

रैंची-सं., गोटसन अत्यन्त मेंही कारी तेलहन। मै.

रैता-सं., देखू—"रतुआ"। मै.

रैनि-सं., राति। मै.

रो

रोआब-सं., नै रोकै योग्य कड़ा आदेश। उ. तत्सम

रोआबी-विशे., कठोर आज्ञा देम'वाला। उ. तत्सम

रोइआँ-सं., रोम, सम्पूर्ण शरीरक सूक्ष्म केश। मै.

रोइआँ डाहब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि आरोप सँ मन मे पीड़ा देब। मै.

रोइउपाड़-सं., रोइआँ उपड़ला सँ बनल घाओ। मै.

रोक-सं., निषेध। नियम सँ मनाही। मै.

रोकटोक-सं., निषेध, मना करैले टोकब। मै.

रोकड़-सं., स्थायी लेखा जोखाक पुस्तक। उ. तत्सम

रोकनिहार-विशे., निषेध कयनिहार। मै.

रोकब-क्रि., मना करब, निषेध करब। मै.

रोकबैया-विशे., रोकैक आज्ञावाला। मै.

रोकाओ-सं., रोकैक प्रक्रिया। मै.

रोकान-सं., रोकैक दृढ़ता। मै.

रोकावट-सं., रुकि जाइक बाधा, अवरोध। घैरन। मै.

रोकुआ-विशे., रोकाओलवाला। मै.

रोग-सं., शरीरक विकलता। सं. तत्सम

रोग व्याधि-सं., प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूपे शरीरक विकलतावाला। मै.

रोगहा-विशे., हरदम रोगी रहैवाला। मै.

रोगाएब-क्रि., रोग सँ ग्रसित होएब। मै.

रोगाह-विशे., रोग धयल। मै.

रोगियाह-विशे., रोगी जकाँ लगैवाला। मै.

रोगी-विशे., रोगयुक्त। सं. तत्सम

रोच-सं., आत्मीयताक प्रभाव। अनुरोध। सम्मान। मै.

रोचक-विशे., पसिन्न पड़ैवाला। सं. तत्सम

रोचनि-सं., प्रिय बनबैक प्रयास। मै.

रोच राखब-क्रि., आत्मीयता आ पैघत्वक द्वारें अविरुद्ध करैक विचार राखब। मै.

रोज-सं., दिन, प्रतिदिन। उ. तत्सम

रोजगार-सं., उद्यम, व्यौसा। हिं तत्सम

रोजहा-विशे., प्रतिदिन बोनि लैवाला जन, श्रमिक। मै.

रोजा-सं., मुसलमानक एक मास धरि दिनभरिक व्रत। अर्ध चान्द्रायण। उ. तत्सम

रोजी-सं., निश्चित जीविका। उ. तत्सम

रोजीरोटी-सं., जीविकाक संग पेट भरैक प्रबन्ध। (लाक्षणिक) एहन जीविका जाहि सँ सुविधा सँ जीवन निर्वाह। मै.

रोट-सं., बहुत मोट आ चाकर रोटी। मै.

रोटी-सं., सामान्य प्रकारक रोटी। फुलकी। मै.

रोटी वाटी-सं.,(लाक्षणिक) भात सँ अतिरिक्त किछु खाकय निर्वाहक स्थिति। मै.

रोड़-विशे., उलबैवाला वस्तु अधिक ताप सँ विशेष कड़ा। मै.

रोड़ा-सं., ईंटा पाथरक छोट छोट टुकड़ी। मै.

रोड़ा अँटकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बीच मे अड़ङ्गा लगाएब। मै.

रोड़ाबाजी-सं., परस्पर रोड़ा चलाकय मारि। मै.

रोड़ाह-विशे., कड़ा आ अप्रिय शब्दें बजैवाला। कटु बोलीवाला। मै.

रोड़ी-सं., अधिक छोट ईंटा पाथरक टुकड़ी। मै.

रोदना पसारब-क्रि., अतीतक दुखे टा बाजब। (लाक्षणिक) लोकक शोक दुख मे बढ़ि चढ़िकय शोक प्रकट करैक नाटक करब। लोक देखाबक कानब। मै.

रोप-सं., रोपैक क्रम। मै.

रोपनि/रोपनी-सं., रोपैक निरन्तर चलैत क्रिया। मै.

रोपनियाँ-विशे., रोपैवाला जन। मै.

रोपब-क्रि., कोनो गाछ वृक्ष आ धान आदिक बीआ कें भूमि मे गाड़ब। मै.

रोपलाहा-विशे., रोपलवाला। मै.

रोपा-सं., रोपैक काज। मै.

रोपाइ-सं., रोपैक चालू क्रिया। मै.

रोपाएब-क्रि., रोपैक काज कराएब। मै.

रोपाओ-विशे., रोपैक योग्य। मै.

रोपाओन-सं., रोपैक बोनि। ढंग। मै.

रोपान-सं., रोपैक विशेषता। मै.

रोपी-सं., रोपैक प्रक्रिया। मै.

रोपुआ-विशे., रोपिकय होम'वाला, रोपिकय भेल फसिल। मै.

रोफ-सं., खूजल स्थानक स्वच्छ रौद बसात। प्रयोग—"जाड़ मास रोफ मे बैसने बड़ सुख।" मै.

रोब-सं., प्रभाव, अटल आज्ञा। उ. तत्सम

रोबकारी-सं., मुहामुही सत्यताक प्रतीति, प्रकाशन। मै.

रोब जमाएब-क्रि., फूसि प्रभाव जमाएब। लोक बुझाबक कठोर शब्दें आज्ञा करब। मै.

रोब झाड़ब-क्रि., बिगड़ि बिगड़िकय आज्ञाक अवहेलना सँ दुर्वाक्य कहब। मै.

रोम-सं., १. रोइआँ। २. निश्चित स्थान सँ जीव जन्तु कें दूर करैक, बैलबैक, हाँकि लबैक काज। मै.

रोमब-क्रि., आन जीवजन्तु कें हँटाएब, भगाएब, रोकब। मै.

रोमश-विशे., अधिक रोइआँवाला। सं. तत्सम

रोर-सं., गर्जन। हल्ला। मै.

रोर मचाएब-क्रि., निरन्तर कोनो एकै बात ल' क' हल्ला करब। मै.

रोरि-सं., अनेरो गरजिकय बजैक प्रकृति। मै.

रोरी-सं., सिन्दूरक एक प्रभेद । कुंकुम । मै.

रोल-सं., गोल आ नाम डाँरि खींचैक डन्टा । मै.

रोलर-सं., सड़क कें चौरस आ सक्कत करैवाला स्वचालित यन्त्र । अं. तत्सम

रोष-सं., तामस । सं. तत्सम

रोषाह-विशे., तुरन्त तामस करैवाला । मै.

रोस-सं., उत्साहक वेग । झोंक । मै.

रोह-सं., स्मृति, सुधि । मै.

रोहानी-सं., छवि आ रूप रंगक नीक प्रगति । मै.

रोहिन/रोहिणी-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तद्भव

रोहिनियाँ-विशे., रोहिणी नक्षत्रवाला तथा नक्षत्र मे होइवाला । मै.

रौ

रौ-अव्यय, अत्यन्त नीच सम्बोधन । मै.

रौटी-सं., देखू—"राउटी" । मै.

रौद-सं., सूर्यक उत्कट प्रकाश । मै.

रौदपक्कू-विशे., रौदक ताप सँ पकैवाला । मै.

रौदबसात-सं., ताप आ वायुक प्रभाव । मै.

रौदमुहाँ-विशे., रौद-सूर्यक तापक सम्मुख जाइ वाला । मै.

रौदाएब-क्रि., रौद सँ व्याकुल होएब । मै.

रौदियाह-विशे., रौदीसन समयवाला । मै.

रौदी-सं., अकाल, अनावृष्टि । मै.

रौनब-क्रि., दौड़ि दौड़ि कय धँङने नाश करब । मै.

ल

लइ-सं., चाउरक चिकस वा मैदा कें पानि मे घोरिकय रान्ह क' क' बनाओल लस्सा । मै.

लक्कड़ लगाएब-क्रि., वैधानिक बाधा उपस्थित करब । मै.

लक्ष्मण-सं., दशरथ पुत्र, रामायणक प्रसिद्ध पात्र । मै.

लक्ष्मी-सं., शोभा सम्पत्ति तथा नारायणक पत्नी शक्ति । मै.

लक्ष्य-विशे., दृष्टि बिन्दुक केन्द्र, निशान । उद्देश्य । सं. तत्सम

लक्ष-संख्या, लाख । सं. तत्सम

लक्षण-सं., चिह्न, परिचयक आधार । सं. तत्सम

लक्खत-अव्यय, निरन्तर । मै.

लकखन-सं., अनुमानक साधन । मै.

लक-सं., १. भाग्य । प्रयोग—"बौआक लक नीक छनि जे एम० ए० मे सर्वप्रथम भेला ।" २. तृष्णा सँ भरल दृष्टि । प्रयोग—"हमरा तीन वर्ष सँ लक लागल छल जे पौत्रीक विवाह कराबी ।" ३. सुतार । मै.

लकठी-सं., पातर आ छोट बाँस । मै.

लकड़पेंचा-सं., (लाक्षणिक) समस्या भरल बाधा । मै.

लकड़बग्घा-सं., लाकड़, भेड़िया बाघ । मै.

लकड़हारा-विशे., लकड़ी (जारनि) बेचैक व्यापार करैवाला । मै.

लकड़ी-सं., काठ । मै.

लकथक-विशे., झोरक अभाव सँ कादोसन बनि गेल । मै.

लकधक-अव्यय, कोनो कालक समीप आगाँ पाछाँ । मै.

लकबा-सं., पक्षाघात महारोग । मै.

लक लक-विशे., लकड़ीक कामिसन (पातर) । मै.

लंक लेब-क्रि., अत्यन्त वेग सँ पड़ाएब । मै.

लंका-सं., एक छोट द्वीपवाला देश । मै.

लकी-विशे., भाग्यशाली । मै.

लकुटी-सं., ठेङा, फराठी । मै.

लखन-सं., लक्ष्मण । मै.

लखपति-विशे., लाख मुद्राक स्वामी । मै.

लखब-क्रि., देखब, लक्षित करब । मै.

लखाएब-क्रि., देखल जाएब । देखाएब । मै.

लखेड़ा-विशे., व्यवस्थाहीन बातवाला । मै.

लखौरिया/लखौरी-सं., पातर आ चाकर प्राचीन कालक ईंटा । लाख शिवक पूजा । मै.

लग्गा-सं., खेत नपैवाला नापवाला पातर बाँसक टुकड़ा । मै.

लग्गी-सं., दूर उपर गाछ आदि सँ फल आदि तोड़ैक हेतु नोकसीवाला पातर बड़का बाँसक दण्ड । मै.

लग्न-सं., राशि (मेष, वृष, आदि) सभक दैनिक उदय । सं. तत्सम

लग-अव्यय, समीप । मै.

लंगट-विशे., निरहट्ट बदमास । मै.

लंगटा-विशे., हेहर निर्लज्ज दुष्टबुद्धि । मै.

लंगटाह-विशे., उद्दण्ड दुष्ट प्रकृतिवाला । मै.

लगता-सं., कोनो व्यवसायक मूल खर्च । मै.

लगता लागब-क्रि., उत्पादन मे खर्च लागब । मै.

लगति-सं., कोनो वस्तु आदि सँ अन्तधरिक व्यय । सम्पूर्ण खर्च । मै.

लगन-सं., विवाह आदि शुभ समय । मै.

लगनी-सं., जाँत चलबैक कालक स्त्रीगणक गीत विशेष । मै.

लगब-क्रि., गै महिंस आदिक दूध देब । मै.

लगबार-विशे., १. स्त्रीक चोरनुक्का प्रेमी । २. लागि पड़ैवाला । मै.

लगबारि-सं., लागि पड़ैक जिद्द । मै.

लगबाही-सं., बराबरि बिना नागावाला काज । मै.

लगभग-अव्यय, करीब, प्रायः अनुमान सँ अनिश्चित संख्या काल आ दूरी मे । मै.

लगम्मी-विशे., लवङ्गक आकारवाला । मै.

लगम-सं., लवङ्ग । सं. तद्भव

लंगर-सं., नाओ अड़बैक मोट लोहक काँटाक गुच्छा । मै.

लंगर झंगर-सं., ओझरौटवाला पसरल सामग्री । मै.

लंगर लागब-क्रि., ओझरौट होएब । मै.

लगले-अव्यय, तुरन्त । मै.

लगले लागल-अव्यय, लगातार, तुरन्ते तुरन्त । मै.

लगहर-सं., शुभ शगुन मनबैक भरल घैल । मै.

लगहरि-विशे., दूध दैवाली गै महींस । मै.

लगहा-विशे., लगवाला । मै.

लगाइ-सं., कोनो वस्तु कें कोनो वस्तुक सम्बन्ध जोड़ैक काज, भाव, वेतन तथा सम्बन्ध । मै.

लगाएब-क्रि., १. सटाएब । २. सम्बन्ध जोड़ब । ३. रोपव । ४. शास्त्रीय पाठक पुनरावृत्ति करब । मै.

लगाओ-सं., अपेक्षा, सम्बन्ध, सम्पर्क । मै.

लगाकय-अव्यय, १. जोड़िकय, सम्पर्क कराकय, सम्बन्ध राखिकय । मै.

लगातार-अव्यय, लक्खता, निरन्तर । मै.

लगान-सं., भूमिक अधिकारी द्वारा देय राजकीय कर । माल गुजारी । मै.

लगानी-सं., लोक कें देल ऋण । मै.

लगाम-सं., घोड़ा कें वश रखैवाला मुहक कड़ी लागल डोरी । मै.

लगारि-सं., वासन मे लागल द्रव पदार्थ । मै.

लगारि राखब-क्रि., सम्पर्क राखब । मै.

लगारी-विशे., कोनो काज मे धैर्य सँ भिड़ल रहनिहार। मै.

लगिचाएब-क्रि., १. लग होएब । २. (लाक्षणिक) मृत्युक अति निकट पहुँचब । मै.

लगीच-विशे., लग मे होइनिहार । मै.

लगुआ-विशे., आश्रय मे रहनिहार, पालनीय । मै.

लगुआ भगुआ-विशे., लाभक आशा पर रहनिहार नौकर चाकर । मै.

लगुजा-विशे., अत्यन्त कोमल, सुकुमार । मै.

लगेज-सं., यात्राक कालक छोट पैघ सामग्रीक समूह । अं. तत्सम

लगेलगे-अव्यय, वीरताक प्रोत्साहन शब्द । मै.

लगेलग-विशे., परस्पर समीप । मै.

लगौरी-विशे., पाछू काल जोड़लवाला । मै.

लघी-सं., लघुशंका । मूत्रण । मूत । मै.

लघु-विशे., हल्लुक, शीघ्र । सं. तत्सम

लघुशंका-सं., मूतैक इच्छा वेग । सं. तत्सम

लंघन-सं., नाँघब, उपवास । सं. तत्सम

लङ्ङूर-सं., बड़का नाङरिवाला वानर । मै.

ल'ङ-सं., लवङ्ग, पानक मसाला विशेष । मै.

लङौट/लङौटा-सं., केवल गुप्तांग कें कसिकय झँपैवाला वस्त्र । मै.

लङौटिया-विशे., (लाक्षणिक) धरिया अर्थात् विष्ठी पहिरैक वयसक नेन्ना अवस्थावाला संगी । मै.

लच्छ-सं., लक्ष्य । उद्देश्य । सं. तद्भव

लच्छन-सं., तर्क करैक आधार, लक्षण। सं. तद्भव

लच्छा-सं., ताग सँ डोरी आदि वस्तुक पैघ भींरी । मै.

लच्छी-सं., लच्छाक अत्यन्त छोट रूप । मै.

लचक-सं., दबला आ दबेला सँ बंक होइक आ कम्पन होइक गुण । दोलन । मै.

लचकब-क्रि., दबि दबिकय कम्पनक संग डोलब । मै.

लचकलहा-विशे., डोलिकय दबलवाला । मै.

लचका-सं., बाँसक टोना आ बाती सँ बनल दबिकय डोलैवाला प्रवाहक पूल । मै.

लचकाएब-क्रि., बल सँ टेढ़ कय डोलाएब, कँपाएब । मै.

लचब-क्रि., दबि दबिकय डोलब । मै.

लचर-सं., शरीर आ अर्थसंकट सँ असमर्थता । मै.

लचरब-क्रि., शरीर आ अर्थसंकट सँ असमर्थ होएब । मै.

लचलच-विशे., दबि दबिकय कँपैवाला आ डोलैवाला । मै.

लचलचाएब-क्रि., दबि दबिकय उपर नीचाँ कँपैक क्रम होएब । मै.

लचलची-सं., उपर नीचाँ दबि दबिकय कँपैक क्रम । मै.

लज्जति-सं., शक्ति, आन्तरिक सार भाग । उ. तद्भव

लज्जा-सं., लाज । सं. तत्सम

लज्जालु-विशे., अधिक लाजवाला । मै.

लज्झा-सं., गै महिंसिक रजोधर्म । गर्भधारण करैसँ पूर्व योनि सँ गाढ़ रूपक बहराइवाला द्रव । मै.

लजकोटर-विशे., अनेर लोकक सोझाँ जाइ मे संकोच कयनिहार । स्त्री० लजकोटरि । मै.

लजबीजी-सं., लाजबन्ती जंगली बूटी । मै.

लजमुह-विशे., लोकक सोझाँ बजै मे लजाइवाला । स्त्री० लजमुहि । मै.

लजाएब-क्रि., उचित सँ वेशी लाज करब । मै.

लजीला-विशे., अधिक लाज सँ व्यवहार करैवाला । हरदम लजाएल रहैवाला । मै.

लजौआ-विशे., लोक मे लज्जा उत्पन्न करैवाला । मै.

लट्टू-सं., घिरनी जकाँ नचैवाला गोल खेलौना । मै.

लट्ठ-सं., मोट आ बड़का लाठी । मै.

लट्ठा-विशे., अत्यन्त कठोर कय सानल । मै.

लट्ठो-विशे., स्नेहातुर, प्रेम विह्वल । मै.

लट-सं., केशक गुच्छा । केश गुच्छक एक अंश । मै.

लटकन-सं., लटक'बैक साधन । मै.

लटकब-क्रि., उपरक आधार पर टिकिकय भूमि दिश (नीचाँ) निराधार रहि झूलब । मै.

लटकलहा-विशे., उपर मे स्थिर रहि नीचाँ दिश नमरि क' झूलैवाला । मै.

लटका-विशे., माँगी सब सँ हास विनोद मे लिप्त रहैवाला । एकर उनटा लटकी । मै.

लटकाएब-क्रि., उपरक आधार पर नीचाँ शून्य मे नमरल राखब । मै.

लटकेना-विशे., लटकाकय ल' जाइवाला अनेक वस्तु । अनेक विभिन्न वस्तुवाला । मै.

लटखुट-सं., अनेक प्रकारक छिड़ियाएल वस्तुक समूह । मै.

लटपट-विशे., एक दोसर मे ओझराएल । मै.

लटपट करब-क्रि., परस्पर गुत्थम गुत्थाकय खेल करब । मै.

लटपटाएब-क्रि., ओझरौट मे पड़िकय हीन स्थिति मे चल जाएब । (लाक्षणिक) मृत्युशय्या पर रहब । ओझराएब । मै.

लटपटाह-विशे., १. ओझरौट भरल । २ अबढंग । मै.

लटपटिया-विशे., ओझराकय रखैवाला । अशुद्ध आचरणवाला । झमेलिया । मै.

लटपटी-सं., ओझरौट । झमेल । मै.

लटपटी लागब-क्रि., ओझराएल स्थिति सँ प्रगति मे बाधा पड़ब । मै.

लटब-क्रि., दुबराकय पातर होएब । मै.

लटबा-सं., चरखा आदिक सूत कें लपेटैवाला डन्टा लागल पैघ चक्र । मै.

लटबा पटबा होएब-क्रि.,१. दू नेन्ना मिलिकय खेलाएब । २. दुलरपनी सँ अधिक अगराएब । ३. लाभ सँ खुशामदक लेल अधिक नम्र भ' जाएब । मै.

लटबौरा-विशे., दुलारू, अधिक जिद्द सँ अनर्गल क' बैसैवाला । मै.

लटरपटर-विशे., अस्पष्ट बात । मै.

लटलट करब-क्रि., कोनो काज मे बिन कहनै आगू आगू करब । मै.

लटलहा-विशे., दुर्बलता सँ खिन्नवाला । मै.

लट लागब-क्रि., आगू पाछूक विषय कें परस्पर मेल खाएब । मै.

लटाइँ-सं., गुड्डीक ताग लपेटैवाला डन्टा लागल घिरनी । मै.

लटाएब-क्रि., १. घुमा घुमाकय गुन देब। २. लटाँ मे घुमा घुमाकय गुड्डीक ताग समेटब। मै.

लटापटी-सं., खेलक कारणें वा झगड़ाक द्वारें परस्परक गुत्थम गुत्था। मै.

लटारहम-सं., प्रणय, आवेश (दुलार) आ बड़प्पनक द्वारें उत्पन्न आग्रह। मै.

लटितौं बुड़ितौं-अव्यय, दयनीयो स्थिति मे। मै.

लटुआ-सं., देखू—"लटाई"। मै.

लटुआएब-क्रि., भूख अथवा रोगक आवल्य सँ अक्षम भ' क' उत्साहहीन होएब। मै.

लठगर-विशे., कड़ा क' क' सानल। मै.

लठगरहा-विशे., कड़ा क' क' सानलवाला। मै.

लठिधर-विशे., सतत हाथ मे लाठी रखैत मारि करैक दाबी करैवाला। मै.

लठियाएब-क्रि., लाठी सँ खूब मारब। मै.

लठियाहा-विशे., सदिखन लाठी चलबैले वृत्त रहैवाला। मै.

लठैत-विशे., लाठी चलबै मे नामी। मै.

लड्डू-सं., मधुर विशेष। मै.

लड़क्का-विशे., लड़ैक प्रकृतिवाला। मै.

लड़क भुरभुरी-सं., थोड़ वयसक लोकक अदूरदर्शी विचार। मै.

लड़झगड़-सं., लातें मुक्कें बातें मारि। मै.

लड़ना-विशे., अधिक झगड़ा करैवाला। मै.

लड़ब-क्रि., युद्ध करब, झगड़ा करब। मै.

लड़बैया-विशे., दू व्यक्तिक बीच झगड़ा लड़ाइ करौनिहार। मै.

लड़ाइ-सं., युद्ध, झगड़ा, परस्पर मारि। मै.

लड़ाएब-क्रि., दू मे झगड़ा कराएब। मै.

लड़ाकू-विशे., युद्ध मे वीर। मै.

लड़ान-सं., लड़ैक चलैवाला क्रम। मै.

लड़िकिनी-विशे., (ग्राम्य) विवाहक योग्य कन्या। मै.

लड़िकौरी-विशे., नव छोट बच्चावाली। चिलकारु। मै.

लड़ुआ-सं., लड्डू जकाँ बनाओल भूजल अन्नक लड्डू। (गुड़ मे पागल)। मै.

लड़ुब्बा-विशे., लड्डूसन गोल पैघ आम। छोट लड़ुब्बी। मै.

ल'ड्डू-सं., (ग्राम्य) लड्डू। मै.

लण्ठ-विशे., अविवेकी, उद्दण्ड, अशिष्ट। मै.

लण्ड-सं., युवा पुरुषक लिङ्ग। मै.

लत्ता-सं., पुरान कपड़ाक खण्ड। मै.

लत्ती-सं., पसरैत लता। मै.

लत-विशे., १. भारी होइक द्वारें दोसर पलड़ाक अपेक्षया झुकल पहिल पलड़ा। २. अवनत, विनम्र। मै.

लतखुर्दनि-सं., बारम्बार लात सँ अधिक खूनब। मै.

लतखोर-विशे., लातक मारि खाइक अभ्यासवाला। मै.

लतखोरा-विशे., लात पोछैक साधन। मै.

लतपोछना-सं., पैर पोछैक वस्त्र। मै.

लतबाहि-सं., अधिक लात चलबैक काज। मै.

लतमर्दनि-सं., लात सँ मलैक क्रम। मै.

लतमारा-सं., करीनक माथी मे बढ़ल लात मारि कय डुबबैवाला अङ्ग। मै.

लतर-सं., लत्ती। मै.

लतरब-क्रि., लताक चारू दिश पसरब। मै.

लत होएब-क्रि., १. नीचाँ झुकब। २. (लाक्षणिक) विनयी बनब। मै.

लता-सं., लत्ती। सं. तत्सम

लताम-सं., फल विशेष। अमरूद। सदिआम। मै.

लति-सं., स्वभावगत अभ्यास, चालि। व्यसन। मै.

लतियाएब-क्रि., लात सँ मारब। मै.

लतियाहा-विशे., लगले लातें सँ मारैक प्रकृतिवाला। मै.

लतैं पतैं-अव्यय, लगले अलक्षित रूपें। मै.

लथपथ-विशे., गाढ़ द्रव पदार्थ से लेपल। मै.

लथराह-विशे., लथार (पछिला पैर) पाछू दिश फेंकि आघात करैवाला माल। मै.

लथार-सं., मालजालक पछिला पैर सँ पाछू दिश आघात। मै.

लथारब-क्रि., १. लथार फेंकि मारब २. (लाक्षणिक) चतुरता सँ अचानक बौद्धिक चोट करब। मै.

लदगर-विशे., अधिक भार (बोझा) भरल। मै.

लदना-विशे., १. चढ़ल वा चढ़ाओल भारवाला। २. लदैक भर्ती करैक साधन। ३. लदैवाला। मै.

लदनियाँ/लदनी-विशे., लाद (बोझा) उगहैवाला पशु। मै.

लदफद-विशे., देह परक एगड़ बेगड़ भेल फलकल वस्त्र। मै.

लदफदाएब-क्रि., वस्त्रक बेसम्हार भ' क' ससरब। मै.

लदबद-विशे., पूर्ण समयक गर्भवाली। मै.

लदबदाएब-क्रि., पूर्ण गर्भक निकट मे प्रसव होइक संभावना होएब। मै.

लदबैया-विशे., बाहन पर बोझाक ढोलाइ करबै वाला। मै.

लदरफदर-विशे., ससरिकय चारू दिश फलकल। मै.

लदलद-विशे., बहराइक हेतु वेगवाला गर्भ वा मल। मै.

लदलदाएब-क्रि., भीतर सँ बहराइले अधिक वेग होएब। मै.

लदलदी-सं., मल निष्कासनक बारम्बार अधिक वेग। मै.

लदहा-सं., हर लधैक (ठाढ़ करैक) सामग्री। डोरी। मै.

लदाइ-सं., उगहैक लेल वस्तुक बोझाइ। मै.

लदाएब-क्रि., वाहन पर बोझा रखाएब। मै.

लदालद-विशे., चढ़ाओल भार (बोझा) सँ अधिक भरल। मै.

लदुआ-विशे., सिवित बोझा उगहैवाला वाहन। मै.

लदेना-सं., करीनक छीप (बड़का बाँस) क पछिला छोर (जड़ि) पर दैवाला भार। मै.

लदैया-सं., बोझाइ करैक क्रम। मै.

लधहा-सं., करीन लधैक (ठाढ़ करैक) अनेक सामग्री। मै.

लन्द फन्द-सं., निरर्थक समस्या (झंझट) आ ओझ-रौटवाला अनेक विषय। मै.

लप्पर-सं., गाल परक थापड़। मै.

लप्पा-विशे., हल्लुक तुरन्त बिलाइवाला आ थोड़ उपजैवाला अन्न। मै.

लप-सं., पसारल एक हाथ भरिक परिमाण। मै.

लपकन-सं., शीघ्र चालि। गतिक वेग। प्रयोग—"एके लपकन मे तँ अहाँ पहुँचि जाएब।" मै.

लपकब-क्रि., अलक्षित रूपें वेग सँ ल' लेब। पकड़ि लेब, धरब। मै.

लपका-विशे., तेजी सँ झपटिलैक प्रकृतिवाला। मै.

लपकाएब-क्रि., अलक्षित रूपें तेजी सँ उपरें उपर पकड़ाएब। मै.

लपकान-सं., तेजी सँ गमन। वेग सँ पकड़ा देबाक क्रम। मै.

लपटघोंघी-विशे., (अनादर मे) मूर्खता सँ सटले रहैवाला। मै.

लपटन-सं., पहलमानीक अभ्यास। प्रयोग—"घोषन्त विद्या लपटन्त जोर।" मै.

लपटब-क्रि., १. स्नेह सँ दोसरक देह मे सटिकय लागि जाएब। २. पहलमानीक अभ्यास करब। ३. झगड़ा एवं आश्रयक कारणें देह सँ देह बान्हि लेब। मै.

लपटा लपटी-सं., परस्पर पकड़ि पछारैक प्रयास। मै.

ल' पड़ौआ-विशे., वेदियैं पर सँ बियाहिकय कनियाँ ल' पड़ाइक नियमवाला विवाह। मै.

लप द'-अव्यय, अचानक तेजी सँ। मै.

लपलप-अव्यय, हाथ आ मुहक व्यापार मे शीघ्र। मै.

लपलप करब-क्रि., तेजी सँ बहार भीतर होइत रहब। उत्तेजना सँ पकड़ैक क्रम होएब। मै.

लपलपाएब-क्रि., जोर जोर सँ उपर मुहें उठैत रहब। मै.

लपसी-सं., अत्यन्त गील वस्तु (भात आदि)। मै.

लपाइक-विशे., अवसर पवितैं ल' उड़ैवाला व्यक्ति। मै.

लपाक द'-अव्यय, अचक्कैं अलक्षित रूपें। मै.

लपालप-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ। मै.

लपौड़ी-सं., मिथ्या बड़ाइक अधिकता। मै.

लफङ्गा-विशे., निर्लज्जता सँ फूसि बजनिहार। मै.

लफन्दर-विशे., वचन आ क्रिया मे मेल नै रख-निहार। मै.

लफरा-विशे., फूसिये टा बजनिहार। मै.

लफाँणि-विशे., अवसर पर बहुत बजनिहार आ किछु नहि कयनिहार। मै.

लफुआ-विशे., फूसि कहिकय लोक के भटकौनिहार। मै.

लब्बर-विशे., विश्वास नै करै जोकर फूसि बात बजनिहार। मै.

लबगर-विशे., अधिक उपजवाला निचरस खेत। मै.

लवङ्ग-सं., लगम, लङ। सं. तत्सम

लबङ्गलता-सं., लवङ्गसन फूलवाली लता। मै.

लबज-सं., शब्द, लब्ज। उ. तद्भव

लबझब-क्रि., पानि मे डूबैक स्थिति मे रहनिहार। मै.

लबनी-सं., पासी सभक ताड़ी रखैक छोट माटिक वासन। मै.

लबब-क्रि., नीचाँ झुकब। मै.

लबलाहा-विशे., नीचाँ झुकलवाला। मै.

लबर लबर-अव्यय, बिन सोचनै विचारनै झट द' नुकबैयोवाला बातक उच्चारण कय। मै.

लबरसटका-विशे. केवल हँ मे हँ मिलाकय वचनक अनुसार करै मे ठकि देनिहार, सटकैवाला। मै.

लबरा-विशे., केवल हँ मे हँ मिलाकय किछु नै कयनिहार। फूसि अपन बड़ाइ कयनिहार। मै.

लबलब करब-क्रि., बिन सोचनै आगँ आगाँ झटदय बाजि उठब। मै.

लबलबाएब-क्रि., बहार कय कें कँपाएब। प्रयोग—"की हरदम जीह लबलबबै छी?" मै.

लबलबी-सं., कण्ठक द्वार पर बढ़ल मांसक नमरल दोलक छड़ अङ्ग। मै.

लबाएब-क्रि., झुकाएब, टेढ़ करब। मै.

लबाठी-सं., भूजल धानक लाबा मे कनेक फूटल धानक समूह। मै.

लबान-सं., १. झुकैक क्रम। २. (ग्राम्य उच्चारण) नवान्न। मै.

लबेजान-विशे., मरणासन्न। मै.

लभगर-विशे., लाभ करैक योग्य। मै.

लम्ब-विशे., नीचाँ सँ उपरवाली रेखा। सं. तत्सम

लम्बसम्ब-विशे., सन्तोषजनक। नै पुष्ट तँ साधारण। मै.

लम्बा-विशे., अधिक नाम शरीरवाला। मै.

लमका-विशे., लम्बावाला। मै.

लमगर-विशे., नम्मासन लगैवाला। मै.

लय-सं., १. संगीतक स्वर (सूर) गति, भास। २. अन्तर्भाव। ३. कल्पान्त (प्रलय)। सं. तत्सम

लयगर-विशे., नीक भासवाला। मै.

लयलय करब-क्रि., स्नेह सँ अधिक उत्कण्ठित होएब। मै.

लरकब-क्रि., नीचाँ लमरिकय झूलब। मै.

लरकलहा-विशे., नीचाँ नमरिकय लटकलहा। मै.

लरकाएब-क्रि., नीचाँ नमराकय लटकाएब। मै.

लरकाह-विशे., नीचाँ नमरिकय लटकैवाला। मै.

लरखराएब-क्रि., अधलाह स्थिति मे पड़ि जाएब। मै.

लरगुज-विशे., कोमलता एवं भीतरी कड़ापन नहि रहैक द्वारें अत्यन्त ढील। मै.

लरजब-क्रि., अवस्था गुने शिथिल भ' जाएब। मै.

लरताङर-विशे., दुर्बलता सँ अत्यन्त असमर्थ। मै.

लरब-क्रि., बच्चाक प्रथम प्रथम डेग उठाकय चलब। मै.

लरबर-विशे., जड़ि सँ अत्यन्त हिलैवाला। मै.

लरबराएब-क्रि., जड़ि मूल सँ हिलैत रहब। मै.

लरम-विशे., (ग्राम्य) नरम। मै.

ल' री-सं., तागक लच्छी (ग्राम्य) नरी। मै.

लरेलरे-अव्यय, शिशुक पहिल डेग हनैक काल प्रोत्साहनक शब्द। प्रयोग-"चल रे बौआ लरेलरे।" मै.

लरौना-विशे., छोट बच्चा कें चलब सिखबैवाला तीन पहियावाला गाड़ी। मै.

लल-विशे., अभावक द्वारें अभिलषित वस्तुक लाभ नहि भेने विकल। मै.

ललक-सं., प्राप्त करैक अत्यन्त उत्कण्ठा। मै.

ललकन-सं., क्रोधक द्वारें जोर जोर सँ गर्जन। मै.

ललकब-क्रि., तामसें जोर जोर सँ गरजि कय खिसियाएब। मै.

ललका-विशे., लाल रंगवाला। मै.

ललकार-सं., अत्यन्त तामस सँ जोर सँ डपटान। मै.

ललकारब-क्रि., अत्यन्त क्रोध सँ उच्च स्वरें डपटब। मै.
ललकारा देब-क्रि., प्रोत्साहन करब, जोश भरब। मै.
ललकाललकी-सं., क्रोध सँ एक दोसरा पर गरजि गरजिकय उत्तर प्रत्युत्तर। मै.
ललबौआ-विशे., नेन्नै सँ अत्यन्त दुलारू। मै.
ललगर-विशे., लाल रंग सँ भरल। मै.
ललचब-क्रि., कोनो वस्तु पर लोभ करब। मै.
ललचाएब-क्रि., लोभ बढाएब। मै.
ललछब-क्रि., भिन्न भिन्न वस्तुक इच्छा प्रकट करब। मै.
ललना-सं., मौगी। मै.
ललाइ-सं., लाली, लाल छवि, कान्ति। मै.
ललाएब-क्रि., १. कोनो वस्तुक हेतु विकल होएब। २. लाल रंग होएब। मै.
ललाओन-सं., थोड़ लालसन रंग। मै.
ललाट-सं., कपाड़। सं. तत्सम
ललाम-विशे., सुन्दरता मे आ गुण मे सर्वश्रेष्ठ। सं. तत्सम
ललाह-विशे., लालसन लगैवाला। मै.
ललिआएब-क्रि., लालसन होएब। मै.
ललिछौन-विशे., लालसन लगैवाला। मै.
ललित-विशे., सुन्दर। सं. तत्सम
ललितगर-विशे., अधिक सुन्दर। रोचक। मै.
लली-विशे., अति दुलारू स्त्री नेन्ना। मै.
लष्ठम फष्ठम-सं., अधिक आत्मीयता (मैत्री) क संग लागि। मै.
लस्सम-विशे., (खेतक विषय मे) अधिक गील रहैक द्वारें जोतै मे अयोग्य। मै.
लस्सा-सं., सटैवाला, लागि पकड़ैवाला रस। मै.
लस्सी-सं., दही मथिकय बनाओल सरबत। मै.
लसकन-सं., अड़ि जयबाक हेतु बाधा। रोक। मै.
लसकब-क्रि., ओझरौट सँ अटकि जाएब। रुकि जाएब। मै.
लसकलहा-विशे., विशेष कारणें अड़िकय अँटकि जाइवाला। रुकलाहा। मै.
लसकाएब-क्रि., अड़ङ्ङा लगाकय अटकाएब। रोकब। मै.
लसका लागब-क्रि., अँटकि जाइक, रुकैक स्थिति भ' जाएब। मै.
लसकि जाएब-क्रि., अड़िकय अँटकि जाएब। रुकि जाएब। मै.
लसकी-सं., अँटकि जाइक कारण। रुकैक स्थिति। मै.
लसकौआ-विशे., लसका रखैवाला। रोकनिहार। मै.
लसफस-विशे., लस्सासन हाथ मे बूझि पड़ैवाला। लस्सासन गाढ़ रसवाला। मै.
लसफसाह-विशे., लस्सा जकाँ गाढ़ द्रववाला। मै.
लसरघंटी-सं., कोनो काज मे विलम्ब होइक कारण। मै.
लसरफसर-विशे., देखू–"लसफस"। मै.
लसराहटि-सं., झट होइवाला काज मे व्यर्थ विलम्ब। मै.
लसरि-सं., सरलतौ सँ होइवाला काजक विलम्ब सँ आनो काजक बाधा। मै.
लसलस-विशे., लस्सा जकाँ कनेक सटैवाला। मै.
लसलसाह-विशे., लस्सा जकाँ कनेक सटैक गुण वाला। मै.
लसलसाएब-क्रि., लस्सा जकाँ बनि जाएब। मै.
लसाइङ लागब-क्रि., कोनो कारणें बनल काज कें दूर चल जाएब। समय लागब। मै.
लसि-सं., सम्पर्क, मेल, संश्लेष, परस्पर मिलि जाइक गुण। लागि। मै.
लसिगर-विशे., सट्टल रहैक गुणवाला। लागि रखैवाला। मै.
लसियाएब-क्रि., लस्सा जकाँ बनि जाएब। मै.
लसुन-सं., खाद्यक कन्दवाला मसाला। मै.
लसुनियाँ-विशे., १. लसुन सँ बनल। २. लसुनसन होइवाला। मै.
लसेढ लागब-क्रि., अधिक सम्पर्क सँ दोसरक रोग आ गुण आदि वस्तुक प्रभाव पड़ब। संक्रमण। मै.
लहक-सं., हठात् उठल धधरा। मै.
लहकन-सं., हठात् धधरा फेंकैक गुण। मै.
लहकब-क्रि., आगि पजरि कय धधरा फेंकब। मै.
लहका-सं., बिन तरेरावाला उठाकय हिलबैत खेलाइ वाला बन्सी। मै.

लहकी-सं., १. लाभक अवसर । २. आगिक धधराक वेग । ३. अकस्मात् उठल दीपक तेज रासि । मै.

लहङा-सं., नूआक तर मे स्त्रीगणक पहिरैवाला टुकड़ा । मै.

लहछी लागब-क्रि., कोनो काज मे अचानक बेर बेर बाधा पड़ि जाएब । मै.

लहछू करब-क्रि., पुर्नविवाह (सम्बन्ध) करै काल वर बधूक नहक लहू पान मे द' वर बधूक परस्पर खोआएब । मै.

लहटगर-विशे., १. लाभ करै जोग । २. सुन्दर । ३. लाभप्रद । मै.

लहटन-सं., छोट मोट सरीसृप विशेष । मै.

लहटा-सं., चिड़िया फँसबैक सक्कत लस्सावाला कमचीक फन्दा । मै.

लहठा-सं., चिड़ै विशेष । मै.

लहठी-सं., लाहक बनाओल हाथक चूड़ी । मै.

लहना-सं.,लोक कें ऋण रूपें देल लगानी । लहाना । उ. तद्भव

लहब-क्रि., १. अवसरक सदुपयोग होएब । २. झुकब । मै.

लहरब-क्रि., क्षीण आगिक पजरिकय तेज होएब । गरम पीड़ाक वेग होएब । मै.

लहराएब-क्रि., आगि कें उत्तेजित करब । मै.

लहरा-सं., इनारक चारू दिश ऊँच क' बान्हल गोल पक्काक चबूतरा । मै.

लहरि-सं., १. धाह उठैत पीड़ाक वेग । २. तरंग । मै.

लहरि फूँकब-क्रि., (लाक्षणिक) दबाओल क्रोधक सम्पूर्ण देह मे गरम गति होएब । मै.

लहरी-सं., १. उपार्जन तथा लाभ करैक समय । २. तरंग । मै.

लहरीनोचा-सं., फसिल काटिकय बोनिक संचय करैक अवसर । मै.

लहलह-विशे., कम्पन आ गति भरल । तेज संचारशील । मै.

लहलह करब-क्रि., उत्तेजना सँ तेज संचारशील होएब । मै.

लहलहाएब-क्रि., खेती आदि तथा गाछ वृक्षक बाढ़िक संग सुखद रूप होएब । मै.

लहसन-सं., शरीर मे कत्तौ नाम आ चाकर जन्मजात कारी चिह्न । मै.

लहाएब-क्रि., बीच मे नीचाँ धँसाएब । मै.

लहाठब-क्रि., लाह बैसाकय बन्न करब आ जोड़ब । मै.

लहान-विशे., एक दिश नीचाँ झुकल । मै.

लहालोट देब-क्रि., कष्ट आ पीड़ा सँ अक्षम होएब । मै.

लहास-सं., १. मृतक शरीर, शव, लाश । २. अधिक उठल धधरा आ दीपक रासि । उ. तद्भव/मै.

लहास उटब-क्रि., धधरा फेंकब । मै.

लहलही-सं., तेजी तथा प्रसन्नता आ चलती । मै.

लहू-सं., शोणित । मै.

लहू लुहान-विशे., शोणित सँ नहाएल सन । मै.

लहेरि-विशे., लाहक व्यवसाय करैवाला । मै.

लहेरिया बान्हू-विशे., स्थान स्थान पर बान्हिकय अनेक रंग सँ हिलकोर जकाँ रंगल शाड़ी वा कपड़ा । लहरि जकाँ रंगल । मै.

ला

लाइ-सं., चूरा तथा मुरहीक गुड़ मे बनाओल लड्डू । मै.

लाइलपटाइ-सं., घुरची पेनीवाला गप्प । मै.

लाएब-क्रि., आनब । मै.

लाओब-क्रि., परोवर्तीक निर्देश मे आनब । मै.

लाकर-सं., भेड़िया, लकड़बग्घा । मै.

लाख-संख्या, एक सै हजारवाला अंक । मै.

लाखनि-सं., अनेक लाखक संख्या । (लाक्षणिक) अनगनित । मै.

लाखपति-विशे., लाख मुद्रावाला धनक स्वामी । मै.

लाखराज-विशे., लगानरहित भूमि, नाखराज । उ. तद्भव

लागति-सं., उत्पादन मे लगैवाला खर्च । मै.

लागन-सं., जोतैक काल हाथ सँ पकड़ैवाला हरक अंग । मै.

लागब-क्रि., १. संयुक्त होएब । २. व्यय होएब । ३. सम्बन्ध होएब । नियुक्त रहब । मै.

लागल-विशे., सम्बद्ध भेल । मै.
लागल लागल-अव्यय, धीरें धीरें (लक्षदिश) बढ़ैत । मै.
लागि-सं., १. जाँत चलबै मे सहायता । २. कोनो प्रकारक आसक्ति । (प्रणय सँ वा स्नेह सँ वा अर्थक लोभ आदि सँ) ३. सम्पर्क । ४. सम्बन्ध । मै.
लागू-सं., कोनो विशेष नियमक चरितार्थताक स्थिति । मै.
लांघ-सं., नंघैक, चढ़ैक चेष्टा । मै.
लांघब-क्रि., पार करब, चढ़ब, टपब । मै.
लाङड़-विशे., अवाह टाङक द्वारे विकृत रूपें चल-निहार । खञ्च । स्त्री० लाङड़ि । मै.
लाज-सं., लज्जा । मै.
लाजधाख-सं., लज्जाशीलता । मै.
लाज सँ कठौत होएब-क्रि., लाजक द्वारें अत्यन्त सिकुड़ि जाएब । मै.
लाज लगाएब-क्रि., लोकक बीच दोष स्वीकार कराकय लज्जित करब । मै.
लाट-सं., १. कोनो रूपें आवाजाहीक सम्पर्क । २. प्रदेशक सर्वोच्च अधिकारी । मै.
लाठालाठी-सं., दुहू पक्षक लाठी सँ मारि । मै.
लाठा लठौअलि-सं., लाठी सुररि कय मारि करैक स्थिति । मै.
लाठी-सं., मारैवाला दण्ड । मै.
लाड़-सं., लाड़ैक फेरैक अर्थात् एम्हर ओम्हर उनट'-वैक क्रम, पसारैक काज । मै.
लाड़चार-सं., अन्न आदि कें सुखाइक लेल उपर नीचाँ कय एम्हर ओम्हर उनटाएब । मै.
लाड़ना-सं., कोनो वस्तु कें चलबैक लेल साधन । मै.
लाड़नि-सं., कोनो वस्तु कें खापड़ि मे चलबैक सक्कत मोटगर काठीक समूह । मै.
लाड़नी-विशे., कोनो बात कें एम्हर सँ ओम्हर पसारैवाली स्त्री । मै.
लाड़ब-क्रि., १. अन्न आदि पसारिकय पथार पर चलाएब । २. वस्त्र कें सुखाइक हेतु पसारब । ३. भेद (रहस्य) क बात कें कतौ सँ कतौ खोलब । मै.
लाड़ू-सं., लड्डू, लाइ । मै.
लाढ़-सं., प्रार्थनापूर्वक हठ । मै.
लाढ़ि-सं., पोखरि मे जल पर पसरि कय छारि दै वाला जंगल । मै.
लाढ़ि मारब-क्रि., (लाक्षणिक) वस्तु विशेष हेतु अति दीनता देखाएब । मै.
लात-सं., पैरक सर्वाङ्ग । मै.
लातक देवता-विशे., (लाक्षणिक) दुर्जन, मारि खाइ वाला । मै.
लात मारब-क्रि., दूध नै देबाक इच्छा सँ महिसिक दुहै काल लात फेंकब । मै.
लाथ-सं., छल, बहाना । मै.
लाद-सं., बोझा, उपर चढ़ाओल भार । मै.
लादनि-सं., बोझाइक काज । बोझाइ । मै.
लादब-क्रि., बोझाइ करब, भार उपर चढ़ाएब । मै.
लाधब-क्रि., अधिक दिन मे सम्पन्न होइवाला काजक आरम्भ करब । चालू करब । मै.
लाफुसाग-सं., लसफस करैवाला साग विशेष । मै.
लाबन-सं., डिबिया (दीप) रखैक ऊँच वासन । मै.
लाबा-सं., १. धान आदि वस्तु कें भुजला सँ फूटल फूलल गुद्दा । २. ज्वालामुखी सँ उड़ल पघिलल पाथरक कण । मै.
लाभ-सं., उत्पादन सँ प्राप्ति । फायदा । मै.
लाभर जीभर-विशे., (भोजनक प्रसंग) अरुचि सँ कने मने मुह मे लेल । मै.
लाम--विशे., नम्मा । मै.
लामा-विशे., बौद्ध धर्मक महात्मा । मै.
लार-सं., १. नार । २. सम्पर्क । ३. मुह सँ नमरल नेर । मुहँक रस । मै.
लारुवातू-विशे., आबल सँ शक्तिहीन होइक कारणें शिथिल शरीरवाला । चेतना क्षीण सँ असमर्थ । मै.
लाल-सं., लाल रंग । विशे., लाल रंग सँ रंगल । मै.
लालकी-सं., पालकी । मै.
लालच-सं., देखैत मात्र उपजल तृष्णा, लोभ । मै.
लालची-विशे., कोनो वस्तु पर तृष्णा सँ दृष्टि गड़ौ-निहार । मै.
लालटुहटुह-विशे., भीतर सँ लालीक द्वारें डग डग करैवाला लाल । मै.

लालटेम-सं., बसात सँ सुरक्षित यन्त्र मे बान्हल रासिवाला दीप। मै.

लालटेस-विशे., अत्यन्त लाल। मै.

लालन पालन-सं., स्नेह सँ भरण पोषण। मै.

लाल बुझक्कड़-विशे., अगरजानी, जनैक दाबी वाला। मै.

लालबुन्द/लालभुजुङ-विशे., अधिक लाल। मै.

लालशर-सं., १. पक्षी विशेष। २. धानक प्रभेद। मै.

लालसिमरिफ-विशे., सिमरिफसन लाल। मै.

लाला-विशे., कायस्थ। देशज

लाला छोछी-सं., अभाव सँ वस्तुक हेतु मन वचनक व्यग्रता। मै.

लाली-सं., लाल रंगक आभा। मै.

लाश-सं., मुर्दा। उ. तत्सम

लास-सं., लास्य, नाच। सं. तद्भव

लाह-सं., लाक्षा, द्रवणशील पदार्थ। मै.

लाहट-सं., लाह सँ (चपरा) कोनो वस्तुक मुहक बन्दी। लाहक चपड़ा पर मोहरबन्दी। मै.

लाह पटबा होएब-क्रि., अन्न जलक अर्थात् कनेकै मे अन्नक बिना जीव तथा जलक बिना जजाति-गाछ वृक्षक तुरन्त लटुआ जाएब। (लाक्षणिक) निराशा सँ अत्यन्त शक्तिहीन भ' जाएब। मै.

लाहब-क्रि., लाह पघिलाकय जोड़ब। छेद बन्न करब। मै.

लाही-सं., लाहसन मल छोड़ैवाला कीड़ा, जजातिक रोग। मै.

लाही लागब-क्रि., लाही सँ जजाति (फसिल) क रोगग्रस्त होएब। मै.

लाहेब करब-क्रि., दूरि नै करै जोग वस्तुक अप्रत्याशित नाश करब। उ. तद्भव

लि

लिखना-सं., प्रतिदिन लिखैक अभ्यास। मै.

लिखनि-सं., भित्ति चित्र। देहरि धुरखुर आदि मे हाथक लिखल चित्र। मै.

लिखब-क्रि., विभिन्न रंगक मोसि सँ वर्ण आ रेखा वा चित्र हाथ सँ निखारब। मै.

लिखा-सं., चिट्ठी। प्रयोग—"कुशल छेम लिखा सँ जानब।" मै.

लिखाएब-क्रि., दोसरा सँ लिखैक क्रिया कराएब। मै.

लिखापढ़ी-सं., प्रामाणिक लेख। मै.

लिखिया-सं., १. अत्यन्त छोट आ मेहीं बन्सी। २. चित्र (भित्ति चित्र) बनबैक कार्यक्रम। मै.

लिखुआ-विशे., हाथक लिखल अक्षरवाला तथा हाथक निखारलवाला चित्र। मै.

लिखौट-सं., लिखैक छटा। मै.

लिच्छोपलिच्छ-विशे., अत्यन्त शुद्ध स्वभाववाला। अनैतिक विचार सँ दूर रहैवाला। मै.

लिट्टी-सं., केवल भुभुर आगि मे पकाओल चापट गोलीसन रोटी। मै.

लिढ़ियाह-विशे., लाढ़ि भरल। मै.

लिढ़ियाही-विशे., लाढ़िवाला पोखरि। मै.

लिद्दी-सं., घोड़ा हाथीक मल। मै.

लिधुर-सं., शोणित। प्रयोग—"लिधुर फेन उठ फोंका।" मै.

लिबलाहा-विशे., झुकलवाला। मै.

लिबाएब-क्रि., झुकाकय मोड़ब, टेढ़ करब। मै.

लिलकण्ठ-सं., महादेवक प्रतीक शुभ पक्षी। मै.

लिलवरी-सं., ढेलावाला लील। मै.

लिलसा-सं., (ग्राम्य) लालसा, सेहन्ता। मै.

लिलियाएब-क्रि., लीह लीह शब्दें बकरी भगाएब। मै.

लिलोह-विशे., अभावक द्वारें सेहन्ता पूरै मे अत्यन्त विकल आ निराश। मै.

लिलो होएब-क्रि., लालसा मात्र संयोगने राखब, पूर्ति नहि क' सकब। मै.

ली

लीक-सं., बाटक रेखा, गाड़ीक पहिया बैसैक रेखा। मै.

लीख-सं., १. रेखा रूपें बनल रथ आदिक पहियाक बाट। २. माथ मे कटैवाला मेहीं (सूक्ष्म) कीड़ी। मै.

लीची-सं., चीन देशक राष्ट्रीय मधुर फल। मै.

लीढ़-सं., १. पोखरिक जल पर जमल मोट जंगल। २. पीठक बीच डन्डासन हाड़। मै.

लीन-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त आसक्त। मै.

लीन भ' जाएब-क्रि., १. डूबि जाएव। २. (लाक्षणिक) आनक प्रभाव मे अपन अस्तित्व मिला देब। मै.

लीपापोती-सं., (लाक्षणिक) झाँपि कय बात कें मेटबैंक चेष्टा। मै.

लीबब-क्रि., झुकब, नत होएब। मै.

लीला-सं., जीवन व्यवहार। सं. तत्सम

लीली-सं., छोट लाल फूल विशेष। मै.

लीह-अव्यय, बकरी कें भगबैक शब्द। मै.

लु

लुक्का-सं., पातर छोट डन्टा मे बान्हल तेल मे भीजल लत्ताक जराओल ऊक। मै.

लुक्खी-सं., वृक्षवासी, छोट जीव। गिलहरी। मै.

लुक्कड़-विशे., अधलाह चालिवाला। मै.

लुकझुक-विशे., अस्त होइत सूर्यवाला समय। मै.

लुकझुक करब-क्रि., दीपक मिझयबाक स्थिति मे आएब। मै.

लुकठी-सं., मुह पर आगिवाला काठी। मै.

लुकड़ी-सं., अत्यन्त छोट डन्टा। मै.

लुकमाह-विशे., देखितैं देखितैं चोरालैवाला। स्त्री० लुकमाहि। मै.

लुकलुक करब-क्रि., डूबल वस्तुक कनेक उपरक भाग मात्र देखा पड़ब। मै.

लुगता-सं., अधनेठपना। मै.

लुच्चा-विशे., स्त्री युवती कें देखि निरर्थक अशोभनीय चेष्टा कयनिहार। स्त्री० लुच्ची। मै.

लुचक्कड़-विशे., कनेक असावधानी सँ किछु सँ किछु क' दैवाला। मै.

लुचपनी-सं., स्त्री वा पुरुष कें देखि हावभाव। मै.

लुचलुच करब-क्रि., स्थिर नै रहब, व्यर्थ एम्हर ओम्हर नेन्ना सभक दौड़ब, अनेर हाथ पैर चलबैत रहब। मै.

लुट्टी-सं., बहुत लोकक द्वारा बल सँ उठाकय ल' जाइक क्रम। मै.

लुटना-विशे., बल सँ उठा उठाकय ल' जाइवाला। मै.

लुटबाएब-क्रि., आनक वस्तु कें बहुत लोकक द्वारा बल सँ लैक प्रक्रिया करब। मै.

लुटबैया-विशे., लुटबा दैवाला। मै.

लुटाएब-क्रि., एकै काल मे बहुत लोकक बीच लैक हेतु छींटिकय उत्सर्ग क' देब। मै.

लुटान-सं., बराबरि लूटैक क्रम। मै.

लुटिहारा-विशे., बल सँ लोकक धन ल' लैवाला दल। मै.

लुटिया-सं., देख—"लुट्टी"। मै.

लुढ़कब-क्रि., अनेर गड़कि जाएब, ओंघरा जाएब। मै.

लुत्ती-सं., आगिक उड़ैवाला कण। मै.

लुत्ती लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) गुप्त उत्तेजना बात कहिकय समाज कें उत्तेजित करब। मै.

लुतुक-सं., स्वभावगत अनुचित अभ्यास। मै.

लुद' द'-अव्यय, शिथिलसन भ' क' जल्दी सँ। मै.

लुदलुदी-सं., छन छन अपच मलक वेग। मै.

लुदुरलुदुर-अव्यय, सोझे टाङें बच्चाक तथा मोट लोकक मन्द चालि। मै.

लुधकब-क्रि., घन भ' क' गाछ आदि मे फल आदि लागब। मै.

लुधकाएब-क्रि., कोनो काज वा वस्तु कें घन क' क' झुण्डक झुण्ड लगाएब। मै.

लुधकी लागब-क्रि., सघन भ' क' फरल रहब। झुण्ड मे लोकक जमि जाएब। मै.

लुपलुप-अव्यय, जल्दी जल्दी मुह मे ल' क'। मै.

लुब्ध-विशे., ललचाएल, लोभ भरल। सं. तत्सम

लुबलुब-क्रि., अनधिकार वस्तु उठालैक चालि। मै.

लुबुधब-क्रि., चारू दिश गुच्छा गुच्छा लटकब। मै.

लुबुधल-विशे., कोनो विषय मे चारू दिश सँ झुण्डक झुण्ड लागल। मै.

लुरिगर-विशे., सब काजक अवगतिवाला। मै.

लुल्ह-विशे., हाथ सँ कज्जी, अपङ्ग। मै.

लुल्हआ-सं., तरहत्थीक विपरीत भागक अंग। मै.

लुलुआएब-क्रि., बिगड़िकय अनादर सँ भगाएब। मै.

लुलुक-सं., अनेर बिगड़ि अपमान करैक चालि। मै.

लुलुहार-विशे., डारि पात सँ पुष्ट बढ़ैत रहैवाला गाछ वृक्ष आदि। मै.

लुसफुसाएब-क्रि., लोभा कय कोनो रूपें वस्तु कें प्राप्त करैक चेष्टा करब। मै.

लुहलुहाएब-क्रि., पुष्ट डारि पात सँ भरल हरियरि धेने गाछ वृक्षक बढ़ैत रहब। मै.

लू

लू-सं., सूर्य आ बसातक मिलल जुलल प्राणघाती तापक वेग। मै.

लूक-सं., बड़का बाँस मे बान्हिकय बनाओल ऊक। शिकारक साधन। मै.

लूँगी-सं., बिना ढेकावाला पहिरैक विशेष पुरुष वस्त्र। मै.

लूझब-क्रि., एकै बेर शीघ्रता सँ अपना अपनी कें उठा लैक चेष्टा करब। मै.

लूटब-क्रि., इच्छानुसार वा बल सँ ककरो दलक लोकक द्वारा कोनो वस्तु कें हथियाएब। मै.

लूटि/लूटिपाटि-सं., देखू—"लुट्टी"। लूटैक संग उजारब। मै.

लूप-सं., (आधुनिक) गर्भ निरोधक यन्त्र। अं. तत्सम

लूरि-सं., कोनो काज करैक ढंग। अवगति। निपुणता। कार्य कुशलता। मै.

लूलू थूथू-सं., अत्यन्त अनादरपूर्वक गंजन। मै.

लूहा-विशे., कनेको असावधानी मे चट द' चोरा लै वाला। स्त्री० लूही। मै.

ले

ले !-अव्यय, आश्चर्य, भय आदि मे स्वतः बहरायल शब्द। प्रयोग—"ले ! हेरागेलौ ?" मै.

ले -अव्यय, हेतु निमित्त। सम्प्रदान कारकक चिह्न। मै.

लेआओन-सं., आदरपूर्वक शुभ कार्य मे घरक सब व्यक्तिक आमन्त्रण। मै.

लेआओब कहब/लेआबक-क्रि., विशेष अवसर पर माननीय व्यक्ति कें आमन्त्रण कहैक भार देब। मै.

ले ऊँच-विशे., एक दिश गहींर एक दिश ऊँच स्थान। मै.

लेओर-सं., १. एक दिशक झुकान। २. अनुभवहीन, अप्रशिक्षित। मै.

लेख-सं., १. लिखैक छवि छटा। २. पाण्डित्यपूर्ण कल्पना सँ साधल निबन्ध। ३. हस्तलिखित प्रमाण। सं. तत्सम

लेखक-विशे., लिखैवाला। सं.

लेखन-सं., लिखैवाला काज। सं. तत्सम

लेखा-सं., गणना (हिसाब) कय कें सबटाक एक ठाँ मिलान। सं. तत्सम

लेखाकार-विशे., हिसाब (गणना) करैक हेतु कुशल आ राखल गेल। सं. तत्सम

लेखाजोखा-सं., तौलक आ खुदराक एक ठाँ टोटल हिसाब। सं. तद्भव

लेखापाल-विशे., लेखा जोखाक मुख्य अधिकारी। सं. तत्सम

लेखें-अव्यय, विचारें, मत सँ। मै.

लेट-सं., विलम्ब। अं. तत्सम

लेटब-क्रि., भूमि पर वा बिछाओन पर लम्बा चौड़ा होएब। मै.

लेटराहा-विशे., सब काज बामा हाथें कयनिहार। मै.

लेटाएब-क्रि., १. कपड़ा आदि वस्तुक भूमि पर खसि वा लटकि कय धूरा माटि पर ओंघराएब। २. पीड़ा वा आक्रोश वा अकस्मात् खसि कय भूमि पर छटपटाएब। मै.

लेढ़न बेढ़न-विशे., बहारि क' जमा कयल गदौस जकाँ उपेक्षाक योग्य। ओंघराओल। मै.

लेढ़ब-क्रि., थाल पानि सँ भरल देहवाला होएब। मै.

लेढ़ल मेढल-विशे., थाल पानि सँ लेपल। मै.

लेढहा-विशे., थाल माटि लागलवाला। मै.

लेढ़ाएब-क्रि., थाल माटि देह मे लपाएब। ओंघराएब। मै.

लेध-विशे., १. अपने सँ किछु नहि क' सकैवाला बच्चा। २. पानि भरल नहि रहने नै उखड़ैवाला धानक बीआक गाछ। मै.

लेधुरिया-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा। मै.

लेन-सं., लाइन, रेखा। रेलक पटरी। अं. तद्भव

लेन-सं., १. आवास घरक विशेष टोल। २. लगानी, लैक शिलशिला। मै.

लेनदेन-सं., लेबाक आ देबाक क्रम। मै.

लेप-सं., उपर सँ थोपि कय गाढ़ वस्तुक (औषध आदिक) लगबैक प्रक्रिया। मै.

लेपटब-क्रि., चारूकात सँ बन्हल जकाँ लागि जाएब। मै.

लेपटाएब-क्रि., अनेक फेरा द' क' चाहकात लगाएब । मै.

लेपटान-सं., अनेक फेरा दय कें कपड़ा आदि वस्तुक मोड़ैक लगबैक क्रम । मै.

लेपटाह-विशे., घूरि फिरि कय ओझराएल । मै.

लेपटौआ-विशे., परस्पर अक्षर सँ अक्षर लेपटाएल तथा सम्बन्ध लागल अंगरेजी वर्ण । मै.

लेपनि-सं., लेपैक काज । मै.

लेपब-क्रि., गाढ़ वस्तु कें सगरे पसारि लगाएब । मै.

लेपस्सा-सं., बान्हल (स्थूल) गील वस्तु कें पीसि (हाथ वा देहक रगड़ा सँ) लेप जकाँ गाढ़ घोला । जेना गोबर कें ढील बनाकय थोप । मै.

लेवा-सं., लेपैक चलैवाला काज । मै.

लेपाएब-क्रि., लेपैक काज कराएब । मै.

लेपाड़-सं., लेप कयला उत्तर बनल चिह्न । मै.

लेब-क्रि., ग्रहण करब, पकड़ब । मै.

लेब-सं., १. ग्रहण करैक काज । २. गील आ ढील माटि सटैक क्रम । मै.

लेब देब-क्रि., लेबा देबाक काज । मै.

लेबनि-सं., लेबैक प्रकार । मै.

लेबब-क्रि., ढील आ गील विशेष प्रकारक माटि सँ टाट आ देबाल कें साटब । मै.

लेबा-सं., आँच सँ वर्तन कें रक्षा हेतु पेन दिश नीचाँ मे लगाओल माटि । मै.

लेबाइ-सं., लेबैक काज । मै.

लेबाड़ब-क्रि., अस्थायी रूपक माटि साटब । मै.

लेबाल-विशे., लंवाला । मै.

लेबिया-सं., लेबैक चलैत रहैवाला काज । मै.

लेभड़ब-क्रि., लेबल जकाँ सगरे लागब । मै.

लेभी-सं., व्यवसायी सँ व्यवसायक लाभांश लैक राजकीय व्यवस्था । अं. तत्सम

लेम' जाएब-क्रि., लैक क्रिया करैक हेतु जाएब । मै.

लेर-सं., मुहक रस । मै.

लेरहा/लेराह-विशे., हरदम लेर चुबबैत रहैवाला नेन्ना वा रोगी । मै.

लेराएब-क्रि., लेर सँ भरल रहब । मै.

लेल-अव्यय, हेतु, निमित्त । चतुर्थीक चिह्न । मै.

लेलहा-विशे., लटपटाएल बोली बजैवाला ज्ञान शून्य । मै.

लेली-अव्यय, हेतु, निमित्त । प्रयोग—"ई तँ देवताक लेली निहुछल छै ।" मै.

लेलाह-विशे., अस्पष्ट शब्द उच्चारण केनिहार बकलेल । मै.

लेश-सं., कनेक अंश । सं. तत्सम

लेशन-सं., दही जनम'बैवाला दही । मै.

लेसब-क्रि., १. दीप जराएब, बारब । २. (लाक्षणिक) झगड़ा बढ़ाएब । मै.

लेहू-सं., रुधिर, शोणित । रक्त, खून । मै.

लै

लै-सं., आटा मैदा सँ रान्हि कें बनाओल लस्सा । मै.

लैं-सं., ककरो ककरो प्रति अत्यन्त आवेश । मै.

लैंन-सं., बिजली करेन्टक प्रवाह । अं. तद्भव

लैम्प-सं., यान्त्रिक दीप । अं. तत्सम

लैं लैं करब-क्रि., आवेश (स्नेह) क लेल सदिखन उत्कण्ठित रहब । मै.

लो

लोआठ-सं., १. अतिशय । २. ठेङाक निचला भाग (हूर) । ३. हाथक औंठा । मै.

लोआठब-क्रि., ठेङाक निचला भाग अथवा हाथक बुढ़वा आङुर देखाएब । मै.

लोइ-सं., सक्कत सानल वस्तुक पैघ आकार । मै.

लोइआ-सं., सक्कत सानल वस्तुक छोट छोट टुकड़ा । रोटी बेलैले सानल चिक्सक छोट खण्ड । मै.

लोक-सं., संसार, मनुष्य, व्यक्ति । सं. तत्सम

लोकगर-विशे., परिवार वा परिचारक भरल । मै.

लोकन-सं., उपरैं उपर उछालल वस्तु कें पकड़िलैक कला । मै.

लोकनि-सं., सब । प्रयोग—"अहा लोकनि ।" मै.

लोकनिन-विशे., प्रथम प्रथम सासुर जाइवाली कन्याक संग लागल ओकर सहायक स्त्री । मै.

लोकनियाँ-विशे., दुरगमनियाँ कनियाँक संग जाइवाला भाइ तथा सहायक पुरुष । मै.

लोकब-क्रि., उपर उछलल वस्तु कें अथवा उपर सँ खसैत वस्तु कें उपरैं उपर पकड़ब । मै.

लोकलोका-सं., परस्पर वस्तु उछालि उछालि उपरैं उपर पकड़ैक चेष्टा । मै.
लोकबेद-सं., भौतिक आ आध्यात्मिक (ज्ञान एवं धर्मचर्या) कर्मक केन्द्र । एक व्यक्ति सँ ब्रह्माण्ड-धरिक कर्म । मै.
लोकाएब-क्रि., उपरैं सँ उछालिकय पकड़ाएब । मै.
लोकारय-सं., अधिक लोक भरल स्थान । मै.
लोकित-विशे., वंशज, सम्बन्धित । मै.
लोकोक्ति-सं., कहबी । प्रयोग—"कहबी कहै छै जे सोन चोरि जाय कोइला पर छाप ।" सं. तत्सम
लोखड़-सं., नौआक खुर आदि अस्त्र सब रखैक वासन । मै.
लोखरैया-सं., गाछक उखड़ल पुरान छाल । मै.
लोचन-सं., नयन, आँखि । सं. तत्सम
लोचना-सं., धीयापूताक शुभ कार्य देखैक उत्कट सेहन्ता । मै.
लोट-सं., नोट, राजकीय मुद्रा, राशि पत्र । अं. तत्सम
लोटकी-सं., लोटाक आकारक अत्यन्त छोट जल पात्र । मै.
लोटन परबा-विशे., उड़ैत काल उनटि पुनटिकय खेलाइवाला पड़बा पक्षी । मै.
लोटनि-सं., अत्यन्त दुःख अथवा अतिसैं आनन्दक लेल पड़ल पड़ल उनटैत पुनटैत रहैक क्रम । मै.
लोटनियाँ मारब-क्रि., दुःख (व्याधि) अथवा शोक सँ भुइयाँ पर ओंघराएब । मै.
लोटपोट-सं., १. छका छकाकय पराजित करैक भाव । विशे., २. हँसैत हँसैत अस्त व्यस्त । ३. आराम । मै.
लोटपोट करब-क्रि., प्रतिवादियैक, विपक्षियैक बातें ओकरा परास्त करब । मै.
लोटा-सं., जलपात्र । मै.
लोटाएब-क्रि., धूरा माटि पर घूरि फिरिकय ओंघराएब । मै.
लोढ़नि-सं., खेत मे खसल दानावाला सीस बीछैक काज । मै.
लोढ़ब-क्रि., खेत मे छोड़ल दाना बीछब । मै.
लोढ़ा-सं., खेत मे खसल छोड़ल अन्नक दाना बीछैक चेष्टा । मै.
लोढ़ाबीछा-सं., अन्नक दाना बीछिकय जीवन निर्वाहक उपाय । मै.
लोढ़ाशंख-विशे., पढ़ै लिखै मे महामूर्ख, अज्ञ । मै.
लोढ़ियाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बूड़ि बनाकय नीक जकाँ दूसब । मै.
लोढ़ी-सं., सिलौट पर रगड़िकय किछु पीसैक काजक हेतु मुट्ठी सँ पकड़ैक जोग पाथरक गोल टुकड़ा । मै.
लोण-सं., नोन, लवण । सं. तद्भव
लोथ-विशे., हाथ पैररहित संचारहीन जीव । मै.
लोथड़ा-विशे., बिन आकार प्रकारवाला गोलाकार संचारहीन । मै.
लोध-सं., वनस्पति विशेष । रोध्र । मै.
लोन-सं., नोन । मै.
लोप-सं., अदर्शन, बिला जाइक भाव । सं. तत्सम
लोभ-सं., लालच । सं. तत्सम
लोभाएब-क्रि., ललचाएब, आकृष्ट होएब । मै.
लोर-सं., नोर, अश्रु (ग्राम्य) । मै.
लोराएब-क्रि., नोर भरि आएब । मै.
लोरि-सं., धीयापूता कें परतारि कय सुतबैक गीत । मै.
लोरिक-सं., लोरिक नामक वीर पुरुष एवं ओकर वीर गाथाक गीत । मै.
लोल-सं., नोकदार मुह, पक्षीक चञ्चु । मै.
लोलकी-सं., कनेक नोक जकाँ आगू मे बढ़ल । मै.
लोला-विशे., मुहलग्गू प्रिय नेन्ना । मै.
लोलाह-विशे., अधिक बढ़ल नोकवाला । मै.
लोलियाएब-क्रि., लोल मारिकय खोधब । मै.
लोली-सं., छोट छोट घातक नोक । मै.
लोह-सं., कठोर धातु विशेष । मै.
लोहकट-सं., उपर फैल आ नीचाँ साँकर लकड़ीक कटारि । कटैक साधन । मै.
लोहकम-सं., लोहारक उपयोगी लोहक साधन । मै.
लोहगर-विशे., अधिक लोह भरल । मै.
लोहड़ड़ड़-सं., लोहक बड़का छड़ । मै.
लोहड़ड़ी-सं., जूता मे काँटी ठोकैक गोल मोट लोहक ठोकना । मै.
लोहछब-क्रि., बिगड़ि उठब , क्रोध करब । मै.

लोहछाएब-क्रि., तामस जगाएब, मन कें क्रोधें विकृत क' देब । मै.

लोहछाह-विशे., तामसें बिगड़ि उठैवाला । मै.

लोहछि उठब-क्रि., मन मे क्रोधक विकार जागब । मै.

लोहजर लागब-क्रि., १. अशुद्ध लोहक कटला सँ ज्वर होएब । २. (लाक्षणिक) ज्वर होइक छल सँ बैसल रहैक बहाना करब । मै.

लोहझाम-सं., माटि मे गड़ल अत्यन्त पुरान लोह । मै.

लोह दागब-क्रि., (लाक्षणिक) अभाव सँ सेहन्ताक तिरस्कार करब । मै.

लोहरख लागब-क्रि., पूव दिशा मे उषा मे लालिमा छिटकब । मै.

लोहराइन-सं., लेहूक दुर्गन्ध । मै.

लोहराएब-क्रि., क्रोधें लाल भ' जाएब । मै.

लोहार-विशे., लोहक व्यसायवाला मिस्त्री, लोहक कार्यकुशल । मै.

लोहारि-सं., अत्यन्त कारी अधिक विषवाला चीटीं । मै.

लोहारी-सं., लोह गढ़ैक व्यवसाय । मै.

लोहिया-सं., तरकारी रन्हैवाला फैलल मुहवाला धातुक उत्थर वासन । मै.

लौ

लौं-सं., १. धधरा, ज्वाला, धाह । २. कानून । अंग्रेजी/मै.

लौका-सं., सजमनि । मै.

लौका तुम्मा-सं., साधु सन्यासीक सुखाएल सजमनिक वासन आ ओकरे बनाओल वाद्य यन्त्र । मै.

लौकिक-विशे., सांसारिक, समाज मे प्रचलित । सं. तत्सम

लौकिया-विशे., नुकाकय गतिविधि देखैवाला गुप्तचर । मै.

लौकिया लागब-क्रि., धन चोरबैले चुपचाप चोरक संग लागि जाएब । मै.

लौकी-सं., गोल सजमनि । मै.

लौंग-सं., १. लवङ्ग । २. लबङ्गसन नाकक गहना । मै.

लौडी-सं., अत्यन्त छोट अधिक कड़ू मेरिचाइ । मै.

लौटब-क्रि., पाछू घूमब, प्रत्यावर्तित होएब । हि./मै.

लौटाएब-क्रि., गेनिहार कें घुमा लाएब । मै.

लौठा-विशे., बड़का कोदारि एवं हर । मै.

लौठी-विशे., छोटकी खुरपी । मै.

लौड़ा-सं., तरुण पुरुषक लिंग । मै.

लौंडा-विशे., चालू छौंड़ा । मै.

लौल-सं., चञ्चलतापूर्वक अत्यन्त आग्रहक संग अभिलाष, आवेस । मै.

लौलीवाजी-सं., फूसि बाजि कय समय खेपैक आचरण । मै.

लौंस-सं., घाटा, हानि, नोकसान । अं. तत्सम

लौसग-सं., सागक संग सजमनिक रान्हल तरकारी, व्यञ्जन । मै.

व

व्यक्ति-सं., लोक, एकत्व संख्या । सं. तत्सम

व्यंग्य-सं., शब्द सँ ध्वनि रूपें प्रकट होम'वाला अर्थ विशेष । सं. तत्सम

व्यञ्जन-सं., तरकारी । सं. तत्सम

व्यञ्जना-सं., व्यङ्ग्यार्थ प्रकाशक शब्दशक्ति । सं. तत्सम

व्यय-सं., खर्च । उठानि । सं. तत्सम

व्यवसाय-सं., जीवन निर्वाहक व्यापार । सं. तत्सम

व्यवहार-सं., १. परम्परागत सामाजिक विधि । २. वैयक्तिक चेष्टा । सं. तत्सम

व्यष्टि-सं., समूह सँ पृथक् कयल एकत्व संख्या । सं. तत्सम

व्यस्त-विशे., १. काज मे तल्लीन । २. मरणासन्न वा प्राणहीन । सं. तत्सम

व्यसन-सं., स्वभावगत अनिवार्यता । लति । सं. तत्सम

व्याकरण-सं., शब्दशास्त्र । भाषा शब्दक परिकल्पनाक विधान । सं. तत्सम

व्याख्याता-विशे., १. महाविद्यालयक विषय शिक्षक । २. सभा मे बजनिहार । सं. तत्सम

व्याख्यान-सं., समूहक बीच भाषण । सं. तत्सम

व्याघात-सं., काजक बीच बाधायुक्त हानि । सं. तत्सम

व्याज-सं., १. छल, बहाना । २. ऋणक बढ़ैवाला सूदि । हि. तत्सम/सं. तत्सम

व्याध-विशे., निर्दय, जंगली शिकारी। सं. तत्सम

व्याधि-सं., रोग। स. तत्सम

व्याप्ति-सं., (लाक्षणिक) झट द' बात पकड़ैक बुद्धि। सं. तत्सम

व्यापक-विशे., सगरे पसरल (छाएल) रहैवाला। (लाक्षणिक) समूहक बीच प्रभावशाली रहैवाला। सं. तत्सम

व्याम्बोह-सं., व्यामोह, मिथ्या आसक्ति सँ बनल कुण्ठा। सं. तत्सम

व्यास-विशे., पुराण लेखक, पौराणिक पुरुष, पुराण-वाचक। सं. तत्सम

व्यास-सं., बीचक विस्तार, परिधि मध्य मे बनल अवकाश। सं. तत्सम

व्यासंग-सं., अनर्गल मनक आकर्षण। सं. तत्सम

व्रज-सं., मथुरा (गोकुल) क्षेत्र। भाषा विशेष। सं. तत्सम

व्रण-सं., घाओ। सं. तत्सम

व्रत-सं., धार्मिक कार्यक नियम। सं. तत्सम

वक्तव्य-विशे., देखू—"बकतब"। सं. तत्सम

वक्ता-विशे., बजनिहार। सं. तत्सम

वक्र-विशे., टेढ़। सं. तत्सम

वक्ष-सं., छाती, वक्षस्। सं. तत्सम

वक्षोज-सं., स्तन। सं. तत्सम

वङ्ग-सं., एक प्रदेश। सं. तत्सम

वचन-सं., शुद्ध वर्णात्मिक शब्दक बोली। सं. तत्सम

वज्र-सं., इन्द्रक अमोघ अस्त्र। (लाक्षणिक) अधिक कड़ा। सं. तत्सम

वज्रकील-सं., ने टुटै जोग ने हिलै जोग अर्गल तथा खुट्टा। सक्कत वस्तु। मै.

वटवृक्ष-सं., बड़क गाछ। सं. तत्सम

वटी-सं., बड़िया। सं. तत्सम

वटुक-विशे., किशोरावस्थाक नेन्ना। सं. तत्सम

वड़वड़ गेला तँ मोछवाला अयला-लोकोक्ति, जे काज ककरौ सँ नै भ' सकै छै से करैक दाबी व्यर्थ। मै.

वत्स-विशे., बच्चा, स्नेह पात्र। सं. तत्सम

वधू-विशे., कनियाँ, नव विवाहित युवती, घरक पुतोह। सामान्य पत्नी। सं. तत्सम

वन-सं., जंगल। सं. तत्सम

वनैया-विशे., वन मे भेनिहार, वन मे रहनिहार वासी। मै.

वनैल-विशे., वन मे हरदम नुकाएल रहैवाला। मै.

वम-सं., आधुनिक विस्फोटक अस्त्र। सं. तत्सम

वम-विशे., गंगाजल भरिकय बैद्यनाथधाम जाइवाला भक्त यात्री। मै.

वमरी-विशे., जल बोझिकय बैद्यनाथधाम जाइवाली स्त्री तीर्थ यात्री। मै.

वमवम-सं., शिव कें प्रसन्न करैक ओंकारक विकल्प। मै.

वयस-सं., आयु। उमेर। सं. तद्भव

वर्ष-सं., बारह मासक एक मान। सं. तत्सम

वर्षा-सं., मेघ सँ सघन बुन्दपात। सं. तत्सम

वर्षान्न-सं., वर्षभरि खाइक अन्न। सं. तत्सम

वर-विशे., १. वधूक पति। २. श्रेष्ठ। ३. नीक। सं. तत्सम

वरण-सं., १. चाहब, विशेष काजक नियोजन। २. चूनब। सं. तत्सम

वरतुहार-विशे., विवाहक योग्य कन्याक लेल वर तकनिहार (अन्वेषण कयनिहार)। मै.

वराइत-विशे., वर पक्षक लोक। मै.

वरियाती-विशे., वर यात्राक लोक। मै.

वरिषकाल-सं., वर्षा ऋतु। मै.

वला-सं., बरियार। सं. तत्सम

वश-सं., अधिकार अधीनता। सं. तत्सम

वंश-सं., परम्परागत सन्तान सँ अबैवाला कुल। २. बाँस। सं. तत्सम

वंशकलोक-विशे., उच्च कुलक सम्बन्ध रखैवाला भलमानुष। मै.

वंशज-विशे., कुल मे होम'वाला व्यक्ति। सं. तत्सम

वशा-सं., देहक धातु विशेष। सं. तत्सम

वस्ता-सं., पोथी पतरा बान्हि क' रखैक कपड़ाक विशेष खण्ड। मै.

वस्त्र-सं., कपड़ा। सं. तत्सम

वस्ती-सं., ग्राम खण्ड, गाम, टोल। मै.

वस्तु-सं., पदार्थ, द्रव्य, मौलिक विषय। सं. तत्सम

वस्स !-अव्यय, परिपूर्णता, अधिकता आ स्वीकार तथा निषेध सूचक । मै.
वसन्त-सं., छः ऋतु मे प्रमुख ऋतु । मै.
वसन्ती-सं., पीयर लाल मिलल रंग । मै.
वसन-सं., वस्त्र, कपड़ा । सं. तत्सम
वसना-सं., वर्तन । प्रयोग—"पनवसना ।" मै.
वसनी-सं., अत्यन्त छोट घैल । मै.
वसब-क्रि., चिरस्थायी रहब । वास करब । मै.
वसाएब-क्रि., घरद्वार सँ चिरस्थायी बनाएब । वास देब, रहैक स्थान देब । मै.
वसिन्ना-विशे., वासी, परम्परा सँ रहैवाला डीही । मूलवासी । मै.
वसोवास-सं., बसैवाला वा वासवाला भूमि । मै.
वसौड़ी-सं., वास भूमि, बसैक योग्य भूमि । मै.
वहन करब-क्रि., भार उठाएब, निर्वाह कराएब । खर्च अवधारब । मै.

वा

वा-अव्यय, अथवा, आकि । सं. तत्सम
वाक् चातुरी-सं., बजैक निपुणता, वचनक छटा । सं. तत्सम
वाक्य-सं., परस्पर सम्बन्ध रखैत शब्दक समूह, क्रियाकारक पद । सं. तत्सम
वाक्यालंकार-सं., वाक्यक भूषण स्वरूप शब्द जाल । सं. तत्सम
वाक-सं., वाक्, वचन । बात । सं. तद्भव
वाक फूटब-क्रि., मुह सँ बात बहराएब । मै.
वाकवन्न होएब-क्रि., मृत्युक समय पहिने बाजब रूकि जाएब । (लाक्षणिक) मृत्यु निकट होएब । मै.
वाङ्मय-सं., शास्त्र, साहित्य । सं. तत्सम
वाचब-क्रि., पढ़ि पढ़ि बेकछाएब । मै.
वाचाशक्ति-सं., छटापूर्वक बजै मे प्रवीणता । सं. तत्सम
वाट-सं., मार्ग, पथ । मै.
वाढ़ि-सं., वृद्धि । बढ़ैक शक्ति । मै.
वाण-सं., शर, तीर । सं. तत्सम
वाणी-सं., वचन, बोली । सं. तत्सम
वात-सं., वार्ता, बोली, वचन । मै.
वातावाती-सं., परस्पर विवाद रूपें बजैक उग्रता । मै.
वातूनी-विशे., अनेर अधिक बजनिहार । मै.
वाद-सं., पश्चात् काल, परस्पर बातें झगड़ा । मै.
वाद विवाद-सं., दू दलक बीच अपन अपन मतक तर्क वितर्क । मै.
वादी-विशे., १. मुद्दइ । २. मतक विरोध कयनिहार । ३. मासा बढ़ैवाला बाबासीर रोग । सं. तत्सम/मै.
वाम-सं., असव्य दहिनाक विपरीत । सं. तत्सम
वामदहिन-सं., (लाक्षणिक) एक दोसर विपरीत करैक फेरा । मै.
वामा-सं., नारी । सं. तत्सम
वायवी-विशे., वायुमय, वायु सम्बन्धी । सं. तत्सम
वायु-सं., बसात । सं. तत्सम
वार-सं., १. दिन । प्रयोग—"रविवार आदि ।" २. निषेध, रोक । मै.
वारब-क्रि., बहिष्कार करब । मना करब । मै.
वारम्वार-अव्यय, फेरफेर, लगले लागल । सं. तत्सम
वारावारी-सं., परस्पर कें बहिष्कार करैक क्रम । मै.
वाल-सं., १. केश । २. नेत्रा । ३. सिकता, वालुका । सं. तद्भव
वालक-विशे., बेटा, बच्चा । सं. तत्सम
वालपन-सं., बचपना, नेनपनी । मै.
वास-सं., चिरकाल सँ घरक स्थान । सं. तत्सम
वासकसज्जा-विशे., साहित्यिक नायिकाक भेद । सं. तत्सम
वासन-सं., १. बसबैक काज । २. वर्तन । सं. तत्सम/मै.
वासना-सं., विषय तृष्णा, स्त्रीत्व आ पुरुषत्वक परस्पर आकर्षण । सं. तत्सम
वासर-सं., दिन । सं. तत्सम
वासा-सं., अस्थायी निवास । मै.
वाह !-अव्यय, साधुवाद । प्रोत्साहन । मै.
वाहक-विशे., उगहैवाला, ल' जाइवाला । सं. तत्सम
वाहन-सं., सवारी, यान । सं. तत्सम
वाह वाह !-अव्यय, अत्यन्त साधुवाद । मै.

वि

विक्रय-सं., बेचैक काज । सं. तत्सम

विक्षत-विशे., अनेक घातवाला । अनेक ठाँ काटल । सं. तत्सम

विक्षुब्ध-विशे., नैराश्य सँ दुखी । सं. तत्सम

विकट-विशे., भयंकरता सँ भरल कष्टकर । सं. तत्सम

विकटाह-विशे., अत्यन्त कठिनाह । मै.

विकब-क्रि., बेचल जाएब । मै.

विकराल-विशे., अत्यन्त भयावह । सं. तत्सम

विकल-विशे., अत्यन्त दुखी । सं. तत्सम

विकार-सं., प्रतिकूल भावना, वस्तुक मल । सं. तत्सम

विकारी-विशे., भेद जनबैवाला संकेत रूप आधा घेरा । मै.

विकिरण-सं., वैज्ञानिक प्रक्रिया विशेष । मै.

विकाल-विशे., कष्टकर आ भयावह काल । मै.

विख्यात-विशे., प्रसिद्ध, नामी । सं. तत्सम

विखिन-विशे., विखिन्न, भावना मे दुखी । सं. तद्भव

विज्ञ-विशे., विद्वान्, विशिष्ट ज्ञानी । सं. तत्सम

विज्ञान-सं., विशिष्ट ज्ञान । सं. तत्सम

विट-सं., पक्षीक मल । सं. तत्सम

विहृति-सं., उजाड़ि सँ हानि । मै.

विद्यमान-विशे., प्रस्तुत, उपस्थित । रहैत । सं. तत्सम

विद्या-सं., ज्ञान, विषय बोध । सं. तत्सम

विद्यार्थी-विशे., ज्ञान चाहैवाला । सं. तत्सम

विद्यालय-सं., पढ़ौनीक घर । पाठशाला । सं. तत्सम

विद्युत्-सं., बिजुली । सं. तत्सम

विद्वत्ता-सं., विद्वानक गुण । सं. तत्सम

विद्वान्-विशे., पण्डित, विवेकशील, विषयक ज्ञाता । सं. तत्सम

विदकब-क्रि., भ्रम आ भय सँ हड़बड़ाकय उछलि जाएब, चमकि उठब । मै.

विदकाएब-क्रि., अकस्मात् भय सँ चमकाएब । मै.

विदरब-क्रि., फाटब, पसरब, मुह फैलब । मै.

विदारब-क्रि., फैलायब, पसारब, फाँड़ब । मै.

विधना-सं., भाग्य । मै.

विधवा-विशे., मृत पतिका । सं. तत्सम

विधाता-सं., सृष्टिकर्ता । सं. तत्सम

विधान-सं., व्यापक नियम । सं. तत्सम

विधि-सं., कार्य (व्यवहार) प्रणाली । सं. तत्सम

विधिकरी-विशे., विवाहक समय कनियाँ वरक निर्देशिका । सं. तत्सम

विधि विधान-सं., लोक व्यवहारक नियम, आडम्बर । सं. तत्सम

विधि विधाता-सं., लोक निर्माता, स्रष्टा । सं. तत्सम

विधुआएब-क्रि., शक्तिहीनता आ अधिक ठंडा सँ तथा पीड़ा सँ अंगक विकृत (संकुचित) होएब । मै.

विधुनब-क्रि., व्यवस्थित वस्तु कें उधेसब । मै.

विधुर-विशे., मुइल पत्नीवाला, वियोगी । सं. तत्सम

विन्यास-सं., विविध आयोजन । सं. तत्सम

विनय-सं., नम्रता भरल प्रार्थना । सं. तत्सम

विना-अव्यय, वेत्रेक अभाव मे । सं. तत्सम

विनाश-सं., ध्वंस, क्षय । सं. तत्सम

विपटइ-सं., अपन चेष्टा एवं रूप सँ हँसबैक विशेष गुण । मै.

विपटा-विशे.,अपन चेष्टा वचन आ रूप सँ प्रहसनकारी । हँसबैवाला । मै.

विपत्ति/विपति-सं., संकट, अनिवार्य कष्ट आ दुख विनाश । सं. तत्सम/सं. तद्भव

विपतब-क्रि., संकट आ प्रलय मे पड़ब । मै.

विपति पड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) पतिक स्वर्गवास होएब । मै.

विपन-विशे., विपन्न, संकट मे पड़ल । सं. तद्भव

विपरीत-सं., उनटा । विशे., प्रतिकूलता । सं. तत्सम

विपाक-सं., अनपच । सं. तत्सम

विपाटी-विशे., भिन्न (पृथक्) वा दोसर गोल (आन मतक लोक) मे रहैवाला । मै.

विपिन-सं., वन । सं. तत्सम

विपुल-विशे., विशाल, भारी आ विस्तृत । सं. तत्सम

विफल-विशे., असफल । सं. तत्सम

विबुध-विशे., पण्डित आ देवता । सं. तत्सम

विभव-सं., सम्पत्ति । सं. तत्सम

विभाग-सं., खण्ड, बखरा, हिस्सा । सं. तत्सम

विभाजन-सं., बाँट । दलीकरण । सं. तत्सम

विभु-विशे., व्यापक । सं. तत्सम

विमान-सं., धरातल सँ उपर उड़ैवाला सवारी । सं. तत्सम

वियोग-सं., अलगाओ, विच्छेद । सं. तत्सम

वियोगी-विशे., वियोगक दुख सँ दुखी । सं. तत्सम

विरह-सं., पृथक् रहने स्नेहक उत्कण्ठा । सं. तत्सम

विरही-विशे., स्नेही आ प्रणयी ले उत्कण्ठित । सं. तत्सम

विराट-विशे., बहुत पैघ, अनन्त । सं. तत्सम

विल-सं., भोकाँड़, सोन्हि, भूर । सं. तत्सम

विलम्ब-सं., देरी, अतिकाल । सं. तत्सम

विलय-सं., मिलिकय विलाएब । सं. तत्सम

विलाप-सं., घओना कय के क्रन्दन । सं. तत्सम

विलास-सं., रंग रभस, वासनोद्दीपक क्रिया । सं. तत्सम

विलीन-विशे., डूबल, अस्त । सं. तत्सम

विवरण-सं., विषयक फरिछाकय उल्लेख । सं. तत्सम

विवश-विशे., पैबन्ध । सं. तत्सम

विवस्त्र-विशे., नाङट, नग्न । सं. तत्सम

विवाद-सं., वाचनिक झगड़ा । सं. तत्सम

विवाह-सं., कुमारि कन्या आ कुमार वरक परस्पर आत्माक बन्धन विधि । सं. तत्सम

विवाहित-विशे., विवाह कयल । सं. तत्सम

विविध-विशे., अनेक प्रकारवाला । सं. तत्सम

विश्व-सं., संसार । सं. तत्सम

विश्वास-सं., मानसिक आस्था । सं. तत्सम

विश्वासपात्र-विशे., विश्वास योग्य । सं. तत्सम

विश्वासी-विशे., विश्वास कयनिहार । सं. तत्सम

विशद-विशे., स्पष्ट, बेकछाओल । सं. तत्सम

विशाखा-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

विशाल-विशे., आकार प्रकारें बहुत पैघ । सं. तत्सम

विशिष्ट-विशे., उत्तमता मे सब सँ भिन्न । सं. तत्सम

विशेष्य-विशे., विशेषताक योग्य । सं. तत्सम

विशेष-सं., अधिक, भिन्न प्रकार । सं. तत्सम

विशेषण-सं., संज्ञा शब्दक गुण बुझबैवाला शब्द । सं. तत्सम

विशेषता-सं., उत्तमता, विलक्षणता । सं. तत्सम

विष्ठा-सं., जीव मात्रक पेटक मल । सं. तत्सम

विष्णु-सं., नारायण । सामन्ती देवता । अर्थशक्तिमान् देव । सं. तत्सम

विष-सं., प्राणघाती पदार्थ । सं. तत्सम

विषधर-विशे., साँप । सं. तत्सम

विषम-विशे., १. दू सँ भाग लगैवाला सँ भिन्न संख्या । २. विकट, समस्यापूर्ण, जटिल । सं. तत्सम

विषय-सं., १. शास्त्रीय वस्तु । २. वस्तु । ३. वासनात्मक प्रवृत्ति । सं. तत्सम

विषयी-विशे., १. विषय जननिहार । २. सांसारिक वासना मे लिप्त । सं. तत्सम

विषहा/विषाह-विशे., विषवाला । सं. तत्सम

विषू-विशे., विषक प्रयोग करैवाला । सं. तत्सम

विस्तर/विस्तरा-सं., बिछाओन । मै.

विस्तार-सं., फैलाओ । प्रसार । मै.

विस्तारी-विशे., विस्तृत रूपें काज कयनिहार । मै.

विस्तीर्ण-विशे., खोलि पसारल । सं. तत्सम

विस्तृत-विशे., पसारल, फैलाओल । सं. तत्सम

विसनारि-सं., जलक प्रान्तक झार विशेष । मै.

विहङ्गमदृष्टि-सं., वेग मे कनेक दृष्टिपात । सं. तत्सम

विहरण-सं., उन्मुक्त मन सँ प्राकृतिक आनन्द लैक प्रवृत्ति । सं. तत्सम

विहार-सं., उन्मुक्त मनें प्राकृतिक वस्तुक बीच विचरण कय आनन्दक उपलब्धि । सं. तत्सम

विहीत-विशे., विधि (नियम) मे आएल । सं. तत्सम

वी

वीज-सं., बीया, गाछ उत्पन्न करैक हेतु दाना आदि । सं. तत्सम

वीणा-सं., सारङ्गी (सितार), वाद्य विशेष । सं. तत्सम

वीर्य-सं., १. शरीरक सारभाग, सातम धातु । २. वीरता । सं. तत्सम

वीर्य्यपात-सं., मैथुन वा स्वप्न सँ देहक मुख्य तत्वक स्खलन । सं. तत्सम

वीर-विशे., युद्धक हेतु बलवान् उत्साही । सं. तत्सम
वीरासन-सं., वीर पुरुषक बैसैक ढंग विशेष । सं. तत्सम
वीसां-सं., बीस गुना । मै.
वीसा-सं., विदेश भ्रमणक अनुमति पत्र । अं. तत्सम

वृ

वृत्त-सं., १. गोलाकार रेखा । २. आचरण । इतिहास । सं. तत्सम
वृत्त-विशे., प्रस्तुत, तैयार । सं. तत्सम
वृत्ति-सं., व्यवसाय, जीविका । सं. तत्सम
वृत्ती-विशे., विशेष व्यापार (उद्यम) वाला । सं. तत्सम
वृत-विशे., घेरल । सं. तत्सम
वृद्ध-विशे., बूढ़ । सं. तत्सम
वृद्धावस्था-सं., बुढ़ारी । सं. तत्सम
वृद्धि-सं., बाढ़ि । सं. तत्सम

वे

वेग-सं., गतिक तीव्रता । सं. तत्सम
वेद-सं., ज्ञान, ज्ञानक भण्डारशास्त्र । सं. तत्सम
वेदी-सं., हवन आदिक हेतु अग्नि स्थापनक परिष्कृत स्थान । सं. तत्सम
वेध-सं., शरीर मे क्षत करैक अस्त्रक आघात । सं. तत्सम
वेधब-क्रि., अस्त्र सँ भोंकब । मै.
वेधशाला-सं., आकाश मे ग्रह नक्षत्र सभक गतिक ज्ञान करैक यन्त्रशाला । सं. तत्सम
वेश्या-विशे., रूप यौवन बेचैवाली । सं. तत्सम
वेश !-अव्यय, स्वीकारक शब्द । मै.
वेश-सं., अपन स्थितिक दृढ़ताक हेतु सब दिशक प्रभाव । सं. तद्भव

वै

वैं-सं., व्यसन, लति, हठवाला अभ्यास । मै.
वैद्य-विशे., चिकित्सक, आयुर्वेद ज्ञाता । सं. तत्सम
वैद्यनाथ-सं., रावणेश्वर शिवक ज्योतिर्लिंग । मै.
वैदिक-विशे., १. वेद जननिहार । २. वेद सम्बन्धी । सं. तत्सम
वैध-विशे., विधि (नियम) सँ समर्थित । सं. तत्सम
वैधानिक-विशे., राजकीय नियमानुकूल । सं. तत्सम
वैभव-सं., ऐश्वर्य शक्ति । सं. तत्सम
वैमनस्य-सं., आन्तरिक विरोध । सं. तत्सम
वैमान-विशे., असत्यवादी । बेइमान । उ. तद्भव
वैयाकरण-विशे., व्याकरण शास्त्र जनैवाला । सं. तत्सम
वैयाह्-विशे., पेट मे वायु विकार उत्पन्न करैवाला । सं. तत्सम
वैर-सं., विरोध, शत्रुता, अरारि । सं. तत्सम
वैरी-विशे., शत्रु । स्त्री० वैरिन । सं. तत्सम
वैशाख-सं., मास विशेष । मै.
वैशाखनन्दन-सं., गदहा (पशु) । सं. तत्सम
वैशाखी-सं., पङ्गु लोकक चलैक हेतु कृत्रिम लाठी वाला टाङ । मै.
वैंशबनियाँ-विशे., वैश्यजातिक व्यापारी । मै.
वैंस-सं., वयस, आयु । सं. तद्भव

श्म

श्मशान-सं., मरघट । सं. तत्सम
श्याम-विशे., कारी रंग एवं कारी रंगवाला । सं. तत्सम
श्रद्धा-सं., ककरो प्रति अन्तःकरणक पवित्र आस्था । सं. तत्सम
श्राद्ध-सं., मृतकक हेतु दान कर्म । सं. तत्सम
श्रद्धेय-विशे.,श्रद्धाक योग्य । सं. तत्सम
श्रम-सं., खटनी, मेहनत । सं. तत्सम
श्रमण-विशे., जातिक अभिमान छोड़ि बौद्ध सम्प्रदाय मे रहनिहार । सं. तत्सम
श्रमिक-विशे., मजदूर, बोनिहार । सं. तत्सम
श्रवण-सं., सुनैक चेष्टा । सं. तत्सम
श्रान्ति-सं., थाकनि । सं. तत्सम
श्राप-सं., शाप, अशुभ वचनक चोट । मै.
श्री-सं., शोभा, लक्ष्मी । सं. तत्सम
श्रुति-सं., वेद आ वेदांग । सं. तत्सम
श्रेष्ठ-विशे., १. पँच । २. उत्तम । ३. वयसें बहुत जेठ । सं. तत्सम
श्रोत्रिय-विशे., वैदिक आचरण कयनिहार, वेद जननिहार । सं. तत्सम
श्लाघा-सं., हार्दिक स्नेह सँ जागल मेल मिलाप । सं. तत्सम

इलील-विशे., सभ्य वचन आ कर्म । सं. तत्सम
इलोक-सं., लय आ गतिबद्ध पद्य । सं. तत्सम
शक्कर-सं., १. चीनी । २. सुखाएल (रवाकृत) गुड़ । मै.
शक्की-विशे., सन्देही । मै.
शक्ति-सं., बल, दम । सं. तद्भव
शक-सं., १. बल । २. शंका । मै.
शकट-सं., ताङागाड़ी । सं. तत्सम
शंका-सं., १. सन्देह । २. आपत्ति । ३. भय । सं. तत्सम
शंकालु-विशे., शंका कयनिहार । सं. तत्सम
शंकित-विशे., सन्देह मे पड़ल, डेराएल । सं. तत्सम
शकुन-सं., शुभ सम्भावना । सगुन । सं. तत्सम
शंख-सं., समुद्री जीवक कठोर हड्डीवाला चमड़ा । सं. तत्सम
शंखाचूड़ी-सं., शंखक बनल चूड़ी । सं. तत्सम
शत्रु-विशे., बैरी । सं. तत्सम
शत्रुता-सं., बैर । सं. तत्सम
शतक-सं., एक सै वर्षक मान । सं. तत्सम
शताब्दी-सं., एक सै वर्षक अवधि । सं. तत्सम
शतावरी-सं., जड़ी, औषध विशेष । मै.
शनि (शनैश्वर)-सं., ग्रह विशेष । मै.
शनेचरी-सं., शनि दिन कें गुरु पूजाक साविक रीति । मै.
शपथ-सं., बातक सत्यताक प्रतिज्ञा । असत्य भेने अशुभकामना । मै.
शपथ शपतान-सं., परस्पर शपथ खाइक क्रम । मै.
शब्द-सं., कान सँ सुनैवाला ध्वनि । सं. तत्सम
शबदब-क्रि., ध्वनि करब । मै.
शबदाएब-क्रि., ध्वनि कराएब । मै.
शबर-सं., भिल्ल जाति । सं. तत्सम
शमन-सं., शान्त करैक मिझबैक चेष्टा । सं. तत्सम
शय्या-सं., बिछाओन । सं. तत्सम
शयन-सं., सूतैक क्रम । सं. तत्सम
शर्म-सं., १. संकोच । २. सुख । उ./सं. तत्सम
शर-सं., वाण । सं. तत्सम
शरण-सं., आश्रय । सं. तत्सम
शरणागत-विशे., रक्षाक हेतु आश्रय मे आएल । सं तत्सम
शरद-सं., ऋतु विशेष । सं. तत्सम
शरपत-सं., धारदार पातवाला मोट डाँटक खर-हीक प्रभेद । मै.
शरबत-सं., अनेक स्वादिष्ट मसालावाला चीनी के घोरि मधुर पेय । मै.
शरम-सं., लाज । उ. तद्भव
शरमाएब-क्रि., लजाएब । मै.
शराप-सं., देखू—"श्राप" । मै.
शरापब-क्रि., शराप देब । मै.
शराब-सं., मद्य । उ. तद्भव
शराबी-विशे.,मदिरा (दारू) पीबैवाला । उ. तत्सम
शरारति-सं., उपद्रवयुक्त हँसी ठट्ठा । उ. तद्भव
शरीर-सं., अंग, देह । मै.
शल्य-सं., चीर फाड़, काँट । सं. तत्सम
शलाका-सं., काठी, काँटा । सं. तत्सम
शशि -सं., चन्द्रमा । सं. तत्सम
शस्त-विशे., प्रशंसनीय, प्रसिद्ध, सुलभ, कम दाम वाला । मै.
शस्तौआ-विशे., कम दामवाला । मै.
शहतीर-सं., कोठाक छतक आधार स्वरूप मोट सक्कत आ नमहर काठ । मै.

शा

शाक-सं., १. वर्षक नाम । २. साग । सं. तत्सम
शाखा-सं., १. डारि । २. (लाक्षणिक) सन्तान । सं. तत्सम
शाड़ी-सं., नारीक पहिरैक विशेष प्रकारक नूआ । मै.
शान्त-विशे., चैन भेल । मिझाएल । सं. तत्सम
शान्ति-सं., निचैनी । सं. तत्सम
शान-सं., गौरव, ठाट बाट, दर्प । उ. तद्सम
शाप-सं., देखू—"श्राप" । सं. तत्सम
शापित-विशे., शरापल । सं. तत्सम
शाब्दिक-विशे., १. शब्दशास्त्र जनैवाला । २. शब्द सँ कहल । सं. तत्सम
शाल-सं., धरातल मे (भूमि मे) गड़ल हड्डी (जीवाश्म) आदि अपवित्र वस्तु एवं गाछ आदिक जड़ि । मै.
शाल-सं., ओढ़ैक लेल विशेष प्रकारक ओढ़ना । अं. तद्भव

शालब-क्रि., लकड़ी कें काटि छीलिकय काज आ वस्तुक योग्य बनाएब। मै.
शाला-सं., कुटी, घर, फूसक घर। सं. तत्सम
शालि-सं., फसिल, सस्य, जजात। सं. तत्सम
शाली-विशे., १. विशिष्ट गुणवाला। २. पत्नीक छोटि बहिन। सं. तत्सम
शावर मन्त्र-सं., आदिवासीक प्राचीन कालक सिद्ध मन्त्र। मै.
शासक-विशे., शासन (हुकूमति) कयनिहार, संविधानक रक्षक, राजा। सं. तत्सम
शासन-सं., नियमक बन्धन। हुकूमति राजकीय संविधान। सं. तत्सम
शाहखर्ची-विशे., बनेर अनावश्यक खर्च कयनिहार। मै.
शाही-विशे., साम्राज्यक वस्तु, राजकीय सम्बन्ध वाला। उ. तत्सम
शाही-सं., शल्लकी, नमहर काँटवाला रोइआँ भरल जानवर। मै.

शि

शिक्षक-विशे., शिक्षा देनिहार। सं. तत्सम
शिक्षण-सं., पढ़ौनी। सं. तत्सम
शिक्षा-सं., दृश्य अदृश्य ज्ञानक अर्जन ज्ञान विज्ञानक बोध। सं. तत्सम
शिक्षित-विशे., पढ़ल लिखल। सं. तत्सम
शिकार-सं., हिंसक पशुक मारैक कलापूर्ण मनोरञ्जन। घात। मै.
शिकारी-विशे., शिकार खेलयनिहार। मै.
शिखा-सं., १. आगिक धधरा। २. दीपक रासि। ३. माथक टीक। सं. तत्सम
शिड़नी-सं., उपाति, सिदहा। उ. तत्सम
शिताएब-क्रि., शीत (ओस) सँ भीजब। मै.
शिताहल -विशे., शीत भरल। मै.
शिया-सं., मुसलमानक एक सम्प्रदाय। उ. तत्सम
शियार-सं., गीदड़। शृगाल। मै.
शिर-सं., माथ। सं. तद्भव
शिरमा-सं., सुतै मे माँथ दिशक स्थान। मै.
शिरमौर-सं., माथ परक मुकुट, मुरेठा। पाग। मै.
शिरशिराएब-क्रि., अधिक जाड़ सँ विकल होएब। मै.
शिरहर-सं., शुभकाल मे शिर पर राखल मंगल घट। मै.
शिरहर प्रणामी (सलामी)-सं., मंगल घट आ कुल देवता लग दैवाला द्रव्य (मुद्रा)। मै.
शिरहौना/शिरहौनी-सं., माथ तर रखैक साधन, तकिया, गेरुआ। मै.
शिराएब-क्रि., सीर पकड़ब, शिरा बढ़ब। मै.
शिराह-विशे., शिरा भरल, पैघ सीरवाला। मै.
शिरुआ-सं., जूड़शीतल। मै.
शिल्क-सं., रेसमी कपड़ा। अं. तत्सम
शिल्ल-सं., बड़का मोट काठ (गाछ) क अंश। (टुकड़ा)। मै.
शिल्ला-सं., छोट मोट पाथर वा लकड़ीक टुकड़ा। मै.
शिल्ली-सं., १. पक्षी विशेष। २. ओसाओल धानक नामानामी ढेरी। मै.
शिलतोड़-विशे., परस्पर स्नेह सद्भाव कें नष्ट करैवाला। मै.
शिलशिला-सं., क्रम, ढाठी, परम्परा। मै.
शिला-सं., पाथरक बड़का टुकड़ा, पाषाण खण्ड। सं. तत्सम
शिलौट-सं., शिलाखण्डक बनाओल मसाला आदि लोढ़ी सँ पीसैक योग्य पाथरक पट्टा। मै.
शिव-सं., १. महादेव। २. कल्याण। मै.
शिवदूती-सं., देवी शक्ति। मै.
शिव निर्माल्य-सं., (लाक्षणिक) व्यवहार मे अयोग्य दोषावह। मै.
शिवराति-सं., शिव पार्वतीक विवाहक पर्ववाला राति। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी। मै.
शिवालय-सं., शिवमन्दिर, शिवक उपासनाक स्थल। सं. तत्सम
शिविर-सं., खेमा, कैम्प, अस्थायी कृत्रिम वास। सं. तत्सम
शिवोत्तर-सं., शिव पूजाक व्यवस्था हेतु शिवमन्दिर मे देल धन आ भूमि। सं. तत्सम
शिशियाएब-क्रि., शीतकार करब, मुह सँ शी शी शब्द करब। मै.
शिशिर-सं., ऋतु विशेष, बसात सँ उत्पन्न जाड़क समय। मै.

शिष्ट-विशे., सभ्यता आ विनयशीलता भरल लोक। सं. तद्भव

शिष्टता-सं., विनय, विवेक आ सभ्यता भरल गुण। सं तद्भव

शिष्टाचार-सं.,विवेक। विनय भरल सभ्य व्यवहार। सं. तत्सम

शिष्य-विशे., चेला। छात्र। सं. तत्सम

शिहाएब-क्रि., अपन उत्तम वस्तु देखाकय अनका सेहन्ता आ लोभ जगाकय दुखी बनाएब। मै.

शी

शी !!-अव्यय, अनका चुप रहैक संकेत शब्द। मै.

शीघ्र-अव्यय, झवसन, जल्दी। सं. तत्सम

शीघ्रता-सं., अगुताइ। जल्दीबाजी। सं. तत्सम

शीटशाट-सं., सजबैक प्रक्रिया, प्रसाधन। मै.

शीत-सं., १. ओस विन्दु, ठन्ढा (गुण)। विशे., २. ठन्ढापन भरल। सं. तत्सम

शीतकाल-सं., जाड़क मास। सं. तत्सम

शीतल-सं./विशे., ठन्ढा। स. तत्सम

शीतला-सं., मैया, देवी विशेष। सं. तत्सम

शीरक-सं., तूर भरल ओढ़ना, तुराइ, रजाइ। मै.

शीरा-सं., १. गृह देवताक कल्पित स्थान। २. छागरक मूड़ा। मै.

शीरा आगू-अव्यय, कुल देवीक आगाँ में। मै.

शील-सं., नीक स्वभाव आ गुण। सं. तत्सम

शीलहरण-सं., महिलाक स्त्रीत्वक अपमान, बलात्कार। सं. तत्सम

शीशी-सं., काचक बनल गोलायम आ नाम छोट पैंध वासन। मै.

शीस-सं., माथ। हि. तत्सम

शीस झुकाएब-क्रि., माथाँ नमाएब, प्रणाम करब। मै.

शु

शुक्र-सं., १. दिन विशेष। २. ग्रह विशेष। ३. वीर्य। मै.

शुक-सं., १. पौराणिक मुनि। २. सुग्गा। सं. तत्सम

शुग्गर-सं., धिनाओन हिंसक पशु विशेष। शूकर। सं. तद्भव

शुचि-विशे., पवित्र। सं. तत्सम

शुचि आचार-सं., पवित्र आचरण। सं. तत्सम

शुँठियाएब-क्रि., भूख पियास कष्ट सँ शरीरे सुखा जाएब। मै.

शुद्ध-विशे., १. स्वच्छ, पवित्र। २. शुभ कार्य करैक समय, लगन। सं. तत्सम

शुदि-सं., मासक इजोरिया पच्छ। मै.

शुभ-सं., मंगल, कल्याण। सं. तत्सम

शुभाशीः-सं., मंगल होइक आशीर्वाद। सं. तत्सम

शुभाकांक्षा-सं., कल्याण कामना। सं. तत्सम

शुष्क-विशे., सुखाएल। सं. तत्सम

शू

शूक-सं., अत्यन्त मेहीं भोंकाइवाला नाम पदार्थ। सूँघ (धानक दाना परक सूँघ)। सं. तत्सम

शूट-विशे., १. घाइल, आहत। अं. तत्सम

शूँठि-सं., शोधल आ सुखाएल आद। मै.

शूद्र-सं., सेवावृत्तिवाला वर्ग, जाति। सं. तत्सम

शून्य-विशे., खाली, रिक्त मै.

शून्यता-सं., खालीपन। मै.

शूप-सं., फटकै झाड़ैवाला बाँसक बीनल गोल चाकर वासन। मै.

शूर-विशे., साहसी। सं. तत्सम

शूरवीर-विशे., साहसी लड़ाकू। सं. तत्सम

शूल-सं., १. अस्त्र विशेष। २. व्यथा। सं. तत्सम

शूलबाहि-सं., व्यथाक संग आँओंवाला मल। मै.

शृ

शृङ्ग-सं., १. पहाड़क शिखर। २. मालजालक माथ परक नाम हड्डी। सं. तत्सम

शृङ्गार-सं., १. सजावट, मण्डन। २. साहित्यिक (काव्य) क रस विशेष। मै.

शृङ्गारहार-सं., सिंहारक फूल। सं. तत्सम

शे

शेष-सं., अनन्त नाग। विशे., बचल, बाँकी। सं. तत्सम

शै

शैली-सं., १. ढाठी, ढंग। २. (लाक्षणिक) प्रेरणा। सं. तत्सम

शो

शो-सं., देखाओ। अं. तत्सम

शोक-सं. आन्तरिक पीड़ा। सं. तत्सम

शोख-विशे., घमण्डक द्वारें उद्दण्ड आ अशिष्ट । उ. तत्सम
शोग-सं., हार्दिक पीड़ा । सं. तद्भव
शोगाएब-क्रि., शोग सँ भरल रहब । मै.
शोच-सं., दुख सँ भरल समस्याक विचार । मै.
शोचना-सं., हरदम शोचैक क्रम । मै.
शोचब-क्रि., दुख आ समस्याक विषय मे विचार करब । मै.
शोथ-सं., अंगक स्वतः फूलि जाइक दोष । मै.
शोध-सं., १. कोनो वस्तु कें विकारहीन बनबैक प्रक्रिया । २. कोनो विषयक रहस्य वा तत्व कें प्रकाश मे अनैक चेष्टा । सं. तत्सम
शोधब-क्रि., १. परिस्कृत करब । २. सत्यानाश करब । सं. तत्सम/मै.
शोफा-सं., कोठाक परिसरक साज सज्जा । अं. तत्सम
शोफासेट-सं., विश्रामप्रद गद्दीदार पैंघ कुर्सी । अं. तत्सम
शोभा-सं., कान्ति, छवि लावण्य, सौन्दर्य । सं. तत्सम
शोभायमान-विशे., शोभित होइत । सं. तत्सम

शौ

शौँख-सं., वासनामय भावना । मै.
शौँख मनोरथ-सं., वासना पूर्तिक अभिलाषा । मै.
शौच-सं., मलत्यागक उपरान्त शुद्धीकरण । सं. तत्सम
शौचालय-सं., मलत्यागक स्थान । अंगक परिष्कारक घर । पैखाना । सं. तत्सम
शौँट-सं., १. संक्षेपण । २. झटका । अं. तत्सम
शौर्य-सं., युद्ध करैक साहसिकता आ निपुणता । सं. तत्सम
शौरा-सं., माछ विशेष । मै.

ष

षट्-सं., छ संख्या । सं. तत्सम
षट्कर्मी-विशे., पूजापाठ सम्बन्धी अनेक कर्मक नियम रखैवाला । मै.
षटरस-सं., छबो रसवाला अँचार । मै.
षटराग-सं., स्नेह आवेसक लोक देखाओ । मै.
षटरास-सं., नियम निष्ठाक केवल आडम्बर । मै.
षड़ङ्ग-विशे., छ अंगवाला वेद । सं. तत्सम
षड्ज-सं., संगीतक सातो स्वर मे पाँचम 'प' स्वर । सं. तत्सम
षड्ंश-सं., छठम अंश, प्राचीन राजाक कर । छठमी हिस्सा । सं. तत्सम
षष्ठ-विशे., छठम । सं. तत्सम
षष्ठिका/षष्ठी-सं., १. बाल कल्याणकारिणी देवी । २. पक्षक छठम तिथि । सं. तत्सम

षो

षोड़शी-विशे., विशेष लक्षणयुक्त सोलह वर्षक युवती । सं. तत्सम
षोड़शाब्दी-सं., सोलह वर्षक अवस्थाक प्रसव । सं. तत्सम

स

स्कन्द-सं., पार्वतीक पुत्र, कार्तिकेय । मै.
स्कन्ध-सं., कन्धा, कन्हा । सं. तत्सम
स्कार्ष-सं., बालचर सैनिक सबक चिह्न स्वरुप वस्त्र खण्ड । अं. तत्सम
स्खलन-सं., अपन स्थान सँ पिछड़ब । सं. तत्सम
स्तन-सं., नारीक छातीक विशेष अंग । थन । सं. तत्सम
स्तव-सं., प्रशंसा वाक्य । सं. तत्सम
स्तुति-सं., देखू—"स्तव" । सं. तत्सम
स्तोत्र-सं., देवताक प्रसन्नताक हेतु महत्त्वक वाक्य । सं. तत्सम
स्थान-सं., ठाम । सं. तत्सम
स्थानीय-विशे., अपन क्षेत्रवाला । सं. तत्सम
स्थावर-विशे., १. बूढ़, नै चलै फिरैवाला । २. अचल रहैवाला पदार्थ । सं. तत्सम
स्थिति-सं., हालि, हालत, अवस्था, रहैक ठेकान । सं. तत्सम
स्थिर-विशे., चञ्चलतारहित । सं. तत्सम
स्थूल-विशे., अत्यन्त मोट सोंट । सं. तत्सम
स्नपन-सं., देवता पर जल आदिक ढार धारा । सं. तत्सम
स्नान-सं., नहाएब । सं. तत्सम
स्नेह-सं., निःस्वार्थ हार्दिक प्रेम । सं. तत्सम
स्नो-सं., १. शीतल सुरभित शृङ्गारक उपयोगी मुहक लेप । २. बर्फ । अं. तत्सम

स्पष्ट-विशे., स्पष्ट । साफ । सं. तत्सम

स्पष्ठीकरण-सं., बेकछाकय प्रकाशन । सं. तत्सम

स्मरण-सं., सुमिरन, सुधि । सं. तत्सम

स्मृति-सं.,१. स्मरण । २. मानव धर्मक मूल ग्रन्थ । सं. तत्सम

स्याख-सं., दुष्टतापूर्ण बातक उघारि । मै.

स्यार-सं., शियार । मै.

स्याह-सं., जमलकारी रंग । मै.

स्याही-सं., १. रोसनाइ । २. तासक कारी पानक पत्ती । मै.

स्यौँ-सं., सेब फल । काश्मीरी फल । मै.

स्रवित-विशे., चूअल । सं. तत्सम

स्राव-सं., चूऐक गति क्रम । सं. तत्सम

स्व-सर्व., अपन । अपनै आप । सं. तत्सम

स्वगत-अव्यय, अपनै आप । सं. तत्सम

स्वच्छ-विशे., चिक्कन, साफ, उज्जर । सं. तत्सम

स्वतः-अव्यय, अपनै आप, स्वभावैं । सं. तत्सम

स्वप्न-सं., निद्रा एवं निद्रा मे चरित्र दर्शन । सं. तत्सम

स्वप्नदोष-सं., सूतल (निन्न) मे सपना सँ वीर्य्यपातक क्रम । सं. तत्सम

स्वभाव-सं., प्रकृति । सं. तत्सम

स्वयम्-अव्यय, अपनै । सं. तत्सम

स्वर्ग-सं., देवलोक । मै.

स्वर्गीय-विशे., स्वर्ग मे रहनिहार । सं. तत्सम

स्वर-सं., १. मुह आदिक विशिष्ट ध्वनि । २. व्यंजन अक्षरक उच्चारण सहायक मात्रा वर्ण (अ, आ इत्यादि)। ३. वेद एवं संगीतक भास । ४. सा रे ग म······सातो स्वर । सं. तत्सम

स्वरस-सं., अपन मन्तव्य, विचारक ध्वनि । सं. तत्सम

स्वरूप-सं., वर्ग, आकार । सं. तत्सम

स्वस्ति-सं., शुभकामना । सं. तत्सम

स्वस्तिक-सं., कल्याण सूचक चिह्न । सं. तत्सम

स्वस्थ-विशे., नीरोग । सं. तत्सम

स्वांग-सं., कपट रूप । सं. तत्सम

स्वागत-सं., प्रशंसनीय आदरणीय आगमन । सं. तत्सम

स्वाती-सं., नक्षत्र विशेष । मै.

स्वाद-सं., रस रुचि । सं. तत्सम

स्वादिष्ट-विशे., नीक स्वादवाला । सं. तत्सम

स्वामी-विशे., १. पति । २. अधिकारी । सं. तत्सम

स्वार्थ-सं., अपन प्रयोजन । सं. तत्सम

स्वार्थी-विशे., अपने काज टा सँ प्रयोजन रखैवाला । सं. तत्सम

स्वास्थ्य-सं., आरोग्य । स. तत्सम

स्वीकार-सं., गछनाइ, मंजूरी । सं. तत्सम

स्वास-सं., जीव मात्रक नाक वा मुह द्वारा वायुक आकर्षण विकर्षण । श्वास । सं. तत्सम

स्वाहा-सं., होम मे आहुतिक समर्पण शब्द । सं. तत्सम

सइ-सं., गुप्त प्रेरणा । मै.

सक्कत-विशे., अत्यन्त कठिन, कठोर । मै.

सक्रिय-विशे., अपन उद्यम, चेष्टा आ व्यापार सँ भरल । सं. तत्सम

सक्षम-विशे., समर्थ, काजक योग्य । सं. तत्सम

सक-सं., बल, सामर्थ्य, शक्ति । मै.

सकचून-विशे., नीक जकाँ चूरल (सरस वस्तु लेल) । मै.

सकठे-अव्यय, सगरो । मै.

सकतगर-विशे., अधिक सक्कत, कठगरसन । मै.

सकदम-विशे., भय आ विस्मय सँ चेष्टाहीन । मै.

सकनाचूर-विशे., (सुखाएल वस्तु ले) नीक जकाँ चूरल । रत्ती रत्ती चूर्ण बनल । मै.

सकब-क्रि., काज मे शक्ति होएब । मै.

सकबक किछु नै चलब-क्रि., किछु करैक हेतु अपन चेष्टा नहि रहब । सब प्रकारें बाधा रहब । मै.

सकबेध-सं., सक्कत क' क' घेरा, घैरन । मै.

सकबेधब-क्रि., सक्कत सँ घैरन (बेढ़) देब । मै.

सकरकन-सं., अल्हुआ । मै.

सकरता-सं., सामर्थ्य । मै.

सकरब-क्रि., कोनो कार्य मे उत्साह आ बल लगाएब । मै.

सकराँति-सं., संक्रान्ति । सं. तद्भव

सँकरी-विशे., संकुचित पातर छोट संकीर्ण । मै.

सकरौड़ी-सं., बुनिया आ मेवादय बनाओल विशेष दूधक विन्यास । मै.

सकल-विशे., सम्पूर्ण, अशेष। सबटा। सं. तत्सम
संकलन-सं., संग्रह, एकट्ठा करैक भाव। सं. तत्सम
सक लागब-क्रि., बल जागब, शारीरिक शक्ति होएब। मै.
सकलारिष्ट-सं., सब दोषक नाशक हेतु दान विधि। सं. तत्सम
सकलुच्ची-विशे., चंचलता भरल उकठ करैवाला बच्चा। मै.
सकसकाएब-क्रि., १. सक्कत भ' क' भरि जाएब अथवा बैसि जाएब (मुनना आदि)। २. स्तब्ध भ' जाएब। ३. आलसें असंचै करब। मै.
सकसब-क्रि., निमुन भ' जाएब, सक्कत सँ भरब। मै.
सकार-सं., स्वीकार, गछनाइ। मै.
सकारब-क्रि., मानब, स्वीकार करब। मै.
सकाल-सं., सवेर, सूर्य्योदयक उपरान्तैक काल। मै.
सकिजा-सं., कमारक अस्त्र विशेष। लोह कें आ काठ कें सक्कत करैक यन्त्र। मै.
सकुचब-क्रि., लाजधाख सँ मन आ शरीर सँ समटि जाएब। ताप, बसात आ रगड़ सँ संकुचित भ' जाएब। घोकचि जाएब। मै.
सकुचाएब-क्रि., लजाएब। मै.
संकुचित-विशे., लजाएल, घोकरियाएल। मै.
संकेत-सं., गुप्त विशेष चेष्टा, इसारा। सं. तत्सम
सकेत/सकेस-विशे., सिकस्त, संकीर्ण, छोट स्थान। मै.
संकोच-सं., लाज, धाख। अं. तत्सम
संकोचित-विशे., लाजधाखक योग्य लोक। सं. तत्सम
सकोरा-सं., छाँछक आकारक अत्यन्त छोट माटिक वासन। सरबा। हि. तद्भव
संख्या-सं., गिनतीक अंक। सं. तत्सम
सँखरी-विशे., उपहँत, अपैत। मै.
सखा-विशे., संगी, मित्र। सं. तत्सम
सखापात-सं., सन्तान, शाखा पत्र। सं. तद्भव
सखारी-सं., वस्तुजात रखै लेल हाथक बीनल बाँसक काइमवाला पौतीसन पँघ वासन। मै.
संखिया-सं., महाविषक द्रव्य। मै.
सखी-विशे., स्त्री मित्र। मै.
सँखुआ-सं., साल वृक्ष। मै.
संग्रह-सं., सञ्चय, एकट्ठा करैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम
संग्रहणी-सं., पेटक रोग विशेष। सं. तत्सम
संग्रही-विशे., सञ्चय (जमा) करैक प्रवृत्तिवाला। सं. तत्सम
संग-सं., सहगमन, मन वचन कर्म सँ सहयोग। मै.
संगठन-सं., दलक एकता। सं. तत्सम
संगति-सं., मेलजोल, सहवास। सं. तत्सम
संगम-सं., मिलान, प्रणय मिलान। सं. तत्सम
संगमर्मर-सं., उज्जर पाथर विशेष। मै.
सगवगाएब-क्रि., चेतना भरल होएब, संचार करब। मै.
सगवगी-सं., सञ्चार। मै.
संगसंग-अव्यय, एक लागल। मै.
सगर-विशे. सम्पूर्ण, सकल। भरि। मै.
सगरे/सगरो-अव्यय, सबठाँ, सर्वत्र। मै.
सगबा-विशे., साग खाकए मर्य्यादा रखैवाला। मै.
सगहा-विशे. निरामिष भोजन करैवाला। मै.
सगही-विशे., सगाइ (पुर्नविवाहवाली) पत्नी। मै.
सगाइ-सं., सम्बन्ध, पुर्नविवाह। मै.
सगाही-विशे., देखू—"सगही"। मै.
संगी-विशे., सहचर मित्र। मै.
संगीत-सं., साजबाजक संग ताल लय पर गाओल जाइत गीत। सं. तत्सम
सगुन-सं., शुभ भावीक लक्षण। मै.
सगुन बान्ह-सं., बरेड़ी पर चार (घरक ठाठ) चढ़ौलाक उपरान्त लागि धरबैले देम'वाला पहिल बन्धन। मै.
सगुनियाँ-विशे., शुभ लक्षणवाला। मै.
सगून-सं., शुभ कार्यक सहयोगी पसारी कें पहिनै दै वाला किछु द्रव्य। मै.
सगोत्र-विशे., एक गोत्रवाला। सं. तत्सम
सगोवगो-विशे., मनोरञ्जक भयंकर रूप ध' क' भिक्षाटनक व्यवसायी। मै.
संघटन-सं., ओरिआओन कय जमा करैक व्यापार। चेष्टा। सं. तत्सम

सँघाती-विशे., १. यात्राक दल मे रहैवाला, भेरिया। २. पटि बीनैक परतानक छेदक व्यास। मै.

सङ्क सुख वनारस-लोकोक्ति, संगी रहने वनारस घूमैक आनन्द भ' सकैये। संगीक महत्त्व। मै.

सङ्तुरिया-विशे., एके वयसक संगी। मै.

सङबँ-विशे., संग संग रहनिहार। मै.

सङभार-सं., बिदागरी मे कन्या वा वरक संग जाइ वाला सोगाइत, उपहार। मै.

सङसङ-अव्यय, एकै संग। मै.

सङिता-विशे., एक वयसक अभिन्न मित्र। मै.

सङितास-सं., एक वयसक मित्रक संग परस्पर हँसी ठट्ठा। मै.

सङितारय-सं., सङ्गीक भाव। मैत्री। मै.

सङीन-विशे., सब विधियें वृत्त। सन्नद्ध। मै.

सच्चा-विशे., सत्य कें पसिन्न कयनिहार। मै.

सचढ़-विशे., उचित ढंग सँ झटदय काज करैक अवगतिवाला। मै.

संचब-क्रि., जमा करब। संग्रह करब। मै.

संचमंच-विशे., धैर्यपूर्वक स्थिर। मै.

संचय-सं., जमा, एकट्ठा, संग्रह। सं. तत्सम

संचर लागब-क्रि., तेजी सँ कोनो पाठ पढ़ै मे भ्रम सँ कतौ सँ कतौ पढ़ऽ लागब आ विच्चहि मे बिसरि जाएब। मै.

संच रहब-क्रि., स्थिर रहब, उछलकूद नै करब। मै.

संचार-सं., सगवगी, चेतना, अंगक चलन। सं. तत्सम

सचार लागब-क्रि., खाद्य एवं आनो वस्तुक विशिष्ट व्यक्तिक आगू सीटल सजाओल राखल रहब। मै.

सचिव-विशे., निकटवर्ती विचार विमर्श करैवाला। सं. तत्सम

सचेत करब-क्रि., सावधान करब, चेता देब। मै.

सज्जन-विशे., नीक लोक, विवेकशील। सं. तत्सम

सज्जित-विशे., सिंगारल, पहिरि ओढ़िकय महोमहा बनल। सं. तत्सम

सज्जी-सं., वस्त्र सँ मैल झाड़ैवाला रासायनिक पदार्थ। मै.

सजग-विशे., सावधान। मै.

सजन-विशे., प्रणयी, प्रियतम। स्त्री० सजनी। मै.

सजब-क्रि., बनि ठनिकय आ छीलि छालिकय सुन्दर बनब आ सुन्दर चिक्कन करब। मै.

सजबी-विशे., शुद्ध दूधक दही। मै.

सजमनि-सं., लत्तीवाला व्यञ्जन विशेष। मै.

सजमनियाँ-विशे., सजमनिक आकार प्रकारवाला। मै.

सजल-विशे., १. जल भरल। २. चिक्कन कयल। मै.

सजाएब-क्रि., अलंकृत करब। सुन्दर बनाएब। मै.

सजाओट-सं., सजबैक गुण, विशेषता। मै.

सजाओन-सं., सजबैक काज। मै.

संजाप-सं., कपड़ाक आँचर मे जोड़ल अलंकारक विशेष वस्तु। मै.

सजीला-विशे., नीक जकाँ चिक्कन आ अलंकृत। मै.

सजै-सं., दण्ड। उ. तद्भव

सजौआ-विशे., सजबैक योग्य। मै.

सजौड़ी-सं., सज। मै.

सझिया-विशे., अनेक पट्टीदारक अंशवाला। मै.

सझियासाझ-सं., सब हिस्सेदारक अधिकार। मै.

सँझिला-विशे., चारि मे तेसर सन्तान। मै.

सँझुका-विशे., साँझुक पहरवाला। मै.

सँझौती-सं., साँझ समयक काज। साँझुक वेरक दीप। मै.

सट्टा-सं., टाट फरक कें ठाढ़ आ सक्कत रखैवाला खुट्टा। मै.

सट्टोपार-सं., (लाक्षणिक) जेना टाटक संग सट्टा समेत चोरा लैत अछि तेना एकक संग सब कथुक चोरि। मै.

सटकन-सं., पातर आ नमहर छौंकी। मारैक डन्टा। मै.

सटकब-क्रि., १. भय सँ नुका जाएब। भीतर मे छिपि जाएब। २. सिकुड़ब। मै.

सटक सीताराम-लोकोक्ति, तुरन्त भय सँ नुकाजाइक प्रवृत्ति। मै.

सटका-सं., मारैवाला लचलच पातर डन्टा। मै.

सटकाएब-क्रि., तुरन्त समेटिकय नुका लेब। मै.

सटका लागब-क्रि., अनवधान मे नाम आ पातर वस्तुक (डन्टा) क झटका सँ चोट लागब। मै.

सट द'-अव्यय, अलक्षित रूपें तुरन्त । मै.
सटपट-अव्यय, लगले । मै.
सटब-क्रि., कोनो वस्तु मे भीरिकय लागि जाएब । सक्कत सँ भीरि जाएब । मै.
सटमसट-विशे., एक दोसरा सँ संकीर्ण भ' क' लागल । मै.
सटहा-विशे., अत्यन्त दुब्बर पातर । मै.
सटाएब-क्रि., कसिकय लागि कराएब । मै.
सटाक द'-अव्यय, लचलच पातर वस्तु सँ मारैक क्रमें अचूक भ' क' । तुरन्त आ लगले । मै.
सटान सटब-क्रि., नहि छूटैवाला लागि धरा भीरब । मै.
सटिया-विशे., खुशामदें हरदम आगू पाछू लागल रहनिहार । मिलुआ । मै.
सटीक-विशे., अचूक, निश्चित लक्ष्य पर ठीक बैसैवाला, लागू होम'वाला । मै.
सटुआ-विशे., साटिकय, अलग सँ लागि धराकय दुरुस्त भेल । मै.
सटुआ साट-विशे., यत्र तत्र चेफरी (अलग) सँ जोड़ल खण्ड सँ कोनो प्रकारे निमहैवाला । मै.
सठब-क्रि., समाप्त होएब, नष्ट होएब, निँघटि जाएब । मै.
सठाएब-क्रि., निँघटाएब, समाप्त करब । मै.
सठि जाएब-क्रि, हीन भ' जाएब । ध्वंस होएब । मै.
सठियाएब-क्रि.,साठि वर्षक आयुक गुण भ' जाएब । साठिक लगभग वयस भ' जाएब । मै.
सड़क-सं., राजपथ । देशज
सड़किया-विशे., सड़कक रक्षक एवं सड़क परक बट्टी (कर) लेनिहार । मै.
सड़ना-विशे., अधिक सड़ैक प्रकृतिवाला । मै.
सड़ब-क्रि., दुर्गन्ध भरि विकृत होएब । मै.
सड़र-सं., सुगन्धित, काठक धूपवाला हिमालयीय वनस्पति विशेष । मै.
सड़रा-सं., दीर्घकाल धरि चलैवाला विवाद । मै.
सड़लहा-विशे., विकृत बनलहा । मै.
सड़लाही-विशे., अत्यन्त विकृतवाला । मै.
सड़सी-सं., लोहक पातर डंटा मे चुट्टा आगू मे दूनू जोटल आ वर्तन पकड़ै जोग मोड़ल वस्तु । मै.
सड़ाइन-विशे., सड़ल वस्तुक जकाँ दुर्गन्ध तथा सड़लसन भेल । मै.
सड़ाएब-क्रि., विकृत बनाएब, दूषित करब । मै.
सड़ाक द'-अव्यय,उपर दिश तेज वेग सँ । प्रयोग–"कल लगाकय पोखरिक पानि सड़ाक द' खींचि लेलकै ।" मै.
सड़ाठी-विशे., सड़ल जाइवाला । मै.
सड़ारि-सं., अधिक दिनुक विवाद । मै.
संड़ास-सं., मलत्यागक हेतु बनल गहींर गड्ढा । मै.
सड़ी-सं., लोहक वा काठक छोट छोट काटल टुकड़ा । मै.
सड़ुआ-विशे., सड़ल रहैवाला । मै.
सड़ुकी-सं., भेट (जल लत्ती) क कन्द । मै.
सड़ेरा-सं., गाछ वृक्षक नव चलल नाम आ पातर पँघ डारि । मै.
सड़ौआ-विशे., सड़ैवाला अथवा सड़बैवाला । मै.
सँढ़हा-सं., साँढ़ (अनादर मे) । मै.
सण्ठी-सं., पटु आदि गाछक निःसार डाँट । मै.
सत्त-सं., सत्य । सं. तद्भव
सत्तरि-संख्या, शून्य एकाँइ सात दहाँइक अंक । मै.
सत्ता-सं., अधिकारक प्रभुता, शासन । सं. तत्सम
सत्ताइस-संख्या, सात एकाँइ दू दहाँइक अंक । मै.
सत्ती-विशे., सत्य रखैवाला । मै.
सत्तु-सं., गुड़ीच आदि सँ बहराएल तत्व । मै.
सत्तू-सं., सातु । मै.
सत्ते-अव्यय, सत्यपूर्वक । मै.
सत्तें-अव्यय, सात गुनें । प्रयोग–"दू सत्तें चौदह ।" मै.
सत्य-सं., यथार्थ बात । परमार्थ । असल । सं. तत्सम
सत्यदेव-सं., सत्य स्वरूप महान देवता । मै.
सत्यवादी-विशे., सत्ये टा बजैवाला । सं. तत्सम
सत्यसन्ध-विशे., सत्य प्रतिज्ञा करैवाला । सं. तत्सम
सत्यानाश-सं., सब विधियें विनाश । मै.
सत्यापन-सं., उच्चाधिकारी सँ सत्य बनाओल विषय प्रमाणित । सं. तत्सम

सत्र-सं., प्रतिवर्ष व्यस्थित काजक आरम्भ करैक समयक मान। मै.

सत्रह-सं., सात एकाँइ एक दहाँइक अंक। मै.

सत्संग-सं., नीक, सज्जन आ पैघ लोकक सहवास। सं. तत्सम

सत्व-सं., १. जीव। २. गुड़ीच आदि औषधीय वस्तु सँ जमाओल सार पदार्थ। सं. तत्सम

सत-सं., प्रतिज्ञा। प्रयोग—"सत करू तखन कहब।" मै.

सत करब-क्रि., प्रतिज्ञा करब। मै.

सतगजा-विशे., सात गज (माप) वाला। मै.

सतजुग-सं., चारि युगक प्रथम युग, सत्ययुग। मै.

सतत-अव्यय, हरदम, सब काल। सं. तत्सम

सतधी-विशे., सौतिनिक बेटी। मै.

सतपुतिया-विशे., सातटाक झाबावाला। मै.

सतपुतोहु-विशे., सतौतक पत्नी। मै.

सतब-क्रि., दोसराक द्वारा पीड़ित होएब। मै.

सतबधि-सं., आपस मे कयल प्रतिज्ञा। लगाओल बाजी। बरजीत। मै.

सतबन्ती-विशे., सत्य पर चलैवाली। मै.

सतबन्हा-विशे., सात टा बन्धनवाला। मै.

सतबरिता-विशे., एक पतिक सत्यव्रत रखैवाली। मै.

सतभतरी-विशे., (गारि) सात टा भतार (पति) करैवाली। मै.

सतमस्सू-विशे., सातमे मासक गर्भक जनमल बच्चा। मै.

सतमाय-विशे., विमाता, मायक सौतिन। मै.

सतरकी-सं., शीघ्रता, जल्दीबाजी। मै.

सतरब-क्रि., काजक सम्हरब। मै.

सतरा-सं., धानक प्रभेद। मै.

सतरिया-सं., मेहीं, सुगन्धित धानक प्रभेद। मै.

सतसइ-विशे., सात सैक मानवाला। मै.

सतसासु-विशे., पति वा पत्नीक सतमाय। मै.

सतसीहनि-सं., सेहन्ता पुरबैक निष्फल उत्कण्ठा। मै.

सतह-सं., धरातल। उ. तत्सम

सतहत्तरि-संख्या, सात एकाँइ सात दहाँइक अंक। मै.

सतहत्थी-विशे., सात हाथवाला। मै.

सताएब-क्रि., शोषण करब, पीड़ा देब। मै.

सतावन-संख्या, सात एकाँइ पाँच दहाँइक अंक। मै.

सतारब-क्रि., क्रमशः काज सम्पन्न करब। मै.

सतारि लाधब-क्रि., सात दिनधरि लगातार बदरी (वर्षा) होएब। मै.

सतालू-सं., फल विशेष। मै.

सतासी-संख्या, सात एकाँइ आठ दहाँइक अंक। मै.

सतिया-सं., स्वस्तिक चिह्न। मै.

सती-विशे., पतिक सहगामिनी नारी। सं. तत्सम

सती-अव्यय, बदला मे। स्थान मे। प्रयोग—"चेतनक सती नेन्ना तँ नै काज करतै।" मै.

सतीत्व-सं., सती स्त्रीक धर्म, गुण, प्रभाव। सं. तत्सम

सतीत करब-क्रि., बात कें साबित करब। प्रमाणित करब। मै.

सती प्रथा-सं., पतिक संग जीवित पत्नियौक जरबैक प्रचलन। मै.

सती होएब-क्रि., पतिक मृत्यु भेने पत्नीक स्वतः प्राण त्यागब। मै.

सतुआ-सं., सातु। मै.

सतुआइन-सं., मेष संक्रान्तिक पावनि। मै.

सतौआ-विशे., सतबैवाला। मै.

सतौत-विशे., सौतिनिक बेटा। मै.

सथारब-क्रि., कनेक विश्राम क' लेब। मै.

सद-विशे., सज्जन। मै.

सदच्छन-अव्यय, सब काल। मै.

सदति-अव्यय, हरदम। मै.

सदबद-विशे., कम झोरवाला लटपटी तरकारी। मै.

सदबदी-सं., लटपटी तरकारी। मै.

सदर-सं., मुख्यालय। उ. तत्सम

सदस्य-विशे., समितिक चूनल व्यक्ति। सं. तत्सम

सदा-अव्यय, सब काल। सं. तत्सम

सदावर्त-सं., प्रतिदिन लोक के हरदम दान करैक प्रवृत्ति। मै.

सदाय-सं., मुसहर जाति। मै.

सदिखन-अव्यय, हरदम। मै.

सदी-सं., एक सै वर्षक मान, शती। सं. तद्भव

सद्दूल-सं., बहुत पैघ पक्षी विशेष । मै.
सदृश-विशे., समान । सं. तत्सम
सदै-अव्यय, सब समय । मै.
सदोबदो-विशे., पहिरना ओढ़ना समेत तीतल । मै.
सधब-क्रि., समाप्त होएब । निँघटि जाएब । मै.
सधम बधम होएब-क्रि., लेन देन बराबरि भ' क' देनक चुकता भ' जाएब । मै.
सधबा-विशे., पति जीवैवाली, सोहागिन । मै.
सधाएब-क्रि., चुकता क' देब । मै.
सधान-सं., चुकता करैक क्रम । मै.
सधुआनि-विशे., साधु बनल स्त्री । मै.
सधोरि-सं., गर्भिणीक इच्छा कयल सनेस । मै.
सधौआ-विशे., सधबैवाला । मै.
सधौआ पटैआ-सं., यावत् रीन सधे तावत् खेतक उपजा रीनक तरें लैक नियम । मै.
सधौनिहार-विशे., सधबैवाला । मै.
सन्त्रस्त-विशे., अत्यन्त डेराएल । मै.
सन्त-विशे., महात्मा । मै.
सन्तति-सं., पुत्र पौत्रादि जरोह । मै.
सन्ताँ-अव्यय, एक क्रियाक समाप्त भेला पर तुरन्त दोसर क्रियाक होइक चिह्न । प्रयोग—"हमरा गेला सन्ताँ गप्प बन्न भ' गेलै ।" मै.
सन्तान-सं., अपन आगूक पालि । मै.
सन्तानबे-संख्या, सात एकाँइ नौ दहाँइक अंक । मै.
सन्तानी बथानी-विशे., जन आ पशुधन भरल । मै.
सन्ताप-सं., आन्तरिक सोच सँ उत्पन्न दुःख । सं. तत्सम
सन्तोष-सं., धैर्य, सबूर । सं. तत्सम
सन्तोषी-विशे., धैर्य करैवाला केहनो स्थिति मे सुखी रहैवाला । सं. तत्सम
सन्तोषब-क्रि., आश्वासन दय धैर्य धराएब । मै.
सन्दिग्ध-विशे., सन्देह करैक योग्य । सन्देह मे आएल । सं. तासम
सन्देह-सं., शंका, शक, संशय । सं. तत्सम
सन्ध्या-सं., साँझ समय । सं. तत्सम
सन्धान-सं., ठेकान, पता । अन्वेषण । सं. तत्सम
सन्धि-सं., १. जोड़ । २. मेलजोल । सं. तत्सम
सन्धुकचा-सं., काठक छोट बक्सा । मै.
सन्धूक-सं., काठक बड़का मञ्जूषा । मै.
सन्न द'-अव्यय, अत्यन्त तेजी सँ । (दौड़ब, वाण चलब, क्रोध होएब अर्थ मे) । मै.
सन्न रहब-क्रि., अचानक अप्रत्याशित भय विस्मय आ शोक सँ ज्ञानशून्य होएब । मै.
सन्नावट्टा-विशे., चूरि पीसि क' एकैठाँ सब वस्तु कें मिला देल । मै.
सन्निपात-सं., कफ पित्त आ वात तीनूक उत्तेजित भेला सँ भयंकर ज्वर । सं. तत्सम
सन्नीसन्नी उड़ब-क्रि., एक एक सूतक विच्छिन्न होएब । मै.
सन्न्यास-सं., चारिम आश्रम, संसारक विषय वासना सँ वैराग्य । सं. तत्सम
सन्न्यासी-विशे., वैरागी, विषय वासना सँ मुक्त । सं. तत्सम
सन्हि फाड़ब-क्रि.,१. लोकक संकीर्णतौ मे घोंसिया-इक चेष्टा करब । २. (लाक्षणिक) विरोध जगबैक लेल छिद्र जगाएब । मै.
सन्हियाएब-क्रि., संकीर्णो स्थान मे प्रवेश करैक चेष्टा करब । छिद्र मे पैसाएब । मै.
सन-सं., पटुआक छालक तत्व, सक्कत तन्तु । शण । सं. तद्भव
सनक-सं., १. उन्माद । २. अचानक क्रोधक वेग । मै.
सनकब-क्रि., १. विक्षिप्त (बताह जकाँ) बनब । २. एकाएक तमसा उठब । मै.
सनकाह-विशे., मति विक्षेपवाला, झोंकाह, अचानक तुरन्त क्रोध क' उठैवाला । मै.
सनकिरबा-सं., कीड़ा विशेष । मै.
सनकी-सं., १. मति विक्षेप । २. एकाएक तमसा जाइक गुण । मै.
सनगीद-विशे., पूरा पूरी अत्यन्त भीजल । मै.
सनगोहि-सं., थलचर छोट जन्तु । मै.
सनटिटही-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त दुर्बल । खटनी सँ क्षीण । मै.
सनपटुआ-सं., सन उपजैवाला फसिल । मै.
सनसन करब-क्रि., १. बल आ क्रोधक गर्व आवेग मे उत्तेजित होएब । २. बरिसैक हेतु मेघक स्थिति होएब । मै.

सनसनाएब-क्रि., १. बसातक वेग सँ 'सनसन' ध्वनि होएब । २. कानक विकार सँ 'सनसन' जकाँ ध्वनिक अनुभव होएब । ३. क्रोधक उत्तेजना होएब । मै.
सनसनी-सं., १. वेगक शब्द । २. बलक घमण्ड सँ क्रोधक उत्तेजना । मै.
सनहा-सं., चोरि आदिक वार्ता । मै.
सनाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो कयल अपराध मे बल सँ दोषी बनाओल जाएब । सानल जाएब । मै.
सनातन-विशे., भूत भविष्य आ वर्तमान काल मे एके रंग रहैवाला । मै.
सनाक द'-अव्यय, अत्यन्त वेग सँ । मै.
सनाथ-विशे., सहायक संरक्षकयुक्त । मै.
सनाथ करब-क्रि., (लाक्षणिक) दूरि (नष्ट) क' देब । मै.
सनान-सं., स्नान । प्रयोग—"जनम कृतारथ एकहि सनाने ।" मै.
सनाह-सं., जाँच कय विषयक सत्यताक ज्ञान । विशे., मेहीं तन्तु भरल आम आदि फल । मै.
सनीफ-अव्यय, समीप सं. तद्भव
सनुआ-विशे., सानि कय बनाओल । मै.
सनेस-सं., उपहार, सोगाइत । सन्देश । मै.
सनैं-सं., खेत मे उपजैवाला फसिल विशेष । मै.
सनोहब-क्रि., महिस गै कें दूहिकय दूधक परिमाणक ज्ञान करब । मै.
सनौआ-विशे., सानिकय बनैवाला । मै.
सप्तमी-सं., मासक सातम तिथि । सं. तत्सम
सप्ता विपता कथा-सं., स्त्रीगण सभक चैतक पहिल दिन डोरा बन्हैक पर्व । मै.
सप्ताह-सं., सात दिनुक परिमाण सं. तत्सम
सप्पत-सं., शपथ । सं. तद्भव
सप-सं., वार्तालाप, (गप) सप । मै.
सपटा-सं., सन पटुआक सूतक बनल वस्त्र । मै.
सपठब-क्रि., १. सहायताक हेतु प्रस्तुत होएब । २. मेल लगबैक चेष्टा करब । मै.
सपठाएब-क्रि., १. दोसराक बड़दक संग मेल लगा कय जोत करै मे जोड़ा लगाएब । २. काजक हेतु सहायता ले तैयार करब । मै.
सपठैत-विशे., बड़दक जोड़ा लगाकय जोतै केर मेल रखनिहार । मै.
सपत खाएब-क्रि., शपथ करब । मै.
सपधरू-विशे., साँपक काटल विष भरल । मै.
सपना-सं., निन्द मे प्रत्यक्ष जकाँ दृश्यक दर्शन । मै.
सपनाएब-क्रि., निन्न मे भय आदि दृश्य सँ डेरा उठैक चेष्टा होएब । स्वप्न देखब । मै.
सपनौती-विशे., सपनै मे सीखल । मै.
सपनौर-सं., बिज्जी, छोट जंगली जन्तु । मै.
सपरतीब-विशे., सप्रतिभ (खिधांशक रूपें) बड़ बुद्धि भरल । मै.
सपरब-क्रि., मानसिक रूपें वृत्त होएब । मन मे ठानब । मैं.
सपहरब-क्रि., साँपक कटला सँ विष भरल होएब । मै.
सपहरा-विशे., साँप बझाकय पकड़ैवाला सपेरा । मै.
सपहा-विशे., साँपक कटने मूइल । मै.
सपहरिया-विशे., साँप मारिकय खाइवाला । मै.
सपाट-विशे., एक रंग चौरस । मै.
सपाटू-सं., फल विशेष । मै.
सपिण्ड-विशे., पिता, पितामह, प्रपितामह पर्यन्तक सम्बन्धी । मै.
सपूत-विशे., सज्जन, सुशील आ कर्तव्यनिष्ट पुत्र । मै.
सपेत-विशे., उज्जर, स्वेत । मै.
सपेता-सं., आम विशेष । मै.
सपेरा-विशे., साँप पकड़ैवाला । मै.
सपोट-सं., समर्थन । सहायता । अं. तत्सम
सफका-विशे., साफ (स्वच्छ) वाला । मै.
सफगोल-सं., इसफगोल, औषधवाला अन्न । मै.
सफर-सं., प्रवास यात्रा । उ. तद्भव
सफरब-क्रि., नेन्ना आ पशुक मल छोड़ब । मै.
सफरिया-विशे., पर्यटनक उपयुक्त । मै.
सफरी-विशे., सफरे मे काज अबैवाला । मै.
सफल-विशे., सार्थक । मै.
सफलाइ-सं., वस्तुजात व्यवस्थित कय वा हटाकय स्थानक स्वच्छता । मै.
सफली-सं., फल विशेष, अनानास । मै.
सफा-विशे. स्वच्छ चिक्कन । उ. तत्सम

सफाइ-सं., स्वच्छता, चिकनाहटि। उ. तत्सम
सफाचट-सं., १. केश उड़बैवाला द्रव विशेष। २. सम्पूर्ण रूपें समाप्ति। मै.
सफैया-सं., सफाइक काज। मै.
सब-सर्व., सकल। मै.
सब क्यो-अव्यय, जतेक जे से सब। मै.
सब जना-विशे., घरक सब लोकक निमित्तवाला। मै.
सबजी-सं., दूबि छारल सुन्दर भूमि। मै.
सबटा-अव्यय, सम्पूर्ण, सकल। अशेष। मै.
सबठाँ-अव्यय, सर्वत्र। मै.
सबतरि-अव्यय, सबठाँ, सर्वत्र। मै.
सबदिना-विशे., सब दिन होम'वाला। मै.
सबरङ-विशे., सब प्रकारक रंगवाला। मै.
सबरब-सं., बाँहि परक गहना विशेष। मै.
सबल-विशे., बलगर, सक्कर, दृढ़। सं. तत्सम
संबल-सं., बटखर्चा, संगक आहार। सं. तत्सम
सबसब करब/सबसबाएब-क्रि., शिराक तन्तु सब मे सब दिश तनतनी भरब। मै.
सबा-विशे., सम्पूर्णक चारिम अंश समेतवाला मान। प्रयोग—"सबा हाथ, सबा सेर।" अर्थात् एक सेरक संग ओकर चौठाइ समेत। मै.
सबाइ-सं., रीनक (अन्नक रीन) एक मनक सबा मन। मै.
सबाद-सं., स्वाद। सं. तत्सम
सबार-विशे., अश्वारोही। मै.
सबार होएब-क्रि., १. यान (वाहन) पर चढ़ब। २. (लाक्षणिक) कोनो काजक हेतु ककरो पर तत्पर भ' क' प्रेरणा करब। मै.
सबारी-सं., यान, वाहन। चौपाला आ महफा लोकक द्वारा उठबैवाला। मै.
सबारी कसब-क्रि., मल्लाभ्यासक एक प्रक्रिया विपक्षीक पाछू चढि ओकर अगिला धर पर अपन सम्पूर्ण भार देब। मै.
सबील-सं., उद्योग। उ. तत्सम
सबुजा रंग-सं., नील हरियर आ पीयर रंगक सम्मिश्रण। मै.
सबूर-सं., सन्तोप, आश्वासन। उ. तद्भव
सबूत-सं., प्रमाण। उ. तत्सम
सबेर-सं., सकाल, अति पहिने। मै.
सबैया-सं., १. सबा गुना। २. छन्द विशेष। मै.
सबैयें-अव्यय, सबा बरें। मै.
सभ्य-विशे., नीक आचार व्यवहारवाला। मै.
सभ्यता-सं., लौकिक आचार व्यवहारक व्यवस्था। मै.
सभक-सर्व., सम्बन्धकारक। सब गोट एक। मै.
सभा-सं., अगणित लोकक सम्मेलन। मै.
सभागाछी-सं., वैवाहिक सभाक गाछी। मै.
सभैता-विशे., सभा मे सम्मिलित भेनिहार। मै.
सभैती-सं., एक गोलक विस्तृत क्षेत्र। मै.
सम्प्रति-अव्यय, अखन। मै.
सम्पत्ति-सं., जमीन यथा, विभव। सं. तत्सम
सम्पन्न-विशे., १. भरल पुरल। २. सम्पूर्ण भेल। सं. तत्सम
सम्पर्क-सं., लाट, मेलजोल। घनिष्ठता। सं. तत्सम
सम्पुट-सं., ऊपर नीचाँ दुहू दिश सँ बन्न करैक गुण। सं. तत्सम
सम्पुटित-विशे., ऊपर नीचाँ दुहू दिश सँ बन्न। सं. तत्सम
सम्बन्ध-सं., संसर्ग, परस्पर योग। सं. तत्सम
सम्बन्धिक-विशे., सम्बन्ध मे अबैवाला। सं. तत्सम
सम्भ्रम-सं., हड़बड़ी। सं. तत्सम
सम्भव-सं., अनिश्चय। सं. तत्सम
सम्भावना-सं., आशाक भावना। सं. तत्सम
सम्भोग-सं., पति पत्नीक मिलन। सं. तत्सम
सम्मत-विशे., १. मत कें स्वीकार कयनिहार। २. सुस्थिर मत मे अयनिहार बताह। सं. तत्सम
सम्मति-सं., मत (विचार) क अनुमति, समर्थन। सं. तत्सम
सम्मन-सं., अभियोग पत्र। मै.
सम्मान-सं., आदर। सं. तत्सम
सम्मुख-अव्यय, प्रत्यक्ष, सामने। सं. तत्सम
सम्मेलन-सं., अधिक लोकक जुटान। सं. तत्सम
सम्वाद-सं., बातचीत। पठाओल मौखिक बात। सं. तत्सम
सम्हरम-सं., रोकैक, बजैक आ करैक शक्ति, ठेकान आ नियम। मै.

सम्हरब-क्रि., नीक जकाँ सम्पन्न होएब । मै.

सम्हार-सं., अनेक काजक संग लागल व्यवस्था आ सम्पादन । मै.

सम्हारब-क्रि., तन मन धन सँ सब काजक उचित रूपें निर्वाह करब । मै.

सम-विशे., १. अनुकूल, बराबरि । २. समान । सं. तत्सम/मै.

समकच्छ-विशे., सब प्रकारें तैयार, प्रस्तुत । मै.

समख्या-सं., समस्या भरल बात, समाचार । मै.

समगम-सं., १. संगम । २. एक रंगक स्थिति । मै.

समगरए-विशे., चारू चारक एक रंग ढलान आ उँचाइ । मै.

समङ्गर-विशे., परिवार मे अधिक लोकवाला । मै.

समच्छ-अव्यय, सोझाँ, समक्ष । सं. तद्भव

समचा-सं., साधन । सामग्री । मै.

समझौता-सं., सन्धि, मेल मिलाप । मै.

समञ्जस-सं., परस्पर मिलान । सं. तत्सम

समटब -क्रि., एकट्ठा करब, जमा करब । मै.

समतल-विशे., चौरस । सं. तत्सम

समता-सं., समानता, तुलना । सं. तत्सम

समथरि-विशे., एक रंग चिक्कन आ चौरस भूमि । मै.

समदब-क्रि., जीवनक सन्देह मे अपन सन्तान कें उपदेश, जीवनक अनुभव आ गुप्त वस्तु (धन) क परिचय कहब । मै.

समदाओन-सं., यात्रा (बिदा) कालक मिथिलाक (स्त्रीगणक गबैक) विशिष्ट करुण गीत । मै.

समदावारी करब-क्रि., निर्देशवाला परस्पर वार्ता करब । बिदा काल मे प्रवास मे रहैक उपदेश करब । मै.

समदिया-विशे., समाद कहनिहार । मै.

समधान-विशे., सावधान । सं. तद्भव

समधि-विशे., वर बधू दूनू पक्षक श्रेष्ठ सम्बन्धी, वर बधूक बाप पित्ती आदि । मै.

समधियाउर-सं., समधिक गाम एवं घर । मै.

समधियारय-सं., समधि सम्बन्धक लागि । मै.

समधी-विशे., देखू—"समधि" । मै.

समन्धी-विशे., समन्ध (पुर्नविवाह) द्वारा बनल पत्नी । मै.

समधौत-विशे., समधिक सन्तान । मै.

समय-सं., काल । बेर । सं. तत्सम

समर्थ-विशे., १. शक्ति सम्पन्न । २. युवक, युवती । सं. तत्सम

समर्थन-सं., विषय परक जोर अनुमोदन । सं. तत्सम

समर्थाइ-सं., यौवन, युवावस्था । मै.

समर-सं., युद्ध । सं. तत्सम

समरथ-विशे., युवक । स्त्री० समरथि । सं. तद्भव

समरथ सकरथ-विशे., बलशाली आ कार्य दक्ष । मै.

समस्या-सं., स्थितिक जटिलता । सं. तत्सम

समसब-क्रि., कनेक भिजलाह जकाँ होएब । मै.

समसम-विशे., आर्द्र । कनेक भीजल जकाँ । मै.

समसान-सं., मुर्दघटी । श्मशान । सं. तद्भव

समहाल-सं., खेतीक योग्य खेतक सरसता । मै.

समाइत-विशे., संगत, उपयुक्त । मै.

समाएब-क्रि., अँटब, घुसि जाएब । मै.

समाखि-सं., लाठीक उपरका आ निचला गीरहक एकै दिश मुह (दोष) । मै.

समाङ-सं., १. अपन लोक । आरोग्य, स्वस्थता । स्वाङ्ग । मै.

समाचार-सं., वृत्तान्त । सं. तत्सम

समाज-सं., गाम घर सँ लय कें दूरधरिक एक संस्कृतिक समुदाय । सं. तत्सम

समाजी-विशे., समाजक काज करैवाला । मै.

समाठ-सं., एक दिश लोह पत्र सँ बनल काड़ावाला मुस्सर । मै.

समाद-सं., वार्ता । सम्वाद । सं. तद्भव

समादबारी-सं., वार्ता एवं कोनो प्रयोजनक विषय । मै.

समाधान-सं., समस्या वा प्रश्नक निराकरण । सं. तत्सम

समाधि-सं., आत्म तल्लीनता । सं. तत्सम

समान-विशे., एक रंग, एक रूपवाला । सं. तत्सम

समान धरब-क्रि., विभिन्न रूप बनाकय अभिनय करब । नाटकक पात्र जकाँ बनब । मै.

समाप्त-विशे., निःशेष । सं. तत्सम

समापन-सं., समाप्त करैक प्रक्रिया । अन्त क' दैक आयोजन । सं. तत्सम

समार-सं., पूव पच्छिम जोतला उत्तर उत्तर दच्छिन खेतक जोत। मै.

समारब-क्रि., पहिलुक जोतक प्रतिकूल पाछू खेत जोतब। मै.

समारोह-सं., कोनो विशेष काजक सम्पादन हेतु नाना प्रकारक आयोजन। सं. तत्सम

समास-सं., संक्षिप्तीकरण, व्याकरणक प्रक्रियाक विशेष अंग। सं. तत्सम

समाहब-क्रि., कीनै मे पसिन्न बड़द के हर आ चौकी मे जाँचब। मै.

समिति-सं., विभागीय दलक संगठनवाला संस्था। सं. तत्सम

समिध-सं., होमक जारनि, लकड़ी। सं. तत्सम

समिल-विशे., सम्मिलित। प्रयोग—"हमहु अहाँ काज मे समिल भ' जाउ ?" सं. तत्सम

समीज-सं., गर्दनि सँ पैर धरि झँपैवाला स्त्री वस्त्र विशेष। उ. तद्भव

समीर-सं., बसात। सं. तद्भव

समीप-अव्यय, लग, निकट। सं. तद्भव

समुझब-क्रि., बुद्धि लगाकय ज्ञान करब। हि. तद्भव

समुझाएब-क्रि., दोसरा के ज्ञान कराकय बुझाएब। मै.

समुझि-सं., ज्ञान मे धरैक बुद्धि। मै.

समुद्र-सं., सागर। सं. तत्सम

समुद्री-विशे., समुद्र मे रहनिहार, भेनिहार। मै.

समूचा-विशे., सौंसे, सगरे। समस्त। मै.

समूल-विशे., जड़ि समेत। सं. तत्सम

समूह-सं., समुदाय, झुण्ड। सं. तत्सम

समृद्धि-सं., उन्नत धन समृद्धि। सं. तत्सम

समेकन-सं., सबटाक एकरूपता। सं. तत्सम

समेटब-क्रि., पसारल वस्तु कें एकठां करब। मै.

समेटि बटोरि कय-अव्यय, अनेक प्रकारक सब वस्तु कें बीछिकय एकट्ठा जमा कय। मै.

समेत-विशे., सहित। सं. तत्सम

समेना-सं., समियाना, अगणित लोक कें छाया दैक हेतु चौखुट पैघ कपड़ाक छप्पर। उ. तद्भव

समैया-विशे., उचित समय पर उपजैवाला। मै.

समैल-सं., पालोक दूनू दिशक पश्विना। मै.

समोधब-क्रि., बिगड़ल (रूसल) व्यक्ति कें स्नेह सँ बुझाएब। मै.

समोर करब-क्रि., ताकि ताकि कय जुटाएब। मै.

समोसा-सं., सिंघारा (पकवान)। उ. तत्सम

समौ-विशे., साम (लोहक मोट पत्र) क काड़ा ठोकल समाठ। मै.

समौआ-विशे., साम लागलवाला। मै.

संयन्त्र-सं., कलपुर्जा। सं. तत्सम

संयत-विशे., सद, अनुशासित। सं. तत्सम

संयम-सं., हिफाजति, उचित परिधिक भीतर रहैक चेष्टा, अनुशासित कार्यकलाप। सं. तत्सम

संयमी-विशे., स्वास्थ्यक हितकर आहार व्यवहार करैवाला। व्यवस्था सँ धन जमा करैवाला। सं. तत्सम

संयोग-सं., दैवी घटना, मिलन, सम्बन्ध। सं. तत्सम

सर्द-सं.,/विशे., ठन्ढा गुण। ठन्ढा गुणवाला। ठन्ढा प्रभाव। सरस, आर्द्र। मै.

सर्द लागब-क्रि., ठन्ढ लागब। मै.

सर्द लेब-क्रि., मरैक स्थिति मे हाथ पैर एवं अंग शीतल भ' जाएब। मै.

सर्दी-सं., अतिशय शीतलता। जाड़। ठन्ढा सँ उत्पन्न रोग। मै.

सर्रासहोएब-क्रि., सरसता भेला सँ चिक्कन होएब। प्रयोग—"बजैत बजैत कण्ठ सुखा गेल। कनेक ठोंठ सर्रास क' लै छी।" मै.

सर्वनेजा-सं., एकट्ठा कयल भोजन सामग्री। मै.

सर्वेसर्वा-विशे., सब काजक अधिकारी। मै.

सर-विशे., पेट मे शीघ्र पचिकय मल उतारैवाला भोज्य पदार्थ। सं. तत्सम

सरकण्डा-सं., गोल आ मोट पैघ डाँटवाला खढ़ विशेष। मै.

सरकब-क्रि., १. खाइक पीबैक काल अन्न पानिक कण्ठ सँ उपर चढ़ि जाएब। २. ससरि जाएब। मै.

सरकस -सं., मनोरञ्जक देहक दारुण व्यायाम। मै.

सरका-सं., मालजालक गर्दनिक सिर संकोच। मै.

सरकाएब-क्रि., कनेक आगू बढ़ाएब। मै.

सरकार-सं., शासन संगठन। उच्चाधिकारी। मै.

सरकारी-विशे., शासकीय, राजकीय। मै.

सरकी-सं., बाँसक काइम सँ बीनल पर्दा । मै.

सरकुटुम-विशे., इष्ट अपेक्षित, अपेक्षित आ सम्बन्धी । मै.

सरकुटुमैंती-सं., अपेक्षित आ सम्बन्धीक स्थान । तदनुकूल व्यवहार । मै.

सरगना-विशे., प्रमुख प्रभावशाली । मै.

सरङ-सं., स्वर्ग, आकाश । प्रयोग–"बेटी ससुरँ नीक की सरङँ नीक ।" सं. तद्भव

सरङगोलिया-विशे., सोझे उपर मुहवाला । मै.

सरङपताली-विशे., एक सिंघ उपर मुहे आ दोसर नीचा मुहेवाला दोषाह माल । सं. तद्भव

सरङ्ङी-सं., साधु बाबाजीक तारवाला बाजा सारङ्गी । सं. तद्भव

सरजूपारी-सं., कनौजिया ब्राह्मण । मै.

सरझँपी-सं., सारा (चिता) क आगि मिझाकय ओहि स्थान पर माटि भरैक विधि । मै.

सर द'-अव्यय, अलक्षित वेग सँ । मै.

सरदर-विशे., सम्पूर्ण, अखण्डित । मै.

सरदार-विशे., दलक नेता, सर्वोच्च व्यक्ति । उ. तत्सम

सरदियाह-विशे., सर्दीक क्लेश उत्पन्न करैवाला । मै.

सरधा-सं., देखू—"श्रद्धा" । मै.

सरधुआ-विशे., श्राद्धक योग्य, श्राद्धक उपयोगी । मै.

सरनर-सं., वाण मे वाण जोड़िकय बहुत ऊँचो पर पक्षी मारैक विधि । मै.

सरनरिया-सं., व्याधा, शर मे शर जोड़िकय शिकार करैवाला । मै.

सरपंच-विशे., ग्राम पंचायतिक वैधानिक अधिकारी । मै.

सरपट-विशे., अविश्रान्त, बिना रुकने अत्यन्त तेज (दौड़ैक विषय मे) । मै.

सरपत-सं., धारदार पातवाला मोट डाँटक नम्मा खढ़ । मै.

सरपेटब-क्रि., सरस उत्तम पदार्थ भरि इच्छा खाएब । मै.

सरपेटा-विशे., खूब खाइवाला सरस उत्तम भोजन । मै.

सरपोख-अव्यय, सम्पूर्ण रूपें । प्रयोग–"अहाँ कें तँ सरपोख ज्वर अछि तँ सरपोख ओढ़ना ओढ़ि लिअ' ।" सगरे । मै.

सरफ-सं., देल अन्न रीनक सूदि । उ. तद्भव

सरब-क्रि., कनेक कनेक कय झरब । मै.

सरबघोंट-विशे., बड़दक जीह पर उज्जर दागक दोष । एहन दोषवाला बड़द । मै.

सरबत-सं., अनेक मसालावाला बिना निशाँक मधुर पेय रस । उ. तद्भव

सरबती-विशे., सरबतसन स्वादवाला । मै.

सरबन-सं., सरकण्डाक वन । मै.

सरबब-क्रि., अत्यन्त मेहीं छेद सँ मन्द मन्द जल आदि द्रवक चूअब । मै.

सरबस-सं., धन सम्पत्ति । सर्वस्व । सं. तद्भव

सरबसोख-सं., बड़दक जीह पर कारी दाग रहैक दोष । मै.

सरबहारा-सं., श्रमिक वर्ग एवं श्रम । मै.

सरबा-सं., बहुत छोट उत्थर पातर माटिक वासन । मै.

सरबेटा-विशे., सारक बेटा । मै.

सरमें भरमें-अव्यय, तुरन्ते, जहिनाक तहिना । मुह बन्न रखने । मै.

सरमेर-विशे., संग मिलल । मै.

सरल-विशे., सोझ, सुलभ, आसान । सं. तत्सम

सरस्वती-सं., वाणी, वाग्देवी । सं. तत्सम

सरस -विशे., १. साहित्यिक रसक स्वाद लेनिहार । २. भीजल, सिमसिम । सं. तत्सम

सरस निरस-विशे., दू अंश मे एक अधिक आ एक कम । मै.

सरसठि-संख्या, सात एकाँइ छ दहाँइक अंक । मै.

सरसर करब-क्रि., सर्दी सँ नाक मुह मे श्वास प्रश्वास सँ कफक ध्वनि होएब । मै.

सरसरी नजरि-सं., अतिशीघ्रता सँ विहंगम दृष्टि । मै.

सरसों-सं., पीरा गोट, तेलहन विशेष । मै.

सरह-सं., बोनि आ लगानक परिमाणक नियम। ,मै.

सरहँची (साग)-सं., धन खेती मे अपनै होम'वाला कोमल आ स्वादिष्ट साग। मै.

सरही-सं., बीजू आमक गाछक फल। मै.

सरहोजि-विशे., सारक पत्नी। मै.

सराइ-सं., थारी जकाँ अत्यन्त छोट पूजा हेतु द्रव्यक वासन। मै.

सराएब-क्रि., छिद्र सँ जल आदि द्रव चूअब। मै.

सराक द'-अव्यय, खींचल जाइतसन तेजी सँ। मै.

सराड़ि-सं., अप्रकट विरोध। मै.

सराध -सं., देखू—"श्राद्ध"। सं. तद्भव/मै.

सराना-सं., प्रयोगक क्षेत्र, शक्तिक उपयोगक स्थान। प्रभावक अवसर। उ. तत्सम

सराबोर-विशे., भीजल, डूबल। मै.

सरासरि-विशे., निराधार। मै.

सरासरी-अव्यय, अत्यन्त तेजी सँ। मै.

सराहब-क्रि., प्रशंसा करब, कृतज्ञता सँ बड़ाइ करब। मै

सरि-विशे., समतल, बिन ऊभड़खाभड़। मै.

सरिआम-विशे., समतल थल। मै.

सरिता-सं., नदी। सं. तत्सम

सरिखों-विशे., अव्यय, सत्ये, सत्ते। मै.

सरियाएब-क्रि., १. समतल बनाएब। २. सुव्यवस्थित करब। मै.

सरियाकय-अव्यय, व्यवस्थित केने धीरें धीरें। मै.

सरियाती-विशे., विवाह मे कन्या पक्षक लोक। मै.

सरीफा-सं., फल विशेष। मै.

सरूप-सं., स्वरूप। विशे., समान। सं. तद्भव/सं. तत्सम

सरे-अव्यय, खेल मे हाथक मानि नहि दैक शब्द। मै.

सरेड़ा मचब-क्रि., विवाद बढ़ितै जाइक क्रम होएब। मै.

सरैआँ-विशे., सरौं खेलाइक मल्ल विद्याक अभ्यास वाला। मै.

सरैया-सं., थारी आ सराइक बीचक आकारवाला द्रव्यक वासन। मै.

सरैला-सं., पेंघ आकारवाला गोल नाम बाँसक काइम सँ बनल माछ फँसबैक यन्त्र। छोट आकार वाला सरैली। मै.

सरोकार-सं., सम्बन्ध, सम्पर्क, प्रयोजन। मै.

सरोकारी-विशे., सम्बन्धित, अपेक्षित। मै.

सरोकारित-विशे., सम्बन्ध रखैवाला। मै.

सरोज-सं., कमल फूल। सं. तत्सम

सरोद-सं., वाद्य विशेष। देशज

सरोवर-सं., विशाल जलाशय। स. तत्सम

सरौआ-विशे., सरबैवाला, चूबैवाला। मै.

सरौं खेलाएब-क्रि., मल्ल विद्याक अभ्यास करब। मै.

सरौत-सं., खढ़क छारल घरक उपर ओठ आ बीच मे खढ़ कें दबने रखैवाला बाँसक बाती। मै.

सरौता-सं., सुपारी कतरैक लोहक अस्त्र विशेष। मै.

सलका मारब-क्रि., तर सँ सरता आएब। मै.

सलग-विशे., एक सँ दोसर एक लागल, संलग्न। मै.

सलगा-सं., दू पाट सटा क' बनल ओढ़ना। मै.

सलगी-सं., १. एक पाटवाला मोट ओढ़ना। २. दूरधरि बनल सम्पर्क। मै.

सलच्छ-विशे., शुभ लक्षणवाला। स्त्री० सलच्छि। मै.

सलटब-क्रि., निर्णय करब। मै.

सलटाएब-क्रि., निर्णय कय व्यवस्था कराएब। मै.

सलसलाएब-क्रि., भीतर सँ आर्द्रता आएब। मै.

सलसलाह-विशे., भीतर सँ भिजलाह। मै.

सलहाल-सं., नीक जकाँ भूमिक हाल, आर्द्रता। मै.

सलाइ-सं., आगि बहार करैक काठी। मै.

सलाइ करब-क्रि., मल उतारैक हेतु साबुनक काठी मलमार्ग मे देबाक डाक्टरी प्रक्रिया। मै.

सलाद-सं., टोमैटो आदि चहटगर पदार्थक नोन तेल आदि दय कें बनल काँच व्यञ्जन। उ. तत्सम

सलावी-सं., आर्द्रता। मै.

सलार लागब-क्रि., ऊँच नीच सबतरि पसरि समतल भ' क' जलक पसरब। मै.

सलाह-सं., समञ्जस, सौमनस। मै.

सलाह सुतर-सं., मेल मिलान। मै.

सलेटब-क्रि., माठि मिला साटिकय चिक्कन करब। मै.

सलोक-विशे., स्त्री आदि समेत। प्रयोग-"की औं ! सुमन बाबू नौकरी पर सलोक गेल छथि।" मै.

सलौनी-सं., साओनक (श्रावणी) पूर्णिमा। मै.

सशक्त-विशे., जीवन्त, चेतना आ प्रेरणायुक्त। सं. तत्सम

संस्कार-सं., १. पूर्वजन्मार्जित भावना। २. जीवन सँ मृत्यु पर्यन्तक वैदिक कर्म। सं. तत्सम

सस्त-विशे., कम मूल्यक वस्तु। मै.

ससरफानी-सं., विशेष प्रकारक बन्हन। मै.

ससरब-क्रि., सम्पूर्ण देहक भरें चलब। मै.

सँसरी-सं., श्वास लेबाक नली, कण्ठ। मै.

संसार-सं., भुवन, सृष्टि। मै.

ससार-सं., जोर दय कें अंग पर हाथ आगू दिश बढ़बैत जँतैक क्रम। मै.

ससारब-क्रि., जोर सँ अंग पर हाथ चलबैत जाँतब। मै.

ससुर-विशे., पत्नी वा पतिक पिता। मै.

ससुराड़ि-सं., ससुरक गाम घर। मै.

ससुहथ/ससोहथ-सं., बेटीक सासुक हाथ मे देल जाइवाला द्रव्य। मै.

सह-सं., १. दुष्टतापूर्ण गुप्त विचार। २. कनेक मात्र बल। ३. अधिक आबर जातक छूटि। ४. सतरञ्जक खेल मे बादसाह पकड़ैक गर। मै.

सहकारी-विशे., परस्पर सहयोग दैवाला। मै.

सहचर-विशे., मित्र, हरदम संग रहैवाला। मै.

सहज (सहतें)-सं., बिना घुराकय देम'वाला सहायता। मै.

सहजोर-विशे., प्रगतिशील, प्रभावशाली। पूर्णतया सम्पन्न। मै.

सहटब-क्रि., १. सुस्तें सँ हटि जाएब। २. धीरें धीरें ससरि समीप आबि जाएब। मै.

सहटारब-क्रि., धीरें धीरें समीप लाएब वा हटा देब। मै.

सहठुल-विशे., सद स्वभाववाला मिलनसार। देखितैं आवेस करैक योग्य नेना। मै.

सहड़ी-सं.,मांसक संग छोट आ पातर हड्डीक खण्ड। मै.

सहथी-सं., खाम्ह आदिक उपर मे बनाओल गोल आ नाम दोसर काठक छेद मे पैंसा क' जोड़ सक्कत रखैले कील। मै.

सहन-विशे., ऊँच नीच भूमि काटिकय बनल चौरस। उ. तत्सम

सहन-सं., बर्दास्त, सहिलैक शक्ति। पचबैक शक्ति। सं. तत्सम

सहनाइ-सं., मधुर वाद्य विशेष। उ. तत्सम

सहब-क्रि., १. बर्दास्त करब। २. निराहार रहब। मै.

सहमति-सं., मतक स्वीकृति, अनुमति सम्मति। मतक अनुमोदन। सं. तत्सम

सहमब-क्रि., धाख भय आ आदङ्क सँ संकुचित आ स्तब्ध होएब। हि. तत्सम

सहमर्दा-सं., धानक प्रभेद विशेष। मै.

सहमीलू-विशे., दोसराक संग मन वचन आ कर्म सँ मिलि गेनिहार। मै.

सहयात्री-विशे., संग लागि चलनिहार। सं. तत्सम

सहयोग-सं., सहायता लागि। सं. तत्सम

सहर-सं., नगर, पुर। उ. तत्सम

सहरगञ्जा-विशे., साधारण, सामान्य। मै.

सहर जमीन-सं., विवादक स्थल। उ. तत्सम

सहर फोंका-सं., औषधार्थ झार विशेष। मै.

सहरब-क्रि., १. धीरे धीरे झरि झरिकय ढहब। २. अबोध बच्चाक मलत्यागब। मै.

सहरू-विशे., सहर मे रहैवाला। मै.

सहलाएब-क्रि., प्रेम सँ हल्लुक हाथें ससारब। अंग कें हसोथब। हि. तत्सम

सहलोला-विशे., अनबूझ, बूड़ि, सदति खेलाइ मे मगन बकलेल दुलारू नेना। मै.

सहवास-सं., सब प्रकारें संग रहैक भाव। सं. तत्सम

सहस्र-सं., दश सैक एक संख्या। सं. तत्सम

सह सह करब/सहसहाएब-क्रि., छोट कीट आ साँप आदि असंख्य रूपें सगबग आ एकत्र चलैत रहब। मै.

सहसा-अव्यय, अचानक, अकस्मात्। सं. तत्सम

सहसौल-सं., सहस्र दल कमल। मै.

सहाएब-क्रि., उपवास करा देब । मै.
सहाक-विशे., सहायक । मै.
सहाज-विशे., सहैक योग्य । सह्य । सं. तद्भव
सहाजिक-विशे., स्वाभाविक । मै.
सहानुभूति-सं., अनका प्रति दुख सुखक सम्वेदना । सं. तत्सम
सहाय-विशे., संग दैवाला । सं. तद्भव
सहायक-विशे., मद्दति करैवाला । सं. तत्सम
सहायता-सं., मद्दति । सहयोग । सं. तत्सम
संहार-सं., विनाश । सं. तत्सम
सहारा-सं., आश्रय, आधार । हि. तत्सम
सहाल-सं., भूमिक उचित सरसता । मै.
सहासति-सं., साहसपूर्वक श्रम कष्टक सहन । मै.
सहासी-विशे., साहसी । मै.
सहित-विशे., समेत । सं. तत्सम
सहिया-विशे., सखी । मै.
सहियारब-क्रि., सरियाकय राखब । मै.
सही-विशे., ठीक, अखरताली, घर आदि वस्तुक उचित ढंगें दृढ़ होएब । मै.
सहीस-विशे., घोड़ा कें सिखौनिहार, चरवाह । मै.
सहेजब-क्रि., ओरियाकय थाती धरब । मै.
सहें सहें-अव्यय, ओरिया क' धीरें धीरें ठेलि । मै.
सहोदर-विशे., समान गर्भ (एक गर्भ) सँ उत्पन्न भेनिहार । सं. तत्सम
सहौआ-विशे., सहन करैवाला । मै.

सा

सा-सं., निषाद स्वर, संगीतक सातो स्वर मे पहिल स्वर । मै.
साँइ-विशे., स्वामी । १. भक्त महात्मा । २. पति । सं. तद्भव
साइ-सं., शुभ काजक सामग्री रचनिहार पसारी के नाम मात्रक सगुन द्रव्य द' क' वस्तु देवाक आदेश, अढ़ौती । मै.
साइत-सं., शुभलग्न, नीक बेर । मै.
साइत-अव्यय, भरिसक, शायद । मै.
साइत-विशे., क्षण । प्रयोग–"हमरा तँ आइ एक साइत विश्राम नै भेल ।" मै.
साओन-सं., मास विशेष । श्रावण । मै.
साकठ-विशे., मांसभक्षी व्यक्ति । मै.
साँकड़-विशे., संकीर्ण (वासन वा स्थान) । मै.
साँकर-सं., विवाहक हेतु गेनिहार वरक संग जाइ वाला चीनीक गौरी, भगवतीक उपासनाक सामग्री एवं कनियाँ आ हुनक माइक सम्मान मे अनेक सामग्रीक संकलन । मै.
साँकल-सं., केवाड़ आदि बन्द करैक जिञ्जीर । लोहक कड़ी । मै.
साकांक्ष-विशे., चौकल, चौकस, सावधान । मै.
साकार-विशे., नामरूपवाला (देवता) । मै.
साकीन-विशे., १. बसिन्ना । २. सर्वस्वहीन । मै.
साख-सं., प्रतिष्ठा, सम्मान । उ. तत्सम
साँख-सं., सिन्दूरदान मे सिन्दूरक संग हाथ मे रखैवाला शंख काटिकय बनल शुभ सूचक वस्तु विशेष । सिन्दूर दानक सामग्री । मै.
साँखर-सं., साँप विशेष । मै.
साखी-सं., नीति आ उपदेशक वचन । उ. तत्सम
साँखु-सं., सक्कत आ सोझ काठक वनस्पति । मै.
साग-सं., व्यञ्जनवाला हरियर कोमल पौधा । मै.
सागवान-सं., साँखु जातिक वनस्पति । मै.
साङरह-सं., जमा, एकट्ठा । मै.
साङरही-सं., संग्रहणी रोग । मै.
साङि-सं., भारी वस्तु उठबैक लेल रस्सी सँ भारी वस्तु कें बान्हि कन्हा पर उठब'वाला बाँसक टोंटा । मै.
साङि करब-क्रि., दुष्ट कें उत्पीड़न सँ सोझ करब । मै.
साँच-सं., आकार दैवाला लकड़ी आदि वस्तुक पट्टी । मै.
साँचा-सं., छवि । मै.
साँची-सं., आगू दिश धोतीक आगिला दूनू खूँट कोचियाकय खोंसल धोती । मै.
साज-सं., १. भाँड़कूड़ रखैक फैल काँच माटिक बनाओल पैघ वासन । २. संगीत आ नाँचक समस्त सामग्री । मै.
साजबाज-सं., १. सजबैक आ बजबैक सामग्री । २. अंग सजबैक विशेषता । मै.
साजन-विशे., प्रियतम, प्रणयी, वर । मै.

साजनि-सं., सजबैक प्रक्रिया । मै.

साजब-क्रि., अलंकृत करब, चिक्कन करब । सजाएब । मै.

साजी-सं., बाँसक काइमक बनल गहींरगर फुल डाली । मै.

साँझ-सं., दिन आ रातिक संगम समय । मै.

साँझबाती-सं., सन्ध्याकाल मे दीप नेसैक विधि । मै.

साँझिल-विशे., चारि सन्तानक तेसर । मै.

साझी-विशे., अनेक हिस्सेदारक मिलल जुलल अंश वाला । मै.

साझी गोझी-सं., एकैठाँ मिलाओल अंश । मै.

साझीसूइ साङियो ने चले-लोकोक्ति । (लाक्षणिक) छोटो वस्तु साझी रहने विवादक घर थिकै । ओ विवाद कहियो ने छूटि सकै अछि । मै.

साँझुक-विशे., सन्ध्याकालक । मै.

साट-सं., मेल, संग । जोड़ । मै.

साटनि-सं., सटैक काज । मै.

साटब-क्रि., सक्कत सँ जोड़ब, आसक्त करब । मै.

साट सटुआ-सं., बराबरि साटि जोड़िकय काज चलबैक चेष्टा । मै.

साटा-सं., कोनो लेनदेन तथा उत्तरदायित्वक विश्वास हेतु लिखित प्रमाण । मै.

साटि-सं., चुपचुपौआ संग, मेल । मै.

साँठब-क्रि., नीक जकाँ वासन मे सजाकय राखब । (लाक्षणिक) सजा सजाकय पठाएब । मै.

साठा-विशे., १. प्राचीन कालक बन्हुआ पाग । २. साठि वर्षक उमेरवाला । मै.

साठा तँ पाठा-विशे., (लाक्षणिक) साठि वर्ष पुरला सँ ज्ञान आ अनुभव परिपक्व भेने निर्भीक । मै.

साठि-संख्या एवं सं., १. शून्य एकाँइ आ छ दहाँइक अंक । २. षष्ठी देवी, बाल रक्षा देवी । मै.

साठि पूजन-क्रि., षष्ठी देवीक जन्मक छठम राति आराधना करब । मै.

साँढ़-विशे., वृषभ, स्वतन्त्र छोड़ल वच्छा । मै.

साँढ़नी-सं., ऊँटनी । मै.

साढ़ू-विशे., बहुक बहिनिक वर । मै.

साढ़े-सं., पूर्णाङ्कक उपर आधा । मै.

साढ़ेसाती-सं., सात वर्ष छ मास अर्थात् सात वर्ष एक बटे आधा वर्षक शनि ग्रहक फेरी । मै.

सात-संख्या, एक अंकक सातम अंक । मै.

सातु-सं., भूजिकय पीसल खाद्यान्न । मै.

साथ-सं., सार्थ, संग । हि. तत्सम

साथी-विशे., संग रहनिहार, संगी । हि. तत्सम

सादा-विशे., १. सामान्य । २. उज्जर । हि. तत्सम

सादासादी-विशे., साधारण रूपवाला । मै.

साध-विशे., १. साधैक अधीन करैक योग्य, साध्य । २. कामना मे रहैवाला । मै.

साधक-विशे., साधना करैवाला । सं. तत्सम

साधन-सं., अभ्यास रखैक नियम, नियम पर चलैक प्रवृत्ति । मै.

साधना-सं., तपस्या, धैर्य सँ सिद्धिक कार्य । सं. तत्सम

साधनिका-सं., व्युत्पत्ति करैक रीति । सं. तत्सम

साधब-क्रि., १. साधना करब । २. सक्कत करब । मै.

साधा-विशे., साधल, सम्पन्न कयल । मै.

साधीबाधी-विशे., साधक बाधक, ने सम्मति ने विरोध करैवाला । मै.

साधु-विशे., महात्मा, बाबाजी । मै.

साधुवाद-सं., वाह वाही । मै.

सान-सं., तेजी, सजाओट । मै.

सानदार-विशे., अत्यन्त उत्कृष्ट । मै.

सानन-सं., भोजन सनैक क्रम (बेराबेरी) । मै.

सानशीला-सं., विशेष रूपें देहक सजबैक विन्यास । मै.

सानब-क्रि., मिलाकय लपेटब । मै.

साना-सं., घूलल वस्तु कें मिलाकय ढील बनाएब । मै.

सानी-सं., १. माण वा पानि मे गूँडा आदि दय कें सानल मालक भोजन । २. दाबी । मै.

साँप-सं., सर्प । मै.

सापट नेढिया-सं., दुर्जनक संसर्ग । मै.

सापटपीटा-विशे., सगरो एक रंग घन । मै.

साँपिन-विशे., उपर नीचाँ पातर आ बीच मे कनेक मोट लाठी । साँपक स्त्रीलिंग । मै.

साफ-विशे., १. स्वच्छ । २. स्पष्ट । उ. तत्सम

साफल-सं., सफलता, साफल्य । सं. तद्भव

साफा-सं., अन्य प्रान्तीय लोकक विशिष्ट रूपक मोरेठा। देशज

साफी-विशे., चिक्कन, स्वच्छ करैवाला कपड़ा आदि वस्तु। मै.

साबिक-विशे., प्राचीन परम्परावाला। मै.

साबुन-सं., देह कपड़ाक मैल झारैवाला जमाओल द्रव्य। मै.

साबूदाना-सं., गोटसन उज्जर दानावाला फल आ पथ्यक विशेष आहार पदार्थ। मै.

साबे-सं., जौड़ बँटैवाला विशेष खढ़। मै.

साँभर-सं., हरिण (वन्य जन्तु) विशेष। मै.

साम्हरि-सं., विशेष प्रकारक नोन। मै.

साम-सं., १. भदैया मेहीं दानावाला अन्न विशेष। २. मुस्सरक मुह पर ठोकल लोहक गोल चाकर पत्र। मै.

सामग्री-सं., विशेष काजक उपयोगी अनेक प्रकारक वस्तुजात। सांग्रह। सं. तत्सम

सामरथ-सं., सामर्थ्य, शक्ति। सं. तद्भव

सामा-सं., पौराणिक कथाक आधार पर भाइक कल्याणक कामना सँ मिथिला मे पूजल जाइवाली स्त्री पक्षी देवता। मै.

सामान्य-सं., साधारण। मै.

सामी-सं., घास विशेष। मै.

सांय सांय-सं., वेग सँ बसात बहैक शब्द। मै.

साया-सं., शाड़ीक तर मे पहिरैवाला घघरासन कपड़ा। उ. तत्सम

सार-सं., १. मल साफ करैवाला खाद्य पदार्थ। २. वस्तु सभ मे अन्तर्हित तत्व। ३. पत्नीक भाइ। मै.

सारंग-सं., मृग विशेष। सं. तत्सम

सारंगी-सं., वाद्य विशेष। वीणा। मै.

सारफार-अव्यय, केवल, मात्र। मै.

सारस्वत-विशे., १. सरस्वती सम्बन्धी। २. ब्राह्मण। मै.

सारस-सं., पैघ पक्षी विशेष। मै.

सारा-सं., चिताक स्थान। मै.

सारि-सं., १. फसिल। २. स्त्रीक बहिन। प्रयोग—"हथिया बरिसे जैं दिन चारि, चुलहा पाछू उपजय सारि।" मै.

सारिल-विशे., भीतरी तत्व मे भरल शक्ति। सार-भाग। मै.

साल-सं., १. वर्ष। २. वृक्ष विशेष। ३. भूमिक भीतर गड़ल हाड़ वा खुट्टा खाम्ह आदिक अंश। मै.

सालब-क्रि., १. काटि छीलिकय लकड़ी कें चिक्कन बनाएब। रूप देब। २. भीतरैं भीतर वेदना होएब। मै.

सालसा-सं., पेय औषध विशेष। मै.

सावधान-विशे., चौकस, सचेत। मै.

साँस-सं., श्वास। मै.

साँसी-सं., दम्मा रोग, साँस फूलैक रोग। मै.

सासु-विशे., पति वा पत्नीक माता। मै.

सासुर-सं., श्वसुरक गाम घर। मै.

साह खर्ची-विशे., खूब खर्च केनिहार। मै.

साह खसब-क्रि., कोनो वस्तु पर अधिक जीवक टूटि पड़ब। मै.

साहनि-सं., कनेक बल दय के उकस'बैक क्रम। मै.

साहब-क्रि., कनेक जोर लगाएब। मै.

साहर-सं., दाओनक समय नीचाँ झरल दाना। मै.

साहस-सं., कष्टकर कठिन प्रयास। मै.

साहसी-विशे., साहस कयनिहार। सं. तत्सम

साहाय्य-सं., सहायता। सं. तत्सम

साहित्य/साहित-सं., १. सहायता। २. शास्त्र विशेष। सं. तत्सम

साहि लागब-क्रि., एकै विषय मे बारम्बार प्रवृत्ति होएब। मै.

साही-सं., काँटसन पैघ रोइआँवाला जन्तु। मै.

साहु-विशे., बनियाँ। मै.

साहुकार-विशे., वाणिज्य व्यवसायवाला। मै.

साहुल-सं., ईंटाक देबाल जोड़ैक समय नीचा जोड़ल ईंटाक संग सोझ जँचैक हेतु लटकैवाला यन्त्र। मै.

साहेब-विशे., कविराहाक महात्मा, मुसलमानक माननीय व्यक्ति, अंगरेज जातिक पुरुष। उ. तत्सम

साहोड़-सं., वनस्पति विशेष। मै.

सि

सिक्कठि-सं., बनैया झार। मै.

सिक्का-सं., राजकीय मुद्रा, धातुवाला रुपैया। देशज
सिक्का चढ़ब (चढ़ाएब)-क्रि., (लाक्षणिक) अपना मनें घमण्ड सँ पैघ बनब, तथा मिथ्या गौरव द' क' फुलाएब। मै.
सिकड़ी लागब-क्रि., अत्यन्त छोट नेन्ना कें सिर संकोच (सिराक ओझरौट) होएब। मै.
सिकमी-सं., राजकीय प्रमाणित खेत बटैदारक स्थायी आधा अंश। उ. तत्सम
सिकरी-सं., सोन वा चानीक कड़ीवाला हार। मै.
सिकस्त-विशे., संकीर्ण। उ. तत्सम
सिकस्ती-सं., संकीर्णता, अभाव, कठिनाइ। उ. तत्सम
सिकिया पहलवान-विशे., अत्यन्त दुर्बल क्षीणकाय। मै.
सिकिर सिकिर करब-क्रि., १. जाड़े थरथराएब। २. (लाक्षणिक) लाज वा धाख एवं असमर्थता प्रकट करै मे संकोच करब। मै.
सिकुड़ब-क्रि., संकुचित होएब (सिलबट पड़ब)। मै.
सिकोड़ब-क्रि., मोड़ब, संकुचित करब, घोंकचाएब। मै.
सिखलहा-विशे., शिक्षा पाओलवाला। मै.
सिखले सीखब-क्रि., कुल परम्पराक शिक्षा स्वतः आबि जाएब। मै.
सिखाएब-क्रि., मन्त्रणा देब। शिक्षा देब। मै.
सिखाओन-सं., सिखबैक चेष्टा। मै.
सिखाबुद्धी-सं., एक दोसरा कें सिखाकय बनाओल गुप्त योजना। मै.
सिखुआ-विशे., सीखिकय आएल। मै.
सिखौआ-विशे., सिखबैवाला। मै.
सिगनल-सं., रेलगाड़ीक वा आनो काजक संकेत। अं. तत्सम
सिंगा-सं., शिवक स्नपन (धारावाही) स्नान करबैक नीचाँ साँकर उपर फैल मुहवाला नाम छेदवाला धातु सँ बनल चोङा। मै.
सिगार-सं., पश्चिमी देशवालाक धूम्रपान करैक वासन। अं. तत्सम
सिंगी-सं., माछ विशेष। मै.
सिङ्ङा-सं., शृङ्गाकार टेढ़ वाद्य। धुतहू। मै.
सिङरवात-सं., शोभाक हेतु तिरछाकय बान्हल चारक कोरक बाती। मै.
सिङार-सं., शृङ्गार, सजाओट। मै.
सिङार पटार-सं., शृङ्गारक हेतु प्रसाधन, शोभा रचना। मै.
सिङिया विष-सं., विष विशेष। मै.
सिच्चा-सं., देखू—"छिच्चा"। मै.
सिंचाइ-सं., सिञ्चन, पटौनी। मै.
सिंचाएब-क्रि., पटवाएब, सिंचन कराएब। मै.
सिंझाएब-क्रि., सिद्ध करब। मै.
सिटपिटाएब-क्रि., पकड़ल गेनें देखार भेने भगैक चेष्टा वा लज्जाक भाव प्रकट करब। मै.
सिटिर पिटिर करब-क्रि., कोनो लक्ष्य सँ चंचल रहब। मै.
सितलपाटी-सं., खजूरक पातक बीनल पटिया। मै..
सितुआ-सं., खुरचन सक्कत चमड़ावाला जल-जीव। मै.
सिद्दति-सं., संकट भरल पीड़ा, दुरवस्था। मै.
सिद्ध-विशे., परिपक्व, साधना मे सफल, रन्हला उत्तर मृदु बनल। सं. तत्सम
सिद्धान्त-सं., मतक, विचारक निश्चय, दृढ़ता। वैवाहिक सम्बन्धक निर्णय। सं. तत्सम
सिद्धि-सं., सफलता। सं. तत्सम
सिदहा-सं., बिन रान्हल खाद्यान्न। मै.
सिन्दूर-सं., सौभाग्य सौन्दर्यवर्धक लाल रंगक विशेष प्रकारक धूलि। सं. तत्सम
सिन्ह-सं., चोरि करैक हेतु चोरक द्वारा कयल घर मे पैघ छेद। मै.
सिन्ह काटब-क्रि., घर मे पैसैक जोग छेद करब। मै.
सिन्हबारि-सं., सिन्ह कटैवाला अस्त्र। मै.
सिन्हाचोर-विशे., सिन्ह कटैवाला निपुण चोर। मै.
सिन्हुराएब-क्रि., सौँथ पर सिन्दूर मात्र द' क' विवाह क' लेब। मै.
सिनुरिया-विशे., सिन्दूरसन लालवाला। मै.
सिनूर-सं., देखू—"सिन्दूर"। मै.
सिनेमा-सं., चलचित्र, वायसकोप। अं. तत्सम
सिनेह-सं., स्नेह, अनुराग। सं. तद्भव

सिनेही-विशे., स्नेह रखैवाला । सं. तद्भव

सिपहिबा/सिपाही-सं., (अनादर मे) संरक्षक। सैनिक । उ. तत्सम

सिबित-अव्यय, केवल, मात्र, खाली । प्रयोग-"मनुष्य सिबित अन्ने टा खाकए जीवि सकैये ।" मै.

सिबिया-सं., सदिखन लागल सीबैक काज । मै.

सिमटब-क्रि., सिकुड़ि कय रहब । मै.

सिमरिफ-सं., लाल औषधीय पदार्थ । मै.

सिमसिम-विशे., कनेक कनेक भीजल, सरस । मै.

सिमसिमाह-विशे., कनेक भीजलसन । मै.

सियाएब-क्रि., सीबैक-सीयैक काज कराएब । मै.

सियार-सं., गीदड़, शृगाल । सं. तद्भव

सिरका-सं., औंटल चीनीक रस । सामान्य वस्तुक झोर । मै.

सिरखार-सं., प्रारूप, रेखाचित्र । मौलिक छवि । मै.

सिरजन-सं., सृष्टि, निर्माण । सृजन । सं. तद्भव

सिरजब-क्रि., निर्माण करब । मै.

सिरपाइ-सं., बैलगाड़ीक मुहरा उठा क' अड़बैवाला दू बाँसक ठोकल बान्हल परस्पर जोड़ । सिरपैया । मै.

सिरम-सं., सूतल अवस्थाक माथ दिशुक भाग । मै.

सिरसिर करब-क्रि., जाड़ें कँपला सँ नाक मुहक शब्द होएब । मै.

सिरहनी-सं., माथ तर रखै लेल ऊँच कोमल वस्तु । मै.

सिरहार-सं., फूल विशेष । शेफालिका । मै.

सिराउर-सं., हर सँ कोड़ल रेखा । मै.

सिराएब-क्रि., सीर धरतीक भीतर वा देहक भीतर शाखा बढ़ब । मै.

सिराह-विशे., बढ़ल अथवा बचल सीरवाला । मै.

सिरीस-सं., कोमलतम फूलवाला वृक्ष । मै.

सिरोदय-सं., जन्मक समय शिशुक गर्भ सँ माथ बहार होइक स्थिति । मै.

सिलपट्ट-विशे., १. एक रंग चौरस चिक्कन वस्तु । २. (लाक्षणिक) अत्यन्त निरक्षर मूर्ख । मै.

सिलवर-सं., चानीसन धातु विशेष । मै.

सिलाजित-सं., पर्वतीय औषधि द्रव । मै.

सिलेट-सं., मलिन पाथरक पातर पट्टी स्लेट । अं. तद्भव

सिलेटी-विशे., सिलेटसन मलिन रंग । मै.

सिलेब-विशे., करिछौन उज्जर गाय बड़द । मै.

सिलेबिया-विशे., सिलेब रंगवाला । मै.

सिसकँड़ली-सं., छोट फूलक झार विशेष । एक पुरुषिया नम्मा कम चाकर पातवाला झार । मै.

सिसकी-सं., वर्तन आदि मे अत्यन्त मेहीं छेद सँ चूबैक वाट । मै.

सिसबोनी-सं., सीसो गाछक बोन । मै.

सिसियाएब-क्रि., कष्ट सँ 'सी' शब्द क' उठब । मै.

सिसुकब-क्रि., शब्दहीन केवल श्वास प्रश्वास द्वारा कानब । मै.

सिसोहब-क्रि., दाँत अथवा हाथ सँ कोनो वस्तुक उपरक रस वा खोंइचा आदि खींचि साफ करब । मै.

सिंह-सं., १. राशि विशेष । २. बुद्धिमान् आ अत्यन्त बलवान् सब सँ उत्कृष्ट हिंसक पशु । मै.

सिहकन-सं., १. फूटैक वा फटैक क्रम । २. बसातक कनेक डोलैक क्रम । मै.

सिहकब-क्रि, १. फटैक वा फूटैक क्रम होएब । २. बसात अत्यन्त मन्द बहब । मै.

सिहकी-सं., १. बसातक अति मन्द गति । २. फटैक फूटैक चिह्न । मै.

सिहरब-क्रि., १. शीत सँ देहक भुलकब । २. कटि कय उँच माटि देवाल आदि कें ससरिकय खसैक क्रम होएब । मै.

सिहाएब-क्रि., लोभ जगाकय तृष्णा बढ़ाकय व्यथित करब । मै.

सिंहार-सं., पानिक उपर लत्ती मे फड़ैवाला फल विशेष । मै.

सिहार-सं., भीत आदि मे दूरधरि फटैक आ धँसैक चिह्न । मै.

सिहारी-सं., तीन दिश तिनकोनमा माथक सौंथ (माङ) । मै.

सिंहासन-सं., राजाक वा देवताक मुख्य बैसैक स्थान । मै.

सिंहिन-सं., सिंहक स्त्री जाति । मै.

सिहिनियाँ-विशे., (गारि) क्रूर नीच स्त्री । मै.

सिहुलिया-विशे., भीतर लाल गुद्दावाला । (लताम आदि फल) । मै.

सिहुली-सं., चर्मरोग विशेष, देह पर सगरो उज्जर दाग। मै.

सी

सीक-सं., लटकाकय वस्तु रखैक लेल डोरीक आधारवाला लटकनी। छीका। मै.

सीक टुटल बिलाड़िक भाग-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) ककरो ध्वंस आ नाश सँ उचक्काक लाभ। मै.

सीकी-सं., कातर खड़क फूलवाला पातर डंटी। मै.

सीकें-अव्यय, सोझें। प्रयोग-"नाकैक सीकें चल जाउ।" मै.

सीख-सं., शिक्षण। मै.

सीखब-क्रि., शिक्षा लेब। मै.

सींघ-सं., मालजालक माथ पर ऊगल नोकदार नमहर हड्डी। मै.

सींचब-क्रि., सिञ्चन करब। मै.

सींटब-क्रि., सौन्दर्य्य विन्यास करब। मै.

सीटल-विशे., स्वच्छ आ सुन्दर जकाँ सजाओल। मै.

सीटसाट-सं., शोभा आ सुन्दरताक हेतु अधिक सजबैक चेष्टा। मै.

सीटी-सं., चेतावनीक ध्वनि। अं. तत्सम

सीटी मारब-क्रि., वासना, हर्ष, आश्चर्यक कौतुक मे मुह सँ विलक्षण ध्वनि करब। मै.

सीढ़ी-सं., घर आदि पर चढ़ै उतरैक साधन सोपान। मै.

सीतलगड़-विशे., छत्ताक भञ्ठी करैवाला। मै.

सीधा-सं., १. सोझ, बिन रान्हल भोजन सामग्री। हि. तत्सम

सीन-सं., नाटकीय दृश्य। अं. तत्सम

सीप-सं., सितुआ, खुरचन। हि. तत्सम

सीपा-सं., ओसक झटका, जाड़क प्रभाव। मै.

सीफति-सं., कला कौशल। मै.

सीम-सं., लत्तीक छिम्मड़िवाला व्यञ्जन फल। मै.

सीमा-सं., अड्डा, अधिकारक अवधि। मै.

सीयनि-सं., सीयैक क्रम, ढंग, कला, चिह्न। मै.

सीयब-क्रि., सूइ ताग सँ टूटा कोर के एकठाँ जोड़ब। मै.

सीर-सं., धरतीक भीतर पसरैवाला गाछ वृक्षक बिन पातक जड़िवाला शाखा। मै.

सीर पंचमी-सं., सरस्वती पूजावाला हर ठाढ़ करैक माघक इजोरियाक पंचमी। मै.

सीर बहकब-क्रि., (लाक्षणिक) धरती पर अचल भेल बैसल रहब। मै.

सीरा-सं., घर मे बनाओल कुल देवताक स्थानक पिण्डा। मै.

सीरी-सं., श्री, शुभ यज्ञ विवाह आदि सँ पहिने पूजनीय देवी। मै.

सीरी सबाइ-सं., उन्नति, वृद्धि। मै.

सीली-सं., धान आदि अन्नक नामानामी ढेरी। मै.

सीली ढ़ारब-क्रि., धान आदि अन्न के सूप सँ नामानामी एकैठाँ ओसबैले बारम्बार खसाएब। मै.

सींस-सं., धान आदि अन्नक दानाक गुच्छ। मै.

सीसा-सं., काँचक द्रव्य। मै.

सीसी-सं., १. द्रवक मात्राक मान। २. काँचक छोट वासन। अं. तत्सम/मै.

सीसो-सं., सुकाठ मे प्रसिद्ध वृक्ष विशेष। मै.

सु

सुअन-सं., सुपाच्य अन्न। सं. तद्भव/मै.

सुआ-सं., जीरक आकारवाला छत्तासन सीसवाला गन्धयुक्त मसालाक दाना। मै.

सुआति गहुमन-विशे., असली, शुद्ध गहुमन साँप। मै.

सुआसीन-विशे., गामक कन्या सम्बन्धी स्त्री। मै.

सुइआ-सं., कपड़ा आदि सीयैक अस्त्र। सुइआसन बीज सँ बहराएल अंकुर। मै.

सुक्खा-विशे., बिना अन्न वस्त्रवाला केवल नगद दरमाहावाला नौकरी। मै.

सुकचब-क्रि., सिकुड़िकय छोट बनब। मै.

सुकठी-विशे.,सुखाकय अपन आकार मे क्षीण बनल। मै.

सुकठीक वनीज पशुपतिक दर्शन-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) एकै काज सँ दू लाभ। मै.

सुकड़ब-क्रि., नाक सँ श्वासक झोंकदय कफ झाड़ब। मै.

सुकर-विशे., आसान, सरल। मै.

सुकर होएब-क्रि., (लाक्षणिक) भाग्यक धन्य बनब। मै.

सुकराती-सं., कातिकक अमावास्याक राति, दीपावली पर्वक राति। मै.
सुकुमार-विशे., अत्यन्त कोमल अंगवाला। सं. तत्सम
सुकुमालकी-विशे., सरल। मै.
सुकुर मानव-क्रि., कल्याण, भला, भाग्यें नीक बूझब। मै.
सुख-सं., सन्तृप्त अविकल मन। आनन्द। मै.
सुखद-विशे., सुख दैवाला। सं. तत्सम
सुखरात्रि-सं., देखू—"सुकराती"। सं. तत्सम
सुखराह-विशे., सुखाएल सन लगैवाला, मरदुआर। मै.
सुखलहा-विशे., सुखाएल, रसहीन, आर्द्रता रहित वाला। मै.
सुखाइ-सं., सुखबैक काज। मै.
सुखाएब-क्रि., सरस, भीजल वस्तु कें कोनो ताप मे आर्द्रताहीन बनैक हेतु देब। आर्द्रताहीन बनब। मै.
सुखाओंत-विशे., रौद आदि मे सुखाएल, आर्द्रता रहित पदार्थ। मै.
सुखाओन-सं., १. सुखबैक काज। २. सुखायला सँ वस्तुक भारीपनक कमी। मै.
सुखार-सं., रौदी, वर्षाक अभाव। मै.
सुखित-विशे., अनें धने भरल। आनन्दित। मै.
सुखी-विशे., सुख सँ भरल। सं. तत्सम
सुखी सम्पन्न-विशे., मन आ धन सँ आनन्दित। मै.
सुखौंती-सं., १. सुखाएल वस्तु। २. सुखाइक गुण। मै.
सुखौंती लागब-क्रि., बिन कारणें शरीरक दुबराएल जाएब। मै.
सुग्गा-सं., पोसैक योग्य पक्षी विशेष। मै.
सुगत-सं., बुद्ध भगवान्। सं. तत्सम
सुगन्ध (न्धि)-सं., सुन्दर महक, सुवास। सं. तत्सम
सुगन्धित-विशे., सुवासित। सुन्दर गन्धवाला। सं. तत्सम
सुगबा-विशे., सुग्गासन आकार प्रकारवाला। मै.
सुगबा साँप-सं., हरियर फनैवाला साँप। मै.
सुगबुगाएब-क्रि., देह कें कनेक चलाएब। मै.
सुगम-विशे., सरल, आसान। मै.
सुगरकोना-सं., नैर्ऋत्य कोण। मै.
सुगरहा-विशे., (घृणायुक्त अनादरक गारि) सुग्गर सन आचार विचार रखैवाला। मै.
सुघट-सं., १. सुन्दर घाट २. विशे., नीक जकाँ संगत होम'वाला। मै.
सुघर-विशे., १. नीक घर। २. नीक अवगति आ विचार आचारवाला। मै.
सुंघानी लेब-क्रि., (लाक्षणिक) अलक्षित भ' क' विषय वस्तुस्थितिक ज्ञान करब। बात बूझैक चेष्टा करब। मै.
सुच्चा-विशे., शुद्ध, मिलौटहीन। मै.
सुचारु-विशे., अत्यन्त सुन्दर। मै.
सुचित-विशे., सुस्थिर बुद्धिवाला। मै.
सुजन-विशे., नीक लोक। सं. तत्सम/मै.
सुजाक-सं., गुप्ताङ्गक रोग विशेष। उ. तत्सम
सुजाति-विशे., शुद्ध जातिवाला। सं. तत्सम
सुजान-विशे., जानकार, नीक ज्ञानवाला। मै.
सुझाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ज्ञान कराएब। मै.
सुटकब-क्रि., भय सँ सिकुड़ि जाएब, नुकाइक चेष्टा करब। मै.
सुटकुनमा-विशे., देह कें छोट कय नुकाइवाला। मै.
सुटकुनिया मारब-क्रि., देह कें छोट कय संकीर्णों स्थल मे नुका रहब। मै.
सुट द'-अव्यय, अलक्षित रूपें तुरन्त। मै.
सुटसुट करब-क्रि., बिन कारणौं जत' नै जाइक चाही तत्तौ जाइत अबैत रहब। मै.
सुटियाकय-अव्यय, बिन बजाओलो प्रवेश कय। मै.
सुटियाएब-क्रि., बिन सम्पर्कों घुसियाइक चेष्टा करब। मै.
सुटेबुल-विशे., उपयुक्त। अं. तद्भव
सुंठियाएब-क्रि., भूखें मुह सुखाएब। मै.
सुंठौरा-सं., आद गुड़ आ अन्य औषधीय द्रव्य सब सँ बनल परसौतीक औषध। मै.
सुड्डाह-विशे., नीक जकाँ डहिकय भस्म बनि गेल। मै.
सुँढ़ियाएब-क्रि., १. काजक वाट पकड़ब। २. बिगड़ल लोकक नीक मार्ग धरब। मै.
सुतनमा-विशे., अधिक काल सुतैत रहैवाला। मै.

सुतना-विशे., विशेष सूतैंक लतिवाला। मै.
सुतनिहार-विशे., सूतैवाला। मै.
सुतरब-क्रि., अकस्मात् काज बनि जाएब। थोड़ प्रयासें नीक जकाँ स्वार्थ सिद्धि होएब। मै.
सुतरी-सं., सन पटुआक मेहीं डोरी। मै
सुतलहा-विशे., सूतल लोक। मै.
सुतहारा-विशे., सूत गढ़िकय बेचैक व्यवसाय करै-वाला। मै.
सुताएब-क्रि., १. भूमि पर पाड़ि देब। नामा नामीकय राखि देब। २. बच्चा कें निन्न पाड़ब। मै.
सुताओन-सं., सुतैंक काज, सुतैंक श्रम। मै.
सुतार-सं., नीक जकाँ काज बनि जाइक संयोग। थोड़े प्रयासें कार्य सिद्धि। मै.
सुतारब-क्रि., नीक जकाँ अप्रत्याशितो काज संयोग सँ बना लेब। सिद्धि प्राप्त करब। मै.
सुतियाएब-क्रि., सूत जकाँ पातर होएब। मै.
सुतियाह-विशे., सूतसन पातर (गाछ)। मै.
सुतिहार-विशे., शिल्पकार, स्थापत्य कलाक जान-कार, आधुनिक इंजीनियर। मै.
सुतिहारी-सं., अभियन्तृता, इंजीनियरी, शिल्पकारी। मै.
सुथनी-सं., खाद्य कन्द विशेष, फलाहारी वस्तु। मै.
सुदिन-विशे., १. (सामन्ती युगक) भोगक हेतु आश्रिता स्त्री (रखेली) रक्षिता। सं., २. नीक दिन (समय)। मै.
सुदीन-विशे., अत्यन्त गरीब, अकिञ्चन। मै.
सुधबाध-सं., विवाह आदि करतेबताक अधिक कालक समय। वृहस्पतिक नीक राशि मे रहैक समय। मै.
सुधरब-क्रि., नीक मार्ग आ उचित स्थिति पर प्राप्त होएब। मै.
सुधार-सं., नीक परिस्थिति, समस्याक निराकरण, सरल आ सहज स्थिति। मै.
सुधारब-क्रि., उचित मार्ग पर आनब। नीक स्थिति मे ल' जाएब। आपत्ति कें दूर करब। मै.
सुधि-सं., स्मरण सँ जागल उत्कण्ठा, स्मृति स्मरण शक्ति। मै.
सुधिबुधि-सं., ज्ञान ध्यान। मै.
सुधि लेब-क्रि., तत्परता सँ ध्यान देब, स्मरण करब। मै.
सुधी-विशे, विद्वान्। मै.
सुधुआ-विशे., छल कपट आ छ पाँच नहि जनै वाला। मै.
सुन्दर-विशे., रूप गुण भरल। मै.
सुन्न-विशे., १. शून्य। २. (अंगक हेतु) बहिर। मै.
सुन्नमसान-विशे., एकदम जनहीन। मै.
सुन्नर-विशे. ऐंत। मै.
सुन्ना-सं., शून्य अंक। मै.
सुन्नी-विशे., भिन्न सम्प्रदायवाला मुसलमान। शून्य-मतावलम्बी। मै.
सुनगब-क्रि., आगिक उत्तेजित होएब। (लाक्षणिक) सामाजिक उत्तेजनाक बात पसरब। मै.
सुनगाएब-क्रि., आगि कें जगाएब। (लाक्षणिक) समाज मे उत्तेजनाक बात बढ़ाएब। मै.
सुनझाएब-क्रि., वापस करब, घुरा देब। मै.
सुनटा-विशे., उचित स्थिति मे आनल वस्तु। मै.
सुनटाएब-क्रि., विपरीत स्थिति सँ वस्तु कें समुचित स्थिति मे करब। मै.
सुनता उपास-सं., कत्तौ होम'वाला विशेष आरा-धनाक विशेषतया सत्यनारायण पूजाक नामो सुनला सँ कयल गेल व्रत। मै.
सुनबहिरी-सं., चमड़ा पर आ कोनो अंगक शून्यता सँ स्पर्शक भेदवाला रोग, कुष्ठ। मै.
सुनबाहि-सं., आज्ञाक पालन, कहल बात पर ध्यान रखैक चेष्टा। मै.
सुनलहा-विशे., बिना मूलक ज्ञान कयने केवल ककरो मुहें सूनल बात। मै.
सुनलाक ढोलिया-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) ककरो मुहें कोनो बात सुनिकय प्रचार कयनिहार। मै.
सुनहकार-सं., एकदम निर्जनता। मै.
सुनहट-सं., क्षणिक निर्जनता। मै.
सुनाएब-क्रि., दोसरा कें फरिछाकय कहब। मै.
सुना पड़ब-क्रि., श्रवण गोचर होएब। कान मे शब्दक प्रवेश करब। मै.
सुनि गुनि लेब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रत्यक्ष वा अनुमान सँ अथवा अकानिकय प्रसंगक रहस्य जनैक गुप्तचरी करब। मै.

सुनि मानि-सं., कोनो हितक बात आ कि उपदेशक बात सुनिकय ओकरा मानैक चेष्टा। मै.

सुपक-विशे., नीक जकाँ पाकल। मै.

सुपच-विशे., नीक जकाँ पचैवाला पदार्थ। सुपाच्य। सं. तद्भव

सुपत-सं., असल, शुद्ध कमाइ। मै.

सुपती-सं., बाँसक जड़िवाला गीरहक केंचुल। मै.

सुपथ-सं., १. नीक बाट। २. स्वास्थ्यक हितकर। मै.

सुपरिया-विशे., सुपारी एतेक मानवाला। मै.

सुपहा-सं., सूप पर ठोकि कय बनाओल गोइठा। मै.

सुपात-विशे., सुपात्र, सज्जन पुरुष। मै.

सुपान्य-विशे., सूप ल' ल' क' उछालैक सदृश मुसलाधार वर्षा। मै.

सुपारी-सं., गूआ, कसैली। देशज

सुपास-सं., सुपार्श्व, सुविधा, लगै मे सब आवश्यक वस्तु भेटैक गुण। सं. तद्भव

सुफल-सं., १. नीक फल। २. तीर्थक पण्डा द्वारा देल हृदय सँ आशीर्वाद। सं. तत्सम

सुबकब-क्रि., विनु शब्द जोर सँ श्वास खींचि खींचि कानब। मै.

सुबास-सं., सौरभ, सुगन्धि। मै.

सुभ्यस्त-विशे., १. सुखी सम्पन्न। २. सब काज सँ निश्चिन्त। मै.

सुभग-विशे., सुन्दर। सं. तत्सम

सुभा-सं., चोरिक शंका। मै.

सुभीता-सं., सब वस्तुक सुविधा, भेटैक आसानी। मै.

सुम्मा-सं., काँटी धँसबैक काँटा। मै.

सुमन-सं., फूल। सं. तत्सम

सुमिरन-सं., स्मरण। मै.

सुमिरनी-सं., जपक संख्या मोन रखैक माला। मै.

सुमिरब-क्रि., मोन पाड़ब, स्मरण करब। मै.

सुमेर-सं., मालाक दूनू छोर जोड़ैवाला दाना। मै.

सुमेरु-सं., देव पर्वत। सं. तत्सम

सुर्र द'-अव्यय, अलक्षित वेग सँ। मै.

सुर्रा-विशे., १. (लाक्षणिक) दुब्बर पातर नम्मा। २. डारि पात झारल केवल डन्टी मात्र बाँचल। मै.

सुर्रा लागब-क्रि., फूल पात झरिकय डन्टी टा बचैक रोग होएब। मै.

सुर-सं., देवता। सं. तत्सम

सुरकन-सं., मुह नाकक बसात सँ द्रव पदार्थ उपर खींचैक क्रम। मै.

सुरकब-क्रि., मुह नाकक बसात सँ उपर खींचब। मै.

सुरका-विशे., अधिक द्रव वस्तु तेजी सँ सुरकैक प्रकृतिवाला। मै.

सुरकाएब-क्रि., नाँक मुह द्वारा द्रव पदार्थ कैं दोसरा कें खींचैक अभ्यास कराएब। मै.

सुरकान भरब (मारब)-क्रि., १. अधिक जोर सँ सुरकब। २. बैसले बैसल तेजी सँ दौड़ब। मै.

सुरकिया मारब-क्रि., १. निहुरल अत्यन्त जोर सँ अलक्षित जकाँ भागब। मै.

सुरकी लेब-क्रि., नाकक द्वारा द्रव औषध सुरकब। मै.

सुरकौआ-विशे., सुरकैक योग्यवाला। मै.

सुरखी-सं., पजेबाक चूरल गर्दी। उ. तद्भव

सुरखुरू-विशे., बिना योग्यतैं मिथ्या प्रभावी तथा अगुआ। मै.

सुरंग-सं., धरतीक भीतर मे बनब कृत्रिम गुप्त बाट। सोन्हि। सं. तत्सम

सुरगण-सं., १. मैथिलक मूलग्राम विशेष। २. देवताक समूह। सं. तत्सम

सुरड़ब-क्रि., डन्टी सँ सबटा फूल वा पत्ती वा फल तोड़िकय सुन्न क' देब। मै.

सुरड़ा-सं., डन्टी दाबिकय खींचैक क्रम। मै.

सुरड़ाएब-क्रि., अनका हाथें डन्टी सँ ससारिकय तोड़ाएब। मै.

सुरड़ान-सं., अत्यन्त रूपें फूल पत्ती झारैक क्रम। मै.

सुरत-सं., सम्भोग। सं. तत्सम

सुरता-सं., स्मरण, सुधि। मै.

सुरती-सं., तमाकू। हि. तत्सम

सुरफुराएब-क्रि., चेतना करब, चेष्टा करब। मै.

सुरफुरी-सं., चेष्टा, उपाय। वश। मै.

सुरभि-सं., १. सुगन्धि। २. वसन्त। सं. तत्सम

सुरभित-विशे., सुगन्धित । सं. तत्सम

सुरम्य-विशे., अत्यन्त मनोहर । सं. तत्सम

सुरमा-सं., आँखि कें सुशोभित करैक विशिष्ट आँजन । उ. तत्सम

सुरसा-सं., वर्तन वा अन्य कोनो वस्तु पकड़ैवाला लोहाक चुट्टा । मै.

सुरसुर-विशे., सुरकि कय झोरक संग खाइवाला झोर वाला पदार्थ । मै.

सुरसुर मुरसुर-विशे., सुरकैक संगहि मुह मे कड़कड़ करैवाला भोजन पदार्थ । मै.

सुरसुराएब-क्रि., उद्यत होएब । मै.

सुरसुरी-सं., नाक मुह मे कड़ूक अनुभव । मै.

सुरहा-विशे., अपनै झोंकें काज केनिहार । मै.

सुरा-सं., मदिरा (दारू) । सं. तत्सम

सुराख-सं., छेद, भूर, छिद्र । उ. तत्सम

सुराग-सं., वार्ताक गुप्त रूपें ज्ञान, विषयक सूक्ष्म उपाय । पता ठेकान । मै.

सुराह-विशे., एके बातक झोंक मे तल्लीन । स्त्री० सुराहि । मै.

सुराही-सं., पाकल माटिक विशेष प्रकारक जलपात्र । मै.

सुरियाएब-क्रि., मत अथवा पक्ष मे आएब । मै.

सुरुङ-विशे., अत्यन्त ऊँच, उपर सोझ उठल । मै.

सुरुङबा-विशे., उपर उठलहा । सोझ ऊँच । मै.

सुरुह-अव्यय, आदि, आरम्भ मे । मै.

सुरेब-विशे., सुन्दर आ सब अंग सँ परिपूर्ण । मै.

सुरेबगर-विशे., सर्वाङ्ग सुन्दर । मै.

सुरैली भास-सं., सुन्दर स्वरवाला लय । मै.

सुलघब-क्रि., आपसी विरोधक मिलान भ' जाएब । मै.

सुलघाएब-क्रि., आपसी विरोध नष्ट कराकय समञ्जस कराएब । मै.

सुलच्छन-विशे., नीक लक्षणवाला, शुभ देम'वाला । मै.

सुलझब-क्रि., समस्या सोझराएब । मै.

सुलझाएब-क्रि., समस्याक समाधान करब । मै.

सुलफा-सं., काठ लोह आ पाथरक डन्टा मे, एक दिश उतार आ अन्त मे अत्यन्त पातर भोंकैक योग्य बनल अस्त्र । मै.

सुलबाहि-सं., व्यथा कय लेहू पोटावाला अधिक बेर मलक वेग । मै.

सुलभ-विशे., सुगम आ सुगमता सँ प्राप्त होम' वाला । सं. तत्सम

सुलसुल करब-क्रि., अधिक स्थूलता मोटाइक कारणें अकर्मण्यता । (काज करैक असमर्थता होएब) । मै.

सुलसुली धरब-क्रि., मोटाइक द्वारें उठै बैसै मे कठिनता होएब । मै.

सुशील-विशे., नीक स्वभाववाला । मै.

सुस्त-विशे., मन्द, गतिहीन । उ. तत्सम

सुस्ताएब-क्रि., अल्पकालिक विश्राम करब । मै.

सुस्ती-सं., मन्दता । उ. तत्सम

सुस्तें-अव्यय, धीरें धीरें । मै.

सुसकारी भरब-क्रि., मुह सँ बँसुलीसन शब्द करब । मै.

सुसकी पाड़ब-क्रि., मुह सँ बसात बहार कय ध्वनि करब । मै.

सुसकें-अव्यय, सरलता, आसानी आ सुगमता सँ । मै.

सुसुआएब-क्रि., अत्यन्त कड़ू स्वाद सँ, अत्यधिक जाड़ सँ मुह सँ सू सू ध्वनि करब । मै.

सुसुम-विशे. कनेक गरम कयल । मै.

सुसुमाएब-क्रि., कनेक गरम करब । मै.

सुहकार-सं., स्वरस, वार्ताक प्रति पक्षपात । स्वीकार । भेद (रहस्यक) प्राप्ति । मै.

सुहकार लागब-क्रि., स्वीकारक स्वरस पाएब । मै.

सुहबी-विशे., घर मे स्नेह सँ देखल जाइवाली बेटी । मै.

सुहबै (बा)-विशे., सधबा । ऐहब । मै.

सुहाल-सं., खेतक आ भूमिक सरसता । मै.

सुहिया-विशे., अधिक नाम कम चाकर आ पातर कदोआवाला उत्थर हृर । मै.

सुहृदय-विशे., परस्पर समर्पित मित्र । सं. तत्सम

सू

सूआ-सं., १. बोरा आदि सीयैवाला सूई जकाँ लोहक काँटा । २. स्रोत । मै.

सूआगरय-विशे., अधिक ढालू घरक चार । मै.

सूइ-सं., १. वस्त्र आदि सीबैक लोहक मेहीं अस्त्र । २. देह मे औषध सन्हिअबैक अस्त्र । मै.

सूकी-सं., चौअन्नी सिक्का, रुपैयाक चारिम भागक सिक्का। मै.

सूग्गा-सं., देखू—"सुग्गा"। मै.

सूगी-सं., छाताक कमानी मे छेद करैक अस्त्र। मै.

सूंघ-सं., जौ तथा धान गहूम आदि फसिलक आगू एवं मोस आदि दंशक कीट सभक मुह मे बढ़ल पातर आ सूक्ष्म काँट। मै.

सूंघनी-सं., सूंघैत रहैवाला पदार्थ। नोसि। मै.

सूंघब-क्रि., नाक सँ गन्धक ज्ञान करब। मै.

सूङ-विशे., अत्यन्त जड़ता भरल लोक। मै.

सूचक-विशे., स्थितिक ज्ञान देम'वाला। सं. तत्सम

सूचना-सं., विशेष वार्ताक बोध। सं. तत्सम

सूची-सं., तालिका, क्रमबद्ध वस्तुक लेख। सं. तत्सम

सूजी-सं., दानादार अन्नक कोमल चूर्ण। मै.

सूझब-क्रि., आँखि वा ज्ञान सँ विषयक दर्शन करब। मै.

सूझि-सं., सूझैक शक्ति। दूरदर्शी बुद्धि। मै.

सूझिबूझि-सं., ज्ञान द्वारा आगू अर्थात निश्चित भविष्यक दर्शन करैक शक्ति। मै.

सूँठि-सं., सुखाएल आद। मै.

सूँड़ा-सं., चाउर अन्न मे लगैवाला मेहीं कीड़ा। मै.

सूँड़ि-सं., व्यावसायिक जाति विशेष। मै.

सूँढ़-सं., हाथीक कर (शुण्डा)। मै.

सूढ़ि चढ़ब-क्रि., कोनो विशेष बातक झोंक होएब। मै.

सूत-सं., कपास, तूर सँ बाँटल ताग, वस्त्र आदिक मूल वस्तु। २. सारथी। मै.

सूतब-क्रि., १. देह के नम्माकय भूमि पर पड़ि रहब। २. निद्र पड़ब। मै.

सूता-सं., सूत्र, बाँटल कपास आदिक तार। मै.

सूति-सं., गरदनि मे पहिरैवाला मोट भारी ठोस गहना। हँसुली। मै.

सूती-विशे., कपासक सूत सँ बनल वस्त्र। मै.

सूदि-सं., ऋणक वृद्धिवाला अंश, व्याज। मै.

सूदी-विशे., सूदिवाला ऋण। मै.

सूनब-क्रि., शब्द पकड़ैक शक्ति होएब। मै.

सूनसान-विशे., जनहीन। एकदम शून्य। मै.

सूप-सं., १. बाँसक बीनल गोल डगरा वा चौकोर कोनिया नामक अन्न फटकैक साधन। २. झोर। शूर्प। सं. तद्भव/मै.

सूर्य-सं., दिनकर। सं. तत्सम

सूर्यमुखी-सं., फूल विशेष। सूर्यक दिशा मे घूमैवाला फूल। मै.

सूर-विशे., १. झोंकाह लोक। २. आन्हर। मै.

सूरदास-विशे., नेत्रहीन, नहि देखि सकैवाला। मै.

सूरसार-सं., तैयारी प्रस्तुत (उद्यत) होइक चेष्टा। मै.

सूरि-सं., मनक झोक दिशक झुकान। मै.

सूरि चढ़ब-क्रि., एके बात वा काजक झोंक होएब। मै.

सूल-सं., १. हार्दिक व्यथा। २. त्रिशूल अस्त्र। मै.

सूल होएब-क्रि.,१. कोनो बातक हेतु मन मे गम्भीर पीड़ा होएब। २. व्यथा कय आओंवाला मल उतरब। मै.

सूली-सं., मृत्यु दण्डक विशेष विधि। मै.

सूहब-विशे., देखू—"सुहबै"। मै.

सूहा-सं., माछ विशेष। मै.

सूही-विशे., देखू—"सुहिया"। मै.

सृ

सृका-सं., प्राचीन अस्त्र विशेष। सं. तत्सम

सृजन-सं., संसार। सं. तत्सम

सृति-सं., सीढ़ी, पद्धति, मार्ग। सं. तत्सम

सृष्टि-सं., ब्रह्माण्ड, संसार। सं. तत्सम

से

से-सर्व., (निश्चयवाचक) ओ। (संयोजक) से। मै.

सेआख-सं., अप्रासंगिक आडम्बर आ अनुचित वार्ता। मै.

सेआखी-विशे., सदिखन सबठाँ सेआख कयनिहार। मै.

सेओ-सं., फल विशेष। सेब। मै.

सेक-सं., सहैक जोकर ताप लेब। मै.

सेकन-सं., सेक लेबाक विधि। मै.

सेकब-क्रि., ताप लगाएब। मै.

सेकलहा-विशे., ताप लगाओल। मै.

सेकाएब-क्रि., दोसरा द्वारा ताप लगबाएब । मै.
सेकासेकी-सं., निरन्तर ताप लगबैक प्रक्रिया । मै.
सेख-सं., मुसलमानक एक प्रभेद । मै.
सेखी-सं., बड़प्पनक अहंकार । मै.
सेज-सं., बिछाओन, शय्या । मै.
सेजपाट-सं., बिछाओल बिछाओन । मै.
सेजबन्ह-सं., बिछाओनक ओहार । आधुनिक दृष्टि मे मसहरी । मै.
सेजाओट-सं., उचित रूपें शय्या पसारैक प्रक्रिया । मै.
सेठ-विशे., धनीमानी व्यापारी । मै.
सेठाइन-विशे., सेठक पत्नी । मै.
सेड़र-विशे., स्वाद लेबा मे शक्तिहीन । प्रयोग—"पान खाइत खाइत जीह सेड़र भ' गेल ।" मै.
सेतु-सं., बान्ह, पुल । सं. तत्सम
सेदब-सं., ताप लगाएब, रसौं लेब । मै.
सेदमाण-सं., सेदब आदि सब प्रक्रिया रूपें सेवा । मै.
सेना-सं., हँसेरी, लड़ाकू लोकक समूह । सं. तत्सम
सेब-विशे., बेंटक उपर दिश उठल (कोदारि आदि पाड़ैवाला अस्त्र) । मै.
सेबै-सं., मेहीं लच्छादार सूतसन बनाओल खाद्य विशेष । अरबी
सेमार-सं., जलाशय मे जलक भीतर पसरैवाला लत्ती । मै.
सेर-सं., प्राचीन वाट । (सोलह कनमाँ) । मै.
सेराएब-क्रि., ठन्ढा होएब । मै.
सेरी-सं., खरिहानक भाड़ा स्वरूप अन्न । मै.
सेवक-विशे., सेवा करैवाला । सं. तत्सम
सेवन-सं., नियम सँ उपचार एवं परिचर्य्या । सं. तत्सम
सेवब-क्रि., परिचर्य्या (सेवा) एवं रक्षा तथा पालन करब । मै.
सेवा-सं., नीक मानी, शुश्रूषा । सं. तत्सम
सेवाइत-सं., देवताक पूजा आराधनाक हेतु देल सम्पत्ति । मै.
सेवावर्दाइस-सं., सेवा करैक संग संग पालन । मै.
सेवैक-विशे., दृढ़तापूर्वक सेवा करैवाला । मै.
सेहन्ता-सं., अपूर्ण अभिलाषा । मै.

सै

सैं-संख्या, शून्य एकाँइ एवं दस दहाँइवाला अंक अर्थात् दुइ शून्यवाला तीन अंक । मै.
सैं-विशे., स्वामी, पति । मै.
सै-सं., देखू—"सइ" । मै.
सैंकड़ा-सं., तीन संख्याक मान । मै.
सैंक सैं-विशे., अनेक सैक संख्या भरल । मै.
सैंतन-सं., १. अपराधक दण्ड । २. सम्हारिकय रखैक चेष्टा । मै.
सैंतब-क्रि., १. सम्हारिकय राखब । २. अनुशासन भंग करैक दण्ड देब । मै.
सैंतालीस-संख्या, सात एकाँइ चारि दहाँइवाला अंक । मै.
सैंतीस-संख्या, सात एकाँइ तीन दहाँइवाला अंक । मै.
सैन्धव-विशे., १. सिन्धु देशक नोन । २. सिन्धु देशक घोड़ा । सं. तत्सम
सैन्य-सं., सेनाक समूह । सं. तत्सम
सैनि-सं., इसारा । संकेत चेष्टा । मै.
सैनिक-विशे., सेना मे रहैवाला योद्धा । सं. तत्सम
सैंर-सं., स्वेच्छा सँ विचरण । मै.
सैर-विशे., समतल । देखू—"सरि" । मै.
सैरवरावरि-अव्यय, (लाक्षणिक) देब लेब एक रंग भेल । मै.
सैला बाघ-सं., सब सँ पैघ बाघ (शेर) । मै.
सैली देब-क्रि., उकसाएब, कोनो विषय मे युक्ति देखाएब । मै.
सैली करब-क्रि., सैनिक टा के प्रेरणा देब । मै.
सैंह-अव्यय, वैह । मै.

सो

सो-सं., भूगर्भ सँ बहराइत जलक स्रोत । मै.
सोअदगर-विशे., रुचिकर स्वाद भरल । मै.
सोआ-सं., स्वादिष्ट सागक एक प्रभेद । मै.
सोआइत-अव्यय, पूर्वानुभवक वर्तमानक संगति सँ सत्यताक प्रतीति । मै.
सोइरी-सं., प्रसव गृह, सूतिका गृह, बच्चाक जन्म दैक विशेष घर । मै.

सोएम-विशे., तेसर (निम्न कोटि) प्रकारक वस्तु। मै.

सोंकाएब-क्रि., प्रच्छन्न (नुकाएलसन) घर मे घोसियाएल रहब। मै.

सोकाणि (सोँकाणी)-विशे., १. अत्यन्त संकीर्ण स्थान। २. घर मे नुकाकय घोंसियाएल रहैवाला। मै.

सोख-विशे., अत्यन्त धृष्ट आ निडर उद्दण्ड। मै.

सोखब-क्रि., द्रव वस्तु कें खींचब। शुष्क बनाएब। मै.

सोखर-सं., उलहन उपदर भरल बीतल बातक वार्ता। मै.

सोखा समुद्र-विशे., खूब अधिक चट द' सोंखि लै वाला। मै.

सोग-सं., देखू—"शोक"। सं. तद्भव

सोगाइत-सं., उपहार, पठाओल जाइवाला भोज्य वस्तुक सनेस। मै.

सोगारथ-सं., सफलता, भोगक द्वारा कयल श्रमक सार्थकता। मै.

सोङर-सं., उपर तनने रहैक लेल आ अड़ने रखें लेल देल अस्थायी बाँसक जोड़। मै.

सोच-सं., पश्चात्ताप भरल विशेष विषय परक हार्दिक दुख। मै.

सोचना-सं., सदिखन अतीत वस्तु वा सम्भावित विषय पर दुख आ विचार। मै.

सोचब-क्रि., भावना करब, चिन्ता आ पीड़ा युक्त विचारब। मै.

सोझ-विशे., १. समक्ष। २. सीधा, कनेको टेढ़ नहि। ३. सरल। मै.

सोझ करब-क्रि., १. सरल (सीधा) बनाएब। २. (लाक्षणिक) अनुशासन मे बान्हब। मै.

सोझबराह-विशे., सरलता सँ (आसानी सँ) सम्पन्न होम'वाला। मै.

सोझबारब-क्रि., व्यवस्थित करब, क्रमबद्ध बनाएब। सरल बनाएब। मै.

सोझराएब-क्रि., जटिल अर्थात् ओझराएल कें सरल बनाएब। मै.

सोझराह-विशे., आसान, सरल। मै.

सोझाँ-अव्यय, समक्ष, सामने, सम्मुख। मै.

सोझाँसोझी-अव्यय,समानान्तर, सीधा रेखा पर। मै.

सोझुक्का-विशे., टेढ़ नहि, एक रंग सोटल। मै.

सोझेँ-अव्यय, एक दिशाहैं, सोझ रेखा पर। मै.

सोँट-सं., रोलल, ने पातर ने मोट डन्डा। मै.

सोँटन-सं., १. डोरी एवं सूत आदि वस्तु मे गुन बैसबैक हेतु घसिकय मजैक प्रक्रिया। २. छीलिकय चिक्कन करब। मै.

सोटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) अधिक भोजन करब। २. डोरी आदि मे पाक बैसबैक हेतु घसि घसिकय माजब। ३. छीलिकय चिक्कन करब। मै.

सोंटा-सं., १. अस्त्र विशेष (आसा सोँटा) राजकीय यात्राक प्राचीन रीतिक अलंकार। २. हथलग्गू डन्डा। मै.

सोंटाएब-क्रि., चिक्कन कराएब। मै.

सोंटाचन्द-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.

सोंटूमल-विशे., अत्यन्त अधिक खाइवाला महामूर्ख। मै.

सोंठ होएब-क्रि., (लाक्षणिक) भूख सँ व्याकुल रहब। मै.

सोँठाएब-क्रि., भूखल रहब। मै.

सोंठि-सं., १. आदक सुखाएल अंश। २. दुर्बल। मै.

सोडर-सं., कपड़ा धोएबाक क्षारीय पदार्थ। मै.

सोड़र-विशे., भोथ। मै.

सोड़हनि-विशे., सोलह अर्थात् अधिक संख्यावाला। मै.

सोड़हि-सं., सोलह संख्याक एकमान। मै.

सोड़ा (नोन)-सं., नोन विशेष। मै.

सोंढ़-सं., गाछक जड़ि मे अनेक मोटगर सीर। मै.

सोढ़रनाथ-विशे., (लाक्षणिक) अनकर भरोसें भोग करैक इच्छा रखैवाला निश्चिन्त आ अनपढ़। मै.

सोत-सं., स्रोत। जलक सूक्ष्म प्रवाह। सं. तद्भव

सोता-सं., अत्यन्त मेहीं धारा। मै.

सोति-विशे., श्रोत्रिय। उच्च मैथिल ब्राह्मण। मै.

सोतिआइ-सं., श्रोत्रिय समाजक विशेष नियम निष्ठाक आग्रह। मै.

सोतिपुरा-सं., श्रोत्रिय ब्राह्मणक बस्ती। मै.

सोतियामी-सं., श्रोत्रिय ब्राह्मणक विशेष सरल आ सात्त्विक आचार विचार। मै.

सोतिवंशी-विशे., श्रोत्रिय ब्राह्मणक वंशज। मै.

सोतियाहा-विशे., आर्थिक आडम्बर शून्य श्रोत्रिय ब्राह्मणक सरल व्यवहार। मै.

सोथ-सं., विशेष कारणें देहक फूलैक क्रम। मै.

सोदर-विशे., सहोदर, एके माइक गर्भ सँ उत्पन्न। सं. तत्सम

सोधनमूर्ति-विशे., (निन्दा मे) नाशक दुर्भाग्यक लक्षणवाला। सोधैवाला। मै.

सोधब-क्रि., १. शोध करब (चुकाएब)। २. (लाक्षणिक) सर्वनाश करब। मै.

सोन्हगर-विशे., विशिष्ट रुचि दैवाला सुगन्ध भरल भोज्य पदार्थ। मै.

सोन्हाइ-सं., अनेक जड़ी बूटिक बनल छोट बच्चाक चानि पर दैवाला औषध। मै.

सोन्हाएब-क्रि., (लाक्षणिक) भूखक द्वारे अत्यन्त तवधब। मै.

सोन्हाओन (सोन्हान)-सं., पखेब (सुकराती) दिन अनेक जड़ी बूटी सँ बनाओल मालजालक औषध। मै.

सोन्हि-सं., सुरंग, खोह। मै.

सोन-सं., १. सुवर्ण, सब सँ बहुमूल्य उत्तम धातु। २. पटुआ आदि गाछक छालक बहार कयल लच्छादार तन्तु। मै.

सोनहा-सं., औषध एवं मसालाक मिलित वस्तुक समूह। मै.

सोनहाक सखारी-सं., प्राचीन समयक बाँसक बीनल औषध एवं मसाला समूहक रखैवाला पेटी। मै.

सोनहुल-सं., फूल विशेष। मै.

सोनहुला रंग-सं., सोनक समान रंग। मै.

सोनाठी-सं., पटुआक छाल उतारल सुखाएल डन्टी। देखू—"सनठी"। मै.

सोनामूङ-सं., दलिहन विशेष। मै.

सोनार-सं., स्वर्णकार जाति विशेष। मै.

सोनाह-विशे., लच्छादार तन्तु भरल। मै.

सोनिताएब-क्रि., लेहू भरल रहब। मै.

सोनीत-सं., रक्त, शोणित, लेहू। सं. तद्भव

सोपाएब-क्रि., विकृत बसातक प्रकोप सँ सीसक अन्नक सुखा जाएब। मै.

सोंफ-सं., १. मसालावाला अन्न विशेष। २. बहुत नाम आ चाकर मोथीक बीनल बहुत गोटयक बैसै जोग पटिया। मै.

सोफा-सं., १. गद्दीदार कुर्सी। २. विभिन्न शिल्पकारी भरल कोठा आ बंगला घर। मै.

सोम-सं., १. दिन विशेष। २. अत्यन्त कृपण। ३. चन्द्रमा। सं. तत्सम

सोमवारी-सं., सोम दिन मे पड़ैवाला अमावास्या पर्व एवं शिवक उपासनाक सोम दिन। मै.

सोर-सं., उच्चर स्वर। जोर सँ शब्द। मै.

सोरठा-सं., भाषा काव्यक छन्द विशेष। मै.

सोरन्डीह-सं., कोनो रूपें बनल उच्च भूमि। शव समूहक दाह भस्मक भूमि। मै.

सोर पाड़ब-क्रि., चिकरिकय ककरो बजाएब, आह्वान करब। मै.

सोरफोर-अव्यय, अक्लेश सँ सोझे सोझ। मै.

सोरसरबा-सं., लगातार सोर करैक क्रम। मै.

सोरहा-सं., बातक प्रचार, सभक जानल वृत्तान्त। मै.

सोरि-सं., दूरधरिक नामानामी भूखण्ड। मै.

सोलकन्ह-विशे., निम्न स्तर आ अधम आचार विचारवाला लोक। मै.

सोल करब-क्रि., बदला चुकाएब। घुमाएब। मै.

सोलह-संख्या, छ एकाँइ एक दहाँइक अंक। मै.

सोलहनि-सं., विरोधक उपरान्त परस्पर मिलान। मै.

सोलहनी-विशे., (लाक्षणिक) सोलहो आना अर्थात् सम्पूर्ण। मै.

सोलहिया-विशे., सोलह सोलह संख्यावाला। मै.

सोंस-सं., जलचर हिंसक जन्तु विशेष। मै.

सोँसा-सं., श्वास प्रश्वास। मै.

सोंसियाएब-क्रि., सोँ सोँ शब्द करब। मै.

सों सों शब्द करब-क्रि., जल बसात आ अन्य वस्तुक उग्र वेग सँ सों सों शब्द होएब। मै.

सोह-सं., १. स्रोत। २. स्मरण, सुधि। मै.

सोहगैली-सं., सिन्दूरदानक काल सिन्दूरक संग रहै वाला विशिष्ट शुभवस्तु। मै.

सोहथ-सं., अनेक लोहक सुलफाक गुच्छावाला एक अस्त्र विशेष। मै.

सोहदा-विशे., विभिन्न लोकक विभिन्न बात मे आबि कय निर्ममता सँ धन उड़ौनिहार। मै.

सोहनगर-विशे., आँखि आ मनक सुख देनिहार शुभप्रद। आनन्ददायी। रुचिगर। मै.

सोहनि-सं., खोइँचा छीलि कात करैक प्रकार। मै.

सोहब-क्रि., कोनो वस्तुक खोइँचा छीलब वा ओदारब। मै.

सोहर-सं., बच्चाक जन्म कालक गीत। मै.

सोहरब-क्रि., सम्पूर्ण अंग मे लागि जाएब। मै.

सोहरा-सं., प्रवाद। समाज मे पसरल बात। मै.

सोहरी लागब-क्रि., फल आदि गाछ आदि मे घन भ' क' लागल रहब। मै.

सोहरै-सं., तीत बनैया दाना। मै.

सोहल सुथनी-लोकोक्ति, निःसार, अकर्मक। मै.

सोह लेब-क्रि., खोज पुछारी करब। मै.

सोहाएब-क्रि., नीक लागब। मै.

सोहाओन-विशे., सुन्दर आ सुखदायी। आनन्दप्रद। मै.

सोहाग-सं., सौभाग्य। अवैधव्य। मै.

सोहाग देब-क्रि., सद्यः विवाहित कन्याक हाथ मे सौभाग्य कामना सँ द्रव्य देब। मै.

सोहागा-सं., रासायनिक द्रव्य विशेष। मै.

सोहागिन-विशे., सधवा। मै.

सोहागी-सं., १. स्वच्छ वस्त्र (शाड़ी) कें रंग विशेष सँ पाढ़ि जकाँ रंगल कोर। विशे., २. हैंठी, कोचबन्द आदि। मै.

सोहान्त-विशे., नीक लगैक योग्य। मै.

सोहार-सं., बहारला उत्तर घरद्वारक गदौस समेटि कय फेंकैक काज। मै.

सोहारब-क्रि., गदौस कात करब। मै.

सोहारी-सं., फुलकी बिन छानल रोटी। मै.

सोहाँस-सं., खीरा, लत्तीवाला फल। मै.

सोहिजन-सं., मुनिगाक एक प्रभेद व्यंजन। मै.

सोहुआ-विशे., सोहि कय काज मे आनल। मै.

सौ

सौँ-संख्या, सै। हि. तत्सम

सौकीन-विशे., अधिक अपना कें लहकचहक सँ सजबैक एवं उत्तम भोजनक विचार रखैवाला। उ. तत्सम

सौख-सं., सेहन्ता पुरैक प्रबल वेग। मै.

सौख मनोरथ-सं., (लाक्षणिक) स्त्री पुरुषक परस्पर संगम। मै.

सौखिया-विशे., सौख सँ कयल गेल काज। मै.

सौजन्य-सं., परस्पर सद्भाव। मै.

सौजन-सं.,सामाजिक रूपें खान पान आदि मे व्यवहारिक एकता। मै.

सौजनियाँ-विशे., सिद्ध अन्न खाइक व्यवहारवाला समाजी। मै.

सौठ होएब-क्रि., ओर लागब, समाप्त भ' जाएब। मै.

सौताढ़-सं., आदिवासी जाति विशेष। मै.

सौतिन-विशे., पतिक दोसर वैध पत्नी। मै.

सौतिनिया डाह-सं., सौतिनिक ईर्ष्या जकाँ उत्पन्न ईर्ष्या। मै.

सौती-सं., पातर धारावाली छोट नदी। मै.

सौंथ-सं., माथक केश कें दू भाग केने बनल रेखा। मै.

सौँथ कोखि-सं., स्त्रीक सब सँ पैघ सोहाग सधवापन आ सन्तान। मै.

सौँथी-सं., सौँथ परक गहना। मै.

सौदा-सं., कीनै बेचैक सामग्री। मै.

सौदागर-विशे., कीनै बेचैवाला बनिया। मै.

सौदाबाड़ी-सं., दैनिक उपयोगवाला कीनल वस्तुक समूह। मै.

सौंपब-क्रि., समर्पण करब। मै.

सौर-सं., एक कपड़ाक संग दोसर कपड़ा कें मोट करैक हेतु अस्थायी मिलान। मै.

सौर करब-क्रि., अस्थायी रूपें कपड़ा मे कपड़ा साटब। मै.

सौरकी-सं., जल मे होम'वाला भेटक फूलक कन्द। मै.

सौरभ-सं., सुगन्धि । सं. तत्सम
सौरमण्डल-सं., सूर्यक चारूकात घूमैवाला ग्रह परिवार । मै.
सौरा-सं., माछ विशेष । मै.
सौराठी-सं., सौरा माछक बच्चा । मै.
सौरी-सं., बच्चा कें जन्म दैक हेतु विशेष घर । मै.
सौंस-विशे., अभग्न । सम्पूर्ण । मै.
सौंस-सं., फल आदिक जमाओल रस । अं. तत्सम

ह

ह्रस्व-विशे., १. लघु उच्चारणवाला मात्रा । २. छोट । सं. तत्सम
ह्रास-सं., अवनति, क्षीणता । सं. तत्सम
ह-अव्यय, मालजालक गति कें (ठाढ़ करैक) रोकैक शब्द । मै.
हऽऽ-अव्यय, थाकनि, व्यथा आ खेदक शब्द । मै.
हँ-अव्यय, १. स्वीकार । २. सोर कयला पर उपस्थितिक ध्वनि । मै.
हइ-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । २. क्रि., छै, अछि । (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.
हओ-अव्यय, अपना सँ नीच पुरुषक प्रति सम्बोधन । मै.
हक-सं., सामर्थ्य । प्रयोग—"की कहू बेचारी कें दुइए दिनक दुख मे एक वियानक हक चल गेलै ।" २. अधिकार । उ. तत्सम/मै.
हकदरिद्र-विशे., अत्यन्त निर्धन । मै.
हकन्न कानब-क्रि., भीतरैं भीतर अत्यन्त व्यथित रहब । मै.
हकपाड़ा-विशे., हाक (जोर सँ सोरकय) दय भिक्षा माङब । मै.
हकबकाएब-क्रि.,विस्मय आ भय सँ हतबुद्धि होएब । मै.
हकबाहि लागब-क्रि., एके अभीष्ट वस्तुक हेतु बारम्बार बजैत रहब । मै.
हकमब-क्रि., अधिक श्रम सँ तेज श्वास प्रश्वास होएब । मै.
हकमी-सं., दम्मा आ कुकुर खाँसी आदि सँ हकमैत रहैक रोग । मै.
हकतिहार-विशे., हकार पुरैवाला । मै.
हकर हकर-सं., भोजन करै मे शीघ्रता । मै.
हकलीलो होएब-क्रि., अभीष्ट वस्तुक प्राप्ति नहि भेने अत्यन्त व्यग्र रहब । मै.
हँकाएब-क्रि., सुरक्षित रखैले पशु पक्षी कें भगाएब । मै.
हकार-सं., बिन भोजनक विशेष अवसर पर सम्मेलनक आमन्त्रण । मै.
हकारब-क्रि., सम्मिलित होइक आमन्त्रण करब । मै.
हकासल पियासल-विशे., तीव्र गतिक द्वारें श्रम आ भूख पियास सँ व्याकुल । मै.
हकुलाह-विशे., सन्तोषहीन, असन्तोषी । मै.
हकौआँ-सं., बाल बच्चाक शून्य विभीषिका । मै.
हगना-विशे., विशेष मलत्याग करैक प्रकृतिवाला । मै.
हगनार-सं., अगणित लोकक मलत्यागक स्थान । मै.
हगबास लागब-क्रि., मलत्यागैक वेग होएब । मै.
हगहगी लागब-क्रि., बारम्बार मलत्यागक वेग होएब । मै.
हगाएब-क्रि., छोट नेन्ना कें मलत्याग कराएब । मै.
हगामा-विशे., सर्वसाधारण लोकक समूह । मै.
हगीं करब-क्रि., शिशुक मलत्यागब । मै.
हँ गे !-अव्यय, काकु अथवा स्वीकारक शब्द । मै.
हगौर-विशे., अधिक मल छोड़ैक प्रकृतिवाला । मै.
हज-सं., मुसलमानक प्रसिद्ध मक्का तीर्थक तीर्थाटन । उ. तत्सम
हजम-विशे., पेटक पाक लेल अन्न । उ. तत्सम
हजाम-सं., नौआ जाति । उ. तत्सम
हजार-संख्या, दश सैक मानवाला संख्या । मै.
हजारा/हजारी-विशे., हजार (असंख्य) पत्ती वा केसरवाला फूल । प्रयोग—"हजारी गेना फूल ।" मै.
हट्ठा-सं., हर जोतल जाइवाला स्थान । मै.
हट्ठा कट्ठा-विशे., सक्कत आ पुष्ट शरीरवाला । मै.
हट्ठोघड़ी-सं., आठो पहर, सदिखन । मै.
हँटब-क्रि., स्थान सँ विचलित होएब । दूर जाएब । बात सँ फिरि जाएब । मै.
हटब-क्रि., वर्जना आ तर्जना करब । ताड़न देब । मै.

हटबाहि-सं., हाट पर कीनै बेचैक काज। मै.
हटवाह-विशे., हाट पर वस्तु बेचैवाला बनियाँ। मै.
हटाएब-क्रि., दूर करब, स्थान सँ विचलित करब। बहिष्कार करब। मै.
हटिया-सं., अस्थायी बाजार, हाट। मै.
हटौटा-सं., निषेध, निबारण, रोक। मै.
हठ-सं., जिद्द, जहनि, आग्रह। मै.
हठात्-अव्यय, एकाएक, अकस्मात्। मै.
हठी-विसे., आग्रही, जिद्दी। मै.
हड्डी-सं., खण्डित हाड़। अस्थि खण्ड। मै.
हड़कब-क्रि., अचानक मालजालक भागब। मै.
हड़कम्प-सं., हाड़धरि कँपबैवाला भय। मै.
हड़कम्प मचब-क्रि., भय भरल व्याकुलता होएब। मै.
हड़काइ-सं., अचानक मालजाल कें उत्तेजित करैक चेष्टा। मै.
हड़काएब-क्रि.,अचानक मालजाल कें भगा क' तितिर बितिर करब। मै.
हड़काछु-सं., काछुक एक प्रभेद। मै.
हड़गर कठगर-विशे., सक्कत आ पुष्ट शरीरवाला। मै.
हड़गोड़ी-सं., गर्दनि लगाकय पैरक बन्हन। दुष्ट माल कें सधैक प्रक्रिया। मै.
हड़जोड़वा-सं., एक जड़ी विशेष। मै.
हड़ताल-सं., कोनो विशेष लक्ष्य सिद्धि करैले कार्य क्षेत्रक कर्मचारी समूहक कार्य बन्न करैक हठ। मै.
हड़पब-क्रि., बल, कल आ छल सँ ककरो सम्पत्तिक हरण करब। मै.
हड़बड़ाएब-क्रि., अगुताइ सँ व्यग्र आ चंचल होएब। मै.
हड़बड़ी-सं., अगुताइक द्वारें मनक चंचलता। मै.
हड़बिरो मचब-क्रि., समूहक मन मे चिन्ता व्यग्रता आदक्क भरल चंचलता आ व्याकुलता होएब। नाशक क्रम बनब। मै.
हड़मुढ़हा-विशे., अलच्छता आ मूर्खता भरल। मै.
हड़रोग-सं., हाड़ मे पैसल दीर्घ रोग। प्रयोग—"हड़ रोग छूटय मुदा वंश रोग नहि चलय।" मै.
हड़रो विड़रो लागब-क्रि., बिन कोनो कारणें दैवी घटना सँ शीघ्रता सँ नाशक क्रम होएब। मै.
हड़संहारि-विशे., दुर्भाग्यक लच्छवाली। मै.
हड़हड़ाएब-क्रि.,हड़हड़ ई विकट शब्द करब तथा विकट शब्द होएब। मै.
हड़हड़ी वज्र-सं., ठनका। मै.
हड़हो सुरही-विशे., सकल साधारण लोक। मै.
हड़ाक द'-अव्यय, हड़हड़ शब्दक संग। मै.
हड़ाशंख-सं., डोकासन जीव विशेष। विशे., (लाक्षणिक) बुद्धिहीन आ अलच्छ। मै.
हड़ाह-विशे., दुर्जनता सँ अधिक भगैवाला (लोक, मालजाल)। स्त्री० हड़ाहि। मै.
हँड़िया-सं., भानस करैक वर्तन वासन। मै.
हड़िरा-सं., डाँर मे धोती शाड़ीक कसिकय लपेटन। मै.
हड़ी-सं., काठक बनल बेड़ी। मै.
हड़ोखरि-सं., नाना प्रकारक ढेप चेप आ पाथर। मै.
हड़ोरब-क्रि., दूनू बाँहि सँ हसोथिकय एकट्ठा करब। मै.
हड़ौत-सं., बाँसक एक प्रभेद। मै.
हण्डा-सं., भात रन्हैवाला बड़का वर्तन। मै.
हत्-अव्यय, लाजवाला परिहासक शब्दक निषेध। मै.
हत्ता-सं., ऊँच कयल आरि, सीमा। मै.
हत्था-सं., १. आद आ केराक भिन्न भिन्न गुच्छा। २. मीड़ल मरुआ (अन्न) क झरल अन्न भरल पुत्ती। मै.
हत्थाबांही-सं., १. परस्पर आवेश सँ हाथ के पकड़ि रहैक क्रम। २. हाथ बाँहि पकड़ैक झगड़ा। मै.
हत्थाहत्थी-सं., एक हाथ सँ दोसर हाथ चलैक प्रक्रिया। मै.
हत्थी-सं., उतान हाथवाला रूप। मै.
हतब-क्रि., हत्या करब। मै.
हताएब-क्रि., अस्त्र सँ मारल जाएब। मै.
हताश-विशे., टूटल आशाक व्याकुलतावाला। सं. तत्सम
हताहत-विशे., मारल आ घाइल कयल। सं. तत्सम
हतुआ-विशे., बधिक, हत्या कयनिहार। मै.

हतो प्रत्यास-विशे., निराशाक चिह्नवाला। प्रतीक्षा पूर्वक आशाक टूटने मलिन आकृतिवाला। हत प्रत्याश। सं. तद्भव

हथकट-विशे., उचितो मे कम दैवाला कृपण। मै.

हथकड़ी-सं., बन्दीक हाथ बन्हैवाला कठोर लोहक जिञ्जिर। मै.

हथकण्डा-सं., लक्ष्य सिद्ध करैक उपाय। मै.

हथकरघा-सं., हाथ सँ चलबैवाला कपड़ा बीनैवाला कल। मै.

हथगर-विशे., छूटिकय अधिक दैवाला। मै.

हथघड़ी-सं., हाथ मे बन्हैवाला घड़ी। मै.

हथछुट्टू-विशे., चट द' मारि बैसैक स्वभाववाला लोक। मै.

हथजौड़-सं., हाथक बाँटल डोरी। मै.

हथ (ह) ड़-सं., टोंटीवाला पैघ प्राचीन जलपात्र। मै.

हथड़ा-सं., जूता मे काँटी ठोकैक ठोकना। मै.

हथधरा-सं., धीपल वर्तन पकड़ैक लेल पैघ पात वा कपड़ा। मै.

हथधरी-सं., विवाह सम्बन्ध हेतु दूनू पक्ष सँ सम्मिलित भय निश्चयक विधि। मै.

हथना-सं., अत्यन्त छोट नेन्नाक हाथक गहना। मै.

हथनोंत-सं., हाथ जोड़िकय निमन्त्रण करैक व्यवहार। मै.

हथपैंच-सं., एक गोटयक हाथ सँ बिना सूदिक थोड़ समयक लेल ऋण। मै.

हथफेर-सं., एक गोटयक हाथ सँ रीन ल' क' दोसरक ऋणक शोध। मै.

हथरस-सं., कोनो अंग वा वस्तु पर हाथ फेरैत रहैक चेष्टा। मै.

हथरा-सं., चकरी (छोट जाँत) कें चलबैक खूजल डन्टा। मै.

हथलग्गू-विशे., सरलता सँ हाथ मे उठबैक योग्य। मै.

हथसंकर-सं., हाथक पाँचो आङुर मे फँसाओल गहना। मै.

हथिगन-सं., हाथीक सूँड़सन फूल फलवाला जड़ी। मै.

हथिनी-सं., हाथीक स्त्री जाति। मै.

हथिया-सं., हस्त नामक नक्षत्र। मै.

हथियाएब-क्रि., छल बल कल सँ अधिकार कय लेब। मै.

हथियार-सं., अस्त्र, शिल्प एवं युद्धक शस्त्र। उ. तत्सम

हथिसार-सं., हाथीक ऊँच घर। मै.

हथोरब-क्रि., भूमि पर हाथ घुमाकय समेटब एवं कोनो वस्तुक अन्वेषण करब। मै.

हथोरिया देब/हथोरिया मारब-क्रि., अन्हार मे स्थान स्थान पर किछु तकैक हेतु हाथ घुमाएब। मै.

हथौटी-विशे., ककरो हाथें देल गेल वस्तु। मै.

हथौड़ा-सं., लोहा कें पीटैवाला लोहक बड़का घन। मै.

हथौड़ी-सं., छोटका घन। मै.

हद-सं., सीमा। मै.

हद करब-क्रि., (लाक्षणिक) अतिशय नीचता करब। मै.

हदमदाएब-क्रि., बमनक वेग होएब। मै.

हदमदी-सं., १. बमनक वेग। २. (लाक्षणिक) दुविधाक स्थिति। मै.

हदरब-क्रि., निराशाक बात करब। मै.

हदहद बैसब-क्रि., अत्यन्त दुब्बर होएब। मै.

हदिघड़ी-अव्यय, सदिखन। मै.

हदियाएब-क्रि., निराशा सोचि व्यथित होएब। मै.

हदियाह-विशे., विशेष निराशावादी। निराशा सँ सतत दुखी रहनिहार। मै.

हन्ना-सं., पाया वा खाम्हक बीचक शून्य स्थान। घरक खण्ड। मै.

हनछिन करब-क्रि., असहयोगक चेष्टा करब। मै.

हनन-सं., हत्या। सं. तत्सम

हनपट-सं., विरोध। मै.

हनपटाहि-विशे., अधिक उछलि कूदिकय विरोध करैवाली। मै.

हनपट करब-क्रि., विरोध प्रकट करब। मै.

हनब-क्रि., १. कोनो अस्त्र उठाकय बजारब उसाहब। पटकब। मै.

हनहन करब-क्रि., उत्तेजनापूर्वक उत्साह भरल होएब। मै.

हनहन पटपट-सं., उत्तेजना भरल विरोध प्रदर्शन । मै.
हनहनाएब-क्रि., १ शीघ्रता सँ प्रगति करब । २. वेग सँ आगू बढ़ब । मै.
हनाठब-क्रि., कसिकय पैसाएब । मै.
हनाहनी-सं., सम्पूर्ण समाज मे पसरल उत्तेजना । मै.
हनिकय-अव्यय, कसिकय, जोर द' क' । मै.
हपसब-क्रि., १. अधिक श्वास प्रश्वास छोड़ब । २. आतुरता सँ लेबाक चेष्टा करब । मै.
हपसिकय-अव्यय, आतुरतापूर्वक । मै.
हपसी-सं., अधिक जोर सँ श्वास प्रश्वास छोड़ैक रोग । मै.
हपहप खाएब-क्रि., नुकाकय तेजी सँ खाएब । मै.
हफनाएब-क्रि., तमसाइक चेष्टा करब । मै.
हफब-क्रि., लोक पर मालजालक छूटब । मै.
हफस-सं., हकैक चेष्टा, आडम्बर । मै.
हफ होएब-क्रि., भीतरैं भीतर तमसाएल रहब । मै.
हफाएब-क्रि., मारैक लेल मालजालक लोक पर जोर सँ छूटब । मै.
हफाह-विशे., लोक पर छूटैवाला मालजाल । मै.
हफियाएब-क्रि., १. बारम्बार हाफी करब । २. (लाक्षणिक) बारम्बार अधिकार करैक चेष्टा राखब । मै.
हफीम-सं., कठोर लस्सासन मादक द्रव्य । मै.
हफीमची-विशे., हफीमक वेशी सेवन करैवाला । उ. तत्सम
हफुआएब-क्रि., भीतरैं भीतर बिगड़ल रहब । मै.
हब-सं., सामर्थ्य, शक्ति । मै.
हबक-सं., दाँत सँ कोनो वस्तु कें कटैक वा धरैक क्रम । मै.
हबकब-क्रि., कटैक हेतु दाँत सँ धरब । मै.
हबकाएब-क्रि., दाँतें कटाएब । मै.
हबकान-सं., जोर सँ दाँतें कटैक चेष्टा । मै.
हबकाह-विशे., अधिक हबक मारैवाला । मै.
हबकौरा-सं., बिना परिश्रमे यथेच्छ लाभ । ,मै.
हबगब-सं., निश्चिन्त वार्तालाप । मै.
हबर हबर-अव्यय, शीघ्रता सँ, झट झट । मै.
हबलदार-विशे., आरक्षी (पुलिश) क विशेष निम्न अधिकारी । मै.
हबशी-सं., अफ्रिकाक एक विशेष जाति । मै.
हबस-सं., वासनाक आवेग । उ. तत्सम
हबहब-अव्यय, जलदी, जलदी । मै.
हबान्स-सं., बल, सामर्थ्य । मै.
हबेली-सं., धनवानक घर आङनक विशाल आलय । मै.
हबोडकार-सं., ध्वनिक संग नोर बहबैत कनैक क्रम । मै.
हम-सर्व., उत्तम पुरुषवाचक । बजनिहारक निर्देश करैवाला शब्द । मै.
हमर-सर्व., हम शब्दक सम्बन्धकारक । मै.
हमरा-सर्व., हम शब्दक कर्मकारक । मै.
हमला-सं., आक्रमण । उ. तत्सम
हमहम करब-क्रि., १. (लाक्षणिक) आगू आगू रहैक चेष्टा करब । २. अहंकार भरब । मै.
हमाम-सं., १. स्नानक पैघ जलपात्र । २. साबुन विशेष । उ. तत्सम
हमें-सर्व., हम (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.
हय-अव्यय, सम्बोधनक शब्द । मै.
हर्ता-विशे., हरण करैवाला । मै.
हर्ष-सं., आनन्द । मै.
हर्षित-विशे., आनन्दित । मै.
हर-सं., महादेव । मै.
ह'र-सं., खेत जोतैक अस्त्र । मै.
हरक्कति-सं., क्षति, हानि । उ. तद्भव
हरकट-विशे., मारि गारि वा कोनो नीक अधलाहक प्रभावरहित । मै.
हरकठ-सं., ह'र बनबैक योग्य लकड़ी । मै.
हरकततीत-विशे., अतिशय तीत स्वादवाला । मै.
हरकारब-क्रि., जेर कें हाँकिकय एक दिश मे लय जाएब । मै.
हरकारा-विशे., पशुक जेर कें हाँकनिहार । मै.
हरखरा-सं., हरक जोड़ल सब अंग । मै.
हरजना-सं., हानि होएबाक मूल्य । मै.
हरजा-सं., हानि, क्षति । हर्जा । उ. तद्भव
हरजाइ-विशे., दुःशील स्त्री आ पशु । मै.

हरजोता-विशे., हरबाहि कयनिहार। हर जोतिकय जीवन निर्वाह करैवाला। मै.
हरट्ठ-विशे., अत्यन्त, मूर्ख। मै.
हरण-सं., छीनब, चोराएब। मै.
हरथन भरथन-विशे., अधिकताक द्वारें अवहेलना सँ अधिक व्यवहारवाला। मै.
हरदम-अव्यय, सदिखन। उ. तत्सम
हरदर-अव्यय, प्रतिशत। मै.
हरदा-सं., खेल मे बाजिकय हारि मानैक विधि। मै.
हरदा लागब-क्रि., खेत मे फसिलक गाछ पीयर भ' जाइक रोग होएब। मै.
हरदि-सं., तीमनक आवश्यक आ प्रसिद्ध मसाला वाला पीयर रंगक कन्द। मै.
हरदिआइन-विशे., विशेष हरदिक द्वारें कुस्वाद। मै.
हरदियाह-विशे., हरदि मिलाओल। मै.
हरदी बजाएब-क्रि., कोनो प्रतियोगिता मे हारि मनाएब। मै.
हरप्पा-सं., प्राचीन इतिहासक ध्वंसावशेषक खनन वाला स्थान। मै.
हरपट करब-क्रि., वश मे नै रहैक चेष्टा करब। मै.
हरपटाहि-विशे., दूहैक काल उछलै कूदैवाली गै महिस। मै.
हरफा-सं., अम्मत सन फल विशेष। मै.
हरफी-विशे., अन्नक प्रतिवर्ष नियत दरें अन्ने सूदि बढ़ैवाला रीन। मै.
हरफोड़-विशे., एके चास सँ बाओग कयल फसिल। मै.
हरब-क्रि., हरण करब। मै.
हरबाह-विशे., हर जोतैवाला। मै.
हरबाहि-सं., हर जोतैक व्यवसाय। मै.
हरबाही-सं., १. हर जोतैक हेतु श्रमिकक निश्चय। २. हर जोतैक बोनि। मै.
हरमरी-सं., खेत मे उगल घास कें हर जोतै सँ पहिने चौकी चलाकय विनाश। मै.
हरमाद-सं., बाधा कय कें हानि। उ. तत्सम
हरमुढ़हा-विशे., किछु नै बुझैवाला प्रचण्ड मूर्ख। मै.
हरमोठा-विशे., सक्कत मोट आ हुण्ड प्रकृतिवाला मूर्ख। मै.
हरमोनियाँ-सं., संगीतक बाजा विशेष। हारमोनियम। अं. तत्सम
हररब-क्रि., अत्यन्त मोट चिकस पीसब। मै.
हररँ-सं., हरीर, औषध विशेष। मै.
हरलदहा-सं., ह'र बन्हैक डोरी। हररा मे लगाओल जाइवाला डोरी। मै.
हरष-सं., देखू—"हर्ष"। मै.
हरषन-क्रि., हर्षित होएब। मै.
हरषाएब-क्रि., हर्षित बनाएब। मै.
हरसट्ठे-अव्यय, हट्ठें, अकस्मात्, सुगमता सँ। मै.
हरसी-सं., माछ मारैवाला बड़का सरैला। मै.
हरहरा-सं., १. साँप विशेष। २. पुरुष (नेन्ना) क डाँरक डँरकससन गहना। मै.
हरहा-विशे., हर जोतैवाला नीच ब्राह्मण। मै.
हराएब-क्रि., पराजित करब। मै.
हराठ-सं., हर जोतल जाइवाला स्थान। विशे., देखू—"हरकट"। मै.
हराठी फराठी-विशे., सक्कत वा कठोर अंगवाला। मै.
हरान-विशे., परिश्रान्त। हैरान। उ. तद्भव
हरान हारब-क्रि., विकल हारि होएब। मै.
हरान होएब-क्रि., परिश्रान्त होएब। मै.
हरानी-सं., परिश्रम। उ. तद्भव
हरारति-सं., अधिक थाकनि होइक कारणें उत्पन्न स्वास्थ्य मे विकार। मै.
हरास-विशे., कान्तिहीन क्षीण काय, ह्रास। सं. तद्भव
हराह-विशे., १. हर जोतैक कलावाला मूर्ख। २. अधम विचारवाला। मै.
हराहरी-अव्यय, देखू—"हरदर"। औसतन। मै.
हरि-सं., विष्णु भगवान, इन्द्र, सिंह, बानर, बेङ आदि। मै.
हरित-विशे., हरियर रंग भरल। सं., तद्भव
हरिताली-सं., भादव शुक्ल तृतीया कें गौरीक व्रत, तीज। सं. तत्सम
हरितिमा-सं., हरियर रंगक सघन प्रभाव। सं. तत्सम

हरिन-सं., पशु विशेष। हरिण। सं. तद्भव
हरिनकेर-सं., धानक एक प्रभेद। मै.
हरिनानिम्न-सं., आधा पल खूजलवाला निम्न। मै.
हरियर-विशे., हरित वर्णवाला। मै.
हरियरकचोर-विशे., अत्यन्त हरियर। मै.
हरियरका-विशे., हरियर रंगवाला। मै.
हरियरी-सं., हरियर रंगक अत्यन्त प्रभाव। मै.
हरियल-सं., खाद्य पक्षी विशेष। मै.
हरिशयन-सं., आषाढ़ शुक्ल एकादशी के विष्णुक सूतैक धार्मिक प्रथा। मै.
हरिशो-सं., अगहन मे होम'वाला व्रत विशेष। मै.
हरिसैं-सं., अक्षर सभक ह्रस्व मात्रा। मै.
ह'री-सं., भूमिक स्वामी कें प्रतिवर्ष बटाइदारक देय हर। मै.
हरीफ-विशे., कुटिल बुद्धिवाला। दुष्ट। मै.
हरीर-सं., देखू—"हररै"। त्रिफला औषधक एक भागवाला सुखाएल फल। मै.
हरीस-सं., ह'रक एक अंग विशेष। पैंघ काठक दण्ड जाहि मे पालो बान्हल रहै अछि। मै.
ह'रीह'र-सं., बटैदारक खेतक स्वामी कें प्रतिवर्ष नियम कयल देय हर। मै.
हरुबी-विशे., विशेष कठोर भूमि, सक्कत खेत। मै.
हरेक-विशे., प्रत्येक। मै.
हरैद-सं., हरदि। मै.
हरौआ-विशे., १. अधिक हरबै (पराजित करैवाला)। २. हरन कय आनल। मै.
हल्ला-सं., बहुत लोकक एकै ठाँ बहुत जोर सँ बाजैक क्रम। कोलाहल। मै.
हल्लागुल्ला-सं., लोकक बजै भूकैक चेष्टा। मै.
हल्लुक-विशे., बहुत कम गुरुतावाला। लघु भार वाला। मै.
हलका-विशे., हल्लुक। हि. तत्सम
हलका-सं., १. क्षेत्रक नियमित सीमा। २. हाथीक दल एवं सैनिक। ३. हराहि मालक गर्दनि मे लटकै वाला भारी काठ। मै.
हलख लेब-क्रि., न्यायालय मे शपथ खाएब। उ. तत्सम
हलगर-विशे., आवश्यक आर्द्रता (नमी) भरल खेत। मै.
हलचल-सं., चञ्चलतापूर्वक अगुताइक स्थिति। मै.
हलचलाएब-क्रि., चञ्चलता सँ अगुताएब। मै.
हलचली-सं., चञ्चलता सँ अगुताइक क्रम। मै.
हलतलबी-सं., शीघ्रता सँ कार्य सम्पादनक व्यग्रता। मै.
हलब-क्रि., शरीर सँ दुर्बल होएब। मै.
हलबलिया-विशे., चञ्चलता सँ काज करैक प्रकृति वाला। मै.
हलबली-सं., चञ्चलता सँ काज करैक प्रकृति। मै.
हलराएब-क्रि., बच्चा कें स्नेह सँ झुला झुलाकय प्रसन्न रखैक चेष्टा करब। मै.
हललखोर-सं., घिनाओन वस्तु कें हटाकय स्वच्छ आ परिच्छ करैवाला जाति। मै.
हलसब-क्रि., भीतर सँ आनन्द फूटब। मै.
हलसल फुलसल-विशे., भीतरै भीतर आनन्दें प्रफुल्लित भेल। मै.
हल हौर-सं., दोसराक द्वारा जगाओल उत्कण्ठा कौतूहल आ चञ्चलता। मै.
हलाल-सं., सँसरी काटि जीवक हत्या। उ. तत्सम
हलाहल-सं., सब सँ तेज विष। (संखिया)। सं. तत्सम
हलुआ-सं., चीनीक संग रान्हल सूजीक कोमलतम खाद्य पदार्थ। मै.
हलुआई-सं., मधुर आदि विभिन्न पकवान आ खाद्य पदार्थ रचैक व्यवसायी जाति। मै.
हलुक धना-सं., पहिने पकैवाला मेहीं अगहनी धानक प्रभेद। मै.
हलो!-अव्यय, दूरभाष (टेलीफोन) सँ गप करै मे प्रथम सम्बोधन। अं. तत्सम
हवन-सं., आगि मे आहुति। सं. तत्सम
हवा-सं., बसात। उ. तत्सम
हवाइ जहाज-सं., वायुयान। मै.
हवागाड़ी-सं., मोटर गाड़ी। मै.
हवा बसात-सं., विशेष बसात लगैक अनुमान सँ उत्पन्न विकलता आ रोग। मै.
हविष्य-सं., पवित्र आ शुद्ध भोजन पदार्थ। सं. तत्सम
हस्त-सं., १. हाथ। २. हथिया नक्षत्र। सं. तत्सम

हस्ताक्षर-सं., अखरताली, अपन हाथें लिखल अपन नामक प्रमाण। सं. तत्सम

हस्ती-सं., धनक द्वारें उत्पन्न प्रभाव। उ. तत्सम

हंस-सं., १. पक्षी विशेष। २. आत्मा। ३. सूर्य। सं. तत्सम

हँसखोर-विशे., खूब हँसबैवाला व्यक्ति। मै.

हसना-विशे., खूब हँसैवाला बच्चा। मै.

हँसब-क्रि., आनन्द सँ मुहक विकास करब। मै.

हँसमुह-विशे., हँसैत मुहवाला। मै.

हसरि-सं., गुण सँ उत्पन्न प्रभाव। मै.

हँसाएब-क्रि., हँसबैक चेष्टा करब। मै.

हँसाराति-सं., अप्रतिष्ठा, तिरस्कार। मै.

हँसिया-सं., घास आदि कटैवाला, तरकारी कटैवाला अस्त्र। मै.

हँसाहँसी-सं., वार्तालापक बीच बराबरि हँसैक क्रम। मै.

हँसी-सं., १. हँसैक उद्गार। २. (लाक्षणिक) निन्द। ३. परिहास। मै.

हँसी करब-क्रि., परिहास करब। ठट्ठा करब। मै.

हँसीखुशी-सं., प्रसन्नता। मै.

हँसीठट्ठा-सं., परस्पर परिहास। मै.

हँसी होएब-क्रि., अप्रतिष्ठा, निन्दा होएब। मै.

हँसुआ-सं., घास आदि कटैवाला हाँसू। मै.

हँसुआफरोस-विशे., हँसुआक बलें जीवन निर्वाह करैवाला श्रमिक। मै.

हँसुली-सं., हँसैत कालक मुहक मुद्रासन बनल गर्दनिक भारी गहना (नेकलेस)। मै.

हँसेरिया-विशे., सेना, लड़ाइ करैवाला दल मे रहैवाला। मै.

हँसेरी-सं., मारि करैवाला दल। सेना। मै.

हँसोथब-क्रि., केहुनी सँ नीचाँ हाथ सँ वस्तु कें समेटब। मै.

हसोथिया मारब-क्रि., आतुरतापूर्वक तेजी सँ हाथ आ केहुनीक अंग सँ झट झट समेटब। मै.

हँसोर-विशे. हँसैत रहैक स्वभाववाला। अधिक प्रसन्न रहैवाला, हास पसिन्न करैवाला। मै.

हँसौआ-विशे., अधिक हँसबैवाला। मै.

हँसौना कनौना-विशे., कतौ नीक आ कतौ अधलाह करैवाला स्थिति देनिहार। मै.

हऽ ह!-अव्यय, कार्यभार उतरलाक उपरान्त कान्ति अनुभवक शब्द। मै.

हहंकाल-सं., सामुदायिक अपराध। मै.

हहंकाल करब-क्रि., समूहक आर्तनाद होएब। मै.

हहरब-क्रि., क्षीण होएब, झरि झरि खसब, नीचाँ दिस खसैक क्रम होएब। मै.

हहराएब-क्रि., क्षीण बनाएब। मै.

हहारो मचब-क्रि., प्रसन्नता सँ हँसी ठट्ठाक वातावरण होएब। मै.

हहास-सं., बहुत लोकक एक व्यक्ति पर दोष। मै.

हहियासल-विशे., दीनता आ धैर्यहीनता भरल। मै.

हा

हा-अव्यय, दुःख आ शोक। सं. तत्सम

हाँ-अव्यय, मना करैक ध्वनि। मै.

हाँइ हाँइ-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ। मै.

हाइर कौआ हाइर-अव्यय, कौआ हँकैक (भगबैक) शब्द। मै.

हाइरौ तोरी भला के-अव्यय, निन्दा, विस्मय आ निषेधक ध्वनिवाला शब्द। मै.

हाउस हाउस करब-क्रि., अत्यन्त आतुरता आ तृष्णा सँ कोनो वस्तु लैक चेष्टा करब। मै.

हाए-अव्यय, खेद प्रकट करैक शब्द। मै.

हाए हाए करब-क्रि., दीनता, आतुरता आ अत्यन्त तृष्णा सँ धन बटोरैक चेष्टा करब। मै.

हाक-सं., अत्यन्त जोर सँ सोर करैक चेष्टा। मै.

हाक डाक-सं., असामयिक दुर्घटना सँ शोकक उत्पन्न स्थिति। मै.

हाक देब-क्रि., जोर सँ सोर पाड़ब। मै.

हाँकब-क्रि., चलाएब, पशुक समूह कें निर्दिष्ट स्थान दिश ल' जाएब, भगाएब, दूर पठाएब। प्रयोग–१. "ओ अपनें गाड़ी हाँकै छथि।" २. "कने हमरो मालजाल कें हाँकने जइहह।" ३. "अहाँ कने तावत् कौआ हाँकू।" ४. "ककरौ हाँकि कय शीघ्र वार्ता बूझि लिअ।" मै.

हाकरोस करब-क्रि., खूब चिकरि चिकरि कय कानब। मै.

हाँकलि डाइन-विशे., गाछ हाँकैवाली सिद्ध डाइन। मै.

हाँका करब-क्रि., शिकारी दलक द्वारा वन मे हरिण आदि पशु कें चलाकय वनक एक दिश ल' जाएब। मै.

हाकिम-विशे., पदाधिकारी। उ. तत्सम
हाँजी हाँजी करब-क्रि., (लाक्षणिक) चापलूसी (खुशामद) सँ हँ मे हँ मिलाएब। मै.
हाट-सं., चलैत फिरैत किछु कालक हेतु अस्थायी देहाती बजार, कीनै बेसाहैक नियत स्थान। मै.
हाट चढ़ब-क्रि., बेचैक योग्य रहब, होएब। मै.
हाटक चाउर बाटक पानि-अव्यय, लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अपन घरक किछु नै सबटा आनै ठामक भरोस। मै.
हाँटब डाँटब-क्रि., उच्च स्वरैं निषेध करब। कड़ा शब्दे तर्ज सँ वर्जन करब। मै.
हाड़-सं., देहक अस्थि पंजर। हड्डी। मै.
हाड़काठ-सं., शरीर संरचनाक सन्तुलन। मै.
हाँड़ी-सं., पाक करैवाला वर्तन वासन। मै.
हाँड़ी पातिल-सं., पाकक बासन एवं घैल आदि। मै.
हाता-सं., ऊँच कयल खेतक आरि, आड़ा। मै.
हाथ-सं., हाथ। मै.
हाथ मलब-क्रि., पाछू काल, अवसर चुकला पर पछताएब। मै.
हाथ मिलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बराबरी करब। मैत्री एवं शिष्टताक स्नेह व्यवहार करब। मै.
हाथर-सं., जाँत घुमबैक लेल ओहि मे ठोकल डन्टावाला लकड़ी। मै.
हाथ हाथ नै सूझब-क्रि., अत्यन्त घन अन्हार होएब। मै.
हाथाबाँही-सं., परस्पर हाथ बाँहि मिलौने रहैक चेष्टा। मै.
हाथाहाथी-सं., हाथक द्वारा पहुँचैक क्रम। मै.
हाथी-सं., विशालकाय अर्धज्ञानी सवारीक योग्य पशु विशेष। मै.
हाथैं हाथ-अव्यय, एकाँ एकी हाथ सँ उठालैक क्रम। मै.
हानब-क्रि., जोर सँ पटकब, बजारब। मै.
हानि-सं., क्षति, घाटा, नोकसान। सं. तत्सम
हापस-सं., अत्यधिक लाभ करैक तृष्णा। मै.
हाफब-क्रि., (लाक्षणिक) हथिअ'बैक चेष्टा करब। इच्छा राखब। मै.
हाफी-सं., निम्नक आगम सँ स्वभावतः मुहक विकास। मै.
हाफी करब-क्रि., (लाक्षणिक) रहि रहि अधिकार करैक प्रयास करब। मै.
हाब डीब करब-क्रि., समय समय पर खोज पुछारी करैत रहब। मै.
हामस-सं., १. भयानक आडम्बर। २. फूसि धमकी। मै.
हार्दिक-विशे., हृदय मे उत्पन्न, गम्भीर। सं. तत्सम
हार-सं., रत्न आदि बहुमूल्य वस्तुक पैघ माला। मै.
हारने हरिनाम-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अपन सब चेष्टा करैक शक्ति समाप्त भेला पर ईश्वरक प्रार्थना। मै.
हारब-क्रि., पराजित होएब। मै.
हारल नटुआ झिटका बीछे-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) असफलता पर लोक कें सफलताक भ्रम दैक चेष्टा। मै.
हारा-सं., घास विशेष। मै.
हारि-सं., पराजय। मै.
हारी-सं., साधारण मोतीक माला। मै.
हारीडाली-सं., विवाहक अवसर पर बराइतक द्वारा कयल खर्च कें लगाकय कन्या पक्षक दिश सँ बराइत कें द्रव्य देबाक प्रथा। मै.
हारून-विशे., भग्न। निराश। प्रयोग—"हमर ही हारून नै करू।" मै.
हाल-सं., १. खेतक सरसता। २. निकट समय। ३. स्थिति। ४. गाड़ीक पहिया कें सुरक्षित रखै लेल बाहर सँ ठोकल लोहक मोट चदरा। मै.
हालति-सं., परिस्थिति। उ. तद्भव
हालब-क्रि., पीड़ा दय क्षीण बनाएब। मै.
हाला-सं., मदिरा। दारू। सं. तत्सम
हालि-सं., स्थिति, समय। मै.
हालिचालि-सं., कुशल समाचार। मै.
हाली-अव्यय, जल्दी। मै.
हालीहाली-अव्यय, झट झट। मै.
हावभाव-सं., शृङ्गारक विभिन्न चेष्टा। सं. तत्सम
हास्य-सं., १. रस विशेष। २. हँसी। सं. तत्सम
हाँस-सं., पक्षी विशेष, हंस। मै.

हास-सं., हँसी, मुसकुरयनाइ । मै.

हास परिहास-सं., हँसी ठट्ठा । सं. तत्सम

हासा-विशे., सगरे एके रंगवाला । मै.

हाँसिनि-विशे., हँसिनी, सुन्दर सुलक्षण प्रसन्न स्त्री । मै.

हासिल-विशे., उपार्जित । उ. तत्सम

हाँसू-सं., हाथ सँ फसिल आदि कटैवाला चन्द्राकार लोहक पत्रक अस्त्र । मै.

हाह फूह-सं., सिंचन जकाँ अत्यन्त थोड़ कालक थोड़ रूपक वर्षा । साधारण अछार । मै.

हाहाकार-सं., सामूहिक पीड़ा, शोक आदक्क ध्वनि 'हा हा' । सं. तत्सम

हाँ हाँ-अव्यय, निषेध निवारण, भय, आदंक मे उच्चारित शब्द । मै.

हाहि-विशे., निरन्तर अत्यन्त तीव्र वेग रखैवाला बसात । मै.

हाहि काटब-क्रि., असन्तोषक कारणें हरदम अर्थक हेतु हा हा करैत रहब । मै.

हाही लागब-क्रि., असन्तोषक द्वारें हाय हाय करैक स्वभावे बनि जाएब । मै.

हाहुतपनी-सं., असन्तोष सँ हरदम अधिक लेबाक (प्राप्त करैक) स्वभाव । मै.

हाहुती-विशे., कतबो प्राप्त केनो असन्तुष्टे रहै वाला । मै.

हाहुस करब-क्रि., अर्थक हेतु धैर्य आ सन्तोषहीन रहब । मै.

हाहेबेरबा-सं., संकट आ विपत्तिक आदंक आ भय । चिन्ता । मै.

हि

हिक्का-सं., रुकि कय जोर सँ श्वासक उपर दिश अकस्मात् गमन । अन्त कालक श्वासक क्रम । मै.

हिकमति-सं., रहस्य, कौशल, कला, तथ्य । मै.

हिकमतिया-विशे., कलावाला, लूरिवाला । मै.

हिक लागब-क्रि., कोनो विशेष वस्तुक हेतु सदिखन सेहन्ता पुरैले मन लटकल रहब । मै.

हिकाहु-विशे., सुगमता सँ पहुँचै योग्य स्थान । मै.

हिकोहिको करब-क्रि., मन्द गतियें कोनो क्रिया मे लागल रहब । मै.

हिङाइन-विशे., हीङ युक्त, हीङक गन्धवाला । हिङक स्वादवाला । मै.

हिङुराएब-क्रि., रंग कें स्थायी आ कड़ा बनबै लेल चपड़ा अथवा गोंद मिलाएब । मै.

हिचक-सं., तारतम्य, संकल्प विकल्प, आगाँ पाछाँ । मै.

हिचकब-क्रि., मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

हिचकिचाएब-क्रि., तारम्य करब । मै.

हिचकी-सं., जोर सँ रहि रहिकय श्वासक उपर मुहे खिचान । मै.

हिचकोला खाएब-क्रि., गाड़ीक पहिया मे ठोकर लगला सँ एम्हर ओम्हर डोलब । मै.

हिज्जै-सं., अक्षरक मात्रा तोड़ि तोड़ि उच्चारण । मै.

हिजड़ा-विशे., पुरुषत्व आ स्त्रीत्व हीन, नपुंसक । मै.

हिजो करब-क्रि., वस्तुक मोल मोलाइ मे बहुत जिद्द करब । मै.

हिंड़ोला-सं., मचकी, झूला । मै.

हिण्डोल-सं., प्रसिद्ध राग विशेष । मै.

हित-सं., कल्याण, नीक । सं. तत्सम

हितकर-विशे., कल्याण अथवा नीक करैवाला । सं. तत्सम

हिताइ-विशे., आनक कल्याण करैवाला, परोपकारी । मै.

हितू-विशे., हित चाहैवाला आ करैवाला । मै.

हितैषी-विशे., हित चाहैवाला । सं. तत्सम

हिदाइत-सं., चेतावनी, सावधानी, हिदायत । उ. तद्भव

हिन्दू/हिन्नू-सं., भारतीय सनातन धर्म मानैवाला जाति । मै.

हिनक/हिनकर-निश्चयवाचक सर्व., ई शब्दक सम्बन्धकारक । मै.

हिनका-निश्चयवाचक सर्व., ई शब्दक कर्मक रूप । मै.

हिनस्ताइ-सं., हीनता, नीचता । मै.

हिनहिनाएब-क्रि., घोड़ाक बाजब । मै.

हिनि-निश्चयवाचक सर्व., (आदर मे) ई शब्दक कर्ताक रूप । मै.

हिनुआन-विशे., घटिया, दब, हीन । मै.
हिप्पी-विशे., पश्चिमी देशक विचित्र वेशभूषावाला युवक सम्प्रदाय । मै.
हिफाजति-सं., संयम, सेवा, परिचर्य्या । उ. तद्भव
हिम्मति-सं., साहस । उ. तद्भव
हिम-सं., पाला बर्फ । सं. तत्सम
हिमालय-सं., सर्वोच्च पहाड़ । सं. तत्सम
हिय/हिया-सं., हृदय, अन्तःकरण । मै.
हियाओ-सं., काज सम्पादन करैक साहस । मै.
हियाएब-क्रि., अनुमान द्वारा निश्चित करब । संकल्प विकल्प सँ विचारि स्थिर करब । मै.
हियाओ डटब-क्रि., काज करैक साहस बटोरब । मै.
हियाहारब-क्रि., अत्यन्त निराश रहब । मै.
हिरामनि-सं., सूगाक प्रभेद । मै.
हिलकोर-सं., तरङ्ग, पानिक ढेउ । मै.
हिलकोरब-क्रि., कृत्रिम तरङ्ग जगाएब । मै.
हिलडोल-विशे., अपन स्थान पर अस्थिर । मै.
हिलब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर भ' क' रहब । मै.
हिलम डोलम-सं., अस्थिरता । मै.
हिलमिल कय रहब-क्रि.,परस्पर हित कामना करैत रहब । मै.
हिलरब-क्रि., सूप सँ अन्नक दाना चलाकय फरिछ करब । मै.
हिलस-सं., सेहन्ता, तृष्णा भरल लोभ । मै.
हिलस लागब-क्रि., मन लोभाएब । मै.
हिलसा-सं., माछ विशेष । मै.
हिलहिल करब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर रहब । मै.
हिलाएब-क्रि., अस्थिर राखब, डोलाएब । मै.
हिलुआ-विशे., १. हिलैवाला । २. मन सँ मिलल रहैवाला, सब काज मे सहयोगी । मै.
हिलोर-सं., जलक उथल पाथल होइक क्रम । मै.
हिलोरब-क्रि., (लाक्षणिक) दूनू हाथें अपन इच्छानुसार कानक वस्तु कें उठा उठाकय अपन अधिकार मे करब । मै.
हिस्सा-सं., बखरा, अंश । उ. तत्सम
हिसख-सं., स्वाभाविक अभ्यास, प्राकृतिक लति । मै.
हिसाब-सं., लेखा, गणित । सं. तत्सम
हिसाबी-विशे., हिसाब जनैवाला, गणितज्ञ । उ. तत्सम
हिँहिँयाएब-क्रि., अनेर उद्दण्ड जकाँ हीँ हीँ कय कें विकट हसब । मै.

ही

ही -सं., अन्तरात्मा, अन्तःकरण । मै.
हीँक-सं., हिचकी, दम उपर उठैत रहैक क्रम । मै.
हीङ-सं., हिंगु, तीमन कें स्वादिष्ट आ सुपच करै वाला मसाला विशेष । मै.
हीङराइ-अव्यय, शुभ अवसर पर लोकक अधलाह भावना नष्ट करैले उच्चारणीय शब्द । हीङक संग गोट । मै.
हीङ सँ हरदि-सं., सम्पूर्ण मसालाक छोट पैघ सब वस्तु । मै.
हीङघोरा-विशे., शुभ अवसर पर लोकक कुदृष्टि सँ बचबैले आ अनिष्ट भावनाक प्रभाव रोकैले टोना रूपें हीङ घोरि कय छीटल जाइवाला पात्र । मै.
हींछब-क्रि., कोनो विषय वा काज मे भाव भङ्गी सँ नकारब, नै सकारब । मै.
हीड़-सं., बीचक सक्कत आधार । मै.
हीन-विशे., नीच, त्रुटिपूर्ण, रहित । सं. तत्सम
हीनता-सं., नीचता, शून्यता, कमी । सं. तत्सम
हीबा-सं., साहस एवं उदारतापूर्ण उत्साह । मै.
ही भरब-क्रि., हृदय सन्तुष्ट करब । मै.
हीया-सं., १. अबोध बच्चा कें गाइक परिचय देबाक शब्द । २. हृदय । मै.
हीया सालब-क्रि., अपन वस्तु के अनका उपभोग मे देखि भीतरैँ भीतर सन्ताप होएब । मै.
हीरा-सं., रत्न । मणिवाला पाथर । मै.
हीरी-सं., हीरा के कटैवाला पाथर । मै.
हीहरू-विशे., अधिक उपेक्षा निराशा सँ साहसहीन । निराश हृदय । मै.

हु

हुँ:-अव्यय. विचार, उपहास, विस्मय व्यञ्जक । मै.
हुँआँ-अव्यय, गीदड़ बजैक ध्वनि । मै.
हुक्का-सं., सकल साधारणक धूम्रपान करैक काठक यन्त्र । नारिकेरवाला । मै.

हुँकड़ब-क्रि., गैक दीनता मे बाजब । मै.

हुँकना-सं., बसात उत्पन्न करैक पंखा, बीयनि वा आन कोनो साधन । मै.

हुँकब-क्रि., कोनो वस्तु सँ बसातक वेग कें जगाएब । मै.

हुकहुक करब-क्रि., मन्द श्वास प्रश्वास सँ जीवेंक लक्षण मात्र होएब । मै.

हुँकहुँका-सं., निरन्तर पंखा सँ बसात जगबैत रहैक क्रम । मै.

हुकहुकाएब-क्रि., मन्द श्वास प्रश्वास सँ जीवैत रहब । मै.

हुकहुकी-सं., क्षीण होइत श्वास प्रश्वास सँ मुमुर्षुता । मरैक लक्षण । मै.

हुँकाएब-क्रि., ताप मेटयबा ले' अनका द्वारा बसात जगाएब । मै.

हुँकार-सं., हूँ हूँ उच्चारण । मै.

हुंकार-सं., तर्जन करैवाला शौर्यक शब्द । सं. तत्सम

हुकारी-सं., अधिक थाकनि सँ मुह सँ बहार कयल जाइत हू हू शब्द । मै.

हुँकारी भरब-क्रि., अबोध (छ मसिया) शिशुक हुँ हुँ शब्द होएब । मै.

हुच्ची-सं., उठ बैसवाला छोट छोट अनेक काजक समूह । मै.

हुज्जति-सं., निन्दा योग्य झमेल । मै.

हुट्ठ-विशे., जिद्दी परम मूर्ख । मै.

हुट्टा-सं., खाँतवाला गणितक एक भेद । प्रयोग– "एक हुट्टें साढ़े तीन दू हुट्टें सात आदि ।" मै.

हुड्ड-विशे., विचार आ तर्क शून्य मूर्ख । मै.

हुड-सं., यान्त्रिक गाड़ीक आगू भाग । अं. तत्सम

हुड़कब-क्रि., एकाएक ककरो पर तामसें गर्जन करैत छूटब । मै.

हुड़काह-विशे., हुड़कि उठैक स्वभाववाला । मै.

हुड़दंग-सं., उन्मुक्त रूपें उद्धत खेल । मै.

हुड़दुङ्ग-सं., उद्दण्डतापूर्वक उपद्रावी खेल । मै.

हुड़दुङ्गी-विशे., उपद्रव भरल उद्दण्ड खेल कयनिहार । मै.

हुड़हुड़ाएब-क्रि., पेटक विकार सँ विकृत शब्द होएब । मै.

हुण्ड-विशे., बिना आगू पाछू सोचि ध' तननिहार मूर्ख । मै.

हुण्डा-सं., एकैठाँ अनुमानित वस्तु । मै.

हुण्डी-सं., निश्चित जमा धनक राशि । निश्चित आयक पारम्परिक स्रोत । मै.

हुतकार-सं., बारम्बारक प्रेरणा । मै.

हुतकारब-क्रि., बारम्बार प्रेरणा करब । प्रयोग– "हम तँ कखन सँ ने बचनू के पढ़ैले हुतकारै छियैन ।" मै.

हुथबाहि-सं., एकै बातक हेतु बारम्बार नीच बनबैक प्रक्रिया । दुर्वाक्य सँ दण्ड । मै.

हुथलोक-विशे., बिना गंजने बात ने सुननिहार ने बुझनिहार । मै.

हुथाएब-क्रि., गञ्जन कराएब । मै.

हुथान हूथब-क्रि, अपराध पर अत्यधिक दुर्वाक्य सँ गञ्जन । मै.

हुथारब-क्रि., बिन कारणों गञ्जन करब । मै.

हुथियाएब-क्रि., बिन दोषों दोस मढ़िकय गञ्जन करब । मै.

हुदुक्का मारब-क्रि., दूध पीयैक काल थन मे गाइक नेरूक मुह सँ ठोकर देब । मै.

हुदबुदी बैसब-क्रि., चिन्ता अन्देसा सँ शंका आ व्यग्रता जागब । मै.

हुनक/हुनकर-निश्चयवाचक सर्व., ओ शब्दक सम्बन्ध-कारकक रूप । मै.

हुनका-उपर्युक्त सर्व., कर्मकारकक रूप । मै.

हुनि-निश्चयवाचक सर्व., कर्ताक रूप । मै.

हुबास-सं., प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता । मै.

हुमचब-क्रि., झोंक सँ जोर लगाएब । मै.

हुमड़ब-क्रि., गम्भीर ध्वनि होएब । मै.

हुमना-सं., भारी काठक मारैवाला मुङरदन । मै.

हुमहुमा-सं., समाजक मन मे उठल तनाओ । मारि झगड़ाक तनातनी । मै.

हुमेला-सं., एकै काल अनेक काज क' लैक व्यग्रता । मै.

हुर्र होएब-क्रि., दहो दिश तुरन्त पड़ा गेला सँ सुन्न होएब । मै.

हुरकी मारब-क्रि., नुकाकय देह छोट बनौने जोर सँ भागि जाएब । मै.

हुरथुर करब-क्रि., अति अगुताएल काज करब । **मै.**
हुरथुराएब-क्रि., आपत्तिक सम्भावना बिन सोचनै अत्यन्त हड़बड़ी सँ काज करब । मै.
हुरपेटब-क्रि., मालजालक सिंग सँ मारैक चेष्टा करब । मै.
हुरबरेरा मचब-क्रि., आदङ आ अन्देसा सँ हलचल मचब । मै.
हुरमारि-विशे., हूरा हूरी करैवाली गै महिंस । मै.
हुरहुर-सं., मसालाक दानावाला झार विशेष । मै.
हुरहुरी पैसब-क्रि., आदङ्क होएब । मै.
हुराइ-सं., (लाक्षणिक) अधिक भोजन करैक क्रम । मै.
हुराएब-क्रि., कोनो वस्तुक जड़ि कें सक्कत कराएब । मै.
हुराठ-सं., १. मोट लाठीक निचला भाग । २. कोनो वस्तुक जड़ि कें मोट वस्तुक द्वारा माटि कसिकय ठोकैक चेष्टा । मै.
हुराठी-सं., घूर खोरैक लेल छोट मोट डन्टा । मै.
हुराड़-सं., भेड़िया, हिंसक पशु विशेष । मै.
हुरान हूरब-क्रि., खुट्टा खाम्हक जड़ि मे माटि कसि अत्यन्त सक्कत सँ ठोकब । मै.
हुरिया लेब-क्रि., (लाक्षणिक) बल सँ संघर्ष करब । मै.
हुरुक्क बैसि जाएब-क्रि., दीर्घकालक हेतु मन मे चिन्ता अन्देशा आदङ्क जमल रहब । मै.
हुरुक्की-सं., गर नै बैसै जोग तथा असावधानी मे चोट लगैवाला उगल अंश । मै.
हुल्लड़-सं., अधिक लोकक एकैठाँ व्यग्रता भरल चंचलता । मै.
हुल्लड़बाजी-सं., बल सँ हुल्लड़ करैक प्रवृत्ति । मै.
हुलकब-क्रि., छिपिकय देखैक चेष्टा करब । मै.
हुलकाएब-क्रि., ककरौ पर पीड़ित करैक हेतु प्रेरित कय उत्तेजित करब । मै.
हुलकाह-विशे., अनेर लोक पर छूटैक प्रकृतिवाला । (कुकुर आदि) । मै.
हुलकी देब-क्रि., देखू—"हुलकब" । मै.
हुलकौआ-विशे., लोक पर हुलकैक स्वभाववाला । मै.
हुलना-विशे., घरद्वार मे तुरन्त घुसि जाइवाला । मै.
हुलबुल करब-क्रि., कोनो विशेष क्रियाक बीच खनहि एम्हर खनहिं ओम्हर सँ पहुँचैक चेष्टा राखब । मै.
हुलसब-क्रि., प्रफुल्लित होएब । मै.
हुलहुल करब-क्रि., जेम्हर तेम्हर सँ बारम्बार घुसैक चेष्टा करब । मै.
हुलाएब-क्रि., समूह कें एकै बेर घुसाएब । मै.
हुलाक-विशे., बिन सोचने निडर भेल जखन तखन घरद्वार मे घुसि जाइवाला । मै.
हुलान-सं., समूहक एकै बेर प्रवेश । मै.
हुलास-सं., आन्तरिक प्रसन्नता । मै.
हुलुक बुलुक करब-क्रि., छिपकय देखैक चेष्टा करब । मै.
हुसाएब-क्रि., निशाना चुकाएब । मै.
हुँह-अव्यय, कोनो बात पर स्वीकार ध्वनि । मै.
हुँहकारी भरब-क्रि., खिस्सा (लोककथा) सुनैक काल बीच बीच मे हूँ हूँ करैत रहब । मै.
हुँहकब-क्रि., छमसिया नेन्नाक हूँ हूँ ध्वनि करब । मै.
हुहुआ उठब/हुहुआएब-क्रि., तामसक वेग मे एकाएक गरजि उठब । मै.

हू

हूँ-अव्यय, स्वीकार, तर्क आ निषेध । मै.
हूक-सं., दू वस्तु कें जोड़ै (पकड़ै) वाला तार वा लोहक बनल कड़ी । अं. तत्सम
हूक पैसब-क्रि., बात रोगक प्रभावें अंग (डाँर, पीठ आदि) अंग मे पीड़ा आ असमर्थता होएब । मै.
हूकब-क्रि., लक्ष्य चूकब । मै.
हूति करब-क्रि., मानब, ध्यान देब, आस्था राखब । प्रयोग—"कती काल सँ विद्यालय जाइ ले कहै छियैन मुदा बूचन एकोरत्ती बातक हूति नै करै छथि ।" मै.
हूथ-सं., दीर्घ काय पाथर आ काठ आदिक वेंडरेव भारी ढेङ । मै.
हूथब-क्रि., दोष कें आगू राखि गंजन करब । मै.
हूथर-विशे., हुथवाहि सुनियौकय निर्लिप्त रहैवाला । मै.

हूथौड़ा-सं., गीजल मथल भोजन पदार्थ। मै.
हूथौआ-विशे., पेरु आ दूध आदि, सारभाग निचोरल पदार्थ। मै.
हूसाहूसी-सं., दू दल मे संघर्ष फूटैक स्थिति। मै.
हूर-सं., १. लाठी ठेङाक निचला भाग। माटि कसिकय सक्कत करैक विधि चेष्टा। मै.
हूरनि-सं., दरी (जड़ि) मे माटि द' क' सक्कत बनबैक क्रम। मै.
हूरब-क्रि., दरी (जड़ि) मे माटि आदि द' क' ठोकि कय जड़ि सक्कत करब। मै.
हूराहूरी-सं., पर्व विशेष, सुखरात्रिक प्रात सींग द्वारा सूगरक बच्चा कें मारैक खेल। मै.
हूरि लेब-क्रि., बल सँ झगड़ा मोल लेब। मै.
हूलब-क्रि., एकाएक बिन सूचनाक प्रवेश क' लेब। मै.
हूलि-सं., अनेक काजक व्यग्रता। मै.
हूलि मचाएब-क्रि., एकै संग अनेक काजक पूर्ति करैक प्रयास करब। मै.
हूलिमालि-सं., अनेक काजक व्यग्रताक बीच नव काजक उपस्थिति आ अनेक काज सम्पादन करैक स्थिति। मै.
हूलिमे हुलामय-सं., अनेक काजक स्थिति मे नव नव काजक व्यग्रता। मै.
हूले-अव्यय, कोनो जीव पर कुकुर कें उकस'बैक शब्द। मै.
हूलेलेलै-अव्यय, बिना सोचने विचारने लोकक कहला पर। मै.
हूले हूले-अव्यय, देखू—"हूले"। मै.
हूलौआ-विशे., बिन कहने सुनने समूह (झुण्ड) कें एकाएक घुसा दैवाला। मै.
हूसब-क्रि., अवसर आ निशान चूकब। मै.
हूस होएब-क्रि., छोट आ कम होएब। मै.
हू हा-अव्यय, नेन्ना कें कड़ु (मेरिचाइ) क स्वादक परिचय। प्रयोग—"ई नै खाइ ऐ मे हूहा छै।" मै.
हूँ हाँ करब-क्रि., १. छ मास धरि शिशुक मुहक ध्वनि होएब। २. स्वीकृति अथवा निषेधक शब्द कहब। मै.
हू हू करब-क्रि., शब्द मय अत्यन्त चंचल वेग होएब। मै.
हू हू गाड़ी-सं., (बच्चाक हेतु) रेलगाड़ी। मै.

हृ

हृदय-सं., जीव मात्रक सम्वेदनशील सूक्ष्म शरीरक एक अंग। सं. तत्सम
हृष्ट पुष्ट-विशे., शरीरें भरल। सं. तत्सम

हे

हे-अव्यय, सम्बोधनक चिह्न। मै.
हे आ-अव्यय, मालजाल कें जल पिअ'बैक शब्द। मै.
हे इयै-अव्यय, स्त्री जातिक सम्बोधन। मै.
हे औ-अव्यय, पुरुष जातिक सम्बोधन। मै.
हेंक-सं., माल मेसी चलैक कारणे थाल पानि सँ अत्यन्त ढील कादो। मै.
हेंकब-क्रि., गदहाक बाजब। मै.
हेँकल-सं., गराँक गहना विशेष। मै.
हेंका-सं., १. गदहाक शब्द। २. अत्यन्त ढील पैर धँसैवाला वाटक कादो। मै.
हेंकामय-सं., दूरधरि पसरल वाटक कादो। मै.
हेंकार करब-क्रि., पानि हेराकय कादो करब। मै.
हेङा-सं., हरक संग जोतल खेत के सरिअ'बैवाला चौकी, पाटा। मै.
हेंज-सं., झुण्ड, समूह। मै.
हेजा-सं., रद्द दस्तवाला मरकी (महामारी)। मै.
हेठ-अव्यय, नीचाँ। मै.
हेठ करब-क्रि., नीचाँ उतारब। मै.
हेठपन-सं., नीचता। मै.
हेठानी-सं., नीचाँ दिशुक भूमि। मै.
हेठी उतारब (झारब)-क्रि., (लाक्षणिक) नीचताक दण्ड देब। मै.
हेड़-सं., एक मतक दल। मै.
हेड़गर-विशे., अधिक पैघ दलवाला। मै.
हेड़िया-विशे., दलक लोक। मै.
हेण-सं., विभिन्न मतवाला दलक समूह। मै.
हेतु-सं., कारण, निमित्त, लेल। सं. तत्सम/मै.
हेतुक-विशे., हेतु (कारण) वाला। सं. तत्सम
हेन्नय-अव्यय, एम्हर। (स्थान भेदें शब्द भेद)। मै.
हेबनि-अव्यय, निकट भूतकाल मे। मै.
हेमछेम-सं., आवरजात, अधिक मिलान, अभिन्नता। परस्पर सहयोगक भावना। आपकता। मै.
हेमती-सं., वाङ (कपास) क प्रभेद। मै.
हेमन्त-सं., ऋतु विशेष, प्रारम्भिक जाड़। मै.

हेमनचल-विशे., अत्यन्त ठन्ढा । मै.
हेमन जिस्ता-सं., औषध आ मसाला कूटैवाला लोहक उक्खरि मुस्सर (खल) । मै.
हेमाल-विशे., १. मेहीं जोतल माटिवाला खेत । २. ठन्ढा । मै.
हेय-विशे., त्यागैक जोग । सं. तत्सम
हेय बुद्धि-सं., उपेक्षाक भावना । सं. तत्सम
हेयौ-अव्यय, पुरुषक सम्बोधन । मै.
हेर-सं., दृष्टिपात । मै.
हेरखन भेरखन-सं., अन्नक दानाक संग मिलल दूषित पदार्थ । मै.
हेरफेर-सं., स्थान परिवर्तन । मै.
हेरब-क्रि., ध्यान द' क' देखब, दृष्टिपात करब । मै.
हेराएब-क्रि., १. असावधानी मे खसाकय नष्ट करब / होएब । २. उझिलब खसा देब । मै.
हेराफेरी-सं., एम्हर सँ वस्तु ल' क' ओम्हर रखैक ल' जाइक क्रम । मै.
हे रे-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । मै.
हेरौ-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । मै.
हेलक्कर-विशे., अधिक हेलैक अभ्यासवाला । मै.
हेलब-क्रि., पानि पर अलगले ससरब । मै.
हेलमा बेलमा होएब-क्रि., अनादरणीय उपेक्षणीय होएब । मै.
हेला-विशे., मेहतर जाति । मै.
हेलाएब-क्रि., १. पानिक विशेषता करब । २. पानि मे बहाएब । मै.
हेलाओ-विशे., हेलैक स्थित्तिवाला । मै.
हेलान हेलब-क्रि., कसिकय यथेष्ट हेलब । मै.
हेलि जाएब-क्रि., दुर्बल भ' जाएब । मै.
हेहर-विशे., मना कयलौं पर नहि मानैवाला, मना कयलौ उत्तर वैह काजक जिद्द रखैवाला । मै.
हेहरपना-सं., अपने मनें जिद्द कय अड़ल रहैक स्वभाव । मै.
हे है-अव्यय, नीच स्त्रीक प्रति सम्बोधन । मै.
हे हौ-अव्यय, नीच पुरुषक प्रति सम्बोधन । मै.

है

हैः-अव्यय, कोनो बात कें निवारणक ध्येय सँ कटैक शब्द । मै.
है-अव्यय, १. नीच स्त्रीक सम्बोधन । क्रि., २. अछि । सं., ३. आवागमन रहैक द्वारें उपद्रव । प्रयोग-१. "है दाइ ।" २. "ऐ जग लोक सुखी है ।" ३. "मालक हैक द्वारें ऐ खेत मे जजात नै होइ छै ।" मै.
हैठा-सं., रिट्ठा फलक पैघ कारी दाना । मै.
हैठी-सं., छोट दाना । मै.
हैंब-क्रि., होइक क्रिया । मै.
हैया रे हैया-अव्यय, जोर लगबैक शब्द । मै.
है रे है-अव्यय, उपहास निन्दाक शब्द । मै.
हैंसो-अव्यय, जोर लगबैक शब्द । प्रयोग–"लगे जोरा हैंसो ।" मै.

हो

होइछ/होइ अछि/होइत अछि-क्रि., हयबाक क्रिया । मै.
होएब-क्रि., होइक क्रिया । मै.
होठ-सं., उपरका ठोर । मै.
होड़ करब-क्रि., समान रूपें ठठब, प्रतियोगिता करब । मै.
होढाचक्र-सं., ज्योतिषक नक्षत्रक चरण ज्ञान करै वाला कोष्ठ । सं. तत्सम
होत सँ होतां होएब-क्रि., नीक होइक ध्येय सँ कयल क्रिया सँ अनिष्ट भ' जाएब । मै.
होनहार-विशे., भवितव्य मे नीक होइवाला । उन्नतिशील । मै.
होनिहारी-सं., भावी । मै.
होनी-सं., अदृष्ट, भवितव्यक भाग्य । मै.
होम-सं., यज्ञक समय अग्नि मे आहुति । सं. तत्सम
होरिल-विशे., नवजात शिशु, अनाम बच्चा । मै.
होरी-सं., होलिका, फगुआक पर्व । मै.
होल-सं., बीचक शून्यता, छिद्र जकाँ खोंखलापन । मै.
होलिका-सं., होरी पर्व । सं. तत्सम
होस-सं., ज्ञान ध्यान भरल बुद्धि । उ. तत्सम
होसगर-विशे., सुधि बुधिवाला, बुझनुक । मै.
होसियार-विशे., सजग सावधान लोक । उ. तत्सम
होसियारी-सं., सावधानी, सतर्कता । उ. तत्सम
होहकार-सं., पशु सब कें भगबैक लेल होहो शब्द । मै.

होहकारब-क्रि., हो हो शब्द क' क' उपद्रावी पशु कें भगाएब। मै.

होहकारा देब-क्रि., देखू—"होहकारब"। मै.

हो हा होएब-क्रि., विशेष उत्सव आदि मे लोकक चंचलतापूर्ण कोलाहल करब। मै.

होहियार-विशे., आनक खेत पथार आ गाछी विरछी सँ अन्न आ फल बटोरैवाला। मै.

होहियारी-सं., होहियारक काज। मै.

होहियाह-विशे., साधारणो बात पर बिन कारणों उत्तेजित जकाँ बजनिहार। मै.

हो हो-सं., १. हल्ला गुल्ला। २. लोकगीत वा कीर्तन गानक वी दैवाला भनिता। मै.

हौ

हौ -अव्यय, छोटक प्रति सम्बोधन। मै.

हौआ-सं., अदृश्यक भयावह वस्तु। मै.

हौआएब-क्रि., तरंग उठै जकाँ कुड़ियाएब। मै.

हौंकब-क्रि., (लाक्षणिक) १. एक दिशाहे तकं द' क' अपन बड़प्पन बजैत जाएब। २. बसात गति पर सुड्डाह क' देब। ३. पंखा आदि सँ बसात करब। मै.

हौज (द)-सं., पानि रखँक कृत्रिम छोट जलाशय। अं. तत्सम

हौँड़ब-क्रि., आलोड़न बिलोड़न होएब। मै.

हौदा-सं., हाथीक पीठ परक आसन। उ. तत्सम

हौँन-क्रि., अछि, छौह। मै.

हौफ होएब-क्रि., आन्तरिक क्रोध भरल रहब। मै.

हौफाएब-क्रि., भीतरैं भीतर तमसाएब। मै.

हौल पैसब-क्रि., डर, आदङ्क अन्देशा होएब। मै.

हौला-विशे., हल्लुक। मै.

हौले हौले-अव्यय, धीरें धीरें। मै.

हौसाएब-क्रि., असन्तोष सँ लेबाक चेष्टा करब। मै.

हौहटि-सं., खुजली कुड़ियैनी रोग। मै.

